

कालिका शायं सङ्कलितम् । [तदुपरि योमञ्जगिरि सर् कृता सङ्कत टीका] और पूज्य परमानन्दार्य कृत ज्ञापा टीका युक्त

पहिली दफ १००० पुस्तकें
द्वितीय दफ ५०० पुस्तकें

आयुत राय धनपतिविह बहादुर कृत आगमसङ्ग्रह के

साधारण की पुस्तक ॥ १५ पनरहवा ज्ञाग सूत्र ॥ दाम १०० रुपया

॥ पंनवणा सूत्र चतुर्थोपाङ्ग प्रारम्भः ॥

लैकागच्छीय श्री रामचन्द्र गणि कृत सस्कृतानुवाद युत

अपि नानकचन्द्रजी से सञ्चोचित होके मुद्रित हुआ ।

इस पुस्तक पर राजिन्दरी दुई है [अनारस जैन प्रभाकर प्रेस नानकचन्द्र कृतो] सन् १८८४ ईसवी ।

५०० जीनमक सुसादरी से
५०० राय धनपतिविह बहादुर



॥ विज्ञापनम् ॥

व्याशीद्वुगलगेवज पृथुपक्षा श्रीबीरदासाभिचस्तदुधोदुधसिद्धकर्मजितयशास्त्रसूक्तदीयोगे । स्यात् श्रीलप्रतापसिद्धविजयी मायतिरोयासती
 तस्यश्रीमद्वतायनामविदिताकुक्षेस्तदीयादृज्जुत् ॥ १ ॥ उद्यत्कोर्त्तिकदरचमदृढवी लंत्नीपते सादर श्रीमद्राययत्तादुरोधनपति सिंहयोग्यामणी ।
 श्रीजैनागमसङ्ग्रहसमकरोल्लोकोपकृत्यैचिरम् टोकावार्त्तिकसमुत्तमुलिपिनि समुद्रायत्ताशुभम् ॥ २ ॥ कृत्वापञ्चशतस्यलेशेषुपुनस्तावन्त्यहोपुस्तका ना
 राण्येषुपुस्तकानिसकलान्यस्यापयत्सादरम् । कुर्वन्त्वागमपाठनञ्चपठन सत्साधव आवका- स्थित्यैश्रीजितशासनस्यचपुनर्विज्ञानधर्मद्वये ॥ ३ ॥
 जाग पञ्चदशशतस्यगुरुक प्रज्ञापनाख्योपुना नानापुस्तकपाठनेत्यलोलैखप्रमादादपि । दुर्वाच्य खलुवृत्तिवार्त्तिककष्टतपाठन्तथाप्राक्तन श्रीभरपूजित
 रामचन्द्रगणिकिञ्चोर्त्तिकान्युध्यामया ॥ ४ ॥ सशोभ्यातिपरिश्रमेणनितरा चातर्त्तरेन्दुदत्ते स्यात्तागपिर्षास्विदीक्षणगतोन्मादादशुद्वयादि । क्षात्रत्वा
 शाध्यमदुरवुद्विबिर्भवेवर्द्धी रुपादृष्टितो निष्यादुल्लतमन्तुनश्रवचासम्प्राय्य सज्जतात् ॥ ५ ॥

धनारस

जैनप्रज्ञाकर

नानकचन्द यती

नकल चिठी १

श्रीमज्जिनवरप्रसादलक्ष्यसद्विप्रकाशितधर्मखण्डेपु श्री ५ रायघन
पतिरसिहबहादुरेपु सधिनयमावेदनम् ।

आगे, मैंने सुना है आप को ऐसी इच्छा है कि पैतालियों जेनागम
की पुस्तकें मूल टीका और ज्ञापाटीका साहित पाच १ सी कापी खपे
और साधु श्रावकों के पटन पाठन के लिये पाचसी स्यानमें पुस्तकाल
य स्थापित करें सो यह अति आनन्दकी बात है, परन्तु जिन महाशयों
को द्रव्य देके पुस्तक लेने की इच्छा है उन लोगों के निमित्त भी यदि
आप की आज्ञा हो तो वेचने के वास्ते पाचसी कापी जैनयुक्तसुसाइटी
की ओरसे भी खपवा ली जावे यह पुस्तकें मैं अभीमगज से प्रकाश
करूंगा अग्रे शुभम्, सम्बत् १८३३ । मि० । शु० । ११

शहर मुरसीदाबाद

अभीमगज

द० जैन युक्त सुसाइटी

कार्यसम्पादक

सुबहि सेठ

नकल चिठी २

श्रीविधिविद्याविपारतत्परपु जैनयुक्तसुसाइटी कार्यसम्पादक
महाशयेपु प्रतिनिवेदनम् ।

जोकि पत्र आपका द्रव्य देके खरीदनेवाले लोगों के लिये सुसाइटी
की ओरसे पैतालियों जेनागम की पाचसी पुस्तकें खपवा लेने की
आज्ञा को विषय से आया सो मैं स्वीकार करता हू कि आप जैनयुक्त
सुसाइटी की तरफ से आगम की प्रत्येक पाच १ सी पुस्तकें वेचने के
वास्ते खपवा लेवे, परन्तु पाचसी से अधिक खपनकी आज्ञा मैं नहीं
देता, यदि और कोई खपवाना चाहे तो उचित है कि पहले मुज
से आज्ञा लेलेवे क्योंकि इन ग्रन्थोंपर रजस्टररी हुई है, अग्रे शुभम् ।
सम्बत् १८३३ । मि० । शु० । १३

द० रायघनपतिरसिह बहादुर

शहर मुरसीदाबाद

॥ विज्ञापनम् ॥

इस अनादि अनन्त ससार में अनादि काल से बारबार जन्म मरण करते करते जीव थावर योनि में रहा, किसी एक अशुद्ध कर्मकी लघुता से जैसे पहानी नदी में पत्थर गुरुते गुरुते आपसे चिकना और गोल हो जाता है, तैसे जीव भी जन्म-मरण करते करते पुण्यप्रकृतिरूप यथाप्रवृत्ति नाम करण से थावरपणे को छोड़ ब्रह्मपने वैरिन्द्रियादिक में उपजता है, अथवा पचेद्वियतिर्यचयोनि में, फिर किसी एक कर्मकी लघुता से मनुष्ययोनि में पैदा होता है, उसमें भी अक यवन स्नेच्छ देशको छोड़ आर्य मगधादि जो साढ़े पचीस देश है उनमें जन्म होना—आर्यदेश में जन्म होने पर भी अत्यजाति जाति को छोड़ उत्तमजाति और कुल में जन्म होना—उत्तम जाति और कुल पाने पर भी सब अगोपाग सुदर प्रमाण सहित होना, शरीर के सुदर होने पर भी दीर्घायु होना—सब अशुद्धकर्म के कम होजाने और शुद्धकर्म के बढजाने से होते हैं, नहीं

थोड़े आचूवाला पुरुष उसलोकसंबंधी वा परलोकसंबंधी काम कुछ कर सकता है, इसी कारण जगवान् बीत
 रागने श्री हे आचूगमन् (हे बड़े आचूवाले) गौतम ऐसा कहके आचूको सब गुणों से बना दिखलाया है,
 और श्री अशुभकर्म के लघुता से और शुभकर्म के उदय से धर्मकी रुचि, धर्म का उपदेश करने वाला गुरु
 और उनके वचन का सुनना मिलजाने पर श्री देव गुरु धर्म रूप तत्वपर सच्ची प्रथा होना वज्रत दुर्लभ
 है, जिनोक्त तत्वपर सच्ची प्रथा होना यही नम्युक्त है, और सब तो मिथ्यादृष्टियों की श्री होता है, यह
 सब अशुभकर्म के कम होजाने और शुभकर्म बढ़ने से जीव को मिलते है, इस हेतु अशुभकर्म का क्षम और
 शुभकर्म के बढ़ने में यत्न करना अवश्य है, अशुभकर्मका क्षय और शुभ को बढ़ाने के लिये धर्म के नेत्रा
 य और कोई श्री यत्न नहीं है, इस हेतु धर्म करो २ धर्म ही का सेवन करो, जैसा के घरके कार्य सिद्ध
 करने में अनेक तरह से परिश्रम करते हो कुछ काल धर्म के वास्ते श्री परिश्रम करते रहो, कारण के धनी
 धर्म सेवन करने वाले पुरुष) की इंद्र आदि देवता श्री केवल प्रशंसा, अनुमोदना और शक्ति करके अप
 ना जन्म सफल करते हैं, इतनी श्रद्धि पाके श्री उन को धर्म का सेवन करना दुर्लभ है और श्री धर्मी को
 त्रिभुवन की लक्ष्मी, कल्पवृक्ष, चित्तामणि और कामधेनु आपसे दास हो मिलते हैं, तो पुत्र मित्र कलत्र
 घर सवारी और राज्य मिलजाना क्या बड़ी चीज है ? धर्म सेवन करने वाले का दो घड़ी का जीना श्री
 सफल और कार्यकारक है, परन्तु धर्महीन (अर्थात् पेय, अपेय, कृत्य, अकृत्य, गत्य, अगत्य, जड्य

और अनुद्वय इत्यादि विचार रहित) का कोटाकोटि वर्ष जीना भी निष्फल और अकिंचित्कर है , पञ्चवत्
 अपना आयु पूर्ण कर भरता है , इन्द्रिय का निग्रह कराने वाला , सकल कल्याण और सुगति का कारण ,
 अवसागर तरने के लिये नौका रूप तीर्थरुप का कहा जाया केवल धर्म ही है और धर्म का मूल दया “वि
 ना मतलब परायें दुस को दूर करने की डब्बा” है दया से धर्म की प्राप्ति और धर्म से जीव मुक्त होते है ,
 इसलिए दया सर्वोत्कृष्ट पदार्थ है । जैनदर्शन में दया के अनेक “ स्वदया परदया द्रव्यदया भावदया नि
 श्रयदया व्यवहारदया स्वरूपदया अनुबधदया , जेद विस्तार से वर्णन किये हैं सर्वदर्शनी दया का उपयोग
 रखते है परन्तु सर्वांगी दया का उपयोग तो जैनदर्शन ही में स्वीकार है इसवास्ते जैनमत श्रेष्ठ भी कहाता
 है , दयाके सर्वांग उपयोग होनेकी रीति यही है कि जैसे जोजन के वास्ते कोई एक पक्षान्त बनाया जाय
 तो घृत पिष्ट चीनी उल्यादि सामग्री अवश्य अपेक्षित होती है सामग्री होनेपर भी यथाविधि यथार्थ ए
 कठा होने से यथाविधि स्वादिष्ट पक्षान्त तयार होता है परन्तु हीनाधिक वस्तु होजाने से कदापि वैसा
 पक्षान्त नहीं होता तैम ही यथाविधि दया पालीजाय तो यथाविध धर्मोपलब्धि होय , यद्यपि सर्वदर्शनी
 में दयाका मान है परन्तु उसके स्वरूप में फेरफार कर देने से गतप्राय (अर्थात् अकिंचित्कर दया) है , जत्र
 के उसका स्वरूपही आखानुसार यथार्थ नहीं जानसके है तो पालन करना कैसे हो सके , फेरफार और
 कोई कहते है पञ्चप्राणघात अर्थात् पञ्चजन्म से ठोकाना दया है , कोई जिस शरीर को धारण करके जीव

सुखी न होय प्रत्युत दुःखित होय व्याधिग्रस्तादि दीप युक्त होय तो ऐसे प्राणीको तादृश शरीर से मुक्तकर देना भी दिया ही है, कोई सूक्ष्म अथवा स्थूल प्राणी जो मनुष्यको दुख देते है उनका नाश करना दिया है, कोई बलि यागादिक में प्राणिवध करने से भी पुण्य मानते हैं और कोई स्थूल प्राणिरक्षामात्र को दिया कहते है, इस तरह दिया का उपयोग अन्यदर्शनी रखते है लेकिन यह भ्रम है; और एकरीत से-आचारधर्म दिया धर्म क्रियाधर्म और वस्तुधर्म यह चार प्रकार धर्म होता है, इन चारो धर्मो के दान शील तप और ज्ञाव चार कारण है, जब धनवल होय तो दान होय, मनवल होय तो शील पाला जाय, शरीरवल होय तो तप होय, और सम्यग्ज्ञान होय तो ज्ञाव होय, यह ज्ञावधर्म दान शील तप से श्रेष्ठ है किसवास्ते के ज्ञा वधर्म का कारण ज्ञानवल है "जिसे वस्तुका स्वरूप यथार्थ जानाजाय उसको ज्ञान कहते है", ज्ञानसे जैसी आत्मधर्म की वृद्धि और सरक्षण होता है उतना दान शील तपसे कदापि नहीं, क्योंकि नय, निक्षेप, प्रमाण, चारो अनुयांग का विचार, सप्ततगी, पञ्चद्रव्यविचार, आदिक सर्व ज्ञानहीसे जीवको परिपूर्ण प्राप्त हो ते है। दशवैकालिक में लिखा है के-ज्ञानहीन पुरुष की क्रिया केवल क्षेयरूप है अर्थात् क्रिया ज्ञानकी दा सी है, और मस्देवी तथा शरत महाराज वैसी अवस्थामें भी रहके जो कर्म विमुक्त जाए यह ज्ञानहीका माहात्म्य है, ज्ञानकी जो तीक्ष्णता सोही अवधचारित्र है, जो निकाचित कर्म कोटिवर्षपर्यंत दानादि कर तेसे भी नष्ट नहीं होता वह ज्ञानी के एक स्वासोत्स्वास में नष्ट होयका है इसीलिए ज्ञानीगुरु को रत्नाकर

और क्रियागुरु को पीपल के पान और कहा है, ज्ञान विना सम्यक्त अहिमा और मिदानीक्त समस्त क्रिया
 का मूल श्रद्धा नहीं होते यह कारण ज्ञानोपाजन के लिए अवश्य यत् करना चाहिए ज्ञानके पात्र नेत्र-म
 ति श्रुत अथवा धर्मपर्यव और केवल है परन्तु श्रुतज्ञान सबसे अधिकोपयोगी है क्योंकि यह पदार्थमात्र
 लोकोत्तीक स्वमत परमत का प्रकाशक अज्ञानोत्तिमिर को दूर करने के वास्ते सूर्य और दुर्न्ममकालरूप रात्री
 मे दीप सदृश है, उद्देश्य समुद्देश्य अज्ञा इत्यादि व्यवहार का लाभ भी श्रुतज्ञान सेही होता है इस श्रुतज्ञान
 के सुनने से शुद्ध स्वरूप विशुद्ध श्रद्धा को प्राप्ति होती है इसने शुद्धात्माका आचरण छोड़ेवन अनुभव
 होता है और इससे परमपदप्राप्ति होती है, यही श्रुतज्ञान से पूर्वकाल मे श्रीगौतमादिक केवली हो ससार
 से मुक्त हुए वर्त्तमान मे महाविदेहक्षेत्र से विरहमान जिनेंद्रो से सुनके जीव मुक्त होते हैं, आगामिकालमे
 पद्मनाभ आदि तीर्थंकरोंसे सुन अनेक जीव मुक्त होगे, इस श्रुतज्ञान की वाचना पृच्छना परावर्त्तना अनु
 प्रेक्षा और धर्मकथा होती है, श्रीउवाड़े सूत्रमे धर्मकथा चार प्रकार की कही है-आक्षेपिणी शिक्षेपिणी
 निर्वेदिनी और सर्वेदिनी, जिस्से तत्वमार्ग मे प्रवृत्ति होय उसको आक्षेपिणी, जिस्से मिथ्यात्व की निवृत्ति
 होय उसको शिक्षेपिणी, जिस्से मोक्ष की अभिलाषा होय उसका निर्वेदिनी, जिस्से वैराग्य की भावना होय
 उसकी सर्वेदिनी कहते हैं वह श्रुतज्ञान रूप कथा श्री आरिहन्त देवाधिदेव तीर्थंकर परमेश्वर समवसरणमे
 बैठ "उपन्तेइवा विगमेइवा धुवेइवा", त्रिपदी उच्चारण पूर्वक करते हैं और त्रिपदी से ही गणधर द्वादश्याग

की रचना करते हैं (उस्को सूत्र कहते हैं) उस कालमें जितने सूत्र है सब श्रुतज्ञान के भेद हैं यह श्रुतज्ञान सर्वोपकारी है इसलिए इसकी वृद्धि और सरक्षण के हेतु श्रवत्रय यत्न करना चाहिये वर्तमान कालमें जितने ज्ञानवृद्धि के उपाय हैं सब से उत्कृष्ट मुद्रायन्त्र है उस कारण पुस्तक सुलभता ज्ञानवृद्धि की अति उत्कृष्ट अति सुगम रीति की स्वीकार करना जो के पूर्वाचार्योंने बड़े परिश्रम से परोपकार के हेतु ग्रथ बनाये हैं छपवाके प्रसिद्ध करना हर एक विद्वानोको देना इससे अधिक और कोई श्रेष्ठ कार्य नहीं है, यही सब कारण शीघ्र श्रीमूर्च्छिनावाद नित्रासी श्रीराय धनपातिसिंह बहादुर ने १५ आगम छपवाके हरेक जगे भंडार स्थापन किये हैं आप लोग भी यथाशक्ति इसके करने को प्रवृत्त होय के जिस्से पुन जैनमत युवावस्था को प्राप्त होय इति शम् ॥

॥

॥

॥

वनारस जैनप्रभाकर

नानक चन्द्र यती

भूमिका।

—०—

प्रसवणा, इसकी प्रकृति प्रज्ञापना है, प्राकृत शब्द संस्कृत शब्दको आदेश निर्देश करने से सिद्ध होता है। प्रज्ञापना शब्द का समुदायार्थ यह है कि (प्र) प्ररूपते (ज्ञा) जानिये (प) पदार्थ जिससे सो प्रज्ञापना अर्थात्-समस्त दर्शनी जिसरीति से पदार्थ का निरूपण नहीं करसके केवल तीर्थकर ही यथावस्थित स्वरूप से पदार्थ निरूपण करसके हैं तो, यथावस्थितस्वरूप निरूपण करके शिष्योंकी बुद्धि में आरोपण कियाजाय जीवाजीव आदिक पदार्थ जिस्से वह प्रज्ञापना कहाती है। यद्यपि अन्यदर्शनी भी जीवाजीवादि पदार्थोंकी शिष्य की बुद्धि में आरोपण करते हैं परन्तु यथार्थ स्वरूप 'जैसा २ जिस २ पदार्थ का स्वरूप है वैसाही ठीक ठीक स्वरूप', निरूपण तीर्थकर सर्वज्ञ ही करसके हैं अन्यका सामर्थ्य नहीं और वह पदार्थ का यथावस्थित स्वरूप इस ग्रन्थ के द्वारा शिष्यों की बुद्धि के गोचर होता है इससे उस का प्रज्ञापना यह नाम सार्थक है।

समवायाद्ग मे कहे जाए पदार्थों का निरूपण इसमें है इससे समवायाद्ग चतुर्थ अङ्ग का उपाद्ग है ॥
कहे का फिरसे कहना निरर्थक है जैसा नहीं, क्यों कि कहे पदार्थों को भी फिरसे विस्तार पूर्वक कहना

मन्दबुद्धि वाले शिष्य लोगों के अनुग्रह के लिये होता है उससे सार्थक है निरर्थक नहीं ।

यह प्रज्ञापना नामक उपाङ्ग भी सब जीव अजीव आदिक पदार्थों के ज्ञासन (कहने) से ज्ञात्र है और शास्त्र की आदि से बुद्धिमान् पुरुषों की प्रवृत्ति के लिये प्रयोजन आदि तीन और मङ्गल अवश्य कहना चाहिये नहीं तो वृथा कटकशाखाभर्दन की तरह कोई भी इसमें प्रवृत्त न होगा

इहा प्रयोजन दो प्रकार है, एक पर और दूसरा अपर है, पर भी दो प्रकार और अपर भी कर्त्तागत श्री तागत होने से दो प्रकार है, तथा ब्रह्मास्तिकनय के मत से देखिये तो आगम नित्य है और आगम के नित्य होजाने से कर्त्ता का अभाव ही है “जैसा के कहा है—यह द्वादशांगी कथी नहीं थी कथी है कथी न होगी ऐसा नहीं (किन्तु) ध्रुव है नित्य है ज्ञास्वती है”

पर्यायास्तिकनय के मत से देखिये तो आगम अनित्य है अनित्य का सद्भाव अवश्य होगा, तत्त्वदृष्टिसे देखिये तो आगम सूत्र और अर्थ उभयरूप है इसलिये अर्थ की अपेक्षा से नित्य और सूत्र की अपेक्षा से अनित्य होने से कर्त्ता का अवश्य सद्भाव है ॥

ग्रन्थकर्त्ता का अनन्तर प्रयोजन सत्त्वानुग्रह और परम्पर प्रयोजन अपवर्गप्राप्ति है “कहा है—के जो दुखी जीवों की सर्वज्ञ के कहे उपदेश का उपदेश देके कृपा करते हैं वो थोड़ेही काल में मुक्त हो जाते हैं,” अर्थ से कहनेवाले अरिहन्त को क्या प्रयोजन है क्यो के वह तो कृतकृत्य हैं और प्रयोजन विना अर्थरूप से कहने

का परिश्रम भी व्यर्थ है विनाप्रयोजन मूर्ख भी किसी कार्य में प्रवृत्त नहीं होता तो तीर्थंकर कैसे प्रवृत्त हुए कोई प्रयोजन इनको भी कहना चाहिये औसा न कहो, कारण के अर्थरूप से कहने का परिश्रम तीर्थंकर नामर्म के विपाक का उदय से होता है “कहा है के-तीर्थंकरनामकर्म अगलान धर्मदंशना के देने ही से भोगाजाता है”, अर्थात्-तीर्थंकरनामकर्म आधीनता से धर्मदंशनाव्यापार होता है उसकर्म का वह भोगही है कोई प्रयोजन अष्मदादिवत् उनको नहीं है ।

श्रोता का अनन्तर प्रयोजन जो अध्ययन कहा जायगा उसके अर्थ का ज्ञान है और परम्परप्रयोजन मोक्षप्राप्ति है, श्रोता विवक्षित अध्ययन को अर्थ से अच्छीतरह सुनकर ससार से विरक्त होते हैं, विरक्त होकर ससार से निकलने की इच्छा से सयममार्ग में यथागम प्रवृत्त होते हैं, यथागम सयम मार्ग में प्रवृत्त होने से सयम का प्रकर्ष होता है उससे सकल कर्मद्वय और उससे मोक्षप्राप्ति होती है, लिखा है के-सम्यक् पदार्थ ज्ञान से जीव विरक्त होते हैं, विरक्त हो क्रिया में आशक्त और क्रिया में आशक्त होने से परमगति को पञ्चवर्ते है ॥ इस ग्रन्थ में अन्निधेय जीव अजीव पदार्थ का स्वरूप है ।

सम्बन्ध दो प्रकार है उपायोपेय ज्ञावलक्षण दूसरा गुरुपर्वक्रमलक्षण, तहां पहिला नैयायिक के-जैसे कि वचनरूपापत्त प्रकरण उपाय और उन प्रकरण का परिज्ञान उपेय है । दूसरा गुरुपर्वक्रमलक्षण केवल श्रद्धानुसारि के-जैसा के सूत्रकार आगे कहेंगे, जानना चाहिये ॥

यह प्रज्ञापना नामक उपाङ्ग सम्यग्ज्ञान का कारण है, इसी हेतु परंपरा से मुक्तिपद को देनेवाला है, इसीसे स्वयं योगो व्रत है तोन्नी विघ्न की शान्ति के लिये आदि मध्य और अन्त में मगल कहाजाता है ॥

ग्रन्थ की आदि में मङ्गल निर्विघ्न आख्यपरिसमाप्ति के लिये है, मध्यमगल अथगृहीतज्ञास्य की स्थितिके लिये है, और अन्तमगल शिष्य प्रश्नियों के आख्य अव्यवच्छेद हो इसलिये है ॥

तृतीय पदात्मक यह प्रज्ञापना सूत्र है इसमें जीव अजीव आश्रय बन्ध संवर निर्जरा और मोक्ष का प्ररूपण किया है तहां प्रज्ञापना वज्रवक्तव्यता विशेष चरमपरिणाम सज्ञक पांच पदमें जीव अजीव की प्रज्ञापना, प्रयोगपद और क्रियापद में आश्रय (काय वचन मन कर्मयोग) की प्रज्ञापना, कर्मप्रकृतिपदमें बन्ध प्रज्ञापना, समुद्रघातपद में संवर निर्जरा बन्ध और मोक्ष की प्ररूपणा, बाकी स्थान आदि पदोंमें कही किसी कीसी प्रज्ञापना की है, ॥

अथवा इसमें द्रव्य क्षेत्र काल और भाव की प्रज्ञापना है क्योंकि इन चारपदार्थों के संवाय और कोई प्रज्ञापनीय पदार्थ नहीं है इही पदार्थों के जानने से तत्त्वज्ञानरूप परमपुरुषार्थ सिद्ध होता है इस कारण इसके पढ़ने पढ़ाने में अवश्य चतु करना चाहिये, परन्तु पढ़ने का अधिकार उरको है जोके मोक्षमार्ग का अभिलाषी और गुरुका आज्ञाकारी हो, और इसके देने का अवसर भी वही है। इतिशम् ॥

बनारस जैनप्रभाकर प्रेस नानकचट यती ।

॥ अथ श्रीपद्मवर्णा सूत्रानुक्रमणिका प्रारम्भ्यते ॥



विषय और प्रस्तावनादि

आदि मंगल "ववगय जस्मरण नए," यह गाथा
शास्त्र प्रस्तावना गाथा ५

पद्मवर्णा ठाणाइ इत्यादि ३६ पद इसग्रन्थमें है
उन की सख्या और वक्तव्यताधिकार
तथा ३६ पदों में पहला पद पद्मवर्णा नाम
कहै उसमें कितनी वक्तव्यता है सो कहते हैं, प
द्मवर्णा इस पद का अर्थ तो पहले हम कह चु
कहै इससे नहीं कहा

१ पद पद्मवर्णा नामक

पत्राक

२

३

४

विषय और प्रस्तावनादि

प्रज्ञापना के जीव अजीव से दो जेठ
रूपी अरूपी जेठ में अजीव पद्मवर्णा दो प्र०
अरूपी अजीव पद्मवर्णा धर्मास्ति अधर्मास्ति
आकाशास्ति काय १ दंश २ और प्रदेश ३ एव १
अष्टा समय १ एव १० भेद कहे
(अरूपी अजीव पद्मवर्णा ऊर्ध्व)

रूपी अजीव पद्मवर्णा स्कन्ध १ स्कन्ध दंश २
स्कन्धप्रदेश ३ और परमाणु पुद्गल ४ एव चार

तरह

पत्रांक

५

६

७

७

परमाणु पुद्गल वर्ण गन्ध रस स्पर्श और सस्यान
 जेद से ५ प्रकार कहे
 वर्ण परिणत पुद्गल पांच वर्ण से पांच तरह के
 गन्ध परिणत पुद्गल गन्ध के दो तरह न दो प्रकार
 रस परिणत पुद्गल रस के पांच जेद से पांच तरह
 स्पर्श परिणत पुद्गल छोट तरह है स्पर्श ८
 है डरसे
 सस्यान परिणत पुद्गल पांच प्रकार है सस्यान ५
 ही है
 पुद्गलों के जागे जेवखेन काल व० ते गंधने सुप्ति
 गंध परिणयावि इत्यादि जागे सर्व ५३० कहे है
 (अजीव पन्तवणा कही)

जीव पन्तवणा सनार अससार समापन्त जीव जे
 दसे दो प्रकार कही
 अससार समापन्त जीव पन्तवणा अनन्तर पर
 म्पर सिद्ध अससार समापन्त जेदने दो प्रकार है
 अनन्तर सिद्ध अससार समापन्त जीव पन्तवणा
 १५ भेद है एवं पनग्रह जेद सिद्धी के है
 परम्पर सिद्ध ससार समापन्त जीव पन्तवणा अ
 नेक जेद
 (अससार समापन्त जीव पन्तवणा कही)
 ससार समापन्त जीव पन्तवणा पांच प्रकार एक
 न्द्रियादि से कही
 एकेन्द्रिय संसार समापन्त जीव पन्तवणा पृथ्वी
 कायादि जेद से पांच तरह है

पृथ्वीकाय के जेद

अणुकाय के जेद

तेजस्काय के जेद

वायुकाय के जेद

वनस्पति काय के जेद गुच्छा गुल्म वल्ली
(एकेन्द्रिय संसार समापन्न जीव पन्त्रवणा कही)

{ इत्यादि

द्वीन्द्रिय संसार समापन्न जीव के अनेक जेद

(द्वीन्द्रिय संसार समापन्न जीव पन्त्रवणा)

त्रीन्द्रिय पन्त्रवणा के अनेक जेद उवाङ्मया इत्यादि

(त्रीन्द्रिय संसार समापन्न जीव पन्त्रवणा कही)

चौरिन्द्री पन्त्रवणा के अनेक जेद अधिधय पौत्ति

य इत्यादि

२३

२७

२८

२९

२९

२३

२५

२५

(चतुरिन्द्रिय संसार समापन्न जीव पन्त्र०)

पंचेद्रिय संसार समापन्न जीव पन्त्रवणा चार

गति के जेद से चार प्रकार

नारकी सात जेद

तिर्यग्योनिक त्रिविध जल थल खचर, इनके जेद

जेद मच्छादिक, उनके जेद जेट विस्तार से कहे

(तिर्यग्योनिक पंचेद्रिय संसार समापन्न०)

मनुष्य के जेद दो समूर्च्छिम गर्भज, कहां वह

पैदा होते है किस्तम्ह होते है इत्यादि एकोरक

आदि जेद, शक यवन आदि जेद, आर्य २

ब्राह्मी लिपि में १८ तरह का लेख्य विधान है

(मनुष्य पंचेद्रिय संसार समापन्न जीव प०)

१८

६२

१६

२७

१७

विषय और प्रश्नादि

पत्रांक

देवता चारप्रकार कहे जवनपति जोतिषी वान
व्यन्तर वैमानिक

जवनपति १० प्रकार असुरकुमारादि

वानव्यन्तर ८ जेदै किवर कि पुरुपादि

जोतिषी ५ प्रकार चन्द्र सूर्यादि

वैमानिक २ जेदै सौधमोदि देवलोक गन

और कल्पातीत, फिर इनके जेद कहे
(पंचद्विय ससार समापत्त जीव पद्मवणा कही)

॥ जीव पद्मवणा कही ॥

॥ पद्मवणा नाम प्रथम पद ज्ञा ॥

— ० —

॥ २ स्थान नामक पद का प्रारम्भ ॥

कहा बादर पृथ्वीकाय पर्याप्त के स्थान कहे

विषय और प्रश्नादि

पत्रांक

कहां बादर पृथ्वीकाय पर्याप्त के स्थान कहे

कहां सूक्ष्म पृथ्वीकाय पर्याप्त पर्याप्त के स्थान हैं

बादर अणुकाय पर्याप्त के स्थान का प्रश्न

बादर अणुकाय पर्याप्त के स्थान का प्र०

बादर तेजस्काय पर्याप्त के स्थान का अधि०

बादर तेजस्काय पर्याप्त के स्थान का नि०

सूक्ष्म तेजस्काय पर्याप्त पर्याप्त के स्थान का प्र०

बादर वायुकाय पर्याप्त के स्थान का निर्णय

बादर वायुकाय पर्याप्त के स्थान का निर्णय

सूक्ष्म वायुकाय पर्याप्त पर्याप्त के स्थान का प्र०

बादर वनस्पतिकाय पर्याप्त के स्थान का अधि०

बादर वनस्पतिकाय पर्याप्त के स्थान का प्र०

सूक्ष्म वनस्पति पर्याप्त पर्याप्त के स्थान का

७८

७९

८०

८१

८१

८२

८२

८२

८३

८३

८४

८४

७३

७३

७४

७५

७६

७६

विषय और प्रस्तादि	पत्राक	विषय और प्रस्तादि	पत्राक
कहाँ द्वीन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान कहे	८५	धूमप्रभा के नारकी का प्रश्न	११
कहाँ त्रीन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान कहा	८५	तमोपयिबी के पर्याप्त अपर्याप्त नारकी का	१२
कहाँ चौरिन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान कहे	८६	तमलमा नारकी प० अप० स्थान का प्रश्न	१२
कहाँ नारकी पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान कहे	८७	पर्याप्त अपर्याप्त पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च के स्थान	१३
कहाँ नारकी वसते हैं	८७	मनुष्य पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान प्रश्न, उपपात,	१४
कहाँ रत्नप्रभापृथिवी के पर्याप्त अपर्याप्त नारकी	८८	समुद्रघात, स्वस्थान	
वसे है और उनके स्थान कहे		भवनवासि देव प० अप० स्थान का प्रश्न भवन	
कहाँ शर्कराप्रभापृथिवी के पर्याप्त अपर्याप्त नार	८९	वासि के रहने का स्थान और बहुतसा वर्णन	१४
की के स्थान कहे, कहा वह वसे है		किया है	
वालुकामभाके पञ्जत अपज्जत नारकी के स्थान	८९	असुरकुमार स्थान प्रश्न कहा रहते है इत्यादि	
और वचन का	९१	असुरकुमारों का वर्णन लोकपाल अग्रमहिषी	११
पकप्रभा के नारकी का प्रश्न	९१	पर्यन्त अनीक आदिका वर्णन है	१०२
		दक्षिण दिशा के असुरकुमारों का आधिकार	

उत्तर दिशा के असुरकुमारों का अधिकार

नागकुमारों के स्थान रहने का स्थान

दक्षिण के नागकुमारों का अधिकार

उत्तर के नागकुमारों का अधिकार

सुवर्णकुमारों के स्थान और रहना कहाँ है

दक्षिणसुवर्णकुमारों का अधिकार

उत्तरसुवर्णकुमारों का अधिकार

चौवर्ग असुराण इत्यादि गाथा ७, काला असुर

रकुमारा इत्यादि गाथा ४ वही है

बानव्यन्तर देवों के स्थान और वसने का प्र०

पिसाचदेवाधिकार, रहना उनका

दक्षिणपिसाचाधिकार

उत्तर पिसाचों में विशेष कथन

एव भूतो का भी अधिकार जाणना यात्रु-गंधर्व

पर्यन्त कहना इत्यादि

अणपत्नी पणपत्नी देवतों के स्थान, रहना इ-

त्यादि अधिकार विस्तार से कहा है

जातिपी देवताओं के स्थान, रहना इत्यादि नि०

वैमानिकों के स्थान, रहने का वर्णन विस्तार से

सौधमदेव स्थान, कहाँ है इत्यादि वर्णन

शक्रेंद्र का वर्णन विस्तार से

इंशानदेवस्थान कहाँ है इत्यादि अधिकार

इंशानेन्द्राधिकार विस्तार से

सनत्कुमार देवताओं का अधिकार

सनत्कुमारेन्द्र का अधिकार

माहिन्द्र देवस्थानाधिकार

विषय और प्रश्नादि

पत्रांक

विषय और प्रश्नादि

पत्रांक

ब्रह्मदेव स्थान का अधिकार
लान्तक देव लोकाधिकार
महा शुक्रदेव लोक स्थानाधिकार
सहस्रार देवलोक का अधिकार
आनत प्राणत देवलोक का प्रश्न
आरण अच्युत देवलोकाधिकार
अवस्तन ग्रैवेयक विमान का प्रश्न
मध्यम ग्रैवेयक विमान के विषय का प्रश्न
उपरिम ग्रैवेयक विमान का निर्णय
अनुत्तरोपपातिक प० अ० देवस्थान और वह
कहा वसे है
कहा सिद्धो के स्थान और कहा सिद्ध रहते है
इत्यादि ईपत्प्राग्वाराधिकार तथा सिद्धो का,

१२४
१२४
१२५
१२६
१२६
१२६
१२८
१२९
१२९

सिद्धो के वर्णन विषय की गाथा कई एक
(स्थान नामक दूसरा पद पूर्ण)
३ पद का प्रारम्भ ऊँचा है।
दिसिगइइदियकाए यह द्वार निरूपण गाथा २
प्रथम दिग्द्वार
दिसाणवाएण सब्बतोवा जीवा पञ्चच्छिमेण
इत्यादि
सर्वस्तोक पृथिवीकाय दक्षिण मै इत्यादि
सर्वस्तोक अण्काय पश्चिम मे
सर्वस्तोक तेजस्काय दक्षिण उत्तर मे
सर्वस्तोक वायुकाय पूर्व मे

१३०
१३२
१३७

१३८
१३८
१३८
१३८

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
सर्वस्तोक वनस्पतिकाय पश्चिम मे	१३८	सर्वस्तोक सनत्कुमार देव पूर्व पश्चिम	१४३
सर्वस्तोक द्वोन्दित्रय पश्चिम दिशि मे	१३९	एवं माहिद्र में, एव सहस्रार अ्यादि देवलोक प्र०	१४३
सर्वस्तोक त्रीन्द्रिय पश्चिम दिशि मे	१३९	सर्व थोफा सिद्ध दक्षिण उत्तर दिशा में	१४५
सर्वस्तोक चौरिन्द्री पश्चिम दिशि मे	१३९	॥ पहला दिशा द्वार ऊँचा ॥	
सर्व थोफा नारकी पूर्व पश्चिम में	१३९	॥ दूसरा गति द्वार चला है ॥	
एव सातो नरक के नारकी का प्रश्न	१३९	एह नारकी तिर्यच मनुष्य देव और सिद्धों में कौ	
सर्व थोफा पंचेन्द्रिय तिर्यच पश्चिम मे	१४१	न किस्से थोफा कौन किस्से वज्रत कौन किस्से	
सर्व थोफा मनुष्य दक्षिण उत्तर मे	१४२	तुल्य और कौन किस्से विशेषाधिक है इत्यादि	१४५
सर्व थोफा नवनवासी देव पूर्व पश्चिम	१४२	एह नारकी तिर्यच तिर्यचणी मनुष्य मनुष्यणी दे	
सर्व थोफा वानव्यन्तर देव पूर्व पश्चिम	१४२	वता देवी और सिद्ध इन छाठों गति में कौन कि	
सर्व थोफा जोतिपी देव पूर्व पश्चिम	१४२	स्से अल्प बहुत तुल्य और विशेषाधिक है	१४५
सर्व थोफा सौधर्म में देव पूर्व पश्चिम	१४२	॥ दूसरा द्वार हुआ ॥	
ईजान मे सौधर्म की तरह है	१४३	॥ तिसरा द्वार प्रारम्भ ॥	

विषय और प्रश्नादि	पत्राक	विषय और प्रश्नादि	पत्राक
यह सङ्गद्वय एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय पंचेन्द्रिय अनिन्द्रिय इन में कौन किस्से अल्प अधिक तुल्य और विशेषाधिक होय	१४६	॥ तिसरा द्वार समाप्त हुआ ॥ ॥ चौथा कायद्वार कहते हैं ॥	१४८
सङ्गद्वय एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय पंचेन्द्रिय अपर्याप्त को में कौन किस्से अल्पादि	१४६	सकाय पृथिवीकाय अप्रकाय तेजस्काय वायुकाय वनस्पतिकाय त्रसकाय अकायिकी में अल्पादि सकाय पृथिवीकाय अप्रतेज वायु वनस्पति और त्रसकाय अपर्याप्तक में अल्पादि प्रश्न	१४९
एकेन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त का अल्पादि द्वीन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्तका अल्पबहुत्वादि त्रीन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्तका अल्पबहुत्वादि चौरिन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त का अल्पादि पंचेन्द्रिय पर्याप्ता अपर्याप्त का अल्पादि	१४७	सकाय पञ्जत अपञ्जत में अल्पादि पृथिवीकाय पञ्जत अपञ्जत में अल्पादि अस्काय पञ्जत अपञ्जत में अल्पबहुत्वादि तेजस्काय पञ्जत अपञ्जत में अल्पादि वायुकाय पञ्जत अपञ्जत में अल्पादि वनस्पतिकाय पञ्जत अपञ्जत में अल्पादि	१४०
सङ्गद्वय एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय पंचेन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त में कौन किस्से अल्पादि प्रश्न	१४८		

त्रसकाय पर्याप्तमं कौन किस्से थोड़ा ड०
यह सकाय पृथिवीकाय अस्काय तेजस्काय वा
युकाय वनस्पतिकाय और त्रसकाय पर्या० अ

पर्याप्त कौन किस्से थोड़ा इत्यादि
यह सूक्ष्म पृथिवीकाय अ० तेज वायु वनस्पति

और निगोद इन में कौन किस्से थोड़ा ड०

सूक्ष्म अ० पर्याप्त पृथिवी अ० तेज वायु वनस्पति
और निगोद कौन किस्से थोड़ा वज्रत इत्यादि

सूक्ष्म पर्याप्त पृथिवीकाय अ० का मन्त्र

(तिसरा द्वार पूर्ण)

॥ चौथा द्वार कहै है ॥

सूक्ष्म पर्याप्त पर्याप्त में कौन किस्से थोड़ा

सूक्ष्म पृथिवीकाय पर्याप्त अ० पर्याप्त कौन किस्से

१५१

१५१

१५१

१५२

१५२

१५३

१५३

एव अप्काय मन्त्र निर्णय

सूक्ष्म तेजस्काय मन्त्र निर्णय

एव वायु वनस्पति निगोद मन्त्र निर्णय

यह वादर पृथिवी अ० तेज वायु वनस्पति म

त्येक शरीर वादर वनस्पति वादर निगोद और

वादर त्रसकायिको मैं कौन किस्से थोड़ा ड०

वादर पृथिवीकाय अ० अ० पर्याप्त मन्त्र निर्णय

वादर पृथिवीकाय अ० अ० पर्याप्त मन्त्र निर्णय

वादर पृथिवीकाय अ० अ० अ० मन्त्र

सूक्ष्म पृथिवीकाय अ० अ० यावत् वादर पृथिवी

काय अ० मैं कौन किस्से थोड़ा इत्यादि मन्त्र

निर्णय

(चौथा द्वार पूर्ण)

१५०

१५४

१५४

१५५

१५७

विषय और प्रवृत्ति	पत्रांक	विषय और प्रवृत्ति	पत्रांक
<p>॥ पंचम द्वार आरम्भ ॥</p> <p>जीव सयोगी मन्त्रयोगी वाग्योगी काययोगी और अयोगी इनमें कौन किस्से थोड़ा घणा इ०</p> <p>(पंचम द्वार पूर्ण)</p> <p>॥ ठठा द्वार कहै है ॥</p>	१६७	<p>यह जीव सम्यग्दृष्टी मिथ्यादृष्टी सम्यङ्मिथ्यादृष्टी इनमें कौन किस्से थोड़ा घणा इत्यादि</p> <p>(नवा द्वार हुआ)</p> <p>॥ दशम द्वार कहै है ॥</p>	१६९
<p>जीव सर्वद खीविद पुरुषवेद नपुंसकवेद और अवे दक इनमें कौन किस्से थोड़ा घणा इत्यादि प्रश्न</p> <p>(ठठा द्वार पूर्ण हुआ)</p> <p>॥ सातमा द्वार कहै है ॥</p>	१६७	<p>यह जीव आभिनिवेशिज्ञानी श्रुतज्ञानी श्रव धिज्ञानी मनपर्यवज्ञानी केवलज्ञानी इनमें कौन किसे थोड़ा इत्यादि</p>	१६९
<p>यह जीव सलेश्य कृष्णलेशी नीललेशी कापोत लेशी तेजोलेशी पद्मलेशी शुक्ललेशी और अलेशी इनमें कौन किस्से थोड़ा और घणा इत्यादि</p> <p>(सातमा द्वार हुआ)</p>	१६८	<p>एव अज्ञान प्रश्न निर्णय</p> <p>एव ज्ञान ५ अज्ञान ४ प्रश्न समुदाय से</p> <p>(१० द्वार हुआ)</p> <p>॥ ११ द्वार कहै है ॥</p>	१७०
		<p>यह जीव चक्षुदर्शनी श्रवणदर्शनी श्रवणदर्शनी</p>	१७०

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
केवलदर्शनी इनमे कौन किस्से थोडा घणा है (११ द्वार पूर्ण ज्ञाया) ॥ १२ द्वार कहै है ॥ जीव सयत असयत सयतासयत नो संयत नो असयत नो सयतासयत इनमे कौन किस्से थो डा इत्यादि (१२ वां द्वार ज्ञाया) ॥ १३ वा द्वार कहै है ॥ यह जीव साकारोपयोगी अनाकारोपयोगी में कौन किस्से थोडा घणा इत्यादि प्रश्न (१३ वां द्वार पूर्ण ज्ञाया) ॥ १४ वां द्वार कहते हैं ॥ जीव अनाहारक अनाहारक में कौन किस्से थोडा	१७०	इत्यादि (१४ वां द्वार पूर्ण ज्ञाया) ॥ १५ वां द्वार कहै है ॥ जीव नासक अनासक में कौन किस्से थोडा (१५ वां द्वार कहा) ॥ १६ वां द्वार कहते हैं ॥ जीव परित्त अपरित्त नो परित्त नो अपरित्त में कौन किस्से थोडा घणा (१६ द्वार ज्ञाया) ॥ १७ वां द्वार कहते हैं ॥ जीव पर्याप्त अपर्याप्त नो पर्याप्त नो अपर्याप्त में कौन किस्से थोडे घणे है (१७ द्वार ज्ञाया)	१७१
	१७०		१७१
	१७१		१७२

विषय और प्रश्नादि	पत्राक	विषय और प्रश्नादि	पत्राक
॥ १८ द्वार कहते हैं ॥ यह सूक्ष्म वादर नोसूक्ष्म नोवादरो में कौन थोड़ा (१८ द्वार ऊँचा) ॥ १९ वा कहै है ॥ यह जीव सजी असजी नो सजी नो असजी मे कौन किस्से थोड़ा इत्यादि (१९ द्वार ऊँचा) ॥ २० द्वार कहै है ॥ जीव भवसिद्धिक अभवसिद्धिक नो भवसिद्धिक नो अभवसिद्धिकी में कौन किस्से थोड़ा इ० (२० द्वार ऊँचा) ॥ २१ वा द्वार कहै है ॥ यह धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्ति	१७२	काय जीवास्तिकाय पुद्गलास्तिकाय अष्टासमम मे कौन किस्से द्रव्यार्थता से थोड़ा घणा इत्यादि एवं प्रदेयार्थताने भी प्रश्न निर्णय धर्मास्तिकाय आदि द्रव्यार्थ प्रदेयार्थ से प्रश्न (२१ द्वार हुआ) ॥ २२ वा द्वार कहै है ॥ जीव धरम अचरम में कौन किस्से थोड़ा घणा इत्यादि (२२ वां द्वार हुआ) ॥ २३ वा द्वार कहै है ॥ यह जीव पुद्गल अष्टासमय सर्वद्रव्य सर्वप्रदेय सर्व पर्याय में कौन किस्से थोड़ा इत्यादि नि० (२३ द्वार पूर्ण हुआ)	१७३ १७३ १७४ १७७ १७८

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
<p>॥ २० वा द्वार कहै है ॥ क्षेत्रानुपातसे उर्ध्वलोक आदि में जीवों की संख्या (२० वा द्वार हुआ) ॥ २५ वा कहते है ॥</p>	१७८	<p>शी अनन्तप्रदेशी स्कन्ध इनमें द्रव्यार्थ प्रदेशार्थ द्रव्यार्थ प्रदेशार्थसे कौन किस्से थोड़ा इत्यादि एक प्रदेशावगाढ संख्यात असंख्यात प्रदेशाव गाढ पुद्गलो में द्रव्यार्थ प्रदेशार्थ द्रव्यार्थप्रदेशा र्थसे कौन किस्से थोड़ा घणा एक समयस्थितिक संख्यात असंख्यात सम स्थितिक पुद्गल में द्रव्यार्थ प्रदेशार्थ द्रव्यार्थ प्र देशार्थ से तथैव</p>	११३
<p>जीव आयुर्कर्म के बधक अवधक अपर्याप्त प र्याप्त सुप्त जागर समोहित असमोहित सातावे दक असातावेदक इन्द्रियोपयोगयुक्त नोइन्द्रियो पयोगयुक्त साकारीपयोगयुक्त अनाकारीपयोग युक्त में कौन किस्से थोड़ा घणा इत्यादि (२५ वा द्वार कहा)</p>	१११	<p>एवं एकगुण काले का प्रश्न (२६ द्वार पूर्ण ज्ञाया) सर्व जीव अल्प बहुत्व महा दंढक ॥ तीसरा पद पूर्ण ज्ञाया ॥</p>	११७
<p>क्षेत्रानुपात से पुद्गल का त्रैलोक्य में अल्पादि यह परमाणु पुद्गल संख्यातप्रदेशी असंख्यातप्रदे</p>	११३		११८

॥ चौथा पद आरम्भ ॥

नारकी की कितने काल की स्थिति पर्याप्त तथा अपर्याप्त नारकी की कितनी स्थिति रत्नप्रभादि सात नरक के पर्याप्त अपर्याप्त नारकी की स्थिति का प्रश्न

देवता की कितने काल की स्थिति पर्याप्त अपर्याप्त देवता की कितनी स्थिति

एव भवनवासी आदि देवता देवी पर्याप्त अपर्याप्त का की स्थिति का निर्णय

पृथिवीमाय की कितने काल की स्थिति एवं पर्याप्त अपर्याप्त पृथिवीमाय की स्थिति का प्रश्न

सूक्ष्म पृथिवीमाय की स्थिति का प्रश्न

पर्याप्त अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीमाय की स्थिति अपर्याप्त स्थिति प्रश्न

पर्याप्त अपर्याप्त अपर्याप्त अपर्याप्त वादर अपर्याप्त तथा पर्याप्त अपर्याप्त वादर अपर्याप्त

एव वायुमाय वनस्पतिमाय पर्याप्त अपर्याप्त की स्थिति सूक्ष्म वादर आदि की स्थिति का प्रश्न

द्वीन्द्रिय तथा पर्याप्त अपर्याप्त की स्थिति एव त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त स्थिति

पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च योनिक की स्थिति एव पर्याप्त अपर्याप्त पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च की स्थिति

संमूर्च्छिम पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च तथा पर्याप्त अपर्याप्त संमूर्च्छिम पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च की स्थिति

२०५

२०५

२०६

२०८

२०९

२०९

२१२

२१२

२१२

२१२

२१३

२१३

२१४

२१४

२१५

२१६

२१६

२१७

२१७

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
गर्भव्युत्क्रान्तिक पचेद्विषय तिर्यच तथा पर्या० अ पर्या० गर्भव्युत्क्रान्तिक पचेद्विषय की स्थिति एवं जलचर पर्या० अ पर्या० पचेद्विषय तिर्यच स्थिति	२१७	एव मनुष्य पञ्जत्त अपञ्जत्त समुच्छिप्त गर्भज मनुष्य स्थिति विषय	२२२
एवं समुच्छिप्त पर्या० अ पर्या० तथा गर्भव्युत्क्रा न्तिक पर्या० अ पर्या० पचेद्विषय जलचर स्थिति	२१७	वानव्यन्तर देवता देवी पर्या० अ पर्या० स्थिति ज्योतिष्क देवता देवी पर्या० अ पर्या० स्थिति	२२२
एव सजेद स्थलचर पचेद्विषय तिर्यच स्थिति	२१८	चन्द्रविमान में देवता पर्या० अ पर्या० स्थिति सूर्यविमान में देवता तथा देवी प० अ प० स्थिति	२२४
उरपरिसर्प स्थलचर पर्या० अ पर्या० पचेद्विषय स्थिति	२१९	ग्रहविमान में देवता तथा देवी प० अ प० स्थिति नक्षत्र विमान देव देवी प० अ प० स्थिति	२२४
समुच्छिप्त पर्या० अ पर्या० स्थलचर उरपरिसर्प पचेद्विषय	२२०	तारा विमान देव देवी प० अ प० स्थिति वैमानिक देव देवी प० अ प० की स्थिति	२२६
एवं भुजपरि सर्प की स्थिति	२२०	सौधर्म देव देवी पर्या० अ प० परिगृहीत अ प० रिगृहीत पर्या० अ प० एवं झालात्रा १२ में	२२६
एव सचर पचेद्विषय तिर्यच स्थिति	२२१	स्थिति	२२६

विषय और प्रस्तादि	पत्रांक	विषय और प्रस्तादि	पत्रांक
एव ईशान देव देवी प० अप० आदि की स्थिति	२२७	असुरकुमार के अनन्त पर्याय कहे	२२२
सनत्कुमार देवी देव प० अप० आदि स्थिति	२२८	एव जैसे नारकी तथा असुरकुमार के अनन्त पर्याय कहे तैसे नागकुमार यावत् स्तनितकुमार की कहना	२२४
ब्रह्मदेव देवी से लेके अच्युत देवलोक के देव ताओ की स्थिति सविशेष	२२९	पृथिवीकाय के अनन्ता पर्याय कहे	२२४
नव ग्रैव्यक विमान देव प० अप० स्थिति	२३२	अण्काय के अनन्ता पर्याय कहे	२२४
विजय वैजयन्त जयन्त अपराजित देव प० अप० स्थिति	२३५	तेजस्काय के अनन्त पर्याय	२२५
सर्वार्थसिद्ध देव प० अप० स्थिति	२३५	वायुकाय के अनन्त पर्याय	२२५
(चौथा स्थिति पद पूर्ण हुआ)		वनस्पतिकाय के अनन्त पर्याय	२२५
॥ पाचमा पद आरम्भ ॥		वैरिद्रो के अनन्त पर्याय	२२६
कितने भेदे पर्यव है, जीव अजीवके पर्यन्त नारकी के अनन्ता पर्याय कहे	२३५	तैरिद्रो चौरिद्रो तथा पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च के अनन्ता पर्याय	२२६
	२३७	मनुष्य के अनन्ता पर्याय	२४७
			२४७

जघन्य उत्कृष्ट अजघन्यानुत्कृष्ट अवगाहना के
 नारकी के अनन्ता पर्याय
 जघन्य उत्कृष्ट मध्यम स्थिति के नारकी के अ-
 नन्त पर्याय कहे
 जघन्य उत्कृष्ट मध्यम गुण कालक नारकी के
 पर्यव वक्तव्यता
 जघन्य उत्कृष्ट मध्यम आभिनिवोधिक ज्ञानी
 नारकी की पर्यव वक्तव्यता
 एवं श्रुतज्ञानी तथा अवधिज्ञानी नारकी के प-
 र्यव कहना अज्ञान भी कहना
 जघन्य उत्कृष्ट मध्यम चक्षुदर्शनी नारकी के
 अनन्ता पर्याय कहे
 एवं अचक्षुदर्शनी अवधिदर्शनी को कहना

जघन्य उत्कृष्ट मध्यम अवगाहना के असुरकुमार
 को अनन्ता पर्याय कहे
 एवं स्तनितकुमार पर्यन्त कहना
 जघन्यावगाहना के पृथिवीकाय पर्यवधिकार
 एवं उत्कृष्ट मध्यमावगाहना के पृथिवी पर्यव
 जघन्य मध्यम उत्कृष्ट स्थितिक पृथिवी पर्यव
 जैसे पहले कहे तैसे सर्व आलावा वनस्पतिकाय
 पर्यन्त सर्व वक्तव्यता कहनी
 जघन्यावगाहनादि द्वीन्द्रिय पर्याय वक्तव्यता
 एवं त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय पर्यव वक्तव्यता धिकार
 जघन्यावगाहनक पञ्चेन्द्रिय तिर्यच पर्यव व-
 क्तव्यताधिकार
 जघन्य आदि स्थितिक पंचेन्द्रिय तिर्यच पर्यव

२४८

२५२

२४९

२५२

२५०

२५३

२५१

२५३

२५१

२५३

२५१

२५७

२५२

२५८

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
जघन्यगुण कालकादि पचेद्रिय तिर्यच पर्यव जघन्यादि आभिनवोधिकज्ञानी पचे० तिर्य० पर्यव	२५८ २५९	केवलज्ञानी मनुष्य के अनन्ता पर्यव कहे अजीव पर्यव कितने भेदे अरूपी अजीव पर्यव दशभेद कहे हैं रूपी अजीव पर्याय चार भेद कहे परमाणु पुद्गल पर्यव वक्तव्यताधिकार द्विप्रदेशी आदि स्कन्ध पर्यव वक्तव्यताधिकार एक प्रदेशावगाढ पुद्गल पर्यव मश्र एक समयस्थितिक पुद्गल पर्यव मश्रीत्तर एकगुण कालक पुद्गल पर्यव मश्र जघन्यावगाह द्विप्रदेशी आदि स्कन्ध पर्यव जघन्यस्थितिक परमाणुपुद्गल पर्यवाधिकार जघन्यगुणकाल आदि परमाणुपुद्गल पर्यवाधि० ८ स्पष्ट की वक्तव्यता कहना	२६५ २६६ २६६ २६६ २६७ २६७ २६९ २७० २७१ २७२ २७५ २७५ २७६
जघन्यावधिज्ञानी पचेद्रिय तिर्यच पर्यव उरुष्टावधिज्ञानी इसीतरह से कहना अवधिज्ञानी तथा विभगज्ञानी कहना जघन्यावगाही मनुष्य के कितने पर्याय कहे जघन्यस्थितिक मनुष्य के कितने पर्याय कहे जघन्यगुणकालक मनुष्य के पर्याय जघन्याभिनवोधिकर ज्ञानी मनुष्य के पर्यव जघन्यावधिज्ञानी मनुष्य के पर्यव कितने है जैसे अवधिज्ञानी तैसे मन पर्यव ज्ञानी	२५९ २६० २६१ २६१ २६१ २६२ २६२ २६३ २६४ २६४		

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
(पाचमा पद पूर्ण हुआ)		एवं अप्र तेज वासु वनस्पतिकाय उपपात विरहकाल	२८९
॥ छठा पद झारम्भ ॥		ह्रीन्द्रिय उपपात विरहकाल, त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय उपपात विरह	२८९
नरक गति में कितने काल विरह है उपपातका तिर्यंच गति से कितना विरह उपपात मे	२८६	सम्पृच्छिम पंचेन्द्रिय तिर्यंच उपपात विरहकाल	२८९
मनुष्य गति, देवगति, और सिद्धिगति से उप	२८६	गर्भव्युत्क्रान्तिक पंचेन्द्रिय तिर्यंच उपपात विरह	२८९
जने का कितना विरह	२८६	हकाल	२८९
एव उद्वर्तना भी चारों गति में कहना	२८७	सम्पृच्छिम तथा गर्भज मनुष्य उत्पत्ति विरहाकार	२८९
रत्नप्रभा आदि सात नरक पृथिवी से उपपात	२८७	सौधर्म आदि १२ देवलोक देवोत्पत्ति विरह	२९०
विरह काल	२८७	कालाधिकार	२९०
असुरकुमार आदि यावत्स्तनितकुमार पर्यन्त	२८८	त्रैवेयिक विमान देवोत्पत्ति विरह, तथा विजय	२९१
उपपात विरह काल	२८८	वैजयन्त जयन्त अपराजित देवलोक देवोप	२९१
पृथिवी काय उपपात विरहकालाधिकार	२८८	पात विरहकालाधिकार	२९१

विषय और प्रश्नादि	विषय और प्रश्नादि	पत्राक	पत्राक
सवार्थसिद्ध विमान देवोपपात विरहकालप्रमाण सिद्धोपपात विरहकालप्रमाण रत्नप्रभा आदि पृथिवी के नारकी का च्यवन काल विरहाधिकार एवं सिद्धो को छोड़ के अनुत्तर वि मान तक च्यवन काल विरहाधिकार (२ द्वार हुआ पूर्ण) नारकी सान्तर उपजै के निरन्तर उपजै, मनुष्य देव सान्तर उपजै के निरन्तर, रत्नप्रभा आदि ७ पृथिवी के नारकी सान्तर उपजै के निरन्तर, असुर कुमार सान्तर उपजै के निरन्तर, एवं स्त नितकुमार पर्यन्त कहा, पृथिवीकाय यावद्वन स्पतिकाय द्वीद्रिय यावत्पंचेद्रिय तिर्यच मनुष्य	*सौधर्म आदि देवलोक यावत् सिद्ध सान्तर उप जै के निरन्तर, एवं उद्वर्त्तनाभी सिद्धो को छोड़ कर कहनी (३ द्वार हुआ पूर्ण) नारकी एक समय मै कितने उपजै, एवं ७ नरक के नारकी कहे, असुरकुमार एक समय मै कित ने उपजै, एवं स्तनितकुमार पर्यन्त कहना पृथिवीकाय यावद्वनस्पतिकाय एक समय मै कि तने उपजै वेरिद्रिय एक समय मै कितने उपजै, एवं त्रीन्द्रिय वर्तु रिद्रिय संमुखिम पंचेद्रिय तिर्यच, गर्जव्यु त्क्रांतिक पंचेद्रिय तिर्यच, समुच्छिम मनुष्य	२९१ २९१ २९१ २९१	२९२ २९३ २९३ २९४

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
वानव्यन्तर जोतिषी सोधर्म श्रुति यावत् अनुत्तर। त्रिमान देव एक समय में कितने उपजै	२९४	पृथिवीकाय कहा से उपजै इत्यादि वक्तव्यता	३०४
सिद्ध एक समय में कितने सीऊँ	२९५	एव श्रुत्तेज वायु वनस्पति काय जी कहा	३०७
नारकी एकसमय में कितने चवै इत्यादि जैसे		बोरिद्री तेरिद्री चौरिद्री जैसे तेजो वायु कहे	३०७
उपपात कहा तैसे चवन सिद्धों को लोह के कहना		तैसे देव वर्ज जानना	
यावत् अनुत्तरोपपात के देव पर्यंत कहा	२९५	पंचेद्रिय तिर्यच योनिक कहां से उपजै इत्यादि निर्णय	३०७
(५ द्वार पूर्ण ज्ञात्रा)		मनुष्य कहा से उपजै,	३०८
नारकी कहा से उपजै, क्या नारकी से उपजै ति		वानव्यन्तर देवता कहां से उपजै	३०९
र्यच से मनुष्य से देव से उपजै	२९५	एव वैमानिक देव वक्तव्यताधिकार	३०९
रत्नप्रज्ञा का नारकी कहां से उपजै इत्यादि सात		गैवेयक देव, अनुत्तर विमान देव एक समय में	
नरक के नारकी का अधिकार	३०९	कितने उपजै	३११
असुरकुमार कहां से उपजै इत्यादि यावत् स्त		(५ मा द्वार पूर्ण ज्ञात्रा)	
नितकुमार पर्यंत	३०४	नारकी अनुन्तर निकल के कहां जाय कहां उपजै	३१२

विषय और प्रश्नादि	पत्राक	विषय और प्रश्नादि	पत्राक
असुरकुमार अनन्तर निकल के कहा जाय कहाँ उपजै	३१२	पृथिवीकाय कितना आयु शेष रहे पर जव आयु बाधै एव यावत् चौरिद्वी	३१५
पृथिवीकाय अनन्तर निकल के कहाँ जाय कहाँ उपजै	३१३	पंचेन्द्रिय तिर्यच कितना आयु शेष रहने से पर जव का आयु बाधै	३१५
एव अप् "तेज वागु, मनुष्य वर्ज," वनस्पति चौरिद्वी तौरिद्वी चौरिद्वी जाणना	३१३	एव मनुष्य वानव्यन्तर जोतिपी वैमानिक जैसे नारकी कहा तैसे कहना	३१७
पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिक अनन्तर निकल कहा जाय कहाँ उपजै	३१३	कितने प्रकार आयुबन्ध कहा, ठ प्रकार कहा नारकी के ठ प्रकार आयु बन्ध कहा एव २४	३१७
एवं जैसे जिनका उपपात कहा तैसे उद्घर्तना श्री कहनी	३१३	जीव जातिनाम निहत्तायु की कितने आकर्ष से करै दंरुक मे कहना	३१७
(६ द्वार पूर्ण ज्ञाया)		नारकी जातिनाम निहत्तायु की कितने आकर्ष से करै	३१७
नारकी कितना आयु शेष रहै तब पर जव का आयु बाधै एव २४ दंरुक मे	३१५	एवं गति स्थिति अग्रगाहन प्रदेय अनुज्ञाव नाम	३१८

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
जघन्य १। ५। ३। उत्कृष्ट ८ आकर्षसे जाति नामनिहत्तायु आदि की करनेवाले जीवों में कौन किसे थोड़ा पणा इत्यादि अधिकार ॥ व्युत्क्रान्ति पद छठा पूर्ण हुआ ॥ ॥ सातवां पद का आरम्भ हुआ ॥ नारकी कितने कालसे आनप्राण स्वासोत्स्वास लेवै असुरकुमार कितने कालसे आनप्राण स्वासोत्स्वा एवं नागकुमार यावत्स्तिनितकुमार कितने काल से आनप्राण स्वासोत्स्वास लेवै	३१९	पृथिवीकाय वेमात्रा से आनप्राण स्वासोत्स्वास लेवै जोतिषी कितने कालसे एव सौधर्म आदि देव कितने काल से लेवै गैवेयक देव यावत्पंचानुत्तर देव कितने कालसे आनप्राण स्वासोत्स्वास सर्वार्थसिद्ध विमानवासी देव कितने काल से स्वाश्वोत्स्वासादि लेवै (सातवां उत्स्वास पद हुआ) ॥ आठवां पद कहते हैं ॥ दश आहार आदि संज्ञा कही	३२१ ३२१ ३२३ ३२४ ३२४

नारकी को १० सज्ञा होती है
असुरकुमार को १० सज्ञा होती है एवं स्त-
नितकुमार तक पृथिवीकाय आदि वैमानिक

पर्यन्त कहा
नारकी क्या आहार संज्ञोपयुक्त के भयसज्ञोपयुक्त

इत्यादि प्रश्न
आहारसज्ञोपयुक्त यावत्परिग्रहसज्ञोपयुक्त नारकी

का अल्प बहुत्व

तिर्यच क्या आहार यावत्परिग्रह सज्ञोपयुक्त
तिर्यच आहार आदि सज्ञोपयुक्त का अल्पादि
मनुष्य क्या आहार स०

आहारादि सज्ञोपयुक्त मनुष्याल्पबहुत्व
देवता क्या आहार सज्ञोपयुक्त है के यावत्परि

३२५

३२५

३२६

३२६

३२६

३२६

३२७

३२७

आहारादि १० सज्ञोपयुक्त देवाल्पबहुत्व वक्तव्यता
(आठवा पद समाप्त हुआ)

॥ नवां पद कहते हैं ॥

कितने प्रकार योनि कही, तीन प्रकार योनि कही
नारकी के क्या सीतयोनि उच्चयोनि शीतोष्णयोनि
असुरकुमार के कौन योनि कही एवं स्तनित—

पृथिवीकाय के कौन योनि, एवं अप् वायु वन
स्पति द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय को योनि
कहना

तेजस्काय के शीत योनि नहीं

३२८

३२८

३२८

३२९

३२९

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
जघन्य १।२।३। उत्कृष्ट ८ आकर्षसे जाति नामनिहत्तायु आदि को करनेवाले जीवों में कौन किस्से थोड़ा पणा इत्यादि अधिकार ॥ व्युत्क्रान्ति पद छठा पूर्ण हुआ ॥ ॥ सातवां पद का आरम्भ हुआ ॥	३१९	पृथिवीकाय वेमात्रा से ज्ञानप्राण सास्योत्स्वास लेवै जातिसी कितने कालसे एवं सौधर्म आदि देव कितने काल से लेवै त्रैवेयक देव यावत्पंचानुत्तर देव कितने कालसे ज्ञानप्राण सास्योत्स्वास सर्वार्थसिद्ध विमानवासी देव कितने काल से स्वाश्वोत्स्वासादि लेवै (सातवां उत्स्वास पद हुआ) ॥ आठवां पद कहते हैं ॥	३२१ ३२१ ३२३ ३२४
नारकी कितने कालसे ज्ञानप्राण स्वासोत्स्वास लेवै असुरकुमार कितने कालसे ज्ञानप्राण स्वासोत्स्वा —स लेवै एवं नागकुमार यावत्स्तनितकुमार कितने काल से ज्ञानप्राण सास्योत्स्वास लेवै	३२० ३२० ३२१	दद्या आहार आदि सज्ञा कही	३२४

नारकी को १० संज्ञा होती है
असुरकुमार को १० संज्ञा होती है एवं स्त-
नितकुमार तक पृथिवीकाय आदि विमानिक
पर्यन्त कहा
नारकी क्या आहार संज्ञोपयुक्त के भयसंज्ञोपयुक्त
इत्यादि प्रश्न
आहारसंज्ञोपयुक्त यावत्परिग्रहसंज्ञोपयुक्त नारकी
का अल्प बहुत्व
तिर्यंच क्या आहार यावत्परिग्रह संज्ञोपयुक्त
तिर्यंच आहार आदि संज्ञोपयुक्त का अल्पादि
मनुष्य क्या आहार स०
आहारादि संज्ञोपयुक्त मनुष्याल्पबहुत्व
देवता क्या आहार संज्ञोपयुक्त है के यावत्परि

३२५

३२५

३२६

३२६

३२६

३२६

३२७

३२७

आहारादि १० संज्ञोपयुक्त देवाल्पबहुत्व वक्तव्यता
(आठवा पद समाप्त हुआ)
ग्रह संज्ञोपयुक्त है

॥ नवा पद कहते हैं ॥

कितने प्रकार योनि कही, तीन प्रकार योनि कही
नारकी के क्या सीतयोनि उच्चयोनि शीतोष्णयोनि
असुरकुमार के कौन योनि कही एवं स्तनित—

पृथिवीकाय के कौन योनि, एवं अप् वायु वन
स्पति द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय की योनि
कहना

तेजस्काय के शीत योनि नहीं

३२८

३२८

३२८

३२९

३२९

विषय और प्रवृत्तादि	पत्रांक	विषय और प्रवृत्तादि	पत्रांक
<p>जघन्य १। ५। ३। उत्कृष्ट ८ आकर्षसे जाति नामनिहत्तायु आदि को करनेवाले जीवों में कौन - किस्से थोड़ा पणा इत्यादि अधिकार ॥ व्युत्क्रान्ति पद छठा पूर्ण हुआ ॥</p> <p>॥ सातवां पद का आरम्भ हुआ ॥</p>	३१९	<p>पृथिवीकाय वेमात्रा से ज्ञानप्राण सासोत्स्वास लेवै जोतिषी कितने कालसे एव सौधर्म आदि देव कितने काल से लेवै त्रैवेयक देव यावत्पंचानुत्तर देव कितने कालसे ज्ञानप्राण सासोत्स्वास सर्वार्थसिद्ध विमानवासी देव कितने काल से स्वाश्वोत्स्वासादि लेवै (सातवां उत्स्वास पद हुआ)</p> <p>॥ आठवां पद कहते हैं ॥</p>	३२१
<p>नारकी कितने कालसे ज्ञानप्राण सासोत्स्वास लेवै असुरकुमार कितने कालसे ज्ञानप्राण सासोत्स्वा -स लेवै एवं नागकुमार आवत्स्तनितकुमार कितने काल से ज्ञानप्राण सासोत्स्वास लेवै</p>	३२०	<p>दत्ता आहार आदि सज्ञा कही</p>	३२४

विषय और प्रश्नादि	पत्राक	विषय और प्रश्नादि	पत्राक
नारकी को १० संज्ञा होती है असुरकुमार को १० संज्ञा होती है एव स्त- नितकुमार तक पृथिवीकाय आदि वैमानिक पर्यन्त कहा	३२५	आहारादि १० संज्ञोपयुक्त देशलपबहुत्व वक्तव्यता (आठवा पठ समाप्त हुआ)	३२७ ३२८
नारकी क्या आहार संज्ञोपयुक्त के भयसंज्ञोपयुक्त इत्यादि प्रश्न	३२५	॥ नवा पद कहते है ॥	
आहारसंज्ञोपयुक्त यावत्परिश्रहसंज्ञोपयुक्त नारकी का अल्प बहुत्व	३२६	कितने प्रकार योनि कही, तीन प्रकार योनि कही नारकी के क्या सीतयोनि उल्लयोनि शीतोष्णयोनि असुरकुमार के कौन योनि कही एव स्तनित-	३२८ ३२८
तिर्यच क्या आहार यावत्परिश्रह संज्ञोपयुक्त तिर्यच आहार आदि संज्ञोपयुक्त का अलपादि मनुष्य क्या आहार स०	३२६ ३२६ ३२७	- कुमार तक पृथिवीकाय के कौन योनि, एव अप्र वायु वन स्पति द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय को योनि कहना	३२८
आहारादि संज्ञोपयुक्त मनुष्याल्पबहुत्व देवता क्या आहार संज्ञोपयुक्त है के यावत्परि	३२७	तेजस्काय के शीत योनि नहीं	३२९ ३२९

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनि को कौनसी योनि समूर्च्छिम पंचेन्द्रिय तिर्यंच, गर्भव्युत्क्रान्तिक प	३२९	पृथिवीकाय को क्या सचित्त योनि अचित्तयोनि मिश्रयोनि	३३१
चेंद्रिय तिर्यंच योनि वक्तव्यताधिकार मनुष्य को कितने प्रकार योनि कही	३३०	समूर्च्छिम पंचेन्द्रिय तिर्यंच और मनुष्य योनि नि र्णय	३३१
वानव्यन्तर, जोतिपी, और वैमानिक योनि वक्तव्यता	३३०	गर्भव्युत्क्रान्तिक पंचेन्द्रिय तिर्यंच मनुष्य योनि निर्णय	३३२
यह जीव जोतयोनि उद्भयोनि जोतोद्भयोनि अयोनियों में कौन किस्से थोड़ा घणा इत्यादि	३३१	वानव्यन्तर जोतिपी वैमानिक को जैसे असुर कुमार को कहा	३३२
सचित्त अचित्त मिश्र जेद से तीन प्रकार योनि कही	३३१	यह सचित्त अचित्त मिश्रयोनिक अयोनिको में	३३२
नारकी के क्या सचित्त अचित्त और मिश्र योनि है	३३१	कौन किस्से थोड़ा घणा इत्यादि	३३२
असुरकुमार योनि प्रश्न एव स्तान्तिकुमार पर्यन्त	३३१	संवृत विवृत संवृताविवृत जेदसे तीन प्रकार यो नि कही	३३२
	३३१	नारकी के संवृतयोनि कही, एवं यावद्वनस्पति	३३२

काय पर्यन्त वेङ्गद्रिय को विवृतयोनिकही, चौ
रिङ्गी पर्यन्त, संसृष्टिम पचेद्रिय तिर्यच और
मनुष्य को विवृतयोनिकही, गर्भव्युत्क्रान्तिक
पचेद्रिय तिर्यच और मनुष्य को सवृतविवृत यो

नि है
वानव्यन्तर जोतिषी वैमानिक को जैसे नारकी

को कहा
यह सवृत विवृत सवृतविवृतयोनिक श्रुयोनिक
जीवी से कौन किस्से थोड़ा घणा इत्यादि
कर्मोन्नत सखावर्त्त वशीपत्र जेद से तीन प्रकर
की योनिक है कर्मोन्नत योनिक उत्तम पुरुषोत्पत्ति
स्थान, सखावर्त्त स्त्रीरत्न की, वशीपत्रा सामा
न्य मनुष्यो की है

३३३

३३३

३३३

३३४

(नवां पद पूर्ण ऊँचा)

॥ १० वा पद कहते हैं ॥

रत्नप्रभादि यावत् ईपत्प्रगाभारा पर्यन्त छाठ पृ

यह रत्नप्रज्ञा पृथिवी नहीं चरमा नहीं अचरमा
थिवी कही

३३४

नहीं चरमाइ नहीं अचरमाइ नहीं चरमान्त प्र

देखा नहीं अचरमान्तप्रदेशा इत्यादि यावत् नी

चे सातमी पृथिवी, सौधर्म छादि यावत् अनुत्तर

विमान एव ईपत्प्रगाभारा पृथिवी, एव लोक,

परमाणु पुद्गल क्या चरम अचरम अवक्तव्य चर

माइ अचरमाइ इत्यादि जगा २६

३३५

३४०

एव २। ३। ४। ५। ६। ७। ८ प्रदेशी स्कन्धो
की वक्तव्यता यावत् सख्यात असख्यात अनन्त
प्रदेशी स्वथ तक कहा

परमाणुस्मियतड्ड इत्यादि गाथा ६
परिमंजल आदि पाच सस्थानो की वक्तव्यता,
परिमंजल सस्थान क्या सख्यात असख्यात अन
न्त, एव यावत् आयात कहना, परिमंजल स
ठाण क्या सख्यातप्रदेशी असख्यातप्रदेशी अनन्त
प्रदेशी एव यावदायत, परिमंजल सठाण क्या
सख्यातप्रदेशावगाढ असख्यात प्रदेशावगाढ एवं
आयात पर्यन्त, परिमंजल० असख्यातप्रदेशी क्या
असख्यातप्रदेशावगाढ अनन्तप्रदेशावगाढ एव
आयात पर्यन्त

३५०

३५१

३५२

जीव गति चरम से क्या चरम के अचरम एवं
निरन्तर वैमानिक

नारकी गति चरम से क्या चरमा के अचरमा एवं
वैमानिक पर्यन्त

नारकी स्थितिचरम से कदाचित् चरम कदाचित्
अचरम एवं यावत् वैमानिक

नारकी अवचरम से कदाचित् चरम कदाचित्
अचरम, एव वैमानिक पर्यन्त, नारकी आपा

चरम से चरम अचरम भी एवं वैमानिक पर्यन्त,
एव एकेद्रिय को ठोकर के वैमानिक पर्यन्त कहना

नारकी आनप्राण चरम से चरम के अचरम, एव
याव वैमानिक

एव आहार चरम, भाव चरम से कदाचित् चर

३५६

३५६

३५७

३५७

३५८

एव वर्ण गन्ध रस स्पर्श चरम से कदाचित् चर
म अचरम है

(१० चरम पद समाप्त जाय)

॥ ११ पद कहते हैं ॥

अथ नून मन्ये अथधारिणीति भाषा इत्यादि

अथधारिणी भाषा क्या सत्य असत्य सत्यमृषा

प्रश्न निर्णय

गावो मृगा पञ्चव पक्षिणः प्रज्ञापनी यह भाषा

है मृषा नहीं

याच स्त्री पुरुष नपुंसकवाक् प्रज्ञापनी यह भाषा

अह जाय इत्यौ पञ्चवणी इत्यादि भाषा वक्त-

व्यताधिकार

अह भते मन्दकुमारएवा मन्दकुमारियावा इत्या

दि प्रश्न निर्णय

अह भते उहे गोणे खरे घोडए अए एलए इत्या

दि प्रश्न निर्णय

अह भते मणुस्से महिसे आसे इत्यादि प्रश्न नि

र्णयाधिकार

अह भते कंसं कंसोय परिमडल इत्यादि प्रश्न नि०

अह भते पुढवीति स्त्रीवाक् इत्यादि प्रश्न निर्ण

याधिकार

भाषा किमादि कि प्रवह कि पर्यवसित है

३५८

३५९

३६०

३६१

३६२

३६२

३६३

३६६

३६६

३६७

३६९

३७०

३७१

विषय और प्रवृत्ति	पत्रांक	विषय और प्रवृत्ति	पत्रांक
भाषा कनुन पभवति इत्यादि गाथा २ कितने प्रकार भाषा है, दो प्रकार भाषा क है पर्याप्तिकी भासा सत्या मृपा से दो भेद है सत्या पर्याप्तिकी भाषा कितने प्रकार है १० प्रकार मृपा भाषा भी दश प्रकार कहि है क्रोधनिशि तादि भेद से अपर्याप्तिकी भाषा सत्यामृपा असत्यामृपा भेद से दो प्रकार है सत्यामृपा भाषा उत्पन्न मिश्रितादि भेद से दश भेद है असत्यामृपा अपर्याप्तिकी आमन्तणी आदिक भेद से १२ भेद है जीव भाषक है के अभाषक है इत्यादि	३७१ ३७२ ३७२ ३७२ ३७३ ३७३ ३७४ ३७४ ३७४	नारकी अपर्याप्त अभाषक पर्याप्त भाषक है एव एकैन्द्रिय को छोड़कर सर्वदण्डक मन्त्रोत्तर कहना चार भाषा की जाति कही जीव क्या सत्य भाषा बोलै कि असत्या भाषा बोलै इत्यादि नारकी सत्य भी बोलै असत्य भी बोलै एवं असु रकुमार यावत् स्तनितकुमार पर्यन्त, द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय नहीं सत्य नहीं असत्य नहीं सत्यासत्य असत्यामृपा बोलै, पचैन्द्रिय तिर्यच असत्यामृपा भाषा बोलै, जीव जिन द्रव्यों को भाषा पणें ग्रहें सो क्या स्थित ग्रहें के अस्थित एव द्रव्य क्षेत्र काल और भाव वक्तव्यता से	६७५ ३७६ ३७६ ३७६ ३७६ ३७६ ३७६ ३७७ ३७७

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
पुष्टोगाढ छणतर यह उक्तार्थ सग्रह गाथा	३७७	नारकी जिन द्रव्यों को भापापणें ग्रहै सो स्थित	६८६
जीव जिन द्रव्यों को भापापणे ग्रहै सो क्या सा	३८२	एव एकेन्द्रिय को छोडकर वैमानिक पर्यन्त द	३८६
जीव जिनकी भापा पणे निकलै सो निरन्तर	३८२	डरु कहना अरपवहुत्य तक	३८७
निरन्तर ग्रहै के निरन्तर	३८३	जीव जिन द्रव्यों को भापा पणे ग्रहै सो स्थितके	३८८
निकलै के सान्तर निकलै इत्यादि	३८४	अस्थित ग्रहै एव पृथक्क से भी दडक कहना	३८८
जो द्रव्य भापापणे निकलै गृहीत के अगृहीत,	३८५	वैमानिक पर्यन्त	३८८
भित्तके अभिन्न निकलै	३८६	जीव जिनद्रव्यों को सत्यभापापणें ग्रहै इत्यादि	३८८
इन भापा द्रव्यों का खड भेदादि पाचभेद कहे,		औधिक गमाके ऐसे सर्व कहना फकत वैरिद्री	३८८
खड भेदादि निरूपण		तेरिद्री बौरिद्री छोडदेना	३८८
खडभेद प्रतरभेद चूर्णिकाभेद अनुतटिकाभेद से		कितने प्रकार वचन, सोलह भेदें एकवचनादि	३८८
उत्कटिका भेद से भिन्न भापा द्रव्यों मे कौन		भेद से	३८८
किस्से थोडा घणा इत्यादि		कितने भापाजात, चार कहे, इन चारो को	३८८

विषय और प्रज्ञादि	पत्रांक	विषय और प्रज्ञादि	पत्रांक
भाषा कर्तव्य पभवाति इत्यादि गाथा २	३७१	नारकी अपर्याप्त अभापक पर्याप्त भापक है	६७५
कितने प्रकार भाषा है, दो प्रकार भाषा क है	३७२	एव एकैन्द्रिय को छोड़कर सर्वदण्डक प्रज्ञांतर कहना	३७६
पर्याप्तिकी भासा सत्या मृषा से दो भेद है	३७२	चार भाषा की जाति कही	३७६
सत्या पर्याप्तिकी भाषा कितने प्रकार है १० प्रकार	३७२	जीव क्या सत्य भाषा बोलै कि असत्या भाषा	३७६
मृषा भाषा भी दश प्रकार कही है क्रोधनिश्रि		बोलै इत्यादि	
तादि भेद से	३७३	नारकी सत्य भी बोलै असत्य भी बोलै एव असु	
अपर्याप्तिकी भाषा सत्यामृषा असत्यामृषा भेद		रकुमार यावत् स्तनितकुमार पर्यन्त, द्विन्द्रिय	
से दो प्रकार है	३७३	त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय नहीं सत्य नहीं असत्य	
सत्यामृषा भाषा उत्पन्न मिश्रितादि भेद से दश		नहीं सत्यासत्य असत्यामृषा बोलै, पचेंद्रिय	
भेद है	३७४	तियेच असत्यामृषा भाषा बोलै,	३७६
असत्यामृषा अपर्याप्तिकी आमन्त्रणी आदिक		जीव जिन द्रव्यों को भाषा पणे ग्रहै सो क्या	
नेदसे १२ भेद है	३७४	स्थित ग्रहै के अस्थित	३७७
जीव भापक है के अभापक है इत्यादि	३७४	एव द्रव्य क्षेत्र काल और भाव वस्तुव्यता से	

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
पुढीगाढ अणतर यह उक्तार्थ संग्रह गाथा	३७७	नारकी जिन द्रव्यों को भापापणें ग्रहै सो स्थित	६८६
जीव जिन द्रव्यों को भापापणें ग्रहै सो क्या सा	३८२	एव एकेन्द्रिय को ठोडकर वैमानिक पर्यन्त द	३८६
जीव जिनकी भापा पणें निकलै सो निरन्तर	३८२	डर कहना अरपग्रहत्वं तक	
निर ग्रहै के निरन्तर		जीव जिन द्रव्यों को भापा पणें ग्रहै सो स्थितके	
निकलै के सान्तर निकलै इत्यादि	३८३	अस्थित ग्रहै एव पृथक् से भी दडक कहना	३८७
जो द्रव्य भापापणें निकलै गृहीत के अगृहीत,		वैमानिक पर्यन्त	
भिन्नके अभिन्न निकलै	३८४	जीव जिनद्रव्यों को सत्यभापापणें ग्रहै इत्यादि	
इन भापा द्रव्यों का खड भेदादि पाचभेद कहे,		औधिक गर्माके ऐसे सर्व कहना फकत चौरिद्री	
खड भेदादि निरूपण	३८५	तेरिद्री चौरिद्री खोडदेना	३८८
खडभेद प्रतरभेद चूर्णिकाभेद अनुतटिकाभेद से		कितने प्रकार वचन, सोलह भेदें एकवचनादि	
उत्कटिका भेद से भिन्न भापा द्रव्यों में कौन	३८६	कितने भापाजात, चार कहे, इन चारों को	३८८
किस्से थोडा घणा इत्यादि		भेद से	

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
भाषा कन्य पभवति इत्यादि गाथा २ कितने प्रकार भाषा है, दो प्रकार भाषा क है पर्याप्तिकी भासा सत्या मृपा से दो भेद है सत्या पर्याप्तिकी भाषा कितने प्रकार है १० प्रकार मृपा भाषा भी दश प्रकार कहि है क्रोधनिशि तादि भेद से अपर्याप्तिकी भाषा सत्यामृपा असत्यामृपा भेद से दो प्रकार है सत्यामृपा भाषा उत्पन्न मिश्रितादि भेद से दश भेद है असत्यामृपा अपर्याप्तिकी आमन्त्रणी आदिक भेदसे १२ भेद है जीव भाषक है के अभाषक है इत्यादि	३७१ ३७२ ३७२ ३७२ ३७३ ३७३ ३७४ ३७४ ३७४	नारकी अपर्याप्त अभाषक पर्याप्त भाषक है एव एकैन्द्रिय को छोड़कर सर्वदण्डक प्रश्नोत्तर कहना चार भाषा की जाति कही जीव क्या सत्य भाषा बोलै कि असत्या भाषा बोलै इत्यादि नारकी सत्य भी बोलै असत्य भी बोलै एव असु रकुमार यावत् स्तनितकुमार पर्यन्त, द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय नहीं सत्य नहीं असत्य नहीं सत्यासत्य असत्यामृपा बोलै, पचैन्द्रिय तियेच असत्यामृपा भाषा बोलै, जीव जिन द्रव्यों को भाषा पणे ग्रहै सो क्या स्थित ग्रहै के अस्थित एवं द्रव्य क्षेत्र काल और भाव वक्तव्यता से	६७५ ३७६ ३७६ ३७६ ३७६ ३७६ ३७६ ३७७ ३७७

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
एव कार्मण शरीर भी कहना भागान, इत्यादि वक्तव्यता नारकी को दोनो औदारिक शरीर है वरु भी मुक्त भी है	३९५ ३९५	रिक, एव चतुरिन्द्रिय पर्यंत कहा सर्व शरीर पचेन्द्रिय तिर्यच भी इसी तरह कहना वैक्रिय में विज्ञेय है	४०० ४०१
एव वैक्रिय भी, आहारक शरीर भी कहना असुरकुमार शरीर वक्तव्यताधिकार, स्तानितकु- मार पर्यंत	३६९ ३९७	मनुष्य को दो औदारिक शरीर है, इत्यादि (१२ वा शरीर पद पूर्ण ज्ञाया)	४०१
पृथिवीकाय को दो औदारिक शरीर, क्षेत्रकाल से निरूपण	३९८	कितने प्रकार परिणाम, दो जेठ जीव परिणाम और अजीव परिणाम	४०७
पृथिवीकाय को दो वैक्रिय शरीर, एव शेष ज्ञा रीर भी कहना, अप्काय तेजस्काय भी कहना, वायुको दो औदारिक शरीर, दो वैक्रिय, एव ज्ञेय शरीर भी कहना, द्वीन्द्रिय को दो औदा	३९८	जीव परिणाम, गति परिणाम आदि जेठ से १० प्रकार है	४०७
		गति परिणाम चार प्रकार है ४ गति जेठ से, इन्द्रिय परिणाम ५ जेठ है, कपायपरिणाम ४ जेठ, लज्जया परिणाम ६ जेठ	४०८

बोलता जीव आराधक है के विराधक है,
सत्यभासी मृपाभायी आदि भापक अभापकजी
वों में कौन किससे थोड़ा घणा इत्यादि वक्त
व्यताधिकार

(११ भाषा पद पूर्ण हुआ)

॥ १२ वां पद कहते हैं ॥

पांच शरीर कहे औदारिक वैक्रिय आहारक
तैजस कर्मण
नारकी को वैक्रिय तैजस कर्मण यह तीन शरीर है
एव असुरकुमार यावत् स्तनितकुमार पर्यन्त कहा
पृथिवीकाय को औदारिक तैजस कर्मण तीन
शरीर, वायुको ढोड चौरिन्द्री पर्यन्त सबनी

३७९

३९०

३९०

३९०

यही तीन शरीर है, वायु को ४ शरीर औ
दारिक वैक्रिय तैजस कर्मण है, पंचेन्द्रिय ति

यंच को भी चारही शरीर है
मनुष्य को पांचो शरीर होते हैं, वानव्यन्तर

जोतिषी वैमानिक को जैसे नारकी को कहा

औदारिक शरीर बरु और मुक्त भेद से दो भेद
३ शरीर कहना,

वैक्रिय भी बरु मुक्त भेद से दो तरह है, खेत्र

आहारक भी दो भेद है

तैजस भी दो भेद है, क्षेत्र से अनत लोक द्रव्य

से सिद्धों से अनन्तगुण सर्व जीवों से अनन्त

३९१

३९२

३९२

विषय और प्रश्नादि	पत्राक	विषय और प्रश्नादि	पत्राक
<p>एव कामेण शरीर भी कहना भागान, इत्यादि वक्तव्यता</p> <p>नारकी को दोनो औदारिक शरीर है वरु भी मुक्त भी है</p> <p>एव वैक्रिय भी, आहारक शरीर भी कहना</p> <p>असुरकुमार शरीर वक्तव्यताधिकार, स्तनितकु- मार पर्यंत</p> <p>पृथिवीकाय को दो औदारिक शरीर, क्षेत्रकाल से निरूपण</p> <p>पृथिवीकाय को दो वैक्रिय शरीर, एव शेष श- रीर भी कहना, अप्काय तेजस्काय भी कहना, वायुको दो औदारिक शरीर, दो वैक्रिय, एव ज्ञेय शरीर भी कहना, द्वीन्द्रिय को दो औदा-</p>	<p>३१५</p> <p>३१५</p> <p>३६९</p> <p>३१७</p> <p>३१८</p> <p>३१८</p>	<p>रिक, एव चतुरिन्द्रिय पर्यंत कहा सर्व शरीर पंचेन्द्रिय तिर्यच भी इसी तरह कहना वैक्रिय में विज्ञेय है</p> <p>मनुष्य को दो औदारिक शरीर है, इत्यादि (१२ वा शरीर पद पूर्ण ज्ञा)</p> <p>कितने प्रकार परिणाम, दो जेद जीव परिणाम और अजीव परिणाम</p> <p>जीव परिणाम, गति परिणाम आदि जेद से १० प्रकार है</p> <p>गति परिणाम चार प्रकार है ४ गति जेद से, इन्द्रिय परिणाम ५ जेद है, कपायपरिणाम ४ जेद, लज्जया परिणाम ६ जेद</p>	<p>४००</p> <p>४०१</p> <p>४०१</p> <p>४०७</p> <p>४०७</p> <p>४०८</p>

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
योगपरिणाम मन वचन काया से तीन जेद, उ पयोगपरिणाम दो जेद है, ज्ञानपरिणाम पांच जेद है, अज्ञानपरिणाम ३ जेद, दर्शनपरिणाम तीन जेद, चारित्रपरिणाम ५ जेद, वेदपरिणाम तीन जेद है इत्यादि वक्तव्यताधिकार		वानव्यन्तर गतिपरिणामाधिकार जोतिपी श्री ऐसेही कहा अजीव परिणाम बन्धनपरिणाम आदि जेद से १० प्रकार कहा	४१२ ४१३ ४१३
असुरकुमार गतिपरिणामाधिकार पृथिवीकाय परिणाम वक्तव्यताधिकार अपू वनस्पतिकाय भी ऐसेही कहा, तेजो वायु मे लेझ्यापरिणाम जैसे नारकी को कहा, द्वी न्द्रियगतिपरिणामाधिकार एव चौरिन्द्रिय प र्यन्त	४०९ ४१० ४११	बन्धन परिणाम दो जेद, दो गाथा गतिपरिणाम दो जेद है, संस्थानपरिणाम पांच जेद है, वर्ण परिणाम पांच जेद है, गन्धपरिणाम दो जेद है	४१४ ४१४
पंचैन्द्रिय तिर्यच वक्तव्यताधिकार मनुष्य गतिपरिणामाधिकार	४११ ४१२ ४१२	रसपरिणाम ५ जेद, स्पर्शपरिणाम ८ भेद है, अगुरुलघुपरिणाम १ जेद, शब्दपरिणाम दो जेद (गति परिणाम पट १३ पूर्ण)	४१४ ४१५

॥ १४ पद कहते हैं ॥

क्रोधादि चार कपाय कहे एवं वैमानिक पर्यन्त

कहा
कतिप्रतिष्ठित क्रोध है एव नैरयिक यावद्वैमानि

क पर्यन्त
कितने तरह से क्रोध होता है ४ तरह कहा वैमा

निक पर्यन्त

अनन्तानुबन्धी आदि ४ प्रकार क्रोध कहा नार
की यावद्वैमानिक पर्यन्त, एव मान माया लोभ

सेत्री चारो दंष्ट्रक कहा
आभोग निर्वर्तित आदि चार भेदें क्रोध कहा

एवं मानादित्री
जीव चार तरह से आठ कर्म चिणे इत्यादि अ

४१५

४१६

४१६

४१७

४१७

एवं वैमानिक पर्यन्त जीव से लगाय १८ दंष्ट्रक

कहना

(१४ वां कपाय पद पूर्ण ज्ञाया)

॥ १५ वां पद कहते हैं ॥

संठाणं बाहर्ष इत्यादि गाथा २

पांच इन्द्रिप्र कही

श्रोत्रेन्द्रिय कलम्बुका संस्थान संस्थित है

चक्षु मसूरचन्द्रसंस्थानसंस्थित है, नासिका

आतमुक्तक संस्थान संस्थित है, जिह्वा तुरे के

संस्थान है, स्पर्शनेन्द्रिय नानासंस्थान संस्थित है

श्रोत्रेन्द्रिय बाह्य यावत् स्पर्शनेन्द्रिय बाह्य

४१९

४२०

४२०

४२०

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
श्रोत्रेन्द्रिय अंगुल के असख्यात भाग पृथु है, चक्षुः प्राण भी ऐसे जिह्वा अंगुल पृथक्, स्पर्शनेन्द्रिय शरीर प्रमाण माना है श्रोत्रेन्द्रिय अनन्त प्रदेश, असख्यात प्रदेशावगाढ	४२१	कलबुकासस्थान है नारकी कारपर्शनेन्द्रिय कौन संख्यात इत्यादि नि० असुरकुमार के कितने इन्द्रिय जैसे औदारिक कहा	४२४
एव यावत्स्पर्श	४२१	अल्पबहुत्व २ विशेष	४२५
इन श्रोत्र चक्षुः प्राण जिह्वा स्पर्शनेन्द्रिय में अवगाहनार्थतासे प्रदेशार्थतासे अवगाहन प्रदेशार्थतासे कौन-किससे योका घणा इत्यादि श्रोत्रेन्द्रिय में अनन्ता कर्कशगुण कहा, एव यावत्स्पर्श, श्रोत्रेन्द्रिय में अनन्ता मृदुलघुगण कहा एव यावत्स्पर्श	४२१	एव स्तनितकुमार पर्यन्त कहना, पृथिवीकाय की १ स्पर्शनेन्द्रिय है और वह मसूरचद्रसस्थान है, पृथिवीकाय का स्पर्शन अगुल असख्यात भाग बाह्यपण, पृथुपण शरीर प्रमाण माना कहा, और वह अनन्त प्रदेशिक है, पृथिवीकाय स्पर्शन यह - पृथिवीकाय स्पर्शनेन्द्रिय अवगाहनार्थ प्रदेश पृथिवीकाय स्पर्शन निन्द्रिय	४२५
नारकी को पांच इंद्री है, नारकी का श्रोत्रेन्द्रिय	४२२	शार्थ से कौन किससे अल्पादि पृथिवीकाय स्पर्शन के कितने कर्कशगुण है,	४२५

विषय और प्रवर्णादि

पत्रांक

विषय और प्रवर्णादि

पत्रांक

एव मृदुलद्युगण भी अनन्त है, और इनका अ
 एव अप् यावत् वनस्पतिकाय विशेष यह के
 बुद्धदे ऐना है, तेजस्काय शूचीकलापसस्यान
 सस्थित है, वायु पताका सस्यान, वनस्पति
 नानासस्यान सस्थित है
 वेरिद्रिय के दो इन्द्रिय सर्व अधिकार पूर्ववत् कहा
 त्रीन्द्रिय के प्राण स्तोक है, चतुरिन्द्रिय के चक्षु
 स्तोक
 पचेन्द्रिय तिर्यच और मनुष्य के जैसे नारकी कहा
 वानव्यन्तर जोतिषी वैमानिक जैसे असुरकु-
 मार कहा
 स्पृष्ट वायु सुणे अस्पृष्ट सुणे, स्पृष्ट रूप देखे

४२६

४२६

४२७

४२८

४२८

४२८

अस्पृष्ट रूप देखे, स्पृष्ट गन्ध लेत्रे अस्पृष्ट गन्ध
 लेत्रे, इत्यादि रस स्पर्श भी कहना जैसे पहले

कहा तैसे कहना
 एव जैसे स्पृष्ट तैसे प्रविष्ट, श्रोत्रेन्द्रिय का विषय
 अगुल के असख्यात भाग में उत्कृष्ट वारह यो

जनसे छिन्न पुद्गल स्पृष्ट शब्द सुणे
 चक्षु इन्द्रिय का विषय जघन्य अगुल का सख्यात
 भाग उत्कृष्ट सातिरेक योजन सहस्र अछिन्न

पुद्गल अस्पृष्ट अग्रविष्ट रूप देखे
 प्राणेन्द्रिय का जघन्य अगुल असख्यात जाग उ
 त्कृष्ट नव योजन से गन्ध ग्रहण करे, एव जि

ज्ञानी कही, स्पर्शनेन्द्रिय भी इसीतरह है,
 अन्नगार जावितात्मा मारणातिक समुदात से सम

४२९

४३०

४३०

४३१

विषय और प्रश्नादि	पत्राक	विषय और प्रश्नादि	पत्राक
<p>वहत के जो चरम निर्जरा पुद्गल सो सूक्ष्म है इत्यादि निर्णय तद्वत्स्य मनुष्य उन निर्जरा पुद्गलों को अन्यत्व नानात्व की जाणे देखे नहीं, देवता श्री कीड़े उन निर्जरा पुद्गलों के अन्यत्व नानात्व की न देखे न जाणे</p>	४३१	<p>आदर्श (सीसे) को देखता मनुष्य क्या आदर्श को देखे के अपने को देखे प्रतिभाग (लाया) को देखे इत्यादि निर्णय एव अंसि मणी अटि का श्री आलावा कहा खूब गाढा लपेटा ज्ञाना कम्बल जितने आकाश को रोक के रहे फैलाया ज्ञाना श्री उतने ही आ काश को रोकै</p>	४३४
<p>यह सूक्ष्म निर्जरा पुद्गल सर्वलोक को अवगाह के रहते है, नारकी उन पुद्गलों को न जाणे न देखे एव पचेद्रिय तिर्यच पर्यन्त कहना, मनुष्य उन निर्जरा पुद्गलों को कोई जाणे देखे कोई न जा</p>	४३२	<p>एव स्थूणा सत्र भी कहा, आकाशधिगल काहे से व्याप्त है कितने काय से स्पृष्ट है, पृथिवी काय यावत् त्रसकाय काल से स्पृष्ट है ? धर्मा स्ति काय से स्पृष्ट है परं इसके दंडा और प्रदे शसे नहीं है एव अधर्मास्तिकाय से स्पृष्ट है परं</p>	४३६
<p>नै न देखे इत्यादि अधिकार वानव्यन्तर जोतिषी जैसे नारकी का कहा, वैमा निक जैसे मनुष्य की कहा, वैमानिक दी जेदे</p>	४३३		

उसके देश प्रदेश से नहीं है आकाशास्तिकाय से स्पष्ट नहीं है इसके देश और प्रदेश से स्पष्ट किये है, त्रसकाय से कदाचित् स्पष्ट अस्पष्ट है, काल के देश से स्पर्श किए है

जम्बूद्वीप नहीं धर्मास्तिकाय से इसके देश प्रदेश से स्पष्ट एवं अधर्म और आकाशास्तिकाय से भी कहा, पृथिवी से यावत् वनस्पति से स्पर्श किये है, त्रस काय से कदाचित् है एवं लवण समुद्र, धातकी खरू आदि भी कहा

लोक किससे व्याप्त है इत्यादि जैसे आकाशाधि, गल कहा, अलोक नहीं धर्म आधर्म और आकाशास्तिकाय से किन्तु आकाशास्तिकाय के

देश प्रदेश से स्पष्ट है, पृथिवी से स्पष्ट नहीं काल से स्पष्ट एक अजीव प्रदेश अगुरुलघु अन्न अगुरुलघुगुणसयुक्त सर्वाकाशा से अनन्त जागो न है

॥ १५ वां पद का १ उद्देशा पूर्ण ॥

इन्द्रिय उपचय इत्यादि अर्थ संग्रह गाथा २ कितने प्रकार इन्द्रियोपचय कहा, ५ तरह का

नारकी को पांचो इन्द्रिय का उपचय कहा, एवं वैमानिक पर्यन्त सर्व द्रव्य मे कहना भेद यही के जिसको जितनी इन्द्रिय उत्तनाही का उपचय कहना, एवं इन्द्रिय की निर्वर्तना भी पाच तर ह की कही है, नारकी से वैमानिक पर्यन्त

१३७

१३८

१३८

१४०

१४०

१४०

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
<p>जिस्को जितनी इन्द्रिय है उतने की निर्वर्तना जी कहना, श्रोत्रोद्द्रिय निर्वर्तना का काल छ सख्यात समय छान्तर्मुल्लर्त्त जी कहा, एव स्प ज्ञान तरु, एव नारकी से वैमानिक पर्यन्त नि वर्तना काल कहा, पाच नेदे इन्द्रिय लब्धि क ही, एव २४ द्रुक मे जिस्को जितनी हो कहना, इन्द्रियोपयोग काल जी पाच प्रकार है नारकी से वैमानिक पर्यन्त यथोचित कहना</p>	४४१	<p>वगाहना कहनी, पाच प्रकार का अपाय २४ द्रुक मे यथोचित कहा, ईहा पाच प्रकार की चौबीस द्रुक मे यथोचित कहना, अवग्रह व्यजन और अर्थ के भेद से दो प्रकार है, व्यजनावग्रह श्रोत्र घ्राण जिह्वा स्पर्श से चार भेद है, अर्थावग्रह पाच इन्द्रियो का पाच और मन से छ प्रकार होता है उनमें से नार की को २ व्यजन और अर्थ का अवग्रह है</p>	४४४
<p>इन श्रोत्र आदि पाचो इन्द्रियो के उपयोग ३ जघन्य उत्कृष्ट अजघन्योत्कृष्ट मे परस्पर कौन किससे धांका घणा इत्यादि इन्द्रियावगाहना पांच प्रकार नारकी से वैमानिक पर्यंत जिस्को जितनी इन्द्रिय हो उही की अ</p>	४४२	<p>एवं वैमानिक पर्यंत कहा पृथिवीकाय को दो प्रकार अवग्रह, व्यञ्जनावग्रह स्पर्शनेन्द्रिय का एक ही है, अर्थावग्रह भी एक स्पर्शनही का है, एव वनस्पति पर्यंत कहा, एव द्वीन्द्रिय को, नेद यह के व्यञ्जनाव</p>	

ग्रह दो है, एव तेइदीय चौरिदीय मे इद्रिय बढ़ाय के कहना, चौरिदीय को व्यञ्जनावग्रह तीन अर्थावग्रह चार है, शेष जैसे नारकी को

कहा तैसे वैमानिक तक द्रव्य और भाव भेद से दो तरह की इद्रिय है, आठ द्रव्येद्रिय २ कान २ नेत्र २ नाक जीभ स्पर्श ८, नारकी को आठो है, एव असुर यावत् वैमानिक स्तनितकुमार तक । पृथिवी काय द्रव्य १ स्पर्श यावद्वनस्पति पर्यंत । द्वीन्द्रिय की द्रव्ये स्पर्श १ जिह्वा २ दो है, तेरिद्री की दो नाक जीभ और स्पर्श ५ है । चौरिद्री को द्रव्ये दो नेत्र दो नाक जीभ ५ स्पर्श ५ है । शेष को जैसे नारकी को कहा

४४६

एकैक नारकी के अनता द्रव्येद्रिय अतीत है । वरु आठ है । पुरस्कृत ८ । १६ । १७ । संख्यात

असख्यात और अनत भी होते है एकैक असुरकुमार के कितने द्रव्येद्रिय अतीत अनत । वरु ८ । पुरस्कृत ८ । १ । संख्यात

असख्यात अनत । एव स्तनितकुमार तक एव पृथिवीकाय अप्काय कहा, वनस्पतिकाय

को वरु एक स्पर्श द्रव्येद्रिय है, तेजो वायु भी ऐसे ही है भेद यह के पुरस्कृत १ । १०

है, एव द्वीन्द्रिय भी भेद यह के वरु दो है, त्रीन्द्रिय को वरु चार, चौरिद्री को वरु ६

है, पचेन्द्रिय तिर्यच मनुष्य वानव्यन्तर जो त्रिपी सौधर्म ईसान देव जैसे असुरकुमार, भेद

असुरकुमार, भेद

४४७

४४७

इतनाही के मनुष्य को पुरस्कृत है भी नहीं भी है, सनत्कुमार माहेन्द्र ब्रह्म लान्तक शुक्र सहस्वार आनतप्राणत आरण अच्युत त्रैवेयक देव की जैसे नारकी की, पंचानुत्तर देव को अतीत अनन्त वर ८। १६। २४। सख्यात, सर्वार्थसिद्धदेव को अतीत अनन्त वर ८। पुरस्कृत ८, नारकी को द्रव्येन्द्रिय अनन्त अतीत

४४८

वर असख्यात पुरस्कृत अनन्त एव त्रैवेयक देव पर्यंत मनुष्य को वर कदाचित् सख्यात असख्यात भी है, पंचानुत्तर देव को अतीत अनन्त वर और पुरस्कृत असंख्य है, सर्वार्थसिद्धदेव को अतीत अनन्त वर पुरस्कृत सख्यात है, एकैक नारकी के नारकी पणे में

कितने द्रव्येन्द्रिय अतीत, एव नारकी के असुरपणे में अतीत वर पुरस्कृत द्रव्येन्द्रिय कहे एकैक नारकी को एकैन्द्रिय पणे में कितने अतीत वर पुरस्कृत है, द्वीन्द्रिय पणे में कितने है, त्रैदीय पणे में कितने है इत्यादि निर्णय एवं चौरिन्द्रिय भी परं पुरस्कृत ६। १२। १८

४५०

सख्यात असख्यात अनन्त है, पंचेन्द्रिय त्रिय चपने में जैसे असुरकुमार पणे से कहा, एव मनुष्यपणे में भी पर पुरस्कृत ७। १६। २४। सख्यात असख्यात अनन्त है, चानव्यन्तर जातिपी सौधर्म देव त्रैवेयकदेवपणे में अतीत अनन्त वर नहीं पुरस्कृत कदाचित्, एकैक नारकी को पंचानुत्तर देवपणे में अतीत नहीं

४४९

विषय और प्रश्नादि	पत्राक	विषय और प्रश्नादि	पत्राक
बहु नहीं पुरस्कृत कदाचित्, एव सर्वार्थसिद्ध देवत्व मे भी कहा, एक मनुष्य के नारकीपने मे, यावत्पंचद्रिय तिर्यच पने मे मनुष्यपने मे, वानव्यन्तर जो तिष्क यावत् त्रैवेयक देवपने मे, विजयवैजय न्तादि देवपने मे, सर्वार्थसिद्धदेवपने कितने द्रव्येद्रिय अतीत बहु पुरस्कृत इत्यादि वानव्यन्तर जोतिपी जैसे नारकी, सौधर्मदेवभी जैसे नारकी सौधर्म देव को पचानुत्तर देवपने मे, सर्वार्थसिद्धदेवत्वमे अतीतादि कहा, अनु त्तरदेवकी नारकीपने मे अतीतादि अनुत्तरदेव को सर्वार्थसिद्धदेवत्व मे। सर्वार्थसिद्ध देव को नारकीपने मे एव मनुष्यवर्ज सर्व मे	४५१	नारकी के नारकी पने मे कितने द्रव्येद्रिय इत्यादि (द्वार पूर्ण हुआ) नारकी को कितने भावेद्रिय, पांच है, एव वै मानिक पर्यन्त यथोचित कहना, एकैक नार —की के कितने अतीत बहु पुरस्कृत इत्यादि वस्तव्यता एकैक नारकी के नारकीपने मे कितने भावेद्रिय अतीत (१५ पद समाप्त हुआ) ॥ १६ वां पद कहते है ॥ पनरह प्रकार प्रयोग कहा ।	४५४ ४५४ ४५७ ४५८ ४५९

जीवको पनरह प्रकार उपयोग है । नारकी को ग्यारह भेदे है । एव असुरकुमार पर्यन्त कहना पृथिवीकाय को तीन उपयोग । एवं वनस्पति पर्यन्त कहा वायुकाय को ५ उपयोग । केरिन्द्री को चार प्रकार एवं चौरिद्री पर्यन्त पंचद्वियतिर्यच को तेरह प्रकार है मनुष्य को पनरह उपयोग । वानव्यन्तर जीति घी वैमानिक को जैसे नारकी को कहा । जीव क्या सत्यमनप्रयोगी यावत्क्या कर्मण शरीर कायप्रयोगी इत्यादि भांगे ८ कहे नारकी क्या सत्यमनप्रयोगी इत्यादि । एव असुरकुमार यावत्स्तनितकुमार पर्यन्त कहा । पृ

४६३

पृथिवीकाय क्या औदारिकशरीरकायप्रयोगी— औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगी के कर्मणशरीरकायप्रयोगी एव वनस्पतिकाय पर्यन्त प्रश्नोत्तर कहा । वायुको वैक्रियमिश्रशरीरकाय—

४६१

द्विन्द्रिय क्या औदारिकशरीरकायप्रयोगी यावत् क्या कर्मणशरीरकायप्रयोगी है । एवं चौरि

४६२

पंचेन्द्रिय तिर्यच जैसे नारकी भेद यह के औदारिकशरीरकायप्रयोग औदारिकमिश्रशरीरकाय प्रयोग भी है । मनुष्य को कायप्रयोग निर्णय

४६५

भग २४ त्रिकयोगे ३२ चतु. संयोगी १६ सर्व ८० वानव्यन्तर जातिषी वैमानिक जैसे असुरकुमार

४६५

विषय और प्रज्ञादि	पत्रांक	विषय और प्रज्ञादि	पत्रांक
कहा । पांच प्रकारों गतिप्रपात कहा प्रयोगगति आदि के भेद से । प्रयोगगति १५ भेद जैसे प्रयोग कहा जैसे यह भी कहनी । जीवों की प्रयोगगति पनरह भेद है । नारकी का ११ प्रकार है एव वैमानिक पर्यन्त जीवों की क्या सत्यमनप्रयोगगति यावत् क्या कर्मणश्चरीरकायप्रयोगगति है यावद्वैमानिक पर्यन्त कहा । एव गति भेद वक्तव्यता (१६ वा प्रयोग पद कहा)	१७४	नारकी सर्व समाहार, समञ्जरीर समुत्खासनिश्चास नारकी सर्व समकर्म हैं इति वक्तव्यता । नारकी नारकी सर्व समवर्ण है इत्यादि जैसे वर्णकहा जैसे लेखा, वेदना, समक्रिय है नारकी सर्व समायु समोपपन्नक है इत्यादि निर्ण असुरकुमार सर्व समकर्म इत्यादि एवं स्तनित पृथिवीकाय आहार वर्ण कर्म और लेश्यासे जैसे एव चौरिद्रिय, पचेद्रिय तिर्यंच जैसे नारकी	१८५ १८६ १८७ १८८ १८९ १९१
॥ १७ वा पद कहते है ॥ आहारसमसरीरा यह अर्थ सग्रह गाथा.	१८४		

मनुष्य सर्व समाहार है इत्यादि जैसे नारकी, फर्क क्रियामें है

नेद क्रियासे तीन नेद है
वानव्यन्तर जैसे असुरकुमार

एव जोतिषी वैमानिक ज्ञी नेद यह के वेदना से
द्विविध है

जैसे श्रौचिक गमा कहा तैसे सलेज्य का गमा
कहना वैमानिक पर्यन्त

पृथिवी अप् वनस्पति पचेद्रिय तिर्यच मनुष्य जैसे
श्रौघिक गमा कहा नेद मनुष्य को क्रिया मे

प्रमत्त अप्रमत्त कहा
(१ उद्देशा पूर्ण ज्ञान)

कितनी लेज्या ल कही, नारकी को कितनी ले

४९२

४९३

४९४

४९५

४९६

४९७

ज्या, तिर्यच योनिक को ल लेज्या, एकेंद्रिय
को चार लेज्या,

पृथिवीकाय को चार लेज्या, अप् वनस्पति ज्ञी
अपेक्षही है, तेजो वायु द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिं

द्रिय जैसे नारकी, पचेद्रिय तिर्यच को ल, समू
र्द्धिम पचेद्रिय तिर्यच जैसे नारकी, गर्जज पचे

द्रिय तिर्यच को ल एव लेज्या वक्तव्यताधिकार
गर्जजमनुष्य को ल, देव को ल, देवियों को चार,

एव नवनवासि देव देवी वानव्यन्तर देव देवी
वैमानिक देव देवी लेज्याधिकार

यह जीव सलेज्यी कृष्णलेज्यी यावत् शुक्ललेज्यी में
कौन किससे थोड़ा घणा-इत्यादि अप्प बहुत्व

वक्तव्यता उद्देश समाप्ति तक

४९८

४९९

५००

५०१

विषय और प्रश्नादि	पत्राक	विषय और प्रश्नादि	पत्राक
(२ उद्देश्य पूर्ण ज्ञाया) नारकी नारकी से उपजै के अनारकी नारकी में उपजै एव वैमानिक पर्यंत कहा, नारकी नारकी से निकले के अनारकी से, एव वैमानिक पर्यंत जोतिषी वैमानिक से चयन्ति ऐसा कहना कृष्णलेखी नारकी कृष्णलेखी नारकी से उपजै इ त्यादि निर्णय यावत् शुक्ललेखी शुक्ललेखी से उपजै एव २४ द्रुम मे यथोचित कहना (३ उद्देश्य पूर्ण ज्ञाया) परिणाम मध इत्यादि गाथा त लेख्या कही कृष्णलेख्या नीललेख्या की पाके तद्वर्ण तद्रूप तद्ग न्धादि पणे परिणमे	५१३	एव अन्तर्लापे नीललेख्या कापोतलेख्या को पाके कापोत तेजोलेख्या को पाके तेजोलेख्या पद्म लेख्या को पाके पद्मलेख्या शुक्ललेख्या को पाके तद्रूपादिपणे परिणमे इत्यादि सदृष्टान्त कृष्णलेख्या कैसी वर्ण से, जीमूत अजन सजन कज्जलादि सदृष्टा है नीललेख्या वर्ण निरूपण, कापोत लेख्यादि वर्ण निरूपण एव आस्वाद निरूपण त लेख्या का तीन लेख्या दुरन्निगन्ध और तीन सुरन्नि गन्ध है, एव शुद्धाचरु, एवं प्रज्ञास्ता प्रज्ञास्त, सक्ति प्रासक्तिष्ठ, और स्पर्श, सुगति दुर्गतिगामी कही है। कृष्णलेख्या ३। १। २७। ८३। ४२।	५२३ ५२५ ५२६ ५३३

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
<p>७ परिणामे परिणमे कृष्णलेखां अनन्तमादेशिकी एवं यावत् शुक्लले खा, कृष्णलेखा असंख्येयप्रदेशावगाढ एवं यावत् शुक्ललेखा, कृष्णलेखा की कितनी अ वगाहना एवं शुक्ललेखावगाहना, स्थान अस स्वात लेखास्थानों का, अल्पबहुत्व द्व्यर्थे प्रदेशार्थे द्व्यर्थेप्रदेशार्थे से (चौथा उद्देशा पूर्ण हुआ) छ लेखा कही, कृष्णलेखा नीलेखा को पाके जैसे चौथे उद्देशे में कहा वैदूर्य मणि दृष्टान्त पर्यन्त कहना इत्यादि वक्तव्यता (पांचवां उद्देशा पूर्ण हुआ)</p>	५३४	<p>छ लेखा कही, मनुष्य को कितनी लेखा इ— त्यादि निर्णयाधिकार (लेखा पद १७ वां. पूर्ण) ॥ १८ वां पद कहते हैं ॥</p>	५४२
	५३५	जीवगुणद्वय काए यह संग्रह गाथा २	५४५
	५३६	जीव जीवपनें कालसे कबतक रहै, सर्वकाल नारकी नारकीपनें काल से कितने काल रहै, एव तिर्येच क्षेत्र से काल से कहा, तिर्येचणी, मनुष्य मनुष्यणी देव देवीइनका प्रश्नोत्तर नारकी अपर्याप्त नारकी पणे कालसे कब तक एवं यावद्देवी पर्यन्त	५४५
	५४०		५४६
			५४८

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
नारकी पर्याप्त नारकी पणें कितने काल तक रहे इत्यादि श्रद्धिकार	५४९	अथौगी अथौगीपणे, एव मन वचनकाय योगी	५५६
सहृदय सहृदयपणे कालसे कवतक होय इत्यादि	५४९	एव स्त्री पुरुषवेद नपुसकवेद प्रश्न, अवेद प्रश्न, निर्णय	५५७
एव पर्याप्त अथौगी का आलावा कहा	५५०	सकपाई प्रश्न, एव क्रोध माया मान लोभ कपायी	५५९
सकाय सकायपणे, पृथिवीकाय पृथिवीकायपणे, एव अग्नेजवायु	५५१	अकपायी निर्णय	५६०
वनस्पतिकाय प्रश्न, वसकाय वसकायपणे, अ काय अकायपणे, एव वसकाय पर्याप्त अथौगी	५५२	सलेत्री का प्रश्न एव त ले० ओका आलावा क हना अलेत्री नी	५६१
सूक्ष्म पृथिवी अप्रतेज वायु वनस्पति, एव वा तक कहा	५५२	सम्यग्दृष्टि सम्यग्दृष्टिपणे इत्यादि निर्णय	५६२
वाटर निगोट प्रश्न, सयोगी सयोगीपणे काल से कितने काल होय,	५५४ ५५५	ज्ञानी ज्ञानीपणे कालसे कयतक इत्यादि प्रश्नोत्तर विन्नग ज्ञानी चक्षुदर्शनी अचक्षुदर्शनी अवधिद र्शनी का प्रश्न	५६३
		सयत असयत संयतासयत प्रश्न	५६५ ५६६

साकारोपयुक्त अनाकारोपयुक्त जी इसीतरह
 तन्मय आहारक प्रश्न, केवल आहारक तथा
 अनाहारक काल
 ज्ञापक अज्ञापक प्रश्न, काय परित् अपरित् काल
 निर्णय
 पर्याप्त अपर्याप्त नो पर्याप्त नो अपर्याप्त सूक्ष्म
 वादर सज्ञो असज्ञो
 जवसिद्धिक अजवसिद्धिक चरम अचरम काल
 निर्णय

(१८ वां पद समाप्त ज्ञा)

॥ १९ कहते हैं ॥

जीव सम्यग्दृष्टि मिथ्यादृष्टि सम्यग्मिथ्यादृष्टि है,

एव नारकी असुरकुमार याव तस्तनितकुमार
 पर्यन्त, पृथिवीकाय मिथ्यादृष्टि ही है, एव वन
 स्पत्तिकाय पर्यन्त कहना, द्वीन्द्रिय मिथ्यादृष्टि
 नहीं है एव चौरिन्द्रिय पर्यन्त कहा, पंचेन्द्रिय
 तिर्यच जोतिषी मनुष्य वानव्यन्तर वैमानिक
 तानो है, सिद्ध सम्यग्दृष्टि है

(१९ वा सम्यक्त पद कहा)

॥ २० वां पद कहते हैं ॥

नेरुदय अतकिरिया यह द्वार गाथा-जीव अंत
 क्रिया करै एवं नारकी यावद्वैमानिक, नारकी
 नारकी मे अन्तक्रिया करै नहीं
 नारकी असुरकुमार मे अन्तक्रिया करै एव याव

द्वैमानिक भेद मनुष्य अन्तक्रियाकरै एव असुरकुमार यावद्वैमानिक एव २४ दंडक, नारकी अनन्तरागत अन्तक्रिया करै परम्परागत

५७५

तेज वायु द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय अन्तक्रिया प्रश्न अनन्तरागत नारकी एकसमय मै जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट दशा अन्तक्रिया करै रत्नप्रभा पृथिवी का नारकी तथा अनन्तरागत पङ्कप्रभादि पृथिवी का नारकी अन्तक्रिया

५७५

एव असुरकुमार कुमारी प्रश्न अनन्तरागत पृथिवीकायिक जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट चार एव अष्टकायिक भी वनस्पति का यिक छ पंचेन्द्रिय तीर्यञ्च दश तीर्यञ्चणी दश

मनुष्य दशा मनुष्यणी बीश वानव्यतर दशा व्यतरी पाच जोतिपी बीस इत्यादि नारकी नरक से निकल नरक मै उपजै नही नारकी नरक से निकल असुरकुमार मै उपजै नही

५७६

यावत् चतुरेन्द्रिय नारकी नरक से निकल पञ्चेन्द्रिय तीर्यञ्च मै

५७६

उपजै इत्यादि

५७७

नारकी नरक से निकल व्यंतर जोतिपी वैमानिक मै उपजै नही असुरकुमार असुरकुमार से निकल नारकी मै उपजै नही असुरकुमार मर कै असुरकुमार मै उपजै नही एव यावत्

५७९

असुरकुमार मरके पृथिवीकाय मै उपजै कदाचित् स्तनितकुमार

एव अप् वनस्पति मे भी असुरकुमार मरके तेज वायु द्वौद्रिय त्रीद्रिय चतुरीद्रिय मैं न उपजै

शेष पांच मैं उपजै इत्यादि जैसे पृथिवीकाय कहा तैसे अप् वनस्पति भी कहना , तेजसकाय से निकल तेजसकाय मैं

उपजै यावत् स्तनितकुमार जैसे तेज तेसे वायु , वेरीद्री वेरीद्री से निकल नारकी मैं उपजै इत्यादि पञ्चैद्रिय तिर्यंच पंचैद्री तिर्यंच से निकल नारकी मे उपजै इहां तक रत्नप्रभा पृथिवी का नारकी निकल तीर्थकर होय , कीडं एक , एव यावत् बालुकाप्रभा पक्कप्रभा पृथिवी का नारकी निकल तीर्थकर न होय

धूमप्रभा तमा यावत् सप्तमी

५८०

५८१

५८२

५८३

असुरकुमारचवके तीर्थकर पणा पावे नही , एव यावत् अप् , तेजसकाय तेजसकाय से निकल तीर्थकर होय नही धर्मसुने एव वायु भी , व नस्पतिकाय अतक्रिया करै तीर्थकर न हो , पञ्चैद्रिय तिर्यंच मनुष्य बानव्यंतर जोतिपी

५८५

५८६

अतक्रिया ही करै सौधर्म देव चवके तीर्थकर होय कीडं एक जैसे रत्नप्रभा नारकी एव यावत्सर्वार्थसिद्ध का देव रत्नप्रभा का नारकी चक्रवर्त्त होय , शर्कराप्रभा का न होय एव यावत्सातमी का नारकी , तिर्यंच मनुष्य भी नही , भवनपति व्यतर जोतिपी वेमानिक से होय , एव बलदेव भेद यह के शर्करापृथिवीका नारकी भी होय , एव वासु

देव भी भेद यह दो पृथिवी से वैमानिक से होय शेष नहीं होय मण्डलीक सातमी से तेज वायु से नहीं, सेनापति ह्यदि भी एव अश्वरत्न हस्तिरत्न रत्नप्रभा से निकल यावत् सह स्रारदेव हो, चक्ररत्न चर्म दड तत्र मणि असि काकिणिरत्न असुरकुमार से ईशान तक हो, शेष नहीं, अस्यत भविकद्रव्य देव अविरोधितसयम विरोधित सयमा सयम में विरोधित सयमा सयम असङ्गी तापस कांदर्पिक चरणपरित्राजक किरिपिक तिरश्चीन आजीविक आभियौगिक सलिंगी दर्शनव्यापन्नक यह देव लोक में उपलै तो कहा कौन किस देवलोक

५८६

५८६

चार प्रकार असङ्गि आयु कहा, असङ्गी जीव क्वा नैरयिकायु करै कि देवायु करै एव मनुष्यायु देवायु जैसे नारकायु, एह नारकी असङ्गि आयु यावत् देव असङ्गि आयु में कौन किस्से थोडा घणा है एव अतपवज्जत्व (२० वां अतक्रिया पद पूर्ण)

५९०

॥ २१ वा कहते है ॥

विहिसठाणपमाण यह द्वार गाथा पाच औदारिकदि शरीर केहे एकैद्रियादि ५ जेदने औदारिक पाच जेदेहे पृथिवीकायादि ५ जेदसे एकेद्रिय औदारिक ज्ञा

५९१

५९१

५९२

पृथिवीकाय एकेंद्रिय औदारिक शरीर सूक्ष्म वा
 दर भेदसे दो भेद, सूक्ष्म तथा वादरन्ती पर्याप्त
 अपर्याप्त भेदसे प्रत्येक दो दो भेद है
 एवं वनस्पतिकाय एकेंद्रिय औदारिकन्ती कहा
 द्वित्रिचतुरिन्द्रिय औदारिकशरीर पर्याप्त अपर्याप्त
 भेदसे द्विविध कहा है
 पंचेंद्रिय औदारिक शरीर तिर्यच मनुष्यसे दो
 भेद है, तिर्यच औदारिक तीन भेद है एवं जल
 स्थल स्रचरादि भेदनिर्णय
 मनुष्य पंचेंद्रियौदारिक शरीर दो भेद इत्यादि
 औदारिक शरीर नानासंस्थान सस्थित है, एकें
 द्रिय का औदारिक नानासंस्थान है, पृथिवी

५९२

५९२

५९३

५९३

५९३

५९५

काय मसूरचद्र संस्थान सस्थित, एवं सूक्ष्म पृ
 थिवीका वादर कान्ती कहा
 आपकाय स्तिवुकविंदु संस्थान, सूक्ष्म वादरपर्या
 सा पर्याप्त ० शरी, तेज सूचीकलाप सस्थित एवं
 सूक्ष्मवादर पर्याप्त ० पर्याप्त ० शरी, वायु पताका
 संस्थान सस्थित है, एवं सूक्ष्मादि शरी है, वन
 स्पति नानासंस्थान सस्थित है, एवं सूक्ष्मादि
 शरी है, द्वीन्द्रियौदारिक शरीर ऊरुसंस्थान है,
 एवं तेरिद्री चउरिद्री शरी, पंचेंद्रिय तिर्यचको

५९६

ऊ संस्थान है पर्याप्त ० अपर्याप्त ० कान्ती
 पर्याप्त ० अपर्याप्त ० सम्मूर्च्छिम पंचेंद्रिय तिर्यच ऊरुहै,
 प ० अप ० गर्भज पंचेंद्रिय तिर्यच नाना है,
 एवं तिर्यच के १ झलावे हैं, जलचर में ६

विषय और प्रश्नादि

पत्राक

विषय और प्रश्नादि

पत्राक

संस्था० सम्प्रच्छिन्म मे सर्वत्र ऊँह्री है, मनुष्य मे ६ संस्थान सम्प्र० मे ऊँह्री है, औ दारिक शरीर की कितनी वही अवगाहना है

इत्यादि

पृथिवीकाय ऐकैन्द्रिय औदारिक शरीरावगाहना उत्कृष्ट जघन्य अगुल असंख्यात भाग एव अ पर्याप्त पर्याप्त, एव सूक्ष्म पर्याप्ता पर्याप्त, वा

तर पर्याप्ता पर्याप्त भी, एव अपूकाय भी तेजस्काय वायुकाय भी ऐसे ही कही, वनस्पति में जघन्य अगुल असंख्यात भाग उत्कृष्ट सा तिरिक हजार योजन एव पर्या० अगुल असंख्यात भाग, पर्याप्त पूर्व कहा तैसे है

द्विन्द्रिय जघन्य अगुल असंख्यात भाग उत्कृष्ट

५१८

५१९

६००

६००

वारह योजन इत्यादि, त्रिन्द्रि तीन कोस, चौरिद्री चारकोस, पंचेन्द्रिय १००० योजन

इत्यादि

जोयणसहस्रकृगा यह संग्रहणि गाथा २ मनु

व्यौदारिक शरीरावगाहनाधिकार

वैक्रिय शरीर द्वि जेद व्यक्तव्यताधिकार

वैक्रिय शरीर संस्थान वक्तव्यताधिकार

नारकी आदि दंडक मे वैक्रियशरीर संस्थान

वैक्रिय शरीरावगाहना वक्तव्यताधिकार

आहारक शरीर वक्तव्यताधिकार

आहारकशरीर संस्थान वक्तव्यताधिकार

तैजसशरीर वक्तव्यता

तैजसशरीर संस्थान निर्णय २४ दंडक मे

६०१

६०२

६०३

६०८

६०८

६१०

६१६

६१९

६२०

६२१

एवं सातवेदनी का ८ अनुभाग कहा, असातका भी ८ ही कहा मोहनीका अनुभाग ४ तरह, आयुका ४ एवं सर्व कर्मका

(१ उद्देशा पूरा ज्ञाया)

आठ कर्म प्रकृति कही, ज्ञानावरणी ५ जेद, दर्शनावरणी निद्रा ५ दर्शन ४ एवं नव, वेदनी १६ प्रकार साता ८ तरे असाता ८ तरह, मोहनी दो जेदें दर्शनमोहनी तीन चारित्रमोहनी दो

जेदें, कपाय वेदनी १६ जेदें है नो कपायवेदनी १ प्रकार, आयु ४, नाम ४२ गति नाम ४ जेदें, जातिनाम ५, शरीर नाम ५,

अंगोपाग ३, शरीरवधन ५, शरीरसंघात ५, नाम ठ जेदें सस्थान नाम ६, वर्ण ५, गंध २, रस ५, स्पर्श ८, अंगुल्लघु १, उपघात १, पराघात १, आनुपूर्वी ४, उत्स्थास १, शेष सर्व १, एक हैं यावत्तीर्थकर है, विहारयोगति २ जेदें, गोत्र २ जेदें उच्चैः ८, नीचैः ८, अन्त

राय ५ जेदें, ज्ञानावरणी आदि ८ कर्मस्थिति निरूपणाधिकार एकेंद्रिय जीव ज्ञानावरणी को क्या बांधै एवं ८

कर्म कहना एव द्वित्रि चतुरिन्द्रिय को श्री कहना एव पंचेन्द्रिय ज्ञानावरणी का क्या बांधै इत्यादि निरूपण

<p>ज्ञानावरणी कर्म का जघन्य स्थिति बन्धक कौन, मोहनीय का जघन्यस्थिति बन्धक कौन; आयु का जघन्य स्थिति बन्धक कौन इत्यादि उत्कृष्टस्थितिक ज्ञानावरणी कर्म क्या नारकी बाधे कि तिर्यच इत्यादि, कैसा नारकी उत्कृष्ट स्थितिक ज्ञानावरणी कर्म बाधे इत्यादि निरूपण एव आयु की ठीक सातो कर्म के आलावे कहना, उत्कृष्टस्थितिक आयु कर्म क्या नारकी बाधे इत्यादि कैसा तिर्यच उत्कृष्टस्थितिक आयु कर्म बाधे</p>	<p>(२३ वा पद पूर्ण ऊँछा)</p> <p>॥ २४ वा पद कहते हैं ॥</p> <p>अष्ट कर्म प्रकृति कही, नारकी को यावद्वैमानिक की, जीव ज्ञानावरणी (आदि) कर्म बाधता ऊँछा कितनी कर्म प्रकृति बाधे इत्यादि निर्णय (२४ वा पद पूर्ण ऊँछा)</p>	७०८
<p>७०४</p>	<p>॥ २५ कहते हैं ॥</p> <p>आठ कर्म प्रकृति कही, ज्ञानावरणी कर्म बाधतो जीव कितनी प्रकृति बँटे, एव नारकी यावद्वैमानिक, एव पृथक् सेत्री, यावत् अंतराय तक कहना, जीव वेदनी कर्म बाधता कितनी</p>	७०६
<p>७०५</p>	<p>७०६</p>	७०७
<p>कैसा मनुष्य तथा मानुषी उत्कृष्टस्थितिक आयु बाधे</p>	<p>७०७</p>	

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
कर्म प्रकृति वेद, एव एकत्व पृथक् से झाँठी कर्म वेद यावद्वैमानिक (२५ वा पद पूर्ण कहा)	७१२	कर्मों के झालावे समाप्ति पर्यन्त (२७ वा पद कहा पूर्ण)	७१७
॥ २६ कहते हैं ॥ झाँठ कर्म कहे नारकी को यावद्वैमानिक को, जीव ज्ञानावरणी कर्म वेदता कितनी कर्म प्र कृति बाधै, इत्यादि निर्णय (२६ वा पद कहा पूर्ण)	७१३	सच्चिन्नाहारठी यह द्वार गाथा २, नारकी सच्चिन्नाहार के अचिन्नाहार मिश्राहार एव असुरकुमार यावद्वैमानिक, नारकी झाँहार का अर्थी है, कितने कालसे झाँहार की इच्छा होय इत्यादि नारकी क्या झाँहार करै इत्यादि निरूपणाधिकार असुरकुमार झाँहार का अर्थी है, एव जैन नार की यावत भयोभूयः परिणामे पृथिवीकाय आहार का अर्थी है, निरंतर झा हारेच्छा होती है, क्या झाँहार है जैसे नारकी	७१८ ७१९ ७२० ७२५
झाँठ कर्म प्रकृति कही, नारकी को यावद्वैमानिक को, जीव ज्ञानावरणी कर्म वेदता कितनी कर्म प्रकृति वेद एव सर्व एकत्व पृथक् से कहना ८			

को कहा तैत्तिरेय भी कहना सर्व वनस्पति-
 काय पर्यन्त एवमेव
 द्वीन्द्रिय आहारार्थी है, एव पूर्ववत् सर्व कहना
 यावत् प्रत्यक्ष पर्यन्त
 एवं त्रिचतुरिन्द्रियाहारार्थ, आहार कालादि नि-
 रूपणाधिकार
 मनुष्य आहारादि निर्णयाधिकार यावत् सर्वार्थ-
 सिद्ध देव तक कहा
 नारकी क्या एकेन्द्रियशरीर आहार के यावत्पक्षे
 द्वियशरीर आहार, एव स्तनितकुमारपर्यन्त
 पृथिवीकाय प्रश्न, द्वीन्द्रिय एव यावच्चतुरि-
 न्द्रिय इत्यादि जिसके जितनी इन्द्रियशरीर
 उसकी उतनेही का आहार, नारकी लोमाहार

७२६

७२८

७२९

७३०

है प्रक्षेपाहारी नहीं एव एकेन्द्रिय भी
 सर्व देव भी पूर्ववत् वैमानिक पर्यन्त, द्वीन्द्रिय
 से मनुष्य तक दोनू है, नारकी ओजाहारी है
 मनभक्षी नहीं, एव सर्व देव यात्रद्वैमानिक
 दोनू है इत्यादि निरूपणाधिकार
 (१ उद्देश पूर्ण ज्ञाना)

आहार भविय सबी यह गाथा, जीव आहारक

भी है अनाहारक भी है
 एव नारकी यावत् असुरकुमार यात्रद्वैमानिक
 सिद्ध अनाहारी है, एव वज्रवचन से भी आ

लावा कहना
 भवसिद्धि आहारक अनाहारक भी है, एव वैमा-
 निक पर्यन्त एवं अभवसिद्धि नोभवसिद्धि

७३४

७३५

७३६

७३७

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
<p>कर्म प्रकृति वेद, एव एकत्व पृथक् से झाँठी कर्म वेद यावद्वैमानिक (२५ वा पद पूर्ण कहा)</p> <p>॥ २६ कहते हैं ॥</p> <p>झाँठ कर्म कहे नारकी को यावद्वैमानिक की, जीव ज्ञानावरणी कर्म वेदता कितनी कर्म प्र कृति बाधै, इत्यादि निर्णय (२६ वा पद कहा पूर्ण)</p> <p>झाँठ कर्म प्रकृति कही, नारकी को यावद्वैमानिक को, जीव ज्ञानावरणी कर्म वेदता कितनी कर्म प्रकृति वेद एवं सर्व एकत्व पृथक् से कहना ८</p>	७१२	<p>कर्मों के झालावे समाप्ति पर्यन्त (२७ वां पद कहा पूर्ण)</p> <p>सच्चिन्नाहारठी यह द्वार गाथा २, नारकी सच्चिन्नाहार के अचिन्नाहार मिश्राहार एव असुरकुमार यावद्वैमानिक, नारकी झाँहार का अर्थी है, कितने कालसे झाँहार की डच्छा होय इत्यादि</p> <p>नारकी क्या झाँहार करै इत्यादि निरूपणाधिकार असुरकुमार झाँहार का अर्थी है, एव जैन नार की याचत भयोभूयः परिणमे पृथिवीकाय आहार का अर्थी है, निरंतर झा हारेच्छा होती है, क्या झाँहार है जैसे नारकी</p>	७१७ ७१८ ७१९ ७२० ७२५

विषय और प्रस्तादि	पत्राक	विषय और प्रस्तादि	पत्राक
कितने प्रकार पञ्चज्ञा कही २, साकार पञ्चज्ञा ६ प्रकार, अनाकार पञ्चज्ञा तीन प्रकार है एव जीव को कहना नारकी को २ पञ्चज्ञा, साकार पञ्चज्ञा ४ अनाकार २ एव स्तनितकुमार पर्यन्त पृथिवीकाय को १ साकारपञ्चज्ञा एव वनस्पति पर्यन्त द्विन्द्रिय को १ साकार पञ्चज्ञा सो २ तरहकी है एव त्रीन्द्रिय जो चक्षुरिन्द्रिय को २ साकार पञ्चज्ञा जैसे द्विन्द्रिय को अनाकारपञ्चज्ञा १ कही, मनुष्य को जैसे जीवों को शेष जैसे नारकी यावद्वैमानिक जीव साकारपञ्ची है के अनाकार इत्यादि	७५६ ७५७ ७५७ ७५८	केवली इस रत्नप्रज्ञापृथिवी को अनाकार हेतु उ पमा दृष्टान्त वर्ण सस्यान प्रमाण से जिससमन जाणै उससमय देखै इत्यादि प्रज्ञा (३० पद समाप्त ऊँचा)	७५८ ७६० ७६२ ७६३
॥ ३१ कहते हैं ॥			
जीव सज्ञी असज्ञी के नो सज्ञी नो असज्ञी इत्यादि पृथिवी काय प्रज्ञा, एवं यावच्चतुरिन्द्री मनुष्य जैसे जीव, पंचेन्द्रिय तिर्यच वानव्यन्तर जैसे नारकी जोतिपी वैमानिक सज्ञी, (३१ वा पद कहा)			

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
नो अश्वसिद्धि आहार अनाहार निर्णय (द्वार १)	७३८	दो प्रकार उपयोग कहा, साकारोपयोग अष्ट भेद, अनाकारोपयोग चार भेद	७५०
सजी जीव आहारक अनाहारक भी है एव वैमा निक पर्यन्त एकेन्द्रिय विकलेन्द्रिय न पूछना एव असन्धी भी कहना स्तनितकुमार तक एवं मनुष्य भी, सिद्ध अनाहारक, सलेशी जीव का प्रश्न एकत्वपृथक् से सम्यग्दृष्टि जीव आहारक प्रश्न, द्वित्रिचतुरिन्द्रिय एक भगा सयत आहारकानाहारक निर्णय, एकत्व पृथक् से सकपायी प्रश्न	७३९ ७४० ७४२	नारकी को कितने प्रकार उपयोग, साकारोपयोग ६, अनाकारोपयोग तीन प्रकार एव स्तनित कुमार पर्यन्त कहना पृथिवीकाय उपयोग प्रश्न यावद्धनस्पतिकाय, द्वी न्दित्रय प्रश्न पचेन्द्रिय त्रियेव जैसे नारकी, मनुष्य जैसे औचिक उपयोग इत्यादि (२९ वां पद समाप्त ज्ञात्वा)	७५१ ७५२ ७५३ ७५३
(२८ वां अहार पद कहा) ॥ २९ वां कहते हैं ॥	७४४		

॥ ३० कहते हैं ॥

सौधर्म देव जघन्य अगुल असख्यातभाग उ०—
नीचे रत्नप्रभा का नीचे का चरमान्त तिरछा
असख्य द्वीपसमुद्र, ऊपर अपना विमान ।
एव इंशानदेवभी, सनत्कुमार भी ऐसे नीचे
शर्करा का नीचला चरमान्त, एव माहेन्द्रदेव
भी, ब्रह्म लान्तकदेव निर्फ नीचे तीसरी का
नीचेका चरमान्त, महाशुक्र सहस्रार चौथीके
नीचे ना चरमान्त, आनतप्राणत प्रारण अ
व्युत देव नीचे पाचमी धूमप्रभा के नीचे का
चरमान्त, नीचे मध्यम ग्रैवेयकदेव नीचे ठही
के नीचे का चरमान्त, उपरिमग्रैवेयक देव
ज० अगुल असख्यात भाग उ० सातमी के

७६९

नीचे का चरमान्त, तिरछा असख्य द्वीपसमुद्र,
ऊपर स्वविमान
अनुत्तरोपपातिक देव सभिन्नलोक नाडी जाणे,
नारकी का अवधि क्षुरप्रामार, असुररुमार या
वत् स्तनितकुमार का पत्यरु के आकार . प
चेद्विग तिर्यच का नानाकार है, मनुष्य का भी
एव, वानव्यन्तर का पटहाकार, जातिपी का
कालराकार । सौधर्म देव का ऊर्ध्वसुडगाकार,
एव अव्युतदेव पर्यन्त है, ग्रैवेयकदेव का पुण्य
चगेरीसमान, अनुत्तरदेव का जवनी नाली

७७३

नारकी यावत् स्तनितकुमार अवधि के भीतर
है के बाहिर, भीतर है, पचेद्विग तिर्यच वा
के आकार

॥ ३२ कहते हैं ॥

जीव सयत के असयत के सयतासयत, एवं वा-
रकी मय, यायसुतुनिद्रय, पचेद्रिय तिर्यच

मनुष्य मय एवं सिद्धतक
(३२ वां पद कहा)

॥ ३३ कहते हैं ॥

नेद विषय संठाणे यह गाथा
दो प्रकार अधि कही मयमत्य द्वायीपत्रात्मिक
नेद से, देव नारकी को मयमत्य, मनुष्य

तिर्यच की द्वायीपत्रात्मिक
नारकी जयन्य अर्द्ध क्रोश उत्कृष्ट चार जाणे आ
वधि से, रत्नमना का नारकी अर्द्धाई जयन्य

७६४

७६५

७६७

उत्कृष्ट चार जाणे, अर्द्धा का जयन्य तीन
उत्कृष्ट अर्द्ध, आलुका नारकी जयन्य अर्द्ध-
उत्कृष्ट तीन, पकप्रजा नारकी जयन्य दो उत्कृष्ट
अर्द्धाई, धूमप्रजा नारकी जयन्य अर्द्ध उ० दो
चमा का नारकी क्रोश जयन्य उत्कृष्ट अर्द्ध, नीचे
सातमी का जयन्य अर्द्ध क्रोश उत्कृष्ट क्रोश।
असुरकुमार जयन्य २५ योजन उत्कृष्ट अस
ख्यात द्वीपसमुद्र, नाग जयन्य २५ उत्कृष्टवही,
एव स्तनितकुमार पर्यन्त, अर्द्धेद्रिय तिर्यच ज-
यन्य अर्द्धा उत्कृष्टात मम उ० असख्यात
द्वीपसमुद्र, मनुष्य अर्द्धा उत्कृष्टातनाग जयन्य
उत्कृष्ट असख्यात अर्द्धा मम लोक अर्द्धात्नाग स्वक,
वानव्यन्तर जैसे नाग, जोतिषी जयन्य उत्कृष्ट

७६८

भवनपति व्यन्तर जोतिषी सौधर्म ईशान के देव सदेवीक सपरिचार, सनत्कुमार से अच्युत तक अदेवीक सपरिचार है, त्रैवेयकानुत्तर देव आ देवीक अपरिचार हैं।
परिचारणा पाच प्रकार है कायादि भेदसे उस्मे भवनपति आदि ईशानान्त कल्प में कायपरिचारणा है, शनत्कुमार माहेद्र मे स्पर्शपरिचारणा है, ब्रह्मलातक मे रूपपरिचारणा है, शुक्र सहस्त्र मे शब्दपरिचारणा है, अच्युतान्त ४ मे मनपरिचारणा है, त्रैवेयकानुत्तर मे परिचारणा नहीं है।

इच्छामन समुत्पन्न होने का अधिकार

यह कायपरिचारक यावत् मनपरिचारक दंष्ट्रो में कौन किसेसे अपवञ्जत्व है
(३४ वां पद पूर्ण हुआ)

॥ ३५ वां कहते है ॥

सीयायदवृत्तारीर यह सग्रह गाथा शीत उद्य मिश्र एव तीन प्रकार वेदना कही, नारकी को कौन वेदना द्रव्य क्षेत्र काल भाव से चारप्रकार वेदना, नार की कौन वेदना वेदै एव वैमानिक पर्यन्त शारीर मानसी शारीरी मानसी शारीरमानसी भेदसे तीनप्रकार वेदना, नारकी कौन वेदना वेदै एव यावद्वैमानिक पर्यन्त

७७८

७७९

७८०

७८०

७८४

७८६

७८७

७८८

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
हिर, मनुष्य दोनू है, व्यन्तर जोतिपी वैमानिक जैसे नारकी, नारकी देखावधि है, एव स्तानितकुमार पर्यन्त, पचेद्रिय तिर्यच भी एव, मनुष्य दोनू । व्यन्तर जोतिपी वैमानिक जैसे नारकी । नारकी का अत्रधि आनुगामिक अ प्रतिपाती अवस्थित है । एव स्तानितकुमार पर्यन्त ।	७७३	अणतरागथाहरे इह गाथा २ नारकी अणतराहार है इत्यादि वक्तव्यता याव	७७३
पचेद्रिय तिर्यच का आनुगामी भी यावत् अवस्थित भी है, एव मनुष्य भी, वानव्यन्तर जोतिपी वैमानिक जैसे नारकी	७७३	त २४ दंडक मे नारकी का आहार आभोगनिर्वर्त्तित है के अ- नाभोगनिर्वर्त्तित इत्यादि वक्तव्यता नारकी जिन पुद्गलो को आहारपणें ले उनकी जार्णें देखे इत्यादि निर्णय नारकी को असख्यात अध्यवसान, प्रशस्त भी अप्रशस्त भी वैमानिक कोभीहै नारकी सम्यक्ताभिगमी मिथ्यात्वाभिगमी सम्य- इमिथ्यात्वाभिगमी भी है, एव वैमानिक पर्यन्त एकेद्रिय विकलेंद्रिय मिथ्यात्वाभिगमी ही है देवता सदेवीक सपरिचार है इत्यादि ४ भंग	७७४
	७७५		७७५
	७७६		७७६
	७७७		७७७

॥ ३४ वा पद कहते है ॥

विषय और प्रश्नादि	पत्राक	विषय और प्रश्नादि	पत्राक
प्रश्न निर्णय भवनपति ध्यन्तर जोतिषो सौधर्म ईशान के देव सदेवीक सपरिचार, सनत्कुमार से अच्युत तक अदेवीक सपरिचार है, ग्रैवेयकानुत्तर देव आ देवीक अपरिचार है परिचारणा पाच प्रकार है कायादि भेदसे उसमें भवनपति आदि ईशानान्त कल्प में कायपरि चारणा है, शनत्कुमार माहेद्र में स्पर्शपरिचा रणा है, ब्रह्मलातक में रूपपरिचारणा है, शुक्र सहस्रार में शब्दपरिचारणा है, अच्युतान्त ४ में मनपरिचारणा है, ग्रैवेयकानुत्तर में परिचा— रणा नहीं है । इच्छामन समुत्पन्न होने का अधिकार	७७८ ७७९ ७८० ७८०	यह कायपरिचारक यावत् मनपरिचारक देशो मे कौन किस्से अल्पव्यक्तत्व है (३४ वा पद पूर्ण ऊँछा) ॥ ३५ वाँ कहते हैं ॥ सीयायदवृत्तारीर यह सग्रह गाथा श्रोत उच्च मिश्र एव तीन प्रकार वेदना कही, नारकी को कौन वेदना द्रव्य क्षेत्र काल भाव से चारप्रकार वेदना, नार की कौन वेदना वेदै एवं वैमानिक पर्यन्त शारीर मानसी शारीरी मानसी शारीरमानसी भेदसे तीनप्रकार वेदना, नारकी कौन वेदना वेदै एव यावद्वैमानिक पर्यन्त	७८४ ७८६ ७८७ ७८८

विषय और प्रश्नादि

पत्रांक

विषय और प्रश्नादि

पत्रांक

एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय शरीरी वेदना वेदें और नहीं,

साता असाता नातासात एवं तीन प्रकार वेद
नाहै, नारकी को कौन वेदना है एवं सर्व जीव

यावद्वैमानिक पर्यन्त

दुःख सुख मिश्र एवं तीन प्रकार वेदना है, नारकी
को कौन वेदना यावद्वैमानिक पर्यन्त
अभ्युपगमिकी औपक्रमिकी एवं २ प्रकार वेदना

है नारकी से चौरिन्द्रो तक औपक्रमिकी है,
तिर्यच मनुष्य से दो, व्यन्तर जातिपी वैमानिक

को जैसे नारकी को कही तैसे कहा
निदा अनिदा वेद से दो वेदना, नारकी को कौन
वेदना है इत्यादि निर्णय, एवं स्तनितकुमार
पर्यन्त, पृथिवीकाय प्रश्न, एवं चौरिन्द्रो, ति

७८९

७९०

७९०

र्यच मनुष्य व्यन्तर जैसे नारकी कहा
ज्योतिषी का प्रश्न,

(३५ वां पद कहा)

॥ ३६ कहते हैं ॥

वेदन कषाय मरणे इह गाथा समग्रणी, क्तिने

समुद्घात कहे

वेदना समुद्घात असख्यत सामयिक अान्तर्मुद्र
र्तिक, एवं आहारक तक, केवलितसमुद्घात
आठ सामयिक, नारकी को चार समुद्घात,
असुरकुमार को पांच समुद्घात, एवं स्तनित
कुमार तक, पृथिवीकाय को तीन समु०, एवं

चौरिन्द्रो पर्यंत, वायुकाय को चार समु०

७९३

७९५

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
पंचेन्द्रिय तिर्यच यावत् वैमानिक को पाच समु० मनुष्य को सात, एकैक नारकी को कितने स मु० अतीत अनत पुररुत इत्यादि	७९६	है, एव वैमानिक जेद अनस्पति काय मनुष्य मे एकैक नारकी को नारकी पणे कितने वेदना स० अतीत इत्यादि	८००
एव असुरकुमार को श्री वैमानिक पर्यंत, एव चौबीस दुरुक कहा, एकैक नारकी को कितने सम० अतीत इत्यादि वैमानिक पर्यंत एकैक नारकी को कितने केवलिसमु० अतीत इत्यादि	७९७	एव असुरकुमार से वैमानिक पर्यंत, एकैक असुर कुमार को नारकी पणे कितने वेदनासमु० अतीत इत्यादि, एकैक असुरकुमार को असुर कुमार पणे कितने वेदना स० अतीत एव वै मानिक	८०१
एव वैमानिक यावन्मनुष्य पर्यंत, नारकी को कितने वेदना समु० अतीत इत्यादि, एव वै मानिक तक, एव तैजस श्री एव पाच २४ ठ रुक नारकी को नितने आहारक समु० अतीत एव वैमानिक तक विशेष वनस्पति काय मनुष्य मे	७९८	एव वैमानिक पर्यंत २४ चौबीस दुरुक होय, ना रकी के नारकी पणे कितने कपायसमु० अतीत इत्यादि एव एकैक नारकी के असुरकुमार पणे कितना अतीत एव स्तनितकुमार तक मारणातिक समु० स्वस्थान में एकोत्तरिका से जहा	८०२
	७९९		८०४

एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय शारीरी वेदना वेदें और नहीं,

साता असाता सातासात एव तीन प्रकार वेद
नाहै, नारकी को कौन वेदना है एव सर्व जीव

यावद्वैमानिक पर्यन्त

दुख सुख मिश्र एव तीन प्रकार वेदना है, नारकी
को कौन वेदना यावद्वैमानिक पर्यन्त

अभ्युपगमिकी औपक्रमिकी एव २ प्रकार वेदना

है नारकी से चौरिन्द्री तक औपक्रमिकी है,
तिर्यच मनुष्य में दो, व्यन्तर जातिपी वैमानिक

की जैसे नारकी को कहो तैसे कहा

निदा अनिदा जेद से दो वेदना, नारकी को कौन
वेदना है इत्यादि निर्णय, एव स्तनितकुमार
पर्यन्त, पृथिवीकाय प्रश्न, एव चौरिन्द्री, ति

७८९

७९०

७९०

र्थच मनुष्य व्यन्तर जैसे नारकी कहा
ज्योतिपी का प्रश्न,
(३५ वां पद कहा)

॥ ३६ कहते हैं ॥

वेदन कषाय मरणे इह गाथा संग्रहणी, कितने

समुद्घात कहे

वेदना समुद्घात असख्यात सामयिक छान्तर्मूल
तिरिक्त, एव आहारक तरु, केवलिसमुद्घात
आठ सामयिक, नारकी को चार समुद्घात,
असुरकुमार को पांच समुद्घात, एवं स्तनित
कुमार तक, पृथिवीकाय को तीन समु०, एव

चौरिन्द्री पर्यन्त, वायुकाय को चार समु०

७९३

७९४

विषय और प्रश्नादि	पत्रांक	विषय और प्रश्नादि	पत्रांक
पंचेन्द्रिय तिर्यच यावत् वैमानिकको पाच समु० मनुष्य को सात, एकैक नारकी को कितने स मु० अतीत अतः पुरस्कृत इत्यादि	७९६	है, एवं वैमानिक चेट वनस्पति काय मनुष्य मे एकैक नारकी को नारकी पणे कितने वेदना स०	८००
एव असुरकुमार को जी वैमानिक पर्यंत, एव चौबीस दंरु कहा, एकैक नारकी को कितने समु० अतीत इत्यादि वैमानिक पर्यंत एकैक नारकी को कितने केवलिसमु० अतीत इत्यादि	७९७	एव असुरकुमार से वैमानिक पर्यंत, एकैक असुरकुमार को नारकी पणे कितने वेदनासमु० अतीत इत्यादि, एकैक असुरकुमार को असुरकुमार पणे कितने वेदना स० अतीत एव वैमानिक	८०१
एव वैमानिक याचन्मनुष्य पर्यंत, नारकी को कितने वेदना समु० अतीत इत्यादि, एव वैमानिक तक, एव तैजस जी एव पाच २४ दंरु नारकी को कितने आहारक समु० अतीत एव वैमानिक तक विशेष वनस्पति काय मनुष्य में	७९८	एवं वैमानिक पर्यंत २४ चौबीस दंरु होय, नारकी के नारकी पणे कितने कपायनमु० अतीत इत्यादि एव एकैक नारकी के असुरकुमार पणे कितना अतीत एव स्तनिकुमार तक मारणातिक समु० स्वस्थान मे एकोत्तरिका से जहा	८०२
	७९९		८०४

विषय और प्रश्नादि

पत्रांक

विषय और प्रश्नादि

पत्रांक

तक वैमानिक को वैमानिकपणे से, एव २४।

२४ दण्डक, वैक्रिय जैसे कषाय, तैजस जैसे

एकैक नारकी के नारकीपने कितने मारणातिक

अतीत इत्यादि

एकैक नारकी के नारकीपणे कितने केवल स०

अतीत इत्यादि वैमानिक पर्यन्त मनुष्य में

नेद है, एवं तैजससमु० पर्यन्त कहा

यह वेदनादि समु० यावत्केवल समु० समवहत

असमवहत जीवों में कौन किस्से थोड़ा घणा

इत्यादि अधिकार

यह नारकी वेदना कषाय मरण वैक्रिय समवहत

इत्यादि निर्णय

८०७

८०८

८०९

८१२

८१३

यह असुरकुमार वेदन कषाय मरण वैक्रिय तैज

स सम० निर्णय

पृथिवीकायादि निरूपण द्विन्द्रिय यावत्पंचेन्द्रिय

वेदनादि यावत् असमवहतों में कौन किस्से

थोड़ा घणा इत्यादि अधिकार

मनुष्य वेदनादि यावत्केवलिसमु० समवहता

समवहतों में कौन किस्से

कषायसमु० चारप्रकार क्रोधादि के चार भेदसे,

नारकी को ४ कषाय समु० एव यावद्द्वैमानिक

एकैक नारकी को कितने क्रोधसमु० एवं याव

तु अतीत इत्यादि

एव लोभसमु० पर्यन्त ४ दण्डक एकत्व पृथक् से

४ दण्डक, एकैक नारकी के नारकीपने कितने

८१४

८१६

८१७

८१८

क्रोधसं अतीत इत्यादि अधिकार यह क्रोधसं यावक्षीमसं समवहतासमवहत मे कौन किस्से कितने छाद्वास्थिक सं ६ कहे वेदना याव दाहारक नारकी को ४ त्वाद्वास्थिक, असुर को ५, एक द्विय को तीन। वायुको चार। तिर्यच पंचे—
 द्विय को पाच। मनुष्य को ६ वेदनी समवहत जीव जिन पुद्गलको छोड़ें उनसे कितना क्षेत्र पूर्ण, कितना स्पष्ट इत्यादि नि रूपणाधिकार केवलिसं समवहत अनगर भावितात्मा जो चरम निर्जरापुद्गल से सूक्ष्म है, सर्वलोक को

८११

८२३

८२५

८२६

८२७

फरस के रहै इत्यादि अर्थनिरूपण छद्वास्थ मनुष्य उन निर्जरा पुद्गलों के वर्ण गन्धा काहे से केवली सं को करै ४ कर्म क्षीण न दि जाणे नही होने से करै कोई केवली समुद्घात करै कोई नही भी करै, इहां २ गाथा है,
 आवर्जन कितने समय मे होता है, केवलिसं कितने समय मे होता है ८ मे इत्यादि तथा सं गत जीव मनोयोगादि तीन योगमे से कौनसा योग करै तथा सं गत जीव सीके बुद्धे मुक्त होय इत्यादि सं प्रतिनिर्वर्त्तित जीव कौनसा योग करै

८३५

८३६

८३७

८४०

८४१

८४२

८४३

८४४

तक वैमानिक को वैमानिकपणे में, एव २४।

२४ दण्डक, वैक्रिय जैसे कषाय, तैजस जैसे

मारणांतिक

एकैक नारकी के नारकीपने

कितने आहारक

अतीत इत्यादि

एकैक नारकी के नारकीपणे कितने केवल स०

अतीत इत्यादि वैमानिक पर्यन्त मनुष्य में

ज्ञेय है, एव तैजससमु० पर्यन्त कहा

यह वेदनादि समु० यावत्केवल समु० समवहत

असमवहत जीवों में कौन किस्से योना घणा

इत्यादि अधिकार

यह नारकी वेदना कषाय मरण वैक्रिय समवहत

इत्यादि निर्णय

८०७

८०८

८०९

८१२

८१३

यह असुरकुमार वेदन कषाय मरण वैक्रिय तैज

स सम० निर्णय

पृथिवीकायादि निरूपण द्वीन्द्रिय यावत्पचेन्द्रिय

वेदनादि यावत् असमवहता में कौन किस्से

योना घणा इत्यादि अधिकार

मनुष्य वेदनादि यावत्केवल समु० समवहता

समवहता में कौन किस्से

कषायसमु० चारप्रकार क्रोधादि के चार भेदसे,

नारकी को ४ कषाय समु० एव यावद्द्वैमानिक

एकैक नारकी को कितने क्रोधसमु० एव याव

तु अतीत इत्यादि

एवं लोभसमु० पर्यन्त ४ दंडक एकत्व पृथक् से

४ दंडक, एकैक नारकी के नारकीपने कितने

८१४

८१६

८१७

८१८

क्रोधस० अतीत इत्यादि अधिकार यह क्रोधसमु० यावत्प्रोभसमु० समवहतासमवहत मे कौन किस्से कितने छाव्वास्थिक समु० ६ कहे वेदना याव दाहारक नारकी को ४ छाव्वास्थिक, असुर को ५, एक द्विय को तीन । वायुको चार । तिर्यच पंचे— द्विय को पाच । मनष्य को ६ वेदनी समवहत जीव जिन पुद्गलोको छोड़े उनसे कितना क्षेत्र पूर्ण, कितना स्पृष्ट इत्यादि नि रूपणाधिकार केवलिसमु० समवहत अनगर भावितात्मा जो चरम निर्जरापुद्गल सो सूक्ष्म है, सर्वलोक को

८१९

८२३

८२५

८२६

८२७

कृष्णस्य मनुष्य उन निर्जरा पुद्गलो के वर्ण गन्धा दि जाणे नही काहे से केवली समु० को करै ४ कर्म क्षीण न होने से करै कोई केवली समुदघात करै कोई नही भी करै, इहां २ गाथा है, आवर्जन कितने समय मे होता है, केवलिसमु० कितने समय मे होता है ८ मे इत्यादि तथा समु० गत जीव मनोयोगादि तीन योगमे से कौनसा योग करै तथा समु० गत जीव सीक्रे वृक्षे मुक्त होय इत्यादि समु० प्रतिनिर्वर्त्तित जीव कौनसा योग करै

८३५

८३६

८३७

८४०

८४१

८४२

८४३

८४४

विषय और प्रवृत्ति	पत्रांक	विषय और प्रवृत्ति	पत्रांक
योग निरोध समय निरूपणाधिकार शैलेशिकालनिरूपणाधिकार चार कर्मप्रकृति युगपत् स्वपाय औदारिक तैजस कर्मण त्यजे ऋजुश्रंगि पाके अस्पृशद्भूति हो के मुक्त होय सिद्ध होय अशरीर जीवघन इत्यादि सिद्ध लक्षणनिरूपण निष्क्रियसर्वदुःखा सिद्धत्व निरूपण लक्षण गाथा (समुद्रघात पद-३६ पूर्ण कहा)	८४५ ८४६ ८४७ ८४७ ८४८		
॥ चतुर्थ उपाग प्रज्ञापना सूत्रानुक्रमणिका ॥			
॥ समाप्त जाई ॥			

ववगयजरमरणभए । सठआभवांजणतिविहेण । वंदांमिजिणवारिदं तेलोक्कागुरुंमहावीरं ॥ १ ॥
 सुयरयणनिहाणजिण वरेणभविजयजणिह्वुडकरेण । उवदसियाभगवया पत्तवणासव्भवाणं ॥ २ ॥
 वायगववसातुं तेवीसडमेणधीरपुरिसेण । दुधरधरेणमुणिणा पुव्वसुयसमिठवुधोण ॥ ३ ॥ सुयसागराविए
 ज्जण जेणसुयरयणमुत्तमदिस्स । सीसगणस्सभगवतुं तस्सणमोअज्जसामस्स ॥ ४ ॥ अज्जयणमिणचित्तं सुय-
 रयणदिठ्ठिवायणीसद । जहवसियभगवया अहमवितहवणइस्समि ॥ ५ ॥ पयवणा १ ठाणाइं २, वज्जव
 वव्व ३ ठिई ४ विसेसाय ५ । वक्कती ६ उस्सास, ७ सणा ८ जोणीय ९ चरिमाइ १० ॥ १ ॥ भासा ११ सरीर १२
 परिणा, म १३ कसाय १४ इदिय १५ प्पत्तगेय १६ । लेसा १७ कायठिइया १८, सम्मत्ते १९ अत्तकिरियाय २०
 ॥ २ ॥ उंगाहणसठाणा २१, किरिया २२ कम्मयेय २३ कम्मस्स । वधए २४ कम्मवेयए २५, वेयस्सवधए २६-
 वेयवेयए २७ ॥ ३ ॥ आहारि २८ उवत्तगे २९, पासणया ३० सखि ३१ सजमे ३२ चेव । उही ३३ पवियारण ३४

व्यपगतजामरणतयान् सिद्धान्तनिबन्धविविधेन । वन्देतिजनवरेन्द्र वीलोक्कागुरुमहावीरम् ॥ १ ॥ श्रुतरत्ननिधानज्जन-धरेणप्रअजनिनिवृत्तिकरे
 ण । उपदक्षितोत्ताजगवता प्रज्ञापनासर्वज्ञावानाम् ॥ २ ॥ वाक्कवरवशोव-योविशतितमेनचीरपुरुषेण । दुधरधरेणमुनिना पूज्यश्रुतसमुद्बुद्धिना ३ ॥
 श्रुतसागरादीनयित्वा येनश्रुतरत्नमुत्तमदत्त । शिष्यगणायजगवते तस्मैनमश्चायइयामाय ॥ ४ ॥ अघ्ययनिदन्वित्र श्रुतरत्नदृष्टिवादनिरपन्द । यथा
 वार्थितजगवता ह्रमपितयावणयियामि ॥ ५ ॥ प्रज्ञापनास्थानानिबहुवक्तव्यस्थितिर्विशेषय । व्युत्क्रान्तिशोक्कः स सञ्जायोनियचरमाणि ॥ ६ ॥
 ज्ञापःशरीरपरिणाम कथयैन्द्रियेप्रयोगश्च । लेशःकायस्थितिवो सम्पद्गमयान्तक्रियाचैव ॥ ७ ॥ अतगाहनास्थान क्रियाकर्मोपक्रमेण । वन्धको
 वेदकश्चैव वेदयन्कएव च ॥ ८ ॥ वेदवेदकआहार शोपयोगोऽयं दर्शनम् । सञ्जाचसयमश्नोवा वचिधप्रविचारणा ॥ ९ ॥ वदनाथ समुद्भूत भट्टत्रि

पत्रांक विषय और प्रस्तादि

पत्रांक

योग निरोध समय निरूपणाधिकार
त्रिलोकिकालनिरूपणाधिकार

८४५

८४६

अध्याय औदारिक तैजस

परिणया नीलवस्त्रपरिणया लोहिषवस्त्रपरिणया हालिद्वयपरिणया सुक्लिन्नवस्त्रपरिणया । जे गंधपरिणया ते दुर्विहा पणता, तजहा-सुस्निग्धपरिणया दुस्निग्धपरिणया । जेरसपरिणया ते पंचविहा पणता तजहा तित्तरसपरिणया कहुयरसपरिणया कसायरसपरिणया अंबिलरसपरिणया मञ्जरसपरिणया । जे फासपरिणया ते अष्टविहा पणता, तजहा-कक्कळफासपरिणया मलयफासपरिणया गन्धफासपरिणया लज्जयफासपरिणया सीयफासपरिणया उंसिणफासपरिणया णिद्धफासपरिणया लुक्कफासपरिणया । जे सठाणपरिणया ते पंचविहा पणता, तजहा-परिमळसठाणपरिणया बहुसठाणपरिणया तंससठाणपरिणया चउरंससठाणपरिणया अ्यायतसठाणपरिणया ॥ जे वणजे कालवणपरिणया ते गंधने सुस्निग्धपरिणया वि दुस्निग्धपरिणया वि, रसने तित्तरसपरिणया वि कहुयरसपरिणया वि कसायरसपरिणया वि अंबिलरसपरिणया वि मञ्जरसपरिणया वि, फासने कक्कळफासपरिणया वि मलयफासपरिणया वि गन्धफासपरिणया वि लज्ज

स्तद्या-सुरभिगन्धपरिणया दुरभिगन्धपरिणया । ये रसपरिणया स्ते पञ्चविधा मञ्जरा स्तद्या-तित्तरसपरिणया कटुकरसपरिणया कपायरसपरिणया आक्षरसपरिणया मधुररसपरिणया । ये स्पर्शपरिणया स्ते अष्टविधा मञ्जरा स्तद्या-कर्मणस्पर्शपरिणया मृदुस्पर्शपरिणया मृत्कार्पणपरिणया लघुकर्पणपरिणया शीतस्पर्शपरिणया शीतस्पर्शपरिणया उज्जस्पर्शपरिणया रुद्धस्पर्शपरिणया । ये सस्यानपरिणया स्ते पञ्चविधा मञ्जरा स्तद्या-परिमण्डलसस्यानपरिणया द्युतसस्यानपरिणया द्युतस्पर्शपरिणया आयतसस्यानपरिणया । ये वणेत कालवणपरिणया स्ते गन्धने सुरभिगन्धपरिणया अपि, दुरभिगन्धपरिणया अपि, रसने तित्तरसपरिणया अपि कटुकरसपरिणया अपि कपायरसपरिणया अपि आक्षरसपरिणया अपि मधुररसपरिणया अपि, स्पर्शने कर्मणस्पर्शपरिणया मृदुकर्पणपरिणया

वे, यथा ३५ यत्ततोऽसमुष्ठाए ३६ ॥ १ ॥ से किं तं पशुवणा ? पशुवणा दुर्विहा पशुता, तंजहा-जीवपशुव
 णाय अजीवपशुवणाय । सेकित अजीवपशुवणा २ दुर्विहा पशुता, तंजहा-रूविअजीवपशुवणा अरूवि
 अजीवपशुवणाय । सेकितं अरूविअजीवपशुवणा ? अरूविअजीवपशुवणा दसविहा पशुता तंजहा-
 धम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्सदेसे धम्मत्थिकाए अर्थम्मत्थिकायस्सदेसे अर्थम्मत्थिकायस्सदेसे अर्थम्मत्थि
 कायस्सपएसा अर्थम्मत्थिकाए अर्थम्मत्थिकायस्सदेसे अर्थम्मत्थिकायस्सपदेसा अर्थम्मत्थिकायस्सपदेसा १० सेतं अर्थम्मत्थि
 अजीवपशुवणा ॥ सेकित रूविअजीवपशुवणा रूविअजीवपशुवणा चउविहा पशुता तंजहा-खधा खधदे
 सा खधप्यएसा परमाणुपोगला ४ । तेसमासने पचविहा पशुता, तंजहा-वसुपरिणया गंधपरिणया रस
 परिणया फासपरिणया सठाणपरिणया । जंअपरिणया ते समासने पचविहा पशुता, तंजहा-कालवसु

वातवमित्त्यदम् । अथ प्रज्ञापना कात्याय, द्विधामज्ञापनामता ॥ १० ॥ तद्यथा-जीवप्रज्ञापना अजीवप्रज्ञापना च । सा कतिविधा अजीवप्रज्ञा
 पना, द्विविधा प्रज्ञा । तद्यथा रूव्यजीवप्रज्ञापना अरूव्यजीवप्रज्ञापना च अथ कतिविधा अरूव्यजीवप्रज्ञापना, अरूव्यजीवप्रज्ञापना दशवि
 धा प्रज्ञा । तद्यथा धर्मोस्तिक्काय धर्मोस्तिक्कायस्य दश धर्मोस्तिक्कायस्य प्रज्ञा, अधर्मोस्तिक्कायस्य देशो अधर्मोस्तिक्कायस्य
 प्रज्ञा, आकाशास्तिक्काय आकाशास्तिक्कायस्य देश आकाशास्तिक्कायस्य प्रज्ञा, अद्वासमय । समाप्ता अरूव्यजीवप्रज्ञापना ॥ अथ का सा
 रूव्यजीवप्रज्ञापना रूव्यजीवप्रज्ञापना चतुर्विधा प्रज्ञा तद्यथा-स्कन्धा स्कन्धदशा स्कन्धप्रज्ञाः परमाणुपुत्रज्ञा, ते समासने पचविधा
 प्रज्ञा स्तद्यथा-वसुपरिणता गन्धपरिणता रसपरिणता स्पर्शपरिणता सस्यानपरिणता । ये वसुपरिणता स्ते समासने पचविधा प्रज्ञा
 स्तद्यथा-कालवर्णपरिणता नीलवर्णपरिणता लोहितवर्णपरिणता हरिद्रवर्णपरिणता शुक्रवर्णपरिणता । ये गन्धपरिणता स्ते द्विविधा प्रज्ञा

परिणया नीलवस्त्रपरिणया लोहिवस्त्रपरिणया हाडिद्वयपरिणया सुक्लिन्नवस्त्रपरिणया । जे गधपरिणया ते दुविहा पसुता, तजहा-सुस्निग्धपरिणया दुस्निग्धपरिणया । जेरसपरिणया ते पचविहा पसुता तजहा तित्तरसपरिणया कठुरसपरिणया कसायरसपरिणया अविडरसपरिणया मज्जरसपरिणया । जेफासपरिणया ते अष्ठविहा पसुता, तजहा-कस्करुफासपरिणया मउयफासपरिणया गरुवफासपरिणया लज्जयफासपरिणया सीयफासपरिणया उस्सिणफासपरिणया णिद्धफासपरिणया लुक्कफासपरिणया । जेसठ्ठाणपरिणया ते पचविहा पसुता, तजहा-परिमरुलसठ्ठाणपरिणया बहुसठ्ठाणपरिणया तससठ्ठाणपरिणया चउरं ससठ्ठाणपरिणया आयतसठ्ठाणपरिणया ॥ जे वणुने कालवस्त्रपरिणया ते गधने सुस्निग्धपरिणयावि दुस्निग्धपरिणयावि, रसने तित्तरसपरिणयावि कठुरसपरिणयावि कसायरसपरिणयावि अविडरसपरिणया वि मज्जरसपरिणयावि, फासने कस्करुफासपरिणयावि मउयफासपरिणयावि गरुवफासपरिणयावि लज्ज

स्तद्यथा-सुरभिगन्धपरिणता दुरभिगन्धपरिणता । ये रसपरिणता स्ते पञ्चविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-तित्तरसपरिणता कटुरसपरिणता कया-यरसपरिणता आह्वरसपरिणता मधुररसपरिणता । ये स्पृशंपरिणता स्ते ऽष्टविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-कर्मणस्पृशंपरिणता मृदुस्पृशंपरिणता गुरु कस्पृशंपरिणता लघुकस्पृशंपरिणता शीतस्पृशंपरिणता शूलस्पृशंपरिणता । ये सस्यानपरिणता स्ते पञ्चविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-परिमण्डलसस्यानपरिणता दृढसस्यानपरिणता क्लृप्तसस्यानपरिणता शूलरस्यसस्यानपरिणता । ये वर्णत कालवस्त्रपरिणता स्ते गन्धत सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसत तित्तरसपरिणता अपि कटुरक रसपरिणता अपि कयायरसपरिणता अपि आह्वरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पृशंत कर्मणस्पृशंपरिणता मृदुस्पृशंपरिणता

यफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उसिणफासपरिणतावि णिष्ठफासपरिणतावि लुक्कफासपरिणतावि स
 सठाणनु परिमळसठाणपरिणतावि वहसठाणपरिणतावि तंससठाणपरिणतावि चउरससंठाणपरिणतावि
 व्यायतसंठाणपरिणतावि । जेवखनु नीलवखपरिणता ते गंधनु सुस्निग्धपरिणतावि दुस्निग्धपरिणतावि,
 रसनु तित्तरसपरिणतावि कद्रुयसपरिणतावि कसायसपरिणतावि अविलरसपरिणतावि मज्जरसपरिण
 तावि, फासनु कक्कळफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लज्जयफासपरिणतावि
 सीतफासपरिणतावि उसिणफासपरिणतावि णिष्ठफासपरिणतावि लुक्कफासपरिणतावि, संठाणनु परिमंळ
 सठाणपरिणतावि वहसठाणपरिणतावि तंससठाणपरिणतावि चउरससंठाणपरिणतावि व्यायतसंठाणपरि
 णतावि । जे वखनु लोहिंयवखपरिणता ते गंधनु सुस्निग्धपरिणतावि दुस्निग्धपरिणतावि, रसनु तित्तरस

अपि गुरुकस्पशंपरिणता अपि लघुकस्पशंपरिणता अपि शीतस्पशंपरिणता अपि उष्णस्पशंपरिणता अपि रुद्रस्पशंपरि
 णता अपि, सस्यान परिमण्डलसस्यानपरिणता अपि वृत्तसस्यानपरिणता अपि अस्त्रसस्यानपरिणता अपि चतुरस्त्रसस्यानपरिणता
 अपि आयतसस्यानपरिणता अपि । ये वर्णतो लोहितवर्णपरिणता स्ते गन्धतः सुरजिगन्धपरिणता अपि दुरजिगन्धपरिणता अपि, रसत स्ति
 लरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कपायरसपरिणता अपि आसुररसपरिणता अपि, स्पशंतः कर्कशस्पशंपरि
 णता अपि मृदुकस्पशंपरिणता अपि गुरुकस्पशंपरिणता अपि लघुकस्पशंपरिणता अपि शीतस्पशंपरिणता अपि उष्णस्पशंपरिणता अपि स्ति
 ग्धस्पशंपरिणता अपि रुद्रस्पशंपरिणता अपि, सस्यानते परिमण्डलसस्यानपरिणता अपि वृत्तसस्यानपरिणता अपि अस्त्रसस्यानपरिणता
 अपि चतुरस्त्रसस्यानपरिणता अपि आयतसस्यानपरिणता अपि । ये वर्णतो हार्द्रवर्णपरिणता स्ते गन्धतः सुरजिगन्धपरिणता अपि दुरजिग

पारिणतावि कद्रुयरसपरिणतावि कसायरसपरिणतावि अग्निचलरसपरिणतावि मञ्जरसपरिणतावि, फासने
 कककफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लज्जयफासपरिणतावि सीतफासपरिण
 तावि उसिणफासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुरकफासपरिणतावि, सठाणने परिमळलसठाणपरिण
 तावि बहसठाणपरिणतावि तससठाणपरिणतावि चउरससठाणपरिणतावि व्यायतसठाणपरिणतावि ।
 जेवखने हालिद्ववसपरिणता ते गवने सुप्पिगधपरिणतावि दुप्पिगधपरिणतावि, रसने तित्तरसपरिणता
 वि कद्रुयरसपरिणतावि कसायरसपरिणतावि अग्निचलरसपरिणतावि मञ्जरसपरिणतावि, फासने ककक
 फासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीयफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफास
 परि० लुरकफासपरिणतावि, सठाणने परिमळलसठाणपरि० बहसठाणपरि० तससठाणपरि० चउरसस
 ठाणपरि० व्यायतसठाणपरिणतावि । जेवखने सुक्खिन्नसपरिणता ते गधने सुप्पिगधपरिणतावि दुप्पिगध

धपरिणता अपि, रसतास्तिक्करसपरिणता अपि कटुक्करसपरिणता अपि कपायरसपरिणता अपि अस्त्रसपरिणता अपि मधुरसपरिणता
 अपि, स्पर्शोत्त कर्कशस्पर्शपरिणता अपि सूदुक्कस्पर्शपरिणता अपि गुरुक्कस्पर्शपरिणता अपि तपुक्कस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि
 उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रुचस्पर्शपरिणता अपि, सस्यानत परिमण्डलसस्यानपरिणता अपि वृत्तसस्यानपरिणता
 अपि त्र्यस्यसस्यानपरिणता अपि चतुरस्रसस्यानपरिणता अपि आयत सस्यानपरिणता अपि । ये वर्णत शृङ्गणपरिणता स्ते गन्धत सुरजिगन्ध
 परिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतास्तिक्करसपरिणता कटुक्करसपरिणता कपायरसपरिणता अस्त्रसपरिणता मधुरसपरिणता अपि ।
 स्पर्शत कर्कशस्पर्शपरिणता अपि सूदुक्कस्पर्शपरिणता अपि गुरुक्कस्पर्शपरिणता अपि तपुक्कस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्ण

परिणतावि, रसनु तित्तरसपरि० कद्रुयरसपरि० कसायरसपरि० अम्बिलरसपरि० मङ्गरसपरिणतावि,
फासनु कक्कफानपरिणतावि मउयफासपरिणयावि गरुयफासपरिणयावि लङ्गयफासपरिणतावि सोयफा
सपरिणतावि उसिणफानपरिणतावि णिठ्ठफासपरिणतावि लुक्कफासपरिणतावि, संधाणनु परिमंळसंधाण
परिणतावि बहुसंधाणपरिणतावि तससंधाणपरिणतावि चउरससंधाणपरिणतावि अयतसंधाणपरिणतावि।
जे गवनु सुस्मिगवपरिणता ते वरुणु कालवखुपरिणतावि नीलवखुपरिणतावि लोहितवखुपरिणतावि हालि
द्वखुपरिणतावि सुक्खिखुपरिणतावि, रसनु तित्तरनपरिणतावि कद्रुयरसपरिणतावि कसायरसपरिणता
वि अम्बिलरसपरिणतावि मङ्गरसपरिणतावि, फासनु कक्कफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुय
फासपरिणतावि लङ्गयफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उसिणफासपरिणतावि णिठ्ठफासपरिणतावि
लुक्कफासपरिणतावि, संधाणनु परिमंळसंधाणपरिणतावि बहुसंधाणपरिणतावि तससंधाणपरिणतावि

रपञ्चपरिणता अपि म्निगवधपञ्चपरिणता अपि रुद्रस्पञ्चपरिणता अपि' सस्यानत परिमण्डलसस्यानपरिणता अपि दृप्तसस्यानपरिणता अपि
अलसस्यानपरिणता अपि चतुरस्रसस्यानपरिणता अपि व्याप्तसस्यानपरिणता अपि । ये गम्यत सुरजिगन्धपरिणता स्ते षण्णेत कृष्णवर्णपरि
णता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवणपरिणता अपि शुक्रवणपरिणता अपि, रसतस्तिक्तसरपरिणता अपि
कटुकरसपरिणता अपि कपायसरपरिणता अपि अम्लसरपरिणता अपि मधुरसरपरिणता अपि, स्पञ्जत. कर्मेन्द्रस्पञ्चपरिणता अपि सुदुस्पञ्चपरि
णता अपि गुरुकरपञ्चपरिणता अपि लघुकरपञ्चपरिणता अपि शीतस्पञ्चपरिणता अपि उष्णस्पञ्चपरिणता अपि स्निग्धस्पञ्चपरिणता अपि रूक्ष
स्पञ्चपरिणता अपि, सस्यानत परिमण्डलसस्यानपरिणता अपि अलसस्यानपरिणता अपि चतुरस्रसस्यानपरिणता

चउरससठाणपरिणतावि आयतसठाणपरिणतावि । जे गधनु दुस्निगंधपरिणता ते वखनु कालवखणपरि०
नीलवखणपरिणतावि लोहितवखणपरिणतावि हालिहुवखणपरिणतावि सुक्लिहवखणपरिणतावि, रसनु तित्तरस
परिणतावि कठुरसपरिणतावि कसायरसपरिणतावि अचिलरसपरिणतावि मज्जरसपरिणतावि, फाननु
ककठफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लज्जयफासपरिणतावि सीतफासपरि०
उत्तिगफासपरिणतावि णिठफानपरिणतावि लुरकफानपरिणतावि, सठाणनु परिमळसठाणपरिणतावि
बहुसठाणपरिणतावि तससठाणपरिणतावि चउरमसठाणपरिणतावि आयतसठाणपरिणतावि । जेरसनु
तित्तरसपरिणता ते वखनु कालवखणपरिणतावि लोहितवखणपरिणतावि हालिहुवख
परिणतावि सुक्लिहवखणपरिणतावि, गधनु सुस्निगंधपरिणतावि दुस्निगंधपरिणतावि, फासनु करफासप

अपि आयतसस्यानपरिणता अपि । ये गन्धतो दुरनिगन्धपरिणता सो घणंत कलत्रवणपरिणता अपि नीलवणपरिणता अपि लोहितवणपरिणता
अपि शरिद्रवणपरिणता अपि शुक्रवणपरिणता अपि, रसतस्तिक्तसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कयापरसपरिणता अपि अक्षरस
परिणता अपि मधुरसपरिणता अपि, स्पज्ञांतः करुणस्पज्ञपरिणता अपि मुदुस्पज्ञपरिणता अपि मुदुकरसपरिणता अपि लघुकरसपरिणता
अपि क्षीतस्पज्ञपरिणता अपि उल्लापज्ञपरिणता अपि स्निग्धस्पज्ञपरिणता अपि रुचस्पज्ञपरिणता अपि, सस्यानतः परिमण्डलसस्यानपरिणता
अपि वृत्तसस्यानपरिणता अपि व्यस्तसस्यानपरिणता अपि चतुरस्त्रसस्यानपरिणता अपि आयतसस्यानपरिणता अपि । ये रसतस्तिक्तसपरि
णता सुस्निगन्धपरिणता अपि दुरनिगन्धपरिणता अपि, स्पज्ञांत कलत्रवणपरिणता अपि मुदुस्पज्ञपरिणता अपि मुदुकरसपरिणता अपि

रिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लज्जयफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उसिण
 फासपरिणतावि णिठफासपरिणतावि लुक्कफासपरिणतावि, सठाणन् परिमंळसठाणपरिणतावि वहसठा
 णपरिणतावि तससठाणपरिणतावि चउरससठाणपरिणतावि अ्यायतसठाणपरिणतावि। जेरसन् कडुयरस
 परिणता ते वखन् कालवस्सपरिणतावि नीलवस्सपरिणतावि लोहितवस्सपरिणतावि हालिद्वयस्सपरिणतावि
 सुक्खित्तवस्सपरिणतावि, गधन् सुप्पिगधपरिणतावि दुप्पिगधपरिणतावि, फासन् कक्कफासप० मउयफा
 सपरि० गरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीयफासपरि० उसिणफासपरि० णिठफासप० लुक्कफासपरिण
 तावि, सठाणन् परिमंळसठाणपरि० वहसठाणपरि० तंससठाणपरि० चउरससठाणप० अ्यायतसंठाणप
 रिणतावि। जे रसन् कसायरसपरिणता ते वखन् कालवस्सपरि० नीलवस्सपरि० लोहितवस्सपरि० हालि

लघुक्कस्पज्ञपरिणता अपि शीतस्पज्ञपरिणता अपि उष्णस्पज्ञपरिणता अपि स्निग्धस्पज्ञपरिणता अपि रुक्षस्पज्ञपरिणता अपि, सस्यानत् परि
 मण्डलसस्यानपरिणता अपि वृत्तसस्यानपरिणता अपि अत्यसस्यानपरिणता अपि चतुरस्त्रसस्यानपरिणता अपि आयतसस्यानपरिणता अपि।
 ये रसत कटुकरसपरिणतास्ते वणंत कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि द्वारिद्वर्णपरिणता अपि शुक्ल
 वर्णपरिणता अपि, गन्धत सुरमिगन्धपरिणता अपि दुर्गन्धिगन्धपरिणता अपि, स्पञ्जंत, कक्कशस्पज्ञपरिणता अपि मृदुस्पज्ञपरिणता अपि नुरु
 कस्पज्ञपरिणता अपि लघुक्कस्पज्ञपरिणता अपि शीतस्पज्ञपरिणता अपि उष्णस्पज्ञपरिणता अपि स्निग्धस्पज्ञपरिणता अपि रुक्षस्पज्ञपरिणता
 अपि, सस्यानत् परिमण्डलसस्यानपरिणता अपि वृत्तसस्यानपरिणता अपि अत्यसस्यानपरिणता अपि चतुरस्त्रसस्यानपरिणता अपि आयत
 सस्यानपरिणता अपि। ये रसत कषायरसपरिणतास्ते वणंत कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि द्वारि

द्वयस्यपरं सुक्लिष्टवस्यपरिणतावि, गंधं सुप्लिगंधपरिणतावि, फासं कर्करुफास
परि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० उसिणफासपरि० णिठफासपरि०
लुरुफासपरिणतावि, सठाणं परिमळसठाणपरि० बहंसठाणपरि० ततसठाणपरि० चउरससठाणपरि०
आयतसंठाणपरिणतावि । जे सरं अंधिलरसपरिणता ते वणं कालवस्यपरि० नीलवस्यपरि० लोहितव
स्यपरि० हालिद्वयपरि० सुक्लिष्टवस्यपरिणतावि, गंधं सुप्लिगंधपरिणतावि दुप्लिगंधपरिणतावि, फासं
कर्करुफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीयफासपरि० उसिणफासपरि०
णिठफासपरि० लुरुफासपरिणतावि । सठाणं परिमळसठाणपरि० बहंसठाणपरि० ततसठाणपरि०
चउरससठाणपरि० आयतसठाणपरिणतावि । जे रसं मज्जरपरिणता ते वणं कालवस्यपरि० नीलवस्य०

द्रव्यपरिणता अपि शुक्लवस्यपरिणता अपि, गन्धं सुप्लिगंधपरिणता अपि दुरन्निगन्धपरिणता अपि, स्वयं कर्करुफासपरिणता अपि युदु
स्पर्शपरिणता अपि गुरुस्पर्शपरिणता अपि लघुस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि त्रिगुणस्पर्शपरिणता अपि
वि रुतस्पर्शपरिणता अपि, स्थानत परिमण्डलस्थानपरिणता अपि युक्तस्थानपरिणता अपि अस्मत्स्थानपरिणता अपि अतुरस्थान
परिणता अपि आयतस्थानपरिणता अपि । ये रसोत्तरस्यपरिणता सो वयं कालवस्यपरिणता अपि नीलवस्यपरिणता अपि लोहितवस्यपरि
णता अपि हालिद्वयपरिणता अपि शुक्लवस्यपरिणता अपि, गन्धं सुप्लिगन्धपरिणता अपि दुरन्निगन्धपरिणता अपि, स्वयं कर्करुफासपरि
णता अपि युदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुस्पर्शपरिणता अपि लघुस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि त्रि
गुणस्पर्शपरिणता अपि रुतस्पर्शपरिणता अपि, स्थानत परिमण्डलस्थानपरिणता अपि अतुरस्थानपरिणता अपि अस्मत्स्थानपरिणता

लोहितवस्त्रपरि० हालिद्वस्त्रपरि० सुक्लिन्नवस्त्रपरिणतावि, गंधने सुप्तिगंधपरिणतावि दुप्तिगंधपरिणता
 वि, फासने कस्करफासपरि० मउयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उत्तिग
 फासपरि० णिष्ठफासपरि० लुक्कफासपरिणतावि, संठाणने परिमंजलसंठाणपरि० वहसंठाणपरि० तंससं
 ठाणपरि० चउरससंठाणपरि० व्यायतसंठाणपरिणतावि ॥ जे फासने कस्करफासपरि० ते वस्त्रने कालव
 स्त्रपरि० नीलवस्त्रपरि० लोहितवस्त्रपरि० सुक्लिन्नवस्त्रपरिणतावि, गंधने सुप्तिगंधपरि०
 दुप्तिगंधपरिणतावि, रसने तित्तरसपरि० कटुयस्त्रपरि० व्यायतसपरि० मज्जरसपरिण
 तावि, फासने गरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उत्तिगफासपरि० णिष्ठफासपरि० लुक्क

अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये रसती मधुररसपरिणता स्ते वसेत कालवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिण
 ता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रव्यपरिणता अपि शुक्रवर्णपरिणता अपि, गन्धत सुरजिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि,
 रसजोत कर्कशरसपरिणता अपि मृदुरसपरिणता अपि गुरुकस्त्रपरिणता अपि लघुकस्त्रपरिणता अपि शीतस्त्रपरिणता अपि उष्णस्त्रपरि
 परिणता अपि स्निग्धस्त्रपरिणता अपि रुजस्त्रपरिणता अपि, संस्थानत परिसंयुक्तसंस्थानपरिणता अपि युक्तसंस्थानपरिणता अपि अस्त्र
 संस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये रसजोत कर्कशस्त्रपरिणता स्ते वर्णतः कालवर्णपरिणता
 अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रव्यपरिणता अपि शुक्रवर्णपरिणता अपि, गन्धत सुरजिगन्धपरिणता अपि दुर
 जिगन्धपरिणता अपि, रसत तित्तरसपरिणता अपि कटुयस्त्रपरिणता अपि मज्जरसपरिणता अपि मधुररसपरिण
 ता अपि, गुरुलघुशीतोष्ण स्निग्धरुजस्त्रपरिणता अपि संस्थानत, परिसंयुक्तसंस्थानपरिणता अपि युक्तसंस्थानपरिणता अपि अस्त्रसंस्थानपरि

फासपारणतावि, सठाणनु परिमळसठाणपरि० वहसठाणपरि० तससठाणपरि० चउरंससठाणपरि०
 आयतसठाणपरिणतावि। जे फासनु मउयफासपरि० ते वखनु कालवखपरि० नीलवखपरि० लोहितवख
 परि० हालिदुवखपरि० सुक्लिहवखपरिणतावि, गधनु मुझिगधपरि० दुझिगधपरिणतावि, रसनु तित्त
 रसपरि० कळुयरसपरि० कसायरसपरि० अचिलरसपरि० मऊररसपरिणतावि, फासनु गरुयफासपरि०
 लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उंसिणफासपरि० णिठफासपरि० लुक्कफासपरिणतावि, सठाणनु परि
 मळसठाणपरि० वहसठाणपरि० तससठाणपरि० चउरससठाण० आयतसठाणपरिणतावि। जे फासनु
 गरुयफासपरिणता ते वखनु कालवखपरि० नीलवखपरि० लोहितवखपरि० हालिदुवखपरि० सुक्लिहव
 खपरिणतावि, गधनु मुझिगधपरि० दुझिगधपरिणतावि, रसनु तित्तरसपरि० कळुयरसपरि० कसायरस

यता अपि चतुरस्त्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि। ये स्पष्टतो बहुस्पष्टपरिणतास्ते वखत लक्षणवर्णपरिणता अपि नीलवर्णे
 परिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हरिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धत सुरजिगन्धपरिणता अपि दुरजिगन्धपरिणता
 अपि, रसत तित्तरसपरिणता अपि कळुकरसपरिणता अपि कयायरसपरिणता अपि अक्षरसपरिणता अपि मधुरसपरिणता अपि, स्पष्टत
 गुरुकस्पष्टपरिणता अपि लघुकस्पष्टपरिणता अपि शीतस्पष्टपरिणता अपि उष्णस्पष्टपरिणता अपि त्तिग्धस्पष्टपरिणता अपि रुचस्पष्टपरिण
 ता अपि, संस्थानत परिमणकसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आय
 तसंस्थानपरिणता अपि। ये स्पष्टतो गुरुकस्पष्टपरिणतास्ते वखंत लक्षणवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि रस
 रिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धत सुरजिगन्धपरिणता अपि, रसत तित्तरसपरिणता अपि, कळु

लोहितवस्त्रपरि० हालिद्वस्त्रपरि० सुक्लिन्नवस्त्रपरिणतावि, गंधनं सुस्निग्धपरिणतावि दुस्निग्धपरिणता
वि, फासन् कक्कफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लज्जफासपरि० सीतफासपरि० उत्तिण
फासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्कफासपरिणतावि, संठाणन् परिमल्लसंठाणपरि० बहसंठाणपरि० तससं
ठाणपरि० चउरससंठाणपरि० ज्ञायतसंठाणपरिणतावि ॥ जे फासन् कक्कफासपरि० ते वस्त्रं कालव
स्त्रपरि० नीलवस्त्रपरि० लोहितवस्त्रपरि० सुक्लिन्नवस्त्रपरिणतावि, गंधनं सुस्निग्धपरि०
दुस्निग्धपरिणतावि, रसन् तित्तरसपरि० कक्रुयसपरि० अत्रिलसपरि० मज्जरसपरिण
तावि, फासन् गरुयफासपरि० लज्जफासपरि० सीतफासपरि० उत्तिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्क

अपि चतुरस्त्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये रसतो मधुररसपरिणता स्ते वर्णतः कालवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिण
ता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि द्वारिद्रवणपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि,
स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि सुदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुस्पर्शपरिणता अपि लघुस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि चमस्पर्श
परिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रुद्धस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानतः परिमल्लसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि व्यस्त
संस्थानपरिणता अपि चतुरस्त्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता स्ते वर्णतः कालवर्णपरिणता
अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि द्वारिद्रवणपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुर
भिगन्धपरिणता अपि, रसतः तित्तरसपरिणता अपि कक्रुयसपरिणता अपि अत्रिलसपरिणता अपि मज्जरसपरिण
ता अपि, गुरुलघुशीतोष्ण स्निग्धरुद्धस्पर्शपरिणता अपि संस्थानतः परिमल्लसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि व्यस्तसंस्थानपरि

રિણતાવિ, રસનું તિત્તરસપરિં કઠુયરસપરિં કસાયરસપરિં અંચિલરસપરિં મજ્જરસપરિણતાવિ, ફાસનું કસ્કઠફાસપરિં મડયફાસપરિં ગરુયફાસપરિં લજ્જયફાસપરિં ગિન્નફાસપરિં લુસ્કફાસપરિણતાવિ, સઠાણનું પરિમઠ્ઠલસઠાણપરિં વઠ્ઠસઠાણપરિં તસસઠાણપરિં ચડરસસઠાણપરિં અ્યાયત સઠાણપરિણતાવિ । જેફાસનું ડાસિણફાસપરિં તે વચ્ચનું કાલવચ્ચપરિં નીલવચ્ચપરિં લોહિયવચ્ચપં હાલિદ્વચ્ચપરિં સુક્ષિન્નવચ્ચપરિણતાવિ, ગચ્ચનું સુપ્તિગધપરિં દુપ્તિગધપરિણતાવિ, રસનું તિત્તરસપરિં કઠુયરસપરિં કસાયરસપરિં અંચિલરસપરિં મજ્જરસપરિણતાવિ, ફાસનું કસ્કઠફાસપરિં મડયફા

अपि अस्त्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्त्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये स्पर्शत शीतस्पर्शपरिणतास्ते वणंत कालवर्णं परिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि । गन्धत सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसत तिक्तस्पर्शपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि अक्षरसपरिणता अपि मधुरसपरिणता अपि । स्पर्शत कंकशस्पर्शपरिणता अपि सुदुस्पर्शपरिणता अपि गुदस्पर्शपरिणता अपि लघुस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रुदस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानत परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि अस्त्रसंस्थानपरिणता अपि च-
तुरस्त्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये स्पर्शत वामस्पर्शपरिणतास्ते वणंत कालवर्णं परिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि । गन्धत सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसत तिक्तस्पर्शपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि अक्षरसपरिणता अपि मधुरसपरिणता अपि, स्पर्शत

परि० अत्रिलरसपरि० मञ्जररसपरिणतावि, फासनु कक्कफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि सीय
फासपरिणतावि उसिणफासपरि० णिठफासपरि० लुक्कफासपरिणतावि, सठाणनु परिमंळलसठाणपरि०
वट्टसठाणपरि० तससठाणपरि० चउरससठाणप० अयतसठाणपरिणतावि । जे फासनु लज्जयफासपरि
णता ते वयानु कालवयपरि० नीलवयपरि० लोहितवयपरि० हालिहवयपरि० सुक्खिलवयपरिणतावि,
गधनु सुझिगधपरि० दुझिगधपरिणतावि, रसनु तित्तरसपरि० ककुयरसपरि० कसायरसपरि० अत्रिलर
सपरि० सञ्जररसपरिणतावि, फासनु कक्कफासपरि० मउयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि०
णिठफासपरि० लुक्कफासपरिणतावि, सठाणनु परिमंळलसठाणपरि० वट्टसठाणपरि० तनसंठाणपरि०
चउरससठाणपरि० अयतसठाणपरिणतावि । जे फासनु सीतफासपरिणता ते वयानु कालवयपरि० नी

करसपरिणता अपि कपायरसपरिणता अपि अक्षरसपरिणता अपि मयुररसपरिणता अपि, स्पञ्जत कर्जशस्पञ्जपरिणता अपि सुदुस्पञ्जपरि
णता अपि शीतस्पञ्जपरिणता अपि चम्रस्पञ्जपरिणता अपि स्निग्धस्पञ्जपरिणता अपि रुक्मस्पञ्जपरिणता अपि, सस्यानत परिमण्डलसस्यान
परिणता अपि वृत्तसस्यानपरिणता अपि अस्त्रसस्यानपरिणता अपि चतुरस्त्रसस्यानपरिणता अपि आयतसस्यानपरिणता अपि । ये स्पञ्जतो
लघुकरस्पञ्जपरिणतास्ते वर्णत रुक्मवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रव्यपरिणता अपि शुभ्रवर्णपरि
णता अपि, गन्धत सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतस्तिक्तारसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कपायायरसपरि
णता अपि अक्षरसपरिणता अपि मयुररसपरिणता अपि, स्पञ्जत कर्जशस्पञ्जपरिणता अपि सुदुस्पञ्जपरिणता अपि
चम्रस्पञ्जपरिणता अपि स्निग्धस्पञ्जपरिणता अपि रुक्मस्पञ्जपरिणता अपि, सस्यानत परिमण्डलसस्यानपरिणता अपि वृत्तसस्यानपरिणता

लवणपरि० लोहितवस्त्रपरि० हालिद्वयपरि० सुक्लिष्टवस्त्रपरिणातावि, गधने सुस्निग्धपरि० दुस्निग्धपरि
रिणतावि, रसने तित्तरसपरि० कटुयस्त्रपरि० कसायस्त्रपरि० अथिलस्त्रपरि० मज्जरस्त्रपरिणातावि,
फासने कस्करुफासपरि० मउयफासपरि० लज्जयफासपरि० णिष्ठफासपरि० लुक्कफासपरि
रिणतावि, सठाणने परिमलसठाणपरि० बहुसठाणपरि० तससठाणपरि० चउरससठाणपरि० ज्ञायत
सठाणपरिणतावि । जेफासने उसिणफासपरि० ते वस्त्रने कालवस्त्रपरि० नीलवस्त्रपरि० लोहियवस्त्रपरि०
हालिद्वयपरि० सुक्लिष्टवस्त्रपरिणातावि, गधने सुस्निग्धपरि० दुस्निग्धपरिणातावि, रसने तित्तरसपरि०
कटुयस्त्रपरि० कसायस्त्रपरि० अथिलस्त्रपरि० मज्जरस्त्रपरिणातावि, फासने कस्करुफासपरि० मउयफा

अपि अस्त्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्त्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये स्पष्टं शीतस्पर्शपरिणतास्ते वर्णत कृत्तवर्ण
परिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रव्यपरिणता अपि शुक्रवर्णपरिणता अपि, गन्धत सुरभिगन्धपरिणता
अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसत तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अक्षरसपरिणता अपि मधुर
सपरिणता अपि । स्पष्टं कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुल्फस्पर्शपरिणता अपि लघुकरसपरिणता अपि स्निग्धस्पर्श
परिणता अपि रुद्रस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानत परिमलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि अस्त्रसंस्थानपरिणता अपि च-
तुरस्त्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये स्पष्टं तप्तस्पर्शपरिणतास्ते वर्णत कालवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता
अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रव्यपरिणता अपि शुक्रवर्णपरिणता अपि, गन्धत सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अ-
पि, रसत तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अक्षरसपरिणता अपि मधुरसपरिणता अपि, स्पष्टं

પરિં છુવિલરસપરિં મજુરસપરિણતાવિ, ફાસને કચ્છફાસપરિણતાવિ મડયફાસપરિણતાવિ સીય
 ફાસપરિણતાવિ હસિણફાસપરિં ણિદ્ધફાસપરિં લુચ્છફાસપરિણતાવિ, સઠાણને પરિમઝલસઠાણપરિં
 વહસઠાણપરિં તસસઠાણપરિં ચડરસસઠાણપં આયતસઠાણપરિણતાવિ । જે ફાસને લજ્જવફાસપરિ
 ણતા તે વચ્છને કાલવચ્છપરિં નીલવચ્છપરિં લોહિતવચ્છપરિં હાલિદ્ધવચ્છપં સુક્ષિત્તવચ્છપરિણતાવિ,
 મધને સુશ્ણિગધપરિં દુશ્ણિગધપરિણતાવિ, રસને તિત્તરસપરિં કઠુયરસપરિં કસાયરસપરિં છુવિલર
 સપરિં સજ્જરસપરિણતાવિ, ફાસને કચ્છફાસપરિં મડયફાસપરિં સીતફાસપરિં હસિણફાસપરિં
 ણિદ્ધફાસપરિં લુચ્છફાસપરિણતાવિ, સઠાણને પરિમઝલસઠાણપરિં વહસઠાણપરિં તંતસઠાણપરિં
 ચડરસસઠાણપરિં આયતસઠાણપરિણતાવિ । જે ફાસને સીતફાસપરિણતા તે વચ્છને કાલવચ્છપરિં ની

કરસપરિણતા અપિ કપાયરસપરિણતા અપિ અક્ષરસપરિણતા અપિ મધુરસપરિણતા અપિ, સ્વર્ગત કર્કશસ્પર્શપરિણતા અપિ મૃદુસ્પર્શપરિ
 ણતા અપિ શીતસ્પર્શપરિણતા અપિ ત્વજસ્પર્શપરિણતા અપિ સ્તિગ્ધસ્પર્શપરિણતા અપિ, સ્થાનત પરિમયઝલસ્થાન
 પરિણતા અપિ વૃત્તસ્થાનપરિણતા અપિ ત્ર્યક્ષસ્થાનપરિણતા અપિ ચતુરક્ષસ્થાનપરિણતા અપિ આયતસંસ્થાનપરિણતા અપિ । એ સ્પર્શતો
 નપુઞસ્પર્શપરિણતાસ્તે વર્ણત કષ્ણવર્ણપરિણતા અપિ નીલવર્ણપરિણતા અપિ હારિદ્ધવર્ણપરિણતા અપિ શુદ્ધવર્ણપરિ
 ણતા અપિ, ગન્ધત સુરન્નિગન્ધપરિણતા અપિ દુરન્નિગન્ધપરિણતા અપિ, રસતસ્તિક્કરસપરિણતા અપિ કટુન્નરસપરિણતા અપિ કાપાયરસપરિ
 ણતા અપિ અક્ષરસપરિણતા અપિ મધુરસપરિણતા અપિ, સ્વર્ગત કર્કશસ્પર્શપરિણતા અપિ શીતસ્પર્શપરિણતા અપિ
 ત્વજસ્પર્શપરિણતા અપિ સ્તિગ્ધસ્પર્શપરિણતા અપિ ક્ષ્ણવર્ણપરિણતા અપિ, સ્થાનત પરિમયઝલસ્થાનપરિણતા અપિ વૃત્તસ્થાનપરિણતા

दुःखनिगधपरिणताय, रसने तत्तरसपरि० कमायसपरि० अश्लिष्टनपरि० मज्जरनपरि०
 तावि, फासने करकफासपरि० मउयफासपरि० लज्जयफासपरि० नीतफासपरि० उनिग
 फासपरिणतायि, सठाणने परिमंलसंठाणपरि० ग्रहसंठाणपरि० तंसंठाणपरि० चउरंसंठाणपरि०
 आयतसंठाणपरि० । जे संठाणने परिमंलसंठाणपरिणता ते वगणने मादयगपरि० नीलयगपरि० अहित
 वणपरि० हाडिहवणपरि० सुकितवणपरिणतायि, गंधने सुमिगधपरिणतायि दुन्निगधपरिणतायि, र
 सने तितरसपरि० कहुयरनपरि० कमायसपरि० अश्लिष्टनपरि० मज्जरनपरि० फासने करक
 फासपरि० मउयफासपरि० लज्जयफासपरि० नीतफासपरि० उनिगफासपरि० णित्ठफास
 परि० लुक्कफासपरिणतायि । जेसंठाणने ग्रहसंठाणपरि०, रसने मादयगपरि० नीलयगपरि० छोदि

कपपञ्चपरिणतासे वर्णत. कज्जवसंपरिणता अपि नीनशर्गपरिणता अपि मोदिगधपरिणता अपि शारिद्रमंवरिणता अपि अश्लिष्टनपरिणता
 अपि, गम्यत सुरनिगधपरिणता अपि दुरभिगम्यपरिणता अपि, रम्यत तिप्परमपरिणता अपि अदुःखमपरिणता अपि अदुःखमपरिणता
 अपि अदुःखपरिणता अपि मयुरमपरिणता अपि, रम्यत कंसंशमंवरिणता अपि मयुरमंवरिणता अपि मयुरमंवरिणता अपि मयुरमंवरिणता
 रपञ्चपरिणता अपि क्षीमपञ्चपरिणता अपि उज्जमपञ्चपरिणता अपि, मय्याग वरिधरनमय्यागपरिणता अपि दूअमय्यागपरिणता अपि
 अस्समय्यागपरिणता अपि एतुरमय्यागपरिणता अपि आयतमय्यागपरिणता अपि । ये मय्याग वरिधरनमय्यागपरिणता अपि दूअमय्यागपरिणता अपि
 वर्णपरिणता अपि नीनशर्गपरिणता अपि मोदिगधपरिणता अपि शारिद्रमंवरिणता अपि अदुःखमपरिणता अपि अदुःखमपरिणता
 यता अपि दुरभिगम्यपरिणता अपि, रम्यत तिप्परमपरिणता अपि अदुःखमपरिणता अपि अदुःखमपरिणता अपि अदुःखमपरिणता

सपरि० गह्यफासपरि० लज्जफासपरि० णिष्ठफासपरि० लुक्फासपरिणतावि, संठाणनु परिमंळसंठाण
परि० बहसंठाणपरि० तससंठाणपरि० चउरंसंठाणपरिणतावि । जे फासनु णिष्ठ
फासपरिणया ते वसुनु कालवसुपरि० नीलवसुपरि० लोहितवसुपरि० हालिहवसुपरि० सुक्लिंखसुप
रिणतावि, गधनु सुस्निगधपरि० दुस्निगधपरिणतावि, रसनु तित्तरसपरि० कहुग्रसपरि० कसावरसप०
अविलरसपरि० मज्जरसपरिणतावि, फासनु कक्कफासपरि० मउयफासपरि० गह्यफासपरि० लज्ज
फासपरि० सीयफासपरि० उंसिणफासपरिणतावि, संठाणनु परिमंळसंठाणपरि० बहसंठाणपरि० तंस
संठाणपरि० चउरससंठाणपरि० अयातसंठाणपरिणतावि । जे फासनु लुक्फासपरिणता ते वसुनु काल
वसुपरि० नीलवसुपरि० लोहितवसुपरि० हालिहवसुपरि० सुक्लिंखसुपरिणतावि, गधनु सुस्निगधप०

कंकशपशंपरिणता अपि सृदुस्पशंपरिणता अपि गुरुक्कस्पशंपरिणता अपि लघुक्कस्पशंपरिणता अपि त्तिग्घस्पशंपरिणता अपि त्तिग्घस्पशंपरि
णता अपि, सस्यानत परिमंळसस्यानपरिणता अपि वृत्तसस्यानपरिणता अपि अस्ससस्यानपरिणता अपि चतुरस्ससस्यानपरिणता अपि
आयतसस्यानपरिणता अपि । ये स्पशंत त्तिग्घस्पशंपरिणतास्स कालवसुपरिणता अपि नीलवसुपरिणता अपि लोहितवसुपरिणता अपि हा-
रिद्रवणंपरिणता अपि शुक्लवणंपरिणता अपि, गन्धत सुरज्जिगन्धपरिणता अपि दुरज्जिगन्धपरिणता अपि तित्तरसपरिणता अपि
कटुकरसपरिणता अपि कपायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि । स्पशंत कंकशस्पशंपरिणता अपि सृदुस्पशंप
रिणता अपि गुरुक्कस्पशंपरिणता अपि लघुक्कस्पशंपरिणता अपि शीतस्पशंपरिणता अपि उष्णस्पशंपरिणता अपि, सस्यानत परिमंळसस्या
नपरिणता अपि वृत्तसस्यानपरिणता अपि अस्ससस्यानपरिणता अपि चतुरस्ससस्यानपरिणता अपि । ये स्पशंतो

दुःस्निग्धपरिणतावि, रसन्तु तत्तरसपरि० कसायसपरि० अत्रिलसपरि० मञ्जरसपरि०
तावि, फासन्तु कक्कफासपरि० मउयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उत्तिण
फासपरिणतावि, सठाणन्तु परिमल्लसठाणपरि० बहसठाणपरि० तससठाणपरि० चउरससठाणपरि०
आयतसठाणपरि० । जे सठाणन्तु परिमल्लसठाणपरिणता ते वणन्तु कालवणपरि० नीलवणपरि० लोहित
वणपरि० हालिह्ववणपरि० सुक्लिबवणपरिणतावि, गधन्तु सुस्निग्धपरिणतावि दुस्निग्धपरिणतावि, र
सन्तु तित्तरसपरि० कफुरसपरि० कसायसपरि० अत्रिलसपरि० मञ्जरसपरिणतावि, फासन्तु कक्क
फासपरि० मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उत्तिणफासपरि० निम्बफास
परि० लुक्कफासपरिणतावि । जेसठाणन्तु बहसठाणपरि० ने वणन्तु कालवणपरि० नीलवणपरि० लोहि

कलशपञ्चपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि शारिद्रवर्णपरिणता अपि गुल्मवर्णपरिणता
अपि, गन्धतः सुरजिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतः तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता
अपि अक्षरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पष्टतः कर्कशपञ्चपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुल्मरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता
स्पष्टपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि, सस्यातः परिमल्लसस्यानपरिणता अपि वृक्षसस्यानपरिणता अपि नपुंस
वर्णपरिणता अपि चतुरस्रसस्यानपरिणता अपि आयतसस्यानपरिणता अपि । ये सस्यानतः परिमल्लसस्यानपरिणतास्ते वणतः कृष्ण
वर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि शारिद्रवर्णपरिणता अपि गुल्मवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरजिगन्धपरि
णता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतः तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अक्षरसपरिणता अपि न

तवसपरि० हालिद्वयसपरि० सुक्लिप्तवसपरिणतावि, गंधने सुस्निग्धप० दुस्निग्धपरिणतावि, रसने ति
त्तरसपरि० कहुयसपरि० कसायसपरि० अचिलरसपरि० मज्जरसपरिणतावि, फासने कक्कफासप०
मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिष्ठफासपरि० लुक्क
फासपरिणतावि । जेसठाणने तंससठाणपरि० ते वसने कालवसपरि० नीलवसपरि० लोहितवसपरि०
हालिद्वयसपरि० सुक्लिप्तवसपरिणतावि, गंधने सुस्निग्धपरिणतावि दुस्निग्धपरिणतावि, रसने तित्तर
सपरि० कहुयसपरि० कसायसपरि० अचिलरसपरि० मज्जरसपरिणतावि, फासने कक्कफासपरि०

चुरसपरिणता अपि, स्पशते कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि लघुस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्श
परिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि । ये सस्यानतो वृत्तसस्यानपरिणतास्ते वर्णत कृष्णवर्णे
परिणता नीलवर्णपरिणता लोहितवर्णपरिणता हारिद्रवर्णपरिणता अपि, गन्धत सुरभिगन्धपरिणता दुर्भिगन्धपरिणता
अपि, रसतस्तिक्तपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कपायसपरिणता अपि मधुरसपरिणता अपि, स्पशते कर्क
शस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुस्पर्शपरिणता अपि लघुस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता
अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि । ये सस्यानत व्यस्यसस्यानपरिणतास्ते वर्णत कृष्णवर्णपरिणता
अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शूक्रवर्णपरिणता अपि, गन्धत सुरभिगन्धपरिणता अपि दुर्भिगन्धपरिणता अपि,
रसतस्तिक्तपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कपायसपरिणता अपि मधुरसपरिणता अपि, स्पशते कर्कशस्पर्
शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुस्पर्शपरिणता अपि लघुस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि

मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लज्जफासपरि० सीतफासपरि० उषिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लु
रुफासपरि० गुरुयफासपरि० लज्जफासपरि० सीतफासपरि० उषिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लु
यत्रयपरि० हालिद्धवसपरि० सुक्लिन्नवसपरि० गधनु सुप्रिगधपरि० दुप्रिगधपरि० तित्तरसप० रसनु
तित्तरसप० कहुयरसप० कसायरसपरि० अचिलरसपरि० मज्जरसपरि० फासनु कक्कफासपरि०
मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लज्जफासपरि० सीतफासपरि० उषिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लु
फासपरि० । जे सठाणनु आयतसठाणपरिणता ते वणुनु कालवसपरि० नीलवसपरि० लोहि
हालिद्धवसपरि० सुक्लिन्नवसपरि० गधनु सुप्रिगधपरि० दुप्रिगधपरि० तित्तरस
परि० कहुयरसपरि० कसायरसपरि० अचिलरसपरि० मज्जरसपरि० फासनु कक्कफासपरि०

प्रिगधपरिणता अपि रुक्कपरिणता अपि । ये सस्थानतदुत्तरसस्थानपरिणतास्ते वणुत कालवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता
अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धत सुरजिगन्धपरिणता अपि दुरजिगन्धपरिणता अपि,
रमतस्तिक्करसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कपायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि, स्पर्शत कर्कश
स्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुस्पर्शपरिणता अपि लघुस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि
रिगन्धपरिणता अपि रुक्कपरिणता अपि । ये सस्थानत आयतसस्थानपरिणतास्ते वणुत रुक्कवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि
लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धत सुरजिगन्धपरिणता अपि दुरजिगन्धपरिणता अपि,
स्तिक्करसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कपायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि, स्पर्शत कर्कशपरिणता

तवसपरि० हालिद्वसपरि० सुक्लिप्तवसपरिणतावि, गंधने सुप्रिगंधप० दुप्रिगंधपरिणतावि, रसने ति
त्तरसपरि० कठुरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० मञ्जरसपरिणतावि, फासने कक्कफासप०
मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उषिणफासपरि० णिष्ठफासपरि० लुक्क
फासपरिणतावि । जेसठाणने तंससठाणपरि० ते वसने कालवसपरि० नीलवसपरि० लोहितवसपरि०
हालिद्वसपरि० सुक्लिप्तवसपरिणतावि, गंधने सुप्रिगंधपरिणतावि दुप्रिगंधपरिणतावि, रसने तित्तर
सपरि० कठुरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० मञ्जरसपरिणतावि, फासने कक्कफासपरि०

पूररसपरिणता अपि, स्पर्शने कंकशस्पर्शपरिणता अपि सुदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्श
परिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रुक्षस्पर्शपरिणता अपि ये सस्यानतो वृत्तसस्यानपरिणतास्ते वर्णत कृष्णवरे
परिणता नीलमणैपरिणता लोहितवर्णपरिणता हारिद्रवर्णपरिणता शूक्रवर्णपरिणता अपि, गन्धत सुरजिगन्धपरिणता अपि, स्पर्शने कर्कश
अपि, रसतस्तिक्तपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कपायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शने कर्क
शस्पर्शपरिणता अपि सुदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता
अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रुक्षस्पर्शपरिणता अपि ये सस्यानत अस्त्रसस्यानपरिणतास्ते वर्णत कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता
अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शूक्रवर्णपरिणता अपि, गन्धत सुरजिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि,
रसतस्तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कपायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शने कर्कश
शपरिणता अपि सुदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि

मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उंसिणफासपरि० णिठफासपरि० लु
रुफामपरिणतावि । जे सठाणने चउरससठाणपरिणता ते वणुने कालवखपरि० नीलवखपरि० लोहि
यवखपरि० हालिद्ववखपरि० सुक्खिवखपरिणतावि, गधने सुप्पिगधपरि० दुप्पिगधपरिणतावि, रसने
तित्तरसप० कहुयरसप० कसायरसपरि० अचिलरसपरि० मज्जरसपरिणतावि, फासने कक्कफासपरि०
मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उंसिणफासपरि० णिठफासपरि० लुक्क
फासपरि० । जे सठाणने आयतसठाणपरिणता ते वणुने कालवखपरि० नीलवखपरि० लोहितवखप०
हालिद्ववखपरि० सुक्खिवखपरिणतावि, गधने सुप्पिगधपरिणतावि दुप्पिगधपरिणतावि, रसने तित्तरस
परि० कहुयरसपरि० कसायरसपरि० अचिलरसपरि० मज्जरसपरिणतावि, फासने कक्कफासपरि०

त्रिग्यस्पर्शपरिणता अपि रुक्कस्पर्शपरिणता अपि । ये सत्थानतश्चतुरस्रसत्थानपरिणतास्ते वणुते' कालवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता
अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्रवर्णपरिणता अपि, गन्धत सुरज्जिगन्धपरिणता अपि दुरज्जिगन्धपरिणता अपि,
रसमस्तिफारसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कपायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शत कर्कश
स्पर्शपरिणता अपि सुदुर्कस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि
त्रिग्यस्पर्शपरिणता अपि रुक्कस्पर्शपरिणता अपि । ये सत्थानत आयतसत्थानपरिणतास्ते वणुते रुक्कवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि
लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्रवर्णपरिणता अपि, गन्धत सुरज्जिगन्धपरिणता अपि दुरज्जिगन्धपरिणता अपि,
स्तिफारसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कपायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शत कर्कशस्पर्श

तवसपरि० हालिद्वसपरि० सुक्लिप्तवसपरिणतावि, गंधने सुप्रिगंधप० दुप्रिगंधपरिणतावि, रसने ति
त्तरसपरि० कद्रुयसपरि० कसायसपरि० अंबिलरसपरि० मज्जरसपरिणतावि, फासने कक्कफासप०
मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिरुफासपरि० लुक्क
फासपरिणतावि । जेसठाणने तंससठाणपरि० ते वसने कालवसपरि० नीलवसपरि० लोहितवसपरि०
हालिद्वसपरि० सुक्लिप्तवसपरिणतावि, गंधने सुप्रिगंधपरिणतावि दुप्रिगंधपरिणतावि, रसने तित्तर
सपरि० कद्रुयसपरि० कसायसपरि० अंबिलरसपरि० मज्जरसपरिणतावि, फासने कक्कफासपरि०

धुररसपरिणता अपि, स्पशंत कंकशस्पशंपरिणता अपि मृदुस्पर्शंपरिणता अपि लघुक्स्पर्शंपरिणता अपि शीतस्पर्शं
परिणता अपि उष्णस्पर्शंपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शंपरिणता अपि रूक्षस्पर्शंपरिणता अपि । ये सस्थानतो वृत्तसस्थानपरिणतास्ते वर्णत कृष्णवर्णे
परिणता नीलवर्णपरिणता लोहितवर्णपरिणता हारिद्रवर्णपरिणता शुकुलवर्णपरिणता अपि, गन्धत सुरभिगन्धपरिणता दुरभिगन्धपरिणता
अपि, रसतल्लिक्तपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पशंत कर्क
शस्पशंपरिणता अपि मृदुस्पर्शंपरिणता अपि गुरुक्स्पर्शंपरिणता अपि लघुक्स्पर्शंपरिणता अपि शीतस्पर्शंपरिणता अपि उष्णस्पर्शंपरिणता
अपि स्निग्धस्पर्शंपरिणता अपि रूक्षस्पर्शंपरिणता अपि । ये सस्थानत अस्त्रसस्थानपरिणतास्ते वर्णत कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता
अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुकुलवर्णपरिणता अपि । गन्धत सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि,
रसतल्लिक्तपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पशंत कंकशस्प
शंपरिणता अपि मृदुस्पर्शंपरिणता अपि गुरुक्स्पर्शंपरिणता अपि लघुक्स्पर्शंपरिणता अपि शीतस्पर्शंपरिणता अपि उष्णस्पर्शंपरिणता अपि

मउयफासपर० गुरुयफासपरि० लज्जफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० ल
रुफासपरिणतावि । जे सठाणने चउरससठाणपरिणता ते वखने कालवखपरि० नीलवखपरि० लोहि
यवखपरि० हालिद्ववखपरि० सुक्लिन्नवखपरिणतावि, गधने सुप्रिगधपरि० दुप्रिगधपरिणतावि, रसने
तित्तरसप० कहुतरसप० कसायरसपरि० अविहरसपरि० मज्जरसपरिणतावि, फासने कक्कफासपरि०
मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लज्जफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्क
फासपरि० । जे सठाणने आयतसठाणपरिणता ते वखने कालवखपरि० नीलवखपरि० लोहितवखप०
हालिद्ववखपरि० सुक्लिन्नवखपरिणतावि, गधने सुप्रिगधपरिणतावि दुप्रिगधपरिणतावि, रसने तित्तरस
परि० कहुयरसपरि० कसायरसपरि० अविहरसपरि० मज्जरसपरिणतावि, फासने कक्कफासपरि०

स्त्रियस्पर्शपरिणता अपि कृतस्पर्शपरिणता अपि । ये सस्यानतद्युतरससस्यानपरिणतास्ते वणंत कालवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता
अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धत सुरजिगन्धपरिणता अपि दुरजिगन्धपरिणता अपि,
रसतस्त्रिकरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शत कर्कश
स्त्रियस्पर्शपरिणता अपि कृतस्पर्शपरिणता अपि गुरुकरसपरिणता अपि लघुकरसपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि वत्तस्पर्शपरिणता अपि
लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि वणंत कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि
स्त्रिकरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, रसत
स्त्रियस्पर्शपरिणता अपि कृतस्पर्शपरिणता अपि गुरुकरसपरिणता अपि लघुकरसपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि वत्तस्पर्शपरिणता अपि, स्पर्शत कर्कशस्पर्श

मउयफासप० गुरुयफासपरि० लङ्गयफासप० सीतफासप० उसिणफासप० णिहफासप० लुक्फासपरि
 णतावि ॥ सेत्त रुविण्णजीवपसवणा ॥ सेत्त अजीवपसवणा ॥ से कित जीवपसवणा १ जीवपसवणा दुविहा
 पसन्ता, तजहा—ससारसमावसजीवपसवणा अउ सारसमावसजीवपसवणा ॥ से कित अउससारसमा
 वसजीवपसवणा १ अउससारसमावसजीवपसवणा दुविहा पसन्ता, तजहा—अणतरसिह्णअसंसारसमाव
 सजीवपसवणा परपरनिह्णअसंसारसमावसजीवपसवणा ॥ से कित अणतरसिह्णअसंसारसमावसजीवपस
 वणा १ अणतरसिह्णअसंसारसमावसजीवपसवणा पसरमविहा पसन्ता, तजहा—तित्यनिह्ण १ अतित्य
 सिह्ण २ तित्यगरसिह्ण ३ अतित्यगरसिह्ण ४ सयवुद्धसिह्ण ५ पत्तेयवुद्धसिह्ण ६ बुद्धवोहियसिह्ण ७
 इत्थीलिंगसिह्ण ८ पुरिसलिंगसिह्ण ९ नपुसकलिंगसिह्ण १० सलिंगसिह्ण ११ अणलिंगसिह्ण १२

परिणता अपि सुदुक्खसंपरिणता अपि गुरुक्खसंपरिणता अपि लघुक्खसंपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उन्नतस्पर्शपरिणता अपि
 स्त्रियस्पर्शपरिणता अपि रुतस्पर्शपरिणता अपि ॥ सेया कय्यजोव प्रज्ञापना ॥ सेया उज्जीव प्रज्ञापना ॥ अथ कतिविधा जीवप्रज्ञापना १ १
 जीव प्रज्ञापना द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा—ससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना, अससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना च । अथ कतिविधा अससारसमापन्न
 जीवप्रज्ञापना १ । अससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना द्विविधा प्रज्ञप्ता । अनन्तरसिह्णससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना, परपरसिह्णससारसमापन्नजी
 वप्रज्ञापना च । अथ कतिविधानन्तरसिह्ण ससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना १ १ अनन्तरसिह्णससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना पञ्चदशविधा प्रज्ञप्ता ।
 तद्यथा तीर्थसिह्ण १ अतीथसिह्ण, २ तीर्थकरसिह्ण, ३ अतीर्थकरसिह्ण, ४ स्वयवुद्धसिह्ण, ५ मत्थेकवुद्धसिह्ण, ६ बुद्धवोचितसिह्ण, ७
 ओल्लिङ्गसिह्ण, ८ पुरुषल्लिङ्गसिह्ण, ९ नपुसकल्लिङ्गसिह्ण, १० स्त्र्यल्लिङ्गसिह्ण, ११ अन्यल्लिङ्गसिह्ण, १२ गृहल्लिङ्गसिह्ण, १३ एकल्लिङ्गसिह्ण, १४

गाहालगासिद्धा १३ एगासिद्धा १४ अणगासिद्धा १५ सेत अणतरसिद्धा अससारसमावखुजीवपखुवणा । सेत परपरसिद्धा अससारसमावखुजीवपखुवणा १६ अणगासिद्धा १७ परपरसिद्धा अससारसमावखुजीवपखुवणा १८ अणगासिद्धा १९ सेत अणतरसिद्धा अससारसमावखुजीवपखुवणा २० तजहा-अणपढमनमयसिद्धा दुसमयसिद्धा तिसमयसिद्धा चउसमयसिद्धा जाव सखेजसमयसिद्धा असखेज समयसिद्धा अणतसमयसिद्धा, सेत परपरसिद्धा अससारसमावखुजीवपखुवणा । सेत अससारसमावखुजीवपखुवणा । से कित ससारसमावखुजीवपखुवणा २ ससारसमावखुजीवपखुवणा पचविहा पखुत्ता, तजहा एगिदियससारनमावखुजीवपखुवणा वेइदियससारसमावखुजीवपखुवणा तेइदियससारसमावखुजीवपखुवणा चउरिदियससारसमावखुजीवपखुवणा पचिदियससारसमावखुजीवपखुवणा । से कित एगिदियससार समावखुजीवपखुवणा ३ एगिदियससारसमावखुजीवपखुवणा पचविहा पखुत्ता, तजहा-पुढविकाड्या

यनेकालिङ्ग सिद्धा, १५ । सेपा उनतरसिद्धाससारसमावखुजीवप्रज्ञापना । अथ कतिविधा परपरसिद्धाससारसमावखुजीवप्रज्ञापना ? । परपर सिद्धाससारसमावखुजीवप्रज्ञापना अनकविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा अग्रयमसमयसिद्धा, दिनमयसिद्धा, त्रिसमयसिद्धा चतु समयसिद्धा, यावत् सत्यपवनमयसिद्धा, असत्येवसमयसिद्धा, अनन्तसमयसिद्धा, सेपा परपरसिद्धाससारसमावखुजीवप्रज्ञापना । सेपा अससारसमावखुजीवप्रज्ञापना । अथ कतिविधा सारसमावखुजीवप्रज्ञापना ? । ससारसमावखुजीवप्रज्ञापना पञ्चावधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-एकेन्द्रियससारसमावखुजीवप्रज्ञापना, द्वीन्द्रियससारसमावखुजीवप्रज्ञापना, त्रीन्द्रियससारसमावखुजीवप्रज्ञापना, चतुरिन्द्रियससारसमावखुजीवप्रज्ञापना, पञ्चिन्द्रियससार समावखुजीवप्रज्ञापना । अथ कतिविधा एकेन्द्रियससारसमावखुजीवप्रज्ञापना ? । एकेन्द्रियससारसमावखुजीवप्रज्ञापना पञ्चविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-पृथिवीकायिका, अप्कायिका, तेज कायिका, वायुकायिका, वनस्पतिकायिका । अथ कतिविधा पृथिवीकायिका ? । पृथ्वीकायिका

अण्डकाड्या तैउकाड्या वालकाड्या वणस्सडकाड्या । से कितं पुढविकाड्या पुढविकाड्या दुविहा प०,
 तजहा-सुज्जमपुढविकाड्या वादरपुढविकाड्या । से कित सुज्जमपुढविकाड्या सुज्जमपुढविकाड्या दुविहा
 पयसत्ता, तजहा-पज्जत्तसुज्जमपुढविकाड्याय अपज्जत्तसुज्जमपुढविकाड्याय, सेत्तसुज्जमपुढविकाड्या । से
 कितं वादरपुढविकाड्या वादरपुढविकाड्या दुविहा पयसत्ता, तजहा-सण्हावादरपुढविकाड्याय खरवादर
 पुढविकाड्याय । से कितं सण्हावादरपुढविकाड्या २ रत्तविहा पयसत्ता, तजहा-किण्हमत्तिया नीलमत्तिया
 लोहियमत्तिया होलिदुमत्तिया सुक्खिमत्तिया पण्णमत्तिया । सेत्तं सण्हावादरपुढविकाड्या ।
 से कित खरवादरपुढविकाड्या ? खरवादरपुढविकाड्या अप्पेगविहा पयसत्ता, तजहा-पुढवीयसक्करावा
 लुयायउवलेसिलायलोणसे । अप्पयतवतउयसीस रुप्पसुवसेयवडरेय ॥ १ ॥ हरियालेहिगुलुण मणोसिलासा

द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-सूक्ष्मपृथिवीकायिका, वादरपृथिवीकायिका । अथ कतिविधा सूक्ष्मपृथिवीकायिका ? । सूक्ष्मपृथिवीकायिका ।
 द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिका अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिका । तदेता सूक्ष्मपृथिवीकायिका । अथ कतिविधा वादर
 पृथिवीकायिका ? । वादरपृथिवीकायिका द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-शक्त्वावादरपृथिवीकायिका खरवादरपृथिवीकायिका । अथ कति
 विधा शक्त्वावादरपृथिवीकायिका ? । शक्त्वावादरपृथिवीकायिका सप्तविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-कृत्स्नमृत्तिका, नीलमृत्तिका, लोहितमृत्तिका,
 हरिद्रमृत्तिका, शुक्लमृत्तिका पाण्डुमृत्तिका । तदेता शक्त्वावादरपृथिवीकायिका । अथ कतिविधा खरवादरपृथिवीकायिका ? ।
 खरवादरपृथिवीकायिका अनेकविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-पृथिवीशर्करावालुका उपला त्रिला लवणमूयम् । अथस्ताम्रपुषोसकरूप्यसुवर्णाति
 प्रतीतानि ॥ १ ॥ हरितालकहिन्दुलके मत्तशिला सीसकमज्जनप्रयालम् । अत्रपटलाज्जवालुका वादरपृथिवीकायैत्वमीजेंदा ॥ २ ॥ गोमेषकथ

मरगमसारगहे न्युमीयगइदनीलिय ॥ ३ ॥ चढणगेरुहसे पुलएसोगधिपुयवोधहे । चदप्पन्नवेरुलिण ज लफतेसूरकतेय ॥ ४ ॥ जेयावणेयतहप्पगारा ते समासने दुविहा पयत्ता, तजहा-पज्जत्तगाय अपज्जत्त गाय, तत्यण जेते अपज्जत्तगा तेणं असपत्ता तत्यण जेते पज्जत्तगा एतेसि वणादेनेण गधादेसेण रसादे सेण फासादेसेण सहस्सगसोविहाणाइ सखिज्जाइ जोणिप्पमुहसयसहस्साइ पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगाव क्कमत्ति, जत्य एगो तत्य णियमा असखेज्जा । सेत्त खरवाटरपुढविक्काइया । सेत्तवाटरपुढविक्काइया ॥ सेत्तपु ढविक्काइया ॥ से कित्ति अण्डकाइया ? अण्डकाइया दुविहा पयत्ता, तजहा-सुज्जमअण्डकाइयाय वाटर अण्डकाइयाय । से कित्ति सुज्जमअण्डकाइया ? सुज्जमअण्डकाइया दुविहा पयत्ता, तजहा-पज्जत्तसुज्जल

एवकोउद्ध स्तटिकलाहितासइति ॥ मरकतमसारगल्ली पुजमोषकेन्द्रनीली च ॥ ३ ॥ चन्दनगैरिक्कहसा पुलकसीगन्धिकेवबोद्धव्ये ॥ चन्द्रमन्त्रेड्डो जलकाल मूयकाम्नाय ॥ ४ ॥ ये चान्ते तथा प्रकारास्ते समासतस्तथा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-पर्याप्तका, अपर्याप्तका, तत्र ये एते उपर्याप्तकास्ते असमाप्ता । तत्र ये एते पर्याप्तका एते वणोदेशेन गन्धादेशेन रसादेशेन स्पृशोदेशेन विधानाति सस्येयानि । योनिप्रमुखानि शतसु वस्त्राणि पर्याप्तनिग्रया अपर्याप्तका व्यूरकामन्ति, यत्रैकस्तत्र नियमा असस्येया । त एते खरवाटरपूर्यबीकायिका । त एते वाटरपूर्यबीकायि काः । त एत पूर्यबीकायिका ॥ अथ कतिविधा अप्रकायिका ? । अप्रकायिका द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-सूक्ष्माप्रकायिका, वाटराप्रकायिका । अथ कतिविधा सूक्ष्माप्रकायिका, ? । सूक्ष्माप्रकायिका द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-पर्याप्त सूक्ष्माप्रकायिका, अपर्याप्तसूक्ष्माप्रकायिका । एते सूक्ष्माप्रकायिका ॥ अथ कतिविधा वाटराप्रकायिका ? । वाटराप्रकायिका अनेकविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-अवश्याय, हिम, महिक, करको,

आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया वणस्सडकाइया । से कितं पुढविक्काइया पुढविक्काइया दुविहा प०,
 तजहा—सुज्जमपुढविक्काइया वादरपुढविक्काइया । से कितं सुज्जमपुढविक्काइया सुज्जमपुढविक्काइया दुविहा
 पणत्ता, तेजहा—पज्जत्तसुज्जमपुढविक्काइयाय अप्पज्जत्तसुज्जमपुढविक्काइयाय, सेत्तसुज्जमपुढविक्काइया । से
 कितं वादरपुढविक्काइया वादरपुढविक्काइया दुविहा पणत्ता, तेजहा—सरहवादरपुढविक्काइयाय सरवादर
 पुढविक्काइयाय । से कितं सरहवादरपुढविक्काइया २ सत्तविहा पणत्ता, तेजहा—किण्हमत्तिया नीलमत्तिया
 लोहिमत्तिया हांलिहुमत्तिया सुक्खिमत्तिया पणमत्तिया । सेत्तं सरहवादरपुढविक्काइया ।
 से कितं खरवादरपुढविक्काइया ? खरवादरपुढविक्काइया अप्पणेगविहा पणत्ता, तेजहा—पुढवीयसक्खरावा
 लुयायवलेसियायलोणसे । अप्पयतवतउयसीस रुप्पसुवण्येयवडरेय ॥ १ ॥ हरियालेहिगुलुण मणोसिलासा

द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा—सूक्ष्मपृथिवीकायिका, वादरपृथिवीकायिका । अथ कतिविधा सूक्ष्मपृथिवीकायिका ? । सूक्ष्मपृथिवीकायिका
 द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा—पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिका अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिका । तदेता सूक्ष्मपृथिवीकायिका । अथ कतिविधा वादर
 पृथिवीकायिका ? । वादरपृथिवीकायिका द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा—शक्खवादरपृथिवीकायिका सरवादरपृथिवीकायिकाश्च । अथ कति
 विधा शक्खवादरपृथिवीकायिका ? । शक्खवादरपृथिवीकायिका सप्तविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा—कृत्तमसृत्तिका, नीलसृत्तिका, लोहितसृत्तिका
 हारिद्रसृत्तिका, शुक्रसृत्तिका पाण्डुसृत्तिका, पनकसृत्तिका । तदेता शक्खवादरपृथिवीकायिका । अथ कतिविधा खरवादरपृथिवीकायिका ? ।
 खरवादरपृथिवीकायिका अनेकविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा—पृथिवीशर्करावालुका उपला त्रिला लक्षणमयम् । अयस्तावच्चतुकोसकूप्यसुवर्णानि
 प्रतीतानि ॥ १ ॥ हरितालकटिदुलके मन शिला सीसरुमज्जनप्रवालम् । अन्वपटलाग्रवालुका वादरपृथिवीकायेस्त्वमीनेदा ॥ २ ॥ गोमंथकश्च

मरगयमसारगहे न्युयमोयगइदनीलेय ॥ ३ ॥ चदणगेरुयहेसे पुलएसोगधिपयवोधवे । चदप्पन्नवेरुलिएज
 लरुतेसूरकतेय ॥ ४ ॥ जेयावणेयतहप्पगारा ते समासउ दुविहा पयत्ता, तजहा-पज्जत्तगाय अपज्जत्त
 गाय, तत्यण जेते अपज्जत्तगा तेण असपत्ता तत्यण जेते पज्जत्तगा एतेसि वयादेनेण गधादेसेण रसादे
 सेण फासादेसेण सहस्सग्गसोविहाणाड सखिज्जाइ जोणिप्पमुहसयतहस्साइ पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगाव
 क्कमंति, जत्य एगो तत्य णियमा अपसखेज्जा । सेत्त खरवाटरपुढाविकाइया । सेत्तवाटरपुढाविकाइया ॥ सेत्तपु
 ढाविकाइया ॥ से कित्त अप्पाउकाइया ? अप्पाउकाइया दुविहा पयत्ता, तजहा-सुज्जमअप्पाउकाइयाय वाटर
 अप्पाउमाइयाय । से कित्त सुज्जमअप्पाउकाइया ? सुज्जमअप्पाउकाइया दुविहा पयत्ता, तजहा-पज्जत्तसुज्जल

दुवकोउङ्क स्फटिकलोहिताद्यन्ति ॥ मरकतमसारगह्वी पुत्रमोचकन्दनीली च ॥ ३ ॥ चन्दनगैरिक्कसा पुलकसीगन्धिकेचवोद्वये ॥ चन्द्रमन्त्रबहु
 यो जलकाल नूयकालद्य ॥ ४ ॥ ये चान्ते तथा प्रकारास्ते समासतस्तथा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-पर्याप्तका, अपयाप्तका, तत्र ये एते उपर्याप्तकास्ते
 असमाप्ता । तत्र ये एते पर्याप्तका एते वर्णादेशेन गन्धादेशेन रसादेशेन स्पर्शादेशेन सङ्ख्यादेशो विधानाति सस्येयानि । योनिप्रमुखानि शतसु
 पञ्चाणि पर्याप्तनिशया अपर्याप्तका व्युत्क्रामन्ति, यत्रैकस्त्र नियमा असस्येया । त एते खरवाटरपूर्याप्तकायिका । त एते वाटरपूर्याप्तकायि
 का । त एत पूर्याप्तकायिका ॥ अय कतिविधा अप्पायिका ? । अप्पायिका द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-सूत्ताप्पायिका, वाटराप्पायिका ।
 अय कतिविधा, सूत्ताप्पायिका, ? । सूत्ताप्पायिका, ? । तद्यथा-पर्याप्त सूत्ताप्पायिका, अपर्याप्तसूत्ताप्पायिका । एते
 सूत्ताप्पायिका ॥ अय कतिविधा वाटराप्पायिका ? । वाटराप्पायिका अनेकविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-अवश्याय, हिम, महिक, करको,

आउकाडयाय अपज्जत्तसुज्जमआउकाडयाय ॥ सेत्तं सुज्जमआउकाडयाय ॥ से कितं वाटरआउकाडया ? वाटर
आउकाडया अप्पणंगविहा पससत्ता, तजहा लसाहिमए महिया करए हरतणए सुओदए सीतोदए उस्सिणोदए
खारोदए खहोदए अप्पिलोदए लवणोदए वारुणोदए खीरोदए रसोदए जेयावसत्तहप्पगारा तेत्तमा
सत्तं दुविहा पससत्ता, तजहा पज्जत्तगा अप्पज्जत्तगाय, अप्पणं जेतं अप्पज्जत्तगा तेण अप्पसपत्ता, तत्थणं जेतं
पज्जत्ता एणसिगयसादेसेण गधादेसेण रसादेसेण फासादेसेण सहस्सगसोविहाणाइं सखंजाइ जणिप्पमु
हसयसहस्साइ पज्जत्तगणिस्साए अप्पज्जत्तगा वक्कमति, तत्थ एणो तत्थनियमा अप्पसखंजा । सेत्तं वाटर
आउकाडया ॥ सेत्तं आउकाडया ॥ से कित तेउकाडया ? तेउकाडया दुविहा पससत्ता, तजहा सुज्जमतेउ
काडयाय वादरतेउकाडयाय, से कित सुज्जमतेउकाडया सुज्जमतेउकाडया दुविहा पससत्ता, तजहा पज्जत्त

हरतन् । सुओदक, सीतोदक, लवणोदक, वारुणोदक, खीरोदक, रसोदक, जेयावसत्तहप्पगारा तेत्तमा
सत्तं दुविहा पससत्ता, तजहा लसाहिमए महिया करए हरतणए सुओदए सीतोदए उस्सिणोदए
खारोदए खहोदए अप्पिलोदए लवणोदए वारुणोदए खीरोदए रसोदए जेयावसत्तहप्पगारा तेत्तमा
सत्तं दुविहा पससत्ता, तजहा पज्जत्तगा अप्पज्जत्तगाय, अप्पणं जेतं अप्पज्जत्तगा तेण अप्पसपत्ता, तत्थणं जेतं
पज्जत्ता एणसिगयसादेसेण गधादेसेण रसादेसेण फासादेसेण सहस्सगसोविहाणाइं सखंजाइ जणिप्पमु
हसयसहस्साइ पज्जत्तगणिस्साए अप्पज्जत्तगा वक्कमति, तत्थ एणो तत्थनियमा अप्पसखंजा । सेत्तं वाटर
आउकाडया ॥ सेत्तं आउकाडया ॥ से कित तेउकाडया ? तेउकाडया दुविहा पससत्ता, तजहा सुज्जमतेउ
काडयाय वादरतेउकाडयाय, से कित सुज्जमतेउकाडया सुज्जमतेउकाडया दुविहा पससत्ता, तजहा पज्जत्त

गाय अपञ्जत्तगाय । सेत्त सुज्जमतेउकाडया । से कित वादरतेउकाडया ? अण्णेगविहा पखत्ता, तजहा डगालं जाला ममरे अच्ची अलाए सुद्धाणी उक्का विज्जू असणी णिग्घाए सघरिससमुठ्ठिए सूरकतसणिणि स्सिए, जेयावणु तहप्यगारा तं समांसनु दुविहा पखत्ता, तजहा पञ्जत्तगाय अपञ्जत्तगाय, तत्थण जेते अपञ्जत्तगा तेण असपत्ता, तत्थण जेते पञ्जत्तगा एएसि वखादेसेण गधादेसेण रसाएसण फासादेसेण सह स्सग्गनोविहाणाइ सखिज्जाइ जोणिप्पमहुसयसहस्साइ पञ्जत्तगणिस्साए अपञ्जत्तगा वक्कमति, जत्थ एगो तत्थ णियमा असखंज्जा ॥ सेत्त वादरतेउकाडया ॥ से कित वाउकाडया ? वाउकाडया दुवि हा पखत्ता, तजहा सुज्जमवाउकाडयाय वादरवाउकाडयाय, से कित सुज्जमवाउकाडया ? सुज्जमवाउकाडया दुवि हा पखत्ता, तजहा पञ्जत्तगसुज्जमवाउकाडयाय अपञ्जत्तगसुज्जमवाउकाडयाय । सेत्त सुज्जमवाउका डया । से कित वादरवाउकाडया ? वादरवा० अण्णेगविहा पखत्ता, तजहा पाईणवाए पटीणवाए दाहि

कान्तमणिप्रभूत । ये वाप्यन्ते तथा प्रकारात्त समासतो द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-पर्याप्तका, अपर्याप्तकाश्च । तत्र ये एत अपर्याप्तकास्ते अस माप्ता । तत्र ये पर्याप्तकास्ते वशादेक्षन् गत्यादेशेन रसादेशेन स्वर्णादेशेन सहस्रायत्तो विधानानि सख्येयानि । योनि प्रमुखाणि शतसहस्राणि पर्याप्तकानि श्रया अपयामका व्युत्क्रामन्ति । यत्रैकस्तत्र नियमा असख्येया । तएत वादरतेज्जकार्यिका । तमते तेज कार्यिका ॥ अथ कतिविधा वायुकार्यिका ? । वायुकार्यिका द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा--सूक्ष्मवायुकार्यिका वादरवायुकार्यिकाश्च । अथ कतिविधा सूक्ष्मवायुकार्यिका ? । सूक्ष्मवायुकार्यिका द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा पर्याप्तसूक्ष्मवायुकार्यिका, अपर्याप्तसूक्ष्मवायुकार्यिकाश्च । तएते सूक्ष्मवायुकार्यिका । अथ कति विधा वादरवायुकार्यिका । वादरवायुकार्यिका अनेकविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-प्राचीनवायु, दक्षिणवायु, उदीचीनवायु, ज

णवाए उदीणवाए उहुवाए अहीवाए तिरिवाए विटितीवाए वाउज्जमेवा उक्कलिया वायमंऊलिया उ
क्कलियावाए मऊलियावाए गुजावाए ऊफावाए सवहवाए घणवाए तणुवाए सुधवाए, जेयावन्ते तहप्यगा
रा ते समासउ दुविहा पसत्ता, तजहा पज्जत्तगाय अणत्तगाय, तत्यणं जेते अणत्तगा तणं अणप
त्ता, तत्यण जेते पज्जत्तगा एएसिणं वसादेसेणं रसादेसेण फासादेसेण सहस्सगसोविहाणाइ
सखिज्जाइ जोणिप्पमुहसहस्साइ पज्जत्तगणिस्साए अणत्तगा वक्कमति, जत्य एगो तत्य नियमा अण्
स्सकेज्जा ॥ सेत्तं वादरवाउकाडया ॥ सेत्तं वाउकाडया ॥ से कित वणस्सडकाडया वणस्सडकाडया दुविहा प०,
तजहा सुज्जमवणस्सडकाडयाय वादरवणस्सडकाडयाय, से कित सुज्जमवणस्सडकाडया २ दुविहा पसत्ता,
त० पज्जत्तसुज्जमवणस्सडकाडयाय अणत्तसुहुमवणस्सडकाडयाय । सेत्तं सुज्जमवणस्सडकाडया । से कितं

ध्वंवायु , अर्धोवायु , तिर्यक्वायु , धिटिक्वायु , वातोद्वासे , वातोत्कलिका , वातमणकली , उत्कलिकावातो , मणकलिकावातो , गज्जावा
तो , सज्जावातो , सर्वट्टिवातो , घनवाततनुवात , झुहुवात ये वान्ये तथा प्रकारास्ते सर्वे द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-पर्याप्तका ' अपर्याप्तका
द्य । तत्र य एते अपर्याप्तकास्ते असमाप्ता । तत्र य एते पर्याप्तकास्ते वर्णादेशेन गन्धादेशेन रसादेशेन स्पर्शादेशेन सत्त्वाद्यशो विधानानि सत्या
नानि । योनिप्रमुखानि शतसहस्राणि पर्याप्तकानि त्रया अपर्याप्तका व्युत्क्रामन्ति । यत्रैक स्तत्र नियमा असंख्यया । तस्यैत वादरवायुकायिका ।
तमते वायुकायिका ॥ अथ कतिविधा वनस्पतिकायिका ? । वनस्पतिकायिका द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा--सूक्ष्मवनस्पतिकायिका , वादरवन
स्पतिकायिका । अथ कतिविधा सूक्ष्मवनस्पतिकायिका ? । सूक्ष्मवनस्पतिकायिका द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा--पर्याप्तसूक्ष्मवनस्पतिकायिका
अपर्याप्तसूक्ष्मवनस्पतिकायिका , तएते सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः । अथ कतिविधा वादरवनस्पतिकायिका ? वादरवनस्पतिकायिका द्विविधा

वाटरवणरसडकाडया २ दुविहा पणता, तजहा पत्तेयसरीरवाटरवणस्सडकाडयाय साहारणसरीरवाटरव
णरसडकाडयाय, से कित पत्तेयसरीरवाटरवणस्सडकाडया २ दुवालसविहा पणता, तजहा रुस्कागुच्छा
गुस्मा लतायवल्लीयपनुगाचेव । तणवलयहरियत्तसहि जलरुहकुहणायबोधेया ॥ १ ॥ से कित रुस्का २ दु
विहा पणता, तजहा एगठियाय वज्जवीयगाय, से कित एगठिया २ झुणेगविहा पणता, तजहा निव
वज्जुकोस वसालच्चकोसपेलसेलया । सत्तडमोयडमालुय वडलपलासेरजेय ॥ १ ॥ पुत्तजीवञ्जरिठे विज्जे
एहरिणपयन्नत्ताए । उवेजरियाखीरिणि बोधेधायडपियाले ॥ २ ॥ पुईयनिवकरए सण्हातहमीसवायच्चुस
णेय । पुस्सागनगरुक्के सिरिवणीतिहञ्जसोमेय ॥ ३ ॥ जेयावन्ते तहप्पगारा एएसिणमूलाविच्चुससिज्जजीवि
या कदावि सवावि तयावि सालावि पवालावि, पहापत्तेयजीविया, पुप्फा झुणेगजीवा, फला एगठिया ॥

प्रश्ना । तद्यथा--प्रत्येकशरीरवाटरवनस्पतिकारिका, साधारणशरीरवाटरवनस्पतिकारिका । अथ कतिविधा प्रत्येकशरीरवाटरवनस्पति
कारिकाः ? । प्रत्येकशरीरवाटरवनस्पतिकारिका द्वादशविधा प्रश्ना । तद्यथा--वृक्षा गुल्मा गुल्मा गुरुमालता बल्लग पत्रगाथेय ॥ वृणवलपत्ररिती
यकारिकाः ? । यकारिका अनेकविधा प्रश्ना । तद्यथा--एकारिका यन्त्रीयकाद्य । अथ कतिविधा
यकरज्जदेता ॥ १ ॥ पुत्रजीवकारिणा विनीतकडरीतकभल्लाता ॥ तस्येज्रिकारिणी योद्धक्रीधातकीप्रयाती ॥ २ ॥ पूतिकनिम्यकरज्जाः सत्त
सयाजिशापाशनदेतात् ॥ पुभागनागवृत्ती ओपणीवतथाशोकः ॥ ३ ॥ योपि चान्ये तयाप्रकारा यतेपा मूलानि अस्ययजीवकानि । कन्दा अपि
रक्त्या अपि त्वधीपि शाखा अपि प्रवाला अपि, पत्राणि प्रत्येकजीवकानि । पुष्पाण्यनेकजीवकानि । फलान्येकस्विकानि । उक्ते एकारिका ।

सेतं एगठिया ॥ से कितं वज्जवीयगा २ झुणंगविहा प०, तं० झुलियतेंदुकविठे झुवाफगमाउलिंगविह्वेय
 झामलगफगसदालिम झुसोत्येउवरवनेय ॥ १ ॥ णगोहणदिरुक्के पिप्परिसयरीपिलुक्करुक्केय । काउंवरि
 कुल्युन्नरि वोधव्वादेवदालीय ॥ २ ॥ तिलएलउएच्छतो हसिरीसेसत्तवणदहिबन्ने । लोभधवचदणज्जुण णीमेकु
 रुक्कयवेय ॥ ३ ॥ जेयावसे तहप्पगारा एणसिण मूलावि झुसखिज्जजीविया, कटावि खंधावि तयावि सालावि
 पत्रालावि, पत्ता पत्तेयजीविया, पुप्फायझुणंगजीविया, फला वज्जवीया, सेत वज्जवीयगा ॥ सेत रुक्का ॥
 से कित गुच्छा २ झुणंगविहा पसुत्ता, तजहा-वाडगिणिझुल्लडपुण इयतहक्करीयजासुमणा । रुवीझाढ
 डणीली तुलसीतहमाउलिगाय ॥ १ ॥ कुल्युन्नरिपिप्पालया झुतसीविह्वीयकायमाईय । चूसपफोलाकंदलि
 वाउझावल्युलंदरे ॥ २ ॥ पत्तउरसीयउरए हवइतहजवासएयवोधवे । णिगंफिझुक्कतूवरि झाढईचेवतलउ

अथ कतिविधा बहुजीजका १ । बहुजीजका अनेकविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा--अस्थिकतिन्दुरुक्कपित्था आम्बाटकमातुलिङ्गवित्ताद्य ॥ आमलकपन
 सदाहिम मद्यत्योदुम्बरधटाद्य ॥ १ ॥ न्यग्रोधनन्दिद्वी पीप्पलीशातावरीयदा ॥ काटुम्बारिकुसुम्भरी वोडुव्योदवदारुद्य ॥ २ ॥ तिलकालावुकच्छत्रा-
 थोचशिरीपसम्पर्णदचिपर्णा ॥ लोप्रपवधन्दनार्जुन नीपकुठजकदम्बाद्य ॥ ३ ॥ यचान्ये तथाप्रकारा यतया मूलानि असुखेयजीवकानि । कन्दा
 अपि रक्त्वा अपि त्वचोपि शाखा अपि प्रवाला अपि, पत्राण्यपि प्रत्येकजीवकानि, पुष्पाण्यपि नर्जोवकानि फलान्यपि बहुजीजानि । उक्तो
 बहुजीजका । उक्ता वृक्षा ॥ अथ कतिविधा गुच्छा १ । गुच्छा अप्यनकविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-वृत्ताकसल्लोवा यव नुकाञ्चनारिजकुसुमम् ॥
 रूपी आढि कनीली तुलसीतथाविजोराय ॥ १ ॥ कुसुम्भरिपिप्पलिका अतसीविलीयकास्यामादि ॥ घूर्णटपेलीकन्दलिका वातलिकावदरवृक्षी ॥
 २ ॥ पत्रवृक्षोरस्युरजा-अत्रतितथायवासद्य ॥ निर्गुणहाकतवारिका आठिकीवतलोडा ॥ ३ ॥ शणपाननागमर्दका ग्राटकसिन्दुवारस्या ॥ करम

५॥ ३ ॥ सणपाणकासमद्ग अग्धाः ऋगसामसिदुवारिय । करमद्दृष्टहसग करीरपुरावणमहृत्ये ॥ ४ ॥
 जाउलतमालपिरिली गयमारिणकुवृकारियजेनी । जावडकेयइतहग जपाळडासिच्चकोले ॥ ५ ॥ जेया
 वखे तहप्यगारा सेत गुच्छा ॥ से कित गुम्मा २ अणगविहा पखत्ता, तजहा सेरियएणोमालिय कोरिठय
 वत्युजीवगमणेज्जे । पीईयपाणकण्डर कुज्जयतहसिदुवारिय ॥ १ ॥ जाईमोगरतहजू हिंयायतहमल्लियायवाय
 ती । वत्युलकच्छुलसेवा लगठिमगदंतियाचेव ॥ २ ॥ चपगजाईणवणी डयायकुदेतहामहाजाई । एवमणेगगारा
 हवतिगुम्मा मुण्येव ॥ ३ ॥ सेत गुम्मा ॥ से कित लयाउ लयाउ अणगविहान पणत्ताउ, तजहा-पउमल
 यानागलया आसोगचपयलयचूतलता । वणलतवासतिलता अइमुत्तयकुटसामलता ॥ १ ॥ जेयावखेत
 हप्यगारा सेत लयाउ ॥ से कित वल्ली २ अणगविहान पखत्ताउ, तजहा-पूसफलीकालिगी तुवीतपुसीय

दाहूसात्या करवीररावणमहात्या ॥ ४ ॥ जाउलतमापिरिलीगज मारणकुस्रकारिकाजिगडी ॥ यावककेतकिट्टी गणप्यालोप्यथाङ्गोल ॥ ५ ॥ ये
 थाग्ये तयाप्रकारासे गुच्छा । अथ कतिविधा गुल्मा १ । गुल्मा अप्पनेकविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-सरिसनामानवमालिका कोरटकवन्धुजीवकमनो
 जा ॥ प्रीतिकरमायतरी करवीरकुस्रकीनिगुण्डी ॥ १ ॥ जातीमद्गरयूथो मल्लिकावतथावासती ॥ वतुलकखोलगुल्मी जेवालगरिठमगदन्तिकया
 य ॥ २ ॥ चम्यकजातीनारङ्गा मुचकुन्दस्तयामहाकाय ॥ यवमनेकाकारा जवन्तिगुल्माअनेकविधा ॥ ३ ॥ तमते गुल्मा ॥ अथ कास्ता लता । ल
 ता अनेकविधा प्रज्ञप्तास्तद्यथा पटलतानागलता अशोकचम्यकलताद्यचूतलता । वनवासतीलतेस्त अतिमुक्तकुन्दयामलता ॥ १ ॥ याद्यान्या
 स्तथाप्रकारास्ता लता । अथ कास्ता वल्लय । वल्लयीनेकविधा प्रज्ञप्तास्तद्यथा-पुसकलीकालिङ्गी तुम्बीत्रपुसीतयेलवालुङ्गी । चोपातकीपटोली
 पञ्जादुल्लिकाट्यालीष ॥ १ ॥ कडूगुलताचकुट्टी की ककोटकीकारियल्लूसुन्नगा । कुपयाचवल्लुलीसा । त्यापावल्लीचदेवदावीका ॥ २ ॥ आस्तोटाचा

एलवालंकी । घोसातईपछोला पचगुलिअ्याणालीय ॥ १ ॥ कंगूलयाकदुडया कक्षोऊडकारियल्लईसुजगा ।
कुचवायवागलीपा वावल्लीतहदेवढालीय ॥ २ ॥ अण्फोअ्याअ्यइमत्तय नागलयाकरहसूरवल्लीय सघहसुमिण
सात्रिय जासुमणकुविदवल्लीया ॥ ३ ॥ मुद्दियअ्यावल्ली वीरविरालीजियतिगोवाली । पाणीसामावल्ली गुजा
वल्लीयचल्याणी ॥ ४ ॥ ससविदुगोत्तफुसिया गिरिकसइमालुयायअ्यजणई । दहफुल्लयकोगलिमा गलीयतह
अ्यक्कचोदीया ॥ ५ ॥ जेयावणे तहप्पगारा सेत्त वल्लीउ ॥ से कित पव्हागा २ अ्यणंगविहा पसत्ता, तजहा
डरूयाडरूयऊये वीरणातहडक्कऊयेयमासेय । सुठेसरेयवेत्ते तिमिरेसतपोरगणले ॥ १ ॥ वसेवेलूकणए कंका
वसेयववसेय । उटएकुरणविमए कळावेलूयकळणे ॥ २ ॥ जेयावणे तहप्पगारा सेत्त पव्हागा ॥ से कित
तणा ? तणा अ्यणंगविहा पसत्ता, तजहा-संक्रियगतियहोत्तिय दप्पकुसेपव्हाएयपोऊडला । अ्यज्जुणअ्यसाढए

तिमुक्तक मागलतेकमतवरल्लयी च । चयपंसुमनसोपि च जातसुमना कुविन्दवल्लीका ॥ ३ ॥ मुद्रिकाभ्यावल्ली वीरविरालीजपल्लीगोपाली । पाणी
इयामावल्ली गुल्फावल्लीचवत्याणी ॥ ४ ॥ ज्ञेयउतीचद्विगोत्रा फुरसीगिरिकाणिभालुकाज्जनकी । द्विपुष्पकागणिमोगरी तथैवचान्याकुर्वोदीका ॥ ५ ॥
या चान्यास्तथा प्रकारास्ता वल्लय । अथ के ते पर्वगा पर्वगा अनेकविधा मज्झमास्तथा-इत्तूयाइत्तुवाटिका वीरुणीतथाडकामासथ ॥ जुगुठी
सरेपत्रे तिमिरासतपोरगपालाद्य ॥ १ ॥ वशोवेलूकणका ककायशस्तथैयदवथ ॥ उदक्कुठकविमुना कण्ठावेलद्यकल्याणी ॥ २ ॥ येधान्ये त
थाप्रकास्ते पवगा ॥ अथ कानि वृणानि अनेकविधानि मज्झानि । तथा-एणड कुरुविन्द करकचसुगुठीतथाविज्जङ्गय ॥ मधुरवण्डु
रकशप्प जेदातवोप्ययज्जुतणम् ॥ १ ॥ यानिचान्यानि तथा प्रकाराणि तानि वृणानि । अथ कतिविधा वलया ? वलया अनेकविधा मज्झमा ।
तथा-तास्तमालतक्कलो तत्कालितसारिकासारकल्याणा ॥ सरलजावित्रीकेतकी कदल्यस्तथापट्टवद्य ॥ १ ॥ भूतवृक्षोद्दिबुद्धो लवङ्गवद्यभव

रो हियसिमुयवेयखीरन्नुसे ॥ १ ॥ एरंकेकुरुविदे करकण्ठसुठेतहाचिन्नंगय । मञ्जरतण्डुरयसिप्पिय बोधहे
सुमलितणय ॥ २ ॥ जेयावखे तहप्पगारा सेत्त तणा ॥ से कित वलया २ अणंगविहा पखत्ता, तजहा-ताले
तमालेतक्कलि, तेयालीसालिसारकल्लाने । सरलेजावतिकेयड, कडलितहपउमरुक्केय ॥ १ ॥ नुयरुक्कहि
गुरुक्के, लवगरुक्केयहोडबोधहे । पूयफलीखज्जुरी, बोयव्वानालिएरीय ॥ २ ॥ जेयावखे तहप्पगारा सेत्त
वलया । से कित हरिया ? हरिया अणंगविहा पखत्ता, तजहा-अज्जोरुहवोदाणी, हरितगतहतदुल्लेज
गतणय । वत्थुलपोरगमज्जा, रपोडवल्लीयपालक्का ॥ १ ॥ दगपिप्पलीयदही सोत्थियसाएत्तहेवमम्भुक्की ।
मूलगसरिसवअविल, साएयजियतएचेव ॥ २ ॥ तुलसीकरहउराले फणज्जुएअज्जएयन्नयणए । चोरगदमण
गमरुयग सतपुप्फिणीवेरयतहा ॥ ३ ॥ जेयावखे तहप्पगारा सेत्त हरिया । से कित उंसहीउ ? उंसहीउ
अणंगविहाउ पखत्ताउ, तजहा-सालीवीहीगोज्जम जयकलमसूरतिलमुग्गा । मासणिप्पावमुल्लय अलिसि
दसत्तीणएलिचा ॥ १ ॥ अयसीकुसुजकोद्वय कगूरालगवरट्ठोहुसा । सणसरिसमूलवीया जेयावखे तहप्प

तियोद्वय ॥ पूगफलखज्जूर बोद्व्योनारिकेल्लय ॥ २ ॥ येचान्ये तथाप्रकारास्ते वलया ॥ अण कतिविधा हरितका । हरितका अप्यनेक
विधा । तद्यथा-अध्याकडोबोडा हरिततण्डुलोजलगतानेक ॥ वत्थुलपोरगमज्जार पौडवल्लीवपालिकका ॥ दकपोपलिकादो स्वस्तिकाशा
कस्तयेवमग्गुओ ॥ १ ॥ मूलकसरसवाम्बिल आकडअयन्तकथेव ॥ तुलसीअप्पोरालो अर्जुनप्रभेदेन ॥ चोरदकमनकरुक्क अतपुप्पीन्दीउरचतया ॥
येचान्ये तथाप्रकारास्ते हरिता ॥ अय कास्ता अप्ययो उनकविधा प्रज्ञा । सालोत्रीहीगोधूमा यवकलमसूरतिलमुग्गा ॥ मास
निप्पावकुल्लया अलसीदशतीणकालिङ्गा ॥ १ ॥ अयसीकुसुमकोद्वय कगूरानमासकोद्वयका ॥ अणसरिसवमूलवीया येचान्ये तथाप्रकारास्ताओ

गारा सेतं नसहीनु । से कितं जलरुहा २ अणुगविहा पसत्ता ; तंजहा-उदए अणुए पणए सेवालें कलें
हटे कसेरूया कच्छुजाणी उप्पले पउमे कुमुदे णलिणे सुन्नए सोगधिए पोंफरीए महापोंफरीए सयवत्ते सह
ससवत्ते कलहारें कोकणदे अणुविदे तामरच त्रिसे त्रिसमुणाले पोखले पोखलच्छिलए जेयावखे तहप्प
गारा सेत जलरुहा । से कितं कुहणा ? अणुगविहा पसत्ता , तजहा-अणुए काए कुहणे कुणक्की
दद्धहलिया अणुए सज्जाए उत्तोए वसीणहिंया कुरए १ जेयावखे तहप्पगारा सेत कुहणा । णाणाविहस
ठाणा रुक्काणएगजीवियापत्ता । खथोविणगजीवो तालसरलनालिएरीण ॥ १ ॥ जहमगलसरिसवाणं सिलेस
मिस्साणवहियावहा । पत्तेयसरीराण तहहोतिसरीरसघाया ॥ २ ॥ जहवातिलपप्पफ्रिया वज्जएहितिलेहि
सहतासती । पत्तेयसरीराण तहहोतिसरीरसघाया ॥ ३ ॥ सेत पत्तेयसरीरवादरवणप्फडकाडया । से कितं

पपय ॥ अथ कतिविधा जलरुहा १ । जलरुहा अनेकविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-उदके अथके पनके जीवाते कलस्युके तंहे ॥ कसेरुकच्छभाणका
उत्पलपट्टकुमुदानि ॥ १ ॥ नलिनसुन्नगसीगन्धिकपुण्डरीक शतपत्र सहस्रपत्रकल्लारकोकनदारविन्दनामरस विषयित्तुणाल पुकल पुफलशालि
नेदान् । पेधान्ते तथाप्रकारास्ते जलरुहा । अथ कतिविधा कुहणा । कुहणा अनेकविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-आप काय , जुण्ह ,
कुणक , द्रव्यजलिका , अफाक , सप्रज , सत्राक , खत्राक , वसीणहित , कुहकरनेदान् । येवान्ये तथाप्रकारास्ते कुहणा । नानाविषयस्थाना दृष्टा
यकजीविकापत्रा । स्कन्धोपचैकजीवोत्पलसरलनारिकेलीनाम् ॥ १ ॥ यथासकलसपपाणा श्लेष्मविश्राणा वर्तिकावृत्तम् । प्रत्येकशरीराणा तथाभव
न्तिशरीरसघाता ॥ २ ॥ यथाधातिलपपटिका बहुविस्त्रितैस्सङ्गतासन्ती । प्रत्येकशरीराणा तथाजन्तान्तिशरीरसघाता ॥ ३ ॥ उक्ता प्रत्येकशरीर
वादरवन्स्पतिकारिका । अथ कतिविधा साधारणशरीरवादरवन्स्पतिकारिका अनेकविधा प्रज्ञप्ता ।

साहारणसरीरवादरवणस्सडकाडया ? २ अणुगेविहा पणत्ता, तंजहा—अवए पणए सेवाले लोहिणी निह
 ल्यिजगा अस्सकणी सिहकणी सिठठातत्तोमुसदीय ॥ १ ॥ रुक्कुरहरियाजार, ठीरविहालीतहेवकिहीया
 हलिहसिगवेरेय, अलुगमलएड यकत्तुय कणकत्तुमज्जपोगलइतहेव मज्जसिणी विरुहा सप्पसुगधा ठि
 वरुहा चेव वायरुहा पाढामियवालुकी मज्जरसा चेव रायवल्ली य पउमा य माढरी दत्ति वकिहिहाति
 यावरा मासपणी मुग्गपणि जीवियरिसिके य रेणुया चेव कान्ठली खीरकान्ठली तथा जंगीणहईयाकिमिरा
 सिनद्धमुल्याणगलइपेलुगाइय किणहे पउले य हडेहरतणुया चेव लोयाणी कण्हकदेवज्जे सूरणकं तहेव
 खल्लूकए अणतजीवा जेयावणे तहाविहा ॥ तणमूलकदमूलो वसीमूलितियावरं । सखेज्ज मससिज्जा बोध
 व्वाअणतजीवाय ॥ १ ॥ सिधाळगस्सुगुच्छो अणुगेजीवोउ होति णायद्यो । पत्ता पत्तयजिया दोखियजीवानु फले

तद्यथा-अनक, पनक, सेवाल, लीही, शीहू, स्तिजका । अथऊणी सिहकणी सडाविठ ततो, मुसुयडो ॥ १ ॥ तरुक्कन्दकुन्दरिजितवीरविराली त
 याधोक्ता । हारिद्रयद्वेरेर आलमूनीकम्बु कणकन्दमपुपोलेव ॥ २ ॥ मपुयद्वीविठ्ठी सर्वसुगव्यिच्छिन्नरूढा । अशरुहावावाली मपुुरसाचराज
 लता ॥ ३ पट्ठागान्धारिदात्यो चण्डीकियातिकावराभासपणी । मुद्रपणीजीवरसिका रणुकाकाकोलीवीरकाकोलो ॥ ४ ॥ जङ्गारुमराक्षिमाया गु
 णालेयवालुका च । कणपोलद्वयकन्दो तथाहरतत्तुलोपाणी ॥ ५ ॥ कणकन्दवज्जकन्दो सूरणकन्द सल्लूक । यत्ते अनन्तजीवा ये याप्यग्रे तथा
 जूता ॥ ६ ॥ तणमूल कन्दमूला वशीमूलास्तथाचपरं । सत्येया असत्येया दोट्टयायतथापरं ॥ १ ॥ यद्विहट्ठस्सुगुच्छोप्य नेकजीवोन्नवतिविज्ञेय ।
 पत्ता मत्तेकजीवा द्वीद्वीजीवोफलेविज्ञेयो ॥ २ ॥ यस्यमूलस्यजग्नस्य समोभङ्गस्तुदृश्यते ॥ अनन्तलीवास्तन्मूले येवाप्यग्रेतथाविधा ॥ १ ॥ यस्य
 कन्दस्य जग्नस्य समो जङ्गस्तु दृश्यते ॥ अनन्त जीवास्तन्मूले येवाप्यग्रे तथाविधा ॥ २ ॥ यस्य कन्दस्य जग्नस्य समो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ अनन्त जीवा

नृणि ॥ २ ॥ जस्समूलस्सन्नगस्स समोन्नगोयदीसए । अणतजीवेउसेमूले जेयावन्तेतहाविहा ॥ १ ॥ जस्सकंदस्स
 न्नगस्स समोन्नगोयदीसई । अणतजीवेउसेकंदे जेयावन्तेतहाविहा ॥ २ ॥ जस्सखथस्सन्नगस्स समोन्नगोय
 दीसई । अणतजीवेउनेखथे जेयावन्तेतहाविहा ॥ ३ ॥ जस्सतयाएन्नगाए समोन्नगोयदीसई । अणतजीवा
 तयासाउ जेयावन्तातहाविहा ॥ ४ ॥ जस्ससालस्सन्नगस्स समोन्नगोपदीसई अणतजीवेउसेसाले जेयावन्ते
 तहाविहा ॥ ५ ॥ जस्सपवालस्सन्नगस्स समोन्नगोपदीसई । अणतजीवेपवालसे जेयावन्तातहाविहा ॥ ६ ॥
 जस्सपत्तस्सन्नगस्स समोन्नगोपदीसई । अणतजीवेउसेपत्ते जेयावन्तेतहाविहा ॥ ७ ॥ जस्सपुप्फस्सन्नगस्स
 समोन्नगोपदीसई । अणतजीवेउनेपुप्फे जेयावन्तेतहाविहा ॥ ८ ॥ जस्सफलस्सन्नगस्स समोन्नगोपदीसई ।
 अणतजीवेफलेसेउ जेयावन्तेतहाविहा ॥ ९ ॥ जस्सवीयस्सन्नगस्स समोन्नगोपदीसई । अणतजीवेउनेवीए
 जेयावन्तेतहाविहा ॥ १० ॥ जस्समूलस्सन्नगस्स हीरोन्नगोपदीसई । परित्त जीवेउसेमूले जेयावन्तेतहाविहा १
 जस्सकंदस्सन्नगस्स हीरोन्नगोपदीसई । परित्तजीवेउसेकंदे जेयावन्तेतहाविहा ॥ २ ॥ जस्सखथस्सन्नगस्स

स्तन्मूले यवाप्यन्ये तथाविधा ॥ ३ ॥ यस्य शाखा प्रजना च समो प्रह्लोहि दृश्यते ॥ अनन्तजीवास्तच्छारा येवाप्यन्ये तथाविधा ॥ ४ ॥ यस्य लघ
 स्तन्नगाया समो प्रह्लस्त दृश्यते ॥ अनन्तजीवा स्तत्त्वबु येवाप्यन्ये तथाविधा ॥ ५ ॥ यत्प्रवालस्य जग्नस्य समो भद्रस्तु दृश्यते ॥ प्रत्य होतन्तनी
 स्तु येवाप्यन्ये तथाविधा ॥ ६ ॥ यस्य पत्रस्य जग्नस्य समो प्रह्लस्तु दृश्यते ॥ अनन्तजीवा स्तत्पत्रे येवाप्यन्ये तथाविधा ॥ ७ ॥ यत्तन्मूला
 ग्नस्य समो प्रह्लस्तु दृश्यते ॥ अनन्तजीवा स्तत्पुष्पे येवाप्यन्ये तथाविधा ॥ ८ ॥ यत्फलस्य च जग्नस्य समो प्रह्लस्तु दृश्यते ॥ यत्तन्मूलं स्तु दृश्य
 येवाप्यन्ये तथाविधा ॥ ९ ॥ यस्य बीजस्य जग्नस्य समो प्रह्लस्तु दृश्यते ॥ अनन्तजीवा स्तद्बीजं येवाप्यन्ये तथाविधा ॥ १० ॥ यस्य मूलस्य जग्न

हीरोन्नगेपदीसई । परित्तजीविउसेखंधे जेयावखेतहाविहा ॥ ३ ॥ जस्सतयाएन्नगाए ह्रीरोन्नगेपदीसई । परि
त्तजीवातयासाउ जेयावखातहाविहा ॥ ४ ॥ जस्ससालस्सन्नगस्स ह्रीरोन्नगेपदीसई । परिन्नजीविउसेसाले
जेयावन्नेतहाविहा ॥ ५ ॥ जस्सपवालस्सन्नगस्स ह्रीरोन्नगेपदीसई । परित्तजीविपवालेंउ जेयावन्नेतहाविहा
६ ॥ जस्सपत्तस्सन्नगस्स ह्रीरोन्नगेपदीसई । परित्तजीविउसेपत्ते जेयावन्नेतहाविहा ॥ ७ ॥ जस्सपुप्फस्सन्नग
स्स ह्रीरोन्नगेपदीसई । परित्तजीविउसेपुप्फे जेयावन्नेतहाविहा ॥ ८ ॥ जस्सफलस्सन्नगस्स ह्रीरोन्नगेपदी
सई । परित्तजीविउसेउ जेयावन्नेतहाविहा ॥ ९ ॥ जस्सवीयरस्सन्नगस्स ह्रीरोन्नगेपदीसई । परित्तजीविउसे
वीए जेयावन्नेतहाविहा ॥ १० ॥ जस्समूलस्सकठानं तल्लीवहलतरिन्नवे । छ्णतजीवाउसातल्ली जायाव

स्य हीरो नङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्तमूले ये वाप्यन्ये तथाविधा ॥ १ ॥ यस्य स्कन्दस्य भग्नस्य हीरो नङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवा स्तस्कन्दे
ये वाप्यन्ये तथाविधा ॥ २ ॥ यस्य स्कन्धस्य भग्नस्य हीरो नङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्त तस्कन्ध य वाप्यन्ये तथाविधा ॥ ३ ॥ यस्य त्वयस्तु न
ज्जाते ये वाप्यन्ये तथाविधा ॥ ४ ॥ यस्य शालस्य भग्नस्य हीरो नङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्त
भग्नस्य हीरो नङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्तत्र सु ये वाप्यन्ये तथाविधा ॥ ५ ॥ यस्य पत्रस्य भ
ग्नस्य हीरो नङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवा स्तत्र ये वाप्यन्ये तथाविधा ॥ ६ ॥ यस्य पुष्पस्य भग्नस्य हीरो नङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवा स्तपु
ष्पस्य हीरो नङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवा स्तत्र ये वाप्यन्ये तथाविधा ॥ ७ ॥ यस्य फलस्य भग्नस्य हीरो नङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवा स्तफ
लस्य हीरो नङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवा स्तद्वीज ये वाप्यन्ये तथाविधा ॥ ८ ॥ यस्य कन्दस्य काष्ठेभ्यान्तस्त्वक बहुला भवेत् ॥ अनन्तजीवास्त
स्यचि या वाप्यन्या स्तथाविधा ॥ ९ ॥ यस्य स्कन्धस्य काष्ठेभ्यो त्तरस्त्वकु बहुला भवेत् ॥ अनन्त जीवास्तान्नाचि ये वाप्यन्ये तथाविधा ॥ १० ॥ यस्य श्वा

सातहाविहा ॥ १ ॥ जस्सकदस्सकठान् तल्लीवहलतररीन्ने । अणंतजीवाउसातल्ली जायावसातहाविहा ॥ २ ॥
जस्सखधस्सकठान् तल्लीवहलतररीन्ने । अणतजीवाउसातल्ली जायावसातहाविहा ॥ ३ ॥ जस्ससालाडुक
ठान् तल्लीवहलतररीन्ने अणतजीवाउसातल्ली जायावसातहाविहा ॥ ४ ॥ जस्समूलस्सकठान् तल्लीतणु
यरीन्ने । परित्तजीवाउसातल्ली जायावसातहाविहा ॥ १ ॥ जस्सकदस्सकठान् तल्लीतणुयरीन्ने । परित्त
जीवाउसातल्ली जायावसातहाविहा ॥ २ ॥ जस्सखधस्सकठान् तल्लीतणुयरीन्ने । परित्तजीवाउसातल्ली
जायावसातहाविहा ॥ ३ ॥ जस्ससालाडुकठान् तल्लीतणुयरीन्ने । परित्तजीवाउसातल्ली जायावसातहावि
हा ॥ ४ ॥ चक्कागज्जमाणस्स गठीचुखधणोन्ने । पुढवीसरिसएण्णेदेण अणंतजीवविद्याणाहि ॥ १ ॥
गूढसिरागपत्त सच्छीरंजचहोइनिच्छीर । जपियपणठसंधि अणंतजीवविद्याणाणि ॥ २ ॥ पुप्फाजलयावलया

लस्य काष्ठेभ्य म्बलीतु बहुल प्रवेत् ॥ अनन्तजीवास्तत्त्वपि या वाप्यन्या स्तथाविधा ॥ ३ ॥ यस्य मूलस्य काष्ठेभ्यो न्तरत्वक् तनुतरीमता ॥ प्रत्येक
जीवारत्वचि तु या वाप्यन्या स्तथाविधा ॥ १ ॥ यस्य कन्दस्य काष्ठेभ्यो न्तरत्वक् तनुतरीमता ॥ प्रत्येकजीवारत्वचि तु या वाप्यन्या स्तथाविधा ॥ २ ॥
यस्य रक्तस्य काष्ठेभ्यो न्तरत्वक् तनुतरी मता ॥ प्रत्येकजीवास्तु त्वचि या वाप्यन्या स्तथाविधा ॥ ३ ॥ यस्य शालस्य काष्ठेभ्यो न्तरत्वक् तनुतरी म
ता ॥ प्रत्येक जीवास्तु त्वचि या वाप्यन्या स्तथाविधा ॥ ४ ॥ चक्राङ्गजल्यमानस्य ग्रन्थिधूर्णोक्ताप्रवेत् ॥ पृथिवी सदृश भेदेना नन्त जीव विजा
नीयात् ॥ गूढ शिराक पत्र सक्षीरं यच्च नि क्षीरम् ॥ यदपि प्रमष्टसन्धि अनन्तभीव विजानीयात् ॥ पुष्पजलजस्य लज वृन्तवद्वल्बनालवद्वल्ब । सङ्क्षेप
मसङ्क्षेप बोद्धव्यमनन्तजीवश्च ॥ ३ ॥ येकेष्विक्तालवद्वाः पुष्पा सख्येयजीविकाधस्यु । अखिताह्यनन्तजीवा येषां प्यन्येतथाविधाधस्यु ॥ ४ ॥ पट्यन्पु
त्यलिकन्दी वत्सरकन्दस्यैवज्जिह्वी च । एतेह्यनन्तजीवा एकोजीवोविषमृशाले ॥ ५ ॥ पलायिहूनसुनकन्दो कान्तुकुस्तुस्वकीचवोद्भव्यो । सतेप्रत्येक

॥ शुभ ॥

11 6 11

विठवदासगालिवदाय । सखिज्जमससेजा बोधव्याणतजीवाय ॥ ३ ॥ जेकैडनालिमावदा पुष्पासखेजाजी
 विया । निज्जमाअणतजीवा जेयावरोतहाविहा ॥ ४ ॥ पउमुप्पलिगीइं अउरकंदेनहेवज्जिही य । पत्ते
 अणतजीवा एगेजीवोअिसमुणाले ॥ ५ ॥ पलळूहसुणकंदंय कदलीयइउप । एणपरित्तजीवा जेयावन्नेत
 हाविहा ॥ ६ ॥ पउमुप्पलणालिणाण सुन्नगसेगधियाणय । अउविदकुळगाण सत्तवत्तगहसपत्ताण ॥ ७ ॥
 विठवाहिरपत्ता यऊखियाचैवएजीवस्स । अस्सितरगपत्ता पत्तयकंसरमिजा ॥ ८ ॥ वंगुनलडस्कुवाळिअ
 समानहस्कुअडक्कनेरुं । करकरसुठिविहगु तणाणतहपत्तागाणच ॥ ९ ॥ अउच्छिंअपत्तिमा ऊरुअणगन्सही
 तिजीवस्स । पसेयपत्ताइ पुष्पाडुअणंगजीवाड ॥ १० ॥ पुत्तफलकालिग तुयनउन्नलुवालुरु । बोसालय
 पकाळं तिदूयचैवतिदूम ॥ ११ ॥ वंठमनकळाह एवाडुअयतिणगजीवस्स । पत्तापत्ताड राऊसरमइसरमिजा
 १२ ॥ सप्पाएसज्जाए उव्वेहलियाअकुहगक्कडुद्धी । एएअणतजीवा कुडुद्धेहोडन्नगणाउ ॥ १३ ॥ जोणिपूअनीए

जीग येचास्पयेतथाप्रकारा सु ॥ ६ ॥ पटोत्पत्तनरिताना गुञ्जासौगन्धिकाणा च यादृक् ॥ अरविन्दोकादागा अतपत्रसहस्रपत्रायाम् ॥ ७ ॥
 वृत्तपत्राद्यपत्राणि कैकजीगानि । आप्यत्तरचपा कमरचैर्मिञ्जाच ॥ ८ ॥ वेणुकागुगटिकमनासपुच्छराराः । करकरसुरिठिविहङ्गा
 स्तृणागिचपंगानि ॥ ९ ॥ अक्षिपर्वगलिभो उग्रयेतमकनोवाणि । पत्रागिचैकजीगान्य नेकनीगानिपुष्पाणि ॥ १० ॥ पुष्पसलकलिन तुष्य
 त्रपमताचिर्जटवैग । चोपातकपटोल तिरुक्कचैगतिन्दूसम् ॥ ११ ॥ वृत्तसमासकटार मनानिजगतिचैकजीगस्य । प्रत्यकपत्राणि त्रकमराकसरा
 मिञ्जा ॥ १२ ॥ सप्तागसज्जाग ववेहलियाचगुञ्जनजुटुक्क । यतेत्यतत्तजीग काटुक्कजगतिज्ञाना च ॥ १३ ॥ योगययानन्दत जीगारगानमिस
 थास्यो वा । यापिचमूलजीव सापिरिपयेमथमतेयेत ॥ १४ ॥ सर्वोपिकिसलय एलु मोदुच्छयनत्तकोप्राणत । चरवउमान मत्सेकननत्तजीग

जीवोवक्त्रमडसोवच्यसोवा । जोविच्यमलेजीवो सोविज्जपत्तेपढमयाए ॥ १४ ॥ सद्योविकित्तलनुखलु उग्गम
माणोच्चणतनुंजणिनु । सोचेवविवदुतो होडपरितोच्चणतोवा ॥ १५ ॥ समयंवक्कताणं समयंतसिसरीरणि
छत्ती । समयच्याणग्गहण समयउस्सासनीसासो ॥ १६ ॥ एक्कस्सउजगहण वट्ठणसाहारणाणतत्तेव । जवज
याणगहण समासनुंतपिएगस्स ॥ १७ ॥ साहारणमाहारो साहारणमाणपाणगहणंच । साहारणजीवाणं सा
हारणलक्खणएय ॥ १८ ॥ जहच्ययगोलोधतो जानुतत्तवणिज्जसकासो । सद्योच्चगणिपरिणनु णिनुयजीवे
तहाजाण ॥ १९ ॥ एगस्सटोएहतिएहव सखेज्जाणवपासिउसक्का । टोसतिसरीराइ णिनुयजीवाणणंताण २०
लोगागासपएसे णिनुयजीवठवेहिएक्केक्कं । एवमविज्जमाणा हवतिलोयाच्चणतानु ॥ २१ ॥ लोगागासपदेसे
परित्तजीवठविनुएक्केक्क । एवमविज्जमाणा हवतिलोगाच्चसखेज्जा ॥ २२ ॥ पत्तेयापज्जात्ता पयरस्सच्चसख
जागमिन्नानु । लोगाच्चसखाच्चपज्जात्तयाणसाहारणमणता ॥ २३ ॥ एएहिहसरीरेहि पच्चुक्कतेपक्कविवाजीवा

वा ॥ १५ ॥ समकच्चुरकान्ताना समकतेपात्तरीरनिर्वृत्ति । समकप्राणापान ग्रहरणचोच्छ्वासनि द्यासो ॥ १६ ॥ एकस्सचयद्वहण सद्यद्वहूनासाधारणा
नाच । यद्यद्वहूनाग्रहण समासतस्तदपिचैकस्य ॥ १७ ॥ साधारणमाहार प्राणापानादिकभवेत् सर्वम् साधारणजीवाना साधारणलक्षणचेतत् ॥ १८ ॥
यथायोगोलोस्मातो जातस्तप्तपत्नीयसङ्काश । सर्वोग्निपरिणत सलु बानीहिनिगोदजीवान्त्वम् ॥ १९ ॥ एकस्सद्वयोत्पयाणा सत्येयानानवोपल
भ्यान्ति । गात्राण्ययदृश्यन्ते उन्तानानिगोदजीवानाम् ॥ २० ॥ लोकाकाशप्रदेशो निगोदजीवस्यापयैकैकम् । एवन्तुमीयमाना प्रवन्तिलोकाग्रनन्ता
स्तु ॥ २१ ॥ लोकाकाशप्रदेश प्रत्येकजीवस्यापयैकैकम् । एवन्तुमीयमाना प्रवन्तिलोकाग्रसख्याता ॥ २२ ॥ पर्यस्तप्रत्येकजीवा प्रतरस्यासङ्गभागमि
त्ता । असख्यलोकाग्रपर्याप्ताः साधारणाग्रनन्ताः ॥ २३ ॥ एति सलुत्तरीरे प्रत्यक्कतेपक्कविवाजीवा । द्युत्तुस्पर्शनतेयान्ति ॥ २४ ॥

सुज्जमाञ्चणगिज्जा चक्खुप्फासनतेइति ॥ २४ ॥ जेयावखे तहप्पगारा ते समासनु दुविहा पसत्ता, तं पज्जत्तगा य ञ्चपज्जत्तगाय, तत्थण जे ते ञ्चपज्जत्तगा तेण ञ्चसपत्ता, तत्थण जेतं पज्जत्तगा तेसिण वन्ना देसेण गथादेसेण रसादेसेण फासादेसेण सहस्सगसो विहाणाड सखेज्जाइ जोणिप्पमुहसयसहस्साइं पज्जा त्तगणिस्साए ञ्चपज्जत्तगा वक्कमति, जत्थ एगो तत्थ सिय सखिज्जा सिय ञ्चसखिज्जा सियञ्चणता एएसिण डमाउं गाहाउं ञ्चणगतत्वाउं तजहा—कदायकदमूलाय रुक्कमूलाडयावरे । गुच्छायगुम्भवल्लीय वेलुयाणित्तणा णिय ॥ १ ॥ पउमुप्पलसिचारे हट्ठेयसेवालकिरहणए । ञ्चवएयकच्छन्नाणी कटुक्केकणवीसडमे ॥ २ ॥ तयळ्हिपवालेसुय पत्तपुप्फफलेसुय । मूलगमज्जवीएसु जोणीकस्सडकेत्तिया ॥ ३ ॥ सेत्त साहारणसरीर यादरवणस्सडकाडया । सेत्तवाटरवणस्सडकाडया ॥ सेत्त एगिटिया ॥ से कित वेइदिया ? वेइदिया ञ्चणेग विहा पसत्ता, तजहा—पुलाकिमिया कुच्छिकिमिया गळूयलगा गोलोमा गेउरा सोमगलगा वसीमुहा सू

येपिधान्ये तथाप्रकारास्ते समासतोद्विविधा प्रज्ञप्तास्तद्यथा-पर्याप्तकाद्यापर्याप्तकाश्च, तत्र यश्चपर्याप्तकास्ते ऽवस्मात्ता, तत्र ये पर्याप्तका स्तेषा वर्यादेशेन गम्यादेशेन रसादेशेन स्पृक्षादेशेन सहस्त्राग्रशी विधानानि (जेटा) सत्येयानि योनिप्रमुखतस्तद्वस्त्राणि पर्याप्तकानिश्चया अपर्याप्तका व्युत्क्रमन्ते, यत्रैकस्तत्र स्यादसख्येया स्यादसख्येया स्यादनन्ता । मतेयामिमा गाथा अनुगन्तव्या स्तद्यथा-कन्दाथकन्दमूलानि वृक्षमूलानिचाप रे । गुच्छागुत्तमाद्यवस्त्राद्य वेणुकानितृणानिच ॥ १ ॥ पट्कोत्पलपट्ठगाटकानि हट्ठसेवालकप्रपनकाश्च । अवनकाद्यकच्छन्नाणि कन्दुसगकोनविशतिक ॥ २ ॥ त्वक्खलिप्रवालेषु पत्रपुप्फफलेषुच । मूलाग्रमध्यबीजेषु योनि कस्यापिकापिच ॥ ३ ॥ उक्ता साधारणशरीरयादरवनस्पतिकारिका । उक्ता यादरवनस्पतिकारिका । समाप्तानि एकेन्द्रियाणि । अथ के ते द्वौन्द्रिया द्वौन्द्रिया अनेकविधा प्रज्ञप्तास्तद्यथा पूति कपिका कुकिरुपि

इमंहा गोजलोया जलोया जालाउया संसा संखगगा पुत्ता खुत्ता खंधा वराळा तोत्तिया तोत्तिया कल्लुया
वाया एगुवत्ता दुहउवत्ता णदियावत्ता सबुत्ता माडवाना तिप्पि सपुळा चटगा समुहल्लिक्का, जयावखे
तहप्पगारा सवे ते समुच्छिमा नपुसगा ते समानव दुविहा प०. त०-पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय एणसिणं
एवमादिनाण वेइदियाण पज्जत्त पज्जत्ताण सत्तजाइकुलकोली जाणिप्पमुहसयसहस्सा नवतीति मक्खाय ॥
सेत्त वेइदियनसारनमावणजीवपसुवणा ॥ से कित तेइदियससारसमावन्नजीवपसुवणा २ ? अपणंगविहा
पसात्ता, तजहा-उवाडया रोहिणिया कुंथू पिपीलिया उहेसगा उहेहिया उक्कल्लिया उप्पाया उप्पळा तण
हारा कठहारा पत्तहारा मालुया तणविटिया पत्तविटिया प्फवेटिया फलविटिया बीयविटिया तेषु
णमिजिया तडमिमिजिया कप्पासठिमिजिया हिहिया ज्जितिया किगिरा किगिरिळा वाज्जया लज्जया सु

का कट्टयगा गोलोमा तकुला अमहुलगा वशीमुरा सूचीमुरा गोजतीका जलीका जल्लूना शैला शरत्तना मूला खुत्ता खंडा कडा सी
त्तिक मीत्तिप पुलापयासा पकीपयुक्ता, द्विचोपयुक्ता नन्द्यावती जयुका मंगोसा चन्दना समुद्गीशा येवाप्यन्य तथाप्रकारा
सर्व ते समुच्छमा नपुसमासे समावत्ते द्विविधा प्रज्जमा । तद्यथा-पर्याप्तका अपर्याप्तकाश्च । यत्तप मेवमादीना हीन्दित्राद्याश्च पर्याप्तपया
प्रमादीना सर्वान्निजुलकीदीर्ण योगिमुराणि ज्ञानसंस्थानि भवन्ति ज्ञातव्यास्तम् । तपते हीन्दित्रसमापन्नजीवप्रज्ञापनाः ॥ अथ कतिविधा
सोन्दित्रसमापन्नजीवप्रज्ञापना । त्रीन्दित्रसमापन्नजीवप्रज्ञापना अनेकाविधा प्रज्जमा । तद्यथा-उत्पातिका रोहिणिका कम्बुना पिपीलिका
उद्दगा उहेहा उहेहा उहेहा पत्तता उत्पडा वृक्षादारा कट्टादारा मूलादारा पत्तादारा वृक्षवेटी पुष्पवेटी फलवेटी बीजवेटी सूर्यनम
जित्ता तजसमज्जिता कपासा अरियमिज्जी वसुक्का कपिक्का किगिरिया वटुका तपुका सुनगा यौवलिक्का सखविट्टा इन्द्रकेति

मगा सोवित्पिपां सुयवेष्टा इदकादया इदगोवया तुरतुत्रगा कोत्यलवाहगा जूया हालाहलां पिसुया सत
वाडया गोम्ही हल्यिसोला जैयावणे त० सवे ते समुच्छिमनपुसगा ते समासले दुविहा पणता, तजहा-
पजात्तगाय अपजात्तगाय । एणसिण एवमाडयाण तेइदियाण पजात्तापजात्ताण अठजाइकुलकोमिजोणि
प्यमुहसनसहस्मा हवतीति मस्काय । संत्तं तेइदियसत्ता० । से कित चउरिदियसत्तासमावसजीवपसुव
णा २ ? एणगेविहा पणता. तजहा-अधिय पांसिय मेच्छिय, मगसिरकीं तहा पयगे य । ठकण कु
कुळकुळुह, नडावत्तेय सिगिरिं । क्रिहपत्ता नीलपत्ता लोहियपत्ता हालिदपत्ता सुक्लिपत्ता चित्तपरका
विचत्तपरका उहजलिता जलचारिया गजौरा णीणिया ततवा अत्यिरोला अत्यिवेहा सारगा नेउरा दोला
जमरा जरिली जइला तोम्मा विञ्चुया पत्तविञ्चुया क्काणविञ्चुया जलविञ्चुया पिगला कणगा गोमयकीला
जैयावन्तं तहप्यगारा सवे ते समुच्छिमा नपुनगा ते समासले दुविहा पणता, तजहा-पजात्तगाय अप

का इन्द्रगोपा तुरतुस्यपा कुलत्यवाहगा यूका हालाहला पिगुका सववापका कर्णाशिला इल्लिजशका ये वाप्यन्य तथाविधास्ते सर्वे समुच्छि
मा नपुनकीला त समानभा द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-पर्याप्तकाअपर्याप्तका । सत्तयामेवमादिकाना त्रीन्द्रियाणा पर्याप्तापर्याप्तकानामष्ट
जातिकुर्वादिपानिप्रमुदगतमहस्त्राणि भवन्ति इत्याख्यातम् ॥ तएते त्रीन्द्रियास्या ॥ अथ कतिविधागतरीन्द्रियससारसमापकाविषयप्रज्ञापना
२ । यतरिन्द्रियगतनमापयजीवप्रज्ञापना अनेकविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-अधिकपुच्छिकमाधिक, मवाकडीटास्तथापतद्वाय ॥ मत्तुरसकुण्डकु
रनप्राधान्यगटिगरकाय ॥ १ ॥ कक्षपत्ता नीलपत्ता लोहितपत्ता इरिद्रपत्ता शुरुपत्ताश्चिपत्ता त्वचिपत्ता त्वचिपत्ता प्रतवारणा गजौरा
नियतास्तत्तवोदाराहा आशवेधा सारङ्गा नकुला दोला जमरा नमर्वा णतरुहा तोटा. द्युयिका. पथद्वयिका गोमयद्वयिका ततद्वयिका

जन्तुगाय । एतस्मिन् एवमादयाणं चउरिदियाण पञ्जतापञ्जत्ताणं नवजाडुकुलकोटि जोणिप्पमुहसयसह
रसाड नवतीति मस्काय । सेतं चउरिदियससारसमावण्णजीवपण्णवणा । से कित पचिदियसंसारसमावण्ण
जीवपण्णवणा ? पचिदियसंसारसमावण्णजीवपण्णवणा चउविहा पण्णत्ता, तजहा-नेरडयपचिदियसंसारस
मावण्णजीवपण्णवणा तिरिक्खजोणियपचिदियससारसमावण्णजीवपण्णवणा मणुस्सपंचिदियससारसमावण्ण
जीवपण्णवणा देवपचिदियससारसमावण्णजीवपण्णवणा । से कितं नेरडया ? सत्तविहा पण्णत्ता, तंजहा
रयणप्पन्ना पुढवीनेरडया सक्करप्पन्नापुढविनेरडया वालुयप्पन्नापुढविनेरडया धूमप्पन्नापुढविनेरडया तम
प्पन्नापुढविनेरडया तमतमप्पन्नापुढविनेरडया । ते समासत्तं दुविहा पण्णत्ता, तजहा-पञ्जत्तगा झपज्जत्त
गाय । सेत्त णेरडया । से कित पचिदियतिरिक्खजोणिया ? तिविहा पण्णत्ता, तजहा-जलयरपचिदि

प्रियगता कण्ठा गोमयकीटा ये वाप्यन्ये तथाप्रकारस्ते समूहिमा नपुसकास्ते समासतो द्विविधा प्रज्ञप्ता ॥ पर्याप्तका अपर्याप्तकाश्च ॥ एते
यामेवमादीना चतुरिन्द्रिययाद्याणा पर्याप्तपर्याप्ताना नवलकुलकोटिशतसंख्याणि भवन्ति इति आख्यातम् ॥ तस्मै चतुरिन्द्रियसमापन्न जी
वप्रज्ञापना ॥ अथ कतिविधा पञ्चेन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ? पञ्चेन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापनाद्युत्तुविधा प्रज्ञप्ता ॥ तद्यथा-ने
रयिकपञ्चेन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना तिर्यक्योनिकपञ्चेन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना मनुष्यपञ्चेन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना दे
वपञ्चेन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना । ते कतिविधा नैरयिका ? नैरयिका सप्तविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-रत्नप्रज्ञा पृथिवी नैरयिका शर्कर
प्रज्ञा पृथिवीनैरयिका वालुकप्रज्ञापृथिवी नैरयिका धूमप्रज्ञापृथिवी नैरयिका तमप्रज्ञा पृथिवीनैरयिका तमस्तम प्रभा पृथिवी नैरयिका ते समा
सेत द्विविधा प्रज्ञप्ता, तद्यथा-पर्याप्ता अपर्याप्ताश्च । तस्मै नैरयिका । अथ कतिविधा पञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिका ? पञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिका

यतिरिक्कजोणिया थलयरपचिदियतिरिक्कजोणिया खहयरपचिदियतिरिक्कजोणिया । से कितं जलयरपं
चिदियतिरिक्कजोणिया २ ? पचविहा पन्नात्ता, तजहा मच्छा कच्छहा गाहा नगरा सुंसुमारा । नकि त
मच्छा २ ? झुणंगविहा पयत्ता, तजहा सरहमच्छा खवल्लमच्छा जुगमच्छा विज्जिक्कियमच्छा हलिहमच्छा
मगरिमच्छा रोहिमच्छा हलोसागरा गागरा वक्का तिमिगिला पक्का तदुलमच्छा क
गिक्कामच्छा सालिसक्कियामच्छा लज्जणमच्छा पक्कागा पक्कागाहपक्कागा । जेयावन्ने तहप्पगारा । सेत्त
मच्छा । से कित कच्छन्ना २ दुविहा पयत्ता, तजहा छठकच्छन्ना य मसकच्छन्ना य । सेत्त कच्छन्ना ।
से कित गाहा २ ? पचविहा पयत्ता, तजहा देलीवद्धगा मुद्धया पुलगा सीमागारा । सेत्त गाहा ॥ से
कित मगरा २ ? दुविहा पयत्ता, तजहा-सीममगरा मच्छमगराय । सेत्त मगरा । से कित सुंसुमारा २

विधिपथा मससा लपया-पतापरपच्चेन्द्रियतियक्योनिक्का स्वलपरपच्चेन्द्रियतियक्योनिक्का । अथ कतिविधा
पतापरपच्चेन्द्रियतियक्योनिक्का ? । पलवरपच्चेन्द्रियतियक्योनिक्का पन्नाविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-मत्स्या कच्छपा याद्वा मकरा जिज्ञुमा
रा । अथ पाता मत्स्या २ । मत्स्या योक्कविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-यून्मत्स्या खतलमत्स्या युगमत्स्या पिनटुमत्स्या वारिद्रमत्स्या मन्
रा मत्स्या । रोहिमत्स्या २ । मत्स्या सागरमत्स्या मगरमत्स्या लम्भामत्स्या पत्ताकमत्स्या पत्ताकपत्ताकमत्स्या ये वाप्यग्ये तथाप्रकारास्त मत्स्या ।
मगरा-सा सीमामत्स्या सापिकमत्स्या सापिकमत्स्या लम्भामत्स्या पत्ताकमत्स्या पत्ताकपत्ताकमत्स्या ये वाप्यग्ये तथाप्रकारास्त मत्स्या ।
अथ कतिविधा मत्स्या २ ? मत्स्या द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-अस्त्रिकच्छपा मासकच्छपाय । तद्यते कच्छपा । अथ कतिविधा मत्स्या २ ।
अथा. पय्योवपा मससा दिग्गहा पय्यो पुलगा सीमाजारा तयत्ते याद्वा । अथ कतिविधा मकरा ? । मकरा द्विविधा प्रज्ञप्ता ।

एगागारा प०, सेत सुसुमारा । जेयावन्ते तहप्यगारा ते समासन्तु दुविहा पयत्ता, तजहा-संमुच्छिमा य
 गप्पवक्कतिया य तत्यण जे ते सम्मुच्छिमा ते सहे नपुसका, तत्यणं जे ते गप्पवक्कतिया ते तिविहा प०,
 तजहा इत्थी पुरिसा नपुसगा । एतसिण एवमाइयाण जलयरपचिदियतिरिस्कजोणियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं
 छच्छन्तेरसजाडुलकोळिजोणीप्पमुहसयसहस्सा भवंतीति मस्कायं । सेतं जलयरपचिदिय० । से कित थल
 यरपचिदियतिरिस्कजोणिया २ ? दुविहा पयत्ता, तजहा चउप्पयद्यलयरपचिदियतिरिस्कजोणिया परि
 सम्पथलयरपचिदियतिरिस्कजोणिया य । से कितं चउप्पथलयरपचिदियतिरिस्कजोणिया २ ? चउच्चिहा
 पयत्ता, तजहा एगखुरा दुखुरा गलीपया सणप्फया । से कित एगखुरा २ ? अण्णेगविहा पयत्ता, त०
 अस्सा अस्सतरा चांरुगा गद्धा गीरस्करा कदलगा सिरिकदलगा आवत्ता । जेयावन्ते तहप्यगारा । सेत

एवमकरा नरस्समकराद्य । तयते मकरा । अथ कतिविधा जिजुमारा ? । जिजुमारा एकाकारा मच्चसाक्षयते जिजुमाराः । ये वाप्यन्ते त
 याप्रकारास्ते समासतो द्विविधा मच्चसा । समूर्च्छिमाद्य गर्भव्युत्क्रान्तिकाद्य । तत्र ययते समूर्च्छिमास्ते समासत सर्वं नपुसका । तत्र ययते गर्भ
 व्युत्क्रान्तिकास्ते त्रिविधा मच्चसा । स्त्रिय पुरुषा नपुसक । एतादृशानामेवमादीना जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिका ना पयोसापर्यासानामर्थत्र
 योदशजातिकुलकोटियोनिप्रमुखतसद्दशाणि भवन्तीति आस्यातम् ॥ तयते चलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिका । अथ कतिविधा स्थलचरपञ्चेन्द्रि
 यतिर्यक्योनिका ? । स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिका द्विविधा मच्चसा । तद्यथा-वतुप्पदस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिका । परिसर्पदस्थलचर
 पञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिका । अथ कतिविधाद्यतुप्पदस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिकाः ? । वतुप्पदस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिकाश्चतुर्विधा । मच्च
 सा । तद्यथा-एकसुरा द्विसुरा गगनोपदा सनखपदाद्य । अथ कतिविधा एकसुरा ? । एकसुरा अनेकविधा मच्चसा । तद्यथा-अद्या अद्यतरा

एगसुरा । से कितं दुखुरा २ ? झुणेगविहा पखत्ता, तजहा-उहा गोणा गवया रोक्का समया सहिसां सवरा वराहा झ्या एलगा रू सरन्न चमर कुरग गोकसुमाई सेत दुखुरा । से कित गनीपया २ ? झुणे गविहा पखत्ता, तजहा हत्यो हत्योयणा मकुणहत्यो खग्गा गद्दा । जेयावखे तहप्यगारा । सेत गनीपया । से कित सणफ्या २ ? झुणेगविहा पखत्ता, तजहा सीहा वग्घा टीविया झच्छा तरच्छा परस्परा सिया ला सुणगा कोलवणगा (ग्रथा ५००) कोकतिया ससगा चित्तगा विहलगा । जेयावखे तहप्यगारा । सेत सणफ्या । तसमासने दुविहा पखत्ता, तजहा समुच्छिमाय गप्पवक्कतियाय । तत्यण जे ते समुच्छि मा ते सवे नपुसगा, तत्यण जे ते गप्पवक्कतिया ते तिविहा पणत्ता, तजहा इत्थी पुरिसा नपुसगा । एएसिण एवमादियाण थलयरपचिदियतिरिस्कजोणियाण पज्जातापज्जत्ताण दसजाइकुलकीरिजोणिप्पमुहु

पीटका गदना गौरयरा कन्दलका श्रीकन्दलका आवतोय । ये वाप्यन्ते तथाप्रकारा । तएते एकसुरा । अय कतिविधा द्विसुरा ? । द्विसु रा अनेकविधा प्रज्जसा । तद्यथा-उग्र गोणा गवया रोहा शयका महिया शयरा वराहा अजा एलका सरव शरजाश्चमरा कुरङ्गा गोकर्ण दिक्का सपते उक्ता द्विसुरा । अय कतिविधा गवहीपदा ? । गवहीपदा अप्यनेकविधा प्रज्जसा । तद्यथा-इत्थी गवहक मुकनइत्थी खत्ता गवहा येवाप्यन्ते तथाप्रकारा उक्ता गवहीपदा । अय कतिविधा सनसपदा ? । सनसपदा अनेकविधा प्रज्जसा तद्यथा-सिहा व्याघ्रा ह्रीपिनो ऋ ता नरजव परशरा इयाला विराला ध्यान कोला कोकतय सज्जका चित्रका विजाला येवाप्यन्ते तथाप्रकारास्सवे सनखा । ते समासतो द्विविधा प्रज्जसा । तद्यथा-समूर्द्धिमाय गज्ज्युत्कान्तिकाय । तत्र ये समूर्द्धिमास्ते सर्वे नपुसका । तत्र यएते गज्ज्युत्कान्तिकास्ते त्रिविधा प्र ज्जसा । तद्यथा-एतप पुत्तपा नपुसका । एतेपामेवमादीना स्थलधरपब्बेन्द्रियतियेक्योन्तिकाना पर्यासापर्यासाना दशजातिकुलकीरियोनिप्रमु

सयसहस्रसा-हवतीति मरकाय । सेत चउप्यथलयरपचिदियतिरिक्कजोणिया । से कितं परिसप्यथलयर
पचिदियतिरिक्कजोणिया २ ? दुविहा पसत्ता, तजहा उरपरिसप्यथलयरपचिदियतिरिक्कजोणिया नुय
परिसप्यथलयरपचिदियतिरिक्कजोणिया य । से कित उरपरिसप्यथलयरपचिदियतिरिक्कजोणिया २ ? च
उविहा पसत्ता, तजहा अही अयगरा आसालिया महोरगा । से कित अही २ दुविहा पसत्ता, तजहा
दहीकरा य मंडलिणो य । से कित दहीकरा २ ? अणंगविहा पसत्ता, तजहा आसीविसा दिठोविसा
उगविसा जोगविसा तथाविसा लालाविना उरसातविसा गिरमासविसा कण्हसप्या सेठसप्या कउदरा दण्ण
पुप्फा कोलाहा मेलिमिदा सेसिदा जेयाथणं तहप्यगारा । सेत दहीकरा । से कित मंडलिणो २ ? अणंग
विहा पसत्ता, तजहा दिव्वागा गणसा कसाहीया वउला चित्ताणिणो मण्णलिणो अही अहिसिलागा वाय

रागतसहस्राणि भयकीति आख्यातमुक्ताद्युत्पद्यस्थलवरपञ्चेन्द्रियतियक्योनिक्का । अथ कतिविधा परिसंपत्त्यलवरपञ्चेन्द्रियतियक्योनि-
का २ । परिसंपत्त्यलवरपञ्चेन्द्रियतियक्योनिक्का द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-उर परिसंपत्त्यलवरपञ्चेन्द्रियतियक्योनिक्का नूनपरिसंपत्त्यल
वरपञ्चेन्द्रियतियक्योनिक्काद्य । अथ कतिविधाउर परिसंपत्त्यलवरपञ्चेन्द्रियतियक्योनिक्का २ । उर परिसंपत्त्यलवरपञ्चेन्द्रियतियक्योनि
काद्यतुविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-अहय अपगरा आसालिगा महोरगा । अथ कतिविधा अहय २ । अहयो द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-दहीकरा
य मुकुलिनश्च । अथ कतिविधा दहीकरा २ । दहीकरा अनेहावथा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-आजोविपा, दग्गाविपा उग्रविपा जोगविपा त्यथादिया
लालाविपा उच्छ्वासविपा निश्वासविपा कण्ठसपा काटुन्धरा दन्तपुष्पा कोलाहा मेनिमदा सनिन्दा ये पाप्यन्ते तथाप्रकारा
स्तरणं दहीकरा । अथ कतिविधा मुकुलिन २ । मुकुलिनो ऽनेकविधा प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-दिन्या गानसा कसाहीका बहुला भिन्नलिन मयन

क्रागा । जेयावणे तहप्यगारा । सेत्त बडलिया । सेत्त झही । से कित झयगरा ? एगगारा पणत्ता ,
 सेत्त झयगरा । से कित आसालिया ? कहिण जते । आसालिया समुच्छति ? गोयमा । अतोमणस्ससे
 ते अहाडजेसु दीयेसु णिव्वाएण पणरससु कम्मजूमोसु वाचातं पळ्ळ पचसु महाविदेहेसु चक्कवहीलथावा
 रसु वासुटेवखधावारसु बलदेवसधावारसु मळलियसधावारसु महामळलियखधावारसु गामनिवेसेसु नगर
 निवेसेसु निगमनिवेसेसु खेळनिवेसेसु मळनिवेसेसु दोगमहनिवेसेसु पट्टनिवेसेसु आग
 रनिवेसेसु आसमनिवेसेसु संवाहनवेसेसु रायहाणिनिवेसेसु एएसिण चेत्र विणासेसु । एत्यण आसालिया
 समुच्छति । जहन्नेण अगुलस्स अस्सिखज्जजागमितीए उगाहणाए, उक्कोसेण वारसजीयणाइ । तहाणुळ
 व च ण विक्कजवाहणेण नूमिदालिज्ञाण समुठेति । असली मिच्छदिठी अत्ताणी अतोमुज्जतदाउया

लिन अहय अदिशुगाला वायुहुहागा । येचाप्यन्ये तपाप्रकार । तपते मुकुलिता । उक्ता यदय । अथ कतिविधा अणगरा ? । अणगरा
 एकाकारा प्रज्ञा तपते अणगरा । अथ कत्यासालिगा ? । कथ जदत्त । आसालिगा समुल्लि । गीतम । अत्तमंध्ये मनुष्यचेमस्यादुयुतीय
 पु डीपपु निव्वापात पळ्ळदशसु कम्मजूमिपु पुनश्च पळ्ळ मरादिदेषेसु चळ्ळतिरक्त्याधारसु वामदेयरक्त्याधारसु घलदेयरक्त्याधारसु माणकलि
 करक्त्याधारसु मझामाणकलिरक्त्याधारसु ग्रामनिवेशपु नगरनिवेशपु निगमनिवेशपु सेटनिवेशपु कयटनिवेशपु मउन्वनिवेशपु दोगमुरानि
 वेडोपु पत्तननिवेशपु आकरनिवेशपु गाश्रमनिवेशपु सयापनिवेशपु राजधानीनिवेशपु पतेपामेध विनाडापु । गतेषु आजाअनि । समुदनि । ज
 पयतानुलस्या सस्येपजागमात्रया उवाहनया । उत्कर्षतो दादज्ञापोनानि तथानुरूप च उक्कमयाहुन्या (विस्तारसूनत्वात्त्या) नूनि दलपित्वा
 समुतिष्ठते । असिद्धिमिथ्यादृष्टि अद्यानी अत्तमुद्दत्तायुरेव कारा करोति । तथे आसालिया । अथ कतिविधा महेरगा ? । महेरगा जनेन

चेव कालं करेइ । सेतं व्यासालिया । से कितं महीरगा २ ? अणुणेगविहा पसुत्ता ; तंजहा अत्येगइया
अणुल पि अणुलपुहत्तिया वि वियच्छिवि वियच्छिपुहत्त पि रयणी पि रयणीपुहत्तिया पि कुच्छपि कुच्छ
पुहत्तिया वि धणं पि धणपुहत्तिया वि गाउयं पि गाउयपुहत्तिया वि जोयण पि जोयणपुहत्तिया वि
जोयणसय पि जोयणसयपुहत्तिया वि जोयणसहस्स पि तंण थले जाता जले विचरति थले विचरति ते
णल्यि इहं बाहिरएसु दीवसमुहेसु हवति जेयावन्ने तहप्पगारा सेतं महीरगा । ते समासउ दुविहा प०,
त०-सम्मच्छिमाय गप्पवक्कतिया य । तल्यण जेतं समुच्छिमा ते सव्वे णपुसगा, तल्यण जेतं गप्पवक्कतिया
तेण तिचिहा प०, त०-इल्यी पुरिसा नपुसगा, एसिण एवमाइयाणं वज्झत्ता २ णं उरपरिसप्पाण दसजा
इकुलकोलीजोणिप्पमुहसयसहस्सा हवती ति मस्कायं । सेत उरपरिसप्पा । से कितं न्ययपरिसप्पा २ अणुणेग

विधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-सन्त्येके केचन अकुलमपि अकुलपृथक्कमपि वितस्तिमपि वितस्तिपृथक्क मपि अरविमपि अरविपृथक्कमपि कुक्षिमपि
कुक्षिपृथक्क धनुरपि धनु पृथक्क गव्यतिमपि गव्यतिपृथक्क योजनमपि योजनपृथक्क योजनज्ञतपृथक्क योजनसहस्र मपि तेन
स्थलेजाता जलेविचरन्ति तनेह बाह्येषु द्वीपसमुद्रेषु प्रवन्ति ये बाध्यन्ते तथाप्रकारा । तद्यत्ते महीरगा । ते समासतो द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्य
था-सम्मच्छिमाद्य गन्धव्युत्क्रान्तिकाश्च । तत्र ये सम्मूर्खिमास्ते सर्वे नपुसका । तत्र ये गन्धव्युत्क्रान्तिकास्ते त्रिविधा तद्यथा स्त्री पुरुषा नपुंसकलि
ङ्गा । एतेपानेवमादीना पर्थोपापर्थोमानामुर परिसर्पणा दञ्जजातिङ्गुलकोटियोनिप्रमुखज्ञतसहस्राणि प्रवन्तीति मयाख्यात । उक्ता उर परिस
प्पा । अथ कतिविधा नृजपरिसर्पो १ मुजपरिसर्पो अनेकविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-नकुला सेहा-सरटा सल्ला सरटा सारा सरा परोइला
विद्यमरा मूपा मङ्गसा पइला इला वीरविरायिला जाहा चतुष्पादिका ये बाध्यन्ते तथाप्रकारा । ते समासतो द्विविधा प्रज्ञप्ता । स

विहा पयत्ता, तजहा-णडला सेहा सरफा सहा सरठा सारा खारा घरोडला विस्संनरा मूसा मंगसा पड
लाडया ल्यारिविरालिया जाहा चडप्याडया जे यावन्ने तहप्यगारा । ते समासले दुविहा प०, त०-समृच्छि
मा य गम्भवक्कतियाय, तत्यण जेते समृच्छिमा ते सव्वे नपुसगा, तत्यण जेते गम्भवक्कतिय तेण तिविहा
पयत्ता, तजहा-डल्यो पुरिसा नपुसगा, एएसिण एवमाडयाण पज्जत्ता २ ण नुयपरिसप्पाण नवजाडुकुल
कोफिजोणिप्पमुहसयसहस्साड हवतीति मरकाय । सेत्त नुयपरिसप्पयलयरपचेटियतिरिक्कजोणिया । सेत्त
परिसप्पयलयरपचिदियतिरिक्कजोणिया । से कित खहरपचिटियतिरिक्कजोणिया २ चडविहा पयत्ता,
तजहा-चम्मपरकी लोमपरकी समुगपरकी वियतपरकी । से कित चम्मपरकी २ अण्णेगविहा प०, त०
वग्गुली जलोया अफिहा नारुपरकी जीवजीवा समुहवायसा कसुत्तिवा पस्किवेराली जेयावखे तहप्यग
रा ॥ सेत्त चम्मपरकी ॥ से कित लोमपरकी २ अण्णेगविहा प०, त० ढका कका कुरला वायसा चक्का

मूर्खिमाय गर्तकुट्टकान्तिमाय । वत्त ये समूर्खिमास्ते सर्वे नपुसका । तत्र ये गर्तकुट्टकान्तिकास्ते त्रिविधाः प्रवृत्ता । तद्यथा-खिय पुरुषा नपुस
का । एतेपामेवमादीना पर्याप्तपर्याप्ताना नुजपरिसर्पाणा नवजानिकुलकाटियोनिप्रमुखतसहस्राणि भवन्तीति आख्यात । वक्ता नुजपरिसर्वे
हस्यलक्षरपब्बेन्द्रियतियक् योनिका । उक्तो परिसर्पस्त्यलक्षरपब्बेन्द्रियतियक् योनिका । अय कतिविधा सधरपब्बेन्द्रियतियक् योनिका. ? । रा
धरपब्बेन्द्रियतियक् योनिका चतुर्विधा प्रवृत्ता । तद्यथा-चर्मपत्ती लोमपत्ती समुद्रकपत्ती विततपत्ती । अय कतिविधाद्यमपन्निण , चमपन्निणो
नेकविधा प्रवृत्ता । तद्यथा-वकुला जलीका अगिकला नारसहपत्ती जीवजीवा समुद्रवायसा. कसुत्तिवा पन्निविराली ये वाप्यन्ये तथाप्रकारा ।
तएते चर्मपन्निण ॥ अय कतिविधा लोमपन्निण ? । लोमपन्निणोनेकविधा प्रवृत्ता तद्यथा-ढक्का कक्का कुरला वायसा चक्काङ्गा वसा कुल

गा हंसां कलहंसा पायहंसा रायहंसा झुफ्ना सेह्रीवगा वलागा पारिष्यवाकुंचा सारसा मेसरा मसूरा मज्ज
रा सतवच्छा गहरा पोफ्फरीया कागा कामियुगा वजुलगा तित्तिरा वहमा लावगा कवीया कविजला पारे
वया चिफ्फगा चासा कुकुफ्फा सुगा वरहिणा मदनसला कोकिला सेरहा वरेल्लगमादी । सेत्त लोमपस्की । से
कित्त समुगपस्की २ एगागारा प०, तेण नत्थि इहं वाहिरएसु दीवसमुद्देसु भवति । सेत्तं समुगपस्की । से
कित्त विततपस्की २ एगागारा प०, तेण नत्थि इह वाहिरएसु दीवसमुद्देसु हवति । सेत्त विततपस्की । तेस
मासउ दुविहा प०, त० समुच्छिमा य गप्पवक्कतिया य । तत्थणं जेतं समुच्छिमा तेसवे नपुसगा तत्थणं
जेते गप्पवक्कतिया तेण तिविहा प०, त० इत्थी पुरिसा नपुसगा । एसिण एवमाडयाणं खहयरपचिदि
यतिरिक्कजोणियाण पज्जत्तापज्जत्ताणं वारसज्जाईकुलकोणिजोणिप्पमुहसयसहस्सा हवतीतिमस्काय, सत्तठ

हसा राजहसाः अहा सेहीयगा वकुला पारित्थवा कुल्हा सारसा मेसरा मसूरा शतवरसा गहरा पीयरीका कागा कामि
गा वज्जुलका तित्तिरा वर्तका लावकाः कपोता कपिज्जला परिवका वटका चाशा कुकुटा शुका यहिंण मदनशारा कोकिलाः सेरहा
वरल्लगा एवमादय सयते लोमपक्षिण । अप्प कतिविधा समुद्रपक्षिण १ । समुद्रपक्षिण एकाकारा मज्जसा । तेनु वाद्येषु द्वीपसमुद्देषु भवन्ति । त
एते समुद्रपक्षिण । अप्प कतिविधा वियतपक्षिण १ । वियतपक्षिण एकाकारा मज्जसा । तेनु वाद्येषु द्वीपसमुद्देषु भवन्ति । तएते विततपक्षि
ण । ते समासतो द्विविधा मज्जसा समुद्धिमाद्य गर्भव्युत्क्रान्तिकाश्च । तत्र यगते समुद्धिमास्ते सर्वं नपुसका । तत्र यगते गर्भव्युत्क्रान्तिकास्ते
त्रिविधा मज्जसा तथाथा-स्त्रिय पुरुषा नपुसकाश्च । एतेपामेवमादीना खचरपब्बेन्द्रियतिर्यक्योनिकानापार्याप्तापार्याप्ताना द्वादशजातिकुल को-
टियोनप्रमुखत्वात्सहस्राणि भवन्तीति आख्यातम् ॥ सप्तजाति कुलकोटयो भवन्ति नवार्चत्रयोदशानि चैव ॥ दशदश च भवन्ति नवकास्तथा द्वा

जाडुकुलक्रोडिज्जतिनवञ्चठ्ठेतरसाहच । दसटसयहोतिणवगा तहवारसचेववोधव्वा ॥१॥ सेत्त खहयरपचिदिद्य
तिरिस्कजोणिया ॥ सेत्त पचिदिद्यतिरिस्कजोणिया ॥ सेत्त तिरिस्कजोणिया ॥ से कित मणुस्सा २ दुविहा प०,
त० समूच्छिममणुस्सा य गप्पवक्कतियमणुस्सा य । से कित समूच्छिममणुस्सा, कहिण ज्ञते । समूच्छिम
मणुस्सा समुच्छति १ गोयमा । अतो मणुस्सखेत्ते पणयालीसाए जोयणसयसहसेसु अह डजोसु दीवसमहेसु
पखरससु कम्मज्जमीसु तीसाए अकम्मज्जमीसु तप्पन्नाए अतरदीवएसु गप्पवक्कतियमणुस्साण चेव उच्चारसु
वा पासवणेसु वा खलेसु वा सिधाणएसु वा वत्तेसुवा पिहेसु वा पूएसुवा सुक्कोसुवा सुक्कापोगलपरिसाकिसु
वा विगयकलेवरेसु वा इत्थीपरिससजोएसु वा नगरनिठमणसु वा सव्वेसु चेव असुडएसु ठाणेसु एत्यण समु
च्छिममणुस्सा समुच्छति, अगुलस्स असखिज्जागमितीए उंगाहणाए असन्ती मिच्छदिठी अन्नाणी
सव्वाहि पज्जहीहि अपज्जाहगा अतोमुज्जाहया चेव काल करति । से कित गप्पवक्कतियमणुस्सा २

दश चेव बोद्धव्या. ॥ १ ॥ तएते खवरपचेन्द्रियतिर्यक्योनिका । तएते पचेन्द्रियतिर्यक्योनिका ॥ तएते तिर्यक्योनिका ॥ अय कतिविधा मनु
या ? । मनुया अप्यनेकविधा प्रज्ञया । तथाथा-समूच्छिममनुया गजव्युत्क्रान्तिकमनुया । अय कतिविधा समूच्छिममनुया । कस्मित्तु जद
त्त । समूच्छिममनुया समूच्छन्ति । गौतमान्तमनुयहेत्ते पब्बवत्वारिशतमे योजनगतसहस्रेण सार्धेदीपेण द्वीपसमुद्रेण पब्बदशासु कर्मज्जमिणु त
थीगकर्मज्जमिणु पट्पब्बादशान्तरदीपेणु गज्व्युत्क्रान्तिकमनुयाणा चेव उच्चरेणु वा समीपेण वा श्लेषसु वा श्लिषाण केणु (नासामलेणु) वा धान्त
पु पित्तेण वा पूयेण वा शुकेण वा शुक्रपुद्गलपरिसाहेणु वा विगतकलवरेणु वा खीपुरुषसयोगेणु वा नगरनिठमनेणु वा सर्वेणु चेवाशुचिणु
स्थानेणु एतणु समूच्छिममनुया समूच्छन्ति । अहुलस्य असख्येयजागभावया अवगाहनया असन्मिथ्यादुष्टिरज्जानी सर्वोहि पर्याप्तमपर्याप्तका अन्त

गा हंसां कलहसा पायहंसा रायहंसा झुझा सेहीवगा वलागा पारिष्यवाकुंचा सारसा मेसरा मसूरा मऊ
रा सतवच्छा गहरा पोंफरीया कागा कामियुगा वंजुलगा तित्तिरा वहमा लावगा कवोया कविजला पारे
वया चिफगा चासा कुकुझा सुगा वरहिणा मदनसला कोकिला सेरहा वरेल्लगमादी । सेत्त लोमपस्की । से
कित्त समुगपस्की २ एगागारा ५०, तेण नत्थि डह वाहिरएसु दीवसमुद्देसु नवति । सेत्त समुगपस्की । से
कित्त विततपस्की २ एगागारा ५०, तेण नत्थि डह वाहिरएसु दीवसमुद्देसु हवति । सेत्त विततपस्की । तेस
मासउ दुविहा ५०, त० समुच्छिमा य गप्पवक्कतिया य । तत्थण जेतै समुच्छिमा तेसव्वे नपुसगा तत्थण
जेतै गप्पवक्कतिया तेण तिविहा ५०, त० इत्थो पुरिसा नपुसगा । एसिण एवमाडयाणं खहयरपच्चिंदि
यतिरिक्खजोणियाण पज्जत्तापज्जत्ताण वारसज्जिं कुलकोणिजोणिप्पमुहसयसहस्सा हवतीतिमस्काय, सप्तठ

हसा रात्रहसा अहा सेहीवगा यकुला पारिष्यवा कुल्वा सारसा मेसरा मसूरा मऊरा पौयहरीका. कागा कामियु
ना वज्जुलका तित्तिरा वर्तका लावकाः कपोता कपिज्जला परिवका. चटका चाशा कुकुटा शुका. वरिंण मदनशला कोकिलाः सेरहा
वरल्लगा एवमादय सएते लोमपक्षिण । अथ कतिविधा समुद्रपक्षिण ? । समुद्रपक्षिण एकाकारा. प्रज्ञप्ता । तेनु वाद्येषु द्वीपसमुद्देशु भवन्ति । त
एते समुद्रपक्षिण । अथ कतिविधा वियतपक्षिण ? । वियतपक्षिण एकाकारा. प्रज्ञप्ता । तेनु वाद्येषु द्वीपसमुद्देशु नवन्ति । तएते विततपक्षि
ण । ते समासतो द्विविधा प्रज्ञप्ता समुच्छिमाश्च गर्जव्युत्क्रान्तिकाश्च । तत्र यएते समुच्छिमास्ते सर्वं नपुसका । तत्र यएते गर्जव्युत्क्रान्तिकास्ते
त्रिविधा प्रज्ञप्ता तट्या-स्त्रिय पुरुषा नपुसकाश्च । एतेपामेवमादीना खरपब्बेन्द्रियतिर्यक्योनिकानापार्याप्तापर्याप्ताना द्वादशातिकुल-को-
दियोत्तिप्रमुखसप्तसहस्राणि नवन्तीति आख्यातम् ॥ सप्तजाति कुलकोटयो नवन्ति नवार्धत्रयोदशानि पंच ॥ दशदश च नवन्ति नवकास्तथा द्वा

जाडकुलकोक्रिज्जतिनववृद्धतेरसाहच । दसदसयहोतिणवगा तहवारसचेववोधव्हा ॥१॥ सेत खहयरपचिदिय
तिरिस्कजोणिया ॥ सेत पचिदियतिरिस्कजोणिया ॥ सेत तिरिस्कजोणिया ॥ से कित मणुस्सा २ दुविहा प०,
त० समूच्छिममणुस्सा य गप्पवक्कतियमणुस्सा य । से कित समूच्छिममणुस्सा, कहिण नते ! समूच्छिम
मणुस्सा समुच्छति ? गोयमा । अतो मणुस्सखेत्ते पणयालीसाए जोयणसयसहसेसु अट्ट डजोसु दीवसमुद्देसु
पयारससु कम्मजमीसु तीसाए अकम्मजमीसु तप्पन्नाए अतरदीवएसु गप्पवक्कतियमणुस्साण चेव उच्चारसु
वा पासवणेसु वा खलेसु वा सिधाणएसु वा वत्तेसु वा पूएसु वा सुक्कोसुवा सुक्कोपोगलपरिसाहेसु
वा विगयकलेवरेसु वा डल्योपरिससजोएसु वा नगरनिदमणंसु वा सहेसु चेव असुडएसु ठाणंसु एत्यण समु
च्छिममणुस्सा समुच्छति, अगुलस्स असखिज्जनागमिहीए उंगाहणाए असन्ती मिच्छदिठी अन्नाणी
सव्हाहि पज्जहीहि अपज्जाहगा अतोमुज्जाहया चेव काल करति । से कित गप्पवक्कतियमणुस्सा २

दश चेव बोद्धव्या ॥ १ ॥ तएते खवरपवेन्द्रियतियं क्योनिका । तएते पवेन्द्रियतियं क्योनिका ॥ तएते तियं क्योनिका ॥ अय कतिविधा मनु
य्या ? । मनुय्या अप्यनंकाविधा प्रज्ञा । तद्यथा-समूच्छिममनुय्या गजव्युरात्तिकमनुय्या । अय कतिविधा समूच्छिममनुय्या । कस्मिन्नु जद
त्त । समूच्छिममनुय्या समूलंति । गीतमात्तमनुय्यहेत्ते पब्बचत्वारिंशत्तमे योजनयत्तसहस्रेणु सार्धेहीपेणु द्वीपसमुद्देणु पब्बदशासु कर्मजूमिणु त
थीवाकर्मजूमिणु पट्पत्त्वादशत्तरहीपेणु गज्व्युरात्तिकमनुय्याणा चेव उत्तरेणु वा समीपेणु वा श्लेषसु वा शिधाण केणु (नासामलेणु) वा वान्त
पु पितेणु वा पूयेणु वा श्लेषेणु वा श्लेषपुलपरिसाहेणु वा विगतकलेवरेणु वा खीपुरुपसयोगेणु वा नगरनिदमनेणु वा सर्वेणु चेवाशुचिणु
स्यानेणु एतणु समूच्छिममनुय्या समूलंति । अट्टलस्य असख्येयज्जागमावया अवगाहनया असन्मिथ्यादृष्टिरज्ञानी सर्वोहि पर्याप्तमपर्याप्तका अन्त

गा हंसां कलहंसा पायहंसा रायहंसा अन्ना सेहीवगा बलागा पारिष्यवाकुंचा सारसा मेसरा मसूरा मऊ
रा सतवच्छा गहरा पोळरीया कागा कामियुगा वजुलगा तित्तिरा वहमालावगा कवोया कविजला पारे
वया चिफगा चासा कुकुडा सुगा वरहिणा मदनसला कोकिला सेरहा वरेल्लगमादी । सेत्त लोमपस्की । से
कित्त समुगपस्की २ एगागारा प०, तेणं नल्यि डह बाहिरएसु दीवसमुहेसु जवति । सेत्त समुगपस्की । से
कित्त विततपस्की २ एगागारा प०, तेण नल्यि डह बाहिरएसु दीवसमुहेसु हवति । सेत्त विततपस्की । तेस
मासउं दुविहा प०, त० समुच्छिमा य गप्पवक्कतिया य । तल्यणं जेतै समुच्छिमा तेसंहे नपुसगा तल्यणं
जैते गप्पवक्कतिया तेण तिविहा प०, त० इत्यो पुरिसा नपुसगा । एएसिण एवमाइयाणं खहरपचिदि
यतिरिक्कजोणियाण पज्जत्तापज्जत्ताण वारसजाईकुलकोणिजोणिष्यमुहसयसहरसा हवतीतिमस्काय, सत्तठ

हसा राजहसा अडा सेहीयगा यकुला पारिषवा कुब्जा सारसा मेसरा मसूरा शतवसा गहरा पीण्ठरीका कागा कामियु
गा वज्जुलका तित्तिरा धर्तका लावकाः कपोता कपिज्जला परिवका चटका चासा कुकुटा शुकाः बहिंण मदनशला कोकिला सयहा
वरल्लगा एवमादय सयै लोमपक्षिण । अय कतिविधा समुद्रपक्षिण ? । समुद्रपक्षिण एकाकारा प्रज्जसा । तेनु बाह्येपु द्वीपसमुद्रेषु भवन्ति । त
यै समुद्रपक्षिण । अय कतिविधा वियतपक्षिण ? । वियतपक्षिण एकाकारा प्रज्जसा । तेनु बाह्येपु द्वीपसमुद्रेषु भवन्ति । तयै विततपक्षि
ण । ते समासतो द्विविधा प्रज्जसा समुच्छिमाथ गर्जव्युत्कान्तिकाश्च । तत्र ययै समुच्छिमास्तै सर्व नपुसका । तत्र ययै गर्जव्युत्कान्तिकास्तै
त्रिविधा प्रज्जसा तद्यथा-स्त्रिय पुरुषा नपुसकाश्च । एतेषामेवमादीना खवरपब्बेन्द्रियतियक्योन्निकानापार्याप्ताना द्वादशजातिकुलको-
टियोनिममुशतसहस्राणि जयन्तीति आख्यातम् ॥ ससज्जाति कुलकोटयो जवन्ति नवार्यत्रयोदशानि षेव ॥ दशदश च जवन्ति नवकास्तथा द्वा

जाडकुलक्रोडिज्जतिनवश्चतरेसाहच । दसदसयहोतिणवगा तहवारसचेवबोधव्हा ॥१॥ सेत खहयरपचिदिय
तिरिस्कजोणिया ॥ सेत पचिदियतिरिस्कजोणिया ॥ सेत तिरिस्कजोणिया ॥ से कित मणुस्सा २ दुविहा प०,
त० समूच्छिममणुस्सा य गप्पवक्कतियमणुस्सा य । से कित समूच्छिममणुस्सा, कहिण भते ! समूच्छिम
मणुस्सा समुच्छति ? गोयमा । अतो मणुस्सखेत्ते पणयालीसाए जोयणसयसहस्सेसु अट्ट डजोसु दीवसमहेसु
पखरससु कम्मज्जमीसु तीसाए अकम्मज्जमीसु तप्पन्नाए अतरदीवएसु गप्पवक्कतियमणुस्साण चेव उच्चारसु
वा पासवणेसु वा खलेसु वा सिघाणएसु वा वत्तेसु वा पित्तेसु वा पूएसु वा सुक्केसु वा सुक्कपोगलपरिसाहेसु
वा विगयकलेवरेसु वा इत्थीपरिससजोएसु वा नगरनिठमणंसु वा सव्वेसु चेव असुडएसु ठाणंसु एत्यण सम
च्छिममणुस्सा समुच्छति, अंगुलस्स असखिज्जागमितीए उगाहणाए असन्ती मिच्छदिठी अन्नाणी
सव्वाहि पज्जहीहि अपज्जाहगा अतोमुज्जाउया चेव काल करति । से कित गप्पवक्कतियमणुस्सा २

दश चेव बोद्धव्या ॥ १ ॥ तएते खवरपवेन्द्रियतियंक्कोनिका । तएते पचेन्द्रियतियंक्कोनिका ॥ तएते तियंक्कोनिका ॥ अय कतिविधा मनु
या ? । मनुया अप्यनेकविधा प्रज्जासा । तद्यथा-समूच्छिममनुया । गज्ज्युरकान्तिकमनुया । अय कतिविधा समूच्छिममनुया । कस्मिन्नु जद
न्त । समूच्छिममनुया समूच्छन्ति । गोतमात्तमनुयहेत्ते पब्बचत्वारिंशत्तमे योजनशतसहस्रेषु सार्धहीषेपु द्वीपसमुद्रेषु पब्बदशसु कर्मज्जमिषु त
थीवाकर्मज्जमिषु पट्पब्बादशान्तरहीषेपु गज्ज्युरकान्तिकमनुयाणा चेव सव्वरेषु वा समीपेषु वा शेषसु वा शिघाण केपु (नासामलेषु) वा धान्त
पु पित्तेषु वा पूयेषु वा शुक्लेषु वा शुक्लपुलपरिसाहेषु वा विगतकलेवरेषु वा खीपुरुपसयोगेषु वा नगरनिठमनेषु वा सर्वेषु चेवाशुचिषु
स्थानेषु एतेषु समूच्छिममनुया समूच्छन्ति । अट्टस्य असख्येयजागभावया अवगाहनया असन्मिथ्यादृष्टिरज्ञानी सर्वोद्दि पर्याप्तमपर्याप्तका भन्त

तिविहा पसन्ता, तंजहा-कम्मन्नूमिगा अंतरदीवया ? अंतरदीवया
 अठावीसतिविहा पसन्ता, तजहा एगोरुया आहासिया वेसाणिया णगोली १ हयकन्ता गयकन्ता गोक
 न्ता सक्कलिकन्ता २ आयंसमुहा मेढमुहा अयमुहा गोमुहा ३ असमुहा हत्थिमुहा सीहमुहा वग्घमुहा ४
 अणसकन्ता सीहकन्ता अकन्ता कखपाउरणा ५ उक्कामुहा मेढमुहा विज्जामुहा विज्जादता ६ घणदंता लठ
 दता गूढदता सुद्धदता ७ । सेत्त अंतरदीवगा । से कित अकम्मन्नूमिगा ? २ तीसतिविहा पसन्ता, तं०
 पचहि हेमवण्हि पचहि हेरखवण्हि पचहि हरिवासेहि पचहि देवकुसण्हि पचहि
 जत्तरकुसण्हि सेत्त अकम्मन्नूमिगा । से कित कम्मन्नूमगा ? २ पणसरसविहा पसन्ता, तंजहा पचहि जरहेहि
 पचहि एरवण्हि पचहि महाविदेहेहि । ते समासउ दुविहा पसन्ता, तजहा आयरिया य मिलस्कु य । से

मुद्धतांथेव काल कुवंति । पण कतिविधा गर्जण्युत्क्रान्तिकमनुयाः ? १ गर्जण्युत्क्रान्तिकमनुया त्रिविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-कर्मन्नूमिगा अक
 मन्नूमिगा अन्तरदीवयाश्च । अथ कतिविधा अन्तरदीवका ? १ अन्तरदीवका अष्टाविंशतिविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-यमोरुका आमासिका वेषाणि
 का तुन्दालिका हयकर्णा गजकर्णा गोकर्णा मकुलकर्णा अयमुखा गोमुखा अश्वमुखा इस्तिमुखा सिद्धमुखा अश्वकर्णा सिद्धकर्णा अककर्णा
 कर्णप्रावरणा चत्कानुखा मेघमुखा विद्युन्मुखा विद्युद्दन्ता घनदन्ता लोष्टदन्ता गूढदन्ता । तस्यते अन्तरदीवगाः । अथ कतिविधा-अक
 मन्नूमिगा ? १ अकर्मन्नूमिगास्त्रिंशतिविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-पण्डित्त्वमवति पण्डित्त्वमये पण्डित्त्वमये पण्डित्त्वमये पण्डित्त्वमये पण्डित्त्वमये पण्डित्त्वमये
 अतप्यते अकर्मन्नूमिगा । अथ कतिविधा कर्मन्नूमिगा ? कर्मन्नूमिगा पण्डित्त्वमये पण्डित्त्वमये पण्डित्त्वमये पण्डित्त्वमये पण्डित्त्वमये पण्डित्त्वमये
 ते समासतो द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-आर्यमनुया सेज्जमनुया । अथ कतिविधा सेज्जमनुया अनेकविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-अ

कित मिलस्कू ? २ अणुगविहा पयत्ता, तजहा सगा जवण चिलाये सवर वहरकाय मुरुओहु अरुग णि
 राग पक्कल णीय कुलस्क गोएहा सीहला पारस गोघअथ दमिल चिल्लल पुलिद हारीस दोववोक्काण गध
 हारग वहलिय अज्जल रोम पास वउसा मलयाय वधुयाय सूयलि कुंकुणगमेअ परहव मालव मगर
 आआसिय कण वीरण रहासीस खसखासिय नेदूर मढ ओविलग लउस खउस क्कोक्कावा अरवागा ह्ण
 रोमग नमस विलाय वासीन एवमादी ॥ सेत्तमिलस्कू से कित आयरिया ? आयरिया दुविहा पयत्ता,
 तजहा इहिपत्तारिया य अणुहिपत्तारिया य । से कित इहिपत्तारिया ? २ उविहा पयत्ता, तजहा—
 अरहता चक्कवही वलदेवा वासुदेवा चारणा विजाहरा ॥ सेत्त हहिपत्तारिया ॥ से कित अणुहिपत्तारि
 या ? २ नवविहा पयत्ता, तजहा खेत्तारिया जानिआरिया कुलारिया कम्मारिया सिप्पारिया आसारिया
 णारिया दसणारिया चरित्तारिया । से कित खेत्तारिया ? २ अणुवहीसतिविहा पयत्ता, तजहा राय

का यवना विलाया शवरा वयरा काया जलुडा जहगा तीरुंगा पक्कग नीपा कुलता गोएहा सीहला पारसा गोघअथा घमिला चि
 ल्लग पुलिन्दा हारीसा द्रोववकाणा गन्धहरका. वहलिया आयत्ता रोमा पासा वउसा मलवाया वग्गुवामा लउसा राउसा केकया अ
 रवागा पूणा रोमगा-जमखा विलाया वासीया एवमादय । तयत्ते सेक्का । अथ कतिविधा आयका द्विविधा मच्चसा । अद्विमत्त
 अणुद्विमत्तय । अथ कतिविधा अणुद्विमत्त अणुद्विमत्त यद्विविधा मच्चसा । तदथा-आहता चक्रावर्त्ता वलदेवा वासुदेवा चारणा विद्याधरा
 तयत्ते अद्विमत्त । अथ कतिविधा अणुद्विमत्त ? । अणुद्विमत्तो नवविधा मच्चसा तदथा-चेत्रायो आत्मार्यो कुलार्यो कर्मोयो गिल्पायो सा
 यार्यो नानार्यो दर्शनार्यो चरित्तार्यो । अथ कतिविधा चेत्रार्यो साद्वपञ्चविंशतिविधा मच्चसा तदथा-राजगृहनगरवम्याअङ्गमहता

गिहमगहचंपा अगमहतामलितिवगा य । कंचणपुरकलिंगा वाणारसि चैव कासीय ॥ १ ॥ साएयकोस
 लागय पुरचकुसोरियकुसहा य । कंपिल पचाला अहिहत्ताजगलाचैव ॥ २ ॥ दारवतीयसुरठा मिहिलवि
 देहायवच्छकोसवी । नदिपुरसफिला नदिलपुरमेवमलथा य ॥ ३ ॥ वइराफवच्छवरणा अष्कातहमत्तियाव
 डइससा । सोत्तियमडयाचैदी वीडनयसिधुसोवीरा ॥ ४ ॥ मज्जरायसूरसेणा पावान्जगीयमासपुरिवहा ।
 सावत्थीयकुलाणा कोलीवरिसंचलाढाय ॥ ५ ॥ सेयवियाविचयनगरी केयइअठ्ठचअरियन्नणिय । एल्युप्प
 त्तिजिणाण चक्कीणरामकण्हाणं ॥ ६ ॥ सेत्तखेत्तारिया ॥ से कित जाइअयारिया ? २ ठव्विहा पसत्ता,
 तजहा-अवठ्ठायकलिदा विदेहावेदगाडय । हरियाचंचुणाचैव कएयाडअजाडु ॥ ७ ॥ सेत्त जाइअरि
 याय ॥ से कित कुलारिया ? २ ठव्विहा पणत्ता, तजहा-उग्गा नोगा राइसा इस्कागा नाता कोरव्वा ।

वत्तिमिवद्गाथ । काण्वनपुरकलिङ्गा वाराणसीचैवकाशीच ॥ १ ॥ साकेत कोसलका पुरचकुल सोरिक्कुथावर्त । काम्पिल्यपाण्वाला अहिहत्ताजा
 गलाचैव ॥ २ ॥ द्वारावतीचसुराष्ट्र मिथिलाविदेहावत्सकौशाभ्यो ॥ नन्दीपुरगणिकल्ये नदिलपुरमेवमल्लयाथ ॥ ३ ॥ वैराटमत्स्यवरणा अष्का
 तथासृत्तिकादशार्णो ॥ शोक्तिकावतीचवेदी वीतन्नयासिन्धुसोवीरा ॥ ४ ॥ मथुराचसूरसेना पापामङ्गीचमासपुरवहो ॥ श्रावस्तीचकुलाला कोटीव
 पोचलाटाच ॥ ५ ॥ श्रुताम्यजावनगरी केकयस्यार्द्धमायर्मणतम् ॥ यस्मादेतेषुजिनाना चक्राशारामकण्ठानाम् ॥ ६ ॥ ते एते क्षेत्रायां ॥ अथ कति
 विधा जात्यायां । जात्यायां षट्विधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-आम्बटा कलिन्दा वेदहा वेदङ्गा हरिता चुचुणा पण्ठेता इज्जजातय । तस्ये जात्या
 यो । अथ कतिविधा कुलायां । कुलायां षट्विधा प्रज्ञप्ताः । तया नोगा राजान इत्वाक्क ज्ञाता कीरवा । तस्ये कुलायां । अथ कतिवि
 धा कर्मायां ? । कर्मायां अनेकविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-दोपिका सोपिका कापांसिका मुत्तिवेयालिया भण्डवेयालिया कोलालिया नरवाहण

सेत्त कुलारिया ॥ से किंत कम्मारिया ? २ अण्णेगंविहा पसुत्ता, तज्जहा-दोस्सिया सुत्तिया कप्पास्सिया मुत्तावेया जीया न्नुत्तंय्यालिया कोलालिया नरवाहणिया जेयावणे तहप्पगारा । सेत्त कम्मारिया ॥ से किंत सिप्पारिया ? २ अण्णेगंविहा पसुत्ता, तज्जहा-तुस्सागा तत्तुवाया पहागारा देय्जा वरुजा कठपाडयारा मज्जापाडयारा वत्तारा वज्जारा पप्पारा पोत्तारा लेप्पारा चित्तारा सखरा टतारा न्नुत्तारा जिप्पगारा सेत्ता रा कोट्ठिगारा जेयावन्ते तहप्पगारा ॥ सेत्त सिप्पारिया ॥ से किंत नासारिया ? २ जेण अरुमागहाए न्ना साए नासति, जल्ययिय णं वज्जालिबी पवत्तड वज्जीएण लिबीए अण्णारसविहे लेक्खविहाणे पसुत्ते, तज्जहा वज्जीजवणाणिया दासापुरिसा खरुही पुक्करसारिया नोगवडया पहराडया अत्तस्सरिया अत्तस्सरपुठिया वेणडया निण्हडया अक्कलिबी गणियलिबी गधवुलिबी आयासलिबी माहेसरी दोमिली पोलिदी ॥ १८ ॥ सेत्त नासारिया ॥ से किंत नाणारिया ? २ पचविहा पसुत्ता, तज्जहा-आन्निणिबोहियनाणारिया सुयना

या ये वाप्यन्ये तथाप्रकारा । अथ कतिविधा ज्ञित्यायां । तज्ज्ञाया तत्तुवाया पहकारा देवता वरुहा काष्ठपाटुकाकरा मुञ्जपाटुकाकरा
लवङ्गकारा वनाकरा प्रभाकरा पोत्यारा लथारा चित्रकरो शलकरा दन्तकरा प्रगह्वारा लिङ्गमकारा (कटकरा) सेल्लारा कोटिकरा ।
ये वाप्यन्ये तथाप्रकाराः । तस्येति ज्ञित्यायां । अथ कतिविधा ज्ञायायां ? । ज्ञायायां ये अद्वैतमागचीज्ञाया ज्ञापन्ते यत्रेय ब्राह्मणोलिपि प्रथतते
तस्यां ब्राह्मण्या लिप्यामष्टादशाविधे लेख्यविधाने प्रथतते । तद्यथा-ब्रह्मो यवनानी दासपुरुषाया खरुही पुकरसारिका प्रोगवती अन्तरिक्षका
अक्षरपट्टिका वेशजीवा निङ्गुका अङ्गुलिपि गच्छितलिपि गन्धलिपि आदञ्जालिपि माहृथरी दोमिलीलिपि पीलिन्दरीलिपि तस्येति भाषायां ।
अथ कतिविधा ज्ञानायां ? । ज्ञानायां पञ्चविधा प्रज्ञायाः । तद्यथा-अभिनिदोषज्ञानायां अतज्ज्ञानायां अवचिज्ञानायां मन पर्यन्तज्ञानायां

णारिया जुहिनाणारिया मणपज्जनारिया केवलनाणारिया ॥ सेत्तं नाणारिया ॥ सेत्तं दंसणारिया ? २
दुविहा पसुत्ता, तजहा-सरागदसणारिया य वोयरागदसणा ० । से कितं सरागदंसणारिया य ? २ दस
विहा पसुत्ता, तजहा-निससगुवदेसरुई आणारुडसुत्तवीयरुडचेव । अग्निगमवित्यारुई किरियासंखेव
म्सरुई ॥ १ ॥ नूयत्येणाडधिमया जीवाजीवायपुसुपावच । सहस्समुडयासवस वरोयवेयडएसणस्सग्गो २ ॥
जाजिणदिठेत्तावे चउद्धिहेसहहाडसयमेव । एमेवणसुहत्तिनायहो ॥ ३ ॥ एएचेव उन्नावे,
उवदिठेजोपरेणसदुहड । उउमत्येणजिणेणव उवएसरुडत्तिनायहो ॥ ४ ॥ जोहेउमयाणतो अणारोरीयएपव
यणतु । एमेवणसुहत्तिय एसोआसारुईनामा ॥ ५ ॥ जोसुत्तमहिज्जतो सुएणउगाहडउसम्मत्त । अण्णेणवा
हिरेणव सोसुत्तरुडत्तिनायहो ॥ ६ ॥ एगपएणगाड पदाइजोपसरुईउसम्मत्त । उदडव्वत्तिवित्ठु सोवीयरुइ
त्तिनायहो ॥ ७ ॥ सोहोडअग्निगमरुई सुयनाणजस्स । अत्यज्जिठिठ एकारसअण्णाइ पडसगादिठिवात्तय ॥ ८ ॥

केवलज्ञानार्थाद्य । तपते ज्ञानार्थ । अथ कतिविधा दशानार्थः दशानार्थः द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-सरागदशानार्थो वीतरागदशानार्थोद्य । अथ
कतिविधा सरागदशानार्थो ? सरागदशानार्थो दशविधा. प्रज्ञप्ता. । तद्यथा-निसर्गोपदेशकृच्छिआज्ञासूत्ररुचिबोद्धयस्य ॥ अग्निगमरुचि वि
चाररुचि क्रियासत्त्वेषधर्मरुचय ॥ १ ॥ प्रतार्थानांयगता जीवाजीवाद्यपुण्यपाप च ॥ सहस्रमत्थाश्रवसवरा एतेनिसर्गोविज्ञेया ॥ २ ॥ योजितदृष्टान्
प्राधान् चतुर्ध्वान् श्रद्धयतिस्वयमेव ॥ एवमेयनुवास्तीह निसर्गरुचिरितिज्ञातम् ॥ ३ ॥ एतानवचनावान् उपदिष्टान्य परेशसदिग्धे ॥ छट्ठस्ये
नजिनेन उपदिष्टमतिस्सञ्जातव्य ॥ ४ ॥ योहेतुमजानन्आश्रया रोचयतेप्रवचनतु ॥ एवमेयनुवास्तीह यथाज्ञासूचिर्नाम ॥ ५ ॥ योसूत्रमधीयान्
श्रुतेनवावाहतेसम्यक्कम् ॥ अह्नेनवसवाद्येन सूत्ररुचिस्तुविज्ञेय ॥ ६ ॥ एकपदेऽनेकानिपदानि य प्रसरतिसम्यक्कम् । उदकेद्वितिलिङ्गि सुबीज

दद्यात्तस्यैवा सद्यःपमाणेहिजससउवल्लहा । सर्वानिहणयविहीहि वित्यारुड्ढिनायवो ॥ १ ॥ तस्यनागन्त्र
रिते तवविणएससमिडुगुहीसु जोकिरियाजावरुड्ढिसो खलुकिरियारुड्ढिनामा ॥ १० ॥ अणन्निगहियकुदिठी
सखेरुड्ढित्तिहोडनायवो । अविसारनुपवणे अणन्निगहिनयसेसु ॥ ११ ॥ जोअत्यिकायकम्म सुयधम्मखलु
चरित्तयम्मच सहड्डिजिणात्रिहिय सोधम्मरुड्ढित्तिनायवो ॥ १२ ॥ परमत्यसयवोवा सुटिठपरमत्यसेवणावा
वि । वावत्तकुदुसणवज्जणाय सम्मत्तसहड्डिणा ॥ १३ ॥ निसिकियनिक्कखिय णिव्वित्तिगिक्काअमूड्ढिठीय उववू
हथिरीकरणे वच्छसपन्नावेअण्ठ ॥ १४ ॥ सत्त सरागटसणारिया । से कित वीयरगदसणारिया ? २ दु
विहा पयत्ता , तजहा उससतकसायवीयरगटसणारिया खीणकसायवीतरागदसणारियाय । से कित
उवसतकसायवीतरागटसणारिया ? २ दुविहा पयत्ता, तजहा पढमसमयउवसतकसायवीतरागदसणारि

रुविरित्तित्तातव्य ॥ १० ॥ समवत्तजिगमरुवि श्रुतज्ञानजनवतियस्य । अथतोदुपमेकादशाङ्गानि प्रकीर्णकादिदृष्टिवादव्य ॥ ८ ॥ इत्याणा, सर्वज्ञावा
सर्वप्रमाणेयस्यउपलब्धा ॥ सर्वज्ञायनयविधिणि विस्तररुधिरसविज्ञ ॥ ८ ॥ दज्ञानज्ञानचरित्रे तपोविनयेमवसमित्तुसिपुत्र ॥ य दुर्यङ्गाव
रुवि खलुक्रियारुविनामा ॥ १० ॥ अन्नजिगुहीतकुदुष्टि वरुणरुविप्रवर्तित्त्यातव्य ॥ अन्निसारप्रवचने अन्नजिगुहीतद्योयेपु ॥ ११ ॥ योस्तिक्कायक
सं श्रुतयमैवचरित्रप्रमं च ॥ अद्वयानिजिनाभिहित सधर्मरुविज्ञातव्य ॥ १२ ॥ परमार्यसल्लोवा सुदुपरमाणसेवनीवापि ॥ व्यापलकुदुशनवज ना
वस्यकुदुज्ञानाद्य ॥ १३ ॥ तपते सरागदज्ञानार्थ । अथ कतिविधा वीतरागदज्ञानार्थ ? वीतरागदज्ञानार्थ द्विविधा प्रज्ञा । तद्यथा-उपज्ञान्त
कपायवीतरागदज्ञानार्थ वीरकपायवीतरागदज्ञानार्थ । अथ कतिविधा उपज्ञान्तकपायवीतरागदज्ञानार्थ ? उपज्ञान्तकपायवीतरागदज्ञानार्थ
नार्थ द्विविधा प्रज्ञा । तद्यथा-प्रथमसमयोपज्ञान्तकपायवीतरागदज्ञानार्थ अथसमयोपज्ञान्तकपायवीतरागदज्ञानार्थ । अथवा चरमसम

या अथपठमसमयउवसंतकसायवीतरागदंसणारिया, अहवा चरिमसयउवसंतकसायवीतरागदंसणारिया
 य अथचरिमसमयउवसंतकसायवीतरागदंसणारिया य । से कितं खीणकसायवीतरागदंसणारिया ? २ दु
 विहा पसुत्ता, तजहा लउमत्यखीणकसायवीतरागदंसणारिया केवलखीणकसायवीतरागदंसणारिया य ।
 से कित लउमत्यखीणकसायवीतरागदंसणारिया ? २ दुविहा पसुत्ता, तजहा सयंवुछुलउमत्यखीणकसाय
 वीतरागदंसणारिया बुद्धवोहियलउमत्यखीणकसायवीतरागदंसणारिया । से कित सयवुछुलउमत्यखीणक
 सायवीतरागदंसणारिया सयवुछुलउमत्यखीण० दुविहा पसुत्ता, तजहा पठमसमयसयंवुछुलउमत्यखीणक
 सायवीतरागदंसणारियाय अथपठमसमयसयंवुछुलउमत्यखीणकसायवीतरागदंसणारिया, अहवा चरिमसमय
 सयवुछुलउमत्यखीणकसायवीतरागदंसणा० अथचरिमसमयसयवुछुलउमत्यखीणकसायवीतरागदंसणारिया

योपशान्तकपायवीतरागदज्ञानार्यो अथरमसमयोपशान्त कपायवीतरागदज्ञानार्यो ? । क्षीणकपा
 यवीतरागदज्ञानार्यो द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-कट्स्यक्षीणकपायवीतरागदज्ञानार्यो केवलक्षीणकपायवीतरागदज्ञानार्योश्च । अथ कतिविधा-
 कट्स्यक्षीणकपायवीतरागदज्ञानार्यो ? । कट्स्यक्षीणकपायवीतरागदज्ञानार्यो द्विविधा प्रज्ञप्ता-स्वयदुद्धकट्स्यक्षीणरूपायवीतरागदज्ञानार्यो
 बुद्धवोचितकट्स्यक्षीणकपायवीतरागदज्ञानार्यो । अथ कतिविधा स्वयदुद्धकट्स्यक्षीणकपायवीतरागदज्ञानार्यो प्रज्ञप्ता ? । स्वयदुद्धकट्स्यक्षीण
 कपायवीतरागदज्ञानार्यो द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-प्रथमसमयस्वयदुद्धकट्स्यक्षीणकपायवीतरागदज्ञानार्यो अथमसमयस्वयदुद्धकट्स्यक्षीणकपा
 यवीतरागदज्ञानार्योश्च । अथवा चरमसमयस्वयदुद्धकट्स्यक्षीणकपायवीतरागदज्ञानार्यो अथरमस्वयदुद्धकट्स्यक्षीणकपायवीतरागदज्ञानार्योश्च । त
 यते स्वयदुद्धकट्स्यक्षीणकपायवीतरागदज्ञानार्यो । अथ कतिविधा बुद्धवोचितकट्स्यक्षीणकपायवीतरागदज्ञानार्यो । बुद्धवोचितकट्स्यक्षीण

य । सेतं सयबुधतउमत्यखीणकसायवीतरागदसणारिया । से कित बुधबोहियतउमत्यखीणकसायवीतरागदसणारिया ? २ दुविहा पखत्ता, तजहा पढमसमयबुधबोहियतउमत्यखीणकसायवीतरागदसणारिया अपढमसमयबुधबोहियतउमत्यखीणकसायवीतरागदसणारिया, अहवा चरिमसमयबुधबोहियतउमत्यखीणकसायवीतरागदसणारिया । सेतं बुधबोहियतउमत्यखीणकसायवीतरागदसणारिया । सेत तउमत्यखीणकसायवीतरागदसणारिया । से किं त केवलखीणकसायवीतरागदसणारिया ? २ दुविहा पखत्ता, तजहा-सजोगिकेवलखीणकसायवीतरागदसणारिया अजोगिकेवलखीणकसायवीतरागदसणारिया । से कित सजोगिकेवलखीणकसायवीतरागदसणारिया ? २ दुविहा पखत्ता, तजहा पढमसमयसजोगिकेवलखीणकसायवीतरागदसणारिया अप

कपायवीतरागदर्शनार्थो द्विविधा प्रपञ्चा । तद्यथा प्रथमसमयबुधबोचितवृत्तस्थलीणकपायवीतरागदर्शनार्थं अप्रथमसमयबुधबोचितवृत्तस्थलीणकपायवीतरागदर्शनार्थात् । अथवा चरम [समयबुधबोचितवृत्तस्थलीणकपायवीतरागदर्शनार्थं अप्रथमसमयबुधबोचितवृत्तस्थलीणकपायवीतरागदर्शनार्थात् । तएते वृत्तस्थलीणकपायवीतरागदर्शनार्थं । अथ कतिविधा केवलखीणकपायवीतरागदर्शनार्थं ? । केवलखीणकपायवीतरागदर्शनार्थो द्विविधा प्रपञ्चा तद्यथा-सयोगिकेवलखीणकपायवीतरागदर्शनार्थं अयोगिकेवलखीणकपायवीतरागदर्शनार्थात् । अथ कतिविधा सयोगिकेवलखीणकपायवीतरागदर्शनार्थं सयोगिकेवलखीणकपायवीतरागदर्शनार्थो द्विविधा प्रपञ्चा । तद्यथा-प्रथमसमयसयोगिकेवलखीणकपायवीतरागदर्शनार्थं अप्रथमसमयसयोगिकेवलखीणकपायवीतरागदर्शनार्थात् । अथवा चरमसमयसयोगिकेवलखीणकपायवीतरागदर्शनार्थं अचरमसमयसयोगिकेवलखीणकपायवीतरागदर्शनार्थात् । अथ कतिविधा अयोगिकेवलखीणकपायवीतरागदर्शनार्थं ? । अपयोगिकेवलखीणकपाय

द्वमसमयसजोगिकेवलखीणकसायवीतरागदंसणारियाय । अहवा चरिमसमयसजोगिकेवलखीणकसायवीतरागदंसणारियाय अचरिमसमयसजोगिकेवलखीणकसायवीतरागदंसणारियाय । सेत्तं सजोगिकेवलखीणकसायवीतरागदंसणारिया । से कितं अजोगिकेवलखीणकसायवीतरागदंसणारिया ? २ दुविहा पसत्ता, तजहा पढमसमयअजोगिकेवलखीणकसायवीतरागदंसणारिया अण्डमसमयअजोगिकेवलखीणकसायवीतरागदंसणारियाय, अहवा चरिमसमयअजोगिकेवलखीणकसायवीतरागदंसणारिया अचरिमसमयअजोगिकेवलखीणकसायवीतरागदंसणारिया य । नेत्त अजोगिकेवलखीणकसायवीतरागदंसणारिया । सेत्तं केवलखीणकसायवीतरागदंसणारिया । सेत्त खीणकसायवीतरागदंसणारिया । सेत्तं वीतरागदंसणारिया । से कितं चरित्तारिया ? २ दुविहा पसत्ता, तजहा—सरागचरित्तारिया वीतरागचरित्तारिया । से कित सरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पसत्ता, तजहा—सुजमसपरायसरगचरित्तारियाय वाय

वीतरागदर्शनार्थो द्विविधा. प्रज्ञप्ता तद्यथा-प्रथमसमयायोगिकेवलक्षीणकपायवीतरागदर्शनार्थो अग्रमसमयायोगिकेवलक्षीणकपायवीतरागदर्शनार्थो द्वि. अथवा चरमसमयायोगिकेवलक्षीणकपायवीतरागदर्शनार्थो अवमसमयायोगिकेवलक्षीणकपायवीतरागदर्शनार्थो द्वि. तद्यते अयोगिकेवलक्षीणकपायवीतरागदर्शनार्थो । तद्यते केवलक्षीणकपायवीतरागदर्शनार्थो । तद्यते क्षीणकपायवीतरागदर्शनार्थो । तद्यते वीतरागदर्शनार्थो । अथ कतिविधाचरित्तार्यो ? चरित्तार्यो द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-सूक्ष्मसपरायसरगचरित्तार्यो वादरसपरायसरगचरित्तार्यो । अथ कतिविधासूक्ष्मसपरायसरगचरित्तार्यो सूक्ष्मसपरायसरगचरित्तार्यो द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-प्रथमसमयसूक्ष्मसपरायसरगचरित्तार्यो अग्रमसमयसूक्ष्मसपरायसरगचरित्तार्यो द्वि. अथवा सूक्ष्मसपरायसरगचरित्तार्यो द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-सूक्ष्मसपरायसरगचरित्तार्यो विज्ञप्तामानार्थो । तद्यते

रसपरायसरागचरित्तारियाय । से कित सुज्जमसंपरायसरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णा, तंजहा-
पढमसमयसुज्जमसंपरायसरागचरित्तारिया अपढमसमयसुज्जमसंपरायसरागचरित्तारिया य, अहवा चरिम
समयसुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया अचरिमसमयसुज्जमसंपरायसरागचरित्तारियाय । अहवा सुज्जमसंपरा
यसरागचरित्तारिया दुविहा पण्णा, तजहा सकिउत्समाणाय विसुज्जमाणाय सेत्त सुज्जमसंपरायसरा
गचरित्तारिया । से कित वायरसंपरायसरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णा, तजहा पढमसमयवायर
संपरायसरागचरित्तारिया अपढमसमयवायरसंपरायसरागचरित्तारिया य अहवा चरिमसमयवायरसंपरा
यसरागचरित्तारिया अचरिमसमयवायरसंपरायसरागचरित्तारिया य अहवा वायरसंपरायसरागचरित्तारि
या दुविहा पण्णा, तजहा पण्णिवाइं य अपण्णिवाइं य सेत्त वायरसंपरायसरागचरित्तारिया सेत्त सरागचरि
त्तारिया । से कित वीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णा, तजहा उवसत्तकसायवीतरागचरित्तारिया
खीणकसायवीतरागचरित्तारिया य से कित उवसत्तकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा प०, तंजहा

सुल्लसंपरायसरागचरित्तारिया । अथ कतिविधा वादरसंपरायसरागचरित्तारिया वादरसंपरायसरागचरित्तारिया प्रज्ञप्ता । तद्यथा प्रथमसमय
वादरसंपरायसरागचरित्तारिया अथमसमयवादरसंपरायसरागचरित्तारिया । अथवा चरिमसमयवादरसंपरायसरागचरित्तारिया अचरिमसमयवादर
संपरायसरागचरित्तारिया । अथवा वादरसंपरायसरागचरित्तारिया द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-प्रतिगतिका अप्रतिगतिका । तपते वादरसंपरा
यसरागचरित्तारिया तपते सरागचरित्तारिया । अथ कतिविधा वीतरागचरित्तारिया ? १ वीतरागचरित्तारिया द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-उपशान्तक
पायवीतरागचरित्तारिया शीगृहकपायवीतरागचरित्तारिया । अथ कतिविधा उपशान्तकपायवीतरागचरित्तारियाः २ । उपशान्तकपायवीतरागचरित्तारिया

पढमसमयउवसंतकसायवीतरागचरित्तारिया अण्डमसमयउवसतकसायवीतरागचरित्तारिया य अण्डवा चरिम
समयउवसतकसायवीतरागचरित्तारिया अण्डमसमयउवसतकसायवीतरागचरित्तारिया य सेत उवसतक
सायवीतरागचरित्तारिया । से कित खीणकसायवीतरागचरित्तारिया २ दुविहा पणत्ता . तजहा लउमत्य
खीणकसायवीतरागचरित्तारिया केवलखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य से कित लउमत्यखीणकसायवी
तरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पणत्ता , तजहा सयबुद्धउमत्यखीणकसायवीतरागचरित्तारिया बुद्धो
हियलउमत्यखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य से कित सयबुद्धउमत्यखीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? २
दुविहा प० , तजहा पढमसमयसयबुद्धखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अण्डमसमयसयबुद्धउमत्यखी
णकसायवीतरागचरिया य , अण्डवा चरिमसमयसयबुद्धउमत्यखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अण्डमसमय
समयसयबुद्धउमत्यखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य । सेत सयबुद्धउमत्यखीणकसायवीतरागचरित्ता

द्विविधा प्रज्ञा । तद्यथा-प्रथमसमयोपशान्तकपायवीतरागचरित्रायां अथमसमयोपशान्तकपायवीतरागचरित्रायां । अथवा चरमसमयोप
शान्तकपायवीतरागचरित्रायां अथमसमयोपशान्तकपायवीतरागचरित्रायां । तथे उपशान्तकपायवीतरागचरित्रायां । अथ कतिविधा । द्वीण
कपायवीतरागचरित्रायां १ । क्षीणकपायवीतरागचरित्रायां द्विविधा प्रज्ञा । तद्यथा-लउमत्यखीणकपायवीतरागचरित्रायां केवलखीणकपायवीत
रागचरित्रायां । अथ कतिविधा लउमत्यखीणकपायवीतरागचरित्रायां द्विविधा प्रज्ञा । तद्यथा-स्वयबुद्धल
स्यक्षीणकपायवीतरागचरित्रायां बुद्धोचितलउमत्यखीणकपायवीतरागचरित्रायां अथ कतिविधा स्वयबुद्धलउमत्यखीणकपायवीतरागचरित्रायां
द्विविधा प्रज्ञा । तद्यथा-प्रथमसमयसयबुद्धखीणकपायवीतरागचरित्रायां अथमसमयसयबुद्धखीणकपायवीतरागचरित्रायां । अथवा चरमसमय

पठमसमयसजोगिकेवलखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अथपठमसमयसजोगिकेवलखीणकसायवीतराग
चरित्तारिया य, अथवा चरिमसमयसजोगिकेवलखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य अथचरिमसमयसजो-
गिकेवलखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य। सेतं सजोगिकेवलखीणकसायवीतरागचरित्तारिया। से कितं
अजोगिकेवलखीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पसत्ता, तंजहा-पठमसमयअजोगिकेवलि-
खीणकसायवीतरागचरित्तारिया य अथपठमसमयअजोगिकेवलखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य, अथवा
चरिमसमयअजोगिकेवलखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य अथचरिमसमयअजोगिकेवलखीणकसायवीत-
रागचरित्तारिया य सेत अजोगिकेवलखीणकसायवीतरागचरित्तारिया। सेतं केवलखीणकसायवीतराग
चरित्तारिया। सेत खीणकसायवीतरागचरित्तारिया सेत वीतरागचरित्तारिया। अथवा चरित्तारिया पचवि-
हा पसत्ता, तंजहा-सामाइयचरित्तारिया लेनवठावणीयचरित्तारिया परिहारविसुष्टिचरित्तारिया सुजम-
सपरायचरित्तारिया अथस्कायचरित्तारिया य। से कित सामाइयचरित्तारिया ? २ दुविहा पसत्ता, तंजहा

तयते सयोगिकेवलखीणकसायवीतरागचरित्तारिया। अथ कतिविधा अयोगिकेवलखीणकसायवीतरागचरित्तारिया। अयोगिकेवलखीणकसायवीतरागचरित्तारिया
त्रायं द्विविधा प्रज्ञता। तद्यथा--प्रथमसमयायोगिकेवलखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अथप्रथमसमयायोगिकेवलखीणकसायवीतरागचरित्तारिया। अ-
थवा चरिमसमयायोगिकेवलखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अथचरिमसमयायोगिकेवलखीणकसायवीतरागचरित्तारिया। तयते अयोगिकेवलखीणकसायवी-
तरागचरित्तारिया। तयते केवलखीणकसायवीतरागचरित्तारिया। तयते खीणकसायवीतरागचरित्तारिया। तयते वीतरागचरित्तारिया। अथवा चरित्तारिया प-
चविधा प्रज्ञता। तद्यथा-सामयिकचरित्तारिया केदोपस्थानीयचरित्तारिया परिहारविसुष्टिचरित्तारिया सुल्लसपरायचरित्तारिया अनाख्यातचरित्तारिया।

इतिरियं सामोदयचरित्तारिया अविंकाहियं सामोदयचरित्तारिया य । सेत्तं सामोदयचरित्तारिया । से कितं तेनेवठावणीयचरित्तारिया ? २ दुविहा पणत्ता, तजहा—साडयारा तेनेवठावणीयचरित्तारिया निरुडयारा तेनेवठावणीयचरित्तारिया । सेत्तं तेनेवठावणीयचरित्तारिया । से कितं परिहारविमुद्धियचरित्तारिया ? २ दुविहा पणत्ता, तजहा—निव्विस्समाणपरिहारविमुद्धियचरित्तारिया निव्विठकाडयपरिहारविमुद्धियचरित्तारियाय । सेत्तं परिहारविमुद्धियचरित्तारिया । से कितं सुज्जमाणसुज्जमसंपरायचरित्तारिया ? २ दुविहा पणत्ता, तजहा सकलिस्समाणसुज्जमसंपरायचरित्तारिया विसुज्जमाणसुज्जमसंपरायचरित्तारियाय सेत्तं सुज्जमसंपरायचरित्तारिया । से कितं अहस्कायचरित्तारिया ? २ दुविहा पणत्ता, तजहा उउमल्य अहस्कायचरित्तारिया केवल्लिअहस्कायचरित्तारियाय सेत्तं अहस्कायचरित्तारिया सेत्तं अणहिपत्तारिया सेत्तं अणहिपत्तारिया सेत्तं

अथ कतिविधा सामयिकचरित्रायां सामायिकचरित्रायां द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-इतरसामयिकचरित्रायां अथकचित्तसामयिकचरित्रायांच्छ । तत्र
तै सामयिकचारित्र्यायां । अथ कतिविधाल्लेदोपस्थानीयचरित्रायां ? द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-सात्त्विकाराल्लेदोपस्थानी
यचरित्रायां निरतिचाराल्लेदोपस्थानीयचरित्रायां । तत्रले लेदोपस्थानीयचरित्रायां । अथ कतिविधा परितारविशुद्धिकचरित्रायां ? परिहारवि
शुद्धिकचरित्रायां द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-निर्विशेषानपरिहारविशुद्धिकचरित्रायां निर्विशेषकायपरिहारविशुद्धिकचरित्रायांच्छ । तएते परिहारवि
विशुद्धिकचरित्रायां । अथ कतिविधा सुल्लसपरायचरित्रायां सुल्लसपरायचरित्रायां द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-उपलक्ष्यमानसूक्तसपरायचरित्रायां
विशुद्धमानसूल्लसपरायचरित्रायांच्छ । तत्रले सुल्लसपरायचरित्रायां । अथ कतिविधा यथास्यातचरित्रायां ? यथास्यातचरित्रायां द्विविधा प्रज्ञप्ता
तद्यथा-वर्त्यस्येथास्यातचरित्रायां केवलचरित्रायां च्छ । तएते यथास्यातचरित्रायां । तएते चरित्रायां- तएते अवशिष्टांसायां- तएते आयां ।

आत्रिया सेतं कम्पन्नमिगा सेतं गङ्गवक्त्रंतित्रा सेतं मणुस्मा से कितं देवा २ चउहिहा प०, तजहा नत्र
 णवासी वाणमतरा जोडसिया वेमाणिया से कितं नत्रणवासी २ नत्रणवासी दसविहा पसत्ता, तजहा अतु
 रकुमारा नागकुमारा सुवसकुमारा विज्जकुमारा अग्गिकुमारा दीवकुमारा उदहिकुमारा दिसाकुमारा वाउ
 कुमारा धणियकुमारा तेसमासनुदुविहा पसत्ता, तजहा-पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय सेतं नत्रणवासी से
 कित वाणमतरा २ अठविहा प०, तजहा किन्तरा क्खिपरिसा महोरगा गंयव्हा जस्का रस्कासा नत्रा पिसा
 या ते समासनुदुविहा पसत्ता, तजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय संत्त वाणमतरा। से कितं जोडसिया २
 पंचविहा पसत्ता, तजहा चडासुरागहनस्कत्तातारा तेसमासनुदुविहा पसत्ता, तजहा पज्जत्तगाय अप
 ज्जत्तगाय। से कित जोडसिया से कित वेमाणिया २ दुविहा पसत्ता, तजहा कप्पोवगाकप्पाईयाय से कितं

तएते कम्पन्नमिगा तएते गज्जयुत्ताकानिका। तएते मनुष्या ॥ अथ कतिविधा देशाः २ देवाद्यनुविधा। प्रज्जसा तद्यथा-नवनवासिनः वानव्यल्
 रा ज्योतिषिका वेमानिका। अथ कतिविधा नवनवासिनः २ नवनवासिनो दशविधा। प्रज्जसा तद्यथा-असुरकुमारा नागकुमारा सुवसकुमारा
 विद्यकुमारा अग्निकुमारा दीपकुमारा। अथ कतिविधा दिशाकुमारा वायुकुमाराः सान्तिस्कुमारा। ते समासतो द्विविधा प्रज्जसा पर्याप्तगा
 द्यापर्याप्तगाश्च। तएते नवनवासिनः। अथ कतिविधा वानव्यल्तरा २ वानव्यल्तरा अष्टविधाः प्रज्जसा। तद्यथा--किन्तरा क्खिपरिसा महोरगा-
 गन्धर्वा यक्षा रक्षा जूना पिशाचा। तएते समासतो द्विविधा प्रज्जसा तद्यथा--पर्याप्तगाश्च अपर्याप्तगाश्च। तएते वानव्यल्तरा। अथ कतिवि
 धा ज्योतिषिका ज्योतिषिका पञ्चविधा प्रज्जसा तद्यथा--चन्द्रमयग्रहनक्षत्रतारा। त समासतो द्विविधा प्रज्जसा तद्यथा-पर्याप्तगाश्च अपर्याप्त
 गाश्च। तएते ज्योतिषिका। अथ कतिविधा वेमानिकाः २ वेमानिका द्विविधा प्रज्जसा तद्यथा--कल्पोपगा कल्पातीनाश्च। अथ कतिविधा

कप्योवगा२ वारसविहा पणत्ता, तजहा सोहम्मा ईसाणा सणकुमारा माहिदा वज्जलीया लंतया महासुक्ता
 सहस्सारा ध्याणया पाणया धारणा शुभ्रुगा तेसमासनु दुविहा पणत्ता, तजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय
 सेत्त कप्योवगा से कित कप्याईया २ दुविहा पणत्ता, तजहा गेविज्जगाय शुणत्तरोववाडयाय से कित
 गेविज्जगा २ नवविहा पणत्ता, तजहा हिठिमहिठिमगेविज्जगा हिठिमज्जिमगेविज्जगा हिठिमउवरिम
 गेविज्जगा मज्जिमहिठिमगेविज्जगा मज्जिम२ गेविज्जगा मज्जिमउवरिमगेविज्जगा उवरिमहिठिमगेविज्ज
 गा उवरिममज्जिमगेविज्जगा उवरिम२ गेविज्जगा तेनमासनु दुविहा पणत्ता, तजहा पज्जत्तगाय अपज्ज
 त्ताय सेत्त गेविज्जगा । से कित शुणत्तरोववाडया२ पचविहा पणत्ता, तजहा विजया वंजयता जयंता
 अपराजिया सहसिद्धा तेसमासनु दुविहा पणत्ता, तजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय सेत्त शुणत्तरोववा

ल्योपणा २ कल्योपणा दादवाविषा प्रश्ना । तद्यथा--मौषर्षा भुंजाना मन्तरकुमारा माधेन्द्रा' द्राम्नोक्ता' तातका मद्राशुका मद्राशरा का
 नता प्राणता धारणा कप्युना । ते समासतो द्विविधा प्रश्नाः तद्यथा--पर्याप्तगायपार्याप्तगाय । तद्यत्त कल्योपणा । अथ कतिविधा कल्या
 तीता २ कल्यातीता द्विविधा प्रश्ना तद्यथा--यैवयकाः अनुत्तरवेमानिका य । अथ कतिविधा यैवयकाः यैवयका नयविषा प्रश्ना तद्यथा-
 अथाचोयैवयका, अथोन्ध्यमयैवयका, अथउपरितनयैवयका, मध्यमाया यैवयका, मध्यममध्यमयैवयकाः मध्यतोपरितनयैवयका, उप
 रितनाचोयैवयका उपरितनमध्यमयैवयका उपरितनोपरितनयैवयका ते मगाचो द्विविधा प्रश्ना पर्याप्तगायपार्याप्तगाय । तद्यत्त यैवयका ।
 अथ कतिविधा अनुत्तरवेमानिका २ अनुत्तरवेमानिका पचविधा प्रश्ना । तद्यथा-विजया वंजयता प्रयत्नाः अपराजिता यथाचोमिद्धा ।
 ते समासतो द्विविधा प्रश्ना तद्यथा--पर्याप्तगायपार्याप्तगाय । तद्यत्त अनुत्तरवेमानिका । तद्यत्त कर्मानां । तद्यत्त वेमानिकाः । तद्यत्त देया ।

इया सेत कप्याईया सेत वेमाणिया सेत देवा सेत पंचिदिया सेत संसारसमावसु जीवपन्त्रवणा सेत जीव
पन्त्रवणा सेत पन्त्रवणा ॥ पन्त्रवणाए पढम पय समत ॥ १ ॥ कहिणं नते ! वाटरपुढवि
काडयाण पज्जत्तगाण-ठाणा पसात्ता ? गोयमा । सठाणेणं छठसु पुढवीसु तंजहा-रयणप्पन्नाए सक्करप्प.
न्नाए बालुयप्पन्नाए पकप्पन्नाए धूमप्पन्नाए तमप्पन्नाए इहिसत्तमाए इहिसप्पन्नाए अहोलोए
पायालेसु नवणेसु नवणपत्त्यहेसु निरएसु निरयावलियासु निरयपत्त्यहेसु उढलोए कप्पेसु विमाणेसु वि
माणावलियासु विमाणपत्त्यहेसु तिरियलोए टंकेसु कूहेसु सेलेसु सिंहरीसु पज्जारसु विजएसु वस्करेसु
वांसेसु वासहरपहएसु वा वेलासु वेडयासु दारेसु तोरणेसु टीवेसु समुद्देसु एत्थणं वाटरपुढवीकाडयाणं
पज्जत्तगाण ठाणा पसात्ता, उववाएण लोयस्स अएखेज्जइजागे समुग्घाएण लोयस्स अएसखेज्ज ० सठाणेणं

तपते पञ्चन्द्रिया । तपते ससारसमावसु जीवप्रज्ञापना । तपते जीवप्रज्ञापना तपते प्रज्ञापना ॥ इति श्रीमदुपाध्याय रामचन्द्र गण्डि त्रिपि
तानकचन्द्र विरचिते जीवप्रज्ञापना स्यप्रथमपदानुवाद ॥ ४ ॥

कौसिन् भदल । वाटरपुथिवीकायिकाना पर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गीतम ? स्वस्थानेनाष्टासु पुथिवीसु तद्यथा--रत्नप्रभाया शंकरप्रभा
या बालुकप्रभाया पट्टप्रभाया धूमप्रभाया तम प्रभाया तमस्तम प्रज्ञायामहसत्तमायामीयत्प्राग्ज्ञारायामघोलोके पातालेषु जवनेषु जवनप्रस्तरेषु
नरकेषु नरकावलिकासु निरयप्रस्तरेषु ऊर्ध्वलोक कस्पेषु विमानेषु विमानावलिकासु विमानप्रस्तरेषु तिर्यजलोके टङ्गेषु कूटेषु शीलेषु प्राग्ज्ञारेषु
विजयेषु वजारेषु वासेषु वासहरपर्यतेषु वा घेलासु वेदिकासु दारेषु तोरणेषु द्वीपेषु समुद्देशु मतेषु वाटरपुथिवीकायिकाना पर्याप्ताना स्थाना
नि पर्याप्तानि । तत्रैव वाटरपुथिवीकायिकानामपर्याप्ताना स्थानानि पयाप्तानि । उपपातेनापि सबलोके समुद्घातेन सर्वलोके सस्थानेन लोकस्या

यस्म अस्मै जाडुनागे । कहिणं नत्ते ! वादरपुढविकाडयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पणत्ता ? गोयमा !
 य वादरपुढविकाडयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पणत्ता, तत्थेव वादरपुढविकाडयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा
 ता, उववाएण सव्वलीए समुग्घाएण सव्वलीए सठाणेण लीयरस अस्संखेजाडुनागे । कहिणं नत्ते ! सुज्जम
 वेकाडयाणं पज्जत्तगाणं अपज्जत्तगाणयथाणा पणत्ता ? गोयमा ! सुज्जमपुढविकाडया जेपज्जत्तगा जे
 ज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अनानत्ता सव्वलोकपेरियावत्तगा पणत्ता समणाउत्तो ! कहिणं
 ! वादरपुढविकाडयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पणत्ता ? गोयमा ! सठाणेण सत्तसु घणोदधीसु सत्तसु घ
 धिवलएसु अहोलीए पायालेसु नवणंसु नवणपत्थेसु उहुलोकप्पेसु विमाणंसु विमाणावलियासु
 णपत्थेसु तिरियलीए अगळेसु तलाएसु संरसु नदीसु दहेसु वावीसु पुक्करिणीसु दीहियासु गंजालि
 सरेसु सरपतियासु सरसरपतियासु त्रिलपतियासु उज्जरेसु पिज्जरेसु चिल्लेसु पल्लेसु वप्पेणंसु दी
 समुदंसु सव्वेसु चैव जलासएसु जलठाणेसु जलनूमिआसु एत्थण वादरपुढविकाडयाणं पज्जत्तगाणं

ने । कस्सिन् भदत्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां पर्याप्तानामपर्याप्तकानां स्थानानि प्रपन्नानि । गौतम सूक्ष्मपृथिवीकायिकायं पर्याप्तगा य
 तास्ते सर्वं एकविधा अविज्ञेया अनाज्ञाता सर्वतोऽक्षपर्याप्तगाः प्रपन्नाः अमहायुसन् कस्सिन् प्रदत्त वादरापृथिवीकायिकानां पर्याप्तगा य
 नि प्रपन्नानि । गौतम सत्त्वानेन सप्तसु घनोदधेयसु सप्तसु घनोदधिवर्तयेषु अचिल्लोके पातालसु जवनेषु भवनप्रस्तरेषु कर्ध्वलोके कल्पे
 नेषु विमानावलिकासु विमानप्रस्तरेषु तिर्यक्लोके अथटेषु तद्वानेषु सरस्सु नदीषु इदेषु वापीषु प
 र्क्त्येषु विलपक्तिषु निर्भरेषु विष्वक्केषु पल्लवेषु वनेषु

लोयस्स असखेज्जङ्गमे । कहिणं नत्ते । वाटरपुढविकाडयाण अपज्जत्तगाणं ठाणा पसत्ता ? गोयमा । जत्येव वाटरपुढविकाडयाण पज्जत्तगाण ठाणा पसत्ता, तत्येव वाटरपुढविकाडयाण अपज्जत्तगाण ठाणा पसत्ता, उववाएण सव्वलोए समुग्घाएण सव्वलोए सठाणेण लोयस्स असखेज्जङ्गमे । कहिणं नत्ते । सुज्जम पुढविकाडयाण पज्जत्तगाण अपज्जत्तगाणयठाणा पसत्ता ? गोयमा । सुज्जमपुढविकाडया जेपज्जत्तगा जे अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अनानत्ता सव्वलोयपरियावन्ता पसत्ता समणाउत्तो । कहिणं नत्ते । वाटरपुढविकाडयाण पज्जत्तगाण ठाणा पसत्ता ? गोयमा । सठाणेण सत्तसु घणोदधीसु सत्तसु घ णोदविधलएसु अहोलोए पायालेसु नवणंणसु उट्ठलोयकप्पेसु विमाणंसु विमाणावलियासु विमाणपत्त्यङ्गेसु तिरियलोए अगङ्गेसु तलाएसु सरंसु नदीसु दहंसु वावीसु पुरकरिणीसु दीहियासु गंजालि यासु सरंसु सरपतियासु सरसरपतियासु विलपतियासु उज्जरेसु णिज्जरेसु चिल्लेसु पल्लेसु वीप्पिणंसु दी वेसु समुदंसु सव्वेसु चैव जलासएसु जलठाणेसु जलनूमिआसु एत्थण वाटरपुढविकाडयाणं पज्जत्तगाण

सत्थयभागे । कस्मिन् भदत्त सूत्तपयित्रीकायिकाना पयोत्तानामपयोत्तकाना स्थानानि प्रवृत्तानि, गौतम सूत्तपयित्रीकायिकाये पयोत्तगा य अपयोत्तगास्ते सर्वे एकविधा अविशेषा अनाज्ञाता सर्वतोक्कपयोत्तगा प्रवृत्ता अमणायुस्मान् कस्मिन् भदत्त वादराप्पायिकाना पयोत्तगा य ना स्थानानि प्रवृत्तानि । गौतम सत्थानेन समसु घनोदायसु समसु घनोदयिचलयेसु अर्थलोके पातालपु जवनेसु भवनप्रस्तरेसु ऊर्ध्वलोके कल्पे सु विमानेषु विमानावलिकासु विमानप्रस्तरेसु तिर्यक्लोके अवटपु तट्टाणेसु सरस्सु नदीसु इदेषु वापीसु पुष्करणीसु दीर्घिकासु गुञ्जालिकानु स ररसु सर सर पक्तिपु विलपक्तिपु निर्गरेसु विहारेसु पत्तलपु धमेसु दीपेषु समुद्रेसु सर्वेषु चैव जलाज्ञेसु जलस्थानेषु गतेषु वादराप्पायिकाना

ठाणा पयत्ता, उववाएण लोयस्स अस्खेज्जइत्तागे । कहिणं नत्ते ! वायरञ्चाउकाइयाणं अप्पज्जात्तगाण ठा
णा पयत्ता ? गोयमा ! जत्थेव वादरञ्चाउकाइयाण पज्जात्तगाण ठाणा तत्थेव वादरञ्चाउकाइयाणं अप्प
ज्जात्तगाण ठाणा पयत्ता, उववाएणं सव्वेओए समुग्घाएण सव्वेओए सठाणंण लोयस्स अस्खिज्जइत्तागे ।
कहिण सुज्जमञ्चाउकाइयाण पज्जात्तापज्जात्ताणं ठाणा पयत्ता ? गोयमा ! सुज्जमञ्चाउकाइया जेय पज्जात्तगा
जे अप्पज्जात्तगा ते सव्वे एग्विहा अविसेसा अनाणत्ता सव्वेओए परियावन्नागा प०, समणाउत्तो ! कहिणं
नत्ते ! वादरत्तेउकाइयाण पज्जात्तगाण ठाणा पयत्ता ? गोयमा ! सठाणंणं अत्तोमणुस्सखेत्ते अट्ठाइज्जेसु
दीवसमुद्देसु निव्वाधाए पन्नरससु कम्मन्नमीसु वाचाय पुरुच्च पचसु महाविदेहेसु एत्थण वादरत्तेउकाइयाण
पज्जात्तगाण ठाणा पयत्ता, उववाएण लोयस्स अस्खेज्जइत्तागे समुग्घाएण लोयस्स अस्खेज्जइत्तागे,
सठाणंणं लोयस्स अस्खेज्जइत्तागे । कहिण नत्ते ! वादरत्तेउकाइयाणं अप्पज्जात्तगाणं ठाणा पयत्ता ? गो
यमा ! जत्थेव वादरत्तेउकाइयाण पज्जात्तगाण ठाणा तत्थेव वादरत्तेउकाइयाणं अप्पज्जात्तगाण ठाणा प०,

पर्याप्तकाना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्य असंख्येयजाने । कस्मिन् भदत्त वादराप्कायिकानामपर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उप
पातेन सबल्लोके समुदात्तेन सर्वल्लोके सत्त्वानेन लोकस्यासंख्येयजाग । कस्मिन् ज० सूत्ताप्कायिकाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि गीतम
नूत्ताप्कायिका ये च पर्याप्तगा ये अप्याप्तगास्ते सर्वे एकविधा अविज्ञेया अनाद्याता सर्वल्लोके पर्यापन्नगा प्रज्ञप्ता अमणायुभन् कस्मिन् प्रदत्त ।
वादरत्तेज कायिकाना पर्याप्तगाना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गीतम । स्वस्थानेन अन्तर्मानुष्यक्षेत्रे अद्वैतनीयपु द्वीपसमुद्रेषु निर्व्याप्यते पञ्चदशसु कर्म
भूमिषु व्याघात प्रसीत्य पञ्चसु महाविदेहेषु एतेषु वादरत्तेज कायिकाना पर्याप्तकाना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्य असंख्येयजाने

उववाएण लीयस्स दीसु उहुकवाळेसु तिरियलीयतहेसमुग्घाएण सव्वलोए सठाणेण लीयस्स अस्सखेज्जाइ
 नागे। कहिण भत्ते । सुज्जमतेउकाडयाण पज्जत्तगाण अपज्जत्तगाणय ठाणा पयत्ता ? गोयमा । सुज्जमतेउ
 काइयाण जे पज्जत्तगा अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अनाणत्ता सव्वलीयपरियावन्नगा पयत्ता
 समणाउसो । कहिण भत्ते । वादरवाउकाडयाण पज्जत्तगा ठाणा पयत्ता ? गोयमा ! सठाणेण सत्तसु
 घणवाएसु सत्तसु घणवायवलएसु सत्तसु तणवाएसु सत्तसु तणवायवलएसु अहोलोए पायलेसु जवणेसु
 नवनपत्येसु नवनविहेसु नवननिकुहेसु निरएसु निरयावलियासु निरयपत्येसु निरयविहेसु निरयनि
 खुहेसु उहुलीयकप्पेसु विमाणसु विमाणावलियासु विमाणपत्येसु विमाणविहेसु विमाणनिकुहेसु तिरि
 यलोएसु पाईणदाहिणउदीणसव्वेसु चेव लोगागासविहेसु लीगनिकुहेसुय एत्थण वादरवाउकाडयाणं प
 ज्जत्तगाण ठाणा पयत्ता , उववाएण लीयस्स अस्सखेज्जेसु नागेसु समुग्घाएण लीयस्स अस्सखेज्जनागेसु

समुद्धानेन लोकस्यासख्येयजाने स्वस्थानेन लोकस्यासख्येयमाने । कस्मिन् जदत्त । वादरतेज कायिकानामपर्याप्तकाना स्थानानि प्रवृत्तानि । गौ
 तम । यत्रैव वादरतेज कायिकाना पर्याप्तकाना स्थानानि प्रवृत्तानि तत्रैव वादरतेज कायिकानामपर्याप्तकाना स्थानानि प्रवृत्तानि । उपपातेन
 सर्वलोके समुद्धानेन सर्वलोके स्वस्थानेन लोकस्यासख्येयजाने । कस्मिन् जदत्त । सूक्ष्माष्कायिकाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रवृत्तानि ?
 गौ० । सूक्ष्माष्कायिका ये च पर्याप्ता ये वापर्याप्तास्ते सर्वे एकविधा अविशेषा अनाद्याता सर्वलोके पर्यापन्ना प्रवृत्ता अमणायुजन् कस्मिन्
 भदत्त । वादरतेज कायिकाना पर्याप्तकाना स्थानानि प्रवृत्तानि, गौतम । स्वस्थानेन अन्तर्मुन्यन्ते बहुततोयेषु हीपसमुद्देशु निव्याचत प
 ल्बदशसु कमत्रमिषु व्याचत प्रतीत्य पन्चसु महाविदेहेषु वादरतेज कायिकाना पर्याप्ताना स्थानानि प्रवृत्तानि । उपपातेन लोकस्यासख्येयना

सृष्टाणेणं लोयस्स अस्सखेज्जेसुं ज्ञागेसु । कहिणं ज्ञते ! अपज्जत्तवाटरवाउकाइयाणं ठाणा पखत्ता ? गोय
मा । जत्थेव वाटरवाउकाइयाणं पज्जत्तगाणं तत्थेव वाटरवाउकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पखत्ता ।
उववाएण सव्वलोए समुग्घाएण सव्वलोए । सृष्टाणेण लोयस्स अस्सखेज्जेसुं ज्ञागेसु । कहिणं ज्ञते ! सुज्जम
वाउकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पखत्ता ? गोयमा ! सुज्जमवाउकाइयाणं जे पज्जत्तापज्जत्ताणं ते
सव्वे एगविहा अविसेसा अनाणत्ता सव्वलोयपरियावन्तगा पखत्ता समणाउसो ! कहिणं ज्ञते वाटरवण
स्सडकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा प० ? गोयमा ! सृष्टाणेण सत्तसु घणोदहोसु सत्तसु घणोदहिवलएसु अहो
लोए पायालेसु नवणेसु नवणपत्थेसु उहलोए कप्पेसु विमाणेसु विमाणावलियासु विमाणपत्थेसु तिरिय
लोए अगळेसु तलागेसु नदीसु वावीसु पुस्करिणीसु दीहियासु गंजालियासु सरसु सरसरपतियासु सरपं
तियासु विलपतियासु उज्जरसु निज्जरसु चिल्लेसु पल्लेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जलास
एसु जलठाणेसु एत्थण वाटरवणस्सडकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पखत्ता । उववाएण सव्वलोए, समुग्घा

ने समुद्दातेन लोकस्यासख्येयज्ञागे स्वस्थानेन लोकस्यासख्येयज्ञागे । कस्मिन् प्रदन्त । वाटरतेज कायिकानामपर्योक्तानां स्थानानि प्रज्ञातानि ?
गौतम । यत्रैव वाटरतेज कायिकाना पर्योक्ताना स्थानानि तत्रैव वाटरतेज कायिकानामपर्योक्ताना स्थानानि प्रज्ञातानि । उपपत्तेन लोकस्य
द्वयोर्मुख्यकपाटयो तिर्यग्म्लोक्तदेकसमुद्दातेन सर्वलोके स्वस्थानेन लोकस्यासख्येयज्ञागे । कस्मिन् प्रदन्त । सूक्ष्मेज कायिकाना पर्योक्तकानाम
पर्योक्तकाना च स्थानानि प्रज्ञातानि । गौतम सूक्ष्मेज कायिकाना ये पर्याप्तका अपर्योक्तकास्त सर्व एकविधा अविशेषा क्कनाच्चातास्सर्वलोके
पर्योक्तना प्रज्ञातान् अस्मन् आपुप्सन् । कस्मिन् प्र० । वाटरवायुकायिकाना पर्योक्तगाना स्थानानि प्रज्ञातानि ? गो० सप्तसु पनवातेषु सप्तसु घन

इन्नागे । कहिण जते । सुज्जमवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं पज्जत्तगाणं ठाणा प० ? गो० ! सुज्जमवण
स्सइकाइया जे पज्जत्तगा जे अपज्जत्तगा ते सहे एगविहा अविसेसा अनानत्ता सहेल्यपरियावसगा
पसत्ता, समाणाउसो । कहिण जते । वेइटियाण पज्जत्ता पज्जत्तगाण ठाणा पसत्ता ? गोयमा । उहुलोए
तदेकदेसन्नागे, अहोलोए तदेकदेसन्नागे, तिरियलोए अगळेसु तलाएसु नटीसु वावीसु पुक्करणीसु दीहियासु
गुजालियासु सरसु सरपतियासु उज्जरसु निज्जरसु चिह्ललसु पल्ललसु वप्पिणेसु दीवेसु स
मुइसु सवेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु, एखण वेइदियाण पज्जत्तापज्जत्तगाण ठाणा पसत्ता । उववाएणं
लागस्स असखेज्जइन्नागे, समग्घाएण लीयस्स असखेज्जइन्नागे सठाणेणं लीयस्स असखेज्जइन्नागे । कहिणं
जते ! तेइदियाण पज्जत्तापज्जत्तगाण ठाणा पसत्ता ? गोयमा ! उहुलोए तदेकदेसन्नाए अहोलोए तदेक

गौतम । व दरवनरपत्तिकार्यिकाना पर्याप्तकाना स्थानानि तत्रैव वाटरवनरपत्तिकार्यिकानामपर्याप्ता स्थानानि प्रपन्नानि । उपयातेन सर्वलोके स
मुह्यतेन सज्जलके सत्थानेन लोकस्यासयेयन्नागे । कस्मिन्नु भट्ठ । पर्याप्तकानामपर्याप्तकाना च स्थानानि प्रपन्नानि । गौतम । सूक्ष्मवनरपत्ति
कार्यिका ये पर्याप्ता ये अपर्याप्तगास्ते सर्वे एकविधा अविशेषाः अनाद्याताः सर्वलोकपर्याप्तगाः । प्रपन्ना अमणा युष्मन् । कस्मिन्नु जदत्त ह्रीन्द्रि
याणा पर्याप्तापर्याप्तकाना स्थानानि प्रपन्नानि । गौतम । ऊर्ध्वलोके तदेकदेसन्नागे अधोलोके तदेकदेसन्नागे तदग्रेषु तदग्रेषु नदीषु
वापीषु पुष्करणीषु दीर्घिकासु गुञ्जालिकासु सरस्स सर पङ्क्तिकासु उत्तरेषु निम्नरेषु चित्तल्लेषु पल्लवेषु पप्पिणेषु द्वीपेषु स
मुद्रेषु सर्वेषु चैव जलाशयेषु जलस्थानेषु एतेषा ह्रीन्द्रियाणा पर्याप्तापर्याप्तकाना स्थानानि प्रपन्नानि । उपयातेन लोकस्यासयेयन्नागे समुह्यतेन
लोकस्यासयेयन्नागे सत्थानेन लोकस्यासयेयन्नागे । कस्मिन्नु जदत्त ह्रीन्द्रियाणा पर्याप्तापर्याप्तकाना स्थानानि प्रपन्नानि । गौतम । ऊर्ध्वलोके

देसज्ञागे, तिरियलोए अगळेसु तलाएसु वावीसु पुकरणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेंसु सरपतियासु सरसरपतियासु विलपतियासु उज्जरेसु निज्जरेसु चिह्लेसु पल्लेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुहेसु सहेसुचेव जला सएसु जलठाणसु एत्यण तेइदियाण पज्जापज्जाण ठाणा पखत्ता, उववाएण लोयस्स असखेज्जइन्नागे समुग्घाएण लोयस्स असखेज्जइन्नागे सठाणेण लोयस्स असखेज्जइन्नागे । कहिण जत्ते । चउरिदियाण पज्जापज्जाण ठाणा पखत्ता ? गोयमा । उहलोए तदेकदेसज्ञागे, अहोलोए तदेकदेसज्ञागे, तिरियलोए रेसु उज्जरेसु चिह्लेसु पल्लेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुहेसु सहेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु एत्यण चउरि दियाण पज्जापज्जाण ठाणा पखत्ता । उववाएण लोयस्स असखेज्जइन्नागे समुग्घाएण लोयस्स अत्ते खेज्जइन्नागे, सठाणेण लोयस्स असखेज्जइन्नागे । कहिण जत्ते ! पचिदियाण पज्जापज्जाण ठाणा प०

तदेकदेसज्ञागे अचोलोके तदेकदेसज्ञागे तिर्यक्लोके अवटेपु तरांगेपु वापीपु पुकरणीपु दीपिकासु गुज्जालिकासु सरस्सु सर पइत्तिकासु सरस्सर पइत्तिकासु विलपइत्तिकासु उत्तम्भरेपु निम्भरेपु चित्तलेसु पल्लेसु वप्पिणेपु दीपेपु समुद्रेपु सर्वेपु चैव जलाज्ञायेपु जलस्यानपु एतेया त्रीन्द्रियाणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रप्यतानि । उपयातेन लोकस्यासख्येयभागे समुहानेन लोकस्यासख्येयभागे सस्थानेन लोकस्यासख्येयभागे । कस्मि न्न जटल । चतुरिन्द्रियाणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रप्यतानि । गौतम । जल्लोके तदेकदेसज्ञागे अचोलोके तदेकदेसज्ञागे तिर्यक्लोके अवटेपु तरांगेपु वापीपु पुकरणीपु दीपिकासु गुज्जालिकासु सरस्सु सर पइत्तिकासु सरस्सर पइत्तिकासु निम्भरेपु चित्तलेसु पल्लेसु वप्पिणेपु दीपेपु समुद्रेपु सर्वेपु चैव जलाज्ञायेपु जलस्यानेषु एतेया चतुरिन्द्रियाणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रप्यतानि । उपयातेन लोकस्या

ઇન્નાગે । કહિણ જતે ! સુજ્ઞમવળસ્સડકાહયાણં પજ્ઞત્તગાણં અપજ્ઞત્તગાણચ ઠાણા પ૦ ? ગો ૦ । સુજ્ઞમવળ
 સ્સડકાહયા જે પજ્ઞત્તગા જે અપજ્ઞત્તગા તે સદ્દે એગવિહા અવિત્તેસા અનાણત્તા સદ્દેલોચપરિયાવસગા
 પચ્ચત્તા, સમાણાડસો ! કહિણં જતે । વેડદિયાણ પજ્ઞત્તા પજ્ઞત્તગાણ ઠાણા પચ્ચત્તા ? ગોયમા । ઉહ્લોએ
 તદેકદેસનાગે, અહોલોએ તદેકદેસનાગે, તિરિયલોએ અગ્ગેસુ તલાએસુ નટીસુ વાત્રીસુ પુસ્કરનીસુ દીહિયાસુ
 ગંજાલિયાસુ સરેસુ સરપતિયાસુ સરસરપતિયાસુ ડજ્જરંસુ નિજ્જરંસુ ચિલ્લલંસુ પલ્લલંસુ વપ્પિણેસુ ડીવેસુ સ
 મંદંસુ સદ્દેસુચેય જલાસાસુ જલઠાણેસુ, એલ્ય વેડદિયાણં પજ્ઞત્તાપજ્ઞત્તગાણ ઠાણા પચ્ચત્તા । ઉવવાએણં
 લોગસ્સ અસલેજ્ઞાહનાગે, સમગ્ગાએણં લોયસ્સ અસલેજ્ઞાહનાગે સઠાણેણ લોયસ્સ અસલેજ્ઞાહનાગે । કહિણં
 જતે ! તેડદિયાણ પજ્ઞત્તાપજ્ઞત્તગાણ ઠાણા પચ્ચત્તા ? ગોયમા ! ઉહ્લોએ તદેકદેસનાએ અહોલોએ તદેક

[illegible]

देसन्नागे, तिरियलोए अगर्नेसु तलाएसु वावीसु पुस्करणीसु दीहियासु गुजालियासु सरसु सरपतियासु
 सरसरपतियासु विलपतियासु उज्जरेसु निज्जरेसु चिल्लेसु पल्लेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जला
 सएसु जलठाणंसु एत्थणं तेइदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पखत्ता, उववाएण लोयस्स अस्सखेज्जइन्नागे
 समुग्धाएणं लोयस्स अस्सखेज्जइन्नागे सत्ताणेण लोयस्स अस्सखेज्जइन्नागे । कहिण भन्ते । चउरिदियाण
 पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पखत्ता ? गोयमा । उहुलोए तदेकदेसन्नाप, अहोलोए तदेकदेसन्नागे, तिरियलोए
 अगर्नेसु तलाएसु वावीसु पुस्करिणीसु दीहियासु गुजालियासु सरसु सरपतियासु निज्ज
 रेसु उज्जरेसु चिल्लेसु पल्लेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जलासएसु जलठाणंसु एत्थणं चउरि
 दियाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पखत्ता । उववाएण लोयस्स अस्सखेज्जइन्नागे समुग्धाएण लोयस्स अस्स
 खेज्जइन्नागे, सत्ताणेण लोयस्स अस्सखेज्जइन्नागे । कहिण भन्ते । पचिदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प०

तदेकदेशभागे अघोलोके तदेकदेशानां तिर्यक्लोकं अवटेषु तत्रागेषु वापीषु पुष्करणीषु दीर्घिकासु सरस्व सर पङ्क्तिकासु सरस्वर
 पङ्क्तिकासु विलपङ्क्तिकासु वलभरेषु निम्भरेषु चिल्लेसु पल्लेसु वप्पिणेषु दीपेषु समुद्रेषु सर्वेषु चैव जलाशयेषु जलस्थानेषु यतेषां त्रीन्द्रियाणां
 पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रपञ्चयन्ति । उपयातेन लोकस्यासंख्येयभागं समुद्रातेन लोकस्यासंख्येयभागं । कस्मि
 न्न प्रदत्त । अतुरिन्द्रियाणां पर्यापतापर्याप्तानां स्थानानि प्रपञ्चयन्ति । गौतम । कखलोकं तदेकदेशानां अघोलोके तदेकदेशानां तिर्यक्लोकं
 अवटेषु तत्रागेषु वापीषु पुष्करणीषु दीर्घिकासु सरस्व सर पङ्क्तिकासु सरस्वर पङ्क्तिकासु निम्भरेषु वल्लेसु पल्लेसु व
 प्पिणेषु दीपेषु समुद्रेषु सर्वेषु चैव जलाशयेषु जलस्थानेषु यतेषां अतुरिन्द्रियाणां पर्यापतापर्याप्तानां स्थानानि प्रपञ्चयन्ति । उपयातेन लोकस्या

ઇજ્ઞાને ! કહિણ જતે ! સુજ્ઞમવળસ્સડકાડુયાણં પજ્ઞત્તગાણં અપજ્ઞત્તગાણય ઠાણા પ૦ ? ગો ૦ ! સુજ્ઞમવળ
સ્સડકાડુયા જે પજ્ઞત્તગા જે અપજ્ઞત્તગા તે સહે પુગવિહા અવિચંસા અનાણત્તા સહ્લોચપરિયાવસગા
પચ્ચત્તા, સમાણાડસો ! કહિણ જતે ! બેડાદિયાણ પજ્ઞત્તા પજ્ઞત્તગા ઠાણા પચ્ચત્તા ? ગોયમા ! ઉહ્લોપુ
તદેકદેસજ્ઞાને, અહોલોપુ તદેકદેસજ્ઞાને, તિરિયલોપુ અગ્ગેસુ તલાપુસુ નટીસુ વાવીસુ પુસ્કરણીસુ દીહિયાસુ
ગુજાલિયાસુ સરેસુ સરપતિયાસુ સરમરપતિયાસુ ઉજ્જરેસુ નિજ્જરેસુ ચિલ્લેસુ પલ્લેસુ વપ્પિણેસુ ઢીવેસુ સ
મુદ્દસુ સહેસુચેત્ર જલાસપુસુ જલઠાણેસુ, એત્યણ બેડાદિયાણં પજ્ઞત્તાપજ્ઞત્તગાણં ઠાણા પચ્ચત્તા ! ઉવવાપુણં
લોગસ્સ અસંખેજ્ઞાડનાને, સમુદ્ધાપુણં લોચસ્સ અસંખેજ્ઞાડનાને સઠાણેણ લોચસ્સ અસંખેજ્ઞાડનાને ! કહિણ
જતે ! તેહિદિયાણ પજ્ઞત્તાપજ્ઞત્તગા ઠાણા પચ્ચત્તા ? ગોયમા ! ઉહ્લોપુ તદેકદેસજ્ઞાપુ અહોલોપુ તદેક

ગોતમ ! ય દરવનસ્પતિકાધિકાના પર્યાપ્તકાના સ્થાનાનિ તત્રૈવ વાદસ્વનસ્પતિકાધિકાનામપર્યાપ્તા સ્થાનાનિ પ્રજ્ઞમાનિ । ઉપપાતેન સર્વલોકે સ
મુહાતેન સર્વલોકે સ્થાનેન લોકસ્યાસથેયજ્ઞાને । કસ્મિન્નુ ભદન્ત ! પર્યાપ્તકાનામપર્યાપ્તકાના સ્થાનાનિ પ્રજ્ઞમાનિ । ગોતમ ! સૂક્તવનસ્પતિ
કાધિકા યે પર્યાપ્તગા યે અપર્યાપ્તગાસ્તે સર્વે એકવિધા અવિરોધઃ અનાદ્યાતા સર્વલોકપર્યાપ્તગા પ્રજ્ઞમા અમણા યક્ષન્ । કસ્મિન્નુ ભદન્ત હીન્દ્રિ
યાણા પર્યાપ્તાપર્યાપ્તકાના સ્થાનાનિ પ્રજ્ઞમાનિ । ગોતમ ! જલ્વલોકે તદેકદેસજ્ઞાને અધોલોકે તદેકદેસજ્ઞાને તિયક્લોકે, અથટંપુ તદાગેપુ નદોપુ
ધાવીપુ પુષ્કરણીપુ દોષિન્કાસુ ગુજ્ઞાલિકાસુ સરસ્વ સર પદ્ધત્તિકાસુ સર સર પદ્ધત્તિકાસુ સર સર નિર્મલેપુ પલ્લવલેપુ પવ્વલેપુ પવ્પિણપુ દ્વીપેપુ સ
મુદ્રેપુ સર્વેપુ સ્વેવ જલાશયેપુ જલસ્થાનેપુ એતેપા હીન્દ્રિયાણા પર્યાપ્તાપર્યાપ્તકાના સ્થાનાનિ પ્રજ્ઞમાનિ । ઉપપાતેન લોકસ્યાસથેયમાને સમુહાતેન
લોકસ્યાસથેયજ્ઞાને સ્થાનેન લોકસ્યાસથેયજ્ઞાને । કસ્મિન્નુ ભદન્ત હીન્દ્રિયાણા પર્યાપ્તાપર્યાપ્તકાના સ્થાનાનિ પ્રજ્ઞમાનિ । ગોતમ જલ્વલોકે

तमसा ववगयगहचदसूरनरकतजोडसपहा मेदवसापूयरुहिरमंसचिखल्लिहाणलेवणतला अ्सुईवीसा परम
 दुस्मिगधा काऊयगणिवन्तात्ता कक्कफासा दुरहिनासा असुना नरगा असुना नरएसु वेवणाने एत्यण
 नेरडयाण पज्जहापज्जत्ताण ठाणा पक्खत्ता, उववाएण लोयस्स अससेज्जडनागे, समुघाएण लोलस्स अ
 सखेज्जडनागे, सठाणेण लोयस्स असखेज्जडनागे, एत्यण बहवे नेरडया परिवसति काला कालाजासा ग
 नीरलोमहरिसा नीमा उतासणगा परमकरहा वणेण पक्खत्ता, तेण तत्य णिच्च नीया णिच्च तत्या णिच्च
 तसिया णिच्च उच्चिगा णिच्च परमसुत्तसवदनरगजय पच्चुण्णयमाणा विहरति। कहिण जते। रयणप्पन्ना
 पुढवीनेरडयाण पज्जत्ता पज्जहाण ठाणा प० ? अहिण जत। रयणप्पन्नापुढविनेरडया परिवसति ? गो० !
 इमींच रयणप्पन्नाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सवाहत्ताए उच्चिर एण जोयणसहस्ससोगाहिन्ता

दुरप्रसत्यानसत्थिता नित्यात्यकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रमूयंतसुवत्तोतिपमन्ना मेदवसापूयरुहिरमासकंदंमलिपूभानुरापनतला अशुजा विल्ला
 (आभगयिका) परमदुरनिगत्था कपोताग्निवर्णाजा (लोचंयमयाने यादशोमे कपोवणसदुदाजा येपमेव जूता) ककंशस्पर्शा दुर
 ध्यासा अशुजा नरका अशुजाश्च नरक वदना। एतेपु नैरयिकाणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्यानानि प्रद्युप्तानि। उपयातेन लोकस्य असुरेष्य
 भागे समुदयातेन लोकस्यासखेयजाने सत्यातेन लोकस्यासखेयजाने, एतेपु बहवो नैरयिका परिवसन्ति काला कालाजासा गभीरलोमह
 र्या उतासणगा परमकरहा वणेण प्रद्युप्ता। तेन तत्र नित्यजीता नित्यप्रस्ता नित्यप्रसिता नित्यमुद्दिता नित्यपरमाशुमसवदनरकजय पयन
 जूयमाना विहरन्ति। कस्मिन्नु जदन्त रत्नप्रभापूयिर्वीनैरयिकाणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्यानानि प्रद्युप्तानि। कस्मिन्नु जदन्त रत्नप्रभापूयिर्वी
 नैरयिका परिवसन्ति ?। गोतम। एतस्या रत्नप्रभाया मृयिध्यामशीत्युत्तरदासयोजनशतसहस्रबाहुत्यनोपर्येक योजनसहस्रनवाष्ट्याप्रत्येक योजन

? गीयमा ! उहलीए तदेकदेसन्नागे छुहोलीए तदेकदेसन्नागे तिरियलीए छुगरेसु तलाएसु नदीसु दहेसु
वावीसु पुरकरिणीसु दीहियासु गंजालियासु सरसपतियासु सरसपतियासु विलपतियासु उज्जरसु
गिज्जरसु विह्वलेसु पल्लेसु बाप्येसु दीवसु समुदेसु सवेसु जलासएसु जलठाणसु एत्यण पन्विटियाणं
पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पणत्ता, उववाएणं लोयस्स असखेज्जडन्नागे, समुग्घाएण लोयस्स असखेज्जड
न्नागे, सन्नाणं लोयस्स असखेज्जडन्नाग । कहिणं जतं ! नेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पणत्ता ?
कहिणं जतं ! नेरइया परिवससति ? गीयमा ! सन्नाणेण सत्तसु पुठवीसु तजहा-रयणप्पन्नाए सक्करप्पन्नाए
वालुमप्पन्नाए पक्कप्पन्नाए धूमप्पन्नाए तमप्पन्नाए एत्यण नेरइयाण चउरसि निरयावास
सयहस्साइ नवतीति इस्काय, तेण णरगा छुतोवहा बाहिचउरसा छुहे खुरप्पसन्नाणसन्निभा निञ्जथयार

संश्लेषभागे समुद्रघातेन लोकस्यासंश्लेषभागे सन्नानेन लोकस्यासंश्लेषभागे । कस्मिन्नु भटत् । पञ्चन्द्रियाणां पर्यापन्नापर्यापन्नानां स्थानानि प्रश्न
मानि ? । गीतम ऊच्यलोकं तदेकदेशानां अघोलोकं तदेकदेशानां तियल्लोके अथदेपु तडागेपु नदीपु-हदेपु वापीपु पुकरणीपु दीपिकासु गज्जा
लिकासु सरस्सु सर पङ्क्तिकासु सर सर पङ्क्तिकासु विलपङ्क्तिकासु उत्तरपु निगरपु विल्लेपु पल्लेपु धप्येपु हपिपु समुद्रपु सवेपु वैव
जलाशयेपु जलस्थानेपु एतेषां पञ्चन्द्रियाणां पर्यापन्नापर्यापन्नानां स्थानानि प्रश्नयन्तीति । उपघातेन लोकस्यासंश्लेषभागे समुद्रघातेन लोकस्या
संश्लेषभागे सन्नानेन लोकस्यासंश्लेषभागे । कस्मिन्नु भटत् । नैरयिकाणां पर्यापन्नापर्यापन्नानां स्थानानि प्रश्नयन्तीति ? । कस्मिन्नु भटत् । नै
रयिका परिवसन्ति ? । गीतम सन्नानेन सपन्सु पयिक्कीपु । तद्यथा-रत्नप्रभाया वालुकप्रभाया पङ्कप्रभाया धूमप्रभाया तम प्र
भाया तमस्तम, प्रभायाम् एतेषां नैरयिकाणां चतुरशीतिनरकावाचनतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम् । तेन नरका अन्तर्बृत्ता बहिश्चतुरस्या अथ

नरगन्धय पद्मगन्धमाणा विहरति । कहिण ज्ञते । सक्करप्पन्नापुढविनेरइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पसत्ता ? कहिण ज्ञते, सक्करप्पन्नापुढविनेरइया परिवसति ? गोयमा ! सक्करप्पन्नापुढविणु बव्तीसुत्तर जीयणसयसहस्सवाहसाए, उवरि एग जीयणसहस्स उग्गाहित्ता हेठा वेग जीयणसहस्स वज्जित्ता मज्जे तीसुत्तरजीयणसयसहस्स एत्यण सक्करप्पन्नापुढविनेरइयाण पणवीस निरयावाससहस्सा हवतीति मस्कायम् तेण नरगा अत्तो बहा वाहि चउरसा अहे खुरप्पसठाणसठिया णिच्चययारतमसा ववगयगहचदसूरणस्स सज्जोडसपहा मेयवसापूयपल्लरुहिरमसचिस्सिल्लिज्ञाणलेत्रणतला अस्सुईवीसा परमदुस्सिगधा काज्जअगणि वसाज्जा कस्सकफासा दुरिहियासा असुज्जा नरगा असुज्जा नरगेसु वेयणात्त एत्यण सक्करप्पन्नापुढविनेरइ याण पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाणा पसत्ता । उववाएण लोयस्स असखेज्जइज्जागे समुग्घाएण लोयस्स असखे ज्जइज्जागे सठाणंण लोयस्स असखेज्जइज्जागे । तत्यण बहवे सक्करप्पन्नापुढविनेरइया परिवसति । काला

पणिवीनिरयिका परिवसन्ति ? गोतम शकरप्रजापथिस्सा द्वित्रिगुत्तरयोजनज्ञतसहस्रयलायसुपरियेक योजनसहस्रसुदयास्याच एक योजन सहस्र वर्जयित्वा मध्ये त्रिशदुत्तरयोजनज्ञतसहस्रे गतेषु शर्करप्रजापथिवीनिरयिकाणा पब्बविशन्ति निरयावासज्ञतसहस्राणि जयन्तीत्याख्यातम् । तत्र नरका अन्नवृत्ता बह्विधुत्तरा अथ शुरप्रसस्थानसंस्थिता नित्यान्यज्जारतमसा व्यपगतगृहबन्धसूर्यमन्दत्र ज्योतिषयज्जा मन्दवसापूयपटलरुधिर मासकदंमलिमानुलपनतला अज्जुजा विस्सा परमदुरभिगम्या कापूयाग्निवर्णाज्जा फकंशस्पर्शा दुरध्यासा अज्जुभा नरका अज्जुभा नरकेषु वेदना य । गतेषु शर्करप्रजापथिवीनिरयिकाणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रपन्नानि । उपवातेन लोकस्यासख्येयज्जागे समुद्गातेन लोकस्यासख्येयज्जागे सस्थानेन लोकस्यासख्येयज्जागे । तस्मिन्नु बहव शकरप्रजापथिवीनिरयिका परिवसन्ति । काला कालत्रासा गम्भीरनोमरर्पा भीमा उत्तासनका

हेठाचेगं जीयणसहस्रं वज्जिता मज्जे अठ्ठहत्तरिजीयणसयमहस्से एत्यण रयणप्पन्नापुढविनेरडयाणं तीसं
निरयावाससयसहस्रा जवतीति मस्काय, तेण नरगा अतो अहा वाहि चउरसा अहे खुरुप्पसठाणसठ्ठिया
निच्चधयारतमसा ववगयगहचदसूरनकत्तजोडसपहा मेडवसापूडयपठलरुहरिमसचिक्खलित्तानुलेवणतला
असुईवीसा परमदुप्पिगधा काऊअग्गिणिवसाना कक्कणफासा दुरहियासा असुन्ना णरगा असुन्ना नरगेसु वे
दणात्ते एत्यणं रयणप्पन्नापुढविनेरडयाण पज्जत्ता पज्जत्ता पज्जत्ता, उववाएण लोयस्स असखेज्ज
डजागे, समुवाएणं लोयस्स असखेज्जडजागे, सठाणं लोयस्स असखेज्जडजागे । तत्यणं वहवे रयणप्प
न्नापुढविनेरडया परिवसति । काला कालाज्जासा गचीरलोमहरिसा जीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वन्तेण
पस्सत्ता, समणाउसो ! तेणं णिच्चं जीया निच्च तत्या णिच्च तसिया णिच्च उद्धिगा निच्च परममसुन्नसवरु

नसहस्र वर्जयित्वा मध्येऽष्टसप्तति योजनज्ञातसहस्रे एतेषु रत्नप्रजापृथिवीनिरयिकाणा विशालिरयावाशतसहस्राणि जवलीत्याख्यातम् । तेन
नरका अन्तर्गता वास्ते चतुरस्या अथ क्षुद्रप्रस्थानसंस्थिता नित्यान्धकारतमसा व्यपगतगृहचन्द्रसूर्यनवत्रयोतिपद्मा मेदवसापूपपटलरु
धिरमासकदमलिपूनाल्लेपनतला अशुभा विस्त्रा परमदुरन्निगत्या कपोताग्निशर्णांता कर्कशस्पर्शा दुरप्यासा अशुभा नरका नरकापु वेदना
श्च । यतेषा रत्नप्रभापृथिवीनिरयिकाणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञपनानि । उपयातेन लोकस्यासह्ययमाग समुद्घातेन लोकस्यासह्येय
जागे सस्थानेन लोकस्यासह्ययजागे । तत्रनु वहवो रत्नप्रजा पृथिवीनिरयिका परिउसन्ति । काला कालाज्जासा गम्भोरलोमहर्षा जीमा सत्त्वा
सनका परमरुद्रा वर्णेन प्रज्ञपता श्रमणा युप्सन् । तेन नित्य ज्ञोता नित्य व्रत्ता नित्य व्रसिना नित्यमुद्धिता नित्य परमाज्ञासवदुनरक्कजय
पर्यनुपमाना विहरन्ति । कास्मिन्नु जदत्त शर्करप्रजापर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञपनानि । कास्मिन्नु जदत्त शर्करप्रजा

सखेज्जहन्नागे । सन्धानेण लोयस्स अस्सखेज्जहन्नागे । तत्थणं वहवे वालुयप्पन्नापुढवीणेइया परिवसंति
 काला कालान्नासा गन्नीरलोमहरिसा ओमा उत्तासणगा परमकिण्हा वखेण प० समणाउसा । तेण निञ्च
 जीया निञ्च तत्था निञ्च तसिया निञ्च उद्धिगा निञ्च परममसुन्नसवद्ध गरगन्नय पच्चणस्रवमाणा विहरति ।
 कहिण न्नेते । पक्कप्पन्नापुढविणेइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पसात्ता ? गोयमा । पक्कप्पन्नापुढवीए वी
 सुत्तरजोयणसयसहस्सवाहत्ताए उवरि एग जोयणसहस्स उग्गाहिन्ना हेठावेग जोयणसस्स वज्जिन्ना
 मज्जे अठारसुत्तरे जोयणसयसहस्से एत्थण पक्कप्पन्नापुढविनेइयाण दस निरयावासयसहस्सा न्नवतीति
 मस्काय । तेण णरगा अत्तो वहा वाहि चउरसा अहे खुस्सप्पसठाणसठिया निञ्चवयारतमसा ववगयगह
 चदसूरनस्सत्तजोइसपहा मेयवसापूयपफ़लसहिंरमसचिक्खिलित्तणुलेवणतला असुइवीसा परमदुस्सिग्गधा

ना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपवातेन लोकस्यासख्येयभागे, समुद्रातेन लोकस्यासख्येयभागे । तस्मिन् बहव वालु
 क्रमपृथिवीनैरयिका परिवसन्ति । काला कालाभासा गन्नीरलोमहरिणी जीमा उत्तासतका परमकिण्हा वर्णेन प्रज्ञप्ता अमणायुस्सन् । तेन
 निहयन्तीता निहयन्नत्ता निहय त्रिसिता नित्यमुद्दिग्गता निहय परमाञ्जुन्नसउह तरकन्नय पयननूयमाना विहरन्ति । कस्मिन् प्रदत्त । पक्कप्पन्नापि
 वीनैरयिकाणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? । गीतम् । पक्कप्पन्नापिअथा विज्ञायुत्तरगोजनज्ञातसहस्सवहुलायामुपरि एक योजनसहस्स
 मुद्द्याद्याय पक्क योजनसहस्स वर्जयित्वा भय्ये अष्टादशोत्तरे योजनज्ञातसहस्से यत्तेषु पक्कप्पन्नापि वीनैरयिकाणा दशानिरयावास ज्ञातसहस्साणि त्रय
 त्तीत्याख्यातम् । तेन नरका अन्तर्वृत्ता याइयत्तुरत्ता अथ क्षुरमसस्थानसंस्थता नित्याव्यकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रसूयनक्षत्रज्योतिषप्रकाशा मे
 दधसापूयपटलसधिरमासकर्मलिसानुलेपनतला अञ्जुभा विद्या परमदुरजिगत्था कापूयानिवर्णोत्ता कर्कशपरशो दुरत्तया अञ्जुभा नरका अञ्जु

कालाञ्जासा गत्रीरलोमहरिसा श्रीमा उत्तांसगगा परमकिरहा वखेणं पखत्ता । समणाउसी ! तेणं निच्चं नीता
 निच्च तत्या । निच्चं तसिया निच्च उद्धिगा निच्च परममसुन्नसवहु नरगन्नय पच्चणुप्पवमाणा विहरति । कहिणं
 न्तं । बालुयप्पन्नापुढवीणेरइयाण पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा पखत्ता ? गोयमा । बालुयप्पन्नापुढवीए अठ्ठा
 वीसुत्तरजीयणसयसहस्सवाहत्ताए उवरि एग जीयणसहस्स उग्गाहिता हेठा वेगजीयणसहस्सं वज्जित्ता मज्जे
 ठव्वीसुत्तरजीयणसयसहस्से एत्थण बालुयप्पन्नापुढविणेरइयाण पखरसनिरयावासयसहस्सा नवतीति मरका
 य । तेण नरगा अतो बहा वाहिं चउरसा अहे खुरप्पसठाणसठिया निच्चंघयारतमसा ववगयगहचंदसू
 रणखत्तजोइसपहा मेयवसापूयपफलरुहिरमसचिक्खिलिन्नाणलेवगतला असुईवीसा परमदुस्सिगधा काज
 अगणिवखाजा कखकफासा दुरहियासा असुन्ना नरगा असुन्ना णरएसु वेयणा एत्थण बालुयप्पन्नापुढवीणे
 रइयाण पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा पखत्ता । उववाएण लोयस्स असखेज्जाइजाणे । समग्घाएणं लोयस्स अ

परमकप्पा वण्णेन प्रज्ञप्ता अमणायुक्कन् । तेन नित्यनीता नित्यव्रत्ता नित्य वसिता नित्यमुद्दिता नित्य परमाशुनसवहुनरकमय पर्यनुन्नू
 माना विहरन्ति । अस्मिन् प्रदन्त । बालुकप्रभपृथिवीनैरयिकाणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गोतम बालुकप्रभपृथिव्यामष्टाविंश
 द्युत्तरयोजनज्ञातसहस्रबहुलायामुपरि एक योजनसहस्रमुद्राग्राधक योजनसहस्र वर्जयित्वा मध्ये पृथ्विःशतयुत्तरयोजनज्ञातसहस्रे सृतेषु वा
 लुकप्रभपृथिवीनैरयिकाणा पञ्चदशानिरयावासज्ञातसहस्राणि प्रवर्त्तयित्वा मध्ये तन नरका अन्तर्वृत्ता बाह्ये चतुरस्त्रा अथ चतुरस्रस्थानसंस्थि
 ता नित्यान्धकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रयोतिषप्रकाशा भेटवसापूयपटलरुधिरमाषकर्मलिप्तानुलेपनतला अशुन्ना विस्त्रा परमदुरन्नि
 गत्या कापयाग्निवर्धना कर्कशस्पर्शा दुरध्यासा अशुन्ना नरका अशुन्ना नरकेषु वेदना । एतेषु बालुकप्रभपृथिवीनैरयिकाणा पर्याप्तापर्याप्ता

तुजोइसपहा मेयवसापूयपकलसहिरमसचिस्कलित्ताणुलेवणतला असुईवीसा परमदुझिगधा काऊअण्णि
 वसुन्ना करकफासा दुरहियासा असुन्ना नरगा असुन्ना नरगेसु वेयणाने एत्यण धूमप्पन्नापुढविनेरइयाण
 पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पसत्ता । उववाएण लीयस्स असखेज्जइन्नागे, समुग्घाएणं लीयस्स असखेज्जइ
 न्नागे, सठाणेण लीयस्स असखेज्जइन्नागे तत्थण वहवे धूमप्पन्नापुढविनेरइया परिवसत्ति काला कालान्नासा
 गतीरलीमहरिसा नीमा उत्तासणगा परमकिग्घहा वसुण पसत्ता समणाउसो । तेण णिच्च नीया निच्च तत्था
 निच्च तत्तिया निच्च उद्धिग्गा निच्च परमसुन्नसवन्नरगज्जय पच्चणप्पवमाणा विहरति । कहिणं ज्ञते । तमा
 पुढविनेरइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पसत्ता ? गोयमा । तमापुढवीए सोलसुत्तरजीयणसयसहस्सच्चाह
 त्ताए उवरि एग जीयणसहस्स उग्गाहिता हेठावेग जीयणसहस्स वज्जित्ता मज्जे चोइसुत्तरे जीयणसहस्स

ता नित्यान्धकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योतिषप्रज्ञा भेदवसापूयपटलरुधिरमासकदेर्मलिसानुलेपनतला अशुजा विज्ञा परमदुरभित्था
 कापूयानिवर्णभा कर्कशरपशो अशुजा नरका अशुजा नरकेषु वेदनाश्च । एतेषु धूमप्रज्ञपृथिवीनिरयिकाणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्ता
 नि । उपधातेन लोकस्यासख्येयज्ञागे समुद्घातेन लोकस्यासख्येयज्ञागे सस्थानेन लोकस्यासख्येयज्ञागे । तत्रानु वहवो धूमप्रज्ञपृथिवीनिरयिका परिब
 वसिता नित्यमुद्धिग्गा नित्यपरमाशुभसवद्वनरकजय पयमूत्रयमाना विहरन्ति । कस्मिन्नु ज्ञदन्त । तम प्रज्ञपृथिवीनिरयिकाणा पर्याप्तापर्याप्ताना
 स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गीतम । तम पृथिव्या पोकुशुत्तरयोजनशतसहस्रबहुलायामुपरि एक योजनसहस्रमुद्गहीत्वाच एक योजनसहस्र वजोयि
 त्या मध्ये चतुदशोत्तरे योजनसहस्रे एतेषु तम प्रज्ञपृथिवीनिरयिकाणामेकस्मिन्पञ्चोत्तरे नरकावासशतसहस्रे प्रवन्तीत्याख्यातम् । तेन नरका अन्त

काऊयगणिवसाना कक्कफासा दुरहियासा अस्सुना नरगा अस्सुना नरगेसुवेयणाते एत्थण प्पंकप्पन्नापुढवि
णेइयाण पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पणत्ता । उववाएण लोयस्स अस्सखेज्जडन्नागे, समुग्घाएणं लोयस्स
अस्सखेज्जडन्नागे, सठाणेण लोयस्स अस्सखेज्जडन्नागे तत्थण वहवे पक्कप्पन्नापुढविणेइया परिवसति, काला
कालान्नासा गन्तीरलोमहरिसा न्नीमा उत्तासणगा परमकण्हा वखेण पणत्ता समणाउसो । तेणं निच्चं न्नीया
निच्च तत्था निच्च तसिया निच्च उद्धिगा निच्च परममसुन्नसवद्धं नरगज्जय पच्चणवमाणा विहरति । कहि
ण न्ते ! धूमप्पन्नापुढविनेइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पणत्ता ? गोयमा ! धूमप्पन्नापुढवीए अठा
रसुत्तरजोयणसयसहस्सवाह्लाए उवरि एग जोयणसहस्स उग्गाहिता हेठा वेग जोयणसहस्स वज्जिन्ना मज्जे
सोलसुत्तरे जोयणसयसहस्से एत्थणं धूमप्पन्नापुढवीणेइयाण तिणि निरयावाससयसहस्सा हवतीतिमक्काय
तेण नरगा अत्तो वह । वाहि चउरसा अहे खुस्सपसठाणसठिया निच्चधयारतमसा ववगयगहचंडसूरनक्क

भा नरकेणु वदता एतेणु पङ्कममा पृथिवीनैरियिकाणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपवातेन लोकस्यासख्येयानां समुद्घातेन लोकस्या
सख्येयानां सस्थानेन लोकस्यासख्येयानां । तत्रनु यएव पङ्कमजपृथिवीनैरियिका परिवसन्ति । काला कालान्नासा गन्तीरलोमहर्षी न्नीमा उ
त्तासनका परमकण्हा वखेण प्रज्ञप्ता अमणायुप्पन् । तेन नित्य प्रीता नित्यव्रता नित्यं त्रसिता नित्यमुद्दिग्ता निरय परमाज्ञानसवदनरकज
य पर्यनुजयमाना विहरन्ति । कस्मिन्नु प्रदन्त । धूमप्रजपृथिवीनैरियिकाणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? । गीतम । धूमप्रजाया पृथि
व्यामष्टादशोत्तरयोजनज्ञातसहस्रशुलायामुपरि एक योजनसहस्रमुद्गृहीत्वा एक योजनसहस्र वर्जयित्वा मध्ये पोटशुत्तरे योजनज्ञातसहस्रे ए
तेणु धूमप्रभपृथिवीनैरियिकाणा त्रीणि निरयावासज्ञातसहस्राणि प्रवर्त्तीत्याख्यातम् । तन नरकात्कर्तृता वाइशुत्तरस्त्रा अथ दुरप्रसस्यानसत्स्थि

हेठाचि अद्भुतवशजोयणसहस्र वज्रिज्ञा मज्जे तिखिजोयणसहस्रेषु एत्यणं तमतमापुढवीणेरडयाणं पज्जा
त्तापज्जात्ताण पचदिस्सि पच अणुत्तरा महडमहालगा महानिरया पसुत्ता, तजहा—काले महाकाले शेरुए म
हारीरुए अपडठाणे, तेण नरगा अतो वहा वाहि चउरसा अहे खुरप्पसठाणसठिया निच्च धयारतमसा
ववगयगहचटसूरनस्कत्तजोडसपहा मेयपूयवसारुहिरमसपलचिक्कल्लित्ताणुलेवणतला असुईथीसा परमटु
प्रिगधा कक्कफासा दुरहिधासा असुत्ता नरगा असुत्ता नरगेसु वेदनानु एत्यण तमतमापुढविनेरडयाण
ठाणा पन्तता, उववाएण लोयस्स असखेज्जइजाए समग्वाएण लोयस्स असखेज्जइजाए सठाणेण लोयस्स
असखेज्जइजाए तल्यण वहवे तमतमापुढविनेरडया परिवसति काला कालाज्ञासा गभीरलोमहरिसा जीमा
उत्तासणया परमकिण्हा वत्तेण पन्तता समणाउसी। तेण निच्च जीया णिच्च तत्या निच्च उद्धिगा निच्च
परममसुन्नसवद्ध नगरत्तय पच्चणुप्लवमाणा विहरति ॥ असीतवत्तीस अठावीसचहोइवीसच । अठारससो

संस्थाणुदुग्घीत्वाधोपि अद्भुतपञ्चाशद्योजनसहस्राणि वर्जयित्वा मध्ये त्रियोजनसहस्रेषु एतपू तस्तम पृथिवीनैरयिकाणा पयोमापयो
माना पञ्चदशपञ्चानुहारा महामहालया महानिरया प्रज्ञा तस्या—काले महाकाले शेरवे अप्रतिसादे। तेन नरका अन्तर्गता य
हियनरखा अय क्षुरमसस्थानसंस्थिता नित्यान्वकारतमसा अयगतगृहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योतिषप्रज्ञा मेदपूयवसारुधिरमासपलकदंमलिमानुलेपनत
ता अज्ञाना विस्त्रा परमदुरनिगत्या कर्कशस्पशो दुरत्यया अज्ञाना नरका अज्ञाना नरकेषु वेदनाद्य, एतपू तस्तम पृथिवीनैरयिकाणा स्थानानि
प्रज्ञासन्ति । उपपातेन लोकस्यासद्येयज्ञाने समुद्भातेन लोकस्यासद्येयमाने संस्थानेन लोकस्यासद्येयज्ञाने तत्रानु यत्तस्तमस्तम पृथिवीनैरयिका
परिवसन्ति काला कालाज्ञासा गभीरलोमहर्षो जीमा उत्तासनका परमरुक्ता, वर्ज्येन प्रज्ञा अमणायुसन् । तेन नित्य मीता नित्य वस्ता नि

एत्यणं तमप्पन्नापुढविणेरइयाणं एणं पंचूणे नरगायाससयसहस्से हवंतीति मस्कायं, तेणं नरगा झुंती बहा
 बाहि चउरसा झहे खुरप्पसठाणसठिया निच्चधयारतमसा ववगयगहचदसूरनखत्तजोडसपहा मेदवसापूय
 पढलरुहरिमंसचिखिल्लित्ताणुलेवणतला झसुडंवीसा परमदुस्सिगंधा कक्कफासा दुरहियासा झसुन्ना न
 रगा झसुन्ना नरगेसु वेयणानु एत्यणं तमापुढविणेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पस्सत्ता, उववाएणं
 लोयस्स झसखेज्जइन्नागे समुग्घाएण लोयस्स झसखेज्जइन्नागे सठाणेण लोयस्स झसखेज्जइन्नागे, तत्यण
 बहवे तमप्पन्नापुढीणेरइया परिवसति काला कालाच्चासा गंभीरलोमहरिसा जीमा उन्नासणगा परमकिण्हा
 वस्सेण पस्सत्ता समणाउसो । तेण निच्च जीया निच्चं तत्या निच्च तसिया निच्च उच्चिग्गा निच्चं परममसुन्नसंबहु
 नरगन्नय पच्चणुस्सवमाणा विहरति । कहिणं जेतं । तमतमापुढविणेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा प०,
 ? गोयमा ! तमतमापुढवीए झुत्तरजोयणसयसहस्सचाहत्ताए उवरि झुत्तवस्सजोयणसहस्साइ उग्गाहिस्सा

वृत्ता बहिश्चतुरला अप्य हुरप्रस्थानसंस्थिता नित्यान्धकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रमयनक्षत्रज्योतिषप्रज्ञा मेदवसा पूयपटलरुधिरमासजदंमल्लिमा
 नुलेपनतला अशुजा विष्ठा । परमदुरजिगम्या कक्कशास्पदो दुरत्यया अशुजा नरका अशुजा नरकपुष्पेदना एतेषु तम प्रज्ञपृथिवीनिरयिकाणा पर्या
 णापर्याप्ताना स्यान्तीति प्रज्ञप्ति । उपपातेन लोकस्यासख्येयभागे समुद्गातन लोकस्यासख्येयभागे सस्यानेन लोकस्यासख्येयभागे तत्रनु बहवस्त
 म प्रज्ञपृथिवीनिरयिका परिवसन्ति काला. कालानासा गम्भीरलोमहर्यो जीमा उरत्तासुनका परमरुणा वर्णेन प्रज्ञप्ता यमणायुस्सन् । तेन नि
 रयनीता नित्यवृत्ता नित्यवृत्तिता नित्यमुद्दिग्गना नित्य परमाशुन्नसबहु नरकजय पर्यन्तयमाना विहरन्ति । कास्सिनु भदन्त । तमस्तम पृथिवी
 निरयिकाणा पर्याप्ताना स्यान्तीति प्रज्ञप्ति ? । गोयम । यमस्तम. पृथिव्यामष्टोत्तरयोजनक्षतसहस्रबहुलायामुपरि कद्वेविपन्नाशो जन

हेठावि अद्देवसुजोयणसहस्स वज्जिहा मज्जे तिसिजोयणसहस्सेसु एत्यणं तमतमापुढवीणेरडयाणं पज्जा
त्तापज्जत्ताण पचदिसि पच अणुत्तरा महडमहालगा महानिरया पयत्ता, तजहा-काले महाकाले रोरुए म
हारोरुए अपड्डाणे, तेण नरगा अतो वहा वाहि चउरसा अहे खुरप्पसठाणसठिया निच्च धयारतमसा
ववगयगहचदसूरनकत्तजोडसपहा मेयपूयवसारुहिरमसपलचिक्खलित्ताणुलेवणतला असुइवीसा परमटु
अग्निगधा कक्कफासा दुराहेगासा असुत्ता नरगा असुत्ता नरगेसु वेदनानु एत्यण तमतमापुढविनेरडयाणं
ठाणा पन्तहा, उववाएण लोयस्स असखेज्जडचाए समग्घाएण लोयस्स असखेज्जडचाए सठाणेण लोयस्स
असखेज्जडचाए तत्यण वहवे तमतमापुढविनेरडया परिवसति काला कालाभासा गम्भीरलोमहरिसा नीमा
उत्तासणया परमकिण्हा वन्नेण पन्तहा समणाउसो। तेण निच्च जीया णिच्च तया निच्च उड्डिगा निच्च
परममसुजसवद्ध नगरत्तय पच्चुण्णवमाणा विहरति ॥ असुतीतवतीस अथावीसचहोइवीसच । अठारससो

सहस्राणुदुहरीत्वाधोपि अद्धन्निपब्बाशद्योजनसहस्राणि यजयित्वा मध्ये त्रियोजनसहस्रेषु यतपु तमस्तम पयिधीनिरयिकाणा पयोमापया
माना पब्बदशपब्बानुत्तरा महामहालया महानिरया प्रद्यप्ता तद्यथा-काले महाकाले रोरवे मणारीरवे अप्रतिष्ठाने, तेन नरका अन्तवृत्ता य
हिद्यनरस्ता अथ शुरमसस्यानसत्थिता नित्यान्वकारतमसा व्यपगतशुद्धन्दुर्यनवाज्योत्तिथप्रज्ञा मंदपुयवसारुधिरमासपलकंदमलिमानुलेपत
ला अज्ञाना विस्वा परमदुरजिगत्था कर्कशक्षणां दुरत्यया अज्ञाना नरका अज्ञाना नरकेषु वेदनाश्च, यतपु तमस्तम पयिधीनिरयिकाणा स्यान्नि
प्रद्यप्तानि । उपपातेन लाकस्यासुरयेयज्ञाने समुद्भूतेन लोकास्यासुरयेयभागे सस्यानेन लोकस्यासुरयेयभागे तज्जु वहवस्तमस्तम पयिधीनिरयिका
परिवसन्ति काला कालाभासा गम्भीरलोमहर्षां नीमा उत्तासनका परमरुद्धा, वर्णेन प्रद्यप्ता अमणायुसन् । तेन नित्य मीता नित्य वस्ता नि

लसग अथुत्तरमेवहेठिमया ॥ १ ॥ अथुत्तरंचवत्तीस लक्षीसचेवसयसहस्सतु अठारससोलसग चोदससहिंयं
तुलठीए । अथुत्तेवन्नसहस्सा उवरिमहोवज्जिऊतोअणिय । मज्जेउतिसुसहस्से सुहोतिनरगतमतमाए । तीसा
यपन्नवीसा पन्नरसदसेवसयसहस्साइ । तिनियपचूणेग पंचेवअणुत्तरानरगा ॥ ४ ॥ कहिण भते । पचिं
दियतिरिस्कजोणियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा प० ? गो० ! उहुलोए तदेकदेसनाए अहोलोए तदेकदेस
नाए तिरियलोएसु अगळेसु तलाएसु नदीसु दहेसु वावीसु पुक्करिणीसु दीहियासु गुजालियासु सरेंसु स
रपतियासु सरसरपतियासु विलपतियासु उज्जरेसु निज्जरेसु चिल्लेसु पल्लेसु वप्पिणेसु दीविसु समुंदेसु स
हेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु एस्य पचिदियतिरिस्कजोणियाणं पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प० । उववा
एण लोगस्स असखेज्जइन्नागे । समुग्घाएण लीयस्स असखेज्जइन्नागे । सठाणेणं लीयस्स असखेज्जइन्नागे ।

त्यमुद्विगता नित्य परमाशुभसंबद्ध नरकभय पर्यनुभूयमाना विहरन्ति । अशीतिहोत्रिंशत् अष्टाविंशतिवत्सलीच । अष्टादश षोडशकमष्टोत्तरमेवा
योधिमया ॥ १ ॥ अष्टोत्तरं ह्योत्रिंशत् पट्विंशतिशतसहस्रतु ॥ अष्टादश षोडशक चतुर्दशसहितं तु पट्विंशत् । अर्धत्रिपञ्चाशत्सहस्रं मुपरि
महोवज्जि उतो मणितम् । मध्येतुत्रिपुसरस्त्रे पुनर्वत्तिनरकास्तमस्तमस ॥ त्रिंशत्चपञ्चविंशत् पञ्चदशैवशतसहस्राणि । श्रीणिषपञ्चोन्नैक पञ्चैवा
नृत्तरानरका ॥ ४ ॥ कस्मिन् जदत्त । पञ्चन्द्रियतिर्यक्योनिकाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? गौतम । ऊर्ध्वलोके तदेकदेशानगे
अधोलोके तदेकदेशानगे तिर्यक्लोकेषु अवटेषु तडागेषु नदीषु इदेषु वापीषु पुष्करणीषु दीर्घिकासु गुज्जालिकासु सरस्सु सर पट्टक्तिकासु सर
सर पट्टक्तिकासु विलपक्तिकासु वत्थरेषु निम्नरेषु चिल्लवलेषु पल्लवलेषु जलस्थानेषु एतेषु पञ्चन्द्रियतिर्यक्यो
निकाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि, उपवातेन लोकस्यासंख्येयमागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयमागे सस्यानेन लोकस्यासंख्येयमागे ।

कहिण जते । मणस्साणं पज्जतापज्जत्ताण ठाणा पं० । अतो मणस्सखित्ते पणयालीसाए जोयणसयसह
 रसेसु अहार्इजेसु दीवसमुहेसु पत्तरससु कम्मज्जमीसु तीसाए अकम्मज्जमीसु तप्पन्नाए अतरदीवेषु एत्यणं
 मणस्साण पज्जतापज्जत्ताण ठाणा पं० । उववाएण लोयस्स असखेज्जइज्जागे समुग्घाएण सव्वलोए सठाणे
 ण लोयस्स असखेज्जइज्जागे । कहिण जते । जवणवासीण देवाण पज्जतापज्जत्ताण ठाणा पं० ? कहिणं
 जवणवासीदेवा परिवसति ? गो० । इमीसं रयणप्पन्नाएपुठवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सवाहसाए उ
 वरि एण जोयणसहस्स उग्गाहित्ता हेठाचेण जोयणसहस्स यज्जिहा मज्जे अठुत्तरिजोयणसयसहस्स ए
 त्यण जवणवासीदेवाण पज्जत्तापज्जत्ताण सत्तजवणकीणीउ वावत्तरिच जवणावाससयसहस्सा हवतीति
 मरकाय, तेण जवणा वाहि वह। अतो समचउरसा अहे पुक्करकन्नियासठाणसठिया उकिस्सतरविउलगं

कस्सिन् जदत्त । मनुष्याणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । अन्तर्मेनुष्यकुत्रे पञ्चचत्वारिंशत्तमेषु योजनशतसहस्रेषु सार्द्धद्वेषु द्वीपसमुद्रेषु
 पञ्चदशसु कर्मजूमिषु त्रिंशदकर्मजूमिषु षट्पञ्चाशदन्तरहीणिषु यतेषु मनुष्याणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपवातेन लोकस्यासख्येय
 ज्ञाने समुद्रातेन लोकस्यासख्येयभागे सत्त्वानेन लोकस्यासख्येयभागे । कस्सिन् जदत्त । जवनवासिना देवाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि
 कस्सिन् जदत्त । जवनवासिनो देवा परिवसन्ति ? गौतम । एतस्या रत्नप्रज्ञपणियव्यामशीत्युत्तरयोजनशतसहस्रबहुलायामुपर्येक योजनसहस्रमुद्गु
 णीत्याथस्तादेक योजनसहस्र वज्रयित्वा मध्येऽएवमस्ति योजनशतसहस्रमेतेषु जवनवासिदेवाना पर्याप्तापर्याप्ताना समजवनकोट्या द्विसप्ततिजव
 नशासशतसहस्राणि जवनतोत्याख्यातम् । तेन जवनानि वास्यतो वृत्तानि अन्त समचतुरस्त्राणि अथ पुक्करकिंकासस्थानसंस्थितानि उत्तकीर्णानि
 रावपुलगम्भीरसतपरिस्त्रानि प्राकाराहालककपाटोरणप्रतिहारदेशभागानि यन्त्रशतम्रीजुशुण्डीपरिवारितानि आयोध्यानि सदामानि सानि

श्रीरखातफलिहा पागारहालयकवाक्रतोरणपद्मिदुवारदेसन्नागा जंतसयग्धिमुसंठिपरिवारिया अउज्जा सयाज
 या सया अज्जेया सदा गुहा अक्रयालकोठरइया अक्रयालकवयणमाला खेमा सिवा किंकरा मरुक्रोवररिक्
 या लाउल्लोइयमहिया गोसीससरसस्तचदनदहरदिन्तपचगुलितला उवचियचटणकलत्ता चटणघक्रसुकयतो
 रणपद्मिदुवारदेसन्नागा आसत्तोसत्तविउलत्रहवग्धारियमल्लदामकलावापचवन्नसरससुराजिमक्रुपुफ्फुंजोवया
 रकलिया (ग्र११००) कालागुरुपवरकुटुक्रुत्तुरुक्कधूमधमघतगधुठुत्ताजिरामा सुगंधवरगधगंधिया गंधव
 हीन्नुया अक्करगणसघसकिन्ना दिव्वुत्तुक्रुयसदुसपन्नादिता सहरयणमया अक्का सरहा लरहा घठा मठा
 णीरया निम्मला निप्पका निक्कक्रुक्काया सप्पन्ना ससिरिया सउज्जोया पासादोया दरिसणिज्जा अज्जिरू
 वा पद्मिदुवा एत्थणं नवणवासीण देवाण पज्जतापज्जत्ताणं ठाणा प० । उववाएण लोगस्स अउसंखेज्जइ

सदाज्ञेयानि सदा गुप्तानि अष्टवत्वारिंशत्कोष्टकरचितानि अष्टवत्वारिंशद्वलयालानि क्षेमाणि शिवाणि किङ्करामरदशकृतीपरक्षितानि लात
 स्त्रोत्रय (सेटिकागोमयादिभिस्त्रैपनसमृष्टीकरण) महितानि गोशीपसरसक्तचन्दनदंरदत्तपञ्चाहुलितलानि उपचितचन्दनमलशानि चन्दनच
 दसुकृततोरणप्रतिद्वारदेशज्ञानानि आसक्तोत्सक्तविपुलवृत्तप्रार्थालय (प्रलम्ब्यन) मात्यदामकलापानि पञ्चवर्णसरससुरभिमुक्तपुष्पपुञ्जोपधारक
 लितानि कालागुरुप्रवरकुन्दरुक्तरुक्मघमघमघयमानगन्धोद्भूतानिरामाणि सुगन्धवरगन्धग्रन्थितानि गन्धवर्तितैत्रतानि अष्टरोगणस्यसकोशांनि
 दिव्यद्वुदितशब्दसम्प्रणादितानि सर्वरत्नमयानि शृङ्खलानि घृष्टानि मुष्टानि नीरजांसि निकंपानि निकषटकञ्छायाणि सप्रज्ञाणि समरीची
 नि सोष्टोतानि प्रसादीयानि दर्शनीयानि अभिरूपाणि प्रतिकूपाणि मत्तेषु व्रजनवासिना देवाना पर्याप्तापर्योप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उप
 वातेन लोभस्यासत्येयज्ञाने समुद्भातेन लोभस्यासत्येयज्ञाने सत्यानेन ताकस्यासत्येयज्ञाने तत्रनु वद्मो भयनवासिदेवा परिवसन्ति । तद्यथा-

ज्ञागे समुष्वाएण लीयस्स अस्संखेज्जइन्नागे सठाणेणं लोगस्स अस्संखेज्जइन्नागे तत्थणं वहवे जवणवासीदे
 वा परिवसति त-असुरानागसुवन्ता विज्जुअग्गीयदीवउहीय । दिसिपवणयणियणामा दसहाएएअवण
 वासी ॥ चूळामणिमउरयणन्नसणा फणिगसुलवडरपुण्णकलसकिउफेसा सीहमगरमयंकअस्सवरवध्दमाणनि
 जुत्तचिन्तचिधगता सुरुवा महिहिया महज्जुतिया महायसां महावला महाणन्नावा महासोस्का हारविंरंड
 यवत्या कठगत्तुक्रियथन्नियन्नुया अगदकुलमठगठतलक्खपीढधारी विचिन्तहत्यान्नरणा विचिन्तमालामउ
 लिमउळा कल्लाणगपवरवत्यपरिहया कल्लाणगपवरमल्लानुलेवणधरा ज्ञासुरवोदी पलंवणमालधरा दिव्वेणं
 वस्सेण दिव्वेण गधेण दिव्वेण फासेण दिव्वेण सवयणं दिव्वेण सठाणं दिव्वाए डहीए दिव्वाए जुत्तीए
 दिव्वाए पन्नाए दिव्वाए च्छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेण तेएण दिव्वाए लेस्साए दसदिसाउ उज्जीवेमाणो

असुरनागसुपर्णो विद्युदग्निहीपोदधय । दिक्षापवनस्तनिदास्या दग्नेतेभवनवासिनीक्षेया ॥ १ ॥ चूळामणिमुकुटरवज्रपूणा फणागठवज्रपूणे
 कलशाङ्कितमुकुटा । सिंहाद्यगजवरमाणिक्य बहुमाननियुक्ताद्यवचक्रपरा ॥ २ ॥ सुरूपासदधिंका मराद्युतिका मरायडा मरावला महानुजावा
 महेश्वरा हारविराजितवज्रस कटकट्टितस्तम्भितजुजा अङ्गदकुलमठगठतलक्खपीढधारिणी विचित्रमालामोलिमण्डला कल्याणरूपधरवस्त्रपरि
 हिता कल्याणरूपधरमाल्यानुलेपनधरा ज्ञासुरवोन्द (शरीर) यो प्रलम्ब्यनमालाधरा दिव्येन वर्णेन दिव्येन स्पर्शेन दिव्येन सहननेन
 दिव्येन सस्थानन दिव्यया दृष्ट्या दिव्यया युक्त्या दिव्यया प्रमथा दिव्यया व्यायया दिव्यया द्युत्या दिव्येन तेजसा दिव्यया लेखयया (देहवर्णयुन्दरत
 या) दशादिशासूद्योतमाना प्रकाशमाना तेन तत्र साण २ (वाक्पालङ्कारे) भवनवासिज्ञातसदस्त्राणा साण २ सामानिकसदस्त्राणा साण २ वय
 स्त्रियता साणं २ लोकपालाना साण २ अग्रमहिषीणा साण परियदा साण अचिकारिणां मधिकारियतीना साण आयरददेवसदस्त्राणा मन्थे

पन्नासेमाणा तेषं तस्य साणं २ नवगवाससयसहस्राणं साणं २ सामाणियसाहस्रीणं साणं २ तोयन्तीसाणं
 साण २ लोगपालाण साणं २ अगमहीसीणं साणं २ परियाणं साणं २ अणीयाणं साणं २ अणियाहिचईणं
 साणं २ आयरस्कदेवसाहस्रीणं अन्नेसिच बल्लणं नवणवासीणं देवाणंय देवीणय अहेवच्च पोरेवच्च सा
 मित्त न्हित्त महत्तरगत्तं अणार्इसरसेणावच्च कारेमाणा पालेमाणा महयाहयनहुगीयवाइयततीतलतालतुकि
 यघणमइगपठुप्पवाइयरवेण दिट्ठाइ नोगन्नोगाइ नुंजमाणा विहरति । कहिणं नते ! असुरकुमाराण दे
 वाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पयससा २ कहिणं नते ! असुरकुमारादेवा परिवसंति २ गीयमा ! इमीसे
 रयणप्पन्नाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सवाहल्लए उवरि एग जोयणसहस्सं उग्गाहिन्ता हेठावेगं
 जोयणसहस्स वज्जिन्ता मज्जे अठहत्तेरे जोयणसयसहस्से वाहल्लए एत्थण असुरकुमाराणं देवाणं चोवठि
 नवणावाससयसहस्सा नवतीति मस्काय, तेण नवणा वाहि बहा अतो चउरसा अहे पुक्करकसियासंठा
 णसंठिया किन्नतरविउलगन्नीरस्कायफलिहा पागारहालयकवाफुत्तोरणपण्डितुवारदेसन्नागा जतसयग्घिमुस

या च बहूना नवनवासिना देवाना देवीनामाचिपत्य स्वामित्वं ब्रूवन्त महत्तराङ्गत्वमाद्भैश्वसेनापत्यं कारयमाणा पालयमाना मरुताहवृत्त
 गीतवादित्रतत्रीतलतालब्रुटितघनशृङ्गपटुप्रवादित रवेणदिव्यानि प्रोगन्नोगानि भुञ्जमाना विहरन्ति । कस्मिन् ब्रदन्त ! असुरकुमाराणा देवाना
 पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि २ कस्मिन् ब्रदन्त ! असुरकुमारादेवाः परिवसन्ति गीतम् । एतस्या रत्नप्रज्ञाया पृथिव्यामशीत्युत्तरयोजनश
 तसहस्रबहुलायामुपर्यङ्गयोजनसहस्रमुद्गृहीत्वा ऽयस्तादेक योजनसहस्रं वर्जयित्वा मध्ये ऽष्टसप्ततियोजनशतसहस्रबहुलायाम् गतेषु असुरकुमारा
 णा देवानां चतुर्विंशतिनवनवाससहस्राणि नवन्तीत्याख्यातम् । तेन भवन्ति वहिर्वृत्तानि अन्तश्चतुरस्राणि मध्ये पञ्चकण्टिकासंज्ञानि

लमुसतिपरिवारिया अउज्जा सदा सया वलया सदा गुता अऊयाला कीठगरइया अऊयालकंयवन्नमाला
खेमा सिवा किरामरऊवोरखिया लाउल्लोइयमहिंया गोसीसरसरत्तचदणदहरिदिन्नपचगुलितला उव
चियचटणऊलसा चदणघऊसुकयतीरणपडिदुवारदेसन्नागा आसतोसत्तविलवहवग्घारियमल्लदामकलावा
पचवन्नसरससुरन्निमुक्कपुफपुजोवयारकलिया कालागुरुपवरकटुक्कतुरुक्कतधूवमघमघतगधुत्तात्रिरा
मा सुगधवरगधिया गधवाहिन्नुया अऊरगणसघसकिसा दिव्वतुळियसदसपत्तदिया सव्वरयणामया अ
क्का सण्हा घठा मठा नीरया निम्मला निप्पका निक्ककऊया सप्पन्ना ससिरिया सउज्जोया पासाइया
दरिसणिज्जा अन्निरुवा पडिरुवा एत्थण असुरकुमाराण देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पसुत्ता । उववा
एण लोयस्स असखिज्जइन्नागे समुघाएण लोगस्स असखेज्जइन्नागे सठाणंण लोगस्स असखेज्जइन्नागे त

नि वरकीणांत्तरिवुल्लगम्भीरत्थातफलिकानि प्राकाराहालकपाटतीरणप्रतिहारदेशज्ञागानि यन्त्रशतग्रीमुसलन्नसुखिठपरिवारितानि आयोधनानि
सदाजेयानि सदायलपानि सदागुमानि अष्टचत्वारिंशत्कोष्टकरचितानि अष्टपत्वारिंशद्दलपमालानि शिवाणि किङ्करीमरदशकोपरचितानि
लाङ्ग उल्लोइय मत्तितानि गोशीपसरक्तचन्दनदंदरत्तपञ्चाङ्गुलितलानि उपचितवन्दनकलत्रानि वन्दनघटसुकुसुतोरणप्रतिहारदशज्ञागानि आस
कोरसक्तविपुलवृत्तमाथा तिममाल्यदामकलापानि पञ्चवर्णसरससुरन्निमुक्कपुफपुजोपचारकलितानि कालागुरुपवरकुन्दरुफतुरुफधूपमघमघाय
मानगब्धोद्भूतान्निरामाण सुगन्धयरगन्धयित्तानि गन्धवर्तिभूतानि अम्बरोगणसघसकीर्णानि दिव्यव्रुटितशब्दस्रणादितानि सव्वरन्नमया
नि अक्खानि शल्लानि पृष्ठानि सृष्टानि नीरजाणि निप्पङ्गानि निफण्टकञ्जायानि सप्पन्नाणि समरीचीनि सोद्योतानि प्रसादनीयानि दञ्जनीयानि
अभिरूपाणि प्रतिक्रपाणि एतेषु असुरकुमाराणा देवाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रच्छानि । उपपातेन लोकस्यासथ्येयन्नागे समुद्घातेन लोक

त्यण वहवे असुरकुमारादेवा परिवसन्ति काला लोहितस्का विवोष्ठा धवलपुष्पदन्ता अस्यिकेसा वामेयकुं
 रुलधरा अद्भुतचरणालितगता ईसीसिलिधपुष्पगसाइ असकिलठाइ सुकमाइं वल्याइं पत्रपरिहिद्या
 वय च पढम समङ्कता विहय च असपता न्ने जोज्जेणे वहमाणा तलनंगयतुक्रियवरन्नसणनिस्मलनिर
 यमणिरयणमक्रियनुया दसमुद्दामाक्रियगहल्या चूक्रामणिविचित्रिचिधगता सुरूवा महिहीया महज्जुडया म
 मायसा महव्वला महाणुजागा महासोस्का हारविराडयवत्या कवक्रयतुक्रियथन्नियनुया अगयकुलमहुगळ
 यलकणपीठधारी विचित्रहत्यान्नरणा विचित्रमालामउलिमउळा कल्लानगपवरवत्यपरिहिद्या कल्लानगपवर
 मल्लानुलेवणधरा नासरवोदी पलववनमालधरा दिव्हेण वणेण दिव्हेण गधेण दिव्हेण फासेण दिव्हेण संघय
 णेण दिव्हेण सठाणेण दिव्हाए ड्ढोए दिव्हाए जुईए दिव्हाए पन्नाए दिव्हाए ढायाए अच्चीए दिव्हेण एएणं
 दिव्हाए लेसाए दसदिसान उज्जोवेमाणा पन्नासेमाणा तण तस्य साण २ नवणावाससयसस्साणं साण २

स्यास्येयजाने स्यानेन लोकस्यास्येयजाने । तत्रनु वरध असुरकुमारा देवा परिवसन्ति । काला लोहिताद्या विन्वोष्ठा धवलपुष्पदन्ता अ
 सितकेशा वामेय (एकवर्णावस्क) कुण्डलधरा अद्भुतचरणालितगता इयं किलपुष्पप्रकाशानि अस्मिन्निगानि मूल्यानि वर्याणि प्रवरपरिधाना
 वयस्य प्रथम समतिकान्ता द्वितीय वासप्राप्ता मध्ये यौवने वतमाना तलनङ्गयतुक्रियवरन्नसण निमलमोक्षरत्नमखितनुजा- दशमुद्दामाग्रिडताग्रहस्ता-
 चूक्रामणिविचित्रविट्ठगता सुरूपा मरचिका मरदुग्धा मशायसा महाधला महानुजावा हारविराजितवक्रस कटकनुटितस्तस्मिन्तनु
 जा अद्भुतकुण्डलमद्गयजालककणपीठधारिणी विविधवस्त्राप्ररणा विचित्रमालामालिमणकला कल्याणकप्रवरपरिहिता कल्याणकप्रवरमा
 ल्यानुलेपनधरा नासरवोदय (नासरवरीराः) प्रलम्बयनमालाधरा दिव्येन वर्णेन दिव्येन गन्धेन दिव्येन सघयणेन दिव्येन स

सामाणियसाहस्सीण साण २ तावत्तीसाणं साण २ लेगपाळणं साण २ अगमहिंसीण साणं २ परिसाणं
 साण २ अणियाण साण २ अणियाहिर्वईण साण २ आयरकदेवसाहस्सीण अन्नेसि च वत्तण जवणवा
 सीण देवाणय देवीणय अहेवच्च पोरेवच्च सामित्त जहित्त महत्तरगत्त अणार्इसरत्तेणावच्च करिमाणा पा
 लेमाणा महयाहयनहगीयवाडयततीतलतालतुक्रियघणमुइगपफुप्पवाइयरवेण दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमा
 णा विहरत्ति, चमरवल्लिणो इत्य दुवे असुरकुमारिदा असुरकुमारयाणो परिवसत्ति काला महानीलस
 रिसा नीलगुलियगवल्लयसिक्कुसुमप्पगासा वियसियसयवत्तनिम्मलसीसियरत्तत्रनयणा गरुडाययउज्जत्तंग
 नासा उयचियसिलप्पवालविचयलसन्निहाहरोठा पफुरससिसगलविमलनिम्मलदहिघणसखगोखीरकुदुद
 गरयमुणालिया धवलदत्तसेढी हुयवहणिद्धंतधोयतत्ततवाणज्जारत्ततलतालुजीहा अजणघणकसिणरुयगरमाण
 ज्जानिद्धरेसा वामेयकुलधरा अद्धचदणानुलित्तगत्ता ईसीसिलिधपुप्फपगासाइ असकिलिठाइ सुज्जमाइ व

स्यानेन दिव्यया कथ्या दिव्यया युक्ता दिव्यया प्रज्ञया दिव्यया व्याया दिव्येन अर्चिषा एतेन दिव्येन दशदिशासूद्योतमाना प्रज्ञासी
 मान तेन तत्र स्वेपा २ जयनावासदासहस्त्राणा सामानिकसहस्त्राणा त्रयस्त्रिंशता लोकपालाना अग्रमहिषीषा परिपदासधिकारिणा अधिकादि
 यतीनामायरणकदेवसहस्त्राणामन्येषा च द्यूना देवाना देवीनामाधिपत्य पौरपत्य स्वामित्व जर्तृत्व महत्तरकत्वमाज्ञेश्वरसेनापरयच कारयमाणा
 पालयमाना महताऽऽवृत्तनृत्यगीतवादित्रतन्त्रोत्तलतालतुक्रियघनसुदृढपटुप्रवादितरवेण दिव्यानि भोगभोगानि प्रज्ज्ञाना विहरत्ति । चमरवल्लि
 नीश्वरो जे असुरकुमारिन्द्रो असुरकुमारराजानी परिव सत काला महानीलश्रीपो नीलगुटिका गवलातसीकुसुमप्रकाशा विकसितशतपत्रनिर्मल
 शीतरक्तताचनयना गरुडाययसक्रतुतुङ्गनासा उपचितशिलाप्रवालविस्वसन्निभाचरोक्ष पाशुरशशिसकलविमलनिमलदधिघनशखगोखीरकुन्दो

त्याह पवरपरिहिया वयं च पढमं समइक्कंता विडयच अस्पपत्तो ऋद्दे जोह्वणे वहमाणा तलजंगयतुक्रियप
वरन्नसणनिम्लमणिरयणमक्रियन्नुया दसमुदामक्रियग्गहत्या चूळामणिविविचित्तचिधगता सुख्खा माहिहीया
महज्जुया महायसा महव्वला महानुत्रागा महासोस्का हारिविराडयवत्या कळयतुक्रियथन्नियन्नुया अंगदकुंळ
लमठगळलकणपीढधारी विचित्तहत्यान्नरणा विचित्तमालामउलिमउळा कळ्माणगपवरवत्यपरिहिया कळ्मा
णगपवरमल्लानुलेवणा न्नासुरवोदी पलववणमालधरा दिव्वेण वखेणं दिव्वेण गंधेणं दिव्वेण फासेणं दिव्वेण
सठाणेणं दिव्वाए इहीए दिव्वाए जुईए दिव्वाए नासाए दिव्वाए ढायाए दिव्वाए पहाए दिव्वाए अच्चीए
दिव्वेण एणं दिव्वाए लेसाए दसदिसाउ उज्जोवेमाणा पन्नासेमाणा तेण तत्य साण २ न्नवणावाससयसहस्सा
ण साण २ सामाणियसाहस्सीण साणं २ तावत्तीसाणं साण २ लोगपालाणं साणं २ अंगमहिसीणं साणं २

द करजसृणालिकापवलदत्तश्रेणयो हुतवहनिधर्मात्तथीततप्तपमीयरक्ततलतालुजिह्वा अज्जनघनरुप्ररुचिकरमणिस्त्रिघकेक्षा. वामेयकुणकधरा
अद्वचन्दलिसगात्रा इंपदीपब्बलिनप्रुप्पप्रकाशानि असक्किट्टानि सूत्समाणि वखाणि प्रवरपरिहिता वयस्य प्रथम समतिक्रान्ता द्वितीय चासप्राप्ता
अद्वेयीवने वर्त्तमाना तलन्नङ्गपतुडियधरत्रूपणानिर्मलमणिरवमणिकतन्नुजा दद्यामुद्रामणिगडतायहस्ता चूळामणिविचित्रचिद्गताः सुकृपा महार्चिका
महद्युद्धा महायसा महावला महानुभावा महासुखा हारिविराजितवत्तस कळयतुडियस्तास्मितन्नुजा अद्भुतकुण्डलसृग्गळतलकर्णेपीठधारिणो
विचित्रहस्तान्नरणा विचित्रमालामीलिसुकुटा कल्याणकप्रवरवच्छपरिहिता कल्याणकप्रवरमाल्यानुलेपना न्नासुरवोन्दय प्रलम्बवनमालाधरा
दिव्येन वर्णेन दिव्येन गन्धेन दिव्येन स्पर्शेन दिव्येन सस्थानेन दिव्यया क्रध्या दिव्यया युक्त्वा दिव्यया प्राप्ता दिव्यया द्वायया दिव्यया प्रप्रया
दिव्येनार्चिषा दिव्येन एतेन दिव्यया लेडयया दद्यादिशामुद्योतमाना प्रकाशयमाना तेन तत्र साण २ (स्थाने २) प्रवनावासशतसहस्राणा साण २

परिसाण साणं २ अणियाणं साण २ अणियाहिर्वईणं साणं २ आयरस्कदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च वल्लणं
 नवणवासीण देवाणय देवीणय आहेवच्च पोरेवच्च सामित्त जहित्त महत्तरगत्त आहारईसरसेणावच्च कारे
 माणे पालेमाणे महयाहयनहगीयवाइयततीतलत्तुफियघणमुङ्गपफुप्पवाइयरवेण दिव्वाइ जोगजोगाइ नु
 जेमाणा विहरति । कहिणं नत्ते ! दाहिणिह्वाण असुरकुमारदेवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पयत्ता १ कहिण
 नत्ते ! दाहिणिह्वाण असुरकुमारा देवा परिवसति १ गोयमा ! जवुद्धीवे २ मदरस्स पल्लयस्स दाहिणेण इमी
 सेरयणप्पन्नाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सवाहत्ताए उवरि एगं जोयणसहस्स उग्गाहिता हेठावेग
 जोयणसहस्स वज्जित्ता मज्जे अउत्तरजोयणसयसहस्से एत्थण दाहिणिह्वाण असुरकुमाराण देवाणं देवी
 णय चीत्तीस नवणावाससयसहस्सा हवतीति मरकाय तेणं नवणा वाहि वहा अतो चउरसा सोचेंव वस्सने
 जाव पफिरूवा एत्थण दाहिणिह्वाण असुरकुमारदेवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पयत्ता । तिसुवि लोगस्स

सामानिकसहस्राणा साण २ त्रयस्त्रिंशत्ताना साण २ लोकपालाना साण २ अयमहिणीया साण २ अधिकारि
 यतीनामात्तरङ्गकदेवसहस्राणामन्येया च बहूना भवनवासिना देवाना देवीना च आचिपत्य पुरपतित्व स्वामित्व भर्तृत्व महत्तरकत्वमाद्येश्वरसेनाप
 त्त्य च कारयमाना पालयमाना महताइतनृत्यगीतवादिश्रवन्तीतलतालतुक्रिययनसृङ्गपटुप्रवादितरवेण दिव्यानि जोगभोगानि भुञ्जाना विहर
 त्तम । कस्मिन् प्रदत्त । दाहिणिदिशासुरकुमाराणा देवाना स्थानानि प्रज्ञप्तानि, कस्मिन् प्रदत्त । दाहिणिदिशासुरकुमारादेवा परिवसन्ति । गी
 तम । जम्बुद्वीपे मन्दरस्य पर्वतस्य दाहिणेनतस्या रत्नप्रज्ञाया पायव्यामशीत्युत्तरयोजनशतसहस्रबहुलायामुपर्येक योजनसहस्रमुद्गृहीत्याचस्ता
 देक योजनसहस्र यजयित्वा मध्ये अष्टसप्ततियोजनशतसहस्रे एतेषु दाहिणात्यानामसुरकुमाराणा देवाना देवीना च वतुस्त्रिंशद्भवावासशतसह

असखेज्जइन्नागे, तत्पणं बहवे दाहिणिस्सा असुरकुमारदेवा देवीने परिवसंति काला लोहितस्का तहेव जाव
 नजेमाणे विहरति, एवं सव्वत्य चाणिथव्व नवणवासीणं, चमरे इत्य असुरकुमारिदे असुरकुमारराया प
 रिवसड काले महानीलसरिसे जाव पढासेमाणे सेण तत्थ चउत्तीसाए नवणावाससयसहस्साणं चउसठीए
 सामाणिथसाहस्सीण तावत्तीसाए तावत्तीसगाण चउरहं लोगपालाणं पचरह अगमहिंसीणं सपरिवाणं
 तिरह परिसाण सत्तरह अणियाण सत्तरह अणियाहिर्वईण चउरहं च चउसठीणं आयरकदेवसाहस्सीणं
 अन्नेसि च वल्लणं दाहिणिस्साण देवाण देवीणय आहेवच्च पोरेवच्च जाव विहरंति । कहिणं नत्ते ! उत्तरि
 स्साण असुरकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पस्सत्ता । कहिण नत्ते ! उत्तरिस्सा असुरकुमारा देवा
 परिवसति ? गोयमा ! जवुदीवे दीवे मदस्स पव्वयस्स उत्तरेणं इमीसे रयणप्पन्नाए पुढवीए असीउत्तर

स्साणि नवन्तोत्थाव्यातम् । सानि नवनानि बहिर्वृत्तानि अन्तश्चतुरस्त्राणि सोचैव वणंते यावत्प्रतिकृपा स्तेषु दाक्षिणात्यानामसुरकुमारदेवाना
 पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रदत्तानि । त्रिद्यपि लोकस्यासख्येयज्ञाने तत्र न बहवो दाक्षिणात्या असुरकुमारदेवा देव्यश्च परिवसन्ति काला लोहि
 ताका तथैव यावद्भुज्जमाना विहरन्ति । एव सर्वत्र नवनीय प्रवनवासिना चमरो ऽत्र असुरकुमारेन्द्रो असुरकुमारराजा परिवसति काले महा
 नीलसदृशो यावत्प्रकाशमान तत्र चतुस्त्रिंशत्भुवनावासशतसहस्राणा चतु पष्ठितमे सामानिकसहस्राणा त्रयस्त्रिंशो त्रयस्त्रिंशद्द्वाना चतुर्णां लोक
 पालाना पञ्चानामग्रमहिषीणा सपरिवाराणा तिसृणा परिपदा सप्तानामनीकाना सप्तानामनीकाधिपतीना चतुर्णां च चतु पष्ठिकानामात्सरकृद्देव
 सहस्राणामन्येषा च बहूना दाक्षिणात्याना देवाना देवीना चाधिपत्य पौरपत्य यावद्द्विहरन्ति । कस्मिन्नु भदत्त । औत्तराणामसुरकुमाराणा
 देवाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रदत्तानि । कस्मिन्नु भदत्त । औत्तरा असुरकुमारा देवा परिवसन्ति ? गोतम । जस्यहीते हीपे मत्तरस्य

जीयणसयसहस्रबाहवाए उवरि एग जीयणसहस्स उग्गाहिता हेठावेग जीयणसहस्स वज्जिता मज्जे
 अउहत्तरिजीयणसयसहस्से एत्थण उत्तरिक्षाण असुरकुमाराणं देवाण देवीणय तीस भवणावाससयसहस्सा
 भवतीति मक्काय तेण भवणा वाहि वहा अतो चउरसा सेस जहा दाहिणिस्सिण जाव विहरति, वलो डल्य
 वडरीयणिदे वडरीयणराया परिवसड, काले महानीलसरिसे जाव पन्नासेमाणे सेण तल्य तीसाए भवणा
 वाससयसहस्साण सठीए सामाणियसाहस्सीण तावत्तीसाए तावत्तीसगाण चउरह लोगपालाण पचरह
 अगमहिस्सीण सपरिवाराण तिरह परिसाण सत्तरह अणियाण सत्तरह अणियाहिर्वईण चउरह सठीण
 आयरक्कदेवसाहस्सीण अस्सेसि च वल्लणं उत्तरिक्षाण असुरकुमाराण देवाणय देवीणय अहेवच्च पोरेवच्च
 जाव कुब्बमाणे विहरति । कहिण भते ! नागकुमाराण देवाण पज्जतापज्जत्ताण ठाणा पसत्ता, कहिणं

पवतस्य उत्तरण एतस्या रत्नप्रभाया पृथिव्या अशीत्युत्तरयोजनज्ञातसहस्रबाहवा । तपयैक योजनसहस्रमवगाह्यायक योजनसहस्रं वर्जयित्वा
 मध्ये ऽष्टसप्ततिर्योजनज्ञातसहस्रे अत्र श्रीतराणामसुरकुमाराणां देवानां देवीनां च त्रिंशद्भुवनावासज्ञातसहस्राणि भवन्तीति मयाख्यातम् । तानि
 नवधानि बहिर्वृत्तानि अन्तर्गतानि सन्तु यथा दाक्षिणात्यबहिर्वृत्तानि । वलो अत्र वडरीचनेन्द्री वडरीचनराजा परिवसति कालो महानील
 सदृशो यावत्प्रकाशमान सत्तत्र त्रिंशत् भवनावासज्ञातसहस्राणि पृथिव्याकसामानिकसहस्राणां त्रयस्त्रिंशत्तया त्रयस्त्रिंशत्तकानां चतुर्णां लोकपाला
 ना पञ्चानामग्रमहिषीणां सपरिवाराणां तिसृणां परिपदां सप्तानामनीकानां सप्तानामनीकाधिपतीनां चतु पृथिकात्सरत्नकंदेवसहस्राणामन्येषां
 च वडूनां भीतिरिकाणामसुरकुमाराणां देवानां च देवीनां चाधिपत्यं पुरोर्वात्तत्वं यावत्तुर्ज्वाणां विहरन्ति । कं भदत्त ! नागकुमाराणां देवानां
 पर्याप्तपर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, कं भदत्त ! नागकुमारा देवा परिवसन्ति । गौतम ! एतस्या रत्नप्रभाया पृथिव्या अशीत्युत्तरयोजनज्ञात

नते । नागकुमारा देवा परिवसति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्यन्नाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्स वाहल्लाए उवरिएग जोयणसहस्स वज्जिऊण मज्जे अठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थण नागकुमाराण देवाण पज्जत्तापज्जन्ताण चुलसीडन्नवणावासयसहस्सा हवतीति मरकाय , सेण नवणा वाहि वहा अतो चउरं सा जाव पफ़िरुवा तत्थण नागकुमाराण पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पसत्ता । तिसुवि लोगस्स अस्सखेज्जइ ज्ञागे तत्थण बहवे नागकुमारा देवा परिवसति, महिहिवा महज्जुइया सेस जहा उहियाण जाव विहरति धरणन्नयाणदा एत्थ दुवे नागकुमारयाणी परिवसति महिहिवा सेस जहा उहियाण जाव विहरति । कहिणं नते ! दाहिणिस्सणा देवाणं पज्जत्तापज्जन्ताण ठाणा पसत्ता । कहिणं नते ! दाहिणिस्सणा नागकुमारादेवा परिवसति ? गोयमा ! जबूहीवे २ मढरस्स पच्चयस्स दाहिणेण इमीसे रयणप्यन्नाए पुढ वीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सवाहल्लाए उवरिएग जोयणसहस्सं उग्गाहिता हेठावेग जोयणसहस्स व

सहस्स बाहल्यायावपरि एक योजनसहस्स वजंयित्वा पुनर्मध्ये अप्समंति योजनज्ञतसहस्से अत्र नागकुमाराणा देवाना पर्योसापर्योसाना चतुरशी तित्रवनावासज्ञतसहस्साणि प्रवन्तीत्याख्यातम्, सानि प्रवन्तानि दद्विद्वतानि अन्तश्चतुरस्साणि यावत्प्रतिरूपाणि तत्र नागकुमाराणा पर्योसापर्योसाना स्थानानि प्रवृत्तानि । त्रिष्वपि लोकस्यासख्येयज्ञाय तत्र बहवो नागकुमारदेवा परिवसन्ति, महद्दिका मग्गाद्युतिका अप यथोचिकाना यावद्विहरन्ति । परञ्चतूतानेन्द्रा वत्र द्वी नागकुमारराजानी परिवसन्ति सहयिकी अप यथोचिकाना यावद्विहरन्ति । क प्रदन्त ! दाविणाय नागकुमाराणा देवाना पर्योसापर्योसाना स्थानानि प्रवृत्तानि, क प्रदन्त ! दाविणायनागकुमारदेवा परिवसन्ति । गीतम । जम्बूद्वीपे द्वीपे मन्दरस्य पर्वतस्य दक्षिणेन एतस्या रत्नप्रज्ञपुथिष्या अशीत्युत्तरयोजनज्ञतसहस्स बाहल्याया उपर्येक योजनसहस्समवाद्या यस्तादेक योजनसहस्स

जिज्ञासा मज्जे अण्ठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्यणं दाहिणिस्त्राण नागकुमाराणं देवाण चोयालीस जत्रणावा ससयसहस्सा हवतीति मस्काय, तेण जत्रणा वाहि वहा जात्र पक्रुत्वा एत्यण दाहिणिस्त्राण नागकुमाराण पज्जन्तापज्जन्ताण ठाणा पयत्ता, तिसुवि लोगस्स अस्सेज्जडज्जगे एत्यण वहवे दाहिणिस्त्राण नागकुमारा देवा परिवसति महिहिंया जात्र विहरति । धरणे एत्य नागकुमारिदे नागकुमाराया परिवसति महिहिंए जाव पज्जसेमाणे सेण तत्य चोयालीसाए जत्रणावाससयसहस्माणं ठरह सामाणियसाहस्सीण तावत्तीसाए तावत्तीसगाण चउरह लोगपालाण ठरह अण्णमहिसीण सपरिवाराण तिरह परिसाण सत्तरह अणियाण सत्तरह अणियाहिचईण चउवीसाए आयरस्कदेवसाहस्सीण अण्णेति च वत्तण दाहिणिस्त्राण नागकुमाराण देवाणय देवीणय आहिेवच्च पोरवच्च जाव कुट्टमाणे विहरति । कहिण जते ! उत्तरिस्त्राणं नागकुमाराण दे

वर्जयित्वा मध्येष्टसप्ततिषो जत्रवत्तसहस्से अत्र दाहिणात्याना नागकुमाराणा देवाना चतुर्थत्वारिण्ड्वनायासशतसहस्सानि प्रवन्तीत्यात्यातम् । तानि प्रवन्तानि आदिद्वेसानि यावत्प्रतिरूपाणि अत्र दाहिणात्याना नागकुमाराणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रवन्तानि । त्रिवि लोकास्वस्ये यत्ताग । अत्र बह्वे दाहिणात्या नागकुमारदेवा परिवसन्ति मह्यचिका यावद्विररन्ति । धरणे अत्र नागकुमारैन्त्रो नागकुमारराजा परिवसन्ति महिंको यावत्प्रकाशमान तत्र चतुर्थत्वारिण्ड्वनायासशतसहस्साना पण सामानिकमसहस्साना त्रयस्त्रिंशत् त्रयाविंशत्यात्मरदकेवसहस्साना चतुर्लो लोकापालाना पणामग्रमहिपीणा सपरिवाराणा तिसृणा परिपदा सप्तानामनोकाना सप्तानामनीकाचिपतीना चतुर्विंशत्यात्मरदकेवसहस्साना मन्येया च य इना दाहिणात्याना नागकुमाराणा देवाना च आचिपत्य पुरोधन्ति यावत्तुर्बोणा विहरन्ति । क प्रदत्त । श्रीसरिकाणा नागकुमाराणा देवाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रवन्तानि । क प्रदत्त । नागकुमारा श्रीत्तरिका देवा परिवसन्ति ? गोतम ! जम्बूद्वीपे द्वीपे मन्दरस पर्वत

वाणं पज्जतापज्जत्ताण ठाणा पसंत्ता, कहिणं भते ! उत्तरिस्स नागकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! जंयद्दीवेरं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेण इमीसे रयणप्पन्नाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सवाहत्ताए उ वरि एग जोयणसहस्स उग्गाहिता हेठावेग जोयणसहस्स वज्जित्ता मज्जे अठ्ठहत्तरिजोयणसयसहस्स एत्यण उत्तरिस्सणा नागकुमाराणं देवाणं चत्तालीस भवणावाससयसहस्सा हवतीति मरुकाय, तेण भवणा वाहि वहा सेस जहा दाहिणिस्सणां जाव विहरति, भूयाणदे इत्य नागकुमारिदे नागकुमाराया परिवसड महि हिण जाव पन्नासेमाणे सेण तस्य चत्तालीसाए भवणावाससयसहस्साण अहिेवस्स जाव विहरड । कहिणं भते ! सुवस्सकुमाराण देवाणं पज्जतापज्जत्ताण ठाणा पसत्ता । कहिण भते ! सुवस्सकुमारा देवा परिवसं ति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पन्नाए पुढवीए जाव एत्यण सुवस्सकुमाराण देवाणं वाचत्तरिभवणावाससय सहस्सा हवतीति मरुकाय, तेण भवणा वाहि वहा जाव पफ़िरूवा तस्यणं सुवस्सकुमाराण देवाणं पज्जत्ता

स्य उत्तरेण एतस्या रत्नप्रज्ञाया पूर्णव्या अशीत्युत्तरयोजनशतसहस्रधातुत्वाया उपर्येक योजनसहस्रमवगात्या पक्षादेक योजनसहस्र वर्जयित्वा मध्येष्टसप्ततिर्योपनशतसहस्रे अत्र शीतरिकाणा नागकुमाराणा देवाना चतुश्चत्वारिंशद्वयनावासगतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम् । तानि भवन्ता नि वरिचतृत्तानि शेष यथा दाक्षिणात्याना यावद्विहरन्ति । भूयानन्दोत्र नागकुमारेन्द्रो नागकुमारराज्ञा परिवसति । मर्हद्दुको यावत् प्रकाशमा न स तत्र चतुश्चत्वारिंशद्वयनावासगतसहस्राणा यावद्विहरन्ति । क्व भदन्त ! सुपर्णकुमाराणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि क्व प्रदन्त ! सुपर्णकुमारा देवा परिवसन्ति ? गीतम् । एतस्या रत्नप्रज्ञायाः पूर्णव्या यावदत्र सुपर्णकुमाराणा देवाना द्विसप्ततिं प्रवनावासगतसहस्राणि प्रव न्तीत्याख्यातम् । तानि प्रवन्तानि बहिर्भूतानि यावत्प्रतिरूप्याणि तत्र सुपर्णकुमाराणा देवाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । त्रिष्वपि लो

पञ्जज्ञाण ठाणा पयसता । तिसुवि लोगस्स अस्सखेज्जडज्ञाणे, तत्थणं वहवे सुवन्तकुमारा देवा परिवसंति महिहिंया सेस जहा उहियाण जाव विहरति, वेणुदेव वेणुदालीय इत्य दुवे सुवस्सकुमारिदा सुवन्तकुमार रायाणो परिवसति महिहिंया जाव विहरति । कहिणं ज्ञते । दाहिणिज्ञाण सुवन्तकुमाराणं पञ्जज्ञापञ्जज्ञा णं ठाणा पयसता । कहिण ज्ञते ! दाहिणिज्ञा सुवन्तकुमारा देवा परिवसति ? गोयमा ! इमीसे जाव मज्जे अउठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थण दाहिणिज्ञाण सुवस्सकुमाराण अउठहीस जवणावाससहस्सा हवंतीति मस्काय, तेण जवणा वाहि बहा जाव पठिरूवा, तत्थण दाहिणिज्ञाण सुवस्सकुमाराण पञ्जज्ञापञ्जज्ञाण ठाणा पयसता, तिसुवि लोगस्स अस्सखेज्जडज्ञाणे, एत्थण वहवे सुवस्सकुमारा देवा परिवसति । वेणुदेवे इत्य सुवन्निदे सुवस्सकुमाराराया परिवसति सेस जहा नागकुमाराण । कहिण ज्ञते ! उत्तरिज्ञाणं सुवन्तकु- माराण देवाण पञ्जज्ञापञ्जज्ञाण ! ठाणा पयसता । कहिण ज्ञते ! उत्तरिज्ञा सुवस्सकुमारा परिवसति ? गोय

कस्यासल्लेयजागमत्र वहव सुपर्णकुमारा देवा परिवसन्ति महर्षिका ज्ञेय यथीचिकाना यावद्विहरन्ति वेणुदेवो वेणुदालीय ऋत्र ही सुपर्णकुमा रेन्त्री सुवर्णकुमाराराजानी यावत्परिवसत महर्षिकी यावद्विहरति । क्व जदन्त । दाक्षिणात्याना सुपर्णकुमाराणा देवाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्या नानि प्रक्षप्तानि । क्व जदन्त । दाक्षिणात्या सुपर्णकुमारदेवा परिवसन्ति ? गीतम् । एतस्या यावन्मध्ये ऽष्टसप्ततियोजनशतसहस्र मत्र दाक्षिणा त्याना सुपर्णकुमाराणामष्टत्रिंशद्भ्रवनावासशतसहस्राणि प्रवन्तीत्याख्यातम् । तानि प्रवन्तानि वदिर्वृत्तानि यावत्प्रतिरूपाणि तत्र दाक्षिणात्याना सु पर्णकुमाराणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रक्षप्तानि त्रिष्वपि लोकस्यासल्लेयजाग अत्र वहव सुपर्णकुमारादेवा परिवसन्ति । वेणुदेवोत्र सुपर्णन्द्रो सुपर्णकुमाराराजा परिवसति । ज्ञेय यथा नागकुमाराणाम् । क्व जदन्त । अतीतरिकाणा सुपर्णकुमाराणा देवाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रक्ष

मा ! इमीसे रयणप्यन्नाए जाव एत्थणं उत्तरिस्सण सुवसकुमाराणं वत्तव्वया न्निण्या तथा सेसाणवि चोद
सरह इंटाण न्नाणियव्वा नवरं न्नवणनाणत्त इदाणनाणत्त वस्सेण नाणत्त परिहाणनाणत्तं च इमाहि गाहाहिं
अणुगतव्व-चोवठीअसुराणं चुलसीतीचेवहोडनागाणं । आवत्तरिसुवस्से वाडकुमाराणव्वसुडई ॥ १ ॥
दीवदिसाउदहीण विज्जुकुमारिदथानियमगीणं । त्तरहपिजुवलयाण आवत्तरिमोसयसहस्सा ॥ २ ॥ चोत्ती
साचोयाला अठ्ठीसचहोडसयसहस्साइ । पस्साचत्तालीसा दाहिणत्तहोतिन्नवणाइ ॥ ३ ॥ तीसाचत्तालीसा
चोत्तीसचेवसयसहस्साइ । त्तायालात्ततीसा उत्तरत्तहोतिन्नवणाइ ॥ ४ ॥ चडसठीसठीखलु तच्चसहस्सान
असुरवज्जाण । सामाणियाउएए चडग्गुणाअ्यायरस्सान् ॥ ५ ॥ चमरेधरणेतहवे णुदेवहरिकंतअग्गिसीहेय ।
पुस्सेजलकतेय अमियवेडवेयघोसेय ॥ ६ ॥ वल्लिज्जुयाणदेवे णुदालीहरिस्सहेअग्गिमाणवविस्सिठे । जलप्य

सानि । क जदत्त । अतीतरिकाः सुपर्णकुमारा परिवर्तन्ति ? गीतम् । एतस्या रत्नमन्त्राया यावत् अत्र अतीतरिकाणा सुपर्णकुमाराणा वक्तव्यता ज
णिता तथा शोषाणामपि चतुर्दशाना मिद्राणामपि अशितव्या नवर प्रवर्तनानात्वमिन्द्राणा नानात्व वर्णनानात्व परिधाननानात्व चैताभिर्गोया
भिरनुगन्तव्यम् । चतु पठिरसुराणा चतुरशीतिरेव प्रवर्तिनागानाम् । द्विसप्तति सुपर्णं वायुकुमारेषु पस्वर्तते ॥ १ ॥ द्वीपदिगुदधीना विद्युत्कुमारे
न्द्र स्तनितमग्नितानाम् पक्षामपियुगलकाना पट्सप्ततिमशतसहस्रम् ॥ २ ॥ चतुस्त्रिंशच्चतुस्त्रिंशत् अष्टत्रिंशच्चमवतिशतसहस्रम् । पञ्चाशच्चतुस्त्रिंशत्
त्रिंशत् दक्षिणतोप्रवर्तन्तिप्रवर्तानि ॥ ३ ॥ त्रिंशच्चत्वारिंशत् चतुस्त्रिंशच्चतसहस्रानि । पट्चत्वारिंशत्पट्त्रिंश दुत्तरतोभवन्तिभवनानि ॥ ४ ॥ चतु-
पटि पटि खलुपट् सप्तसूर्यसुरवर्जणाम् । सामानिकास्तुगते चतुर्गुणाश्रमात्मरक्षास्तु ॥ ५ ॥ चमरधरणीतया वेणुदेवहरिकान्ताग्निशिक्षा । पूर्णोज
लकान्तोद्या मितवेलाभ्यक्रघोपाद्य ॥ ६ ॥ वल्लिज्जुवानेन्द्रवेणुदालि हरिसङ्केतिनमाणवविस्सिठे ॥ जलमनोऽमितवाहन मज्जनश्चमहाघोष ॥ ७ ॥ श्रीस

नेष्टुमियवाहणे पन्नजणेयमहाधीसे ॥ ७ ॥ उत्तरिक्षाण जाव विहरति, कालाञ्चसुरकुमारा नागाउदहीयपं
 दुरादोवि । वरकणगणिहसगोरा होतिसुवस्सादिसार्थणिया ॥ १ ॥ उत्तत्तकणगवन्ता विज्जूञ्जगीयहोति
 दीवाय । सामापियगवस्सा वाउकुमारामुणेयच्चा ॥ २ ॥ अंसुरेसुहोतिरस्ता सिलिठपुप्फप्पन्नातहाउदही । अ्या
 सासयवसगधरा होतिसुवस्सादिसार्थणिया ॥ ३ ॥ नीलानुरागवसणा विज्जूञ्जगीयहोतिदीवाय । सज्जाणु
 रागवसणा वाउकुमारामुणेयच्चा ॥ ४ ॥ कहिण जते ! वाणमतराण देवाण पज्जात्तापज्जत्ताणं ठाणा
 पणत्ता, कहिण जते । वाणमतरा देवा परिवसन्ति ? गोयमा । इमीसे रयणप्पन्नाए पुढवीए रयणमयस्स
 ककस्स जोयणसहस्सवाहस्स उवरि एग जोयणसय उग्गाहिता हिठावि एग जोयणसय वज्जित्ता मज्जे
 अ्छसु जीयणसएसु एत्थण वाणमतराण देवाण तिरियमसखेज्जाउ न्नीमेज्जा नगरावाससयसहस्सा हवतीति
 मस्काय तेण न्नीमेज्जा नगरा वाहि बहा अ्यतो चउरसा अ्यहे पुस्करकवियासठाणसठिया उकिन्नतरवि

रिका यावद्दिहरन्ति । कालाञ्चसुरकुमारा नामोदधीपागदुरीद्वीस्त । वरकनकनिकसगोरा । प्रवत्तिसुपण्णदिक्खत्तिता ॥ १ ॥ उत्तत्तकनकवर्णा वि
 द्दुदानीवनवन्निहीपाथ ॥ इयामा मियकुवर्णा वायुकुमाराद्यज्जातव्या ॥ २ ॥ असुराजवन्तिरक्ता शिलीन्ध्रपुप्फप्रभास्सथोदय ॥ आद्याञ्चवस
 परा भवत्तिसुपण्णदिक्खत्तिता ॥ ३ ॥ नीलानुरागवसना विद्युदानीवप्रवत्तिहीपाथ ॥ सन्धानुरागवसना वायुकुमाराञ्चनुमातव्या ॥ ४ ॥ क
 मन्दत्त । वानत्थत्तराणा देवाना स्थानानि प्रज्जगानि, कं जदन्त । वानत्थन्तरा देवा परिवसन्ति ? गोतस । एतस्सा रत्नप्रभाया पयिअ्या रत्नमय
 स्य काण्डस्य योजनशतसहस्रमूयाहत्यस्य उपपर्येकं याजनसहस्रमवगाह्या ऽवस्तादेकं योजनसहस्रं वज्रयित्वा मध्ये ऽष्टसु योजनसहस्रेषु च वानव्य
 त्तराणा देवाना त्रियगस्ययानि न्नीमेज्जनगरायासठतसहस्राणि प्रवत्तीत्यास्थातम् । ते न्नीमेया नगरा वद्विद्वन्ता अन्तद्यतुरसू अथ पुस्करकणिंका

उलङ्गं नीरखाय फलितो पागारहालयकवाक्रीरणपक्रिदुवारदेमन्नागा जंतसयग्निमुसलेनसंहिपरिवारिया अ
उज्जा सया जया सया गुता अक्रयालकुठरडयअक्रयालकयत्रसमाला खेमा सिवा किकरामरदक्रोवरकि
या लाउल्लोडयमहिया गोसीसरसरत्तचंदणददददिसपचंगुलितला उवचियचदणकलसा चदणघऊसुकयनी
रणपक्रिदुवारदेसन्नागा आसतोसत्तविउलत्रहवग्धारियमल्लदामिकलावा पंचवन्नसरसरजिमुक्तापुष्पपुंजीव
यारकलिया कालागुरुपवरकरुक्कतुरुक्कधूमधमघतगधुधुयानिरामा सुगधवरगंधिया गंधवहिन्नूया अक्ख
रणसघविकिसा दिव्वतुठियसदसपत्तदिया पन्नागमालाउलानिरामा सहरयणमया अक्खा सरहा लठा
घठा मठा नीरया निम्मला निप्पका निक्ककळ्ळया सप्पन्ना ससिरीया सउज्जीया पासादीया दरिसिणिज्जा
अन्निरूवा पक्रिदुवा एत्थणं वाणमतराणं देवाण पज्जात्तापज्जाणं ठाणा पसुत्ता । तिसुवि लोगस्स अस्से

मूल्यानसंस्थिता वरकीर्णां नरविपुलगभीरुखानफलिका प्राकाराहालकपाटतोरणप्रतिद्वारदेशभागा यत्रज्ञतन्निमुसलनुशयिषपरिवारिता आयोप्या
या. सदागुमा अष्टवत्वारिंशकोष्टकरविताष्टवत्वारिंशकतथणमाला जेमा शिवा किङ्करापरदकोपरसिता. लावल्लोडयमहिता गोत्री
रक्तचन्दनदंददत्तपन्नाहुलितला उपचितचन्दनकलशा चन्दनघटसुक्रतोरणप्रतिद्वारदेशभागा आसक्तोत्सक्तविपुलवृत्तवग्यारियमाल्यदा
सा पल्लवर्णसरसरजिमुक्तापुष्पपुंजीव कालागुरुपवरकरुक्कतुरुक्कधूमधमघतगधुधुयानिरामा सुगन्धवरगन्धिया गन्ध
मा अप्सरोगणसङ्घविकीर्णा दिव्यव्रतितनिनादसम्यग्गन्दिता पताकमालाकुलाञ्जिरामा सर्वरत्नमया अक्खा. सरहा लठा घृष्टा मृष्टा नीरजसा
ला निप्पङ्गा निफाटकच्चाया सप्पन्ना सोद्योता प्रामादीया दज्जानीया अन्निरूपा प्रतिकूपा अत्र बानध्यन्तराणा देवाना पर्याप्ता
यांसाना स्थानानि प्रद्वष्टानि । त्रिघपि (स्यानेयु) लोकस्यासङ्ख्येयजाग' तत्र बहवो बानध्यन्तरा देवा परिववसन्ति सद्यथा-पिशाचा-भूता यद्वा

खेज्जडनागे तल्यण वहवे वाणमंतरा देवा परिवसति तजहा—पिसाया नूया जस्का ररकसा किन्नरा किपुंरि
सा नूयगवतिगोय महाकाया गधहगणा य निउणगवह्वगीतरइणो अणवसियपणवन्तियडसिवाडयन्नूयवा
डय कडोय महाकडोय कोहरुपयगदेवा ॥१॥ चवलचवलचित्तकीलणदवप्पिया गहिरहसियपिया गीयणि
चरती वणमालामेलमउलकुलसच्छेदविउख्खिगान्नरणचारुत्तसणधरा सद्योयसुरच्चिकुसुमसुरइयपलवसोहंत
कतवियसितचित्तवन्नमालरडयवच्छा कामकामा कामरूवदेहधरा नाणाविहवन्नरागवरवत्यललंतचित्तचित्त
गणिवसणा विविहदेसीणेवत्यगहियवेसा समुडयकटप्पकलहकेलिकोलाहलप्पिया हासवोलवज्जला असि
मोगरसत्तिकुतहत्या अणेमणिरणविविहनिजुत्तवित्तचिधगयासुरूवा महिहिया महज्जुतिया महायसा
महायला महानुजागा महासोस्का हारविराडयवच्छा कण्ठगतुत्तियथन्नूया मगयकुंठलमठगजुयलक
णपीठधारी विचित्तहत्यान्नरणा विचित्तमालामउलिकल्लानगपवरवत्यपरिहिया कल्लानगपवरमल्लानुलेवणध

रावसा किन्नरा किम्पुठया जुजगपतयश्च महाकाया गम्यवंगणाद्य निपुणगम्यवंगीतरतय , अणपत्तीपणपत्ती ऋषिवादीचिवन्नवादी च । लन्दीथ
महाकन्दी कोहरुकोचैवपतकश्च ॥ १ ॥ एतेही देवविशेषा , धलपत्तचित्तकोठनद्रवप्रिया गभीरहसितप्रिया गीतय्यतरतयो वनमालापीठमुल्लु
टकुणलस्वच्छन्दविकुर्वितान्नरणचारुत्तपणधरा सर्वसुं कसुराजिकुसुमसुरचित्तमल्लवोजमानकान्तविकचित्तचित्रबनमालरचित्तयन्नस कामकामा
कामरूपदेहधरा नानाविधयणारागवरवखचित्तचिह्नक (देदीप्यमान इत्यर्थ) निवसना विविधदेशीनेपण्यगृहीतवेया समुदितकन्दर्पकलहकेलितो
लाहलप्रिया हासवोलवहुला असिमुद्ररश्चित्तकुन्तहस्ता अनकमणिरत्तावविधानयुक्तवित्तचित्रचिह्नगता सुरूवा महिहिका महाद्युतिका महद्यशसो
महदला महानुभावा महेशास्या हारविराजितवन्नस कटकटुटित्तवन्तानुजा अङ्गदकुण्डलसुगणगुलकणपीठधारिणी विचित्रहस्तान्नरणा

रा त्रासुरवोदी पलंववणमालधरा दिव्येण वद्वेणं दिव्येणं गधेणं दिव्येणं फासेणं दिव्येणंसंठाणेणं दिव्याए इ
 हीए दिव्याए जूईए दिव्याए पन्नाए दिव्याए एच्छायाए दिव्याए अच्चीए दिव्येण एएणं दिव्याए लेस्साए दसदि
 साने उज्जीवेमाणा पन्नासेमाणा तेणं तल्य साण२ ज्ञोमेज्जाणगरावाससयसहस्साण अस्सखिज्जाणं साणं २
 सामाणियसाहस्सीण साण२ अंगमहिसीणं साण२ सपरिवाराणं साण२ अणियाण साण२ अणियाहिब
 ईण साण २ अ्यायरक्कदेवसाहस्सीणं अ्येसिसि च वत्तणं वाणमतराण देवाणय देवीणय अ्याहेवच्चं पोरेवच्चं
 सामित्त न्हित्त महत्तरगत अ्याणाईसरसेणावच्च कारेमाणा पालेमाणा महायाहयनट्टगीयवाइयतंतीतलताल
 तुळियवणमुडुगपट्टुप्यवाडयरवेणं दिव्याड जोगजोगाइ ज्ञुजमाणा विहरति । कहिण जत्ते ! पिसायाणं देवाणं
 पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प० । कहिण जत्ते ! पिसायादेवा परिवसति ? गो० ! इमीसे रयणप्पन्नाए पुढवीए

विचित्रमालामुकटा कल्याणकप्रधरस्वरिहिता कल्याणकप्रधरमात्मानुलेपनधरा त्रासुरवोन्दय प्रलम्बवदनमालधरा दिव्येन वद्वेन दिव्येन गधे
 न दिव्येन रपवीण दिव्येन सस्यानेन दिव्यया अच्चा दिव्यया द्युत्या दिव्यया प्रन्नया दिव्यया द्वायया दिव्येनार्चिणा दिव्येनैतेन दिव्यया लेदय
 या दश दिश तद्योतयन् प्रज्ञासयन्तस्ते तत्र स्वेया २ भीमेयनगरावासशतसहस्राणा अस्सत्येयाना स्वेया २ सामानिकसहस्राणा स्वेया अग्रमहि
 यीणा सपरिवाराणा स्वेया २ अनीकाना स्वेया २ अनीकाधिपतीना स्वेया २ आत्सरत्तकदेवसहस्राणामत्येपाब्ब यट्ठना धानध्यन्तराणा देवाना दे
 वीनाब्बाधिपत्य पुरोवर्तित्व स्वाभित्य प्रतृत्व मत्सरकत्वमाद्येध्वरत्व सेनापतित्व कुर्वन्त पालयन्तो मसृदाहृतनृत्यगीतवादिचतन्त्रीतलतालत्रुटित
 चनसुदह्मपटुप्रवादितरवेणा दिव्यानि जोगजोगानि ज्ञुज्जानो विहरन्ति । क प्रदन्त । पिशाचाना देवाना पर्योपापर्योपाना स्थानानि प्रज्ञप्तानि, क प्र
 दन्त । पिशाचा देवा परिवसन्ति ? गीतम् । अस्या रत्नप्रज्ञाया. पुण्यव्या रत्नमपस्य काण्डस्य योजनसहस्रत्राहस्यस्योपर्यक योजनज्ञावमवगात्सा

रयणामयस्स कस्स जोयणसहस्सवाहस्स उवरि एगं जोयणसय उग्गाहिता हिठावेग जोयणसय वज्जि
त्ता मज्जे अठसु जोयणसएसु एत्यण पिसायाण देवाण तिरियमसखेज्जा जोमेज्जा नगरावाससयसहस्सा
भवतीति मस्कायं तेण जोमेज्जा नगरा वाहि वहा जहा उहिने जवणवखुन तहा ज्ञाणियवो जाव पफ़िह
वा, एत्यण पिसायाण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पखत्ता, तिसुवि लीगस्स अस्सखेज्जइज्जागे तत्यणं
बहवे पिसाया परिवसति महिहिया जहा उहिया जाव विहरति, काला महाकाला इत्य दुवे पिसाय
इदा पिसायरायाणो परिवसति, महिहिया महज्जुडया जाव विहरति । कहिणं जत्ते ! दाहिणिह्वाण पि
सायाण देवाण ठाणा पखत्ता । कहिण जत्ते ! दाहिणिह्वा पिसाया देवा परिवसति ? गो० । जवूदीवे २
मठरस्स पव्वयस्स दाहिणेण डमीसे रयणप्पन्नाए पुढवीए रयणामयस्स कस्स जोयणसहस्सवाहस्स उवरि
एग जोयणसय उग्गाहिता हिठावेग जोयणसय वज्जिता मज्जे अठसु जोयणसएसु एत्यणं दाहिणिह्वाण

धर्मेक योजनशत वर्जयित्वा मध्येऽष्टसु योजनशतमेधत्र पिशाचाना देवाना तिर्यगसङ्ख्यानि भौमेयकनगरवासशतसहस्राणि प्रवन्तीत्याख्यातम् ।
ते भौमेया नगरा बहिर्वृत्ता यथोपिको जवनवणक स्तथा प्राणितव्यो यावत्प्रतिक्रिया, अत्र पिशाचाना देवाना पर्योपापर्योमाना स्थानानि प्रज्ञ
मानि । त्रिधवि लोकसाख्येपन्नाग, तत्र बहव पिशाचा परिवसन्ति महर्दुका यथोपिका यावद्विहरन्ति, कालमष्टाकाली चात्र द्वौ पिशाचे
न्द्री पिशाचराजानौ परिवसत, महर्दुकी महाद्युतिकी यावद्विहरत । क्व प्रदन्त । दाक्षिणात्याना पिशाचाना देवानां स्थानानि प्रज्ञमानि, क्व
मदन्त । दाक्षिणात्या पिशाचा देवा परिवसन्ति ? गोतम । जम्बूद्वीपे २ मन्दरस्य पर्वतस्य दक्षिणतोस्या रत्नप्रज्ञाया पृथिव्या रत्नमयस्य कारुड
स योजनसहस्राहस्यसोपर्येक योजनशतमेधत्रा धर्मेक योजनशत वर्जयित्वा मध्येऽष्टसु योजनशतमेधत्र दाक्षिणात्याना पिशाचाना देवाना

एत्यणं छणवन्निया देवाणं ठाणा प०, उववाएलो० समुघाएलो० सठाणेणलो० तत्थणं छणवन्निया देवा
परिवसति महिहिंया जहा पिसाया जाव विहरति सन्निहियसामाणा इत्य दुवे छणवन्निया छणवन्ति
यकुमाररायाणो परिवसति महिहिंया जहा कालमहाकाला एव जहा कालमहाकालाणं दोरहापि दाहिणि
स्साण उत्तरिस्साणय जणिंया तथा सनिहियसामाणाणपि जणिंयस्सा संगहिण गाहा-छणवन्नियपणवन्निय
इसिवाइयन्नयथाइएचेव । कंदिंयमहाकदिंय कुहळयपयगंदवाय डमे इंदा-सनिहियासामाणा धाडविधाएय
इसीयइसिवाले ईस्सरमहेस्सरविंय हवडसुवत्येविसालिय ॥१॥ हासेहासरईविंय सेएयजवेतहामहासेए पयगेप
यगपएविंय नेयस्सायाणपुवीए ॥२॥ कंदिंय जते । जोडसियाण देवाणं पज्जत्ताण २ ठाणा प० ? कंदिंय जते !
जोडसिया देवा परिवसति ? गो० ! डमीसे रयणप्पत्ताए पुढवीए वज्जसमरमणिज्जात्तं भूमिजागात्तं सत्तणउ
ड जोयणसए उहु उप्पइत्ता दसुत्तर जोयणसय बाहले तिरियमसंखिज्जे जोडसविंयसए एत्यणं जोडसियाणं

रन्ति । सन्निहितसमानो चात्र द्वावपन्निकेन्द्रावणपन्निकराजानो परिवसतो महर्द्धिको यथा कालमहाकालो एव यथा कालमहाकालोर्द्धो र्दो
दिणस्यथो रीत्तरिकाशाब्ब (वक्कयता) भाग्यता तथा सन्निहितसामानिकयोरेपि जग्गितथा सङ्गहणिगाथा-अणपन्निकपणपन्निका वृषिवादी चे
वज्जतवादी च । कन्दीवमहाकन्दी कोइहणीचेवपतकच्च ॥ १ ॥ इमे इन्द्राः सन्निहित सामानो धावविधात्तपयथागियेपाल । ईधेरमहेद्वरीखलु ज्वति
सुवस्सोविशालथ ॥ २ ॥ हासोहास्यरत्ति-खलु स्वेतद्वप्रवस्तथा महास्वेत. पतक पतकपदोपिच ज्ञातथा आनुपूर्व्याच ॥ २ ॥ कं भदन्त । ज्योति
काणा देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रवृत्तानि । कं भदन्त । ज्योतिष्का देवा. परिवसन्ति ? गीतम । कस्या रत्तप्रवाया पुण्यव्या यहुसमर
मणीयाद् भूमिजागा तस्सत्तवविणोक्कत्तमूहुं मत्पत्त दसोत्तर योजनत्तथा इत्य तिर्यग्बल्येय ज्योतिष्कविंयमत्त ज्योतिष्काणा देवाना तिर्यग्

देवाण तिरियमसखिज्जा जोडसियविमाणावाससयसहस्सा हवंतीतिमस्काय तेण विमाणा अण्ठकविठ्ठ
 सठाणसठिया सव्वाफालियामया अण्ठगयमुसियपहसियाइव चिविहमणिकणगरयणन्नत्तिचिन्ता वाउठुत
 विजयवेजयतीपफागाच्छन्नाडच्छत्तकलिया तगा गगनतलमहिउधमाणसिहरा जालतरयणपजरुम्मीलियव्व
 मणिकणगथून्त्रियागा वियसियसयपत्तपोर्रीया तिलगरयणण्ठचदचित्ता नानामणिमयदामालकिया अतो
 पफिरूवा एत्यण जोडसियाण पज्जन्ना २ ण ठाणा पणत्ता, तिसुवि लोगस्स अस्सखेज्जइन्नागे तत्यण बहवे
 जोडसिया देवा परिवसति तजहा-बहस्सईचदासूरासुक्कासणिच्छराराज्जधूमकेतुवुधाअगारगा तत्ततवणि
 ज्जकणगवन्ना जेगहा जोडसमि चार चरति केत्तयगतिरडया अठावीसहविहाय नस्सत्ता देवयगणा ना
 णासठाणसठियानुय पचवन्तानु तारयानु उवियलेस्साचारिणो अविस्साममण्ठलगई पत्तेय णामंकपगग्नि

सख्येयानि जवनावासशतसहस्राणि भवन्तीति मयाक्यातम्, तानि विमानानि अद्वैकपितृकसस्यानसस्थितानि सर्वस्तटिकमयानि अम्युद्रतोत्त्व
 तप्रसूतप्रजावितानि धिविधमणिकनकरवन्नक्तिवित्राणि वातोदूधनविजयवेजयतीपताकच्छन्नाडच्छत्तकलितानि तद्वानि गगनतलानुल्लिखिस्स
 राणि जालान्तररज्जपञ्जरोन्मीलितमिव मणिकनकस्तूपिकानि विकसितशतपत्रपुष्पकरीकतिलकरवाहुचन्द्रवित्राणि नानामणिमयदामालङ्कृतानि
 अन्तर्द्विह्य सत्त्वाणि तपनीयशरिषवालुकाप्रसृटानि शजरपत्राणि सत्रीकरूपाणि प्रासादीयानि दर्शनीयानि अजिरूपाणि प्रतिकूपाणि अत्र ज्यो
 तिसकाणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रद्यमानि, त्रिविध लोकस्यासम्येय प्राग तत्र यहवो ज्योतिफदेवा परिवसन्ति तद्यथा-युद्धरपतय यन्त्रा
 सूर्यो ज्जुकाः शनैश्चरा राहवु केतवो बुधा बङ्गारकास्तप्तपनीयकनकवर्णा ये ग्रहा ज्योतिष्यके चार वरानि केतवो गतिरविक्का यथाविशतिविधा

यचिंधमउक्षा महिहिया जाव प्यत्रासमाणी तेणं तल्य साणं२ विमाणावाससयसहस्साणं साणं२ सामाणि
 यसाहस्सीण साण २ अगमहिसीण सपरिवाराण साण २ परिताण साण २ अणियाणं साणं २ अणि
 याहिंवईणं साणं२ आयरस्कदेवसाहस्सीण अन्नसिं च वल्लण जोडसियाणं देवाणय देवीणय आहिेवच्चं जाव
 विहरति चटिमसूरियाय एल्य दुवे जोडसिदा जोडसियगयाणो परिवसति महिहिया जाव पन्नासमाणा ते
 ण तल्य साण २ जोडसियविमाणावाससयसहस्साण चउण्ह सामाणियसाहस्सीण चउण्ह अगमहिसीण
 सपरिवाराणं तिण्ह परिताणं सत्तण्ह अणियाण सत्तण्ह अणियाहिंवईण सोलसरह आयरस्कदेवसाहस्सी
 ण जोडसियाण देवाणय देवीणय आहिेवच्च जाव विहरति । कहिण जंते । वेमाणियाणं देवाणं पज्जत्ता२
 ण ठाणा प० १ कहिण जंते ! वेमाणिया देवा परिवसति १ गो० ! इमीसं रयणप्पन्नाए पुढवीए वहुसमरम

(अष्टाविंशतिसत्याका भनिजिनाद्या लोकप्रसिद्धा । नद्या देवगणा नानासत्थानसंस्थिताश्च पञ्चवर्णोत्तारका (स्तारायुतेसंति) अवस्थितस्तैश्च
 चारिणो ऽविश्राममयहलगतिका प्रत्येक नामाङ्कप्रकटितविहूमुकुटा मर्द्दङ्का यावत्प्रज्ञासयन्त स्ते तत्र स्वेषा २ विमानावासशतसहस्राणा रवे
 या २ सामानिकसहस्राणा स्वेषा २ अग्रमहिषोणा सपरिवाराणा स्वेषा २ पयदा स्वेषा २ अनीकाना स्वेषा २ अनीकाधिपतीना स्वेषा २ आत्सर
 श्कदेवसहस्राणा अन्येषाञ्च यद्गुना ज्योतिष्काणा देवाना देवीनाञ्चाधिपत्य पुरोवर्तित्य यावद्विहरन्ति । सूर्योवन्दनसो चात्र द्वौ ज्योतिष्केन्द्री
 ज्योतिकराजानी परिउसत , मर्द्दङ्को यावत्प्रज्ञासयन्ती तौ तत्र स्वेषा २ ज्योतिकविमानावासशतसहस्राणा चतुर्णां सामानिकसहस्राणा चतु
 र्णामग्रमहिषोणा सपरिवाराणा त्रयाणा पर्यदा समानामनीकाना समानाननीकाधिपतीना चोक्तज्ञानात्मरक्षकदेवसहस्राणा ज्योतिकारामन्येषा
 यद्गुना देवाना देवीनाञ्चाधिपत्य यावद्विहरत । क्व भदन्त । वेमानिकानां देवाना पर्योक्षापर्योक्षानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । क्व भदन्त । वेमानिका

णिज्जातुं नूमिज्जागातुं उहुं चदिमसूरियगहनरक्ततारारूपाणं वज्रहं ज्ञोयणसर्पाइं वज्रहं ज्ञोयणसहस्ता
इ वज्रगातुं ज्ञोयणकोलीउं वज्रगातुं ज्ञोयणकोलाकोलीउं उहु दूर उपपडता एत्यण सोहम्मीसाणत्तणकु
मारमाहिदवन्नलोगलतगमहासुक्कमहस्सारआणयपाणयआरणअञ्जुयेविज्जाणुत्तरेसु तत्य एत्यण येमाणि
याण देवाण चउरासीइविमाणसयसहस्सा सत्ताणउइनेवसहस्सातुं तेवीस विमाणा हवतीतिमस्काय तेण
विमाणा सधूरयणामया अक्का सण्हा लठा घठा मठा नीरगा निम्मला निप्यंका निक्काकुरुक्काया नप्यहा
ससिरीया सउज्जीया पासादीया दुरिसणिज्जा अतिरूवा पक्रिक्का इत्यण वेमाणियाण देवाण पज्जत्ताप
ज्जत्ताण ठाणा प० तिसुवि लोगस्स असखेज्जइनागे तत्यण वहेत्रं वेमाणिया देवा परिवसति तं०—सोह
म्मीसाणत्तणकुमारमाहिदवन्नलोगलतगमहासुक्कसहस्सारआणयपाणयआरणअञ्जुयेवेज्जाणुत्तरोवत्राडया
देवा तेण मियमहिसवराहसीहलगतदहुहयगयवडनुयगखग्गउत्तज्जविहिमपागक्रियविधमउत्ता पसिहिल

देवा परिवसन्ति ? नीतम । अस्या रत्नमजाया पृथिव्या यदुसमरमणीणदूनुमिज्जागादूहं चन्द्रसूर्ययद्गन्तारारूपाया यदूनि योजनज्ञानानि य
दूनि योजनसहस्राणि वज्रो योजनकोट्यो यज्रो योजनकोटीकोट्य कहु दूरमुत्पत्त्यात्र सोपमंज्ञानसमकुमारमहन्द्रप्रस्तलात्तकडुक्कसहस्रारान्त
प्राणतारणाच्चतुर्वेयकानुत्तरदु तत्रेतया वेसानिकाना देवाना चतुर्द्वीतिविमानगतसहस्राणि सप्तवत्तसहस्राणि श्रयोविशतिर्येमानानि नव
स्तीति मयास्थातम् । तानि विमानानि सर्वरत्नमणानि अल्लानि शृङ्खलानि लघानि पृथानि भोरअसि निर्मलानि निप्यङ्गानि निष्कण्टक
च्छापानि समग्रानि सोद्योतानि प्रासादीयानि दशनीयानि अप्रक्रुपाणि प्रांत्तरुपाणि चत्र वेसानिकाना देवाना पयोप्तापयोप्ताना स्थानानि प्रस
सानि । त्रिद्विपि लाकस्यासक्येय प्राग तत्र बहवो वेसानिका देवा परिवसन्ति तद्या-सुीयमंज्ञानसमकुमारमाहिन्द्रप्रस्तलात्तकडुक्कसहस्रारान

वरमउरुतिरीकधारिणो वरकुंरुलुज्जोइयाणणा मउरुदित्तिसिरया रत्तात्ता पउमंप्पहगोरा ज्ञासेया सुहवसंगं
धफासा उत्तमवेउव्विणो पवरवत्यगधमत्ताणलेत्रणधरा महिहिया महज्जुइया महायसा महत्तला महाणत्ता
गा महासोस्का हारविराइयवत्या करुगतुक्रिययन्नियन्नुया अगदकुंरुलमठगळतलकस्सपीठधारी विचिंत
हत्थान्नरणा विचित्तमालमउलिकत्ताणपवरवत्यपरिहिया कत्ताणगपवरमत्ताणलेत्रणा ज्ञासुरवोदो पलंबव
णमालधरा दिव्वेणं वत्तेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं फासेण दिव्वेणं संघयेणं दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वेणं इहीए
हिद्वेणं जुईए दिव्वेणं पत्ताए च्छायाए दिव्वेणं अच्चीए दिव्वेणं तेएण दिव्वेणं लेसाए दसदिसाउ उ
ज्जीवेमाणा पत्तासेमाणा तेण तत्थ साणं २ विमाणात्ताससयसहस्साणं साण २ सामाणियसाहस्सीणं सा
णं २ तावत्तीसगाणं साण २ लोमपालाणं साण २ अगमहिंसीणं सपरिवाराण साणं २ परिसाणं साणं

तप्राणतारणाव्युत्तयैवेयकानुत्तरोपपातिका देवा स्तेषु मृगमहिषयराक्षसिहृक्खलदंदुरहयगणपतिभुजगखङ्गयुयभाङ्गुविडिमचिह्नुमुकुटा प्रक्षिपित
वरमुकुटकिरीटधारिणो वरकुण्डलोद्योतितानना मुकुटदीप्तिशरसो रक्तान्ना पट्टप्रभगीरा प्रास्वरा शुभ्रवर्णन्यस्पर्शो वतमर्वेकुर्विका प्रवरवत्त्र
गन्धमात्यानुलपनपरा भर्द्दिका महाद्युतिका महायज्ञस सहस्रता महानुप्राधा महेशाख्या हारविराजितवत्सर्व कटकत्रुटितस्तम्भितभुजा अङ्गद
कुण्डलशृङ्गगण्डतलकणपीठधारिणो विचित्रहस्ताभरणा विचित्रमातामीलिकत्याणकप्रवरवत्त्रपरिहृता कल्याणकप्रवरमाल्यानुलेपना ज्ञासुवोन्द
य प्रलम्बवनमालधरा दिव्येन वर्णेन दिव्येन गन्धेन दिव्येन स्पर्शेण दिव्येन सघयेण दिव्येन सस्थानेन दिव्यया अश्वा दिव्यया द्युत्यो दिव्यया
प्रजया दिव्यया ज्ञायया दिव्येनार्चिणा दिव्येनैतेन दिव्यया लेत्रयया दत्ता दिव्य उद्योतयन्ते प्रजासयन्त स्ते तत्र स्वेषां २ विमानावासशतसहस्रा
णा स्वेषां २ सामानिकसहस्राणा स्वेषां २ त्रायत्रिशुक्राना स्वेषां २ लोकपालाना स्वेषां २ अयमहिंसीणा सपरिवाराणा स्वेषां २ पर्पदो स्वेषां २

२ अग्नियाण साण २ अग्नियाहिचईण साणं २ आयरकदेवसाहस्सीणं अन्तेसिं च बह्मणं वेमाणि याण
 देवाण देवीणय अग्निवच्च पोरिवच्च सामित्त जहित महत्तरगत्त आणाहंसरमेणावच्च करेमाणा पालेमाणा
 महायाहनहगीयवाइयततीतलतालतुक्रियचणमुहुगपुप्पवाइयरवेण दिव्वाइ नोगन्नोगाइ जुजमाणे विह
 रति । कहिण जते । सोहम्मगदेवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प० कहिण जते । सोहम्मगदेवा परिवसति ?
 गो० ! जवूदीवे २ मदरस्स पव्वरस्स दाहिणेण इमीसे रयणप्पन्नाए पुढवीए वज्जसमरमणिज्जाउ नूमिन्ना
 गाउ उहु चटिमसूरियगहगणनस्कत्ताराण वल्लणि जोयणसयाइ वल्लणि जोयणसहस्साइ वल्लणि जोयण
 सयसहस्साइ वज्जगाउ जोयणकोफीउ वज्जगाउ उहु दूर उपपडत्ता एत्थण सोहम्मे ना
 म कप्पे पक्कत्ते, पाचीणपफीणायत्ते उदीगटाहिणविच्छिन्ने अरुचदसठाणसठिए अच्चिमालिन्नासरासिचन्ता

अनीकाना स्वया २ अनीजाधिपतीना स्वया २ आत्तरकदवसस्साणा अन्येया च यद्दुना वेमानिकाना देवाना च देवीना चाधिपत्य पुरोवर्ति
 त्व स्वामित्व जतुंत्त्व महत्तरकत्वमाद्येश्वरसेनापतित्व कुवत्त पालयतो विहरन्ति मएताएतनृत्यगीतवादिप्रतन्तीतलतालतुटितचनसुदह्मपटुप्रवा
 दितरवेण दिव्यानि मोगन्नोगानि जुज्जानो विहरन्त । क्व जदन्त । सीधर्मकदेवाना पर्याप्तपर्याप्ताना स्थानानि प्रपन्नानि । क्व जदन्त । सीधम
 कदवा परिवसन्ति ? गौतम । जम्बूद्वीपे २ मन्दरस्य पवतस्य दक्षिणतो ऽस्या रत्नप्रज्ञाया पृथिव्या बहुसमरमणीयादूममिभागादूङ्गे चन्द्रसूय
 रगणनक्षत्रारारूपेज्यो बहुनि योजनज्ञातानि यद्दुनि योजनज्ञसहस्राणि यद्दुनि योजनकोट्यो यद्दुनि योजनकोटीकोट्य
 ऊर्ध्व दूरमुत्पत्यात्र सीधमं नाम कल्प प्रहस प्राचीनपतीचीनायतमटीचीनदक्षिणविस्तीर्णं अद्भुतचन्द्रस्थानस्थितमर्धिमौलाप्रासाराज्ञावर्णान्न अस
 स्वया योजनकोट्योऽसस्वया योजनकोटीकोट्य आपामविक्षमाभ्यामसस्वया योजनकोटीकोट्य परिचयेण सर्वत्रमप मच्छ यावत्प्रतिरूप तत्र

३-असखेज्जानु जीयणकोफीनु असखेज्जानु आयामविस्सजेण असखेज्जानु जीयण
 कोफाकोफीनु परिस्सजेण सवुरयणामए अच्चे जाव पफिरुवे तल्यणं सोहम्मगदेवाणं वत्तीस विमाणावास
 सयसहस्सा हवतीतिमस्काय तेण विमाणा सवुरयणमया अच्चा जाव पफिरुवा तेसिण विमाणाणं वज्ज
 मज्जेइसत्ताए पचवत्तसएया पयात्ता, त०-असोगवत्तसए सतवत्तवत्तसए चपगवत्तसए चयवत्तसए मज्जे तल्य
 सोहम्मवत्तसए तेणं वत्तसया सवुरयणामया अत्था जाव पफिरुवा, एत्थणं सोहम्मगदेवाण पज्जत्ता२ णं
 णाणा ५०, तिसुवि लोगस्स असखेज्जानुनागे तल्यण वहेवे सोहम्मगदेवा परिवसति महिहिंया जाव पत्ता
 सेसाणा तेण तल्य साण २ विमाणावाससयसहस्साण साण २ अग्गमहिंवीण साणं २ सामाणियसाहस्सी
 ण एव जहेव उहिंयाण तहेव एतिसिपि माणियत्तु जाव आयस्सकटवसाहस्सीण अत्तेसिं च वत्तण सोह
 म्मगकप्पवासीणं वेमाणियाण देवाण देवाणय अणेवत्तु पोरेवत्तु जाव विहरति । सक्के इत्थ देविदं देव

सौधर्मकदेवाना हात्रिशिद्विमानावासशतसहस्राणि प्रवर्त्तन्तीति मयाख्यातम्, तानि विमानानि सर्वत्रलमयानि अर्चानि यावत्प्रतिक्रियाणि तेषां विमानानां बहुमध्यदेशमार्गे यथावत्सजा. प्रज्ञास्तद्याथा-अशोकावतसक सप्तर्णावतसकयम्यकावतसकधृतावतसको मध्ये तत्र सौधर्मोऽतसकस्ते सावतसका सर्वत्रलमया अर्चना यावत्प्रतिक्रिया . अत्र सौधर्मकदेवाना पर्योपापर्योप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि, त्रिष्वपि लोकस्यासुरेय प्राग तत्र यद्व सौधर्मकदेवा परिवर्त्तन्ति महर्द्धका यावत्प्रज्ञासयन्त स्ते तत्र स्वेषां २ विमानावासशतसहस्राणां स्वेषां २ अग्रमहिषीणां स्वेषां २ सामा निकासहस्राणामेव यथैशीत्येकाना तथैवेतेषामपि त्रिणिष्वय यावदात्मरजदेवसहस्राणां मन्येषां च यद्वना सौधर्मकल्यबासिना देवाना देवीनां चाधिपत्य यावद्विहरन्ति । अत्रो देवेन्द्रो देवराज परिवर्त्तन्ति यज्जगणि. पुरंदर शतक्रतु सहस्राक्षोमयत्रा पाकज्ञासनो दक्षिणधुकोकापि

राया परिव्रसह वज्रपाणी पुरदरे सयक्ताउ सहस्सस्के मधव पागसासणे दाहिणहुलीगाहिंवई वतीसविमा
णावाससयसहस्साहिंवई एरावणवाहणे सुरिदे अरयवरवत्यधरे आलडयमालमउठे नवहेमचारुचित्तचचल
कुललविलिहज्जमाणगळे मंहिहिण जाव पचानेमाणे सेण तत्य वतीसाण विमाणावासमयसहस्साण चउरा
सीए सामाणियसाहस्सीण तावतीसाए तावतीसगाण चउरह लीगपालाण अठरह अग्गमहितीणं सपरि
वाराण तिरह परिसाण सत्तरह अणियाण सत्तरह चउरहं चउरासीण आयरक्केदवसाह
स्सीण अन्नेसि च वल्लण सोहम्मकप्पवामीण वेमाणियाण देवाणय देवीणय आहेवच्च पोरेवच्च कुल्लमाणे
जाव विहरति। कहिण जते। ईसाणगदेवाण पज्जापज्जाण ठाणा प०? कहिण जते। ईसाणगदेवा परि
सति? गो०। जवूदीवे २ मटरस्स पट्टयस्स उत्तरेण इमीसे रयणप्पनाए पुढवीए वज्रसमरमणिज्जाउ जू
मिन्नागाउ उहु वदिमसूरियगहगणनस्कत्ततारारूवाण वल्लइ जोयणसयाइ वल्लइ जोयणसहस्साइ जाव

पति हांविज्ञाहिमानावासजतसरत्ताधिपति रैरावणवाहन सुरेन्द्रोऽरजोम्यवरयथर आलगतमालमकुटी नगहेमचारुचित्तचचलकुललविलिहय
मानगतो मन्त्रिंको यावदप्रजासयस तत्र हांविज्ञादिमानावासजतसरत्ताणा चतुरशीत्याः सामानिकसहस्त्राणा अपस्त्रिगरसहस्त्राकाणा त्रयत्रिंश
कदेवानां चतुर्णां लोकपालानां अष्टानामयमद्विपीणां सपरिवाराणां तिसृणां पर्यंतां सप्तानामनीकानां सप्तानामनीकानां चाधिपतीनां चतुर्णां चतुरशी
त्यात्तरक्तदेवसहस्त्राणां अन्येषां च यदूनां सीधर्मकल्पवासिदेवानां देवीनां चाधिपत्यं कुर्वन्त्य तपन् यावद्विहरति। क्षु जदन्त। ईशानदेवानां प
र्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रपन्नानि क्षु जदन्त। ईशानदेवा परिवसन्ति? गीतम्। जम्युदीप द्वीपे मन्दरस्य पर्वतस्योत्तरेतोस्या रत्नप्रजाया प
यिथ्या बहुसमरमणोयादून्मिन्नागादून् तन्द्रसूर्यग्रहगणनकुवतारारूपस्यो यदूनि योजनशतानि यदूनि श्रीजतशसहस्त्राणि यावदुत्पत्यावेशान

उप्यइत्ता एत्यण ईसाणे नाम कप्पे पन्नत्ते. पाईणपणीणायए उदीणटाहिणविच्छिन्ने एवं जहा सोहम्मे जाव पफिंसुरूवे तत्यणं ईसाणगटेवाण अण्ठावीस विमाणावाससयसहस्सा हवतीति मरकाय तेण विमाणा सब्ब रयणामया जाव पफिरुत्ता, तेसिण बज्जमज्जेदेसत्ताए पच वफिसगा पखत्ता, अक्कवफिसए फलिहवफिसए रयणवफिसए जाव सरूववफिसए मज्जे इत्य ईसाणवफिसए, तेण वफिसया सब्बरयणामया जाव पफिरुत्ता एत्यण ईसाणाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पखत्ता । तिसुवि लोगस्स अुसखेज्जहन्नागे सेसं जहा सो हम्मगदेवाण जाव विहरति, ईसाणं इत्य देविंद देवराया परिवसति सूलपाणी उसन्नवाहणे उत्तरहुलो गाहिवई अण्ठावीसविमाणावाससयसहस्साहिवई अुरयव्रवत्यधरे सेस जहा सक्कस्स जाव पन्नांसमाणे तस्य अण्ठावीसाए विमाणावाससयसहस्साण अुसीतीए सामाणियसाहस्सीणं तावत्तीसाए तावत्तीसगाणं चउत्तरह लोगपालाण अण्ठरह अुग्गमहितीण सपरिवाराण तिरह परिसाण सत्तरह अुणियाणं सत्तरह अुणि

नाम करप मज्झ, प्राचीनप्रतीचीनायत सुत्तरट्ठकणवित्तीणोमेव यथा सौधर्मा यावत्प्रतिरूप तत्रेज्ञानकाना दधाना अष्टाविशति विमानावास ज्ञातसहस्राणि प्रवक्तोत्याख्यात । सानि विमानानि सवरत्नमयानि यावत्प्रतिरूपाणि, तेपा बहुमध्यदेशभागे पञ्चावतसुक्ता. मज्झिमास्तयथा-अह्मा वतसक स्फटिकावतसको यावत्सुलपावतसको मध्ये त्रशानावतसक स्तोचावतसका सर्वरत्नमया यावत्प्रतिरूपा अत्रेज्ञानाना दिधाना पर्योप्तापर्योप्ता स्यानानि मज्झानि, विद्याप लोकासख्येयत्ताग दोष यथा सौधर्मकदेवाना यावद्दिहरन्ति । ईज्ञानात्र देवेन्द्रो देवराज परिवसति शूल पाणिर्बृषजवाहन उत्तराद्गुलोकापिपति रष्टाविशतिविमानावासज्ञातसहस्राणिमज्झीति सामानिकसहस्राणा त्रयस्त्रिंशत् त्रयस्त्रिंशत्काना चतुर्णां लोकपालाना च (पि) यावत्प्रज्ञासयन्तत्राष्टाविशतिविमानावासज्ञातसहस्राणिमज्झीति सामानिकसहस्राणा त्रयस्त्रिंशत् त्रयस्त्रिंशत्काना चतुर्णां लोकपालाना च

यातिवर्णं चउरहं श्रुतीतीणं श्रायस्कदेवसाहस्तीणं श्रुत्वेसिं च बह्मण इंसाणकप्यवासीणं वेमाणिग्याणं देवाण य देवीण य श्राहंवच्च पोरेवच्च कुत्तमाणे जात्र विहरड, कहिण नते । सणकुमारदेवाणं पज्जात्ता पज्जात्ताण ठाणा पसुत्ता । कहिण नत । सणकुमारा देवा परिवसति ? गीयमा ! साहम्मस्स कप्पस्स उ प्पि सपरिक सपफिदिसि वज्जइ जोयणाड बह्मइ जोयणसयाडं बहूइ जोयणसयसहस्साइ वज्जगानु जोय णकोफीनु वज्जगानु जोयणकोफाकोफीनु उहु दूर उप्पइत्ता एत्थण सणकुमारे नाम कप्पे पसुत्ते । पाईण पत्तीणायए उदीणदाहिणविच्छिन्ने जहा सोहम्मं कप्पे जात्र पफिरूवे, एत्थण सणकुमाराण देवाणं वारस विमाणावाससयसहस्सा हवतीति मस्काय, तंण विमाणा सव्वरयणामया जात्र पफिरूवा तेसिण विमाणाणं वज्जमज्जेदसजागे पच वफिसगा पसुत्ता, तजहा-श्रुतांगवफिसए सत्तवसुवफिसए चपगवफिसए चूयवफि

धानामग्रमहिषीणा सपरिवाराणा तिसृणा पयदा समानामनीकाना समानामनीकाचिपतीना वसुणं चतुरशीतिसामानिकसहस्राणा मन्येया च बहूना मीशानकल्पवासिदेवाना दवीना ब्वाचिपत्य पुरावर्तित्व कुंवल्याधिहरति । क जटत्त । सनत्कुमाराणा देवाना पर्योसापर्योसाना स्थाना नि प्रज्ञप्तानि, क जटत्त । सनत्कुमारदेवा परिवसन्ति ? गीतम । सोचमस्य कल्पस्योपरि सपत्त समतिदिक् बहूनि योजनानि बहूनि योजनश्र ताति बहूनि योजनज्ञातसरस्त्राणि बहूयो योजनकोट्यो बहूयो योजनकाटोकाट्य ऊर्द्धे दूरमुत्पत्त्याश्च सनत्कुमार नाम कल्प प्रज्ञप्त, माचीनप्रतीची नायतमुत्तरदक्षिणवस्तीर्णं यथा सोचमं. कल्पो यावत्प्रतिरूप , तत्र सनत्कुमाराणा देवाना हादशविमानावासाज्ञातसरस्त्राणि प्रवन्तीति मयाख्या तम्, ताति विमानानि सर्वरत्नयानि अल्लानि यावत्प्रतिरूपाणि तेया विमानाना मध्ये बहुमध्यदेशजाने पञ्चावतसुका प्रज्ञप्तास्तद्यथा-अशो कावतसुक सप्तपर्णावतसुकश्चम्यकावतसुक यूतावतसुको मध्य तत्र सनत्कुमारावतसुक स्थावतसुका सवरत्नमया अल्ल्या यावत्प्रतिरूपा स्तत्रसन

सए मज्जे तल्य सणकुमारवड्डिसंए तेणं वड्डिसया सवुरयणामया अुच्छा जाव पफ़िरूवा तल्यणं सणकुमारदे
वाण पज्जात्तापज्जात्ताण ठाणा पसत्ता । तिसुवि लोगरस अुसखेज्जइत्तागे तल्यणं वहवे सणकुमारा देवा
परिवसंति महिद्धिया जाव पच्चांनमाणा विहरति नवर अुग्गमहिंसीत्ते णत्थि , सणकुमार इत्थ देविदे
देवराया परिवसइ अुरयवरत्थयधरे सेस जहा सक्कस्स सेण तल्य वारसगुहं विमाणावाससयसहस्साण वाव
सरीए सामाणियसाहस्सीण सेस जहा सक्कस्स अुग्गमहिंसीवज्ज नवर चउगुह वावत्तरीण अुययरकदेवसाह
स्सीण जाव विहरइ । कहिण जत्ते ! माहिदण देवाण पज्जात्तापज्जात्तण ठाणा पसत्ता । कहिण जत्ते !
माहिदगा देवा परिवसति ? गोयमा । ईसाणस्स कप्पस्स उप्पि सपक्खि सपफ़िटिसिं वज्जइ जोयणाइ जाव
वज्जगावै जोयणकोळाकोळात्ते उहुदूर उप्पइत्ता तल्यणं माहिदे नामं कप्पे पसत्ते, पाईणपफ़ीणायए जाव
एव जहेव सणकुमार, नवर अुत्त विमाणावाससयसहस्सा वड्डंसया जहा ईसाणे नवर मज्जे तल्य माहिं

तत्कुमाराणां देवानां पर्याप्तपर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, विद्यपि लोकस्यासत्येयं भागं तत्र व्यवृत्तं सनत्कुमारा देवा परिवसन्ति महर्द्धिका यावद्विहरन्ति नवरमग्रमहिषो नसन्ति, सनत्कुमारश्चात्र देवेन्द्रो देवराज परिवसति अरजोऽम्बरवस्त्रधर शोष यथा शक्रस्य स तत्र द्वादशानां विमानावासगतसहस्राणां द्विसप्ततिं सामानिकसहस्राणां शोष यथा शक्रस्याग्रमहिषीवल्गं नञ्च चतुर्णां द्विसप्तत्यात्मरत्नकदम्बसहस्राणां यावद्विहरन्ति । क्व प्रदन्त । माहेन्द्राणां देवानां पर्याप्तपर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, क्व भदन्त । माहेन्द्रका देवाः परिवसन्ति ? गौतम । इंशानस्य कल्पस्योपरि सपन्नं सप्ततिदिक् बहूनि योजनानि यावद्वह्या योजनकोटीकोट्य ऊर्ध्वं दूरं मुत्पत्य तत्र माहेन्द्रं नाम कल्पं प्रपुष्टं प्राचीनप्रतीचीनां यत यावदेव यद्येव सनत्कुमार नवरमग्री विमानावासगतसहस्राणि श्रवतसका यथा इक्षाने तथैव मध्ये तत्र साहेन्द्राववसक एव शोषं यथा स

दयलंसए एव सेस जहा सणकुमारदेवाण जाव विहरति माहिदे इत्य देविदे देवराया परिवसड् अरयंवर
वत्यधरे एव जहा सणकुमारे जाव विहरइ नवर अउणह विमाणावाससयसहसाणं सत्तरीए सामाणिय
साहस्सीण चउणहं सत्तरीण आयरकदेवसाहस्सीण जाव विहरइ । कहिण भते । वन्नलीगदेवाणं पज्ज
त्ता २ णं ठाणा पत्तत्ता । कहिण भते । वन्नलीगा देवा परिवसति ? गो० ! सणकुमारमाहिदाण कप्पा
ण उप्पि सपरिक सपकिदिसि वल्लइ जोयणाइ जाव उप्पडत्ता एत्थण वन्नलीए नाम कप्पे पाईणपल्लीणा
यते उदीणदाहिणविच्छिन्ने पकिपुन्नचदसठाणसठिए अज्झिमालीनासरसिप्पन्ने अयसेस जहा सणकुमा
राण नवर चत्तारि विमाणावाससयसहसा वरुसगा जहा सोहम्मस्स वरुसगा नवर मज्जे इत्य वन्नलीयव
रुसए एत्थण वन्नलीगाण देवाण ठाणा प०, सेस तेहेव जाव विहरति । वन्ने इत्य देविदे देवराया परिवस
इ अरयवरवत्यधरे एव जहा सणकुमारे जाव विहरति नवर चउणह विमाणावाससयसहसाणं सठीए

नरकुमारे कल्पे यावद्दिहरति नवरसपानां विमानावासगतसहस्राणा सप्तति सामानिकसहस्राणा चतुणा (चतुर्गुणाना) सप्तत्यात्मरक्तदेवसह
स्राणा (अशीत्यधिकशतह्यात्मरक्तदेवसहस्राणामित्यर्थ) यावद्दिहरति । क्व प्रदत्त । ब्रह्मलोकदेवाना पर्याप्तपर्याप्ताना स्थानानि प्रदधानि,
क्व प्रदत्त । ब्रह्मलोक देवा परिवसन्ति ? गीतम् । सनत्कुमारमाहेन्द्रकल्पयोरुपरि सपत्न्य समतिदिक् वदन्ति योजनानि यावदुत्पत्त्यात्र ब्रह्मलोक
नाम कल्प प्रदत्त प्राचीनप्रतीचीनायतमुत्तरदर्शितविक्षीणं प्रतिपूजचन्द्रसंस्थानसंस्थित अचिर्भोतान्नाराशिभञ्ज अवशेष यथा सनत्कुमाराणा नव
र चत्वारि विमानावासगतसहस्राणि अवतसका यथा सौषमंस्थावतसका नवर मध्येत्र ब्रह्मलोकावतसकोत्र ब्रह्मलोकाना देवाना स्थानानि प्र
दधानि शेष तथैव यावद्दिहरन्ति' ब्रह्मात्र देवेन्द्रो देवराज परिवसति अरजोत्थरवस्वधर एव यथा सनत्कुमारे यावद्दिहरति नवर चतुणा वि

सामाणियसाहस्सीणं चउरहसठीणं आयरस्कदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च वल्लणं जाव विहरड । कहिणं नत्ते ! लतगदेवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पयत्ता, कहिणं नत्ते ! लतगदेवा परिवसति ? गोयमा ! वन्नलोगस्स कप्पस्स उप्पिं सपरिक्खय सपकिटिसि वल्लइ जीयणसयाइं जाव बहुइंनु जीयणकोफ्फाकोफ्फोउ उहु दूर उप्पडत्ता एत्थण लतए नाम कप्पे पयत्ते, पाईणपफ्फोणायते जहा वन्नलोए नवरं पन्नासाविमाणा वाससहस्सा हवतीतिमस्काय, वरुसगा जहा ईसाणवरुसगा नवर मज्जे इत्थ लतगवरुसए देवा तहेव जाव विहरति, लतए इत्थ देविदे देवराया परिवसड जहा सणकुमारे नवर पन्नासाए विमाणावाससह स्साण पन्नासाए सामाणियसाहस्सीण चउरहं पन्नासाण आयरस्कदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च वल्लणं जाव विहरइ । कहिणं नत्ते ! महासुक्काण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पयत्ता । कहिणं नत्ते ! महासुक्कादे

मानावासशतसहस्राणा ससति सामानिकसहस्राणा चत्थेणां (चतुर्गुणाना) पट्ठ्यात्तरइमेवसहस्राणा (चत्वारिंशदधिकशतद्वयदेवसहस्राणा) अन्येपाल्वा वट्टुना यावट्ठिहरति । क प्रदत्त । लान्तकदेवाना पयोप्पापयोप्पाना स्थानानि प्रज्ञप्तानि, क प्रदत्त । लान्तकदेवा परिवसन्ति ? गी तम । ब्रह्मलोकस्य कल्पस्योपरि सपुत्र समतिदिक् वट्टुनि योजनज्ञत्तानि यावदूरमुत्पत्त्यात्र लान्तक नाम कल्प प्रज्ञप्त प्राचीनप्रतीचीनायत यथा ब्रह्मलोके नवर पन्नाशादिमानावासशतसहस्राणि भवन्तीति मयाख्यातम्, अवतसका यथा ईशानावतसका नवर मध्येत्र लान्तकावतसको देवा स्तथैव यावट्ठिहरन्ति, लान्तकोत्र देवेन्द्रो देवराज परिवसति यथा सनत्कुमार नवर पन्नाशादिमानावासशतसहस्राणा पन्नाशात्सामानिकसहस्रा को चत्थेणां (चतुर्गुणाना) पन्नाशादात्तरइमेवसहस्राणा (लक्षद्वयात्तरइमेवसहस्राणा) अन्येणा च वट्टुना यावट्ठिहरति । क प्रदत्त । महा सुक्का देवाना स्थानानि प्रज्ञप्तानि, क प्रदत्त । महासुक्का देवा परिवसन्ति ? गीतम । लान्तकस्य कल्पस्योपरि सपुत्र समतिदिक् यावदुत्प

वा परिवसति ? गीयमा ! लतस्स कप्पस्स उप्वि सपकिं सपकिदिंसि जाव उप्वड्ढा एत्यण महासुक्को
नाम कप्पे पखत्ते, पाईणपणीणायते उदीणदहिणविच्छिन्ते जहा वन्नलोए नवर चत्तालीस विमाणावा
ससहस्सा हवतीति मरुकाय, वरुसगा जहा सोहम्मवरुसगा नवर मज्जे तत्य महासुक्कावरुसए जाव विह
रइ महासुक्को इत्य देविदे देवराया जहा सणकुमारे नवर चत्तालीसाए विमाणावाससाहस्सीणं चत्ताली
साए सामाणिअसाहस्सीण चउरह चत्तालीसाण आयररुदेअसाहस्सीण जाव विहरति । कहिण जत्ते !
सहस्सारदेवाण पज्जत्ता २ ण ठाणा प० । कहिण जत्ते ! सहस्सारा देवा परिवसति ? गी० । महासुक्कस्स
कप्पस्स उप्वि सपकिं सपकिदिंसि जाव उप्वड्ढा एत्यण सहस्सारे नाम कप्पे प०, पाईणपणीणायते
जहा वन्नलोए नवर विमाणावाससहस्सा हवतीति मरुकाय देवा तहेव वरुसगा जहा ईसाणस्स वरुसगा
नवर मज्जे इत्य सहस्सारवरुसए जाव विहरति, सहस्सारे इत्य देविदे देवराया परिवसइ जहा सणकु

त्यात्र महाशुक नाम कल्प प्रद्युम्न प्राचीनप्रतीचीनायतमुत्तरदक्षिणविस्तीर्णं यथा ब्रह्मलोको नवर वत्यारिशद्विमानायासुगतसहस्त्राणि प्रवन्ती
ति मयाख्यातमवतसका यथा सीपमवतसका नवर मध्ये तत्र महाशुक्रावतसको यावद्विहरति, महाशुक्रो देवेन्द्रो देवराजो यथा सुनन्दुमारो
नवर वत्यारिशद्विमानायासुगतसहस्त्राणां वत्यारिशद्विमानायासुगतसहस्त्राणां वत्तुणां वत्यारिशद्विमानायासुगतसहस्त्राणां यावद्विहरति । क प्रदत्त ।
सहस्त्रारदेवाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रद्युम्नानि, क प्रदत्त । सहस्त्रारदेवा परिवसन्ति ? गी० । महाशुकस्य कल्पस्योपरि सुपन्नं सुमति
दिक् यावदुत्पत्त्यात्र सहस्त्रार नाम कल्प प्रद्युम्न प्राचीनप्रतीचीनायतमुत्तरदक्षिणविस्तीर्णं यथा ब्रह्मलोको नवर पद्विमानायासुगतसहस्त्राणि प्र
वन्तीति मयाख्यात देवास्तथैवावतसका यथा ईशानस्यावतसका नवर मध्ये यत्र सहस्त्रारायतसको यावद्विहरति, सहस्त्रारो देवेन्द्रो देवरा

मारे नवरं वरुहं विमाणावाससहस्राणं तीसां सामाणियसाहस्सीणं चउरहय तीसाणं आयरस्कदेवसाह
स्सीण जाव अहेवज्जं कारेमाणे विहरति । कहिण नते ! आणयपाणयदेवानं पज्जाता २ णं ठाणा ५०
कहिणं नते ! आणयपाणयदेवा परिवसति ? गोयमा ! सहस्सारस्स कप्पस्स उप्पि सपक्कि सपक्किदि
सि जाव उप्पइत्ता एत्थण आणयपाणयनोमेण दुवे कप्पा पन्नत्ता, पाईणपणीणायते उदीणदाहिणविच्छि
न्ना अरुचदसंठाणसंठिया अच्चिमालीनासरसिप्पन्ना सेस जहा सणकुमारे जाव पक्किरुवा तत्थणं आण
यपाणयदेवानं चत्तारि विमाणावाससया हवतीति मक्काय जाव पक्किरुवा, वरुसगा जहा सोहम्मे नवरं
मज्जे पाणयवरुंसए तेण वरुसगा सव्वरयणामया अच्चा जाव पक्किरुवा, एत्थणं आणयपाणयदेवाण पज्ज
त्तापज्जात्ताण ठाणा पन्नत्ता, तिसुवि लोगस्स अस्सखेज्जइन्नागे तत्थण वहुवे आणयपाणयदेवा परिवसंति

अ परिवसति यथा सनत्कुमारो नवरं यथा विमानावासवत्सहस्राणां चतुणां त्रिशदात्सरसदेवसहस्राणां यावदापि
त्य कुर्वन्निहरति । क प्रदत्त ! आनतप्राणतदेवाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रदत्तानि । क भदन्त ! आनतप्राणतदेवा. परिवसन्ति ? गीतम् ।
सहस्रारस्य कल्पस्योपरि सपक्कं समतिदिक् यावदुत्पत्त्यात्रानतप्राणतमानां ह्रीं कल्पो प्रदत्तो प्राचीनप्रतीचीनायसी उत्तरदक्षिणचिस्तीर्णो कद्वंश
न्द्रसंस्थानसंस्थितो अर्चिमोलाभाराणिसप्रप्ती शेष यथा सनत्कुमारो यावत्प्रतिरूपो तत्रानतप्राणतदेवानां यत्वारि विमानावासवत्सहस्राणि न
वन्तीति मयाख्यातम् यावत्प्रतिरूपी, अवतसका यथा सोचर्मं नवरं मध्ये प्राणतावतसकं स्तेचावतसकां सुवरत्नमया अच्चा यावत्प्रतिरूपा अत्रा
नतप्राणतदेवाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रदत्तानि त्रिद्यौप्य लोकस्यासंख्येय जाग तत्र वहुव आनतप्राणतदेवा परिवसन्ति मरुद्वंका याव
त्प्रभासयन्त स्त तत्र स्वेषा २ विमानावासवत्ताना यावद्विहरन्ति, प्राणतद्यात्र देवेन्द्रो देवराज. परिवसति, यथा सनत्कुमारो नवरं चतुर्णां वि

महिद्विया जात्रे पञ्चासेमाणा तेनं तस्य साण २ विमाणावाससयाणं जात्रे विहरति पाणए इत्य देविदे देवरा
या परिवसति जहा सणकुमारे णवर चउएह विमाणावाससयाण वीसाए सामाणियसाहस्सीणं असीतीए
आयरकदेवसाहस्सीण अत्रेसि च बरुण जाव विहरति । कहिण ऋते ! आरणञ्जुयाण देवाण पज्जहा
२ ण ठाणा पखत्ता । कहिणं ऋते ! आरणञ्जुया देवा परिवसति ? गोयमा ! आणयपाणयाण कप्पाणं
उप्पि सपरिक सपणिदिसि एत्थण आरणञ्जुयानाम दुवे कप्पा पखत्ता पाईणपणीयायगा उदीणदाहिणवि
च्छिन्ता अरुचदसठाणसठिया अस्मिमीज्जासरासिवन्नाजा असखिज्जानुं जीयणकीकाकोलीउं आयामवि
स्कनेणं असखेज्जानुं जीयणकीकाकोलीउं परिकेवेणं सवुरयणमया अच्छा सहा लठा घठा मठा नीरया
निममला णिप्पका निक्ककळ्ळाया सप्पजा ससिरीया सउज्जीया पासईया दरिसणिज्जा अन्निरुवा पणि
रूवा एत्थणं आरणञ्जुयाण देवाण तित्ति विमाणावाससया हवन्तीति मस्काय, तेनं विमाणा सवुरयणाम

मानावासशतानां विवशति सानानिकसइसुणां भवतीति आत्तरणकदेवसहस्राणामन्येषां च बहुना यावद्दहरति । क्व नदन्त । आरण्यच्युतानां दे
वानां पर्यासापर्यासानां स्थानानि प्रपन्नानि क्व नदन्त । आरण्यच्युतका देवा परिवसन्ति ? गौतम । आनतप्राणतयो कल्पयोरुपरि सपन्नं सुप्र
तिदिक् भवानतप्राणतनामान् द्वौ कल्पौ प्रपन्नौ प्राचीनप्रतीचीनायमावुत्तरदर्शणविस्तीर्णौ अर्हचन्द्रस्थानसंस्थितौ अर्चिमोलानाराजसप्रज्ञौ
असंख्येय योजनकोटीकोट्य आयमाविक्रमाज्या असंख्येया योजनकोटीकोट्य परिक्षेपण सर्वरत्नमयी अच्छौ सरस्वती सद्यो घृष्टी सद्यो नीरजसो
निर्मली निष्पङ्को निष्फरकटच्चायौ सप्रभौ सत्रीकौ सोद्योतौ प्रासादोयौ दर्शनीयौ अभिरूपौ प्रतिकूपौ अत्रारण्यच्युतानां देवानां त्रीणि विमाना
वासशतानि भवन्तीति मयास्यात । वानि विमानानि सर्वरत्नमयानि शुद्धानि लघानि पृष्ठानि नौरजांसि निर्मलानि निर्णयका

या अक्का सरहा लठा घठा मठा नीरया निम्लला निप्यंका निक्कंकरुक्काया सप्पन्ना सत्तिरीया सउज्जीया
 पासादीया दरिसणिज्जा अन्निरूवा तेषिणं विमाणण वज्जमज्जदेसन्नाए पंच वरुसया पयत्ता, तंजहा
 अरुवन्नुसए फलिहवन्नुसए रयणवन्नुसए जाव रुववन्नुसए मज्जे इत्य अन्नयवन्नुसए, तेणं वरुसया सन्नय
 णामया जाव पन्निरूवा, एत्थणं अरण्यनुयाणं देवाण पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पयत्ता । तिसुवि लोगस्स
 अस्सखेज्जइत्तागे तत्थण बहवे अरण्यनुया देवा जाव विहरति, अन्नए तत्थ देविंदे देवराया परिवसइ ।
 जहा पाणए जाव विहरति नवरं तिरह विमाणावाससयाण दसरह सामाणियसाहस्सीण चत्तालीसाए
 अयाररकदेवसाहस्सीण अहेवच्च जाव कुवमाणे विहरति, वत्तीसठावीसा वारसाठचउरोसयसहस्सा
 पन्ताचत्तालीसा वस्ससहस्सासहस्सारे ॥ १ ॥ अणयपाणयकप्पे चत्तारिसयारणञ्जुएतिस्सि । सत्तविमाणस
 याइ चउसुविएएसुकप्पेसु ॥ २ ॥ सामाणियसगहणीगाहा-चउरासीइअस्सीति वावत्तरिसत्तरीयसठीए ।

नि निक्कटक्कयायानि सपन्नाणि सत्रीकणि सोद्योतानि प्रासादीयानि दर्शनीयानि अभिरूपाणि प्रतिकूपाणि तेषा विमानाना बहुमध्यदेशाना
 ने पक्खायतसका प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-अकावतसक स्फटिकायतसको रत्नावतसको यावद्रूपावतसको मध्ये तत्राच्युतावतसक स्ते वावतंसका सर्वत्र
 मया यावदप्रतिकूपा अत्रारणाच्युताना देवाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि' त्रिष्टुपि लोकासस्येयजाग तत्र बहव आरणाच्युता देवा प
 रिवसन्ति यावद्विहरन्ति अच्युतद्यात्र देवेन्द्रो देवराज परिवसति यथा प्राणतो यावद्विहरति नवर त्रयाणा विमानावासगताना दशाना सामा
 निकसहस्राणा चत्वारिंशदत्तरत्नदेवसरसूणा आधिपत्य पुरोवर्तित्व यावत्कुवन् विहरति, द्वात्रिंशदष्टाविंशत द्वादशाष्टी चतुःशतसहस्राणि ।
 पक्खाश्चत्वारिंश स्पटवसहस्राणिसहस्रारे ॥ १ ॥ आनतप्राणतकल्पे चत्वारिंशतान्यारणाच्युतेत्रोणि । सप्तविमानसहस्राणि षट्सुंध्येतेपुककप्पे ॥

पन्नाचत्तालीसा तीसावीसादसहस्रा ॥ ३ ॥ एएचैव आयरस्का चउगुणा । कहिण भत्ते । हिठिमगेविज्जा
गदेवाण पज्जत्ता २ ण ठाणा पसत्ता ? कहिण भत्ते । हेठिमगेविज्जागा देवा परिवसति ? गोयमा । आ
रणञ्जुयाण कप्पाण उप्पि जाव उहु दूर उप्पइत्ता एत्यण हेठिमगेविज्जागाण देवाण ततो गेवेज्जाविमाण
पय्झा पवत्ता, पाईणपर्इणायगा उदीणदाहिणविच्छेत्ता पफ्फिपुन्नचदसठाणसठिया अच्चिमालीआसरासि
वत्ताआ सस जहा वत्तलोगे जाव पफ्फिरुत्ता, तत्यण हेठिमगेविज्जागाण देवाण एक्कारसुत्तरे विमाणावास
सए हवतीति मस्काय तेण विमाणा सहरयणामया जाव पफ्फिरुत्ता, एत्यण हेठिमगेविज्जागाण देवाण
पज्जत्ताण २ ठाणा पसत्ता, तिसुवि लोगस्स अस्सखेज्जाइजागे तत्यण बहवे हेठिमगेविज्जागा देवा परि
वसति सवे सममहिदीया सवे ममज्जुतीया सवे समजसा सवे समवला सवे समाणुत्ताया महासोस्का अ
णिदा अयेस्सा अपुरीहिया अहमिदा नाम ते देवगणा पसत्ता समणाउसो ! कहिण भत्ते ! मज्झिमगाण

२ ॥ सामानिकवग्रहिणाया-चतुरशीतिरशीति हिंससति सप्ततिश्रपयिष्य । पथाश्रयत्वारिवात् त्रिंशद्विंशदशसहस्राणि ॥ १ ॥ गते चैव चतुर्गुणा
न्यात्तरता । क भदन्त । अथस्तनग्रेवैयकदेवाना पर्यासापर्यासाना स्थानानि प्रज्ञप्तानि, क प्रदन्त । अथस्तनग्रेवैयकदेवा परिवसन्ति ? गीतम् ।
आरणाच्युतऋषयोऽपरि सप्त सप्ततिर्दक् यावदूक्षुमुत्पत्यात्रा पस्तनग्रेवैयकाना देवाना ग्रेवैयकप्रस्तटानि प्रज्ञप्तानि प्राचीनप्रतीचीनायतानि उत्त
रदक्षिणावस्तीर्णानि प्रतिपूषणचन्द्रसंस्थानसंस्थितानि अचिर्मालाचारांशिवर्कानि ग्रेप यथा ब्रह्मलोकं यावत्प्रतिरूपाणि, तत्राचस्तनग्रेवैयकदेवा
ना मकादगोत्तर विमानावासशतं ज्ञातीति मयास्यातम् । तानि विमानानि सर्वरत्नमयानि यावत्प्रतिरूपाणि, अत्राचस्तनग्रेवैयकाना देवाना
पर्यासापर्यासाना स्थानानि प्रज्ञप्तानि त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येयं प्राग एव यद्वै पस्तनग्रेवैयका देवा परिवसन्ति सर्वे सममहिदीयाः सर्वे सम

गेविज्जगदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पसुत्ता । कहिणं जंते ! मज्झिमगेविज्जगदेवा परिवसंति ? गोयमा !
हेठिमगेविज्जगण उपिं सपरिक्क सपरिदिंसं जाव उपपडत्ता एत्थणं मज्झिमगेविज्जगदेवाण ततोगेविज्जा
गविमाणपत्थका पसुत्ता पाईणपकीणायता जहा हेठिमगेविज्जगण नवरं सत्तुत्तरे विमाणवाससए हवं
तीति मस्काए, तेण विमाण जाव परिहत्ता एत्थण मज्झिमगेविज्जा देवाण जाव तिसुवि लोगस्स च्छस
खेज्जहन्नागे तत्थणं वहवे मज्झिमगेविज्जा देवा परिवसति जाव च्छहमिदा नाम देवगणा पसुत्ता । सम
णाउसो । कहिण जंते ! उवरिमगेविज्जा देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पसुत्ता । कहिण जंते ! उवरिम
गेविज्जगा देवा परिवसति ? गोयमा ! मज्झिमगेविज्जगदेवाण उपिं जाव उपपडत्ता तत्थण उवरिमगेविज्ज
गाण देवाण तत्तं गेविज्जगविमाणपत्थका पसुत्ता पाईणपकीणाउ सेस जहा हेठिमगेविज्जगण नवर

श्रुतिका सर्वे समपशस सर्वे समधत्ता. सर्वे महानुजावा महेशाया अनिन्द्रा अपुरोहिता अहमिन्द्रा नामत स्ते देवगणा प्रज्ञप्ता अम
ण । आयुप्सन् । कं प्रदत्त । मध्यमग्रेवैयकदेवाना पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । कं प्रदत्त । मध्यमग्रेवैयकदेवा परिवसन्ति ? गीतम । अ
पस्तनग्रेवैयकदेवानामुपरि सपत्त सप्रतिदिक् यावदुत्पत्ता मध्यमग्रेवैयकदेवाना ग्रेवैयकप्रस्तटानि प्रज्ञप्तानि प्राचीनप्रतीचीनायतानुत्तरदिशि
विस्तीर्णानि यथा धस्तनग्रेवैयकाना नवर सप्तोत्तर विमानावासशत भवतीति मयाख्यातम् । तानि विमानानि यावत्प्रतिरूपाणि अत्रमध्यमग्रेवै
यकाना देवाना स्थानानि यावत्त्रिषुपि लोकस्यासंख्येय ज्ञाग तत्र वहवो मध्यमग्रेवैयका देवा परिवसन्ति यावदहमिन्द्रा नाम ते देवा प्रज्ञप्ता
अमण । आयुप्सन् । कं प्रदत्त । उपरिमग्रेवैयकदेवाना पर्याप्ता स्थानानि प्रज्ञप्तानि कं प्रदत्त । उपरिमग्रेवैयकदेवा परिवसन्ति ? गीतम । म
ध्यमग्रेवैयकदेवानामुपरि यावदुत्पत्त सप्तोपरिमग्रेवैयकाना देवाना ग्रेवैयकप्रस्तटानि प्रज्ञप्तानि प्राचीनप्रतीचीनायतानि शेष यथाधस्तनग्रेवैयका

एणे विमाणावाससए हवतीति मस्काए, संस तहेव ज्ञाणियह् जाव ज्ञहमिदा नाम ते देवगणा पणत्ता समणाउसो । एक्कारसुत्तरहे ठिमिसुसत्तुत्तरचमज्जिमए । सयमेगउवरिमए पचेवज्जणुत्तरविमाणा ॥ १ ॥ कट्ठिण भत्ते । ज्जणुत्तरोववाइयाण देवाण पज्जत्ता २ ण ठाणा पणत्ता ? कट्ठिण भत्ते । ज्जणुत्तरोववाइया देवा परिवसति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पन्नाए पृढवीए वज्जसमरमणिज्जात्तु भूमिन्नागात्तु उहु चटिमसू रियगहगणनक्कत्तारारूवाण वज्जइ जोयणसयाइ वज्जइ जोयणसहस्साइ वज्जइ जोयणसयसहस्साइ वज्ज गात्तु जोयणकीन्नीत्तु वज्जगात्तु जोयणकीन्नाकीन्नीत्तु उहु दूर उप्पइत्ता सोहम्मीसाणसणकुमारमाहिदवच्च लोगलत्तगसुक्कसहस्सारज्जाणयपाणयज्झारणज्जनुयकप्पा तिणियज्जठारसुत्तरं गेविज्जाविमाणावाससए विती वडइत्ता तेय परदूर गता णीरया निम्मला वितीमिरा विसुद्धा पचदिप्पि पच ज्जणुत्तरा महत्तिमहालया महा विमाणा पणत्ता, तज्जहा—विजये वेजयते जयते ज्जपराजिए सव्वठसिद्धे । तेण विमाणा सव्वरयणामया

ना नवर एक विमानावाशत जवतीति मयास्यात्तम्, शेष तथैव भणितव्य यावदहमिन्द्रा नाम ते देवगणा प्रज्ञप्ता श्रमण । आयुष्मन् । यका दशोत्तरपञ्च-स्तनेषु समोत्तरतुमाध्यमिके । ज्ञातमेकमीपरिमिके यन्वेवानुत्तरविमाना ॥ १ ॥ क्व जदन्त । अनुत्तरोपपातिकाना देवाना पर्यासाप र्यासाना स्थानानि ५० क्व जदन्त । अनुत्तरोपपातिका देवा परिवसन्ति ? गीतम् । अस्या रत्नप्रज्ञाया, पुण्यथा यत्तुसमरमणीयाद्भूतमिमागादूहं यत्तुसम्यग्गणनक्षत्रतारारूपाणा वहूनि योजनानि दहूनि योजनशतानि दहूनि योजनसहस्राणि यावदूहं दूरमुत्पत्त्यात्र सीपमंशानसनद्वजुमारमा ऐन्द्रप्रहलान्तकशुक्रसहस्रारानतमाजतारणाध्युतकल्या खीणि चाष्टादशोऽराणि गेवेयकविमानायासशतानि ध्यातिप्रज्य (उल्लध्य) तेज्योपि पर दूर गता नीरजसो निर्मला वितिमिरा विशुद्धा पचसु दिक्षु पञ्चानुतरा महातिमहासया महाविमाना प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-विजयवैजयन्तोजयन्तो

गेविज्जगदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पसत्ता । कहिण ज्ञते ! मज्झिमगेविज्जगदेवा परिवसन्ति ? गोयमा ! हेठिमगेविज्जगाण उपि सपरिक सपफिदिसं जाव उप्पइत्ता एत्थणं मज्झिमगेविज्जगदेवाण तत्तोगेविज्ज गविमाणपत्थका पसत्ता पाईणपफ्ठीणायता जहा हेठिमगेविज्जगाण नवरं सत्तुत्तरे विमाणावाससए हवं तीति मस्काए, तेण विमाणा जाव पफ्ठीवा एत्थण मज्झिमगेविज्जगाण देवाण जाव तिसुवि लोगस्स अस्स खेज्जइन्नागे तत्थण वहवे मज्झिमगेविज्जगा देवा परिवसति जाव अहमिदा नाम देवगणा पसत्ता । सम णाउसो ! कहिण ज्ञते ! उवरिमगेविज्जगा देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पसत्ता । कहिणं ज्ञते ! उवरिम गेविज्जगा देवा परिवसन्ति ? गोयमा ! मज्झिमगेविज्जगदेवाण उपि जाव उप्पइत्ता तत्थण उवरिमगेविज्ज गाण देवाण तउ गेविज्जगविमाणपत्थका पसत्ता पाईणपफ्ठीणाउ सेस जहा हेठिमगेविज्जगाण नवर

श्रुतिका सर्व समयशत सर्व समवता सर्व महानुज्जावा मञ्जशास्या अनिन्द्रा अप्रेया अपुरोहिता अहमिन्द्रा नामत स्ते देवगणाः प्रज्ञप्ता अम ण । आयुप्सन् । क प्रदत्त । मध्यमग्रेव्यकदेवाना पर्याप्तपर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि । क प्रदत्त । मध्यमग्रेव्यकदेवा परिवसन्ति ? गीतम् । अ यस्तनग्रेव्यकदेवानामुपरि सप्त सप्ततिदिक् यावदुत्पत्त्यात्र मध्यमग्रेव्यकदेवाना ग्रेव्यकप्रस्तदानि प्रज्ञप्तानि प्राचीनप्रतीचीनायतान्युत्तरदक्षिण विस्तीर्णानि यथा धस्तनग्रेव्यकाना नवर सप्तोत्तर विमानावासशत भवतीति नयास्थ्यातम् । तानि विमानानि यावदप्रतिरूपानि अत्रमध्यमग्रेव्य काना देवाना स्थानानि यावत्तिष्ठपि लोकस्यासख्ये प्रागं तत्र वडवो मध्यमग्रेव्यका देवा परिवसन्ति यावदहमिन्द्रा नाम ते देवाः प्रज्ञप्ता अमण । आयुप्सन् । क प्रदत्त । उपरिमग्रेव्यकदेवाना पर्याप्ता स्थानानि प्रज्ञप्तानि क प्रदत्त । उपरिमग्रेव्यकदेवा परिवसन्ति ? गीतम् । म ध्यमग्रेव्यकदेवानामुपरि यावदुत्पत्त्या तत्रोपरिमग्रेव्यकाना देवाना ग्रेव्यकप्रस्तदानि प्रज्ञप्तानि प्राचीनप्रतीचीनायतानि शेष यथायस्तनग्रेव्यका

बहुमज्जदसन्नाए अण्ठजोयणए सेह्वे अण्ठजोयणाइ वाहल्लेणं पन्नह्वे, ततो अण्ठतरं चणं माताए २ पए सपरिहाणीए २ परिहायमाणी २ सव्वेसु चरिमतेसु मच्छियपत्तातो तणुयरी अणुलस्स सखेज्जइजागे वाहल्ले ण पणत्ता, इसीपप्पाराएण पुढवीए दुवालसनामधेज्जा पणत्ता, इसीतिवा इसीपप्पाराइवा तणूतिवा तणुयरीतिवा सिद्धीतिवा सिद्धालएतिवा मुत्तीइवा मुत्तालएइवा लोयग्गयून्नियतिवा लोय पाळुयुज्जणाइवा सव्वपाणन्नूयजीवसत्तसुहावहा बइवा । इसीपप्पाराण पुढवी सेता सखदलविमलसोच्छिय मुणालदगरयतुसारगोस्कीरहारवन्ता उत्ताणयत्तसठाणसठिया सव्वज्जुणसुखमई अच्चा सरहा लरहा घठा मठा नीरया निम्मला निप्पका निक्ककच्छाया सप्पन्ना ससिरीया सउज्जीया पासादीया दरिसणिज्जा अ निरुवा पळिरुवा इसीपप्पाराएणं नीसाए जोयणमि लोगतो तस्सणं जोयणस्स जेसे उवरिल्ले गाउए तस्सणं गाउयस्स जेसे उवरिल्ले लप्पाने एत्थण सिद्धा भगवतो सादिया अपज्जवसिया अण्णेगजातिजरामरणजो

ज्ञप्रशान्या परिहीयमाना सर्वेषु चरिमानेषु सादिकापत्रतोष्यतित्तव्यो अणुलासत्येयन्नाग वाहल्येन प्रज्ञा, इंपटप्राग्जाराया पृथिव्या द्वादश ना मयेयानि भवन्तीति तद्यथा-इंपदिदि वा इंपटप्राग्जारेति वा तन्वीति वा तनुतरीति वा सिद्धिरिति वा सिद्दिरिति वा सिद्दिरिति वा मुक्ता लप इति वा लोकाग्र इति वा लोकाग्रसूयिकेति वा लोकाग्रप्रतिवादिनीति वा सर्वप्राग्जुतजीवसत्त्वसुखायहा इति वा सावेपठप्राग्जारा पृथिवी येता शत्रुदलविमलसोयस्तिकमृणालदकरजस्तुपारगोहीरहारधवला उत्तानकव्वसस्थानसंस्थिता सर्वज्जैनस्वर्गमयी यच्छा सत्त्वा लप्ता पृष्टा सुष्टा नीरजा निमला निप्पङ्गा निफण्टकब्बाया सप्पमा सत्रीका सोद्योता प्रासादीया दर्शनीया अन्निरूपा प्रतिकूपा इंपटप्राग्जाराया पृथिव्या नि जे खिगत्या योजन लोकान्त स्तस्य च योजनस्य यदुपरितन गच्छूत तस्य गच्छूतस्य यदुपरितन यदुप्राग यत्र सिद्धा भगवन्तः सादिका अपर्यवसिता अनैकजा

अच्छा सगहा घटा मठा नीरया निम्नला निम्नका निष्कंठच्छाया सप्यन्ना सिसिरीया सउज्जीया पासा
दीया दरिसणिज्जा अन्निरुवा पन्निरुवा एत्थणं अणुत्तरोववाइयाण देवाणं पज्जतापज्जताणं ठाणा प० ।
तिसुवि लोगस्स अस्सखेज्जइन्नागे तत्थणं बहवे अणुत्तरोववाइया देवा परिवसति सखे सममहद्धिया सखे
समवला सखे समाणुन्नावा महासोस्का अणिदा अप्पेस्सा अपुरोहिया अहमिदा ते देवगणा पसुत्ता । स
मणाउसो । कहिणं ज्ञते ! सिद्धाण ठाणा पसुत्ता । कहिण ज्ञते ! सिद्धा परिवसति ? गोयमा ! सव्वठस्स
महाविमाणस्स उवरिक्काउं थून्निगगाउं दुवालसजोयणे उट्ठु अवाहाए एत्थणं डसीपप्पारा नाम पुढवी प०,
पणयालीस जोयणसयसहस्साइ अयामविस्सक्केण एगंजोयणकोलीउं वायालीस च सयसहस्साइं तीसं सह
स्साइ दोन्ति य अउणापन्ने जोयणसए किञ्चिविसेसाहिए परिस्सक्केणं पसुत्ता । डसीपप्पाराएण पुढवीए

पराजित सर्वाथेसिद्ध । ते विमाना सवरत्नमया अल्ला श्रद्धा घृष्टा सृष्टा नीरजसो निर्मला निष्पङ्क निष्कण्टकच्छाया सप्रज्ञा सश्रीका सोद्यो
ता मासादीया दर्शनीया अन्निरुपा अन्नानुत्तरोपपत्तिकाना देवाना पर्योसापर्योसाना स्थानानि प्रज्ञप्तानि , त्रिद्यपि (आलापकेषु)
लोकस्यासत्येय प्राग तत्र बहवोऽनुत्तरोपपत्तिका देवा परिवसन्ति सर्वे समिद्धिका सर्वे समवला सर्वे समानुन्नावा महेशास्या अनिन्द्रा अपुरोहि
ता अप्रण्या अहसिन्ध्रा नाम ते देवगणा प्रज्ञप्ता श्रमण । आयुष्मन् । के मदन्त । सिद्धाना स्थानानि प्रज्ञप्तानि के मदन्त । सिद्धा परिवसन्ति ?
गीतम । सर्वाथस्य महाविमानस्योपरिभाषा सूपिकाया द्वादशयोजनान्यूर्ध्वं अवाधया त्रैपटमाग्नारा नाम पृथिवी प्रज्ञप्ता , पचचत्वारिंशद्योजन
शतसहस्राणि आयामविस्फम्भाभ्या मेकायोजनकोटी द्विचत्वारिंशच्चतसहस्राणि त्रिंशत्सहस्राणि द्वे एकोनपंचाशद्योजनशते किञ्चिद्विंशोपायिका
नि परिशेषेण प्रज्ञप्ता , ईषट्प्राग्नाराया पृथिव्या बहुमध्यदेशजागे ऽष्टयोजनिक क्षेत्रे अष्टौ योजनानि वारल्यन प्रज्ञप्त ततोऽनन्तर मात्रया २ मदे

तान्नवस्कयविमुक्ता । अन्तान्नसमोनाढा पुठासर्वेविलीयते ॥ ९ ॥ फुसहृष्ट्यणतेसिद्धे सद्यपएसेहिनिनयमसो
सिद्धा । तेविष्टसखेजगुणा देसपदेसोहजेपुठा ॥ १० ॥ अशरीराजीवधना उवउत्तादसणेयनाणेय । सागा
रमणागारं लस्कणमेयतुसिद्धाण ॥ ११ ॥ केवलणणवउत्ता जाणतीसद्यभावगुणत्रावे । पासतिसद्यउत्तलु
केवलदिठ्ठीहिणताहिं ॥ १२ ॥ नविष्टयल्यिमानुसाणं तसोस्कनल्यिसद्यदेवाण । जसिद्धाणसुस्क अद्यावाहउवग
याण ॥ १३ ॥ सुरगणसुहसमत्त सद्य्धापिफियष्ट्यणतगुण । नविपावडमुत्तिसुहणताहवगगवगूहि ॥ १४ ॥
सिद्धस्ससुहोरासी सद्य्धापिफिएजहविज्जा । सोनतवगगजइत्त सद्य्गासंणमाइज्जा ॥ १५ ॥ जहनामकी
डमिच्छो नगरगुणवज्जविहविजाणतो । जवएहपरिकहेउ उवमाएत्तहिष्ट्यसतीए ॥ १६ ॥ अद्यसिद्धाजसोस्क इए
णोवमनल्यितस्सउत्तवम् । किञ्चिविसेसेणितो सारिस्कमिणसुणहवोत्थ ॥ १७ ॥ जहसद्यकामगुणियं पुरिसो

अवगाहनयाविद्धा प्रवन्निजाणेन भवन्तिपरिद्धिणा । सस्थानमनित्यस्य यत्तरामरणविप्रमुक्तानाम् ॥ ८ ॥ यत्रैक सिद्ध स्तत्रानन्तान्नवद्ययविमुक्ता ।
अन्योन्यसमवगाढा स्पष्टा (सगता) सर्वेपिलोकास्ते ॥ ९ ॥ स्पष्टात्यनन्तान्निदिद्वान् सर्वप्रदेशोर्वेयमज्ञा सिद्धा । तेप्यसख्येगुणा देशप्रदेशेयस्स
एता ॥ १० ॥ अशरीराजीवधना उपयुक्तादज्ञाने तथाज्ञाने । साकारानाकार लक्षणमेतत्तुसिद्धानाम् ॥ ११ ॥ केवलज्ञानोपयुक्ता जानन्तिवसर्वजावगु
णानाम् ॥ १२ ॥ नैवास्तिमनुयाणा तत्तरीत्यनास्तिवसर्वदेवना । परिसद्धाना सीत्यमव्यावाधामुपग
तामाम् ॥ १३ ॥ सुरगणसुखसमस्त सर्वोद्वापिणितमनत्तगुणम् । नमामोतिमुक्तिमुह अन्नतेवेगे श्रवणगतसदपि ॥ १४ ॥ सिद्धस्यसुखराज्ञा सर्वा
द्वापिणितोपादि प्रवत् । सोनन्तवर्गजक्त सर्वो काडोनीमातितत्तरीत्यम् ॥ १५ ॥ सौख्यकायिनाम यथाहिविजानन्त्यन्तवर्गगुणान् । परिकथयितुन
तो तुपमायात्तत्रामायात् ॥ १६ ॥ इविशिद्धानासीत्य मनुपमनास्तितस्यसोपस्यम् । किञ्चिद्विशेषणतोस्य सादृश्य शृणुतद्व्यस्यमायानिदम् ॥ १७ ॥

निससारकलकलोन्नावपुणप्लवगप्लवासवसही एवंते समडक्कंता सासयमणागयद्धं काल चिच्छति, तत्थवियते
 अवेदा अवेयणाणिम्ममा असगायससारविप्पमुक्का । पदेसनिवृत्तिसंठाणा ॥ १ ॥ कहिपफिहयासिद्धा कहि
 सिद्धापडिठिया । कहिर्वोदीचडत्ताण कहगत्तूणसिज्जड ॥ २ ॥ अलोएपफिहयासिद्धा लोयगेयपडिठिया ।
 डहर्वोदीचडत्ताण तत्थगत्तूणसिज्जड ॥ ३ ॥ दोहंवाहस्सवा जंवरिमन्नवेहविज्जसंठाण । तत्तोत्तिन्नागहीणा
 सिद्धाणेगाहणान्निण्या ॥ ४ ॥ संठाणतुडह जवंचयतस्सचरमसमयम्मि । असीयपदेसघण तसंठाणतहि
 तस्स ॥ ५ ॥ तित्तिसयातेत्तीसा धणुत्तिन्नागेयहोइनायवो । एसाखलुसिद्धाणं उक्कोसोगाहणान्निण्या ॥ ६ ॥ एगाय
 चत्तारियरयणीने रयणित्तिन्नागूणिंयायवीधव्वा । एसाखलुसिद्धाण मज्झिमोगाहणान्निण्या ॥ ७ ॥ एगाय
 होइरयणी अठेवयअगुलाइसाहियाईया । एसाखलुसिद्धाण जहन्वोगाहणान्निण्या ॥ ८ ॥ जत्थयएगोसिद्धो तत्थअणं
 नन्नत्तिन्नागेणहोइपरिहीणा । संठाणमणित्तय जजरामरणविप्पमुक्काणं ॥ ९ ॥

तिज्जरामरणो निससारकलकलीन्नावपुणप्लवगप्लवासवसहीरेव स समतिकान्ता आद्यवसनगताद्वा काल तिष्ठन्ति, तत्रापि च ते अवेदा अवेदना निर्ममा
 ससङ्गाश्च । ससारविप्रमुक्ता प्रदेशनिवृत्तस्थाना ॥ १ ॥ केनप्रतिष्ठता सिद्धा केनसिद्धा प्रविष्टिता । कचवोदितथात्यक्का गत्यासिच्चान्तिक्कायते ॥ २ ॥
 अलोकेप्रतिष्ठता सिद्धा लोकाग्रेष्वप्रतिष्ठिता । इहैववोदित्यक्काते गत्यासिच्चान्तिव्रतु ॥ ३ ॥ दीर्घाग्रस्ववा यच्चरमजवे प्रवेत्सुसस्थान । तवत्ति
 प्रागहीना सिद्धानामवगाहनार्थता ॥ ४ ॥ यत्संस्थानमिह भवत्यजतथरमसमयेव । आसीत्प्रदेशघन तत्संस्थान तत्रतस्यैव ॥ ५ ॥ त्रीणिश्रतानि
 त्रयस्त्रि-शुभनुखिन्नागे प्रवत्तिन्नातव्य , एपाखलुसिद्धाना मुत्तकटावगाहनान्निण्या ॥ ६ ॥ चतस्रोऽरव्य रत्विश्विन्नागेनात्रोद्व्या । एपाखलुसि
 द्धाना मध्यमावगाहनान्निण्या ॥ ७ ॥ एपाखलु सिद्धाना जपन्यावगाहन भक्तिता ॥ ८ ॥

या उत्तरेण विसेसाहिया , दिसानुवाएण सव्वत्योवा तेउकाडया दाहिणत्तरेण पुरच्छिमेण विसेसाहिया पच्चच्छिमेण विसेसाहिया दिसानुवाएण सव्वत्योवा वाउकाडया पुरच्छिमेण पच्चच्छिमेण विसेसाहिया दाहिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया । दिसानुवाएण सव्वत्योवा पच्चच्छिमेण पुरच्छिमेण दाहिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया पच्चच्छिमेण पुरच्छिमेण विसेसाहिया । दिसानुवाएण सव्वत्योवा वेइदि सव्वत्योवा तेइदिया पच्चच्छिमेण पुरच्छिमेण विसेसाहिया दाहिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया एव चउरिदियात्रि, दिसानुवाएण सव्वत्योवा णेरडया पुरच्छिमपच्चच्छिमेण उत्तरेण दाहिणेण असखेज्जा गुणा, दिसानुवाएण सव्वत्योवा रयणप्पन्नापुढावेणेरडया पुरच्छिमपच्चच्छिमेण उत्तरेण दाहिणेण असखे

विशेषाधिका , दिगनुपातेन सर्वस्तोका अष्टकाधिका पश्चिमेन पूर्वेषु विशेषाधिका उत्तरेण विशेषाधिका , दिगनुपातेन सर्वस्तोका स्तेनस्काधिका दक्षिणेन पूर्वेषु विशेषाधिका पश्चिमेन विशेषाधिका , दिगनुपातेन सर्वस्तोका वायुकाधिका पूर्वेषु पश्चिमेन विशेषाधिका दक्षिणेन विशेषाधिका उत्तरेण विशेषाधिका । दिगनुपातेन सर्वस्तोका वनस्पतिकाधिका पश्चिमेन पूर्वेषु विशेषाधिका दक्षिणेन विशेषाधिका उत्तरेण विशेषाधिका , दिगनुपातेन सर्वस्तोका ह्रीन्द्रिया पश्चिमेन पूर्वेषु विशेषाधिका दक्षिणेन विशेषाधिका उत्तरेण विशेषाधिका , दिगनुपातेन सर्वस्तोका स्त्रीन्द्रिया पश्चिमेन पूर्वेषु विशेषाधिका दक्षिणेन विशेषाधिका उत्तरेण विशेषाधिका , दिगनुपातेन सर्वस्तोका ज्ञानेन्द्रिया पश्चिमेन पूर्वेषु विशेषाधिका दक्षिणेन विशेषाधिका उत्तरेण विशेषाधिका , दिगनुपातेन सर्वस्तोका ज्ञानेन्द्रिया पश्चिमेन पूर्वेषु विशेषाधिका दक्षिणेन विशेषाधिका उत्तरेण विशेषाधिका , दिगनुपातेन सर्वस्तोका रत्नमन्त्रपृथिवीनरियका पूर्वपश्चिमेनोत्तरेण दक्षिणेनासख्यगुणा , दिगनुपा

श्रीतूणजीयणंकोइ । तरहाबुहाविमुक्ती अचिज्जजहाअभियतिती ॥ १८ ॥ इयसव्वकालंतिता अउलंनि
 ह्माणमुवगयासिद्धा । सासयमव्वावाह चिठ्ठातिसुहोसुहपत्ता ॥ १९ ॥ सिद्धतियबुद्धतिय पारगतत्तियपरंपर
 गतत्ति । उम्मुक्ताकम्मकवया अजरअमराअसंगाय ॥ २० ॥ णिच्छिन्नसव्वदुक्का जातिजरामरणवधणवि
 मुक्ता । अवावाहसुखं अणुहोतीसासयसिद्धा ॥ २० ॥ वितिय पदं सम्मत्तं ॥ २ ॥
 दिसिगइइदियकाए जीएवेएकसायलेसाय । सम्मत्तणाणदसण सजयउववुगअ्याहारे ॥ १ ॥ जासगपरित्तप
 ज्ञा त्सुज्जमसखीयजवत्थिसेचरिसे । जीवयखेत्तवधे पुग्गलमहदणुचेव ॥ २ ॥ दिसानुवाएणं सव्वल्योत्रा
 जीवा पच्चच्छिमेणं पुरिच्छिमेण विसेसाहिया दाहिणेणं विसेसाहिया उत्तरेणं विसेसाहिया पच्चच्छिमेण विसेसा
 सव्वल्योत्रा पुढविकाइया दाहिणेण उत्तरेण विसेसाहिया पुरिच्छिमेणं विसेसाहिया पच्चच्छिमेण विसेसा

ययासर्वकामगुणत पुरुषोन्नतायनोजन कोपि । त्वय्याशुपाविमुक्त स्तिष्ठतिसोयाहसुतवस ॥ १८ ॥ इति सर्वकालवसा ह्यतुलनिर्वाणमुपगता सि
 द्धा । ज्ञाद्यतमव्यावाच तिष्ठत्ति सुखिन सुखप्राप्ता ॥ १९ ॥ सिद्धाहतिबुद्धाहति पारगताहतिपरम्परगता अ । उम्मुक्तकर्मकवचा अजरअमराअम
 गाद्य ॥ २० ॥ निस्तीर्णसंबंदुखा जातिजरा मरणवधनविमुक्ता । अव्यावाचसौख्य मनुभवंतिशाश्वतसिद्धा ॥ २१ ॥ इति श्री रामचन्द्रगणि शिष्यना
 नकचन्द्रर्षि विरचिते मञ्जापनानुवादे द्वितीय पद समाप्तम् ॥ २ ॥

दिक्चरगतीन्द्रियकाया योगेवेदाकपायलेत्रपथ । सम्यक्ज्ञानदर्शनं सुयतोपयोगीतथाहार ॥ १ ॥ ज्ञापकपरीतपर्यो-मिसूक्तसज्जीजवास्तिचरमा
 णि । जीव क्षेत्रयस्य पुद्गलमहादयस्तद्वत्सु ॥ २ ॥ दिगनुपातेन (दिशोधिकृत्येत्यर्थः) सर्वस्तीका जीवा- पश्चिमेन पूर्वेषु विप्रेक्षाधिका दक्षिणेन
 विशेषोपायिका उत्तरेण विशेषोपायिका पृथिवीकायिका दक्षिणेनोत्तरेण च विशेषोपायिका पूर्वेषु विशेषोपायिका पश्चिमेन

उत्तरेण असखेज्जगुणां, दाहिणेण असखेज्जगुणां । दाहिणिस्सेहिती धूमपन्नापुढविणेरडएहिती चउत्थीए
पकप्पन्नाए पुढवीए णेरडया पुरिच्छिमपञ्चिक्खिमउत्तरेण असखेज्जगुणां । दाहिणेण असखेज्जगुणां । दाहि
णिस्सेहिती पकप्पन्नापुढविणेरडएहिती तडयाए वालुयप्पन्नाए पुढावेणेरडया पुरिच्छिमपञ्चिक्खिमउत्तरेण अ
सखेज्जगुणां, दाहिणेण असखेज्जगुणां । दाहिणिस्सेहिती वालुयप्पन्नापुढविणेरडएहिती वीयाए सक्करप्प
न्नाए पुढवीए णेरडया पुरिच्छिमपञ्चिक्खिमउत्तरेण असखेज्जगुणां दाहिणेण असखेज्जगुणां दाहिणिस्सेहिती
सक्करप्पन्नापुढविणेरडएहिती इमीसे रयणप्पन्नाए पुढवीए णेरडया पुरिच्छिमपञ्चिक्खिमउत्तरेण असखेज्जगु
णां । दाहिणिस्सेण असखेज्जगुणां, दिसानुवाएण सधत्थोवा पचिदियतिरिक्कजोणिना पञ्चिक्खिमेण पुरिच्छि
मेण विसेसाहिया, दाहिणेण विसेसाहिया, उत्तरेण विसेसाहिया, दिसानुवाएणं सधत्थोवा मनुस्सा दाहि
णउत्तरेण पुरिच्छिमेणं सखेज्जगुणां । पञ्चिक्खिमेण विसेसाहिया । दिसानुवाएणं सधत्थोवा नवणव्रासी
देवा पुरिच्छिमपञ्चिक्खिमेण उत्तरेण असखेज्जगुणां । दाहिणेण असखेज्जगुणां, दिसानुवाएणं सधत्थोवा

नैरयिका पूर्वपद्दिमोत्तरणासस्येयगुणां दक्षिणेनासस्येयगुणां, दाहिणात्थेज्जो वालुकापमपूप्विनैरयिकेज्जोहितीयाया शर्करामभपूप्विष्या नैर
यिका पूर्वपद्दिमोत्तरणासस्येयगुणां दक्षिणेनासस्येयगुणां, दाहिणात्थेज्जो शर्करामभपूप्विष्यो नैरयिकेज्जोस्या रत्नप्रजाया पूप्विष्या नैरयिका
पूर्वपद्दिमोत्तरणासस्येयगुणां दक्षिणेनासस्येयगुणां, दिगनुपातेन सर्वस्तोका पचेद्विपतिभयोनिका पद्दिमेन पूर्वेण विशेषापयिका, दक्षिणेन
विशेषापयिका, उत्तरेण विशेषापयिका । दिगनुपातेन सर्वस्तोका मनुष्या दक्षिणोत्तरेण सस्येयगुणां पूर्वेण पद्दिमेन विशेषापयिका । दिगनुपा
तेन सर्वस्तोका प्रवतवासिदेवा पूर्वपद्दिमेज्जोत्तरणासस्येयगुणां दक्षिणेनासस्येयगुणां, दिगनुपातेन धानव्यत्तरा देवा पूर्वपद्दिमेण विशेषापयि

ज्जागुणा, दिसानुवाएणं सव्वत्योवा सक्करप्पन्नापुढविणेरइया पुरिच्छिमपच्चिच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं अस्स
 खेज्जागुणा । दिसानुवाएण सव्वत्योवा णेरइया वालुयप्पन्नापुढविपुरिच्छिमपच्चिच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं अस्स
 खिज्जागुणा । दिसानुवाएण सव्वत्योवा पक्कप्पन्नापुढविणेरइया पुरिच्छिमपच्चिच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं अस्सखे
 ज्जागुणा । दिसानुवाएण सव्वत्योवा धूमप्पन्नापुढविनेरइया पुरिच्छिमपच्चिच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं अस्सखेज्जा
 गुणा । दिसानुवाएणं सव्वत्योवा तमप्पन्नापुढविनेरइया पुरिच्छिमपच्चिच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं अस्सखेज्जागुणा
 दिसानुवाएण सव्वत्योवा अहे सत्तमापुढविनेरइया पुरिच्छिमपच्चिच्छिमउत्तरेणं दाहिणेहिता अहे सत्तमापुढ
 विनेरइएहिता वट्ठीए तमाए पुढवीए नेरइया पुरिच्छिमपच्चिच्छिमउत्तरेणं अस्सखेज्जागुणा, दाहिणेणं अस्स
 खेज्जागुणा, दाहिणिखेहिता तमापुढविनेरइएहिता पचमाधूमप्पन्नाए पुढवीए नेरइया पुरिच्छिमपच्चिच्छिम

खेन सर्वस्तीका शकरप्रभपृथिवीनैरयिका पूर्वपथिमोत्तरेण दक्षिणामख्येयगुणा, दिगनुपातेन सर्वस्तीका नैरयिका वालुकप्रजापृथिवीनैरयिका
 पूर्वपथिमोत्तरेण दक्षिणेना सख्येयगुणा, दिगनुपातेन सर्वस्तीका पङ्कप्रजपृथिवीनैरयिका पूर्वपथिमोत्तरेण दक्षिणेना सख्येयगुणा, दिगनुपातेन
 सर्वस्तीका घूमप्रजपृथिवीनैरयिका पूर्वपथिमोत्तरेण दक्षिणेना सख्येयगुणा, दिगनुपातेन सर्वस्तीका स्तम प्रजपृथिवीनैरयिका पूर्वपथिमोत्तरे
 ण दक्षिणेना सख्येयगुणा, दिगनुपातेन सर्वस्तीका अच सप्तमापृथिवीनैरयिका पूर्वपथिमोत्तरेण दाक्षिणात्येज्यो प सप्तमापृथिवीनैरयिकेज्य पट्या
 स्तमीया पृथिव्या नैरयिका पूर्वपथिमोत्तरेण दक्षिणेना सख्येयगुणा, दाक्षिणात्येज्यस्तमापृथिवीनैरयिकेज्य पञ्चमाया घूमप्रजा
 या. पृथिव्या नैरयिका पूर्वपथिमोत्तरेण दक्षिणेना सख्येयगुणा, दाक्षिणात्येज्यो घूमप्रजपृथिवीनैरयिकेज्य द्युतुथ्यो पङ्कप्रजाया पृ
 थिव्या नैरयिका पूर्वपथिमोत्तरेण दक्षिणेना सख्येयगुणा, दाक्षिणात्येज्य प्रङ्कप्रभपृथिवीनैरयिकेज्य स्तमीयाया वालुकामप्रपृथिवी

सखेजगुणा दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा देवा सहस्सारे कप्पे पुरिच्छिमपञ्चिक्खिमउत्तरेण दाहिणेणं अणसंखे० तेण पर वज्जसमोववन्तगा समणाउत्तो ! दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा सिद्धा दाहिणउत्तरेण पुरिच्छिमेण सखेजगुणा, पञ्चिक्खिमेण विसेसाहिया दार १ । एएसिण नत्ते । नेरइयाण तिरिस्कजोणियाण मणुस्साण देवाण सिद्धाणय पचगइसमासेण कयरे कयरेहिता अण्णवा वज्जयावा तुल्लावा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्सा नेरइया अण्णसखेजगुणा देवा अण्णसखेजगुणा सिद्धा अण तगुणा तिरिस्कजोणिया अण तगुणा । एएसिण नत्ते ! नेरइयाण तिरिस्कजोणियाण तिरिस्कजोणियाण मणुस्साण देवाण सिद्धाणय अण्णगतिसमासेण कयरे कयरेहिता अण्णवा वज्जयावा तुल्लावा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्सीनु मणुस्सा अण्णसखेजगुणा । नेरइया अण्णसखेजगुणा तिरिस्कजोणियाण अण्णसखेजगुणा

सखेयगुणा । दिगनुपातेन सर्वस्तोका देवा महाजुक्के कल्पे पूर्वपश्चिमोत्तरेण दक्षिणोत्तरसखेयगुणा । दिगनुपातेन सर्वस्तोका देवा सप्तद्वारे कल्पे दक्षिणोत्तरेण दक्षिणेनासखेयगुणा, तेन पर बहुसमोपपन्नका अमणायुसन् । दिगनुपातेन सर्वस्तोका सिद्धा दक्षिणोत्तरेण पूर्वण सखेयगुणेन विजोपाचिका, द्वारम् । १ । एतेषा नदन्त । नेरयिकाणा तियग्योनिकाना मनुयाणा देवाना विद्वानाञ्च पञ्चगतिसमासेन कत्तरे वा बहुका वा तुल्यावा विजोपाचिका वा ? गीतम् । सर्वस्तोका मनुया नेरयिका असखेयगुणा देवा असखेयगुणा सिद्धा अनन्त का अनन्तगुणा । एतेषा नदन्त । नेरयिकाणा तियग्योनिकाना तियग्योनिकाना मनुयाणा मानुषीणा देवाना सिद्धाना चाए गतिसमासेन कत्तरे कत्तरेऽप्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विजोपाचिका वा ? गीतम् । सर्वस्तोका मानुष्यो मनुया असखेयगुणा नेरयिका वा । तियग्योनिकाऽसखेयगुणा देवा असखेयगुणा देव्य असखेयगुणा सिद्धा अनन्तगुणा । द्वारम् । २ ॥ ए

वाणमंतरादेवा पुरच्छिमेण पञ्चच्छिमेण विसेसाहिया, उत्तरेण विसेसाहिया, दाहिणेण विसेसाहिया, दि
सानुवाएण सव्वत्योवा जोइसिया देवा पुरच्छिमपञ्चच्छिमेण दाहिणेण विसेसाहिया, उत्तरेण विसेसाहिया
दिसानुवाएण सव्वत्योवा देवा सोहम्मे कप्पे पुरच्छिमपञ्चच्छिमेण उत्तरेण विसेसाहिया, दाहिणेण विसे
साहिया, दिसानुवाएण सव्वत्योवा देवा ईसाणेकप्पे पुरच्छिमपञ्चच्छिमेण उत्तरेण विसेसाहिया, दाहिणे
ण विसेसाहिया, दिसानुवाएण सव्वत्योवा देवा सणकुमारेकप्पे पुरच्छिमपञ्चच्छिमेण उत्तरेण विसेसाहिया, दाहिणे
णा, दाहिणेण विसेसाहिया दिसानुवाएण सव्वत्योवा देवा माहिदे कप्पे पुरच्छिमेण पञ्चच्छिमेण, उत्तरेण
असखेज्जगुणा, दाहिणेण विसेसाहिया । दिसानुवाएण सव्वत्योवा वनलोए कप्पे देवा पुरच्छिमपञ्चच्छि
मउत्तरेण दाहिणेण असखेज्जगुणा दिसानुवाएण सव्वत्योवा वनलोए कप्पे देवा पुरच्छिमपञ्चच्छिमउत्त
रेण दाहिणेण असखेज्जगुणा । दिसानुवाएण लंतए कप्पे देवा पुरच्छिमपञ्चच्छिम उत्तरेण दाहिणेण
असखेज्जगुणा । दिसानुवाएण सव्वत्योवा देवा महासुक्ती कप्पे पुरच्छिमपञ्चच्छिमउत्तरेण दाहिणेण अस

का उत्तरेण विओपायिका दाहिणेण विओपायिका । दिगनुपातेन सर्वस्तीका ज्योतिष्का देवाः पूर्वपद्यिमेन दाहिणेन विओपायिका उत्तरेण विओ
पायिका, दिगनुपातेन सर्वस्तीका देवा सौवर्मे कल्पे पूर्वपद्यिमेनोत्तरेणासखेयगुणा दाहिणेन विओपायिका, दिगनुपातेन सर्वस्तीका देवा इ
ज्जीर्त्ति कल्पे पूर्वपद्यिमेनोत्तरेणा सखेयगुणा दाहिणेन विओपायिका, दिगनुपातेन सर्वस्तीका देवाः सनरज्जुमारे कल्पे पूर्वपद्यिमेनोत्तरेणासखेयगु
णा दाहिणेन विओपायिका, दिगनुपातेन सर्वस्तीका देवा माहेन्द्रे कल्पे पूर्वपद्यिमत उत्तरेणासखेयगुणा दाहिणेन विओपायिका, दिगनुपातेन
सर्वस्तीका ब्रह्मदेवलोके देवा पूर्वपद्यिमोत्तरेण दाहिणेनासखेयगुणा, दिगनुपातेन सर्वस्तीका देवा तान्तके कल्पे पूर्वपद्यिमोत्तरेण दाहिणेनास

कयरोहिती अण्पावा बज्यावा तुलावा विससाहियावा ? गोयमा ! सवत्योवा पजत्तगा चउरिंदिया
पचिदिया पजत्तगा विससाहिया, तेइदिया पजत्तगा विससाहिया, बेइदिया पजत्तगा विससाहिया,
एगिदिया पजत्तगा अणत्तगा, सइदिया पजत्तगा संखेज्जगुणा । एएसिणं जते ! सइदियाण पजत्ताप
जत्तगण कयरे कयरोहिती अण्पावा बज्यावा तुलावा विससाहियावा ? गोयमा ! सवत्योवा सइदिया
अपजत्ता पजत्तगा सइदिया संखेज्जगुणा । एएसिण जते ! एगिदियाण पजत्तापजत्ताण कयरे कयरे
हिती अण्पावा ? गोयमा ! सवत्योवा एगिदिया पजत्तगा एगिदिया अपजत्तगा असं० । एएसिण जते !
बेइदियाण पजत्तापजत्ताण कयरे कयरोहिती अण्पावा ? गोयमा ! सवत्योवा बेइदिया पजत्ता
बेइदिया अपजत्ता असंखेज्जगुणा । एएसिणं जते ! तेइदियाण पजत्तापजत्ताणं कयरे कयरोहिती अ
पावा ? गोयमा ! सवत्योवा तेइदिया पजत्तगा तेइदिया अपजत्तगा असंखेज्जगुणा । एएसिण जते !

मकाना कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा ? गीतम् । सर्वस्वोका पर्याप्तकास्तुरिन्द्रिया पञ्चेन्द्रिया पर्याप्तका वि
शेषाधिका स्त्रीन्द्रिया पर्याप्तका विशेषाधिका ह्रीन्द्रिया पर्याप्तका विशेषाधिका एकेन्द्रिया पर्याप्तका जलन्तगुणा सेन्द्रिया पर्याप्तका सख्ये
गुणा । एतेषा नदन्त । सेन्द्रियाणां पर्याप्तपर्याप्तकानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा ? गीतम् । सर्वस्वोका
सेन्द्रिया अपराप्तका, पर्याप्तकाः सेन्द्रिया सख्येयगुणा । एतेषा नदन्त । एकेन्द्रियाणां पर्याप्तपर्याप्तकानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ गीतम् ।
सर्वस्वोका एकेन्द्रिया पर्याप्तका अपराप्तका सख्येयगुणा । एतेषा नदन्त । ह्रीन्द्रियाणां पर्याप्तपर्याप्तकानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ? गीत
१ । सर्वस्वोका ह्रीन्द्रिया पर्याप्तका अपराप्तका सख्येयगुणा, एतेषा नदन्त । त्रीन्द्रियाणां पर्याप्तकापर्याप्तका कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ सर्वस्वो

ह । देवा अस्वेज्जगुणा । देवीनु संखेज्जगुणान् सिद्धा अणंतगुणा तिरिस्सज्जीणिया अणंतगुणा दारं २ ।
 एएसिण जते । सइदियाणं एगिदियाणं बेइदियाणं चउरिदियाणं तेइदियाणं पचिदियाणं अणेदियाणय
 कयरे कयरेहिती अण्पावा चज्जयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्योवा पंचिदिया चउरि
 दिया विसेसाहिया तेइदिया विसेसाहिया बेइदिया विसेसाहिया अणदिद्या अणतगुणा एगिदिया अण
 सइदिया वि० । एएसिणं जते ! सइदियाणं एगिदियाणं बेइदियाणं चउरिदियाणं पचिदियाणं
 अणज्जत्तगणं कयरे कयरेहिती अण्पावा चज्जयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्योवा पचि
 दिया अणज्जत्तगा चउरिदिया अणज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइदिया अणज्जत्तगा विसेसाहिया, बेइदिया
 अणज्जत्तगा विसेसाहिया, एगिदिया अणज्जत्तगा अणतगुणा, सइदिया अणज्जत्तगा विसेसाहिया । एए
 सिण जते ! सइदियाणं एगिदियाणं बेइदियाणं चउरिदियाणं पचिदियाणं पज्जत्तगणं कयरे

तेषा प्रदत्त । सेन्द्रियाणामेकेन्द्रियाणा हीन्द्रियाणा तुरिन्द्रियाणा पञ्चेन्द्रियाणामिन्द्रियाणा च कतरे कतरेऽप्योऽल्पा वा बहुका वा
 तुल्या वा विशेषाचिका वा ? गीतम । सर्वस्तोका पञ्चेन्द्रिया तुरिन्द्रिया विशेषाचिका हीन्द्रिया विशेषाचिका अन्ति
 ण्द्रिया अनन्तगुणा एकेन्द्रिया अनन्तगुणा सेन्द्रिया विशेषाचिका । एतेषा प्रदत्त । सेन्द्रियाणामेकेन्द्रियाणा हीन्द्रियाणा तुरिन्द्रि
 याणा पंचेन्द्रियाणामपर्याप्तकाना कतरे कतरेऽप्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाचिका वा ? गीतम । सर्वस्तोका. पञ्चेन्द्रिया अपर्याप्तका
 तुरिन्द्रिया अपर्याप्तका विशेषाचिका हीन्द्रिया अपर्याप्तका विशेषाचिका एकेन्द्रिया अपर्याप्तका अनन्तगु
 णा सेन्द्रिया अपर्याप्तका विशेषाचिका । एतेषा प्रदत्त । सेन्द्रियाणामेकेन्द्रियाणा हीन्द्रियाणा तुरिन्द्रियाणा पंचेन्द्रियाणा पयो

याण पुढविकाडयाणं आउकाडयाणं तेउकाडयाण वणस्सइकाडयाणं तसकाडयाण अकाइ
याण कयरे कयरेहिती अप्पावा ४ ? गोयमा । सव्वलोवा तसकाडया तेउकाडया असखेज्जगुणा, पुढवि
काडया विसेसाहिया, आउकाडया विसेसाहिया, वाउकाडया विसेसाहिया अकाइया अणतगुणा,
वणस्सइकाइया अणतगुणा, सकाइया विसेसाहियावा । एएसिण नत्ते ! सकाडयाण पुढविकाडयाण
आउकाडयाण तेउकाडयाण वणस्सइकाडयाण तसकाडयाणय अपज्जत्तगाण कयरे कय
रेहिती अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वलोवा तसकाइया अपज्जत्तगा, तेउकाडया अपज्जत्तगा असखे
ज्जगुणा, पुढविकाडया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, आउकाडया विसेसाहिया, वाउकाइया
अपज्जत्तगा विसेसाहिया, वणस्सइकाडया अपज्जत्तगा अणतगुणा । सकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया

पर्याप्तका विशेषाधिका । द्वारम् । ३ । एतेषा प्रदत्त । सकाधिकाना पृथिवीकायिकाना अप्कायिकाना तजस्कायिकाना वायुकायिकाना ज्ञान
स्पर्तिकायिकाना व्रसकायिकानामकायिकाना कतरं कतरं ज्यो उत्प वा ४ ? गीतम् । सर्वस्तीकास्सकायिका स्तेजस्कायिका असखेयगुणाः पृथि
वीकायिका विशेषाधिका अप्कायिका वायुकायिका विशेषाधिका अकार्यिका अनन्तगुणा वनस्पतिकायिका अनन्तगुणा सकायिका
विशेषाधिका । एतेषा प्रदत्त । सकाधिकाना पृथिवीकायिकाना अप्कायिकाना तजस्कायिकाना वायुकायिकाना वनस्पतिकायिकाना व्रसकायि
कानामपर्याप्तकाना कतरं कतरं ज्यो उत्प वा ४ ? गीतम् । सर्वस्तीकास्सकायिका अपर्याप्तका स्तेजस्कायिका अप० असखेयगुणा पृथिवीकायिका
अ० विशेषाधिका अप्कायिका अ० विशेषाधिका वायुकायिका अप० विशेषाधिका वनस्पतिकायिका अप० अनन्तगुणा सकायिका अपर्याप्तका
विशेषाधिका । एतेषा प्रदत्त । सकाधिकाना पृथिवीकायिकाना अप्कायिकाना तजस्कायिकाना वायुकायिकाना वनस्पतिकायिकाना व्रसकायि

चउरिंदियाण पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरोहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा चउरिंदिया पज्जत्ता
गा चउरिंदिया पज्जत्ता अप्सखेज्जगुणा । एएसिणं नत्ते ! पचेदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरोहिंतो
अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पचेदिया पज्जत्ता अप्सखेज्जगुणा । एएसिणं
नत्ते ! सइदियाणं एगिंदियाणं वेइदियाणं तेइदियाणं चउरिंदियाणं पचेदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे २
हिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा चउरिंदिया पज्जत्ता पचेदिया पज्जत्ता अप्सखेज्जगुणा
दिया पज्जत्ता विसंसाहिया, तेइदिया पज्जत्ता विसंसाहिया, पचेदिया अपज्जत्ता अप्सखेज्जगुणा
चउरिंदिया अपज्जत्ता विसंसाहिया, तेइदिया अपज्जत्ता विसंसाहिया, वेइदिया अपज्जत्ता विसं
साहिया, एगिंदिया अपज्जत्ता अप्पत्तगुणा, सइदिया अपज्जत्ता विसंसाहिया, एगिंदिया पज्जत्ता
सखेज्जगुणा, सइदिया पज्जत्ता विसंसाहिया, सइदिया विसंसाहिया दारं ३ । एएसिणं नत्ते ! सकाइ

काखीन्द्रिया पर्याप्तका असस्येयगुणा । एतेपा भदन्त । चतुरिन्द्रियाणा पर्याप्तं कतरेज्जोउत्था वा ४ गौतम । सर्वस्वोका द्यु
रिन्द्रिया पर्याप्तका अपर्याप्ता असस्येयगुणा । एतेपा नदन्त । पचेदियाणा पर्याप्तका पर्याप्तं कतरे ० उत्था वा ४ गौतम । सर्वस्वोका पचेदिया
पर्याप्तका अपर्याप्तका असस्येयगुणा । एतेपा नदन्त । सेदियाणां केदियाणां त्रीदियाणां चतुरिन्द्रियाणां पचेदियाणां पर्याप्ता पर्याप्ता
ना कतरे ० उत्था वा ४ गौतम । सर्वस्वोका चतुरिन्द्रियाणां पर्याप्तका पचेदियाणां त्रीदियाणां पचेदियाणां विसंसाहिका त्रीद्वि
या पर्याप्तका विसंसाहिका पचेदिया अपर्याप्तका असस्येयगुणा चतुरिन्द्रिया अपर्याप्तका विसंसाहिका त्रीद्वि
द्विया अपर्याप्तका विसंसाहिका केदिया अपर्याप्तका अनन्तगुणा सेदिया अपर्याप्तका विसंसाहिका केदिया अपर्याप्तका सस्येयगुणा सेदिया

गोयमा । सवृत्योवा वणस्सडकाइया अपज्जत्तगा, वणस्सडकाइया पज्जत्ता २ ण

इया पज्जत्तगा, तसकाइया अपज्जत्तगा कयरे कयरेहिती अप्पवा ४ गोय

आउकाइयाणं तेउकाइयाण वाउकाइयाण वणस्सडकाइयाण तसकाइयाण पज्जत्ता २ ण

हिती अप्पवा ४ ? गो० । सवृत्योवा तसकाइया पज्जत्तगा, तसकाइया अपज्जत्तगा असखे

ज्जगुणा, तेउकाइया अपज्जत्तगा पुढविकाइया अपज्जत्तगा विसंसाहिया, आउकाइया अप
यिका अपर्याप्तका सखेयगुणा । एतेपा जदत्त । वायुकायिकाना पर्याप्तापर्याप्तकाना कतरे कतरेज्योउत्पा वा ४ ? गीतम । सर्वस्तो
का वायुकायिका अपर्याप्तका पर्याप्तका सखेयगुणा । एतेपा जदत्त । वनस्पतिकायिकाना पर्या० २ ना कतरे २ ज्योउत्पा वा ४ ? गीतम ।
सर्वस्तीका वनस्पतिकायिका अपर्याप्तका पर्याप्तका सखेयगुणा । एतेपा जदत्त । वनस्पतिकायिकाना पर्याप्ता २ ना कतरे २ ज्योउत्पा वा ४ ?
गीतम । सर्वस्तीकावसकायिका पर्याप्तका अपर्याप्तका असखेयगुणा । एतेपा जदत्त । सकायिकाना पृथिवीकायिकाना सप्तायिकाना तेजस्का
यिकाना वायुकायिकाना वनस्पतिकायिकाना वसकायिकाना पर्याप्तापर्याप्तकाना कतरे कतरेज्योउत्पा वा बहुकावा तुल्या वा विशेषाधिका वा ?

एरुसिणं ज्ञते ! सकाड्याणं पुढविकाड्याणं आउकाड्याणं तेउकाड्याणं वाउकाड्याणं वणस्सडकाड्याणं तसकाड्याणय पज्जत्तगाण कयरे कयरेहिंते अप्पावा १ ? गोयमा ! सव्वत्योवा तसकाड्या पज्जत्तगा, तेउकाड्या पज्जत्तगा अस्सखेज्जगुणा, पुढविकाड्या पज्जत्तगा विसेसाहिया आउकाड्या पज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाड्या पज्जत्तगा विसेसाहिया, वणस्सडकाड्या पज्जत्ता अणतगुणा, सकाड्या पज्जत्तगा विसेसाहिया । एरुसिणं ज्ञते ! सकाड्याण पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंते अप्पावा वज्जयावा तुल्लावा सिसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्योवा सकाड्या अपज्जत्तगा, सकाड्या पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । एरुसिणं ज्ञते ! पुढविकाड्याणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंते अप्पावा वज्जयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्योवा पुढविकाड्या पज्जत्तगा, पुढविकाड्या पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । एरुसिणं ज्ञते ! आउकाड्याणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंते अप्पावा १ ? गोयमा ! सव्वत्योवा आउकाड्या अप

काना च पर्याप्ताना कतरे कतरेज्जोडहपा वा ४ ? गीतम । सर्वस्तोका खसकायिका पर्याप्तका स्तेजस्कायिका पर्याप्तं असस्येयगुणा पृथिवीका यिका विज्ञोपायिका अक्कायिका विज्ञोपायिका वायुकायिका पर्याप्तका विज्ञोपायिका वनस्पतिकायिका पर्याप्तका अन्नगुणाः सकायिका पर्याप्त का विज्ञोपायिका । एतेषा मदन्त । सकायिकाना पर्याप्तकापर्याप्तकाना कतरे कतरेज्जोडहपा वा ४ ? गीतम । सर्वस्तोका सकायिका अपर्याप्त का पर्याप्तका सस्येयगुणा । एतेषा मदन्त । पृथिवीकायिकाना पर्याप्तकापर्याप्तकाना कतरे २ ज्योडहपा वा ? गीतम । सर्वस्तोका पृथिवी कायिका अपर्याप्तं पर्याप्तं सस्येयगुणा । एतेषा मदन्त । पर्याप्तं अपर्याप्तं अक्कायिकानां कतरे २ ज्योडहपा वा ? गीतम । सर्वस्तोका अक्कायिका अपर्याप्तका पर्याप्तका सस्येयगुणा । एतेषा मदन्त । स्तेजस्कायिकाना पर्याप्तं अपर्याप्तं कतरे कतरेज्जोडहपा वा ४ ? गीतम । सर्वस्तोका स्तेजस्का

ज्जत्तगा, आउकाइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । एएसिणं नत्ते ! तेउकाइयाण पज्जत्तापेज्जत्ताण कयरे
 कयरेहिती अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्योवा तेउकाइया अपज्जत्तगा, तेउकाइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा
 एएसिण नत्ते । वाउकाइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरेहिती अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्योवा वाउ
 काइया अपज्जत्तगा, वाउकाइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । एएसिण नत्ते । वणस्सइकाइयाण पज्जत्ता २ णं
 कयरे कयरेहिती अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्योवा वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा, वणस्सइकाइया पज्ज
 त्ता सखेज्जगुणा । एएसिण नत्ते । तस्माइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरेहिती अप्पावा ४ गोय
 मा ! सव्वत्योवा तस्काइया पज्जत्तगा, तस्काइया अपज्जत्तगा असखेज्ज ० । एएसिणं नत्ते ! सकाइयाणं
 पुढविक्काइयाण आउकाइयाणं तेउकाइयाण वाउकाइयाण वणस्सइकाइयाण तस्काइयाण पज्जत्ता २ ण
 कयरे कयरेहिती अप्पावा ४ ? गो ० । सव्वत्योवा तस्काइया पज्जत्तगा, तस्काइया अपज्जत्तगा असखे
 ज्जगुणा, तेउकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा पुढविक्काइया अपज्जत्तगा विस्संसाहिया, आउकाइया अप

यिका अपर्याप्तका पर्याप्तका सरयेयगुणा । एतेषा नदन्त । वायुकायिकाना पर्याप्तपर्याप्तकाना कतरे कतरेज्योत्तपा वा ४ ? गीतम । सर्वस्तो
 का वायुकायिका अपर्याप्तका पर्याप्तकाः सरयेयगुणा । एतेषा नदन्त । वनस्पतिकायिकाना पर्याप्त २ ना कतरे २ ज्योत्तपा वा ४ ? गीतम ।
 सर्वस्तोका वनस्पतिकायिका अपर्याप्तका पर्याप्तकाः सरयेयगुणा । एतेषा नदन्त । वनस्पतिकाना पर्याप्ता २ ना कतरे २ ज्योत्तपा वा ४ ?
 गीतम । सर्वस्तोकास्त्रसकायिका पर्याप्तका अपर्याप्तका असरयेयगुणा । एतेषा नदन्त । सकायिकाना पृथिवीकायिकानामप्रायिकाना तेजस्का
 यिकाना वायुकायिकाना वनस्पतिकायिकाना वनस्पतिकायिकाना पर्याप्तपर्याप्तकाना कतरे कतरेज्योत्तपा वा षडुक्ताया तुल्या वा विदोषाधिका वा ?

पञ्जतगा विसेसाहिया, वाउकाइया अ्यपज्जतगा विसेसाहिया, तेउकाइया पज्जतगा संखेज्जगुणा, पुढवि
काइया पज्जतगा विसेसाहिया, अ्यप्पकाइया पज्जतगा विसेसाहिया, वाउकाइया पज्जतगा विसेसाहिया,
अ्यपज्जतगा वण० अ्यनन्त० पज्जतगा संखेज्जगुणा, सकाइया अ्यपज्जतगा विसेसाहिया, सकाइया पज्जत
गा संखेज्जगुणा सकाइया विसेसाहिया। एएसिणं जते । सुज्जमाणं सुज्जमपुढविकाइयाणं सुज्जमअ्याउकाड
याण सुज्जमतेउकाइयाण सुज्जमवाउकाइयाणं सुज्जमवणस्सडकाइयाणं सुज्जमणिअ्याणय कयरे कयरेहिंते
अ्यप्पावा? गोयमा! सव्वल्योवा सुज्जमतेउकाइया, सुज्जमपुढविकाइया विसेसाहिया सुज्जमअ्याउकाइया
विसेसाहिया, सुज्जमवाउकाइया विसेसाहिया, सुज्जमनिगोदा अ्यसखेज्जगुणा, सुज्जमवणस्सडकाइया अ्यणत
गुणा, सुज्जमा विसेसाहिया। एएसिण जते ! सुज्जमअ्यपज्जतगाण सुहुमपुढविकाइयाणं अ्यपज्जतगाण सुज्ज
मअ्याउकाइयाणं अ्यपज्जतगाणं सुज्जमतेउकाइयाण अ्यपज्जतगाणं सुज्जमवाउकाइयाणं अ्यपज्जतगाणं सुज्जम

गीतम । सर्वस्तीकाखसकायिका पर्याप्तका अपर्याप्तका असख्येयगुणा स्तेजस्कायिका अपर्याप्तका असख्येयगुणा पृथिवीकायिका अपर्याप्तका वि
ज्ञेयायिका अष्कायिका अपर्याप्तका विज्ञेयायिका वायुकायिका अपर्याप्तका विज्ञेयायिका स्तेजस्कायिका पर्याप्तका सख्येयगुणा पृथिवीकायि
काः पर्याप्तका विज्ञेयायिका अष्कायिकाः पर्याप्तका विज्ञेयायिका वायुकायिका पर्याप्तका विज्ञेयायिका अपर्याप्तका वनस्पतिकायिका अनन्त
गुणा पर्याप्तका सख्येयगुणा सकायिका अपर्याप्तका विज्ञेयायिका सकायिका पर्याप्तका सख्येयगुणा । एतेषा जदन्त । मूत्तमाणा सूक्ष्मपृथि
वीकायिकाना मूत्ताष्कायिकाना मूत्ततेजस्कायिकाना मूत्तवायुकायिकाना मूत्तवनस्पतिकायिकाना मूत्तमनिगोदाना च कतरे कतरेअ्योऽल्लपा वा
४ ? गीतम । सर्वस्तीका मूत्ततेजस्कायिका मूत्तपृथिवीकायिका विज्ञेयायिका मूत्ताष्कायिका विज्ञेयायिका विज्ञेयायिका

वणस्सडकाइयाण अपज्जत्तगाण सुहुमनिगोदाणं अपज्जत्तयाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा !
 सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तया, सुज्जमपुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुज्जमअउका०
 अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुज्जमवाउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुज्जमनिगोदा अपज्जत्तगा अ
 सखेज्जगुणा, सुज्जमवणस्सडकाइया अपज्जत्तगा अणत्तगुणा, सुज्जमा अपज्जत्तगा विसेसाहिया । एएसिणं
 जत्ते ! सुज्जमपज्जत्तगाण सुज्जमपुढविकाइयपज्जत्तगाण सुज्जमअउकाइयपज्जत्तगाणं सुज्जमतेउकाइयपज्ज
 त्तगाण सुज्जमवाउकाइयापज्जत्तगाण सुज्जमवणस्सडकाइयापज्जत्तगाण सुज्जमनिगोदपज्जत्तगाणय कयरे कय
 रेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुज्जमतेउकाइया पज्जत्तगा, सुज्जमपुढविकाइयापज्जत्तगा वि
 सेसाहिया, सुज्जमअउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुज्जमवाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुज्ज
 मनिगोदा पज्जत्तगा असखेज्जगुणा, सुज्जमवणस्सडकाइयापज्जत्तया अणत्तगुणा, सुहुमापज्जत्तगा विसेसा
 हिया दार ३ । एएसिणं जत्ते ! सुहुमाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? सव्वत्थोवा सुहुमा

सुहुमनिगोदा असव्वत्थगुणा सुहुमवणस्सडकाइया अणत्तगुणा सुहुमा विजोपाधिका । एतेषा जदत्त । सुहुमापर्योत्तकाना सुहुमपृथिवीकायिका
 पर्योत्तकाना सुहुमाकायिकापर्योत्तकाना सुहुमतेजस्कायापर्योत्तकाना सुहुमापर्योत्तवणस्सडकाइयापर्योत्तकाना सुहुमापर्योत्तकाना सुहुमापर्योत्तकाना
 सुहुमनिगोदा कत्ते २ ज्योत्तवावा ? गोयमा ! सर्वस्वोका सुहुमापर्योत्ता स्तेजस्कायिका सुहुमपृथिवीकायिका अ० विजोपाधिका सुहुमाकायिका
 अपर्योत्तका विजोपाधिका सुहुमवायुकायिका अ० विजोपाधिका सुहुमनिगोदा अ० असव्वत्थगुणा, सुहुमवणस्सडकाइयापर्योत्तकाना सुहुमाकायिकापर्योत्तकाना सुहुमा
 अपर्योत्तका विजोपाधिका । एतेषा जदत्त । सुहुमपर्योत्तकाना सुहुमपृथिवीकायिकापर्योत्तकाना सुहुमतेजस्कायिकापर्योत्तकाना सुहुमा

अपज्जत्तगा सुहुमा पज्जत्तगां सखेज्जगुणा ! एएसिणं ज्ञते ! सुहुमपुढविकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे २
 हितो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्योवा सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तया, सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तगा
 सखेज्जगुणा ! एएसिण ज्ञते ! सुहुमपुढविकाइयाण पज्जत्ता २ णं कयरे २ हितो अप्पावा ४ गोयमा ! सव्व
 त्योवा सुज्जमत्थाउकाइया अपज्जत्तया, सुज्जमत्थाउकाइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा ! एएसिणं ज्ञते ! सुज्ज
 मत्तेउकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरे हितो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्योवा सुज्जमत्तेउकाइया अप
 ज्जत्तगा सुज्जमत्तेउकाइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा ! एएसिण ज्ञते ! सुज्जमवाउकाइयाण पज्जत्ता २ णं कयरे २
 हितो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्योवा सुज्जमवाउकाइया अपज्जत्तगा, सुज्जमवाउकाइया पज्जत्तगा !

दमवायुकायिकपर्या०काना सुद्धमवन्नस्पतिकायपर्या०काना सुद्धमनिगोदप०काना च कतरे कतरेज्योउत्तया वा ४ ? गीतम ! सर्वस्तीका सुद्धमतेजस्सका
 यिका प० सुद्धमपृथिवीकायिका प० विजोपायिका प० विजोपायिका सुद्धमायुकायिका प० विजोपायिका सुद्धमनिगोदा. प०
 असख्यगुणा सुद्धमवन्नस्पतिकायिका प० अनन्तगुणा सुद्धमा. पर्या०का. विजोपायिका । द्वारम् । ४ ॥ एतेया जदत्त । सुद्धमाणा पर्या०पर्या०पत्ताना
 कतरे कतरेज्यो उत्तया वा ४ ? गीतम ! सर्वस्तीका सुद्धमा अपर्या०का सुद्धमा पर्या०का सुख्यगुणा । एतेया भदत्त । सुद्धमपृथिवीकायिका
 ना पर्या०पर्या०ना कतरे कतरेज्योउत्तया वा ४ ? गीतम ! सर्वस्तीका सुद्धमपृथिवीकायिका अपर्या०का सुद्धमा सख्येयगु
 णा । एतेया जदत्त । सुद्धमायानामपर्या०पत्ताना कतरे कतरेज्योउत्तया वा ४ ? गीतम ! सर्वस्तीका सुद्धमा अयुकायिका अप० पर्या०का स
 ख्येयगुणा । एतेया सुद्धमतेजस्सकायपर्या०अप०काना कतरे कतरेज्योउत्तया वा ४ ? गीतम ! सर्वस्तीका सुद्धमतेजस्सकायिका अप० पर्या०का सख्यगु
 णा । एतेया सुद्धमवायुकायिकाना पर्या०वापयापत्ताना कतरे कतरेज्योउत्तया वा ४ ? गीतम ! सर्वस्तीका सुद्धमापर्या०का वायुकायिका. पर्या०ता

संसेज्ज० । एएसिण नत्ते ! सुहुमवणस्सइकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहि तो अप्पावा ४ ? गोयमा !
 सव्वत्थोवा सुज्जमवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा, सुज्जमवणस्सइकाइया पज्जत्तगा सखिज्जगुणा । एएसिणं
 नत्ते ! सुहुमनिगोदाणं पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहि तो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुज्जमनिगोदा
 अपज्जत्ता, सुहुमनिगोदा पज्जत्तगा सखिज्जगुणा । एएसिण नत्ते ! सुज्जमाण सुज्जमपुढविकाइयाण सुहुम
 छाउकाइयाण सुज्जमतेउकाइयाण सुहुमवाउकाइयाण सुहुमवणस्सइकाइयाण सुहुमनिगोदाणय पज्जत्ता २
 ण कयरे कयरेहि तो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुज्जमतेउकाइया अपज्जत्तया, सुज्जमपुढविकाइया
 अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमच्छाउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुज्जमवाउकाइया अपज्जत्तया
 विसेसाहिया, सुहुमतेउकाइया पज्जत्तया सखिज्जगुणा, सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया, सुज्ज
 मच्छाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुज्जमनिगोदा अप्पणतगु

सख्येयगुणा । एतेपा सूत्तवन्नरपठिकायिकाना पर्या० पर्या०त्ता कतरे कतरेज्योत्तया वा ४ ? गीतम ! सर्वस्लोका सूत्तमवन्नरपठिकायिका अपर्या
 तका पर्या०त्ता सख्येयगुणा, एतेपा सूत्तमनिगोदाना पर्या० पर्या०त्ता कतरे कतरेज्योत्तया वा ४ ? गीतम ! सर्वस्लोका सूत्तमनिगोदा अपर्या०
 का पर्या०त्ता सख्येयगुणा । एतेपा जदत्त । सूत्तमाणा सूत्तमपृथिवीकायिकाना सूत्तमज्जस्कायिकाना सूत्तमवायुकायिकाना सूत्तम
 वन्नरपठिकायिकाना सूत्तमनिगोदानाब्ध पर्या० पर्या०त्ता कतरे कतरेज्योत्तया वा ४ ? गीतम ! सर्वस्लोका सूत्तमतेउकायिका अपर्या०त्ता सूत्तम
 पृथिवीकायिका अपर्या०त्ता विज्ञेयायिका सूत्तमाष्कायिका अप० विज्ञेयायिका सूत्तमवायुकायिका अपर्या०त्ता सूत्तम
 का सख्येयगुणा सूत्तमपृथिवीकायिका पर्या० विज्ञेयायिका सूत्तमाष्कायिका पर्या० विज्ञेयायिका सूत्तमवायुकायिका सूत्तम

गोदा अपज्जत्तगाणं वादरत्तसकाडया अपज्जत्तगाणय कयरे कयरेहिती अप्पावा वज्जयावा तुल्लावा वि
सेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वादरत्तसकाडया अपज्जत्तगा, वादरत्तेउकाडया अपज्जत्तगा अससेज्ज
गुणा, पत्तेयसरीरवादरवणस्सडकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा, वादरनिगोदा अपज्जत्तगा अससेज्ज
गुणा, वादरपुढवीकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा, वादरञ्जाउकाडया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा,
वादरवाउकाडया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा, वादरवणस्सडकाइया अपज्जत्तगा अपणत्तगुणा, वादरञ्जप
ज्जत्तगा विसंसाहिया २ । एएसिणं जत्ते ! वादरपज्जत्तयाण वादरपुढविकाडयाणं पज्जत्तयाणं, वादरञ्जाउ
काडयाण पज्जत्तयाण वादरत्तेउकाडयपज्जत्तयाण वादरवाउकाडयापज्जत्तयाणं वादरवणस्सडकाडयाण पज्ज
त्तयाण पत्तेयसरीरवादरवणस्सडकाइयापज्जत्तयाण वादरनिगोदपज्जत्तयाण वादरत्तसकाइयपज्जत्तयाणय
कयरे कयरेहिती अप्पावा वज्जयावा तुल्लावा विसंसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वादरत्तेउकाडया प

वादराप० तेजस्कायिकाना वादरापयो० वायुकायिकाना वादरापयो० वनस्पतिकायिकाना वादरापयो० प्रत्यक्षरीरवन्स्पतिकायिकाना वादरनि
गोदानामपयो०काना वादरापयो० प्रस्रकायिकाना कतरे २ ज्योऽल्पा वा ४ ? गोतम । सर्वलोका वादरवस्रकायिका अपयो०काना वादरत्तेजस्कायि
का अप० असखेयगुणा प्रत्यक्षरीरवादरवन्स्पतिकायिका अप० असखेयगुणा वादरनिगोदा अपयो०सका असखेयगुणा वादरपुयिर्वीकायिका
अपयो०सका असख्यगुणा वादराप्तायिका अप० असख्यगुणा वादरवायुकायिका अप० असख्यगुणा वादरवन्स्पतिकायिका अपयो० अनन्तगुणा वा
दरापयो०का विज्ञोपायिका । २ । मत्तेपा २० । वादरपयो०काना वादरपुयिर्वीकायिकायपयो०सकाना पयो०सवादाप्तायिकाना पयो० वादरत्तेजस्कायिका
ना पयो०सवादरायुकायाना पयो०सवादरवन्स्पतिकायिकाना पयो०सप्रत्येक्षरीरवादरवन्स्पतिकायिकाना पयो०सवादरनिगोदाना पयो०सवादरज्ज

जज्ञया, वादरतसकाडया पज्जत्तगा अस्खेज्जगुणां । पत्तेयसरीरवादरयणस्सडकाडया पज्जत्तगा अस्खेज्जगुणा । वादरनिगोदा पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । वादरपुढविकाडया पज्जत्तगा अस्खेज्जगुणा । वादरवाउकाडया पज्जत्तगा अस्खेज्जगुणा । वादरवाउकाडया पज्जत्तगा अस्खेज्जगुणा । वादरा पज्जत्तगा विसेसाहिया ३ । एएसिणं ज्ञते ! वादराणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंती अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वादरा पज्जत्तगा । वादरा पज्जत्तगा अस्खेज्जगुणा । एएसिण ज्ञते ! वादरपुढविकाडयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंती अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वादरपुढविकाडया पज्जत्तगा १ । वादरपुढविकाडया अस्खेज्जगुणा । एएसिण ज्ञते ! वादरवाउकाडयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंती अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वादरवाउकाडया पज्जत्तगा अस्खेज्जगुणा । एएसिणं ज्ञते !

कायिकानां कतरे कतरेज्ज्योडल्या वा ४ ? गोतम । सर्वस्वोकाः पर्याप्तवादरतत्तरकायिका असख्यगुणा पर्याप्तसत्तेयशरीरवादरवनस्पतिकायिका असख्यगुणा पर्याप्तवादरनिगोदा असख्यगुणा पर्याप्तवादरपृथ्वीकायिका असख्यगुणा पर्याप्तवादराष्कायिका असख्यगुणा पर्याप्तवादरवायुकायिका असख्यगुणा पर्याप्तवादरवन्स्पतिकायिका असख्यगुणा वादरा पर्याप्तका विज्ञेयायिका । ३ । एतेषा मदन्त । वादराणां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेज्ज्योडल्या वा ४ ? गोतम । सर्वस्वोका वादराः पर्याप्तका अपर्याप्त असख्यगुणा । एतेषा जद० । वादरपृथ्वीकायिकानां पर्याप्तपर्याप्तानां कतरे कतरेज्ज्योडल्या वा ४ ? गोतम । सर्वस्वोका वादरपृथ्वीकायिकाः पर्याप्तका १ वादरपृथ्वीकायिका अपर्याप्तका असख्यगुणा । एतेषा जदन्त । वादराष्कायानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेज्ज्योडल्या वा ४ ? गोतम । सर्वस्वोका वादराष्का

वादरतेउकाडयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिती अप्पावा वज्जयावा तुलावा विसेसाहियावा ? गोयमा !
 सव्वत्थोवा वादरतेउकाडया पज्जत्तया वादरतेउकाडया अप्पज्जत्तया असखेज्जगुणा । एएसिणं जत्ते ! वाद
 रवाउकाडयाण पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिती अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वादरवाउकाडया पज्ज
 त्तगा । वादरवाउकाडया अप्पज्जत्तगा असखेज्जगुणा । एएसिणं जत्ते ! वादरवणस्सडकाडयाण पज्जत्ता २ णं
 कयरे कयरेहिती अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वादरवणस्सडकाडया पज्जत्तगा । वादरवणस्सडकाड
 या अप्पज्जत्तगा असखेज्जगुणा । एएसिणं जत्ते ! पत्तेयसरीरवादरवणस्सडकाडयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे
 कयरेहिती अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पत्तेयसरीरवणस्सडकाडया पज्जत्तगा । पत्तेयसरीरवादरव
 णस्सडकाडया अप्पज्जत्तगा असखेज्जगुणा । एएसिणं जत्ते ! वादरनिगोदा पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिती
 अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वादरनिगोदा पज्जत्तगा । वादरनिगोदा अप्पज्जत्तगा असखेज्जगुणा ।

यिका पर्याप्तका असस्यगुणा । एतेषा प्रदत्ता । वादरतेजस्कायाना पर्याप्तपर्याप्तकाना कतरे कतरेज्योऽल्पा वा ? गीतम् । सर्वस्तो
 का वादरतेजस्कायिका पर्याप्तका अपर्याप्तवादरतेजस्कायिका असस्येयगुणा । एतेषा प्रदत्ता । वादरवायुकायिकाना पर्याप्तपर्याप्ताना कतरे क
 तरेज्योऽल्पा वा ? गीतम् । सर्वस्तोका वादरवायुकायिका पर्याप्तका अपर्याप्तवादरवायुकायिका असस्येयगुणा । एतेषा प्रदत्ता । वादरवन्स्प
 तिकायिकाना पर्याप्तपर्याप्तकाना कतरे कतरेज्योऽल्पा वा ४ ? गीतम् । सर्वस्तोका वादरवन्स्पतिकायिका पर्याप्तका अपर्याप्तवादरवन्स्पत
 कायिका असस्येयगुणा । एतेषा प्रदत्ता । मत्त्येज्जारीरवादरवन्स्पतिकायिकाना पर्याप्तपर्याप्ताना कतरे कतरेज्योऽल्पा वा ४ ? गीतम् । सर्व
 स्तोका मत्त्येज्जारीरवादरवन्स्पतिकायिका पर्याप्तका अपर्याप्तप्रत्येकज्जारीरवादरवन्स्पतिकायिका असस्येयगुणा । एतेषा प्रदत्ता । वादरनिगो

एएसिण नते ! वादरतसकाइयाण पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहि तो अय्यावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्योवा
 वादरतसकाइया पज्जत्तगा । वादरतसकाइया अयपज्जत्तगा अयसखेज्जगुणा ४ । एएसिण नते ! वादराणं
 वादरपुढविकाइयाण वादरअण्णकाइयाण वादरतउकाइयाणं वादरवाउकाइयाणं वादरवणस्सइकाइयाणं
 पत्तयसरीरवादरवणस्सइकाइयाण वादरनिगोदाण वादरतसकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहि तो
 अय्यावा वज्जयावा तुल्लावा विसेसाहिवावा ? गोयमा ! सव्वत्योवा वादरतउकाइया पज्जत्तया १ । वाद
 रतसकाइया पज्जत्तया अयसखेज्जगुणा २ । वादरतसकाइया अयपज्जत्तया अयसखिज्जगुणा ३ । वादरपत्तय
 वणस्सइकाइया पज्जत्तगा अयसखेज्जगुणा ४ । वादरनिगोदा पज्जत्तगा अयसखेज्ज ० ५ । वादरपुढविकाइ
 या पज्जत्तगा अयसखेज्जगुणा ६ । वादरअण्णकाइया पज्जत्तगा अयसखेज्जगुणा ७ । वादरवाउकाइया पज्ज

दाना पर्याप्तापर्याप्ताना कतरे कतरेज्ज्योऽस्या वा ४ ? गीतम । सर्वस्तोका वादरनिगोदा पर्याप्तका अपर्याप्तवादरनिगोदा असस्यगुणा १ । एतेषा
 नदत्त । वादरवसकायाना पर्याप्तापर्याप्ताना कतरे कतरेज्ज्योऽस्या वा ४ ? गीतम । सर्वस्तोका वादरवसकायिका पर्याप्तका वादरवसकायिका
 अपर्याप्तका असस्यगुणा ४ । एतेषा नदत्त । वादराणा वादरपृथिवीकायिकाना वादरप्लाथाना वादरतेजस्कायिकाना वादरायुकायिकाना
 वादरवनस्पतिकायिकाना प्रत्येकशरीरवादरवनस्पतिकायिकाना वादरनिगोदाना वादरवसकायिकाना पर्याप्तापर्याप्ताना कतरे कतरेज्ज्योऽस्या
 वा ४ ? गीतम । सर्वस्तोका वादरतेजस्कायिका पर्याप्तका १ । वादरवसकायिका पर्याप्तका असस्यगुणा २ । वादरवसकायिका अपर्याप्तका अ
 सस्यगुणा ३ । पर्याप्तवादरप्रत्येकवनस्पतिकायिका असस्यगुणा ४ । पर्याप्तवादरनिगोदा असस्यगुणा ५ । पर्याप्तवादरपृथिवीकायिका अस
 स्यगुणा ६ । पर्याप्तवादराप्लाथिका असस्यगुणा ७ । पर्याप्तवादरायुकायिका असस्यगुणा ८ । अपर्याप्तवादरतेजस्कायिका असस्यगुणा ९ ।

तगा असखेज्जगुणा ८ । वादरतेउकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा ९ । पत्तेयसरीरवादरवणस्सइका
इया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा १० । वादरनिगोदा अपज्जत्ता असखेज्जगुणा ११ । वादरपुढविकाइया
अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा १२ । वादरआउकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा १३ । वादरवाउकाइया
अप० असखेज्जगुणा १४ । वादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा अणंतगुणा १५ । वादरपज्जत्तगा विसंसा
हिया १६ । वादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा १७ । वादरा अपज्जत्तगा विसंसाहिया १९ ।
वादरा विसंसाहिया २० । एएसिण भत्ते ! सुज्जमाण सुज्जमपुढविकाइयाण सुज्जमआउकाइयाण सुज्जमतेउ
काइयाणं सुज्जमवाउकाइयाण सुज्जमवणस्सइकाइयाण सुज्जमनिगोदाण वादराण वादरपुढविकाइयाणं
वादरआउकाइयाण वादरतेउकाइयाण वादरवाउकाइयाण वादरवणस्सइकाइयाणं पत्तेयसरीरवादरवण

अपर्याप्तमयेकशरीरवादरवणस्पतिकायिका असस्यगुणा १० । अपर्याप्तवादरनिगोदा असस्यगुणा ११ । अपर्याप्तवादरपृथ्वीकायिका असस्यगु
णा १२ । अपर्याप्तवादराप्कायिका असस्यगुणा १३ । अपर्याप्तवादरवायुकायिका असस्यगुणा १४ । पर्याप्तवादरवनस्पतिकायिका अनन्तगुणा १५ ।
पर्याप्ता वादरा विशेषायिका १६ । अपर्याप्तवादरवनस्पतिकायिका असस्यगुणा १७ । अपर्याप्ता वादरा विशेषायिका १८ । वादरा विशेषायि
का १९ । एतेषा प्रदत्ता ! सूक्ष्माणा सूक्ष्मपृथ्वीकायिकाना सूक्ष्माप्कायिकाना सूक्ष्मवायुकायिकाना सूक्ष्मवनस्पतिक
यिकाना सूक्ष्मनिगोदाना वादराणा वादरपृथ्वीकायिकाना वादराप्कायिकाना वादरवायुकायिकाना वादरवनस्पतिकायि
काना प्रत्येकशरीरवादरवणस्पतिकायिकाना वादरनिगोदाना वादरवसकायिकाना च कतरे कतरंभ्योऽस्या वा ४० गौतम । सर्वस्वोका वादरप्र
सकायिका १ । वादरतेजस्कायिका असस्यगुणा २ । प्रत्येकशरीरवादरवनस्पतिकायिका असस्यगुणा ३ । वादरनिगोदा असस्यगुणा ४ । वाद

एएसिण नते ! वादरतसकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहितो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सवृत्योवा
 वादरतसकाइया पज्जत्ता १ । वादरतसकाइया अपज्जत्ता ४ । एएसिण नते ! वादराणं
 वादरपुढविकाइयाण वादरथाउकाइयाण वादरवाउकाइयाण वादरवणस्सइकाइयाणं
 पत्तयसरीरवादरवणस्सइकाइयाण वादरनिगोदाण वादरतसकाइयाणं पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहितो
 अप्पावा वज्जयावा तुत्तावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सवृत्योवा वादरतेउकाइया पज्जत्तया १ । वाद
 रतसकाइया पज्जत्तया अप्सखेज्जगुणा २ । वादरतसकाइया अपज्जत्तया अप्सखिज्जगुणा ३ । वादरपत्तेय
 वणस्सइकाइया पज्जत्ता ४ । वादरनिगोदा पज्जत्ता ५ । वादरपुढविकाइ
 या पज्जत्ता ६ । वादरथाउकाइया पज्जत्ता ७ । वादरवाउकाइया पज्ज

दाना पर्याप्तापर्याप्ताना कतरे कतरेज्जोऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तीका वादरनिगोदा पर्याप्तका अपर्याप्तवादरनिगोदा असह्यगुणा । एतेषा
 नदत्ता । वादरवसकायाना पर्याप्तापर्याप्ताना कतरे कतरेज्जोऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तीका वादरवसकायिका पर्याप्तका वादरवसकायिका
 अपर्याप्तका असह्यगुणा ४ । एतेषा नदत्ता । वादराणा वादरपण्णिकीकायिकाना वादराप्तायाना वादरतेज्जस्कायिकाना वादरवायुकायिकाना
 वादरवनस्पतिकायिकाना प्रत्येकशरीरवादरवनस्पतिकायिकाना वादरनिगोदाना वादरवसकायिकाना पर्याप्तापर्याप्ताना कतरे कतरेज्जोऽल्पा
 वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तीका वादरतेज्जस्कायिका पर्याप्तका १, वादरवसकायिका पर्याप्तका असह्यगुणा २ । वादरवसकायिका अपर्याप्तका अ
 सह्यगुणा ३ । पर्याप्तवादरप्रत्येकवनस्पतिकायिका असह्यगुणा ४ । पर्याप्तवादरनिगोदा असह्यगुणा ५ । पर्याप्तवादरपण्णिकीकायिका अस
 ह्यगुणा ६ । पर्याप्तवादराप्तायिका असह्यगुणा ७ । पर्याप्तवादरवायुकायिका असह्यगुणा ८ । अपर्याप्तवादरतेज्जस्कायिका असह्यगुणा ९ ।

॥ तृणा अस्खेज्जगुणा ८ । वादरतेउकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा ९ । पत्तेयसरीरवादरवणस्सइका
इया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा १० । वादरनिगोदा अपज्जत्ता असखेज्जगुणा ११ । वादरपुढविकाइया
अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा १२ । वादरअ्याउकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा १३ । वादरवाउकाइया
अप० असखेज्जगुणा १४ । वादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा अणत्तगा १५ । वादरपज्जत्तगा विसंसा
हिया १६ । वादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा १७ । वादरा अपज्जत्तगा विसंसाहिया १९ ।
वादरा विसंसाहिया २० । एएसिण भत्ते ! सुज्जमाणं सुज्जमपुढविकाइयाण सुज्जमअ्याउकाइयाण सुज्जमत्तेउ
काइयाण सुज्जमवाउकाइयाण सुज्जमवणस्सइकाइयाण सुज्जमनिगोदाण वादराणं वादरपुढविकाइयाणं
वादरअ्याउकाइयाण वादरतेउकाइयाण वादरवाउकाइयाण वादरवणस्सइकाइयाणं पत्तेयसरीरवादरवण

अपर्याप्तप्रत्येकशरीरवादरवणस्पतिकारिका असह्यगुणा १० । अपर्याप्तवादरनिगोदा असह्यगुणा ११ । अपर्याप्तवादरपुढविकारिका असह्यगु
णा १२ । अपर्याप्तवादराज्जकारिका असह्यगुणा १३ । अपर्याप्तवादरवायुकारिका असह्यगुणा १४ । पर्याप्तवादरवणस्पतिकारिका छान्तगुणा १५ ।
पर्याप्ता वादरा विसंसाधिका १६ । अपर्याप्तवादरवणस्पतिकारिका असह्यगुणा १७ । अपर्याप्ता वादरा विशेषारिका १८ । वादरा विशेषारि
का १९ । प्रतेया भदन्त ! सूक्ष्माणा सूक्ष्मपृथिवीकारिकाना सूक्ष्मपृथिवीकारिकाना सूक्ष्मवायुकारिकाना सूक्ष्मवतस्पतिकारि
यिकाना सूक्ष्मनिगोदाना वादराणा वादरपृथिवीकारिकाना वादरतेजस्कारिकाना वादरवायुकारिकाना वादरवणस्पतिकारि
काना प्रत्येकशरीरवादरवणस्पतिकारिकाना वादरनिगोदाना वादरवस्कारिकाना च कतरे कतरंभ्योऽल्पा वा ४० गौतम । सर्वस्तीका वादरव
स्कारिका १ । वादरतेजस्कारिका असह्यगुणा २ । प्रत्येकशरीरवादरवणस्पतिकारिका असह्यगुणा ३ । वादरनिगोदा असह्यगुणा ४ । वाद

एएसिणं नते ! वादरतसकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे-कयरेहिंती अण्णवा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा
 वादरतसकाइया-पज्जत्तगा । वादरतसकाइया अण्णत्तगा अण्णत्तगा ४ । एएसिण नते ! वादराणं
 वादरपुठविकाइयाण वादरत्तकाइयाण वादरत्तकाइयाण वादरत्तकाइयाण वादरत्तकाइयाण
 पत्तयसरीरवादरवणस्सइकाइयाण वादरनिगोदाण वादरत्तकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिंती
 अण्णवा वज्जयांवा तुत्तांवा विसेसाहिवावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वादरत्तकाइया पज्जत्तया १ । वाद
 रतसकाइया पज्जत्तया अण्णत्तगा २ । वादरत्तकाइया अण्णत्तगा ३ । वादरपत्तय
 वणस्सइकाइया पज्जत्तगा अण्णत्तगा ४ । वादरनिगोदा पज्जत्तगा अण्णत्तगा ५ । वादरपुठविकाइ
 या पज्जत्तगा अण्णत्तगा ६ । वादरत्तकाइया पज्जत्तगा अण्णत्तगा ७ । वादरवाउकाइया पज्ज

दाना पर्याप्तपर्याप्ताना कतरे कतरेऽप्योऽप्या वा ४ ? गीतम । सर्वस्वोका वादरनिगोदा पर्याप्तका अपर्याप्तवादरनिगोदा असह्यगुणा । एतेषा
 नदत्त । वादरत्तसकायाना पर्याप्तपर्याप्ताना कतरे कतरेऽप्योऽप्या वा ४ ? गीतम । सर्वस्वोका वादरत्तसकायिका पर्याप्तका वादरत्तसकायिका
 अपर्याप्तका असह्यगुणा । ४ । एतेषा नदत्त । वादराणा वादरपृथिवीकायिकाना वादरत्तसकायिकाना वादरत्तसकायिकाना वादरत्तसकायिकाना
 वादरत्तसकायिकाना प्रत्यक्षशरीरवादरवणस्सइकायिकाना वादरनिगोदाना वादरत्तसकायिकाना पर्याप्तपर्याप्ताना कतरे कतरेऽप्योऽप्या
 वा ४ ? गीतम । सर्वस्वोका वादरत्तसकायिका पर्याप्तका १ । वादरत्तसकायिका पर्याप्तका असह्यगुणा २ । वादरत्तसकायिका अपर्याप्तका अ
 सह्यगुणा ३ । पर्याप्तवादरमत्तयकवनस्सइकायिका असह्यगुणा ४ । पर्याप्तवादरनिगोदा असह्यगुणा ५ । पर्याप्तवादरपृथिवीकायिका अस
 सह्यगुणा ६ । पर्याप्तवादरत्तसकायिका असह्यगुणा ७ । पर्याप्तवादरवाउकायिका असह्यगुणा ८ । अपर्याप्तवादरत्तसकायिका असह्यगुणा ९ ।

जज्ञताण वादरश्याउकाडयश्चपज्जत्तयाण वादरतेउकाडयाश्चपज्जत्तयाण वादरवाउकाडयश्चपज्जत्तयाण
 वादरवणस्सइकाडयश्चपज्जत्तयाण पत्तेयसरीरवादरवणस्सइकाडयश्चपज्जत्तयाण वादरनिगोदा चपज्ज
 त्तयाण वादरतसकाडया चपज्जत्तयाणय कयरे कयरेहिती चप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वतोवा वादरत
 सकाडया चपज्जत्तगा । वादरतेउकाडया चपज्जत्तगा चसखेज्जगुणा , पत्तेयसरीरवादरवणस्सइकाडया
 चपज्जत्तगा चसखेज्जगुणा ३ । वादरनिगोदा चपज्जत्तया चसखेज्जगुणा । वादरपुढविकाडया चपज्ज
 त्तगा चसखेज्जगुणा । वादरश्याउकाडया चपज्जत्तगा चसखे० ६ । वादरवाउकाडया चपज्जत्तगा चस
 खेज्जगुणा , सुज्जमतेउकाडया चपज्जत्तगा चसखेज्जगुणा । सुज्जमपुढविकाडया चपज्जत्तगा विसेसाहिया ९
 सुज्जमश्याउकाडया चपज्जत्तगा विसेसाहिया १० । सुज्जमवाउकाडया चपज्जत्तगा विसेसाहिया , सुज्जम
 निगोदा चपज्जत्तगा चसखेज्जगुणा , वादरवणस्सइकाडया चपज्जत्तगा चणत्तगुणा , वादरा चपज्जत्तगा

वनस्पतिकायिकानामपर्याप्तवादरनिगोदाना मपर्याप्तवादरवसकायिकानाञ्च कतरे कतरेज्योऽतेया वा ४ ? गीतम । सर्वस्तीका अपर्याप्तवा
 दरवसकायिका १ । अपर्याप्तवादरतेजरकायिका असख्येगुणा २ । अपर्याप्तमत्तेकजरीरवादरवनस्पतिकायिका असत्यगुणा ३ । अपर्याप्तवा
 दरनिगोदा असत्यगुणा ४ । अपर्याप्तवादरपुण्यीकायिका असत्यगुणा ५ । अपर्याप्तवादराप्तायिका असत्यगुणा ६ । वादरवायुकायिका अप
 र्याप्तका असत्यगुणा अपर्याप्तसूक्ष्मतेजरकायिका असत्यगुणा अपर्याप्तसूक्ष्मपुण्यीकायिका विशेषाधिका ९ । अपर्याप्तसूक्ष्मायिका अप
 र्याप्तका १० । अपर्याप्तसूक्ष्मवायुकायिका विशेषाधिका ११ । अपर्याप्तसूक्ष्मनिगोदा असत्यगुणा अपर्याप्तवादरवनस्पतिकायिका अनन्तगुणा वा
 दरा अपर्याप्तका विशेषाधिका अपर्याप्तसूक्ष्मवनस्पतिकायिका असत्यगुणा अपर्याप्तका सूक्ष्मा विशेषाधिका २ । एतेया भदन्त ! सूक्ष्मपर्याप्ताना

स्सइकाइयाणं वादरनिगोदाणं वादरतसकाइयाणय कयरे कयरेहिंती अप्पांवा१ ? गोयमा ! सत्त्वयोवा
वादरतसकाइया १ । वादरतेउकाइया असखेज्जगुणा पत्तेयसरीरवादरवणस्सइकाइया असखेज्जगुणा ।
वादरनिगोदा असखिज्जगुणा । वादरपुढविकाइया असखेज्जगुणा ५ । वादरआउकाइया असखेज्जगुणा
वादरवाउकाइया असखेज्जगुणा । सुज्जमतेउकाइया असखेज्जगुणा । सुज्जमपुढविकाइया विसेसाहिया ।
सुज्जमआउकाइया विसेसाहिया । सुज्जमवाउकाइया विसेसाहिया । सुज्जमनिगोदा असखेज्जगुणा ।
वादरवणस्सइकाइया अणत्तगुणा वादरा विसेसाहिया । सुज्जमवणस्सइकाइया असखेज्जगुणा १५ ।
सुज्जमायिसेसाहिया १ । एएसिणं जंते ! सुज्जमअपज्जयाणं सुज्जमपुढविकाइयाणं अपज्जत्तयाणं सुज्जम
आउकाइया अपज्जत्तयाणं सुज्जमतेउकाइयाणं अपज्जत्तयाणं सुज्जमवाउकाया अपज्जत्तयाणं सुज्जमवण
स्सइकाइयाणं अपज्जत्तयाणं सुज्जमनिगोदा अपज्जत्तयाण वादरा अपज्जत्तयाणं वादरपुढविकाइया अप

रपृथिवीकायिका असस्यगुणा ५ । वादराष्कायिका असस्यगुणा ६ । वादरवायुकायिका असस्यगुणा ७ । सूक्ष्मतेजःकायिका असस्यगुणा ८ । सूक्ष्मपृथिवीकायिका विशेषाधिकः ९ । सूक्ष्माष्कायिका विशेषाधिकः १० । सूक्ष्मवायुकायिका विशेषाधिकः ११ । सूक्ष्मनिगोदा असस्यगुणा १२ । वादरवनस्पतिकायिका अनक्तगुणाः १३ । वादरा विशेषाधिकः १४ । सूक्ष्मवनस्पतिकायिका असस्यगुणा १५ । सूक्ष्मा विशोषाधिकः १६ । सूक्ष्मापयोप्तकाना सूक्ष्मपृथिवीकायिकाना अपयोप्तकाना सूक्ष्माष्कायिकानामपयोप्ताना सूक्ष्मतेजःकायिकानामपयोप्ताना सूक्ष्मवायुकायिकानामपयोप्ताना सूक्ष्मनिगोदानामपयोप्ताना वादरापयोप्तकानामपयोप्ताना वादरपयोप्तकानामपयोप्ताना वादरवनस्पतिकायिकानामपयोप्ताना वादरतेजःकायिकाना वादरवायुकायिकानामपयोप्ताना वादरविशोषकायिकानामपयोप्ताना वादरविशोषकायिका

ज्जत्तयाण वादरञ्चाउकाइयअपज्जत्तयाण वादरतेउकाइयाअपज्जत्तयाण वादरवाउकाइयअपज्जत्तयाण
 वादरवणस्सइकाइयअपज्जत्तयाण पत्तेयसरीरवादरवणस्सइकाइयअपज्जत्तयाण वादरनिगोदा अपज्ज
 त्तयाण वादरतसकाइया अपज्जत्तगाणय कयरे कयरेहेतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वतोवा वादरत
 सकाइया अपज्जत्तगा । वादरतेउकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा , पत्तेयसरीरवादरवणस्सइकाइया
 अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा ३ । वादरनिगोदा अपज्जत्तया असखेज्जगुणा । वादरपुढविकाइया अपज्ज
 त्तगा असखेज्जगुणा । वादरञ्चाउकाइया अपज्जत्तगा असखे० ६ । वादरवाउकाइया अपज्जत्तगा अस
 खेज्जगुणा , सुज्जमतेउकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा । सुज्जमपुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया ९
 सुज्जमञ्चाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया १० । सुज्जमवाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया , सुज्जम
 निगोदा अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा , वादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणतगुणा , वादरा अपज्जत्तगा

वनस्पतिकारिकानामपर्याप्तवादरनिगोदाना मपर्याप्तवादरवसकारिकानाव कतरे कतरेचोत्तरा वा ४ ? गीतम । सर्वस्सोका अपर्याप्तवा
 दरवसकारिका १ । अपर्याप्तवादरतेजरकारिका असख्येगुणा २ । अपर्याप्तमत्सेकजारीरवादरवनस्पतिकारिका असत्यगुणा ३ । अपर्याप्तवा
 दरनिगोदा असत्यगुणा ४ । अपर्याप्तवादरपर्याप्तकारिका असत्यगुणा ५ । अपर्याप्तवादरपक्कायिका असत्यगुणा ६ । वादरवायुकारिका अप
 र्याप्तका असत्यगुणा अपर्याप्तसूक्ष्मतेजरकारिका असत्यगुणा अपर्याप्तसूक्ष्मपर्याप्तकारिका विशेषाधिका ७ । अपर्याप्तसूक्ष्मापकायिका अप
 र्याप्तका १० । अपर्याप्तसूक्ष्मवायुकारिका विशेषाधिका ११ । अपर्याप्तसूक्ष्मनिगोदा असत्यगुणा अपर्याप्तवादरवनस्पतिकारिका अनन्तगुणा वा
 दरा अपर्याप्ता विशेषाधिका अपर्याप्तसूक्ष्मवनस्पतिकारिका असत्यगुणा अपर्याप्ता सूक्ष्मा विशेषाधिका २ । एतेषा भदन्त । सूक्ष्मपर्याप्तकाना

स्सइकाइयाणं वादरनिगोदाणं वादरतसकाइयाणय कयरे कयरेहिंती अप्प्यावा११ गोयमा ! सहत्थोवा
 वादरतसकाइया १ । वादरतेउकाइया असखेज्जगुणा पत्तेयसरीरवादरवणस्सइकाइया असखेज्जगुणा ।
 वादरनिगोदा असखिज्जगुणा । वादरपुढविकाइया असखेज्जगुणा ५ । वादरअणउकाइया असखेज्जगुणा
 वादरवाउकाइया असखेज्जगुणा । सुज्जमतेउकाइया असखेज्जगुणा विसेसाहिया ।
 सुज्जमअणउकाइया विसेसाहिया । सुज्जमवाउकाइया विसेसाहिया । सुज्जमनिगोदा असखेज्जगुणा ।
 वादरवणस्सइकाइया अणतगुणा वादरा विसेसाहिया । सुज्जमवणस्सइकाइया असखेज्जगुणा १५ ।
 सुज्जमायिसेसाहिया १ । एएसिणं नते ! सुज्जमअपज्जयाण सुज्जमपुढविकाइयाणं अपउज्जतयाणं सुज्जम
 अणउकाइया अपउज्जतयाणं सुज्जमतेउकाइयाणं सुज्जमवाउकाया अपउज्जतयाण सुज्जमवण
 स्सइकाइयाण अपज्जतयाणं सुज्जमनिगोदा अपउज्जतयाण वादरा अपज्जतयाणं वादरपुढविकाइया अप

रपृथिवीकायिका असस्यगुणा १ । वादराक्कायिका असस्यगुणा ६ । वादरवायुकायिका असस्यगुणा ७ । सुत्तमतेज्जकायिका असस्यगुणा ८ ।
 सुत्तमपृथिवीकायिका विशेषाधिक ८ । सुत्ताप्कायिका विशेषाधिक १० । सुत्तवायुकायिका विशेषाधिक ११ । सुत्तमनिगोदा असस्यगुणा
 १२ । वादरवनस्पतिकायिका अनस्यगुणा १३ । वादरा विशेषाधिक १४ । सुत्तवनस्पतिकायिका असस्यगुणा १५ । सुत्ता विशेषाधिक १६ ।
 एतेवा नदन्त । सुत्तापर्याप्तकाना सुत्तपृथिवीकायिकाना अपर्याप्तकाना सुत्ताप्कायिकानामपर्याप्ताना सुत्तमवा
 युकायिकानामपर्याप्ताना सुत्तवनस्पतिकायिकानामपर्याप्ताना सुत्तमनिगोदानामपर्याप्ताना वादरापर्याप्तकानामपर्याप्ताना वादरपृथिवीकायिकानामपर्या
 त्तवादाप्कायिकानां वादरतेज्जकायिकानामपर्याप्तवादायुकायिकानामपर्याप्तवादावनस्पतिकायिकानामपर्याप्तवादर
 वादर

ज्जत्तयाण वाटरथाउकाइयअपज्जत्तयाणं वादरतेउकाइयाअपज्जत्तयाण वाटरवाउकाइयअपज्जत्तयाणं
 वादरवणस्सइकाइयअपज्जत्तयाण पत्तेयसरीरवादरवणस्सइकाइयअपज्जत्तयाण वादरनिगोदा अपज्ज
 त्तयाण वादरत्तसकाइया अपज्जत्तयाणय कयरे कयरेहिहो अप्पावा४ ? गोयमा । सव्वतोवा वादरत्त
 सकाइया अपज्जत्तया । वादरतेउकाइया अपज्जत्तया अपसखेज्जगुणा, पत्तेयसरीरवाटरवणस्सइकाइया
 अपज्जत्तया अपसखेज्जगुणा ३ । वादरनिगोदा अपज्जत्तया अपसखेज्जगुणा । वादरपुढविकाइया अपज्ज
 त्तया अपसखेज्जगुणा । वादरथाउकाइया अपज्जत्तया अपसखे० ६ । वादरवाउकाइया अपज्जत्तया अपस
 खेज्जगुणा, सुज्जमतेउकाइया अपज्जत्तया अपसखेज्जगुणा । सुज्जमपुढविकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया ९
 सुज्जमथाउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया १० । सुज्जमवाउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुज्जम
 निगोदा अपज्जत्तया अपसखेज्जगुणा, वाटरवणस्सइकाइया अपज्जत्तया अणत्तगुणा, वादरा अपज्जत्तया

वनस्पतिकारिकानामपर्याप्तवादननिगोदाना मपर्याप्तवादनसकारिकानाव्य कतरे कतरेज्योऽरुपा वा ४ ? गीतम । सर्वस्लोका अपर्याप्तवा
 दरत्तसकारिका १ । अपर्याप्तवादनत्तज्जकारिका असख्येयगुणा २ । अपर्याप्तमत्तेयकक्षरीरवादनरवणस्पतिकारिका असत्यगुणा ३ । अपर्याप्तवा
 दरनिगोदा असत्यगुणा ४ । अपर्याप्तवादनरपुण्यविकारिका असत्यगुणा ५ । अपर्याप्तवादनरपुण्यविकारिका असत्यगुणा ६ । वादरवायुकारिका अप
 र्याप्तका असत्यगुणा अपर्याप्तसूक्ष्मतेज्जकारिका असत्यगुणा अपर्याप्तसूक्ष्मपुण्यविकारिका विज्ञेयाधिक ९ । अपर्याप्तसूक्ष्मपुण्यविकारिका अप
 र्याप्तका १० । अपर्याप्तसूक्ष्मवायुकारिका विज्ञेयाधिक ११ । अपर्याप्तसूक्ष्मनिगोदा असत्यगुणा अपर्याप्तवादनरवणस्पतिकारिका अनन्तगुणा वा
 दरा अपर्याप्तका विज्ञेयाधिक १२ । अपर्याप्तसूक्ष्मवनस्पतिकारिका असत्यगुणा अपर्याप्तका सूक्ष्मा विज्ञेयाधिक २ । एतेषा भदन्त । सूक्ष्मपर्याप्तकाना

[illegible]

सूक्ष्मपृथिवीकायिकपर्याोकाना पर्याेतसूक्ष्माकायिकाना पर्याेतसूक्ष्मवर्णस्यैतिकायिकानां प
र्याेतसूक्ष्मनिगोदाना वादरपर्याोकाना पर्याेवादरपृथिवीकायिकाना पर्याेवादराकायिकाना पर्याेवादरज्वायिकाना पर्याेवादरवायुकायि
काना पर्याेवादरवनस्पतिकायिकाना पर्याेप्रत्येकशीरीरवादरवनस्पतिकायिकाना पर्याेवादरत्रसूकायिकाना च कसरं कत
रेत्योऽल्पा वा ४ ? गीतम् । सर्वेस्तोका पर्याेवादरतैजसकायिका पर्याेवादरत्रसूकायिका असंख्यगुणाः पर्याेप्रत्येकशीरीरवादरवनस्पतिकायिका
असंख्यगुणा पर्याेवादरनिगोदा असंख्यगुणा पर्याेवादरपृथिवीकायिका असंख्यगुणा पर्याेवादराकायिका असंख्यगुणा पर्याेवादरवायुकायि
का असंख्यगुणा पर्याेतसूक्ष्मवर्णस्यैतिकायिकाना विज्ञोपायिका पर्याेतसूक्ष्माकायिका विज्ञोपायिका पर्याेतसूक्ष्म

सह्योवा वादरवणस्सइकाइया पज्जत्तया, वादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तया असखिज्जगुणा, सुज्जम
वणस्सइकाइया अपज्जत्तया असखिज्जगुणा। सुज्जमवणस्सइकाइया पज्जत्तया सरिज्जगुणा। एएसिण नत्ते!
सुहुमनिगोदाण वादरनिगोदाणय पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहि तो अप्पावा १? गोयमा! सह्योवा वाद
रनिगोदा पज्जत्तया, वादरनिगोदा अपज्जत्तया असखे, सुज्जमनिगोदा अपज्जत्तया असखिज्जगुणा,
सुज्जमनिगोदा पज्जत्तया सखेज्जगुणा ४। एएसिण नत्ते! सुज्जमाणं सुज्जमपुढविकाइयाणं सुज्जमअण्डका
इयाण सुज्जमतेउकाइयाण सुज्जमवाउकाइयाण सुज्जमवणस्सइकाइयाण सुज्जमनिगोदाण वादराण वादर
पुढविकाइयाण वादरअण्डकाइयाण वादरतेउकाइयाण वादरवाउकाइयाण वादरवणस्सइकाइयाण पत्ते
असररीरवादरवणस्सइकाइयाण वादरनिगोदाण वादरतस्सकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहि तो अप्पा
वा १? गोयमा! सह्योवा वादरतेउकाइया पज्जत्तया १। वादरतस्सकाइया पज्जत्तया असखगुणा २

अपर्याप्तसूक्ष्मवन्स्पतिकारिका असख्यगुणा' पर्याप्तसूक्ष्मवन्स्पतिकारिका सङ्ख्यगुणा। एतेषा नदन्त। सूक्ष्मनिगोदाना वादरनिगोदाना पर्या
प्तपर्याप्ताना कतरे कतरेस्सोऽत्था वा ४? गोतम। सर्वस्वोका पर्याप्तका वादरनिगोदा अपर्याप्तवादरनिगोदा असख्यगुणा अपर्याप्तसूक्ष्मनिगो
दा असख्यगुणा पर्याप्तसूक्ष्मनिगोदा' सख्यगुणा। एतेषा नदन्त। सूक्ष्माणा सूक्ष्मपरिधीकारिकाना सूक्ष्माक्ताना सूक्ष्मतेजस्कारिकाना सूक्ष्म
वन्स्पतिकारिकाना सूक्ष्मवायुकारिकाना सूक्ष्मनिगोदाना वादराणा वादरपरिधीकारिकाना वादराक्तारिकाना वादरतेजस्कारिकाना वादरवा
युकारिकाना वादरवन्स्पतिकारिकाना प्रत्येकशरीरवादरवन्स्पतिकारिकाना वादरनिगोदाना वादरत्रस्कारिकाना पर्याप्तपर्याप्ताना कतरे कत
रेस्सोऽत्था वा ४? गोतम। सर्वस्वोका वादरतेजस्कारिका पर्याप्तका १। पर्याप्तवादरवस्कारिका असख्येयगुणा-२। अपर्याप्तवादरत्रस्कारिका

वादरतसकाइया अपजत्तया असंखिजगुणा ३ । पत्तेयसरीवादरवणस्सडकाइया पज्जत्तया असंखिजज
 गुणा ४ । वादननिगोदा पज्जत्तया असंखिजजगुणा ५ । बायरपुढाविकाइया पज्जत्तया असंखिजजगुणा ६ ।
 वादरच्चाउकाइया पज्जत्तया असंखिजजगुणा ७ । वादरवाउकाइया पज्जत्तया असंखिजजगुणा ८ । वादरतेउ
 काइया अपज्जत्तया असंखिजजगुणा ९ । पत्तेयसरीवादरवणस्सडकाइया अपज्जत्तया असंखिजज ० १० ।
 वादननिगोदा अपज्जत्तया असंखे ० ११ । वादरवाउकाइया अपज्जत्तया असंखे ० १२ । वादरच्चाउका
 इया अपज्जत्तया असंखे ० १३ । वादरवाउकाइया अपज्जत्तया असंखे ० १४ । सुज्जमतेउकाइया अपज्ज
 त्तया असंखेज्जगुणा १५ । सुज्जमपुढाविकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया १६ । सुज्जमच्चाउकाइया अप
 ज्जत्तया विसेसाहिया १७ । सुज्जमवाउकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया १८ । सुज्जमतेउकाइया पज्जत्तया
 ससि ० १९ । सुज्जमपुढाविकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया २० । सुहुमच्चाउकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया २१
 सुज्जमवाउकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया २२ । सुज्जमनिगोदा अपज्जत्तया असंखे ० २३ । सुहुमनिगो

असस्येयगुणा ३ । पर्याप्तप्रत्येकशरीरवादरवनस्पतिकायिका असस्यगुणा ४ । पर्याप्तवादरपृथिवीकायिका
 असस्येयगुणा ६ । पर्याप्तवादराप्कायिका असस्येयगुणा ७ । पर्याप्तवादरवायुकायिका असस्येयगुणा ८ । अपर्याप्तवादरतेजस्कायिका असस्येयगु
 णा ९ । अपर्याप्तप्रत्येकशरीरवादरवनस्पतिकायिका असस्यगुणा १० । अपर्याप्तवादरनिगोदा असस्यगुणा ११ । अपर्याप्तवादरपृथिवीकायिका
 असस्येयगुणा १२ । अपर्याप्तवादराप्कायिका असस्यगुणा १३ । अपर्याप्तवादरवायुकायिका असस्यगुणा १४ । अपर्याप्तसूक्ष्मतेजस्कायिका असस्य
 गुणा १५ । अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिका विज्ञेयायिका १६ । अपर्याप्तसूक्ष्माप्कायिका विज्ञेयायिका १७ । अपर्याप्तसूक्ष्मवायुकायिका विज्ञेयायि

दा पञ्चतया सखि० २४ । वादरवणस्सडकाडया पञ्चतया अणंतगुणा २५ । वादरपञ्चतया विसंसाहिया २६ । वादरवणस्सडकाडया अपञ्चतया असखिज्जगुणा २७ । वादरअपञ्चतया विसंसाहिया २८ । बादरा विसंसाहिया २९ । सुज्जमवणस्सडकाडया अपञ्चतया असखि० ३० । सुज्जमअपञ्चतया विसंसाहिया ३१ । सुज्जमवणस्सडकाडया पञ्चतया सखि० ३२ । सुज्जमपञ्चतया विसंसाहिया ३३ । सुज्जमा विसंसाहिया ३४ । दार ४ । एएसिण नत्ते । जीवाण सजोगीण मणजोगीण वयजोगीण कायजोगीण अज्जोगीणय कयरे २ । हितो अप्पावा वज्जयावा तुल्लावा विसंसाहियावा ? गोयमा ! सद्धत्योवा जीवा मणजोगी वयजोगी अ सखेज्जगुणा अज्जोगीअणतगुणा कायजोगी अणतगुणा सजोगी विसंसाहिया , दार ५ । एएसिण नत्ते ! जीवाण सवेदगाण इत्यिविदगाण पुरिसवेदगाण नपुसगवेदगाण अवेदगाणय कयरे २ हितो अप्पावा ४

का १८ । पर्याप्तसूक्ष्मतेजस्कायिका सख्यगुणा १८ । पर्याप्तसूक्ष्मपचिबीकायिका विशेषायिका विशेषायिका २१ । पर्याप्तसूक्ष्मवायुकायिका विज्ञायिका. २२ । अपर्याप्तसूक्ष्मनिगोदा असख्यगुणा २३ । पर्याप्तसूक्ष्मनिगोदा सख्यगुणा २४ । पर्याप्तवादरवनस्पति कायिका अनन्तगुणा २५ । पर्याप्ता वादरा विशेषायिका २६ । अपर्याप्तवादरवनस्पति कायिका असख्यगुणा २७ । अपर्याप्ता वादरा विशेषायिका २८ । वादरा विशेषायिका २९ । अपर्याप्तसूक्ष्मवनस्पति कायिका असख्यगुणा ३० । सूक्ष्मा अपर्याप्ता विशेषायिका ३१ । पर्याप्ता सूक्ष्मवन स्पति कायिका सख्यगुणा ३२ । पर्याप्ता सूक्ष्मा विशेषायिका ३३ । सूक्ष्मा विशेषायिका ३४ । एतेषा प्रदन्त । जीवाना सयोगिना मनोयोगिना वाग्यागिना काययोगिना अयोगिना च कतरे कतरे न्याडल्पा वा ४ ? गीतम । सर्वस्वोका जीवा मनोयोगिनो वाग्ययोगिनोऽसरयेय गुणा अयोगिनोऽनन्तगुणा काययोगिनो विशेषायिका । द्वारम् । ५ । एतेषा प्रदन्त । जीवाना सज्जकाना खीवेदकाना

१ गोयमा । सव्योवा जीवा पुरिसवेदगा इत्येवेदगा संखेजगुणा, एवेदगा अणतगुणा नपुंसगवेदगा अणतगुणा सवेयगा वित्तसाहिया, दार ६ । एएसिण जते । जीवाण सकसाईण कोहकसाईणं माणक साईण मायाकसाईण लोन्नकसाईण अकसाईणय कयरे कयरेहितो अप्पावा १ ? गोयमा । सव्योवा जीवा अकसाई माणकसाई अणतगुणा, कोहकसाई वित्तसाहिया, मायाकसाई वित्तसाहिया, लोन्नकसाई वित्तसाहिया, सकसाई वित्तसाहिया, दार ७ । एएसिण जते । जीवाण सलेसाण किण्हलेसाण नीलेसाण काड लेसाण तेंडलेसाण पम्हलेसाण सुक्कलेसाण अलंसाणय कयरे कयरेहितो अप्पावा १ ? गोयमा । सव्योवा जीवा सुक्कलेसा पम्हलेसा संखेजगुणा तेंडलेसा संखेज ० अलेसा अणतगुणा काडलेसा अणतगुणा नील लेसा वित्तसाहिया कण्हलेसा वित्तसाहिया, दार ८ । एएसिण जते । जीवाण सम्मदिठीण मिच्छादिठीण

पुरुषवेदकाना नपुंसकवेदकानामवेदकाना च कतरे कतरेज्योऽल्पा वा ४ ? गीतम् । सर्वस्तोका- जीवा पुरुषवेदका स्त्रीवेदका सख्यगुणा अवेदका अनन्तगुणा नपुंसकवेदका अनन्तगुणा- सवेदका विशेषाधिका दार ६ । एतेषा प्रदत्त । जीवाना सकपायिना कोषकपायिना मानकपायिना मा याकपायिना लोन्नकपायिना अकपायिना च कतरे कतरेज्योऽल्पा वा ४ ? गीतम् । सर्वस्तोका जीवा अकपायिनो मानकपायिनो नन्तगुणा को चकपायिनो विशेषाधिका मायाकपायिनो विद्यापाधिका लोन्नकपायिनो विशेषाधिका सकपायिनो विशेषाधिका दारम् ७ । एतेषा प्रदत्त । जीवाना सलेयाना कण्ठमयाना नीलेयाना कापोतलेयाना तेजोलेयाना पटलेयाना अलेयाना च कतरे कतरेज्योऽल्पा वा ४ ? गीतम् । सर्वस्तोका जीवा सुक्कलेयाना पटलेयाना सख्यगुणा स्तेजोलेयाना अलेयाना अनन्तगुणा कापोतलेयाना अनन्तगुणा नी लेयाना विशेषाधिका कण्ठमयाना विद्यापाधिका । दारम् ८ । एतेषा प्रदत्त । सम्यग्दृष्टिना सम्यग्दृष्टिना च कतरे कतरे

सम्प्राप्तिच्छेदिका च कथं कथं हेतुः प्रपञ्चः ? गोयमा । सख्योवा जीवा सम्प्राप्तिच्छेदिका, सम्प्राप्तिच्छेदिका मिच्छेदिका प्रणतगुणा, दारः । एवसिण नते । जीवाण आन्निविवाहियणाणीण सुयणाणीण उहिणाणीण मणपञ्चवनाणीण केवलनाणीणय कथं कथं हेतुः प्रपञ्चः ? गोयमा । सख्योवा मणपञ्चवनाणी उहिनाणी प्रस० आन्निविवाहियणाणी सुयनाणी दोवि तुला विसेसाहिया केवलनाणी प्रण० । एवसिण नते ! जीवाणं मणपञ्चवनाणीण सुयणाणीण विमगनाणीणय कथं कथं हेतुः प्रपञ्चः ? गोयमा । सख्योवा जीवा विमगनाणी मणपञ्चवनाणी दोवि तुला प्रणतगुणा । एवसिण नते । जीवाण आन्निविवाहियणाणीण सुयनाणीण उहिनाणीण मणपञ्चवनाणीण केवलनाणीण मतिप्रवनाणीण सुयप्रवनाणीण विमगनाणीणय कथं कथं हेतुः प्रपञ्चः ? गोयमा ! सख्योवा

स्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्वोका जीवा सम्यग्दृष्टिनोऽनन्तगुणा मिथ्यादृष्टिनोऽनन्तगुणा , द्वारम् । ८ । एतेषा प्रदत्त । जीवानामभिनिव्योधिकञ्चानिना श्रुतञ्चानिनाभवचिञ्चानिना मनःपर्यवशानिना केवलञ्चानिना वा ४ ? गौतम । सर्वस्वोका मन पर्यवशानिनो उवाचिञ्चानिनोऽसस्यगुणा आभिनिव्योधिकञ्चानिन श्रुतञ्चानिनश्च द्वावपि तुल्यौ विद्योपाधिकौ केवलञ्चानिनोऽनन्तगुणा । एतेषा प्रदत्त । मत्तञ्चानिना जीवाना श्रुताञ्चानिना विभङ्गञ्चानिना च कतरं कतरंभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्वोका जीवा विभङ्गञ्चानिनो मत्तञ्चानिन श्रुताञ्चानिनश्च द्वावपि तुल्यौ अनन्तगुणौ । एतेषा प्रदत्त । जीवाना आभिनिव्योधिकञ्चानिना श्रुतञ्चानिनाभवचिञ्चानिना मन पर्यवशानिना केवलञ्चानिना मत्तञ्चानिना विभङ्गञ्चानिना च कतरं कतरंभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्वोका जीवा मन पर्यवशानिनोऽनन्तचिञ्चानिनोऽसस्यगुणा आभिनिव्योधिकञ्चानिन श्रुतञ्चानिनश्च द्वौ अपि तुल्यौ विद्योपाधिकौ , विभङ्गञ्चानिनोऽसस्यगुणा केवलञ्चानिनोऽनन्त

जीवा मणपज्जवनाणी उहिनाणी असंखेज्जगुणा, अग्निबोहियनाणी सुयनाणीय दोवि तुल्ला विससाहि
या विन्नगनाणी असंखेज्ज० केवलनाणी अणतगुणा मइअत्ताणी सुयअत्ताणीय दोवि तुल्ला विससाहि
या, विन्नगनाणी असंखेज्ज०, केवलनाणी अणतगुणा मइअत्ताणी सुयअत्ताणीय दोवि तुल्ला अणतगु
णा, दार १० । एएसिण जते । जीवाण चक्कुदसणीणं अचक्कुदसणीणं उहिदंसणीणं केवलदंसणीणय क
यरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा । सव्वत्थोवा जीवा उहिदसणी चक्कुदसणी असंखेज्जगुणा, केवलदंस
णी अणतगुणा अचक्कुदसणी अणतगुणा, दार ११ । एएसिण जते ! जीवाणं सजयाणं असजयाणं संज
यासजयाण नोसजयाण नोअसजयाण नोसजया २ णय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा
जीवा सजयासजया असजया असंखेज्जगुणा, नोसजता नोअसजता नोसजतासजता अणतगुणा, असज
ता अणतगुणा, दार १२ । एएसिण जते ! जीवाण सागारीवउत्ताणं अणगारीवउत्ताणय कयरे २ हिंतो

गुणा मत्पच्चानिने शुताच्चानिनो धावाप तुल्लावनत्तगुणी । हारम् । १० । एतेषा भदन्त । जीवाना चबुदंशानिनामचबुदंशानिनामचदिशानिनां के
वलदशानिना च कतरे कतरेज्जोऽल्पा वा ४ ? गीतम् । सर्वस्तीका जीवा अधधिदशानिचबुदंशानिनोऽसस्यगुणाः केवलदशानिनोऽनत्तगुणा अचबु
दंशानिनोऽनत्तगुणा । हारम् । ११ । एतेषा भदन्त । जीवाना सयताना सयतसयताना नोसयताना नोअसयताना नोसयतासयत
ता च कतरे कतरेज्जोऽल्पा वा ४ ? गीतम् । सर्वस्तीका जीवा सयता सयतासयता असस्यगुणाः, नो सयता नो असयता नो संयतासयता अ
नत्तगुणा, असयता अनत्तगुणा । हारम् । १२ । एतेषा भदन्त । जीवाना साकारोपयोगयुक्तानामनाकारोपयोगयुक्ताना च कतरे कतरेज्जोऽ
ल्पा वा ४ ? गीतम् । सर्वस्तीका जीवा अनाकारोपयोगयुक्ताः साकारोपयोगयुक्ताः सख्येयगुणाः । हारम् । १३ । एतेषां भदन्त । जीवानामाहार

अप्योवाऽ ? गोयमा ! सव्योवा जीवा अणागरोवउत्ता सागरोवउत्ता संखिज्जगुणा, दारं १३ । एए
 सिण जते । जीवाण अाहारगाण अणाहारगाणय कयरे ? हितो अप्पावाऽ ? गोयमा ! सव्योवा जीवा
 अणाहारगा अाहारगा असखिज्जगुणा, दार १४ । एएसिणं जते ! जीवाणं जासगाणं अन्नासगाणय क
 यरे कयरेहिंतो अप्पावा बज्जयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्योवा जीवा जासगा अन्ना
 सगा अणतगुणा, दारं १५ । एएसिणं जते ! जीवाण परिताणं अपरित्ताणं नोपरित्ता नोअपरित्ताणय
 कयरे कयरेहिंतो अप्पावाऽ ? गोयमा ! सव्योवा जीवा परिता नोपरित्ता नोअपरित्ता अणतगुणा
 अपरित्ता अणतगुणा, दार १६ । एएसिणं जते ! जीवाण पज्जत्ताणं अपज्जत्ताणं नोपज्जत्ता नोअपज्जत्ता
 णय कयरे कयरेहिंतो अप्पावाऽ ? गोयमा ! सव्योवा जीवा नोपज्जत्तगानोअपज्जत्तगा अपज्जत्तगा
 अणतगुणा पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । एएसिणं जते ! सुज्जमाणं वादराण नोसुज्जमाण नोवादराणय कयरे ?

कानामनाहारकाना च कतरे कतरेज्योऽल्पा वा ४ ? गोतम । सर्वस्वोका जीवा अनाहारका आहारका असय्यगुणा । द्वारम् । १४ । एतेषा मद
 त्त । जीवाना प्रायकानामनापकाना च कतरे कतरेज्योऽल्पा वा तुल्या वा विषोपापिका वा ? गोतम । सर्वस्वोका जीवा प्रायका अमापका अ
 नत्तगुणा । द्वारम् । १५ । एतेषा प्रदत्त । जीवाना परीतानामपरीताना नो परीताना नो अपरीताना च कतरे कतरेज्योऽल्पा वा ? गोतम ।
 सर्वस्वोका जीवा परीता नोपरीता नो अपरीता अनत्तगुणा अपरीता अनत्तगुणा । द्वारम् । १६ । एतेषा मदत्त । जीवाना पर्याप्तानामपर्याप्ता
 ना नोपर्याप्ताना नोअपर्याप्ताना च कतरे कतरेज्योऽल्पा वा ४ ? गोतम । सर्वस्वोका जीवा नोपर्याप्तका नोअपर्याप्तका अनत्तगुणा
 पर्याप्तका सव्यगुणा । एतेषा प्रदत्त । सुत्ताणा वादराणा नोसुत्ताणा नोवादराणा च कतरे कतरेज्योऽल्पा वा ४ ? गोतम । सर्वस्वोका जीवा

हिंते अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा नोसुक्कमा नोवादरा . वादरा अणंतगुणा सुक्कमा अणसंखे
जगुणा , दार १८ । एएसिणं नते ! जीवाणं सन्तीण अणसन्तीणं नोसन्तीणं नोअसन्तीणय कयरे कयरे
हिंते अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सन्ती नोसन्ती नोअसन्ती अणतगुणा , अणसन्ती अणतगुणा ।
दार १९ । एएसिणं नते ! जीवाण नवसिद्धियाण अणवसिद्धियाणं नोअवसिद्धिनोअवसिद्धियाणय
कयरे कयरेहिंते अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा अणवसिद्धिया नोअवसिद्धिया , नोअवसिद्धिया
अणतगुणा नवसिद्धिया अणतगुणा , दार २० । एएसिणं नते ! धम्मत्थिकायअधम्मत्थिकायअणस
त्थिकाय जीवत्थिकाय पुगलत्थिकाय अणसमयाण दव्वठयाए कयरे कयरेहिंते अप्पावा४ ? गोयमा !
धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए अणसत्थिकाए एए तिन्निवि तुह्वा दव्वठयाए सव्वत्थोवा जीवत्थिकाए दव्व

नो सुक्कमा नो वादरा , वादरा अनन्तगुणा सुक्का असत्थगुणा । दारम् । १८ । एतेया नदत्त । जीवाना सन्धिनां असन्धिनां नो सन्धिना नो
असन्धिनाव कतरे कतरेअप्योउत्ता वा ? गोतम । सर्वस्वोका सन्धिना नोसन्धिना नो असन्धिना नोसन्धिना । दारम् । १८ ।
एतेया नदत्त । जीवाना अवसिद्धिनामवसिद्धिकाना नो अवसिद्धिकोअवसिद्धिकाना च कतरे कतरेअप्योउत्ता वा ४ ? गोतम । सर्वस्वोका
अवसिद्धिका नोअवसिद्धिका नो अवसिद्धिका अनन्तगुणा अवसिद्धिका अनन्तगुणा । दारम् २० । एतेया नदत्त । धर्मोस्तिक्कायाधर्मोस्तिक्काया
काशास्तिक्कायाजीवास्तिक्कायापुद्गलास्तिक्कायादासमयाना द्रव्यार्थतया कतरे कतरेअप्यो उत्ता वा ४ ? गोतम । धर्मोस्तिक्कायाधर्मोस्तिक्काया
स्तिक्काय एते नप स्तुत्ता द्रव्यार्थतया सर्वस्वोका , जीवास्तिक्कायो द्रव्यार्थतयानन्तगुण पुद्गलास्तिक्कायो द्रव्यार्थतया उद्वांसमयी द्रव्यार्थतया
उत्तगुण । एतेया नदत्त । धर्मोस्तिक्कायाधर्मोस्तिक्कायापुद्गलास्तिक्कायादासमयाना प्रदेयार्थतया कतरे कतरेअप्यो

ठयाए अणन्तगुणेषुगल्लिकाए दव्वठयाए अणन्तगुणे अण्ठासमए दव्वठयाए अणन्तगुणे । एएसिणं ज्ञते ! धम्मत्थिकायअधम्मत्थिकायजीवत्थिकायपोगल्लिकायअण्ठासमयाण पदेसठयाए कयरे कयरेहितो अप्पावा ४ ? गोयमा । धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए एएसिण दोवि तुत्ता पदेसठयाए सव्वत्थोवा जीवत्थिकाए पदेसठयाए अणन्तगुणे पोगल्लिकाए पदेसठयाए अणन्तगुणे अण्ठासमए पदेसठयाए अणन्तगुणा अगासत्थिकाए पदेसठयाए अणन्तगुणा । एएसिणं ज्ञते ! धम्मत्थिकायस्स दव्वठयाए पदेसठयाए कयरे कयरेहितो अप्पावा बज्जयावा तुत्तावा विसंसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा एगे धम्मत्थिकाए दव्वठयाए सोचेव पदेसठयाए अणन्तगुणा । एएसिणं ज्ञते ! अधम्मत्थिकायस्स दव्वठयपटे सठयाए कयरे कयरेहितो अप्पावा ४ ? गोयमा । सव्वत्थोव एगे अधम्मत्थिकाए दव्वठयाए सोचेव पदेसठयाए अणन्तगुणे । एतस्सण ज्ञते । अगासत्थिकायस्स दव्वठपदेसठयाए कयरे कयरेहितो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोव एगे अगासत्थिकाए दव्वठयाए सोचेव पदेसठयाए अणन्तगुणा , एतस्सण ज्ञते !

उत्तरा वा ? गीतम । धर्मास्तिकायाधर्मास्तिकायो हुवप्पेती तुल्यो प्रदेक्षार्थतया सर्वस्वोको जीवास्तिकाय' प्रदेक्षायतयानन्तगुण' पुद्गलास्ति काय प्रदेक्षार्थतयाऽनन्तगुणो ऽहसमय प्रदेक्षार्थतयानन्तगुण आकाशास्तिकाय प्रदेक्षार्थतयानन्तगुण । अस्य भदन्त । धर्मास्तिकायस्य च द्रव्यायतया प्रदेक्षायतया कतरे कतरन्योऽत्तरा वा ४ ? गीतम । सर्वस्वोको एको धर्मास्तिकाय प्रदेक्षार्थतया स यवानन्तगुण । अस्य भदन्त । अधर्मास्तिकायस्य द्रव्यायतया प्रदेक्षार्थतया कतर कतरन्योऽत्तरा वा ४ ? गीतम । सर्वस्वोको एकोऽधर्मास्तिकायो द्रव्यायतया स एव प्रदेक्षार्थतया ऽवस्थगुण । एतस्य भदन्त । आकाशास्तिकायस्य द्रव्यायप्रदेक्षार्थतया कतरे कतरन्योऽत्तरा वा ४ ? गीतम । सर्वस्वोको एक आकाशास्तिकायो

जीवत्यिकायस्स दव्वठपदेसठयाए कयरे कयरोहिती अण्पावा४ ? गोयमा ! सव्वथोवे जीवत्यिकाए दव्व
ठयाए सोचेव पदेसठयाए असखिज्जगुणा, एनस्सणं जते ! पुग्गलत्यिकायस्स दव्वठपदेसठयाए कयरे ?
हिती अण्पावा४ ? गोयमा ! सव्वथोवा पुग्गलत्यिकाए दव्वठयाए सोचेव पदेसठयाए असखिज्जगुणा अ
ससमए ण पुच्छिज्जड पदसान्नावा । एएसिण जते । धम्मत्यिकाय अथम्मत्यिकाय अगासत्यिकाय जीव
त्यिकाय पुग्गलत्यिकाय अरुसमयाण दव्वठयाए पदेसठयाए कयरे कयरोहिती अण्पावा४ ? गोयमा !
धम्मत्यिकाए अथम्मत्यिकाए अगासत्यिकाएय एएण तिवि तुहा, दव्वठयाए सव्वथोवा धम्मत्यिकाए
अथम्मत्यिकाएय एएण टीखिवितुहा पदेसठयाए असखेज्जगुणा, जीवत्यिकाए दव्वठयाए अणतगुणे सो
चेव पदेसठयाए असखिज्जगुणे पुग्गलत्यिकाए दव्वठयाए अणतगुणे सोचेव पदेसठयाए असखेज्जगुणे

द्रव्याथतया सव्व प्रदेशाथतयाऽनन्तगुण । एतस्य जदन्त । जीवास्तिकायस्य द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया कतरे कतरेऽप्योऽल्पा वा ४ ? सर्वस्वोको जीवा
स्तिकाय यको द्रव्यार्थतया सव्व प्रदेशार्थतया ऽसख्यगुण । यतस्य भदन्त । पुद्गलास्तिकायस्य द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया कतरे कतरेऽप्योऽल्पा वा ४ ?
गीतम् । सर्वस्वोक्त पुद्गलास्तिकायो द्रव्यार्थतया सव्व प्रदेशार्थतया ऽसख्यगुण । अद्वासमयो नपूज्यते प्रदेशाभावात् । यतेपा जदन्त । धर्मो
स्तिकायाधर्मोस्तिकायकाशास्तिकायजीवास्तिकायपुद्गलास्तिकायाद्वासमयाना द्रव्याथतया प्रदेशार्थतया कतरे ? अप्योऽल्पा वा ४ ? गीतम् । य
र्मोस्तिकायो ऽपर्मोस्तिकाय आकाशास्तिकाय यते ययस्तुत्या द्रव्यार्थतया सर्वस्वोका धर्मोस्तिकायोधर्मोस्तिकाय यती हावपि तुल्यो प्रदेशार्थ
तया ऽसख्यगुणो, जीवास्तिकायो द्रव्यार्थतयाऽसख्यगुण । पुद्गलास्तिकायो द्रव्यार्थतयाऽनन्तगुण स यव प्रदेशा
र्थतया ऽसख्यगुण । अद्वासमयो द्रव्यार्थप्रदेशार्थतयाऽनन्तगुण । आकाशास्तिकाय प्रदेशार्थतयाऽनन्तगुण । हारम् २१ । यतेपा जदन्त । जीवा

जीवत्यिकायस्स दव्वठपदेसठयाए कयरं कयरं हितो अप्पावा १ गोयमा ! सव्वत्थोवे जीवत्यिकाए दव्व
ठयाए सोचिव पदेसठयाए अस्सखिज्जगुणा, एनस्सणं नत्ते ! पुग्गलत्यिकायस्स दव्वठपदेसठयाए कयरं २
हितो अप्पावा १ गोयमा ! सव्वत्थोवा पुग्गलत्यिकाए दव्वठयाए सोचिव पदेसठयाए अस्सखिज्जगुणा अ
प्पासए ण पुच्छिज्जइ पदसान्नावा । एएसिण नत्ते ! धम्मत्यिकाय अद्धम्मत्यिकाय अगासत्यिकाय जीव
त्यिकाय पुग्गलत्यिकाय अद्धासमयाण दव्वठयाए पदेसठयाए कयरं कयरं हितो अप्पावा १ गोयमा !
धम्मत्यिकाए अद्धम्मत्यिकाए अगासत्यिकाए एएण तिव्वि तुल्ला, दव्वठयाए सव्वत्थोवा धम्मत्यिकाए
अद्धम्मत्यिकाए एएण टोखिवित्तुत्ता पदेसठयाए अस्सखिज्जगुणा, जीवत्यिकाए दव्वठयाए अणंतगुणं सो
चिव पदेसठयाए अस्सखिज्जगुणं पुग्गलत्यिकाए दव्वठयाए अणंतगुणं सोचिव पदेसठयाए अस्सखिज्जगुणं

द्रव्यायतया सम्यग् प्रदेशायतयाऽनन्तगुण । यतस्य नदत्त । जीवास्तिकायस्य द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया कतरं कतरं ज्योत्स्ना वा ४ ? सर्वस्तीको जीवा
स्तिकाय एको द्रव्यार्थतया सम्यग् प्रदेशार्थतयाऽसत्त्वगुण । यतस्य भदत्त । पुद्गलास्तिकायस्य द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया कतरं कतरं ज्योत्स्ना वा ४ ?
गीतम । सर्वस्तीक पुद्गलास्तिकायो द्रव्यार्थतया सम्यग् प्रदेशार्थतयाऽसत्त्वगुण । अद्वासमयो नपच्यते प्रदेशान्नावात् । यतेपा नदत्त । यमो
स्तिकायाधर्मास्तिकायकाशास्तिकायर्थावास्तिकायपुद्गलास्तिकायादासमयाना द्रव्यार्थतया प्रदेशार्थतया कतरं २ ज्योत्स्ना वा ४ ? गीतम । य
र्मास्तिकायोऽधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय यते त्रयस्तुत्या द्रव्यार्थतया सर्वस्तीका धर्मास्तिकायोऽयमोस्तिकाय यतो द्वावपि तुल्यो प्रदेशार्थ
तयाऽसत्त्वगुणो, जीवास्तिकायो द्रव्यार्थतयाऽसत्त्वगुण । पुद्गलास्तिकायो द्रव्यार्थतयाऽनन्तगुण स सम्यग् प्रदेश
ार्थतयाऽसत्त्वगुण । अद्वासमयो द्रव्यार्थप्रदेशार्थतयाऽनन्तगुण । आकाशास्तिकाय प्रदेशार्थतयाऽनन्तगुण । द्वावम् २१ । एतया नदत्त । जीवा

तिरिस्कजोणिया उहलोयतिरियलोए अहोलोगतिरियलोए त्रिसेसाहिद्या तिरियलोए असखेजगुणा, ते
 लुक्के असखेजगुणा उहलोए असखिज्ज० अहोलोए त्रिसेसाहिद्या, खेत्ताणवाएणं सवत्थोवा तिरिस्कजो
 णिणीउ उहलोए उहलोयतिरियलोए असखेज्ज०, तेलुक्के असखेज्ज० अहोलोयतिरिलोए सखिज्जगुणाने
 अहोलोए सखेज्जगुणाने तिरियलोए संखिज्जगुणाने खेत्ताणवाएणं सवत्थोवा मणस्सा तेलुक्के उहलोयतिरि
 यलोए असखेज्जगुणा अहोलोयतिरियलोए संखिज्जगुणा अहोलोए सखेज्जगुणा तिरियलोए सखेज्जगुणा।
 खेत्ताणवाएणं सवत्थोवाने मणस्सीउ तेलुक्के उहलोयतिरियलोए सखेज्जगुणाने अहोलोयतिरियलोए सखे
 ज्जगुणाने उहलोए सखेज्जगुणाने अहोलोए सखेज्ज० तिरियलोए सखेज्ज०, खेत्ताणवाएण सवत्थोवा
 देवा उहलोए उहलोयतिरियलोए असखेज्जगुणा तेलुक्के असखेज्जगुणा अहोलोए तिरियलोए असखेज्ज०

यगुणा अधोलोके सख्यगुणा स्तियंग्लोके सख्यगुणा । चेत्तानुपातेन सर्वस्तोका मनुष्या खोलोके ऊर्ध्वलोकस्तिर्यंग्लोके उषस्यगुणा अधोलोकास्तिर्य
 ग्लोके सख्येयगुणा अधोलोके सख्यगुणा स्तियंग्लोके सख्यगुणा । चेत्तानुपातेन सर्वस्तोका मानुष्य खोलोके ऊर्ध्वलोकस्तिर्यंग्लोके सख्यगुणा अधो
 लोकस्तिर्यंग्लोके सख्यगुणा ऊर्ध्वलोके सख्यगुणा अधोलोके सख्यगुणा स्तियंग्लोके सर्वस्तोका देवा ऊर्ध्वलोके उहलोकास्ति
 र्यंग्लोके उषस्यगुणा खोलोके उषस्यगुणा अधोलोकस्तिर्यंग्लोके उषस्यगुणा अधोलोके सख्यगुणा स्तियंग्लोके सख्यगुणा । चेत्तानुपातेन सर्वस्तो
 का देवा ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकस्तिर्यंग्लोके उषस्यगुणा खोलोके सख्यगुणा अधोलोकस्तिर्यंग्लोके अधोलोके सख्यगुणा स्तियंग्लोके सख्यगु
 णाः । चेत्तानुपातेन सर्वस्तोका प्रवनवासिदेवा ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकस्तिर्यंग्लोके उषस्यगुणा अधोलोके सख्यगुणा स्तियंग्लोके सख्यगुणा
 र्यंग्लोके उषस्यगुणा अधोलोके उषस्यगुणा । चेत्तानुपातेन सर्वस्तोका प्रवनवासिन्योदेव्य ऊर्ध्वलोके त्रियंग्लोके उषस्यगुणा खोलोके सख्यगुणा

वानु वाणमतरीनु देवीनु उहुलोए उहुलोयतिरियलोए असखिजगुणानु तेलुक्के संखिजगुणानु अहोलीए
तिरियलोए असखिज० अहोलीए सखिज० तिरियलोए सखिजगुणानु खेत्ताणुवाएण सव्वयोवा जोड
सिया देवा उहुलोए उहुलोयतिरियलोए असखिज० तेलुक्के संखेजगुणा अहोलीए तिरियलोए असखिज
गुणा अहोलीए सखेजगुणा तिरियलोए असखेजगुणा खेत्ताणुवाएण सव्वयोवा जोडसिणीनु देवीनु
उहुलोए उहुलोयतिरियलोए असखेजगुणानु तेलुक्के संखेजगुणानु अहोलीयतिरियलोए सखेज०, अहो
लोए सखि० तिरियलोए असखे० खेत्ताणुवाएण सव्वयोवा वेमाणिया देवा २००० उहुलोयतिरियलोए
तेलुक्के सखेज० अहोलीयतिरियलोए सखिज० अहोलीए सखेजगुणा तिरियलोए सखेज० उहुलोए
असखिज० खेत्ताणुवाएण सव्वयोवानु वेमाणीनु देवीनु उहुलोयतिरियलोए तेलुक्के संखेजगुणानु अ
होलीयतिरियलोए सखिज० अहोलीयसखेज० तिरियलोए सखेज० उहुलोए असखि० खेत्ताणुवाएण

पातेन सर्वस्वोका वैमानिक्यो देव्य ऊर्ध्वलोकतियंग्लोके त्रैलोक्ये सस्यगुणा अधोलोकतियंग्लोके सस्यगुणा स्तियंग्लोके सस्य
गुणा ऊर्ध्वलोके एसस्यगुणा । सेवानुपातेन सर्वस्वोका एकैन्द्रिया जीवा ऊर्ध्वलोकतियंग्लोके अधोलोकतियंग्लोके विज्ञेयाधिका स्तियंग्लोके एस
स्यगुणा ख्लोकोके एसस्यगुणा ऊर्ध्वलोके एसस्यगुणा अधोलोके विशेषाधिका । सेवानुपातेन सर्वस्वोका एकैन्द्रिया जीवा अपर्याप्तका ऊर्ध्वलोक
तियंग्लोके अधोलोकतियंग्लोके विशेषाधिका स्तियंग्लोके एसस्यगुणा ख्लोकोके एसस्यगुणा अधोलोके विशेषाधिका । सेवानु
पातेन सर्वस्वोका एकैन्द्रिया जीवा पर्याप्तका ऊर्ध्वलोकतियंग्लोके अधोलोकतियंग्लोके विज्ञेयाधिका स्तियंग्लोके एसस्यगुणा ख्लोकोके एसस्य
गुणा ऊर्ध्वलोके एसस्यगुणा अधोलोके विशेषाधिका । सेवानुपातेन सर्वस्वोका द्वैन्द्रिया ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतियंग्लोके एसस्यगुणा ख्लोकोके एस

सर्वस्योवा एगिदिया जीवा उहलोए तिरियलोए, अहोलीयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असं
खेजगुणा, तेलुक्के असं, उहलोए असखेजगुणा, अहोलीए विसेसाहिया । खेत्ताणवाएण सर्वस्योवा
एगिया जीवा अपजत्तगा, उहलोयतिरियलोए अहोलीए विसेसाहिया, तिरियलोए असं
खेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, उहलोए असखेजगुणा, अहोलीए विसेसाहिया । खेत्ताणवाएण
सर्वस्योवा एगिया जीवा पजत्तगा, उहलोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए
असखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, उहलोए असखेजगुणा, अहोलीए विसेसाहिया, तिरियलोए
सर्वस्योवा वेइदिया उहलोए उहलोयतिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्के असं, अहोलीए तिरियलोए
असखेजगुणा, अहोलीए सखेजगुणा, तिरियलोए सखेजगुणा । खेत्ताणवाएण सर्वस्योवा वेइदिया
पजत्तगा उहलोए । उहलोयतिरियलोए सखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, अहोलीयतिरियलोए अस
खेजगुणा, अहोलीए सखे०, तिरियलोए सखे० । खेत्ताणवाएण सर्वस्योवा वेइदिया पजत्तगा उहलोए उ
हलोयतिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, अहोलीयतिरियलोए असखेजगुणा, अहोली
ए सखेजगुणा, तिरियलोए सखेजगुणा । खेत्ताणवाएण सर्वस्योवा वेइदिया उहलोए उहलोयतिरियलो

स्यगुणा अघोलोकतिर्यंगलोके असख्यगुणा अघोलोके सख्यगुणा । तिरियंगलोके सख्यगुणा । खेत्ताणवाएण सर्वस्योवा वेइदिया पजत्तगा उहलोए उहलोयतिरियलो
अघोलोकतिर्यंगलोके सख्यगुणा अघोलोके सख्यगुणा । तिरियंगलोके सख्यगुणा । खेत्ताणवाएण सर्वस्योवा वेइदिया पजत्तगा उहलोए उहलोयतिरियलो
अघोलोकतिर्यंगलोके सख्यगुणा अघोलोके सख्यगुणा । तिरियंगलोके सख्यगुणा । खेत्ताणवाएण सर्वस्योवा वेइदिया पजत्तगा उहलोए उहलोयतिरियलो

ए असं० । तेलुक्के असखेजगुणा, अधोलोए संखेजगुणा, तिरियलोए संखेजगुणा । खेताणुवाएण स
 ख्योवा तेइदिया अपजत्तगा उहलोए उहलोयतिरियलोए असंखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, अ
 होलोयतिरियलोए असखेजगुणा, अधोलोए संखेजगुणा, तिरियलोए संखेजगुणा । खेताणुवाएण सख
 योवा तंडादिया पजत्तगा उहलोए उहलोयतिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, अधोलो
 ए, तिरियलोए असखेजगुणा, अधोलोए सखेजगुणा, तिरियलोए सखेजगुणा । खेताणुवाएण सख
 योवा चउरिदिया जीवा उहलोए उहलोयतिरियलोए असखेजगुणा । तेलुक्के असखेजगुणा, अधोलो
 यतिरियलोए असखेजगुणा, अधोलोए संखेजगुणा, तिरियलोए संखेजगुणा । खेताणुवाएण सख्योवा
 चउरिदिया जीवा अपजत्तगा उहलोए, उहलोयतिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, अ
 होलोयतिरियलोए असखेजगुणा, अधोलोए संखेजगुणा, तिरियलोए संखेजगुणा । खेताणुवाएण सख

गुणा स्तियंल्लोके सख्यगुणा । चैत्रानुवातेन सर्वस्तोमास्त्रीन्द्रिया ऊट्टल्लोके ऊट्टनोक्तियंल्लोके असख्यगुणा अधोलोके स
 ख्येयगुणा तियंक्ल्लोके सख्येयगुणा । चैत्रानुवातेन सर्वस्तोमास्त्रीन्द्रिया अपर्याप्तगा ऊट्टल्लोके ऊट्टनोक्तियंक्ल्लोके असख्येयगुणा, त्रैलोक्ये
 असख्येयगुणा अधोलोक्तियंक्ल्लोके असख्येयगुणा । तियंक्ल्लोके सख्येयगुणा । चैत्रानुवातेन सर्वस्तोमास्त्रीन्द्रिया पर्याप्तगा ऊट्टल्लोके ऊट्टनोक्तियंक्ल्लोके
 तियंक्ल्लोके असख्यगुणा खेलोक्के असख्यगुणा अधोलोके तियंक्ल्लोके असख्यगुणा । चैत्रानुवातेन सर्वस्तोमा स्तुरिन्द्रि
 या जीवा ऊट्टल्लोके ऊट्टनोक्तियंक्ल्लोके असख्यगुणा त्रैलोक्ये असख्यगुणा अधोलोक्तियंक्ल्लोके असख्येयगुणा । चैत्रानुवातेन सर्वस्तोमा स्तुरिन्द्रि
 लोके सख्येयगुणा । चैत्रानुवातेन सर्वस्तोमास्त्रीन्द्रिया जीवा अपर्याप्तगा ऊट्टल्लोके ऊट्टनोक्तियंक्ल्लोके असख्यगुणा खेलोक्के असख्यगुणा अ

त्योवा चउरिदिना जीवा पज्जत्तगा उहुलोए उहुलोयतिरियलोए असखेज्जगुणा, तेलुक्के असखेज्जगुणा
 अहोलीयतिरियलोए असखेज्जगुणा, अहोलीए सखेज्जगुणा, तिरियलोए सखे० । खत्ताणवाएण सव्वत्थो
 वा पचिदिया तेलुक्के उहुलायतिरियलोए असखेज्जगुणा, अहोलीए तिरियलोए सखेज्जगुणा, उहुलोए
 सखेज्जगुणा, अहोलीए सखेज्जगुणा, तिरियलोए असखेज्जगुणा । खत्ताणवाएण सव्वत्थोवा पचिदिया
 अपज्जत्तगा, तेलुक्के उहुलोयतिरियलोए असखेज्जगुणा, अहोलीयतिरियलोए सखेज्जगुणा, उहुलोए
 सखेज्जगुणा, अहोलीए सखेज्जगुणा तिरियलोए सखेज्जगुणा । खत्ताणवाएण सव्वत्थोवा पचिदिया पज्जत्ता
 उहुलोए उहुलायतिरियलोए अस०, तेलुक्के अस०, अहोलीयतिरियलोए सखेज्ज० अहोलीए सखेज्ज०
 तिरियलोए असखेज्ज० । खत्ताणवाएण सव्वत्थोवा पुढविमाइया उहुलोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए

पोलीकतिरियक्लोके असख्यगुणा अघोलीके सख्येयगुणा, स्तियक्लोके सख्येयगुणा । सेवानुवातेन सख्येयगुणा ज्ञावा पर्याप्तगा ज्ञाव
 लोके ज्ञावलोकातिरियक्लोके असख्यगुणा स्तियक्लोके असख्यगुणा, अघोलीकतिरियक्लोके सख्येयगुणा, अघोलीके सख्येयगुणा । तिरियक्लोके सख्येयगुणा ।
 सेवानुवातेन सर्वस्तीमा पञ्चेन्द्रिया खलोके उहुलोकातिरियक्लोके सख्येयगुणा, अघोलीकतिरियक्लोके सख्येयगुणा, उहुलोके सख्येयगुणा, ति
 रियक्लोके सख्येयगुणा । सेवानुवातेन सर्वस्तीमा पञ्चेन्द्रिया खलोके उहुलोकातिरियक्लोके सख्येयगुणा, अघोलीकतिरियक्लोके सख्येयगुणा, उहुलोके
 सख्येयगुणा । उहुलोके सख्येयगुणा अघोलीके सख्येयगुणा, तिरियक्लोके सख्येयगुणा । सेवानुवातेन सर्वस्तीमा पञ्चेन्द्रिया पर्याप्ता उहुलोके
 उहुलोकातिरियक्लोके सख्येयगुणा त्रैलोके असख्येयगुणा अघोलीकतिरियक्लोके सख्येयगुणा, अघोलीके सख्येयगुणा । तिरियक्लोके सख्येयगु
 णा । सेवानुवातेन सर्वस्तीमा पृथिवीकायका उहुलोकातिरियक्लोके अघोलीकतिरियक्लोके विद्येयायिका, तिरियक्लोके सख्येयगुणा, त्रैलोके

विसेसाहिया, तिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, उहुलोए असखेजगुणा, अहोलोए
 विसेसाहिया । खेत्ताणवाएण सव्वत्थोवा पुढविकाइया अपज्जात्तया उहुलोयतिरियलोए अहोलीयतिरिय
 लोए विसेसाहिया, तिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, उहुलोए असखेजगुणा, अहो
 लोए विसेसाहिया । खेत्ताणवाएण सव्वत्थोवा पुढविकाइया पज्जात्तया उहुलोए तिरियलोए तिरियलोयअ
 होलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, उहुलोए असखेजगुणा, अहो
 लोए विसेसाहिया । खेत्ताणवाएण सव्वत्थोवा अप्पुत्ताणवाएण उहुलोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए वि
 सेसाहिया तिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, उहुलोए असखेजगुणा, अहोलोए विसे
 साहिया । खेत्ताणवाएण सव्वत्थोवा अप्पुत्ताणवाएण उहुलोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए वि

असस्येयगुणा ऊर्द्धलोकं असस्येयगुणा अधोलोकं विज्ञेयाधिका । चेत्तानुवातेन सर्वस्वोमा पुण्यीकाधिका अपर्याप्ता ऊर्द्धलोकतियंक्लोके अ
 धोलोकतियंक्लोके विज्ञेयाधिका तियंक्लोके असस्येयगुणा त्रैलोक्य असस्येयगुणा ऊर्द्धलोकं असस्येयगुणा अधोलोकं विज्ञेयाधिका । चेत्तानु
 वातेन सर्वस्वोमा पुण्यीकाधिका पर्याप्ततया ऊर्द्धलोकं तियंक्लोके तियंक्लोकाधोलोक विज्ञेयाधिका तियंक्लोके असस्येयगुणा त्रैलोक्ये अ
 सस्येयगुणा ऊर्द्धलोकं असस्येयगुणा अधोलोकं विज्ञेयाधिका । चेत्तानुवातेन सर्वस्वोमा अप्पुत्ताणवाएण उहुलोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए वि
 सेसाहिया तिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, उहुलोए असखेजगुणा, अहोलोए विसे
 साहिया । खेत्ताणवाएण सव्वत्थोवा अप्पुत्ताणवाएण उहुलोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए वि

सेसाहिया तिरियलोएँ असखेजगुणा, तेलोकेँ असखेजगुणा, उहलोएँ असखेजगुणा, अहोलीएँ विसे
 साहिया । खे त्ताणवाएण सव्वत्थोवा आउकाइया पज्जत्तया उहलोयतिरियलोएँ अहोलीयतिरियलोएँ वि
 सेसाहिया, तिरियलोएँ असखेजगुणा, तेलुक्क असखेजगुणा, उहलोएँ असखेजगुणा, अहोलीएँ विसे
 साहिया । खे त्ताणवाएण सव्वत्थोवा तेउकाइया उहलोयतिरियलोएँ अहोलीयतिरियलोएँ विसेसाहिया,
 तिरियलोएँ असखेजगुणा, तेलुक्क असखेजगुणा, उहलोएँ असखेजगुणा, अहोलीएँ विसेसाहिया,
 वाएण सव्वत्थोवा तेउकाइया अपज्जत्तया उहलोयतिरियलोएँ अहोलीयतिरियलोएँ विसेसाहिया । खे त्ताण
 यलोएँ असखेजगुणा, तेलुक्क असखेजगुणा, उहलोएँ असखेजगुणा, अहोलीएँ विसेसाहिया, तिरि
 णुवाएण सव्वत्थोवा तेउकाइया पज्जत्तया उहलोयतिरियलोएँ अहोलीयतिरियलोएँ विसेसाहिया, तिरि

लोकेँ विरोधाचिका । तियक्लोकेँ असखेयगुणा खेलोकेँ असखेयगुणा ऊर्द्धलोकेँ विरोधाचिका । सेवानुवातेन सर्वस्वो
 मास्तेज कायिका ऊर्द्धलोकतियक्लोकेँ अघाकोकतियक्लोकेँ विरोधाचिका । तियक्लोकेँ असखेयगुणा त्रैलोकेँ असखेयगुणा ऊर्द्धलोकेँ अस
 खेयगुणा अघोलोकेँ विरोधाचिका । सेवानुवातेन सर्वस्वोमा स्तेज कायिका अपर्याप्तया ऊर्द्धलोकतियक्लोकेँ अघोलोकातियक्लोकेँ विरोधाचि
 का तियक्लोकेँ असखेयगुणा त्रैलोकेँ असखेयगुणा ऊर्द्धलोकेँ असखेयगुणा अघोलोकेँ विरोधाचिका । सेवानुवातेन सर्वस्वोमास्तेज कायि
 का पर्याप्तया ऊर्द्धलोकतियक्लोकेँ अघोलोकातियक्लोकेँ विरोधाचिका । तियक्लोकेँ असखेयगुणा त्रैलोकेँ असखेयगुणा ऊर्द्धलोकेँ असखेय
 गुणा अघोलोकेँ विरोधाचिका । सेवानुवातेन सर्वस्वोमा वायुकायिका ऊर्द्धलोकतियक्लोकेँ अघोलोकातियक्लोकेँ विरोधाचिका । तियक्लोकेँ
 असखेयगुणा खेलोकेँ असखेयगुणा ऊर्द्धलोकेँ असखेयगुणा अघोलोकेँ विरोधाचिका । सेवानुवातेन सर्वस्वोमा वायुकायिका अपर्याप्तया

विसेसाहिया, तिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, उहुलोए असखेजगुणा, अहोलोए
 विसेसाहिया । खेत्ताणवाएण सब्बलोवा पुढविकाइया अपजत्तया उहुलोयतिरियलोए अहोलोयतिरिय
 लोए विसेसाहिया, तिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, उहुलोए असखेजगुणा, अहो
 लोए विसेसाहिया । खेत्ताणवाएणं सब्बलोवा पुढविकाइया पज्जत्तया उहुलोए तिरियलोए तिरियलोयअ
 होलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, उहुलोए असखेजगुणा, अहो
 लोए विसेसाहिया । खेत्ताणवाएण सब्बलोवा अप्पुत्तया उहुलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए वि
 सेसाहिया तिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, उहुलोए असखेजगुणा, अहोलोए विसे
 साहिया । खेत्ताणवाएण सब्बलोवा अप्पुत्तया उहुलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए वि

असस्येयगुणा ऊर्द्धलोक असस्येयगुणा अधोलोक विशेषाधिकार । क्षेत्रानुवातेन सर्वस्वोमा पर्याप्तया पृथिवीकार्यका अपर्याप्ता ऊर्द्धलोकतियक्ल्लोके अ
 धोलोकतियक्ल्लोके विशेषाधिकार । तियक्ल्लोके असस्येयगुणा त्रैलोक्य असस्येयगुणा ऊर्द्धलोक असस्येयगुणा अधोलोक विशेषाधिकार । क्षेत्रानु
 वातेन सर्वस्वोमा पृथिवीकार्यका पर्याप्तया ऊर्द्धलोक तियक्ल्लोकाधोलोक तियक्ल्लोके असस्येयगुणा त्रैलोक्य अ
 सस्येयगुणा ऊर्द्धलोक असस्येयगुणा अधोलोक विशेषाधिकार । क्षेत्रानुवातेन सर्वस्वोमा अप्पुत्तया ऊर्द्धलोकतियक्ल्लो
 के विशेषाधिकार तियक्ल्लोके असस्येयगुणा त्रैलोक्य असस्येयगुणा अधोलोक विशेषाधिकार । क्षेत्रानुवातेन सर्वस्वोमा
 अप्पुत्तया अपर्याप्तया ऊर्द्धलोकतियक्ल्लोके अधोलोकतियक्ल्लोके विशेषाधिकार । त्रैलोक्य असस्येयगुणा ऊर्द्धलोक
 असस्येयगुणा अधोलोक विशेषाधिकार । क्षेत्रानुवातेन सर्वस्वोमा अप्पुत्तया ऊर्द्धलोकतियक्ल्लोके विशेषाधिकार । त्रैलोक्य असस्येयगुणा

सेसाहिया तिरियलोए असखेजगुणा, तेलोके असखेजगुणा, उहलोए असखे जगुणा, अहोलीए विसे
साहिया । खे त्ताणवाएण सवत्थोवा अउकाइया पज्जत्तया उहलोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए वि
सेसाहिया, तिरियलोए असखे जगुणा, तेलुक्क असखे जगुणा, उहलोए असखे जगुणा, अहोलीए विसे
साहिया । खे त्ताणवाएण सवत्थोवा तेउकाइया उहलोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए विसेसाहिया,
तिरियलोए असखे जगुणा, तेलुक्क असखे जगुणा, उहलोए असखे जगुणा, अहोलीए विसेसाहिया,
वाएण सवत्थोवा तेउकाइया अपज्जत्तया उहलोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए विसेसाहिया । खे त्ताण
यलोए असखे जगुणा, तेलुक्क असखे जगुणा, उहलोए असखे जगुणा, अहोलीए विसेसाहिया, तिरि
णवाएण सवत्थोवा तेउकाइया पज्जत्तया उहलोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरि

लोके विशेषाचिका तियक्लोके असखेयगुणा खेलोके असखेयगुणा ऊर्द्धलोके विशेषाचिका । हेवानुवातेन सर्वस्तो
मास्तेज कायिका ऊर्द्धलोकनियक्लोके अधाकोकनियक्लोके विशेषाचिका तियक्लोके असखेयगुणा त्रैलोक्ये असखेयगुणा ऊर्द्धलोके अस
खेयगुणा अधोलोके विज्ञावाचिका । हेवानुवातेन सर्वस्तोमा स्तेज कायिका अपर्याप्तया ऊर्द्धलोके अघोलोकनियक्लोके अधोलोकनियक्लोके विशेषाचि
का तियक्लोके असखेयगुणा त्रैलोक्ये असखेयगुणा ऊर्द्धलोके असखेयगुणा अधोलोके विशेषाचिका । हेवानुवातेन सर्वस्तोमास्तेज कायि
का अपर्याप्तया ऊर्द्धलोकनियक्लोके अधोलोकनियक्लोके विशेषाचिका तियक्लोके असखेयगुणा त्रैलोक्ये असखेयगुणा ऊर्द्धलोके असखेय
गुणा अधोलोके विज्ञावाचिका । हेवानुवातेन सर्वस्तोमा वायुकायिका ऊर्द्धलोकनियक्लोके अधोलोकनियक्लोके विशेषाचिका । तियक्लोके
असखेयगुणा खेलोके असखेयगुणा ऊर्द्धलोके विशेषाचिका । हेवानुवातेन सर्वस्तोमा वायुकायिका अपर्याप्तया

यलोए असखे जगुणा, तेलुक्के असखे जगुणा, उहलोए असखे जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ता
 णवाएण सवत्थोवा वाउकाइया उहलोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए विसेसाहिया । तिरियलोए अ
 सखे जगुणा, तेलुक्के असखिजगुणा उहलोए असखे जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणवाएण
 सवत्थोवा वाउकाइया अपजत्तया उहलोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए विसेसाहिया । तिरियलोए
 असखे जगुणा, तेलुक्के असखे जगुणा, उहलोए असखिजगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणवाएण
 सवत्थोवा वाउकाइया पजत्तया उहलोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए विसेसाहिया । तिरियलोए
 असखे जगुणा, तेलुक्के असखे जगुणा, उहलोए असखे जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणवाएण
 सवत्थोवा वणस्सइकाइया उहलोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए विसेसाहिया । तेलुक्के असखे जगुणा

ऊह्लोकिातियक्लोके अधोलोकिातियक्लोके विज्ञोपायिका, तियक्लोकि असखेयगुणा खेलोके असखेयगुणा अधोलोके
 विज्ञोपायिका । हेत्तानुवातेन सबत्तामा वायुकायिका पर्याप्तया ऊह्लोकिातियक्लोके अधोलोकिातियक्लोके विज्ञोपायिका तियक्लोके असखेय
 गुणा खेलोके असखेयगुणा ऊह्लोके असखेयगुणा अधोलोकिातियक्लोके विज्ञोपायिका । हेत्तानुवातेन सबत्तोमा वनस्पतिातियक्लो
 के अधोलोकिातियक्लोके विज्ञोपायिका खेलोके असखेयगुणा ऊह्लोके असखेयगुणा अधोलोकिातियक्लोके विज्ञोपायिका । हेत्तानुवातेन सबत्तोमा वनस्प
 तिकायिका अपर्याप्तया ऊह्लोकिातियक्लोके अधोलोकिातियक्लोके विज्ञोपायिका तियक्लोके असखेयगुणा खेलोके असखेयगुणा ऊह्लोके
 असखेयगुणा अधोलोकिातियक्लोके विज्ञोपायिका । हेत्तानुवातेन सबत्तोमा वनस्पतिातियक्लोके अधोलोकिातियक्लोके विज्ञो
 पायिका तियक्लोकिातियक्लोके असखेयगुणा ऊह्लोके असखेयगुणा अधोलोकिातियक्लोके विज्ञोपायिका । हेत्तानुवातेन सबत्तोमा वनस्प

उहलोए असखेजगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा वणस्सडकाडया अपज्जत्तया
उहलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विससाहिया, तिरियलोए असखिजगुणा, तेलुक्कं असखिजगु
णा, उहलोए असखेजगुणा, अहोलोए विससाहिया । खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा वणस्सडकाडया पज्ज
त्तया उहलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विससाहिया, तिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्कं असखे
जगुणा, उहलोए असखिजगुणा, अहोलोए विससाहिया । खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तस्सकाडया तेलुक्कं
उहलोयतिरियलोए असखिजगुणा, अहोलोयतिरियलोए सखेजगुणा, उहलोए सखेजगुणा, अहोलोए
सखेजगुणा, तिरियलोए असखिजगुणा । खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तस्सकाडया अपज्जत्तया तेलुक्कं उह
लोयतिरियलोए असखेजगुणा, उहलोए सखिजगुणा, अहोलोए सखिजगुणा, तिरियलोए असखेजगु
णा । खेत्ताणुवाएण सव्वत्थोवा तस्सकाडया पज्जत्तया तेलुक्कं उहलोयतिरियलोए असखिजगुणा, अहो
लोयतिरियलोए सखेजगुणा, उहलोए सखिजगुणा, अहोलोए सखिजगुणा, तिरियलोए असखेजगु

कारिणा त्रैलोक्य ऊद्वलोकितयक्लोकं असत्येयगुणा अथात्ताकातयक्लोकं सत्येयगुणा ऊद्वलाके सत्येयगुणा अथोलोक सङ्खेयगुणास्तियक्लो
के असङ्खेयगुणा । इत्थानुपातेन सव्वत्तामाद्यसकयिजा अपयाप्ततया त्रैलोक्ये ऊद्वलोकितयक्लोकं असङ्खेयगुणा ऊद्वलोके सङ्खेयगुणा अथोलोके
सङ्खेयगुणास्तियक्लोकं असङ्खेयगुणा । इत्थानुपातेन सर्वस्वोपाद्यसकयिजा पर्याप्तमा स्त्रैलोक्य ऊद्वलोकितयक्लोकं असत्येयगुणा अथोलोकांतय
क्लोकं सत्येयगुणा ऊद्वलोक सत्येयगुणा अथोलोकं सत्येयगुणा । इत्थानुपातेन सव्वत्तामाद्यसकयिजा अपयाप्ततया त्रैलोक्ये ऊद्वलोकितयक्लोकं असङ्खेयगुणा
कायन्यत्तानामपर्याप्तानां पर्याप्तानां सुप्तानां जायतां समवृत्तानामसमवृत्तानां सावावेदकानामसावावेदकानामिन्द्रियोपपुस्तानां नो इन्द्रियो

यलोए असखे जगुणा, तेलुक्के असखे जगुणा, उहुलोए असखे जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेतो
 णवाएणं सव्योवा वाउकाडया उहुलोयतिरियलोए विसेसाहिया । तिरियलोए अ
 सखे जगुणा, तेलुक्के असखे जगुणा उहुलोए असखे जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणवाएण
 सव्योवा वाउकाडया अपजत्तया उहुलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया । तिरियलोए
 असखे जगुणा, तेलुक्के असखे जगुणा, उहुलोए असखे जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणवाएण
 सव्योवा वाउकाडया पजत्तया उहुलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया । तिरियलोए
 असखे जगुणा, तेलुक्के असखे जगुणा, उहुलोए असखे जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणवाएण
 सव्योवा वणस्सइकाहया उहुलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया । तेलुक्के असखे जगुणा

ऊर्ध्वलोकतियक्कलोकं अधोलोकातियक्कलोकं विशेषाधिकं तियक्कलोकं असख्येयगुणा ऊर्ध्वलोकं असख्येयगुणा अधोलोकं
 विशेषाधिका । क्षेत्रानुवातेन सर्वतोभा वायकायिका पर्याप्तया ऊर्ध्वलोकतियक्कलोकं अधोलोकतियक्कलोकं विशेषाधिका असख्ये
 यगुणा तेलोक्के असख्येयगुणा ऊर्ध्वलोकं असख्येयगुणा अधोलोकं विशेषाधिका । क्षेत्रानुवातेन सर्वतोभा वनस्प
 के अधोलोकतियक्कलोकं विशेषाधिका तेलोक्के असख्येयगुणा ऊर्ध्वलोकं असख्येयगुणा अधोलोकं विशेषाधिका असख्येयगुणा ऊर्ध्वलोकं
 तिकायिका पर्याप्तया ऊर्ध्वलोकतियक्कलोकं अधोलोकातियक्कलोकं विशेषाधिका तियक्कलोकं असख्येयगुणा अधोलोकं
 असख्येयगुणा अधोलोकं विशेषाधिका । क्षेत्रानुवातेन सर्वतोभा वनस्पतिकायिका पर्याप्तया ऊर्ध्वलोकतियक्कलोकं अधोलोकातियक्कलोकं विशेष
 पाधिका तियक्कलोकं असख्येयगुणा तेलोक्के असख्येयगुणा ऊर्ध्वलोकं विशेषाधिका । क्षेत्रानुवातेन सर्वतोभा वनस्प

उहलोए असखेजगुणा, अहोलीए विससाहिया । खेत्ताणवाएण सव्वत्थोवा वणस्सडकाडया अपज्जत्तया
उहलोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए विमसाहिया, तिरियलोए असखिजगुणा, तेलुक्कं असखिजगु
णा, उहलोए असखेजगुणा, अहोलाए विमसाहिया । खेत्ताणवाएण सव्वत्थोवा वणस्सडकाडया पज्ज
त्तया उहलोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए विमसाहिया, तिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्कं असखे
जगुणा, उहलोए असखिजगुणा, अहोलीए विमसाहिया । खेत्ताणवाएण सव्वत्थोवा तस्सकाडया तेलुक्कं
उहलोयतिरियलोए असखिजगुणा, अहोलायतिरियलोए सखेजगुणा, उहलोए सखेजगुणा, अहोलीए
सखेजगुणा, तिरियलोए असखिजगुणा । खेत्ताणवाएण सव्वत्थोवा तस्सकाडया अपज्जत्तया तेलुक्कं उह
लोयतिरियलोए असखेजगुणा, उहलोए सखिजगुणा, अहोलाए सखिजगुणा, तिरियलोए असखेजगु
णा । खेत्ताणवाएण सव्वत्थोवा तस्सकाडया पज्जत्तया तेलुक्कं उहलोयतिरियलोए असखिजगुणा, अहो
लोयतिरियलोए सखेजगुणा, उहलोए सखिजगुणा, अहोलाए सखिजगुणा, तिरियलोए असखेजगु

कार्यका त्रैलोक्य ऊर्ध्वलोकतियक्लोक असख्येयगुणा अधालाकतियक्लोक सख्येयगुणा ऊर्ध्वलोक सख्येयगुणा स्तियक्लो
के असख्येयगुणा । ज्ञानानुपातेन सर्वस्तामाखसकायिका अपयपसतया त्रैलोक्य ऊर्ध्वलोकतियक्लोक असख्येयगुणा ऊर्ध्वलोक सख्येयगुणा अधोलोक
सख्येयगुणास्तियक्लोक असख्येयगुणा । ज्ञानानुपातेन सर्वस्तामाखसकायिका पर्याप्तका खलोक ऊर्ध्वलोकतियक्लोक असख्येयगुणा अधोलोकतिय
गलाक सख्येयगुणा ऊर्ध्वलोक सख्येयगुणा अधालाक स्तियगुणा सख्येयगुणा । द्वारम् २४ । एतेषा जदत्त । जीवानामायुज्जमवत्य
कायस्थानामपर्याप्ताना पर्याप्ताना सुप्ताना जायता समवहतानामसमवहनाना सावावेदकानामसावावेदकानामिन्द्रियापयुक्ताना नो इन्द्रियो

लोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असखेज्जगुणा उहुलोए असखेज्जगुणा अहोलोए विसेसाहिया
 दिसाणवाएण सव्वत्योवा पोगला उहुदिसाए अहोदिसाए विसेसाहिया उत्तरपुरिच्छिमेण दाहिणपच्चिच्छि
 मेणय दोवि तुल्ला असखेज्जगुणा। दाहिणपुरिच्छिमेण उत्तरपच्चिच्छिमेणय दोवि तुल्ला विसेसाहिया पुरिच्छि
 मेण असखेज्जगुणा पच्चिच्छिमेण विसेसाहिया दाहिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया खेत्ताणवाएण
 सव्वत्योवा दव्वाड तेलुक्कं उहुलोयतिरियलोए अणतगुणाइ अहोलीयतिरियलोए विसेसाहियाइ उहुलोए
 असखेज्ज० अहोलीए अणतगुणाइ तिरियलोए सखिज्जगुणाइ दिसाणवाएणं सव्वत्योवा दव्वाइ अहोदि
 साए उहुदिसाए अणतगुणाइ उत्तरपुरिच्छिमेण दाहिणपच्चिच्छिमेण दोवि तुल्लाइ असखेज्जगुणाइ दाहिण
 पुरिच्छिमेण उत्तरपच्चिच्छिमेणय दोवि तुल्लाइ विसेसाहियाइ पुरिच्छिमेण असखेज्जगुणाइ पच्चिच्छिमेण वि
 सेसाहियाइ दाहिणेण विसेसाहियाइ उत्तरेण विसेसाहियाइ। एएसिणं ज्ञते। परमाणुपोगलाण सखेज्जप

विशेषाहिता उत्तरेण विशेषाहिता। देशानुवातेन सर्वस्त्वोमानि द्रव्याणि त्रैलोक्ये ऊर्ध्वलोकतियक्लोकं अनन्तगुणानि अधोलोकतियक्लोकं विशे
 पाहितानि ऊर्ध्वलोकं असह्येयगुणानि अधोलोकं अनन्तगुणानि तियक्लोकं असह्येयगुणानि दिशानुवातेन सर्वस्त्वोमानि द्रव्यानि अधोदिशया
 मूर्ध्वदिशायामनन्तगुणानि उत्तरपूर्वस्या दक्षिण पश्चिमाया द्वयोरपि तुल्यान्यसह्येयगुणानि दक्षिण पूर्वस्यामृत्तरेपश्चिमाया द्वयोरपि तुल्यानि वि
 शेषाहितानि। एतया प्रकृतं। परमाणु पुद्गलानां सस्येयमादेशिकानामसह्येयमादेशिकानां च रक्त्यानां द्रव्यायतया प्रदेशा
 यतया द्रव्यायप्रदेशायतया कतरे०?। गौतमः। सर्वस्त्वोमा अनन्तप्रदेशिकाः रक्त्या द्रव्यायतया परमाणु पुद्गला द्रव्यायतया अनन्तगुणा सस्ये
 यप्रदेशिका रक्त्या द्रव्यायतया सस्येयगुणा असस्यप्रदेशिका रक्त्या द्रव्यायतया असस्येयगुणा प्रदेशायतया सर्वस्त्वोमा अनन्तप्रदेशिकाः रक्ता

देसियाण अस्खिज्जपदेसियाणं अणंतपदेदियाणय खधाण दव्वठयाए पएसठयाए दव्वठ पदेसठयाए
 कयरे २ हितो अप्पावा ४ गो ० । सव्वल्योवा अणंतपदेसिया खधा दव्वठयाए परमाणुपोगला दव्वठयाए अ-
 णतगुणा सखेज्जपदेसिया खधा दव्वठयाए सखेज्जगुणा अस्खेज्जपदेसिया खधा दव्वठयाए अस्खेज्जगुणा
 पदेसठयाए सव्वल्योवा अणंतपदेसिया खधा पदेसठयाए परमाणुपोगला अणतगुणा सखेज्जपदेसिया
 खधा पदेसठयाए सखेज्जगुणा अस्खेज्जपदेसिया खधा पदेसठयाए अस्खेज्जगुणा दव्वठपदेसठयाए सव्व-
 ल्योवा अणतपदेसिया खधा दव्वठयाए अणतगुणा परमाणुपोगला दव्वठपदेसठयाए
 अणतगुणा सखिज्जपदेसिया खधा दव्वठयाए सखिज्जगुणा तेचेव पदेसठयाए सखिज्जगुणा अस्खिज्ज-
 पदेसिया खधा दव्वठयाए अस्खिज्जगुणा तेचेव पदेसठयाए अस्खेज्जगुणा । एएसिण जंत ! एगपदेसो
 गाढाण सखेज्जपदेसोगाढाण अस्खिज्जपदेसोगाढाणय पांगलाण दव्वठयाए पदेसठयाए दव्वठपदेसठयाए

न्या प्रदेशार्थतया परमाणुपुद्गला अनन्तगुणा असंख्येयप्रदेशिका रक्त्या प्रदेशार्थतया अस-
 न्येयगुणा द्रव्यार्थप्रदेशायतया सर्वस्वोभा अनन्तप्रदेशिका रक्त्या द्रव्यार्थतया ते चैव प्रदेशार्थतया अनन्तगुणा परमाणुपुद्गला द्रव्यार्थप्रदेशार्थ-
 तया अनन्तगुणा संख्येयप्रदेशिका रक्त्या द्रव्यार्थतया संख्येयगुणा तत्रैव च प्रदेशायतया असंख्येयगुणा असंख्येयप्रदेशिका रक्त्या द्रव्यार्थतया अ-
 संख्येयगुणा तत्रैव प्रदेशायतया असंख्येयगुणा । एतथा जदन्त । एकप्रदेशावगाढाना संख्येयप्रदेशावगाढानामसंख्येय प्रदेशावगाढाना च पुद्ग-
 लाना द्रव्यायतया प्रदेशायतया द्रव्यप्रदेशार्थतया च कतरे ० ? गीतम । सर्वस्वोभा एकप्रदेशावगाढा पुद्गला द्रव्यार्थतया असंख्येयप्रदेशावगा-
 ढा पुद्गला द्रव्यार्थतया संख्येयगुणा असंख्येयगुणा प्रदेशार्थतया सर्वस्वोभा एकप्रदेशावगाढा पुद्गला

अस्खिज्जगुणा पदेसठयाए सव्वत्थोवा एगसमयठिईया पोगला पदेसठयाए सखेज्जसमयठिईया पोगला
 पपसठयाए सखिज्जगुणा अस्खिज्जसमयठिईया पोगला पदेसठयाए अस्खिज्जगुणा दव्वठयपदेसठयाए
 सव्वत्थोवा एगसमयठिईया पोगला दव्वठपएसठयाए सखेज्जसमयठिईया पोगला दव्वठयाए सखेज्जगुणा
 तेचंच पदेसठयाए सखेज्जगुणा अस्खिज्जसमयठिईया पोगला दव्वठयाए अस्खिज्जगुणा तेचंच पदेस
 ठयाए अस्खिज्जगुणा । एएसिण नत्ते ! एगगुणकालगाण सखिज्जगुणकालगाण अस्खेज्जगुणकालगाण
 अणत्तगुणकालगाणन पोगलाणं दव्वठयाए पदेसठयाए दव्वठपदेसठयाए कयरे कयरेहिती अप्पावा ५
 ? गोयमा ! जहा परमाणुपोगला तथा न्नाणियव्वा, एव सखेज्जगुणकालयाणवि, एव सेसाणवि वस्सरस
 गथा न्नाणियव्वा, फासाण कस्सकमउयगरुयलज्जाणं जहा एगपदेसोगाढाण न्नाणिय तथा न्नाणियव्व अत्र
 सेसा फासा जहा वखा न्नाणिया तहां न्नाणियव्वा दार २६ ॥

का पुद्गला प्रदेशार्थतया सस्येयगुणा असस्येयगुणा पुद्गला प्रदेशार्थतया अव्यार्थप्रदेशार्थतया सर्वस्वोभा एकसमयस्थि
 तिका पुद्गला द्व्यार्थप्रदेशार्थतया सस्येयसमयस्थितिका पुद्गला द्व्यार्थतया सस्येयगुणा तस्य प्रदेशार्थतया संस्येयगुणा असस्येयसमयस्थि
 तिका पुद्गला द्व्यार्थतया असस्येयगुणासाएव प्रदेशार्थतया असस्येयगुणा । एतेषां प्रदन्त । एकगुणकालकाना सस्येयगुणकालकानामसहये
 यगुणकालकानामनलगुणकालकाना च पुद्गलाना द्व्यार्थतया प्रदेशार्थतया कतरे ० ? । गीतम् । यथा परमाणु पुद्गला
 स्तथा न्नाणितव्या एव सस्येयगुणकालका अपि । एव त्रीया अपि वस्सरसगत्वा भाणितव्या । एव स्पशाना ककशा स्रुटुकगुरुकलघुकाया यथैकप्रदेशा
 वगाढाना भाणित तथा भाणितव्या अर्वाशिष्टा स्पशाना । यथा वखां भाणितता स्तथा भाणितव्या द्वारम् । २६ ॥

अहं जने ! सर्वजीवप्यज्ञ महादण्डय वत्सइस्वामिं सर्व्वत्योवा गङ्गावक्त्रातियमणस्सा मणस्सीत्तं संखेज्जगुणान्ने
 वादरत्तेउकाडयापज्जत्तया अस्सखिज्जगुणा अणुत्तरोववाडया देवा अस्सखेज्जगुणा उवरिमगेवेज्जगा देवा
 संखेज्जगुणा मज्जिमगेवेज्जगा देवा संखेज्जगुणा हेठिमगेवेज्जगा देवा संखेज्जगुणा अणुएकप्ये देवा संखे
 ज्जगुणा अरणे कप्ये देवा संखेज्जगुणा पाणए कप्ये देवा संखेज्जगुणा आणएकप्ये देवा संखिज्जगुणा अहे
 सत्तमाए पुढवीए णेरइया अस्सखेज्जगुणा ठ्ठीए तमाए पुढवीए णेरइया अस्सं सहस्सारे कप्ये देवा अ
 सखिज्जगुणा महासुक्के कप्ये देवा अस्सखिज्जगुणा पचमाए धूमप्पजाए पुढवीए णेरइया अस्सं लतए कप्ये
 देवा अस्सखेज्जगुणा, चउत्थीए पकप्पजाए पुढवीए णेरइया अस्सखेज्जगुणा वन्नलीए कप्ये देवा अस्सखेज्ज
 गुणा तच्चाए वालुयप्पजाए पुढवीए णेरइया अस्सखेज्जगुणा माहिदे देवा अस्सखिज्जगुणा सणकुमारि कप्ये

अथ प्रवक्ष्यामि । सर्व्वजीवास्तु बहुस्य महादण्डय वत्सइस्वामिं सर्व्वलोभा गर्ज्जन्त्युत्क्रान्तिकमन्त्रया मानुष्य सख्यातगुणा द्यादरत्तेज कारिका पर्याप्ततया
 असह्येयगुणा अन्तुत्तरोपपातिनो देवा असह्येयगुणा उपरितनग्रीवयका देवा सह्येयगुणा मध्यमग्रीवयका देवा सह्येयगुणा अधस्तनग्रीवयका देवा
 सह्येयगुणा अणुत्तरोपपातिनो देवा सह्येयगुणा पानये कल्पे देवा सह्येयगुणा आनते कल्पे देवा, सह्येयगुणा
 अथ सप्तमाया पृथिव्या नैरयिका असह्येयगुणा यष्टमाया पृथिव्या नैरयिका असह्येयगुणा, महाशुक्ते कल्पे देवा अ
 सह्येयगुणा पञ्चमाया धूमप्रजाया पृथिव्या नैरयिका असह्येयगुणा लोक्तके कल्पे देवा असह्येयगुणा धतुथ्या पट्टप्रमाया पृथिव्या नैरयिका
 असह्येयगुणा ब्रह्मलोके कल्पे देवा असह्येयगुणा तृतीयस्या वालुकप्रजाया पृथिव्या नैरयिका असह्येयगुणा माहेन्द्रे देवा असह्येयगुणा, सन
 रकुमारि कल्पे देवा असह्येयगुणा द्वितीयस्या शृङ्गेरप्रमाया पृथिव्या नैरयिका असह्येयगुणा असह्येयगुणा ईशाने कल्पे देवा

देवा असखेज्जगुणा दोच्चाए सक्षरपञ्चाए पुढवीए णेरइया अस० संमुच्छिममणस्सा असखेज्ज० ईसाणे
 कप्पं देवा अस० ईसाणं कप्पे देवीनु सखे०, सोहम्मं कप्पे देवा सखेज्ज० सोहम्मं कप्पे देवीनु सखेज्ज
 गुणातु नवणवासीदेवा असखेज्जगुणा नवणवासिणीनु देवीनु सखिज्जगुणानु । इणीसे रयणप्पञ्चाए पुढ
 वीए णेरइया अमसखिज्जगुणा खहचरपचिदियतिरिस्कजोणिया पुरिसा असखेज्जगुणा खहचरपचिदियति
 रिस्कजोणिणीनु सखिज्जगुणानु थलयरपचिदियतिरिस्कजोणिया पुरिसा असखेज्जगुणा थलयरपचिदियति
 रिस्कजोणिणीनु सखिज्जगुणानु जलयरपचिदियतिरिस्कजोणिया पुरिसा सखेज्जगुणा जलयरपचिदियतिरि
 स्कजोणिणीनु सखिज्जगुणानु वाणमतरा देवा सखेज्जगुणा वाणमतरीनु देवीनु सखेज्ज० जोडसिया देवा
 सखेज्जगुणा जोडसिणीनु देवीनु सखिज्जगुणानु खहयरपचिदियतिरिस्कजोणिया नपुसया सखिज्ज० थल
 यरपचिदियतिरिस्कजोणिया नपुसया सखेज्ज० जलयरपचिदियतिरिस्कजोणिया नपुसया सखेज्ज० चउ

अस० इच्छाने कल्पं दद्य सख्येयगुणा सौधर्मे कल्पं देवा . सख्येयगुणा सौधर्मे कल्पं देव्य सख्येयगुणा नवनवासि देवा असख्येयगुणा नवनवा
 सि देव्य सख्येयगुणा । यतस्सा रत्नप्रभाया पृथिव्या नैरगिका असख्येयगुणा सचरपञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिका . पुरुषा असख्येयगुणा सचरपञ्च
 इन्द्रियतिर्यग्योनिका (इन्द्रिय) सख्ये० स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका पुरुषा असख्येयगुणा स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका . (इन्द्रिय) सख्ये०
 जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका पुरुषा सख्येयगुणा जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका (इन्द्रिय) सख्ये० वाणमन्तरादेवासख्येयगुणा वाणमन्तर्या
 दव्य सख्येयगुणा ज्योतिषका देवा सख्ये० ज्योतिषिका देव्य सख्ये० सचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका नपुसका सख्ये० स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्य
 ग्योनिका नपुसका सचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका नपुसका सख्ये० चतुरिन्द्रिया पर्याप्ततया सख्येयगुणा पञ्चेन्द्रिया पर्याप्ततया

रिदिया पञ्जत्तया सखेज्ज० पदिया पञ्जत्ताविसेसाहिद्या वेडदिया पञ्जत्ता विसेसा । पचिदिया अप्पज्जत्तया असखिज्जगुणा चउरिदिया अप्पज्जत्तया विसेसाहिद्या वेडदिया अप्पज्जत्तया विसेसाहिद्या पत्तेयसरीरवादवणस्सइकाइया पञ्जत्तगा असखेज्जगुणा वादरनिगोदा पञ्जत्तगा असखेज्जगुणा वादरपुढसिकाइया अप्पज्जत्तगा असखेज्जगुणा वादरअउकाइया पञ्जत्तया असखिज्जगुणा वादरवाउकाइया पञ्जत्तगा असखिज्जगुणा वादरतउकाइया अप्पज्जत्तया असखेज्जगुणा वादरवणस्सइकाइया अप्पज्जत्तगा असखिज्जगुणा वादरनिगोदा असखेज्जगुणा वादरपुढादि काइया अप्पज्जत्तगा असखेज्जगुणा वादरअउकाइया अप्पज्जत्तगा असखिज्जगुणा वादरताउकाइया अप्पज्जत्तया असखेज्जगुणा सुज्जमंतउकाइया अप्पज्जत्तगा असखेज्जगुणा सुज्जमपुढावकाइया अप्पज्जत्तगा विसे

विशेषोपाहिता द्वीन्द्रिया पर्याप्ता विशेषा० । पञ्चेन्द्रिया अपर्याप्तगा असह्येयगुणा चतुरिन्द्रिया अपर्याप्तसया विशेषाहिता । छीन्द्रिया अप
याप्तपया विशेषाहिता हीन्द्रिया अपर्याप्तसया विशेषाहिता मत्येकशीरीरवादखनस्पतिकारिका पर्याप्तगा असह्येयगुणा वादरनिगीदा पर्याप्त
गा असह्येयगुणा वादरपृथिवीकारिका अपर्याप्तगा असह्ये० वादराष्कायिका पर्याप्तगा अस० वादखायुकारिका पर्याप्तगा अस० वादतेज
कारिका अपर्याप्तगा अस० मत्येकशीरीरवादखनस्पतिकारिका अपर्याप्तगा अस० वादरनिगीदा अपर्याप्ता सह्ये० वादरपृथिवीकारिका अपर्या
प्तगा अस० वादराष्कायिका अपर्याप्तगा अस० वादखायुकारिका अपर्याप्तगा अस० सूर्त्ततेज कारिका अपर्याप्तगा अस० सूर्त्तपृथिवीकारिका
अपर्याप्तगा विशेषाहिता सूत्ताष्कायिका अपर्याप्तगा विशेष० सूत्तखायुकारिका अपर्याप्तगा विज्ञाप० सूत्ततेज कारिका अपर्याप्तगा अस० सूत्त
पृथिवीकारिका पर्याप्तगा विशेष० सूत्ताष्कायिका पर्याप्तगा विशेषा० सूत्तखायुकारिका पर्याप्तगा विज्ञा० सूत्तनिगीदा अपर्याप्तगा अस० सूत्त

साहिया सुजमआउकाइया अपज्जातया विसेसाहिया सुजमवालकाइया अपज्जातगा विसेसाहिया सुजम
 तेउकाइया पज्जातगा असखिज्ज० सुजमपुढविकाइया पज्जातगा विसेसाहिया सुजमआउकाइया पज्जात
 गा विसेसाहिया सुजमवालकाइया पज्जातगा विसेसाहिया सुजमणिगोदा अपज्जाता असखे० सुजमणि
 गोदा पज्जातया सखिज्जगुणा अनवसिद्धिया अनंतगुणा पफिवत्तिय सम्मदिठी अनंतगुणा सिद्धा अनंत
 गुणा वादर वणस्सइकाइया पज्जातगा अनंतगुणा विसेसाहिया वादरवणस्सइकाइया अप
 ज्जातया असखिज्जगुणा वादरपज्जातया विसेसाहिया वादरा विसेसाहिया सुजमवणस्सइकाइया अपज्जा
 तया असखेज्जगुणा सुजमा अपज्जातया विसेसाहिया सुजमवणस्सइकाइया पज्जातया संखेज्ज० सुजम
 पज्जातया विसेसाहिया सुजमा विसेसाहिया नवसिद्धिया विसेसाहिया निगोदा जीवा विसेसाहिया वण
 स्सइजीवा विसेसाहिया एगिदिया विसेसाहिया तिरस्कजोणिया विसेसाहिया मिच्छदिठी विसेसाहिया
 अविरया विसेसाहिया लउमत्या विसेसाहिया सजोगी विसेसाहिया ससारत्या विसेसाहिया सव्वजीवा वि
 सेसाहिया ॥ पखवणाए नगवईए वज्जवत्तयपद सम्मत्तं ॥ ३ ॥

निगोदा पर्याप्ता सखे० अनवसिद्धिका. अनन्तगुणा प्रतिपत्तिसमदृष्टिका अनन्त० सिद्धा अन० वादरवणस्सइकायिका पर्याप्ता अन० वाद
 रपर्याप्ता विशेषाहिता वादरा विशेषाहिताः सुत्तवनस्पतिकायिका अपर्याप्ता अस० सुत्ता अपर्याप्ता विज्ञे० सुत्तवनस्पतिकायिका. पर्याप्ता
 सखे० सुत्तमपर्याप्ता विशेषाहिता सुत्ता विशेषा० नवसिद्धिका विशेषाहिता निगोदा जीवा विज्ञे० वनस्पति जीवा विज्ञे० एकेन्द्रिया विज्ञे० ति
 यंब्यानिका विज्ञे० मिथ्यादृष्टयो विज्ञे०० अविरतयो विज्ञे०० लउमत्या विज्ञे०० सयोगयो विज्ञे०० ससारत्या विज्ञे०० सर्व जीवा विज्ञे०० पाहिताः ॥
 प्रज्ञापनाया भगवत्या श्रीमदुपाध्याय रामचन्द्रगिरि द्विष्य अयि नानकचन्द्र विरचितो बहुवक्तव्यपदानुवादो ऽफाणीत ॥

द्विनिर्जिगमिष्य सयमाध्यति यथागम सम्यक् प्रवृत्ति मातन्वते प्रवृत्तानाच सयमप्रकल्पवशात् उपजायते सकलकर्मद्वया निश्रेयसावाप्तिरिति उक्त
घ-सयमभाषपरिज्ञाना द्विरुक्ताप्रवृत्तौ जना । क्रियासक्ताह्यविघ्नेन गच्छन्ति परमागतिमिति ॥ १ ॥ अत्रिधेय जीवाजीवस्वरूप तच्च प्राक्प्रदर्शितना
मव्युत्पत्तिरसाम्यमात्रा दत्तगत सम्यग्यो द्विधा उपायोपेयनाजलवर्णो गुरुपर्वकमलवर्णश्च तत्राद्य स्तर्कानुसारिण प्रति तद्यथा-वचनरूपायन्न प्रक
रणमुपाय स्तत्परिज्ञान चोपेय, गुरुपर्वकमलवर्ण केवलश्रद्धानुसारिण प्रति तद्यथा स्वयमेव मूत्ररु दन्निधास्यति इदञ्च प्रज्ञापनास्य मुपाङ्ग सम्यग्
ज्ञानहेतुत्वा दत्तएव परस्परया मृत्तिपदप्रापकत्वात् श्रेयोज्ञत मतो मानू दत्र विप्र इति विप्रविनायकोपशान्ताय शिष्याणा मङ्गलवृद्धिपरिश्रमाय
स्वतो मङ्गलजन्तस्या प्यस्यादिमध्यावसानेषु मङ्गलमत्रिधातव्य मादिमङ्गल ह्यविघ्नेन शास्त्रपारगमनार्थ मध्यमङ्गल भवगृहीतज्ञास्त्रिस्थितिकरणाथ
मन्तमङ्गल शिष्यप्रशिष्यपरस्परया ज्ञानस्या उच्यवच्छेदनाय मुक्तत्व-तमगलमाङ्गं मर्कपञ्जतयसत्यस्य । पठमसत्यत्यागिण्य पारगमणायनिदि
ष्ट ॥ १ ॥ तस्त्वपथिज्ज्ञात्य मर्कमयमतिमपितस्मेय अत्योच्छिन्निमिष निरसपसिस्साह्वसस्य ॥ २ ॥ तत्र प्रथमपदगतैर्न ॥ यद्यगयजरमरणये त्यादि

प्रणाम्यश्रोमहावीर नतागेषमुरेस्वगम् प्रज्ञापनाव्यसूत्रस्य यस्यैर्लोकभाषया ॥ १ ॥ सतिमूरिबृहदोका द्योत्पद्यामनाहारा स्तथास्वपरशिष्याना वि
नोद्गार्थकरीम्यङ्गम् ॥ २ ॥ मङ्गलवर्णितत्वा विनयाहिमन्ताभिधम् स्वपरस्याकबोधाय स्तवर्कानिब्यतेमया ॥ ३ ॥ अरिहत् १ असरीर २ आचार्य ३ उपा
ध्याय ४ मुनि ५ पण्डिता आदि अक्षरा पाषा भौकार नोपजे तिके पचूहीने नमस्कारकरौजै सास्वतापद विक्रान्ति । यमोअरिहताण । अरिहताभणौ
नमस्कार हृद्यो माहरो खे (३) १२ गुण सहितरक्षा गुणे विवमहित । यमोमिहाण । नमस्कार हृद्यो गुणे ८ रक्तवर्ण मखे नये विधसहित ।
यमाद्यापरिगाण । नमस्कार हृद्यो आचार्याभणौ सौवर्णवर्ण ३६ गुणे गलामादि ध्यानकरै विधिसहित । यमोउवचकायाण । नमस्कार हृद्यो उपाध्यायाभणौ
नौलवर्णे दिशामाहि ध्यानकरै निशारी २५ गुणेसहित । यमोलीएसवससाक्षण । नमस्कार हृद्यो सर्वगुणसहित साधुकै जिकामणौ स्थामवर्ण २७ गुणस

ना ॥ दिमगल मिष्टेऽतस्तवस्य परममङ्गलत्वात्, उपयोगपदगतेन कहविहेज्जते । उवायोगे यत्रते ? इत्यादिना मध्यमङ्गल मुपयोगस्य स्वरूपत्वात् ज्ञानस्य कमद्यप्रति प्रधानकारणतया मङ्गलत्वात् नच कमत्यप्रति प्रधानकारणता तस्या नप्रसिद्धा तस्या साक्षादगमे त्रिधाना त्रयाचारा म अग्रतन्त्रीकस्य मद्यद्वयदुयाहिवासकोटीहि ॥ तनाणीतिङ्गितो खवेइकसासमिनेश ॥ १ ॥ तथासमुद्घातपदगतेन केऽलिसमुद्घातपरिसमाप्त्य लदभालन्नाविना सिद्धाधिकारप्रतिबद्धेन निच्छिन्नसमुद्घात जाइजरामरणथविमुक्ता साधयनिवावाह चित्तिसुहृदपत्ता ॥ १ ॥ इत्यादिना ऽऽशानमङ्गल मधुना दिमङ्गलसूत्र व्याख्यायते ॥ ववगयइत्यादि ॥ सित बद्ध मष्टप्रकार कर्मधन आत दग्ध जावत्यमानशुक्लध्यानलेन येस्ते निरुक्तविधिना सिद्धा, अथवा, पिपूगती सेधतिस अपुनरायस्या निर्वृत्तिपुरी मगच्छन्, यदिवा, पिपसरार्द्धी सिर्चयन्त स्म निष्टिताथो जवन्ति स्म यद्वा, पिपूशाले माङ्गल्येव सेधतेस्म शासितारो ऽजवन् मङ्गल्यरूपता यानुजवन्तिस्मेति सिद्धा, अथवा, सिद्धा नित्याश्रयंवसानस्यिति कत्वात् प्रख्यातायाजय्यै रूपलब्धगुणसन्दोहत्वात् उक्तच - आतसितयेनपुराणकम योवागतोनिर्वृत्तिसेधमूढि स्यातोऽनुशास्तापरिनिष्टितार्थो य सोऽस्तुचिह्न कृतमङ्गलोमे ॥ १ ॥ सिद्धाद्य नामादिर्ज्ञेदतो नेकधा ततो ययोक्तसिद्धप्रतिपत्त्यर्थं विशेषण माह-व्यपगतजरामरणजनयान्, जरावयोहा निलक्षणा मरणप्राणत्यागरूप भयमिह लोकादिज्ञेदा त्सप्तप्रकार मुक्तश्च-इहपरलोकादाण मकन्हाआजीवमरणमसिलोय ॥ इति विशेषतो ऽपुन ज्ञांवत्यागरूपतया अपगतानि ज्ञप्तानि जरामरणजनयानि येभ्यस्ते तथा तान् त्रिविधेन मनसा वाचा कथेन अनेन योगत्रयव्यापारविकल द्रव्यवन्दन नित्याह अत्रिवन्द्य अत्रिमुख वन्दित्वा प्रणम्येत्यर्थं, अनेन समानकर्तृकतया पूर्वकाले क्वाप्रत्ययविधानात् नित्यानित्यैकान्तपक्षव्यवच्छेद

ववगयजरमरणज्ञाणु सिद्धेऽत्रिबिदिकणतिविहेण । वंदामिजिणवरिदं तंलोक्तागुरुमहावीर ॥ १ ॥

चारित्र्यगुण रक्षाद्धे जिके तानयागे विधर्महित पाचयन्ने नमू, दिवे ववगजरामरणभए सिद्धेऽत्रिबिदिकणतिविहेण । वंदामिजिणवरिदे तिलाकगुरु मनागौर ॥ १ ॥ चरन तोर्धनर गामन पसमान तेहभणो नमस्कारकरोज्ये व्यपगत चयगवाद्धे जरामरण ऽ कर्मरूपवेरी ते चाठकर्मसुपावी सिद्धे

माह एकान्तनित्यानित्यपक्षे क्लृप्तप्रत्ययस्या सम्भवात् तथा ह्य प्रच्युतानुत्यक्तस्थिरैकस्वभावा नित्य तस्य कथ चित्रकालक्रियाद्वयकृतत्वोपपत्ति
 राकाल मेकस्वभावात्वे ने कस्याएव कस्याश्चित् क्रियाया सदाभावाप्रसङ्गात् अनित्य मपि प्रकृत्यकलक्षणस्थितिधर्मक तत स्तस्यापि चित्रकालक्रिया
 द्वयकृतत्वयोगो वस्थानाभावा दित्यल विस्तरेण न्यत्र सुचर्चितत्वात्, क्लृप्तप्रत्ययस्यो त्तरक्रिया सापेक्षत्वा दुत्तरा क्रिया माह-वदामिजिज्ञावरि
 दमित्यादि ॥ सूरवीरविक्रान्तो वीर्यतिस्र कपायादिशब्दं प्रति विक्रामतिस्मेति वीर महाश्यासी वीरश्च महावीर इदञ्च महावीर इतिनाम
 ॥ क्व किन्तु यथावस्थित मनन्यसाधारण परीयहोपसर्गादिविषय वीरत्वमपेक्ष्य सुरासुरकृत मुक्तञ्च - अयलेत्रयजेरवाण खतिसमेपरीस
 देवेहि कए महावीरे इति, अनेना पायापगमातिशयो ध्वन्यते तत्रयज्जुत मित्याह जिनवरेन्द्र जयन्ति रागादिशब्द नञिप्रचलन्ति
 कृतुविधा स्तथाया श्रुतजिना श्रवधिजिना मन पर्योयजिना केवलजिना स्तत्र केवलजिनत्वप्रतिपत्तये वरग्रहण जिनाना वरा च
 वद्भावविज्ञावस्वभावावजासिकेवलज्ञानकलितत्वात्, जिनवरा स्तेचा तीर्थकरा अपि सुत सामान्यकेवलिनो भवन्ति तत स्तीर्थङ्करत्वप्र
 मेन्द्रग्रहण जिनवराणा मिन्द्रो जिनवरेन्द्र प्रकटपुण्यरक्त्यरूपतीर्थकरनामकर्मोदया तीर्थकर इत्यर्थे, अनेन ज्ञानातिशय पूजातिशय
 शयमन्तरेण जिनेषु मध्ये उत्तमत्वस्य पूजातिशयमन्तरेण जिनवराणांमपि मध्ये इन्द्रत्वस्या योगात् तपुन किञ्चुत मित्याह-त्रैलोक्य
 णि यथावस्थित प्रवचनार्थमिति गुरु त्रैलोक्यस्य गुरु त्रैलोक्यगुरु स्तथाच प्रगवान् अधोलोकिनिवासिप्रचनपतिदेवेभ्य स्तिर्यग्लो
 णिसिध्यन्तरनरपशुविद्यापरज्योतिर्यज्य जर्हलोकनिवासिर्विमानिकदेवेभ्यश्च धर्म दिदेश त अनेन वागतिशय माह एतेचा पायापगमातिशयादय
 णोप्यतिशया देहसीगन्ध्यादीना मतिशयाना मुपलक्षण तानन्तरेणै तेषामसम्भवा तत द्युतिविश दतिशयोपेत जगवन्त महावीर वन्दे इत्युक्त

इथा तेहभणा साहमा धरं वाढौने मन वचन कायायेकरो सिधाने वाढूछु सामान्यकेवलीमाहि प्रधान इन्द्रसमान ते जिणेद्र अरिहत केहवोळे वीर

द्रष्टव्य माह ननुऽप्यजादीन् व्युदस्य किमर्थं जगवतो महावीरस्य वदन ? उच्यते वर्तमानतीर्थोधिपतित्वेना सन्नोपकारित्य दर्शयति ॥ सुयय
 गेत्सादि ॥ अत्र प्रज्ञापनेति विशेष्य, ज्ञोप सामानाधिकरण्येन वैयधिकरण्येनच विशेषण ॥ जिनवरणाति ॥ जिना सामान्यकेवलिन स्तेषामपि वर
 उत्तम स्तोत्रंरुच्यात् जिनवरस्तेन सामर्थ्यान् महावीरेणा न्यस्य वर्तमानतीर्थोधिपतित्वान्नावात्, इह वद्व्यस्त्यक्षीमोहजिनापेक्षया सामान्यकेवलि
 नोपि जिनवरा उच्यते तत स्तत्कल्पमाज्ञासी द्विनेयजन इति तीर्थरुच्यप्रतिपत्तये विशेषणान्तर माह जगवता जग समग्रैश्वर्यादिरूप उक्तच-ऐश्व
 यंससमग्रस्य रूपस्यपशुश्च ॥ चमस्यायंप्रयत्नस्य पक्षाजग इतीह्ना ॥ १ ॥ जगो स्यास्तीति जगवान्, अतिशयनेन वतुप्रत्ययो ऽतिशयायीच जगो
 वर्तमानस्यामिन ज्ञोपमणिगणापेक्षया त्रैलोक्याधिपतित्वात् तेन जगवता परमार्हस्यमहिमोपेतेने त्यर्थ, पुन कथजनेने त्याह-ज्यजननिर्वृतिजरे
 ण भव्य सस्याविधानादिपरिणामिकत्वावात् सिद्धिगमनयोग्य सचासौ जनश्च ज्यजन, निर्वृतिनिर्वाण सज्जलकर्ममलापगमनेन स्वस्वरूपलाजत
 परमस्वार्थस्य तदेतु, सम्यक्दर्शनाद्यापि कारणेकार्योपचारा निर्वृति स्तत्करणशीलो निर्वृतिकर भव्यजनस्य निर्वृतिकरो ज्यजननिर्वृतिकर स्तेन
 आह ज्यग्रहण मन्त्रव्यवच्छेदार्थं मन्यथा तस्य नैरर्थक्यप्रसङ्गात् तत इद मापतित ज्यनानामेव सम्यग्दर्शनादिक करोति नाज्यनाना नर्थेत दुप
 पन्न जगवतो वीतरागत्वेन पक्षपातासम्भवात् नैतत्सार सम्यग्वस्तुतत्त्वापरिज्ञानात्, जगवान्हि सवितव प्रकाश मविज्ञोपेण प्रवचनार्थं मातनोति
 केवल मन्त्रव्याना तथास्वाप्नाद्या देव तामससङ्गकुलानामिव सूर्यप्रकाशो नप्रवचनार्थं उपदिश्यमानोपि उपकाराय प्रजवति तथाचाह यादिसुख्य -
 सदुर्मयीजवपनानथकौशलस्य यज्ञोक्त्याभ्यवतवापिखिलान्यनूयन् ॥ तन्नाहुतसङ्गकुलेपुष्टितामसेषु सूर्याशयोभपुकरेश्वरावदाता ॥ १ ॥ ततो ज्यया

सुययणनिहाणजिण वरेणन्नविथजणिसुइकरेण ।

वर्षमान तान नोक्तो गुरुकै ते महावीरस्वामो प्रति शासनाधोस प्रति ॥ १ ॥ सययणतिहाण जिणवरणभविजणिव्बुकरेण । उवटमियाभगयया
 पणुयणभब्बभावाण ॥ २ ॥ सिहातरज तेहनो निधान धरकै ते भगवत श्रीवीतरागे भविकजीवने मोच्च सुखुनोदणद्वार कक्षा भगयते अरिहते प्रप्ता

नामेव जगद्रचना दुपकारी जायते इति जगज्जननिवृत्तिकरेणे त्युक्त किमित्याह ॥ उवदसियत्ति ॥ उपसामीप्येन यथाश्रोत्राणां भटिति यथावस्थित वस्तुतत्वायभीषो जयति तथा स्फुटयचने रित्यर्थं , दर्शिता श्रवणगोचरनीता उपदिष्टा इत्यर्थ , का सी प्रज्ञापना ? प्रज्ञाप्यन्ते जीवादयो ज्ञावा ज्ञतया गृह्यंसप्त्या इतिप्रज्ञापना , किंविशिष्टे त्यत आह-श्रुतरत्ननिधानं ' इष्ट रत्नानि द्विविधानि प्रयन्ति तद्यथा द्रव्यरत्नानि ज्ञावरत्नानि तत्र द्रव्यरत्नानि वैद्यूमरकतेन्दुनीलादीनि ज्ञावरत्नानि नृतात्विकानीति ज्ञावरत्नैरिहाधिकारस्तत एवसमास श्रुतान्यवरत्नानि श्रुतरत्नानि ननु श्रुतानिषरत्नानिच नापि श्रुतानि रत्नानीवेति कुत इतिचे ? दुष्यते प्रथमपक्षे श्रुतव्यतिरिक्तैर्द्रव्यरत्नैरिहाधिकाराज्ञावात् , द्वितीयपक्षे तु श्रुतानामेव तात्विकरत्नत्वात् शोपरत्नैरुपमाया अयोगा क्रियानमिव निधानं श्रुतरत्नानि कया प्रज्ञापने त्यत आह सर्वभाषाणां सर्वेषु ते ज्ञावाद्य सर्वज्ञावा जीवाजीवाश्रवबन्धसवरनिर्जराभोक्षा , तथा ह्यस्या प्रज्ञापनाया पट्त्रिंश त्पदानि तत्र प्रज्ञापनाद्युक्तव्य विशीयघरमपरिणामसज्जेषु पक्षसु पदेषु जीवाजीवानां प्रज्ञापना , प्रयोगपदे क्रियापदेचाश्रवस्य कायवाक्छून कर्मयोग आश्रव इतियचनात् कर्मप्रकृतिपदे बन्धस्यप्रकृपणा , समुद्घातपदकेवलिसमुद्घातप्रकृणाया सवरनिर्जराभोक्षाया शोपेयुतु स्थानादियु पदेषु कचि तत्स्यचिदिति अथवा सर्वभाषाणां मिति द्रव्यक्षेत्रकालभावाना भेदव्यातिरेकेणा न्यस्य प्रज्ञापनीयस्या ज्ञावात् , तत्र प्रज्ञापनापदे जीवाजीवद्रव्याणां प्रज्ञापना , स्थानपदे जीवाचारस्य क्षेत्रस्य , स्थितिपदे नारकादिस्थितिरूपणात् कालस्य , शोपपदेषु सत्याज्ञानादिपर्यायव्युक्तात्सुच्छासादीनां भावानां मिति , अस्याद्य गाथाया अकृपणमिणवित्तित्यनया सङ्गजिसम्बन्ध केवलयेनेय सत्वानुगुहाय श्रुतसागरादुद्घाता असाव प्यासकतरोपकारित्वा दस्मद्विधाना नमस्ता राहं इति तन्नमरन्मारविषय मिदमपान्तरालत्वा न्यकर्तृक गाथाद्वय-वायगवरवसाउ इत्यादि ॥ वाचका पूर्वविदो वाचकाद्य तेवराद्य वाचकवरा

उवदसियाजगवया पन्नवणासद्युज्जावाणं ॥ २ ॥

पना जगवया सर्वभान जीवा जीवादिपदार्थ ॥ २ ॥ वायगउरवसानो ते वीसइमेणधोरपरिसेण । दुहरवरणेणमुणिणा पुव्वसुयसमिडबुदोणं ॥ ३ ॥ वाच

याचक्षप्रधाना स्तेषा वशा प्रवाहो याचक्षग्रथ स्तास्मिन् मूत्रेच पचमीनिर्द्देशा प्राकृतत्वात्, प्राकृतेहि सर्वासुविभक्तिषु सर्वाग्रपि विभक्तयो यथा योग प्रवत्तन्ते, तथाचाह पाणिनि स्वप्राकृतव्याकरणे-व्यत्ययोप्यासामिति, त्रयोविंशतितमेन तथाच मुखमस्वामिन आरज्य जगवानार्यश्याम ख्यो विशतितमस्य, किञ्चतेन धीरपुरुषेण, धीर्युद्धि स्तया राजत इतिधीर धीरयासी पुरुषश्च धीरपुरुष स्तन, तथा दुर्द्धराणि प्राणातिपातादिनिवृत्ति लक्षणाणि पचमरात्रतानि धारयतीति दुर्द्धरचर स्तन, तथा मन्यते जगत्स्त्रिकालावस्था मिति मुनि स्तेन विंशिएसवित् समन्वितेनेत्यथ, पुन कथभूतेनेत्याह-पूयश्रुतसद्बुद्धिना, पूर्वोक्तिच ततश्रुतच पूर्वश्रुत तेन समुदा बुद्धिमपागता बुद्धि यस्य स पूर्वश्रुतसद्बुद्धि स्तेन, आह यो या चक्षग्रवज्ञानान्तर्गत स पूर्वश्रुतसद्बुद्धिरेव भवति तत किमनन विज्ञेयणेन? सत्यमतत् किन्तु पूर्वविदोपि पटस्यानकपतिता प्रयन्ति, तथाच व तुदगपूर्वविदामप्य धिक्त्य पटस्यानक वक्ष्यति तत आधिक्यप्रदर्शनाय निद विज्ञपण मित्यदोष, समिद्धबुद्धीणेत्यत्र शाश्वदस्य इत्स्वत्व द्विशब्दस्य दीर्घता आपत्वात्, तथा श्रुतमनयोक्त्वा रत्सुजापितरत्नयुक्तत्वाच्च सागरइव श्रुतसागर, व्याघ्रादिभि गौणि स्तुद्गुणानुक्तावितिसमा स' तस्मात् ॥ वियेज्जति ॥ देशीयचनमेतत् साम्प्रतकालीनपुरुषयोग्य बीनयित्वाइत्यर्थं येनेद प्रज्ञापनारूप श्रुतरत्न मुहम प्रधान, प्राधान्यच न श्रेयश्रुतरत्नापेक्षया किन्तु स्वरूपतो, दत्त विपयगणाय तस्मै भगवते ज्ञानैश्वर्यधर्मादिवते, आरात् सर्वश्रेयधर्मभ्यो यात प्राप्तो गुणै रित्यायं सचासी इयामश्च आपदयाम स्तास्ते, सूत्रेचपक्षी चतुर्थ्यर्थे द्रष्टव्या ॥ छठिविभ्रत्तीएज्जबहवत्थीतिवचनात्, अधुनोक्तसवयेवेय गाथा ॥ अज्जयणमित्यादि ॥

वायगवरवसानं तेवीसइमेणधीरपुरिसेण । दुद्धरधरेणमुणिणा पुव्वसुयसमिद्धुद्धीण ॥ ३ ॥ सुयसागराविणु
ज्जण जेणसुययणमुत्तमदिस्स । सीसगणस्सज्जगवन्नु तस्सणमोच्चज्जसामस्स ॥ ४ ॥ अज्जयणमिणचित्त सुय

क प्रधान वशानक्रमे सुर्मास्त्रामो आरभ्य तेवासमा धीर पुरुष स्वामाचार्य दुर्द्धर महाव्रतना धरणहार मुनि तिण पूर्वरूप श्रुत तिणे साहसके बुद्धिजि
पातो ॥ ३ ॥ सुयपागरानिजेकण ज सुगणमुत्तमदिस्स । सीसगणस्सभगवन्नु तस्मन्मोच्चज्जसामस्स ॥ ४ ॥ श्रुत सागरमाहिथो वीर्यने काव्यो जिणे ए

अध्ययनमिदं प्रज्ञापनाय, ननु यदीयमध्ययनं क्रियते न क्रियते ? उच्यते नान्यनियमो यदवश्यं मध्ययनादां वृष-
क्रमाद्युपन्यासः क्रियते इति, अनियमोऽपि कुतोऽवसीयत इति चेत् ? उच्यते नन्यथयनादिं यदवसीयत, तथा चित्रार्थाधिकारयुक्तत्वाच्च श्रुतमेव
रत्नं श्रुतरत्नं दृष्टिवादस्य द्वादशास्याहस्य नित्यन्दइव दृष्टिवादमित्यन्द 'सूत्रेनपुसक्तानिर्देशा प्राकृतत्वात्, यथावर्णितं भगवता श्रीमन्महावीरवद्वं
नस्वामिना इन्द्रजित्प्रवृत्तीनां मध्ययनार्थस्य वर्णितत्वात्, अध्ययनं वर्णितमित्युक्तं श्रद्धमपि तथा वर्णयिष्यामि ग्राह-क्यमस्य लट्स्यस्य तथा वर्णयितुं
शक्तिः ? नैपदीय सामान्येना त्रिधेयपदार्थवर्णनमात्रं अधिकृत्यैव मभिधानात्, तथाच अष्टमपि तथा वर्णयिष्यामीति किमुक्तमवति तदनुसारेण वर्णं
यिष्यामि नस्त्वमनीपिकयेति, अस्याच प्रज्ञापनाया पदत्रिशत्यदानि भवन्ति पदं प्रकरणं मर्थाधिकारइति पर्याया, स्तानिच पदान्यमूनि ॥ पदत्रय
शेत्यादि नाथाचतुष्टये ॥ तत्र प्रथमस्यदं प्रज्ञापनाविषयं प्रथमधिकृत्य प्रवृत्तत्वात् एतापना ११। एवं द्वितीयं स्थानानि १२। तृतीयं यदुक्तव्यं
१३। चतुर्थं स्थितिः १४। पञ्चमं विज्ञेयं १५। यद्व्युत्क्रान्तिं व्युत्क्रान्तिलक्षणधिकारयुक्तत्वात् १६। सप्तमं मुच्छासः १७। अष्टमं सञ्ज्ञा १८।

रयणंदिष्टिवायणीसदः । जहवसिखनगवया अहमवितहवखडस्सामि ॥ ५ ॥ पखवणा १ ठाणाइ २, वज्जव
त्तहं ३ ठिठं ४ विसेसाय ५ । वक्कंती ६ उस्सास, ७ सखा ८ जोणीय ९ चरिमाइ १० ॥ १ ॥ नासा ११ सरीर १२

इवा श्रुतसागरं माहिचौ श्रुतरत्नं उत्तमदीक्षां शिष्यं समूहने भगवतः त्रिषु भाष्यं व्यामार्चयने नमस्कारं कर्तुं ॥ ४ ॥ अज्जगणमिणचित्तं सुवरगणं
दिष्टिवायणीसदः । जहवसिखनगवया अहमवितहवखडस्सामि ॥ ५ ॥ मध्ययनं प्रज्ञापनानामेव अनेकाधिकारं यत्कं श्रुतरत्नं दृष्टिवादं वारहं भगवतो रत्नस्य
रसम्भूतं जिमं वर्णय्यो भगवन्ते दोतरागे चू निचै तेहने अनुसारे तिम वर्णयस्यु ॥ ६ ॥ पणवणाठाणाइ वदुवत्तवठिठं विसेसाय । वक्कंतीउच्छ'ससणीजो
यौउचरमाइ ॥ ६ ॥ जीवादि प्रज्ञापनापद १ तेहनों ठामनो बीजोपद २ अस्यदहुल ३ कहणी, तेहनों स्थितिपद ४ तेहनों विधेयपद प्ररूपणा ५ व्युत्क्रा-
न्ति लक्षणधिकारपद ६ उट्वासपद ७ सञ्ज्ञासारपद ८ योनिपद ९ चरमउद्देशोने प्रवर्तव्यो १० ॥ ६ ॥ भासासरीरपरिणा मकसाएइ दिगपमोनेय । निसा

गीम । १३ । चतुदश कपाय । १४ । पञ्चदश मिन्द्रिय । १५ । योऋज्ञ प्रयोग । १६ । सप्तदश लेण्या । १७ । अष्टादश कायस्थिति । १८ । गकोनविंशतितम सम्यक्क्रम । १९ । विंशतितम सन्तक्रिया । २० । एकविंशतितम भवगाहनास्थान । २१ । द्वविंशतितम क्रिया । २२ । त्रयोविंशतितम क्रम । २३ । चतुर्विंशतितम कर्मणो द्यम्बक ' तस्मिन् हि यथाजीव्य कर्मणो द्यम्बको जवति तथा प्ररूप्यत इति तथानाम । २४ । यय पञ्चविंशतितम कर्मवेदक । २५ । यद्विंशतितम वेदस्य द्यम्बकइति वेदयते अनुभवतीति वेद सस्य द्यम्बक ' किमुक्तभवति कति प्रकृती र्येदपमानस्य कतिप्रकृतीना द्यम्बो जवतीति तत्र निरूप्यते तत् सदेदस्य द्यम्ब इति नाम । २६ । एव का प्रकृति वेदयमान कतिप्रकृती र्ये दयत इत्ययंप्रतिपादक वेदयेदकनाम सप्तविंशतितम । २७ । अष्टाविंशतितम साह्यारप्रतिपादकत्वा दाहार । २८ । एव मेकोनत्रिंशतम मुंपयोग

परिणा, म १३ कसाय १४ इटिय १५ प्यनुगेय १६ । लेसा १७ कायठिइया १८, सम्मत्ते १९ अतकिरियाय २० ॥ २ ॥ उगाहणसठाणा २१, किरिया २२ कर्मेय २३ कम्मस्स । वधए २४ कम्मवेयए २५, वेयस्सवधए २६ वेमवेयए २७ ॥ ३ ॥ ज्याहारि २८ उवजुगे २९, पासणया ३० सखि ३१ सजमे ३२ चेव । उही ३३ पवियारण ३४

कायडिइया सम्मत्तभतकिरियाय ० ॥ तेद्वनो भाषापद ११ शरीरकारणपद १२ परिणामपदाधिकार १३ कपायपद १४ इन्द्रियपद १५ प्रयोगदाहपद १६ लेण्यापद १७ कायस्थितिपददाहार १८ सम्यक्क्रानामपद १९ अतक्रियाधिकारपद २० ॥ १ ॥ उगाहणसठाणे किरियाकथेदयावरेकथा । सवधएकम्मस्सवेयए वेयस्सवधए वेमवेयए ॥ २ ॥ भवगाहनास्थानपद २१ क्रियापद २२ कर्मपद २३ कर्मरे जीवरे वधकिमयाय जीव कर्मने किमवाधे २४ कर्मनो वेदवो भोगवो २५ वेदव्यक्त कंतनीप्रकृतिवाधे २६ वेद्वनो केतना व २७ कर्मप्रकृतिकरे, वेद्वने वाधीने वेदकिम २७ ॥ ८ ॥ आहारितवश्रोगे फासणयासखिसजमेचेव । ओही पवियारणवेयणागतताममुगवाए ॥ ९ ॥ आहारपद २८ लपयानपद २९ फरसवो जवो ३० सप्तापद ३१ सवमपद ३२ न्चै प्रवधिज्ञानपद ३३ प्रविवा रणापद ३४

॥ टीका ॥

॥ २६ ॥ त्रिशतम पासणयन्ति दर्शनता । ३० । एकत्रिशतम सञ्जा । ३१ । द्वित्रिशतम संयम । ३२ । त्रयस्त्रिशतम मवधि । ३३ । चतुस्त्रिशतम प्रविचारणा । ३४ । पञ्चत्रिशतम वेदना । ३५ । षट्त्रिशतम समुद्घात । ३६ । तदेव मुपन्यस्तानि पदानि ॥ साम्प्रत यथाक्रम पदगतानि सूत्राणि वक्तव्यानि तत्र प्रथमपदगतं मिदं मादिमं सूत्र-संकेतं पञ्चगणा इति ॥ अथास्य सूत्रस्य कं प्रस्तावः ? उच्यते प्रश्नसूत्रमिदमेतच्चादा बुपन्यस्तं मिदं ज्ञापयति पृच्छतो मय्यस्यबुद्धिमतो र्थिनो जगददहं दुपदिष्टत्वप्ररूपणाकार्या नञोपस्य तथा चोक्त-मध्यस्थोद्युद्भिमानर्थो श्रोतापात्रमिति स्मृतं । तत्र सेगच्छो माग्यदेशीमसिद्धुनिपातं स्तत्र शब्दार्थं अथवा अथशब्दार्थं सच वाक्योपन्यासायं, किमितिपरमर्थे, तन्ति तावदिति द्रष्टव्यं, तच्च क्रमो द्योतने, तत एव समुदायार्थं, तिष्ठन्तु स्थानादीनि पदानि प्रष्टव्यानि वाचकमवर्तित्वात् प्रज्ञापनानन्तरञ्च तेषां मुपन्यस्तत्वात्, तत्र तावदे तावत् पृच्छामि किमप्रज्ञापनेति ? अथवा प्राकृतशैल्या अग्निधेयवसिद्ग्वचनानि योजनीयानीति न्याया देवन्द्रष्टव्यं । तत्र काताव तप्रज्ञापनेति ? एव सामान्येन केनचि त्प्रश्ने कृतं सति जगवान् गुरु शिष्यवचनानुरोधेना दरायं किञ्चि च्छिष्योक्तं प्रत्युच्चार्य - पञ्चगणादुविहा पञ्चज्ञा इति ॥ अने नचागृहीतशिष्याभिधानेन निर्वचनसूत्रशैतदावष्टेन सर्वमेवसूत्रं गणधरप्रश्नतीर्थकरनिर्वचनरूपं किन्तु किञ्चिदन्यथापि बाहुल्येन तु तथारूपं यत उक्त-अतथप्रासङ्ग्यरहा सुतगयतिगणहरनिष्ठणं मित्यादि ॥ तत्र प्रज्ञापनेति पूर्ववत् द्विविधा द्विप्रकारा प्रज्ञप्ता प्रस्तुप्ता यदा तीर्थकरा एव निर्वेत्तार स्तदा यमर्थो ऽन्यैरपि तीर्थकरै र्यदा पुन रस्य कश्चि दाचार्यं स्तन्मतानुसारी तदा तीर्थकरगणधरै रिति, द्वैविध्यमेवो पदर्शयति तज्ज्ञा जीधपञ्चगणाय अजीधपञ्चगणाय ॥ तद्यथेति वक्ष्यमाणजैदकथनप्रकाशनायं, जीवन्ति प्राणान् धारयन्तीति जीवा, प्राणाश्च द्विधा द्रव्यप्राणा

वे, यणा ३५ यततोसमुष्ठाए ३६ ॥ ४ ॥ से किं त पसुवणा ? पसुवणा दुविहा पंशता, तंजहा-जीवपसुव

वेदनापद ३५ तिवारिपक्षा समुद्घातपद ३६ । सक्तिपसुवणा २ दुविहापसुता तंजहा । ते कुण ते ३६ द्वारप्रज्ञापना उत्कृष्ट जितायणा जाणपणाराभेद दोयप्र

कारे कक्षा ते किम । जीवपसुवणा यजीवपसुवणा । जीवरो जाणपणो ते जीवप्रज्ञापना, वनो अजीवो ते अजीवप्रज्ञापना । संकेत अ

॥ भाषा ॥

॥ मूल ॥

पगतसमस्तकर्मसङ्गा सिद्धा, जीवाना प्रज्ञापना जीवविपरीतस्वरूपा स्तेषु धर्माधर्मोकाणुपुद्गलास्तिकायाद्वासमयकूपा स्तेषां प्रज्ञापना अजीवप्रज्ञापना चकारौ द्वयोरपि प्राधान्यस्यापत्तयौ, नखत्विहान्यतरस्या प्रज्ञापनाया गुणज्ञाव एव सर्वप्राप्यज्ञरगमनि का काया, तदेव सामान्येन प्रज्ञापनाद्वय मुपन्यस्य सम्प्रति विशेषस्वरूपावगमार्थं मादावल्पवक्तव्यत्वा दजीवप्रज्ञापना स्मृतिपिपादपिपु स्तद्विषय प्रश्नसूत्रमाह-संज्ञित अजीवपञ्चवणा २ अथ किन्तु अजीवप्रज्ञापनेति अथवा, कासा अजीवप्रज्ञापना-सूरिरा २ अजीवपञ्चवणा दुविहा पणता तजहा इत्यादि ॥ अजीवप्रज्ञापना द्विविधा प्रज्ञाया रूप्यजीवप्रज्ञापनाच अरूप्यजीवप्रज्ञापनाच, रूपमेवा मस्तीतिरूपिण रूपग्रहण गम्या दीना मुपनयन तद्व्यतिरेकेण तस्यासम्भवात् तथाहि प्रतिपरमाणुरूपपरसगम्यस्पर्शा उक्तञ्च-कारणमेवतदन्त्य सूत्रानित्ययज्ञवतिपरमाणु । एक रसगम्यवर्णा द्विस्पर्शासायंलिङ्ग ॥ १ ॥ तस्मा दव्यतिरेक परस्पर रूपादीनामिति अथवा रूप नाम स्पर्शरूपादिसम्बन्धनात्मिकामूर्तिं सन्देया मस्तीति रूपिण, रूपिणश्च ते अजीवाश्च रूप्यजीवा स्तेषां प्रज्ञापना रूप्यजीवप्रज्ञापना पुद्गलस्वरूपा जीवप्रज्ञापनेति यावत्, पुद्गलाना मेव रूपादि मत्वात्, रूपव्यतिरेकेणा रूपिणो धर्मोस्तिकायादय स्तेषु अजीवाश्च अरूप्यजीवा स्तेषां प्रज्ञापना ऽरूप्यजीवप्रज्ञापना चण्ड्यो प्राप्यत्, तत्रात्य वक्तव्यत्वात् प्रथमतो ऽरूप्यजीवप्रज्ञापनाचिकीर्णं रिदमाह-संज्ञितमित्यादि ॥ संज्ञादो ऽयञ्चब्दाय, अथ कासा अरूप्यजीवप्रज्ञापना २ सूरिराह-

णाय अजीवपञ्चवणा २ संज्ञित अजीवपञ्चवणा २ दुविहा पणता, तजहा-रूपविअजीवपञ्चवणा अरूपवि अजीवपञ्चवणा । संज्ञित अरूपविअजीवपञ्चवणा २ अरूपविअजीवपञ्चवणा दसविहा पणता तजहा-

जीवपञ्चवणा २ दुविहा पणता तजहा । ते कुण अजीव प्रज्ञापना शिष्यपूछे तवग्न कहै अजीवप्रज्ञापना दोयभेद ते कहै-ते जिम रूपविअजीवपञ्चवणा अरूपविअजीवपञ्चवणा । रूपो अजीव प्रज्ञापना रूप ग्रहण गम्यादि लक्षण कहिये, अरूपो अजीव परमाणु प्रज्ञापना परमाणु सम्प्रचरूपो एक द्विपदेगी च

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

x

अरूप्यजीवप्रज्ञापना दशविधा दशप्रकारा प्रज्ञा अरूप्यजीवाना दशविधत्वात् तत्प्रपञ्चादिदशविधोक्ता, तदेव दशविधत्व दर्शयति-तज्ज्ञेया दि ॥ तद्यथेति वक्ष्यमाणजैदक्यनोद्योतनार्थं, त इशविधत्व यदिवा तदि त्यव्यय मर्मातिव्यवनेषु, सा दशविधा ग्रहप्यजीवप्रज्ञापना यथाज्ञवति तथादर्यते ॥ धम्मत्तिकाय इति ॥ जीवाना पुद्गलानाञ्च स्वप्नावतएव गतिपरिणामपरिणताना तत्स्वभावधरणात् तत्स्वप्नावधोषणा द्वर्मे अस्त्येव प्रदेष्टा स्तेषा काय सङ्घात, गणकायनिकाये स्वधेवगतेर्हेवरासीय इतिवचनात् ॥ अस्तिकाय प्रदेशसङ्घात इत्यर्थं, धर्मद्वयसी अस्तिकायस्य धर्मास्तिकाय, अनेनच सकलमेव धर्मास्तिकायरूप भवयद्विद्व्यमाह, अवयवीनाम अवयवाना तथारूपसङ्घातपरिणामविशेषयव नपुन रवयव द्रव्येभ्य पृथगर्थान्तरद्रव्य तथानुपलभात् तन्तव एवहि आतानवितानरूप सङ्घातपरिणामविशेषमापन्ना लोके पटव्यपदेशजा उपलभ्यन्ते न तदतिरिक्त पटाख्यनाम उक्तञ्चान्येऽपि-तन्त्वादियतिरेकेण नपटाद्युपलभन तन्त्वादयोविशिष्टाहि पटादिव्यपदेशिन ॥ १ ॥ कृत प्रसङ्गेना न्यत्र चिन्तितत्वा देतद्वादस्य, तथाधर्मास्तिकायस्य देशइति तस्यैव धर्मास्तिकायस्य बुद्धिविकल्पितो द्वादिप्रदेशात्मको विभाग ॥ धम्मत्तिकायस्सपदे सा इति ॥ धर्मास्तिकायस्य प्रदेश इति प्रकृष्टा देशा प्रदेशा निर्दिष्टागात्रागा इतिमाय, स्तेषा सङ्ख्या लोकाकाशप्रमाणात्वा तेषां, अतएव बुवचन, धर्मास्तिकायप्रतिपत्तजूनो ऽधर्मास्तिकाय किमुक्त भवति जीपुद्गलाना स्थितिपरिणामपरिणताना तत्परिणामोपपत्तको मूर्तोऽसङ्घात प्रदेशसङ्घातात्मको ऽधर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, अथधर्मास्तिकायस्य देश इत्यादि पूर्ववत्, तथा आहिति मर्यादया स्वस्वजावाऽपरित्यागरूपया काज्ञाने स्व

धम्मत्तिकोपा धम्मत्तिकायस्सपेसा, धम्मत्तिकोपा धम्मत्तिकायस्सपेसे धम्मत्तिकोपा

तत्र-कारणमेव नदत्ता सूक्ष्मोऽनित्यमभवतिपरमाणु। एकरसगन्धवर्णो हिम्यर्शो कार्यनिगय ॥ १ ॥ सेवितभूरूपिचजीवपणवणा २ दसविहापणत्ता तज्ज्ञा। ते कुण यजीवप्रज्ञापना अरूपौना दशमेद कश्चाहि, ते निम शिथने गुरु कहैहे-धम्मत्तिकोपा धम्मत्तिकायस्सपेसा। ३। धर्मास्तिकाय पुह लादिमध्ये गमनकारता साहाज्ये ते धर्मास्तिकाय, देशसमय सर्वदेशनो जेकोइ विभाग ते देशकहिने, द्विने प्रदेश धर्मास्तिकायनो प्रदेश निर्वाभाग सूक्ष्म

रूपेण प्रतिजामन्ते सिन्धुं यजस्थिता पदार्थां इत्याकाशः, यदास्वप्निविधावाद् तदा ग्राहिति सर्वत्रावाञ्जिव्यासा काशते इत्याकाशः, अस्त
य प्रदेशा स्तेषा कायो स्तिकाय, आकाशश्च तत् अस्तिकाया आकाशास्तिकाय, आकाशास्तिकायस्य इत्यादि पूर्ववत्त्वर प्रदशा ग्रन्ता द्रष्टव्या,
अनोक्तस्या नन्तत्वात् ॥ यदेति ॥ कालस्यास्या, यद्वाचासी समयश्च अदुसमय, अथवा, यद्वाया समयो निर्विभागोऽग, अयञ्च एकएव वर्त
मान परमायत मन्वा तीतानागता समया स्तेषा यथाक्रम विनष्टानुत्पन्नत्वेना सत्त्वात् तत् कायत्वान्नावइतिदेशप्रदेशकल्पनाविरह, आद्यलि
काटयत्सूत्रममयविरोधैर्नोत्तरसमयसद्भावइति, तत् समुदयसमित्याद्यसम्भवेन व्यवहारायमेव कल्पिता इति द्रष्टव्य, तथा मीपा नित्य क्रमोपन्या
से किप्रयाजन ० मुख्यते इह धर्मास्तिकाय इतिपदं महल्लूत मादौ धर्मशब्दाद्वितित्वात्, पदार्थप्ररूपणाच्च सम्प्रतिप्रयमत उल्लिषा वर्तते ततो
महलाय मादौ धर्मास्तिकायस्यो पाठान, धर्मास्तिकायप्रतिपन्नतद्धा धर्मास्तिकाय स्तदनन्तर मधर्मास्तिकायस्य, द्वयोरपि चानयो राधारचूत
माकाशमिति तदनन्तर माकाशास्तिकायस्य, तत् पुन रजीवसाधर्म्यां दद्वा समयस्य, अथवा, इह धर्माधर्मास्तिकायौ विभू नञवत स्तद्विभूत्ये
तरसामर्थ्यतो जीउद्गलाना मररलितप्रचारप्रवृत्तौ लोकोक्तव्यवस्थानुपपत्ते, रस्तिच लोकोक्तव्यवस्था तज २ प्रदेशो सूत्रे साक्षाद्दर्शनात्, ततो
यावत्तिनेऽवगाढौ तावरप्रमाणोलोक शेषरत्वलाक इति सिद्ध मुक्तच-धर्माधर्मविभूत्वात् सर्वत्रचजीवपुद्गलविचारात् । नालोक कश्चिरस्या नञ
सम्मतमेतदायाम् ॥ १ ॥ तस्मादुर्माधर्मो व्यवगाढौव्याप्यलोकसर्व ॥ एवमिपरिच्छिन्न सिञ्चितलोकस्तद्विभूत्वात् ॥ २ ॥ ततएव लोकोक्तव्यवस्था

कायसपएसा आगासत्यिकाए आगासत्यिकायस्सदेसे आगासत्यिकायसप्यदेसा अष्टासमए१० सेतश्चरुवि

प्रश्ने क नोने । अधर्मास्तिकाए अधर्मास्तिकायस्सदेसे अधर्मास्तिकायस्सपएसा ६ । धर्मास्तिकायनो प्रतिपत्तो ते अधर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकायनोदेय इम
अ र्मास्तिकायनाप्रदेग असुव्यात् साकानाग्रप्रमाण प्रदशकडिये । आगासत्यिकाए आगासत्यिकायस्सदेसे आगासत्यिकायस्सपएसा ४ । आकाशास्ति
काय स्वभावै शभे ते इमहोज ते आकाशास्तिकायनादेय इमहोज आकाशास्तिकायनो प्रदेश । अष्टासमए १० । कालसमय १०० ॥ सेत अरुविअजीव

हेतु धर्माधर्मोस्तिज्ञाया वित्पनयो रादावुपादान, नत्रापि माहूलिकत्वात् प्रथमतो धर्मोस्तिक्वायत्य, तत्प्रतिपक्षत्वात्तो ऽधर्मोस्तिक्वायत्य, ततो लोकोक्त्यापित्वा दाकाज्ञास्तिक्वायत्य, तदनन्तर लोके समयसमयक्षेत्रव्युत्थाकारित्वा ददा समयस्य, एव मागमानसारेणा न्यदपि युक्त्यनुपा ति यक्तव्य मित्यल प्रमद्वेन, प्रकृतोपसहारमाह-मेतन्नरुविश्वजीवपन्नवशा ॥ सैषा अरूप्यजीवप्रज्ञापना' पुन राह विनेय-चेकितनित्यादि ॥ अयकामा रूप्यजीवप्रज्ञापना २ मूरि राह-रूप्यजीवप्रज्ञापना चतुर्विधा प्रज्ञा तथा-स्कन्धा' स्कन्धानि श्रुयन्ति धीयन्तेष पुण्यन्ते पुद्गलाना विचटनेन चटनेनवेति स्कन्धा पूषीदरादय इतिरूपनिष्यति, अत्रवहुवचन पुद्गलस्कन्धाना मानन्त्य ख्यापनायं च, न चा नन्त्यमनुपपन्न मागमे निधाना, तथा च वक्ष्यन्ति-द्वितीयपुण्यसात्थिकागतादद्यात्पादि ॥ स्कन्धदेशा स्कन्धानामेव स्कन्धत्वपरिणाममजहन्तो बुद्धिपरिकरिपता द्यादि प्रदेशाल्पका विज्ञाणा, अत्रापि बहुवचन मननप्रादेशिकेषु तथाविधेषु स्कन्धेषु प्रदेशानन्तत्वसम्भावनायं स्कन्धाना स्कन्धत्वपरिणामपरिणताना बुद्धिपरिकल्पिता प्रकृष्टादेशा निविज्ञाणाज्ञाणा परमाणु इत्यर्थ, स्कन्धप्रदेशा अत्रापि बहुवचन प्रदेशानन्तत्वसम्भावनायं, परमाणुपुद्गला इति परमाद्यते अणवद्य परमाणवो निर्विज्ञानद्रव्यरूपा स्ते च ते पुद्गलाय परमाणुपुद्गला, स्कन्धत्वपरिणामरहिता केवला परमाणव इत्यर्थ, तेन

अजीवपस्यत्रगा ॥ सेकित रुविश्वजीवपस्यवणा रुविश्वजीवपस्यवणा चउविहा पस्यता तजहा-खधा खंधदे
मा खधप्यएसा परमाणुपीगला ४ । तेसमाननु पचविहा पस्यता, तंजहा-वस्यपरिणया गधपरिणया रस

पस्यवणा । ते जिम अरूपो अजीव प्रज्ञापना जाणवो । सेकित त रूगीधजीवपस्यवणा २ चउविहा पस्यता तजहा । ते श्रियकहे कृण रूपी जिम अजीवपज्ञा पना चटि गुनकहे, अजीव पज्ञापनारा चारभेट कक्षा ते जिम कहकु । खधा खधदेया खधप्यसा परमाणुपुगला ४ । खध ते समस्तयसु, देय ते को इणज विभाग, प्रदेय ते कहिदे निर्विभाग सख्ख ते प्रदेय, परमाणु ते निर्विभागरूप अनन्तप्रदेये नियय ते परमाणुपुद्गल कहिये । ते समामओ पचविहा प स्यता तजहा । ते परमाणुपुद्गल पाचेप्रकारिकक्षा ते पचप्रकार जिम कहकु-वस्यपरिणया गधपरिणया रसपरिणया प्कासपरिणया सठाणपरिणया ५ ।

मामर्श इत्यादि ॥ तेऽन्यादयो यथासमाय समासतः सहेषेण पञ्चविधा प्रज्ञा स्तद्यथा-वर्णपरिणता वर्णतः परिणता यथाभाज इत्यर्थः, एव गन्धपरिणता, रसपरिणता, स्पर्शपरिणता, स्थानपरिणता, परिणता इति श्रुतीकालनिर्देशो वर्तमानागतभालोपलक्षणः, वर्तमानागततत्त्वमन्तरेणातीतत्वस्यासम्भवात्, तर्थाह-यावर्तमानतत्त्वमतिक्रान्तमतीतो भवति' वर्तमानतत्त्वञ्च सो नुजयति योनागततत्त्वमतिक्रान्तवानुक्तञ्च-अग्निसनामातीतो यः प्राप्नोनामवर्तमानतत्त्व ॥ एष्यथनामसन्नवति यः प्राप्स्यतिवर्तमानतत्त्वम् ॥ १ ॥ ततो वर्णपरिणता इति वर्णरूपतया परिणता परिणमन्तीति परिणमिष्यन्तीति द्रष्टव्यः, मेव गन्धरसपरिणता इत्याद्यपि परिजावनीयः ॥ जेवस्वपरिणता इत्यादि ॥ येवर्णपरिणता स्ते पञ्चविधा प्रज्ञा, स्तद्यथा-रूपवर्णपरिणता कज्जलादिवत्, नीलवर्णपरिणता नील्यादिवत्, लोहितवर्णपरिणता हिङ्गुलादिवत्, हारिद्रव्यपरिणता हरिद्रादिवत्, शुक्लवर्णपरिणता शुङ्गुलादिवत्, येगन्धपरिणता स्ते द्विविधा प्रज्ञा स्तद्यथा-सुरभिगन्धपरिणताश्च दुरभिगन्धपरिणताश्च चक्षुषी परिणामभयनमिति विज्ञेयानावस्यापनार्थो तथानि-यथाकथञ्चिदवस्थिता सामग्रीवशतः सुरभिगन्धपरिणाम प्रजन्ते तथा कथञ्चिदवस्थि

परिणया फासपरिणया सठाणपरिणया । जेवस्वपरिणया ते समासतः पचविहा पसन्ता, तजहा-कालवस्वपरिणया नीलवस्वपरिणया लोहितवस्वपरिणया सुक्लिन्नवस्वपरिणया । जे गन्धपरिणया

वर्णपरिणया वर्णपरिणाम भाज इत्यर्थः, स्तन्यास्कन्दतिशयति १ गन्धपरिणत २ रसपरिणत ३ स्पर्शपरिणत ४ स्थानपरिणत ५ । जेवस्वपरिणया ते पचविहा पसन्ता तजहा । द्विवे जे वर्णपरिणत के तिके पाचप्रकारना कक्षा ते जिन कहैकै-कालवस्वपरिणया नीलवस्वपरिणया लोहितवस्वपरिणया हारिद्रव्यपरिणया सुक्लिन्नवस्वपरिणया ५ । कण्ठार्णपरिणत ते काजननोपरे स्थामवर्ण परिणम्यो, नीलवर्ण परिणत जगलनोपरे, रक्तवर्णपरिणत हिङ्गुलोपरे, पीतवर्ण परिणत जलनोपरे, स्वेवर्ण परिणत शख नोपरे । जेगन्धपरिणया ते दुग्धिहा पसन्ता तजहा । जिके गन्धपरिणत ते दुग्धिहा दोवभेटकक्षा ते कहैकै-सुभिगन्धपरिणया दुरभिगन्धपरिणया । सुगन्ध परिणत जोखडनोपरे, दुर्गन्धपरिणत समुननोपरे । जेरसपरिणया ते पचविहा पसन्ता तज

ता अत्र सामग्रीप्रज्ञातो दुरन्निगन्धपरिणाम मपीति, दुरन्निगन्धपरिणता अथ यथाश्रीखण्डादयः, दुरन्निगन्धपरिणता लशुनादिवत्, येरसपरिणता स्त पञ्चविधा प्रज्ञासा स्तद्व्या-तित्तरसपरिणता कोशातक्यादिवत्, कटुकरसपरिणता शुण्ठ्यादिवत्, कपायरसपरिणता अपक्वकिपित्यादिवत्, आन्नरसपरिणता आसवेतसादिवत्, मधुररसपरिणता शकरादिवत् ॥ ये स्पृशपरिणता स्ते अष्टविधा प्रज्ञासा स्तद्व्या-कर्कशस्पर्शपरिणता पायागादिवत्, मृदुस्पर्शपरिणता वसन्तादिवत्, गुरुकस्पर्शपरिणता वज्रादिवत्, लघुकस्पर्शपरिणता अकंत्लादिवत्, शीतस्पर्शपरिणता सुणानादिवत्, उष्णस्पर्शपरिणता वद्व्यादिवत्, स्निग्धस्पर्शपरिणता घृतगदिवत्, रूक्षस्पर्शपरिणता जस्मादिवत् ॥ ये सस्यानपरिणता,

ते दुर्विहा पशुता, तजहा—सुस्निग्धपरिणया दुस्निग्धपरिणया ते पचविहा पशुता तजहा तित्तरसपरिणया कटुग्रसपरिणया कसायरसपरिणया अविस्तरसपरिणया मज्जरसपरिणया । जेफासपरिणया ते अष्टविहा पशुता, तजहा—रूक्षफासपरिणया मउयफासपरिणया गरुयफासपरिणया लज्जयफासपरिणया सीयफासपरिणया उसिणफासपरिणया गिद्धफासपरिणया लुक्फासपरिणया । जेसठाणपरि

हा । जे रस परिणतछे तेहना पाच प्रकारकज्ञा तेहीज कहैछे—तित्तरसपरिणया कटुग्रसपरिणया कसायरसपरिणया अविस्तरसपरिणया मज्जरसपरिणया । तोवोरस परिणतछे कोमातकोपरे कुसिजण ज्यु कोसात ते कुलिजन, कटुकरस परिणत सूठनीपरे, कसायरस परिणत काची कोख नोपरे, अविस्तरस परिणत आवलवेतनीपरे, मधुररस साकरनीपरे । जेफासपरिणया तेअष्टविहा पशुता तजहा । जिके फारमयको परिणम्याछे तेहना न भेटतज्ञा ते जिम कहैछे—अक्कडफाम प० मउयफाम प० गरुयफाम प० लहुयफाम परिणया । कर्कश स्पर्श पायाणनोपरे, मृदु कोमल स्पर्श हंस नोपरे, गनस्यग परिणत वजनीपरे, गिम लघुस्पर्श परिणत अकंत्लनीपरे । सीयफाम प० उसिणफाम प० लुक्फाम प० लुक्फाम परिणया । गीत स्यग परिण । सुणावनापरे, उष्णस्पर्श परिणत अग्निनीपरे, स्निग्ध सचिकणस्यगे परिणत छानापरे, रूक्षस्पर्श परिणत भस्मनीपरे । जे सठाण प

स्ते पञ्चविधा मङ्गला-परिमङ्गलसंस्थानपरिणता यलययत्, दृत्तसंस्थानपरिणता कुलालघटादिवत्, अस्त्रसंस्थानपरिणता शृङ्गाटकादिवत्, चतुरस्त्रसंस्थानपरिणता कुम्भिकादिवत्, आयतसंस्थानपरिणता दण्डादिवत्, गतानिच परिमङ्गलादीनि संस्थानानि घनप्रतरज्जेदेन द्विविधानि प्रयन्ति, पुन परिमङ्गल मयहाय शोपाणि उज प्रदेशजनितानि युग्मप्रदेशजनितानि इति द्विधा, तत्रोत्कृष्ट परिमङ्गलादि सर्वमनन्ताणु निष्पन्न मसङ्ख्यप्रदेशावगाढ चेति प्रतीतमेव, जघन्य तु प्रतिनियतमङ्गुपरमावगाढ तद्यथा-गक परमाणुमध्ये स्थाप्यते चत्वार ऊर्मेण पूर्वादिषु पदयते-तत्रो ज प्रदेशप्रतरवृत्त पञ्चपरमाणुनिष्पन्न पञ्चाकाशप्रदेशावगाढञ्च तद्यथा-गक परमाणुमध्ये स्थाप्यते चत्वार ऊर्मेण पूर्वादिषु तवष्टयु दिक्षु, युग्मप्रदेशप्रतरवृत्त द्वादशपरमाण्वात्मक द्वादशप्रदेशावगाढञ्च तत्र निरन्तर चत्वार परमाणव द्युतुर्गोकाशप्रदेशेषु रुच काकारेण व्यवस्थाप्यन्ते तत स्तत्परिक्षेपेण शोपा आटी ॥ उज प्रदेशचरुत सप्तपरमाण्वात्मक सप्तप्रदेशावगाढञ्च तच्चैव-तत्रैव पञ्चप्रदेशे प्रतरवृत्तमप्य स्थितस्य परमाणो रुपरिष्टा दधस्ता च गककोणु रवस्थाप्यते तत एव सप्तप्रदेश युग्मप्रदेश चतुर्गोकाशप्रदेशावगाढञ्च द्वात्रिंशत्प्रदेशावगाढञ्च तच्चैव-पूर्वाक्तद्वादशप्रदेशात्मकस्य प्रतरवृत्तस्योपरि द्वादश तत उपरिष्टा दधया न्येचत्वारद्यत्वार परमाणव इति ॥ उज प्रदेश प्रतरवृत्त त्रिम देश त्रिमप्रदेशावगाढञ्च तच्चैव-पूर्व नियन्त्रणद्वय न्यम्यते तत आद्यस्या च गकोणु ॥ युग्मप्रदेशप्रतरवृत्त पट्परमाणुनिष्पन्न पट्प्रदेशावगाढञ्च तत्र तियन्निरन्तर तय परमाण्व स्थाप्यन्ते तत आद्यस्या च उपर्यधोभावेना गुद्वय द्वितीयस्याच गकोणु स्थापना ॥ उज प्रदेश पनवृत्त पञ्चत्रि

गया ते पञ्चविधा पञ्चता, तजहा-परिमङ्गलसंस्थानपरिणता बहुसंस्थाणपरिणता तससंस्थाणपरिणता चउर

रिणता ते पञ्चविधा पञ्चता तजहा। त्रिके संस्थान परिणत तेहना पाचप्रकार कथा तेहोश कहैके-परिमङ्गलसंस्थाण प० वट्टसंस्थाण प० तससंस्थाण प० चउरमसंस्थाण प० आययसंस्थाण परिणता। परिमङ्गलसंस्थान परिणत वलयनीपरे, सत्तसंस्थान परिणत कानचकनोपरे, श्यग विखूणो संस्थानपरिणत सवाडानोपरे, चतरस चौखूणो संस्थानपरिणत कुम्भापरे, आयतसंस्थानपरिणत टण्डनोपरे, पञ्चपरमाणु नियन्त्र पचाकाशप्रदेशावगाढ इस सर्व

जगत्परमाणुनिष्पन्न पञ्चविंशप्रदेशावगाढञ्च तच्चैव - तिर्यग् निरन्तरा पञ्चपरमाणव स्थाप्यन्ते तेषा चाधोप क्रमेण तिर्यगेव चत्वार रूपो हा
वेकश्चेति पञ्चदशात्मक प्रतरोजात स्थापना ॥ अस्मैव प्रतरोसोपरि सवष्टक्तिषु अन्त्यान्त्यपरित्यागेन दश ॥ १ ॥ तथैव तदुपर्युपरि पट् त्रय
एकश्चेति क्रमणा शय स्थाप्यन्ते स्थापना गतेभीलिता पञ्चविंश द्भवन्ति ॥ युग्मप्रदेशं चतु परमाणवात्मक चतु प्रदेशावगाढ ञ्च तत्र प्रत
रन्त्यस्मैव त्रिप्रदेशात्मकस्य सम्बन्धिन एकस्याणो रूपयैकोणु स्थाप्यते ततो भीलिता द्युत्वारो ज्ञवन्ति ॥ उज प्रदेशं प्रतश्चतुरस्त्रनवपरमाणवात्मकं
नवप्रदेशावगाढञ्च तत्र तिर्यग्निरन्तर त्रिप्रदेशा स्तिस्र पङ्क्तय स्थाप्यन्ते युग्मप्रदेशं प्रतश्चतुरस्त्रं चतु परमाणवात्मक चतु प्रदेशावगाढञ्च तत्र
तिर्यग्प्रदेशो द्वेपङ्क्ती स्थाप्यते, उज प्रदेशं चतुरस्त्रं समविंशतिप्रदेशावगाढञ्च तत्र नवप्रदेशात्मकस्यैव पूर्वोक्तस्य प्रत
रस्या घटपरिच नवप्रदेशा स्थाप्यन्ते तत समविंशतिपरमाणवात्मकं मोज प्रदेशं चतुरस्त्रं ज्ञवति स्थापनासैव, युग्मप्रदेशं घनचतुरस्त्रं मष्टपरमा

णवात्मकं मष्टप्रदेशावगाढञ्च तच्चैव - चतु प्रदशात्मकस्य पूर्वोक्तस्य प्रतरोसोपरि चत्वारोर्न्य परमाणव स्थाप्यन्ते इति ॥ उज प्रदेशं आयत त्रिपर
माणु त्रिप्रदेशावगाढञ्च तत्र तिर्यग्निरन्तर त्रय स्थाप्यन्ते ॥ युग्मप्रदेशं श्रेण्यायत द्विपरमाणु द्विप्रदेशावगाढञ्च तथैवा गुट्टय स्थाप्यते ॥ उज
प्रदेशं प्रतरायत पञ्चदशपरमाणवात्मकं पञ्चदशप्रदेशावगाढञ्च तत्र पञ्चदशप्रदेशात्मिका स्तिस्र पङ्क्तय स्तियंक्स्थाप्यन्ते ॥ युग्मप्रदेशं प्रतरायतं
पट्प्रदेशात्मकं पट्प्रदेशावगाढञ्च तत्र त्रिप्रदेशं पङ्क्तिद्वय स्थाप्यते स्थापना, उज प्रदेशं घनायत पञ्चचत्वारिंशत्परमाणवात्मकं ताव त्रप्रदेशावगाढ
ञ्च तत्र पूर्वोक्तस्यैव प्रतरायतस्य पञ्चदशप्रदेशात्मकस्याघटपरि तथैव पञ्चदशपरमाणव स्थाप्यन्ते ॥ युग्मप्रदेशं घनायत द्वादशपरमाणवात्मक
द्वादशप्रदेशावगाढञ्च तत्र प्रागुक्तस्य पट्प्रदेशस्य प्रतरायतसोपरि तथैव तावन्त परमाणव स्थाप्यन्ते ॥ प्रतरपरिमण्डल विंशतिपरमाणवात्म
क विंशतिप्रदेशावगाढञ्च तच्चैव - प्राच्यादिषु षतसुपु दितु प्रत्येक चत्वारश्चत्वारो शय स्थाप्यन्ते विदिक्षुच प्रत्येक मैकेकोणु स्थाप्यते ॥ घनप

रिमगल चत्वारिंशत्प्रदेशावगाढं स्वत्वारिंशत्परमावस्थात्मकं च तत्र तस्या गत्व विज्ञाते रूपरितना तथैवाभ्याविशति रवस्थाप्यते इत्यर्थेपा प्ररू
पण मितोरपि न्यूनप्रदेशताया यथोक्तसंस्थानावावात्, एतत्सङ्ग्राहिका ये मा उत्तराध्ययननियुक्तिगाथा -परिमणले य वहे, तसे चउरसत्राय
ए चेव ॥ घणपयर पदमवज्ज, उजपएसे य जुक्केम ॥ १ ॥ पचगधारसगखलु, सतगवतीसगच वहमि ॥ तियबक्क पचतीसा, चत्तारियहोति तस
मि ॥ २ ॥ नय वेउतहाचउरे, सत्तावीसाय ऋठ चउरसे ॥ तिगदुग पन्नरसेवय, खवेवय आयएहोति ॥ ३ ॥ पणयाला यारसग, तह वेवय आ
ययसि सहाणे ॥ वीसाचत्तालीसा परिमणलेयसहाणे ॥ ४ ॥ इति ॥ सप्रत्येतेपा मेव वर्णादीना परस्परसम्बन्धमाह-जेवत्ततोइत्यादि ॥ येरऊ
न्धादयो वर्णन्ते वण्णमाश्रित्य कालवर्णपरिणताश्चपि ज्ञयन्ति ते सुरभिगन्धपरिणताश्चपि ॥ किमुक्तं भवति ? गन्ध
मपिरूपं ते प्राज्या कंचित्सुरभिगन्धपरिणता भवन्ति केचिदुरभिगन्धपरिणता, नतु प्रतिनियतैकगन्धपरिणामपरिणताइति, एवञ्चरसतं रूप

ससंठाणपरिणया आयतसंठाणपरिणया ॥ जे वखनु कालवखणपरिणया ते गधनु सुग्नगधपरिणयावि दुग्नि
गधपरिणयावि, रसनु तित्तरसपरिणतावि कस्यारसपरिणतावि अविहरसपरिणता
वि मज्जरसपरिणतावि, फासनु कक्कफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरूयफासपरिणतावि लज्ज
यफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उसिणफासपरिणतावि णिरुफासपरिणतावि लुक्कफासपरिणतावि

स्यापनायेर५ क्का, द्विये परस्पर वर्णादिं सबजभाङ्गा कहैले—जे कालवखणपरिणया । जे वर्णयो कालवर्णं परिणतहुवे तथा । तेगधयो । ते गन्धयो । स
भिग्रा दुग्निगधपरिणयावि । सुगन्ध तथा दुग्गेन्धगन्धे परिणतहुवे । रसयो । रसयो । रसयो । रसयो । कस्यारस प० अविहरस प० मज्जरसपरि
णयावि । तित्तरसपरिणतहवे कीर् कट्टकरस परिणतहुवे कीर् कट्टकरस परिणतहुवे कीर् मधरस परिणतहुवे । फासयो क
क्कफास प० मउयफास प० गरूयफास प० लज्जफास प० सीतफास प० उसिणफास प० णिरुफास प० लुक्कफासपरिणया । स्पर्शयो को कर्कय परिणतहुवे

शत मस्यानतश्च वाच्या , तत्र द्वौगर्थौ . पञ्चरसा , अष्टौस्पृशौ , पञ्चसस्थानानि , एतेच मीलिता विशतिरिति ॥ कामवर्णपरिणता गतावन्तो भङ्गान्भन्ते २० , यव नीलवर्णपरिणता अपि २० , लोहितवर्णपरिणता अपि २० , हारिद्रवर्णपरिणता अपि २० , शुक्लवर्णपरिणता अपि २० , एवं

॥ टीक

॥ मूल

॥ भाषा

मठाणनु परिमळलसंठाणपरिणतावि वट्सठाणपरिणतावि तससठाणपरिणतावि चउरससंठाणपरिणतावि
आयतसठाणपरिणतावि । जेवखनु नीलवखपरिणता ते गधनु सुस्निग्धपरिणतावि दुस्निग्धपरिणतावि ,
रसनु तित्तरसपरिणतावि कसुयरसपरिणतावि कसायरसपरिणतावि अवि्लरसपरिणतावि मज्जरसपरिण
तावि , फासनु कक्कळफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लज्जयफासपरिणतावि
सीतफासपरिणतावि उसिणफासपरिणतावि णिठफासपरिणतावि लुक्कफासपरिणतावि , सठानु परिमळल

यशुभपदेशो साटे, काई'सुदुस्यर्ग परिणतहुवे गुरुस्यर्ग परिणत काई' लघुस्यर्ग परिणतहुवे श्रोतस्यर्ग परिणत उष्णस्यर्ग परिणतहुवे स्निग्धपरिणत काई'
रुक्षस्यर्ग परिणतहुवे । सठाणशोपरिमळलसठाणपरिणता । सख्यानयको कोई' परिमळल सख्यान परिणतहुवे । वट्सठाण प० तंससठाण प० चउर
सठाण प० आयतसठाणपरिणता । काई' वससख्यानपरिणतहुवे अयसख्यान परिणतहुवे काई' चउरससख्याने परिणतहुवे आयतसख्यान परिणत
हुवे । जेवणआणीनवखपरिणता । जिकिर्णयको नीलवर्ण परिणतहुवे । तेगधशो सुभिग्ध प० दुभिग्ध परिणतावि । ते गन्धकी सुगन्ध परिणतहुवे सु
गन्ध परिणतहुवे । रसशो । रसयको । तित्तरस प० कडुयस प० कसायस प० अविक्करस प० मज्जरसपरिणता । तित्तरस परिणत हुवे कट्क
रस परिणतहुवे कसायस पारणतहुवे आवि्लरस परिणतहुवे सीठारस परिणतहुवे । फासशो । रसयकी । कक्कळफास प० मउयफास प० गरुयफा
स प० लज्जयफास प० सीयफास प० उसिणफास प० णिठफास प० लुक्कफास प० कसवफास प० मउयफास प० मज्जरसपरिणतहुवे श्रोतस्यर्गपरिणत हुवे उष्णस्यर्गपरिणतहुवे स्निग्धस्यर्गपरिणतहुवे । सठाणशो परिमळलसठाणपरि

संस्थापणपरिणतावि बहुसंस्थापणपरिणतावि चउरससंस्थापणपरिणतावि आयातसंस्थापणपरि
 गतावि । जे वखन लोहियवखपरिणता ते गधन सुप्रिगधपरिणतावि दुप्रिगधपरिणतावि, रसन तितरस
 परिणतावि कठुरसपरिणतावि कसायरसपरिणतावि अविहरसपरिणतावि मज्जरसपरिणतावि, फासन
 कककफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लज्जयफासपरिणतावि सीतफासपरिण
 तावि उसिणफासपरिणतावि णिठफासपरिणतावि लुक्कफासपरिणतावि, संस्थापण परिमळसंस्थापणपरिण
 तावि बहुसंस्थापणपरिणतावि तससंस्थापणपरिणतावि चउरससंस्थापणपरिणतावि आयातसंस्थापणपरिणतावि ।

पया । संस्थानयको परिमळसंस्थान परिणतहुवे । बहुसंस्थापण प० चउरससंस्थापण प० आयातसंस्थापणपरिणत
 हुवे कोइ नयसंस्थानपरिणतहुवे कोइ चतुरस्रसंस्थानपरिणतहुवे आयातसंस्थानपरिणतहुवे ॥ जेवखनो कोइवखपरिणतया । जेवखनो लोहितवर्ण
 परिणतहुवे । ते गधनो । ते गन्धको । सुभिगध प० दुभिगध परिणतयावि । मुग्ध परिणत पिणतहुवे दुग्धपरिणत यणितहुवे । रसको । रसधको । तिसरस
 प० कठुरस प० कसायरस प० मज्जरस प० अविहरस प० तितरसपरिणतहुवे कटुरसपरिणतहुवे आयातसपरिणतहुवे
 तहुवे मधुरसपरिणत हुवे । फासको । रसधको । लज्जयफास प० गरुयफास प० मउयफास प० कककफास प० उसिणफास प० णिठफास
 प० लल्लफास परिणतयावि । कर्कशपरिणतहुवे कटुरसपरिणतहुवे गरुयफासपरिणतहुवे लज्जयफासपरिणतहुवे उसिणफासपरिणतहुवे
 रिणतहुवे स्निग्धपरिणतहुवे चउरसपरिणतहुवे । संस्थापण प० परिमळसंस्थापणपरिणतया । परिमळसंस्थान परिणत हुवे । बहुस
 ठाण प० तससंस्थापण प० चउरससंस्थापणपरिणतया । कोइ तससंस्थान परिणतहुवे कोइ नयसंस्थानपरिणतहुवे कोइ चतुरस्रसंस्थापणपरिणत
 स्थानते परिणत हुवे ॥ जेवखनो । जे रसधको । जे गन्धको । जे गधनो । ते गधनो । ते गन्धको । सुभिगध दुभि

सपरिणतावि उसिणफासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि, सठाणनु परिमंलसठाण
परिणतावि वहसठाणपरिणतावि तससठाणपरिणतावि चउरससठाणपरिणतावि अ्यायतसठाणपरिणतावि
जेगंधनु सुझिगंधपरिणता ते वसुनु कालवसुपरिणतावि नीलवसुपरिणतावि लोहितवसुपरिणतावि हालि
द्वसुपरिणतावि सुक्खिवसुपरिणतावि, रसनु तित्तरसपरिणतावि कहुयरसपरिणतावि कसायरसपरिणता
वि अचिलरसपरिणतावि मज्जरसपरिणतावि, फासनु ककठफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुय
फासपरिणतावि लज्जफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उसिणफासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि
लुक्कफासपरिणतावि, सठाणनु परिमंलसठाणपरिणतावि वहसठाणपरिणतावि तंससठाणपरिणतावि च
उरससठाणपरिणतावि अ्यायतसठाणपरिणतावि जेगंधनु दुझिगंधपरिणता ते वसुनु कालवसुपरिणतावि

गगत् जिहालगे रूक्षरपग् परिणतहुवे इमहोज भाठबार कहवा । सठाणओपरिमंलसठाणपरिणता । सस्यानयको परिमंलसस्यान परिणत हुवे । जा
वआगमठाणपरिणतावि । यावत् जिहालगे आगतसस्यानपरिणतहुवे । जे गंधओ सुझिगंध परिणता । जे गंधयको दुसुगंध परिणतहुवे । ते वसुओ
कालवसुपरिणतावि नीलवसु प० लोहितवसु प० सुक्खिवसुपरिणतावि । ते वसुओ कोइ कालेवर्ण परिणतहुवे कोइ नीलवर्ण परि
णतहुवे रतैवर्ण परिणतहुवे पोलेवर्ण परिणतहुवे कोइ स्वेतवर्ण परिणतहुवे । रसओ तित्तरस प० जावमहुयरसपरिणतावि । रसओ तित्तरस परिणत
हुवे गगत् पचम मधररस परिणतहुवे । फासओ ककठफास प० जावसुखफास परिणतावि । रपयओ कर्कशरपग् परिणतहुवे यावत् जिहालगे कोइ
रूक्षरपग् परिणतहुवे । सठाणओ परिमंलसठाण प० जाव आययसठाणपरिणतावि । सस्यानयको कोइ परिमंलसस्यान परिणतहुवे इम यावत्
पचम आयनसस्यानलगे परिणत पिणहुवे । जे गंधओ दुझिगंध प० । जे गंधयको दुरगंध परिणतहुवे । ते वसुओ कालवसु प० जावसुक्खिवसुपरिण

जेयणुं हालिहुवखपरिणता ते गधनुं सुस्निग्धपरिणतावि दुस्निग्धपरिणतावि, रसनुं तित्तरसपरिणता
 वि कहुयरसपरिणतावि कसायरसपरिणतावि अविहरसपरिणतावि मज्जरसपरिणतावि, फासनुं कस्कर
 फासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लज्जफासपरि० सीयफासपरि० उसिणफासपरि० णिठफास
 परि० लुक्कफासपरिणतावि, सठाणनुं परिमळसठाणपरि० बहसंठाणपरि० तससठाणपरि० चउरसस
 ठाणपरि० आयतसठाणपरिणतावि । जेवखनुं सुक्खिन्नवखपरिणता ते गधनुं सुस्निग्धपरिणतावि दुस्निग्ध
 परिणतावि, रसनुं तित्तरसपरि० कहुयरसपरि० कसायरसपरि० अविहरसपरि० मज्जरसपरिणतावि,
 फासनुं कस्करफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लज्जफासपरिणतावि सीयफा

गध परि० । सुगन्ध दुरगन्ध परिणतहुवे । रसको । रसघको । तित्तरस प० कहुयरस प० कसायरस प० अविहरस प० मज्जरसपरिणतावि ।
 तित्तरस परिणत हुवे कटकरस परिणतहुवे कसायरस परिणतहुवे अविहरस परिणतहुवे मधुररस परिणतहुवे । फासको कस्करफास प० मउयफास
 प० गरुयफास प० लहुयफास प० सीयफास प० उसिणफास प० लुक्कफासपरिणतावि । स्पर्शयको कर्कययं प० अदुःखं प० गुरुपयं
 प० लघुपयं प० शोतरपयं प० उष्णपयं प० शीतपयं प० रुचस्पयं परिणत हुवे । सठाणको परिमळ स० बह स० तस स० चउरस स० आयतसठा
 ण परिणतहुवे । सस्थानयको परिमडनसस्थान परिणतहुवे कोइ वससस्थान परिणतहुवे कोइ गयस सभ्बान प० कोइ बहुरससस्थान प० कोइ आयत
 रगन्ध परिणतहुवे । रसको तित्तरस प० कहुयरस प० कसायरस प० अविहरस प० मज्जरसपरिणतावि । रसघको तित्तरस प० कटकरस प० क
 सायरस प० आविहरस प० मधुररस परिणत हुवे । फासको कस्करफास परिणतावि । स्पर्शयको, कोइ कर्कययं परिणत हुवे । जावलुक्कफास प०

पञ्चजि वंगलब्ध इत १००, गन्धमपिकत्याह-जेगन्धइत्यादि ॥ ये गन्धयोगन्धमधिकृत्य सुरजिगन्धपरिणामपरिणता स्ते वर्णते कालवर्णपरिणता

नीलवस्त्रपारणतावि लोहितवस्त्रपारिणतावि हालिद्ववस्त्रपारिणतावि सुक्लिप्तवस्त्रपारिणतावि, रसनु तित्तरसप
रिणतावि कुरुयसपरिणतावि कसायसपरिणतावि अंबिलरसपरिणतावि मञ्जरसपरिणतावि, फासनु क
रुक्कफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लज्जयफासपरिणतावि सीतफासपरिणता
वि उंसिणफासपरिणतावि णिठफासपरिणतावि लुक्कफासपरिणतावि, सठाणनु परिमळसठाणपरिणता
वि बट्टमठाणपरिणतावि तंससठाणपरिणतावि चउरससठाणपरिणतावि अयतसठाणपरिणतावि । जेरस
नु तित्तरसपरिणता ते वसनु कालवस्त्रपारिणतावि नीलवस्त्रपारिणतावि लोहियवस्त्रपारिणतावि हालिद्ववस्त्र
परिणतावि सुक्लिप्तवस्त्रपारिणतावि, गधनु सुस्निग्धपरिणतावि दुस्निग्धपरिणतावि, फासनु करुक्कफासप
रिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लज्जयफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उंसिण
वि । ते वसुधकी कोइ हाणयणे परिणतवट्टने इत्येवमपि ।

च परिणतह्वे दम यावत् कोइक मधुररसपरिणतह्वे । रसओ तितरस प० जाव मधुररसपरिणयावि । रसयको तितर
 रसपर्यं परिणतह्वे । सठाणओ परिमडनसठाण प० जाव काखडफान प० जावलुखफानसपरिणयावि । रसयको कंकयपर्यं परिणतह्वे यावत्
 परिणतह्वे । जे रसओ तितरसपरिणया । जे रसयको तितरस परिणतह्वे । तेवसओ काखण जावसुक्खिअवसपरिणया । ते वर्णयको कालवर्ण परि
 णतह्वे दम यावत् शुक्खवर्ण परिणतह्वे । गंधओ सविगंध दुग्धिगंध परिणयावि । गंधयको सुगंध दुरगंध परिणतह्वे । फासओ कखडफान आवलुख
 फास परिणयावि । कंकयपर्यं परिणतह्वे दम यावत् रुसरपर्यं परिणतह्वे । सठाणओ परिमडनसठाण प० जावभावयसठाणपरिणयावि । सस्यानय

अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि ८ एव रसत ५ स्पर्शत ८ संस्थानत ५ एतेषु मीलिता खयोपि यतिरिति सुरजिगन्धपरिणता खयोपि यतिरिति अह्नान्जनन्ते, एव दुरजिगन्धपरिणता अपि २३ ततो गन्धपदेन लब्ध्या भङ्गाना यद्वत् स्वारिशात्, रसमधिकृत्याह-ये रसतो रसमधिकृत्य तित्करसपरिणता स्तो वर्णत ५ गन्धत २ स्पर्शत ८ संस्थानत ५ एते सर्वेपि एकत्र मीलिता यतिरिति ॥ तित्करसपरिणता विशतिभङ्गा ह्यन्ते २०, एव कटुकरसपरिणता २०, कषायरसपरिणता २०, अम्लरसपरिणता २०, मधुररसप

कासपरिणतापि णिष्ठफासपरिणतापि लुक्फासपरिणतापि, सठाणन् परिमल्लसठाणपरिणतापि वहसठाणपरिणतापि तससठाणपरिणतापि चउरससठाणपरिणतापि आयतसठाणपरिणतापि। जेरसन् कण्डुररसपरिणता ते वसन् कालवसपरिणतापि नीलवसपरिणतापि लोहितवसपरिणतापि हालिद्वसपरिणतापि सुक्लिप्तवसपरिणतापि, गधन् सुस्निग्धपरिणतापि दुस्निग्धपरिणतापि, फासन् कसकफासप० मउयफासपरि० गह्वरफासपरि० लज्जयफासपरि० सीयफासपरि० उसिणफासपरि० णिष्ठफासप० लुक्फासपरिणतापि, सठाणन् परिमल्लसठाणपरि० वहसठाणपरि० चउरससठाणप० आयतसठाणप

को परिमल्लसंस्थानपरिणतहुवे इम यावत् प्रायतसंस्थान परिणतहुवे ॥ जे रसभा कडुररसपरिणया । जिके रसयको कटुकरस परिणतहुव । तैवणाओ कालवसपरिणयापि । ते वर्णयको काई कालवर्ण परिणतहुवे । जावत्सक्लिप्तवसपरिणयापि । यावत् कोई शुक्लवण परिणतहुवे । गधभा सुभिगध प० दुभिगध परिणयापि । गन्धयको सुगन्ध गध परिणत हुवे दुग्ध परिणत हुने । फासभा कसकफास प० जावत्सुक्लफास परिणयापि । स्पर्शयको कर्कश रसपरिणत हुवे इम यावत् रुक्षरसपरिणतहुवे । सठाणओ परिमल्लसठाण प० जावत् प्रायतसठाणपरिणयापि । संस्थानयको परिमल्लसंस्थान परिणत पिणहुवे यावत् गग्गे जिह्वालगे प्रायतसंस्थान परिणत संस्थान हुवे ॥ जे रसभा कषायरस अविश मधुररस परिणया । जे रसयको कषायरस आ

पञ्चत्रि वर्णलेख्य इत १००, गन्धमधिकृत्याह-जेगन्धजुइत्यादि ॥ ये गन्धतोगन्धपरिणामधिकृत्य सुरजिगन्धपरिणामपरिणता स्ते वर्णत कालवर्णपरिणता

नीलवस्त्रपरिणतावि लोहितवस्त्रपरिणतावि हालिद्ववस्त्रपरिणतावि सुक्लिप्तवस्त्रपरिणतावि, रसनु तित्तरसपरिणतावि कद्रुयस्त्रपरिणतावि कसायस्त्रपरिणतावि अत्रिलरसपरिणतावि मञ्जरसपरिणतावि, फासनु क रक्तफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लज्जयफासपरिणतावि सीतफासपरिणता वि उस्मिणफासपरिणतावि निष्ठफासपरिणतावि लुक्फासपरिणतावि, सठाणनु परिमल्लसठाणपरिणता वि बहुसठाणपरिणतावि तससठाणपरिणतावि चउरससठाणपरिणतावि अयतसठाणपरिणतावि । जेरस नु तित्तरसपरिणता ते वस्त्रनु कालवस्त्रपरिणतावि नीलवस्त्रपरिणतावि लोहियवस्त्रपरिणतावि हालिद्ववस्त्र परिणतावि सुक्लिप्तवस्त्रपरिणतावि, गधनु सुस्निग्धपरिणतावि दुस्निग्धपरिणतावि, फासनु कक्कळफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लज्जयफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उस्मिण वि । ते वर्णयथो कोई कण्ठवण परिणतल्लवे इम गगल्ल कोई

यावि । ते वर्षथकी कोई कणवण परिणतहुवे इम यावत् कोई शुक्लवर्ण परिणतहुवे । रसभो तित्तरस प० जाव मधुररसपरिणयावि । रसयको तित्तर स परिणतहुवे इम यावत् कोईक मधुररसपरिणतहुव । फासभो कक्खडफाम प० जावसुखफासपरिणयावि । रसगंधको कर्कयरपग परिणतहुवे यावत् रुक्षरसग परिणतहुवे । सठाणभो परिमडनसठाण प० जाव भावयसठाणपरिणयावि । सस्यानयको परिमडनमस्थान परिणतहुवे यावत् भायतसस्यान परिणतहुवे ॥ जे रसभो तित्तरसपरिणया । जे रमथको तित्तरस परिणतहुवे । तेवसभो कासवण जावसुखिणवणपरिणया । ते यण्यको कासवण परिणतहुवे इम यावत् शुक्लवर्ण परिणतहुवे । गंधभो सुग्धिगंध दुग्धिगंध परिणयावि । गंधयको सुगंध दुरगंध परिणतहुवे । फासभो कक्खडफाम जावत् फास परिणयावि । कर्कयरपग परिणतहुवे इम यावत् रुक्षरसग परिणतहुवे । सठाणभो परिमडनसठाण प० जाव भाययसठाणपरिणयावि । सस्यानय

अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हृदिद्रव्यपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि ८ एव रसतः ५ रसज्ञातः ॥ सस्यानतः ५ एतेषु मीलिता खयोयिष्यति रिति सुरजिगन्धपरिणता खयोविज्ञति जङ्गान्जलजन्ते, एव दुरजिगन्धपरिणता अपि २३' ततो गन्धपदेन लक्ष्या भङ्गाना पट्टेष्वारिज्ञत्, रसमधिकृत्याह-ये रसतो रसमधिकृत्य तित्करसपरिणता स्ते वर्णतः ५ गन्धतः २ रसज्ञातः ॥ सस्यानतः ५ एते सर्वेऽपि एकत्र मीलिता यिष्यतिरिति ॥ तित्करसपरिणता विशतिजङ्गा क्षमन्ते २०, एव कटुकरसपरिणता २०, कषायरसपरिणता २०, अम्लरसपरिणता २०, मधुररसप

कासपरिणता वि णिष्ठकासपरिणता वि लुक्कासपरिणता वि, सठाणन् परिमल्लसठाणपरिणता वि वहसठाणपरिणता वि तप्तसठाणपरिणता वि चउरससठाणपरिणता वि ज्ञायतसठाणपरिणता वि। जेरसन् कटुयरसपरिणता ते वसानं कालधसपरिणता वि नीलधसपरिणता वि लोहितवसपरिणता वि हालिहवसपरिणता वि सुक्लिप्तवसपरिणता वि, गधन् सुस्निग्धपरिणता वि दुस्निग्धपरिणता वि, फासन् कक्कळफासप० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीयफासपरि० उंसिणफासपरि० णिष्ठफासप० लुक्कासपरिणता वि, सठाणन् परिमल्लसठाणपरि० वहसठाणपरि० तप्तसठाणपरि० चउरससठाणपरि० ज्ञायतसठाणपरि०

को परिमल्लसस्यानपरिणतहुवे इम यावत पायतसस्यान परिणतहुवे ॥ जे रसभा कटुयरसपरिणता । जिके रसयको कटुकरस परिणतहुव । तंयसुओ कालिधसपरिणता वि । ते वर्णयको कालि कालिधसपरिणतहुवे । जावत कोइ शुक्लवण परिणतहुवे । गधको सुभिगध प० दुभिगध परिणता वि। गन्धयको सुगन्ध गन्ध परिणत हुवे दुर्गन्ध परिणत हुवे । फासको कक्कळफास प० जावल्लसठाणपरिणता वि । रसयको कर्कय रसपरिणत हुवे इम यावत कंचरपरिणतहुवे । सठाणओ परिमल्लसठाण प० जाव ज्ञायतसठाणपरिणता वि । सस्यानयको परिमल्लसस्यान परिणत पिणतहुवे यावत गधदे जिहासगे आगतसस्यान परिणत सस्यान हुवे ॥ जे रसको कषायरस अविश मधुररस परिणता । जे रसयको कषायरस आ

રિણતાવિ । જે રસનું કસાયરસપરિણતા તે વચ્ચન કાલવચ્ચપરિ० નીલવચ્ચપરિ० લોહિતવચ્ચપરિ० હાલિ
 ચુક્તિલવચ્ચપરિણતાવિ, ગચન સુશ્લિગંધપરિણતાવિ દુશ્લિગંધપરિણતાવિ, ફાસન કચ્છકા
 યફાસપરિ० ગરુયફાસપરિ० લજ્જયફાસપરિ० સીતફાસપરિ० ડસિગફાસપરિ० ગિદ્ધફાસપરિ०
 રિણતાવિ, સંઠાણનું પરિ કુલસુ ાણપરિ० વહસઠાણપરિ० તંસસઠાણપરિ० ચડરસસંઠાણપરિ०
 ાણપરિણતાવિ ।

॥ મૂલ ॥

સપરિ०, ગચન સુશ્લિગંધપરિણતાવિ કાલવચ્ચપરિ० નીલવચ્ચપરિ० ચડરસસંઠાણપરિ०
 સપરિ० લજ્જયફાસપરિ० લજ્જયફાસપરિ० સીયફાસપરિ० ડસિગફાસપરિ०
 ! સઠાણનું પરિમઠલસઠાણપરિ० વહસઠાણપરિ० ડસિગફાસપરિ०
 પરિણતાવિ । જે રસનું મજારપરિણતા તે વચ્ચન કાલવચ્ચપરિ० તંસસઠાણપરિ०
 પ રે०
 ડસિગફાસપરિ०, ગચન સુશ્લિગંધપરિણતાવિ કાલવચ્ચપરિ० નીલવચ્ચપરિ०
 ડસિગફાસપરિ०, ગચન સુશ્લિગંધપરિણતાવિ દુશ્લિગંધપરિણતાવિ

પરિણતાવિ

रिणता २०, स्य रमप-कसयोगे लब्ध नङ्काना ज्ञत १००, स्पर्धोमधिकृत्याह-ये फासतो-कस्त्रकफासपरिणयादित्यादि ॥ ये स्पर्शत कर्कशस्पर्शोपरि

फासपरि० निद्रफासपरि० लुक्फासपरिणतावि, सठाणनु परिमलसठाणपरि० वहसठाणपरि० तसस
ठाणपरि० चउरससठाणपरि० घ्यायतसठाणपरिणतावि ॥ जे फासनु कककफासपरि० ते वसुनु कालव
खपरि० नीलवखपरि० लोहितवखपरि० हालिद्ववखपरि० सुक्लिन्नवखपरिणतावि, गधनु सुस्निगवपरि०
दुस्निगधपरिणतावि, रसनु तित्तरसपरि० कठुरसपरि० कसायरसपरि० अ्विलरसपरि० मज्जरसपरिण
तावि, फासनु गरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० निद्रफासपरि० लुक्
फासपरिणतावि, सठाणनु परिमलसठाणपरि० वहसठाणपरि० तससठाणपरि० चउरससठाणपरि० लुक्
घ्यायतसठाणपरिणतावि । जे फासनु मउयफासपरि० ते वसुनु कालवखपरि० नीलवखपरि० लोहितवख

वायवसठाणपरिणयादि । परिमलसस्थानयको परिणत पिणहुवे ॥ ज फासभो कखडफास प० ते वसुभो
जानयसप० । जे स्पर्शयको ककय परिणतहुवे ते वर्णयको काखेवर्ण परिणत पिणहुवे । जावसुक्लिन्नवखपरिणयावि । यावत् शुक्लवर्ण परिणत हुवे । ग
धया सुभिगध प० दुभिगध परिणयावि । गरुधयको सरभिगध परिणतहुवे दूरभिगध परिणतहुवे । रसभो तित्तरस प० जायमज्जरस परिणयावि । रस
यको तित्तरस परिणतहुवे यावत् मधुररस परिणत हुवे । फासभो गरुयफास प० लज्जयफास प० सीयफास प० उसिणफास प० निद्रफास प० सुद्वफा
सपरिणयावि । स्पर्शयको मउरपर्म परिणतहुवे लघुपर्म परिणत हुवे श्रौतसर्म परिणत हुवे स्निग्धसर्म परिणतहुवे रूक्षसर्म परि
णतहुवे । मठाणभो परिमलसठाण प० जाव वायवसठाणपरिणयावि । सस्थानयको परिमलसस्थानपरिणत पिण हुवे यावत् वायवसस्थानपरिण
तहुवे । लेफासभो मउयफास प० । जे स्पर्शयको यदुसर्म परिणतहुवे । ते यखभो कालवख प० जाव सुक्लिन्नवख परिणयावि । ते वर्णयको काखेवर्ण परिण

रिणतावि । जे रसने कसायसपरिणता ते वखने कालवखपरि० नीलवखपरि० लोहितवखपरि० हालि
 दवखपरि० सुक्लिबवखपरिणतावि, गधने सुस्निग्धपरिणतावि दुस्निग्धपरिणतावि, फासने कक्कळफा
 सपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उंसिणफासपरि० णिच्छफासपरि०
 लुक्कफासपरिणतावि, सठाणने परिमळलसठाणपरि० वहसठाणपरि० तससठाणप० चउरससठाणप०
 आयतसठाणपरिणतावि । जे रसने आविलरसपरिणता ते वखने कालवखपरि० नीलवखपरि० लोहितव
 खपरि० हालिद्ववखपरि० सुक्लिबवखपरिणतावि, गधने सुस्निग्धपरिणतावि दुस्निग्धपरिणतावि, फासने
 कक्कळफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीयफासपरि० उंसिणफासपरि०
 णिच्छफासपरि० लुक्कफासपरिणतावि । सठाणने परिमळलसठाणपरि० वहसठाणपरि० तससठाणपरि०
 चउरससठाणपरि० आयतसठाणपरिणतावि । जे रसने मऊरपरिणता ते वखने कालवखपरि० नीलवखप०
 लोहितवखपरि० हालिद्ववखपरि० सुक्लिबवखपरिणतावि, गधने सुस्निग्धपरिणतावि दुस्निग्धपरिणता
 वि, फासने कक्कळफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उंसिण

विलरस मधुररस परिणतहुवे । ते वखनो कासवख प० जाव सुक्लिबवखपरिणतावि । ते वखनो कासेवख परिणत पिणहुवे यावत् शुक्लवर्ण परिणत
 हुवे । गधनो सुस्निग्ध प० दुस्निग्धपरिणतावि । ते गरुयको सुगन्धपरिणत पिणहुवे । फासनो कक्कळफास प०
 जाव नसखफासपरिणतावि । रपयको कर्कशरपय परिणत पिणहुवे यावत् क्वचरपय परिणत पिणहुवे । सठाणनो परिसळलसठाण प० जाव

ते कंसस्यशोपरिणता २३. एतायन्त्ययसुदुस्पर्यशोपरिणता २३. गुरुस्पर्शपरिणता २३. लघुस्पर्शपरिणता २३. शीतस्पर्शपरिणता २३. उष्णस्पर्शपरिणता २३.

फासपरिणतायि उसिणफासपरि० णिष्ठफासपरि० लुक्फासपरिणतावि, सठाणने परिमळलसठाणपरि०
वहसठाणपरि० तससठाणपरि० चउरससठाणपरि० आयतसठाणपरिणतावि । जेफासनुलज्जयफासपरि
णता ते वखुने कालवखुपरि० नीलवखुपरि० लोहितवखुपरि० हालिद्वयखुपरि० सुक्खिवखुपरिणतावि,
गधने सुस्निग्धपरि० दुस्निग्धपरिणतावि, रसने तित्तरसपरि० कटुरसपरि० कसायरसपरि० अचिलर
सपरि० मज्जरसपरिणतावि, फासने कक्कफासपरि० मउयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि०
णिष्ठफासपरि० लुक्फासपरिणतावि, सठाणने परिमळलसठाणपरि० वहसठाणपरि० तससठाणपरि०
चउरससठाणपरि० आयतसठाणपरिणतावि । जे फासने सीतफासपरिणता ते वखुने कालवखुपरि० नी

लुक्फासपरिणतावि । स्पर्शको कर्कशरस्य प० सुदुस्पर्श प० शीतस्पर्श प० उष्णस्पर्श प० काईस्निग्धस्पर्श प० रूक्षस्पर्श परिणतहुवे । सठाणयो प
रिमळलसठाण प० जात्र आयतसठाणपरिणतावि । सस्यानयको परिमळलसस्यान प० यावत् आयतसस्यानपरिणतपिणह्वे ॥ जेफासयो दृष्टुःफास
प० ते वखुओ कालवखु प० जावसक्खिवखुपरिणतावि । जे स्पर्शको सुदुस्पर्श परिणतहुवे । ते वखुओ कालवखु प० यावत् शुक्लवर्णपरिणतहुवे ।
गधओ सुभिगव दुग्धिगध परिणतावि । गधको सुगन्ध दुःगन्ध परिणतहुवे । रसओ तित्तरस प० काव महुररसपरिणतावि । रसको तित्तरस प०
यावत् महुररस परिणतहुवे । फासओ कक्कफास प० मउयफास प० सीयफास प० उसिणफास प० णिष्ठफास प० लुक्फासपरिणतावि । रसग्य
को ककयस्पर्श प० सुदुस्पर्श प० शीतस्पर्श प० उष्णस्पर्श प० काईस्निग्धस्पर्श प० रूक्षस्पर्शपरिणतहुवे । सठाणयो परिमळलसठाण प० जावआयस
ठाणपरिणतावि । सस्यानयको परिमळलसस्यान प० यावत् आयतसस्यान परिणतपिणह्वे ॥ जेफासओ सीयफास प० ते वखुओ कालवखु प० जावसक्खिव

कता स्ते वर्णत ५ गन्धत २ रसत ६ प्रतिपक्षस्पर्शयोगाभावात्, सस्यानत ५ एते सर्वे एकरसमीलिता स्वर्योविशति, एतावन्तो अङ्गाश्च भन्ते

परि० हालिह्वस्पर्शपरि० सुक्लिप्तवस्पर्शपरिणतावि, गधने सुस्निग्धपरि० दुस्निग्धपरिणतावि, रसने तित्तर
रसपरि० कन्दुररसपरि० कसायरसपरि० अञ्जिलरसपरि० मज्जररसपरिणतावि, फासने गरुयफासपरि०
लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिष्ठफासपरि० लुक्कफासपरिणतावि, संठाणने परि
मज्जलसंठाणपरि० वहसंठाणपरि० तससंठाणपरि० चउरससंठाण० आयतसंठाणपरिणतावि । जे फासने
गरुयफासपरिणता ते वस्सने कालवस्पर्शपरि० नीलवस्पर्शपरि० लोहितवस्पर्शपरि० हालिह्वस्पर्शपरि० सुक्लिप्त
वस्पर्शपरिणतावि, गधने सुस्निग्धपरि० दुस्निग्धपरिणतावि, रसने तित्तररसपरि० कन्दुररसपरि० कसायरस
परि० अञ्जिलरसपरि० मज्जररसपरिणतावि, फासने कक्कफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि सीय

त ह्वे । यावत् शुक्लवस्पर्शपरिणतह्वे । गधभो सुस्निग्ध प० दग्धिगधपरिणतावि । गधयको सुस्निग्ध परिणतह्वे । रसभो तित्तर
स प० जावमज्जररस परिणतावि । रसयको तित्तरस परिणतह्वे यावत् मधुररस परिणतह्वे । फासभो गरुयफास प० लज्जयफास प० सीयफास प०
उसिणफास प० णिष्ठफास प० लुक्कफास परिणतावि । स्पर्शयको गुरस्पर्श प० कन्दुरस्पर्श प० शीतरस्पर्श प० कोई चण्यस्पर्श प० कोई च्चिग्धस्पर्श प०
कोई रूक्षस्पर्श परिणतह्वे । संठाणभो परिमज्जलसंठाण प० जावभायतसंठाणपरिणतावि । सस्यानयको परिमज्जलसस्यान परिणतह्वे यावत् आयतस
स्यान परिणतह्वे । जे फासभो गरुयफास प० ते वस्सभो कालवस्पर्श प० जाय सुक्लिप्तवस्पर्शपरिणतावि । जे स्पर्शयको गुरस्पर्श प० ते वर्णयको कालवर्ण प०
यायत शुक्लवस्पर्श परिणतह्वे । गधभो सुस्निग्ध दग्धिगध परिणतावि । गधयको मृगध दग्धिगध परिणत ह्वे । रसभो तित्तररस प० जाव मज्जररस परि
णतावि । रसयको तित्तररस प० यावत् मधुररस परिणतह्वे । फासभो कन्दुरउफास प० मउयफास प० सीयफास प० उसिणफास प० णिष्ठफास प०

परि० वहसठाणपरि० तससठाणपरि० चउरससठाणपरि० आयत्तमठाणपरिणतावि । जे फासनु णिछ
 फासपरिणया ते वखनु कालवखपरि० नीलवखपरि० लोहितवखपरि० हालिद्ववखपरि० सुक्खित्तवखप
 रिणतावि, गधनु सुप्पिगधपरि० दुप्पिगधपरिणतावि, रसनु तित्तरसपरि० कफुत्तरसपरि० कसायससप०
 अचिलरसपरि० मज्जरसपरिणतावि, फासनु करुफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लज्जय
 फासपरि० सीयफासपरि० उसिणफासपरिणतावि, सठाणनु परिमळलसठाणपरि० वहसठाणपरि० तस
 सठाणपरि० चउरससठाणपरि० आयत्तमठाणपरिणतावि । जे फासनु लुक्कफासपरिणता ते वखनु काल
 वखपरि० नीलवखपरि० लोहितवखपरि० हालिद्ववखपरि० सुक्खित्तवखपरिणतावि, गधनु सुप्पिगंधप०

फास प० णिद्धफास प० लुखउफास परिणयावि । रपययको कर्कगरपर्यहुवे सदरपर्य प० गुरुपर्य प० लघुपर्य प० तूत्तरपर्य परिणत
 हवे, सठाणयो परिमडनसठाण प० जाव आयसठाणपरिणयावि । सस्यानयको परिमडलसस्यान यावत् आयत्तमस्यानपरिणतहुवे ॥ जेफामओ णिद्धफा
 स प० ते वखयो कालवख प० जावमुक्खित्तवखपरिणयावि । अथवा जे रपर्ययको खिधरपर्य परिणतहुवे ते वखयो कानिबणं प० यावत् गुल्लवणं परि
 णतहुवे । गधओ सन्निगद दुद्धिमगधपरिणयावि । गधउको नुगय र्गन्धपरिणतहुवे । रसओ तिसदस प० चाव नद्धरसपरिणयावि । रसयको तित्त
 रस प० यावत् मधुररसपरिणतहुवे । फासओ कळडफास प० मउयफास प० मउयफास प० सीयफास प० उसिणफासपरिणयावि ।
 स्यायको कर्कगस्यपरिणतहुवे सदुस्यपरिणतहुवे गुरुपर्य प० सवपर्य प० शीतपर्य प० उष्णपर्य परिणतहुवे । सठाणओ परिमडनमठाण प० जा
 व आयत्तमठाणपरिणयावि । सस्यानयको परिमडनसस्यान परिणतहुवे यावत् आयत्तमस्यानपरिणतहुवे ॥ जेफामओ लुक्कफास प० ते वखओ काल
 वख प० चावमुक्खित्तवखपरिणयावि । जे रपर्ययको रुद्धपर्य परिणतहुवे यावत् गुल्लवणं परिणतहुवे । गधओ सुप्पिभ

लवसपरि० लोहितवसपरि० हालिद्वसपरि० सुक्लिप्तवसपरिणतावि, गधने सुस्निग्धपरि० दुस्निग्धपरिणतावि, रसने तित्तरसपरि० कसायरसपरि० अविस्तरपरि० मज्जरसपरिणतावि, फासने कक्कफासपरि० मउयफासपरि० लज्जफासपरि० णिष्ठफासपरि० लुक्कफासपरिणतावि, सठाणने परिमलसठाणपरि० बहुसठाणपरि० तससठाणपरि० चउरससठाणपरि० आयतसठाणपरिणतावि । जेफासने उस्सिणफासपरि० ते वसने कालवसपरि० नीलवसपरि० लोहियवसपरि० हालिद्वसपरि० सुक्लिप्तवसपरिणतावि, गधने सुस्निग्धपरि० दुस्निग्धपरिणतावि, रसने तित्तरसपरि० कसायरसपरि० अविस्तरपरि० मज्जरसपरिणतावि, फासने कक्कफासपरि० मउयफासपरि० लज्जफासपरि० णिष्ठफासपरि० लुक्कफासपरिणतावि, सठाणने परिमलसठाण

परिणतावि । जे स्पग्धको शोतस्पग्धपरिणत ते वर्ण्यको कालेवर्ण प० यावत् शुक्लवर्ण परिणतहुवे । गधको सुभिग्ध दुर्भिग्धपरिणतावि । गधको सुगन्ध दुर्गन्ध परिणतहुवे । रसको तित्तरसपरिणतावि । रसको तित्तरस प० यावत् मधुररसपरिणतहुवे । फासको कक्कफास प० मउयफास प० लज्जफास प० णिष्ठफास प० लुक्कफासपरिणतावि । स्पग्धको कर्कशपरि० म० सुस्निग्धपरि० म० दुस्निग्धपरि० म० सुदरपरि० म० सुदरपरि० म० लयावत् आयतसंस्थान परिणतहुवे । सठाणको परिमलसठाण प० जाव आयसठाणपरिणतावि । रुस्यानयको परिमलसंस्थान प० ते वर्ण्यको कालेवर्ण प० यावत् शुक्लवर्ण परिणतहुवे । जेफासको उस्सिणफास प० तेवसको कालवस प० जाव सुक्लिप्तवसपरिणतावि । जे स्पग्धको उष्णस्पग्ध प० जाव मधुररस परिणतावि । रसको तित्तरस प० यावत् मधुररस परिणतहुवे । फासको कक्कफास प० मउयफास प० लज्जफास प० णिष्ठफास प० लुक्कफासपरिणतावि ।

परि० बहुसंस्थाणपरि० तसंस्थाणपरि० चउरसंस्थाणपरि० आद्यतसंस्थाणपरि० तावि । जे फासनु गिद्ध
 फासपरिणया ते वखनु कालवखपरि० नीलवखपरि० लोहितवखपरि० हालिद्वयपरि० सुक्लितयणप
 रिणतावि, गधनु सुप्रिगधपरि० दुप्रिगधपरि० तावि, रसनु तित्तरसपरि० रुद्रुयसपरि० रुसायसपरि०
 अचिलरसपरि० मज्जरसपरि० तावि, फासनु करकफासपरि० मउयफासपरि० गरुडफासपरि० लज्जय
 फासपरि० सीयफासपरि० उसिणफासपरि० तावि, संस्थाणनु परिमल्लसंस्थाणपरि० बहुसंस्थाणपरि० तस
 संस्थाणपरि० चउरसंस्थाणपरि० आद्यतसंस्थाणपरि० तावि । जे फासनु लुरकफासपरि० ता ते वखनु काल
 वखपरि० नीलवखपरि० लोहितवखपरि० हालिद्वयपरि० सुक्लितयणपरि० तावि, गधनु सुप्रिगंधपरि०

फास प० गिद्धफास प० सुवखफास परिणयावि । स्वयंयको ककशरपमंहुने सुदरपं प० गुरुपम प० सुदरपम प० खिगधरपम प० रूपायमं परिणत
 हुवे, संस्थाणको परिमल्लसंस्थाण प० जाव आउसंस्थाणपरिणयावि । सत्यानयको परिमल्लसत्यानपरिणतहुवे । खेनामपो दिवफा
 स प० ते वखया कानवख प० नावमुक्लितयणपरिणयावि । पथया जे रपमंयको खिधरपमं परिणतहुवे ते यवेदको कानवख प० यावत् गुक्लितं परि
 णतहुवे । गंधपो सतिगंध दक्षिणयणपरिणयावि । गरुडको मगर दुर्गंधपरिणतहुवे । रसपो तिसरस प० जाव मज्जरसपरिणयावि । रसयको तित्त
 रस प० यावत् मधुररसपरिणतहुवे । फासपो कल्लकफास प० मउयफास प० गरुडफास प० सीयफास प० उसिणफासपरिणयावि ।
 स्यायको कर्कशयणपरिणतहुवे सुदुस्सयंपरिणतहुवे गुरुस्सयं प० सुवस्सयं प० योतस्सयं प० उरुस्सयं परिणतहुवे । संस्थाणपो परिमल्लसंस्थाण प० जा
 व आउसंस्थाणपरिणयावि । सत्यानयको परिमल्लसत्यान परिणतहुवे यावत् चउरसंस्थाणपरिणतहुवे । खेनामपो सुल्लकाम प० ते यणपो कान
 वख प० जावमुक्लितयणपरिणयावि । जे स्यायको रुक्कयण परिणतहुवे ते यणपो खेतिको परिणतहुवे यावत् गुक्लितं परिणतहुवे । गंधपो सतिगंध

त्रिगंधपत्रोपरिणता २३' रुक्षस्पर्शोपरिणता २३' एतेषा मेकवनीलने जात जङ्गमाना चतुरशीत्यधिकं ज्ञात १८४, सस्थानमधिकृत्याह-जेसठाणउं प रिमगलसठाणपरिणयाइत्यादि ॥ ये सस्थानत परिमगलसस्थानपरिणता स्ते वर्णत ५ गन्धन २ रसत ५ स्पर्शत ८ एते सर्वेऽप्येकत्र मीलिता

दुस्त्रिगंधपरिणतावि, रसने तित्तरसपरि० कफुररसपरि० अण्डिलरसपरि० मज्जररसपरिण तावि, फासने करकफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उंसिण फासपरिणतावि, सठाणने परिमलसठाणपरि० बहुसठाणपरि० तससठाणपरि० चउरससठाणपरि० आयतसठापरि० । जे सठाणने परिमलसठाणपरिणता ते वसने कालवसपरि० नीलवसपरि० लोहित वसपरि० हालिह्वसपरि० सुक्लिह्वसपरिणतावि, गंधने सुस्त्रिगंधपरिणतावि दुस्त्रिगंधपरिणतावि, र सने तित्तरसपरि० कफुररसपरि० कसायरसपरि० अण्डिलरसपरि० मज्जररसपरिणतावि, फासने करकफा सपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उंसिणफासपरि० णिद्धफास

गंध दुग्धिगंधपरिणतावि । गन्धयको सुगन्ध दुग्धगंधपरिणतह्वे । रसको तित्तरस प० जावमहुररस परिणतावि । रसयको तित्तरसपरिणतह्वे यावत् तधुररसपरिणतह्वे । फासको कल्लडफास प० मउयफास प० गरुयफास प० लज्जफास प० सीयफास प० उंसिणफास परिणतावि । रसयको कर्कश रस्ये प० गुनरस्ये प० लक्षरस्ये प० ज्ञोतरस्ये प० उण्णरस्ये परिणतह्वे । सठाणको परिमलसठाण प० जाय आययंठाणपरिणतावि । सस्थानयको परिमलसस्थानपरिणतह्वे यावत् आयतसस्थानपरिणतह्वे ॥ जे सठाणको परिमलसठाण प० ते वसको कालवस प० जाव सुक्लिह्वस परिणता वि । ते वण्येयको कालेवर्णपरिणतह्वे यावत् स्वैतर्यं परिणतह्वे । गंधको सुस्त्रिगंध दुग्धिगंधपरिणतावि । गंधयको सुगंध दुग्धगंधपरिणतह्वे । रसको तित्तरस प० यावत् महुररसपरिणतावि । रसयको तित्तरस यावत् मधुररसपरिणतह्वे । फासको कल्लडफास प० मउयफास प० गरुयफास प० लज्ज

विशति २० सतायन्तो ब्रह्मान् परिमण्डलसंस्थानपरिणता लज्जन्ते, एवं युत्तसंस्थानपरिणता २० ॥ मध्यसंस्थानपरिणता २०, चतुरस्रसंस्थानपरिणता २०, आयतसंस्थानपरिणता २० ॥ अमीषा चैकत्रमीनेन तस्य ब्रह्मकाना ज्ञात, यथाप्य वर्णव्यवसरसपञ्चासंस्थानाना सकलप्रसङ्गलने

परि० लुक्कफासपरिणतावि । जेसठाणने बहुसठाणपरि० ते वखने कालवखपरि० नीलवखपरि० लोहि तवखपरि० हालिद्ववखपरि० सुक्लिषपरिणतावि, गधने सुस्निगधपरि० दुस्निगधपरिणतावि, रसने ति सरसपरि० कटुयरसपरि० कसायरसपरि० अचिलरसपरि० मञ्जररसपरिणतावि, फासने कक्कफासपरि० मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिम्बफासपरि० लुक्क फासपरिणतावि । जेसठाणने तससठाणपरि० ते वखने कालवखपरि० नीलवखपरि० लोहितवखपरि० हालिद्ववखपरि० सुक्लिषवखपरिणतावि, गधने सुस्निगधपरिणतावि दुस्निगधपरिणतावि, रसने तित्तर सपरि० कटुयरसपरि० कसायरसपरि० अचिलरसपरि० मञ्जररसपरिणतावि, फासने कक्कफासपरि०

यफास प० सोयफास प० उमिणफास प० णिडफास प० लुक्कफास परिणयावि । स्पशयको कर्कशपर्यपरिणतहुवे चतुरस्रपरिणतहुवे गुरपर्यपरिण तहुवे चतुरस्रपरिणतहुवे शीतरसपरिणतहुवे उष्णरसपरिणतहुवे क्षिणरसपरिणतहुवे रुचरसपरिणतहुवे ॥ जे सठाणचो यदसठाणपरिणयावि जे संस्थानचो वृत्तसंस्थानपरिणत ते पित्त तेवखचो कालवखप० जावसुक्लिषवखपरिणयावि । ते वर्णयको कालेवर्णपरिणतहुवे यावत् शुक्लवर्णपरिणत हुवे । गधचो सविभ्रम दुविभ्रगधपरिणयावि । गधयको सुगध दग्धपरिणतहुवे । रसचो तित्तरस जाव मञ्जरसपरिणयावि । रसयको तित्तरस जाव च मधुररसपरिणतहुवे । फासचो कक्कफास प० जाव तससठाणपरिणतहुवे यावत् रुचस्यपरिणतहुवे ॥ जेसठाण चो तससठाण प० ते वखचो कानवख प० जाय सुक्लिषवखपरिणयावि । जे संस्थानचो वर्णयको कानेवर्णपरिणतहुवे यावत्

स्निग्धस्पर्शपरिणता २३' रुक्मस्पर्शपरिणता २३' एतेषां भेदबलीलने जातं ब्रह्मकानां घटुरशीत्यधिकं ज्ञात १८४, मस्यानमधिकृत्याह-जैसंठाणउप
रिमणलसंठाणपरिणताइत्यादि ॥ ये मस्यानत परिमणलसंस्थानपरिणता स्ते वर्णत ५ गन्धत २ रसत ५ स्पर्शत ८ एते सर्वे व्येकत्र मीलिता

दुस्निग्धपरिणतावि, रसते तित्तरसपरि० कसायरसपरि० अण्विलरसपरि० मञ्जररसपरिण
तावि, फासते कक्कफासपरि० मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उसिण
फासपरिणतावि, संठाणते परिमणलसंठाणपरि० बहुसंठाणपरि० तंसंठाणपरि० चउरससंठाणपरि०
अयतसंठाणपरि० । जे संठाणते परिमणलसंठाणपरिणता ते वसते कालवसपरि० नीलवसपरि० लोहित
वसपरि० हालिद्वयपरि० सुक्लिप्तवसपरिणतावि, गंधते सुस्निग्धपरिणतावि दुस्निग्धपरिणतावि, र
सते तित्तरसपरि० कक्रुयरसपरि० कसायरसपरि० अण्विलरसपरि० मञ्जररसपरिणतावि, फासते कक्क
फासपरि० मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिठफास

गव दुस्निग्धपरिणतावि । गन्धको सुगन्ध दुर्गन्धपरिणतद्वे । रसको तित्तरस प० जावमहुररस परिणतावि । रसको तित्तरसपरिणतचुव यावत्
मधुररसपरिणतद्वे । फासको कक्कफास प० मउयफास प० गुरुयफास प० लज्जयफास प० सीतफास प० उसिणफास परिणतावि । स्पर्शको कर्कश
स्पर्श प० गुनस्पर्श प० लघुस्पर्श प० श्रोतस्पर्श प० उग्रस्पर्श परिणतद्वे । संठाणको परिमणलसंठाण प० जाव आययसंठाणपरिणतावि । सस्यानयको
परिमणलसस्यानपरिणतद्वे यावत् आयतस्यानपरिणतद्वे ॥ जे संठाणको परिमणलसंठाण प० ते यको कालवस प० जाव सुक्लिप्तवस परिणता
वि । ते वनेयको कालेवर्णपरिणतद्वे यावत् स्वेतवर्ण परिणतद्वे । गंधको सुस्निग्ध दुस्निग्धपरिणतावि । गंधको सुगन्ध दुर्गन्धपरिणतद्वे । रसको
तित्तरस प० यावत् महुररसपरिणतावि । रसको तित्तरस यावत् मधुररसपरिणतद्वे । फासको कक्कफास प० मउयफास प० गुरुयफास प० लज्ज

विशति २० मतायन्तो ऋङ्गान् परिमण्डलसंस्थानपरिणता लज्जन्ते, एव वृत्तसंस्थानपरिणता २० ॥ श्वस्रसंस्थानपरिणता २० ॥ चतुरन्त्रसंस्थानपरिणता २०, आद्यतसंस्थानपरिणता २० ॥ अमीषा चैत्रासीननेन लज्ज चङ्गकाना शत, एषाच वर्णान्तरसंस्थासंस्थानाना समलनङ्गसङ्कने परिणता २०, आद्यतसंस्थानपरिणता २० ॥

परि० लुक्फासपरिणतावि । जेसठाणजे वटसठाणपरि० ते वखने कालवखपरि० नीलवखपरि० लोहि
तवखपरि० हालिद्वखपरि० सुक्लिखपरिणतावि, गधने सुप्रिगधपरि० दुप्रिगधपरिणतावि, रसने ति
त्तरसपरि० कद्रुयरसपरि० कसायरसपरि० अचिलरसपरि० मज्जरसपरिणतावि, फासने कस्करफासप०
मउयफासपरि० गुत्तयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० गिन्दफासपरि० लुक्
फासपरिणतावि । जेसठाणजे तससठाणपरि० ते वखने कालवखपरि० नीलवखपरि० लोहितवखपरि०
हालिद्वखपरि० सुक्लिखपरिणतावि, गधने सुप्रिगधपरिणतावि दुप्रिगधपरिणतावि, रसने तित्तर
सपरि० कद्रुयरसपरि० कसायरसपरि० अचिलरसपरि० मज्जरसपरिणतावि, फासने कस्करफासपरि०

यफाम प० सोऽफाम प० उमिणफाम प० विडफाम प० वृत्तफाम परिणतावि । श्वश्रयो कर्कशपर्यपरिणतद्वये श्वश्रुपर्यपरिणतद्वये गुरुरपर्यपरिण
तद्वये लघुरपर्यपरिणतद्वये मोतरपर्यपरिणतद्वये चण्डपर्यपरिणतद्वये विन्ध्यपर्यपरिणतद्वये रुचरपर्यपरिणतद्वये ॥ जे सठाणभो यटसठाणपरिणतावि
जे संस्थानको वृत्तसंस्थानपरिणत ते पिण तेवकभो कालवखप० जावसुक्लिखपरिणतावि । ते वर्णधको कालेवर्णपरिणतद्वये यावत् युक्त्वर्णपरिणत
द्वये । गधका सुभिगध दुभिगधपरिणतावि । गधको सुगध दुर्गधपरिणतद्वये । रसभो तित्तरस जाव मज्जरसपरिणतावि । रसभको तित्तरस जाव
त मधुररसपरिणतद्वये । फासभो कस्करफाम प० जाव लस्करफामपरिणतावि । पर्यगको ककायपर्यपरिणतद्वये यावत् रुचसपर्यपरिणतद्वये ॥ जेसठाण
भो तससठाण प० ते वर्णधो कालवख प० जाव सुक्लिखपरिणतावि । जे संस्थानको श्वश्रुपर्यपरिणतद्वये ते वर्णधको कालेवर्णपरिणतद्वये यावत्

जातानि त्रिशदधिकानि पञ्चदशानि । इह यद्यपि बादरेयु स्मृत्येषु पञ्चापि वर्णा द्वावपिगन्धौ पञ्चापिरसा प्राप्यन्ते ततोवधीकृतवर्णादिव्यति
रेकेणा शोषवर्णादिभिरपि नङ्गा सम्भवन्ति तथापि तेष्वेव बादरेपुरस्मृत्येषु व्यवहारत केवलक्रमगर्णाद्युपेता अपान्तरालस्कन्धा यथादेहस्कन्धश्च
लोचनस्कन्ध इत्यस्तदन्तर्गतएव कश्चिद्भोहितोऽन्य स्तदन्तर्गतएव शुक्रइत्यादि ते इहविवक्ष्यन्ते तेषाम्वा न्यद्वर्णान्तरादि नसम्भवति, स्पञ्जचिन्ताया

मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिष्ठफासपरि० तु
स्कफासपरिणतावि । जे सठाणजे चउरससठाणपरिणता ते वखने कालवखपरि० नीलवखपरि० लोहि
यवखपरि० हालिहवखपरि० सुक्लिप्तवखपरिणतावि, गधने सुस्निग्धपरि० दुस्निग्धपरिणतावि, रसने
तित्तरसप० कद्रुयरसप० झुविलरसपरि० मज्जरसपरिणतावि, फासने कस्कफासपरि०
मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लज्जयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिष्ठफासपरि० लुक्क
फासपरि० । जे सठाणजे ज्ञायतसठाणपरिणता ते वखने कालवखपरि० नीलवखपरि० लोहितवखप०

स्वेतवर्णपरिणतह्वे । गधनो सुभिगध दुभिगधपरिणतावि । गवधको सुगन्ध दुगन्धपरिणतह्वे । रसओ तित्तरस जाव मङ्गुररसपरिणतावि । रस
यको तित्तरस यावत् मङ्गुररसपरिणतह्वे । फासओ कखडफास प० जाव लूखफासपरिणतावि । स्रग्धको कर्कयस्यं प० रुक्षस्यंपरिणतह्वे ।
जे सठाणओ चउरससठाणपरिणतावि । जे संस्थानयको चउरससंस्थानपरिणतह्वे । ते वखनोकालवखपरिणता जाव सुक्लिप्तवखपरिणताह्वे । ते वर्ण
यको कालेवर्णपरिणत यावत् यत्तवर्णपरिणतह्वे । गधओ सुभिगध दुभिगधपरिणतावि । रसधको सुगधदुगन्धवपरिणतह्वे । रसओ तित्तरस प०
जाव मङ्गुररसपरिणतावि । रसयको तित्तरस यावत् मङ्गुररसपरिणतह्वे । फासओ कखडफास जाव लूखफासपरिणतावि । स्रग्धको कर्कयस्यं
परिणतह्वे यावत् रुक्षस्यंपरिणतह्वे । जे सठाणओ ज्ञायतसंस्थानपरिणतह्वे । जे संस्थानयको ज्ञायतसंस्थानपरिणतह्वे । ते वखनो कालवख प०

यं, तेचते जीवाश्च तेषां प्रज्ञापनां ससारसमापन्नजीवप्रज्ञापनां नसंसारोऽसंसारो मोक्षस्तसमापन्ना अससारसमापन्ना, मुक्ता इत्यर्थः, तेचते जीवाश्च तेषां प्रज्ञापनां अससारसमापन्नजीवप्रज्ञापनां, चक्षुर्दो प्राग्वत् तत्राल्पवक्तव्यत्वात्प्रथमतोऽससारसमापन्नजीवप्रज्ञापनां मन्त्रिचित्सुस्तद्विषयप्रश्नसूत्रमाह-संक्षिप्तमित्यादि ॥ अथ कासा अससारसमापन्नजीवप्रज्ञापनां? सूरिराह-अससारसमापन्नजीवप्रज्ञापनां द्विविधा प्रज्ञा तत्र श्रुत्या-अनन्तरसिद्धाऽससारसमापन्नजीवप्रज्ञापनाश्च परम्परसिद्धाऽससारसमापन्नजीवप्रज्ञापनाश्च, तत्र न विद्यतेऽन्तरव्यवधानं नयार्थं त्वमयेन ये पातेऽनन्तरास्तेचते सिद्धाऽनन्तरसिद्धा, सिद्धत्वप्रथमसमये वर्तमाना इत्यर्थः, स्तेचते अससारसमापन्नजीवाश्च अनन्तरसिद्धाऽससारसमापन्नजीवास्तेषां प्रज्ञापनां अनन्तरसिद्धाऽससारसमापन्नजीवप्रज्ञापनां, चक्षुर्स्वगतानेकमेदमूचकं, कथा विवक्षिते प्रथमेसमये यस्मिन् स्तस्य यो द्वितीयसमयसिद्धः सपरस्तस्यापि यत्तृतीयसमयसिद्धः सपरश्च मन्येपिधाव्या, परेचपरचेति बीम्साया, यूपोदरादय इति परम्परशब्दनिष्पत्तिः,

समावस्यजीवपक्षवणां अ्यससारसमावस्यजीवपक्षवणां दुविहा पक्षता, तजहा-अ्युणंतरसिद्धां अ्यसंसारसमावस्यजीवपक्षवणां परपरसिद्धां अ्यससारसमावस्यजीवपक्षवणां । से किंत अ्युणंतरसिद्धां अ्यससारसमावस्यजीवपक्ष

प्रजीवप्रज्ञापनां जाणपणे' कही ॥ १ ॥ संक्षिप्तजीवपक्षवणां जीवपक्षवणां दुविहा पक्षता तजहा । हिचे अठा अणि अजीवराभेदकत्वा पक्षे जीवरो जाणपणो प्रियपूछेहे जीवप्रज्ञापनानाभेदं शुककहेहे-ते जीवप्रज्ञापनां दोवप्रकारे तेजिम । ससारसमावस्यजीवपक्षवणां । ससारप्राप्त ते संसारो जीव ससारमाहिरहेहे ते जीवप्रज्ञापना । अससारप्राप्त अससारी जीव ते सिद्धका जीव कर्मरहित ते अससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना । संक्षिप्तअसंसारसमावस्यजीवपक्षवणां २ दुविहा पक्षता तजहा । ते जिमहे तिम अससार सस्यात जीवप्रज्ञापनानां दोवभेदकत्वा तेहीजकहेहे-ससारसमावस्यजीवपक्षवणां । ते ससारस्थ जीवप्रज्ञापना । अससारसमावस्यजीवपक्षवणां । अससारम्य जीवप्रज्ञापना संक्षिप्तअससारसमावस्यजीवपक्षवणां । ते कुण अससारप्राप्त जीवप्रज्ञापना । अससारसमावस्यजीवपक्षवणां दुविहा पक्षता तजहा । अससार ससार

परम्पराद्य तसिद्धाद्य परम्परसिद्धा विविक्षितसिद्धस्य प्रथमसमायात्प्राक् द्वितीयादिसमये प्रतीताया यावद्वर्तमाना इतिभावः, स्तेषु ते असंसारसमापन्ना य परम्परसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना, अत्रापि च शब्द स्वगतानेकानन्दसूक्ष्म ॥ संक्षिप्तमित्यादि ॥ अथ का ना अनन्तरसिद्धाऽसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ? मूर्ति राह-अनन्तरसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना पञ्चदशजनेदो पदज्ञानसूक्ष्म, तीर्थसिद्धा तीपते संसारसागरोऽनेनेति तीर्थं यथावस्थितमकलजीवाजीजादिपदार्थसायंरूपक परमगुरुप्रणीत प्रवचन, तच्चनिराधार नञयती तिसप ' प्रथमगणपरोया वेदितव्य, उक्तच-तिरथजनेतिरथ तिरथकरेतिरथ पुण चाउद्यक्तो समसप्तो पठमगणहरो या इति, तस्मिन्नुत्पले ये सिद्धा स्ते तीर्थसिद्धा ॥ १ ॥ तथा तीर्थस्या प्राक्तेऽतीर्थ, तीर्थस्या प्रावक्ष्यानुत्पादोऽपान्तराले व्यवच्छेदो या, तस्मिन् ये सिद्धा स्तेऽतीर्थसिद्धा स्तत्र तीर्थस्या मुत्याद सिद्धा मरुदेवीप्रजतय, नहि मरुदेव्यादिसिद्धिगमनकाले तीर्थं मृत्युलभासीत्, तथा तीर्थस्य व्यवच्छेद सुविचक्ष्याम्याद्यपान्तरालपु तत्र य जातिस्मरणादिना उपवगमार्गमवाप्य सिद्धा स्तेतीर्थव्यवच्छेदसिद्धा ॥ २ ॥ तथा तीर्थं करा सन्तो ये सिद्धा स्ते तीर्थकरसिद्धा ॥ ३ ॥ सामान्यकेवलिन सतो ये सिद्धा स्तेऽतीर्थकरसिद्धा ॥ ४ ॥ स्वयम्बुद्धा सतो ये सिद्धा स्ते स्वयम्बुद्धसिद्धा ॥ ५ ॥ प्रत्येकबुद्धा सतो ये सिद्धा स्ते प्रत्येकबुद्धसिद्धा, अथ स्वयम्बुद्धप्रत्येकबुद्धाना क प्रतिविज्ञोप उच्यते बोध्युपधिभ्रुतलिङ्गकृतोचिज्ञोप, तथाहि-स्वयम्बुद्धा बाह्यप्रत्यय मन्तरंणैव निजजातिस्मरणादिना बुद्धा स्वयम्बुद्धा इति व्युत्पत्ते, ते च द्विधा तीर्थकरा स्तीर्थंकरव्यतिरिक्ताद्य

वणा ? अगतरसिद्धसंसारसमापन्नजीवपस्यवणा परस्परविहा पस्यता, तजहा-तित्यसिद्धा १ अतित्यसिद्धा २ तित्यगरसिद्धा ३ अतित्यगरसिद्धा ४ सयबुद्धसिद्धा ५ पत्तेयबुद्धसिद्धा ६ बुद्धबोहियसिद्धा ७

नीपरे ते प्रत्येकबुद्ध ६ एकपदाधरूप सचेतन तथा अचेतन देखो जातिरमरण भ्रान्त्यो करकहूनमिभ्रनगर बुद्धवाधितसिद्ध ७ आचार्येगणधरपतवोव्या

इहतीर्थंकरव्यतिरिक्ते रथिकार आहव नन्यथयनचूणिकृत-दुर्विरा सयबुद्धा तिरथयरा तिरथयदवइरिता य इह वइरिते हि श्रहिगारो इति, प्र त्येकबुद्धा स्तु बाह्यप्रत्यय मपेत्य प्रत्येक याद्य वृषादिक कारण मचिसमीत्य बुद्धा प्रत्येकबुद्धा इतिव्युत्पत्ते, तथाच श्रुयते बाह्यप्रत्ययसापेक्षा करकद्वीदीना योपि । वरि प्रत्यय मपेत्य च तेबुद्धा सतो नियमत प्रत्येक मेव विहरन्ति न गच्छवासिनइव सदृता । आहव नन्यथयनचूणिकृत- पतेय बाह्य वृषभादिक कारण मभिसमीत्य बुद्धा वहि प्रत्ययप्रतिबुद्धाना पतेय नियमा विहारो जम्हातम्हाय ते च पतेयबुद्धा इति, तथा स्वयम्युद्धाना मुपपि ह्रादशविधएव पात्रादिक । प्रत्येकबुद्धानास्तु द्विधा जघन्यत स्तथो त्कर्पतद्य, तत्र जघन्यतो द्विविध, उरकर्पतो नवविध प्रावरणवर्ज, उक्तच-पतेयबुद्धान् जहनेण दुविहो उक्कोषेण नवविहो नियमा पाउरखज्जो जवइ ति, तथा स्वयम्युद्धाना पूगंभीत श्रुत भव ति वानवा यदिजवति ततो लिङ्ग देवतावा प्रयच्छति गुरुसन्निधीवा गत्या प्रतिपद्यते, यदिचै कान्नी विचरणसमं इच्छाया तस्य तथारूपा जा

यते तत एकाकी विहरति, अन्यथा गच्छवासे ऽवतिष्ठते । अथ पूर्वोपीत श्रुत तस्य मज्जवति तर्हि नियमा गुरुसन्निधी गत्या लिङ्गप्रतिपद्यते गच्छ । यथय नमुञ्चति, तथाबोक्त-पुष्पादीय सुय से इयइ वान वा जइ से नरिथ तो निग नियमा गुरुसन्निहि पन्निवज्जिय गच्छेय विहरइति । अर पुष्पाधीय सुयसमवो अरिथ तो सेलिग देवया पढिब्बइ गुरुसन्निहेवा पढिवत्ताइ जइ य मगविहारविहरणसमरथो इच्छावा से तो एको मेव विहरइ अन्नहा गच्छे विहरइति । प्रत्येकबुद्धानास्तु पूर्वोपीत श्रुत नियमतो भवति, तच्च जघन्यत एकादशाङ्गान्यु त्कपत किञ्चिन्न्यूनानि दद्यापूर्वाणि, तथा लिङ्ग तस्मै देवता प्रयच्छति, लिङ्गरहितोवा कदाचि जवति तथाबोक्त-पतेयबुद्धान् पुष्पादीय सुय नियमा इवइ जइनेण एका रसअगा उक्कोषेण अन्नदसपुष्पी लिग च से देवया प्रयच्छइ लिगवज्जिते वा भवइ जइ अणिण रूप्य पतेयबुद्धा इति । ६ । तथा बुद्धा आचार्या स्ते वीचिता सतो ये सिद्धा स्ते बुद्धोपीतसिद्धा । ७ । एतेच सर्वेपि कोचि स्त्रीलिङ्गसिद्धा त्रिपालिङ्ग स्त्रीलिङ्ग स्त्रीत्थसो पलजणमित्थं । तच्च त्रिया

वाग्दशाया स्वाध्यायादिकं कर्तुं, ततो दीपंतरसमपरिपालनाय यतनया वस्त्र परिजुञ्जाना न ता परिग्रहयत्य, अयो ध्येत सन्नवति नाम स्त्री
णा अपि सम्यग्दशनादिकरत्नत्रय पर न तत्सन्नयमात्रेण मुक्तिपदप्रापकं त्रयति, किं तु प्रकर्षप्राप्तं मन्वथादीक्षानतर मेव सर्वपा मप्य विज्ञेया
मुक्तिपदप्राप्तिप्रसक्तिः, सम्यग्दर्शनादिरत्नत्रयप्रकर्षं च स्त्रीणा मसम्भवी ततो न निर्वाण मिति' तद प्य युक्त' स्त्रीपुरवत्रयप्रकर्षं स्सम्भवति, स
म्भयग्राहक प्रमाण विजृम्भते देशकालविप्रकृष्टेषु प्रत्यक्षस्याप्रवृत्त, स्तद प्रवृत्तीचा नुमानस्या प्य सम्भवात्, नापि तासु रत्नत्रयप्रकर्षासम्भयप्रति
पादक को प्यागमो विद्यत' प्रत्युतसम्भयप्रतिपादक स्थाने २ स्ति, यथा इद मेव प्रस्तुत सूत्र ततो न तासा रत्नत्रयप्रकर्षासन्नवो, ऽय मन्येया स्वभाव
तएवा तपेनेव स्त्र्याया विरुध्यते स्त्रीत्वेन सह रत्नत्रयप्रकर्षं, स्तत स्तदसन्नवो नुमीयत, तदयुक्तं मुक्त युक्तिविरोधात्, तथाहि-रत्नत्रयप्रकर्षं स उ
ध्यते ततो नत्तर मुक्तिपदप्राप्तिः, स चा योग्यवस्था चरमसमयभावी अयोग्यवस्था चा स्मादृग प्रत्यक्षा तत कथ विरोधगतिः ? नहि अदृष्टेन स

ह विरोध प्रतिपत्तुं शक्यते, माप्रापत् पुरुषेयपि प्रसङ्ग (नम) ननु जगति सर्वोत्कृष्टपदप्राप्ति सर्वोत्कृष्टेनाप्यवसायेना वाप्यते ना न्यथा, एत चो ज्ञ
यो रप्या धयो रागमप्राभाष्यबलत सिद्ध सर्वोत्कृष्टदुःखस्थान सर्वोत्कृष्टसुखस्थान च, तत्रसर्वोत्कृष्टदुःखस्थान सप्तमनरकपृथ्वी अत पर परमदुःखस्था
नस्या ज्ञावात्, सर्वोत्कृष्टसुखस्थान तु नि श्रेयस, तत्रस्त्रीणासप्तमनरकपृथिवीगमन मागमे निषिद्ध, निषेधस्य च कारण, तद्वनयोग्यतयाविधसर्वो
त्कृष्टमनोवीर्यपरिणत्य ज्ञाय स्तत, सप्तमपृथिवीगमनवत्याप्रावात् समूर्च्छिमादिवत्, अपि च यासा वादलब्धौ विमुक्त्यात्वादिलब्धौ पूर्वगतश्रुताधिग
तो च न सामर्थ्यगति स्तासा मोक्षगमनसामर्थ्यं मित्य तितु श्रद्धेय (सैद्धान्तिक) तदेतदयुक्त, यतो यदि नाम स्त्रीणा सप्तमनरकपृथिवीगमनप्रति सर्वो
त्कृष्टमनोवीर्यपरिणत्यज्ञाय, स्तत एतावता कथ मयसीयत नि श्रेयसम पि प्रति तासा सर्वोत्कृष्टमनोवीर्यपरिणत्य ज्ञावो? नहि यो भूमिकर्षणादिक क
र्मकर्तुं न शक्नोति स ग्रास्याप्यप्य वगाढ न शक्नोतीति प्रत्येतु शक्य प्रत्यक्षविरोधात्, अय समूर्च्छिमादिषु त्रयत्रा-पि सर्वोत्कृष्टमनोवीर्यपरिण

त्यज्ञावोदृष्ट स्ततो वा वसीयते, ननु यदि तत्र दृष्ट स्ताहं कथं भद्रावसीयते, न खलु बहि व्याप्तिमात्रेण हेतु र्गमको जयति किं त्वन्तव्यांस्या, ऽत्त
व्याप्तिं च प्रतिबन्धयन्नेन, न वा य प्रतिबन्धो विद्यते, न खलु सप्तमपृथिवीगमन निर्वाणगमनस्य कारण, नापि सप्तमपृथिवीगमनाविनाभावो नि
र्वाणगमन चरमवरीरिणा सप्तमपृथिवीगमन मन्तरणैव निर्वाणगमनाभावात्, न च प्रतिबन्ध मन्तरणैकस्याभावे न्यस्या वश्य मन्त्रावो माप्राप
त् यस्य तस्य वा कस्याचिद् ज्ञावे सर्वस्या ज्ञावप्रसङ्ग, यद्येव तर्हि कथं समूर्च्छिमादिषु निर्वाणगमनाभाव इति? उच्यते-तथात्रवस्वाभावात्, त
याहि-समूर्च्छिमादयो प्रवस्यज्ञायतएव न सम्यग्दर्शनादिक यथाव त्प्रतिपत्तुं शक्यन्ते, ततो न तेषा निर्वाणसत्रव, स्त्रिय स्तु प्रागुक्तप्रकारेण य
थाव त्सम्यग्दर्शनादिरत्नत्रयसम्यग्योग्या स्तत स्तासा न निर्वाणगमनाभाव, अपि च भुजपरिसर्या द्वितीया मेव पृथिवी याव द्रच्छन्ति न परत
परपृथिवीगमनहेतुस्तथास्तपमनोवीर्यपरिणत्यभावात्, तृतीयायावत्पक्षिण, सतुथी चतुष्पदा, पञ्चमी मुरगा, अथ च सर्वं प्यु दं मुक्तयंत
सहस्रार याव द्रच्छन्ति तत्रा योगतिथिष्वप्य मनीषीर्यपरिणतिवैषम्यदर्शना दूढंगताव पि च न त द्वेष्यु आह च-विषमगतयो व्यथस्ता दुपरिहा
नुत्यभासहस्रार। गच्छन्ति चतिर्यन्व सतदधोगत्यनताहेतु ॥ १ ॥ तथाचसति सिद्ध, स्त्रीपुसा मयोगतिवैषम्ये पि निर्वाण सम, यद प्यु क्त मपि च
यासा वादलब्धा वित्यादि तद प्यस्त्रील वादिविकुवणत्वादिलब्धिविरहे पि विजिष्ठपूर्वगतश्रुतान्नावे पि मानुषादीना निश्रेयसपदाधिगमश्रवणा,
दा ह च-वादविकुवणत्वादिलब्धिविरहे श्रुते कनीयसि च जिनकल्पमन पर्यविरहे पि न सिद्धिविरहो स्ति अपि च यदि वादादिलब्धभावावत्
नि श्रेयसाभावो पि स्त्रीणा मन्नविष्यत् तत सयैव सिद्धान्ते प्रत्यपादयिष्यत्, यथा जडपुणो दारात् केवलज्ञानाभावो न च प्रतिपाद्यते, तस्मा दु

इत्थीलिंगसिद्धा ८ पुरिसलिंगसिद्धा १० सलिंगसिद्धा ११ अखलिंगसिद्धा १२ नि

उपदेशदेवैकरी जडुवत् । इत्थीलिंगसिद्धा ८ । स्त्रीलिंगे निवर्त्तनीयरीर तेल्लोसिद्ध । पुरिसलि । सिद्धा ८ । पुरुषचिह्नसिद्धत्वा गणधरसाधुलयाध्याय । नपुसक
लिंगसिद्धा १० । कविम कीर्तिगानपुसक तसिद्धत्वा । सलिंगसिद्धा ११ । स्वसिगोविषयामेव । अखलिंगमभीधा १२ । अन्यवैकरोभिधा । गिहिलिंगसिद्धा १३ ।

[illegible]

हिलिगसिद्धा १३ एगसिद्धा १४ अणंगसिद्धा १५ । सेतं अणतरसिद्धयससारसमावस्यजीवपस्यवणा । से किं

उत्सारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ? सूरिराह-परम्परसिद्धाससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना श्रमेकविधा प्रज्ञासा, परम्परसिद्धाना मनेकविधत्वा, स देवा
नेकविधत्वा साह-तजहे त्यादि ॥ तद्यथे त्यनेकविधत्वोपदर्शने, अग्रथमसमयसिद्धाहति, न प्रथमसमयसिद्धा अग्रथमसमयसिद्धा परम्परसिद्धविशेष
शाग्रथमसमयवर्तिन सिद्धत्वसमया द्वितीयसमयवर्तिन इत्यर्थे, आदिपुत्रसमयेषु द्वितीयसमयसिद्धादप उच्यते-यद्वा सामान्यतः प्रथम समयसिद्धा
इत्युक्तं, तत एत द्वितीयतो व्याप्यते, द्विसमयसिद्धा, द्वितीयसमयसिद्धा, द्वितीयसमयसिद्धा, द्वितीयसमयसिद्धा, द्वितीयसमयसिद्धा, द्वितीयसमयसिद्धा
सेतमित्यादिनिगमनहयसुगम, तदेव मुक्ता असारसमापन्नजीवप्रज्ञापना । सम्प्रतिससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना पञ्चविधा प्रज्ञासा तद्यथा-एकंन्द्रियससार
सेकितमित्यादि । अथ का सा ससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ? सूरिराह-ससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना पञ्चविधा प्रज्ञासा तद्यथा-एकंन्द्रियससार
समापन्नजीवप्रज्ञापना इत्यादि । तत्रैक स्पष्टानलक्षणमिन्द्रिय वेदान्ते एकंन्द्रिया, पृथिव्यभ्युत्तंजीवायुवनरपतयो दह्यमाणास्वरूपा स्ते वर्तते ससारच

समयसिद्धा अणुतसमयसिद्धा, सेत परपरसिद्धाससारसमावखुजीवपखवणा । सेतं अस्सारसमावखुजी
वपखवणा । से कित ससारसमावखुजीवपखवणा ? संसारसमावखुजीवपखवणा पंचविहा पखत्ता तंजहा
एगिदियससारसमावखुजीवपखवणा वेहुंदियससारसमावखुजीवपखवणा तेहुंदियससारसमावखुजीवपखव

समयसिद्धा । अग्रथमसमयसिद्ध मध्यमसमययो आगैममयै सोधाते अग्रथमसमयसिद्ध । दुममयसिद्धा । दुममयसिद्धा । तिसमयसिद्धा । तीजासमयना
मिद्ध । चउममयसिद्धा । इमवोयासमयनामिद्ध । जावसविज्जममयसिद्धा । इमयावत् सञ्जातसमयनामिद्ध । अथतरपसिद्धममयसिद्धा । इममनतरसमय
नामिद्ध असञ्जातसमयनामिद्ध । सेतपरपरसिद्ध ममसारसमावखुजीवपखवणा । तजिससैतु परपरयोसिद्ध पखमारसमापन्नजीवप्रज्ञापना कथी ॥ से
समयससारसमावखुजीवपखवणा । तेतिमएतलेप्रससारसमावखुजीवप्रज्ञापना कथी इतिसपूर्ण ॥ सेकितससारसमावखुजीवपखवणा पंचविहापतं । द्विधैपठा
अगैमिगिय गहै कु ग तिनममारसमावखुजीवप्रज्ञापनार पचै तकारै ह्वो तेतिम । एगिदियससारसमावखुजीवपखवणा । एकेन्द्रियससारसमावखुजीवप्रज्ञापना एक

बडलो नरोवसद्विसोबलजातु तहविनज्जकइपवे दिठेतिवज्जिदियाजाया ॥ सेकितमित्यादि ॥ अथ कासा एकेन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ?
 सूरिराह-एकेन्द्रियससारसमापन्नजीवप्रज्ञापना पञ्चविधा प्रज्ञप्ता, एकेन्द्रियाणा पञ्चविधत्वात्, तदेवपञ्चविधत्वमाह ॥ तजहेत्यादि ॥ पृथिवी
 काठिन्यादिलक्षणा प्रतीता सर्व काय शरीर येपाते पृथिवीकाया एव पृथिवीकायिका, स्वार्थइकप्रत्यय, अपो द्रवा स्ताश्च प्रतीता एव
 ता काय शरीरयेपान्तेअप्काया अप्काया एव अप्कायिका, तेजो वक्ति स्तदेवजाय शरीरयेपा ते तेजस्काया तेजस्कायिका,
 वायु पवन सएव कायो येपान्ते वायुकाया वायुकायाएव वायुकायिका, वनस्पतिलतादिरूप सएव काय शरीर येपान्ते वनस्पतिकाया व
 नस्पतिकायाएववनस्पतिकायिका, इहसर्वज्जाधारत्वात् पृथिवीकायिकाना प्रथममुपादानं, तदनन्तर तत्प्रतिष्ठितत्वा दप्कायिकाना, अप्कायि
 काश्च तेज प्रतिपन्नूता स्तदनन्तर तेजस्कायिकाना मुपादान, तेजश्च वायुसम्पकतं प्रवृद्धिमुपयाति, तत एतदनन्तर वायुकायिकग्रहणं, वायुश्च दूर
 स्थितो वृक्षशाखादिकम्पनतो लक्ष्यते, तत स्तदनन्तर वनस्पतिकायिकोपादान, सम्प्रातिपृथिवीकायिक मनवबुध्यमान स्तद्विषयं शिष्यं प्रश्न करो
 ति-सेकितमित्याह-अथ के ते पृथिवीकायिका ? सूरिराह-पृथिवीकायिका द्विविधा प्रज्ञप्ता, स्तद्यथा-सूक्ष्मपृथिवीकायिकाश्च घाटरपृथिवीकायि

ञ्चाउकाइया तेउकाइया वाउकाइया वणस्सडकाइया । से कित पुढविक्काइया पुढविक्काइया दुविहा प०,
 तजहा-सुज्जमपुढविक्काइया वादरपुढविक्काइया । से कित सुज्जमपुढविक्काइया सुज्जमपुढविक्काइया दुविहा
 पणत्ता, तजहा-पज्जातसुज्जमपुढविक्काइयाय अपज्जातसुज्जमपुढविक्काइयाय, सेतसुज्जमपुढविक्काइया । से

विक्काइया आउकाइया तेउका० वाउकाइया १ अप्कायनालोव २ तेज्जकाइयाजीव ३ वाउकाइयाजीव वनस्पतिकाइया ५। मेकितपुढवि
 काइया २। तेगिअपूछपूछा कायनाभेटकेतनेप्रकार। दुविहापत०। गुरुकहेदोयप्रकारे । सुद्धमपुढविक्काइया। सूक्ष्मपूछोकाय। वाटरपूछ
 वीकाय २॥ सेकितसुद्धमपुढविक्काइया २। ते गिअपूछ सूक्ष्मनाभेट केया तिम गुरुकहे। दुविहा पणत्ता तजहा । दोयप्रकारना ते कहेछे पण तसुद्धमपुढवि

काय, मून्मनामकर्मदयारमून्मा वादरनामकर्मदयाद्वादरा 'कर्मोदयजनिते खल्येते सूक्ष्मवादरत्वे' ना पञ्चके घदरामलकयो रिव, सूक्ष्माश्च ते पृथिवीकायिका य मून्मपृथिवीकायिका, चडाद् स्वगतपयासाऽपर्याप्तैर्देसूचक, वादराश्च ते पृथिवीकायिकाश्च वादरपृथिवीकायिका, अत्रापि पडाद् स्वगतगंकरायालुकादिर्देसूचक, तत्रसूक्ष्मपृथिवीकायिका समुद्रकपर्याप्तप्रतिगन्थावयववत् सकललोकव्यापिनो, वादरा प्रतिनिप तद्देशचारिण्य स्तत्रप्रतिनिपयतद्देशधारित्व द्वितीयपक्षेप्रकटयिष्यन्ते, तत्र सूक्ष्मपृथिवीकायिकाना स्वरूप जिज्ञासु रिटमाप्-संकिर्तिमित्यादि ॥ अथ केतेमून्मपृथिवीकायिकाः १ मूरिराह-सूक्ष्मपृथिवीकायिका द्विविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिका या पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकाश्च तत्रपयाप्तिनाम, आहारादिपुद्गलग्रहणपरिणमनहेतु रात्मन शक्तिविशेष, स च पुद्गलोपचया दुपजायते, किं मुक्त भवति-उत्पत्तिदेशभागतेन प्रथमसमये ये गृहीता पुद्गला स्तेषा तथा न्येषा म पि प्रतिसमय गृह्यमाणाना त त्सम्पर्कत स्तदुपतया जाताना य शक्तिविशेष आहारादिपु

द्गलगतमरूपतापादनहेतु पंथो दरात्मगताना पुद्गलविशेषाणा आहारपुद्गलखलरसरूपतापरिणमनहेतु सा च पर्याप्ति योढा-आहारपर्याप्ति, ग्रहीरपर्याप्ति, रिद्रियपर्याप्ति, प्राणायानपर्याप्ति, मन पर्याप्ति च, तत्र यथा याध्यमाहारमादाय खलरसरूपतया परिणमयति साहा रपर्याप्ति, यथा स्वीकृतमाहार रमासुगमासमेदास्थिमज्जशुक्ललक्षणसमधातुरूपतया परिणमयति साद्वारीरपर्याप्ति, यथा धातुरूपतया परिण मित माहार मिद्रियरूपतया परिणमयति सा इन्द्रियपर्याप्ति, अपञ्जस्तसुहृमपुढविकाश्रयाय' तथा चा य मर्थो ऽन्यत्रा पि जगत्परेणोक्त, पञ्चा ना मिन्द्रियाणा प्रायोग्यान् पुद्गलान् गृहीत्या ऽनाजोगनिर्वर्तितेन वीर्येण तद्भावयनयनशक्ति रिद्रियपर्याप्ति रिति, यथा पुन रुच्छासप्रायोग्यान् पुद्गलाना दायो ज्ञासरूपतया परिणमय्या नव्य च मुञ्चति सा उच्छ्वासपर्याप्ति, यथा तु भाषाप्रायोग्यान् पुद्गला नादाय ज्ञापात्वेन परिणमय्या नव्य च मुञ्चति सा भाषापर्याप्ति, यथा पुन मन प्रायोग्यान् पुद्गलानादाय मनस्त्वेन परिणमय्या लव्य च मुञ्चति सा मन पर्याप्ति, यथा च

यथाक्रम मेकेन्द्रियाणां सञ्चिवर्जानां द्वीन्द्रियादीनां सञ्चिना षट् पञ्च पट् सङ्गा ज्वलन्ति, उक्तञ्च प्रज्ञापनामूलटीकारुता-एकेन्द्रियाणां षतस्रो विकलेन्द्रियाणां पञ्च सञ्चिना यन्ति' इति' उत्पत्तिप्रथमसमयएव ता यथातथसर्वाऽप्युपनिष्यादयितुं मारज्यन्ते, क्रमेण च निष्ठामु पयान्ति, तद्यथा-प्रथम माहारपर्याप्ति स्तत आरीरपर्याप्ति स्तत, इन्द्रियपर्याप्ति रित्यादि, आहारपर्याप्तिश्च प्रथमसमयमेव निष्यति मपपद्यते, शोषा स्तु म स्मेक मन्तमुन्तैर्न कालेन, अथाहारपर्याप्ति प्रथमसमय एव निष्यद्यते इति कथं भवसीयते ? उच्यते-यत आहारपदे द्वितीयोद्देशके सूत्रे निदि, आहारपञ्जतीए अपकृतएण ज्ञते कि आहारए अणाहारए गो० नोआहारए अणाहारए इति, तत आहारपर्याप्त्या अपर्याप्तिविग्रहगता यथा यप द्यते नो पपातक्षेत्र मागतो पि, उपपातक्षेत्र मागतस्य प्रथमसमय एया हरकत्वाद् तत एकसामायिकी आहारपर्याप्तिनिवृत्ति, यदि पुन उपपात क्षेत्रमागतो पि आहारपर्याप्त्या पर्याप्त स्या तत एव सति व्याकरणसूत्रे भित्य ज्ञेवत् "सियआहारएसियअणाहारए, यथा आरीरारदिपर्याप्तिषु सि यआहारएसियअणाहारए इति, सर्वसाम पि च पर्याप्तीनां परिसमाप्तिकालो ज्ञमुत्तप्रमाण, पर्याप्तयो विद्यन्ते येषान्ते पर्याप्ता यन्त्रादित्य इ ति मत्वर्थायो उग्रत्यय' पर्याप्तका च तेसूक्ष्मपृथिवीकायिकाश्च पर्याप्तकसूक्ष्मपृथिवीकायिका, च आद्यो लब्धिपर्याप्तकरणपर्याप्तिरूपस्यगतजेदद्वयसूच को, ये पुन स्वयोग्यपर्याप्तिपरिसमाप्तिकला स्ते उपर्याप्ता अपर्याप्ता च ते सूक्ष्मपृथिवीकायिका च अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिका, च गृध् करण लब्धिनिययनस्वगतजेदद्वयसूचक, तथा हि-द्विविधा सूक्ष्मपृथिवीकायिका अपर्याप्ता, स्त द्यथा-लब्ध्या करणैश्च, तत्र ये अपर्याप्तका एव सती च

किंतं वादरपुठविकाइया वादरपुठविकाइया दुविहा पणता, तजहा-सण्हावादरपुठविकाइयाय खरवादर पुठविकाइयाय । से कित सण्हावादरपुठविकाइया २ सत्तिविहा पणता, तजहा-किण्हमत्तिया नोलमत्तिया

काइया अपल्लत्तसुहुम० २ । एकेन्द्रियपर्याप्ता सूक्ष्मपृथिवीकाय अपर्याप्त मन्त्र पृथिवीकाय २ । सेतसुहुमपुठविकाइया ते तिमहीज सूक्ष्मपृथिवीकायना दोयभेट कञ्जा तिम, द्विविवादरना । सेकितवावरपुठविकाइया २ दुविहा पणता । द्विवेते ग्रियपूके गुरुपत्तेरुण ते वादरत्ते, वादर पृथिवीकायना दोयभेटकञ्जा ते

यते ते लज्जऽपयंसा ये पुन करणानि शरीरेन्द्रियादीनि न ताव निवर्तयति अथ वा वक्ष्य निवर्तयिष्यति ते करणाऽपयंसा, उपसहार माह-सेतमित्यादि ॥ त गत सूक्ष्मपृथिवीकायिका स्तदे व सूक्ष्मपृथिवीकायिकानभिधाय सप्रति वादरपृथिवीकायिका नञिधित्सु स्तद्विषय प्रश्नसूत्र माह-सेकितमित्यादि ॥ अथ के वादरपृथिवीकायिका ? सूरि राह-वादरपृथिवीकायिका द्विविधा प्रज्ञप्ता स्त द्याया-शक्तवादरपृथिवीकायिका च सरवादरपृथिवीकायिका च, तत्र शक्त्या नाम धृगितलोहकल्पा मृदुपृथिवी तदात्मका जीवा अ प्युपचारत शक्त्या स्ते च ते वादरपृथिवीकायिका च शक्त्यादरपृथिवीकायिका, अथवा शक्त्याचसावादरपृथिवीचसाकाय शरीरेयताते शक्त्यादरपृथिवीकाया स्तगव स्वार्थिके क प्रत्यय विधा नात् शक्त्यादरपृथिवीकायिका च शरीरे वक्ष्यमाणस्त्वगत नेकमेदसूचकः सरा नाम पृथिवीसङ्घातविशेषद्वुगित्यविशेष ज्ञा पन्ना तदात्मकाजीवा अपि सरा स्ते च ते वादरपृथिवीकायिका च सरवादरपृथिवीकायिका अथवा पूर्ववत् प्रकारान्तरण समास च शब्द स्वगतवक्ष्यमाणावत्त्वारिशब्दे दसूचक ॥ सेकितमित्यादि ॥ अथ के तद्वत्त्वादरपृथिवीकायिका ? सूरि राह-शक्त्यादरपृथिवीकायिका, सप्तविधा प्रज्ञप्ता स्त देवसप्तविधत्व त द्यत्यादिनी पदशयति-कामसृत्तिका कृष्णसृत्तिका रूपा यवनीलसृत्तिका लोहितसृत्तिका हरिद्रसृत्तिका शुक्रसृत्तिका, इत्यवर्णनेन पञ्चविधत्वमुक्तम्, पाण्डुसृत्तिकानाम दण्डविशेषयाथूलीरूपासतीपाण्डूतिप्रसिद्धा तदात्मकाजीवा अप्यज्जदोपचारात् पाण्डुसृत्तिकेत्युक्ता ॥ पणगमद्विषयि ॥ नद्यादि

लोहितमन्त्रिया हालिहमन्त्रिया सुक्षिप्तमन्त्रिया पणमन्त्रिया पणमन्त्रिया । सेत सहवाटरपुढविकाडया ।

पुन-हैरे, मण्डवाटरपुढविकाडया ॥ खरवाटरपुढविकाडया । मूक्षानामकर्मोदयथौ मुकमालवादरपृथिवीकाय पृथिवीकाय कठिननामकर्मोदयथौवाटर ते खरवाटरपृथिवीकाय । सेकितसप्तत्रयाटरपुढविकाडया ॥ मत्तमिहा प तजहा । वाटरपृथिवी कायनाभ-केतनेप्रकारेगुरकहै ते सातप्रकारेकहना तेकहैछे, किपत्रमद्विगलीन न लोहितम मन्त्रिजम पणुन पणगमद्विग । कालोमद्वो १ नौनोमद्वो २ रा नौमद्वो ३ पानोमद्वो ४ ध लोमद्वो ५ खेतरक्तदेग विगोरपाटधन पनकम टो ७ । मत्त १५६ बाटरपुढविकाडया ते तिमहौ न कोमलनादरकायनामेदकहा सेकितखरवाटरपुढविकाडया २ अणेमविहा

पूरसाधितदेशे नरादिपूरेऽपाने यो जुषी शरङ्गदुस्तपो गलमतापरपर्याय पक्क सापनकयति ता तदात्मतावीया गणनेदोपचारात् परकयति
ता, निगमनमात्र-मेतमाहजापरपुढविकाइया ॥ सुगम, सेकितमित्यादि ॥ अथ के ते सरवादरपूयिबीकायिका ? सूरिरा-सरवादरपूयिबीकायिका
अनेकायिषा प्रपसा भव्यारिगद्देदा मुख्यत प्रपसा इत्यर्थ, तानेवपत्वारिगद्देदाना इ-तज्जहा पुढीवीय इत्यादिगणानुसृत्य, पूयिबी ति ज्ञासा
सत्यनामागत् गुडपूयिबी नदीतटाभित्यादिरूपा चत्राएउतरनेदायेक्षया समुच्चये शर्करा लपूलक्षत्तरूपा । २ । यालुका सिकता । ३ । उपल
दुङ्गकाद्युपकरपारिकर्मणायोग पापान । ४ । झिला गहनयोग्या देवगुत्तपीठाद्युपयोगी मरापापाकविशेष । ५ । लवयसासुदादि । ६ । ऊ
पौयदशावृत्तोर । ७ । अयस्तायापुसीसरूप्यसुदधानिप्रतीतानि । १३ । वज्रोष्टीररू । १४ । हरितालद्विहुलकमन शिला प्रतीता, सीमग
पारदग । १८ । अज्ञान सौग्रीराज्जनादि । १६ । प्रयाल विदुम । २० । अन्नपटल स्मसिदु । २१ । अरायालुका अन्नपटलभिषायालुका । २२ । आयरका
ये इति ॥ वादरपूयिबीकाये अमी भेदा इति शेष, मणिविहारा इति च शास्त्रस्य गम्यमानत्वात् मणिविधानानिचमणिनेदाश्च वादरपूयिबीकायनेद

से किंतं सरवादरपुढविकाइया ? सरवादरपुढविकाइया अणुगेविहा पणता, तंजहा-पुढवीयसक्करावा
लुयायउचलेसिलायउणसे । अयतवतउयसीसे रूप्यसुवसेयवइरेय ॥ १ ॥ हरियालेहिगुलुए मणोसिलासास
गजगपवाले । अण्णपल्लवालय वादरकाएमणिविहाणा ॥ २ ॥ गोसिज्जाएयरुए अक्केफलिहेयलोहियरुकेय

ये त । ते डिरे रूपते अहेइ, सरपूयिबी कठिनवादरप्रतिघी ते किम, तर कठिनवादर पूयिबीकायना चनेकभेदकज्ञाने अहेइ, पुढवीयसक्करावा लुयायउ
च-अभिनायवोणदे । पयतइताउगसीसेरूप्यमृगयेयरइरेय ॥ १० ॥ पूयिबी काकरामहित १ वासू २ उपल ठाकरायोग्य २ झिलाघडरायोग्य ३ मेण ते मोटापापाण
त्रिमा ५ ५७ वाडगानि ६ तांवे ७ उरुणोदसोसा ८ लपो १० भापो ११ यज ते होरा १२ १३ १४ हरियालेहिगुलुए मणोसिलासासगजगपवाले । पथभपउलभ
वानुवादरकाएमणिविहाणा ५ २ ३ हरिताल १२ १३ १४ मजसिल १५ पयाबी चरक नाम भोडल पटन चमयेलू प वादर पूयिबी कायकपो २१

त्वेन नातव्या , ता ये व मणिविधानानि दत्तयति-गोमज्जग इत्यादि ॥ गोमेद्यक २३ च समुच्चये रुचक २४ अक २५ स्फटिक २६ च मूर्धवत्, लोहि-
तात् २७ मरकत २८ मसारगल २९ नृजमोचक ३० इन्द्रनीलश्च ३१ चन्दनो ३२ गेरिको ३३ हसगज ३४ पुलक ३५ सौगण्डिकश्च ३६ चन्द्रप्रज्ञो ३७ वै-
रूपा ३८ जलकान्त ३९ सूर्यकान्तश्च ४० तदेव साद्यगाथया पृथिव्यादयउक्ता श्रुतुदेशजेदा, द्वितीयाथया ऽष्टौ हरितालादय, स्तृतीयाथया गो-
मेद्यकादयो नव, तुययागाथया नवो तिसङ्ख्या श्रुत्वारिश्रुत्, जेयावन्नेतदप्यगारादिति ॥ ये पि चा न्ये तथा प्रकारा मणिजेदा पट्टरागादय स्ते पि
खरधादरपृथिवीकायत्वेन वेदितव्या ॥ तेसमासजइत्यादि ॥ तेसामान्यतो वादरपृथिवीकायिका समासत सङ्केपेण द्विविधा प्रज्ञप्ता, स्तद्यथा-पर्याप्त
का अपर्याप्तका च, तत्र ये ऽपर्याप्तका स्ते स्वयोग्या पर्याप्तो साकत्येना सम्प्राप्ता इति, अथवा ऽसम्प्राप्ता इति विशिष्टान् वर्णादीन् अनुपगता
स्तथापि-वर्णादिजदेविवक्षाया मेते न शक्यन्ते कृत्रादिवर्णभेदेन व्यपदेशु, किंकारणमि ति चेत् ? उच्यते इहवरीरादिपर्याप्तिषु परिपूर्णोऽसु सतीषु
वादराणा वर्णादिविज्ञान प्रकटो भवति नापरिपूर्णोऽसु, ते वा पर्याप्ता उच्छ्वासपर्याप्ताऽपर्याप्ता एव स्थित्यन्ते ततो न स्पष्टतरवर्णादिविज्ञान इत्य

मरगयमसारगले नुयमोयगइदनीलंय ॥ ३ ॥ चदणगेरुहसे पुलएसौगधिणयवोधहे । चदप्यन्नवेरुलिण ज
लमंतसूरकंतय ॥ ४ ॥ जेयावखेयतहप्यगारा ते समासजे दुविहा पयत्ता, तजहा — पज्जत्तगाय झुपज्जत्त

द्विवे मणिनाम भेदः कहिहे — गोमेज्जखरगण अकंफलिहियनोद्वियक्खेय । मरगयमसारगले भुजमोयगइदनीलंय ॥ ३ ॥ गोमेदमणि १ रुचकमणि २ अ-
कमणि ३ स्फटिकमणि ४ लोहिताञ्जमणि ५ मरकतमणि ६ मसारगल ७ भुजमोचक ८ इन्द्रनीलरत्न ९ ॥ ८ ॥ चदणगेरुहसे पुनपमोमधिणयवोधवे । चद-
प्यन्नवेरुलिण जलकान्ते सूरकतेय ॥ ४ ॥ चन्दनरत्न १० गेरिकरत्न ११ पुलकरत्न १२ सौगन्धिकरत्न १३ एहवैनामे जाणवा चन्द्रप्रभरत्न वैडूर्य जलकान्तरत्न
मूर्धकान्तरत्न ॥ ४ ॥ जेयावणेतहप्यगारा तसमासजो दुविहा पयत्ता तजहा । जेहवा अनेराहो तथा प्रकारना ते मच्चैपथको दोगभेदे कक्षा ते कहिहे ।
पज्जत्तगाय झुपज्जत्तगाय, तत्थण जेते अपज्जत्तगा तत्थण असपत्ता तत्थण जेते पज्जत्तगाय । पर्याप्ता अपर्याप्ता तथा तिहा जो पयाप्ता एतन्नाभंद नद्यो

सम्प्राप्ता इत्युक्तं ननु कस्मा दुष्ट्यासपर्योस्यै वा उपर्योप्ता श्रियन्ते नो वाक् शरीरेन्द्रियपर्योप्तिभ्या मपर्योप्ता अपि उच्यते तस्मा दागामिजवा
 यु र्द्विधा श्रियन्ते सव गव देहि नो ना बध्वा, तच्च शरीरेन्द्रियपर्योप्तिभ्या पर्योप्ताता वन्यमा यान्ति ना न्यथा इति, अन्ये तु व्याचक्षन्ते सामा
 न्यतो वर्णादी नसम्प्राप्ता इति, तच्च न युक्तं यत् शरीरमात्राविनो वर्णादय, शरीरं च शरीरपर्योस्या सज्जात इति ॥ तस्य य जे जे पज्जते
 ना इत्यादि ॥ तत्र ये ते पर्योप्तका परिसमाप्तस्वयोग्यसमस्तपर्योप्ताय एतेषा वर्णादेशेन वर्णादेशविबक्षया एव गन्धादेशेन रसादेशेन स्पर्शादेशेन
 सहस्त्रसङ्ख्याविधानानि जेदा, स्तद्यथा-वर्णा कक्षादिजेदात्यन्त, गन्धो सुरभीतरजंदा द्वी, रसा स्तिक्तादय पञ्च, स्पर्शो मृदुकर्कशा
 दयो ऽष्टौ, एकैस्मिन् वर्णादी तारतम्यजेदेना नेके वातरजंदा क्षयाहि-ध्रुमरकोकिलकज्जलादिषु तरतमजावा दित्यादिरूपतया ऽनेके कक्ष
 जेदा' एवमीलादिषु प्या योज्य, तथा गन्धरसस्पर्शेषु पि तथा परस्पर वर्णांना सयोगतो धूसरकञ्चुरत्वादयो नेके सङ्ख्याजेदा, एव गन्धादीनाम
 पि परस्पर गन्धादिनि समायोगा दतो जवन्ति वर्णाद्यादेशौ सङ्ख्याग्रशो जेदा ॥ सर्वेज्जाइ जीणिप्पमुहसयसहस्साइ इति ॥ सङ्ख्यानि योनिप्रमु
 खाणि योनिद्वाराणि ज्ञातसहस्त्राणि तथाहि-एकैस्मिन् वर्णे गन्धे रसे स्पर्शे च सदृतायोनि पृथिवीकायिकाना, सा पुन ख्रिया, सचित्ता अचिह्ता

गाय, तत्पण जेने अपज्जत्तगा तेण अपसपत्ता तत्पण जेते पज्जत्तगा एतेसिं वस्सादेसेणं गन्धादेसेणं रसादे
 सेण फासादेसेण सहस्सग्गसोविहाणाइ सखिज्जाइ जीणिप्पमुहसयसहस्साइ पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगाव

पाभ्या विगिण्ट वर्णं गन्ध रस स्पर्श ए पगाप्त पुरो धवाविना न प्रमटं । तेमिण वस्साएसेण । तिगासाहि वर्णादेशेकरो । गन्धाणसेण रसाएसेण । गन्धा
 देशेकरो रसादेशेकरो । फासाणसेण सहस्त्रगसोविहाणाइ सखिज्जाइ । स्पर्शादेशेकरो वर्णा देशेकरो सहस्त्रयो भेदह्वे वर्णादि २५ भेदना वर्णादि तर
 तमभेदे धनेकभेदह्वे ते किंन स्वासवणेनूवे ध्रुमर कोकिल तेहयको कज्जल इम म्याम सधलभेदे वधता २ कहिवान सख्याते भेदह्वे । जीणिप्पमुहस
 यगागासु कहिल्ले ।

मिश्रा च, पुन रैकैकात्रिधा, शीता उष्मा शीतोष्मा, शीतादीना मपि प्रत्येक तारतम्यभेदा दनेकभेदत्व' केवल मेव विशिष्टवर्णादियुक्ता सस्याऽतीता अपि स्वस्थाने व्यक्तिजदेन योनयो जातिमधिकृत्य केव योनि गण्यते, तत सङ्ख्यानि सप्तपृथिवीकायिकाना योनिशतसहस्राणि भवन्ति तानि च मूलमवादर्गतसर्वसङ्ख्या सप्त॥ पञ्जसगनिस्साए इत्यादि॥ पर्याप्तनिश्रया अपर्याप्तका व्युत्क्रामन्ति उत्पद्यन्ते, कियन्त इत्या ह-यत्रै क पर्याप्त सप्त नियमा तन्निश्रया असङ्ख्या सङ्ख्यातीता अपर्याप्तका, उपसहस्रमाह-सेत मित्यादि॥ निगमनत्रय सुगम' तदेव मुक्ता पृथिवीकायिका 'स स्मृत्य प्कायिकप्रतिपादनायमाह-से कि त मित्यादि सुगम' उसा इत्य वक्ष्याय ब्रह्म' इम स्त्यानोदक, महिका गर्जमासेषु सूक्ष्मवर्ष' करको घ

कृमति, जत्य एगो तत्य णियमा असखेज्जा । सेतवादर्पुठविकाइया ॥ सेतपु
ठविकाइया ॥ से कित आउकाइया ? आउकाइया दुविहा पन्तता, तजहा-सुजमआउकाइयाय वादर
आउकाइयाय । से कित सुजमआउकाइया ? सुजमआउकाइया दुविहा पन्तता, तजहा-पज्जत्तसुजम
आउकाइयाय अपज्जत्तसुजमआउकाइयाय ॥ से कित सुजमआउकाइया ? से कित वादरआउकाइया ? वादर

जत्यएगोतत्यणियमा असखेज्जा । जिहा एकजोवपर्याप्ता उपजे तिहा निचे असख्याता अपर्याप्ता उपजे । सेतखरवायरपुठविकाइया । ते कहैहै । कठि
नवादर्पुथिजीकाय । सेतवादर्पुठविकाइया । एतले वादर पृथिवीकायनाभेद कक्षा ॥ सेतपुठविकाइया ॥ एतले सर्वपृथिवीकायना भेदकक्षा हिंवे ।
अपकाय कहहे । सेकितअपकाइया २ दुविहा पन्तता तजहा । ते शिब पळे कुण अपकाय गुरु कहैहै-हेमहानुभाव । अपकाय दोयभेदकही ते कहै
हे-हरनाउकाइया वादर आउ० । सूअ अपकाय १ वादरअपकाय २ हिंवे । सेकित सहस्रमाउकाइया २ दुविहा पत । ते कुण ते कहो स्वामीजी स
अपरमाय तिहा गुनकहैहै-हेदेवानुग्रिय । महानुभाव दोयकारे कक्षा ते कहैहै-पज्जत्तसुहस्रमाउकाइया । पर्याप्ता सूक्ष्मअपकाय १ । अपज्जत्तसुह
समाउकाइया । अपर्याप्ता सूक्ष्मअपकाय कक्षा ॥ अठा आगे वादरकहैहै-सेकित वायरआउका

नोपल, हरतनु यी नृग सुद्विद्य गोधूसामुद्रुत्तुणायादियु बहुो विन्दु रूपजायते, शुद्धोदक मन्तरिवासमुद्रुव नद्यादिगत च, तच्च स्पशंरसादिभेदा
दनेकभेद, तदेवा नेकभेदत्वदर्शयति-शीतोदक नदीतलागावटवापीपुष्करियादिषु शीतपरिणाम, उष्णोदक स्वजावत एव क्वचि निर्भरादा
युष्मपरिणाम, क्षारीदक मीपल्लवणस्वप्नाव, यथा लाटदेशादीं केषुचिदवटेषु, सहीदक मीपदक्षपरिणाम, ग्रन्थीदक मतीवस्वजावत एवा क्षुपरि
णाम काञ्जिकवत्, लवणोदक लवणसमुद्रे, वारुण वारुणसमुद्रे, क्षीरोदक क्षीरसमुद्रे, क्षोदोदक भिक्षुसमुद्रे, रसोदक पुष्करवरसमुद्रादिषु, ये पि
वा न्ये तथा प्रकारा रसस्पर्शादिभेदभिक्षा घृतोदकादयो वादराध्यायिका स्ते सर्वे वादराध्यायिकतया प्रतिपत्तव्या, स्ते समासतो इत्यादि

अथा उकाइया अणेगविहा पस्यता, तजहा-उसाहिमए महिया करए हरतणू सुसोदए सीतोदए उंसिणोदए
खारीदए खहोदए अंबिलोदए लवणोदए वारुणोदए खीरोदए रसोदए खोदोदए रसोदए जेयावखेतहप्पगारा तेसमा
सत्तदुविहा पस्यता, तजहा-पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय, तत्थण जेतें अपज्जत्तगा तेंण अपसंपत्ता, तत्थणं जेतें
पज्जता एतंसिणवस्सादेसेण गथादेसेण रसादेसेण फासादेसेण सहस्सगगसोविहाणाइ सखेज्जाइ जोगिप्पमु

इया २ अणेगविहा प त । ते हि वे कुण वादरथकाय अनंनप्रकारकहेइ-तिकोही दरसावेक्के । उसाहिमएमिहिया । ठार मध्यवेइ १ हिम २ धूहर ३
नरग हरतणु सुसोदण सौवटण । गढानोपाणी ४ हरौनेअणीये जलविन्दु वरसातनो ५ शुद्धपाणी ६ शीतजल ७ । उंसिणोदए खारीदए सुसोदए अवि
सादए लवणोदण वरुणोदए खीरोदण खोदण इक्खोदण रसोदण । उण्णजल ८ खाटो १० आविल्लरसपाणी ११ लूण जेहवो १२ वारुणीसम
द्रनो पा गो ट ट जेहवो १३ दूमसरोखापाणी १४ घृतसरोखापाणी १५ इच्छुरस सेव्हडोरस १६ रम पटरस तेहवोपाणी १७ । जेयावखेतहप्पगारा ते स
मासओदविहा प त । जे एहवा अनैरा तथा प्रकारना तेह सर्वं सत्तेपयी दोयप्रकारे कट्ठा ते कहेक्के-यज्जत्तगा अपज्जत्तगाय । पर्याप्ता १ अपर्याप्ता २ ।
तत्थण जेतें प्रपज्जत्तगा । जेतें अपर्याप्ता । तेणअसंपत्ता । तेणे नहोपाया वर्षादिनयो कइता ते । तत्थण जेतें प्रपज्जत्तगा । तिहा जेतें पर्याप्ता । एणसिणवस्सा

प्रागुत् नवर, सहेयानि योनिप्रमुखाणि शतमस्तस्मात् तत्रापि ममवेदितव्यानि, उक्ता अष्ठायिका, सप्रति तेजस्सायिकान् प्रतिपिपादयिषु राह-सेकितमित्यादि ॥ सुगम, नवर, मद्गारी विगतधूम, ज्वालो चाग्जल्यमान, रगादिरादिज्वाला लसन्महादीपविरो त्यन्वे, मुर्मुर फुम्फुका

हसयसहस्साइ पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमति, जल्य एगो तल्यनियमा असखेज्जा । सेत्त वाटर आउकाइया ॥ सेत्त आउकाइया ॥ से कित तेउकाइया ? तेउकाइया दुविहा पणत्ता, तजहा-सुज्जमेतेउ काइयाय वादरतेउकाइयाय, से कित सुज्जमेतेउकाइया सुज्जमेतेउकाइया दुविहा पणत्ता, तजहा-पज्जत्त गाय अपज्जत्तगाय । सेत्त सुज्जमेतेउकाइया । से कित वादरतेउकाइया २ अण्णेगविहा पणत्ता, तजहा डगाले जाला मुर्मुरे अच्ची अच्चाए सुद्धागणी उक्का यिज्जू असणी णिग्घाए सधरिससमुठिए सूरकतमणिणि

० भेण गधाणसेण रसाएसेण फासाएसेण । इथारा वण्णटिणेरौ गधाटिणेरौ रमादेणेरौ फरसादेणेरौ । सहस्साय एतले नाव एहवेनामे । मखिज्जाइ जाणिणमहससहस्साइ । मख्याता सतसहस्सगानिप्रमुववुने । पज्जत्तगणोसाए । पर्याप्तानो नियाये । अपज्जत्तगावक्कमति अपर्याप्ता चावी उपजे । जल्यएगोतल्यनियमाअसखेज्जा । जिहा एकजोव तिहा नियाये अमव्याताजोव कहवा । सेत्तवाग्ग्गआउकाइया । ते वाटर अ क्कायना भेटकह्वा । सेत्तआउकाइया । एतले ते सून्यवाटर सर्वअक्काय कह्वा ॥ द्विवे सेकित तेउकाइया २ दुविहा प त । तेजकाय पूछैगिय कुण ते तट गुर कहै णोपकारे कह्वा तेकहेछै-सुद्धमेतेउकाइया वाग्ग्गते । सूस्सतेउकाय १ वायरतेउकाय २ । सेकितसहमेतेउकाइया २ दुविहा प त । द्विवे यि यत्तहै कुण तेगुरकहै मूल्म तेउकाय तेहना दोमेटकह्वा तेगुरकहेछै-पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय १ पर्याप्ता २ । सेत्ततुहमेतेउकाइया । ते तिम मूल्मतेउकाय ॥ सेकितवाग्ग्गतेउकाइया २ अण्णेगविहा प त । ग्रिण्णपूछै कुणवाटर तेउकाय गुरकहै अनेकप्रकारेकह्वा तेकहेछै-इ गाले जालमुर्मुरे । अगा रा वभूतरदित १ ज्वालादोपसिखा अग्नि पतिग्ग्ग २ वभूतमित्था अग्नि कण । अचो प्रभागमुद्गण । अप्रतिवडज्जाना मुद्गग्नि । उक्का यिज्जू । उल्का

द्वौ प्रसमिश्रितानि करणरूप , अर्चं रत्नलाभति वद्वाब्जाला , आलात मूलमुक् , शुद्धाग्नि स्य पिग्हादौ , उल्का बुहुली , विद्यु त्प्रतीता' अश्वानि राकात्रो
पतदग्निमय कण , निर्घातो वैक्रियाज्ञनिप्रपात , सहूर्यसमुपस्थितो ऽरण्यादिकाष्ठनिर्मथनसमुद्भूत , सूर्यान्तमणिनिस्तुत सूर्यखरकिरणसम्पर्कै
सूर्यकान्तमणे यं समुपजायते ॥ ज्ञेयावक्षेत हृष्यगारा इति ॥ ये पि चा न्ये तथाप्रकारा एवम्प्रकारा स्तेजस्कायिका स्ते पि घाटरस्तेजरकायिकतया वे
दिनध्या , स्तेजमासतो इत्यादि प्रागवत् , नवर भत्रापि सङ्ख्यानि योनिप्रमुखानि शतसहस्राणि सप्तयेदितव्यानि , उक्ता स्तेजस्कायिका , सम्प्रतिवापु

तस्या, स्तेसमासतो इत्यादप्राग्वत्, नवर मन्त्राप सङ्ख्याय पाठानुसारं जेत त्त्या, जेत
स्ति ए, जेयावसेतहप्पगारा ते समासने दुविहा पखता, तजहा-पज्जातगाय अपज्जातगाय, तत्यण जेत
अपज्जातगा तेण असपत्ता, तत्यण जेत पज्जातगा एएसि वखादेसेण गधादेसेण रसाएसेण फासादेसेण सह
स्सग्गसोविहाणाड सखिज्जाड जोणिप्पमुहसयसहस्साइं पज्जातगणिस्साए अपज्जातगा वक्कमति, जत्यएगो
तत्यणियमा असखिज्जा ॥ सेह वादरतेउकाइया ॥ सेह तेउकाइया ॥ से किंत वाउकाइया ? वाउकाइया दुवि

पात वीजली । असिणाणिघाण । आकाशे अग्निमयो कण वैश्वयन्नि । सघरिससमृद्धि । धरणोयादिकथको जपनी । सरिकातमणिनिस्त्रिण ।
मयेने तापेकरी ऊपजे मणिथी जपजे ते अग्नि । जोगवस्तुतद्व्यगारा ते समासघो दुषिहाय त । जेवनी पडवा घनेरा तथा प्रकारनाभेट तेसर्व स
जेवथी दीपप्रकरिका ते कहै—पल्लतगाय अपल्लतगाय । पर्याप्ता अपर्याप्ता । तत्पणजेते अपल्लतगा तेषमयसा । तिहाजेते अपर्याप्ता वर्णादि
जेनथी पाव्या पूरा । तत्पणजेते पल्लतगा । तिहा जेते पर्याप्ता । एसिण वसाएसेण गधाएसेण रसाएसेण फामाएसेण । इयारा वर्णादेगेकरी गन्धादेगे
करी रसादेगेकरी सग्रादेगेकरी । सद्व्यगमोविहाणाद । सहस्त्राय एतने सातलाख भेदेकरी । सखिख्लाह जोणियमुहसयसद्व्यग्राद पल्लतगणीसाए
मह्याता मतमद्वस्योनि प्रमुख ऊपजे पर्याप्तानोनियावे । अपल्लतगावहमति । अपर्याप्ता उपजे । जत्पणगीतत्पणियमा । जिह्वा एकजीव तिहा नि
है । प्रसखिज्जा । असपयातजीर उपजे । सेतवायतेउकाइया । एतने वादर तेउकाय । सेततेउकाइया । ते सर्व तेउकायकथा । सेजितवाउकाइया २ ड

कायिकप्रतिपादनार्थं भाह-संकिंतिमित्यादि॥ प्रतीत, नवर॥ पाईणवाण इति॥ य प्राथ्यादिश समागच्छति वात समाधीनवात, गय प्रतीचीनवातो दक्षिणवात उदीचीनयात अ वक्तव्य, ऊर्द्धद्रुच्छन् यो वाति वात सस् ऊर्द्धवात, एव मधोवात तिर्यग् वातावपि परिज्ञावनीयो, विदिग्यातोयो विदिग्यो वाति यातो द्वाभो ज्ञवस्थितो यातो वातोत्कलिका समुद्रस्ये व यातोत्कलिना, यातमङ्गली यातोली, उत्कलिकायातउत्कलिकाग्नि प्रधुर्तराग्नि सम्मिश्रितो यो यातो मङ्गलिकायातो, मङ्गलिकामि मूलत आरभ्य प्रधुर्तराग्नि समुत्थो यो वात, गुल्जायातो यो गुल्जनशब्द कुर्वन्

हा पसस्ता, तजहा-सुज्जमवाउकाइयाय, से कित सुज्जमवाउकाइया? सुज्जमवाउकाइया दुविहा पसस्ता, तजहा-पज्जत्तगसुज्जमवाउकाइयाय अपज्जत्तगसुज्जमवाउकाइयाय । सेत्त सुज्जमवाउकाइया । से कित वादरवाउकाइया? वादरवा० अण्णगविहा पसस्ता, तजहा-पाईणवाए पदीणवाए दाहिणवाए उदीणवाए उहुवाए तिरियवाए विदिसीवाए वाउज्जामेवा उक्कलिया वायमंरुलिया उ

विहा प त । शिथ्यप्पे कुण्णुरक्कहे वाउकायना टायभेटक्का ते कहेहे-सुहुमवाउकाइया । सूक्ष्मवाउकाय । वायरवाउकाइया । वादरवाउकाव । से कितसुहुमवाउकाइया २ दविहा प त । हिवे कुण सूक्ष्मवाउकाय तेहना दोग्गभेद कक्षा ते कहेहे-पज्जत्तसुहुमवाउकाइया अपज्जत्तसुहुम वा० । पर्याप्ता सूक्ष्मवाउकाय अपर्याप्ता सूक्ष्मवाउकाय । सेत्तसुहुमवाउकाइया । एतले सूक्ष्मायुकायना भेटक्का ॥ से कितवायरवाउकाइया २ अण्णगविहा प० त० । हिय वादर वाउकायना भेटक्कहेहे-अनेकप्रकारे कक्षा वाउकायगादरना ते कहेहे-पाईणवाए पईणवाए दाहिणवाए उदीण वाए । पूर्वदिग्गिनी उपनी पथिमदिग्गिनी उपनी दक्षिणदिग्गिनी उपनी वायु उत्तरदिग्गिनी उपनी वायु । उट्टवाण अहोवाए तिरियवाए विदिसीवा ए वाउभाए । ऊचीदिग्गिनीउपज्ज्या नोचीदिग्गिनी वायु तिरिक्कोदिग्गिनी विदिगिणाय ऊचोममतोवायु । वाउक्कलिया वायमडलिया । उत्कलियायु समुद्रनो मण्डलिकावायु गोल । उत्कलियवाए मडलियवाए । वेनु उत्कनोपाडे मण्डलावत्तंवायु । गुलावाए भग्गावाए सवट्ठाए घण्णवाए तण्णवाए सुहवाए ।

वाति, ऊक्तायात सगृष्टि, रजुभिर्गुर इत्य न्ये' सप्ततंकजात स्तृणादिसवत्तनस्त्रवाव, घनवातो घनपरिणामो रत्नप्रभापृथिव्याद्य घोवती, तनुवा तो विरलपरिणामो घनवातस्या घ स्थायीशुद्रुवातो मदस्तिमितो, वस्त दृत्यादिगत इत्य न्ये ॥ त समासतो इत्यादि प्राग्वत्, अत्रा पि सङ्ख्यानानि योनिप्रमग्नाणि ज्ञतनहस्त्राणि सप्ता वसेयानि, उक्ता वायुकायिका, सम्प्रति वनस्पतिकार्यिकप्रतिपादनार्थं माह-सेकितमित्यादि ॥ सुगम, यावत् से

क्तालियावाए मरुलियावाए गुजावाए ऊजावाए सवहवाए घणवाए तणुवाए सुद्रुवाए, जेयावन्ने तहप्पगा रा ते समान्ने दुविहा पसत्ता, तजहा-पज्जत्तगाय, तत्थण जेते अपज्जत्तगा तंण असप त्ता, तत्थण जेते पज्जत्तगा एतेसिण वणाटेसेण गधाटेसेण फासादेसेण सहस्सगसोविहाणाइ सखिज्जाइ जोणिप्पमुहसयसहस्साइ पज्जत्तगणिरसाए अपज्जत्तगा वक्कमति, जत्थ एगो तत्थ नियमाच्चसे रेज्जा ॥ सेत्त वाटरवाउकाइया ॥ सेत्त वाउकाइया ॥ से कित वणस्सइकाइया वणस्सइकाइया दुविहा प०,

गुजारव वीनतो अशुभ अनिष्टवायु सवत्तंवापु ढणउडावे ते वायु घनवात तनुवायु पखे रत्नप्रभा च्छे शुद्धवायु । जेयावन्ने तहप्पगारातिमासश्चो दुविहा प० त० । जे उह्वा अनेरा नथा प्रकारनावायु ते सवेपयनी दोगप्रकारिकक्षा ते कहैछे-पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय । पर्याप्ता । तत्थणजेतेत्रप ज्जत्तगा तेण त्रसपत्ता । तिहा जेते अपर्पाप्ता ते वर्णाटिकने अणपामवैकरो । तत्थणजेते पज्जत्तगा णसिण । तिहाजेते पर्याप्ता इणारा । वणाएसेण ग.गएसेण फासाएसेण । वर्णाटिगे गन्धाटिगे रपथदिथे । सहस्सगसोविहाणाइ । सतसहस्स एतले सातलाखु वीनने भेटेकरी । सखिज्जाइ जोणिप्पमुहस त्रसहस्साइ । सातेलाखे सख्यातायोनिविष । पज्जत्तगनोसाण । पर्याप्तानी निथाये । त्रपज्जत्तगाउक्कमति । अपर्पाप्ता उपजे । जत्थएगोतत्थणिवमाअस खेज्जा । त्रिहा एकजीव तिहा निथे असख्याता । सेत्तवाटरवाउकाइया । ते तिमक्खो त्रिम वाउकाय । सेत्तयाउकाइया । एतले सर्व सूहमवाटर वायु भेटेकरी कक्षा ॥ से कित वणस्सइकाइया २ दुविहा प० त० । त्रिवे वनस्पतिकामना भेटकहेछे, गुरु श्रियप्रते कहैछे, दोगिथ । दोगप्रकारे कहैछे, लोकिम ।

त सुदुमवणस्सइकाइया ॥ सेकितमित्थादि ॥ अथ के ते वाटरजनस्पत्तिकायिका २ द्विविधा प्रज्जप्ता स्त द्यथा—प्रत्येकशरीरवाटरवनस्पत्तिकायिका द्य
साधारणशरीरवाटरवनस्पत्तिकायिका द्य, तत्रै क मेक जीव म्पत्तिगत म्प्रत्येक शरीर येयान्ते प्रत्येकशरीरा, स्ते च ते वाटरवनस्पत्तिकायिका द्य
प्रत्येकशरीरयाटरवनस्पत्तिकायिका, द्य ज्ञप्प स्वगतानेकमेदसूचक, सुमान न्तुल्य प्राणापानाद्युपभोग यथानवति, एव आसमत्ता देहीजावेनान न
त्ताना जन्तूना साधारण सङ्हरण येन त त्साधारण शरीर येपा ते साधारणशरीरा स्ते च ते वाटरवनस्पत्तिकायिका द्य साधारणया
टरवनस्पत्तिकायिका, च ज्ञप्पो वा पि स्वगतानेकमेदसूचक ॥ सेकितमित्थादि ॥ अथ के त प्रत्येकशरीरवाटरवनस्पत्तिकायिका - मूरि राह-प्रत्ये

तजहा—सुज्जमवणस्सइकाइयाय वाटरवणरसइकाइयाय, से कित सुज्जमवणस्सइकाइया २ दुविहा पणत्ता,
तं०—पज्जत्तसुज्जमवणस्सइकाइयाय अ्पज्जत्तसुज्जमवणरसइकाइयाय । सेत्त सुज्जमवणस्सइकाइया । से कित
वाटरवणस्सइकाइया २ दुविहा पणत्ता, तजहा—पत्तेयसरीरवाटरवणस्सइकाइयाय साहारणसरीरवाटरव

सुदुमवणस्सइकाइया । सुदुमवनस्पत्तिकाय । वाटरवणस्सइकाइया १ । वाटरवनस्पत्तिकाय २ । सेकितसुदुमवणस्सइकाइया २ दुविहा प० त० । हि वे ते जि
य्यत्ते गुरू सममविके सुदुमवनस्पत्तिकायना दीयप्रकार कक्षा ते कहैके—पज्जत्तसुदुमवणस्सइकाइया । पर्याप्ता सुदुमवनस्पत्तिकाय । अपज्जत्तसुदुम
वणस्सइकाइया । अपर्याप्ता सुदुमवनस्पत्तिकाय । एतले सुदुमवनस्पत्तिकाय कक्षा । सेकितवाटरवणस्सइकाइया २ दुविहा प
त० । ते गिय्यक्के कण वाटरवनस्पति कहो स्वाभोजो तदगर कहैके—हेगिय्य । दीयप्रकारेकक्षा ते कहैके—पत्तेयसरीरवाटरवणस्सइकाइया । प्रत्येक
शरीर वाटरजनस्पत्तिकाय पहिलो । साहारणसरीरवाटरवणस्सइकाइया । दूजो साधारणशरीर वाटरवनस्पत्तिकाय । सेकित पत्तेयसरीरवाटरवणस्स
इकाइया २ द्वालसविहा प० त० । गिय्यत्ते गुरूप्रति कहै कण ते प्रत्येकशरीर वाटरवनस्पत्तिकाय गिय्यत्ते गुरूक्केके—प्रत्येकशरीर वाटरवनस्पत्तिकायना
१२ वारे भेत्तकक्षा ते कहैके । रुखागुच्छागुग्गा लयाउवलीपल्लयाचेव । तथवल्लयहरियांसहि जलरुहकुहयायवोधव्वा १ ॥ वृत्त आम्मादि १ गुच्छावृन्ता

कशरीरवादरवनस्पतिकार्यिका द्वादशविधा प्रज्ञप्ता स्त यथा-स्वस्तेत्यादि ॥ वृक्षा धृतादयः, गुच्छा धृताकाप्रचृतीनि लता श्रपफलतादयः, इह येषां स्वल्पप्रदेशो विविधितोद्भूतैकशाखाव्यतिरेकेणा न्यत् शाखान्तर परिस्थूर न निर्गच्छति ते लता विज्ञेयाः, स्ते च घम्प कादय इति, यत्स्य कूष्मान्नीत्रपुष्पीप्रचृतयः, पर्वणा इत्यादयः, वृक्षानि कुशयुजुकार्जुनादीनि, वलयानि केतकीकदल्यादीनि, तेषां हि त्वचावलयका रेषा व्यवस्थिते ति, हरितानि तन्दुलीयकवस्तुलप्रचृतीनि, उपय्य फलपाकान्ताः, स्ते च शाल्यादयः, जले रुहन्तीति जलरुहाः, उदकावकपनकाद यः, कुटुणा भूमिस्फोटा जिघाना स्ते चा यकायप्रचृतयः, तत्र यथोद्देश निर्देश इति न्यायात् प्रथमतो वृक्षप्रतिपादनार्थमाह-से किं त मित्या दि ॥ अथ के ते वृक्षा ? सूरि राह-वृक्षा द्विविधा मञ्जमा' स्त यथा-एकास्थिका द्य यहुवीजका द्य, तत्र फल २ प्रतियेक मस्य येयान्ते एकास्थि का' द्य शब्दो वक्ष्यमाणस्यगतानेकनेदसूचक, तथा प्रायो स्थिवन्ध मन्तरेणै व फलान्तर्वर्तीनि यद्गनि बीजानि येयान्ते बहुबीजका, शोयाद्दे ति क प्रत्ययः, अत्रा पि च शब्दो वक्ष्यमाणस्यगतानेकनेदसूचक, तत्रै कास्थिकप्रतिपादनार्थमाह-से किं त मित्यादि ॥ अथ के त एकास्थिका अ

णस्सङ्काइयाय, से किंत पत्तेयसरीश्वादरवणस्सङ्काइया २ दुवालसविहा पसत्ता, तजहा-रुकागुच्छा गुम्मा लतायवल्लीयपह्णगाचेव । तणवलयहरियनुसहि जलरुहकुहणायबीधह्णा ॥ १ ॥ से किंत रुका २ दु विहा पसत्ता, तजहा-एगण्ठियाय वज्जवीयगाय, से किंत एगण्ठिया २ अण्णेगविहा पसत्ता, तजहा निव

कादि २ नवमालिकादि ३ लता चपकवृक्ष ४ नागरवेन ५ मेरुहृष्टे ६ नियो लण्णाल ७ वल्लयकेतकी ८ हरिमास ९ ओपधि १० पाणीमाहिजगे ११ भूतोड १२ जाणिवा । सेकितरुक्का २ दुविहा प० त० । शिथ कुणसा भेदकक्षा हसना गुनकहे हे शिथ । दोयभेद कक्षा ते कहेहे-एगण्ठियाय वहुवीया य । एकस्थिता एकबीज अने बहुबीजा २ । सेकितएगण्ठिया २ अण्णेगविहा प त । ते हिंवे एकबीजवालाना अनेभेदकक्षा ते कहेहे-णिवजवुकोस व सानभकोलपौलुमेलेय । सत्तद्रमोदयमानुय वल्लपलासेकरजेय ॥ १ ॥ नौव १ आब २ जवू ३ कोसव ४ सानग्रुष ५ अकोठ ६ पीनू ७ निसोडा ८ साल

ने त्रिविधा प्रज्ञा स्त द्यथा-निबधे इत्यादि ॥ गद्या त्रय, तत्र नियायत्रयं क्रोधाया प्रतीता, शान्त संज्ञं ॥ अस्तेति ॥ अङ्कोट प्राकृतत्वा रसूत्रे च
टकारस्य लादेश, यङ्कोटैश्च इति वचनात्, पीलु प्रतीत, ग्रीलु अमानक, शालकी गणप्रिया' मोचिकीमालकी देशविज्ञोपप्रतीतो, यकुल केसर, प
लाग किशुक, करजो नक्तमाल, पुत्रजीवको देशविज्ञोपप्रतिष्ठ, अरिष्ट पिशुमन्द, विज्रीतकोक्ष, ररीतक कोट्टुणदेशप्रसिद्ध कपायग्रहुल, भस्मात
को यस्य त्रिज्जितकात्रिधानानि फलानि लोकप्रसिद्धानि, उभ्येत्रिकाक्षीरणीधातकीप्रियात्पूतिकरजग्रह्णक्षिज्ञापागनपुलागनागत्रीपर्यंशोका
लोकप्रतीता, जे या यन्त्रे तद्व्यगारा इति ॥ ये पि चा न्ये तयाप्रकारा गत्र अकारा स्तत्रदेशविज्ञोपमविन स्त सर्वं व्ये कास्थिका वदितया, एते
या मेकास्थिकाना मूलान्य प्य सङ्ख्यजीवकानि, असङ्ख्यप्रत्येकशरीरजीवात्मकानि ॥ एव कन्द्या अपि त्वको पि शारया अपि प्रवाला

वज्रबुकोस वसालञ्च कोल्लपेलुसंलया । सत्तडमोयडमालुय वउलपलामेकरजेय ॥ १ ॥ पुत्तजीवञ्चरिठे विज्जेल
एहरिण्णयज्जत्ताए । उवेन्नरियाखीरिणि बोधेच्चैथायडपियले ॥ २ ॥ पूडंयनियकरए मण्हातहसीसवायञ्चस
णंय । पुसागनागरुक्के सिरियणीतहञ्चसंगेय ॥ ३ ॥ जेयावन्नेनहप्पगारा एत्तेसिणमूलाविञ्चसखिज्जजीविद्या
कडावि खथावि तयावि सालावि पवालावि, पत्तापत्तेयजीविद्या, पुष्पा अणुगेजीवा, फला एगठिया ॥ सेत्त

र ८ भावको १० सालक ११ कसर १२ पलास कसभ १३ कण्णच १४ पुत्तजीवञ्चरिठे विभेणएहरिण्णयज्जत्ताए । उवेन्नरियाखारणि बोधेच्चैथायडपिया
ने ॥ १ ॥ जोधापातां देगोभाया अगरो यो कांठानोबोलो आरोठो वहेडा हरहे भिलासा उवेन्नरिका खोरवो जाणिया धातकी प्रियाण ॥ २ ॥ पूडंय
निवकरजे सण्हातकसोमवायज्जमणाय । पुसागनागरुक्के सिरिविण्णोतहञ्चसंगेय ॥ ३ ॥ पूतिका नीव करन सेल्ला मगधदेश प्रसिद्ध तिम शोगम टीव
क पवागहच नागधुच ओपणी तिम अगोक्कच ॥ ३ ॥ जगवखेतहप्पगारा । जे ण्हावा अनरा तयाप्रकारना । एएसिणमूलावि असिण्ण जीविद्या । एह
ना मूलनविपे प्रमस्याता सखिज्जानाजीवहुवे । कदावि खथानि तयावि सालावि । मूलसधि हेउना उपरिना कट स्तन्धेनेयुड त्वथा सालप्रमुत्तु । पयाना

अपि प्रत्येक नसहस्रप्रत्येकशरीरजीवका, तत्र मूलानियानिजन्दस्या पत्ता दूमे रत्न प्रसरन्ति तेषां मुपरि बन्दा स्ते च लोभप्रतीता, रक्तन्या
 स्पृष्टा, त्वच खल्य, आलाग आसा, प्रवाता पल्लवाङ्कुरा ॥ पत्तापत्तयेजीवयति ॥ पत्राणि प्रत्येकजीवकानि, एकैक पत्र मेकैकेन जीवेना धिष्ठित मि
 ति ज्ञाय, पुष्पाण्य नैकजीवानि प्राय प्रतिपुष्पपत्र जीवप्राचा, तफलान्ये कास्थिकानि, उपसहारभाष-से त गगद्धिया ॥ सुगम, बहुबीजकप्रतिपा
 दनायमाह-सेकितमित्यादि ॥ अथ के ते यदुजीवका २ मूरि राह-बहुद्रीजका अनेकविधा प्रचक्षा स्त द्यथा-अत्येजेत्यादिगायात्रय ॥ यते च अस्थि
 यस्यास्वाक्रममातुनिहू विन्वामलकपनसदाक्रिमाद्यत्योदुम्वरयदन्ययो धनन्दिवृत्तपिप्पलीशतावरीप्रलकादुम्वरिकुसुम्भरिदेयदालिलिलकाल
 रीपमसपणदधिपणलोप्रधवचन्दनार्जुननीपकुटजकदम्बकाना मध्ये केचिदतिप्रमिगु केचिद्देशविज्ञोपतो वेदितव्या, नवर मिहा

पठेया ॥ से कित वज्रयोयगा २ अण्गगत्रिहा पणता, तजहा-अत्ययतेऽकविठे अवाठगमाउलिगविह्वेय
 गफणसदालिम अणसीत्येउवरवठेय ॥ १ ॥ गगोहणदिरुके पिप्परिमयरीपिलरुकरुकेय । काउवरि
 रि बाधह्वादेवदालीय ॥ २ ॥ तिलएलउएच्छतो हसिरीसेमन्नवसदहिवन्ते । लोभधन्नचदणज्जुण णीमेकु

तापतरजीवियाएकअण्गगजाना कलाएयादृग । प्रवाल प्रमख अकुरा पत्रप्रमख प्रत्येककायघुमे एकैकपत्रे एकैकजाग २ एवे एकफले एकजोवहुवे फू
 नेमे अनेकजोवहुवे । सतरगद्धिया । एतले एकस्थिता जोव कक्षा । सेकितचहुवीयगा २ अण्गगत्रिहा प० त० । द्विवे गिण्य कहे गुरप्रते कण वन्नवोज तद
 दे बहुबीजना अनेकभेटके ते कक्षा तिम । अत्ययतिदकण्डे । अन्तिकनामाहस १ तिटुकवचर कोठ । अवाठगमाउलिगविह्वेय । अवाडगवीजोरा
 ख । आमलगफणमटाडिम आमात्येउ वरवडेय ॥ १ ॥ आसला फाण्य दाडिम अमल्य पोपर वट । निगोह नदिगळे पिप्परिमयरीपिलरुकरुकेय ।
 काउवरि कयुभरि वावच्चा देवदालीय ॥ १ ॥ तयोध नटिहच पोपर सतावर लज्जहच कादवरी धणिया आणिया देवदाक ॥ १ ॥ तिलएलउएच्छतो
 वमिरोनेसति वसदहिवन्ते । लोभधन्नचदण्जुण निवे कुटए कयेय । तिलकटा अण्गगजाना कलाएयादृग । प्रवाल प्रमख अकुरा पत्रप्रमख प्रत्येककायघुमे एकैकपत्रे एकैकजाग २ एवे एकफले एकजोवहुवे फू

मलमादयो न लोके प्रसिद्धा प्रतिपत्तया स्तेषा भेकास्थिकृत्यात्, किन्तु देगविडोपप्रसिद्धा यदुद्योजना गव केचन ॥ अं या यत्ने तहप्य
भारति ॥ ये चा न्य तथाप्रकारा एव प्रकारा ह्य पि यदुद्योजका मन्तव्या, गतेषा मपि मूलकन्दरक्यत्वक्गारा प्रयाला प्रत्येक मसङ्क्षेप
प्रत्येकदरीरजीयका, पत्राणि प्रत्येकजीवकानि, पुष्पाण्य नेकजीवकानि, फलानि यदुद्योजकानि' उपसहारमाह-सं त मित्यादि ॥ निगमनद्व

ऊर्णकयवेय ॥ ३ ॥ जयात्रये तहप्यगारा एतसिणमूलावि अस्सखिज्जजीविया, कटावि खधावि तयात्रिसालात्रि
पत्रालावि, पक्षा पत्तेयजीविया, पुष्पायअण्णगजीविया, फलावज्जवीया, सेत्त वज्जवीया ॥ सेत्त रुक्का ॥
से कित गुच्छा २ अण्णगविहा पक्षा, तजहा-वाडगिणिअल्लडपुण्ण ईयतहकच्छरीयजासुमणा । रुक्वीअ्याह
इणीली तुलसीतहमाउलिगाय ॥ १ ॥ कुल्युज्जरिपप्पलिया अतसीविह्वीयकायमाईय । चुसपफोलाकडलि
वाउव्वावत्युलेवदरे ॥ २ ॥ पत्तउरसीयउरए हवडतहजवासएययोधवे । णिगुणिअक्कतवुरि अ्याहइंचेवतलउ

अर्जुन नाव कटज कदंबकुच । जगवण्णतहप्यगाराएणिमिणमूलविअसविज्जजीविया । ले वनो अनेरा तथाप्रकारा एहना मूलपिण अस्सम्यत्तजीवमहि
त हवे काइवज्जनामून अन्नज्जवीवहवे । कटावि खटावि तयावि मानावि पवानावि । कटनेविपे खन्धनेविपे त्वचानेविपे शाखानेविपे प्रवान पक्षमनेवि
पे । पता पत्तेयजीविया फला वहुवीया । पक्षनेविपे प्रत्येककोवहवे पक्षमे वहुवीजहवे तेहनाभेदकथा । सेत्तवहवीरुगा । एतने वहुवीजनाभेद कथा ।
सेत्तकथा । तं विम हन् ॥ सेकितगच्छा २ अण्णगविहा प त । द्विवे, गुच्छानाभेद विधायिअहे गरुहके-गुच्छानाभेद अनेक प्रकारे कथा ते कहैछे-
वाडगिणिअल्लपण्ण अण्णकच्छरीरजासुमणा । रुक्वीअ्याहणीली तुलसीतहमाउलिगीय ॥ १ ॥ वैगण रीडणी सज्जको तिम कच्छरीना गुच्छा जाणिवा रूपा
आटी नीलफलो तुलसी तिम बीजोरा सतीरण ॥ १ ॥ कटथुभरिपिप्पलिया अयमोवलोकायमाईय । चुसपफोलाकडलियावायायावत्युलेवदरे ॥ २ ॥
कटारी पोपरण अन्नमो वनोयकारामादि च्चुम फटोन कटनिका वाउलिका वाअन्नो वदरवृक्ष ॥ २ ॥ पत्तउरसीयउरए हवडतहजवासएययोधवे ।

य सुगम, मम्रति गुच्छप्रतिपादनाथमाह-संकि त मित्यादि ॥ एते गुल्मादिभेदा प्राय स्वरूपत एव प्रतीता, केचि द्वेणविजोपा दवगन्त
या, अत्र वृक्षादिषु यस्यै कस्य नाम गृहीत्वा परत्रापि तन्नाम गृहीत तत्रान्यो त्रिजजातीय सदृग् नामा प्रतिपत्तव्य, अथवा, एकोपि क

का ॥ ३ ॥ सणपाणकासमद्ग जुग्घाफुगसामिसिदुवारंय । करमहुञ्जुहसग करोरएरावणमहत्ये ॥ ४ ॥
जाउलतमालपिरिली गयमारिणिकुव्वकारियाजेनी । जावडकेयडतहग जपाफुलादासिञ्चुकील्ले ॥ ५ ॥ जेया
वणे तहप्पगारा सेत्त गुच्छा ॥ से कित गुम्मा २ अणंगविहा पसत्ता, तजहा-सेरियएणोमालिय कोरिठय
वत्युजीवगमणोज्जे । पीडंयपाणकणडर कुज्जायतहसिदुवारंय ॥ १ ॥ जाईमोगरतहज्जू हियायतहमस्त्रियायवा
ती । वत्युलकच्छुलसेवा लगंठिमगदंतियाचेव ॥ २ ॥ चपगजाईणवणी इयायकुदंतहामहाजाडं । एवमणेगागारा

गिगुडिपुडू, अट्टदंयतलन्नाडा ॥ ३ ॥ पववृच उरसो उरज हुवे तिम जवास जाणिया निर्गुडो अक आठ तवरकोनिच्चै तेलोडावृच ॥ ३ ॥ सण
पाणकासमद्ग जुग्घाफुगसामिसिदुवारंय । करमहुञ्जुहसग करोरएरावणमहत्ये ॥ ४ ॥ सण पान कामसहुवृच आघाडो व्याम सिदुवार कर अडू
सा कोर कटानो रावण ॥ ४ ॥ जाउनतमानपरिलो गयमारिणिकुव्वकारिया भेडो । जाउकोउदतहग जपाडनाटसिञ्चुकीले ॥ ५ ॥ जाउल तमाल परि
लो मडेगिगोय गजनारणो कुव्वकारिका भोडो यावत् केनको तिम गडपाडल एहवा अकील ॥ ५ ॥ जेयावणेतहप्पगारा । ज अनेरा तथाप्रकारना ।
सेत्त गुच्छा । ते तिम गुच्छाकक्षा ॥ सेकित गुम्मा २ अणंगविहा प त । ते कुग गुल्मा गुत्तुहै ते अनेकप्रकारे कक्षा ते कहैहै-सेरियए
थामालिय कार्टेवधजोगमणोज्जे । पौडपाणकणडर कुज्जायतहसिधवारंय ॥ १ ॥ सेरीयनामा नवमालिका कोरटक वधुजीवक विपडुरिया
फुन सनाजनामा गुल्म प्रौतिकर प्राणतर प्रसिद्ध कणवर कुव्वजजनामा तिम निर्गुडो ॥ १ ॥ जाईमुगरतहज्जू हियाउतहमस्त्रियाययासती । वत्युलकच्छुल
सेया लगंठिमगदंतियाचेव ॥ २ ॥ जायनाफुन मागरा तिम जूने तिम मानतीगुल्मा वासलो गत्युन कच्छालगुल्मा सेवालगुल्म गठिमगनामे दतिमग ॥ २ ॥

हवतिगुम्नामुणयन्ना ॥ ३ ॥ सेतु गुम्ना ॥ से कित लयाने लयाने अणेगविहाने पणत्ताने, तजहा—पउमल
यानागलया अणसोगचपयलयाचतलता । वणलतवासतिलता अडमुत्तयकुंदसामलता ॥ १ ॥ जेयावणेत
हव्यगारा सेतु लयाने ॥ से कित वल्लीने २ अणेगविहाने पणत्ताने, तजहा—पूसफलीकालिगी तुंत्रीतपुसीय
एलवालुकी । घोसालंडपफोला पचगुलिअ्याणालीय ॥ १ ॥ कगूलयाकटुइया कक्कोफुडकारियवईसुजगा ।
कुयवायवगलीपा वायव्लीतहदेवडालीय ॥ २ ॥ अण्फोअ्याअुइमुत्तय नागलयाकणहसूरवल्लीय सघटसुमिण
सावि जायसुमकुविदवल्लीया ॥ ३ ॥ मुद्दियअ्यावल्ली वीरविरालीजियतिगोवाली । पाणीसामाचल्ली गुंजा

चपमजाइणउणा याउकुदातधामहाजाई । एवइणेगारा इवतिगुम्नामुणयन्ना ॥ ३ ॥ चपक जातो नवरणी मचकन्द तिम महाकाय इम अनेजमेड
आकारकै गुण्य नातिअणिवा ॥ ३ ॥ सेतुगुया सेकित लयार अणेगविहा प तजहा । ते तिम गळ ॥ ते हिवे गिय लताजातिपूछेगुरू है हेमहानुभाव ।
नाजाति अनेक प्रकारनो कहौ तेकहेई—पउमलनागलया अमोगचपलयायभूयनया । वनलययासतिलया उडमुत्तयकुंदसामलया ॥ १ ॥ पट्टलता
नागलता अगोकरना चपकलता भूतलता वनलता वासतोलता अतिमुक्तलता कुटलता श्यामलता ॥ १ ॥ जगावणेतहस्पारा । जे पणि और तथा
प्रकारना ते लता कहिये । सेतलताघो । लता वनस्पति कहो ॥ सेकित वल्लीघो वल्लीघो अणेगविहाघो प० त० । हिवेगियपूछे कण ते वल्ली वल्ली अनेक
प्रकारनो कहौ तेकहेई—पूसफलीकालिगी तुंत्रीतपुसीयणालीय । घोसालंडपफोला पचगुलिअ्याणालीय ॥ १ ॥ कगूलाकडुइया ककोलाकरियवईसु
भगा । कुयवायवगलिपावे वल्लोतहदेवडालीय ॥ २ ॥ अण्फोअ्याअुइमुत्तय नागलताकणहसूरवल्लीय । समटसुमिणमावि जामणकुविदवल्लीय ॥ ३ ॥ मु
ग्गियावजो वीरानीणजतिगोवानो । वाणीमासावलो गुजावलीउवत्याथी ॥ ४ ॥ सेसिविदुगोत्तफमिया गिरिकणइमानयायअजणई । टहफलवको
गलिमा गलोउतउप्रकडोदोया ॥ ५ ॥ पूसफलीका लिगौ गनो नीटथी एलची चौभडो घोसातकी पटोल पचागुलो नालिका ॥ १ ॥ कगू कटुकी ककोडा

धि दनेकजातीयको प्रवृत्ति यथानालिकेरीतर रेकास्थिक स्वचो यलयाकारत्वा च वलय स्ततो नेकजातीयत्वा दनेकत्वा दपि न नाम निर्दिश्य

वल्लीयवत्याणी ॥ ४ ॥ ससविदुगोत्तफुसिया गिरिकसडमालुयायञ्जणई । दहफुल्लयकागलिमा गलीयतह
 अक्कन्नोदीया ॥ ५ ॥ जेयावसे तहप्यगारा सेत वल्ली ॥ से कित पवगा २ अणुणगविहा पसत्ता, तजहा—
 डस्कयाडस्कुरुये वीरुगतहडक्कनेयमासेय । सुठेसरयेवेत्ते तिमिरसतपोरगणले ॥ १ ॥ वसेवेल्कणए कका
 वसेयववसेय । उदएकुणएविमए ककावेल्कणले ॥ २ ॥ जेयावसे तहप्यगारा सेत पवगा ॥ से कित
 तणा १ तणा अणुणगविहा पसत्ता, तजहा—सेक्रियगनियहोत्तिय दप्पकुसेपवएयपोळडला । अणुणअसाढए
 रो हियसिसुयेप्रखोरनुसे ॥ १ ॥ एरुक्कुरुविंद करकरसुठेतहाविभगूय । मज्जरतणटुरयसिप्पिय बोधवे
 सुकलितणेय ॥ २ ॥ जेयावसे तहप्यगारा सेत तणा ॥ से कितवलय २ अणुणगविहा पसत्ता, तजहा—तले

करेना मभगा कवधा वागला पर्वका तिमन डेवडालो ॥ २ ॥ अपाक अतिमुक्ता नागरवन कृष्णवल्गा सवय समनसा जासुण कुविटवल्ली ॥ ३ ॥ मुट्टि
 का अवा विराली जयतो भोपानो वाणो मभामवलो गुजावली वत्याणो ॥ ४ ॥ सेमवतो दुगोवा फुरसो गिरिकर्णो मालुका अजना द्रहो फालिका कर्
 गणी मोगरो तिम अकावीटो ॥ ५ ॥ जेयावसे तहप्यगारा सेतवलीओ । जे अन्य पिण तथा प्रकारना तेवलोकिइये णत्तेवलीकही ॥ सेकित पवगा २
 अणेगविहा प० त०—तेकुण पर्वग पर्वग अनेक प्रकारनाकक्षा तेकहे—से० डी इजुवाटिका दोससो इकड मासो सुठ तमरिस पोरणय वसि सेच्छक
 णा ककावसो वाववसो उटक कुठक विमुक कठेन कप्पाणो ॥ १ ॥ जेया० । जेएइवा अनेरा पिण ते पर्वग कहिये । सेत पवगा । एतले पर्वग कक्षा ॥
 सेकित तथा अणेगविहा प० त० । तेकुण तण तण अनेकप्रकारना कक्षा ते कहिये । सेठिगति ॥ सेठित भूतिका होतिक डोभ कुय पर्वग पोडल
 अर्जुन आयाट रोहिस सुगवक खोरभुम ॥ १ ॥ एरुड कुवविट करकच सुठ विभगू मधुरतण खुरक सिप्पव गुल्लतण ॥ २ ॥ जेया० । अन्यपिण एइवा ते

मान न विरुप्यते । साम्प्रतमुक्तानुक्तार्थसङ्ग्रहार्थमिदमोह-नोणोविहेत्यादि ॥ नानाविधं नानाप्रकारं संस्थान आरुतियेषा तानि नानाविधस्य

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

तमालेतक्कलि, तेयालीसालिसारकक्षाणे । सरलेजात्रतिकेयइ, कदलितहपउमरुकेय ॥ १ ॥ नुयसरुक्रहि
गुरुस्के, लवंगसर्केयहोडवोधवे । पूयफेलीखेजूरी, बोधव्वानालिपरीय ॥ २ ॥ जेयात्रये तहप्पगारा सेल्ले
वलया । से कित हरिया ? हरिया अण्णगविहा पसत्ता, तजहा—अज्जीरुहवोदाणो, हरितगेतहतदुलेज्ज
गतणंय । वत्थुलपोरगमज्जा, रंपोइत्रक्षीयपालक्का ॥ १ ॥ दग्गपिप्पलीयट्ठही सालियसाएतहेवमफुक्की ।
मूलगसरिसवअविल, साएउजियंतएचेव ॥ २ ॥ तुलसीकरहउराले फणज्जुएअज्जएयन्नूयणए । चोरगदमण

जे एहवा अनेरा तथाप्रकारेना दणक्कहिवा देगोभापाये । सेत्ततथा । ते तिथ दण कहवा । सेकित वनया २ अण्णोविहा प० त० । तेमिय पृष्ठे कुण य
नय भेट, तद गुणे वलयनाभेट अनेकप्रकारे कक्षा ते कहै—ताल तमालेतहलि तेयनिसालेयसारकर्त्तये सरलेजात्रतिकेयइ कदलितह वप्पदेण्ठेय । १ ।
तानहच तगालहच तलोहित सालिका गारकक्षाण सरले जावची केतकी कटली तथा धर्महच । भुगवक्खहिगुवसे संवगहेक्खइ दोधरे पुण्णली
खज्जरीबोधवा नालिपरीय । २ । भूतहच हीगहच लवङ्गहच एहवेनाम ते जाणिया पूण्णल खिज्जरी जाणिवी नालिकेर । २ । जयावसेतहप्पगारा ।
एहवा पर्णा तथाप्रकारे अनेरा । सेतवखवा २ सेकित हरिया अण्णगविहा प० त० । एतले वनस्यतोना वनयानभिट कक्षा त हिदे हरितनाभेट पृष्ठे मि
य तद गुणकहै हरितभेट तिम हेगियसे हरितभेट अनेकप्रकारे कक्षा तेकहै—अक्कोरुहवांठाणे हरियसतटदुलिज्ज । तसेय वत्थुलपारगमज्जार पोउव
सोउपालयका । १ । अज्जीरुहवांठाण हरित तथा तदुल दणवच्छेख पौर सालीर पाववली पालका । २ । दग्गपण्णलियादवा सालीयसएततहेवमफुक्की
मूलगसरिसवअविल रंगयउजियतिएचेव । १ । दग्गपोपल टवी सत्तिवा तिमडोच मेडुकी मूलग सरसव अविच सोउत जयतो निसे । तुलसीकरहउ
राने फ पिण्णैअज्जण्णयभूयणए चोरदमणमरुचग सयपुण्णादेवेवतहा । २ । तुलसा क्षण उदारं फाणिज अज्जुन भूचन चोरदग अनक रुवेन सय

धि दनेकजातीयको प्रव्रति यथानालिङ्गेतिरु रेकास्थिरु स्त्वचो यलयाकारत्वा च वलय सतो नेकजातीयत्वा दर्नेकत्वा दपि त नाम निर्दिश्य

वल्लीयवत्याणी ॥ ४ ॥ ससविदुगोत्तफुसिया गिरिकसडमालुयायञ्जणई । दहफुल्लयकागलिमा गलीयतह
 अक्कवोदीया ॥ ५ ॥ जेयावसे तहप्पगारा सेत वल्लीञ्ज ॥ से कित पव्वग २ अणुगविहा पसत्ता, तजहा—
 डरूक्याइरूकुवन्नेय वीरुणातहडक्कानियमासेय । सुठेसरेयवेत्ते तिमिरेसतपोरगणले ॥ १ ॥ वसेत्तलूकणए कका
 वसेयववसेय । उदएकुरुएविमए ककावेलयकक्काणे ॥ २ ॥ जेयावसे तहप्पगारा सेत पव्वग ॥ से कित
 तणा ? तणा अणुगविहा पसत्ता, तजहा—सेरियगतियहोत्तिथ दप्पकुसेपव्वएयपोरुडला । अणुगञ्जसाठए
 रो हियसिसुयवेयखीरनुसे ॥ १ ॥ एरुनेरुविंद करकरसुठेतहाविन्नगूय । मज्जरतणतुरयसिप्पिय वोधवे
 सुंकलितगेय ॥ २ ॥ जेयावसे तहप्पगारा सेत तणा ॥ से कितवलय २ अणुगविहा पसत्ता, तजहा—तले

करेना मभगा कवधा वागला पवेको तिमज देवढाला ॥ २ ॥ अणोक्क अतिमुक्का नागरवल कण्णञ्जा सवय ममनसा जासुपर्ण कुविटवली ॥ ३ ॥ मुट्टि
 का अवा विराली जयतो गोपालो वाणी मामावन्नो गुजायली वत्याणी ॥ ४ ॥ सेसवती दुंगांचा फूसो गिरिकर्णी मालुका भजना द्रहो फालिका क
 गणी मोगरो तिम अक्कावोदी ॥ ५ ॥ जेयावसे तहप्पगारा सेतवलोओ । जे अन्य पिण तथा प्रकारना तेवलोकिहिये णत्तेवलोकिहो ॥ सेजित पव्वग २
 अणेगविहा प० त०—तेकुण पर्वग पर्वग अनेक प्रकारनाकक्षा तेकहेहे—सेन्ही इच्चवाटिका वीरुणो इक्कड मासो सुठ तमरिस पोरगण वसि सेच्छक
 णा ककावसो वाचवसो उटक कुठक विमुक कठवेन कथाणी ॥ १ ॥ जेया० । जेएहवा अनेरा पिण ते पर्वग कहिहिये । सेत पव्वग । एतले पर्वग कक्षा ॥
 सेकित तथा तथा अणेगविहा प० त० । तेकुण तृण तृण अनेकप्रकारना कक्षा ते कहेहे । सेठियगति ॥ सेटित भृतिका इतिक डाम कुय पर्वग पोडल
 भर्जुन आपाड रोहिस सुगवक खोरभुस ॥ १ ॥ एरुड कुरविंद करकच सुठ विभगू मधुरतृण कुरक सिप्पय गुल्लतृण ॥ २ ॥ जेया० । अन्यपिण एहवा ते

एकजीव एकजीवाधिष्ठित कि सर्वेषां मयि न त्वाह-तालसरलनालिकेरीणा तालसरलमुपलक्षण तेना त्वेषां मयि यथागम मेक जीवाधिष्ठितत्वं इत्यस्य प्रतिपत्तव्यं, अन्येषां तु स्कन्धा प्रत्येक मेकप्रत्येकशरीरजीवात्मना इति सामर्थ्या देवसेय ॥ स्वर्गाविभ्रगेगजीविया इति पूर्वमभिधानात्, अथ यदि प्रत्येकमेकशरीरजीवाधिष्ठिता स्तत क्व मेकस्यैकशरीराकारा उपलभ्यन्ते इति, तदस्य स्थानस्वरूपमाह-जडसगले त्वादि ॥ यथा सकलसपपाका श्लेष्मभिश्चाका श्लेष्मद्रव्यविमिश्रिताना वलितावतिरेकरूपा भवति, अथ ते सकलसर्पेषा परिपूर्णशरीरा सन्त पृथक् स्वस्वायगाएनया तिष्ठन्ति तथा नया एवो पमया प्रत्येकशरीरिणा जीवाना शरीरसङ्घाता पृथक् स्वस्वायगाहना भवन्ति, इति इह जीवा

स्सवर्ते कटहारे कोरुणदे श्वरविदे तामरमे जिमे जिसमुगालो पोस्कले पोस्कलच्छिल ए जंयात्रस्से तहप्य गारा सेत जलरुहा । से कित कुहणा ? कुहणा अणंगविहा पसत्ता, तजहा-आए काए कुहणे कुणक्की टव्हलिया अफाए सज्जाए लोए वसोणहिया कुरए १ जंयात्रस्से तहप्यगारा सेत कुहणा । जाणाविहस ठाणा रुक्काणएगजीवियापत्ता । खधोविणगजीवां तालसरलनालिएरीण ॥ १ ॥ जहसगलसरिसत्राण सिलेस

सेकित कुणहा २ अणंगविहा प० त० । कुण गुरुकहे ते प्रनेकप्रकारे कहैछै, कुणहानामा वनस्पतीनाभेदेतिके गुरु भिन्न कहैछै जहो । आएकाएकहणे क कण्ठद्वयद्विग्रा सपभाएसेत्ताए छतोपवसोणहियाकहरए । भाग काय कहण कणक द्रव्यद्वलिका सप्रभ सेताक छत्राक वसोणहित कुहरकनमा । जोगवर्णतइवगारा सेत कुणहा । जे अनैरा तथाप्रकारे सर्व कुहण कहिये । जाणाविहसठाणारुक्काण एगजीविया पसत्ता । गानाप्रकारे सस्यान न नेकभाकारे वृक्षादिकना सर्वपत्रादि एकजीवछै तेकछा-खधाविणगजीवां तालसरलनालिएरीण जहसगलसरिसयाण सिलेनमिच्छापवटियावटो । खु न्य पिण एकजीवछै ताल खजुरो नानैरो सदेष्ट खवा गाथा कहैछै, जिम सकल सरसव रूप द्रव्य वोकाणोद्रय तेणे मित्रबोधो एकठायाय जिम । पसेवसरीराण तहहोतिसरोरसधाया जहवातिलपप्यहिया बहुएहिलिहिसधवामतो । प्रत्येक शरीरप्रते तिमहुने शरीरसधात एकठाछै जिम तिलपा

पिन्नादे सौम्यस्यानीये रागद्वेयोपचितं तथाविधं कर्म संकलसंप्रत्यक्षानीया प्रत्येकशरीरा सकलसंप्रत्यक्षं संप्रवेदितप्रतिपत्त्या पृथक् स्व
स्यायादकप्रत्येकशरीर्येवित्प्रतिपत्त्यं, अत्रैव दृष्टान्तान्तर माह-जह्वेयादि ॥ वाञ्छ्यो दृष्टान्तान्तरसूचने यथा तिलशङ्खलिका तिलप्रधाना
पिष्टमयी व्युत्पत्तिका बहुनि स्तिले मिश्रिता सती यथा पृथक् २ स्वस्यावगाहतिलात्मिका प्रवर्तते, कथञ्चि देकरूपा च, तथा अनये वो पमया
प्रत्येकशरीरिणा जीधाना शरीरसद्गता कथ च्चि देकरूपा पृथक् स्वस्यावगाहना श्र प्रवर्तते, उपसहारमाह-संक्षमित्यादि ॥ युग्म ॥ स स्मृति
पाचारण्यनर्पतिकायिकप्रतिपादनायेमाह-चेकितमित्यादि ॥ अथ के तं साधारणशरीरवादनस्पतिकायिका अनेकविधा प्रक्षेपा क्षाद्यथा-अथ
दि ॥ एतेषु केचिदतिप्रचिदुत्था केचि देयविशेषत स्वय मेव ज्ञातव्या ॥ ज्ञेयानन्तराविद्यादिति ॥ ये पि वा न्ये उक्तव्यतिरिक्तो ज्ञाया प्रका

मिस्साणवहियात्रहा । पत्तेयसरीराण तहहोतिसरीरसघाया ॥ २ ॥ जहवातिलपप्पक्रिया वज्जएहितिलेहिं
सहतासती । पत्तेयसरीराणं तहहोतिसरीरसघाया ॥ ३ ॥ सेत्त पत्तेयसरीरवादनवणप्फडकाइया । से कित
साहारसरीरवादनवणप्फडकाइया ? १ अण्णेगविहा पण्णा, तजहा-अवए पणए सेवाले लोहिणी निन्न
त्यिन्नगा अस्सकणी सिहकणी सिउठाततोमुसदीय ॥ १ ॥ ससकुण्हरियाजारु, ठीरविरालीतहेवकिहीया ।

पडी बद्धतिका एकठय,दे याकेव्वे । पत्तेयसरीराण तहहोतिसरीरसघाया संक्षपत्तेयसरीर वायरवणक्खालाद । प्रत्येकशरीर तिमएव शरीरसघात
मंलो पतते तिम प्रत्येकशरीर वादन वणक्खतोकाउगा भेटकक्षा । सेकित साधारणसरीरवादनवणक्खालादया २ अण्णेगविहा प २ त १ । ते द्विवे सावारण
शरीर धनस्पतोनाभेट केतला, तट मुक्कहे साधारणशरीर वादनवणक्खतोना अनेकभट कक्षा ते केहेइ-अवपणएसेजाले नोहिणोमिहणीहप्पिभगा
पमोकाणिसोवक्खणी सिउ ठेनतोमस,दीय वक्कुडारिवा । अवक पनक सेजाल रोहिणो मिघुनो द च्छमगाअगेकणी सिउकणी सज्जटित्तंजन्दे मुसट न
वचन्द कुन्दरो । जोरुवोरविरालो ततथान्नावावहलिदसिगवरे याउलउवाग्रूलकन् कुण्हकदेसंमहनापावलदेएतदेव । लोरो वीरविरालो तिमहोज लो

तन्निर्द्देशिगवरेण, अलुगंमूलएइ यक्तूय कणककृतंमज्जपोगलंडंतहेव मज्जसिगी विरुहा सप्यसुगधा डि
 त्वारुहा चेव वायरुहा पाढामियवालुकी मज्जरसा चैव रायवद्दी य पउमा य माठरी दति वक्रिकिहाति
 यावरामासपणी मगपणि जीवियारिसिके य रेणया चेव कारुली खीरकारुली तथा जगीणहाईयाकिमिरा
 सिन्नहमुंत्याणंगलंडंपेल्गाईयं किणहे पंडले य हेठहरतणया चेव लोयाणी केण्हकदेवज्जे सूरणकंठे तहेव
 सल्लुके एए अणतजीवा जेयावणे तहाविहा ॥ तणंमलंकदमूलो वसीमूलित्तियावरे । सखेज्जा मसखिज्जा बोध
 छाअणतजीवाय ॥१॥ सिंधाऊगंसुगुच्छो अणगजीवोउ हाति पायह्वो । पत्ता पत्तयजिया दोणियजीवानु फले

तो वानिद्र युक्तेर आलू रक्तान् मलौ कम् कणकन्द मधुषां पोलिव तिमहोज । मुहसिगीविरुहा सप्यसुगधाछिन्नरुहाचेव वीयदहापाठाभिवधाबुकोम
 हरसचेध । मधुसिगी विरुढो सपेनाखन्यो छिन्नरुहा निवै वीजरुहा पाठारुहा मितयातुहा मधुररस निवै । रायवद्दीयपउमाउ माठदताचक्रोकि
 टित्तियवराए नासपणिमुलापणी जीवियारसहेयेणुगचेव । रायवेल पद्मा नाठरी दाती चखो क्विदिभक्तिभरत मावपणी मुदपणी जीविकरसभ रेणुका
 निवै । कायालिखीरकारुलो तहभगौचिपनिहोएव किमरासिभदमुच्छाण गुणइएगिगीवपिल्लगए । कारुलो खोरकारुली तह तिम भाग निवै क्रमरा
 गि भद्रमोघ गुलो गिलीय वलुका । किणपेसलेहहे हरतचेयाचेखोयइणीकरहे कंदेवलीमूरण केदेतेहेवखल्लूरे । कणपटाल वडकन्द हरततु निवै लोवा
 णी कणकन्द वल्लकन्द सूरणकन्द तिमहीन खिलोहा । ए अणतजीवा जेयावणेतहाविहाण । इणा कदाभादि अनन्तजीवहे जे एइवा प्रनेराहोज तथा
 प्रकारया । तणमूलक मने वसीमूलित्तियावरे सखिज्जामसखिज्जा बोधव्याणतजीवाय । तणमूल कन्दमूल द्यगीमूल इणामादि सखाता नमर्याता का
 णिवा मनन्तालीन । सिंधाऊगसगुच्छो अणगजीवोउहोइणायलो पत्तापत्तेवजिया दोणियजीवाफलभणिया । सिंधोहानो जे गुच्छहुवे तेइमादि प्रनेक
 लोव जाणिया हुने पतले २ मत्वके वेवे लोवहुवे फलमादि कक्षा । लसमूलखभगस समाभगीयदीसंदे नणतलीवेउसेमूल जेवावणेतहाविहा २२ ।

पिकारं श्लेषद्रव्यस्यातोये रागद्वेषोपर्यन्तं तथावर्धे कर्म संकलसंपपस्थानीया प्रत्येकशरीरा संकलसंपपग्रहण संपपवैचित्त्यप्रतिपत्त्या पृथक् स्व स्वावगाहकप्रत्येकशरीरवैचित्त्यप्रतिपत्त्यर्थं, अत्रैव दृष्टान्तान्तरमाह-जह्वेत्यादि ॥ वाशब्दो दृष्टान्तान्तरसूचने यथा तिलशफुलिका तिलप्रधाना पिष्टमयी व्युत्पत्तिका बहुवृत्ति स्तिलैः मिश्रिता भवती यथा पृथक् २ स्वस्वावगाहतिलात्मिका प्रवर्तते, कथञ्चिद्वैदेकरूपा च, तथा अन्ये यो पदमयी प्रत्येकशरीरिणा जीयान्ता शरीररुद्धाता कथञ्चिद्वैदेकरूपा पृथक् स्वस्वावगाहेनाद्य प्रवर्तन्ते, उपसहारमाह-संज्ञमित्यादि ॥ युग्म ॥ यस्मिन् साधारणवन्नस्पतिकाम्यिकापिकप्रतिपादनाद्येमाह-चेकितमित्यादि ॥ अथ के ते साधारणशरीरयादग्नयनस्पतिकाम्यिका अनेकविधा प्रद्योता स्तद्यथा-प्रव रत्यादि ॥ एतेषु केचिदतिप्रसिद्धा एकेषु द्वेषविशेषतः स्वयमेव ज्ञातव्या ॥ ज्ञेयावर्तन्तएवविद्याहति ॥ ये पि वा न्ये उक्तव्यतिरिक्ता स्तथा प्रका

भिरसाणंवाहियात्रहा । पक्षेयसरीराण तहहोतिसरीरसघाया ॥ २ ॥ जहवातिलपम्प्यक्रिया वज्रएहितिहेहि सहतासती । पक्षेयसरीराण तहहोतिसरीरसघाया ॥ ३ ॥ सेतं पक्षेयसरीरवादरवणफडकाइया । से कित साहारसरीरवादरवणसडकाइया ? १ झणगेविहा पसता, तजहा-अत्रए पणए सेवाले लोहिणी निह्ल स्थिन्नगा अस्सकणी सिहकणी सिंठाततोमुसदीय ॥ १ ॥ ससकुणहरियाजारु, ठीरविरालीतहेवकिहीया ।

पट्टी वद्धतिला एकठयये याकेहवे । पक्षेयसरीराण तहहोतिसरीरसघाया सेतपक्षेयसरीर वायरवणस्साइकार । प्रत्येकशरीर तिमहुवे पारीरसघात भेनो पतते तिन प्रत्येकशरीर वाटर वनसतोकाउगा भेदकणी । से कित साहारसरीरवादरवणस्साइकार २ अणगेविहा पं० त० । ते हिंवे सावारण गरीर वनसतोनाभेड केतला, तड युवकेहे साधारणशरीर वादरवणस्सनोना अनेकभट कणी ते कहहे — अत्रपणपसेगाले लोहिणोमिहणीहपिड्ढिभगा असोकणिमोहकणी सिंठ ठेनत्तोमस, ठीय वचकुडारिया । अत्रक पनक सेवान रोहिणो मिधनो दे रेकभगाअणकेणी सिहकणी सजटिततकन्दे मुसठ न कन्द कन्दरो । जोरुत्तीरविरालो तहवर्जहावहानिदसिगबरे आउलउयामूनएकव कल्पकदसूमन्त्रोपावसइएतहेव । औरो वीरविरालो तिमहोज को

ग्रन्थानि तथाप्रकाराणि छापिकृतमूलभनसमप्रकाराणि तान्यप्यनन्तजीवानि ज्ञातव्यानि, यद्यकन्दरक्त्यत्वम्ज्ञायाप्रयासपप्रपुष्पफलव्रीजवि
पया अवि नत्र व्याख्या 'सम्प्रति प्रत्येकज्वरीरलक्षणाभिधानार्थं गाथादशक माह-जसस्त्वादि ॥ यस्य मूलस्य जनस्य सतो जह्नु जह्नुप्रदेश हीरो

जसपत्तस्सन्नगस्स समोज्जगोपदीसई । अणतजीवउसेपत्ते जेयावन्नेतहाविहा ॥ ७ ॥ जसपुष्पफरमजगस्स
समोज्जगोपदीसई । अणतजीवउसेपुष्पे जेयावन्नेतहाविहा ॥ ८ ॥ जसफलस्सन्नगस्स समोज्जगोपदीसई ।
अणतजीवफलेसेउ जेयावन्नेतहाविहा ॥ ९ ॥ जससयीयस्सन्नगस्स समोज्जगोपदीसई । अणतजीवउसेयीए
जेयावन्नेतहाविहा ॥ १० ॥ जसमूलस्सन्नगस्स हीरोज्जगोपदीसई । परित्तजीवउसेमूले जेयावन्नेतहाविहा १
जसकदस्सन्नगस्स हीरोज्जगोपदीसई । परित्तजीवउसेकद्वे जेयावन्नेतहाविहा ॥ २ ॥ जससखधस्सन्नगस्स

साभगा० अणतजीवपदार्थसे जेयावणेतहाविहा । जे सासभागेयके समाभग दोसै तेमाल अन्नस्तजोवम हुवे जे णहुया ग्रनरा तगप्रकरे । जसपत्तस्य
भगस्य समंभ० अणतजीवसेपत्त जेयावणेतहाविहा । जिए पातडे भागतायका सम भग दोसै ते पत्र अन्नस्तजोव हुवे जे अनेरा पिण तिणप्रकारे
जाणिया । जसपुष्पफरमजरस समंभोगोपदीसई अणतजीवउसेपुष्पे जेयावणेतहाविहा । जिए फूलभागेयके समंभ० हुवे दोसै ते अन्नस्तजोव हुवे फूल
जे अनेरा तथाप्रकारे । जसफलजरसम रस समंभ० अणतजीवउफलसेण जेयावणेतहाविहा । जिएफल भागतेयके समाभग दोसै ते फल अन्नगतजोवमे
हुवे जे पद्वहा तथाप्रकारे । जसमूलजरसम रस हीरोभगोपदीसई अणतजीवउसुमल जेयावणेतहाविहा । जेसल भागेयके विषमभग दोसै ते मूल प्रले
क जीवसहित कहिवे जे ग्रनरा तथाप्रकारे । जसकदस्सन्नगस्स हीरोभगोपदीसई परित्तजीवउसेकद्वे जेयावणेतहाविहा । ज कद्वेभागेयके विष
मभग दोसै ते कद्वेमाहि प्रलेक जीवमाह हुवे जे अनेरा तथाप्रकार । जसकदस्सन्नग रस हीरोभ० परित्तजीवउसेसुख जेयावणेतहाविहा । जे

रा उक्तप्रकारा स्तेष्व नन्तजीवा ज्ञातव्या ॥ तथेत्यादि ॥ चणमूल कन्दमूलय द्या पर वशीमूल एतेषां मध्ये क्वचि ज्जातिभेदतो देशभेदतो वासह्य ता जीवा क्वचिदसङ्गता क्वचि दनन्ता य ज्ञातव्या ॥ सिंघाढगस्तेत्यादि ॥ शृङ्गाढस्य यो गुच्छ-सो उनेकजीवो जयति ज्ञातव्य । त्वक्शखादी नामनेकजीवाल्लकत्वात् केवल तत्रापि यानि पत्राणि तानि प्रत्येकमेकैकस्मिन् द्वौ २ जीवौ ज्ञातिता ॥ जस्समूलस्सेत्यादि ॥ यस्यमूलस्य पत्रमस्य सत समसकान्तरूप यन्माकारो ब्रह्म प्रकर्षण दृश्यते तन्मूलमनन्तजीवमवसंय ॥ जेयावन्नेतहाइति ॥ यात्य ऽपि चान्यानि

ज्ञाणिता ॥ २ ॥ जस्समूलस्सन्नगस्स समोज्ञंगोयदीसए । अणतजीविउसेमूले जेयावस्सेतहाविहा ॥ १ ॥ जस्सकदस्स न्नगस्स समोज्ञंगोयदीसई । अणतजीविउसेकदं जेयावन्नेतहाविहा ॥ २ ॥ जस्सखधस्सन्नगस्स समोज्ञंगीय दीसई । अणतजीविउसेखधे जेयावन्नेतहाविहा ॥ ३ ॥ जस्सतयाएन्नगाए समोज्ञंगोयदीसई । अणतजीवा तथासाउ जेयावन्नातहाविहा ॥ ४ ॥ जस्ससालस्सन्नगस्स समोज्ञंगीपदीसई अणतजीविउसेसाले जेयावन्ने तहाविहा ॥ ५ ॥ जस्सपवालस्सन्नगस्स समोज्ञंगोपदीसई । अणतजीविपवालसे जेयावन्नातहाविहा ६ ॥

द्विव साधारण प्रत्येकरो लक्षण हुवे जिणमूलभागे धके समोभग दोसै ते मूल अनन्तजीव ते जाणिवो जे वलो अनेरा तथाप्रकारे इस १० । जस्सकंदस्स मूलस्य समोभगोयदीसइ अणतजीविउसेकदं जेयावस्सेतहाविहा ११ । जिण कन्दमूल समोभग सकाकार दोसै ते कन्दमे अनन्तजीव हुवे ते कन्दनेविधे जे अनेरा तथाप्रकारना तेकन्द जाणिवो । जस्सखधस्य समोभग अणतजीविउसेखधे जेयावस्सेतहाविहा । जिण स्तम्भभागे धके समोभजतो भगदोसै ते स्तम्भ अनन्तजीव मिश्रहुवे इस स्तम्भ जिके अनेराप्रकारना जाणिवो । जोसेतइयाएभागाएसमोभग अणतजीवतयासाओ जेयावस्सेतहाविहा । जिण नो त्वचा भागधके भाजता समोभग दोसै ते त्वचा अनन्तजीवने हुवे एहवी अनेरोत्वचा जाणिवो तथाप्रकारे । जस्ससालस्य समोभग अणतजीविउ सेसाले जेयावस्सेतहाविहा । जेह प्रवानटोसी भागधके समोभग दोसै ते प्रवाज अनन्तजीव दोसै जे एहवा अनेरा तथाप्रकारे । जस्सपवालस्य समोभग स

या, यव कन्दरूपशामायिण्या अपि तिस्रो गाथा परिगवनीया, अपुना तामामेव लक्ष्मीना प्रत्येकगीत्यपरिष्ठानाय ननगामाह-चममसू-
लस्सेत्यादि ॥ गापाचतुष्टय यस्य मूलस्य काष्ठात् मध्यसारात् खली धरुलरूपा तनुतराजगति सा परित्तजीवा प्रत्यक्षशरीरजीवात्मिका द्रष्टव्या,
जयावनेतद्वाहति ॥ या पि चान्या अधिष्ठतया प्रत्यक्षशरीरजीवासकत्वेन निश्चितया कृत्या समानरूपा लक्ष्मी सा पि तथाविधा प्रत्येकशरीर-
जीवात्मिका अयगन्तव्या, यव कन्दादिविषया अपि तिस्रो गाथा प्रावनीया, यदुक्त-चस्समूनस्सजद्गुस्ससमोज्झोपदीसइ ॥ इत्यादि तदेव लक्षण

स्म हीरोन्नगेपदीसइ । परित्तजीवेउसेपुण्णे जेयावणेतहाविहा ॥ ८ ॥ जस्सफलरत्तनगस्स हीरोन्नगेपदीस
इ । परित्तजीवेफलेनेउ जेयावणेतहाविहा ॥ ९ ॥ जस्सवीररत्तनगस्स हीरोन्नगेपदीसइ । परित्तजीवेउसे
वीए जेयावणेतहाविहा ॥ १० ॥ जस्समूलस्सकठान् लक्ष्मीवहलत्तरीज्जे । झुणत्तजीवाउसावल्ली जायाव
णात्तहाविहा ॥ ११ ॥ जस्समूलस्सकठान् लक्ष्मीवहलत्तरीज्जे । झुणत्तजीवाउसावल्ली जायावणात्तहाविहा ॥ १२ ॥

जं फून् भागतायका, समाभगदासे ते फून् अनन्तजीवम इवे ते चनेरा नानाप्रकारे ते पिण जाणिया । लक्खकनस्यभास्य समोभं गिदोत्तर अयत्तजोवे
उमलेमे जेगाइसेतहाविहा । जे फून् भाकतेयके समोभगदोसे ते फन चनत्तचोवेमे इवे जे एइवा चनेरा तथा नानाप्रकारे इम जाणवा । लक्खवीथक्ख
भगस्य समोभगायदोसइ अणत्तजीवेउसेमोए जयावणेतहाविहा । जे बोअभागतायका समोभग दोसे तेवीच चनेरा नानाप्रकारना तेपिण इमदोअ
जाणिया । उरमनूनरममंगस हीरोभगाउदोसए परित्तजीवेउसेमूले जगावणेतहाविहा । दिवे मूनभागेयका विषमभग दोसे ते मून प्रत्येकजोव मदि
तं कहिये चनेरा तथाप्रकारना तेपिण इमाजाणिया । जस्सकदस्सभगस्स हीरोभगाउनीसए परित्तजीवेउसेकटे जगावणेतहाविहा । जे कन्टनाजेउके
विषमभग दोसे तेकन्टमादिः प्रत्येकजोव इवे जे चनेरा तथाप्रकारना ते पिण इम जाणिया । उरमख्खउरमभगस्स हीरोभगो परित्तचोवेउसेखुधे जेगा
यणेतहाविहा । खोअम्यभाजिथक्ख विषमभगदोसे ते खगव प्रत्येकशरीर कहिये एइवा चनेरा तथाप्रकारना ते पिण इम जाणिया । जोसेतदेयाएभाए

विषम्वेदमुद्गतरा प्रदुष्यते प्रकृपणं स्पष्टरूपतया लक्ष्यते ततो मूल परित्तबीव प्रत्येकशरीरजीवात्मकं ज्ञातव्यं ॥ ज्ञेयावन्नेतराविहाइति ॥ या
न पिय धानि अन्नानि तथाप्रकाराणि अधिरुतसहोरमनमूलसदृशानि मूलानि ता न्यपि प्रत्येकशरीरजीवात्मकानि मन्त्रव्यानि एव कन्द
दिविपया अपि नय गाथा ज्ञावनीया , यत्र कुत्रापि लिङ्गव्यत्यय स प्राक्तनलक्षणाद उच्येय , अचुना मूलादिगताना वल्लरूपाणा लक्ष्मीनामन
लनीयत्यपरिज्ञानांलक्षणा माह-अस्ममूलस्सेत्यादिगाथावत्तुष्टय ॥ यस्य मूलस्य काष्ठाद् मध्यसारात् लक्ष्मीवत्कलरूपा लक्ष्मीवत्तया नवति सा अनन्त
कीया ज्ञातव्या ॥ नैयावत्कृति ॥ यापि, चा न्या अधिकृतया अनन्तजीवत्वेन निश्चितया समानरूपा लक्ष्मी सापि तथाविधा अनन्तजीवात्मका ज्ञात

हीरोन्नगेपदीसई । परित्तजीउसेखंधे जेयावसेतहाविहा ॥ ३ ॥ जस्ततयाणजग्गाए हीरोन्नगेपदीसई । परि
त्तजीवातयासाउ जेयावसेतहाविहा ॥ ४ ॥ जस्तसालरमजगस्स हीरोन्नगेपदीसई । परित्तजीउसेसाले
जेयावसेतहाविहा ॥ ५ ॥ जस्तपवालरसेजगस्स हीरोन्नगेपदीमई । परित्तजीउपयालेज जेयावन्ततहाविहा
६ ॥ जस्तपत्तस्तजगस्स हीरोन्नगेपदीमई । परित्तजीउसेपत्ते जेयावसेतहाविहा ॥ ७ ॥ जस्तपुफ्तस्तजग्गा

खड्गजेउके विपमभग दोस ते खड्ग प्रत्येकशरीर कहिये कह्यो जे अनैरा तथाप्रकारे ते पिण लाणिया । जसितेराणभगण हीरोन्नगे परित्तबीवी
तयासा जेयावसेतहाविहा । जेहीने त्वेवा भोक्तृतायका विपमभगदोसै त्वचा प्रत्येकजीवमे कहिये कह्यो जे अनैरा ते पिण इम जाणवा । जस्तसा
नस्तमभगस हीरोन्नगे परित्तजीउकेसमाले जेयावसेतहाविहा । जे सालभालेथके विपमभग दोसै ते साल प्रत्येक जीवमे हवे जे कह्यो अनैरा पिण इ
महोन्न जाणिया तियाप्रकारे । जस्तसालरमभगस हीरोन्नगे परित्तजीउपयाले जेयावसेतहाविहा । जे साल भागेथके विपमभग दोसै ते साल प्रत्येक
जीवमे हवे कह्यो जे अनैरा ते पिण इमहोन्न जाणवा । जस्तपत्तस्तजगस समभगणदोसई अणतजीवसेपत्ते जेयावसेतहाविहा । जेपच भागतायका
समभग दोसै तेपच अनन्तजीवमे हवे जे अनैरापिण इमहोन्न जाणिया । जस्तपुफ्तस्तजगस समभगणदोसई अणतजावेरसेपुफ्त जेयावसेतहाविहा ।

जीवाउसाठ्ठी जायावणातहाविहा ॥ २ ॥ जस्ससधस्सकठान् ठ्ठीतणुयरीचवे । परित्तजीवाउसाठ्ठी
जायावणातहाविहा ॥ ३ ॥ जस्ससालाडकठान् ठ्ठीतणुयरीचवे । परित्तजीवाउसाठ्ठी जायावणातहावि
हा ॥ ४ ॥ चक्कागजजमाणस्स गठीचुण्णघणोचवे । पुट्ठीसीसिसणत्तेदण्ण अणतजीवविद्याणहि ॥ १ ॥

हिरलो खाल जाडोहवे ते छालिमाहि अनन्ताजोध खाल बहुतजाडोहवे-अनत्तजोवमे हुवे इम अनेरा तथाप्रकारे पिय कहवा । जखकदसकडाआ
छत्तीवहनतरीभवे अणतजीवाउसाठ्ठी जायावणातहाविहा । जकन्दनी काटनीख न जाडोहुवे तेइने अनत्तजोव इउ जेवनी अनेरा तथाप्रकारे तेपिय
इमडोल कहवा । जखकदसकडाआ छत्तीवहनतरीभवे अणतजीवाउसाठ्ठी जायावणातहाविहा । जे कन्द काटखालजाडो हुवे ते छायमे अनन्ता
जोवहुवे तो छत्ती अनेरा तथाप्रकारे इमडोल जाणिया । निसेसानाएकडाआ छत्तीवहनतरीभवे अणतजीवाउसाठ्ठी जायावणातहाविहा । ज सालना
काटनी खाल जाडोहवे वाकन रूप हुवे ते छाला अनन्तजोवमे कहिये तथाप्रकारे । जोसेसानाएकडाआ छत्तीवहनतरीभवे अणतजीवाउसाठ्ठी जाया
वणातहाविहा । जेसाल काटने खालजाडोहवे तेसानमे अनन्तजोव कहिये एहवा अनेरा पिय इमडोल जाणिया । जसमूनरसकडाआ छत्तीतणुयरीभवे
परित्तजीवाउसाठ्ठी जायाव । जेमलना काटनाटन घणो हुवे बाहिरलो खाल पातलो हुवे ते प्रत्येकरूप जोणिलो जे एहवा अनेरा पिय इमडोल
जाणिया । जसकदसकडाआ छत्तीतणुयरीभवे परित्तजीवाउसाठ्ठी जायाव । जकन्दना काटनीखाल पातलोहवे त खाल प्रत्येकग्यरीरमे क
हना अनेरा पिय इमडोल । जसखधरमकडाआ छत्तीतणुयरीभवे परित्तजीवाउसाठ्ठी जायावणातहाविहा । जे स्मग्ध काटनीखाल प्रत्येकग्यरीरमे क
हिये एहवा अनेरा पिय इमडोल । निसेसानाएकडाआ छत्तीतणुयरीभवे परित्तजीवाउसाठ्ठी जायाव । जे सालना काटनीखाल पातलोहवे तेछा
स प्रत्येकजोवमे कहिये एहवा जे अनेरा पिय इमडोल । घळाम-ज्जमाथरस गठीचुण्णघणोभवे पुट्ठीसीसिसणभेएण अणतजीवाविद्याणहि । जे भाजनेघ
के चक्काकार हुवे समाजदस्यानकमून-कन्ददिक हुवे ज गाठभाजते चूणधित हुवे पुधियोनीपरे पच वर्णभेदे रगहुवे ते पिय अणतजोवमे हुवे ते मूल

स्पष्ट प्रतिपिपादयिषु रिदमाह-चक्षागमित्यादि ॥ चक्षक चक्राकारमेकाक्षेन सम बहुस्थान यस्य जल्यमानस्य मूलरुन्दरुत्पत्त्यक्शासापत्रपुष्पादे
र्भवति त न्मूलादिक्रम नन्तर्जीव विजानीहि इति सम्यन्ध , तथागटीचुसुघणोन्नवेतिग्रयि , पर्वसामान्यतो जङ्गस्थान वा स यस्य जल्यमानस्य
वृक्षेन रजसा पनो व्याप्तो भवति अथवा यस्य पत्रादे मल्यमानस्य चक्राकार जङ्ग रजसा ग्रन्थिस्थाने व्याप्ति च विना पृथिवीसदृशेन भेदेन जङ्गस्या

जंस्सखंस्सकठानं लक्ष्मीवहलतर्गिन्नत्रे । शुणतजीवाउसाठक्षी जायावखातहाविहा ॥ ३ ॥ जस्ससाळाडक
ठानं लक्ष्मीवहलतर्गिन्नत्रे । शुणतजीवाउसाठक्षी जायावखातहाविहा ॥ ४ ॥ जस्समूलस्सकठानं लक्ष्मीतणु
यरीन्नत्रे । परित्तजीवाउसाठक्षी जायावखातहाविहा ॥ १ ॥ जरसकदस्सकठानं लक्ष्मीतणुयरीन्नत्रे । परित्त

होरी० परित्तजोमीतगासाग्री जयावणेतहाविहा । जेदको त्वाभागता विषमभगदोसै त्वा प्रत्येकजीवमे कहिये एहवा जे अनेरा पिण इमहोज
जाणिया । जरमसालरसभगरस होरीभ० परित्तजोवेडसेमाले जेगविखेतहाविहा । जेसाल भाजेयके विषमभग दोसै ते साल प्रत्येकजीवमे हुवे जे एह
वा अनेरा तेपिण इमहोज जाणवा । जरसपवानरमभरम होरीभ० परित्तजोवेपवालेसे जेयावणेतहाविहा । जे प्रयालभागेयके विषमभग दोसै ते
प्रयाल प्रत्येकजीवमे कहिये जे अनेरा तथाप्रकारे इमहोज जाणिया । जस्सपत्तभगस्य होराभोगदोसई परित्तजोवेडसेपत्तेजेगायखेतहाविहा । जे प
व भागेयके विषमभग दोसै ते पच प्रत्येकजीवमे हुवे एहवा जे अनेरा ते पिण इमहोज जाणिया । जस्स पुफ्फभगस्य होरीभ० परित्तजोवेडसेपुफ्फ जे
गावणेतहाविहा । जे फूल भागेयके विषमभग दोसै ते फल प्रत्येकशरीरमे कहिये जे एहवा पिण तिमहीज जाणिया । जस्सफनसभगस्य होरीभ०
परित्तजोवफनेमेउ जगावणेतहाविहा । ज फल भागताथका विषमभग दोसै प्रत्येकफल कहोजे जे अनेरा पिण तथाप्रकारे जाणिया इमहोज । जस्स
वायसभगस्य होरीभ० परित्तजोवेडसेमोए जेयावणेतहाविहा । जेजौल भागताथका विषमभग दोसै ते बीज प्रत्येकशरीरमे कहोजे एहवा अनेरा पिण
तथाप्रकारे जाणवा । जस्समूलकठानं लक्ष्मीवहलतर्गिन्नत्रे अणतजोवाउसाठक्षी जगावणेतहाविहा । जे मूलना काठनोमाहिजो गर्भदल घोडा अनेव

જીવાડસાઠલ્લી જાયાવણાતહાવિહા ॥ ૨ ॥ જસસપ્તધસસકઠાનું ઠલ્લીતળુચરીચત્રે । પરિસજીવાડસાઠલ્લી જાયાવણાતહાવિ
જાયાવણાતહાવિહા ॥ ૩ ॥ જસસપ્તધસસકઠાનું ઠલ્લીતળુચરીચત્રે । પરિસજીવાડસાઠલ્લી જાયાવણાતહાવિ
હા ॥ ૪ ॥ ચક્ષુગમજ્ઞામાણસ ગઠીચુણધનોચત્રે । પુઠત્રીસરિસપુણચેદેણ ચુણતજીવવિવાળાહિ ॥ ૧ ॥

હિરલો જાલ જાડોહયે તે જાલિમાહિ ચનત્તાલોધ જાલ ઘટુતજાડોહયે દન ધનેરા તથાપ્રકારે વિષ કરવા । જસસપ્તધસસકઠા
છત્રોવદનતરીમયે ધણતનીવાડસાઠલ્લી જીવાવણાતહાવિહા । જકન્દનો કાટનોજ ન જાડોનુમે તેદતે ચનત્તાલોધ હયે જેવલો ધનેરા તથાપ્રકારે તેવિષ
દમડોજ કરવા । જસસપ્તધસસકઠાના છત્રોવદનતરીમયે ધણતજીવાડસાઠલ્લી જીવાવણાતહાવિહા । જે કન્દ જાડોજાલનાડો હયે તે જાલમે ધનત્તા
જીવહયે તે જલો ધનેરા તથાપ્રકારે દમડોજ જાણિયા । ત્રિસેસાનાવકઠાપો છત્રોવદનતરીમયે ધણતજીવાડસાઠલ્લી જીવાવણાતહાવિહા । ના સાનના
કાટનો જાલ જાડોહયે વાકુલ રૂપ હયે તે જાલા ધનત્તાલોધમે કરિયે તથાપ્રકારે । જોસેસાનાવકઠાપો છત્રોવદનતરીમયે ધણતજીવાડસાઠલ્લી જાલ
વણેતહાવિહા । જેસાલ કાટમે જાલજાડોહયે તેસાનમે ધનત્તાલોધમે કરિયે કરવા ધનેરા વિષેદમડોજ જાણિયા । જસસપ્તધસસકઠાપો છત્રોતપુરોમયે
પરિસજીવાડસાઠલ્લી જાલ । જેમના કાટનાટલ ધર્મો હયે વાહિરનો જાલ ધાતનો હયે તે પ્રત્યેકરૂપ જાણિયો જેજનવા ધનેરા વિષ દમડોજ
જાણિયા । જસસપ્તધસસકઠાપો છત્રોતપુરોમયે પરિસજાવાડસાઠલ્લી જીવાડ । જેકન્દના કાટનોજાલ ધાતનોહયે તે જાલ પ્રત્યેકગરોરમે ક
દના ધનેરા વિષેદમડોજ । જસસપ્તધસસકઠાપો છત્રોતપુરોમયે પરિસજીવાડસાઠલ્લી જીવાડ । જેકન્દના કાટનોજાલ પ્રત્યેકગરોરમે ક
રિયે કરવા ધનેરા વિષ દમડોજ । ત્રિસેસાનાવકઠાપો છત્રોતપુરોમયે પરિસજીવાડસાઠલ્લી જીવાડ । જેમાલના કાટનોજાલ ધાતનોહયે તેજા
લ પ્રત્યેકજીવમે કરિયે કરવા જે ધનેરા વિષ દમડોજ । ધક્ષામ જમાપરસ ગઠીચુણધનોમયે પટનોમાથમેષમેય ધણતજીવાડસાઠલ્લી જેમાલનેય
જે પકાકાર હયે સમોક્ષાજાનમનુ કન્દાદિક હયે જ ગાઠમાલતે ચૂર્ણાયત હયે ધર્મધોનોપરે પવ ધર્મનેદે રાહયે તે વિષ્ટ ધનત્તાલોધમે હયે તે પૂન

न भवति सृंकरनिरप्रतमकेदारतरिकाप्रतरखरुस्ये व सभो ब्रह्मो प्रवतीति भावस्तमनस्तकाय विजानीहि ॥ पुनरपि लक्षणात्तरमाह-गूढोसि
रागमित्यादि ॥ यत्तत्र सहीर नि लीवम्या गूढसिराकमलस्यमाणशिराक्षीय यदपि च प्रनष्टसन्धि सर्वथा नुपलस्यमाणपत्रादुदयसधि तदऽनन्त
जीव विजानीहि, सम्यतिपुष्यादिगत विज्ञापमन्निधितसु राह-पुष्यानि चतुर्विधानि तद्यथा-जलजानि सहस्रपत्रादीनि स्थलजानि कोरुटकादीनि
एताव्यपि च प्रत्येक द्विधा तद्यथा-कानिचित् वृन्तबद्धानि अतिमुक्तप्रवृत्तीनि कानिचिन्नालवृत्तीनि जातिपुष्पप्रवृत्तीनि अत्र तेषा मध्ये कानिचि

गूढसिरागपत्तं सच्छीरजंचहोडनिच्छीरं । जपियपणठसधि अणतजीविवियाणाहि ॥ २ ॥ पुष्पाजलयाथलया
विटवद्यायणालियद्याय । ससिजससखेजा बोधवृणतजीवाय ॥ ३ ॥ जेकंदनलियावद्या पुष्पासखेजजी
विया । जिज्जयाअणतजीवा जेयावखेतहाविहा ॥ ४ ॥ पउमुप्पलिणीकडे अतरकदेतहेवज्जिह्मी य । एतं

फलं पचनो । गूढसिरागपत्तं 'सच्छीरनचहोयनिच्छीर' जपियपणठमधि अणतजीविवियाणाहि । गूढ सिरागधि होसैनही कोरसहित हुवे जे चौरविना
'हुवे जेइनी प्रतिष्ठा गुप्तसधिहुवे ए लक्षणेकरी अनगतकायना जीव जाणिया , द्विवे फूल फलनोसख्यालक्षण कहैकै-पुष्पाजलयाथलया विटवद्याय
णालवद्याय सखिजामसखिजा बोधव्याणतजीवाय । 'फूल चारभेदहुव अन कमलाटि थलज चपकाटिक एहवा बेभट हुवे बोटवइ चपकाटिक तालव
'जाइजूर घाटिक एहेविहै हव्यातोनीय पियहुने असख्याता पियहुने चमस्तजीव पिय जाणिया । जेकंदनलियावद्या पुष्पासखिजजीवियाभणियाह
'निहुयाअणतजीवा जेयावखेतहाविहा । जेकंदे नालवह जाइ जूदे आदिहु ते फूल सख्यात जीवातक कहा कीतरागे सिम्य फूलमे अनत्तजीव हुवे ए
हुवा अनरा पिय एहुवे-लक्षणे सवे जाणिया । परमुप्पलिणीकडे अतरकदेतहेवज्जिह्मी एअणतजीवा एगोजोवांसिसुणाले । पद्यनोनामकड सत्यजा
नामकडे अतरकड जलवनसती तिमहीज लक्षकार 'वनसती' संयंजीव अनत्ता जाणिया पद्यनीनेविदे स्थालमेविदे एगजीव । पनइहसणकदेय काद
नीयकडवए 'एएपरितजीवा जेयावखेतहाविहा । पहलोकड सहसनकड वनसती कूटवेवनसती निर्वियेय एसवं प्रलोकजीवातक जाणिया पनेरा पिय

स्वप्नादिगतजीवावेद्यया सह्यजीवानि कतिचिद् सह्यजीवानि कानिचिदनन्तजीवानि यथागम बोधव्यानि, अत्रैकविंशतिशेषमात्र-लोकैरन्यादि ॥
यानि कानिचित् नालिकावद्गुणानि पुण्याणि जात्यादिगतानि तानि सर्गाख्यपि सङ्घातजीवकानि ज्ञातानि तीर्थकराण्यथै, तद्दिहू रितृपुष्प पु
नरनन्तजीव यान्यपिचा न्यानि स्निहूपुष्पकल्पानि तान्यपि तथाविधानि अनन्तजीवालकानि ज्ञातव्यानि ॥ पउमुप्यलिनिकदेत्यादि ॥ पट्टिनी
कन्द उत्पलिनिकन्द अक्षरकन्दजलजनस्पतिविशेष कन्द जिल्लिका धनस्पतिविशेषरूपा, एते सर्वप्यनन्तजीवा नगर पट्टिन्यादीना विंशो मृणाले
यमज्जीवात्मके विसृणाले इतिज्ञाव ॥ पलरुइत्यादि ॥ पलरुइरुन्दो नसुनकन्द कन्दुको वनस्पतिविशेष, कुसुम्यको ज्येष्ठमय एत सर्वे पि प
रितजीवा प्रत्येकशरीरजीवात्मका प्रतिपत्तव्या, ये पि चा न्ये एव प्रकारा अनन्तजीवात्मकलक्षणविरहिता स्त पि तथाविधा प्रत्येकशरीरजीवा
त्मका वेदितव्या, पउमुप्यलेत्यादिगाय, हय ॥ पट्टाना मृत्पलाना नलिनाना सुजगाना योगविज्ञाना अरिन्दाना कोकनदाना शनपत्राणा सह
स्वपत्राणा प्रत्येक महन्त प्रसजधन्यन यानि च बाह्यपत्राणि प्रायो हरितरूपाणि पत्रकणिका पत्राधारभूता एतानि त्रीण्य व्यकज्जीवात्मकानि या

अणतजीवा एगोजीवोनिसमुणाले ॥ ५ ॥ पलरुइरुहसुणकदेय कदलीयफुल्लए । एणपरित्तजीवा जेयावन्नेन
हाविहा ॥ ६ ॥ पउमुप्यलणालिण सुजगसोगधियाणय । अरविदकुक्रण सतवत्तसहससपत्ताण ॥ ७ ॥
विटवाहिरपत्ता यकखियाचेवएगजीवरस अण्णितरगपत्ता पत्तेयकेसरमिजा ॥ ८ ॥ वेणुनलहुस्कुवाक्रिय

तथाप्रकारे प्रश्न जाणिवा । पउमउप्यलनलिण सभगसोगधियाणय अरविदकाकणाण मयत्तसहस्रपत्ताण । पत्त उत्यल नलिन सुभग सोगधिका
अरविदे कीकण वनस्पतौविशेष गतपत्र सहस्रपत्र । विटवाहिरपत्ता यकखियाचेवएगजीवस्य अण्णितरगापत्ता पत्तेयकेसरमिजा । पट्टाना मृत्पल वा
अपत्र प्रागे रुपसहित कणिका ए विण्णमोवैयै एकजोउड्डवे वाह्यपत्र कणिकाविषे एकजीव जाणिवो माहिलोपव पाउडो केसरमिजो एते १ गत्येकजो
वड्डवे । वेणुनलहुस्कुवाक्रिय मयभासदत्तुरकउरडे करकचमूठविहिरू वणाणतपप वगाणय । वेणुवग इण्णुवाटिकादि तत्र ननपतो उरउ, त्यादि चक्काका

नि पुरस्कराणि पत्राणि यानि च केसरणि या शभिष्ठा फलानि गतानि प्रत्येक भेदेक जीवाधिष्ठितानि ॥ वेणुमतउत्यादिगाथादय ॥ वेणु यंत्रो
नरु दृगपि गोप इतु वाक्रियादयो लोकेत प्रत्येकया , तथा नि दुर्वादीनि यानि च पवगानि पर्वपेत्तानि सतया यदन्ति यच्च पर्व यच्च बलिमोहउत्ति-
पर्वपरिवेष्टन चक्राकार एतानि एकजीवस्य सम्यर्थीय भवन्ति एकजीवात्मकानि भवन्तीति ब्राह्म , पत्राणि गतया सेकजीवाधिष्ठानानि पुष्पाख्य
नेकजीवात्मकानि ॥ पुष्पफलमित्यादि ॥ पुष्पफल एव कालिग तुय नपुप ॥ एतबालुत्ति ॥ बिज्रटविशेषरूप वातुम् बिज्रट तथा घोपातक पटोल त
न्दुक तिदूस् न्व य रफला गतपु प्रत्येक वृन्त सम ॥ सकटाहति ॥ समास सगिर तथा कटाह गतानि त्रीण्ये कस्य जीवस्य भवन्ति एकजीवात्मका
न्येतानि त्रीणि भवन्तीत्यर्थं , तथा एतेषा मेव पुष्पफलादीना तदुत्पन्नाना पत्राणि एयम् प्रत्येक भिति प्रत्येकजीवाधिष्ठिता न्येकैकजीवाधिष्ठि

समासइच्छूयइक्षेत्रे ॥ करकरसुठिचिहनु तणागतहपह्मगाणच ॥ १ ॥ अर्च्छिपञ्चपलिमो रुद्रयएगस्सहो
तिजीवस्स । पत्तयपत्ताइ पुष्पाइच्छूणेगजीवाड ॥ १० ॥ पुस्सफलकालिग तुवत्तउसेलुवातुक्क । घोसालयं
पफोल तिदूयचेवत्तिदूस् ॥ ११ ॥ वेटमसककाह एयाइहवत्तिएगजीवस्स । पत्तयपत्ताइ सकेसरमकेसरमिजा

र इवे ते सर्वजीव एसग्धी रज जाणिवा । इम लप तथा पेशे करी सहित । अर्च्छिपञ्च पलिमो उज्जयगगक्षहीतिजीवस्स पत्तयपत्ताइ पुष्पयमभेगजी
याइ । अर्च्छिपञ्च चक्राकार इवे एहने एकजीव इवे प्रत्येकपञ्च एकजीवाधिष्ठित एन अनेकजीवाधिष्ठित इवे । पुष्पफलकालिग तुवत्तउसेलुवातुक्क लुक्क
वामाडग्पटोल तिदूयचेवत्तिदूस् । फूलफल कोइलो कालिगडा तूवो बिभट घापातक फलविशेष पटोल तिदूक टिहसो । बिटमसककाह एयाइच्छूय
तिगगजीवम पत्तयपत्ताइ सकेसरमकेसरमिजा । सम समास गिर कटाह पत्र मिने एकजीवइय केयरा प्रकेयरा एकै जोवादिहत्त । सफासितजहाए
उज्जेलियायकुइणकटुक्के एग्गणत्तलौवा कटुक्केडाइनवणाए । मख्यात्त सज्जातको उव्वेइलिका कुइण कटुक्क वनम्पनो अनत्ताजोवात्तक कटुक्क इवे भ
जनोवे वनसतोविशेष एसवं अनत्तकाव । जाणिग्गवोए जीवावकमइसोविशग्गोया जीविग्गमन्तेजोवो सोविपत्तयपटमाए । जिजारे जीवयोनि नव

तापीत्यर्थं , तथा उक्तेसरा स्मकेसरा वा मिज्जावीजानि प्रत्येकं मेकैकबीजाधिष्ठितानि ॥ मरुत्ताद्युत्पादि ॥ गते कुह्नादिवनस्पतिप्रशेषा लोका
 त प्रत्येतया , एते वा नन्तबीजात्मका नवर ऋदुक्ते प्रजना स हि का पि देशविशेषा दन्तोऽनतजीवो भवति को वा सृष्टेःपीतात्मक इति
 आह-किं बीजजीव मय मूलादिजीवो भवति तदा अन्य स्मृतिरुपक्रान्ते इत्युच्यते इति परप्रमाणस्यार्थ-बीजजोषिपूटस्यादि ॥ योऽयं योनि
 भूते योऽन्यस्या प्राप्ते योनिपरिणाम मुञ्जरतो ति नाव , बीजस्य हि द्विविधा उपस्था तद्यथा-योऽन्यस्या प्रयोन्यवस्था च तत्र यदा बीज यो
 न्यवस्थान् ज्ञापति अथर्धो क्तित जन्तुना तदा तस् योनिभूत मित्यभिधीयते , उक्तित च जन्तुना निययतो ना यगन्तु ज्ञायते ततो ऽतिशायिना
 सम्यगिति खवेतन सवेतन वा अविध्यस्तयोनि योनिभूत मिति व्यग्रित्यते विध्यस्तयोनि तु नियमा दपेक्षनस्या दयोनिभूत मिति , अथ योनिरिति
 किमभिधीयत उच्यते-जजन्तोऽस्त्यतिस्थान मविध्यस्तशक्तिरन्वय मिति ज्ञात , तस्मिन् योने योनिभूतने बीवो व्युत्पन्न
 मिति उच्यते स यव पूर्वर्क्षो बीजजीवो ऽन्यो वा , आगत्य ततो ह्यद्यत्ते किं मुक्त प्रजति तदा बीजनिर्गमोऽपीयेन स्यायुप स्यात् बीजपरित्याग
 कृतो भवति तस्य च बीजस्य पुन रस्युक्तालाऽऽनिसयोगत्पसामग्रीमभाज स्तदा कदाचि रत गव प्राकृतो बीजनेयो मूलादिनामगोत्र नियथा
 तत्रा गत्य परिणमति कदाचि दन्य पृथिवीकायिकादिबीव या पि च मूते जीव इति य गय मूततया परिणमते जीव सो पि पत्रे प्रथमतये
 ति ॥ स एव प्रथमपत्रतया पि च परिणमते इत्येकबीवकृतेमूलप्रथमपत्रे इति आह-यद्येव ॥ सर्वोपविक्षितननुत्तु उगममाहोषयुत्तुननुत्तु ॥

१२ ॥ सप्फाएसज्जाए उब्बेहलियायकुहणकुदुक्को । एएञ्जणतजीवा कुदुक्कोहोइज्जगणाने ॥ १३ ॥ जाणिमूएधीए
 जीवीवक्खमइसोवञ्जणोवा । जोविञ्जमूलेजीवो सोविञ्जपत्तेपटमगाए ॥ १४ ॥ सञ्जोविक्खिसरुत्तरलु उगमम

स्मितकः बी तिहा ते पूर्वैर्जीव सा गारण जीव चनेने बीजमा चागीयां तेषां मूलसाधारणं रूपं पक्षे एकजीव । सर्वोपविक्षितननुत्तु उगममाहोष
 यतयाभिपिनो सोविचवियदुत्ततो दारपरत्तोश्चणोवा । मयं किंसनगुनिय जगता यनन्ताकाय कश्चिचे तेहीज वदतेयके पक्षे चन्तुदुदत्तं पक्षो प्रत्येक

इत्यादि वक्ष्यमाण कथं न विरुध्यते ? उच्यते-इह्यजीजीओ अन्यो वा चीनमूलत्वेनो त्वद्य तदुत्पन्नायस्या शरीरं तत हा उदन्तर आदिनी किं सलयावस्था नियमतो अनन्ताजीवा कुर्वन्ति पुन य तेषु स्थितिज्ञया त्परिणनेषु अत्रा त्रेव मूलजीओ अनन्तजीवतनुं स्वशरीरतया परिणमय्य ताव दृढंते याव तप्रथमपत्रमिति न विरोधः अन्ये तु व्याचक्ष्यन्ते-प्रथमपत्रमि ए या सौ यीजस्य सम्बर्धनायस्या तेन एकजीवकर्तृके मूलप्रथमपत्रे इति किं मुक्तं भवति-मूलसमुच्छ्रूनायस्ये एकजीवकर्तृके यत च नियमप्रदज्ञानायं मुक्तं मूलसमुच्छ्रूनायस्ये एकजीवपरिणमिने गत्र शेष तु किञ्चलपादिना उच्यय मूलजीवपरिणामावि जातिमिति तत ॥ सर्वो ऽवि किसलयो त्वन्तु उग्रममारो अगतते भगिनु ॥ इत्यादि वक्ष्यमाणमस्ति । मूलसमुच्छ्रूनावस्थानिवर्तनारम्भकाले किसलयत्वाज्ञाया इति आह-प्रत्येकशरीरेव नस्पतिकापिज्ञाना संयं कालगरीरायस्यामधिकृत्य किं प्रत्येकशरीरस्यमु त कस्मिंश्चिदवस्थाविशेषे अनन्तजीवत्वमपि सम्भवति, तथा साधारणवचनस्पतिकापिज्ञानमपि किं संयं कालमनन्तजीवत्वमुत कदापि प्रत्येकशरीरस्य रत्यमपि भवति तत आह-सर्वोयि किसलयइत्यादि ॥ इह संयं शब्दो परिशेषमाधी सर्वेपि वनस्पतिकाय रयंकशरीर साधारण यत्र किसन यावस्थामुपगत सन् अनन्तकाय स्तीयकरणधरे जगित स यव किसलयरूप अनन्तकापिक प्रवृद्धि गच्छन् भवतो वा भवति परितोवा क्षयः उच्यते-यदि साधारण शरीर निवन्त्यते तदसाधारण एव भवति, अथ प्रत्येकशरीर तत प्रत्येक इति, किञ्चित काला दृष्टं प्रत्येको भवति ॥ इति चे दुच्यते-अन्तर्मुहूर्ता स्थापि निगोदाना मुत्कपतो ऽप्यन्तर्मुहूर्तं काल यावत् स्थिति तत्ता ततो तन्मुहूर्तो त्वरतो विद्यतेनान प्रत्येको भवतो ति सम्प्रति साधारणलक्षणमाह-समयमित्यादिगाथाद्वय ॥ समय युगपद्युत्कान्ताना मृत्यवाना यता तेषा साधारणजीवाना समकमेककाल गरीर

माणोद्युणततेनगिनु । सोचैवविचहुतो होडपरिहोद्युणतोवा ॥ १५ ॥ समयंवक्ष्यताण समयतेसिसरीराणि

प्रत्येक हुवे साधारण ते साधारण हुवे साधारणजीव तेसमे समकान क्षपैवके । समयवक्ष्यताण समयतेसिसरीरनिवन्तो समयप्राणगुहण समयऊसाग जोसाने । सायवको तेदनाग्ररीरनो निहतिहुवे समयकाले सासोश्वास ग्रहण करे समकाने क्षसाय जोसास समकाने करे । रक्ष्यमाणगुहण वय

निर्दिष्टं त्रैवृत्तिं समकं च प्राणायामगुणं प्राणायामयोग्यं पुद्गलोपादानं ततः समकं मेककालं तदुत्तरकालत्राविता बुद्ध्यासनिश्चासौ तथा एकस्य यदापरादिपुद्गलानां ग्रहणं तदेव बहुधा मापि साधारणजीवानां मवसेयं । किमुक्तं भवति यदापरादिकं मेको गृह्णाति शोषा अपि तच्छरीराश्रिता यद्वोपि तदेव गृह्णाति तथा च यद्वहूना ग्रहणं तत्सहेपा देकशरीरे समावेष्टात् एकस्यापि ग्रहणं, सम्प्रत्युक्ताथोपसर्गमाह-साधारणेत्यादि ॥ सर्वेषामप्येकशरीराश्रितानां जीवानामुक्तप्रकारेण यत्साधारण साधारणसूत्रं नपुंसदत्तानिर्देशं आप्यत्वा दाहाराशयोन्यपुद्गतोपादानं यद्यसाधारणं स्म्राणायामयोग्यपुद्गलोपादानं उपलक्ष्य मेतत् यी साधारणपुद्ग्यासनिश्चासौ यावसाधारणशरीरनिर्दिष्टं ततस्साधारणजीवानां लक्षणं, सम्प्रतिपद्ये किस्मिन् निगोदशरीरे अनन्ता जीनां परिणता प्रतीतिरपि भवति तथा प्रतिपादयन्नाह-जहग्रयगोलोहस्यादि ॥ यद्याभ्यागोलो आसत् सत् तत्तत्तत्पनीयसद्भावा सर्वोक्तिपरिणतो भवति तथा निगोदशीवान् जानीरि निगोदरूपे व्ये केकस्मिन् शरीरे तच्छरीरात्

द्वैती । समयज्ञाणग्रहणं समयउत्सासनीसासो ॥ १६ ॥ एकस्सउजग्रहणं वक्ष्यगसाहारणाणतचेन्न । जग्रज्याणग्रहणं समासर्जतपिपुगस्स ॥ १७ ॥ साहारणमाहारी साहारणमाणपाणग्रहणच । साहारणजीवाणसाहारणलस्कणपुय ॥ १८ ॥ जहग्रयगीलोघतो जानतत्तवणिज्जसकासो । सद्येध्यगणिपरिणले णिनुजजीवे

साधारणाणितचेन्न जहग्रयगणपुयसमासर्जतपिपुगस्स । इकलो ग्राजाहार प्रतिग्रहणं करे समकान्तके घगा साधारणनो तिनदीज निपजाओ घा य स्यो तेहने घगा साहारणदिग्रहणं ते निगोदो गजीव ते समास एकठो रदिवा किमहुवे सञ्चानसतोमे तेहने घास्तगरीर एककायाये किस र हेहे तिहा जहा अगोलीधनो उगावा स्वयं करिषी । साहारणमाणपाणग्रहणं साहारणजीवाण साहारणलक्षणपुय जहग्रयगोलोदो । न हार पात्रगीनो साधारणसाहार सर्वजीवमेहे साधारणके अनुपात सास.स्वासनो नेगो सर्वजीव साधारण एकठे प साधारणनो लक्षणकक्षा इवे दृष्टात कहेहे - जिम लोहनी गोलो वस्योथको घाय तथा तपनीय राता सोनसत्तीखो ते सपं अतिकरो परिणतहुवे । जाओतसतवणिज्जसकासो सद्योद्यग

कनया छानन्तान् जीवान् जानीहि एव स्वसति ॥ एगस्सेत्यादि ॥ एकस्य द्वयोः स्याणां यावत्सङ्ख्यानां वा अष्टादशह्येयानां वा निगोदधीनां शरीराणि तेषु न शक्यानि कुत इति चेदुच्यते-अन्नावा कश्चे काटिजीवग्रहीतानि अन्नकवनस्पतिशरीराणि सन्ति अन्नतज्जीवपिण्डात्मकत्वात् तेषां कथं तत्तु पतन्त्यानीत्युक्तं आह-दीसतीत्यादि ॥ दृश्यन्ते शरीराणि निगोदजीवानां यादरनिगोदजीवानां अन्नानां ननु सूक्ष्मनिगोदजीवानां तेषां शरीराणां मनन्तजीवसङ्ख्यात्मा कल्पेऽप्यनुपलभ्यस्वप्नावत्वात्, तथा सूक्ष्मपरिणामपरिणतत्वात्, अथ कथमे तदवसीयते निगोदरूपशरीरं नियमा दन्तजीवपरिणामाविर्भावितं भवतीति उच्यते २ जिनवचनात् तच्चेदं ॥ गोयलाग्रसखेज्जा होंतिनिगोया अससपागोले । एकैको य निगोदं, अणतनीयो मुणेपद्वी ॥ १ ॥ सम्मत्ये तेषां मेघं निगोदजीवानां प्रमाणमभिधित्तु राह-लो-गागावेत्यादि ॥ एकैकस्मिन् लोकाकाशप्रदेशे एकैक निगोदजीव स्यापय एव मेकैकस्मिन् आकाशप्रदेशे एकैकजीवरचनया सीयमाना अन्नतलोकाकाशप्रदेशप्रमाणा निगोदजीवा भवन्ति सन्नति प्रत्येकवत्तरपतिजीवप्रमाणाह-लो-गागासपएसेइत्यादि ॥ एकैकस्मिन् लोकाकाशप्रदेशे एकैक प्रत्येकवनस्पतिजीव स्यापय एव सुक्तप्रकारेण सीय

तहाजाण ॥ ११ ॥ एगस्सदीरुहतिरुहव सखेज्जाणवपासिउसक्का । दीसंतिसरीराइ णिनुयजीवाणताण २०
लो-गागासपएसे णिनुयजीवठवेहिएक्केक्का । एवमविज्जमाणा हवतिलोयाअणताण ॥ २१ ॥ लो-गागासपदेसे
परित्तजीवठवित्तुएक्केक्का । एवमविज्जमाणा हवतिलोगाअणसखेज्जा ॥ २२ ॥ पत्तेयापज्जत्ता पयरस्सअणसख

षिपरिणयो निगात्रजीवोतहाजाण । तरतम भेदेकरो व्याप्तिद्वये तिस्रे दृशाते हेणिथ निगोदजीव जाणया । एगस्सदीरुहतिरुहव सखिज्जाणविपासिअं
सक्का दीसतिसरीराइ निगीयजीवाणताण । एकं ये विथ सख्याता जीवना गरीरना देखीनको वाटरनिगोदना पिणनथी दीसता, एद्वथी निगोदना
जीव मूत्ता अन्नताप्रमाणा कहेक्के-लो-गागासपएसे निगीयजीवठवेहिइक्के एवमविज्जमाणा हवतिनीयाअसखिज्जा । एकैके लोकाकाशप्रदेशे एकैके
निगादनीलोव थापिये इम थापताअज्जा हवे अन्नतलोकाकाशप्रदेशे सरोज्जा । एनेगाएत्तअ

माना प्रत्येकतरुजीया प्रसङ्गे लोकाकाशप्रदेशप्रमाणा भवन्ति, सम्प्रतिपर्याप्ताऽपर्याप्तभेदेन प्रत्येकसाधारणजनस्थितिजीधाना प्रमाणाणां पसेयाप
ज्जाता इत्यादि ॥ पर्याप्ता प्रत्येकवनस्थितिजीवा घनीकृतस्य लोकस्य सम्यन्धिन प्रतरस्य असङ्ख्यतमे ज्ञाने यावत् आकाशप्रदेशा स्ताव त्वमाणा जन
न्ति अपर्याप्ताना पुन प्रत्येकतरुजीवाना मसङ्ख्येया लोका परिमाण पर्याप्तापर्याप्ताना य साधारणजीवाना य साधारणजीवाना मन्तलोका, किं मुक्त जनति असङ्ख्यलोका
काशप्रमाणा अपर्याप्ता प्रत्येकतरुजीवाना अनन्तलोकाकाशप्रमाणा पर्याप्ता अपर्याप्ता य साधारणजीवा इति ॥ ज्ञेयवनेतरिति ॥ यपि चान्ये ऽनुत्तरूपा
स्तथाप्रकारा प्रत्येकतरुका य ते पि वनस्थितिकायेन प्रतिपत्त्या, ते समासु इत्यादि प्रागुक्तं, ननु यत्र को व्यान्तरपर्याप्त स्तत्र तन्निश्रया
अपर्याप्ता कदाचि सङ्ख्येया कदाचिद सङ्ख्येया प्रत्येकतरु सङ्ख्येया असङ्ख्येया या, साधारणा स्तु नियमा दनन्ता इति भावः ।

ज्ञानमिहाह । लोकाद्यसखाद्यप ज्ञानयाणसाहारणमणता ॥ २३ ॥ एतद्विषयसिद्धिं पञ्चस्कनेपरुत्रिजाजीवा
सुजमाद्याणागिज्जा चक्रुष्कासनतेदिति ॥ २४ ॥ जेयावये तहप्पगारा ते समासनु दुविहा पणत्ता, त
पज्जत्तगा य छपज्जत्तगा य, तत्थण जेतं छपज्जत्तगा तेण छसपत्ता, तत्थण जेतं पज्जत्तगा तेसिण वन्ता

हारणमणता । पर्याप्त अपर्याप्त साधारणजीव इव एकैके लोकाकाशप्रदेशे प्रत्येकलोक प्रत्येक स्थितये तथापि ये प्रतरना अस्यातमानो मात्रा इम
थापतायका द्रमव्यात लोकाकाशप्रदेशे याऽ अस्थितानां लोकाकाश इव पर्याप्त प्रत्येकजीव वतस्सतीनाद्यै तावत्तानां प्रतरने अस्यातमे भाग जेतना
याकाश प्रदेशमान अपर्याप्ता प्रत्येक तत्र अनगताकाश प्रदेशप्रमाण पर्याप्ताअपर्याप्ता साधारणजीविति, लोकाकाश असस्याता अपर्याप्तमाद्रे साधा
रणे अनगतजीव । एतद्विषयसिद्धिं पक्षेते परुविजाजीवा सुहमाश्रयायिगिज्जा चक्रुष्कासनतेदिति । एतदेव जनगतरीरे करो एतदा प्रत्येकजीव प्रख्या
कै मस्य एतदा अनागिज्जाका वस्तु ते ग्राह्य नचा नने दोनैवही । जेयावणतहप्पगारा ते समासथो दुविहा प० त० । जे एतदा अनेरा तथाप्रकारे
ते सवेपथकी दोमकारि कदा ते कहै—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य । पर्याप्तना अपर्याप्तना । तत्थण जेतं छपज्जत्तगा तेण छसपत्ता । तिहा जे भवयो

ममसिगमिन्यादि ॥ गतेषां साधारणप्रत्येकतरूपाणां वनस्पतिविशेषाणां वक्ष्यमाणानामिमां विशेषप्रतिपादिकवक्ष्यमाणां गाथा अनुगन्तव्याः प्र
तिपत्तव्यास्ता एयाह-तजहा-कदाय, कन्दा सूरगान्दादय कन्दमूलानि वृक्षमूलानि वनस्पतिविशेष गुच्छा गुन्मा वल्लय थ
प्रतीता वेणुना वशा स्तृणा न्यर्जुनादीनि पद्मोत्पलशृङ्गादकानि प्रतीतानि, हृष्टो जलजनस्पतिविशेष सवाल प्रसिद्ध कृष्णक पनक जनक
कच्छन्तानि कन्दुका साधारणवनस्पतिविशेषा गतेषां मेकोनविशतिसङ्ख्यानां त्वगादिषु मध्ये कस्यापि कापि योनि, किमुक्त स्रवति-कस्यापि
त्वप् योनि कस्यापि वल्ली याव तस्यापि मूल कस्या प्यग कस्यापि नध्य कस्यापि दीज मिति, संतमित्यादिनिगमनवत्पुय सुगम ॥ सदेव मु

देसेण गथादेसेण रसादेसेण फासादेसेण सहस्सगसो विहाणाइ सखेज्जाइ जोणिप्पमुहसयसहस्साड पज्ज
तगणिस्साए अणुपज्जत्तगा वक्कमति, जत्य एगो तत्य सिय सखिज्जा सिय अणुसखिज्जा सिय अणुगता एणसिणं
इमानु गाहानु अणुगतत्तवानु तजहा-कदायकदमूलाउ रुक्कमूलाइयावरे । गुच्छायगुम्भयल्लीय वल्लुवाणितणा
णिय ॥ १ ॥ पउमुप्पलसिवाळे हठेयसेवालकिण्हएणए । अणुएयकच्छन्ताणी कदुक्कोकूणवीसडेमे ॥ २ ॥

पुन ए नयो पाम्या वर्णीटिक । तत्यण जेत पजत्तगा तेषवणाएसेण गवाएसेण रसादेसेण फासादेसेण सहस्सगसोविहाणाइ सखिज्जाइ । तिहा जे प
यांपुता वर्णीटिगे गन्धादेये रसादेये रपयादेये शतसहस्र ममन्नु एतले नाम । जावणण्णमइउसहस्रार पज्जत्तनोसाए उपज्जत्तगावक्कमति । प्रत्येक व
नस्पती टमलाखोनि साधारण १४ लाख पर्वापुतानियावे जपजे अपर्यापुत । जत्यएगो तत्य मिउसखिज्जा सियअसखिज्जा मिय अणुता एणमिण्ह
माओ गाहानो अणुगतत्तवाओ । जिहा एकजोव तिहा हुने सख्याता चिवारे असख्याता चिवारे अनन्ता ठवे दिये साधारण वनस्पती ओलखुवाकाजी
कठेछे तेकिन तेजिम । कदायकदमूलाउ रुक्कमूलाइयावरे गुच्छायगुम्भयल्लीय वणुवाणितयाणिय । कट सूरणकट कटमूल हुजमूल एहया वीज गु
च्छा गुनम वेनडो वेणुका वया । पक्कमुण्णसवाडे हठेयसेवालकिण्हएणए गवाएअसख्यभाषी कदुक्कोकूणवीसरमे । टण पन् उत्यल सवाडा हठ संजाल ठा

क्ता गकेन्द्रिया सम्प्रतिहीन्द्रियप्रतिपादनार्थं माह-संक्तिमित्यादि ॥ अथ के ते हीन्द्रिया १ सूरिराह-हीन्द्रिया अनेकविधा प्रपञ्चा, तद्यथा पु
लाकिमियादित्यादि ॥ पुलाकिमियानाम पायुप्रदेशात्पत्वा कृमय कुनिप्रदेशोत्पत्त्या यद्वा समुद्रोद्भवा प्रतीता गहनया स स्व तपत्र युष्मा
युक्तिना युष्मा तपत्र शृङ्गा सामुद्रशङ्काकारा वराटा कपटका ॥ सिप्यिसुफुहति ॥ सम्यटरूपा शुक्तय चन्दिका अत्रा यथास्तु मयासम्प्रदाय
याच्या ॥ जेयासन्नतहाप्यगारादिति ॥ य पि चा न्ये तथा प्रकारा यय प्रकारा अतकप्रवरमभूमकस्यादय ते सर्व हीन्द्रिया प्रातव्या तेसम्प्रति

तयतस्त्रिपचालेसुय पत्तपुष्पफलेसुय । मूलगमज्जवीएसु जोणीकरमडकेत्तिया ॥ ३ ॥ सेत्त माहारणसरीर
वाटरवणस्सडकाडया । सेत्तवाटरवणस्सडकाडया ॥ सेत्त एगिटिया ॥ से क्कित वेडिटिया १ वेडिटिया अणंग
त्रिहा पणत्ता, तजहा-पुलाकिमिया कुच्छिकिमिया गहूगलगा गोलोमा जंतरा मोमगलगा वनोमुहा सू
ईमुहा गोजलोया जलोया जालाउया सरा सखगगा धुत्ता खुत्ता सवा वराणा सोत्तिया मोत्तिया कहुया
वासा एगनवत्ता दुहनवत्ता णदियावत्ता सवुक्का माइवाहा सिप्पि सपुणा चटणा समुदलिरका, जेयावसो

एणा पत्रक पववणे फूत्तण प्रवय कलभाणो २ एहमे कटुका ए १२ । तत्तकक्षिपवानेस पत्तपुष्पफलेसय मूलगमज्जवीएसु जोगिकक्षविकित्तिना । तव्वा
छाल कोट्टीपवास पान फूल फल मूलाग कोइतोमय वीज यानिकइवो कट्टा । मेत साहारणसरीरवायरयणस्सरकारवा । ते एहवो साधारणवणरप
तो कर वाटरवणरपति पिणकडो । सेत्त वायरवण ० सेत्त वण ० सेत्त एगिटिया ॥ सेकित वे-टिया २ अखेगविहा प०त० । ते एतले टीग वणरपतोनाभेट
साधारण वाटरनाभेट चादिकार कट्टो पावो एल्लेट्टिवत्ताति हविआट्टि कट्टा, हिबे शिण वेरन्टियको विवरी पूछेके, ते वेट्टियना भनेरुभेट्टे ते कहेके
मुन । पुलाकिमिया कुच्छिकिमिया गहूगलगा गोलीमा चेतरोसा मूलगा वनोमुहा । पलाकमिका कुच्छिकमिका गहूग गोलीमा निउराम मगल वगो
मुख । मूलमुहा गोलीनोया जलोया नूजनाथो भ्रसपा सखणगा । सवोमुख गोलीनोय वलोका जलनूगप सपुनक । धुत्ता युत्ता कथा वरडा सोत्ति

मा समुच्छिन्मत्या देव नपुसगा समुच्छिन्मानाम उवथ नपुसकत्वात्, नारकसमुच्छिन्मा नपुसका इतिवचनात् ॥ तसमासञ्ज्ञे इत्यादि ॥ ते
 द्वीन्द्रिया समासत सङ्क्षेपेण द्विविधा प्रज्ञा साक्षा-पर्याप्तना धार्याप्तका यशब्दौ योनिकुलेनेन स्वगतानेकतेदसूचकौ, गतेषा द्वीन्द्रियाणां
 मेवमादीना पुलकस्यादीना द्वीन्द्रियाणां पर्याप्तपर्याप्तादीना सर्वसङ्ख्या सर्वजातिकुलकोटीना योनिप्रमुसानि योनिप्रवाहानि योनिशतसहस्राणि
 जगन्ति सप्तजातिकुलकोटिलक्षा भवन्तीतिभाव, इत्याख्यात तीर्थकृद्भिर्भेकारो लक्षणिक, इयमत्र ज्ञावना इह-जातिकुलयोनीना परिज्ञानार्थे
 मिदं परित्यज्य सुदाहरण पूर्वोक्तार्थं रूपदर्शितं तद्यथा-जातिरिति किल तिर्यग् गतिं तस्या कुलानि कर्मकीटयुक्षिकादीनि इमानि च कुला
 नि योनिप्रमुलानि तथा ह्ये कस्या मेव योनी अनेकानि कुलानि भवन्ति यथा खगलयोनी कर्मिकुल कीटकुल वृत्तिकुल मित्यादि अथवा जाति
 कुल मित्ये क पद जातिङ्गुरापोन्यो य परम्पर विधेय एकस्या मपि योनी अनेकजातिकुलसम्भवात् यथा एकस्या मेव योनी कृमिजातिकुल कीट
 जातिकुल वृद्धिकजातिकुल मित्यादि एव च एकस्यामेव योनायवात्तरजातिर्भेदनावाद् अनेकानि योनिप्रवाहाणि जातिकुलानि सम्भवन्तीत्यु पप
 जातिकुल वृद्धिकजातिकुल मित्यादि एव च एकस्यामेव योनायवात्तरजातिर्भेदनावाद् अनेकानि योनिप्रवाहाणि जातिकुलानि सम्भवन्तीत्यु पप

तद्व्यगारा सञ्ज्ञे ते समुच्छिन्मा नपुसगा ते समासञ्ज्ञे दुविहा प०, त०-पञ्जतगा य अथपञ्जतगा य एणसिण
 एवमादियाण वेइदियाण पञ्जता पञ्जताण सत्तजाडकुलकीलीजोणिप्पमुहसयसहस्सा भवन्तीति मरुत्ताय ॥

या भुत्तिया कलुयावासा । घुत्ता खत्ता खगा कडा सौत्तिक भौत्तिक कलुयावासा । एगधोवत्ता दुदधोवत्ता नदिगावत्ता । एगोपयुत्ता द्विधोपयुत्ता
 नदयावत्ता । सवुत्ता माइवाहा सिप्पिसपुहा चट्ठाण समुन्निक्खा । गउत्ता माइवाहा सोप चटना समुत्तलीण । जेगाधसेतठण्णगारा सञ्ज्ञे ते समुच्छिन्मा
 नपुसगा ते समासञ्ज्ञो दुविहा प० त० । जे गनेरा तथाप्रकारना सर्व ते समुच्छिन्न नपुसकलिणी ते सञ्ज्ञेपवकी दोवप्रकारे कड्ढा तेकडेहै-पल्लतगा
 य अथपञ्जतगाय । पर्वापत्ता उपर्वापत्ता । एणसिण एवमादण वेइदियाण पञ्जतापञ्जताण सत्तलीयककुली । इण्णग रणतरे भाट्टिदेरे वेइदियजोय
 पर्वापत्ता अपर्वापत्ता सातलाख कुलकोटौ । जोणिप्पमुहसयसहस्सा भवन्तीति मरुत्ताय । वेलाए योनि एहनो सत्पत्तिस्थानक हवे जिम खाणाना अनेन

मा समुच्छिन्ना देवच नपुसका समुच्छिन्ना नाम उवश्य नपुसकत्वात्, नारकसमुच्छिन्ना नपुसका इतिवचनात् ॥ ते
 हीन्द्रिया समाचत सङ्गेन द्विविधा प्रज्ञा स्तद्यथा-पर्याप्तका व्याप्याप्तका अशब्दौ योनिकुलजेदेन स्वागतानेकजैदसूचकौ, एतेषा हीन्द्रियाणा
 मेवमादीना पुलकन्यादीना हीन्द्रियाणा पर्याप्तपर्याप्तादीना सर्वमहुया सर्वजातिकुलकोटीना योनिप्रमुसानि योनिप्रवाहानि योनिशतसरस्वारि
 भवन्ति समजातिकुलकोटिलक्षा प्रवन्तीतिभाव, इत्याख्यात तीर्थरुद्धि संकारो लाक्षगिक, इयमत्र प्रावता इट-जानिकुलयोनीना परिज्ञानार्थ
 मिद परिस्थूर मुदाहरण पर्याप्तार्थं रूपदर्शित तद्यथा-जातिरिति किल तिर्यग् गति तस्या कुलानि कमिकीटवृक्षकोटीनि इमानि च कुला
 नि योनिप्रमुसानि तथा एते कस्या मेव योनी अनेकानि कुलानि भवन्ति यथा ब्रह्मण्योनी कमिकुल कीटकुल वृक्षिकुल मित्यादि अथवा जाति
 कुल मित्ये क पद जातिकुलयोभ्यो य परस्पर विशेष एकस्या मपि योनी अनेकजातिकुलसम्भवात् यथा एकस्या मेव योनी कमिजातिकुल कीट
 जातिकुल वृक्षिकजातिकुल मित्यादि एव च एकस्यामेव योनाववात्तरजातिजैदनावाद अनेकानि योनिप्रवाहानि जातिकुलानि सम्भवन्तीत्यु पप

तहप्यगारा सवे ते समुच्छिन्ना नपुसगा ते समासने दुविहा प०, त०-पञ्जातगा य अ्यपञ्जातगा य एणसिण
 एवमादियाण वेइदियाण पञ्जाता पञ्जाताण सत्तजाडकुलकीलीजोणिप्पमुहसयसहस्सा जवतीति मरुकाय ॥

या मुत्तिथा कलुयावासा । बुत्ता खप्पा खया कडा सौत्तिक मौलिक कलुयावासा । एगगोवसा दुदगोवसा नदिगावसा । एगोपयुत्ता द्विधोपयुत्ता
 पद्यावन्ती । सवुत्ता माइवाहा सिप्पिसण्डा चडणा समन्निवडा । ग्रवका नाइवाहा सोप चटना समदलोख । जोगावखेतहप्यगारा सवे ते समुच्छिन्ना
 नपुसगा ते समासन्ना दुविहा प० त० । जे अनेरा तथाप्रकारना सर्व ते समुच्छिन्ना नपुसकनिगी ते सचेपधकी दोयप्रकारे कक्षा तेकहेहै-पल्लत्तगा
 य अपपल्लत्तगाय । पर्यापत्ता अर्थापत्ता । एणसिण एवमादण वेइदियाण पञ्जातापल्लत्तगा सत्तजायकुलकोटी । इणाण इणतरे नादिदेहे वेइन्द्रियजीव
 पर्यापत्ता अपर्थापत्ता सातलाख जुत्तकोटी । जोणिप्पमुहसयसहस्सा भवतिप्पि मरुकाय । वेलाख योनि एहनी हत्थप्पिस्थानज हने जिम छाणाना अनेक

मित्यादि ॥ उक्ताचतुरिन्द्रियसुसारसमापत्रजीवप्रज्ञापना । सम्प्रति पञ्चेन्द्रियसुसारसमापत्रजीवप्रज्ञापना मार्ह-चेकितमित्यादि ॥ अथ का सा पञ्चेन्द्रियसुसारसमापत्रजीवप्रज्ञापना ० सूरिराह-पञ्चेन्द्रियसुसारसमापत्रजीवप्रज्ञापना चतुर्विधा प्रज्ञा तद्यथा-निरयित्यादि ॥ अयमिष्टफलकम् निगतमयं यम्य स्त्री निरया नरकावासा स्तुपुत्रवानरयिका स्तेचतेपञ्चेन्द्रियसुसारसमापत्रजीवा य निरयिका पञ्चेन्द्रियसुसारसमापत्रजीवा

रुद्र कुक्षुह, नटावत्तेय सिगिरिनि । म्रिहपत्ता नीलपत्ता लोहियपत्ता हलिहपत्ता सुक्लिपत्ता चित्तपत्ता
विचित्तपत्ता लहजलिया जलचारिया गभीरा नीणिया ततवा झुत्यरोक्ता झुत्यरोक्ता सारगा नेउरा दोला
नमरा नरिली जलला तोक्ता विञ्जुया पञ्चविञ्जुया लोणविञ्जुया जलविञ्जुया पिगला कणगा गोमयकीका
जेयावन्ते तहप्पगारा सहे ते समुच्छिमा नपुसगा ते समासने दुविहा पणत्ता, तजहा-पज्जत्तगा य झुप
जत्तगा य । एएसिण एवमाइयाण चउरिदिवाण पज्जत्तापज्जत्ताण नवजाडुकुलकीकि जोणिप्पमुहसयसह

इतहापयोगेन उटपसकउकुक्कह नटावत्तेयसिगिरिनि । अविउ पच्छिक्क माखी ससा कोहा तिम पतण उउग ककह ककह नग्यावत्तं सिगरहा । किपह
पत्ता नीलपत्ता लोहियपत्ता हलिहपत्ता सुक्लिपत्ता विचित्तपत्ता विचित्तपत्ता । कणपाखा नीलपाखा रातोपाखा वयलोपाखा विचपा
खा विविचपाखा । उट्ठकलिया जलचारिया गभीरा नीणिया ततवा अच्छेनेहा सारगा नेउरा दोला नमरा भमरा भमरिली । उचनलिक जलवारो
गभीरनियत ततव अज्जिवेध सारग नेउरा होला नमरा भमरो भमरिली । जलरहा तोटा विच्छुया पत्ता विच्छुया जलविच्छुया पिउग
ला कणगा गामउकोहा । जलरहा तोटा विच्छुका पञ्चविच्छुका छ पञ्चविच्छु जपविच्छु पिउगल कनक गावरनाकोउ । जेयावन्तेतहप्पगारा सहे ते स
मच्छिमा नपुमगा । एहवा जे अनेरा तथाप्रकारना ते सर्व समुच्छिमा नपुमक । ते ससासथा दुविहा प० त० । ते सवपत्रका टोयेभेट कहवा ते तहक्के ।
पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य एसिण एवमाइयाण पज्जत्तापज्जत्ताण नवजाडुकुलकीकि जोणिप्पमुहसयसह

॥ ८ ॥
 पूर्वेव ॥ एतेसिद्धिमित्यादि ॥ एतेषा त्रीन्द्रियाणां भेदादिनामीपचयिकप्रवृत्तीनां पर्यायाऽपर्यायानां सर्वसङ्ख्या अष्टौ जातिकुलकोटीनां यावान् प्रमुसानि योनिप्रवाहाणि शतसहस्राणि भवन्ति अष्टौ कुलकोटिलक्षा ज्ञयन्तीति श्राव, इत्यास्यात् तीर्थरुद्र, उपसहारमाह—सेतुनित्यादि ॥ तद्वै मुक्ता त्रीन्द्रियसत्सारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ॥ सम्प्रतिवर्तुरिन्द्रियसत्सारसमापन्नजीवप्रज्ञापना माह—सेतुनित्यादि ॥ एते पि चतुरिन्द्रिया लोके प्रत्येतव्या एतेषा च पर्यायाऽपर्यायानां सर्वसङ्ख्या जातिकुलकोटीनां नवलक्षा ज्ञयति, शोषारगमनिका प्राग्वत्, उपसहारमाह—सेतु

वाड्या गोम्ही हलिसोफा जेयावणे त० सवे ते समुच्छिन्नमनुसगा ते समासे दुविहा पसुत्ता, तजहा—पज्जत्तगा य अप्पज्जत्तगा य । एणसिण एवमाइयाणं तेइदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण अण्ठजाडकुलकोटिजोणि प्पमुहसचसहस्सा हवतीति मस्काय । सेत्त तेइदियससा० । से कित चउरिदियससारसमावसुजीवपसुत्त पा० ? अप्पणेगविहा पसुत्ता, तजहा—अपिधिय पोत्तिय मेच्छिय, मगसिरकीळे तहा पयगे य । ठक्कण कु

सभगा सोवत्थिया सुवेढा इदकईया इदगोवया । बाह्या लहुग सुभग सौवस्थिक सुखविट इन्द्रकेतिका इन्द्रगोपा । तुक्कतुवगा कुलव्याड्या जूगा इवाहना पिसुगा सत्ताइया गोम्ही हलिसोफा । तुक्कतुवगा कुलव्याड्या जूगा हानाहल पिक मत्तवायक कानसिनाइ हलिसोउ । जेयावणेत्तइय गारा सवे ते समुच्छिन्ना नपुसगा । जे अनेरा तथाप्रकारे सवे ते समुच्छिन्न नपुसक जाणिया । ते समासओ दुविहा प० त० । ते सवेपथकी दोप्रका र कक्षा ते कहेछे—पज्जत्तगाय अप्पत्तगाय । एणसिण एवमाइयाण तेइदियाण पज्जत्तापज्जत्ताण । इया ने इणेनाटि तेइयकुल कोटि पर्याया अपर्यायता । अठ्ठजाडकुलकोटि जोणिप्पमुहसचसहस्सा भवतिस्सिमस्का भवतिस्सिमस्का । आठनाउ कुलकोटि हुवे वेलाक्क गोनि वत्थत्तिस्थान हुवे । से तेइदिय सत्सारसमानजीव पणवणा । एतले तेइदियससार सप्पात्तलोय प्रज्ञापना कहौ । सेकि त चउरिटिय सत्सारसमावसुजीव पणवणा २ अणेगवि हा प० त० । ते चउरिटिय भेदपूछे यिथ, गुरु दमकहे चउरिटिय समाप्तजीव प्रज्ञापना अनेकप्रकारे कक्षा तेकहेछे—अपिधियपुच्छियच्छिय मद्दगाको

नेरियमप्रतिपादनाय प्रश्ननिवृत्तये आह-संक्षिप्तमित्यादि ॥ सप्तविधस्य नेरियकाणां पृथिवीजेटा उन्मया मन्तनेनेत्यस्यपि पटले तत् पृथिवीजेटत एव सप्तविधस्य तद्यथा त्यादि नोपदेशयन्-रत्नानि वज्रवैद्युदादीनि प्रजाशब्दो न स्वता अपि स्वजातवाची रताति प्रजा स्व- । यस्या सा रत्नबहुला रत्नमयी तिज्ञावाच्य, सा वा उन्मी पृथिवी ॥ तस्य नेरियका रत्नप्रजापृथिवीजेटानेरियका, मन्त सञ्जल्प्यता पुढविनेरुपाऽत्यादि ॥ जादवी यमुपमहारमाह । नेत नेरुपा ॥ अथुनो हेतुकमप्रमात्यानुसरणत स्तियकपचेन्द्रियाद् प्रति पाटयिषु राह ॥ सन्तिमित्याद ॥ अथ केनेचचिद्विपतिम् योगिका ॥ मूरिराज-पचेन्द्रियतिर्यग्योगिका स्थितिज्ञा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा ॥ अस्यर त्यादि ॥ जगच्चरति पयटलीति जलचरा नाचारदितिटप्रत्यये । तेच तेपञ्चन्द्रियतिर्यग्योगिका य जलचरपञ्चन्द्रियतिर्यग्योगिका, स्थलचरस्तीति स्थलचरा, ए आवाज चरस्तीति स्थलचरा वाक्यतत्त्वाद्वा पत्वा

रयणप्यजा पुढविनेरुपा सक्षरप्यजापुढविनेरुपा धूलयप्यजापुढविनेरुपा लम्प्यजापुढविनेरुपा तमतमप्यजापुढविनेरुपा । ते समासन्तु दुविहा पयसा, तजहा-पञ्जसगा छपञ्जसगा य । सत्त गेरुपा । न क्ति पचिद्वियतिरिक्कजोगिया २ ? तिविहा पयसा, तजहा-जलयरपचिद्वियतिरिक्कजोगिया थलयरपचिद्वियतिरिक्कजोगिना खहयरपचिद्वियतिरिक्कजोगिया । से क्ति जलउरप

रत्नप्रभापृथिवी नारको १ शर्करप्रभापृथिवी २ वालुग्रभ ३ पक्कमना ४ धूम्रभा ५ तमप्रभा ६ तमतमप्रभा ७ । ते समासथो दुविहा प० त० । ते सद्येपय को टायप्रकारे कक्षा ते कहें । पञ्जसगा अपञ्जसगा । पगीना अपर्गोत्ता । सत्त गेरुपा सेक्षित पचेन्द्रिय तिरिक्कजोगिया २ तिविहा प० त० । पटले मातेप्रकारे नारकीकक्षा द्विये तिर्यच पक्के पचेन्द्रिय तिर्यचगोमिना तेदना तीभेट कक्षा तजहेक्षे ते द्विये । पनगर पचेन्द्रिय तिरिक्कजोगिया २ वनगर प० सुहगर प० । जलचर पचेन्द्रिय तिर्यचगोमिना पचोत्रय तिर्यच यक्षचर खचर पचेन्द्रिय तिर्यच ३ पक्के यिथ पनगरभेट गजकहे । सेक्षित जलयरपचेन्द्रिय तिर्यगरा पचमकार कक्षा ते कहें । म० ५ कच्छ गाहा मगरा सुसमारा । म० ६ कच्छ गाहा मगर सुसमारा ५ । सेक्षित मच्छा

स्मारे भवति तिस्रः । चैरिन्द्रजौ पर्वणा अपर्गता नवनाखकनोडि योनिप्रसूतः शननदस्त्र ह्ये षड्वा तौर्धरे कक्षा । सैत चडारिडि स
 मारसमावणगजौ पद्मवणा । एतले चडारिडि अमारौ सपादनजौय प्रपापना, दिव पचट्टि पछ्छे तट गुरुबोला । सैकित पचेडि सैमारसमावण
 नौ पक्षवगा २ चडखिडा प० त० । पचे इगमसार समाराजौय प्रज्ञापना, चारप्रकारे कक्षा ते कछ्छे—गेरड पचेडि ससारसमावणचौपपुन
 णा । नारकापचेडि ममारनभातजौय प्रज्ञापना । तिरिक्ख पचेडि ममारसनावजो ७० मख्खपचेडि स० डेवपचेडि स० । तिरेव पचेडि स
 नारसपादनचौय प्रज्ञापना २ मनुख पचेडि ममार सपाटाजाव० ३ टव पचेडि स० ४ । सैकित गेरडया २ सत्तिडा प० त० । दिवे नारका प्रयन
 पछ्छे, नारका सातप्रकारे कक्षा तेकदेकै—रथददममुटविणरडया सऊरपभपु० वासुगपभ० पकरपभपु० धूसरपभपु० तसपभपु० तन २ पभपु० । र

जलवरपचन्द्रियतियंगोनिका समासत सहेपेण द्विविधा प्रज्ञा-सम्मूर्च्छिमा च गज्युत्क्रान्तिमा च मूर्च्छा मोहसमुद्भाययो अस्मा तत्सम्पूया
 तसम्मूर्च्छं समूर्च्छां उक्तरीति ज्ञाय घञ् प्रत्यय, गजोपपातव्यतिरेकेण स्वमेव प्राणिना मृत्याद इतिज्ञाव स्तेन निरुता सम्मूर्च्छिमानाया दिन
 इति इममन्यय, गजं व्युत्क्रान्ति सत्यति येषा, व्युत्क्रान्तिशब्दो उत्रो त्यत्तिवाची तथा पूर्वोचायप्रसिद्धे य दि या गजो द्विर्वासात् व्युत्क्रान्ति
 निःक्रमण येषान्ते गज्युत्क्रान्तिका, ज्ञोपादिति कच् समासान्त चणव्दी प्रत्येक रागतानेकमेदसूचकी, तत्र ये ते सम्मूर्च्छिमा स्ते सर्वे नपुसका
 सम्मूर्च्छिमन्नावस्य नपुसकत्वा उविना प्रावितत्वात्, य तु गज्युत्क्रान्तिका स्तो त्रिविधा प्रज्ञा सद्यथा-छिय पुरुषा नपुसका, एतया चो
 प्रवेया मपि शरीरावगाहनादिषु य चिन्तन य च गज्युत्क्रान्तिकाना स्त्रीपुनपुसकाना परस्पर मस्ययदुत्त्वचिन्तन त ज्ञीवाजिगमटीकाया कृत

से कित गाहा २ ? पचविहा पण्हा, तजहा देलीवठगा मुहुया पुलगा सीमागरा । सेत्त गाहा ॥ से
 कित मगरा २ ? दुविहा पण्हा, तजहा-सोळमगरा मच्छमगराय । सेत्त मगरा । से कित सुसुमारा २
 एगागरा प०, सेस सुसुमारा । जेयावन्ते तहप्पगरा ते समासत्ते दुविहा पण्हा, तजहा-समुच्छिमा-य
 गप्पवक्कतिया य तल्यण जे ते समुच्छिमा ते सब्बे नपुसका, तल्यण जे ते गप्पवक्कतिया ते तिविहा प०,

कना पाचभेद कक्षा ते कहैके । दिक्खी वेठगा सदया पुसगा सीमागरा । दिक्खी वाटका शुठ पुलका सीमागरा । सेत्तगाहा सेकित मगरा २ दुविह
 प० त० । एतले ग्राहक कक्षा, दिवे मगरना ते मगरना दीयभेट कक्षा ते कहैके । सोळमगरा मच्छमगरा । सेत्त मगरा सेकित
 मुसमारा २ एगागरा प० त० । एतले मगर कक्षा, दिवे सुसुमारनो एकभेट कक्षा तेकिम । सुसमारा सेत्तसुसमारा । सुसमारा एतले सुसमार कक्षा ।
 जेयावन्ते तहप्पगरा ते समासन्नो दुविहा प० तनह । जे अनेरा तथाप्रकारे ते सब्बेपयो दीयप्रकारे ते । समुच्छिमाय गप्पवक्कतियाग । समुच्छिम गर्भ
 ऊपनै गर्भल पिण । तल्यण जेते समुच्छिमा ते सब्बे नपुसका । तिहा जेते समुच्छिम तेसर्वे नपुसका । तल्यण जेते गप्पवक्कतियाय ते तिविहा प० त० ।

च खरवरा इति सूत्रे पाठः, तत उन्न यत्रापि पञ्चेन्द्रियतयैक्योनिकशब्देन सह विशेषणसमासः, सौकतिमित्यादि ॥ अथ के ते जलचरपञ्चेन्द्रियतयैक्योनिकाः ? मूरि राह-जलचरपञ्चेन्द्रियतयैक्योनिका पञ्चविधा प्रज्ञप्ता, तदेवपञ्चविधत्वं तद्यथेत्यादिनो षट्शयित्यति मत्स्या कच्छपा पतियंग्योनिकाः सूत्रे पक्षारस्य प्रकारं प्रकृतत्वात् सूत्रे सुभारा इति पाठः, मत्स्यादीनां च विज्ञायां साकतो वेदितव्याः सूत्रे पक्षारस्य प्रकारं प्रकृतत्वात् ग्राह्यं ३ मकराः, शिशुमारा ५ प्राकृतत्वात् सूत्रे सुभारा इति पाठः, येऽस्थिबहुना कच्छपा स्ते मांसकच्छपा ॥ ते समासशब्द इत्यादि ॥ ते नद्यरमऽस्थिकच्छपा मान्सकच्छपा इति, येऽस्थिबहुना कच्छपा स्ते मांसकच्छपा ॥ ते समासशब्द इत्यादि ॥ ते

चिद्वियतिरिक्कजोणिया २ ? पचविहा पन्नाहा, तजहा मक्का कक्काहा गाहा नगरा सुंसुमारा । सेक्कि त मक्का २ ? छुण्णेगविहा पण्णाहा, तजहा सरहमक्का खवत्तमक्का जुंगमक्का विज्जिक्कियमक्का हलिदुमक्का मगरिमक्का रोहियमक्का हलीसागरा गागरा वज्जा तिसा तिमिगिला गक्का तदुलमक्का कणिक्का मक्का सालिसक्कियामक्का लन्नणमक्का पक्कागा पक्कागाइपक्कागा । जेयावन्ते तहप्पगारा । सेत्ते मक्का । से कित कक्का २ दुविहा पण्णाहा, तजहा छण्ठिकक्का य मंसकक्का य । सेत्त कक्का ।

पणिविहा प० त० । शिवे मच्छना अनेकभेद कहे, तेमच अनेकभेदे कल्या तेकहे । मगहमच्छा खसलमच्छा युगमच्छा चिभिडियमच्छा हानिद
मच्छा मगरमच्छा रोहियमच्छा । सधमच्छ खसलमच्छ युगमच्छ चिभिडमच्छ हानिदमच्छ मगरमच्छ रोहितमच्छ । हलौ सागरा गागरा चहा व
डगरा गभ्या वसगरा तिमितिमिगन्ना । हलौमच्छ सागरमच्छ गागरमच्छ बडामच्छ वठगरा गभजारि कसगारा तिमितिमगन्ना १५ । नका तदुल
मच्छा कणिना सालि मच्छ्या लभणमच्छा पण पहागाई । नरु तदुलमच्छ कनकमच्छ सालि मवि न लभन पतक पताकानामे २३ । जेप्रावसेत
इपगारा सेतकच्छा । एहना जे अनैराहोव तथापकारि ते कल्या । सेकित कच्छा दुविहा प० त० । शिवे ते कच्छना टोयमेड कल्या ते कहे । श्रुतिक
च्छ्या मासकच्छा । अस्तिकच्छम हाएवयाने मासकच्छमो मासघ भोने । सेत कच्छया सेकित गाहा पचबिहा प० त० । ते करछप कल्या, शिवे गार

कनैदसूचकी । तदेवानेकजेंदख्य क्रमण प्रतिपिपादापिदु राह-सैकितमित्यादि ॥ अथ के ते चतुष्पदस्थलवरपञ्चिन्द्रियतयैग्योनिका सूरिराह-
चतुष्पदस्थलवरपञ्चिन्द्रियतयैग्योनिका अतुर्विधा प्रज्ञा स्तथा-एगसुरा इत्यादि ॥ तत्र प्रतिपद मेक सुर शफी यथा सो एकसुरा अथाद
य ' ह्री २ सुरी प्रतिपद येपान्ते द्विसुरा उप्रादय स्तथा च-एकैकस्मिन् पदे ह्री शफी दृश्यते गयली च सुअकाराधिकरणिस्थान मिव पद

पसता, तजहा एगसुरा दुखरा गलीपया सणफ्या । से कित एगसुरा २ ? अणैगविहा पसता, त०
अस्सा अस्सतरा घोऊगा गदना गोरकरा कदलगा सिरिकदलगा आवता । जेयावन्ते तहप्पगारा । सेत
एगसुरा । से कित दुखरा २ ? अणैगविहा पसता, तजहा-उहा गोणा गयया रोज्जा ससया महिसा
सवरा वराहा अया एलगा रू सरज चमर कुरग गोकणमाई सेत दुखरा । से कित गलीपया २ ? अण
गविहा पसता, तजहा हली हलीयणा मकुणहली खग्गा गना । जेयावये तहप्पगारा । सेत गलीपया

कछा ते कहै । एगसुरा दुखरा गलीपया सखीपया । एकसुरा अथादि द्विसुरा भाद्र दय गखोपद गजादि सखीपद व्यावृटि ४ । सैकित एगसुरा
२ अणैगविहा प० त० । द्विवे एकसुराना अनेकभेद कछाहै ते सुण- अछा अस्ततरा घाह्या गदना गोरखरा कदलगा । सिरिकदलगा पञ्चसा । घाहा
अस्ततरा छोटक गर्भ गोधुर कन्दलग ओकन्दल आवस । जेयावन्तहप्पगारा सेत एगसुरा । एहवा जे अनरा तथाप्रकारे ते एकसुरा कछा । सैकित
दुखरा २ अणैगविहा प० त० । द्विवे ते दुखरा कहै ते अनेकप्रकारे कछा ते सुणो । उहा गोणा गयया रोज्जा ससया मविषा सवरा वराहा या
या एलगा रू सरभ चरम कुरग गाकणमाइ । कट गाण गयय राभ ग्रय महिय सवर वराह छालो गाडर चमरीगाय नग गाजये । सेत दुखरा सैकि
त गलीपया २ अणैगविहा प० त० । एतसे वेखरानामेट कछा, द्विवे गहापदना अनेकभेद कछा ते कहै-हली पूणया मकुणहली युगा । हाही
गैछा मुजनदावी खन्ना । जेयावयेतहप्पगारा सेतगहापया । ज अनरा तथाप्रकारना गखोपद जणिवा । सैकित सखापया २ अणैगविहा प० त० ।

मिति ततो उवाच ॥ यत्प्रसिगमित्यादि ॥ एतेषा मेव साटिकाना मपदार्थिनप्रकारादीना जलचरपञ्चेन्द्रियतियग्योनिजाना पर्याप्तोपयोग्यता
सबसहेया उद्वेगपाटञ्जालिकुलकोटीना योनिप्रवाहानि ज्ञातमनस्त्राण नवन्तीत्याख्यात प्रावन्ति स्तौयकरे , उपसह, रमाए-मेन
मित्यादि ॥ तदेव मुक्ता जलचरपञ्चेन्द्रियतियग्योनिजा सम्प्रतिस्थलचरपञ्चार्गदयतियग्योनिमाननिधिधिराह-चकितानेत्यादि ॥ चत्वारि एता
नि येषा लो चतु पदा , अद्यादय लो च ते स्थलचरपञ्चेन्द्रियतियग्योनिजा च चतुष्यञ्चपञ्चेन्द्रियतियग्योनिजा , अस्मा दुनाख्यावा परिबुधेति
वर परिसर्प , जृजपरिसर्प , अहिमकुलादय , स्तत पूववत् स्थलचरपञ्चेन्द्रियतियग्योनिजापदेन एव विधीपसन्नाग , चक्षुर्दी प्रत्येक स्वगताने

तजहा इत्यी पुरिसा नपुमगा । पुनसिण एवमाडयाण जलयरपचिदियतिरिस्कजोगियाणं पज्जत्तापज्जत्ताण
अथुतेरमजाडकुलक्रीडिजीणीप्पमहसथसहरसा भवतीति मग्गायं । सेत जलयरपचिदिय० । से कित थल
यरपचिदियतिरिस्कजोगिया २ ? दुविहा पणत्ता, तजहा चउप्पयत्तुअरपचिदियतिरिस्कजोगिया परि
सप्पथलयरपचिदियतिरिस्कजोगिया य । से कित चउप्पयथलयरपचिदियतिरिस्कजोगिया २ ? चउत्तिहा

तिष्ठ। जेतं गर्भं न तेषुना । भेदं कथा ते कहेष्टे—ऋषी प्ररिषा नपसगा । स्त्री पुरुष नपुमक । एगसिण एवमारयाण । एहना इतररे सादिदिने । जल
यर पचेष्टेय तिरिख्खजोणियाण । चनचर पचेष्टिय तियेवयाणिग । पज्जासा अपकासाण । पर्गीग अपयीसा । चवसेरसजाति कुलकीडी जोणीपमुह
मजमहसा भवतिसिमाउग । साटमारैलाख कुलकोडिप्रमूख शतसहस्र हूय । इम तीर्थकरे कथा । सेत्ता जगुरे पचेष्टि रिख्खजोणिया । एतले जल
वर पचेष्टिय कथा तियेवयोनिग । सेकित धनवर पचेष्टिय तिरिख्खजोणिया २ दुविहा पं तं । द्विवे धलचर ते धलचर पचेष्टिय तियेवयोनिज
दोयप्रकरे कथा ते कहेष्टे—चउपयधनगर पचेष्टियतिरिख्खजोणिया परिसण धनवर पचेष्टिय तिं । चउपय शनचर पचेष्टिय तियेवयानिक उरवर
पचेष्टिय तियेवयोनिग । सेकित चउपय धलगर पचेष्टियतिरिख्खजोणिया ३ चउविहा पं तं । द्विग धौपयउरवर पचेष्टिय तियेवयोनिग चारसे

स्तिमतीकातो घेदितम् ॥ सेतचउप्ययस्यादि ॥ सेकितमित्यादि ॥ अथ के ते परि। पंथतचरपचेन्द्रिया ॥ तैयंग्योनिका प्रज्जसा ॥ मूरिराए-
परितपस्यलचरपचेन्द्रियतियग्योनिका द्विजिया द्विप्रकारा प्रज्जसा म्मथया-उरपरिसर्पत्यादि ॥ उरसा परिसर्पलीति उरपरिलपां रो ॥ ते
रयलचरपचेन्द्रियतियग्योनिका य उरपरिसर्पलचरपचन्द्रियतियग्योनिका, जुजान्ना परिसर्पन्ति तुणपरिपां त य ते रयलउरपन्निद्रिय
तैयंग्योनिका य जुजपरिसर्पस्यलचरपचन्द्रियतियग्योनिका, यद्वदो प्रत्येक स्वतागतनटमूकी ॥ सत्रो रपरिसर्पस्यलचरपचन्द्रियतियग्योनिका, मूरिराए-उर परि
यानिकमदात्तु पदिदशोपिपु रिद माए-सेकितउरपरिसर्पेत्यादि ॥ अथ के ते उरपरिसर्पस्यलचरपचेन्द्रियतियग्योनिका, मूरिराए-उर परि
पस्यलचरपचन्द्रियतियग्योनिका युतुविपा मनसा सयथा-अयो उगगरा आसालिगा महेरगा मतेपा मेय जेदागा गगनाय प्रज्ञनियचनम्

एएसिण एवमादियाण थलउरपचिदियनिरिक्कजोगियाण पज्जत्तापज्जत्ताण दसजाडुकलकोट्टिजोगिप्पमुह
सत्रसहस्सा हवतीति मरकाय । नेत्त चउप्पयथलउरपचिदियनिरिक्कजोगिया । से कित परिमप्पयलयर
पचिदियनिरिक्कजोगिया २ १ दुविहा पयत्ता, तजहा उरपरिसर्पयलयरपचिदियनिरिक्कजोगिया जुज
परिसर्पयलयरपचिदियनिरिक्कजोगिया य । से कित उरपरिसर्पयलयरपचिदियनिरिक्कजोगिया २ १ च
उविहा पयत्ता, तजहा अही अयगरा आसालिगा महेरगा । से कित अही २ दुविहा पयत्ता, तजहा

द यलचर पचेन्द्रिय तियचयोगिया कक्षा । सेकित परिसर्प यलउर पचेन्द्रिय तिरिक्कजोगिया २ दुविहा प० त० । द्विचे उरपरिसर्प यलचर पचेन्द्रिय
तियचयोगिक उडमा डोगमेद कक्षा । उरपरिसर्प यलउर पचेन्द्रिय तिरिक्कजोगिया भुजपरिसर्पयलउर० । उरपरिसर्प यलचर पचेन्द्रिय तियचयोगि
क भुजपरिसर्प यलचर भुजावाचाने ते । सेकित उरपरिसर्प यलयर पचिदियनिरिक्कजोगिया २ चउविहा प० त० । द्विचे उरपरिसर्प यलउर पचेन्द्रिय
तियचयोगिनियाना ४ भेट कक्षा ते कहर्छे—यही भवगरा यनिसिगा महेरगा । सपं ययगर यलसीगा महेरगा । सेकित यही दुविहा प० त० । द्विचे

येषां ते गणनीयदा इत्यादयः स्तथा सनयानि दीर्यनस्यरिक्लितानि पदानि येषां ते सनयपदा ध्यादयः प्राकृतान्वाद्यमण्ययाइतिसूनैर्निर्देशः प्रयुनायमानेव सकुरादीन् प्रदत्त प्रमाण प्रतिपिपादयिषु रिटमाह-संफितमित्यादि ॥ सुगमः नगर ये केचि ज्जीवनेदा अप्रतीता स्ते लोकतो वेदितव्या ॥ तेसमासजं दुविहा प इत्यादि सूत्र ॥ प्राग्ब्रह्मवनीयः नवरमत्र जातिकुलकोटीना योनिप्रमृत्वाणि श्रतसरस्याणि दश भवन्तीति वेदि तस्य मत्रापि च सम्मुखिमाना गजव्युत्कान्तिमाना च प्रत्येक य च्छरीरादिषु द्वारषु चित्तन य च स्त्रीपुनपुनमाना परस्पर मल्पग्रहुत्व तजीवा

से कित सगण्यदा २ ? छुणंगविहा पण्यदा, तजहा सीहा बग्घा दीविहा छुच्छा तरच्छा परस्सरा सिया ला सुगगा कोलसुगगा (ग्रं ५००) कांकतिया ससगा चित्तगा विह्वलगा । जेयावसो तहप्पगारा । सेत्त सगण्यदा । तेसमासजं दुविहा पण्यदा, तजहा सम्मुखिमाय गण्वक्कतियाय । तत्थण जे तं सम्मुखि मा ते सव्वे णपुसगा, तत्थण जे तं गण्वक्कतिया ते तिविहा पण्यदा, तजहा इत्थी पुरिमा नपुसगा ।

द्विद्वे सज्जोपट भेट कक्षा ते भेट दनेकप्रकारना कह्खे—सोहा बग्घा टाविना यच्छा अरच्छा परस्सरा सियाला विराला भुणगा कोलमुगा कोकिति गा ससगा चित्तगा । सिह य य चौता अच्छा अरच्छा परामर खल विराल खान कोल कोकिति सगगा चित्तक । जेयावसेतहपगारा सेत्त उणोपगा त समासजं दुविहा प० त० जे अनेरा तद्याप्रकार ते सज्जोपट कहिये ते सज्जोपणको दीयप्रकारे कक्षा ते कह्खे । सम्मुखिमाय गण्वक्कतियाय । सम्मुखि स गर्भज । तत्थण जेते सम्मुखिमा ते सव्वे णपुसगा । तिहा जेते सम्मुखिम तिके सव्वे नपुसक । तत्थण जेते गण्वक्कतिया ते तिविहा प० त० । तिहा जे गर्भजका तोनभेट कक्षा ते कह्खे—एगो पुरिमा नपुसगा णसिण णवमाइण । आ पुनप नप सक इणा इणतरे यादिदेद । यनयर पचिदिउ तिरित्तजानियाण । यनयर पचोइउ तिवेचयोपिया यन्नवरपवेदिउ । पञ्जत्तअपल्लत्ताय । पयोत्ता अपयोत्ता । दसजानित्तनकोडि कोणिपमइसज सइसा भयतौतिमययाय । दग्गनाण कुलकोडि वानि गतसइसस बुवे तीर्थकर कक्षा । सेत्त चत्तपय थलयर पचिदिउ तिरिख वचोणिया । एतने चत्तप

गीतमप्रश्न भगवत्त्रिवचनरूप सूत्रमस्ति-तदेवागमवदुमानत पठति-कहिण ज्ञते । इत्यादि ॥ कथं यमिति वाक्यालङ्कारे प्रदत्त । परमकल्याणयोगिन् आशालिका समुच्छिंति ? गथा हि गर्जना न प्रवति किंतु सम्बुच्छिंमेव, तत उक्त सम्बुच्छिंमेव-गीयमेत्यादि ॥ गीतम । अन्तर्मध्ये मनुष्यदेशस्य बहिरेतावता मनुष्यक्षेत्रा द्वारस्या सत्त्वादा न प्रवतीति प्रतिपादित तत्रापि मनुष्यक्षेत्रे सवत्र न प्रवति कित्वा दृष्टतीयेषु दीपेषु अहं दृतीय येयात्ते उद्वेदतीया अत्रयवेन विग्रह समुदाय समासार्थ स्तेषु, एतावता लक्षणसमुद्र कालोदे समुद्रे वा न प्रवतीत्या वेदित, निर्व्याघातेन व्याघातस्या ज्ञाद्यो निव्याघात तेन यदि पञ्चसु भरतेषु पञ्चस्वैरावतेषु सुपमसुपमादिरूप य कालो व्याघातहेतुत्वात् व्याघातो न ज्ञयति तदा

विहा पसत्ता, तजहा दिव्यागा गीणसा कसाहीया वउला चित्तलिणो मरुलिणो अही अहिंसिलिगा वाय
क्रागा । जेयावखे तहप्यगारा । सेत्त मउलिंया । सेत्त अही । से कित्त अयगरा २ ? एगागारा पसत्ता,
सेत्त अयगरा । से कित्त असासालिया ? कहिण ज्ञते ! असासालिया समुच्छति ? गीयमा ! अतोमणससखे
से अह्हाइज्जेसु दीत्रेसु णिह्वावाएण पणरससु कम्मजमीसु वाघात पणुच्च पचसुमहाविदेहेसु चक्कावहीसधावा

लिणो २ अणेगविहा प० त० । द्विषे मुक्कउफपाता अनेकभट्ट कक्षा ते कहेक्के-दिव्यागा गीणसा कसाहीया वउला चित्तलिणो मरुलिणो मालिण । अतो
अहिसखगा वायडग । दिव्य गीणस कसाहारक वउल विवलीमाडलिन भानणीसपे सनाकसर्प । जेयावणेतहप्यगारा सेत्त मरुलिणो सेत्त अही ।
ली अनेरा तथाप्रकारे ते णत्ते मज्झनाभेत्त कक्षा । सेकित्त अयगरा २ एगागारा प० त० । द्विषे ते अजगरा नो एकभेदक्के-सेत्त अयगरा सेकित्त
आलसीया । एतले अजगर द्विषे ते अलसियानो एकभेद । कइणभते अलसीया समुच्छति । किम जपलै हेभगवन् आलसीया गीतम पूक्के उ०-गो
यमा अतोमणससखेत्ते अट्टाइल्लेसु दीवेस णिव्वावाएण पणरससु कम्मजमीसु वाघात पठसु । हेगीतम मनुष्यक्षेत्रमादि अट्टाइल्लेपनेविदे निज्जीयात पनरे
भूमि कम्मभूमेनेविदे व्याघात न जपने । पचसु महाविदेहेसु चक्कावहीसधावारेसु वासुदेवसधावारेसु । पच महाविदेहसेधनेयिये पचवर्तीरा खधा

आस्थाह-सेकितमित्यादि ॥ अथ के ते अहयो गुरुह-अहयो द्विविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-दर्वोकरा श्र मुकुलिनश्च । तत्र दर्वोवदर्जाक्यातत्करणशी
ला दर्वोकरा , मुकुल फणा विरहयोग्या शरीरावयवविशेषाकृति सा विद्यते येषान्ते मुकुलिन , फणाकरणशक्तिविकारा इत्यर्थं अत्रापि च अ
व्द्वी स्वगतानेकजदसूचकौ । तत्र दर्वोकरज्रेदान निषिद्यतु राह-सेकितमित्यादि ॥ आशयो दग्ना स्तासु विष येषान्ते आशीविषा , उक्त च-आसीदा
ता तमगममहाविषा आसीविषा सुश्रेयसा इति ; दृष्टी विष येषान्ते दृष्टिविषा , उग्र विष येषा न्ते उग्रविषा , भोग शरीर तत्र विष येषा न्ते
भोगविषा , त्वचि विष येषा न्ते त्वग्विषा , प्राकृतत्वा च तपाचिसाहतिपाठ लाला मुराश्राव तत्र विष येषा न्ते लालाविषा , नि द्यासे
विष येषान्ते नि द्यासविषा , कर्मसर्पादयो जातिज्रेदा लोकत प्रतिपत्तव्या , उपसर्गरमाह-सेत दर्वोकरा । मुकुलिन प्रतिविषादियपुराह-से
कितमित्यादि ॥ एतेपि लोकतो वसेया , अजगराणामजान्तरजातिज्रेदा न विद्यन्ते तत उक्तमेकाकारा अजगरा प्रज्ञप्ताः ॥ आशालिगाम त्रिचि
त्सु राह-सेकित आशालिगा ॥ अथ का आशालिगा ? एव बोध्येष प्रश्ने कते सति भगवान् आप्यश्यामी यदेव ग्रन्थातरेषु आशालिगाप्रतिपादिक

दहीकरा य मउलिणो य । से कितं दहीकरा २ ? झणंगविहा पसत्ता, तंजहा झ्यासीविसा दिठीविसा उगविसा भोगविसा तयाविसा लालविसा उरसासविसा णिस्सासविसा कणहसप्पा सेठसप्पा कउदरा वप्प पुप्फा कीलाहा मेलिमिदा सेसिदा जेयावसे तहप्पगारा । सेत दहीकरा । से कितं मउलिणो २ ? झणंग

सूर्यना दाग्नेद कक्षा ते कहैछै—टक्कीकराय मछनिषाय । दूर्वीकरा मुक्कनफना । सेकित टक्कीकरा अणेगाइहा प० त० । हिवे दूर्वीफयाना अनेकभेटे कक्षा ते कहैछै । आसौविसा दिहुविमा छगविमा भोगविमा तयाविमा लानाविमा कसासविमा नोसासविमा । आसौविष टाटेविष नेवेविष टटि विष डगविष आकराविष भागविष त्वाविष लाकविष छ्छासविष नोखासविष । कयहसप्पाद सेहसप्पा काउवरा दभपुरफा कोलाहा मेनिमहा । त्पसुसर्प स्खसुसर्प काटुवरा दर्भुण कानाह भौलिमद । जगावणेतहयगारा सत्त टक्कीकरा । जे एइहा अनेकभेटे ते दूर्वीकण भेटकक्षा । सेकित नख

मुखं वाहुभ्यो जलनिर्गमप्रवेक्षे ॥ आकरो हिरण्याकरादि , आश्रम स्तापसावसथोपलक्षित , आश्रय सजाधो यात्रासमागतप्रजूनजननिवेश , राजा
घानी राजाधिष्ठान नगर ॥ ययसिणमित्यादि ॥ एतेषा चक्रगतिस्त्वयावारादीना मय पिनाक्षोपू पस्थितपु ॥ गत्युति ॥ एतेषु चक्रवर्तिस्त्वयावा
रादिषु स्थानेषु आशालिका समूच्छति , सा च जघन्यतो हुलासहेयजागमात्रया अग्राहनया समुत्तिष्ठतीति योग , गतद्योत्पादप्रथमसमयो यदि
तथा , उत्कपतो द्वादशयोजनानि , तदनु रूप द्वादशयोजनप्रमाणेऽध्यानु रूप ॥ विक्रमव. हलोति ॥ विक्रम च याएत्य य विक्रमवाइत्य समाहा
रो द्वद स्तन विक्रमो विस्तारो बाह्य स्थूलता ॥ भूमिदार्ताज्ञाति ॥ विदाम्य उपतिष्ठति , स चक्रगतिस्त्वयावारादीना मयस्या भूमि रत स्तप
द्यते इतिभाव , सा या सन्निनी अमनस्कासमूच्छिमत्वात् , मिथ्यादृष्टि सास्वादसम्पत्तास्यापि तस्या असन्नगात् अत मया उद्यानिनी अतमुं
तांयु रेव काल करोति , तदेवग्रथातरगत सूत्र पठित्या सूत्ररूप त्वप्रत्यु पसहारमात्र-चतस्रासालिया ॥ सप्रतिमतीरगानभिपिस्तरुग ॥ सक्रित

समुच्छति । जहन्तेण अगुलस्स असाखिज्जज्जागमिन्तीए उगाहणाए , उल्लोसेग वारमजोवगाइ । तहाणुरु
व च ण विरकनवाहल्लेण भूमिदानिज्ञाण समुठेति । असन्ती मिच्छदिठी अज्ञाणी अतोमुज्जत्तयाउया
चेव काल करेइ । सेत्त असासालिया । से कित महोरगा २ ? अगंगविहा पयसा , तजहा अलेगडया
अगुल पि अगुलपुहत्तिना त्रि विग्रिच्छिपि विग्रिच्छिपुहत्त पि रयणी पि रयणीपुहत्तिना पि कुच्छपि कुच्छ

गाइणाए । जघन्यवको अवगाहना अगुलने अवन्तात्तेभागे प्रमाणे । सखासेग वारसजोवगाइ तथाकचवण । उटज्जे १२ याजन अवगाहना पातलाश
रोर वकीरुप । निक्खन्वाइल्लेण भूमिदानिज्ञाण समुहइ । विरकथ नापय १२ वागन भूमिदिदारी सधाम रतो इठनोभूमो ऊपत्ते मनपिना वपनी ।
अवथोमिच्छदिठो अवाणी अनामुहुत्तडावचव कालकरेइ । असन्नो ननर इत्त मिथ द्यो अनानो अत्तमुहुत्त आउडाकाल निये काकडरे । जेत य
लसिया । एत्त अलसियो कल्लो । सेकित महोरगा २ अगंगविहा प० त० । दिवे ते गियि पक्के ऋष नहोरग तटगु महोरगनाभंइ अनेकप्रकारे

पा महीरगा इत्त मानुपलेने न स्थितिनमन्ति किन्तु वास्तेषु द्वीपसमुद्रेषु मत्स्यवन्ति समुद्रेषुपि च पर्यतदेवनगर्यादिषु स्थलेषु त्यज्यते । न अलेषु स्थलचरत्वात्, तत इह न दृश्यन्ते जयावलेतदृष्यगारा इति ये पि चा य अनुलटप्रकादि शरीरावगाहमाना स्तथा प्रकारा सन्ति ते पि न जेरगा चासख्या, उपसहारमाह-सेतमित्यादि ॥ तेसमाश्रयित्यादिप्राग्बद्धावनीय, एतथा अपि दशान्तिनुनोटीना योनिप्रमुखाणि शतसहस्राणि सन्तेषा अपि च य च्छरीरादिषु द्वारेषु चिन्तन प च स्त्रीपुत्रपुस्राना मत्यग्रतुत्य तज्जीवातिगगटीकातो ज्ञात्रीय, उर परिसर्प-उक्त्यतोपस हारमाह-सेतवर परिसर्पा, अधुना ज्ञपपरिसर्पाना मन्निषित्तुराह-सकितमित्यादि ॥ सुगम नवर य नुजपरिप्रासा अप्रतीता स्ते लोकतो वस

त०-सम्पुच्छिमाय गङ्गवृक्षतिया य । तत्यण जंते सम्पुच्छिमा ते सव्वे णपुमगा, तत्यण जेने गङ्गवृक्षतिया तेण तिविहा प०, त०-इत्थो पुरिसा नपुमगा, णएसिण एवमाडयाण पज्जत्ता २ ण उरपरिसप्पाण दनजा इकुलकीनीजीणिप्पमुहसथसहस्सा हवन्ती ति मरकाय । सेत्त उरपरिसप्पा । से किन जुयपरिसप्पा २ च्छुण्ण

मे विवरे । ते तस्य वृक्षद्विष्टानु दावसममेववृत्ति । इण मन्थयेवमे नवो वाडिरला हापममद्रमादि वृक्षे । जोगावणे तदृष्यगारा मेत्त महीरगा ते समासयो इविहा प० त० । ने अनेरा तथाप्रकारे कट्ठा ते एतल महीरगा ते मत्स्यप्रकोटी टाप्रकारे कट्ठा ते कहेत्ते-सम्पुच्छिमाय गङ्गवृक्षतियाय । सम्पुच्छिमे गर्भज । तत्यण जंते सम्पुच्छिमा ते सव्वे नपुमगा । तिहा ज सम्पुच्छिमे ते सव्वे नपुमकान्नी ज्ञे । तत्यण जेने गङ्गवृक्षतिया तेण तिविहा प० त० । तिहा ज गर्भज ते तीनप्रकारे कट्ठा ते कहेत्ते, इत्थो परिमा नपुमगा । स्था पुरुष नपुमक । एउमिण एवमाडयाण पत्तल अपज्जत्ताण वरपरिसप्पा ण दमनानि कलकोडि जीणिपमुहमयसहसा हवन्तीति मत्स्याय । एहने इणतरे आन्दिरे पर्वीसा च्छपूर्याया उरपरिसर्प दग्गनाख कलकोडिय, निप्रमसु गतसहस दग्गनाख बोतरागे कट्ठा । मेत्त उरपरिसप्पा । एतले उरपरमप कट्ठा । सेकित भयपरिसप्पा २ अणे विहा प० त० । ते हिवे भयपरमप तेह ना अनेकेमेद कट्ठा ते कहेत्ते-एतल सेहा सरदा सप्पा सरता सारापरा घरीइया विमभरा म्मा दुग्गा पयनाइया छौरिरीरानिया काहा चउपर

मित्यादि ॥ युगम नगर प्रितस्ति दूर्ध्वादुत्तमाणा रति र्हेतुः कृति र्हेतुः गच्छत द्विपनु सप्तप्रमाण । चत्वारिगव्युत्तानि
 योजन इदं च प्रितस्यादि उच्छ्रयागुलोपेया दृष्टव्य शरीरप्रमाणस्य परिचित्यमानत्वात् । तथा-अस्तीति नियतो न बहुत्वान्निवायी प्रतिपद
 च सधय्यते ततो यमयं सस्य के कचन मनोरगा ये अद्भुतर्थापि शरीरावगाहनया नवन्ति तथा सस्य के केन य पद्भुलपुण्यादिका अपि बहु
 लपुण्यस्त प्रियते येपान्ते अद्भुलपुण्यादिका यतो नेरुस्वरादि ती क प्रत्यय ते पि शरीरावगाहनया नवन्ति अद्भुलपुण्यादिकानां शरीरावगाहना अपि न
 यत्नीतिज्ञाव , यव शेषमूत्राण्यपि ज्ञायनीयानि , तेषां मित्यादि ॥ ते अनन्तरोदितस्वरूपा मनोरगा स्थानवरिज्ञापयत्वात् स्थाने जायन्ते स्थले च जाता
 सन्तो जलपि स्थलादिव चरन्ति तथा प्रायस्त्राज्ञायात् , यद्येव किं तस्मा दिदं नदृश्यन्त इत्याज्ञायापामाह-तेन स्थितिनित्यादि ॥ ते यथोक्तस्य

पुहत्तिया वि धणु पि धणुपुहत्तिया वि जोयणं पि गाउय पि गाउयपुहत्तिया वि जोयणपुहत्तिया वि
 जोयणसय पि जोयणसयपुहत्तिया वि जोयणसहस्र पि तेण थले जाता जले विचरति थले विचरति ते
 णत्थि इह बाहिरएसु दीवसमुहेसु हवति जेयावन्ते तहप्पगारा । तेन समासत्तं दुविहा प० ,

कथा ते कंठे-इत्यादिग यगलपि यगलपुहत्तियापि विहत्तयापि विहत्तयपुहत्तियापि । केनलाणक मनोरग यगलनो यगगाहना केनलाणक म
 गुन दृष्टकनो कन वसो कतलाणक वेदतना अवगाहना इमे कलाणक विहत्त पृथक्को यगगाहना । रयणपिरयणपुहत्तियापि । कंठं वायनो के
 इ हाय पृथक्को यगगाहना । कतयापि कतयपुहत्तियापि धणु पधणपुहत्तियापि । कंठं वेदं हायनो कंठं वेदं हायनो कंठं वेदं हायनो
 त्वनो । गा-यपि गाउयपुहत्तियापि । कंठं गा-कनो कंठं गाउयपुहत्तियापि । जोयणपि जोयणपुहत्तियापि । कंठं योजननो कंठं योजनपुहत्तियापि । जो
 यण सयपि जोयणसयपुहत्तियापि । कंठं योजन सयनो कंठं योजन सयनो कंठं योजन सयनो कंठं योजन सयनो कंठं योजन सयनो
 इच्छनो कंठं सयनो योजन पुहत्तियापि । तेण थलजाया यन विचरति जले जाया जले विचरति । तिहा थलमे कपना थलमे विचरे जलमे जगमे जन

पा मरीरगा इत् मानुषक्षेत्रे न स्थितिगन्तिकिन्तुगान्त्रेषु द्वीपसमुद्रेषु समावन्ति समुद्रेषुपि च पर्वतदेवनगरादिषु स्थलेषु त्यज्यन्ते । न जलेषु स्थलचरत्वात् । तत इह न दृश्यन्ते जयावर्कतस्पर्शगारा इति ये पि वा न्य ग्रन्थलक्षणादि शरीरावगन्तमाना स्तथा प्रकारा सन्ति ते पि न नीरगा चातव्या, उपसहारमाह-सेवमित्यादि ॥ तेषामपुंश्यादिग्रन्थलक्षणादिवनीय, यतया मपि दक्षिणातिक्कुगोटीना योनिप्रमुखाणि शतसरस्त्राणि यतया मपि च य च्छरीरादिषु द्वारेषु चिन्तनं य च स्त्रीपुंलपुंसकाना मत्यग्रह्य तज्जीवातिगगटीकातो प्राप्तीय, उर परिसर्पवत्क्षत्रतोपसहारमाह-सेतउर परिसर्पा, अधुना पुंजपरिसर्पाग मन्निवत्सुराह-सकितमित्यादि ॥ सुगम नवरय पुंजपरिजिज्ञाया अप्रतीता स्ते लोकातो वस

त०-सम्पुच्छिमाय गङ्गवक्त्रतिया य । तस्य जेते समुच्छिमा ते महे गपुमगा, तस्य जेते गङ्गवक्त्रतिया तेण तिविहा प०, त०-इत्यो पुरिसा नपुमगा, एएसिग एवमाड्याण पज्जत्ता २ ण उरपरिसप्याण दसजा इकुलकीलीजोगिप्पमुहसयसहस्सा हवती ति मरकाय । सेत उरपरिसप्या । से किन नुयपरिसप्या २ छुणेग

मे विचरे । ते तत्त्याड्याहिरिण्णु दावममहेनहवति । इण मनुष्येष्वेमे नहो वाहिरला होपममद्रमाहि इवेहै । जेगावणे तद्वप्यगारा मेरु महारागा ते समामपो दुविहा प० त० । जे अनेरा तयाप्रकारे कट्ठा त एतल महारागा ते महेपज्जको दावमकारे कट्ठा ते कहेहै - समुच्छिमा २ गङ्गवक्त्रतियाय । समुच्छिमा गभञ्ज । तस्य जत समुच्छिमा ते सवे गपुमगा । तिहा ज समुच्छिमा ते सर्व नपमकालो इवे । तस्य जे गङ्गवक्त्रतिया तेण तिविहा प० त० । तिहा च गभञ्ज ते तीनाप्रकारे कट्ठा ते कहेहै, इत्यो पुरिसा नपुमगा । स्या प्ररुप नपुमक । एएसिग एवमाड्याण पज्जत्ता यपज्जत्ताण चरपरिसप्या ण दसजाति कपकोडिजाणिपमुहमजसहसा हयतीति मरकाय । एहने इणतरे आदिदेई पर्वता अपज्जत्ता उरपरिसर्प दगलाः कुलकोडिया निममसुख गतनहस एगनाखु बोतरागे कट्ठा । मत्त उरपरिसप्या । एतल उरपरिसर्प कट्ठा । सेकित भवपरिसप्या २ गणे विहा प० त० । ते दिवे भनपरमर्प तेह ना अनेकमेद कट्ठा ते कहेहै - एतल सेहा सरडा सत्ता सरता सागपु, ग घरीइला तिसभरा मन्ना दुगसा पवलाइग छोरिविराणिग काहा चउपद

या , श्रीमीपा च नवजातिकुलकोटीना योनिप्रमुशानि शतसरस्त्राणि भवन्ति, य त्पुन शरीरादिषु चिन्तन स्त्रीपुत्रपुस्राना मल्यबहुत्व तज्जीवा
मिगमटीजातो वेदितव्य ॥ सेतमिन्यादि ॥ सम्प्रतिखरपञ्चन्द्रियैर्योग्योनिका मन्त्रिधिरसुराह-संकितमित्यादि ॥ अथ के ते खरपञ्चन्द्रियैर्य
ग्योनिका सुरिराह-खरपञ्चन्द्रियैर्योग्योनिका द्युतर्विधा प्रजसा-स्तद्यथा-वस्मपक्वीइत्यादि ॥ चर्मात्मकी पक्षी ॥ मंषक्षीतो विद्योते येषान्ते
चर्मपक्षिण लोमात्मकी पक्षी तोमपक्षी तद्वन्तो लोमपक्षिण तथा गच्छता अपि समुद्रकवत् स्थितौपक्षीसमुद्रकपक्षीतद्वन्त समुद्रकपक्षिण वित
तौ नित्य मनाकुञ्चितौ येषा विततपक्षी पक्षी तद्वन्तौ विततपक्षिण स्ते संकितमित्यादि ॥ अथ के ते चर्मपक्षिण चर्मपक्षिणो नैकविधा तद्यथा-वरगु

विहा पण्हा, तजहा-गडला सेहा सरफा सत्ता सरंठा सारा खारा घरोइला विस्संजरा मूसा मंगुसा प
इलाइया ल्यीरत्रिरालिया जाहा चउप्याडया जेयाचन्ततहप्यगारा । तंसमासहे दुविहा प०, त०-समुच्छि
मा य गप्पवक्कतियाय, तत्थणं जेते समुच्छिमा ते सहे नपुंसगा, तत्थणं जेते गप्पवक्कतिया तेण तिविहा
पण्हा, तजहा-इल्यो पुरिसा नपुंसगा, एएसिण एवमाडयाण पज्जहार ण भुयपरिसप्पाण नवजाडकुल

या । नौन सेहना स०ट सत्त सरत्त सारखार वरोएना विसनर मूसा दुगस प्रचलाटि छोरिविरालौ जांधा चउपट देयविशेष । जेवावणे तहप्यगारा
ते समासयो दुविहा प० त० । एहवा जे अनंरा तथाप्रकारे ते सहेपयकौ दांगप्रकार कट्ठा ते कहैछे-समृच्छमाय गप्पवक्कतियाय । समृच्छिम गर्भज ।
तत्थ जेते समृच्छिमा तेमये नपुंसगा । तिहा समृच्छिम सर्व सटा नपुंसकल्लि । तत्थ जेते गप्पवक्कतिया तेण तिविहा प० तजहा । तिहा जे भ
भंज तेहना तोनभेट कहै । "ल्यो पुरिसा नपुंसगा । स्तौ पुत्तय नपुंसक । एणसिण एवमाडयाण पज्जसा अपज्जसाण भुयपरिसप्पाण नवजाडकुलकोडो
जोपोपमइ सवसरस्त्रा दवतोतिमक्काय । पडने इणतर आदिदइ पर्यासा अपर्यासा भुजपरसपं नवजाति कलकोडि योनिप्रमुख भतसहस्त्र दुवे वीत
रागे कट्ठा । सेत भुयपरिसप्पखलयर पाचटियु तिरिच्छजोपिगा । ते एतले भुजपरिसपं थलयर पचे द्रय तिर्यच कट्ठा । सेत परिसप्पखलयर पाचटिय

लीत्यादि-मते च त्रेधा लोकतो वसेया, जेयावजेतत्प्यगाराउत्ति ॥ ये पि वा न्ये तथा प्रकारा एव रूप्या स्ते चर्मपक्षिणो दृष्ट्या, उपमत्तारमा
ए-सेतचम्मपस्की । लोमपक्षिप्रतिपाटनाथमाह-सकितमित्यादि ॥ एते च लोमपक्षिजेदा लोकतो वेदितव्या, समुद्रपक्षिप्रतिपादनार्थमाह-संकित
मित्यादिपाठसिद्ध ॥ गव विततपक्षिमूर भापि ते समासतो इत्यादि प्राग्बद्धावनीयम्, एतेषा द्वादशजातिकुलकोटीना योनिप्रभृतानि शतसह

कोटिजोगिप्पमुहसयसहससाइ हवती तिमस्काय । सेत नुयपरिसप्पथलयरपचेटियतिरिक्कजोगिया । सेत
परिसप्पथलयरपचेटियतिरिक्कजोगिया । से कित खहरपचिदियतिरिक्कजोगिया २ चउविहा पसुत्ता,
तजहा-चम्मपस्की लोमपस्की समुगपस्की त्रियतपस्की । से कित चम्मपस्की २ अण्णगविहा प०, त०
वगुली जलोया अफिहा नारुपस्की जीवजीया समुद्रवायसा कण्ठिया पस्किवेराली जेयावसेतहप्पगा
रा ॥ सेत चम्मपस्की ॥ से कित लोमपस्की २ अण्णगविहा प०, त० ठका कका कुरला वायसा चक्का

ति० । एतत्ते उरपरिसर्प यन्नवर पचेटिय कक्षा । सेकित खहर पचेटिय तिरिक्कजोगिया २ चउविहा प० त० । हिवे खहरपक्षी पचेटो तिर्यचयो
नि तेइता ४ भेटकक्षा ते कहै-वध्मपक्षी लोमपक्षी समुगपक्षी त्रियतपक्षी । चर्मपक्षी लोमपक्षी समुद्रकपक्षी वितनपक्षी विस्सरीमाइ । सेकित च
म्मपक्षी अण्णगविहा प० त० । हिवे चर्मपक्षी, ते चर्मपक्षी अनेकप्रकारे कक्षा ते कहै-वगुली जलोया अहसा भारुपक्षी जीवजीया समुद्रवायसा ।
वागुल जलोका अफिह भारुपक्षी जीवजीया समुद्रवायस । कण्ठिया पक्षिविराली । जेयावसेतहप्पगारा सेत चम्मपक्षी ।
जे एइवा अनेराहीज तथाप्रकारे जानिवा हिवे ते चर्मपक्षी कक्षा । सेकित लोमपक्षी २ अण्णगविहा प० त० । हिवे लोमपक्षीनाभेट अनेकप्रकारे क
क्षा ते कहै-ठका कका कुराला वायसा चक्कागा हसा कलहसा पायहसा राउहसा अछासेही वग्गा वक्कागा । ठहपक्षी कक कराला कागलो
चक्का हस कलहस पादहस राजहस अडासेहो वग वालग । पारिण्या कुवासारसा मेसरा मसूरा सववत्ता गहरा पीहरीया कागा कानिज

स्यामि श्रीया मापि शरीरादिषु द्वारेषु चिन्तन स्वीयुगपुमकाना मल्पयितुं लब्ध जीवाभिगमटीकात प्रतिपत्तय मिदुतु ग्रथीरवन्नया न लिख्यते,
अपुना यितयजनानुग्राय द्वीन्द्रियप्रवृत्तिकुलकोटिगतसहस्रसङ्ख्याप्रतिपादिका सद्गुह्यिगाया माह-सत्तत्तत्ताङ्कुलका मिलित्यद्यदुननतेरसा
दप । दससयहोतिनग तद्धारसचेवयोधया ॥ १ ॥ अत्र द्वीन्द्रियस्य यथाउद्धेन सङ्ख्यापटयोजना, सा चैव-द्वीन्द्रियाणा सहजातिबुलकाटिराज्ञा

गा तना कलहसा पायहसा रायहसा झुना सेनोवगा बलागा पारिष्यवा कुंचा सारसा मेसर मसूरा मसूरा
रा सतवच्छा गहरा पोठरीया कागा कामियुगा वजुलगा तित्विरा बहुमा लावगा कचोया कविजला पारे
वया चिह्ना चाना कुकुना सुगा वरहिणा मढगसला कोकिला सेहवा वरेल्लग माढी । सेत लोमपस्की । से
कित समुगपस्की २ एगागारा प०, तेण नल्य इह बाहिरएसु दीवसमुद्धेसु नवति । सेत समुगपस्की । से
कित चिततपस्की २ एगागारा प०, तेण नल्य इह बाहिरएसु दीवसमुद्धेसु हवति । सेत चिततपस्की । तेस

गा विज्जनगा । पारिगाथा कीच साय मेसर समूरो मूर यतवच्छ गडर पायडरक काग कामजुगा विज्जलगा । तित्विरा बहुमा लावगा कचोया क
विना पारिव्या चिह्ना चासा कुकुना सुगा वरगाहरिणा । तीतर वट्टक लावक कपोत कषल्लन यारेया विटक नीलचास कुकुडा सवा बगल । मय
णसिलागा कारना सेहा चरिल्लगमाई । मयणपची सलाक काइल सेहो चांलग इत्यादि । सेत लोमपक्खी सेकित समुगपक्खी २ एगागारा प० त० ।
अनेरा लोमपची तथापकारे द्विवे समुगपक्खीना एकहीन भेटके पची सोममानयी । तेण ताल्य इह बाहिरएसु दीवसमुद्धेसु हवति । इण हीपामाहि
नहीके बाहिरला हीपममट्टानाहि हुयेके । सेत समुगपक्खी सेकित विवतपक्खी २ एगागारा प० त० । एतले समुगपक्खी कथा द्विवे ते विवतपची
ते विवतपचीना एकहीन भेटके । तेण ताल्य इह बाहिरएसु दीवसमुद्धेसु हवति । ते इथा अट्टाईहोप ते अहोप धातको पक्कराई सही बाहिरला
हीपसमुद्धेमाहि हुवे । सेत विवतपक्खी ते समासो दुविह प० त० । एतले विवतपची ते सेवेपयकी दामकारे कथा ते तदेके-सुसुखमाय गम मक्खी

किं, त्रीन्द्रियाणां मही, चतुरिन्द्रियाणां नग, पलवरपञ्चेन्द्रियाणां मङ्गशयोदशानि, चतुःपदस्थलचरपञ्चेन्द्रियाणां दशः, सरपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियाणां दश, जुलपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियाणानव, सप्तपञ्चेन्द्रियाणां द्वादशेति, उपसन्नारमाह-सेतिमत्यादि ॥ तदेन मुक्ता पञ्चन्द्रियते यन्मयोनिः, सञ्जातिमनूष्यान त्रिचित्सु राह-सक्तिमत्यादि ॥ अत्रापि सन्तुल्यमनूष्याविषमं प्रवयामुमानत त्रियाणामपि च साक्षाद्भग

मासन्तु दुविहा प०, त० समुच्छिमा य गङ्गावक्कतिया य । तत्यण जेतं समुच्छिमा तंसहो नपुसगा तत्यण जेतं गङ्गावक्कतिया तंण निविहा प०, त० इत्यो पुरिसा नपुमगा । एएसिण एवमाड्याण खहयरपचिदि यतिरिक्कजोगियाण पज्जत्तापज्जत्ताण वारसजार्दकुलकोफिजोगिप्यमुहमयनहस्सा हवतीतिमस्काय, सत्तठ जाडुकुलकोफिज्जातिनवञ्चत्तेरसाइय । दसदसयहोतिणवगा तद्वारसचेवत्रो वट्ठा ॥१॥ सत्त खहतरपचिदिय तिरिक्कजोगिया ॥ सत्त पचिदियतिरिक्कजोगिया ॥ सत्त तिरिक्कजोगिया ॥ तं कित मजुस्सा २ दुविहा प०,

[illegible]

वते ऽ सत्तमिति बहुभाषोत्पादनार्थमन्तर्गतं भाष्यं पठति-कणिं गते इत्यादि ॥ नुगम नवर ॥ मयेसु तेन अनुउच्छाणेषुति ॥ नव्याप्यपि या
निकानिपित् मनुष्यसर्वावशादशुचिदृतानि स्थानानि तेषु सर्वेष्टिति उक्ता समूर्च्छिममनुष्या, गधुनागभंशत्क्रान्तिरुमनुष्यप्रतिपादनार्थमाह-सेक्ति
तमित्यादि ॥ कर्मजुमिना इति ॥ कर्म कृत्रियाण्येत्यादि मोक्षानुष्ठान वा कर्म प्रधानं ज्ञमि र्यपाते कर्मजुमा आपत्वात्समासात्तोऽप्रत्यय कर्मजुमा
एव कर्मभूमिना, सब मज्जमा यथोक्तकर्मविकला ज्ञमि र्यपान्ते श्रमजुमा स्तो गजा-कर्मभूमिका, अन्तराश्रयो मध्यवायी अन्तरे लक्षणसमुद्रस्य मध्य
द्वीपा अन्तरद्वीपा तदता अन्तरद्वीपगा अस्ति पद्यानुपश्रुतित्वार्यापनाथं प्रथमतोऽन्तरद्वीपगान् प्रतिपादयति ॥ सकृत्तमित्यादि ॥ सुगम नम
र मष्टाधिकशतविविधा इति सादृशा इति यावदप्रमाणं यावदपान्तराला यत्नामानो निमज्जत्येतत्पूर्वोपरदिगुयवस्थिता अष्टाविविधतिविविधा अन्तर

त० समुच्छिन्नमणस्मा य गङ्गवक्त्रातिवमणस्मा य । न कित समुच्छिन्नमणस्सा , कहिण जने ! समुच्छिन्नमणस्सा समुच्छ्रित ? गोयमा ! अतो मणस्सखेते पणयालीमाए जांयगसयसहस्सेसु अद्दुडज्जेसु दीवसमुहेसु पणरससु कम्मज्जमीसु तीसाए अकम्यज्जमीसु तप्पन्नाए अत्तरदीवएसु गङ्गवक्त्रातिवमणस्साण चेव उच्चारंसु वा पासवणंसु वा सेलंसु वा सिवाणएसु वा वतंसुवा पितंसुवा पूएसुवा सुक्कोनुवा सुक्कोपोग्गालपरिसाणेसु

मम गुह्यात् गन्धर्वकतिय मणस्त्राय । त समूर्च्छममनुष्य गर्भजननव । साकत समूर्च्छममणस्त्रा । द्विवे समूर्च्छममनुष्य नृहेतुः—कवृण भते समूर्च्छत
मणस्त्रा समस्त्रति । किम हस्यामिन् । समूर्च्छममनुष्य ऊपने । अत्रामणस्त्रात्ते पणयालोमाण कोणसद्वमेम । ४५ त्वायु गीजन मनुष्यवैवमाहि । न
दा० ज्ञेमटीवममृष्टमु पणरमसु अभमोसु तोमाणश्चक्यभमोसु कपन्नाणश्चरदोवेस ॥ अष्टाद्वीप समुद्रमाहि १५ कर्मभमिमहि ३० अक्षमभमिने वि
पै ५६ अन्तरहोपनेविपै । गन्धर्वकतियममसु चेय । गर्भजननयता ग्रोरद्वी ऊपजे नियै । सचारेमुना पामवण्यवा खुतेमवा सचाणेनुया विपसवा ।
सद्भोतिने विपै लघुनौतिने विपै शेषमै नाकनामलमाहि वमनमाहि । पितेमुवा पणमवा सोणिएमवा सुक्कमुवा मुक्कपुगलपरिसाडेमुवा । पित्तमाहि

द्वीपा स्तादृशा गय ताय तप्रमाणा स्ताव दपान्तराता स्तत्रामान गव शिसरिपर्वतपर्यापरिदिग्धवस्थिता अपि तती त्यन्तसदृशतया व्यक्तिभेद
मनपेत्य अन्तरद्वीपा अष्टाविंशतिविधा गव विवक्षिता इति तज्जाता मनूया अपि अष्टाविंशतिविधा उक्ता स्तानेव नामग्रारसु पदश्रयति-तज्जरा
गयोदया इत्यादि ॥ गत सप्तचतुष्का अष्टाविंशतिसङ्ख्ये त् गते च प्रत्येक हिमजाति शिखरिणि तत्र रिभयद्रुततयातावद्भाष्यन्ते इह जम्बूद्वीपे ज्वरतस्य
दीगवतस्य च क्षेत्रस्य सीमाकारी भूमिनिमग्नपञ्चविंशतिभोजनयोर्जनशतौ च्छयपरिमाणौ भरतक्षगापक्षयादिगुणविक्षप्तौ हेममय धीनपटुर्गानानावश

वा विगयकलंवरसु वा इथीरुरिससजोएसु वा नगरनिर्दमणसु वा सखेसुचेव असुडएसु ठाणसु एत्यण समु
च्छिममणस्सा समुच्छति, अगुलस्स अस्सिज्जन्नागमितीए उगाहणाए अमन्ती मिच्छदिही अन्ताणी
सखाहि पज्जतीहि अपज्जत्तगा अतोमुज्जत्ताउगा चेव काल करति । से कित्त गल्लवक्कातियमणस्सा २
तिविहा पणत्ता, तजहा-कम्मनूमिगा अकम्मनूमिगा अतरदीवगा मे कित्त अतरदीवया २ अतरदीवया
अठावीसतिविहा पणत्ता, तजहा एगोरुया अ्याहासिया वेसाणिगा णगोली १ हयकन्ना गयकन्ना गोक

रापविधौ साणित रत्तमाहि गुक्कमाहि सूक्कापुहलनो नाखुवो तेहनेविधौ जीवविता कयनरमाहि । यो परिमसचोणमुगा नगरनिर्दमणसु वा ग. मनिर्दमणे
मुवा सखेसुचेव अम एसठाणसु । स्तो पुनप सवोगमाहि नगर खात्तमाहि ग्याम खात्तमाहि सगलो अशवि अपविवाह स्थानकमाहि । एत्यण समुच्छ
मा मणत्ता समुच्छति । इहा समुच्छिम मनुष्य जपलै । अगुलस्सा अस्सिज्जत्तगा अतोमुज्जत्ताउगाचेव कालकरति । असखी मिथाहुगे अन्नानो सर्वपर्याय अपपत्ति कल्लम्मे
असणी निरच्छादिहो अणानी सखाहि पज्जतीहि अपज्जत्तगा अतोमुज्जत्ताउगाचेव कालकरति । असखी मिथाहुगे अन्नानो सर्वपर्याय अपपत्ति कल्लम्मे
क्षेत्तं आज्जाया निचै कालकरै । सेत्त समुच्छिममणत्ता । ते समुच्छेममनुष्य कहिंये । सेकित्त गमवक्कातियमणत्ता २ तिपिहा प० त० । हिचे ते गमजमनु
ए पक्षे गिय गुत्तअहे, ते गमनमनुष्यना तोनभेद कक्षा तेकह्यै-कयभूमिगा १५ अकयभूमिगा २० अन्तरदीवगा २ अन्तर्वीसिदिहा प० त० । कसंभू

विशिष्टयुतिमणिनिकरपरिमिरुतोन्नयपार्थ सर्वत्र तुल्यविस्तारो नगनमहलोऽन्नेसि रत्नमये कादशकटोपधीभितो वल्लभयतलविधिविधमणिकनकम
हिततटन्नागदशयोजनसहस्रायामदक्षिणीत्तरपञ्चयोजनशतविस्तार पट्टदृहशोजितोत्तरोमध्यन्नाग सर्वत कल्पपादपत्रोणार
मणीय पृथोपरपर्यन्ताभ्या लवणोदार्णखलसस्पक्षी हिमयन्नामपर्वत स्तस्य लवणोदार्णखलसपर्यादाभ्य पूवस्या पश्चिमाया च दिशि प्रत्येक द्वे
द्वे गजदाकारे दन्त्रे विनिर्गते तत्र शृंगान्यादिज्ञि या विनिर्गता दृष्ट्वा तस्या चिम्बवत पयस्तादारभ्य त्रीणि योजनशतानि हावणमयास्या उन्नान्त
रे योजनशतत्रयायामत्रिकम्भ । किञ्चिन्न्यूनैकोनपञ्चाशदधिकनवयोजनशतपरिरय एकोरुकनामाद्दीपोवर्तते-अथपञ्च पञ्चषण्णु शतप्रमाणविक्रमया

न्ता सक्षालिकन्ता २ श्यायसमुहा मंडमुहा श्यमुहा गोमुहा ३ श्यसमुहा हल्यमुहा सौहमुहा वग्घमुहा ४ श्यासकन्ता सीहकन्ता श्यकन्ता कणपाउरणा ५ उक्खामुहा मेहमुहा चिज्जमुहा विज्जादत्ता ६ घणदत्ता लछ दत्ता गूढदत्ता सुद्धदत्ता ७ । सत्तं अत्तरदीवगा । से कित्थं अकम्मभूमिगा ? २ तीसतिविहा पण्णा, तव पचहि हेमवण्हि पचहि हेरणावण्हि पचहि हरिवासेहि पचहि रम्मगवासेहि पचहि देवकुरुणि पचहि

मिना १५ अकर्मभूमिना ३० ५६ अन्तरद्वीपमाहि मनय २८ भेटे कक्षा ते कहूँ—एगदगा अभसिया वेसाणिया तटोली ४ । पत्तीरक अभसिका वेसा
णौ तटोली । हयकणा गयकणा गोकणा नकुनिकणा ८ । हयकण गलकण गाकण मकुनकण । यायममहा नटमहा अयमहा गोमहा अभिमहा इ
यिमहा सौहमहा वरमहा १६ । आटयमहा मेयमहा अयनखा गोमरु अखमख ढाखमख सिहमख व्याघ्रमख । अखकणा सौहकणा अजका कणपा
वरणा २० । अयकण मिडकण अकण कणपावण । सकमहा मेहमहा विज्जनहा २३ । उल्लामरु मेघमख विज्यमरु । विज्जटता घादता लुट्टता रू
ट्टता नुडदता । वत्ताःया २८ । न्दियटता घनदता नष्टदता गूढता अदृष्टता चित्थाटि ७ २८ ते । सेत अतरदीपगा । अन्तरद्वीप २८ यिगुरीपवत
पयिमे २८ जीवाभिगम टीकांमाहि विस्तरण । सेकित अकयमभिगा २ तोसद्विहा प०त० । हिये अकर्मभूमिना तीसभेट्हे तेकहेँ—पचहि हेमनय

द्विगच्छतोच्छ्रितया पट्टपरवेदिकाया संवत् परिमण्डित तस्या च पट्टपरवेदिकाया वक्षो जीर्वाभिमटीकाया मिव वेदितव्य , सा पि च पट्टा
 परवेदिका सुगत सामरस्येन वनसरुपदिक्षिता वता च वनसरुपस्या ऽयं विज्ञेय , प्रायो वरूना समानज्जातीयाना मुत्तमाना गरीरुणाणा समुदायो
 वन यथा ऽङ्गो रुवा च म्यकजनमिति , अनेकजातीयाना मुत्तमाना गरीरुणाणा समूहो नवसरुप , उक्त च जीर्वाभिमसूताटीकाया-सुगजाङ्गरि
 समुत्ति घण अणेरुजाङ्गरि उत्तमेहि वक्ष्यते इति । तस्य च वनसरुपस्य चक्रवालतया विप्रभो देशोने द्वे योजने परितोप पट्टपरवेदिकाप्रमाणः
 अस्य च वनसरुपस्यवर्णक प्रतिपादितोस्ति स चा तीव्रगरीयानिति नो पदज्ञित ॥ केवल जीर्वाभिमसूताटीकातो वसेय , तस्यैव रिमजत पवतस्य
 पयत्तादारभ्य दक्षिणपूर्वस्या दिशि त्रीणि योजनज्ञातानि लवणसमुद्र मयगात्र द्वितीयदन्ध्याया उपरि एकोरुकाद्वीपप्रमाण त्राज्जासिकानमट्टीपो
 वसते , तथा तस्यैव हिमवत पश्चिमाया दिशि पर्यन्ता दारभ्य दक्षिणपश्चिमाया नैऋतकोण इत्यथ , त्रीणि योजनज्ञातानि लवणसमुद्र मयगात्र

दन्ध्याया उपरि यथोक्तप्रमाणो वेपाणिकनाना द्वीप , तथा तस्यैव हिमवत पश्चिमाया दिशि पयत्ता दारभ्य पश्चिमोत्तरस्या दिशि वायव्यकोणे
 इत्यथ , त्रीणि योजनज्ञातानि लवणसमुद्रमध्ये दन्ध्याभितिकम्पा त्रान्तरे पूर्वोक्तप्रमाणो नागोलिकनाना द्वीप एव मेते चत्वारो द्वीपा हिमजत इत
 सुद्वपि विदिशु तुल्यप्रमाणा अवतिष्ठते , उक्त च-बुद्धरिमवतपुष्पा वरुणविदिसासुसागरनित्तिसए । गतुणतरदीवा तिष्ठिसग एति चिच्छिन्ना ॥ १ ॥
 अथणापक्तनवसर किपूणपरिहि तेसि मे नामा एगारुय आजासिय वेसाणिय चैव नगूली ॥ २ ॥ तत स्या मेकोरुकाद्वीना चतुशा द्वीपाना परतो
 यथाक्रम पूर्वोत्तरादिविदिशु प्रत्येक चत्वारि २ योजनज्ञातान्य तिकम्प चतुर्थोत्तमज्ञातानामविक्रजा किचिन्मूनपचपष्टिसुत्तित्तादज्ञातयोजनज्ञातपरि
 द्वीपा यथोक्तपट्टपरवेदिकावनसरुपमन्त्रितपरिसरा जम्बूद्वीपवेदिकात धतुर्थाजनज्ञातप्रमाणातन्त्रा ह्यपकणमजकणभौकणेशथलीकणनामानचत्वारो
 द्वीपा स्तद्व्याया-एकोरुकस्य परतो ह्यकण , आजासिकस्य परतो गोकण , वेपाणिकस्य परतो गोकण , नागोलिकस्य परत चाकुलोकण इति , तत

द्रुतप्रमाणायामविक्रान्तावगाढपुष्करीकद्रुहोपशोभिते गिरारण्यपि पर्वते लवणोदार्णवजलसस्पर्शादारम्य यथोक्तप्रमाणात्तरासु घतस्तपु विदितु
व्यवस्थिता एकोरुकादिनामानां 'तृणापान्तरालायासविक्रान्ता अष्टाविंशतिमह्ना द्वीपा यत्तथा सवसङ्ख्या पट्पञ्चाशदन्तरद्वीपा, गतेद्रुता मनुष्या
अप्ये तन्नामान उपचारा द्रवन्ति घतात्स्थितद्वापदशो यथा पञ्चालदशनिवाग्मिन पुरुषा पञ्चाला इति, तेचमनुष्या वज्रपमनाराचसहनिन
कककुक्षिपरिणामा अनुलामवायुयगा समघतुरस्वसस्थाना स्तद्यथा-सुप्रतिष्ठितकूचचारुणा सुकुमालशस्त्रप्रथिरलोमकुक्षिविन्दुत्तनह्ना युगला
निगूढसुवट्सन्धिजानुप्रदशा करिकरसमवृत्तेरव कठीरवसहस्रकटीप्रदशा शक्रायुधसममध्यक्षगाग प्रदर्शितावत्तनाग्निमण्डला श्रोत्रसत्ताच्छित्त
विशालमासलज्जस्थला पुरपरियानुकारिदोषंवाह्य सुसिद्धमणिद्वय रक्तोत्पलप्रधानुकारिगणिकापाटता चतुरद्वलप्रमाणसमवृत्तकटुग्री
वा शारदगणकसामगदना श्वन्नाकारिशिरसो अस्फुटितस्त्रिगवर्कान्तिशब्दमृदुता कमण्डलुग्रन्थमूष्यपीड्यनपताकासोऽस्तिजयउमरस्य मरु
रकूमरयवरस्याताशुकाष्टापादाकुशसुप्रतिष्ठमयूरश्रीदामाग्निपकतोरणमोदनीजलधिपरजउनादशपर्वतगजपुष्पसिन्धुचामरकूपप्रज्ञास्तोतमह्यत्रिशल्लसुग

उत्तरकुरुएहि सेत अरुमन्ममगा । ने कित कमन्ममगा ? २ पणरसविहा पणता, तजहा पचहि जरहेहि
पचहि एरवएहि पचहि महाविदेहेहि ते समासनु दुविहा पणता, तजहा आउरिया य मिलरू य । से

हि पचहिरवएहि पचाह हिरववासेहि पचहि रम्यगवासेहि पचहि ठाकुराहि पच ३ उत्तरकराह । पाच इमवत्त जेयकरो पांच हिरवएपर्वन जेने
रो पाच हिरवएपर्व जेने करो पाच रम्यकजने करो पाच ठाकुराह जेने करो । सेत अरुमन्ममगा संकित ३ मन्म मगा २ पणरम
विहा प० त० । ते अरुमन्ममि कहिये दिवे कर्मममि पछ गुहकहे ५ प्रकार कक्षा ते कहछे - पाहि भरहहि पचहि ऐरवएहि पचहि महाविदेहेहि
० ते समासनी दुविहा प० त० । पाच भरतेकरो ५ ठारवते करो ५ महाविदेहेकरो ७ मन्मपथको टावप्रकारे कक्षा तेकहे - आउरियाव मलिन
य । आवमनुय दूगा म्तेच्छमनुय । साकत मिलकू २ अणेगविहा प० तजहा । दिवे म्तेच्छमनुय ते ग्रनेकप्रकारे कहे । जयना चिनाया सवरा नव

परा, स्थियोपि सुतातनवांस्तुन्दयं समस्तमहिनागुत्तमवितता सहताग्नितपस्तलवत् सुकुमारकर्मसम्यानमनोहारिचरणा रोमरहितप्रज्ञस्तला
 चोपेतजट्टायुगला विगृहमासलजानुप्रदशा कदलीस्तम्भानिनीशप्तसुकुमारपीत्रोरुका वदनायामप्रमाणत्रिगुणमासलत्रिगालजवनधारिण्य स्त्रिय
 न्निमुचिमक्तशक्करोमराजय प्रदक्षिणावततराजगरनाजिमयकला प्रज्ञान्तराजणापतनुत्तम सङ्गतपाथ्यां कनककलशोपसृतात्पुननत्ताकृतिपीत्र
 मयाधरा मुकुमारयाहुलतिका सौवस्तिक्कञ्जचक्राद्याकृत्तिलालकृतपाणिपादतला वदनत्रिजागोच्छिनमासलकम्बुग्रीवा प्रज्ञस्तलवणोपेतमासल
 मुक्तिन्ध्या दान्तिमोपुष्य नुकारिशोणिमाथरोपु रक्तोत्पलतालुजिह्वा बिम्बसितकुलपत्रायतकास्तलोचना आरोपितचापपृष्ठाकृतिसुमङ्गलनता
 पञ्चललाटफलका सुस्त्रिगुणकालशक्तशिरोमहा पुत्तप्य किञ्चिदू नोच्छ्राया रज्ज्जावतउदारशृङ्गारचारुवया प्रकृत्यैव अतिवज्जित
 परमनेपुण्योपेता, स्तथा मनुष्या मानव्यं च स्वाभावत यव सुरभिबद्धा प्रतर्क्योपमानयाताता नन्वोपिगो निरुच्यववा माद
 मत्वा नत्वापि मनोधारिणि मणिजनकर्मरक्तिकादौ ममत्वकारण ममत्वान्नितिवशरहितं तवयाऽपगतवैदात्रुवया हस्त्यश्चक्ररतूगोमनि
 त्रवि तत्परिशीने पराङ्मुखा पादविटारिणा उत्रादिरागयत्तनुपिशाचादित्रिमाखियनोपनिपातयिक्ता परस्परप्रप्यप्रपन्नतापर

मिलस्कु १२ चुण्णंगविहा पक्षात्ता, तजहा मग जवण चिलाय सत्रर वत्रर कात्र मुसुकोहु नक्रगणि
 रसग पक्ष्णणीय कुलस्क गोएह सीहला पारस गोथय्यय दमिल चिक्कल पुलिड हारोम टावयवोक्ताण गध

१ कात्र मरडा डभङ्गणि । पक्ष्णि । उत्रनटगना चिक्कातटगना मयट्टंगगा वच्चरटगना काउटगना मवउटगना उभउगटगना तौर्णगदेगना पटण
 गना । कुलुत्तु गीड मौहल पारम कौव अडड टमि । चिक्का पलिः हारोम ट्राव याक्काण गधट्टारग वड्डात्र पञ्जल नामा पामा पडता मम
 २ उ वधगाय । कुलपुटगना गेडना मिहभना पायना कौवना अड्डना दमिलगा । चक्का पलिटगा हारासना टोपना वकाणना गन्थाहारना वड
 लना अज्जलना रामना पार्श्वना पड्डना ममवना ववुना । मूगलि कौक्कणम मंगणद्धया मालव मगर ममासिथा कण्ठोर त्वासीय खगा खासउ नेडर

वित्तत्वा दऽऽमिद्रा , तेषां पृष्टद्वरशक्तानि चतुःपदिमह्नाऽनानि चतुर्थातिक्रमेण चात्तरयत्तुः प्राप्तौ पि न आल्यदिधायनिष्पन्नं कितं पृथिवी-
वीर्यसिद्धिः कल्पदुर्माणा पुष्पफलानि च , तथा हि जायन्तं रातुं तत्रापि त्वश्रमात् तं गव आनिगो वृषमापमुद्गादीनि धान्यानि परं न तानि मनुष्या-
णां सुपन्नो गच्छन्ति या तु पृथिवी सा शक्रातोऽप्यनतगुणमाधुर्या यं शुक्लदुर्मापुष्पफलानां सास्त्रादं न चतुर्विंशं जना दप्यधिकान् ,
तथा श्रीक-तसिग भत पुष्पफलाग करिष प्रासाग पन्नत गा० , स जहा नाम ग्रन्थो चाउरतस्सुवक्राद्विस्स कलाग प्रायणाग सपरमस-
रसनिष्पन्न दत्तात्रयेन धोउधगरमोउधमफासोद्वेग आसायार्थेण जटप्यशिश मयार्थेण विनियोजनं सविदियगायपत्त्यायिगिज्जश्रामागं पन्नतं गतो
इह नराग च पन्नतं तत् पृथिवीकल्पदुर्मापुष्पफलानि च तेषां मात्तरं तयाज्जुतं मात्तरं मात्तरं प्रमादट्टिसस्यानां ये गृहकाराः कल्पदुर्मा-
ल्पं यथासुरमं वतिष्ठन्त , न च तत्र कृतं दशमशक्यकारमुणमल्लिकादयं शरीरोपद्रवकारिणो जलान् उपजायन्त ये ऽपि नायन्ते नृपगञ्जाग्रसि-
त्तादयं तं पि ननुप्याणां न वाचायै प्रत्यति नापि ते परस्परं द्विम्यस्मिन्नकाव वसन्ते श्वानुजावतो रौद्रानुजागरहितत्वात् , मनुष्ययुगराणि
च पयधसागसमयं युगलं प्रसजते तच्च युगलम कोनाशीतिस्मिन् पादागानि तथा शरीरोज्यो ५८० धनुः ज्ञातानि पत्योपमा सहस्रनागप्रमाणं मा-
युक्तं च अतरदीपुः शरीरो धनुःसुयमहुस्मिन् सया मुद्रया । पालति तुणयस्य पल्लस्य सयरागात् ॥ १ ॥ पउमवीविहकरदयाणि मज्जयाणं तेसिं
मात्तरौ । तत्तस्मिन् वत्तस्सयं गुणवीडिणाणि पालयथा ॥ २ ॥ स्तोत्रकपायतयास्तोत्रप्रमानुम्यतयास्य ऽत्ते मृत्वा दिव सुपसपति मरणं च तेषां

हाराग बहलिन् अज्जल रोम पांम वउसा मलगाय वधुगाय सूजलिं कुरुगमेच्च परहव मालत्र मग्गर
अज्ञानिमिय कण वीरणं एहानीय खसखानिन् नेदूरं मढं ठाविउग लउसं खउमं क्कांज्जं मा अउरवगां हग्गं

मढं ठाविंलं गल्लं उमलं वउसं क्कांज्जं अउरवगां वीरणं रोमं रउणं रोमं मक्कं अउरवगां विमववाभोउं पवसादं । मउमना कोरुणना कज्जना मेट्ठा ।
मालदनां मग्गरना प्रभासिकना कणवोरना वडासिना यउना प्यासिन् नेउरना मढना ठाविउना गतना उसाता वउसाता क्कांज्जना यरिना गोण

जूतकाफागुनुतादिमात्रव्यापारपुरस्सर प्रवति न शरीरपीकारम्भपुरस्सर मिति, तादेव मुक्ता यन्तरहीपगा सम्प्रति अकर्मज्ञमिकप्रतिपादनाय
 माह-संक्षिप्त मित्यादि ॥ अथ क ते अकर्मज्ञमिका ? सूरिराह-अकर्मज्ञमिका छिद्विधा प्रज्ञासा-तद्यत्रिगद्विधत्वकैवर्जदात्-तथा चाह-तज्जहा
 पद्यहिहेमवतपदिद्वत्यादि ॥ पञ्चभिर्हेमवतै पञ्चभिर्हरिवर्षे पञ्चभिर्देवकुसुभि पञ्चभि रुक्मकुसुभि त्रिंश
 माना त्रिगद्विधा भवन्ति यथा पञ्चाना त्रिशसङ्गुत्सकत्वात्, तत्र पञ्चसु हेमवतेषु मनुष्या गयूतप्रमाणशरीरोच्छ्रया मल्योपमायुयो वज्रपंज
 नाराचसन्निन समचतुरलसस्याना चतुर्पाष्टकशकका द्युतुर्पातिकमज्जोजन एकोनाशीतित्तिदिनान्यपत्यपालका उत्सव-गाउयमुच्चा पलिते व
 माउणो वज्ररिसदसपयणा । दमवग्रत्नवय अहमिदनरा मिहुणवासी ॥ १ ॥ वदसहीपिठकरकया शमणुयाण तेसि माहारी । जतससचउत्तरसय
 गुणसिद्धिमिणवघपालण्या ॥ २ ॥ पञ्चसुहरिवर्षेषु पञ्चसुरस्यकपुट्टिपत्योपमायुयो द्विगयूतप्रमाणशरीरोच्छ्रया वज्रपञ्जनाराचसहनिना समचतुर
 ससस्याना पष्टभक्तातिकमाहारयाद्विणो ऽष्टाविंशत्यधिकज्ञतसङ्गुपाष्टकरकका द्युतु पाष्टदिनान्य पत्यपालका, आह व-हरिवासरस्यएसु आउप
 माण शरीरमुस्सेहो । पलितेवमाणि दोळिय दोल्लयकोसुदिसया प्रणिया ॥ १ ॥ वदससय आहारी चउसठिदिशाणि पालणा तेसि । पिठकरका

रोमग नमरु त्रिलाय वासीय एवमादी ॥ सेतमिलस्कु ॥ से कित ज्ञायरिया ? ज्ञायरिया दुविहा पसत्ता,
तजहा डहिपत्तारिया य ज्ञगहिपत्तारिया य । से कित डहिपत्तारिया ? २ छविहा पसत्ता, तंजहा—

ना रामना गौणना रामना सकना चिन्तातना इणा देयावागो इणतर आदिदे० । सेत मिलकू । भ्लेचदेश कहिये । सेकित आयरिया दु विहा पणत्ता त० । इवे आर्पदग केतनाप्रकारे टायप्रकारे कळ्या तेकळे—इह टपत्ताःपरिया अणिहटपत्तायरिया । अहिद्वन्त आर्यमनुष्य अहिद्विना आर्पविना मूष्य । सेकित इहटपत्तायरिया र ऊर्कइहा पणत्ता त० । निव अहिद्वन्त आर्यमनुष्य ऊपकारे कळ्या ते कळे—अरिहता चकवटो वसडेवा नामदेव चारणा विद्याहरा । अहन्त चकवत्त वलद्व वासुदेव चारण विद्यावर यमण । सेत इह टपत्तायरिया । एतलेभेदे अश्विन्त कळ्या आय ।

शमय अठावीस मुनेष्व ॥ २ ॥ पञ्चसुदेवकुलपु पञ्चसुदेवकुलपु त्रिपत्योपमाथुपो गव्यतयप्रमाणशरीरोच्छ्रया समवेतुरस्त्रस्थान वज्रपतनाराचसं
हृन्ति , पटपचाशदधिकशतद्वयप्रमाणपटकरकका अष्टमन्त्रस्तार्तिह्रिमाहारिण एकोनपचाशद्दिनाम्यपस्यपालका , तथोक्तच-दासृचिकुसुमगुया
तिपल्लपरमाउजोतिकोसुधा । पिठकरकसयाइ दीव्यन्नादमणुयाण ॥ १ ॥ सुसमसुसमागुभाव अणुजन्माणाणयज्ञगोवक्ष्या । अउणापत्रादिणाइ
अष्टमन्त्रतस्स आशारो ॥ २ ॥ एतेषु सर्वेष्वपिद्वेष्टन्तरद्वीपेष्विज मनुष्याणा मुपयागा कल्पद्रुमसम्पादिता नवर मन्तरद्वीपापेक्षया पञ्चसु हेरणय
तपुमनुष्याणा मुत्यानवलवीयोदिक कल्पपादपफलानामास्यादोषमेमाधुर्यमिखेवमादिकाजाया पर्याया नचिकृत्या नक्तगुणा द्रष्टव्या , तेज्यो अपि
पञ्चसुहृदिवर्षेषु मञ्चसु रम्यकवर्षेषु अनन्तगुणा स्तेज्यो अपि पञ्चसु देवकुलपु पञ्चसू तरकुलपु नक्तगुणा , तदेव मुक्ता अकमभूमिका सम्प्रतिक
मन्त्रमिप्रमतिपादनायमाङ्ग-सकित्तमित्यादि अथ के ते कसमूमिका सूरिराट्-कमभूमिका पञ्चदशविधा प्रक्षमा स्तच्च पञ्चदशविधित्वज्ञेज्जैटान्
तथा बाह-पचहि नरतहि इत्यादि । पञ्चभिन्नरतै पञ्चभिन्नरावर्तै पञ्चभिन्नरावर्तै जिद्यमाना पञ्चदशविधा भवन्ति , ते च पञ्चदशविधा

अथरहता चक्षुनही बलदेवा वासुदेवा चारणा विज्ञाहरा ॥ सेत इन्द्रिपत्तारिया ॥ से क्रित अणिह्तिपत्तारि
या ? २ नवविहा पयसा , तजहा खेत्तारिया जातिअारिया कुलारिया कम्मारिया सिप्पारिया ज्ञासारिया

संक्रित अणिह्तिपत्तारिया २ नवविहा प० त० । द्विवे कुण यनकहि , पायं नवप्रकारे कक्षा तेकहेछे—खित्तपायारया जातिआरिया कुलआरिया
या कम्मआरिया मिप्पआरिया भासागरिया नाणयारिया दिसणआरिया चरित्तआरिया । चेवार्थं तीर्थकर कयजे ते तीर्थकरसेन नातिआरं जेह्जो
जातिप्रमिसि कुलवत्तम ऊपना कलां कर्मविज्ञानविषे छाहा सिल्लविषे आर्य भायाआर्य वीलवैषार्य ज्ञानेआर्य दयंनेकरोषार्य चारिवेकरोषार्य । मेकि
त विज्ञागरिया २ अहक्खीस तिावहा प० त० । द्विवे चेवार्थना २५१ आटापचवीस भेटकक्षा तेकहेछे—रायगिहमगहचणा अगतज्जातामल्लित्तवगा
२ कचलपरकलिग बाणारिसिचवकासीया । राजगृही नगरी मगधदेय चम्पानगरी अगदेग तिम तामलिसानगरी वगदेग कञ्चनपुरो कलिगदेय वा

समाप्तोद्विधा प्रप्ता स्तथा-आर्यो स्नेच्छा य तत्रागतं ऐषधर्मन्यो याता प्राप्ता उपादेयधर्मरित्यार्यो पृषोदरादय इति रूपनिष्पत्ति
 स्नेच्छा अव्यक्तज्ञापासमाचारा मृच्छत्रय्यक्ताया वाचि इति वचनात् प्रापाग्रहण चोपलक्षणा तत्र शिष्टा, समत सकलव्यवहारा स्नेच्छा इति प्रति
 पत्तय, तत्रा ल्पव्यक्त्यत्वात् प्रथमतो स्नेच्छवक्तव्यतामाह-सैकितमित्यादि ॥ अथ के त स्नेच्छा मिलक्त्, इतिनिदेश प्राठनत्वा दापत्वा स
 सूरिराह-स्नेच्छा अत्रकविधा प्रज्ञप्ता तच्चा नमविषयत्व शक्यवन्चिन्तातशययरादिदज्ञज्ञदात्-तथाचाह तज्ज्ञा सगस्यादि शक्यदज्ञानिगिनि
 ज्ञाका यवनदेशनिवासिनोपवना एव सर्वत्र नवर ममी नानादेशलोकतो विज्ञया । आयमतिपादनाथनाह-सैकितमित्यादि ॥ सुगम नवर रायगि
 हेत्यादि ॥ राजगृह नगर माधाननपट एव सर्वत्राप्यन्तरसरकारोपिधेय प्रावायस्थय मगधपुत्रनपदप राजगृह नगर १ अंगपचपा २ दगयुता
 मलिती ३ कलिंगपूजावनपुर ४ काशीपु वाणारसी ५ कोसलासु साकत ६ कुत्तपु गजपुर ७ कुसावत्तपु सौरिक ८ पञ्चालपु काम्पिल्य ९ जङ्गलेपु
 अहिच्छन्ता १० सुराष्ट्रेपु द्वारावती ११ विदेहेपु मिथिला १२ वत्सेपु कोशास्वी १३ श्यामिल्यपु नन्दिपुर १४ मयपु जह्निलपुर १५ वत्सेयु वैराट

गाणारिना दसगारिना चरित्तारिया । से कित खेत्तारिया ? २ अष्टज्ज्ञीसतिचिह्ना पयता, तज्ज्ञा राय
 गिहमगहचपा अणामहतामलित्तिवगा य । कचणपरकलिगा वाणारसि चैत्र कासीय ॥ १ ॥ साएयमोस

राणसौनगरो निदे कागो । मायकोमनागाय पुरवकरसौरिकुमदाय कापिप्रपवासे आहृष्टसाजगलावेव । साकितनगर कोशलदेश गजपुर कुत भोरो
 नगर कग कापिननगर पठान्दय अहिच्छवानगरो श्रोयसा जङ्गनटग गिचै । डारवश्यमरुहा मिहिलविदेहाययत्यमवौ नटौपरसडिल्ला भदिलपुरचे
 वमलगाय । डारिकानगरो सारठदेश मिथिलागरो विदेहदेश कोसवो नगरो वच्छदेश नान्दपुर सागुलदेश भदलपुर नियै मलयदेश । वडराडि च्छ
 वरणा अच्चातडमिन्तियविदरुणा सात्तिमस्योदेवी वीतमवसिधसौबीरा । वैराटदेश मरुक्कनगर वरणदेश वरुहपुरो मृत्तिकारवतीनगरो दशार्णदेश
 सौत्तिकानतीनगगा विदेहदेश वीतमनगर सिधुदेश सोनारदेश । मडूराचमरसेणा पावामनीयमासपुरवडा सादत्याककुला कोटियारिसावलाट, य ।

पर १६ वरगेषु व्यञ्ज्यापुरी १० दशाणेषु सृत्तिकाग्रती १८ चीदेषु शीर्षिकाग्रती १६ वीतग्रय सिन्धुपु २० सीबीरेषु मयुरा २१ सूरसेनेषु पापा २२
जङ्गेषु मासपुरिवहा २३ कुलात्तेषु आवली २४ लाटासु कोटीग्रं २५ श्रुतम्बिका नगरी कैम्यजनपदस्याहं यथायद द्वेपर्वविशोत्तिजनपदात्पुन ह्यन
माय ज्ञातः, कुत इत्याह-जल्पप्यत्तिद्वत्यादि ॥ यस्मा दत्र एतेषु श्रद्धपर्वविजितिसङ्गेषु जनपदेषु उत्पत्तिं जिनानां तोयंकराणां चक्राग्रतिना रामाणां
यलदेयानां रत्नानां चासुदेवानां तत आर्यं गते न क्षेपार्थानायव्यवस्थिता दक्षिताः, यत्र तोयकरादीनां मुत्पत्तिं स्तवायं शोपमनार्यमिति, उक्ता
क्षयायां सम्प्रतिजात्यायप्रतिपादनाय माह-संकिर्तमित्यादि सुगम ॥ मवर यद्यपि गार्गाक्षरेषु नैकजातय उपवश्यन्ते तथापि लोके यता यय स्पष्ट
मुकल्लिन्दर्विदहवदङ्गहरितपुष्पणरूपा इत्यजातयो ज्यचनीया ज्ञातय प्रसिद्धा स्तत यतानि जातिनि रूपयता जात्याया न शोपयतिनि ॥ तल्लानां
इत्यादि ॥ तुल्याका नृच्यलीग्रिन तल्लयाया कुविन्दः पट्टकारा पट्टरूतकुविन्दः देयका मुत्तिकारा यरुहा विचिच्छिका जङ्घिका जङ्घिका जङ्घादिकारा ॥ कठपात्र

लागय परचक्रसोरियकुसुहा य । कपिलपत्राला अहिठज्ञाजगलाचेव ॥ २ ॥ दारवतीयनुरठा निहिलदि
देहायवच्छक्रोसत्री । नटिपरसक्तिा न्हिलपुग्मेवमलया य ॥ ३ ॥ बडराक्रवच्छक्ररगा अच्छालहमस्तित्रात्र
उदनखा । सोत्तियमइयाचदी वीडनयसिधुसावीरा ॥ ४ ॥ मऊरायगूरुसेणा पात्राक्षणी यमासपुरिबहा ।
सात्रत्यीयकुलागा कीलीत्ररिसचलाढाय ॥ ५ ॥ संयवियावियनगरी कंयडअठचअरियननिथ । एत्युप्य

मथुरानगरी सू. सेनदेग पावानगरी भूदटग मासपुर सांख्योनगरी कोटि पंगरी लाटदेग । सेयवियाविणथरी को. पदचहाइयागरि २
त्यगसिजिणाय वकाणारसकशुण । स्वताम्यकानगरी विनाता कोट भट्टग ने क भट्टवे थागै इणा उगानरात्तति जित चो यलेडेक छाय । मेस
खगारिग । तम ट चैवथांउंय । सेक्ति जातथागरिग २ छ खहा य० त० । दिवे जातिथार्ग कइछे—ते जातिथार्ग काकरि कला तेकछे । प्र
श्याक लडाई देवायेगारु हरिय, चुवुगवे, छगार, कजारा । प्रदान न कालान, भ विदेइनामे चउगाइयनामे चउरतनाम चम्पुगनामे ०

यारा ॥ काष्टपादुकाकारा गव ॥ मुजपाठयारा छत्तारा ॥ छत्राकारा गव शोपाण्यपिपदानि ज्ञावनीधानि, यन्नीजवशागियाइत्यादि ॥ ब्राह्मी यवनानी
त्यादयो लिपिजेंदा स्तु सम्यदाया दधसया, उक्ता प्रापायो सम्प्रतिज्ञानायानाए-संकिर्तमित्यादि सुगम ॥ अथ के ते दजानायां मूरिराह-दजानायां
द्विविधा प्रज्ञा स्तथा-सरागदजानायां वीतरागदजानायां य तत्रसराग मरुपाय सदृशन तेनायां सरागदजानायां, वीतराग मरुपालकपायनीक
पाय या य दृशन तेनाया वीतरागदजानायां, तत्र सरागदजानायाप्रतिपादनाय माह-संकिर्तमित्यादि ॥ अथ के ते सरागदजानायां मूरिराह-
सरागदजानायां दशविधा प्रज्ञा स्तथा-निसगुण्यसित्यादि ॥ अथ रुचिज्ञाह् प्रत्येकम निसम्बध्यते ततो निसगुरुचि रिति द्रष्टव्यं तत्र निस
र्न स्वभाय स्तेन रुचि जिनप्रणीततत्त्वजिलापकूपा यस्य स निसगुरुचि, उपदशी गुर्वोदिना यस्ततत्त्वकथन तेनरुचि रुक्तस्वरूपा यस्य स उपदे
शरुचि, बाडा सर्वज्ञवचनान्तिका तस्या रुचिरो ऽन्तिलापो यस्य स आद्यारुचि, जिनासुव संतत्त्व न शोप युक्तिज्ञातमिति यो जिनमन्यते स आ

तिजिणाण चक्कीणरामकरहाण ॥ ६ ॥ संतखेत्तारिया ॥ से कित जाडुआयरिया ? २ ठव्हिहा पणत्ता,
तजहा-अव्वाठायकलिडा विदेहावेठगाडय । हरियाचुचुगाचेव ठण्णयाडुअजाडु ॥ ७ ॥ सेत्त जाडुआरि
याय ॥ सं कित कुलारिया ? २ ठव्हिहा पणत्ता, तजहा-उग्गा मोगा राडुआ इस्कागा नत्ता कोरद्धा ।
सेत्त कुलारिया ॥ से कितं कम्मारिया ? २ अण्णगविहा पणत्ता, तजहा-टोस्सिया सुत्तिया कप्पासिया

छज्जाति थारुं कहिये । सत्तचानि आउरिया । ए च ति थारुं कछा । संकित कुलआयरिया २ कछेडा प.त. । दिवे कुलआरुं कहैछे, ते कुलआरुं छ
प्रकारे कछा ते कहैछे-उग्गाभोगारउणा इस्कागातावाकारव्वा । उग्गकुन भोगकुन राजकुन इस्काकुल आतिअन कोरवकुन ६ । सत्तकुलआयरिया
१ कम्मट थारुंकुन । संकित कम्मआयरिया २ अण्णगविहा प. त. । इति, दिव कम्मआरुं कहैछे त थनेकप्रकारे कछा ते कहैछे-टोस्सिया सुत्तिया कप्पा
सोया मुत्तिवेयालिया भडवेयालिया कावासिया नरवाहिया । दांसिका आतिविशेष सौति का अप्पोसिया मुत्तिवेयालिका भण्डवेसु ११ जातिविशेष

कारुचि रिति जायार्थं, सुत्तदीयरुयमेयति ॥ अत्रापि रुचिश्च प्रत्येकम त्रिसयथ्यते सूत्रमा चाराङ्गाद्यङ्गप्रतिष्ठे अङ्गयाध्य आयाज्यकदेशवैका
लिकादि तत्र रुचि यंस्य स तथा सूत्रमा चारादिक मङ्गुप्रतिष्ठे अङ्गयाध्यवा छावप्यकादिक मन्त्रिधीयमानो य सम्यक्त मन्त्रगाते प्रसक्त २ तत्राप्य
वसायश्च नवति स सूत्ररुचि रिति भावाय, कीज मिय यीज य दैक मय्यनंकाथप्रयोथोत्यादक यथ स्तन रुचि यस्य स थीजरुचि- अनयोश्च पद
यो समाहारी द्वन्द्व तेन नपुसकनिर्देश इतिसमुच्चये, अङ्गिमवित्यारुरुत्ति ॥ अत्रापि रुचिश्चन्द्रस्य प्रत्येक मन्त्रिसम्बन्धो पिंगमस्तविस्तरारुचि
श्च तत्रा पिंगमो विज्ञिष्ट परिज्ञान तेनरुचि यस्या सा वधिगमरुचि विस्तारी व्यास सकलद्वादशागस्य नये पर्यालोचन मितिज्ञाद्य तेनो, पयुति
ता रुचिर्यस्य स विस्ताररुचि, क्रिरियाससवचमहर्हि ॥ रुचिश्चन्द्रस्या उत्रापि प्रत्येकसम्बन्धात् क्रियारुचि सहृपुरुचि रिति द्रष्टव्य-तत्र

मुत्तविया जीया नरुवेयालिया कीलालिया नरवाहणिया जेयावयं तहप्यगारा ॥ से कित कम्मरिया ॥ से कित
मिप्प्यारिया ? २ ज्जणंगविहा पणत्ता, तज्जहा-तुणगा ततुवाया पहगारा देयका वरुणा कठपाउयारा
मजुपाउयारा वत्तारा वत्तारा पत्तारा पोत्तारा लंय्यारा चित्तारा सखारा दत्तारा जत्तारा जिप्पगारा सेत्ता
रा कीळिगारा जेयाधन्ते तहप्यगारा ॥ संत्त सिप्पारिया ॥ से कित ज्ञासरिया २ जेग ज्जुप्पमगहाए ज्ञा

काष्ठादिक नरवाहणिका । जेयावणेनहप्यगारा । ज पुनेरा तथाप्रकारे । सत्त कण्णारिया । ते कर्मणि कक्षा । सेकित सिप्पारिया २ भण्णेगविहा प०
त० । द्विवे । ग्रन्थार्थे विज्ञाननार्थं तदना पिंग पुनकभेटे कक्षा ते कहेके-तुणगा ततुवाया पहगारा देयका वरुणा कठपाउयारा मजुपाउयारा
वत्तारा वत्तारा पत्तारा पोत्तारा लंय्यारा चित्तारा सखारा दत्तारा जत्तारा जिप्पगारा । तुत्तारा वक्कर पट्टाकारा देपड कोइ दिग्गविमो
प सिप्पारिया विक्कारा गत्तारा दत्तारा । जयावणेनहप्यगारा सेत्त सिप्पारिया । जे पुनेरा पट्टवा तथाप्रकारना ते गिन्पारि कक्षा । सेकित भासाय
रिया २ भण्णेगविहा प० त । द्विवे भाषार्थनाभेटे कहेके-तदना पुनेकभेट जाणिया । जण यदमागहाए भासति । जे यदमागधोभाया बाने । जत्य

क्रिया सम्यक् समानुष्ठानं तत्र रुचि यस्य स क्रियारुचि सत्तेषु सग्रहं तत्र रुचि यस्य विस्तारार्थोपरिज्ञानात् तस्मिन्नेव रुचि धर्मे श्रुतिस्वाये धर्मे श्रुतधर्मादी वा रुचि यस्य स धर्मरुचि रिति गायत्रा सङ्गुपार्थं तु मूलरुदेव स्वत आह मूल्यरा इति । प्रावप्रधानो निर्देश स्ततो य मयं - ज्ञाताय त्वन समुद्भूता श्री पदार्थो इत्यत्र रूपेण यस्या धिगता परिज्ञाता जीवा जीवा पुण्यपाप मायामस्वरश्च शब्दः द्रव्यादयश्च कथं मध्याता इत्याह सहस्रसुद्धया इति ॥ आप्तत्वा द्विज्जिलापाञ्चसहस्रसन्मत्यासहात्मना या सङ्गता मति सा सहस्रमति स्तया किं मुक्तं भवति परोपदेशनिरपेक्षया जातिस्मरणप्रतिज्ञादित्तपया मत्या न केवल मध्याता किन्तु तान् जीवादीन् पदार्थान् वेदयते नुरोधयति - य तत्स्वरूपतया आत्मसात्परिज्ञा । मयति चेति ज्ञाव , यप निसर्गो निसर्गरुचि विज्ञेय इति ज्ञाप , अमु मेवा यंस्यष्टतर मन्त्रियतसु राह - जो जिज्ञादिषु ज्ञाये इत्यादि ॥ यो जिन इष्टान् ज्ञावन् द्रव्यहेनकालनादेन्दुतो नामादिभेदतो वा बहुविधान् स्वय मेवा पदशनिरपेक्षं श्रद्धयाति केनो ज्ञावन् श्रद्धयाति तन आह - स्व मेव एत जीवादि यथा जिनै दृष्ट ना न्यथेति य समुच्चये एव निसर्गरुचि रिति ज्ञातव्य , उपदेशरुचि माह - मय चेत् इत्यादि ॥ सतानेव जीवादीन् ज्ञावान् य परेण ब्रह्मस्यन जिनेन वा उपदिष्टान् श्रद्धयाति एव उपदेशरुचि ज्ञातव्या , आज्ञारुचि माह - जो हेत्त मयाणतो इत्यादि ॥ यो हेतु वि

सा ए ज्ञासति , जत्यविय न वनीलित्री पत्रतइ वनीएण लित्रीए अठारसविह लेखविहाणे पसुत्ते , तजहा वनीजवगाणिया दासापुरिसा खरुहो पुकरसारिया जोगवइया पहराइया अतस्करिया अस्करपुठिया वेणइया निरुहइया अरुलित्री गणियनित्री गधतुलित्री अयासलित्री माहेसरी दोमिली पोलिदी ॥१८॥

वियण वनीलित्री पत्रतइ । जिहा ण जाल्लोनिपि पवत्ते । वनीएण निवाण अठारसविह लेखविहाणे प० त० । ते जाल्लोनिवो तेहेनविपे पइवो १८ पकारि निपिविधान कइया ते कइवै - वभो जवना निगा दासा पुरिया खरुहो पुकरसारिया जोगवइयाउव अतस्करिया अस्करपुठिया वेणइया निरुहइया अरुलित्री गणियनित्री गधतुलित्री अयासलित्री माहेसरी दोमिली पोलिदी ॥१८॥

वशितायंगमः सपानान् प्रयत्नं मांशुयैः तु शुब्दं स्वकारार्थं, केवलारोचते कथमिदं त्वाहं-एव मेतत् प्रवचनीकं मयं जातं ना न्ययेति एष आद्याः कथि तांम, सूत्रविमाद-ओसुत मित्यादि ॥ य सूत्रं मङ्गप्रविष्टं मङ्गवाह्यं वा अधीयान स्तेन श्रुतानाम्प्रविष्टेना द्रव्याद्येन वा 'सम्यक्त्वम वगाहते स सूत्ररुचि रिति छातय , योजरुचि माह-एगपएगणइ इत्यादि ॥ एकेन पदेन प्रकृमात् औधादिना अनेकानि पदानि प्राकृतत्वेन विभक्तित्वं त्वाह नैकेषु लोधादिषु पदेषु य सम्यक्त्वमिति धर्मार्थमणो रजदोपचाराद् सम्यक्त्ववान् आत्मा प्रसरति तु शब्दो वधारणार्थं प्रसरत्येव कथमि

सेत्त नासारिया ॥ से कित नाणारिया ? २ पचविहा पणत्ता, तजहा-अण्णिणिवोहियनाणारिया सुवना
णारिया उहिनानारिया मणपज्जवनानारिया केवलनानारिया ॥ सेत्त नाणारिया ॥ से कित दसणारिया ? २
दुविहा पणत्ता, तजहा-सरागदसणारिया य वोयरगदसणा ० । से कित सरागदसणारिया य ? २ दरा
विहा पणत्ता, तजहा निस्सग्गुवदेसरुई अणारुइसुत्तवीयरुइचेव । अण्णिगमवित्थारुइ केरियासखेवध

सारिका भोगवती अस्तरिजका अचरपृष्ठिका वेणकीया निर्हिका अकनिणि गणितविणि गम्यवर्षिणि आटर्मविणि महेस्वरानिपो दामनीविणि पुलि
न्दो १८ । सेत्त भासायारिया । ते एतले भाषायां । से कित नाणारिया २ पचविहा प० त० । द्विवे ज्ञानायं कष्टे, ते ज्ञानायं पचकारे कष्टा ते कष्टे
हे । आभिणिधादिवनाणायारिया सुयनाणायारिया ओहिवनाणायारिया मणपज्जवनानायारिया केवनाणायारिया । मतिज्ञानायो सुत्तज्ञानायो अथ
धिज्ञानायो मनपयवज्जानायो केवलज्ञानायो । सेत्त नाणायारिया । एतले ज्ञानायं कष्टा । से कित दमणायारिया २ दुविहा प० त० । द्विवे दर्शनार्थं ते द
र्शनार्थमिदं दोयमकारि कष्टे । सरागदमणायारिया वोयरगदमणायारिया । सरागदर्शनार्थं वोतरादर्शनार्थं । से कित सरागदमणायारिया २ दसविहा
प० त० । एतले सरागदर्शनार्थमिदं तेदना १० प्रकारं कष्टे-निस्सग्गुवदेसरुई अणारुइसुत्तवीयरुइचेव अमगभावित्थारुइ केरियासखेवध
२ । २ । निस्सग्गुवदेसरुई अणारुइसुत्तवीयरुइचेव अमगभावित्थारुइ केरियासखेवध अमगभावित्थारुइ केरियासखेवध अमगभावित्थारुइ केरियासखेवध

त्याह उदक इव तैलविन्दु किमुक्त भवति यथा उदकेऽनूद्वागतो ऽपि तैलविन्दु समस्त मुदक मात्रामिति तथैकदेशोत्पन्नरुचि रप्यात्मा तयावि
चक्षुषीपश्यन्मावा दक्षोपेषु तत्त्वेषु रुचिमान् भवति स सर्वाविधो ब्रोजरुचि रिति ज्ञातव्य । अचिगमरुचि माह-सो होइ इत्यादि ॥ यस्य श्रुतज्ञान

म्भरुई ॥१॥ न्रूत्येणाडधिगया जीवाजीवायपुष्पापावंच । सहस्समुडयासवस वरीयेवेयइएसणिस्सगो २ ॥
जोजिणदिठेनावे चउव्विहेसदहासयमेव । एमेवणसुहत्तिय णिसगरुइत्तिणाडवो ॥ ३ ॥ एएचेव उन्नावे,
उवदिठेजोपरेणसदहइ । ठउमत्येणजिण्णव उवएसरुइत्तिणायवो ॥ ४ ॥ जीहेउमयाणतो अण्णाएरीयएपव
यणतु । एमेवणसुहत्तिय एसोच्याणारुइनामा ॥ ५ ॥ जीसुत्तमहिज्जतो सुएणउगाहंडउसम्मत्त । अण्णेगवा
हिरेणव सोसुत्तरुइत्तिनायवो ॥ ६ ॥ एगपएणंगइ पदाइजोपसरइउसम्मत्त उदडव्वितिल्लविट्टु सोचीयरुइ
त्तिनायवो ॥ ७ ॥ सोहोइअन्निगमरुई सुयनाणजस्स अत्यउदिठं एकारसअगइ पइयागादिठिवालेय ॥८॥

वेयपुष्पापावच सदहसमदआसवस वरेयहांसआसणिसो । २ । भूनायंपणारा भवकरिके ठठोछे वुडि जे पदार्थोरा जाखा जोवालोव पुष्प पाप सदहस
मति यात्रव सम्वर तेवने निसर्ग कहियो । जोजिणदिठेभावे चउव्विहेसदहासयमेव एमेवणसदहासयमेव निसर्गोकरुत्तियायवो । ३ । जेजिन दोठाछे भा
व इअभवेकरौ ते सदहे खरीकरौ माने पातेनो निसर्गपणे सदहे ते निसर्गकहिय तव निसर्ग नानाखेनकरुचि जिनप्रभोतत्त्वाभिनायकूपोययस्ससमि ।
एएचेवसभावे चउव्विजेपरेणसदहइ छउमत्येणजिण्णव उवएसरुइत्तिणायवो । ४ । हिवे उपदेशरुचि कहैछे, ते जोव चजोवादिनाभाव जे उपटिठ प
रने कहियकै साचो सर्व कइत्यैकछो ते तथाभावन्ते कछानी परमाणु ते उपदेशरुचि कहैछे, हिवे अप्रानवरुचिकोभेट कहैछे —कोहेसमय। एता अप्पाए
राइएपवयणतु एमेवणत्तइत्ति ए एसोअण्णारुइनामाए ५ । जे हेतु सिद्धान्तना कछा अर्थछे ते अण्णजाणतोयको प्रवचननो चाप्पा तेरुचि मनसू च ी शुभ
वस्तुनोपर वस्त्रभलागे एज सिद्धान्तमाहि कछा ते नन्याग हुवे नहो एहवेभावै प्रवत्ते ते चाप्पारुचि कहिये । जोसुत्तमदिज्जतो सुएणउवगाहमउसम्मत्त अणे

मयंतो दृष्ट मेकादशाह्वानि प्रकीर्णं क मित्यत्र जाता वेदप्रचन-ततो यमर्थं प्रकीर्णानि उत्तराध्ययनादीनि दृष्टिग्राह्यं शब्दादुपाह्वानि च सु मज
त्यपिगमरुचि , विस्ताररुचि मार-दद्यात् त्यादि ॥ इत्याणा धर्मास्तिज्ञायादीना भक्षपाशा मपि सर्वं भावा पर्याया यथायोग सर्वप्रमाणं प्रत्य
क्षादिभि सर्वत्र नयविधिभि ईगमादिनयप्रकारे उपलब्धा स्स विस्ताररुचि रिति ज्ञातय ॥ सर्ववस्तुपर्यायप्रचारावगमनं तस्या रुचं रतिभि
मलरुपतया ज्ञायात् ॥ क्रियारुचिमाह-दसणत्यादि ॥ दक्षत्र च ज्ञान च चारित्र्य च दक्षत्रज्ञानचारित्र्य समाटारी दृढ स्तस्मिन् तथा तपसि यिन
य च तथा सदासु समित्तपु पुयासमित्यादिषु सर्वासु च गुप्तिषु मनोगुप्तिप्रवृत्तिषु या क्रियाज्ञाया रुचि जि मुक्त भवति यस्य ज्ञावतादज्ञानाया
चारानुष्ठाने रुचि रस्ति सखलु क्रियारुचिर्नाम, सनुपरुचिमाह-अज्ञानिगयित्यादिना ॥ जिगृहोता कुरिसता दृष्टि र्येन सो अनजिगृहीतकुदृष्टि रजि

दक्षत्राणसखन्नावा सखपमाणेहिजस्सउवळछा सखाहिगयत्रिहोहि वित्यारुहंतिनायव्यो ॥ ९ ॥ दसगनागच
रिते तत्रविणएसवसमिडगुत्तीसु जोकिरियानावरुहंसो खलुकिरियारुहंतामा ॥ १० ॥ ज्ञाणजिगमहिक्कुदिठी

णव्याद्विरेणवा सोत्तसारदत्तिनायव्यो ६ । जे मूत्र सिहात्ता भणतोको युतने भगवाडो सम्यक्करोने भणै अगमविट आचारागादि यगवच्छा वसराध्ययना
दि तेहने मूत्र रुचि कहिये । एगपणणेगाइ पया" चापणरयमम्यत्त उटवडवत्तिविटू सोवागव्येत्तनायव्यो ७ । एज पट्टेकरो जतक पट्टनाभाय अनुक्रमे
पमरै विस्तरे एक जोवाटिक पट्टाये सम्यक्कादि यत्तेकपावेजिन पाणाऊपर तेनविट्टवा जिस्तारपामे तहने वोजरवि कहिय । सोहाइअभिगमरुइ सज
नागनन्यय दुपाटडु इमारसअगाइ प अगटिठुगओग ८ । निणै युतज्ञाने गये"रो दोधा अर्थ जेणे अर्थकरो ११ अना पकाणं उत्तराध्ययनादिक दृष्टि
वा" उपागागट तहनायर्थ समझ द ते अभिगमरवि कहिये । दव्याणसखन्नावा सखपमाणेहिजस्सवत्ता सखाइ नयविहोहि विचाररु तिन,यव १ ८
हिजे विस्ताराय कह्ये—द-यो"दि धमा स्त नाया"ट ६ बीजा याकता अनेक सर्व भावपर्याय यगागममाण प्रत्यक्ष सर्पकार उपनय पाभ्याहै भव
नेगयादिकनयनानधकरो समझ छैतविस्वा राध कहिय । दमणपाणचारते तवविषयसुखमिदगुत्तीसु जोकिरियामाभू, सासुगुकिरियारुहतामा १० ।

समस्त मुदक भाकामति तथैकदेशीत्यत्रुचि रप्यात्मा तथावि
यस्य श्रुतज्ञान

२॥

सुतपुत्रो विनिमुद्रा ॥ ११ ॥
व त्रुतपुत्रम चारिचमं च विमोक्षितं कुरु
रिदं सुत्यल मस्तीति निर्दिष्टं ॥ १२ ॥
स्तपु मस्तपु ॥ १३ ॥
सुतपुत्रो विनिमुद्रा ॥ १४ ॥
व त्रुतपुत्रम चारिचमं च विमोक्षितं कुरु
रिदं सुत्यल मस्तीति निर्दिष्टं ॥ १५ ॥
स्तपु मस्तपु ॥ १६ ॥

तदनायहो अविमारनुपवयणे शुगन्निगहिन्यसंसेसु ॥ ११ ॥ जोष्णलिकायकम्प सुयशस्तु ॥ १२ ॥
सोधमरुहतिनायहो ॥ १२ ॥ परमत्यसथोवा सुदिठपरमस्यंनवगाथा

वैदिको क्रिगानवियै भावद्वय ते भावद्वय कष्टिने निये क्रियाद्वय कष्टिगच्छे—अपभिरगहोयकृदिष्टा
वयणे अणभिरगहिरावसमेस ११ । अभिरुहोता कळतादृष्टा, नगहो जेणे माठीदृष्टि कापिनाटि प्रणीत प्रव
कष्टिने संसेपमगह तनचिपुंम्य मविस्त्याथ परिज्ञाना संसेपद्वय अविसार प्रवचनद्वयै प्रत्यक्ष अपरार्थन पर
भावधया सुयशस्तुवतु रित्तधम्य सदृशलिणाभिहित सोयशस्तुनायवा १२ । जे ओन गस्तिभाव धर्मा

न मते परमाथसत्तादिभिः सम्यक् मस्तीति श्रद्धीयते इत्यर्थः, अस्य न दर्शयस्या धारा अष्टौ ते सम्यक् परिपारायीया तदतिक्रमे दर्शनस्या
 उप्यतिक्रमभावात् अतः स्तानुपदर्शयितुं माह-निस्सकिय इत्यादि ॥ अत्र न श्रद्धित दर्शयद्वा सर्वशङ्का च त्वर्थः, निगत श्रद्धित यस्या दसौ नि-
 श्रद्धितो देशचयगङ्गारित इति ज्ञावायं, तत्र देशशका ममाने जीतत्व कथं मज्जो भय्यो उपरस्त्व प्रथ्य इति सर्वशङ्का प्रकृतनिवधत्वा त्सकल
 मयद प्रवचन परिकल्पित प्रपिप्यतीति न चैय देशशङ्का सर्वशङ्का वा युक्ता यत इति द्विदिया नावा स्त द्यथा-एतुग्राह्या अहेतुग्राह्या जीया स्त
 त्थादय स्तत्साधकप्रमाणसङ्गावात् अहेतुग्राह्या अज्ञव्यव्यादय अस्मदाद्यपक्षया तत्साधकहेतूना मयस्मात् प्रकृष्टज्ञानगोचरत्वा सहेतुता मिति प्रा-
 कृतो ऽपि च तिन्य प्रवचनस्य यासाद्युग्रज्ञाय उत्तम्य-याल्यौ मृदुमूर्त्योणा दृष्ट्या चरित्रकार्द्वया ॥ अनुग्रहार्थं तत्त्वज्ञे विदुस्त प्राकृत
 स्मृत ॥ १ ॥ अपि च प्राकृतो वि निवन् प्रवचनस्य दृष्टेष्टिरोपी तत कथं मवास्तरपरिकल्पना शङ्का सर्वत्र न स्तरणाम्यस्य दृष्टेष्टिरोपवच
 नासम्भगात् निश्रद्धित इति जीय मवा ह्वास्तनप्रतिपक्षो दर्शनाधार तत् प्राधान्यविवक्षाया दर्शनाधार उच्यते-यतेन दर्शनदर्शननिनो कथयि
 मुद माह-यज्ञानेनैव दर्शननि इव तरफता योगतो सोक्षानावप्रसङ्ग एव मुत्तरैवपि त्रिपु पदपु प्रागनाकाया, तथा नि काहित इति कायाग जाहित

वि । वाचन्त रुदसगवज्जाणाय समस्तसद्वहणा ॥ १३ ॥ निसकियनिक्ताखिय णिद्धितिगिच्छाच्युमूहदिष्टीय उवयू
 हथिरीकरणे वच्छलपज्ञावणञ्च ॥ १४ ॥ सेत्त सरागदमणारिया । से कित वीयरगदसणारिया ? २ दु

अन्तायादिक स्प स्य भाव शुधर्मो वैधर्म भगवत्तना जेधम साचाकरा अत्र ते धमवचि कहिय, न निसगं दग्गेभदे कचिरुप दग्गेन कळो, दिवि जिण
 लगे ए ऊपनाछे त लि । सपटिज्य छे दग्गकाचा । दग्गखराटिदग्गनानि शाभितानि इति । परमत्यमथोवा मृदुपरमत्यमथणा यावि वावएकदमणवज्ज
 णाममनसद्वहणा ॥ १३ ॥ परमनल्लनाअर्थं कोवादिक ते परमार्थ तेहना समुच्चन पन्चोवग्गण कळारोति परमार्थं जीवादिक कळो टाठा जेहनो सेवता
 सट्टि परमार्थ ॥ सेवनाकरे विग्गे २ ऊदार्थं वेपाते कुदर्शना ते जाय छव्यज्जनो अहवणा करसो, दिवे सव्यज्जना ८ अतोधार कहछे-प्रवचननो देम

उक्त सम्प्रतिगुणप्रधान माह-उद्यवूहेत्यादि ॥ उपवृत्त च स्थिरीकरण च उपवृत्तस्थिरीकरणे तत्रो पवृत्त नाम समानधार्मिकाणां रुद्रप्रशसनेन तद्वृत्तिरूप धर्माद्विपरीता तत्रैव स्थापन, वाञ्छल्य च प्रज्ञावना च वाञ्छल्यप्रज्ञावने तत्र वाञ्छल्यसमानधार्मिकाणां प्रीत्या उपकारकरण प्रज्ञा वना धर्मकथादिभिः स्तौत्रप्रस्थापना अथ च गुणप्रधानो निर्देशो गुणगुणिनो कथाचिद्भेदस्यापनार्थं अन्यथा एकान्ता जेदे गुणनियुक्तौ गुणिनोपि नियुक्ते शून्यतापत्ति एते ऽष्टौ दर्शनाचारा सा देव मुक्ता सरागदर्शनायभेदा, सम्प्रति वीतरागदर्शनायभेदा-संक्षिप्तमित्यादि सुगमा यावत् अथवा चरितारिया पञ्चविहा प० त० सामाह्यचरितारिया इत्यादि ॥ नवर पदमसमय अपठ

य अचरिमसमयउवसतकसायवीतरागदसणारिया य । से कित खीणकसायवीतरागदसणारिया ? २ दु विहा पणत्ता, तजहा ठउमत्यखीणकसायवीतरागदसणारिया य । से कित ठउमत्यखीणकसायवीतरागदसणारिया ? २ दुविहा पणत्ता, तजहा सयवुछठउमत्यखीणकसाय वीतरागदसणारिया बुद्धवोहियठउमत्यखीणकसायवीतरागदसणारिया । से कित सयवुछठउमत्यखीणक

वीतरागदर्शनार्थानां दोषभेद कक्षा ते कहेंछे—पठमसमयउवसतकसाय वीतरागदसणारिया । प्रथमसमय वर्त्तना उपयात्तकयाग वीतराग दर्शना यरिया । अपठमसमय उवसतकसाय वी० । द्वितीयाटिकसमय वर्त्तना उपयात्तकयाग वीतराग दर्शनार्थानां भेद कक्षा । अथवा चरमसमयउवसत कसाय वी० । अथवा ते उपयात्तकयागने अन्तसमय वीतराग दर्शनार्थ कहे । अचरिमसमयउवसतकसाय वी० । द्विजे भोजनसमय वर्त्तना सामाधिक्य चरित्रादिके वर्त्तना ते उपयात्तकयाग दर्शनार्थ कहे । सेकित खीणकसाय वीतरागदसणारिया २ दुविहा प० त० । द्विजे खीणकयाग वीतराग दर्शनार्थानां दोषभेद कक्षा ते कहेंछे—छउमत्यखीणकसाय वी० । छउमत्यखीणकसाय वी० । छउमत्यखीणकसाय वी० । केवलखीणकसायवो० । केवल खीण कयाग वीतराग दर्शनार्थ कहे । से कित छउमत्य खीणकसाय वीतरागदसणारिया २ दुविहा प० त० । द्विजे खीणकयाग वीतराग द

निर्गतं काङ्क्षितं यस्मात्तस्यै निःकाङ्क्षितो देशः, तत्र देशकाङ्क्षा एकदिग्वरादिज्ञानं मन्त्रिकाङ्क्षिते सर्वकाङ्क्षा सर्वार्थेषु च
 देशानि ज्ञानानि इत्येव मनुचितं इयं च द्विधा प्ययुक्ता ज्ञापदज्ञानेषु पदज्ञानिकायपीक्षाया अक्षरप्ररूपणाया च ज्ञावात्, तथा विचिकित्सा
 मतिविज्ञानं फलप्रति सगय इति यावत्, निगता विचिरसा यस्मात्तस्यै निर्विचिकित्सा, साध्यं य जिनज्ञानं किं तु प्रयत्नस्य सतो ममा स्मा
 रफलं न विष्यति न वा क्रियाया रूपीजलादप्यु ज्ञयथा उपपन्नं इति विकल्परहितं न ह्यविकल्प उपपन्नं यवस्तुप्रापको न जयतीति स
 ज्ञाननिश्चयो निर्विचिकित्स इति ज्ञातः, यद्वा निर्विदुग्च्छो इति ॥ निर्विदुग्च्छो साधुजगुप्सा ररित इत्यर्थं
 उदाहरणं च विदुजगुप्साया आवकदुहिता तथा ॥ अमूददिहीयति ॥ यालतपस्वितापि गद्यातिगयद्वर्गे न मूढा स्वनावा ध्वनिता दृष्टिं सम्यग्
 ज्ञानरूपा यस्या सा वमूददृष्टिः, अत्रोदाहरणं सुलसाश्राविका सा ह्य वरुपरिश्राजसमृती रूपलभ्यापि न समोद गता तदव गुणिप्रधान आचार

विहा पयता, तजहा—उससतकसायवीयरागदसणारिया खीकसायवीतरागदसणारियाय । से कित
 उवसतकसायवीतरागदसणारिया ? २ दुविहा पयता, तजहा पढमसमयउवसतकसायवीतरागदसणारि
 या अणुपढमसमयउवसतकसायवीतरागदसणारिया, अहवा चरिमसमयउवसतकसायवीतरागदसणारिया

यका सर्वगका काङ्क्षा देशकाङ्क्षा सर्वकाङ्क्षारहितः । निष्काङ्क्षानिष्कामिणः शिवित्यिच्छायमूददिष्टोय उदेवद्विहीकरणे वक्ष्यमाणे अङ्क १४ । साधु
 नौ जगुप्सापरिहितं प्रवर्त्तं कुटर्शननौ मदिमाद्यौ नाटो दृष्टकरवा जिन सलसायानिकायै अमूदपरिश्राजकने कक्षो सट्ट नंपामो कुनिगीसाद्ये परि
 चय नकरवा पधर्मवियै धिरताभाव साहमोनो प्रमसाकरवा वने धर्मनो प्रभावनाकरवी । संसतरागदसणारिया । ए मराग
 दर्शनार्थं काङ्क्षे । सेकित वीयरागदसणारिया २ दुविहा प० त० । द्विजे वीतरागदर्शनार्थाना टोमभट्ट कक्षाकै ते कहेकै — उवसतकसायवीयराग
 दसणारिया । उपयातकपाय वातराग दशनार्थभेट ॥ खाणकसायवी० सेकित उवसतकसायवीयरागदसणारिया २ दुविहा प० त० । धोणकसाय

उक्त सम्प्रतिगुणप्रधान माह-उद्यवूहेत्यादि ॥ उपप्लवण च स्थिरीकरण च उपप्लवणस्थिरीकरणे तत्रो पप्लवण नाम समानधार्मिकाणां बहुगुणप्रज्ञासन्तेन तद्वृद्धिकरण धर्माद्विपीदता तत्रो स्थापन, वाञ्छल्य च प्रज्ञावना च वाञ्छल्यप्रज्ञावने तत्र वाञ्छल्यसमानधार्मिकाणां प्रीत्या उपकारकरण प्रज्ञा यना धर्मकथादिभिः स्तोत्रप्रस्थापना अथ च गुणप्रधानो निर्देशो गुणगुणिनो कथाचिद्भेदस्यापनार्थं अन्यथा एकान्ता जेदे गुणनियुक्तो गुणिनोपि नियुक्ते शून्यतापत्ति एते ऽप्ये दशनाचारां छा देव मुक्ता सरागदशानभेदा स्तदभिधानाच्चा भिहिता सरागदशनाभेदा, सम्प्रति वीतरागद नापादिनेदानाह-संक्रितमित्यादि सुगमा यावत् ग्रहवा चरितारिया पचविंश प० त० सामाह्यचरितारिया इत्यादि ॥ नवर पट्टमसमय अपट्ट

य अचरिमसमयउवसतकसायवीतरागदसणारिया य । से कित खीणकसायवीतरागदसणारिया ? २ दु विहा पणत्ता, तजहा उउमत्यखीणकसायवीतरागदसणारिया य । से कित उउमत्यखीणकसायवीतरागदसणारिया ? २ दुविहा पणत्ता, तजहा सयवुद्धउउमत्यखीणकसाय वीतरागदसणारिया वुद्धवोहियउउमत्यखीणकसायवीतरागदसणारिया । से कित सयवुद्धउउमत्यखीणक

वीतरागदर्शनायांना दोउभेद कक्षा ते कहैछे—पट्टमसमयउवसतकसाय वीतरागदसणारिया । प्रथमसमय वर्त्तना उपयात्तकथाय वीतराग दर्शना यरिया । अपट्टमसमय उवसतकसाय वी० । द्वितीयादिकसमय वर्त्तता उपयात्तकथाय वीतराग दर्शनार्थानां भेद कक्षा । अथवा चरमसमयउवसत कसाय वी० । अथवा ते उपयात्तकथायने अन्तसमय वीतराग दर्शनार्थं कहिये । अचरमसमयउवसतकसाय वी० । द्विती अंजममय वर्त्तता सामादिक चरित्रादिके वर्त्तता ते उपयात्तकथाय दर्शनार्थं कहै । सेकित खीणकसाय वीतरागदसणारिया २ दुविहा प० त० । द्विदे खीणकसाय वीतराग दर्श नार्थना टावभेद कक्षा ते कहैछे—उउमत्यखीणकसाय वी० । उउमत्यखीणकसाय वी० । उउमत्यखीणकसाय वी० । केवलखीणकसायवो० । केवल खीण कसाय वीतराग दर्शनार्थं कहिये । से कित उउमत्य खीणकसाय वीतरागदसणारिया २ दुविहा प० त० । द्विदे खीणकसाय वीतराग द

ममसमय इति ये तेषां भेदो पशान्तकषायत्वादीनां विशेषाणां प्रथमसमये वर्तन्ते ते प्रथमममया स्ततो द्वितीयादिषु समयेषु वर्तमाना अग्रथमसमया तथा चरमसमय अचरमसमय इति ये तेषां संवोपशान्तकषायत्वादीनां विशेषाणां अत्यसमये वर्तन्ते तचरमसमया ये ततो उर्गोक् द्विचरमसमयत्रिचरमादिषु समयेषु वर्तन्ते ते उचरमा सामायिक्तादीनां च चारित्र्याणां स्वरूपमिदं-समो रागद्वपरहितत्वा दयामन समाय उपचा न्यासामपि साधुक्तियाणां मुपनक्षणं सर्वोसां मपि साधुक्रियाणां रागद्वेपरहितत्वात्, समयेन निर्वृत्त समाय भव वा सामायिक यद्वा समाना ज्ञानदर्शनचा विरति

सायवीयरागदनगारिया सयवुछुळउमत्यखीण० दुविहा पणह्या, तजहा—पढमसमयसयवुछुळउमत्यखीणक
सायवीतरागदसगारियाय झपढमसमयसयवुछुळउमत्यखीणकसायवीतरागदसगारिया, झहवा चरिमसमय
सयवुछुळउमत्यखीणकसायवीतरागदसगारिया झचरिमसमयसयवुछुळउमत्यखीणकसायवीतरागदसगारिया
य । सत्त सयवुछुळउमत्यखीणकसायवीतरागदसगारिया । सं कित वुछुत्रोहियळउमत्यखीणकसायवीत

गर्गनाथना केतलाभेदछे उ० गीतम दोग्गेभेट कछा ते कहैछे—सयबुद्धछउमत्ता खीणकसायवी० । स्वयम्भु छद्मस्य खीणकपाय वीतराग दर्शना दोग्गेभेट
कछा । बुद्धिबोद्धिय खीणकसायवी० । प्रतिबोधकरी बुद्धा छद्मस्य वीतराग दर्शनार्थ । सेकित छउमत्ता खीणकसाय वीतराग दसणायगिया २ दुविद्धा
प० त० । हिक्खे स्वयम्भु छद्मस्यपणे वीतराग दर्शनार्थ ते किम गीतम दोग्गेभेट कछा ते कहैछे—पटमसमय सयबुद्ध छउमत्ताखीणकसायवी० । प्रधानसम
य वर्त्तता स्वयम्भु छद्मस्य खीणकपाय वीतराग दर्शनार्थ ए प्रथमभेट । अथटमसमयसयबुद्ध छउमत्ता खीणकसायवी० । दृजे तेजेसमय वर्त्तता स्वयम्भु छ
द्मस्य खीणकपाय वीतराग दर्शनार्थ ए २ भेट । यहवा चरमसमयसयबुद्ध छउमत्ताखीणकसाय वी० । अथग चरमसमय वर्त्तता छद्मस्य खीणकपाय वीत
राग दर्शनार्थ । अचरनसमय सयबुद्ध छउमत्ता खीणकसायवी० । अचरमसमयदृजे वीजममय वीतराग दर्शनार्थ । सेत्त सयबुद्ध छउमत्ता खी

दजगारिया १ २ दुविहा पणत्ता, तजहा पढममसयसजोगिकेवलखी गकमायवीतरागदसगारिया अण
दममसयसजोगिकेवलखी गकसायवीतरागदसगारियाय । अहवा चरिममसयसजोगिकेवलखी गकसायवी
तरागदमणारियाय अचरिममसयसजोगिकेवलखी गकमायवीतरागदमणारियाय । संत सजोगिकेवलखी ग
कसायवीतरागदसगारिया । से कित अजोगिकेवलखी गकमायवीतरागदसगारिया ? २ दुविहा पणत्ता
तजहा पढमसयअजोगिकेवलखी गकमायवीतरागदमणारिया अणदमसयअजोगिकेवलखी गकमायवी
तरागदसगारियाय, अहवा चरिमसयअजोगिकेवलखी गकसायवीतरागदसगारिया अचरिमसयअजो

[illegible]

गिमेवलिखीणकसायवीतरागदमणारिया य । सेत्त अजोगिकेवल्लिखीणकसायवीतरागदमणारिया । सेत्त
केवल्लिखीणकसायवीतरागदमणारिया । सेत्त स्रीणकसायवीतरागदमणारिया । सेत्त वीतरागदमणारिया ।
सेत्त दमणारिया । से कित चरित्तारिया ? २ दुविहा पणत्ता, तजहा सरागचरित्तारिया वीतरागचरित्तारिया
रिया । से कित सरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पणत्ता, तजहा सुज्जमसपरायसरागचरित्तारियाय वान
रसपरायसरारगचरित्तारियाय । से कित सुज्जमसपरायसरारगचरित्तारिया ? २ दुविहा पणत्ता, तजहा—
पढमसमयसुज्जमसपरायसरारगचरित्तारिया अणपढममयसुज्जमसपरायसरारगचरित्तारिया य, अण्णवा चरिम
समयसुज्जमसपरायसरारगचरित्तारिया अण्णचरिमसमयसुज्जमसपरायसरारगचरित्तारियाय अण्णवा सुज्जमसपरा

त चरित्तारियाय २ दुविहा प० त० । द्विवे चरित्तार्य कहेत्ते तेषुना दाउभट कछा ते कहेत्ते । सरागचरित्तारियाय । सरागि चरि
उभेट वीतराग चरिच य २ । सेकित सरागचरित्तारिया २ दुविहा प० त० । द्विवे सरागचरित्तार्यना दाउपकारे कछा ते कहेत्ते—सुज्जमसपराय सरा
गचरित्तारिया वाउरसपराय च० । मज्झमपराय सराग चरित्तार्य वाउरसपराय सरागचरित्तार्य । सेकित सुज्जमसपराय चरित्तारिया २ दुविहा
प० त० । द्विवे मज्झमपराय सरागचरित्तार्यना दाउभेट कछा ते कहेत्ते—पढममयसुज्जमसपराय चरित्तारिया वाउरवा अणपढममयसुज्जमसपराय चरित्तारिया । प्र
ममय मज्झमपराय सरागचरित्तार्य वाउरवा अणपढममयसुज्जमसपराय चरित्तार्य । अण्णवाचरिमसमय सुज्जमसपराय सरागच० । अण्णवा चरिमसमय सुज्ज
सराग चरित्तार्य । अण्णचरिमसमय सुज्जमसपराय सराग च० । अण्णचरिमसमय सुज्जमसपराय सराग चरित्तार्य । अण्णवा सुज्जमसपराय सराग चरित्तारिया दु
विहा प० त० । अण्णवा सुज्जमसपराय सराग चरित्तार्यना दाउभेट कछा ते कहेत्ते—मज्झमसमाणाय विमुहमाणा । सेकित्यमान सपराय चरित्तार्य
य विमुहमान मज्झमपराय सराग चरित्तार्य । सेत्त सुज्जमसपराय सराग चरित्तार्य । एतेले मज्झमसपराय चरित्तार्य कछा । सेकित वाउर सपराय सराग

दमणारिया ? २ दुविहा पशुता, तजहा पढममयसजोगिकेवलखीणकमायवीतरागदंसणारिया अउ
 दममममजोगिकेवलखीणकसायवीतरागदसणारियाय । अहवा चरिममयसजोगिकेवलखीणकमायवी
 तरागदमणारियाय अउचरिमसमयसजोगिकेवलखीणकमायवीतरागदमणारियाय । सेत सजोगिकेवलखीण
 कसायवीतरागदसणारिया । से कित अउजोगिकेवलखीणकमायवीतरागदसणारिया ? २ दुविहा पशुता
 तजहा पढमसममजोगिकेवलखीणकमायवीतरागदमणारिया अउपढममयअउजोगिकेवलखीणकमायवी
 तरागदसणारियाय, अहवा चरिमसमयअउजोगिकेवलखीणकसायवीतरागदमणारिया अउचरिमसमयअउजो

पतिलेसममजोगी केवलौ खोणकपाय वीतराग दर्शनाय । अउपढमसममजोगी केवलौ खोणकसाय वी० । अउथमसममजोगी केवलौ खोणकपाय
 वातराग दर्शनाय । अहवा चरिमसममजोगी केवलौ खोणकसाय वी० । अउथमसममजोगी केवलौ खोणकपाय वीतराग दर्शनाय । अउचरिमस
 ममजोगी केवलौ खोणकसाय वी० । अउचरिमसममजोगी केवलौ खोणकपाय वीतराग दर्शनाय । सेतमजोगी केवलौ खोणकसाय वी० । एतल मजो
 गी केवलौ खोणकपाय वीतराग कक्षा तकहे—सेकित मजोगी केवलौ खोणकसाय २ दुविहा प० त० । इन्ने मजोगी केवलौ खोणकपाय वीतराग द
 र्शनायना दोयभ कक्षा तकहे—पढमसममजोगी केवलौ खोणकसाय वी० । पहिलसममजोगी केवलौ खोणकपाय वीतराग दर्शनाय । अउ
 मसममजोगी केवलौ खोणकसाय वी० । सेजे चनेमममजोगी केवलौ खोणकपाय वीतराग दर्शनाय । अहवा चरिमसममजोगी केवलौ खोण
 कपाय वीतराग दर्शनाय । अउचरिमसममजोगी केवलौ खोणकसाय वी० । अउचरिमसममजोगी केवलौ खोणकपाय वीतराग दर्शनाय । सेत मजो
 गी केवलौ खोणकसाय वी० । एतल मजोगी केवलौ खोणकपाय वीतराग दर्शनाय कक्षा, एतल खोणकपाय दर्शनाय कक्षा । सेत केतल मजोगी
 पाय वी० । सेत खोणकसाय वी० सेत वी० सेत दमणारिया । एतल केवलौ खोणकपाय वीतराग दर्शनाय कक्षा दर्शनायने अधिकार कक्षा । सेक

पठमसमयउवसतक्रसायवीतरागचरित्तारिया अण्पठमसमयउवसतक्रसायवीतरागचरिया य अण्पठमसमय चरिम
समयउवसतक्रसायवीतरागचरित्तारिया अण्चरिमसमयउवसतक्रसायवीतरागचरित्तारिया य सेत उवसतक्र
सायवीतरागचरित्तारिया से कित खीणकसायवीतरागचरित्तारिया २ दुविहा पणत्ता, तजहा ठउमत्य
खीणकसायवीतरागचरित्तारिया केवलखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य न कित ठउमत्यसीगक्रसायवी
तरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पणत्ता, तजहा सयबुद्धउमत्यसीगक्रसायवीतरागचरित्तारिया बुद्धवी
हियठउमत्यखीणकसायवीतरागचरिया य से कित सयबुद्धउमत्यखीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? २
दुविहा पणत्ता, तजहा—पठमसमयसयबुद्धखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अण्पठमसमयसयबुद्धउमत्यखी

उपपान्तकपाय वीतराग चरित्तारिया । अण्चरिमसमय उवसतक्रसाय वीतराग चरित्तारिया ।
सेत उवसतक्रसाय वीतराग चरित्तारिया । पत्ते उपपान्तकपाय वीतराग चरित्तारिया । सेकित खीणकसाय वायराग चरित्तारिया २ दुविहा
प० त० । द्विवे खीणकपाय वीतराग चरित्तारिया । सेकित खीणकसाय वीतराग चरित्तारिया । सेकित खीणकपाय वायराग चरित्तारिया
२ । सेकित खीणकसाय वी० प० । सेकित खीणकपाय वी० प० । सेकित खीणकपाय वायराग चरित्तारिया । सेकित खीणकपाय वी० प० ।
य वीतराग चरित्तारिया दायभट्ट कक्षा तेकहे—सयबुद्धउमत्य खीणकसाय वी० प० । सयबुद्ध कक्षा खीणकपाय वायराग चरित्तारिया । सेकित खीणकपाय
उमत्य खीणकसाय वी० प० । सेकित खीणकपाय वी० प० । सेकित खीणकपाय वी० प० । सेकित खीणकपाय वी० प० । सेकित खीणकपाय वी० प० ।
यबुद्ध कक्षा खीणकपाय वी० प० । सेकित खीणकपाय वी० प० । सेकित खीणकपाय वी० प० । सेकित खीणकपाय वी० प० । सेकित खीणकपाय वी० प० ।
य वीतराग चरित्तारिया । अण्पठमसमय सयबुद्ध खीणकसाय वी० प० । अण्पठमसमय सयबुद्ध खीणकपाय वी० प० । अण्पठमसमय सयबुद्ध खीणकपाय वी० प० ।

यमरागचरित्तारिया दुविहा पसत्ता, तजहा—सकिलिस्समाणाय विसुज्जमाणाय सेतं सुज्जमसपरायसरा
गचरित्तारिया से कित वायरसपरायसरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पसत्ता, तजहा—पढमसमयवायर
सपरायसरागचरित्तारिया अण्णढमसमयवायरसपरायसरागचरित्तारिया य अहवा चरिमसमयवायरसपरा
यसरागचरित्तारिया अण्णचरिमसमयवायरसपरायसरागचरित्तारिया य अहवा वायरसपरायसरागचरित्तारि
या दुविहा पसत्ता, तजहा—पण्णिवाइं य अण्णढिवाइं य सेत्त वायरसपरायचरित्तारिया संत्त मरागचरि
त्तारिया से कित बीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पसत्ता, तजहा—उवसतकसायबीतरागचरित्तारिया
खीगकसायबीतरागचरित्तारिया य से कित उवसतकसायबीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा प०, तजहा

व० । एतल हिंवे वाटरसपराय चारनाय टोण्णेट कल्लाहे । सेकित वायरसपराय मरागचरित्तारिया २ दुविहा प० त० । हिंवे वाटरसपराय चरि
वना टोण्णेट कल्ला तेकह्णै—पढमसमयवायरसपराय मराग व० । प्रथमसमय वाटरसपराय सराग चरित्तार्यं । अण्णढमसमय वायरसपराय सराग
चरित्तार्यं । अण्णथमसमय वाटरसपराय मराग चरित्तार्यं । अहवा चरिमसमय वाटरसपराय मराग व० । प्रथम चरिमसमय वाटरसपराय सराग चरि
त्तार्यं । अचरमसमयवाटरसपराय मराग व० । अचरमसमय मरागवाटर चरित्तार्यं । अहवा वाटरसपराय सरागचरित्तारिया दुविहा प० त० । अ
थवा वाटरसपराय मराग चरित्तार्यना टोण्णेट कल्ला तेकह्णै—पण्णिवाइं अण्णढिवाइं । प्रातर्वातिक अण्णतिवातिक । सेत्त वाटरसपराय वाय
मपराय रमराग व० । एतल वाटरसपराय चरित्तार्य कल्ला । सत्त मराग चरित्तार्य । हिंवे बीतराग चरित्तार्यना । सेकित बीतराग चरित्तारिया दुवि
हा प० त० । हिंवे बीतराग चरित्तार्यना टोण्णेट कल्ला तेकह्णै—पढमसमयउवसतकसायबीतराग व० । प्रथमसमय उवसतकसाय बीतराग टोण्णेट
य । अण्णढमसमय उवसतकसाय बी० । अण्णथमसमय उवसतकसाय बीतराग चरित्तार्यं । अहवा चरिमसमय उवसतकसाय बी० । अथवा चरिमसमय

रूप, यद्यपि च संप्रमपि चारित्र्यमविज्ञेयत सामायिक तथापि श्लेधादिविशेषे विशेष्यमाणं भयंत शब्दान्तरं च नानात्व ज्ञाते प्रथमं पुनरविज्ञायतात् सामान्यज्ञाद् गद्या वतिष्ठते, सामायिका मिति तच्च द्विधा इत्वर यावत्कथिक ॥ तत्र त्वर जर्तैरावतेषु प्रथमपश्चिमतीर्थं जर्तैर्यथा नारोपितमभ्युपगतस्य श्लोकस्य विज्ञेय यावत्कथित प्रज्ञयाप्रतिपत्तिजालादारभ्योपराभात् तच्च जर्तैरावतभ्याविमध्यविशति तीर्थं करतीर्यान्तरगतानां च विद्वत्सीयकर्तार्यान्तरगतानां च साधूनां मवसय तथा मुपस्थापनाया अज्ञायात् उक्तं सत् मिश्र सामद्वयं ह्ययाद्विसिधयः पुनरविनिश्चयः । अविशसहस्रसमद्वयं विधिमि ह सामन्तमन्त्राय ॥ १ ॥ सायज्जोगार्गवरद्विति तस्य सामाद्वयं दुः ॥ य इत्तरमायकहति य पदमपठमति य मज्जिणाणं तित्यत्तु अणारोधिअ ययस्स महस्सयोधकालीय ॥ १ ॥ मेसाणमावर्जहिय तित्यत्तु विदहयाणं च । ननु च त्वरमपि सामायिकं करोमि न दत्तं सामायिकं यावज्जीयमित्ययं यावदायु रागृहीतं तत् उत्थापनाकालं तत्परित्यज्यत कथं न प्रतिज्ञाजग उच्यते ननु प्रागवाक्तं सवमवदं चा

दुविहा पणता, तजहा सजोगिकंवलखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अजोगिकंवलखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य । से कित सजोगिकंवलखीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पणता, तजहा—पढमसमसजोगिकंवलखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अपढमसमसजोगिकंवलखीणकसायवीतराग

जन्म । द्विधे नैतनौ क्षौणिकपात्र दोतराग चरित्तारिण्यं डाउभेद कक्षा ते कहखे—सयागो केवलौ खाणकसावोतराग चरित्तारिण्यं भगगौ कयलो ग्दोणकसय नाउतराग चरित्तारिण्यं । द्विधे सयागो कयना खाणकपात्र वातराग चरित्तारिण्यं भगगो केवलौ खाणकपात्र वातराग चरित्तारिण्यं । साकल स सयागो कयना खाणकसावोतराग चरित्तारिण्यं २ दुवित्तारिण्यं पयत्ता तनहा । द्विधे सयागो कयना खाणकपात्र वातराग चरित्तारिण्यं डाउभेद कक्षा ते कहखे—पडतममउभयागा कयलो खाणकसावोतराग चरित्तारिण्यं । भगमममउभयागौ कयलो खाणकपात्र वातराग चरित्तारिण्यं । प्रपडमममउभयमय गोताना खोणकपात्र वातराग चरित्तारिण्यं । प्रपथनसमउभयागौ कयलो खाणकपात्र वातराग चरित्तारिण्यं । गद्वेरा चरमसमउभयागौ कयलो खाणकपात्र वातराग चरित्तारिण्यं ।

णकसायत्रीतरागचरित्रा य, अहवा चरिममयसयवृद्धलउमत्यखीणकसायत्रीतरागचरित्रारिया अचरिम
 समयसयवृद्धलउमत्यखीणकसायत्रीतरागचरित्रारिया य । सेत सयवृद्धलउमत्यखीणकसायत्रीतरागचरित्रा
 रिया । से कित वृद्धत्रोहियलउमत्यखीणकसायत्रीतरागचरित्रारिया ? २ दुविहा पसत्ता, तजहा पढम
 समयवृद्धत्रोहियलउमत्यखीणकसायत्रीतरागचरित्रारिया अउपढमसमयवृद्धत्रोहियलउमत्यखीणकसायत्रीतरा
 गचरित्रारिया य, अहवा चरिमसमयवृद्धत्रोहियलउमत्यखीणकसायत्रीतरागचरित्रारिया अचरिमसमयवृ
 ष्टत्रोहियलउमत्यखीणकसायत्रीतरागचरित्रारिया य । सेत वृद्धत्रोहियलउमत्यखीणकसायत्रीतरागचरित्रा
 रिया सेत लउमत्यखीणकसायत्रीतरागचरित्रारिया । से कित केवलखीणकसायत्रीतरागचरित्रारिया ? २

चौणकपाय चरित्रार्थ । अहवा चरिममय सयवृद्ध लोणकपाय वीतराग चरित्रार्थ । अचरिमसमयस
 यवृद्ध लोणकसाय बो० व० । अचरिममय सयवृद्ध लोणकपाय चरित्रार्थ । सेत अउमत्य खीणकपाय दा० । एतले सयवृद्ध लोणकपाय
 चरित्रार्थ । सेकित वृद्धत्रोहिय लोणकपाय बो० व० दुविहा पसत्ता तजहा । द्विवृद्धत्रोहिय लोणकपाय वीतराग चरित्रार्थना दावमेद कल्या
 ते कंछ - पढममय वृद्धत्रोहिय अउमत्य खीणकसाय बो० चरित्रारिया । प्रथममय वृद्धत्रोहिय लोणकपाय वीतराग चरित्रार्थ । अउपढमस
 मय वृद्धत्रोहिय अउमत्य खीणकपाय वीतराग । प्रथममय वृद्धत्रोहिय लोणकपाय वीतराग चरित्रार्थ । अहवा चरिमसमयवृद्धत्रोहिय अउमत्य
 खीणकपाय वीतराग । अथवा चरिममय वृद्धत्रोहिय अउमत्य खीणकपाय वीतराग चरित्रार्थ । अचरिमसमय वृद्धत्रोहिय अउमत्य
 सेत वृद्धत्रोहिय अउमत्य खीणकपाय वीतराग चरित्रारिया । एतले वृद्धत्रोहिय अउमत्य खीणकपाय वीतराग चरित्रार्थ कल्या । सेत अउमत्यखीणकसा
 य वीतराग चरित्रारिया । द्विवृद्धमस खीणकपाय वीतराग चरित्रार्थ । साकत केवल लोणकसाय वीतराग चरित्रार्थ । अउमत्य वीतराग चरित्रार्थ ।

रूप, यद्यपि च सर्वमपि चारित्र्यमविशेषतः सामायिकं तथापि ध्वेदादिविशेषे विज्ञेयमाणं मयं तं शब्दान्तरं तु नानात्वं जनते प्रथमं पुनरविज्ञेयमात्रं सामान्यशब्दं गवा वतिष्ठते, सामायिका मिति तच्च द्विधा इत्वर यावत्कथिकं च तत्रे त्वर जर्तैरावतेषु प्रथमपश्चिमतीक्ष्णरतीयेषु नारोपितमन्यत्रतस्य शीघ्रकर्म्य विधेयं यावत्कथितं प्रख्याप्रतिपत्तिकालादारज्योप्राणोपरमात् तन्मन्त्रैरावतन्माविमध्यद्विविशोति तीक्ष्णरतीयां त्तरगतानां च विदग्धतीक्ष्णरतीयां त्तरगतानां च साधूनां मयस्य तया मयस्यापमाया अजायात् उक्तं च सत्रं मिश्रं सामय्यं क्षयादिविसन्धियं पुनरविज्ञितं । अत्रिसमसमय्यं विधिमिदं सामन्त्रस्याह ॥ १ ॥ सायज्जोगीर्वाणरक्षति तस्य सामाद्यं दुःशातं च इत्तरमायकहन्ति यद्वहमपठमन्ति यमजिज्ञाणं नित्यसु अणाराविश्वं ययस्म मरुसथोदकालीय ॥ १ ॥ संसायमायकहन्ति तस्यसु विदहयाणं च । ननु च त्वरमपि सामायिकं तस्मिन् न दत्तं सामायिकं यावज्जीव्यं नित्यं यावदायुः राशहोत तत्तं उत्थापनाकारा तत्परित्यज्यत कथं न प्रतिज्ञाजग उच्यते ननु प्रागवाक्तं सर्वमवदं चा

दुविहा पणता, तजहा सजोगिकेवलसीणकसायवीतरागचरित्तारिया अजोगिकेवलसीणकसायवीतरागचरित्तारिया य। से कित सजोगिकेवलसीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पणता, तजहा—पढमसमसजोगिकेवलसीणकसायवीतरागचरित्तारिया अपढमनमयसजोगिकेवलसीणकसायवीतराग

जहा । द्विवे केनलो चौणकपाय दोतराग चरित्तायना दावभेद कक्षा ते कहछे—सयागो केवलौ खौणकसायाउराग चारत्तायारिग अगौ कयना खौणकस य वाउराग चरित्तायरिग । द्विवे सयागो कालो खौणकपाय दोतराग चरित्ताय दोतराग चरित्ताय । साकत स सयागोकथना खाणकसाय वावरग चरित्तायरिग २ दुविउा पणत्ता तचहा । द्विवे सयागौ कयना जाणकपाय दोतराग चरित्तायना दाउभउ कया न कहछे—पठममममयागा कालो जाणकस य वाउराग चरित्तायराग । प्रथममममयागौ कयना जाणकपाय दोतराग चरित्ताय अउमममयमय भोकाया खौणकसाय वावर चरित्तायराग । प्रथमनसमय सयागा केवलौ जाणकपाय दोतराग चरित्ताय । गइना चरमसमय सयागा केवलौ वाग

गकनायत्रीतरागचरित्या य, झुहवा चरिमममयसयनुष्ठुठउमत्यखीणकसायत्रीतरागचरित्तरिया अचरिम समनसयनुष्ठुठउमत्यखीणकसायत्रीतरागचरित्तरिया य । सेत सयनुष्ठुठउमत्यखीणकसायत्रीतरागचरित्तरिया । ने मितं बुधुधोहियठउमत्यखीणकसायत्रीतरागचरित्तरिया ? २ दुविहा पसत्ता, तजहा पढम समयबुधुधोहियठउमत्यखीणकसायत्रीतरागचरित्तरिया अउपढमसमयनुष्ठुधोहियठउमत्यखीणकसायत्रीतरा गचरित्तरिया य, झुहवा चरिमममयसयनुष्ठुधोहियठउमत्यखीणकसायत्रीतरागचरित्तरिया अचरिमममयनु धुधोहियठउमत्यखीणकसायत्रीतरागचरित्तरिया य । सेत बुधुधोहियठउमत्यखीणकसायत्रीतरागचरित्तरिया रिया सेत ठउमत्यखीणकसायत्रीतरागचरित्तरिया । से कित केवलखीणकसायत्रीतरागचरित्तरिया ? २

चौणकपाय चरित्रार्थे । अथवा चरमममय मयुङ्ख खौणकसाय वो० च० । अथवा चरमममय स्वयङ्ख खौणकपाय वीतराग चरित्रार्थे । अचरममयय
ययुङ्ख खौणकसाय वा० च० । अचरिमममय स्वयङ्ख खौणकपाय चरित्रार्थे । सत्त छउमत्य खौणकपाय वा० । एतले स्वयङ्ख छमस्य खौणकपाय
चरित्रार्थे । संकित वरिवाडिउ खौणकपाय वो० च० दुविह । पणता तजहा । दिव वडिना । छमस्य खौणकपाय वीतराग चरित्रार्थेना टांयभेट कछा
ते कः छ — पढनमनय वडवोडिउ छउमत्य खाणकसाय वो० चरित्तार्थे । प्रथममय वडवोड खौणकपाय वीतराग चरित्रार्थे । अण्डनस
मय वरिवाडिउ छमत्य खौणकसाय वीतराग । प्रथमममय वडवोड छमस्य खौणकपाय वीतराग चरित्रार्थे । अथवा चरममयवडवोडिउ छउमत्य
खौणकसाय वीतराग । अथवा चरमममय वडवोड छउमत्य खौणकपाय वीतराग चरित्रार्थे । अचरममय
सत्त वरिवाडिउ छउमत्य खौणकसाय वीतराग चरित्तार्थे । एतले वडवोड छउमत्य खौणकपाय वीतराग चरित्रार्थे कछा । सत्त छउमत्य खौणकसा
य वीतराग चरित्तार्थे । दिवे छउमत्य खौणकपाय वीतराग चरित्रार्थे । साअग कवनी खौणकसाय वीतराग चरित्तार्थे । ३ दुविह पणता त

रिप्रमविप्रेत सामायिक संयत्तिपि माउद्योगविरतिमन्वायात केवलच्छेदादि विजिज्ञिगीषे विज्ञेयमण मयंत आद्यान्तरत य नागत्य जज्ञते
तता यया यावत्कथं सामायिक छदोपग्यान वा परमिजिज्ञिज्ञापकूपमन्वसपरायादिचारित्रावाप्ती न नहु मास्कन्दति तथे त्वरगपि सा
मायिक जिज्ञाद्विसपक्षच्छेदोपस्थापनावाप्ती । यदि हि प्रज्यापरिव्यत्यते तच्चितद्रुद्र आपद्यत न तस्यैव विजिज्ञिज्ञापावाप्त्यै उक्त्य-उन्निव्य
मतेजगी जोपुणतचियजरेड । सुदयर मन्वामेतविमिह सुदुमपिउतन्मकोनहु ॥ तथा छद पूवपर्यायस्य उपन्यापना च समात्रतपु यस्मिन् चारित्रे
तत् छदोपस्थापन तत्र द्विधा सातिचार निरतिचार च तत्र निरतिचार च यत् इत्यरसामायिकगत शैलकस्यारोप्यत तीथान्तरसकालौ वा यथा

चरित्रारिया य, अहवा चरिममममजोगिकेवल्लिखीणकसायवीतरागचरित्रारिया य अणरिमसमयमजो
गिकेवल्लिखीणकसायवीतरागचरित्रारियाय । मस सजोगिकेवल्लिखीणकसायवीतरागचरित्रारिया । न कित
अजोगिकेवल्लिखीणकसायवीतरागचरित्रारिया ? २ दुविहा पस्यहा , तजहा पढममयअजोगिकेवल्लि
खीणकसायवीतरागचरित्रारिया य अणपढमसममअजोगिकेवल्लिखीणकसायवीतरागचरित्रारिया य, अहवा

कथाय दोयरागचरित्रारिया । यथा चरमसमममजोगिकेवल्लिखीणकसायवीतरागचरित्रारिया । अचरमसममजोगी कवला खोणकथाय वीतराग चरि
त्रारिया । यचरमममय सजोगी कवलो खोणकथाय वातराग चरित्रारिया । सत सजोगी केवलो खोणकसाय वातराग चरित्रारिया । एतल सजोगी क
वलो खोणकथाय वीतराग चरित्रारिया । मकित अजोगी कवलो खोणकसाय वातराग चरित्रारिया २ दुविहा पस्यहा । द्विवे यथा १ जेजलो जोगी
णकथाय वातराग चरित्रारिया टाउभेड कहेछै—पढममममममजोगी कवला खोणकसाय वातराग चरित्रारिया । प्रथममममममजोगी केवलो खोणकथा
य वीतराग चरित्रारिया । यपढममममममजोगी कवलो खोणकसाय वातराग चरित्रारिया । अथममममममजोगी केवलो खोणकथाय वीतराग चरित्रारिया ।
अहवा चरमसममममजोगी कवलो खोणकसाय वातराग चरित्रारिया । यथा चरमसममममजोगी केवलो खोणकथाय वीतराग चरित्रारिया । अचरिमस

पाश्र्वाश्रयतोयां दृढमानतोयं प्रक्रामत पवयामप्रतिपत्तौ सातिचार यन्मनगुणघातिन पुत्रतोद्यारण उक्त च-सेरस्य निरट्यारसस तिष्ठतरसञ्ज
मत्र त द्वाज्जा। मूलगुणघाटोसा इयारमद्रय च हियमप्यो ॥१॥ उजय यतिसातिचार निरतिचार च स्थितकल्प इति प्रथमपद्यिमतीर्थरतीशका
त तथा परिहार तपोविग्रप तन विशाद्वियस्मिन् चारित्रे तत्परितारविशुद्धिं तच्चद्विधा निविशमानक्य निविष्टकार्यिक च तत्र निविशमानका
घिवक्षितचारित्रासंघका निविष्टकायका आसंखितपारित्रका तद व्यतिरकाचारित्र मप्येव मुख्यते इह नयको गण शुत्वारीनिर्वियमानका शुत्वार
शानुचारण मरु कल्पस्थितो दायनाचार्यो यद्यपि च सर्वपि गुतातिगपसम्पदा तथापि कल्पत्वात् तदा मरु कश्चि त्कल्पस्थितो वस्याप्यते
निविष्टमानकानाख्याय परिहार , परिहारियाणउ तयो जन्मज्जो तस्य उक्कोमो। मोडरथासकाल जगितु वीररि पसेय ॥१॥ अत्य जपका नि
मरु घटयद्वह तु ताडमज्जिमनु । अहममिफउक्कासो यतोचिमिर पवक्तवामि ॥२॥ निमिरे उज्जलाइ खडाइ दममपरिमगो ताड । दासासु अह
माइ वारसपज्जतगोनउ ॥३॥ पारणमआयाम पयसु अगणो दासु अजिगणो निपत्ते । कप्पहियापइदिण करित ममेवआयाम ॥४॥ यवदम्मा
सतव चरिउपरिहारणाअणुचरति । अणुरगे परिहारिय पइदिग जाव लप्पासा ॥५॥ कप्पहियविगय लम्मासतव करइ सेसाउ । अणुपरि
रिगन्नाव चयति कप्पहियस च ॥६॥ ययसोअहार ममासपमाणा उगखिउ कप्पो । सरोवउ विससा विममसुन्नाउ नायव्वो ॥७॥ कप्पसमतीए
तय निणकप्प वा रयितति गच्छ ॥८॥ पक्खिज्जमाणगा पुण जिणस्सगासे पवज्जाति ॥८॥ तित्यथरसमीक्षास वगस्सपास वनोउअत्तश्च । एगसि

चरिमममयञ्चजोगिकेवलखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य अचरिमममयञ्चजोगिकेवलखीणकसायवीत
रागचरित्तारिया य सत्त अजोगिकेवलखीणकसायवीतरागचरित्तारिया । सेत्त केवलखीणकमायवीतराग

मय अयागौकानौ खीणकसाय वीतराग चरित्तारिया । अचरिमममय प्रयागौकेवलौ चोणकपाय वीतराग चरित्तारिया । सेत्त अजोगिकेवलौ खीणकसाय
वीतराग चरित्तारिया । एतल्ले अयागौ केवलौ खीणकपाय वीतराग चरित्तारिया । मूल केवलखीणकसाय वीतराग चरित्तारिया । सेत्त केवलखीणकमायवीतराग

उत्तरपक्षप्रमाणरूपे तु चतुर्थैरकप्रतिज्ञागताते न सम्भवति मत्ताजिद्वेत्तेने तेषा मसम्भवात्, चारित्रद्वारे-समस्यानद्वारेण सांगेना तत्र सामाधिकस्य छेदोपस्थापनस्य च चारित्रस्य यानि लघन्यानि समस्यानानि परस्परतुल्यानि समानपरिणामत्वात् ततोऽनुद्भूयतोक्षाका ज्ञापदज्ञप्रमाणानि समस्यानान्य तिकम्योद्धं यानि समस्यानानि तानि परिहारविशुद्धिकयोग्यानि ताव्यापि च केवलप्रज्ञया परिज्ञायमानानि प्रसङ्गेत्योक्षाकाज्ञापदज्ञप्रमाणानि, तानि प्रथमद्वितीयधारित्वाविरोधोति तेष्वपि सन्वात्, तत ऊर्ध्वं यानि सस्यातीतानि समस्यानानि ता नि सूक्ष्मसम्परायययात्यापचारित्र्ययोग्यानि उक्तच-तुल्ला जहन्वहाणे सममठागुणपदमयिद्वयाण । ततो असुरलोप गतु परिहारिपहाणा ॥ १ ॥

-इतरियसामाडयचरित्तारिया व्यावकहित्यसामाडयचरित्तारिया य । नेत्त सामाडयचरित्तारिया । से कित तेनेवठावणीयचरित्तारिया ? २ दुविहा पणत्ता, तजहा-साडयारा तेनेवठावणीयचरित्तारिया निरडयारा तेनेवठावणीयचरित्तारिया । सेत्त तेनेवठावणीयचरित्तारिया । से कित परिहारचित्रुद्धिचरित्तारिया ? २ दुविहा पणत्ता, तजहा-निविस्समाणपरिहागविसुद्धिचरित्तारिया निविठकाडयपरिहारचित्रुद्धिचरित्तारिया

कहेहे-इतरियसामाडय चरित्तारिया व्यावकहित्यसामाडय चरित्तारिया । तिहा ज कल्पसमोभते गच्छनेविपै पक्षे इतर सामाधिकचरित्तारिया कहे ज दुत्तरधारिचरित्तारिया उपसर्ग नक्तपली अवकथिक ते कल्पसमाते निनक्त्य पडिअले उपसर्गादि खुमे पतले सामाधिक चरित्तारिया । सेकित छेप्राड्यावणिया चरित्तारिया २ दुविहा प० त० । द्विजे छेदापस्थापनोय चरित्र वंना दीयभेट कक्षा ते कहेहे - साडयार छेप्राड्यावणिय च० निरडयार ज पोअड्यावणिय च० । अतीचार कोइलागा डवे सातोचार छेदापस्थापनोय चरित्तारिया निरतिचार निगार अतोचारनगान डव छेदोपस्थापनोय चारित्तारिया । सेकितेयो अड्यावणिय च० । पतले छेदापस्थापनोय कक्षा । सेकित पारहारविसाति च० दुअड्या प० त० । डिउ परिहारचित्रुद्धिकना दीयभेट कक्षा तेकहेहे -- नि विस्समाण पारहारचित्रुद्धि च० निविठकाडय परिहारचित्रुद्धि च० । निविस्समाणक निविठकायक एहवा परिहारविगुड चउत्त अड्य नचन्य नच्य

उत्तरपिण्यग्रसंपीणरूपे तु चतुर्गौरकप्रतिज्ञाकाले न सम्भवति मत्ताविदेत्क्षेत्रे तेषां ममत्सयात्, चारित्रद्वारे-सयमस्थानद्वारेण मार्गेणा तत्र सामायिकस्य छेदोपस्थापनस्य च चारित्रस्य यानि जघन्यानि सयमस्थानानि तानि परस्परतुल्यानि समानपरिणामत्वात् ततोऽनुद्ध्यलोकाद्वा शप्रदेशप्रमाणानि सयमस्थानान्य तिरक्योद्दे यानि परित्तरविशुद्धिकयोग्यानि तान्यपि च केवलप्रज्ञया परिज्ञायमानानि तानि त्रसद्ध्यलोकाकाशप्रदेशप्रमाणानि, तानि प्रथमद्वितीयचारित्राविरोधीनि तेद्यपि सन्वात्, तत् कर्त्तुं यानि सत्यातीतानि सयमस्थानानि तानि नि सूक्तसम्परायपथात्याचारित्रयोग्यानि उक्तच-तुल्ला जह्यद्वारो सयमगणपठमविद्वयाण । ततो अस्सलोच गतु परित्तरविद्वयाणा ॥ १ ॥

—इत्तरियमामाहुयचरित्तारिया श्चावकहिंसामाहुयचरित्तारिया य । मेत्त सामाहुयचरित्तारिया । से कित्ते उन्नवठावणीयचरित्तारिया ? २ दुविहा पयात्ता, तजहा—साहुयारा छेत्तेवठावणीयचरित्तारिया निरहुयारा छेत्तेवठावणीयचरित्तारिया । सेत्त छेत्तेवठावणीयचरित्तारिया । से कित्ते परिहारविमुद्धियचरित्तारिया ? २ दुविहा पयात्ता, तजहा—निद्धिस्समाणपरिहाग्विमुद्धियचरित्तारिया निद्धिठकाहुयपरित्तरविमुद्धियचरित्तारिया

कहेछे—इत्तरियमामाहुय चरित्तारिया श्चावकहिंसामाहुय चरित्तारिया । तिहा जे कयसमोभते गच्छनेविपै पडुवै इतर सामायिज्जचरित्त कहे ज्ज दुत्तरचारित्रप्रते सपसर्ग नकपली अवकथिक ते कल्पसमाप्ते जिनकन्य पडिक्कली उपसर्गादि खमे पतले सामायिक चरित्तार्य । सेकित्ते छेत्तेवठावणीया चरित्तारिया २ दुविहा प० त० । द्विवे छेदोपस्थापनीय चरित्त र्यता दोयभेट कट्ठा ते कहेछे— साहुयार छेत्तेवठावणीय च० निरहुयार ज्जगोवठावणीय च० । अतीचार कोइलागो हवे सातोचार छेदोपस्थापनीय चरित्तार्य निरतिचार निगार अतोचारलयान नुव छेदोपस्थापनीय चरित्तार्य । सेत्त छेत्तो वडावणीय च० । पतले छेदोपस्थापनाय कट्ठा । सेकित्ते पारहारविमुद्धिय च० दुविहा प० त० । द्विव परिहारविगठिकना दोयभेट कट्ठा ते कहेछे— नि धिस्समाण परिहारविमुद्धिय च० निविद्वताहुय परिहारविमुद्धिय च० । निर्वसमानक निविद्वकायक एद्वथा परिहारविमुद्ध चउत्तय अठ्ठम नघन्य मध्य

न चरण परिहारविमुद्रिय त तु ॥ ६ ॥ अथे ते परिहारविमुद्रिका कस्मिन् क्षेत्रे काले वा प्रवृत्तिः उच्यते-उक्तं केनादिनिरूपणार्थं विवक्षितद्वारा
णि तद्यथा-क्षेत्रद्वार १ कालद्वार २ चारित्रद्वार ३ तीर्थद्वार ४ पयायद्वार ५ आगमद्वार ६ वेदद्वार ७ कल्पद्वार ८ लिङ्गद्वार ९ लश्याद्वार १० ध्या
नद्वार ११ गणद्वार १२ अन्नियद्वार १३ प्रव्रज्याद्वार १४ मुद्रापनाद्वार १५ प्रायश्चित्तार्थविधिद्वार १६ कारणद्वार १७ नि प्रतिश्रुताद्वार १८ विज्ञादा
र १९ व्यवहार २० । तत्र अत्र द्विधा मागणा जन्मत सद्भावतश्च, यत्र दृष्टं जातं स्तन जन्मतो मागंशा, यत्र च कल्पं स्थिता वृत्तते तत्र सद्भावन ।
उक्तं-संक्षेपेणैवमगण जन्मणुर्वेदमतिज्ञावय । जन्मणुर्वेदमतिज्ञावय ॥ १ ॥ तत्र जन्मत मुद्रावतश्च पञ्चसु प्ररतपु पञ्चस्यै
रावतपु न तु महाविदेषु न च तेषां सहरण मस्ति यत्र जिनकल्पिका इव सहरणत मज्झिमु कम्मज्झिमु वा प्राप्सरन्, उक्तं च-सि
त्तनरहरवय मुद्रैस्सिहरणवज्जियानियमा । कालद्वारे-प्रज्झासर्पणा तृतीय वस्तुर्थं वारके जन्मसद्भाव, पञ्चमपि उत्सर्गपण्या द्वितीये तृतीये वस्तु
र्थे वा जन्मसद्भाव, पुनः तृतीये वस्तुर्थेया उक्तं-उत्सर्गपण्याविद्वरीते जन्मणुर्वेदमतिज्ञावय ॥ १ ॥

रित्तारिया । सेतु स्वीणकसायवीतरागचरित्तारिया । अहवा चरित्तारिया पचन्नि
हा पणत्ता, तजहा-सामाहुयचरित्तारिया लेनव्रष्टावणीयचरित्तारिया परिहारविसुद्धिचरित्तारिया सुल्लम
सपरायचरित्तारिया अहस्कायचरित्तारिया य । संकित सामाहुयचरित्तारिया ? २ दुविहा पणत्ता, तजहा

सेतु वीतराग चरित्तारिया । एतले चौणकपाय वीतराग चरित्तारिया कल्ला । अहवा च रत्ताउरिया पचन्निहा पण
त्ता तजहा । अथवा चारवाय पाचभट्ट कल्ला ते कहै-सामाहुयचरित्तारिया छथावहुवणिग च परिहारविसर्ग च महम्मपराय च अहत्तवाय
चरित्तारिया । सामागिक चरित्तारिया केनापस्थापनाय चारिव परिहारविगार चारिव सत्तामपराय चारिवाये मल्ल लोभना उट्टनयथाव्यात चारिवा
य निष्कय । संकित सामाहुय चरित्तारिया २ दुविहा पणत्ता तजहा । ए चारित्तारिया कहिय, हिम सामागिक चारिवाय तहना टायभट्ट कल्ला ते

अनेसुवि होज्ज पुणपज्जिओ । तेसु वि बहो सो तीतनय पय्य दुसुतीउ ॥ ३ ॥ तीर्थद्वारे-परिहारविशुद्धिओ नियमत स्तोत्रप्रवर्त्तमान मय सुति भवति न तच्छदो नानुत्पत्त्या वा तदज्ञावे जातिस्मरणादिना, उक्तच-नित्यत्तिनियमतोच्चय होइमतिरयमिनउणतदज्ञावे । विगमणुप्यन्नेवा ज्ञादं सरणाइमरित्तु ॥ १ ॥ पर्योपद्वारे-पर्यायो द्विधा गृहस्थपर्यायो यतिपर्यायश्च, यस्मैकोपि द्विधा ज्ञच्यत उरुहृत त, तत्र गृहस्थपयाया नचन्यत यमोनभिज्ञाद्वयाणि यतिपर्याया विद्यति द्वाउपि घोरकपतो दज्ञानपूर्वकोटीप्रमाणो उक्त च-यगस्सुयसुनेउ गिरिपरियाउञ्जअन्नगुणीमा । जइपरि यान्दीवा दोसुविउक्कोसदसूको ॥ १ ॥ आगमद्वार-ग्रपूव मागम स गधीने यस्मा त रकल्प मचिहृत्य प्रगृहीतोवितयोगाराधनतमय स उतहृत्यता नजत, पूर्वोधीत तु विश्रोतसिक्काद्यनिमित्त नित्यमर्थेमायमना सम्यग् प्रायो नुस्सरति, आरुच अणुवुनज्जिआः आगमेसोपहुकप्य । जमुच्चिय पगहियजोगा राहणउचवकियकिद्या ॥ १ ॥ पुद्वाहोयतुसयया ययदुत्तदनिगमयेन गगमगोसक्त विस्सोयसिगाययपरज्ज ॥ ३ ॥ वट्टद्वारे-नित्यप्र युतिकाले वदपुरुषपदेता नवन् नपुसकवेदा वा न छावद त्रिया परिहारजिजुत्तिकल्पप्रतिपत्त्यसुजात्, अतीत नय मचिहृत्य पुन पूजप्रतिपत्त स्थित्यमान तवदो वा उयेदो वा तत्र सवेद अणिप्रतिपत्त्यज्ञावे उपशमश्रेणिप्रतिपत्तो इत्येद इति, उरुच-यदोगविस्सिकाले त्सीज्जाउताउमग यरो । पुणपज्जिउक्कगीपुण जाल्लसवेदाअवेदावा ॥ १ ॥ कल्पद्वारे-स्थितकल्प गगाय नान्यनकल्प टियकल्पमियनियमा इति गानात्, तत्रा चग ज्यादिपु दज्ञास्त्रपि स्थानपु ये स्थिता मायव स्तरकल्प स्थितकल्प उच्यते म पुग्यतुये ज्ञाय्यातरपिकथे याउस्थितपु कल्पपु स्थिता जेयेपु या चलस्यादिपु पदसु अस्थिता स्तरकल्पो स्थितकल्प, उक्तच-टियश्रष्टिउपकम्पो आचरुकाऽगमुठागसु । सउमुचिदिवापदमो चउठियउमुठिया बीउ ॥ १ ॥ आचलक्कादीनिच दज्ञास्थानान्यमूनि । आचलकुट्टासिय मिज्जायरारार्यापिक्काकयरुम । ययनेउपकिह्कभग मागपज्जोसउरकप्पा ॥ १ ॥

गवासी वाणमतरा जोडनिया वेसाणिया से कित जवगवानी ? जवगवासी दसविहा पणत्ता, तजहा सुसु

सा मणुसा ऐकित दया २ उउवदा प० त० । ए । न कर्मभावा कक्षाः ७ तथ भंन रद्वा एतन्ने सर्व मनुच कक्ष, दिव उभताना ४ भट्ट कक्षा ते के

ते वि श्रमसातोगा मृतिन्दुा चेन्न पदमविद्याया त्वरिविततोऽतस्या संयमठागात्रोऽपि ॥ २ ॥ तत्र परिहारविघ्नान्निष्कल्पप्रतिपत्ति म्यकीये
धेव सगमस्थानेषु वर्तमानस्य भवति न शेषेषु यदा त्वतीतनय मधिकृत्य पूर्वप्रतिपन्नो विवक्ष्यत तदा शेषेषुपि सयमस्थानेषु नवति परिहारवि
शुद्धिकल्पसमाप्त्यनन्तर मन्येषुपि चारित्र्येषु सज्जघात्, तेष्वपि च वतमानस्या तीतनय मपेक्ष्य पूर्वप्रतिपन्नत्वादिरोधात्, उक्तव-संठाणे वक्रियती

रियाय । सेतु परिहारविशुद्धियचरित्तारिया । से क्तित सुज्जमसपरायचरित्तारिया ? २ दुविहा पयसत्त, तज
हा-सकिलिरसमाण सुज्जमसपरायचरित्तारिया विसुज्जमाण सुज्जमसपरायचरित्तारियाय सेतु सुज्जमसपरा
यचरित्तारिया से क्तित शुहस्कायचरित्तारिया ? २ दुविहा पयसत्त, तजहा तउमत्य शुहस्कायचरित्तारिया
कंवलिशुहस्कायचरित्तारियाय सेतु शुहस्कायचरित्तारिया सेतु चरित्तारिया सेतु शुणहिपत्तारिया सेतु शु
यारिया सेतु कम्मन्नूमिगा सेतु गप्पवक्कलिया सेतु मणस्सा से क्तित देया २ चउद्धिहा पयसत्ता, तजहा नव

म वरज्जट तपज्जे । नि-इस्कायक परिहारविशुद्ध चरित्तार्यं । सेतु परिहारविशुद्धिक चरित्तार्यं कक्षा । सेकित मुहुमसप
राय चरित्तारिया दुविहा प० त० । द्वि सुज्जमसपराय त व्य सुज्ज लाभाशचाण अय वीवाळे तेह दोमभेदछे । सकिलिगुमान सहमसपराय च० । स
लेशमान सुज्जमसपराय चरित्तार्यं ते उपगमयाण चपित्तोपयको पाडत हन । विमृहमाणमुहुमसपराय च० । विगुमान मूक्षसपराय चरित्तार्यं ते
उपगमयाण समकन्नेमिदका पाडित हुवे । सेतु मुहुमसपराय च० । एतले मूक्षसपराय चरित्तार्यं कक्षा । साकत अहस्कायचरित्तारिया दुविहा प०
त० । द्विने यथास्वात चरित्तार्यना दोमभेद कक्षा तक्केछे-छउमत्य अहस्काय च० कंउलीअहस्काय च० । छय्य यथास्वात चरित्तार्यं ते उपगमातलो
हगुणठाण चाणमोहगुणठाण हवे केवनायथास्वात चरित्तार्य ते सवाग गगगुणठाण हवे । सेतु अहस्काय सेतु चरित्तार्य सेतु अण्डपत्तारिया
सेतु यायारिया । एतल यथास्वात चरित्तार्य कक्षा एतले अन्तरहिभाग आमथाय कक्षा एतले सर्व थाय कक्षा । सेतु कम्मभूमगा सेतु गभावकतिगा से

अत्रेसुवि होजा पुष्टपद्धिचो । तेषु वि यद्वती सो तीतनय पप्य दृष्टती ॥ ३ ॥ तीयंदारे-परिहारविशुद्धिको नियमत स्तोत्रप्रवर्तमान मय सति मयति न तच्छदो नानुस्यत्या वा तटजावे जातिस्मरणादिना, उक्तप-तित्वानियमतोच्चय सोऽसतिर्यामिनउक्तदजावे । विगपुण्यप्यत्ता ॥ ३ ॥ सरगाद्वयति ॥ १ ॥ पर्यायद्वारे-पयायो द्विधा गृहस्थपर्यायो यतिपर्याय्य, यमोकोपि द्विधा उच्यते उरुहृत स, तत्र गृहस्थपर्याया नचन्यत यकोनत्रिंशद्वयपलि यतिपयाया विगति द्विजपि चोरकपतो दशानपूर्यकोटीप्रमाणो उक्त च-मगस्सुमसोऽठ गतिपरिमात्रुगणगृहीता । अइपरि यात्रवीमा दोसुविउक्तोसंदंशो ॥ १ ॥ आगमद्वार-अपुत्र मागम स नाथीते यसा त रक्त्य मपिरुक्त्य प्रशुतीपितयोगारचनसमय म कृतहृत्यता नजते, पूर्वाधीत तु विभ्रातसिक्काक्षयिभिसा नित्यमयेकायमना सम्यज् प्राचो तुस्वरति, आदप छपुननद्विजः आगमसोपनुकृप्य । अमचिप पगद्विजोगा राहणउचचकिपकिधो ॥ १ ॥ पुत्राहोयतुतयपा ययणनऽनिधमवेम मगगगोसुम विस्सोपसिगगमयपक ॥ २ ॥ य-द्वारे-अनत्यप्र तुतिकाले वदपुस्तपेदो जवन् नपुसकपेदा वा न स्तोत्रद रिगया परिहारिगुद्विहृत्यप्रतिपत्तयननात्, अतीत तय मपिरुक्त्य पुत्र पुत्रमगिदग विहित्यमान सबदो वा उवेदो वा तत्र सबंद अग्निप्रतिपत्तयजावे उपश्रमश्रिप्रतिपत्ती त्व येद इति, उक्तच-यदोमविशिताल ग्नीगजाउ गेऽगय यदो । पुष्टपद्धिउक्तगोपुण हाल्वमवेदाअट्टाया ॥ १ ॥ क्षायद्वारे-स्वितरनय मवाय नास्वितरत्तपे द्वियद्वप्यनियनियना इति प्रभात्, तत्रा चन स्वादिपु दशस्त्रवि स्थानेषु य स्थिता माचव स्तरकल्प स्थितकल्प उच्यते य पुनस्तुपु द्वाव्यातरपिकृत्य यात्रस्थितपु कनपु स्थिता ज्ञाप्यु या चलस्यादिपु पदसु अस्थिता स्तरकल्पो स्थितकल्प । उक्तच-द्वियग्रहिजयकल्पो आपगृहाऽमगुटाऽगु । यंसुविद्विवापटमो चउत्तियउमुनद्विवा यीउ ॥ १ ॥ आचलक्याटीनिच दशस्थानान्यगूनि । आचलकुट्टासय विज्जायरार्यायविकाकयकम । वयनेहवकिह्वनथ मासपञ्जागुगकम्पा ॥ १ ॥

पवासी वाणमतरा जोडनिया वेमाणिया सं कित नवगवानी ? जवगवासी दसत्रिहा पणना, तजहा उरु

स नगुसा से कत दमा २ उ, वदो प० त० । ए. न. कर्मभानरा कद्य, उत्तम भं । ग । एतने मं नगुच नद्य, द्विध दशतना ४ भट जघा ते कडे

चत्वारःशास्त्रस्थिता कर्पादमे सेज्जापरिप्लव्णी चाउज्जामेयपुरिसंज्ञंय । किङ्कमस्सयकरणे पत्तारिअथद्विआकप्पा ॥ २ ॥ लिगद्वारे-नियमितो
द्विउत्थेपि लिंगे ज्ञवात तद्यथा-द्रव्यलिंगे ज्ञात्रलिंगे च एकोनापि विना विद्यनितकृत्योचितसामाधाययोगात्, लेख्याद्वारं-तेज प्रभृतिकासू त्तरा
सु तिस्रसु त्रिगुदामु तेइयासु परिहारविशुद्धि कल्प प्रतिपद्यते पूवप्रतिपन्न पुन सर्वास्वपि कथं चि द्रुवति तत्रापि स्वरविशुद्धिलयासु जात्य
लमक्षिष्टासुगृहत तथानूतासुयत्तमानोनप्रज्ञतकालमद्यतिष्ठते किंतुलोक यत् स्वीयवशात्भटित्येउ साभ्योव्यावृत्तते अथ प्रथमतः सव कस्मा त्प्रव
ृत्तं उच्यते कमगशात् उक्तञ्च लेसामविमद्वासु पद्धिपद्धिवल्लभुण होज्जासद्यामुत्तिरुचिचि ॥ १ ॥ गद्यतर्साकलिहासु
धोवजातावचानश्चयेनदिइयदासु चित्तकम्पाणाइ तद्वाविर्वोरियफलदेइ ॥ १ ॥ ध्यानद्वार-धमय्याने न प्रवर्द्धमानतपरिहारविशुद्धिकप्रतिपद्यते प्
प्रतिपन्न पुनरात्तरीद्वयोरपिप्रवति कवल प्रायेण निरनुवध आह च भाणस्मिन्नय मण पद्धिवल्लभमा पवळ्ळमाणेण इयरसुविभागासु पृथप

वको नपडिसिटो ॥ १ ॥ एवचक्ष्णाज्जागे उद्दामतिष्ठकम्पपरिणामा रोहृहसुत्तिज्जावो इमस्सपायनिरुद्यथो ॥ २ ॥ गणनाद्वारं जघन्यत स्त्रयो गणा
प्रतिपद्यन्त उरकपत ज्ञातसङ्गा पूवप्रतिपत्ता जघन्यत उररुष्टो वा ज्ञातज्ञा पुरुषगणनया जघन्यत प्रतिपद्यमाना समविशति रुक्मपत सहस्र
पूवप्रतिपत्तका पुनजघन्यत ज्ञातज्ञा उरकपत सहस्रज्ञा आह च गणुत्तिकउगणा जहन्नपद्धिवल्लभसयस उक्कोसा उक्कोसज्जनेण मयमाच्चियपुष्टप
डिउत्ता ॥ १ ॥ सत्तावीसजह्ला सरस्समक्कोसउयपद्धिवत्ती सयसोसहस्ससोउ पद्धिवल्लजहन्नउक्कोसा ॥ २ ॥ अस्य इ यदा पूवप्रतिपन्नरूपमध्या
देको निगच्छति अन्य प्रविशति तदो नप्रक्रेप प्रतिपत्तो कदाचि दकोपि भवति पृथक्क वा पूवप्रतिपन्नो प्येव प्रजनया कदाचिदेक प्राप्यते पृथ
क्क वा उक्तञ्च पद्धिवल्लज्जागमयणाए होज्जायक्कोत्तिज्जणपक्खेवे पुष्टपद्धिवल्लयविय जह्याएक्कोपुत्तवा ॥ १ ॥ अन्नियत्तद्वारि-अन्नियत्तद्वा यत्तुविंधा
स्तद्यथा द्रव्यान्नियत्तद्वा चत्तान्नियत्तद्वा कालान्नियत्तद्वा य एते चा न्यत्र चधिता इति न ज्ञय यत्तं ते तत्र परिहारविशुद्धिकस्ये ते भिय

इति न प्रवृत्तिर्यस्या देवस्य कल्पस्य यथोदितरूपो त्रिगुणो वर्तते उक्तञ्च दद्यादंश्रितगृह विचित्ररूपावनर्ततिपुणकेइं गयस्सनीयकृष्णो कप्पोच्चिय
 निगहाज्जेण ॥ १ ॥ गयमिगोयराइ निययानियमणानिरयवादाय तप्पालणवियपर गयस्सविसुट्ठिठाणत्तु ॥ २ ॥ प्रव्रज्याद्वार-ना सा वन्य प्रव्राज
 यति कल्पस्यति रेपेति कृत्या आह्वय पव्वावेइ न गसो अन्नकप्पविट्ठित्तिकाकणति उपददा पुन यथाशक्ति प्रयच्छति मुत्तापनद्वारेपि ना सा वन्य
 मुत्तयति अथ प्रव्रज्यानन्तर नियमतो मुत्तवनामिति प्रव्रज्याग्रहणैऽ तदुत्तोत्तमिति क्रिमथ पुणरुद्धार तद युक्त प्रव्रज्याद्वार नियमतो मुत्तजनस्या
 सम्भयात् अयोग्यस्य कर्थाण्व इत्तायामपि प्रव्रज्याया पुनरयोग्यतापरिधाने भगवतायोगादत्त पुथनिदद्वारमिति प्रापिशिस्तविधिद्वारे । समसापि
 सूत्तमप्यतिवारमापन्नस्य नियमत शतुर्गुरुक प्रायश्चित्तमस्य यत्त एव कल्प गमायताप्रधान स्तत्त स्तद्गुहे गुरुतरदोष इति कारणद्वारे तथा कारण
 नाम आलस्यत्त य त्पुन सुपरिजुद्ध कामादिकं तत्ता स्य न विद्यन् येन तदाश्रित्यापवादपदसविता स्यात् यत्त न संवत्ति निरपत्त त्तिष्ठकमंश्रयनि
 निता प्रारब्ध मेव स्य काप यथोक्तविधिना समापयन् मत्तात्मा वर्तते उक्तञ्च कारणमालम्बणमोक्ष पुणराणादयमुपरिसुद्ध गयस्समत्तनविज्जइ उचि
 यत्तपसाइणोपाय ॥ १ ॥ मत्तस्यानिरवयवत्तो आहत्तविद्यदत्तसमाणत्तो वट्टइगसगइप्पा किलिठकम्मक्खयनिमित्त ॥ २ ॥ नि प्रतिकमत्ताद्वारे यत्त मत्ता
 त्ता नि प्रतिकमशीरो अत्तिमत्तादिकं मपि कदाचि न्ना पनयति न च प्राणातकपि समापतिते व्यसने द्वितीयपट सेजत्त उक्तञ्च निव्वहित्तमत्ता
 रीरो अत्तिमत्ताइविनाउण्हसया पाणत्तिए वियमत्ता वसणभिनगइण्णयीण ॥ १ ॥ अप्पयत्तुत्तालोयण विसयादीउत्तोत्तमसत्ति अत्तायानुत्तायाउत्त यत्तु
 गयवचिय-मस्स ॥ २ ॥ भित्ताद्वारे-यत्तदेवचारित्त तथा विहारकम य तृतीयस्या पौरुष्या भयति ओपासु च पौरुषीपु कायोरसर्गो निद्रापि चा

रक्कुमारा नागकुमारा सुवणकुमारा विज्जकुमारा अग्निकुमारा दीवकुमारा उदहिकुमारा दिसाकुमारा चाउ

हे—भवणपत्तीया वाणमन्तरा लो. सिया वमाणिया । भवनपत्ती वानञ्चत्तर ख्योतिपो वैमानिक । संकित भवणवामो दमच्चिह्ना प० त० । द्विवे भवनप
 तो दग्गभेद कक्षा ते न्हव्हे—असुरकुमार नागकुमार सुवणकुमार विज्जकुमार अग्निकुमार दीवकुमार उदहिकुमार दिसिकुमार वाञ्छकुमार घणित्त

चत्वारणां स्थिता कल्पाश्च संज्ञायामपि क्रमो चावज्ञानमेव पुनरुच्यते । किङ्कर्ममयकरणे चत्वारि अविद्याकल्पा ॥ २ ॥ लिङ्गद्वारे-नियमितो द्विजिधेपि लिङ्गे ज्ञात तद्यथा-द्रव्यलिङ्गे ज्ञातलिङ्गे च एकोनापि विना विवर्तितकृत्योचितसामाचारयोगात्, लेश्याद्वारं-तेज प्रभृतिकासू त्तरा सु तिष्ठन् विज्ञप्तसु लेश्यासु परिहारविज्ञादिक कल्प प्रतिपद्यते पूर्वप्रतिपन्न पुन सर्वस्वपि कथं चि द्रवति तत्रापि स्वराविज्ञादितथासु नात्यन्तमस्ति तदुक्तं तया ज्ञानासु यत्तमानो न प्रज्ञतकालमत्र तिष्ठते किंतु स्तोकं यत् स्ववीयतात् भवति तेन त्रय प्रथमत एव कस्मा तदव चते उच्यते कमज्ज्ञात् उक्तञ्च लेश्यासु विमुक्तानां परिश्रयज्ञाने सासु पुष्टपदिवत्तत्पुण होज्ज्ञासद्यः मुक्तिरिति ॥ १ ॥ यद्यतस्मिन्निष्ठासु योवज्ञातवचनश्च येन दिदृश्यासु चित्तकल्पाणां तद्वा विवर्तयितुं न प्रवर्तमानं परिहारविज्ञादिकप्रतिपद्यते प दं प्रतिपन्न पुनरात्तरोद्वयोरपि प्रवर्तते कवल प्रायण निरनुवध आह च भाषास्मिन् विद्यते मण पद्विज्ज्ञातसो पद्विज्ज्ञातसो इयत्सु विभागां पृथक्

वक्तो न पद्विज्ज्ञातसो ॥ १ ॥ एव च द्वाणामेव उद्दामतिवृत्तमप्यपि भाषा रोदृष्टमुविज्ञातसो इमस्स पायनिर्गुणयो ॥ २ ॥ गणनाद्वारं जघन्यत स्वयो गणा प्रतिपद्यन्ते उरुपत ज्ञानसङ्गा पूवप्रतिपत्ता जघन्यत उरुपतौ वा ज्ञानं पुनपगणनया जघन्यत प्रतिपद्यमाना समविद्यति उरुपत सहस्रं पूर्वप्रतिपत्तका पुनजघन्यत ज्ञानं उरुपत सहस्रं आह च गणतुलितवगणा जज्ञापक्रियतिमपस उक्तोसा उक्तोसजज्ञेण मयसाच्चियपुष्टप द्विज्ज्ञा ॥ १ ॥ सत्तावीसजज्ञा सहस्रमक्तोसज्ज्ञेयपक्रियती सयमोसससमोऽग पक्रियजज्ञे उक्तोसा ॥ २ ॥ अन्य च यदा पूर्वप्रतिपन्नकल्पमध्या दंको निगच्छति अन्य प्रविशति तदो न प्रक्षेप प्रतिपत्तौ कदाचि दकोपि भवति पृथक् वा पूर्वप्रतिपन्नो प्येव प्रजनया कदाचिदक प्राप्यते पृथ क् वा उक्तञ्च पक्रियजज्ञाणामयथा ए होज्ज्ञातसोऽपि उक्तपक्वे पुष्टपक्रियत्रयविय प्रक्षयासक्तोपुष्टवा ॥ १ ॥ अत्रिगुहद्वारं-अत्रिगुहं यत्तु विधा सद्यथा द्रव्यानिग्रहा चत्वारिग्रहा कालानिग्रहा जावानिग्रहा य एते चा न्यत्र चचित्ता इति न न्यु यच्यते तत्र परिहारविज्ञादिकस्ये ते भिन्न

वा कैवलिक सजोगि केवलिनमम योगिकेवलिनम च सेतमित्याद्यु पसहार कदवक मूत्र सुगम तदेव उक्ता मनुष्य सप्रति देवप्रतिपाटनायेमात् ॥
 सेकितमित्यादि ॥ अथके ते देवा सूरिराष्ट्र देवा द्युतिविधा प्रज्ञा स्तथा-प्रवनवासिनो ? व्यन्तरा २ ज्योतिष्का ३ धैमानिका ४ तत्र प्रवनेषु
 वसन्तीत्येव शीला प्रवनवासिन गतद्वादुल्यतो नागकुमाराद्यपेक्षया द्रष्टव्य, ते हि प्रायो प्रवनेषु वसन्ति कदाचिदाजासु अमरकुमारा प्राशुर्यशा
 वासेषु कदाचि प्रवनेषु अथ भवनानामा वासानाम्बक प्रतिविज्ञाप उच्यते जनानि बहिर्वेदान्यन्त समचतुरस्याणि अथ पुष्करकर्णिका मस्याना
 नि आवासा कायमानस्यानीया महामण्डपा विविधमणिरत्नप्रदीपप्रनाखितसकतदिक्कमनाइति । अन्तर नाम अत्रकाश त च्चक्षुः अथ रूप
 द्रष्टव्य विविध जनननगरादासरूपम न्तर येपाते व्यन्तरा स्तत्र भजनानि रत्नप्रज्ञाया प्रथमे रत्नकाश उपपद्यते अन्तराजनशतमवहाप जाये
 ऽष्टयोजनशतप्रमाणे मध्यभागे प्रवन्ति नगराण्यपि तिर्यंग्लोके तत्र तिर्यंग्लोके यथा अष्टद्वीपद्वारारोपितं त्रिजयदयस्या स्यान्मिन् अष्टद्वीपे द्वा

दशयोजनसहस्रप्रमाणा नगरी आवासा त्रिष्टुपि लोकेषु तत छन्दोके पण्डकजनादायिति अथवा दियतमन्तर मनुष्येभ्यो येपाते व्यन्तरा तयादि
 मनुष्यानि चक्रवर्तिवासुदवप्रवृत्तीन् नृत्यषट् पचरति केचि द्यन्तरा इति मनुष्येभ्यो दियतान्तरा यदि वा विविधम न्तर शीलान्तर धनान्तर वा
 अश्वरूप येपात व्यन्तरा प्राकतत्वा च सूत्रे वाणमन्तरा इति पाठ यदि वाणमन्तरा इति पदसंस्कार तत्रेय व्युत्पत्तिरनाम न्तरापि वना
 न्तराणि तेषु प्रवा वाणमन्तरा पृथोदरादित्वा दुन्नयपदपदान्तरालवर्तिमकारागम, तथा द्योतयन्ति प्रकाशयन्ति जगदिति द्योतीपि त्रिमासिनि
 श्रीणादिकीशब्दव्युत्पत्ति तेषु प्रवा व्योतिष्का यथात्मादिभ्य इती कण् तवेवर्णवर्णदोसिसुवृत्ते इहण् आदि रित्नास्य तोप जननियता न न
 चानाव यदि वा द्योतयन्ति त्रिरोमुकुटोपरिहन्ति प्रज्ञामण्डलके सूर्यादिमण्डले प्रकाशयन्तीति व्योतिषो दवा सूर्यादय स्तथा हि मयस्य
 सूर्याकार मुकुटाग्रभागे चिह्न चद्रस्य चद्राकार नवग्रहस्यनवग्रहाकार ग्रहस्य ग्रहाकार तारकस्य तारकाकार ते प्रकाशयतीति आद च तत्प्रायज्ञा

स्या स्या द्रष्टव्या यदि पुन कथमपि जगद्वादनस्य परिशील प्रवति तथा ष्ये पो विहरन् पि मन्त्राज्ञाणे न द्वितीयपदमा पद्यते किन्तु तत्रैव यथा कल्पमा स्मीय योग विदधातीति उक्तञ्च तद्व्याप्यपरिशील भिक्वसाकाराविहारकालोऽसंसासुउत्सृगो पायग्रप्यायनिन्दति ॥ १ ॥ जघावलमि खोणे अविहरमाणोविनवरमावर्जे तयैवग्रहाकाप्यगुणद्वयजोगमन्त्राज्ञो ॥ १ ॥ एते च पारिहारविशुद्धिका द्विविधा तद्यथा-इत्तरा यावत्कथि नाद्य तत्र ये कल्पसमाप्त्यन्तर तमेव कल्प गच्छन्नास मुपयास्पति तंउत्तराय पुन कल्पसमाप्त्यन्तरमग्रयधानेन जिनकल्प प्रति पदस्यन्ते ते या उदकयिका, उक्तञ्च-इत्तरियथरूप जिनकल्पेआवर्कहियति अत्र स्थविरकल्प ग्रहण उपलक्षण म्यकल्प चेतिद्रष्टव्य तत्रे त्वराणा कल्पप्रज्ञावा हेव मनुष्यतैयैर्योनिरुता उपसर्गं र सद्योच्यतिन आतङ्क यतीवा विपद्या श वेदना न प्रादु सन्ति यावदकयिकाना सुक्तययुरपि ते हि जिनकल्प प्र तिपरस्यमाना रजनकल्पप्रावम नुविदधति जिनकल्पिकाना वो पसर्गादय सम्भवतीति उक्तञ्च इत्तरियाणवसग्गा आतकावेयणायनन्दति वा उदरियाणजज्ञया इति तथा सूक्ष्मो लोभाज्ञावशेप सम्पराय कपायोदयो यत्र तत्सूक्ष्मसम्पराय त च द्विधा विगुच्यमानक सक्तिरूपमानवा च तत्र विगुच्यमानक लपकश्रणिमुपशमश्रेणिवा समारोहत सक्तिवयमान तू पक्षमश्रेणित प्रथ्यवमानस्य अथास्यातमिति अथ गृब्धो यथार्थं आह अमिबिधौ यथातथ्यन अन्नविधिना वा यस्यात कथित अकपाय चारित मिति तदा स्यात, उक्तञ्च अत्तसद्दोषहत्य आङ्गान्निविहीएकहियम ख्वाय चरणकसायमुदय तमहक्त्वायजपक्षाय ॥ १ ॥ यथास्यातमिति द्वितीयमम तस्या य मन्वर्थ । यथा समस्मिन् जीवलोक स्यात प्रसिद्ध अक पाय जगति चारित्र मिति तथैव यत् यथास्यात तच्च द्विधा ढाट्यस्थिक कैवलिक च तत्रढाट्यस्थिकरुमुपशान्तभोऽरगुणस्यानके क्षीणभोऽरगुणस्यानके

कुमारा थणियकुमारा तंसमाससुदुविहा पसता, तजहा-पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय सेत्त यत्रगवासी से

कुमार १० । अमरजनार नागकुमार सार्णकुमार विद्यकुमार अर्यकुमार दायकुमार इटिकमार डिगिकुमार वायकुमार स्तान्कुमार १० । एते स मासत्रा दुविहा प० त० । ए सत्तपथो दीयभेद कथा त कहिहे-पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय । पथीगा अपथीगा । सेत्त भवणवासी । एतल भवनपती क

१०, गधर्वाद्वादेशविधा तद्यथा-हाहा १ हू २ तुम्हार ३ नारदा ४ खण्डिगदिका ५ भूतवादिका ६ कादम्बा ७ महाकादम्बा ८ रेवता ९ जिज्ञावसय १० गीतरतयो ११ गीतयशस १२, यत्ता खयोदशधा स्तथाया-पूषतद्रा १ माणिकद्रा २ द्येतद्रा ३ हरितजद्रा ४ सुमनोजद्रा ५ व्यतिपातिरुजद्रा ६ सुजद्रा ७ सर्वतोन्नद्रा ८ मनुष्यपक्षा ९ वनचिपतयो १० वनाशरा ११ रूपयक्षा १२ यक्षोत्तमा १३ राक्षसा समुच्चिदास्तथा-प्रीमा १ महाप्रीमा २ विप्रा ३ विनायका ४ जलराक्षसा ५ राक्षस ६ राक्षसा ७, प्रतानवविधा स्तथाया-सुरूपा १ प्रतिकूपा २ अतिरूपा ३ प्रतुतीतमा ४ रुज्ज्दका ५ महारुज्ज्दका ६ महावगा ७ प्रतिष्ठिता ८ आकाशगा ए, पिशाचा पौकशविधा स्तथाया-कूमागहा १ पदका २ जापा ३ अङ्गिका ४ काला ५ महाकाला ६ चोत्ता ७ आचोत्ता ८ तालापिशाचा ९ मुररपिशाचा १० अधस्तारका ११ देश १२ विदे

पचविहा पणत्ता, तजहा चढासूरागहनरुक्तातारा तेममासले दुविहा पणत्ता, तजहा पज्जत्तगाय झुप जत्तगाय से कित जीडसिया स कित वेमागिया २ दुविहा पणत्ता, तजहा कप्पोवग्गाकप्पाईयाय संकित कप्पोवग्गा २ वारसविहा पणत्ता, तजहा सोहम्मा इसाणा सणकुमारा माहिदा वनलोया लतया महासुक्का सहरसारा झानया पाणया झारणा झुचुया तेसमासले दुविहा पणत्ता, तजहा पज्जत्तगाय झुपज्जत्तगाय

छ-पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय । पयासा अपयासा । सेत जाडसिया सकित वमागिया दुवहा प० त० णतन ज्योतिपो कछा, डिब वेमानिक दायपका र कछा ते कहै-कप्पोवग्गा कप्पाइया । कप्पोवग्गा कप्पाइया । सकित कप्पोवग्गा २ वारसविहा प० त० । डिबे कप्पावग्गा २ भेड कछा ते कहै । माइया इसाणा सणत्तकमारा माइदा वमालाया लतया सुका सहम्मा रा आणया पाणया आणया पणत्ता त समामया दुविहा प० त० । सोधमं इया न सनत्तुमार माइन्ड ब्रह्मलोका लोका शुक्र सहस्रार ध्यानत प्राणत आरण अच्यत ते सधपयको दायपकारे कछा ते कहै-पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय । पयास्ता अपयास्ता । सेत कप्पोवग्गा सकित कप्पाइया २ दुविहा प० त० । ए कप्पावग्गा कछा, डिबे कप्पावोतना दोगभेद कछा ते कहै-गोमज्ज

प्यक्त द्योतयते इति द्योतीति विमानानि तेषु प्रवा द्योतिका यद्वाज्यीतियो देवा ज्योति रिव ज्योतिष्का मुकुटे शिरो मुकुटीपगृहिनि प्रजा मगदन्ते रुज्ज्वलै मयचद्रग्रहनक्षत्रारकाणा मगदन्तै र्यथा स्वर्चिकै विराजमाना द्युतिमतो ज्योतिष्का ज्ञवन्तीति तथा विविध मन्वते उपप्लुत्यन्ते पुण्यवद्भि जीवै रिति विमानानि तेषु जवा वैमानिका , सम्प्रत्ये तेषा मंब कमेजाननभिचित्सुराह-संकितप्रवणावासी इत्यादि ॥ अतुरा श्व ते कुमारो अतुरकुमारः एव नागकुमारा इत्याद्यापि ज्ञावनीय अथकस्मा दंतं कुमार इति व्यपदिश्यति उच्यते कुमारवर्चोष्ठनात् तथाहि-कुमारो ते सुकुमारमुदुमधुरललितगतय अगारं जिप्रायकृतविशिष्टविशिष्टतरोत्तररूपकिया कुमारव सो दृतरूपेण ज्ञापान्नरणप्रहरणाचरण यान वा हन कुमारश्चोत्तराणां क्रीडनपरा श्व तत कुमार इव कुमार इति , किनरा इत्यादि किन्नरा दशविधा स्तद्याया किन्नराः किपुरुषा २ किपु रूपोत्तमा ३ किन्नरोत्तमा ४ रुद्रयगमा ५ रूपशालिन ६ अग्निदिता ७ मनोरमा ८ रतिप्रिया ९ रतिश्रेष्ठा १० किपुत्तया दशविधा स्तद्याया पुरु पा १ सत्युरुषा २ महापुरुषा ३ पुरुषपृथ्वी ४ पुरुषोत्तमा ५ अतिपुरुषा ६ महादेवा ७ मरुत ८ मेरुप्रतिजा ९ यज्ञस्वल्त १०, महोरगा दश विधा स्तद्याया नुजगा १ भोगशालिन २ मरुकाया ३ अतिक्राय ४ रुक्मशालिन ५ मनोरमा ६ महायगा ७ मलययगा ८ मेरुजाता ९ भास्वत

कित वाणमतरा २ झुठविहा प०, तजहा किन्नरा किपुसिमा महोरगा गधव्हा जस्का रस्कसा नूया पिसा या ते समाससुदुविहा पण्हा, तजहा पज्जत्तगाय सेत्त वाणमतरा से कित जाइसिया २

द्या । संकित वाणमतरा २ झुठविहा प० त० । द्विवे वानव्यन्तर देवताना ८ भेट कक्षा ते कहैछे—किन्नरा किपुसिमा महोरगा गधव्हा जस्का राखमा भूया पिसाया ७ तें समाससुं दुविहा प० त० । किन्नर किपुत्तय महारग गन्धर्व यच्च राचस भूया पियाच ए सच्चपश्वकौ द्योयभेटे कक्षा ते कहैछे—पज्जत्त गाय त्रपचत्तगाय । पण्हा अपर्गता । सेत्त वाणमतरा संकित जोगसिया २ पञ्चविहा प० त० । ते एतल वानव्यन्तर कक्षा, द्विवे ज्योतिषोना ५ भेट कक्षा त कहैछे—चन्द्रा सूर गहा नखता तारा एते समाससुं दुविहा प० त० चन्द्र सूर्य गहनच तारा ५ । ए सच्चपश्वकौ द्योयप्रकारे कक्षा ते कहै

१०. गपथाद्वाटशविधा तयथा-ह्या १ ह्रस्व २ तुम्यस्व ३ नारदा ४ ऋषिप्रादिका ५ भूतवादिका ६ कादम्बा ७ मृदाकादम्बा ८ रेवता ९ विद्यावसव १० गीतरतयो ११ गीतयज्ञस १२, यत्ना स्वयोदशधा स्तथा-पूषन्नद्रा १ माणिप्रद्रा २ द्योतन्नद्रा ३ हरितन्नद्रा ४ सुमनोन्नद्रा ५ व्यतिपातिन्नद्रा ६ सुन्नद्रा ७ संयतोन्नद्रा ८ मनुष्यपक्षा ९ वनाधिपतयो १० वनाहार ११ रूपयक्षा १२ यवोत्तमा १३ राजसा सप्तविधास्तथा-प्रीमा १ महानोमा २ विप्रा ३ विनायका ४ जलराजसा ५ राजस ६ राजसा ७, भूतानवविधा स्तथा-सुरूपा १ प्रतिरूपा २ अतिरूपा ३ तूतोत्तमा ४ रुक्मका ५ महारुक्मका ६ महावगा ७ प्रतिच्छन्ना ८ आकाशगा ९, पिशाचा योक्तयविधा स्तथा-कूष्मायदा १ पदका २ जापा ३ आद्रिका ४ काला ५ महाकाला ६ चाक्षा ७ आचोक्षा ८ तालपिशाचा ९ मुररपिशाचा १० अघस्तारका ११ देश १२ विदे

पचविहा पणत्ता, तजहा चदासूरागहनरुक्तातारा तेममासडे दुविहा पणत्ता, तजहा पज्जत्तगाय अप्प ज्जत्तगाय से कित जीडसिया म कित वेमाणिया २ दुविहा पणत्ता, तजहा कप्पोवग्गाकप्पाईयाय संकित कप्पोवग्गा २ वारसविहा पणत्ता, तजहा सोहम्मा डसाणा सणकुमारा माहिहा वज्जलोया लतया महासुक्का सहरसारा आणया पाणया आरणा अण्णुया तेसमासडे दुविहा पणत्ता, तजहा पज्जत्तगाय अप्पज्जत्तगाय

छ-पज्जत्तगाय अप्पज्जत्तगाय । पवाता अपवाता । सप्त जाडसिया संकित वमाणया दुवहा प० त० एतले ज्योतिषो कक्षा, द्विव वेमार्निक्त दायप्रका र कक्षा ते कहै—कप्पोवग्गा कप्पाइया । कप्पोवग्ग कप्पावग्गा २ वारसविहा प० त० । द्विवे कप्पावग्गना १२ भेद कक्षा ते कहै । माडग्गा डसाणा मणत्तकुमारा माडग्गा वज्जलोया लतया सुक्का सहरसारा आणया पाणया आरणा अण्णुया ते समासया दुविहा प० त० । सोधर्म इया न मन्तकुमार माडग्ग तत्तनो क लात्तक शुक्क मडस्सर आनत प्राकत आरण अण्णुते ते सप्तपथको दायप्रकारे कक्षा ते कहै—पज्जत्तगाय अप्पज्जत्तगा य । पवाता अपवाता । सप्त कप्पावग्गा संकित कप्पाइया २ दुविहा प० त० । ए कप्पावग्ग कक्षा, द्विवे कप्पावोत्तना दांगभेद कक्षा ते कहै—गोवज्ज

शा १३ महाविदेग १४ तूष्णीका १५ वनपिशाचा १६ इति ॥ कप्योपगा कप्यातीयति ॥ कत्याचार स चे ह इन्द्रमामानिकस्त्रयस्त्रिंशोऽदिग्रहारूप
स्मृपगता सौधर्मज्ञानादिदयराकनिवासिन यथोक्तरूप कल्पमतीता अतिक्रान्ता कल्पातीता अक्षतनाचस्तनग्नैवेयकादिनिवासिन स्तोत्रं सर्वेय्य
२ मिन्द्रा स्ततो जयन्ति कन्यातीता , कल्पोपगान् दृशयति-सोहस्त्रीषाणाइत्यादि ॥ सौधर्मदेवतोकनिवासिन सौधर्मा , इशानदेवलोक्तनिवासिन

संस्त कप्योपगा से कित कप्याईना २ दुविहा पयत्ता , तजहा गेविज्जगाय शुगुत्तरोववाडयाय से कित
गेविज्जगा २ नवविहा पयत्ता , तजहा हिठिमहिठिमगेविज्जगा हिठिममज्जिमगेविज्जगा हिठिमउवरिम
गेविज्जगा मज्जिमहिठिमगेविज्जगा मज्जिम २ गेविज्जगा मज्जिमउवरिमगेविज्जगा उवरिमहिठिमगेविज्ज
गा उवरिममज्जिमगेविज्जगा उवरिम २ गेविज्जगा तंसमासनु दुविहा पयत्ता , तजहा पज्जन्तगाय अपज्ज

गाउ अणुत्तरोववाडयाय । ८ नव गेवेयक ५ अणुत्तरविमान । सेकित गविज्जगा २ नवविहा प० त० । हिवे गेवेयक वासीना नवभेद कट्ठा ते कहैके ।
हिठिम २ गे रज्जगा हिठिममज्जिमगेविज्जगा हिठिमउवरिमगेविज्जगा मज्जिमहिठिमगेविज्जगा ४ । प्रथम गेवेयकनो हेठलांगेवेयक प्रथम विक्कनो उपरि
नोगेवेयक प्रथम विक्कनो मध्यगेवेयक होतिय विक्कनो प्रथम गेवेयक होतिय विक्कनो मध्यमगेवेयक । मज्जिम २ गे० मज्जिमउवरिम गे० उवरिमहिठि
म गे० उवरिममज्जिम गे० उवरिम २ गेविज्जगा ५ । होतिय विक्कनो चाओ गेवेयक तोजा विक्कनो प्रथमगेवेयक बीजा विक्कनो मध्यमगेवेयक तोजा
पिक्कनो ऊपरिहोगेवेयक । एते समासभा दुविहा प० त० । ए सधपै टायप्रकारे कट्ठा तेकहैके । पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय । परात्ता अपर्यात्ता ।
सेत्त गेवेज्जगा । एतले गेवेयकदेवता कट्ठा । सेकित अणुत्तरोववाडयाय २ पचविहा प० त० । हिवे अणुत्तरवासीना पावभेदे कहैके ।
विज्जया वेत्तयता जयता अपराजित्या सळइसिहा एते समासभा दुविहा पयत्ता तजहा । विखा वेत्तयन्त जयन्त अपराजित सर्वाथिसिष्ठण सज्जेपे टाय
भेदेके । पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय । पर्यात्ता अपर्यात्ता । सेत्त अणुत्तरोववाडया सेत्त कप्याइया संस्तवेमाथिया । एतले अणुत्तरवासी कट्ठा एते कल्पा

इदानीं, एवमव्यापिभावनीय ॥ तत्र तात्पर्या सद्यपदेष्टो यथापञ्चालदेशनिवासिन पञ्चाला इति ॥ इति श्रीमत्पण्डितगिरिविचिताया मन्नापना टीकाया प्रथम प्रज्ञापनास्य पद समर्थितमिति ॥ १ ॥ यथाग्र १२२५ ॥ त दय व्याख्यात प्रथम पद समर्थति द्वितीय मारभ्यते । तस्य वा य मन्त्रिसम्यस्य प्रथमपदे पृथिवीकायिकादय म स्तुपिता इह तु तेषा मय स्थानानि प्ररूप्यते तत्र चेद मादिसूत्र-करणे प्रते इत्यादि ॥ कहिति ॥ कास्मिन् शम्भुर्धोवाक्पालकादे ॥ नन्दतति ॥ परमशुभमन्त्रण, वादरपृथिवीकायिकानां पयासानां स्थानानि स्वस्थानादीनि मन्नासानि प्ररूपितानि एव गी

ज्ञाय मन्त गीविज्ञागा सं कित अणुत्तरोवद्याडया २ पचविहा पयज्ञा, तजहा विजया वैजयता जयता
अपराजिया सवृष्टसिद्धा तेसमासन् दुविहा पयज्ञा, तजहा पयज्ञागाय अणुत्तरोववा
इया संत कप्याडया संत वेमाणिगा संत देवा संत पचिडिया संत ससारममावयजीवपन्तवणा संत जी
वपन्तवणा संत पन्तवणा पन्तवणाए पठमपयसमन्त ॥ १ ॥ कहिण न्न । वादरपुढाचिकाड
याण पयज्ञागाण ठाणानिगणा प० ? गोयमा ! सठाणिण अणुत्तुपुढवीसु तजहा-रयणपयनाए सक्करप्प

तीत कक्षा वैमानिक कक्षा । संत देवा संत पचेडिय ससारममावयजीव पयज्ञागा संत जीव पयज्ञागा संत पयज्ञागा पयज्ञागाए भगवदए पठ
न पय समन्त । एतले देवता कक्षा एतले पचेडिय कक्षा एतले ससारममावयजीव प्रज्ञापनाओ अधिकार कक्षा पचिडे पद पृथ्वीकायादिक कक्षा,
हिब दूजेपड जीवने ऊपजयानां ठाम कहिके—एतले पयज्ञागा भगवतीनां प्रथमपट समानत यथो ॥ २ ॥ कइणभते वायरपट्टीका
रयाण पन्तवणा प० । किंवा वेभगवन् वादर पृथ्वीकायणा पर्याप्ताना धानक कक्षा स० । गोयमा महुणेण षड्मपठवीसु त रयणपयमाए सक्करप्प०
वागु० पकप्प० धूम० तम० तमतमण० देमिण० स० । रतनप्रभा यर्करप्रभा वालुकप्रभा पड्डप्रभा धूमप्रभा तमतमप्रभा जघोशिलासिद्धको स० ।
प्रज्ञोलीए पायाने सुभवेसु भवणपयल्लेसु पिरवपयल्लेसु पिरवावल्लियासु पिरवपयल्लेसु इहटलोयकप्पेसु विभाणेषु । पृथ्वीलगे यथोलीके पातालकलगे भव

तमस्याभिना प्रप्रेरते प्रगवानाए वद्वेमानस्वामी गो० सहाणेणमित्यादि । ननु गीतमोपि प्रगवा नुपचितकुशलमूलो गणधर तीर्थकरनापितमावृका पदप्रथममावाप्रप्ररुद्रुतप्रानावरत्नयोपग्रम श्रुतदशपूर्ववित् सर्वाक्षरसन्निपाती विवक्षिताग्रप्रतिज्ञानसमन्वित एव तत किमर्थं पृच्छति न हि चमूदृष्टपूर्वादि स्योत्कृष्टश्रुतलब्धिसमन्वितस्य किञ्चित्प्राप्तापनीयम विदितमस्ति यतस्त-सखाइगविजवे साहइजवापुरोत्रपेच्छेज्जा । नयणगणा इमसी पियाराइगमखडमत्या ॥ १ ॥ सत्य मेतत् केवल जानन्नत्र गीतमस्वामी प्रगवान न्यत्र विनयेन्य प्रतिपाद्य तत्सम्प्रत्ययनिमित्त विवक्षिता ये पृच्छति यदि वा प्राप सवत्र गणधरप्रश्रुतीकरनियचनरूप मूत्रमतो प्रगवाना यस्यामो पोत्यमव सूत्र रचयति, अथवा सम्मयति तस्यापि गणधृतो गीतमस्यामिनो ऽनाप्राग खट्वास्यात् उक्तच-न हि नामा नाजोग खट्वास्याह कस्य चिन्ना स्ति । ज्ञानावरणीय हि ज्ञानावरणप्रकृति कर्म ॥ ततो जातसगय सन् पृच्छतीति न कश्चि द्वेप, गोयमा इति लोकप्रथितमहाविशिष्टगोत्रात्रियाकोपमामन्नशब्दानि हेगौतम ! गौतमगोत्रे ति भाषाय ॥ सहाणेण इति ॥ स्वस्थान यत्रा सुते यादरपृथिवीकायिका पर्योप्ता आसना युवणादिविज्ञागेना दसु शक्यन्तं तत्स्वस्थानमिति प्राच स्वस्थानग्रहण मुपपातसमुद्गातस्याननिवृत्त्यर्थं तन स्वस्थानम द्नीकृत्येति ज्ञाव ' अष्टासु पृथिवीषु सबत्र यादरपृथिवीकायिकाना पर्योप्ता

न्नाए वालुयप्पन्नाए पकप्पन्नाए धूमप्पन्नाए तमप्पन्नाए अहेसत्तमाए इंसीप्पन्नाराए अहोलीए
पायलेसु जवणंसु जवणपत्यहेसु निरएसु निरयावलियासु तिरयपत्यहेसु उहुलीए कप्पेसु विमाणेसु वि

मस्य नके भजनपतिनिवासै नरकप्रकीर्णरूपे नरकावास आवल्लोशेण नरकने पाथुल्ले कहर्नोके कल्पदेयलोके सौधर्मादिके विमान । विमायबल्लिए वि नायपत्यडुम तिरियल्लोण टुकेसु कूडम सनेसु सिद्धोसु घमारेस विजएसु वल्लारएसु वेलासु वेदयासु वारेसु तोरणेसु टीवेसु समेस्सु इत्थण पायरपुटवोकादयाण पल्लत्तगाण ठायाण सववाएणठाणा । विमानआवल्लिका विमानेनामे विमान ते प्रतरे तिरिल्लोके किंइट्ठरूपवतणे कूटै सिहायत र कूटगेपपर्वत गिउरसहित पर्वत तेनामे प्राम्मार विजये कच्छादि वच्चस्कार विद्युगभादि प्रवर्त्त वयंधरपर्वत हिमवन्तादि बेलमुद्रादि वेदिक जवद्वीप

ना स्थानानीति योग , ताएवा एते पृथिवीनामग्राह माह-तत्रैत्यादि ॥ तद्यथा रत्नप्रज्ञाया यावदष्टम्या भीपत् प्राग्ज्ञाराया तथा ऽधोलोके पातालपु
पातालकलशेषु वलयामुसप्रच्युतिषु ज्वनेषु ज्वनपतिनिकायावासरूपेषु इह ज्वनग्रहणेन भवनानामेव केयलानाग्रहण ज्वनप्र
स्तटग्रहणेन तु ज्वनानामपान्तरालस्यापि तथा नरकेषु प्रकीर्णकरूपेषु नरकावासेषु नरकावस्थितेषु नरकावासेषु नरकप्रस्त

माणावलियासु विमाणपत्यन्तेसु तिरियलोपु टर्केसु कून्तेसु सिलेसु सिहरीसु पज्जारिसु विजयेसु वखारेसु
वासंसु वासहरपद्मसु वा वेलासु वेइयासु दारेसु तोरणसु दीवंसु समुहेसु एत्यण वादरपुठवीकाडयाणं

दि जगतोद्धार विजयादि तोरणधारादिसवधौ घणैः सुसंघीप समुद्रप्रति ठामैः पूर्वोक्तस्थानके जे पर्याप्ता आऊवो भोगवै तेलेवा केतलाएक इमकह
पृथ्वीजायना असलगतिना लेवा पर्याप्ताना ठामकक्षा ऊपजवो सर्वलोका । लोयख असखिज्जाऽभागे समुद्रवाएण लोयख असखिज्जाऽभागे सङ्घाणेण । लो
क ते असख्यातमेभागे समहातथायी लोकने असख्यातमेभागे स्वस्थान रत्नप्रभा अन्तराक्षगे चेते । लोयख असखिज्जाऽभागे कडिणभते वायरपुठवीका
इयाण अपल्लत्तगाण ठाणाण प० । लोकने असख्यातमेभाग ठामहुवै, हिंवे किहा भगवन् वादर पृथ्वीकाइयाना प्रपर्याप्ताना ठामकक्षा । गोयमा जारये
व वायरपुठवीकाइयाण पल्लत्तगाण ठाणा । हेगोतम जिहा वादरपृथ्वीकाइया पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकक्षा । तत्थेव वायरपुठवीकाइयाण अपल
त्तगाण ठाणा प० । तिहा वादर पृथ्वीकाय अपर्याप्ताना ठामकक्षा । उववाएण समुद्रवाएण सवलोए सङ्घाणेण लोयख असखिज्जाऽभागे । ऊपजवो स
मुहात सर्वलोके मरणसमहातने वस्यहुवै स्वस्थानलोकेने असखातमेभागे । कडिणभते समुद्रपुठवीकाइयाण पल्लत्तगाण ठाणा प० । किहा भ
गवन् मूज्ज पृथ्वीकाय पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकक्षा । गोयमा समुद्रपुठवीकाइया पल्लत्तगा जे अपल्लत्ता ते सव्वे एगविहा अविसेसा अणाणसा ।
हेगोतम मूज्जपर्याप्ता अपर्याप्ता पृथ्वीकायने सर्वनो एकविधकै विशेषरहित जिम पर्याप्ता तिम जाण्णिवा । समलोय परियावसुगा प० । स
र्वनाक व्यापारदाकै रहवो कक्षो । समणासवो । अहो अमण आउकाइयाण पल्लत्तगाण ठाणा प० । किहा

तमस्यामिना प्रप्रेरते जगयानां वदमानस्यामी गो० सहाजोभिम्यादि । ननु गीतमोपि प्रगता नुपषितकुगानूनो गणपः तीर्थहरनापितमायुक्ता
 पदश्रवणायावाप्तप्रप्रेरितज्ञानावरणयोपगम व्युदकापुयवित् सत्रावरयन्निपातो विविधितार्थप्रतिष्ठानसमन्वित एव तत किमर्थं पृच्छति न हि
 चतुदश पूर्वविद् सर्वारकट्युतनत्थिसमन्वितस्य किंस्विदप्राज्ञापीयन विदितमस्ति यतवक्त-सुमाधुयवित्तं साङ्गदवापुर्गोउपेष्टेष्टा । नमनप्रता
 इमसी विद्याण्ड्यमउभतरा ॥ १ ॥ सत्य नेतत् केवल जात्रय गीतमस्यामी जगयान स्य विनयेन्य प्रतिपाद्य तसुस्मृत्ययनिमित्त विविदिता
 यं पृच्छति यदि वा प्राय सद्य गणपदप्रतीकरीयपत्रपुप मुनतो जगयाना यथासौ पोत्यमय सू रथयति, चत्वा मुनयति तस्यापि
 गणजतो गीतमस्यामिो उनाजान छत्रस्थयात् उक्त-न हि ताना नांग द्यस्त्रस्यष्ट कस्य पिया स्मि । प्रागावरयोपि हि प्रागावरप्रकृति
 कर्म ॥ ततो गीतसगय सन् पृच्छतीति न कश्चि दोष, तेषमा इति लोकप्रचितमहाविज्ञादुर्गोत्राणिपायकोपमानयज्यानि क्षेपितम् । गीतमगीत्र
 ति जावाद्य ॥ सहाजो इति ॥ स्यान्मान यत्रा सते प्रादरपुयिणीकापिता पर्याप्ता एवार्थविनागेना दसु यस्म्यत तस्मस्यानमिति प्राप
 स्वस्यानग्रहण मुपपातसमुद्गातस्थाननियुक्त्यं तन स्वस्यानम ह्रीकृत्यति जाय । अष्टासु पुयिणीषु मयत्र यादरपुयिणीकापिताना पर्याप्ता

चाए बालुयप्पन्नाए पकप्पन्नाए धूमप्पन्नाए तमप्पन्नाए अहेरत्तमाए उन्नीप्पन्नाए अहोलोए
 पायालिसु नवणंसु चत्रणपत्थेसु निगंसु निरयावडियासु तिरयपत्थेसु उहलोए कप्पेसु विमाणेसु वि

तस्य नक्के भवनपतिनिवासै नरकप्रकोपंरूपे नरकावास यावदोत्रेण नरकने पायले लब्धोक्ते कम्पद्वेषोक्तं मोक्षार्थोक्ते विनायकमिष्ट वि
 नाणपत्थेडु तिरिउलोए टुकेसु कूडसु मत्तेसु मिदरासु यभारेसु निचएसु यभारेसु वासएरपथएसु वेत्तासु वेत्तासु पारसु तारेसु डोरेसु मन्देसु इत्थ
 गाउरपटवोक्कादयाण पल्लसगाण ठाणाण उववाण्णठाणा । विनायकयाचनिक्का विनायेनामे विमान ते प्रतरै तिरिउलोए कप्पेसु मत्तेसु म्हा विहायत
 १ हटयेयपत्तं निगुरसहित पवेत तेनामे प्राभार विजय कच्छादि चम्पत्तार विगुप्रभादि पत्तेसु यथप्रपत्तं विमवत्तादि येनमुद्रादि योदिक् जपूरोप

प्राग्भारेषु इंपत्कुञ्जेषु विजयंषु कच्छादिषु वल्लभारेषु विद्युत्प्रभादिषु पर्यतेषु वर्षेषु भरतादिषु वर्षेषु हिमवदादिपर्वतेषु खेलासु समुद्रादिषु नीयरमणजूमिषु वेदिकासु चम्यद्वीपजगत्यादिसम्बन्धीषु द्वारेषु विजयादिषु तोरणेषु द्वारादिसम्बन्धीषु किम्बदुना सामस्यन सर्वेषु समुद्रेषु ॥ एत्य गमित्यादि ॥ अत्र गतेषु स्थानेषु वादरपृथिवीकायिकानां प्रयासानां प्रज्ञासानां मया अन्यैरपि तीर्थकृद्भिः ॥ उववाएणमित्यादि ॥ उपपातो वादरपृथिवीकायिकानां प्रयासानां यदनन्तरं मुक्तं तत्प्राप्त्यान्निमित्तं सति प्राव स्तोत्रोपपातमगोक्त्येति ज्ञातः, लोकास्य चतुर्दशरजालकस्या सहस्रानां अत्रैके व्याचक्षते-अजुसूत्रयो विचित्रं स्ततो यदा परिस्वरश्चजुसूत्रनयदज्ञानेन वादरपृथिवीकायिका पर्यासा स्थित्यन्त तदा ये स्वस्थान प्राप्ता आहारादिपयसि परिसभास्या विनिश्चयिपाकतो वादरपर्यासपृथिवीकायिकार्युर्वेदयन्ते तं गव द्रष्टव्या नापान्तरालगता अपि तदानीं विपाकायुधेदना सजागता स्वस्थानं प्लवतपारक्षप्रभादिकं समुदितमपि लोकस्यासहस्रजगतेषु तत उपपातनापि लोकस्यासहस्रजगता वदितव्या अपेत्यनिदधति पर्यासा हि नाम वादरपृथिवीकायिका स्वस्तोका स्ततस्त उपपातरालगतावपि परिगृह्यमाणा लाकस्या सहस्रपन्नाग यवति न कश्चिद्दोष तथा च समुद्रातेषां लाकस्या सहस्रपन्नाग गव वदत्यन्ते अन्यथा समुद्रातावस्थायां नपि स्वस्थानातिरेकेण क्षत्रान्तरवर्तित्यसम्भवाद सहस्र

जल्यत्र वादरपृथिवीकाडयाण पञ्जज्ञगात्र ठाणा पसुत्ता, तल्यत्र वादरपृथिवीकाडयाण अपञ्जज्ञगात्र ठाणा पणत्ता, उववाएण नहलोए समुघाएण सव्वलोए सठाणंण लोयस्स अस्सखंज्जडनागे कहिण जत्ते । सुज्जम पृथिवीकाडयाण पञ्जज्ञगात्र अपञ्जज्ञगात्र जेपञ्जज्ञगात्र जे

हेमवद्वातप्रकारात् प्रपार्तिगते ठाम कहवो । गोयमा अत्थे । वाधरथाउकारायाण पञ्जज्ञगात्र ठाणा तल्यत्र वाधरथाउकारायाण अपञ्जज्ञगात्र ठाणा पणत्ता । हेमवत्वात् जिज्ञा वातप्रकाराया पर्यासानां ठाम कच्छा तिहा वादर प्रकाश उपपार्तिगता ठाम कच्छा । उववाएण सव्वलाए समुघाएण सव्वलोए सठाणंण । उपपन्ना सव्वलं जे समुद्रात सर्वनाके । सठाणंण लोयस्स पसुत्तिज्जडनागे । स्वस्थानक लोकन असख्यातेमे भागे । कहिण भन्ते सुहुमत्ता

तेषु नरकभूमिरूपेषु अनापि नरकनरकावलिकाग्रहणेन केवला गत्र नरकावाभा परिगृह्यते, नरकप्रस्तदग्रहणेन तु नरकापालराल मपि ऊर्ध्वलोकं कल्पेषु सीधमिकादिकल्पेषु, अनेन द्वादशदेवलोकपरिग्रहविमानेषु ग्रैवयकसम्बन्धिषु प्रकीर्णकल्पेषु विमानावलिकासु आवालिकाप्रविष्टेषु ग्रैवय कादिविमानेषु विमानप्रस्तदेषु विमानभूमिकारूपेषु अथापि प्रस्तदग्रहण विमानात्तरालप्राविना मपि यथासम्भवप्राविना वाटरपर्याम्पूर्यवीका यिकाना स्थानपरिग्रहाद्यं तयापि तिर्यंग्लोकं दृष्टुं क्षिप्तकल्पे सिद्धायतनकूटप्रवृत्तिषु शैलेषु क्षिप्तहीनपवतषु शिखरिषु शिखरयुक्तेषु पर्वतेषु

पञ्जज्ञगण ठाणा पसुता, उववाएण लीयस्स अस्सखेज्जङ्गणे समुग्घाएण लीयस्स अस्सखेज्जङ्गणे सठाणेण लीयस्स अस्सखेज्जङ्गणे । कहिण भत्ते ! वादरपुढविकाइयाण अपज्जत्तगण ठागा पसुता ? गीयमा !

नगवन् वादरप्रकाय पर्याप्तान ठामकक्षा । गायमा सङ्गण सजसु चणादहो वनिएस । हेगौतम स्वस्थानभाजो सत्त पृथिवीये वनोदधि ठामे सत्त वनोदधिना वनयनेठामि । अङ्गालोण पायालेम भवणस भवणपल्लस । पधोलाके पातालना भवनविपे भवनना पायडाविपे । उड्डनोए कपेसु विमाने सु विमापवलिवाएसु । ऊर्ध्वलोकं कल्प वारैदेवलोके विमाननी अणोविपे । विमानपल्लडेसु तिरिगलोए अगडेसु उमनइणसु दहेसु वावीसु पुखरिणीसु । विमान प्रतरविपे तिरिग्लोके तलावपानविपे नदो गङ्गादिकविपे वृहविपे पक्षाद्रहादि वावहोविपे पक्करणोविपे । दौहियासु गुम्फालियाएसु सरसु । दौहिंको गुम्फालिकावाव विपे सरावरविपे । सरपतिएसु सरसरपतिया विलपतियास उम्फारेसु विलसेसु वण्णेषु टीवेस समेसु । तरोवरनीपाती पा पाणवम्भ विपे विलपतिविपे जलस्थानके विलपिनामे पाणीना वखारविपे वणो सु वीपने समुद्रादि जलठामे । सखेसुवेव जलासएसु जलठाणेषु । सर्व जलप्राजो जलस्थानक कक्षा धाकती भावना पाळनीपरे । इत्थण वायरआठकाइयाण पज्जत्ताण ठाणा प० । इहा वादर अरकायना पर्याप्ताना ठाम कप्पा । उववाएण लीयस्स असखिज्जङ्गणे । कपजवो लोकने असख्यातमेभागे । समुग्घाएण लीयस्स असखिज्जङ्गभागे । समुद्घातलोकेने असख्यातमे भाग हुवे । सठाणेण लीयस्स असखिज्जङ्गभागे । स्वस्थानके लोकने असख्यातमेभाग हुवे । कहिण भत्ते वायर आठकाइयाण अपल्लसगाण ठाणा प० । किट्टा

यत्तामवतिता नो पपद्यतेति तस्य पुन केवलिनो विदति विंशतिश्रुतविदो वा तथा समुच्चाणलोगरससखेज्ज्ञानेति ॥ समुद्धान्तेन समुद्धान्त मधिकृत्य
 लाकस्य उमहेयज्ञाग इय मत्र ज्ञावना यदा वादपर्याप्तपृथिवीकायिका सोपक्रममायुया निरुपक्रमायुपो वा विनागाद्यगयायुप परत्रविज्जमा
 युवङ्गा भारगान्तिकसमुद्धान्तन समवहरन्ते तदा ते विनिहात्मप्रादज्ज्ञावना अपि लोकस्यासहेयतमे मत्र ज्ञागे वर्तत स्ताकत्वात्, वादरपृथिवी
 कायिकपर्याप्तया द्या द्या प्य लोणमिति पयाप्रद्यादरपृथिवीकायिका अपि लभ्यन्ते इहपूर्वपृथिव्यादिषु स्वस्यानमात्रमक्तमिदानी न्यस्यानेनापि कि
 यतिलाकस्यज्ञागवर्ततेति निरूपयति सहागालोगरस अससज्ज्ञागइति ॥ स्वस्यान रत्नप्रज्ञादि त स समुदितमपि लोकस्यासहेयज्ञावति तथा
 ति रत्नप्रज्ञा अक्षीतियोजनसत्स्वाधिकलक्षप्रमाणपिषकज्ञावा मयज्ञोपा अपि पृथिव्य स्त्र २ घनज्ञावेनवक्तव्या पातालकलशा अपि योजनलक्षावगा
 णा नरकावासा स्त्रिसन्स्त्रयोजनोच्छ्रया विमानान्यापि द्वाविंशद्योजज्ञावद्वाहुल्यानि तत सर्वेपर्याप्तपरिभावात्, समुदितानाम प्य सहेयमा
 गवतिर्नैवति वादरापर्याप्तपृथिवीकायिकमूत्र उवयागण सवलोमइति ॥ इहा उपर्याप्ता वादरपृथिवीकायिका अपालनरालगता
 वपि स्वस्यानपि चा पर्याप्तवादरपृथिवीकायिकायु विंशतिविपाकतोवदपन्त तथा दवर्नैरयिकार्जस्य ज्ञापसर्वतायस्य द्यो पपद्यन्ते उहता अपि
 च देवर्नैरपिरुजंषु ज्ञापेषु सर्वद्यपि स्थानेषु गच्छन्ति ततो उपाकरालातावपि घतमाना णमो गुप्त्रन्ते इति, प्रज्ञताश्च स्वनायतो पीत्यु पपातेन
 समुद्धान्तन च सवलोकेवर्तते, अन्त्यत्य अभिदधति स्त्रज्ञावत एवा मीजह्व इति, उपपातेन समुद्धान्तन च मयलाकव्यापिन तत्रो पपात कंपा ण्च दृक्क
 त्या तत्र ऋजुगति सुप्रतीतायकस्यापना ण्वेव अत्र यदेव प्रथम वक्रमे क सहरति तदेवा परं तद्वक्तव्यमा पुरयन्ति एव द्वितीयवक्तव्यं सहरणेपि तत्रो

उपज्ज्ञातगा ते सहे एगविहा अविसेसा अनाणत्ता सहेलोएपरियावन्नागा पयत्ता, समगाउसो कहिणा

उक्तादगण पल्लत अपल्लतगाण ठाणा प० । किहा हेमगवन् मूल्याककायना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठाम कक्षा । गोयमा सुहुमभाउकादया जे पज्जत्त
 ना जे अपज्जसगा ते सब्बे एगविहा अविसेसा अनाणत्ता । हेयोतन मूल्याककाय जपयप्तिता अपर्याप्ता तेसएवअमेद्वे दौवा अविशेष कहिवा । सब्बलो

त्पत्तावपि प्रवाहो निरन्तरं सापूर्णा भावनीय सद्भावेणगीर्गदस्र अमर्त्येणदन्ताने इति॥ यथा पर्याप्तानां प्रकृतं तथा अर्पणं मानमपि प्राप्तनीयं तन्नि
 श्चै स्तपामु त्यादन्नावात मूत्सपृथिवीकायिकपर्याप्तप्राप्तसूत्रे जेपल्लताग्रपल्लता ते मध्ये यगविज्ञा अनागतासुलागपरियाधत्ताइति॥ सूक्ष्मपृथिवी
 सायिकाये उपयाप्ता यव पर्याप्ता त सर्वेष्व कविषा यक्षप्रकारा प्रकृतं स्वस्थानादिविषार मधिकृत्य प्रदामावात् अविज्ञापाविज्ञापरिन्ता यथा पयाप्ता
 स्तथ तरपि इति भावः, अनानात्वा नानात्वयजिता दशजटना लक्षितनानात्वा इत्यर्थः, किमुक्तं प्रगति यथा धारजृतेषां काशप्रदशद्ये के ते प्र
 व तरे पी ति सवलाजपपापका संश्लोक्यापिन उपपातसमुद्गातस्वस्थाने प्रज्ञप्तमया छम्बे शु श्रपमादिनि स्वीर्यजृद्धि अनेना गमस्य कयवि
 क्षित्य मावेदित ह्यश्रमण हेआयुक्त्तम् । आश्रमणमिदं जगत्प्रयुक्तं गीतमस्य गवमय्यायिकसूत्राश्रयपि यादरमूत्सविषयाणि, नगर पर्याप्तवादराय्या
 पिकसूत्रे सप्तसु पणादह्नितागमुति सप्तघोदह्नितागमुति यलयाकाराणि, अश्लोयोगयासेसुति पातालकलसेषु यल
 यामुसप्रचलितेषु तद्यपि द्वितीय त्रिभागे दशत तृतीय त्रिभागं सवात्मना जलज्जावात् भवनेषु कसपेषु त्रिभागेषु चत्तल वाप्यादिषु विमानादीनि
 चात्र कल्पगतानि वदितव्यानि येवयकादिषु । वापीना मसम्भयतो जलासम्भरात्, अत्रा कूपा स्तनागानि प्रतीतानि नद्यो गङ्गासिधुमजृतयो

जते । वादरच्छाउकाडयाण पल्लतगाण ठाणा पयात्ता ? गोयमा । सठाणेण सत्तसु घणोदधोसु नत्तसु घ
 णोदधिवलएसु च्छहोलीए पात्रालेसु नत्रगेसु नत्रणपत्यरुमु उहोलीए कप्येसु विमाणेसु त्रिमाणावलियासु
 विमाणपत्यरुसु तिरियलीए छगळेसु तलाएसु सरेसु नदीसु दहेसु त्रावीसु पुस्करिणीसु दीहियासु गुजालि

ए परिवावणमा प० । सर्वलोकने व्यापोरश्च ह्ये इमकक्षा । ममथाउमा । इत्यम १ वाजपयन्तोः कटिज्जतं यावर तउकाडयाण पल्लतगाण ठाणा प० ।
 किंवा हेभगवन् वादर तेजकावना पर्याप्ताना ठामकक्षा । गोयमा सङ्कोण अनामण्ण खेत्तेप्रदुःखेसु दौवममट्टेसु । हेगीतम स्वस्थाने मनुष्यनोक्त
 माहि प्रदामावात् पयसु कयभूमौसु । व्याघातरहितथके १५ कसेभूमिविषे । सत्वाघायपटुन पचममहाविदेहेसु । व्याघात चि

द्रहा पट्टद्रहादप वाप्य धृतरस्याकारा ता यव वृत्ताकारा पुकरिण्य यदि वा पुकरिणिपट्टानिविद्यन्ते यासु ता पुकरिण्यो दीर्घिका ऋजु
लघुनद्य स्ता यव वक्रा गुञ्जालिका ववूनि क्वेवलक्वेलावि पुण्यावकीर्णानि सरासी त्युच्यन्ते, तथा वतूनि सरासि गुरुपत्त्या व्यवस्थितानि च
र पक्ति स्ता वत्स्य सर पक्त्य तथा यपु सरस्तु पत्तुवाव्यवस्थितेषु रूपादक प्रणालिकया सञ्चरति सा सर सर पक्तिस्ता वत्स्य सर २ पक्त्य

यासु सरैसु सरपतियासु चिलवतियासु उज्जरसु णिज्जरसु चिल्लेसु पल्ललेसु वप्पिणसु दो
वैसु समुद्देसु संघसु चंघ जलासएसु जलठाणंसु जलजूमिञ्जासु एल्यग वाटरञ्चाउकाडयाण पज्जतगाण

ततो जलस्थानकविना पशु मद्वाविट्टइमाह सदात्र कपल्ले। एल्य वाटर तउकाइयाण पज्जतगाण ठाणा प०। इहा वाटर तेउकाय पर्याप्तानो ठ म
कक्षा। उववाएण लीयस्स असंखुज्जइभागे समुवाएण लीयस्स अस०। अपज्जो लोकेण असंख्यातंभागे समुपातलोकने असंख्यात
मंभागे स्वस्थान लोकेने असंख्यातंभागे। कहिणभते वायरतेउकाइयाण अपज्जतगाण ठाणा प०। किहा हेमगवन् वायर तेउकायमे कक्षा अपर्याप्ताना
ठाम कक्षा। गोम मा जत्येव वायरतेउकाइयाण पज्जतगाण ठाणा प०। हेगौतम लिहा वाटर तेउकाय पर्याप्ताना ठामकक्षा। तस्येव वायर तेउका
इयाण अपज्जतगाण ठाणा प० उववाएण। तिहा वाटरतेउकाय अपर्याप्ताना ठामकक्षा कि पर्यंत अठरिसेयाजन वाहुच समस्त तिर्यक्ताक कहिये इ
म तेजस्साय अपर्याप्ताना उपज्जवाना ठामकक्षा विस्तार गत्यात्तरथको जाणिया कपजवो। नोगस्स दोमसु कवाडन् तिरियलाए तट्टव समुवाएण
मच्चलोए सडू गेण लीयस्स असंखुज्जइभागे। लोकने अठाइदोपरिपरिमाण वाहिर पूर्वापर दक्षिणोत्तर स्वयभूरमणपर्यंत जे पाठ केउल समहात कपाटनो
परं ऊइअधीलाकाल सट ते लंछकपाट तथा तिरियलागत्ति, तट्ठ्यल्लूप तिर्यक्ताक तट स्थभूरमणवद समहात सकलनाक पूर ण्केका पर्याप्तानो
तेपाये असंख्याता अपर्याप्ता कपल्ले स्वस्थभवपर्यंत मरण तपममहात करे इम सकलनाक परीषा स्वस्थानके लोकने असंख्यातंभागे मावाये हुवे। क
हिणभते सुहुम तेउकाइयाण पज्जत अपज्जतगाणय ठाणा प०। किहा हेमगवन् मूळ तेजस्साय पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकक्षा। गोयमा सुहुम ते

विलासीय ग्रिनानि स्वनाथनिष्यन्ता जगत्यादिषु कृपिका स्तोपा पत्न्यो धिलपत्न्य उक्तरा गिरिस्थभसा प्रश्रयवा स्त गव सदा वस्यायिनो नि
भरा विसरणि श्रयाता स्तोकाजलाश्रयता भ्रूप्रदेशा गिरिप्रदेशा वा पत्न्यानि श्रयातानि सरासि वप्रा केदारा किम्यन्ता सर्वे वशलाश्रयपु

ठाणा पणता, उववाएण लोयस्स अस्सेज्जइभागे कहिण भते ! वायरञ्चाउकाडयाण अपज्जत्तगाणं ठा
णा पणता ? गोयमा । जत्थेव वाटरञ्चाउकाडयाण पज्जत्तगाण ठाणा तत्थेव वाटरञ्चाउकाडयाण अप

उक्ताइया जे पज्जत्तगा अपज्जत्तगा ते सब्बे एगविहा प० अविसेसा अणायत्ता । इंगीतस्स सूक्ष्मेज्जकाय जी पर्याप्ता अपर्याप्ता ते सर्वना एकहीजभद
राविशेष सर्व कहिवा । सब्बलय परियावणगा प० । सर्वलोक व्यापौ रज्जाहै । समणाउसो । अहो यमणो आयुपावत्तो । कहिणभते वायर वाटरकाइया
ण पज्जत्तगाण ठाणा प० । किहा हेभगवन् वाटरवाउकाय पर्याप्ताना ठाम कछा । गोयमा महुणेण सत्तमघणवाएण सत्तसुवणवायवलणस सत्तसुतणदा
णम् सत्तसु तणवाय वलणम् । स्वस्थानके सात धनजातना वलणनेस्थानक वली सात तनुदातनावलय ठिकाणै । अहोनीए पायलिसु भवणेषु भवणपल्ल
सु भवण छड्डेसु भवणविबुड्डम् निरणसु निरयावर्णियाणस । अधोलोक पातालनाभवन धानके पाण्डाविवे अक्काय ठामे भवनविपै टूकस्थानको नरको न
रकना वलणनेविपे । निरणपल्लेसु निरयाछड्डेस निरणनिबड्डेस । नरकनेछिद्रे नरकखूणै । उड्डनोण कण्णविमाणेस विमाणवलियाणसु विमाणपय
डेसु विमाणछिडेस । उर्ध्वलोक कण्णविमान अवलोकविमाने विमानमतरै विमानछिद्रे । विमाणनिकुड्डसु तिरियलोण पाइण परठ दाहिणवटीण सत्थे
सुंवर । विमाणखूणै तिरिक्काको पूर्व पश्चिम दक्षिण उत्तरै सब । लोकाकाश छेड्डे खूणै एहवे ठामे । एत्थण वायर
वाटरकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा प० । वाटरवाउकाय पर्याप्ताना ठामकछा । उववाएण लोयस्सअसाखल्लभागेसु मरुवाएण लोयस्सअस० । ऊपज
वी लोकेने असम्यातमेभागे समुदातलोकेने असम्यातमेभागे । महुणेण लोयस्स असखेज्जइभागे । स्वस्थान लोकेने असम्यातमेभागे । कहिणभते अपज्जत्त
वायरवाउकाइयाण ठाणा प० । किहा हेभगवन् अपर्याप्ता वाउकाइयाण ठाणा पज्जत्तगाण ठाणा प० ।

द्रष्टा पद्मद्रष्टादय वाप्य ध्रुतरत्नाकारा ता यव वृत्ताक्षरिण पुष्करिण्य यदि वा पुष्कराणिपट्यानिविद्यन्ते यासु ता पुष्करिण्यो दीर्घिका ऋजु
 तपुनद्य स्ता यव वका गुञ्जालिका बहूनि कर्मलक्रेवतावि पुष्पावकीर्णानि सरासी त्युच्यन्ते, तथा बहूनि सरासि सरासि यरूपत्वा व्यवस्थितानि स
 र पक्ति स्ता वर्य सर ससु पत्त्याव्यवस्थितयु कूपादक प्रणालिकया सञ्चरति सा सर सर पक्तिस्ता वर्य सर २ पक्षय

यासु मरेसु सरपतियासु चिलबतियासु उज्जरसु णिज्जरसु चिल्लेसु पल्लेसु वंप्पिणंसु दो
 वेसु समुद्देसु सवेसु चंन जलासएसु जलठाणंसु जलनूमिच्छासु एल्य ग वादरच्छाउकाडयाण पज्जतगाण

ततो जनस्थानकविता पक्ष महाविट्ठमाह सटाव कपले । एल्य वादर तउकाडयाण पज्जतगाण ठाणा प० । इहा वादर तेउकाय पर्याप्तानो ठ म
 कक्षा । उववाएण लीयन्त असखस्सरभागे समुवाएण लीयस्स अस० । कपजवो लोकणे असख्यातमेभागे समुहातलोकने असख्यात
 मेभागे स्स्थान लोकने असख्यातमेभागे । कहिणभते वायरतेउकाडयाण अपज्जतगाण ठाणा प० । किहा हेभगवन् वायर तेउकायमे कक्षा अपर्याप्ताना
 ठाम कक्षा । गोउमा जत्येव वायरतेउकाडयाण पज्जतगाण ठाणा प० । हेभौतम जिहा वादर तेउकाय पर्याप्ताना ठामकक्षा । तत्येव वायर तेउका
 डयाण अपज्जतगाण ठाणा प० उववाएण । तिहा वादरतेउकाय अपर्याप्ताना ठामकक्षा कि पर्येत अठारिसेगजन वाडुन्त्य समस्त तिर्यल्लोक कहिये इ
 म तेजस्साय अपर्याप्ताना उपजवाना ठामकक्षा विस्तार गत्यान्तरथको जाणिया कपजवो । लागस्स दोसु कवाडम् तिरियनोए तट्टय समुवाएण
 मच्चनोण सठ्ठणे लीयन्त असखस्सरभागे । लोकने अठाईदोपरिपरिमाण वादर पूर्वापर दाक्षिणात्तर सगभूमणपर्येत जे पाठ केवल समहात कपाटनो
 परे उरुअधोनाकाल स्पष्ट ते कट्टकपाट तथा तिरिज्जानसि, तट्ठयल्लूप तिर्यल्लोक तट सगभूमणवद् समहात सकनलोक पर एकेका पर्याप्तानो
 तेपाये असख्याता अपर्याप्ता कपले स्स्थप्रवर्पत मरण तपसमहात करे इम सकनलोक परीया स्स्थानके लोकने असख्यातमेभागे मावाणे इवे । ज
 णिणभते सुद्धम तेउकाडयाण पज्जत अपज्जतगाणय ठाणा प० । किहा हेभगवन् नूम् तेलस्साय पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकक्षा । गोउमा सुद्धम ते

स्या इतरीय समुद्राणां नविद्यते इतीदं विशेषं द्वीपानां द्रष्टव्यं, द्वीपा यः समुद्रा यः द्वीपसमुद्रा तेषु निर्व्याघातेन व्याघातस्याऽऽवाधो निर्व्याघात
तेन निर्व्याघातन तृतीयाया इति पाक्षिका मादशाभावः व्याघाताभावेनेत्यर्थः, पञ्चदशसु कर्मभूमिषु पञ्चन्नरतप्यैरावतपञ्चमन्नाविदेहरूपसु
व्याघात प्रतीत्य व्याघाते सतीति ज्ञातः, पञ्चसुमन्नाविदेहेषु, इयं मत्र ज्ञावना-व्याघातो नामा तिस्रिग्वो तिरुक्ता वा काल तस्मिन् सत्यं गिन
व्ययच्छदा नतो यदा पञ्चसु भरतपु पञ्चस्वरावतपु सुरमसुरमा सुरमसुरमा तु समदु यमाया वा तिरुक्ता
इत्यं निव्ययच्छद तस्मिन्सति पञ्चसु मन्नाविदेहेषु अपकाल पञ्चदशस्वपि कर्मभूमिषु ॥ सत्यगमित्यादि ॥ अत्र यतपु स्थानेषु वारदतेजरकायिक्ता
ना स्थानानि प्रज्ञप्तानि ॥ उद्योगगमित्यादि ॥ उपपातन यथोक्तस्थानप्राप्त्या भिमुखना पालरारागता वपीति ज्ञावः, चिन्त्यमाना लोकाः सहेय
नाम स्तोत्रत्वात् समुद्रातेनापि चिन्त्यमाना लोकाः सहेयनाग मारणातिरसमुद्रातवज्ञातो विविक्तात्मप्रदशदशानामपि स्तोत्रतया लोकासत्यय
ज्ञागनाग्यापित्वात् स्थानानं लोकस्या सत्ययनागे मनुष्यकृत्रस्य पञ्चवत्वारिशो जनलक्षप्रमाणायामविक्रमतया लोकासत्ययभागमात्रत्वात् ।

पञ्चतन्त्रगाण ठागा पणत्ता, उववाएण लोयस्स अस्संज्जडन्नागे, अस्संज्जडन्नागे,
सठाणण लोयस्स अस्संज्जडन्नागे । कहिणं ज्ञंनं । वाटरतज्जमाडयाण अपज्जत्तगाण ठाणा पसत्ता ? गा
यमा ! जत्थंन वाटरतेउकाडयाण पज्जत्तगाण ठाणा तत्थेव वाटरतेउकाडयाण अपज्जत्तगाण ठाणा प०,

अस्संज्जडन्नागे पञ्चवत्वारिणां डोडियासु गुणानि न सरेम सरपतिगामु विलपतिगामु उअरेम निअरेम । तिरुक्तेनोक्ते कूप तलावतौ दृष्टविषे व. वौ पुक्क
रथो दाघमाये गजालिकाये सरावरे सरपातिवपे विलपातिवपे पाणाठामे निभरणे । चिल्लेसु पल्लेसु पल्लेसु दोवमु समदसु सत्वेसु च । वीकथोठा
म पलानमर ठामे होप समद सचलठामे । जल्लसणम् जल्लसणम् वाटरवणल्लोदकाडयाण पज्जत्तगाण ठाणा प० । जल्लनाडामनविषे दृष्टा वाटरव
नस्यतोकाया पर्याप्ताना ठामकल्ला । उववाएणसव्वेसाण समुग्घाएणसव्वेसाण । जपजवा सर्वलोके समुद्घात सर्वलोके । सत्ताण लोयस्स असत्तिज्जडमा

मत्तदेव व्याचष्टे जलस्थानेषु ज्ञेयज्ञातवनाप्राग्बत्, अधुनावाटरपर्याप्तेश्चर्याकियस्थानानि पृच्छति कश्चिन् जने वायरतेउकाइयाणमित्यादि प्रश्नमूत्र
सुगम भगवानाह-गोयमेत्यादि । गौतम स्वस्थानेन स्वस्थानमङ्गीकृत्या तमनुष्यकृत्य मध्या इत्यर्थं अर्द्धतृतीय येषान्त अर्द्धतृतीया सत्रान्तमनुष्यक्षेत्र

ज्जत्तगाण ठाणा पयात्ता, उववाएण सव्वलोए समुग्घाएण सव्वलोए सठाणेण लोयस्स अस्सखिज्जन्नागे ।
कहिण सुज्जमअउकाइयाण पज्जत्ता अपज्जत्ताण ठाणा पयात्ता ? गोयमा ! सुज्जमअउकाइया जेय पज्ज
त्ता जे अपज्जत्तागा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अनाणत्ता सव्वलोए परियावत्तगा प०, समणा ! कहिण
जत्ते ! वाटरतंतउकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा पयात्ता ? गोयमा ! सठाणेण अतोमगुरसखेत्ते अट्टाडंजोसु
दीवसमुहेसु निहावाए पत्तरससु कम्ममूमीसु वाग्घाय पळुस पचसु महाविदेहेसु एत्थण वाटरतंतउकाइयाणं

हेगौतम जिहा वाटरवाउकाइया अपर्याप्ताना ठामकह्या । तथेव वायरवाउकाइयाण अपज्जत्तगाण ठाणा प० । जिहा वाटरवाउकाय वाटरनिगाड
यात्तो । उववाएण सव्वलोएमसुग्घाएण सव्वधापसंठाणेण लोयस्स अससुज्जमभागे । ज्जपज्जानोठाम सर्वलोके रुख्यानके कोकनाभसख्यातमभागे हुवे ।
कहिणभते मुहमवाउकाइयाण पज्जत्तअपज्जत्तगाण ठाणा प० । किहा हेभगवन् सुक्खवाउकाय पर्याप्ताना ठामकह्या । गोयमा सुहमवा
उकाइया जे पज्जत्तगा जे अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अनाणत्ता । हेगौतम सुक्खवायुकाय पर्याप्ताना अपर्याप्ताना तेसवं एकभेदे अविशेष स
वं पाकलौपरे । सव्वलोए परियावत्तगा प० । सर्वलोके व्यापारह्याहे । समणाउसा । अहो अमणोआयुयावत्तो । कहिणभते वायरवणस्सइकाइयाण प
ज्जत्तगाण ठाणा प० । किहा अहोभगवन् वाटर वनसत्तोकाय पर्याप्ताना ठामकह्या । गोयमा सट्टाणेण सत्तसुवणोदहेसु सत्तसुवणोदहिवलएसु । हेगौ
तम स्वस्थानके घनोदधि घनोदधिनवलयविषे । अहोनीए पायालासु भवणेम् भवणपल्लहेस । अधोलोके पाताल भवनविषे भवनपायडाविषे । उट्टलोए
कपेसु विमाणेसु विमाणवल्लएसु विमाणपल्लहेसु । उह्णोके कल्पविमाने विमाननवलयविषे विमानपायडाविषे । तिरियलोए अगडिसु तडगिसु नरेएसु

स्या द्वेवतीय समुद्राणां नञ्छिते इतीदं विशेषं द्वीपानां द्रष्टव्यं, द्वीपा यः समुद्राश्च द्वीपसमुद्रा तेषु निर्यापतेन व्याघातस्या ज्ञावो निर्याप्यात तेन निर्याप्यतन तृतीयाया इति पाक्षिका मादशाभावः व्याघाताज्ञावेने त्यथ, पञ्चदशसु कर्मभूमिषु पञ्चजरतपध्वरावतपध्वमहाजिदेरूपसु व्याघात प्रतीत्य व्याघाते सतीति ज्ञात, पञ्चसुमहाविदर्षेषु, इयं सत्र प्रावना-व्याघातो नामा तिस्रिग्वो तिष्ठतो वा कात तस्मिन् सत्य निन व्ययच्छदा सती यदा पञ्चसु भरतपु पञ्चस्वरावतपु सुखमासुरमटु समा वा घतते तदा, तित्तिग्वमालो दुःखमटु यमाया वा तिष्ठन् इत्य निनयवच्छद तस्मिन्सति पञ्चसु महाजिदर्षेषु अपकाल पञ्चदशस्वापि कर्मभूमिषु ॥ गत्यगमित्यादि ॥ अत्र यतपु स्थानेषु वारदतंजरक्रायिका ना स्थानानि प्रनप्तानि ॥ उवगगगमित्यादि ॥ उपपातन यथोक्तस्थानप्राप्त्या भिमुखनां पालरालगता वर्षति ज्ञाव, चित्त्यमाना सोमस्या सहैय ताग स्तीकृत्वात् समुद्रातेनापि चित्त्यमाना नाकस्या मह्यनाग मारणातिक्रममुद्गातउशतो विजिप्तप्रत्यदशदयानामपि स्तीकृतया लाकासत्यय प्रागमात्रयापित्वात् सस्थानन लोकस्या सम्ययनागे मनुयुद्धत्रम्य पञ्चवत्यारिशद्योऽमलनप्रमाणायाभिविक्ततया स्तीकासत्ययभागमात्रत्वात्,

पञ्चाक्षगाण ठागा पणत्ता, उववाएण लोयस्स अस्सेज्जइन्नागे समुग्घाएण लोयस्स अस्सेज्जइन्नागे,
सठाणेण लोयस्स अस्सेज्जइन्नागे । कहिणं ज्ञंन ! वाटरतज्जफाडयाण अपज्जत्तगाण ठाणा पणत्ता ? गां
यमा ! जत्थेव वाटरतंउकाडयाण पज्जत्तगाण ठाणा तत्थेव वाटरतंउफाडयाण अपज्जत्तगाण ठाणा प०,

इदं वावोमु पक्वरणासु दोहियाम गुनानिव म सरेम सरपतिगामु बिलपतिगामु उअरेम निअरेम । तिरहेकाकेकूप तलायमदी द्ररपिमे न.वो पुक्क रणो वावेकादि गजानिकयिे सरावेर सरपातिवपे बिलपातिवपे पाणाठामे निअरेणे । चिअलेसु पण्णलेम वण्णिगेसु दोवसु मसदसु सरवेसुत्तेव । चोअणोठा म पनालमर ठामे होप समद सघलठामे । जनासणम जलठ णेम एत्थण वाटरवण्णदकाऽगाण पज्जत्तगाण ठाणा प० । जलनाउमनविपे दहा पादरव नसतोकाऽया पर्याप्ताना ठामकक्षा । उववाएणसब्बसाण समुग्घाएणसबबलोए । जपजवा सर्वनाके समुद्गात सर्वनाके । सव्वाएण लायअ मसरिज्जभा

मतेदेव व्याचष्टे जलस्थानेषु ओषध्यानां प्राग्वत् । अधुना वाटरपर्याप्ततेजस्कायिकस्थानानि पृच्छति कहिण भूते वायरेते उक्ता इयाणि मित्यादि प्रश्नमूत्र
सुगम भगवानाह-गोयमेत्यादि । गौतम स्वस्थानेन स्वस्थानमङ्गीकृत्या तमनुष्यकृत्र मध्य इत्यर्थं अद्वैतीय येपान्त अद्वैतीय स्तत्रात्मननुष्यत्वेन

ज्जत्तगाण ठाणा पसात्ता, उववाएण सव्वलोए समुग्घाएण सव्वलोए सठाणेण लोयस्स अणुसखिज्जानागे ।
कहिण सुज्जमच्छाउकाइयाणं पज्जत्ता अपज्जत्ताण ठाणा पसात्ता ? गोयमा ! सुज्जमच्छाउकाइया जेय पज्ज
त्ता जे अपज्जत्तागा ते सव्वे एगचिहा अविसेसा अनाणत्ता सव्वलोए परियावन्तगा प०, समणा ! कहिण
जतं ! वाटरतेउकाइयाण पज्जत्तागाण ठाणा पसात्ता ? गोयमा ! सठाणेण अतोमगुस्सखेत्ते अट्ठाइंजोसु
दीवसमुहेसु निहाघाए पन्तरससु कममन्नीसु वाग्घाय पळुस पचसु महाविदेहेसु एत्थण वाटरतेउकाइयाणं

हेगौतम जिहा वाटरवाटकाइया अपर्याप्ताना ठामकक्षा । तथेव वायरवाटकाइया अपज्जत्तागाण ठाणा प० । जिहा वाटरवाटकाय वाटरनिगोट
आओ । उववाएण सव्वलोएसमग्घाएण सव्वलोणसठाणेण लोवस अणुसज्जभागे । उपज्जवानोठाम सर्वसाके स्थानके लोकनाअसख्यात्मभागे हुवे ।
कहिणभते सुहमवाटकाइयाण पज्जत्ताअपज्जत्तागाण ठाणा प० । जिहा इमगवन् सुहमवाटकाय पर्याप्तता अपर्याप्ताना ठामकक्षा । गोयमा सुहमवा
टकाइया जे पज्जत्तागा जे अपज्जत्तागा ते सव्वे एगचिहा अविसेसा अनाणत्ता । हेगौतम सुहमवाटकाय पर्याप्तता अपर्याप्तता तेसव्वे एकभेदे अवियोग म
वं पाळोपरि । सव्वलोण परियावन्तगा प० । सर्वलोके व्यापारकाहे । समणाउसा । अहो यमणोआयुयावत्तो । कहिणभते वायरवणसुहमवाटकाइयाण प
ज्जत्तागाण ठाणा प० । जिहा अहोमगवन् वाटर वनस्पतीकाय पर्याप्ताना ठामकक्षा । गोयमा सट्ठाणेण सत्तसुघणोदेहेसु सत्तसुघणोदेहिवलएसु । हेगौ
तम स्वस्थानके घनोदधि घनोदधिनावलएविषे । अट्ठाओए पायालासु भवणेम भयणपल्लहेस । अधोलोके पाताल भवनविषे भवनपाथडाविषे । उट्टोओए
कप्पेसु विमाणेसु विमाणवलएसु विमाणपल्लहेसु । उट्ठोनेके कल्पविमाने विमाननावलएविषे विमानपाथडाविषे । तिरियलोए अणुसु तडागेसु नरेएसु

पाटे के प्रणिममृदातकपाटउत्त ऊर्मपितोकातम्पुते ते ऊर्द्धकपाटे तयो रूद्धकपाटयो मत्था ॥ तिरियतोयतेयजति ॥ तह स्थाल तियंग्लोकेतहमि
तियक्लोकतह तस्मि श्रव्ययजुरगणसमृवेदिजापयत अष्टादशयोजनज्ञतवाहस्य समस्ततियंग्लोके चे त्यथ , उपपातेन वादरवाउकाहनाम पयो
माना स्थानानि प्रज्ञमानि केचित्-तिरियलोयतह इति पठन्ति २ यत्र ध्याचक्षते तयो कपाटयो रियत तस्य तियगुरोम श्या मो ततस्य श्रु नि
यंग्ताकतस्य तयो रूद्धकपाटयो रत्नवंती तियंग्लोके इत्यथ , तस्मिन्किमुक्त भवति द्वयो रूद्धकपाटयो ययोक्तरूपयो स्त्रियाल्लोकापि च तथा

अत्रनपत्यरुंनु अत्रणविद्दुसु अवननिरुंनुसु निरएसु निरवावलिनासु निग्यपत्यरुंनुसु निरयविद्दुसु निरयनि
रुंनुसु उहुलोयरुंनुसु विमाणसु विमाणवलियासु विमाणपत्यरुंनु विमाणविद्दुसु विमाणनिरुंनुसु तिरि
यलोएसु पाईणदाहिणउदीगसहेसु चैव लोगागासविद्दुसु लोगनिरुंनुसु एत्यण वादरवाउकाहनाण पज्ज
त्तगाण ठाणा पयात्ता , उववाएण लोयस्स अउससंज्जेसु अगेसु समुग्घाएण लोयस्स अउससंज्जेसु अगेसु
सठाणेण लोयस्स अउसखंज्जेसु अगेसु । कहिण जत । अपज्जत्तवादरवाउकाहयाण ठाणा पयात्ता ? गोय

पर्याप्ताना ठ मकच्छा । गोयमा उहुट्ठोए तदेकदेसभागे अडोलीणतदेकदेसभागे तिरयलोण अगेसु तलावेम जाव दोवेसु समुंनुसु सखेमेवेव जलास
एम् जकडु पेम् । हेगौतम ऊर्द्धकाकान्तक देगभागे सदरादि अधासाकैक देगभागे ग्याम जप तहागादि तिरक्केलोकै कूप तलाव यावत् दोपे समुंनुसु
पज्जतामे । एत्यण वे-निय पज्जत्त अपज्जत्तगाण ठाणा प० । इहा वेदिय पर्यात्ता पपर्यात्ताना ठामकच्छा । उववाएण लोयस्य अउसखंज्जेसु भागे समुग्घाए
ण लायस्य पम० महुाणेण लोयस्य अम० । अपज्जत्त लोकने पमव्यातमेभागे समव्यातलोकने पम० स्वस्थामलोकने अमव्यातमेभागे । कहिणभते तेरदि ।
पज्जत्ता अपज्जत्तगाण ठाणा प० । किहा उभगवन् तेदिय पर्यात्ताना ठामकच्छा । गोयमा उहुट्ठोए तदेकदेसभागे अडोलीण तदेकदेसभागे तिरिय
तोए । हेगौतम ऊर्द्धलोकातकदेगभागे अधोलीकातकदेगभागे तिरक्कालोकै । पगहम् तचाएसु जाव दोवेसु समुट्टट्टसु सखेमेवेव जलासएम् जलहुाणेसु य

अपर्याप्तवादरतेनस्कायिकस्थानानि पृच्छति-कश्चिन्नेतद्व्यादिसूत्रगतार्थः, जगदानाह-गीतमेत्यादि-गीतम् । यत्रैव वादरतेनस्कायिकानां पर्याप्ता
ना स्थानानि तत्रैव वादरतेनस्कायिकानां सपर्याप्तानामपि स्थानानि प्रज्ञप्तानि पर्याप्तनिश्चया पर्याप्तानाम वस्थानात् ॥ उवाच ॥ लोकेन दोषु
उक्तकर्तृणो निरिपलोयनहे य इति ॥ इहा द्वयनीयदीपसमुद्रनिष्ठते अदृष्टनीयदीपसमुद्रनिष्ठते पूर्वोपरद्विजोत्तरत्रयगुणमणपर्यन्ते ये क

उवाचाण लोयस्स दोषु उहुक्कांठसु तिरिपलोयतद्वेयसमुघाएण सव्वलोए सठाणंण लोयरस अउसखेज्जिहु
नागे । कहिण नते ! सुज्जमनेज्जकाहुयाण पज्जत्तगाणय ठाणा पयात्ता ? गोयमा । सुज्जमनेज्ज
काहुयाण जे पज्जत्तगा अउपज्जत्तगा ते सहे एगविहा अउविनेसा अनागत्ता सव्वलोए परिवावत्तगा प० ,
समणाउसी ! कहिण नते ! वादरवाउकाहुयाण पज्जत्तगाण ठाणा पयात्ता ? गोयमा । सठाणंण सत्तसु
एगवाएसु सत्तसु यणवायवत्तसु सत्तसु तणवाएसु अहोलोए पायालेसु जवणंसु

ने । स्वस्थाने लोकने असख्यातमेवागे । कहिण भते व दवरवणस्सकादया अपज्जत्तगाण ठाणा प० । किन्नां सहे भगवन् वादरवनस्सतीकाय अपर्याप्तानां ठा
मच्छा । गोयमा कत्येव वायरवणस्सकादयाण पज्जत्तगाण ठाणा प० । हेगीतम् विहा वादरवनस्सतीकाय पर्याप्तानां ठामकच्छा । तद्वेववायरवण
स्सकादयाण अपज्जत्तगाण ठाणा प० । तिहा वादरवनस्सतीकाय अपर्याप्तानां ठामकच्छा । उवाचाण सव्वलोए समुघाएण सव्वलोए महुाण लोयस्स
पयत्तिपदभागे । अपज्जत्तगां सव्वलोके समुहातसव्वलोके स्वस्थानस्सालोके । कहिणभते समुघाएण पज्जत्तगाण पज्जत्तगाण ठा प० ।
जिहा हेभगवन् सूखवनस्सतीकाय पर्याप्ता अपर्याप्तानां ठामकच्छा । गोयमा सहमवणस्सकादया अ पज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अवि
मेमा यणाणसा । अहो गीतम् सूखवनस्सतीकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता ते सर्वे एकमेव कच्छा अविशेष प, कुलोपरे । समुघाएण परियायका प० । सर्वलोके
यापो रक्षाहे । समणाउसी । अहोयमणे आयुपात्तो । कहिणभते वेद दियाण पज्जत्तगाण ठाणा प० । किहा हेभगवन् वेदन्द्रिय पर्याप्ता अ

पाटे के प्रलिप्तमृदानरूपाटवत् ऊर्जमपि नोक्तान्तरपृष्टे ते ऊर्जरूपाटे तयो रूट्ररूपाटयो स्तथा ॥ तिरियतोयतयेयइति ॥ तद्व स्थान तिर्यग्लोकेतद्वमित्र
तिपक्वलोक्तद्व तस्मि अस्वयचरमनसमुद्वेदिकापयत अष्टादशयोजनज्ञतवाहृत्य समस्ततिर्यग्लोके चेत्यथ , उपपातेन वादरतत्रस्कायिमानाम पयो
माना स्थानानि प्रज्ञप्तानि केचित्-तिरियलोयतद्व इति पठन्ति २ यव व्याचलत तयो कपाटयो स्थित तिर्यग्लोके द्या सो तदस्य अ ति
येम्लाकतास्य तयो रूट्ररूपाटयो रत्नवर्धो तिर्यग्लोके इत्यथ , तस्मिन्किमुक्त भवति द्वयो रूट्रकपाटयो यथोक्तम्वरूपयो स्तिर्यग्लोकेपि च तथा

अवनपत्यरुं सु अत्रणविद्वं सु अवननिरुं सु निरएसु निरयावलिधासु निरयपत्यरुं सु निरयविद्वं सु निरयनि
रुं सु उट्टलोयरुं सु विमाणं सु विमाणावलियासु विमाणपत्यरुं सु विमाणविद्वं सु विमाणनिरुं सु तिरि
यलोएसु पाईणदाहिणउडीणसखेसु चेत्य लोगागासविद्वं सु लोगनिरुं सु एत्यण वादरवाउताइयाण पज्ज
त्तगाण ठाणा पणत्ता , उववाएण लीयरत्त अत्तसंज्जेसु अगीसु समुवाएण लीयरत्त अत्तसंज्जेसु अगीसु
सठाणेण लीयरत्त अत्तसंज्जेसु अगीसु । कहिण अन्न । अपज्जत्तवादरवाउताइयाण ठाणा पणत्ता ? गोय

पर्याप्तानां ठ मकच्छा । गोवमा उट्टलोए तदेकदेसभागे अर्धलोणीए तदेकदेसभाग तिरयलोण अगड्डेस् तत्तावेस जाव दोवस् समुं सु मवेमचेव जल्लास
त्तस जल्लुत्तस । हेगोत्तम ऊर्ध्वलोकात्तल्ल देगभागे मन्दरादि अधालोकाक देगभागे ग्राम कूप तट्टागादि तिरिखेलोके कूप तत्ताव यावत् द्वीपे समुद्रे न
नकठामे । एत्यण वेद दिव पज्जत्त अपज्जत्तगाण ठाणा प० । इहा वेदिद्व पर्याप्ताना अपर्याप्ताना ठामकच्छा । उववाएण लोयस् अत्तसंज्जेसु अगीसु समुवाए
ण लायस् अम० मट्टाणेण लीयरत्त अम० । अपज्ज लोकात्तसंज्जेसु अगीसु समुवाएण लोयस् अत्तसंज्जेसु अगीसु समुवाएण लोयस् अत्तसंज्जेसु अगीसु
पज्जत्ता अपज्जत्तगाण ठाणा प० । किहा हेमववन् तेदिव पर्याप्ताना ठामकच्छा । गोयमा उट्टलोए तदेकदेसभागे अर्धलोणीए तदेकदेसभाग तिरिय
तोए । हेगोत्तम ऊर्ध्वलोकात्तकदेगभागे अधोलोकात्तकदेगभागे तिरिखेलोके । अगड्डेस् तत्तावेस जाव दोवस् समुद्रेस् समवेमचेव जल्लासएस् जल्लुत्तसु य

तियग्लोक्याव्यवस्थिता अपि यादरा पर्याप्तैर्जरकारिभ्यः पदेशे सन्ते । तथा च ॥ अथ दारभर्गान् अनुगमात् ये २ स्वस्थानममश्रेयिक
पादद्वय व्यवस्थिता ये तु स्वस्थानानुगते तियग्लोक प्रविष्टा गत यादरपर्याप्तैर्जरकारिका व्यपदिश्यत न ज्ञेया कपाटापात्तरालव्यवस्थिता
विषमस्थानवसित्वात् तन ये प्रद्यापिकपादद्वयनप्रविष्टा नापि तियग्लोक ते किल पूज्यवाधस्या गच्छति न गच्छन्ते, उक्तञ्च-पणपातक्यापि तुला
दुनिकवाक्ताय ब्रह्मिणि पुष्टा । लोगते ते सितो जेतके ते वचिप्यति ॥ १ ॥ तत उक्त ॥ उद्यवायुण दोमुत्तुक्तक्यान्तम् तिरियल्लोपतयेय इति । त्यापना, तदेव
मिदं सूत्रं व्याहरन्त्यद्वयनेन व्याख्यात तथा सम्प्रदायात्, युक्तं चेत्तत्-विचित्रास्तूस्वगतिरिति यत्रमादिति ॥ समुच्चापणा सवुल्लोम् इति ॥ २ ॥ द्वयो

ते सहे एगविहा अत्रिसेसा अनाणत्ता सवुल्लोपपरियावद्वागा पयत्ता समणाउत्तो ! कहिण जने वाटरवण
स्सहमाडयाण पज्जत्तगाण ठाणा प० १ गो० । मठाणेण नत्तसु चणोदहीसु सत्तसु घणाटहिचलएसु अहीलोए
पायालिसु नवणेसु नवणपत्त्यन्तेसु उहुलोए कप्पेसु विमाणेसु विमाणावल्लिगासु विमाणपत्त्यन्तेसु तिरियलोए

अपजवो लोकने सतत्तागतमेभागे समुदातलोकने पस० स्वस्थानलोकने पस० । कहिणभते पचिदिय पल्लत्त पपत्तसगाण ठाणा प० । किहा हेभगवन्
पचेद्विउ पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकक्षा । गायमा उट्टनाण तदेकदमभागे अहीनाकतदेकदमभागे तिरियलोए । हेभीतम कर्होकातक देगभागे
अधोलाकातक देगभागे तिर्होलीकाटके । अगडेम तत्तविसु काटोयेसु समुत्तेसु सर्वमेवेषु जलामणसु जलठाणेषु । कूप तन्नाव सावत् दीपसमुद्ग सपं
जलामणे जलठामे । एत्थण पचेदिय पल्लत्त अपत्तसगाण ठाणा प० । इहा पचेद्विउ पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकक्षा । उववाणं न यत्त प० समग्वा
एण लोयम् प० मठाणेण लोउरम अमत्ते नःभागे । अपजवो लोकने पस० समुदातलोकने पस० स्वस्थानलोकने पस० यत्तातेभागे । कहिणभते येरय,
ण पल्लत्त अपजत्तगाण ठाणा प० । किहा हेभगवन् नारका पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकक्षा । कहिण येरय परिवर्तति । किहा नारकी वमेके ।
गोउमा उट्टाण सत्तमुट्टवीसु प० । हेभीतम स्वस्थान सातै पयिवोवेदे तेकहेके—रयण्यभाए सहर० वातुय० पक० धूम० तम० तमतम० ७ । ररतप

रेव कपाटयो रत्नगते नान्यत्र शेषतिर्यंग्लोकव्यवच्छेदनपरमेतद्वाक्यं त विधानपर विधानस्य कपाटग्रहणेनैव सिद्धत्वात्, तत्त्व पुन केवलित्वा विशिष्टश्रुतविदा वा गम्य, इयमत्र आगता-इह त्रिधावाटरपथाप्तजस्कायिका स्तद्यथा मज्जविका वट्टायुपो त्रिमुखनामगोत्राश्च तत्रयगकस्मा द्विधतासिद्धत्वात् अनन्तर वाटरपथाप्तजस्कायिकत्वेन उत्पत्त्यगते ते मज्जविका, ये तु पूज्यवज्रिगादिभिर्यै वट्टवाटरा पर्याप्तजस्कायिकायुप स्ने वट्टायुपो य पुन बांटरा पर्याप्तजस्कायिकायुनामगोत्राणि पूज्यवज्रिगादिभिर्यै वट्टवाटरा तत्र एकजविका यद्वायुपश्च स्ने वट्टायुपो य पुन बांटरा पर्याप्तजस्कायिकानन्नावात् ततो नतै रिहा धिकार, कित्वन्निमुखनामायुर्गोत्रे स्तेपामेवोपपातस्य द्रव्यतो वाटरा पर्याप्तजस्कायिकानन्नावात् तद युनामगोत्रवदन्नावात् ततो नतै रिहा धिकार, कित्वन्निमुखनामायुर्गोत्रे स्तेपामेवोपपातस्य स्वस्थानप्राप्त्या त्रिमुखलक्षणस्य लभ्यमानत्वात् । तत्र यद्यपि ऋजुमूत्रनयदर्शनेन वाटरा पर्याप्तजस्कायिका युनामगोत्रवदन्नात् यथोक्तकपाटद्वय

मा । जल्येव वाटरवाउकाडयाण पज्जत्तगाण तल्येव वाटरवाउकाडयाण अपज्जत्तगाण ठाणा पणत्ता ।
उत्रवाएण सव्वलोए समुग्घाएण सव्वलोए । सठाणं लोयस्स असखेज्जेसु भागेषु । कहिण भते ! सुज्जम
वाउकाडयाण पज्जत्ता अपज्जत्ताण ठाणा पणत्ता ? गोयमा ! सुज्जमवाउकाडयाण जे पज्जत्ता अपज्जत्ताण

कूप तलाव यावत् क्षोपे समुद्रे सर्वं जलमाश्रय जलनेठामे । एत्थण तेऽद्विय पज्जत्तगाण ठाणा प० । इहा तेऽद्विय पर्याप्ताकक्षा तिणाना ठामकक्षा । उय
वाएण नाउस्स अस० समुग्घाएण लोयस्स अस० सठाणल्लोयस्स अस० । ऊज्जवा लोकेने असख्यातमेभाग समुहानलोकेने असख्यातमेभागे स्वस्थानलोके
ने असख्यातमेभागे । कहिणभते वडारिआट्टण पज्जत्त अपज्जत्तगाण ठाणा प० । किहा हेभगवन् चौरिद्विय पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकक्षा । गोयमा ।
उट्ठलोए तदेकदेसभागे अहानाए तदेकदेसभागे तिरिगलाए । हेभोतम ऊज्जलोकातक देयभागे अलोकातक देयभागे तिरिगलोके । अगडेसु तला
पसु जाव दावेसु समदेसु सखमुचैव जलामएसु जलठाणेषु । कूप तलाव यावत् क्षोपसमद्रे सर्वं जलमाश्रय जलनेठामे । एत्थण वडारिद्विय पज्जत्त अपज्जत्त
गाण ठाणा प० । इहा चौरिआट्टण पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकक्षा । उववाएणलोयस्स अस० समुग्घाएणलोयस्स अस० सठाणल्लोयस्स अस० सखेज्जभागे ।

पात्तरालगतो यत्तमाना इति समुद्रघातगताश्च संकलनोक्तमा धूरयन्ति, उक्तञ्च-समुद्रघातेन संकलनोक्तेऽति । अन्यत्वं त्रिदधति-अतिवर्तय खलु वा दूरा पयाप्तैर्ऋक्षायिका एकैक पर्याप्तनित्रया असंख्ययानामपयाप्ताना मत्वादात् ते च सूक्ष्मेऽपि स मत्तद्यन्ति सूक्ष्माश्च सब्र विद्यन्त इति वादरा पयाप्तैर्ऋक्षायिका इव २ भवनपर्यन्ते कृतमारणान्तिकसमुद्रघाता सन्त सकलमपि लोक मापूरयन्तीति न कश्चिद्दीप, अपि तु निरुपच रिततऋक्षायिकसमुद्रघातप्ररूपणानुशस्यापनस्थस्यानेनलोकस्यासंख्ययज्ञाने इति पर्याप्तनित्रया अपयाप्तानामु त्वादात्, पर्याप्ताना च स्थान मनुष्यक्षेत्र त च लोकासत्ययतमज्ञागमागमिति, सूक्ष्मपयाप्तैर्ऋक्षायिकसूत्र सूक्ष्मपयाप्तपयाप्तपर्याप्तीकार्यक्रमयद्वायनीय, गद्य वायुकायिकजन

ठाणा पयज्ञा १ गीयमा । जत्येव वादरवगस्सडकाडयाण पज्जत्तगाणं ठाणा तत्येव वादरवगस्सडकाड याण अपज्जत्तगाण ठाणा पयज्ञा । उववाएण सव्वलोए समुग्धाएण सव्वलाण लोयरस अउसस्वेज्ज डन्नागे । रुहिण नत्ते । सुज्जमवगस्सडकाडयाण पज्जत्तगाण अपज्जत्तगाणय ठाणा प० १ गी० । सुज्जमवग स्सडकाडया जे पज्जत्तगा जे अयज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेमा अनाणत्ता सव्वलोयपरियावणगा

अपज्जत्तगाण ठाणा प० । इण्ठाठामै नारकीपर्याप्ता अपर्याप्ताता ठामकक्षा । उववाएण लोयरस अस० समुग्धाएण लोयरस अस० सह णेण लोयरस अस० । अपज्जत्तगा लोकेने पस० समुग्धातलाकन अस० स्वस्थानलाकने असंख्यतेमेभागे । तत्थण वड्डवे नेरइयापरिवसति । तिहा मारको वसेक्के । कानाभा मागमोर नाम हरिसाभौमा असंख्यगा परमकिण्णाय पत्ता । कासोवामा कातिजेइतो भयनेवने उक्तस्सामकै जेइना परम उरकटवर्ण कक्षा । तेण तत्थ निबभौया निबभौया निब्वेवसिया निब्ववगा निब्वररमसुद्धमवधनरभय पधुगुग्धामाणविहरति । तिहा नित्य च'स पास्य के परमाधार्मिक यको नि त्थ च से माहासाहि नित्य उहिम्नके नित्य परमचयुग्म उक्खने सन्नध गरक्कनाभय भागवता विचरे । कहिणभने रयणव्यभण्डवौ गर याण पज्जत्त अपज्ज साण ठाणा प० । किहा इभगवन् रत्तपमानारको पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकक्षा । काहणभने रयणव्यभण्डवौ निरया परिवसति । किहा इभगवन्

कपाटयो यंयोक्त स्वरूपयो योन्य पातरालानि तेषु ये सूक्ष्मपृथिवीकायिकादयो यादरपर्याप्तैर्जरकायिकेषु त्पद्यमानमारण्यान्तिकसमुहातेन सम
वहता स्ते किल विफ्रभवास्तत्वाभ्या शरीरप्रमाणमात्रत्वात् आयामत उत्कर्षतो लोकान्तयावत् आत्मप्रदेशान् विनिपति तथा चा वगाहनासम्प्राप
नपदे वक्ष्यति पुढविक्काइयरसण भते मारणातिक्रमगुचाण समोहयरस तेयासरीरस कोमहालिया सरीरोगाहणा पन्नता गो० सरोरपमाणमे
त विफ्रनवाहण आयामेण जहजेण अगुलरस असरेजेइजाण उक्कोसेण लोगाउ लोगतो इति, तत स्ते सूक्ष्मपृथिवीकायिकादय उत्पत्तिदश याव
त् विविहात्मप्रदेशदशना अपान्तरालगती वतमाना यादरपर्याप्तैर्जरकायिकायुर्ध्वदनाल्लब्धबादरापयांस्तजरकायिकव्यपदेशा समुच्चातगतायवा

अग्रेषु तंलगेसु ढंडीसु दहेसु वावीसु पूस्करिणीसु दीहियासु गुजालियासु सरेसु सरपतियासु सरपतियासु
पतियासु विलपतियासु उज्जरेसु निज्जरेसु चिब्लंसेसु पव्लंसेसु समुद्देसु सहेसुचेव जल्लास
एसु जलठाणेसु एत्थण वादरवणस्सइकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा पक्खत्ता । उच्चयाएण सहेलोए, समुग्घा
एण सहेलोए सठाणेण लोगरस्स अ्सखेज्जइन्नागे । कहिण भते ! वादरवणस्सइकाइयाण अपज्जत्तगाण

भा सर्करप्रभा बालुगभा पङ्कपभा धूमप्रभा तमप्रभा तमप्रभा । एत्थण येरियाण चउरासिस्ति णिरयावास सयसवरसा भवतिस्ति मक्खाय तेण णिर
या । इहा नारकीना द४ लाख नरकावासकै इम तीर्थकरे कल्लो तेकहकै — अतोयट्ठायाहि चउरसा । भाहि बाटलाकारेकै वाहिर चौखुणो । अहे कुर
प सठाणसठिगा । नौचे खुरणसस्थाने सस्थितकै । निखिवियारतमसाववगय गह चट मूर नक्खत्त जोःसि पहाय । नित्य अन्धकार तमसा गह चन्द स
य नखत्त ज्योतिपीतो प्रभारहितकै । वसा पूयपडिह नहिर मस चिखिन्नित्ताणुनिवणत्तला । सभावे मेट वसा गधूत मास तिणे लीया हायपय । असु
इ बीसा परमदुग्गिगधाकाथो अगणिवक्काभा । एतावता अपचित्तकै मडादुग्गव्यगरीर अगिजलतो सरोखी अभावकै जेहनी । कक्कडफासा दुरहिया
सा प्रमुभानरगा मुभानरएसु वेगणाथो । कर्कगस्यं अंसिपवपर एदवा पाछा नगरनाठामे यतौव अगुभवदेना भोगवैकै । एत्थण येरियाण पक्खत्त

पाप्मनानगती यत्तमाना इति समुद्रघातगताः एकलोकोकमा धूरयन्ति, उक्तञ्च-समुद्रघातेन सर्वलोकोकं इति । अन्यत्वं त्रिदधति-अतिवहव खलु वा दरा पर्याप्तैर्ब्रह्मायिका एकैक पर्याप्तनित्रया असम्ययानामपर्याप्ताना मुत्पादात् ते च सूक्ष्मेष्टपि स भुत्वद्यन्ति सूक्ष्माश्च सवत्र विद्यन्ते इति यादरा पर्याप्तैर्ब्रह्मायिका स्व २ भवनपर्यन्ते कृतमारणान्तिकसमुद्रघाता सन्त सकलमपि लोक मापूरयन्तीति न कश्चिद्दोष । अपि तु निरुपच रिततत्त्वब्रह्मायिकसमुद्रघातप्रकृपणागुणस्थापनस्थरानेनलोकस्थामस्ययज्ञाने इति पर्याप्तनित्रया अपयाप्तानामुत्पादात्, पर्याप्ताना च स्थान भुव्यक्षेत्र त च लाकासत्येयतन्नागमात्रमिति, मूलपयाप्तौ ब्रह्मायिकसूत्र सूक्ष्मपर्याप्तपयाप्तपर्याप्तीक्रियसूत्रज्ञावनीय, यत्र वायुक्रियायिकजन

ठाणा पणत्ता ? गोयमा । जत्येन वादरवणस्सडकाडयाण पज्जत्तगाण ठाणा तत्येन वादरवणस्सडकाड याण अपज्जत्तगाण ठाणा पणत्ता । उववाएण सव्वलोए समुग्घाएण सव्वलोए सठाणंण लोयरस अपसखेज्ज डताने । रुहिण जते । सुजमवणस्सडकाडयाण पज्जत्तगाण अपज्जत्तगाणय ठाणा प० ? गो० ! सुजमवण स्सडकाडया जे पज्जत्तगा जे अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अप्विसेमा अप्पनाणत्ता सव्वलोयपरियावयागा

अपज्जत्तगाण ठाणा प० । दणाठामे नारकीपर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकक्षा । उववाएण लोयरस अस० समुववाएण लोयरस अस० सह णेण लोयरस यम० । अपज्जत्ता लोकाकने यम० समुववाएण लोकाकने अस० सख्यत्तामेभागे । तत्थण बह्वे नेरदयापरिवसति । तिहा नारकी वसेहे । कानाभा न गभीर लोम डरिमाभीमा वसणगा परमकिण्णप पत्ता । कालीयामा कातिजेहनी भानेवसे उक्कट्टामहे लोहना परम उक्कट्टवर्ण कक्षा । तेण तत्थ निव्वभीया निव्वत्था निव्वत्तमिया निव्वत्तगा निव्वत्तपरमसुहसवधनरगभय पञ्चमुववाएण विहरति । तिहा न स पास्य के परमाधार्मिक यकी नि त्थ च से मीहामीह नित्य सप्पिन्नहे नित्य परमयुग्म उक्कते सव्वत्तरकनाभय भागवता विहर । रुहिणभने रयणभयपुठ्ठो यर थाण पज्जत्त अपज्ज ताण ठाणा प० । किहो हभगवन् रत्तनपमानारकी पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकक्षा । काहणभते रयणभयपुठ्ठो गे निरया परिवसति । किहा हेभगवन्

रपत्रिकाधिकमत्राख्यपि प्रत्येक श्रीणि २ ज्ञावनीयानि । नवर वादरपर्याप्तवयुकायिक्तसूत्रे भवन्नच्छिद्राणि भजनानामवकाशान्तराणि भवन्नि कुटा गजालादिकत्या कचन भवनप्रदेशा नरकच्छिद्राणि नरकानि कुटा गजालादिकत्या नरकावागप्रदेशा यवविमानच्छिद्राणि विमानानि कुटा य प्रतिपत्तव्या , उवजगणलीगस्मस्रस्रजेमृन्नागेसहस्रादि ॥ चायवोरि पयासा अतिवर्धो यतो यत्र सपिण तत्रवायु सुपिरप्रतुन्नद्यनोरु इति त्रिष्य प्यपपातदिपु लोकास्या सत्येयेषु नागेषु त्पुक्त अपयासजटारगयुकायिक्तसूत्रे उजगयण समुगणगनस्रलीगति ॥ इष देवनारकजाल्य शपका यस्य सर्वज्ञा यादरापयाप्तवायुकायपु समुत्पद्यन्ते यादरापयासाश्चा उपान्तरालगतावपि तज्यन्ते बहूनि च स्वस्थानानि वादरपर्याप्तवयुका

पयाज्ञा , समणाउसो । कहिण जते ! वेइदियाण पज्जन्ता पज्जन्ता ठाणा पयाज्ञा ? गोयमा ! उहुलोए तदेकदेसज्जागे , झुहोलोए तदेकदेसज्जागे , तिरयलोए झुगळेनु तलाएसु नदीसु वात्रीसु पुस्करगीसु दीहियासु गुजालियासु सरिसु सरपतियासु सरसरपतियासु उज्जरेसु निज्जरेसु चिन्नलेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीन्नेसु स मुहेसु सहेसुचेव जलासएमु जलठाणेसु , एत्थण वेइदियाण पज्जन्तापज्जत्तागाण ठाणा पयाज्ञा । उववापण लीगस्स झुसखेज्जइज्जागे , समुग्घएण लीयरस झुसखेज्जइज्जागे सठाणेण लीयरस झुसखेज्जइज्जागे । कहिण

रदनपभा नारकी कह्ये—गायमा इमासरेवध्याण पटवौए असौवत्तर लीगणसहरस वाह्वाण उवरि ०ग जायएसहरस कयहिंसा इहु चगजायण सहरस वज्जिता मर्कई झुहत्तरे लीयणसयमहरसे । हेमोतम ए रदनप्रभाप्रधिर्वोते ८० वोजन जाटपणे पवाधये ऊपरि हजारोजन म्कोन हेठले ह नार म्कोने मध्यविषे १०१०८ एककाख अठात्तरसहस्र योजनपरिमाण । इत्थण रयणपपुटवौ केरइयाण तोस निरयावाम सयमहसा हवति ति मक्काय । तिहा रदनप्रभानारकी तीसलाख नरकावासेरहेके इम तीर्थकरे कछा । तेणनरगा अतीवडा वाहिचउरम अहेसुरणमठाणमठिया । तेनरका वासामाहि बटकाकारे वाहिर चउरस नौच खुरयख सखानके । निचधिधार तमसा ववगय गह चद सर नकुत्त जोयासपडा मय वसा पय पडल

विज्ञाना ततो अत्रारनयमतेना प्युपपातमधिकृत्य सकललोकव्यापिता घटते इति न कश्चित् क्षितिः, समुद्घातेन सकललोकव्यापिता सुप्रतीतिव सर्वेषु मन्त्रेषु सवच्च तत्ताक तेषा समुत्पादसम्भवात्, यादरापर्याप्तवनस्पतिकार्यिकसूत्र उद्यवागुणसर्वलोगद्वयदरपयाप्तवनस्पतिकार्यिकाना स्वस्थान घनादध्यादि । तत्र यादरनिगादाना सवालादीना सम्भवात् सूक्ष्मनिगादाना अवस्थितिरन्तर्मुहूर्त ततस्त यादरनिगादेषु पर्याप्तपु समुत्पद्यमाना यादरनिगादपयाप्तायुरनुज्वलन् सुविज्ञादृजमग्रनयदज्ञानन्युपगमन लब्धयादरपर्याप्तवनस्पतिकार्यिकव्यपदज्ञा उपपातेन सकलकाल सर्वे लाक व्याप्नुयति, तत उक्त-उपपातेन मवलोकै इति समुग्यागुण सर्वलाग इति ॥ यदा यादरनिगादा मूक्ष्मनिगादेषु आयु बद्धा पर्यन्ते मारणा तिकसमुद्घातेन समवर्त्ता आत्मप्रदशानुत्पत्ति दज्ञायवन् विक्षिपन्ति तदा यादरनिगादपयाप्तायुरध्याप्य क्षीणमिति वादरपर्याप्तनिगादा एव

जन्ते । तद्विदियाण पज्जन्तापज्जन्ताण ठाणा पयाप्ता ? गोयमा ! उहुलोए तदेकंदेसन्नाए अहोलोए तदेक देसन्नागे, तिरियलोए अगळेसु तलाएसु वावीसु पुस्करणीसु दीहियासु गुजालियासु सरसु सरपतियासु सरमरपतियासु विलपतियासु उज्जरेसु निज्जरेसु चिप्तलेसु पल्लेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्धेसु सहेसु चंच जला सएसु जलठाणंसु एत्थण तद्विदियाण पज्जन्तापज्जन्ताण ठाणा पयाप्ता, उववाएण लोयस्स अस्सखेज्जइन्नागे समुग्घाएण लोयस्स अस्सखिज्जइन्नागे सठाणंण लोयस्स अस्सखेज्जइन्नागे । कहिण जन्ते ! चउरिदिदियाण पज्जन्तापज्जन्ताण ठाणा पयाप्ता ? गोयमा ! उहुलोए तदेकंदेसन्नाए, अहोलोए तदेकंदेसन्नागे, तिरियलोए

गहिर मस चिक्खिस्सभूमितलानिज्जाणुसेवणतला । नित्त अग्घकार रहितक्के गृह वट्ट मयं नच्च ज्योतिपोतो प्रभा रहितक्के मेट वया अघूत पहल व विर मास तणकरो चाकणाक्के हाथ पग शरीर जेहना एतावता । असइवासा परमदुग्घिगधा कावय अगणवण भा । अयविच्च परमदुग्घिकाय अग्नि वण बलतोकातिक्के । कक्खउफ्फासादुरहियासा अस्मानरगा अस्मानवरएसु वेयणाओ पचणभवमाथाविहरति । कर्कयस्सयं दुखसहिवाएइवा माठानगर

समुद्गातगताद्यमकललोकयापिनद्येति समुद्गातेन सर्वलोकं स्वस्थानेन लोकस्यासंख्यतमे जागे घनोदध्यादीना सर्वेषामपि समुदिताना लोकस्या
संख्ययन्तागमात्रादित्यात् गुणाय २००० ओषसुगम एव ह्रीन्द्रियघोन्द्रियचतुरिन्द्रियसामान्यत पञ्चन्द्रियसूत्राण्यपि ज्ञावनीयानि नवर ह्रीन्द्रियादयो
घटयो जलसम्भूता शृङ्गप्रप्लवत इति सर्वेष्वपि सूत्रेषु स्थानान्य वटादौनि वृक्तानि, तथा ऊर्ध्वलोक तदेकदेशज्ञागे मन्दरादि वाप्यादिषु अधोलोको
तदेकदेश अधोलोकि कयामकूटतटागादिषु ओषेषु पयस्य स्वय परिज्ञावनीय, अथुना पर्याप्तापर्याप्तनैरयि कस्यानप्रकृपण, ये माह-कटिणभतेनेरया
यमित्यादि ॥ कस्मिन् प्रदेशे नदन्तनैरयिकाणा पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रच्छन्तानि सतदेव व्यक्त पृच्छति यथान्ये व्यवनुध्यन्ते, कहिणमिति ॥

अगर्गसु तलाणसु वावीसु पुष्करिणीसु दीहियासु गुजालियासु सरसु सरपतियासु सरसरपतियासु णिज्ज
रेसु उज्जरेसु चिन्नलंसु पल्ललंसु दीवसु समुदंसु सर्वेषु च जलासणसु जलठाणसु एत्थण चउरि
दियाण पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाणा पणत्ता । उववाएण लीयस्स अस्सखेज्जइन्नागे समुग्घाएण लीयस्स अस्स
खेज्जइन्नागे, सत्थाणंण लीयस्स अस्सखेज्जइन्नागे । कहिण भते ! पचिदियाण पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाण प०

नेठामै तिहा माठोवेटना भांगवताथका विचरेके । एत्थण रयण रयणम पुठवौ केरइयाण पज्जत्तपज्जत्तगाण ठाणा प० । एणै प्रकारे रतनप्रभा नार
कीना पत्तागि अपत्तागि रहके । उववाएण लीयस्स अस्स समुग्घाएण लीयस्स अस्स । सत्थाणंणोत्तम अस्स० । उपज्जवो लोकने अस्स० समुद्गातलोकने अस्स०
स्वस्थानलोकने अस्स० । तत्थण वइव रयणपम पुठवाणरऽया परिवसति । तिहा घणा रतनप्रभा नारको वसेके ते केइवाळे । कालाकालाभासा गभीरलो
महरिस्ता भीमा उत्तासणा परमकिम्बुवणा पत्ता पणत्ता । कालाकालो आभाळे प्कटटीमके जेइना वासताथका परमकालेवणकट्टा । समणावसो ।
सहायमणो आयुपावत्तो । तेण निस्सभौया निस्सतत्था निस्सतत्था निस्सवणा निस्सपरमसुहसवधनरगभय पञ्चणभवमाणा विहरति । नित्य वीहता नि
त्व वासयाळे नित्य वहरिणके नित्य परमअसुहसवधो नरकना भयप्रदो भांगवता विचरे । कहिणभते सकरणमपुठवौकेरइयाण पज्जत्ताण अपज्जत्ताण

एकस्मिन् प्रदेशे यमिति वीर्यालङ्कृतौ नैरयिका परिग्रसन्ति जगवानाह-गीतम स्वस्थानेन सप्तपृथिवीषु ता एव नामग्राह माह-तजरा ॥ रय
शाय्यतामहृत्यादि ॥ गतायं गत्यनमित्यादि ॥ अत्रै तासु पृथिवीषु सप्तसु पृथिवीषु नैरयिकाणां सप्तसङ्ख्या चतुरशीतिनरकावासशतसहस्राणि न
वन्ति तथाहि-रत्नप्रभाया त्रिशन्नरकावासशतसहस्राणि जयन्ति शक्रप्रभाया पञ्चविंशतिशतसहस्राणि वालुकप्रभाया पञ्चदशलक्षा पट्टप्रभाया
दशलक्षा धूमप्रभाया त्रीणिशला तप्तप्रभायामेक झतसहस्र पञ्चोत्तमप्रभाया पञ्चेति प्रवन्ति सबसङ्ख्या चतुरशीतिलक्षा नरकावासानां
मित्याख्यात मया शीर्षे च तीयकङ्क ॥ तेनरकावासाश्चतुरशीति लक्षप्रमाणा सर्वेपि प्रत्येकम लक्षं यत्राने वृत्ताकारा
वह्निर्ज्ञाने चतुरस्त्राश्चतुरस्त्राकारा इदं च पोठापरिवत्तन मध्यभागम धिरुत्त सकलपीठाद्यपेक्षया स्वा वलिका प्रविष्टा वृत्तव्यस्तवचतुरस्त्र

? गोयमा । उट्टलोए तटेकटेसन्नागे अहोलीए तटेकटेसन्नागे तिरिगलोए अगळेसु तलाएसु नदीसु दहेसु
वावीसु पुरकरिणीसु दीहियासु गुजालियासु सरैसु सरपतियासु विलपतियासु उज्जरेसु णि
ज्जरेसु विव्वलेसु पल्लंसेसु वप्पिणंसेसु दीवेसु समुहेसु सवेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु एत्थण पचिदियाण
पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाणा पणत्ता, उववाएण लोयस्स असखेज्जइन्नागे, समुग्घाएण लोयस्स असखिज्जइ
न्नागे, सठाणेण लोयस्स असखेज्जइन्नागे । कहिण जते । नेरइयाण पज्जत्ता पज्जत्ता ठाणा पणत्ता ?

ठाणा प० । किइहा हेभगवन् शर्करप्रभापृथिवीना नारकीना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठाम कट्ठाकै । कट्ठिणभते सकरणभपट्टवी केरइया परिवसति । कि
इहा ते भगवन् रत्नप्रभानारकी रत्ताकै । गोयमा सकरणभाए पट्टवीए वत्तीसत्तरजावणसप्तसङ्ख्यावाइत्ताए उववरिएगोयणसहरस उग्राहिता इड्ढावेग
जोयणसहरस वज्जिणा । हेगीतम शर्करप्रभाना पृथिवीये एकलाख वत्तीसहजार जाडपणे तेइने ऊपर एकहजारगोजन मूकोने हेठले एकसहस्रगोज
न मूकोने । मग्गे तीसत्तरजोयणसहरस वज्जिजा । मज्ज एकलाख वत्तीसहजार जाडपणे । एत्थण सकरणभपट्टवी केरइयान पणवोस तिरियावासस

नस्थाना प्रतिपत्तव्या कर्तुरप्यसठाणसठियाइति ॥ अघोर्भूमितले शुरप्रस्थेव प्रहरणविघोषे स्तीक्ष्णतालदण स्तेन स
स्थिता, स्तयाहि-तेषु नरकावासेषु भूमितले मष्टणत्वाजावत शकिल पादेषु न्यस्थमानेषु शकरमात्रमस्पर्शपि क्षुरप्रेणेव पादा- कृत्यत, निचुच
यारतमसाइति ॥ नित्यान्यकारा उद्योताजावतो य तम स्तदिह तम उच्यते तन तमसा नित्य सबकालमन्यकारा स्तत्रा पवरकादिष्विव नामान्य
कारा स्ति केवल वहि सूयप्रकाशो मन्दतमो भवति नरकेषु तीर्थकरजम्बोद्गादिकालव्यतिरेकणा न्यदा सबकालमपि उद्योततोगस्या प्य जावतो
जात्यन्यस्मेव मेपच्छलकालादुरावइवा तीव्र वहलतरो वसत तत उक्त तमसा नित्यान्यकारा तम य तत्र सदावस्थित मुद्योतकारिणाम सत्त्ववात्

कहिण भते । नेरइया परिवसति ? गोयमा । सठाणेण सत्तसु पुढवीसु तजहा-रयणप्पन्नाए सक्करप्पन्नाए
वालुयप्पन्नाए पक्कप्पन्नाए धूमप्पन्नाए तमतमप्पन्नाए एत्थण नेरइयाण चउरासि निरयावास
सयहरसाइ नवतीति अरकाय, तेण णरगा अतोवहा वाहिचउरसा अहे खुरप्पसठाणसठिया निच्चययार
तमसा ववगयगहचदसूरनरक्तजोइसपहा मेडवसापूयसुहिरमसचिक्कल्लित्तणुलेत्रणतला अुसुईवीसा परम

यसइच्छा भवतीति मत्वाय । इहा शर्करप्रभा पुथिवीनानारको पचवीसत्ताए नरकावासे वसहे इम तोर्थकरे कल्लोके स्वयमुखे प्रह्वया । तेण नरगा अ
तावटावाहि चउरसा अहेसुरप्पसठिया । त नरकावासांमाहि वाटला वाहिर चौराके नीचे खुरप्प सठाणेके । निचुधियार तमसा ववगयसरचदणहन
क्कत्त जाइसियमहामेयवसापूयपडलसुहिरमासचिक्खित्तणसेवणतना । नित्य अन्धकारे तमकरके गयांछे सुये चद गृह नचच ज्यंतिपौतो प्रभ प्रम
ख मेड वगा पूतपडल रुधिर मास तेयकरो चोक्कणाछे हाय पगना तला । अगुर वीसा परमदुभियगाकांशं अगणिवसाभा । अपविच दुर्गेवकाय लो
टा धमनो जहेनेहव तेहवो आभा क्कटो सातमौवर्जी कक्कडफामा दुराडिगसा असभानरगावासा असभानरगसेवणा । कर्कगस्यगळे दुये अहि
वासपयाव्या एहवामाठा नगरना । एत्थए सक्करप्पनपुढो नेरइयाण पजत्तपत्तगाण गठा प० िहा शर्करप्रभापुथिवीना नारको परांता प्रपवर्धता

तथाचाच दधगयगुदसूरमस्तजोदुसिधपत्ता ॥ व्यपगत परिग्रहो ग्रन्थस्वसूरनरनरुपाणामु पलक्षणमे तत्ताराकूपाणा ह्य ज्योतिष्काशा पन्थाना
गा यत्त्य स्मे व्यपगतग्रहचद्रमयनतवत्यातिकपन्था तथासमग्रमापूयसुधिरमसचिकित्सालित्तानुलवणतलादिति ॥ स्वप्नावसपने मंदोदसापूतिसि
रमार्गे यथिस्थित कदम तेन लिप्तमु पदिग्ध अनुलेपनन सहस्रितस्य पुन पुन सप्तपन्नन तलभूमिका यथा त भटोवज्ञापूतिसुधिरमासचिपित
ह्रितिसानुनपन्नना अतमया शुचयो पावित्रा बीभटमा दक्षनप्याति जुगुप्सात्यत क्वचित् बीसा इति पाठ साय विद्या आनान्तिका परमदुरभिगधा

दुस्त्रिगधा काञ्जयगणिवन्तात्ता करकुरुफात्ता दुर्गहियासा अस्सुन्ना नरगा अस्सुन्ना नरएस्सु वेयगालु पत्यग
नरइयाण पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाणा पयात्ता, उववाएण लोयस्स अस्सखेज्जइज्जान, समुवाएण लोयस्स अ
सस्सखेज्जइज्जाने, सठाणेण, लोयस्स अस्सखेज्जइज्जाने, एत्थण वहवे नरइया परिवसति काळा कालान्नामा म
नीरलोमहरिसा जीमा उत्तानणगा परमकण्हा वणेण पयात्ता, तेण तस्य णिच्च नीया णिच्च तत्ता णिच्च
तसिया निच्च उव्विगा णिच्च परममसुजसवच्छनरगज्जय पञ्चणुस्रवमाणा विहरति । कहिण जते । रयणप्यन्ना
पुढवीनरइयाण पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाणा प० ? म्हिण जते ! रयणप्यन्नापुढुनिनरइया परिवसति ? गो० !
इमीमे रयणप्यन्नाए पुढवीए असीउत्तरजीयणसयसहस्सवाहत्ताए उव्विरि एग जोयगमहस्समोगाहिता

ता ठानकत्ता । उववाएण नायन्त यस्स० समयायण नीयिवा यस्स० मग्गाणण्णायस्स य० । उपज्जवालाकने य० समु० ल० प्यातमेभागे ।
तत्थण वहवे सक्कर पभपटवो नर०या पारवसात । तिहा घणा गकरप्रभाता नार०ी वसेक्के । कालाकालाभासा गनीरलामहरिसा भोमाओत्तासयणा पर
मकिट्ठा वण्ण प० । त म्थ० नक कालाकाला यामाक्के जटने भवन वमे उत्कटरामक्के जइना भय त्तरा कपक्के वटक्कट वण्णे परमकाला दुत्त०क्के । नमणा
उसा । यद्वायमपा य युपावन्ता । तथए ते नच०या नच०या निव०सिया निचुव्वगा निचपरेमममुदसवट नरगभय पयुग्गाभाणा विहरति । ति

मृतगादिकेवरेभ्यो एव तीव्रा निष्टदुरिगत्या ॥ काकग्रगणिवन्नाज्ञा इति ॥ लोहे धम्ममाने यादृक् कपोतो वृक्षजस्तपो गे वंशं किमुक्त जयति
यादृशी यदुक्ताग्ररूपा अग्निवन्नाज्ञा विनिर्गच्छतीति तादृशी आज्ञा आकारो यथा ते कपोताग्निवर्णाज्ञा धम्ममानलोहोऽग्निवन्नालाकस्या इति ज्ञा
तः, नारकोत्यसि स्थानव्यातिरकणा न्यत्र सद्यथा एव एतत्पत्वात् यतश्च यत्पुंसमेवैष्यीवजम वनय, तथा च वक्ष्यति नवर ॥ छटसत्तमोमुक्ताज्ञ
गणिवन्नाज्ञानमवति ॥ तथा, ककशा गतु संहो सिपवस्येव स्पर्शयिषु ते ककदाभ्यर्णा, अत गत दुरिहियासा इति' दुराणाभ्यास्यन्ते सत्यान्त दुराभ्यासा

हेठाचेग जोयणसहस्स वज्जिता मज्जे अठहत्तरिजोयणसयसहरसं एत्थण रयणप्पन्नापुढविनेरडयाण तीस
निरयावाससयसहस्सा नवतीति मस्काय, तेण नरगा अणो वहा आहि चउरसा अहे खुहप्पसठाणसठिया
निच्चधयारतमसा ववगयगहचदसूरनस्कत्तजोडसपहा मंडवसापूडयपळठरुहिरमसचिक्कल्लित्ताणुलेत्रगतता
असुइवीसा परमदुस्सिग्धा काज्जुगणिवन्नाज्ञा कस्करुतासा दुरहियासा असुन्ना गरगा असुन्ना नरगेसु वे
टणाअ एत्थण रयणप्पन्नापुढविनेरडयाण पज्जिता पणत्ता, उववाएण लोयस्स अस्सखेज्जा

इति ते नित्य बोद्धे परमाधामायेकरो नित्य चाश्या नित्य चदिग्ग नित्य परमसखवधो नरकनाभय भोगयतायका विचरेकै । कदिग्गभन्ते वालुग्यमपु
ठोपरिरडयाण पज्जित अपज्जिताए ठाणा प० । किहा हेमगवन् वालुकप्रभापृथिवी नारको पर्याता अपर्याता ना ठामकक्षा । गोयमा वालुग्यभागपु
ठोपे अट्टावीमत्तर जायणसयसहसा बाहल्लापे चवदि एकायण सहरम उरगादिता । हेगौतम वालुकप्रभा पृथिवीये एकताख अट्टावीसहल्लार लाड
पणे बाह्म तेहमाहि एकसहस्रयांजन ऊपरम कीने । डिडुविगजोयणसहरम खल्लसा मल्ले क्वीसुत्तरेजोयणसयसहरसे । हेठे एकयोजन सहस्स मकी
ते मध्य विचे एकताख क्वीसहल्लारना अवकाश । इत्थण वालुग्यमपुठो केरडयाण परानिरयावाससयसहस्रसामवतितिमस्काय । तिहा वालुकप्रभा
पृथिवीना नारकीना पनरेलाख नरकावासाहे केवसज्जानीये कल्लोहे । तेणनरगा यतोवट्टा बाहि चउरसा आव असुमानरगा असुभानिरएसु येयणा

अज्ञाना दज्ञानतो नरका स्तथा गथरसस्पज्ञाददे रज्ञाभा अतीवा यातरूपा नरकेषु घेटना ॥ गत्यणमित्यादि ॥ यावत् गत्यणवध्वेनेरयापरिवसन्ति कालादित्यादि ॥ काला कृष्णा तत्र कोपि नि प्रतिपद्यतया मन्द कृष्णोपि भवति तत् स्तदा शक्यवच्छेदार्थं विशेषणान्तरमाह-कालावभासा का त कृष्णा घञास प्रतिज्ञाविनिर्गमो यज्ञ्य स्ते कालावभासा कृष्णप्रज्ञापटनोपचिता धृतिज्ञाव , अत यः गम्भीरलोमहृषा गम्भीरो ऽस्तीजो रूढो

इज्जागे, समुग्घाएण लोउस्स अ्सखेज्जइज्जागे, सठाणेण लोयस्स अ्सखेज्जइज्जागे । तत्थण वहन्तं रयणप्प ज्ञापुढविनेरइया परिवसति । काला कालाज्जासा गम्भीरलोमहरिमा ज्ञीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वन्तेण पखत्ता, समणाउसी । तेण णिज्जु ज्ञीया निज्जु तस्या णिज्जु तसिया णिज्जु उज्झिगा निज्जु परममसुन्नसवद्ध नरगज्जय पच्चणुप्पवमाणा विहरति । कहिण जंतं । सक्खरप्पज्जापुढविनेरइयाण पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाणा पयात्ता ? कहिण जंतं, सक्खरप्पज्जापुढविणेरइया परिवसति ? गोयमा ! सक्खरप्पज्जापुढविणेर वत्तीसुत्तर जोयणसयसहस्सवाहत्ताए । उवरि एग जोयणसहस्स उग्गाहिता हेठा वेग जोयणमहस्स वज्जित्ता मज्जे

यो । ते नरकावासामाहि हुत्ताकार वाहिरचौरस यावत् अशुभ नरकावासा अयभनरकौ वेदना भोगवता । पत्थण वालुण्णभपटवोणेरइयाण पक्खत्त अपक्खत्ताण ठाणा प० । इण्ठामे वालकप्रभा नारकीना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकट्ठा । उववाधोलायस्स अस० समुग्घाएणलोयस्स अस० सट्ठाण लायस्स पसख्खल्लभागे । कपज्जोलाकने असत्थातमेभाग समत्थातलोकने पस० स्वय्यानलोकने पस० । तत्थणवध्वेवालुयपभपटवोणेरइया परिवसति । तिज्जा घणा वालकप्रभाना नारकी वमैक्खे । कानाकालोभासा जाव निज्ज परममसहस्सवन्नरगभय पच्चणवमाणा विहरति । कालाग्रोरे कालोचाम के यावत् नित्य परमपसखसवधो नरकनाभय प्रतिभोगवता विचरेक्खे । कट्टिणभते पकाएभपटवो णेरइयाण पक्खत्त अपक्खत्ताण ठाणा प० । किंहा हे भगवन् पट्टप्रभानारकी पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकट्ठा । पकाएभपटवोणेर वीसुत्तरलोयपसयसहस्सवाहत्ताए उवरि एगलोयपसहस्स वरगाहिया । हे

लोमएर्षा लोमोदुर्वीजययणात् येन्य स्ते गज्जीरलोमएर्षां किं मुक्त प्रवर्तते एव नम रुपाः। कृष्णाधमासा ये दर्शनमात्रेपि शोपनारक्तजन्तूना जयसपा
इनन मात्रातिग लोमहपमु त्याटय कोति, अत गव प्रयानका ग्रीनित्या देव उत्रासनका उत्रास्थगत शोपनारक्ता जन्तव यन्नि रित्युत्रासन उत्रासना
गव उत्रासनका किम्वयुहना वर्णेन वक्षमपि कृत्य परमरुपा यत ऊर्ध्वे न किमपि कृत्स्न स्ति जयानकवा वष्टकयमातरुक्षवर्णा मनुष्या मया शर्पे

सीमुत्तरजीयगमयसहस्रे ऐत्यण सक्करप्पन्नापुटवी नेरडयाण पगधीसं निरयावाससहस्सा हवतीति मरकाय
तेण नरगां अतो वहा वाहि चउरसा अहे खुरप्पसठाणसठ्ठिया णिञ्जधयारत्तमसा ववगयगहचदसूरणरक्त
त्तजोडनपहा मेयवसापूयपफलरुहिरमसचिख्ल्ललिन्नाणुलेचणतला असुडंवीसा परमदुप्पिगधा काऊअगणि
वसाप्ता करकफासा दुरिहियासा असुप्ता नरगा असुप्ता नरगेषु वयणात् ऐत्यण सक्करप्पन्नापुटवीनेरड
याण पज्जत्ता पज्जत्ता ठाणा पसत्ता । उत्रवाएण लायस्स असखेज्जडजागे समुच्चाएण लोयस्स असखे
ज्जडजागे सठापेण लोयस्स असखेज्जडजागे । तत्यण वहवे सक्करप्पन्नापुटवीनेरडया परिवसन्ति । काला

गीतम पङ्कप्रभाषयिषीये एकलाख बीससुखारयोजन बाह्य कपरिणिषासे एकद्वज्जारयोजन छाडोने । डिड वेग जायगसहस्स वज्जिन्ता मज्जे गद्वारमुत्तर
नीयणमयसइरसे । इठे पिण एकद्वज्जारयोजन छाडिडे विसे णकलाख पठारैरुज्जार अवकाये । ऐत्यण पकपम पटवी नेरडयाण दस निरयावाससयस
इस्स भवतीति सखाय । इहा पङ्कप्रभाषयिषीयेना दशलाख नरकावासा भगवन्ते कक्षा इम । तेण नरगा अतोवहा वाहि चउरस जाव यसहा निरडय
वेगणां । ते नरकावासाभादि डाटनाकारै नाहिर चउरय यावत अयुभनरकनो वटना भागवेळे इम । ऐत्यण पकपमपटवी नेरडयाण पज्जत्तयपक्का
साठठाणा प० । इहा पङ्कप्रभानारको पयात्ताअपर्यात्ताना ठा.म.कक्षा । उवयाएखेलोयस्स अय० समग्घ, एणलोयस्स अय० सडोयेण अय० । ऊपजवोलोकेने
यमव्यात्तमभागे, समुहत्तलाकेने अयमव्यात्तमभागे स्थानकलोकेने अय० । तत्यण वहवे पकपमपटवीनेरडया परिवसन्ति । तिहा घणा पङ्कप्रभा नार

अतोयं नरे नैयमम् ॥ तेन निरुद्धीया इत्यादि ॥ ततो नैरयिकायमिति वाञ्छालकारे, नित्य सर्वकाल क्षेत्रज्ञावज्ञानितसहानिवधान्तरार
द्वयनसो व्रीता नित्य स्वकाल उक्ता परमाधामिकपरस्परोदीरितदुःखसम्यातत्रया दृग्नि नासमु पपत्वा नित्य स्वकाल परमाधामिके पर
स्पर ना शान्तिता ॥ तस्य आरितः ॥ तथा नित्य स्वकाल यथायोग परमदुःखहृत्तीतोत्पन्नानुभवत परमाधामिकपरस्परोदीरितदुःखानुभवत यो

कालोन्नासा मन्त्रीरलोमहरिमा न्रीमा उत्तासणगा परमप्रियहा वखेण पश्यता ॥ समणाउसो ॥ तेण निच्छ व्रीता
निच्छ तत्या निच्छ तसिया निच्छ उद्धिग्गा निच्छ परममसुन्नसवद्ध नरगंजय पञ्चण्णवमाणा विहरति ॥ कहिण
न्नं ॥ बालुप्यप्पनापुढवीणेरुद्धयाण पंजंता ठाणा पसंता ॥ गोयमा ॥ बालुप्यप्पनापुढवीणेरुद्धया
वीसुत्तरजोयणसयमं हंसं वाहन्ता उव्वरि एग जोयणसहस्स उग्गाहिता हेठा वेगं जोयणसहस्स वज्जित्ता मज्जे
ठ्ठीसुत्तरजोयणनयसहस्से एय्यण बालुप्यप्पनापुढवीणेरुद्धयाण पणारसन्निरयावाससयहस्सा न्नवतीति मस्का
य ॥ तण नरगा व्युत्तो बह्व वाहि चउरसा व्युत्तं सुरप्पसठाणसंठिया निच्छवयारतममा ववगयगहचट्ठसू

को यमेष्टे ॥ कालाकोलोभासा जाव निच परममसुन्नसवद्ध नरगभव पञ्चण्णवमाणा विहरति ॥ कालाकालो भाभा यावत् नित्य परममसुन्नसवद्धी नर
कोभव प्रतिभ गयता विचरके ॥ कहिणभते धूमपमं पढवो षेरदयाण पज्जत्त अपन्नत्ताण ठाणा यं ॥ किन्ना इभगवन् धूमप्रभानोनारको - पर्याप्ता य
पयातामठाम कट्ठाहे तो कहे ॥ गोयमा धूमपमाण पुढवीणेरुद्धयाण पणारसन्निरयावाससयहस्सा वाहन्ता उव्वरि एग जोयणसहस्स उग्गाहिता हेठा वेगं जोयणसहस्स वज्जित्ता मज्जे
र याजनप्रमाण लाउपणे ॥ वव्वरि गगणीयण सहरस वगमाहिता ॥ जपरि एकहकारयोजन मू को तेकहे ॥ दिशुवेगजोयणसहस्स वज्जित्ता ॥ एकहजा
रयाचन वर्जिने ॥ मध्य सालमसर जोयणमयसहस्से ॥ विचाले एकलाखसोत्तहजारमाहि पिठके ॥ एत्यधूमपमपढवो षेरदयाण तिन्नानिरयावाससयसा
इया भवोत्तासमत्ताय ॥ इदा धूमपमाणापवो नारकोना तीनलाख नरकावासा कहवा तीर्थनरेकट्ठाके ॥ तेनरगा यतोवद्धा वाहि चउरसा जाव

इत्यादिगतायां ॥ तिर्यग्पञ्चन्द्रियमत्र प्राग्वत् नवर चंद्रलोकं तदेकदेशे तिर्यक् पञ्चन्द्रिया मत्स्यादयो भन्दिरादि वाप्यादिषु अधोलोके तदे

लमग अष्टुत्तरमेवहेठिमथा ॥ १ ॥ अष्टुत्तरचवतीस तृतीसचैवसयसहस्ससु अष्टारमसोलसग चौदसमहिय
तुठठीए । अष्टुत्तेवन्तसहस्सा उवरिमहोवज्जितोन्नणिय मज्जेउतिसुसहस्से सुहोतिनरगातमतमाए । तीसा
यपत्तवीना पत्तरसदसैवसयसहस्साइ । तिन्नियपचूणेग पचेवअणुत्तरानरगा ॥ ४ ॥ कहिण जने ! पच्चि
दियतिरिक्कजोणियाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प० ? गो० ! उहुलोए तदेकदेशमाए अहोलोए तदेकदेश
माए तिरियलोएसु अगळेसु तलाएसु नदीसु दहेसु वावीसु पुस्करिणीसु डीहियासु गुजालियासु सरैसु स

रपिण्ड गर्कपभानो एकलापु वसोसहजार एकलाख बसोसहजार एकलाख अठारैहजार एकलाख सौलैहजार एकलाख ॥
हजार एकवर्ष पृथिवीनां पिण्डकक्षा, द्विवे नरकनो भवकाशमान कहैके—अष्टुत्तरचतीस कृत्तवीसचैवसयसहस्ससु अष्टारमसोलसग चउदसमहियतुछठीए २ ।
एकलाख अठहस्रहजार रतनप्रभा एकलाख तीसहजार श० एकलाखकृत्तवीसहजार वा० एकलाख अठारैहजार धू० एकलाख सौलैहजार प० एकला
खचौदहजार त० प्र० छठीपृथिवीनां । अष्टतिवणसहस्रा उवरिमहोवज्जितोन्नणियमज्जेउतिसयसहस्से सुहुतिहृनरगातमतमाए ३ । साढावावनहजार
र सातमैयेंगोन जपर मूकोने साढावावनहजारवर्गजन हेठे मूकोने मध्यविचै तीनहजारयोजन भवकाग तमतमापृथिवीये हवे । ३ । तीसावपण
वीसा पणसरदसैवसयसहस्रा र तिन्णियपचूणेग पचेवअणुत्तरानरगा । ४ । द्विवे नरकावासानो सख्या कहैके, ३००००० तीसलाख नरकावासा पचवो
सलाख नर० पनरैलाख नर० दशलाख वा० तीनलाख नरकावासा पचे जन एकलाख नरकावासा तमप्र० । ४ । कहिणभते पचेदियतिरिक्कजोणिया
ण पज्जत्तापपज्जत्ताण ठाणा प० । किडा द्विवे हेभगवन् पचेदिय तिन्चवीनियाना पयोता भयर्थाप्लाना ठामकक्षा । गोयमा उहुडनोएतदेकदेशमाए
अहोनीएतदेकदेशमाए तिरियलोए । हेभौतम चंद्रलोक एकदेशभागे अधोलोके एकदेशभागे तिरिक्केलोके । जगळेसु तलाएसु नदीएसु दहेसु वावीसु पुस्कर

रपतियासु सरसरपतियासु बिलपतियासु उज्जरेसु निज्जरेसु चिखलेसु पखलेसु दीवेषु समुद्देशु स
 हंसुचेव जलासएसु जलठाणेषु एत्थण पचिट्ठितिरिक्खजोणियाणं पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प० । उववा
 एण लंगरस झसखेज्जइन्नागे । समुग्घाएण लोयस्स झसखेज्जइन्नागे । सठाणेण लोयस्स झसखेज्जइन्नागे ।
 कहिण न्नेन । मणुस्साण पज्जत्तापज्जत्ताग ठागा प० । झुत्तो मणुस्सखित्ते पणयान्नीसाए जोरणसयसह
 रंससु झुह्वाइंजेसु दीवसमुद्देशु पन्नरससु कम्मन्नूमीसु तीसाए झुकम्मन्नूमीसु लप्यन्नाए झुतरदीवसु एत्थण
 मणुस्साण पज्जत्तापज्जत्ताण ठागा प० । उववाएण लोयस्स झसखेज्जइन्नागे समुग्घाएण सखलोए सठाणे
 ण लोयस्स झसखेज्जइन्नागे । कहिण न्नेन ! न्नवणवासीण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठागा प० ? कहिण

णीम नीहियासु गुच्छानियासु मरेम सरपतियास विनपतियास । झुपे तत्तावे नदी द्रव्वावि पुच्छरणो दोर्विका गुच्छानिका सर सरपातिनेविपे विनपा
 तावयो उज्जरेम निज्जरेसु चिखलेसु दीवेषु समुद्देशु सखेसुचेव जलासएसु जलठाणेषु । सर्वविपे पवत पाणोनीभरणे वीकण्ठामे पालरपा
 णोठामे दीपे समुद्देशु जलायये जलठामे । एत्थण पचिट्ठितिरिक्खजोणियाण पज्जत्तश्चपज्जत्ताण ठागा प० । इहा पचेद्दिय तिर्यग्गोनिदाना ठाम प
 यरिता अपर्याप्ता कट्ठा । उववाएण सायस्स झस । समुग्घाएणनायस्स झस । सठाणेणलोयस्स झस । जपज्जोनीकने झस । तलोक्कमे झस । स्विस्थानलोक्कने
 झस । काणभते मणुस्साण पज्जत्तश्चपज्जत्ताण ठागा प० । किहा हेमगवन् मनुष्यना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकट्ठा । गोयमा प्रतोमणु
 साखेस पणयालीमाएजोयणसहरंससु । हेमोतम मनुष्यचवमाइ ४५ लाखोन्नविपे । अउठाइल्लेसु दीवसमुद्देशु पन्नरसकम्मन्नूमीसु तासाए चकम्मभूमा
 सु छपन्नाएअतरदीवेषु । अउठाइह पाविपे समुद्देशु १५ कर्मभूमिपे नोस चकर्मभूमिपे ५६ पतरदीपे । एत्थण मणुस्साण पज्जत्तश्चपज्जत्ताण ठागा
 प० । इहा मणुस्स पर्याप्ता अपर्याप्ता कट्ठा । उववाएण लोयस्स झस । समुग्घाएण लोयस्स झस । सठाणेण लोयस्स झस । जपज्जोनीकने असखातमेभागे रम

कदेशे अयोतोकिग्रामादिषु सन्त्यसुत्रमपि मृगम, नगर ॥ समुग्धागममद्युतोयइति ॥ केवलिसमुद्रातमधिरुत्य सम्रतिजवनपतिस्थान प्रतिपादनाय
मार-करिण अत भवणवासीगदवाणमित्यादि ॥ असीउत्तरजोयगनयमहरसवाएल्लामइति ॥ अशीत्युत्तर अशीतिसहस्राधिक्योजनगतसन्त्य पाह
त्य यस्या सा तथा तस्या ॥ सप्तत्रवणकोलीने बावत्तरिभवणवासमयसहरसप्तत्रवणोति मय्वायमिति ॥ असुकुमाराणा हि चतु पट्टिगतमहस्त्राणि
जवनाना तत सप्तसहस्रा यथोक्त जवनसङ्ख्यान जवति ॥ तेण जगगाइत्यादि ॥ तानि ण मिति वाक्पालङ्कारे पुस्त्य प्रारुतल्यान् प्रवनानि बहिद्व
स्तानि वृत्ताकाराणि अत समचतुरस्त्राणि अधस्तनभागे पुष्करकर्णिकासस्थानसंस्थितानि कणिकानाम उन्नतसमधिचित्रविन्दुकिनी ॥ ठकिन्नतरविउल्लगमी

जवणवासीदेवा परिवसंति ? गो० । डमीने रजणप्यन्नाएपुहवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सवाहल्लाए उ
वरि एग जोयणसहरस उगाहिता हाचेठाग जोयणसहरस वज्जिता मज्जे अठ्ठहत्तरिजोयणसयसहस्स ए
त्यण जवणवासीदेवाण पज्जितापज्जत्ताण सप्तत्रवणकोलीने बावत्तरिच जवणवासयसहस्सा हवतीति
मस्काय, तेण जवणा बाहि वहा अतो समचउरसा अहे पुष्करकन्तिवासठाणसठिंया उकिस्सतरविउल्लग

ह ॥ लाकन अ० सस्थानलाकने अ० । कहिसुमत भवणवद्ववाण पज्जत पवज्जत्ताण ठाया, प० । किहा हेभगवन् भवनयासोदेव पर्याता अपर्याप्ताना स्थान
कक्षा । कहियभते भवणवासीदेवा परिवसति । किहा हेभगवन् भवनपतीदेवता वसेक्के । गोयसा इमोसंरयणभाएपुहवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्स
व इल्लाण । इमौतम ए रत्तप्रभापृथिवीने एकलाख असीयोजन प्रमाणमहि । उवरि एगजोयणसहरस उगाहिता हिष्टाएगजोयणसहरस वज्जिता । ज
पर ए कहजारयोजन प्रमाण मूनीने हेठे एकहजारयोजन मूकीने । मज्जा अठ्ठहत्तरजोयणसहरसे । विचाले एकलाख ७८ हजार योजन । तस्यण भवण
वासीदेवाण सप्तभवणकोलीआ । तिहा भवनपती देवताना सातकोडा ऊपर । बावत्तरौ भवणवासयसहस्सा ज्वतीतिमक्खाय । ७२ लाख भवनपती
स याहे तीर्थनरै कन्नो । तेण भवणावाहिबद्धा अतोसमचउरसा अहेसु पुष्करकर्णिया सठाणसठियाओ । ते भवनपतीना भवन बाहिउर बाटलाकार मा

रसायफलित इति ॥ उदकीण मित्रो त्कीण मतीव व्यक्तमित्यर्थः, उदकीर्णमन्तरयासा सातपरिसाणा ता उदकीर्णान्तरा क्रिमुक्त प्रवति साताना च परिसाणा च स्पष्टवैवक्त्योन्मोलनार्थं सपात्तराले मरती पाली समस्तीति सातानि च परिसा थ सातपरिसा उत्कीर्णान्तरा विपुला विलीणां गम्भीरा श्रलव्यमध्यभागा सातपरिसा यथा मवनाना परित स्तानि उत्कीर्णान्तरविपुलगभीरसातपरिसानि सातपरिसाणा चाय प्रतिविज्ञाप परिसा वपरिविज्ञाला अथ सङ्कुचिता, खात तू भयत्रापि सममिति ॥ पागारहाल कपाळ तोरण पङ्क्तिद्वारदेसज्ञागाइति ॥ प्रतिप्रजनप्रकारेषु ज्ञा नासु ग्रहालकपाटतोरणप्रतिद्वाराणि ग्रहालकपाटतोरणप्रतिद्वाररूपदेशज्ञागा देशविशेषायेषु तानि प्रकाराहालकपाटतोरणप्रतिद्वारदेशज्ञा गानि तत्र ग्रहालका प्रकारस्योपरि ज्ञात्रयविशेषा, कपाटानि प्रतोलीद्वारसक्तानि यतन प्रतोत्य सवत्र सूचिता अन्यथा कपाटानाम सम्भवा त् तोरणानि प्रतोलीद्वारेषु प्रतिद्वाराणि स्थूलद्वारापान्तरालवर्तीनि लघुद्वाराणि तथा ॥ जतसयग्निमुसलमुसडिपरिवारिया इति ॥ यत्राणि नानाप्र काराणि शतयन्त्रो महायष्टयो महाशिला या या पतिता सत्य पुरुषाणा ज्ञतानि भ्रन्ति मुसलानि प्रतोतीनि मुसद्वय प्रस्पर्णविशेषा स्ते परिवारितानि समस्ततो वष्टितानि अत एवा योष्यानि पर्योद्गमज्ञव्यानि अयोष्यत्वा दव च सदाजयानि सर्वकारे जयो येषु तानि सदाजयानि स यकाल जयवस्ती त्यथ, तथा सदा सवकाल गुप्तानि प्रहरणे पुरुषे च योद्गुनि सवत समन्ततो निरन्तरपरिजारिततया पर्यामसहमानाना म

नीरखातफलिहा पागारहालयकवाळतोरणपङ्क्तिद्वारदेसज्ञागा जतसयग्निमुसडिपरिवारिया झुउज्जा सगज या सया झुजेया सदा गुप्ता झुफ्यालकोठरडया झुफ्यालकवयणमाला संमा सिवा किकरा मरुफ्फोचरकि

वि चउरम मम हेठे कमलनो कर्षिका सस्यानि एतन्ने मन्त्रस्य ॥ उक्खिन्नरविचलगभोर क्खायफनिहा पागारहालय क्वाह तोरण पङ्क्तिद्वारदेसभागा । जवा विन्तीण फिटकमय प्रकार कपाटसहित तोरण सोटाहार तेमा छंटे बारणैयुत्ता । जतसयग्निमुसलमुसडि परिवारियाय ओझासया अज्यास गगुत्ता । यचनाश्रनक्के जिहा मुगल प्रहरण विग्रेयपणे यक्के परिवेदित व्यासक्के वफासेकरो सदा जीपताक्के सदा गुप्तक्के । अडयालकुटगररया अडया

नागपि प्रवेशासम्भवात् ॥ अरुयालकोष्ठरुडया इति ॥ अष्टचत्वारिंशद्देज्जिविच्छित्तिकलितता कोष्ठका अप्ररका रचिता स्वयमेव रचना प्राप्ता येषु तानि अष्टचत्वारिंशत्कोष्ठकरचिदानि सुखादिदशाना स्याद्विकी निष्ठान्तस्य परनिपात , तथा अष्टचत्वारिंशद्देज्जिविच्छित्तय कृतवनमाला येषु तानि अष्टचत्वारिंशत् कृतवनमालानि , अन्येत्य जितघति अरुयालशब्दो देशीवचनत्वात् प्रज्ञानसावाचो ततो यमयं - प्रज्ञास्तमोष्ठकरचिदानि प्रज्ञास्तवतवनमालानीति तथा ज्ञेयानि पररुतोपद्रवरहितानि ज्ञिगानि सदाभूतोपतानि तथा किङ्करज्जुता ये उमरा स्ते दण्ठे कृतोपरिचि तानि सबत समन्ततो रक्षितानि किङ्करामरदण्डापरक्षितानि ॥ लाउमैउल्लोइयमहिंयाइति ॥ इयनामय द्रुमे गोमयादिना उपलपन उल्लोइय , कुड्याना मालस्य च सेटिकादिभि सम्पृष्टीकरण लाइ उल्लोइयाच्या महितानि पूजितानि लाइउल्लोइयमहिंयानि , तथा गोशीर्षेण गोशीर्षनामकच न्दनम रक्तचन्दनेन चदरेण बहलेन घण्टाप्रकारेण वा दत्ता पञ्चाहुलय स्तला हस्तका येषु तानि गोशीर्षसरक्तचन्दनदर्दरदत्तपञ्चादुल्लि त लानि , तयोपक्षिता निवेक्षिता चन्दनकलशा माङ्गल्यकलशा येषु तानि उपचितचन्दनकलशानि ॥ चन्दनचक्रसुकयतोरणपट्टिदुवारदेसजागाइति ॥ च न्दनचट्टे चन्दनकलशै सुकृतानि सुकृतानि शोभनानीति तात्पर्यार्थं , यानि तोरणानि तानि चन्दनचट्टसुकृतानि तोरणानि प्रतिद्वारदेशज्ञान द्वारदेशज्ञाने येषु तानि चन्दनचट्टसुकृततोरणप्रतिद्वारदेशज्ञानानि तथा ॥ असतोसत्तयिउलवहवगचारियमल्लदामकलावाइति ॥ आश्रवाड् अघोञ्जुमो

या लाउल्लोइयमहिंया गोसीसरसरत्तचन्दनदर्दरदिन्तपचगुलितला उवचियचट्टणकलसा चट्टणचक्रसुकयतो रणपट्टिदुवारदेसजागा आसतोसत्तयिउलवहवगचारियमल्लदामकलावा पचवत्तसरससुरनिमुक्कपुफ्फपुजोत्रया

नकयवणनाला । चट्टतानीमेभेदे कोटरचनाकीधीकै अट्टतानीमेभेदे कोटरचनाकीधीकै अट्टतानीमे भूलमालासहित । खुमासिवा किकरा मरदंडावर किउया लाउल्लोइय मडियागोसीसरमरसरत्तचट्टणा । चेमपरिकृतनी तथा उपद्रव तिणै रहित किकरभूत जे देवता तिणै राख्खोके जेवर लालछगणा खु डिउे धवन्त्य, कै गोशीर्षनाम चन्दन रक्तचन्दन । दर्दरदिन्त पचगुलितलाश्रोव चियचट्टण कनसाचट्टण वडमुकय तोरण पट्टिदुवारदेसभाग । दर्दर दी

सक्ता ग्रामक्तो जूनोत्प इत्यर्थः । उरुं सक्तउत्सक्त उक्तीकतले उपरिसम्यदु इत्यर्थः , विपुलीवि स्त्रीर्णो वृत्तो धर्तुत वगवारियइति प्रलदितो माल्यदाम
कलापः पुष्पमालासमूहो येषु तान्य सक्तोत्सक्तविपुलवृत्तप्रलम्बितमाल्यदामकलापानि तथा पचवर्णेन सुरजिणा मुक्तेन क्षिप्तेन पुष्पपुञ्जलक्षणे
पचारणं पूजया कलितानि पञ्चवक्त्रसुरजिमुक्तपुष्पपुञ्जोपचारकलितानि ॥ कालागुरुपवरकुटुर्लक्षतुर्लक्षधूमधमघतगघुहूयाजिरामेइति ॥ कालागुरु
प्रसिद्ध प्रवर प्रधान कुटुर्लक्ष धीरु तुरुक्तसिरहक कालागुरु अ प्रवरकुटुर्लक्षतुर्लक्षकचकालागुरुप्रवरकुटुर्लक्षतुर्लक्षानि ॥ तथा शोभनो गधो ये
गधवद्भुत इतस्तो यिप्रसुत स्तेना जिरामाणि रमणीयानि कालागुरुकुटुर्लक्षतुर्लक्षधूमधमघमघमानगधोद्भूतानिरामाणि । तथा शोभनो गधो ये
पाते सुगन्धा त च ते वरगन्धा दयासा सुगन्धवरगन्धा स्तेपा गन्ध स एव स्त्रीति सुगन्धवरगधगधिकानि अतोनेकस्वरादितोक्ताप्रत्यय , अत एव
गन्धयतिभूतानि गौरव्यातिगया द्रव्यगुटिकाकल्पानीति प्राय , तथा अश्वरोगणानां सद्य समुदाय स्तेन सम्यक् रमणीयतया विजीर्णानि व्यासा
नि अश्वरोगणसहृदिकीर्णानि तथा दिव्यानां भूतिताना मातोद्यानां वेणुवीणासृदगादीनां ये शब्दा स्त्री सम्प्रदाितानि सम्यक् श्रोत्रमनोहारितया
प्रकर्षणं सर्वमाल नदितानि शब्दयति स्वररत्नमयानि सर्वात्मना सामर्थ्येन नत्वे कदेशेन रत्नमयानि वा अच्छानि आकाशस्फटिकरत्नवदति स्वच्छानि
सरत्नानि शब्दपुद्गलरक्षधनिष्यन्नापि शब्ददलनिष्यन्नपटवत् ॥ लयहानि ॥ मसृणानि पुटितपटवत् ॥ घटाइति ॥ घृष्टानीवघृष्टानि सरशानया पापाण

रक्तलिया (ग्र१४००) कालागुरुपवरकुटुर्लक्षतुर्लक्षधूमधमघतगघुहूतानिरामा सुगन्धवरगधगधिया गधव
ह्रींभूया अश्वरगणसधसकिन्ना दिव्यतुङ्गयसहस्रपन्तदित्ता सहरयणमया अष्ट्या सरहा लयहा घठा मठा

धाष्ठे पचागुलीनां चपेटा किङ्का उपस्थितथाप्याष्ठे मङ्गलौकमय चन्दननाकलशो मूढ सोभित कौधाष्ठे तौरण प्रतिहार देसभाग जिह्वा । आसत्तासत्तार
यो लष्टवधारियमङ्गदामकलिया । भूमि ऊपर बाज्या विस्तीर्णं फूलमाला पञ्चवक्त्रं सस्य सगन्धं पुष्प मूक्ताष्ठे पञ्चनीपरे । पचवक्त्रसरसरहिमुक्ता पफ
पु जोवया रक्तलिया कालागुरु पवरकुटुर्लक्षतुर्लक्षधूमधमघत गधहूया भिरामे । विखेपाष्ठे जिह्वा फूलकली तथा कणागर प्रधानकन्दरु चौट सेरहा

प्रतिमावत् ॥ मठा इति ॥ मृष्टानि सुकुमारज्ञानया पापाण्यप्रतिमेव अत गव नीरजासि स्वाप्नाविभरनीरहितत्वात् निर्मलानि आगतु कमलाभावात्
निष्पङ्कानि कलङ्कयिकलानि कदमरहितानि वा निककच्छा इति । नि कङ्कटानि नि कवचा निरावरणानिरुपधातेति तावार्थ , छायादीनियेपा
तानि निष्पङ्कटच्छायायानि सप्रज्ञानि स्वरूपत प्रज्ञावन्ति समरीचीनि अहिनिर्गतकिरणजालानि सोऽग्नौतानि यद्विध्यं वस्थितवस्तुस्त्रोमप्रकाशनकरा
णि प्रसादीयानि मन प्रसादाय मन प्रसक्तये हितानि प्रसादीयानि मन प्रसत्तिकाराणि इति ज्ञाव , तथा दर्शनीयानि दर्शनयोग्यानि यानि पश्यत य
सुपी न श्रम गच्छत इति तात्पर्योयं , अभिरूपा इति अत्रिसर्वपा द्रष्टृणा मन प्रसादानुकूलतया अत्रिमुख रूप येपान्तानि अत्रिरूपाणि अस्यत्नकन
नीयानि इत्यर्थ , अतएव पङ्क्तिवा इति । प्रतिविशिष्ट रूप यया तानि प्रतिरूपाणि अथवा प्रतिक्षण नव नवमिव रूप येपान्तानि प्रतिरूपाणि

णीरया निमला निष्पका निष्ककच्छाया सपन्ना ससिरया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अत्रिरू
वा पङ्क्तिरूवा एत्यण नवणवासीण देवाण पज्जातापज्जाताण ठाणा प० । उवत्राएण लोगरस अस्सखिज्जड

रस जेहना धूपने ऱरोगन्व तेणे करी अह्मत मघमघायमानकै गग्ग जिह्वा । सुगधवरगाधिया गधवाट्ठभूया अच्छारगण सवसाध्वमिणा दिव्वतुडिय महसप
याणादिया । सगग्ग प्रधानकै गग्गजेहनी गग्गनीवान गोनोभूत सोगग्गधनो अतियय कळो अस्सरना गणसमूह तिणे सकोणकै चुटितवेणु मृदङ्गादि सा
अलवायोग्य मनोहरलाने साअनै धके सुखुअपलै । सव्वरणमया अच्छा सखा लङ्का घट्टामट्टा नीरया निमला निष्पका निष्ककच्छाया । सर्व रत्नमयक
याकाशनीपरे निर्मलकै सुकमल सूक्ष्मपद्मन निपटके घटतनीपरे निर्मलकै सुकमल सूखा घटारा मठाराकै पापाणनीपरे निर्मल उपधानादिके करी
यी । सपभा ससिरीया ससिरीया पङ्क्तिरूवा सवच्छोवा पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूपा पङ्क्तिरूवा । सप्रभा मोतीनीपरे ओये करी मोलायमानकै म
तिरूप ज्वयारूप टीसैकै उद्योतसहित मननी प्रसादकारी देखवायोग्य अभिरूप रूपजाणु साहिमो आवै । एत्यण भवणवासीण दशाण पज्जत्त अपज्ज
नाण ठा० प० । एहवै नामै भवनपतीना देवारा पर्याप्ता पर्याप्ताना ठानकक्षा । उववाएणलीयस्स अ० समुवाएणलीयस्स अ० सठाएणलीयस्स अ० ।

॥ टीका ॥

॥ मन् ॥

॥ भाषा ॥

मते ॥ नवगवासी त्यादि ॥ गतेऽनन्तरीक्षा असुरकुमारादयो भवनवासिनो यथाक्रम ब्रूहामणिर्नाम मुकुटे रत चिद्रूपत येषां तथा नागकुमारा ब्रू
 पणनियुक्तनागरक्षटारूपविश्वधरा मुकुटेरत्नब्रूपणनियुक्ता नागरक्षटादिविचित्रधरा अ तथा हि असुरकुमारजनवनवासिनश्चूनामणिमुकुटरत्ना ॥ १ ॥
 ब्रूहामणिर्नाम मुकुटे रत्न विभक्तभूत येषां तथा नागकुमारा ब्रूपणनियुक्तनागरक्षटारूपविश्वधरा ॥ २ ॥ सुपर्णकुमारा ब्रूपणनियुक्तगन्धर्वविश्व
 धरा ॥ ३ ॥ विद्युत्कुमारा ब्रूपणनियुक्तवज्ररूपविश्वधरा ॥ ४ ॥ अग्निकुमारा मुकुटनियुक्तपूष्कलशरूपविश्वधरा ॥ ५ ॥
 द्वीपकुमारा ब्रूपणनियुक्तसिंहरूपधरा ॥ ६ ॥ उदधिकुमारा ब्रूपणनियुक्तहयवररूपविश्वधरा ॥ ७ ॥ दिङ्कुमारा ब्रूपणनियुक्तगजरूपविश्वधरा ॥ ८ ॥
 पापकुमारा ब्रूपणनियुक्तमकररूपविश्वधरा ॥ ९ ॥ स्तनितकुमारा ब्रूपणनियुक्तहरहृमानरूपविश्वधरा ॥ १० ॥ वदमाननारायणसम्पुट अक्षर
 गमनिकात्वेव ब्रूपणेषु नागरक्षटारूपधरा येषां ब्रूपणनागरक्षटारूपधरा पूष्कलशोनाङ्कितउष्णसो मुकुटो येषां पूष्कलशोनाङ्कितोष्णसो

नागे समुग्धाएण लीयस्स अस्सखेज्जइत्ताने सत्थणेण लीगस्स अस्सखेज्जइत्ताने तत्थण बहवे ज्ञवणवासीदे
 वा परिवसति त-असुरानागसुवन्ता विज्जुअग्गीयदीवउट्ठीय । विसिपवणथणियणामा टसहाएएअवण
 वासी । चूनामणिमउत्तरयणन्नसुणा फणिगरुलवड्डरपुण्णकलसकिउप्फेसा सीहमगरमथकअस्सवरवट्ठमाणनि

जपत्रयोलीकने अ० समुद्रातलीकने अ० स्वम्यानन्ताकने असख्यातेमभागे । तत्थण बहवे भवपवासी देशा परिवसति त० । तिहां वणां भवनपत्तो देयता
 रहस्ये तेहनानाम कक्षा । असुरानागसुवणा विज्जुअग्गीयदीवउट्ठिय । विसिपवणथणियणामा टसहाएअभवणवासी ॥ १ ॥ असुरकुमार नागकुमार स
 वणं विद्यत अग्नि द्यौप उदधि दिशि पवन स्थानित ए नामह्ये दग्धकारे भवनपत्तो ॥ १ ॥ चूनामणिमउत्तरवण भूषणा नागफण भयल वड्डर पुण्ण कलस
 किउप्फेसा सीह हयवरया अक्षमगर वडमान निज्जुत्तविश्वविधगवा मरुवा महउट्ठया महकाऽया महायसा महाबला महागुणा महासुखा । चू
 नामणि रत्नविन्द मुकुटे ग्रामे असुरकुमारनो विह नागकुमारनो सर्प गरुड सुवर्णकुमारनो वज्र कलय सिंह अश्व गज मगर सरावसपुट १० ए विन्देय

तथा सीत्परयरगजा अङ्गा अर्थानूपणेषु येषाते सीद्दपर्यवरजाङ्गा तथा मकरवद्धमानिके नियुक्ते नूपणेषु नियोजिते चित्रे आशयंजने चित्रे गते स्थिते येषाते मकरवद्धमाननियुक्तचित्रचिह्नधरा स्तत पर्वपदद्वंद्व समास , पुन सर्व कथञ्चता इत्यार-सुरूपा गोनन रूप येषाते तथा अत्यन्त कमनीयरूपाइत्यर्थ , तथाभक्तिव्याइति ॥ मरुती ऋद्धि भवनपरिवारादिका येषाते मरुट्टिका , तथा मरुती द्युति शरीरङ्गता आनरणगता च येषाभिमति महाद्युतय , तथा मरुत् बल शारीरमाणायेषाते महायत्ना , तयामहद्यज्ञ स्याति येषाते महायज्ञस , महान् अनुनागा सामर्थ्य ज्ञापा नुयज्ञविषय येषान्ते महानुभागा तथा ॥ मरुसक्ताइति ॥ महान्दृश ईश्वर इत्यास्यात प्रसिद्धियेषाते महेश्वरस्या अथवा ईशान मीशो प्रावे यज्प्रत्य य गेद्यर्थमित्यर्थ , इगर्थैर्देवैतिवचनात् , तत इवमे द्यर्थमा त्मनास्यान्ति अन्तर्भूतव्यर्थतया स्यापयन्तीति ईशाख्या , महान्त द्य ते ईशास्या द्य महेशाख्या , क्षिप्तिन्मासोस्त्राडतिपाठ , तत्रमरुसौस्य प्रभूतसद्वेधोदयवशाद्येषान्ते महासौख्या , अन्येपठन्ति महासक्ता इति ॥ तत्रायशब्दस्कारो महाद्याज्ञा इय चात्रपूर्वसूरिप्रदर्शिता व्युत्पत्ति आशुगमनाद द्यो मन कक्षाणि इन्द्रियाणि स्वविषयव्यापकत्वात् अथ द्य अक्षाणि वेत्त्यद्याक्षाणि महान्ति अद्याक्षाणि येषान्ते महाद्याक्षा ॥ हारविराडयवत्या इति ॥ हारैर्विराजित वसो येषाते हारविराजितवत्त्वस ॥ कठगतुक्तियथजियज्जुया इति ॥ कटकानि कलाचिकान्नरणानि द्रुतिनानि यापुरकका स्ते स्तम्भिता विष स्तम्भितौ जूजौ येषान्ते कटकद्रुटितस्तम्भितजुजा , तथा अद्भुदानि द्याहुशीर्षांन्नरणाविशेषरूपाणि कुगन्ते कर्णांन्नरणविशेषरूपे तथा मृष्टौ मृष्टौ गयन्ती कपोली ये स्तानि मृष्टगणानि कण्ठीपाठानि कर्णांन्नरणविशेषरूपाणि धारयन्ती

जुतचित्चिधंगता सुरुया महिद्विया महज्जुतिया महायसा महाबला महानुजावा महासौस्का हारविराड् यवत्या कठगतुक्तियथजियज्जुया अगदकुंठलमठगठलकणपीढधारी विचित्तहत्यान्नरणा विचित्तमालामड

इति रूपवन्त महर्षिवन्त महाययवन्त महाबली महाभागवन्त महामुखौ । हारविराड्बत्या कठगतुक्तियथजियज्जुया । हारौकर्षौ विराज मानहौयो जेहनी कटा बहोरखा तिले यथा समके भुजा । अगदकुंठलमठगणतणकण पीढधारी विचित्त हत्यांन्नरणा । अगद कुण्डल कर्णांन्नरण धारा

त्येव शीना ॥ अद्भुदगुणलघुष्टमगठकर्णपीठधारिण तथा विचित्राणि नानारूपानि स्रस्तान्नरगानि येषांते विचित्रहस्तावरा तथा ॥ विचित्रमाताम
सलिमउता विचित्रा माला कुसुमस्त्रफ् मौली मस्तके मुकुट च येषांते विचित्रमालामोलिमुकुटा , तथा कल्याण कङ्कल्याणकारि प्रवर वर परिहित ये स्ते
कल्याणकप्रवरस्त्रपरिहिता , सुखादिद्वन्द्वान्निष्ठान्तस्यात्र पालिकपरनिपात , तथा कल्याणक कल्याणकारि यत्प्रवरमाल्यपुष्पदाम यच्चानुलेपन तटुर
तीति कल्याणकप्रवरमाल्यानुलेपनधरा तथा मास्वरा ददीप्यमाना योन्दि शरीरयेषान्त आस्त्रयोन्द्य तथा प्रताम्य इति प्रलम्बा या यनमाला ता
धरतीति प्रलम्बवनमासाधरा ॥ दिव्येण सचयणेति ॥ शक्तिविशेषम पत्न्य सङ्गनैव सङ्गनेन न तु साक्षात्सङ्गनेन देवामा सहननाऽसम्भवात् सङ्गनेन
दि अस्थिरचनत्वात् न च देवामास्योनि सति तथा चोक्त जीवाग्निगमे-देवाग्रसचयणी जम्हा तेषि नैवही नैव सिरा इत्यादि ॥ दिव्या ए इन्दी ए इति
दिव्यया प्रधानया क्रद्धा परिवारादिकया दिव्यया द्युत्सा इष्टार्थसप्रयोगलक्षणया , द्युःश्रजिगमने इति वचनात् दिव्यया प्रजया जवनावासगतया
दिव्यया च्छायया समुदयशीमया दिव्येना चिंया शरीरस्थरत्नादितेजोऽञ्जालया दिव्येन तेजसा शरीरप्रजयेन दिव्यया वा लेइयया देहवर्णमुदरतया

लिमउता कक्षाणगपवरवत्यपरिहया कक्षाणगपवरमज्ञाणुलेवणधरा मासुरवीदी पलववणमालधरा डिह्येण
वसेण दिव्येण गधेण दिव्येण फासेण दिव्येण सचयणेण दिव्येण सठाणेण दिव्या ए इन्दी ए दिव्या ए जुत्ती ए
दिव्या ए पन्ना ए दिव्या ए च्छाया ए दिव्या ए अच्ची ए दिव्येण तेएण दिव्या ए लेस्सा ए दसदिसाने उज्जीवेमाणा
पन्नासेमाणा तंण तत्य साण २ जवणवाससयसहस्साण साण २ सामाणियसाहस्सीण साणं २ तायत्तीसाण

यका विचित्रहायना आभरण । विचित्रमानाससनमाना कक्षाणग पवर वत्य परिहिया । विचित्रमाना मस्तके कल्याणमङ्गलौकनाकारक वस्त्र प
दिह्या है । कक्षाणगपवरमज्ञाणुलेवणधरा मासुरवीदीपलववणमालधरा । मङ्गलौकनाकारक विनियनकौधा है देदोपमानगररे नार्वामाना धरी है । दि
व्येण वणेण दिव्येण गधेण दिव्येण फासेण दिव्येण सचयणेण दिव्येण सठाणेण दिव्या ए इन्दी ए । दिव्यवर्णदिव्यगन्ध दिव्यस्पर्श दिव्यसवयणविशेष दिव्यसत्त्वा

दशदिशा उद्योतयत ॥ प्रकाशवंतपत्रासितमाणा इति ॥ सोऽन्नमाना स्ते जवनवासिनो देवाणामिति वाक्यान्ङ्कारे तत्र स्वस्थाने साण २ मिति स्त्रिया २ मास्तीयानामित्यथ ॥ आहृद्यपोरवधमित्यादि ॥ अचिपते कर्म अचिपत्य रक्षाडत्यर्थं, सा च रक्षा सामान्येना रक्षकेश्वे क्रियते तत आह-पुरस्यपति पुरपति तस्यकर्म पौरपत्य सर्वपासा स्तोथानामग्रेसरत्वमिति जाव, तच्चाग्रेसरत्व नायकत्वमतरणापित्वनायकानियुक्त तयाविधगृहचित्तकडामान्यपुरुषस्येव प्रवति ततोनायकत्वप्रतिपत्त्यर्थमाह-स्वामित्व स्वमस्यास्तीतिस्वामी तद्भाव स्वामित्वनायकत्वमित्यर्थं, तदपि च नायकत्व कस्यचि त्प्योप कृत्य मन्तरणापि भवति यथा हृदिणाधिपति णरिणस्य तत आह-प्रवृत्त्य अतएव महरत्तरकत्व कस्यचिदा ज्ञाविकलस्यापि सद्यचि प्रवति यथाऽस्य चित्पृणिज स्वदासीधर्मप्रति तत आह-आष्टाङ्गसरसेणावध ॥ आज्ञाया ईश्वर आज्ञेश्वर सेनाया पति सेनापति आज्ञेश्वर द्या सी सेनापति इ आ ज्ञेश्वरसेनापति सस्य कर्म आज्ञेश्वरसेनापत्यस्वसेन्ये प्रत्यहुत द्याज्ञाप्रधान्यमिति जाव, कारयतोन्मैर्नियुक्तैर्पुरुषै पालयन्त स्वयमेव महतरांशे

साण २ लोगपालाणं साण २ अगमहिंसीण साण २ परिचाण साण २ अणीयाणं साण २ अणीयाहिर्वङ्गं साण २ आयरकदेवसाहस्सीण अन्तिसिच वङ्गण जवनवासीण देवाणय देवीणय अहेवञ्च पोरिवञ्च सा मित्त नहित महतरगत अणाईसरसेणावञ्च कारेमाणा पालेमाणा महाहायनहगीयवाडयततीतलतालतुक्ति

न दिव्य ऋद्धि । दिव्याणं जुराण दिव्याणं पभाण दिव्याणं छावाण दिव्याणं अक्षीण दिव्येण तेण दिव्याणं लेखाण । दिव्यद्युति दिव्यप्रभा दिव्यकाया दिव्य भवित दिव्यतेज दिव्यलेख्या । दसदिसान्ना सज्जोणमाणा पभासेमाणा । दग्गदिग्गनेविपै सज्जवानो करता । तेण तस्य साण २ भवणवासमयसहसाण । ते तिहा पोताना भवन लाखेकरी । साण सामानियसाहसोण साण २ तावत्तीसगाण । आपणा सामानिक देवेकरी आपणा चापविग्गेकरी । साण २ लोगपाल, य साण २ अगमहिंसीण परिचाण साण अणिदाण । आपणे लोकपालेकरी आप आपणा अगमहिंयोगेकरी आपणा कटकेकरी । साण २ अणीयाहिर्वङ्ग साण २ आयरकदेवसाहसोण अखोसिच वङ्गण भवणवासीण देवाणय देवीणय । आप आपणा कटकनाधणीये करी आपणा आत्तर

ति योग ॥ अहयति ॥ आस्थानमप्रतिष्ठाति यदिवा अस्तानि प्रव्याहृतानि नित्यानुययीतीति ज्ञाव, ये नाख्यगीते नाट्य नृत्त गीतं गान यानि च वादितानि ततीसलतालपुटितानि तत्र तन्त्री वीणा तली हस्ततली ताल कसिका त्रुटितावादित्राणि तथा यत्र घनमृदङ्गपटुना पुरुषेण प्रवादि त तत्र घनमृदङ्गोनामपनसमानसन्ध्वनिर्योमृदङ्गस्त एतेषा द्वद्व स्तेषा रघेण दिव्यान् प्रधानमिति ज्ञाव, प्रोगाहो प्रोगा गज्झादयो

यद्यणमुडगपपुष्पवाडयरवेण दिद्याइ जोगजोगाइ नुजमाणा विहरति । कहिण जते ! असुरकुमाराण देवाण पज्जन्नापज्जन्नाण ठाणा पणत्ता ? कहिण जतं ! असुरकुमारादेवा परिवसति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पन्नाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सवाहत्ताए उवरि एग जोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हेठावेगं जोयणसहस्स वज्जित्ता मज्जे अउत्तरे जोयणसयसहस्से वाहत्ताए एत्थण असुरकुमाराण देवाण चोवठि नवणावाससयसहस्सा नवतीति मस्काय, तेण नवणा वाहि वहा अतो चउरसा अहे पुरस्सरकियासठा

जक टवैकरो जनेरा चणा भवनवासो देव देवागताना अधिपति । आदेवश्च पोरंश्च सामित्त भट्टिस्स महत्तरगत । रथपालपणी पुरागामिपणी स्त्रामो पणी पोषकपणी बडाइपणी । आणाइसरसेणावश्च करिमाणा पालेमाणा महवाड्य नट्टगीय वारंयरवेण ततो तलतान्तुडिय घणमुड ग पटुम्प वारंयरवे ण दिव्याइ भोगमाणाइ भुजमाणा विहरति । आत्रापालता पलावता करताकरावता मोटावाला वजावता नृत्य गीत वादिच तवी तलताल चूटत वा मुदग मोटागच्छे तिकेकरो दिव्य देवताना भोग भोगवता विचरेकै । कहिणभते असुरकुमार देवाण पज्जन्ना पज्जन्ना ठाणा प० । किहा हेभगवन् असुरकुमार देवताना पर्याप्ता अपर्वाप्ताना ठामकत्ता । कहिण भते असुरकुमारदेवा परिवसति । किहा हेभगवन् असुरकुमारदेवता वरेकै । गोयमा रयणप्पभा० पुटवीण नसीउत्तरजोयणसयसहस्सवाहत्ताए उवरि जोयणसयसहस्स उग्गाहित्ता । हेगीतम एरत्नप्रभाने एकलाय नसीउत्तरजोयनन जाड पणे तेहमाहि जपर एकउत्तरजोयनमकीने । दिद्याएगू जोयणसहस्स वज्जित्ता मज्जे अउत्तरेजोयणसयसहस्से । हेठजो एकसहस्सजो जन वज्जित्तिवि

नोगन्तो ग स्तान् भुञ्जमाना विहरन्त्या सते, असुरकुमारसूत्रे काला कम्पवर्णा ॥ लोहितकविम्बोष्ठा ॥ लोहिताक्षरतवत् विम्बोष्ठापतचण्डोष्ठी येषान्ते लोहिताक्षविम्बोष्ठा आरक्तोष्ठा इति त्राय , धवला पुष्पवत्सामर्थ्यात् कुन्दकलिका इव दन्ता येषाते धवलपुष्पदन्ता अज्ञिता रुष्णा केषा येषाते

णसन्धिया किन्तन्तरविउलगनीरस्कायफलहा पागारहालयकवाफ्तोरणपफिटुवारटेसन्नागा जतसयग्निधूमस
लमुसद्विपरिवारिया झण्डका सदा सया वलया सदा गुत्ता झण्डयाला कोष्ठगरइया झण्डयालकयवन्नमाला
खेमा सिवा किकरामरुफोवररिक्किया लाउल्लोइयमहिंया गोसीसरसरत्तचदणटदरिदिन्नपचगुलितला उव
चियचदणकलसा चदणधरुसुकयतोरणपफिटुवारदेसन्नागा आसत्तोसत्तविउलवहवग्धारियमल्लदामकलावा
पचवन्नसरसरसुरनिमुक्तापुफ्फपुजोत्रयारकलिया कालागुरुपवरकुटुकुक्तातुरुक्ताफज्जतधूमधमघतगधुधुयान्निरा

वाक्यै एकलाख अष्टदत्तरहजारयोजन । एतन् अमुकुमाराराध देवाण चउसद्धिभवणवाससवसदस्त्रा हयतिमकाय । दशा असुरकुमारना ३४ दक्षिण ३०
उत्तर ६४ भवनसत्त्वा बुधे भगवते कल्लो । तेण भवणावाहिवहा अतो समचरया । ते भवन बाहिर वाटनाकै माहिनी चौखुणाकै । अहेपुत्तरकणि
या सठाणमठिया उक्खितर विउलगभीर खायफलिहा पागारहालय किवाहत्तोरण पडिदुवारदेसभागा । हेठे कमलनी कर्णिकाने सन्धाने राखित
उक्खीणं विचै पिहुनी गभीर फिटकमयी प्राकारउपरि किवाहत्तोरण धारमोटा तेहना नादाद्वार रुडो देगभागा । जतसयग्निध ममलमसद्वि परियाय
रिया आओक्कासया जयासया गुत्ता । मूलमहरणादिके वेदितकै साहमी देखवा समर्थनही सटाजोपताकै सटा गुगकै । अडयालकुटुगरदेवा । ४८ दे
ग्रीभापाये प्रमसा वसन । अडयालकयवणमाला खेमा सिवा किकरा मरदोवररिक्किया । ४८ भेदेकरी फूलमाला कल्याणकारी उपद्रवविना किह्वरभूत
जे देवता तेणराख्योकै जे भुवन । लाउल्लोइय मडियागोसोस सरस रत्तचटन दहरटिच पचागुलि तना सबचियचटणकलसा । लोप्याकै मणादिकनापर
माहि गोपीय चन्दन रत्तचन्दनादिके दर्दरदोधाकै पचागुलिना द्वाया उपपित थाप्याकै चन्दनकलय । चदणधरुसुकय तोरणपडिदुवार देसभागा । च

असिनकेगा दत्त केसा या सीपा वैक्रिया द्रष्टव्या न स्वात्माविका वैक्रियशरीरत्वात् तामेयकुण्डलधरा मकरणवसक्तकुण्डलधरिण तथा आद्रे
गसरसेनचन्दनेनानुलिप्तगात्रयेस्ते आद्रचन्दनानुलिप्तगात्रा तथा द्रष्टव्यमनाक् शिलिप्रपुष्पप्रकाशानि शिलिप्रपुष्पसदृशवर्णानि इंपद्रक्तानीत्यर्थे अ
सक्तिप्राप्ति कल्पन्तसुसजनकतयासनागपिपिकेनानुत्यादिकानि सूक्ष्माणि श्रुतलघुस्पर्शान्ध्यानि धैतिप्राप्त , वखाणि प्रधराणि अत्र सूत्रे विप्रक्तिलोप

मा सुगधवरगंधिया गंधवह्निभूया अच्करगणसचसविक्रिया दिव्यतुफ्रियसहस्रपन्तठिया सह्ययणामया अ
च्छा सरहा घठा मठानीरया निम्मला निम्पका निक्ककळच्छाया सप्पन्ना सत्तिरिया सउज्जोया पासाडया
दरिसणिज्जा अन्निरुवा पक्रिरुवा एत्यण असुरकुमाराण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पणत्ता । उववा
एण लोयस्स असखिज्जइन्नागे समुघाएण लोगरस्स असखेज्जइन्नागे सठाणेण लोगरस्स असखेज्जइन्नागे त
त्यण बहवे असुरकुमारादेवा परिवसति काला लोहितरक्ता विवोठा धवलपुष्पदत्ता असियकेसा वामेयकुं
ळलधरा अद्रचदणाणुलित्तगत्ता ईसीसिलिधपुष्पगसाइ असकिलठाइ सुज्जमाइ वत्थाइ पवरपरिहिया
वय च पढम समउक्कता विडय च असपत्ता सदे जोव्णे बहमाणा तलन्नगयतुफ्रियवन्नमणनिम्मलनिर
यमणिरनमन्नियन्नया दसमुद्दामफ्रिन्नगहत्या चूळामणिविचित्तिचिधगत्ता सुरूवा महिहोया महज्जुडया म
हायसा महल्लला महानुत्तागा महासोस्का हारविराड्यवत्या कवळयतुफ्रियथंत्तिचिन्नया अगयर्कळलमहुगळ

न्दनकलेने कडा ग्राभनकाधळे तारणना प्रतिहार द्यभागळे । आसत्तासत्तविडलवद्भग्धारिण मल्लदानकत्ताया पचअसुरसन्नरुहिमुहुपुष्पपूजाव्या
रकलिर । जिहा नासत्तासत्तभूमि अद्या ऊपर बोध्या विपुनविस्तीर्णे प्रनाम्बित्त मान्य सामना कलापसमूह पिठा पचनं सरस सुरभिगधर्हे जेहो
यभिगधनौ वाटसहित । कालागुरुपवरद्वदुसक तुरुक धूमधमघत गत्रसुयाभिरामा सुगधवरगंधिया गंधवह्निभगा । कल्पानगर प्रधानकल्ल सेवहारमे क

प्राकृतत्वात्परिहितापरिहितवन्त तथा यय प्रथम कुमारत्वज्ञानंम तिकात्ता स्तत्पर्यवर्तनं इति ज्ञाय , द्वितीयञ्च मध्यमलनण वयोऽस्तस्मात्ता
एतदेवव्यक्तीकरोति नद्रे अतिप्रशस्ये नद्रे यौवने वहेमाना ॥ तलजद्रुयतुक्रियवरभूमणनिम्मलमशिरयणमक्रियज्जयाइति ॥ तलजद्रुका वाद्वाभरणविशेषा
स्तुटितानि बाहुरक्षिका छत्यानि च यानि वराणि नूयणानि वाद्वाभरणानि यपु ये निमला मणय थन्द्रकात्ताद्या यानि रत्नानि इन्द्रनीलादीनि
ते मंहिती नुवी हस्तागौ येषाते तथा , तथा दशजिर्मद्राभिर्महिती मुजौ ग्रयस्त्री येषाते दशमद्रामिहिताग्रहस्ता ॥ चूक्रामणिचित्तविधयगयाइति ॥

यलकसुपीठधारी विचित्तहत्याभरण विचित्तमालामउलिमउक्रा कल्लानगपत्रवत्परिहिया कल्लानगपत्र
मल्लानलेवणधरा ज्ञासरयोदी पलवन्नमालधरा दिव्वेण वणेण दिव्वेण गधेण दिव्वेण फासेण दिव्वेण सधय
णेण दिव्वेण सठाणेण दिव्वेण इहोए जुईए दिव्वेण पन्नाए दिव्वेण वायाए अच्चीए दिव्वेण एएणं
दिव्वेण लेसाए दसदिसाने उल्लोवेमाणा पन्नासेमाणा तेण तल्य साण २ नव्वणावाससयसहस्साणं साण २
सामाणियसाहस्सीणं साण २ तावत्तीसाण साण २ ज्यग्गमहितीण साण २ वल्लण नव्वणवा
साणं २ ज्यणिमाण साण २ ज्यणिमाहिन्नईण साण २ ज्यायरक्कदेवसाहस्सीण अच्चेसि च वल्लण नव्वणवा
सीण देवणाणय देवीणय ज्यहिथच्च परिवच्च सामित्त न्हित्तं महत्तरगत ज्यणाईसरसेणावच्च करेमाणा पा

री मघमवायमान सुगन्ध प्रधानगन्ध लहनी यतिगन्धनी वाटमहित अमुराना । गणसघसविगणा दिच्चतुडियमहसपणईया सव्वरणमया । गणमसू
तिणकरो सहित मूटङ्गादि शमग्रब्द साभलता सर्व रतनमयकै । अल्लासणा लुहा घडा मडा नौरया निग्गला निपंका निककल्लया सयभा सासिरिया ।
याल्लाक घट्टाकै मठाराकै निरल निमत्त निपकम्य निरकण्टक प्रभासहित । सल्लोया पासाऽया टरसणिजा यमिळवा पडिळवा । उथोतसहित टण
नोक अभिरूप प्रतिकूप । एथण अमुरकुमारान देवाण पल्लता २ ण ठाणा प० । इहंठांमे अमुरकुमार देवता वसेकै पर्याता अपर्याताना ठामकल्ला ।

चूनामणिनामक चित्रमङ्गत चिह्नगत त स्थित येयाते चूनामणिचित्रचिह्नगता , चमरयलिसामान्यसूत्रे काला कृष्णवर्णा एतदेवो पमानत प्रतिपाद यति मङ्गानीलसरिसा महानील यहिकमपिबस्तु जात लोके प्रसिद्ध तेन सदृशा एतदेव व्याचष्टे नीलगुटिका नील्यागुटिका गवल माहिप शुग अत सीकुसुम प्रतीत तेषामिध प्रकाश प्रतिज्ञा येयाते नीलगुटिकागवलातसीकुसुमप्रकाशा तथा विकसितशतपत्रमिवनिमले द्रुपदेशविभ्रागेन मनाक् चिते रक्त साद्ये च नयने येया ते विकसितशतपत्रनिमलपत्रशितरक्ताभनयना गसदस्येवा यता दीर्घा अश्वी अकुटिला तुङ्गा उन्नता नासा नासिका पेपाले गरुडापतदीपतुङ्गनासा , तथा उपचि त तेजित यत्तीक्ष्णला प्रबाल विदुमरज यच्च यिवफल विव्या सत्क फल तरसनिमोथरोष्ठो येपाते तथा पा

लेमाणा महयाहयनहृगीयवाइयततीतलतालतुक्रियघणमुङ्गपङ्गुप्पवाइयरवेण दिव्वाइ नोगमोगाइ नुजमा णा विहरति, चमरवल्लिणी इत्य दुवे असुरकुमारिदा असुरकुमाररायाणो परिवसति काला महानीलस रिसा नीलगुलिचगवल्लयसिकुसुमप्पगासा वियसियसयवत्तनिमलसीसियरत्तवनयणा गरुलाययउज्जुत्तुग नासा उयचियसिलप्पवाल्लिविचफलसन्निहा हरोष्ठा पङ्गुरससिसगलविमलनिमलदहिधणसखगोखीरकुदंद् गरयमुणालिया धवल्लतसेढी ज्ञयवहणिद्धतधोयतत्ततवाणिज्जरत्तलतालुजीहा अण्जणघणकसिणरुयगरमणि

उववाण ली० अ० समवाण ली० अ० सठाणेण ली० अ० सठाणो ली० अ० समहातली० अ० स्वस्थानली० अ० । तत्थण वड्ढवे असुरकुमारदेवा परिवसति । तिहा यथा असुरकुमारदेवता वनेके । काक्कालीकिक्क्याविबोद्धा । काखेवण रातानेव विस्वफन समहोठ । धवल्लपुफ्फुदता असियकेमा वा मेरुकुडल धरा अय्यटणाणुनित्तगता । धवल्लफून् भमटात काक्काकेण हांवाकाने काण्डन धाराके धाट्सरसचच्चेनी लीप्पाके गान । देमिसिनिअ पप्फय यासार असाकिनिहाइ महमाइ वल्लाइ पवरपरिहोवा । निगारेकराता गिलेद्वनाफूलमरीवा असाक्किट्ठ अतिसुगकारी मूत्तवस्तेकरो प्रधान पहिरा के तथा । वयप पटममनरक्ता विदयवअसपत्ता भद्वेभुवणे वट्ठमाणा । वय प्रथम कुमारनखण ओरवमण-अग्रामधका भद्रयोवने वर्त्तमानयका ।

शतुर नतु सग्याकालमाय्यारक्त शशिशुक्ल चद्रसग्न तदपि च कथमूतमित्याह-विमल रजसा रक्षित कलङ्कविकला वा तथा निर्मलो यो दधिघनश्च
हो गोक्षीर यानि कुन्दानि कुन्दकुसुमानि दकरज पानीयकणा मृणालिका च तद्वत् घवला दन्तश्रेणि र्यपाले तथा विमलशब्दस्य विज्ञेया त्वरनि

ज्जानिष्ठकेसा वामेयकुष्ठलधरा अहचंदणाणुलिप्तगता ईसीसिलिधपुष्पगसाइ असकिलिठाइ सुखमाइ च
स्याइ पवरपरिहिया वय च पठन समइक्षता विइयच असपत्ता नहे जोव्वेण वहमाणा तलजंगयतुक्रियप
वरजूसणनिम्मलमणिरयणमक्रियनुया दसमुद्दामक्रियगहल्या चूनामणिविचित्तचिधगता सुरूवा महिह्वीया
महज्जुया महायसा महसूला महाणुजागा महासोस्का हारविराइयवत्या कळयतुक्रियथन्नियनुया अगदकुळ
लमठगळतलकसुपीठधारी विचित्तहत्यानरणा विचित्तमालामउलिमउना कल्लाणगपवरवत्यपरिहिया कल्ला
णगपवरमल्लाणुलेवणा ज्ञासुरवोदी पलववणमालधरा दिव्वेण वन्नेण दिव्वेण गधेण दिव्वेण फासिण दिव्वेण

तालभगयतुलियपवरभूषण निष्पलमणि रयणमडिग मुग्धादंसमुद्दामडिवगहत्या । तालभग दावत् आभरणविशेष भूषण निर्भन मणिरत्नेश्वरी मण्डित
भुज जेहनो दग्ग मूढो येसोनेहाथ । चूनामणि विचित्तचिगया सकुवा महडट्टिग महज्जुया महायसा महसूला महाणुभावा महासुक्ता । चूनाम
णिनामे चिहेसहित स्वरूप महाइदन्त महायतिवन्त महायगवन्त महावलवन्त महानुभाव महामूर्खी । हारविराइयवत्या कळयतुक्रियथन्नियभुया । हा
रेकरो विराजमानहोयो कडाइवहारखा तिणे यम्माकै भुन । अगयकुळल गडगल्ल तणकण पीठधारी । अगट कुण्डलकाने कपोलाभरण पोतधर्याकै ।
विचित्तहत्याभरणा विचित्तमानामतनि कल्लाणगपवर वत्यपरिहिया । विचित्तहाथ आभरण विचित्तमालाकै मस्तके कल्याणकारी प्रवरवस्त परिहियाकै ।
कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणधराभासुरवोदी पलववणमालधरा । कल्याणकारक प्रधानविलिपन दाराकै देदोष्यणरोर मालाधरता । दिव्वेणवणेण दिव्वेण
गधेण दिव्वेण फासिण दिव्वेण सधयण दिव्वेणसठाणेण । दिव्वेण दिव्वगधेकरी दिव्वसवधे दिव्वसथाने । दिव्वपरड्डोप दिव्वाएजुरण

पात प्राकृतत्वात् तथा हुतवहेन वेद्यानरेण निर्धामत सत् यद् जायते धीत निर्मल तप्तमुत्तम तपनीयमा रक्त सुवर्ण तद्वत् रक्तानि हस्तपादत
लानि तालुजिह्वे च येपा ते हुतवहनिर्धामतधीतवसतपनीयरक्ततलतालुजिह्वा , तथा श्रज्जन सीधीराज्जन घन प्रावृत्कालमाजी मेघ स्तद्वत् कृत्ताद
चकवत् रुचकरत्नवत् रमणीया स्त्रियथा य केद्या येपा ते श्रज्जनचक्ररुचकरमणीयस्त्रियकेद्या ॥ तिसुखिलोगस्व असखेज्जाइप्रागे इति ॥ स्वस्थानो

संस्थानेण दिव्याए इहीए दिव्याए जुईए दिव्याए त्रासाए दिव्याए पहाए दिव्याए अञ्जीए
दिव्येण एएण दिव्याए लेसाए दसदिसाने उज्जीवेमाणा पन्नासेमाणा तेण तत्थ साण २ नवणावाससयसहस्ता
ण साण २ सामाणियसाहस्सीण साण २ तावत्तीसाण साण २ लोमपालाण साण २ अग्गमहिंसीण साण २
परिसाण साण २ अणियाण साण २ अणियाहिर्वईण साण २ आयरस्वदेवसाहस्सीण अन्नेसि च वल्लण
नवणवासीण देवाणय देवीणय अहेवच्च पोरेवच्च सामित्त महत्तरगतं अणान्दिसरसंणवच्च करे
माणे पालेमाणे महाहयनहगीयवाडयततीतलतुक्रियघणमुद्दगपटुप्पवाडयरवेण दिव्याइ जोगजोगाइ नु

दिव्याए पभाए दिव्याए छायाए दिव्याए अञ्जीए दिव्येणतेएण दिव्याएनेखाण । देवतानोत्तहि देवतानो युति देवतानोप्रभासे दिव्यखायाये दिव्याकि
रणे दिव्यतेजे दिव्यखेइयाये । दसदिसाओ उज्जीएमाणा पन्नासेमाणा । दयादिया उद्योतकरता तिहा गोभतायका । तेण तत्थ साण २ भवणाण वासाण
सउसहक्काण साण २ सामाणियसाहस्सीण साण २ तायन्नीसगाण २ साण २ लोमपालाण साण २ अग्गमहिंसीण । ते तिहा आप आपणे भवने लाव
ग्रमे आप आपणे सामानिक सहस्रकरो आप आपणा आयनिसकेकरो आप आपणा लाकपानेकरो आप आपणा अग्गमहिंकेरो । साण २ अणि
याण साण २ परिसाण साण २ अणियाहिर्वईण साण २ आयरस्वदेवसाहस्सीण अन्नेसिचवद्धण भवणवासीण देवाणय देवीणय । आप आपणे अणो
काधियेकरो आपणी २ परपदाकरो आपरो अणोकाधिककरो आपरा आपरा आत्तरस्वकेकरो अनेरा भवनवासी देवता देवागनानो । आदेवस पोरे

पपातसमुद्घातकूपेषु त्रिष्वपि स्थानेषु लोकस्या सङ्ख्येतर्मे ज्ञाने वक्तव्यानि ॥ बोवहीअसुराणमि त्यादि ॥ गाथाद्वयं ॥ सामान्यतो असुरकुमारादीना अय नसङ्ख्याप्रतिपादक सुगम ॥ बोतोसाओपालाहत्यादि ॥ गाथा दाक्षिणात्यानाम सुरकुमारादीना अवनसङ्ख्याविधायिका स्तस्या व्याख्या-दाक्षिणतो असुरकु माराणा अवनानि चतुस्त्रिंशत्सहस्राणि नागकुमाराणा चतुश्चत्वारिंशत् सुवणकुमाराणाम षट्त्रिंशत् वायुकुमाराणा पञ्चाशत् द्वीपदिगदधि वि द्युस्तनिताग्निजुमाराणा प्रत्येक चत्वारिंशत्सहस्राणि अवनानामिति ॥ तोंसा चत्तलीसा इत्यादि ॥ उत्तरत उत्तरस्या दिशि असुरकुमाराणा न

जेमाणा विहरति, कहिणं जते ! दाहिणिंल्लानं असुरकुमारदेवाण पज्जतापज्जत्ताण ठाणा पसत्ता ? कहिणं जते ! दाहिणिंल्लानं असुरकुमारा देवा परिवसति ? गो० ! जवुद्धीवे ? मदरस्स पव्वयस्स दाहिणेण इमी सेरयणप्पन्नाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सवाहल्लापु उवरि एण जोयणसहस्स उग्गाहिता हेठावेग जोयणसहस्स वज्जित्ता मज्जे अउत्तरजोयणसयसहस्से एत्थण दाहिणिंल्लानं असुरकुमाराणं देवाण देवी णय चोत्तीसं अवणावाससयसहस्सा हवतीति मस्काय तेण अवणा बाहि वहा अंतो चउरसा सोचिव वसन्ते जाव पम्फिरूवा एत्थण दाहिणिंल्लानं असुरकुमारदेवाणं पज्जतापज्जत्ताण ठाणा पसत्ता । तिसुवि लोगस्स अस्सखेज्जइजागे, तत्थणं वहवे दाहिणिंल्लानं असुरकुमारदेवा देवीउ परिवसति काला लोहियस्का तेहेव जाव

वच्च सामित्त भट्टित्त महत्तरगत आणाईसर सेणावच्च करिमाणे पानिमाणे । अधिपतिपणो पौराधिपपणो स्वामीपणो पापकपणो मोटापणो आद्या पानता पलावता करता । मद्धवा हयनट्ठगोयवाइयं ततोतल ताडतुडिय वणमृदग पडयवाइयं रवेण टिव्वाइ भोगभोगार भुजमाणाविहरति । मोटा मद्धना नृत्य वादिव तवी ताल तालोटा चटित घनमृदग पडहगद्ध तिण्णकरो देवताना भोग भोगवता विचरे चमर वणिणो इत्युवे पसरकुमारसवा णोपरिवसति । चमरेन्द्र वलेद्धनमेक्कै असुरकुमारना वीव वसेक्कै । कालामपानीनसरिसा नीलगुलियगलव अयसिक्कुमुमण्णसा । कालेवर्णं मडानोल

नृजमाणि त्रिहरति, एव सर्वेभ्य नृणाण्यहं नृवणवासाण, नमर इत्य असुरकुमारद असुरकुमारया प
रिवसड काले महानीलसरिसे जाव पहासेमाणे सेण तस्य चउत्तीसाए नृवणावामयमहम्माण चउमठीए
सामाणियसाहस्सीण तावत्तीमाए तावत्तीसगाण चउरह लोगपालाण पचरह अगमहिंसीण सपरिचाराण
तिरह परिसाण सत्तरह अणियाण सत्तरह अणियाहिंवडंण चउरह च चउसठीण आयरस्सुदेवमाहस्सीण
अन्नेसिं च बल्लण दाहिणिस्साण देवाण देवीणय आहेवच्च पोरिवच्च जाव विहरति । कहिण न्ते ! उत्तरि
स्साण असुरकुमाराण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पणत्ता । कहिणं न्ते ! उत्तरिस्सा असुरकुमारा देवा
परिवसति ? गोयमा ! जवुदीवे दीवे मदरस्स पण्यस्स उत्तरेणं डमीने रयणप्पन्नाए पदुत्रीए असीउत्तर

कह वस्तुन सरोखु नौलगुनीनोपरे स्थान विश्वतपन्ननोपरे निर्मल । विद्यसिद्धयवत्त निगनरमिमिधसतयनयणा । सहानिर्भन राताछे नेत्र ननुना ।
 गुरुदायलक्ष्मणनासा स्वर्णिगसिध्दयवालि विवक्तन सविहाधकृश । गुरुउनोपरे साउंगमात्र लहनो विकसित शिवपत्र समचाठ । पडरसमिसालक्षिनन
 निगलसखगोखौरकुददगरयमुखासिय धवलदत्तमसीहुत्रहनिधतधायगसतवचिन करतलनसागुओश । गगु गाओर कृत्स् पाथोनाकष कसलनाभातु
 आ धवसाटातनो यगो धौत निर्मल एहवा राते सुकंनोपरे साय पग तला कीभ जिनरो तथा । शैवगयव कसिक्कगगरमविज्ज निहक्केसा । गच्छा
 सावाराननादिके कौधाछे काला शोकणाकग । वसिक्कदलधरा अदवदपागलित्तारमिधिविध पृष्णपासाद । वामेकाने तणुन गाइवन्ने नोप्याछे
 गाव तथा निगारेक पुण्यवणं जेइवा । असकिनिहार मसुमाद वत्ताद परपरविहार । एससिद्धिद सत्तसम्भ वन्नेकरो पदिगा छे । पदपटमयउक
 ता वो यतु असपता भट्टे जुधये वट्ठमाणा । पहिलोदय कौटोने दोनो यगोघी पाध्या यौवनकसारवणे पास्याछे । तनभगयतुडिय पक्कभूषण निगमन
 मणि रजमालियभुग दसमुदुटिया साउवयाहत्या । एतल तल्लभग वाहता आभरण वौहरगाममग प्ररजपूव निर्मल सणिरनेकरो नाय छे ननुत्त

जोयणसयसहस्रसत्ताहत्ताए उवरि एग जोयणमहरम उगाहिता हेठावेग जोयणमहस्स वज्जिता मज्जे
 छुठहत्तरिजोयणसयसहस्रे एत्यण उत्तरिमाण छुसुस्कुमाराण देवाण देवीणय तीरा नवणावाससयसहरसा
 नवतीति मस्काय तेण नवणा वाहि वहा छुत्तो चउरसा सेस जहा दाहिणिह्माण जाव विहरति, वली डल्य
 वइरोयणिदे वइरीयणराया परिवसड, काले महानीलसरिसे जाव पन्नासंमाणे सेण तल्य तीसाए नवणा

मट्ठीवे गच्छाई जाय । चूडामणि चित्तचिवगया सक्या मड्डुट्टा महज्जा महाजसा महावचना महानभागा महासक्का हारविहारवया कड
 तुडग यभियभुगा । चूडामणिचिग्गेकरी सहितम्बरुप मडाच्छेकरी महायातिकरी महावनेकरी महाभागे महासुखेकरी हारिकरी गोभि
 ताहीयो, कडा वाहरखाये यम्माई भुज । अगयकडनमड्डगडतलकणपोठधारी विचित्तइत्याभरण विचिसमावाचनलि । अगदकुडल मुकट णइवा क
 णभरण धारा छै विचित्र हाथना आभरण विचिवमाना । कमाणगयवरमन्नानिगणा भासुर्वोटियलवमानधरा । कचाणकारक नेपन देदीप्य लावोमा
 ना धरता । दिव्हेण वण्णे दिव्हेण गधुण दिव्हेण फांसण दिव्हेण सवगण दिव्हेण सठाणेण । दिव्धवेण दिव्धम्ये दिव्धसवयणे दिव्धमस्थाने ।
 दिव्धेण इट्ठीए दिव्धाएज्जण दिव्धाणभासाण दिव्धाणछायाए दिव्धाणपभाण दिव्धाणअसोण दिव्धेणतेण दिव्धाणलेखाण । दिव्धच्छदि दिव्धयुति दिव्ध
 भासाने दिव्धच्छाया दिव्धमभा दिव्धकिरण दिव्धतेज दिव्धमयायेकरी । एसदिसाओ उज्जीएमाणापभासिमाणा । दगदिगि चयोंतकरता विचरेछै । ते
 ण तल्य साण २ भवणवाससयसहस्राण साण २ मामाणियमाहस्योण । ते तिछा आपणा भवनमे लाव्धगेकरी आप आपणा सामानिकसहस्से करी
 साण तावतीमगाण साण २ लोमपालाण साण २ अगमहिंसीण साण २ परिसाण साण २ अपणा वायनियेकरी आपणा लोकपानेकरी
 अगमहिंसीयेकरी पोतानो परिपदावे करी आप आपणी अणियेकरी । साण २ आयरक्खदेवसाहस्योण अणिसिचवट्ठण भवणदामोण देवाणय देवीणय ।
 आत्तरत्तक सहस्सेकरी ओर पिणवणे भवणवासो देवता देवाणो । आह्वेण पोरेवच सामित्त भट्ठित्त सहसरगल । अधिपतिओपोराधिप पो स्वासीप

आयस-सहस्राण सठाए सामाणयसाहस्रमाण तावत्तासाए तावत्तासगाण चउरह लागपालाण पचरह
 अग्गमहिंसीण सपरिवाराण तिरह परिंसाण सत्तरह अणियाहिंवरुण चउरह सठीण
 आयरस्सेवसाहस्सीण अणोसिच वल्लण उत्तरिंसाण असुरकुमाराण देवाणय देवीणय अहिंवरु पोरिवरु
 जाव कुट्टमाणे विहरति । कहिण नते ! नागकुमाराण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पयत्ता, कहिण

णोवल्लोपणे । यणाइसर मेणवध करिमाणे पालेमाणे । आजापलावतायका करावतायका । महुयाइय नट गोयवाइव ततोत्तलत्ताल घणमुग पडुव
 वाउरवेण । माटाशब्द नटभोत वर्जित तवो ताल तलेटा सुटम माटा पडुवअण्डे । टिल्ला भोगभोगाइ भुजमाण विहरति । टिव्व भोग भोगवता
 विचरेछे । कहिणभते दाहिणिंसाण असुरकुमारदेवाण पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाणा प० । किहा हेभगवन् दाहिणिंसाण असुरकुमारदेवना पर्यासा अ
 पर्यासा ठामकछा । कहिणभते दाहिणिंसाण असुरकुमारदेवा परिवसति । किहा हेभगवन् दाहिण असुरकुमारदेवता वसेछे । गायमा जवूहीवे र भ
 दरम पडवयल दाहिणेण । हेगौतम जवदीप मेरुपर्वतयो दाहिणदिशे । इमोसरयणभाएपुट्ठीए असोउत्तरजोयणसहस्र दाइल्लाए ववरि एगजोउण
 सहस्र वरगाहिता । ए रतनभा पुण्डरीकेविपै एकल्लख असोउत्तरजोयण एकसहस्र योजन सहस्रहीने । डिट्ठाएगजायणसहस्र
 यल्लत्ता । नीचे एकयोजन सहस्र मूकीने । मज्जे अट्ठसरे जोयणसहस्रसे । विचे अठसरहजार एकल्लखजोयण । एत्थण दाहिणिंसाण असुरकुमाराण
 देवाण चउतीस भवणवास सयसहस्रल्लोहवत्तिमक्खाय । तहा दाहिणना असुरकुमारदेवताना ३४ लाख विभुवन् भगवतेकछा । तेण भयणानाहिउट्टा
 अतो वररसा मोचेव वण्णो जाव पडिक्खा । ते भवन बाहिर याटलाछे मोहि चौखूणाछे । वण्ण सर्व पाकलोपर जालगे प्रतिकूप । एत्थण दाहिणि
 णाण असुरकुमाराण देवाण पज्जत्ता अपज्जत्ताण ठाणा प० । तिहा दाहिणना असुरकुमार देवताना पर्यासा अपर्यासाना ठामकछा । तिसविंशोयस्य अ
 सपुज्जेमाणे प० । तीन वालल्लोकने असत्थातेमाणे हुवे । एत्थण वरुवे दाहिणिंसाण असुरकुमारदेवदेवो परिवसति । तिहा वणा असुरकुमारना दे

सा जाव पक्रित्वा तत्यण नागकुमाराण पज्जतापज्जाण ठाणा पसुता । तिसुवि लोगस्स अुसखेज्जड
 नागे तत्यण वहवे नागकुमारादेवा परिवसति, महिहिवा महज्जुइया सेस जहा उहिवाण जाव विहरति
 धरणन्नूयाणदा एल्य दुवे नागकुमारायाणो परिवसति महहिवा सेस जहा उहिवाण जात्र विहरति कहिण

आयणसहरस वल्लिता । इहे एकयोजनसहय मूकोने । मग्गे षड्दुत्तरजीयणसयसहरसे । विचै एकलाख अठहत्तरसहय । एतण उत्तरित्ताण असुर
 कुमाराण देवाण तीसभवावाससयसहरस हवतिस्सिम्हाय । तिहा उत्तरना असुरकुमारदेवताना बीसलाख भुवन कक्षाक्रे तीर्थकरे कक्षा । तेष भव
 ण वाहिइवा अतोवहरसा सेसजहा दाहिणिमाण जाव विहरति । ते भुवन वाहिर वाटलाकं मध्यं चौखूणक्रे षेप तिम टाक्षिणनोपरे यावत् विचरेहे ।
 इत्य बलि वररीयणदे वररीयणराया परिवसति । इहा वलेट्टनामे रोइयो राला वसेहे । कासे महाणोससरिसे जाव पभासेमाणा । कालेवण नहा
 नोलवस्तुनोपरे यावत् योभतारहेहे । सेण तद्वतोसाए भवणवाससयसहस्साण । ते तिहा तोसलाख भवनेजरी । सट्ठेण सामाणियसाइक्कोण तायत्ती
 साए तायत्तीसगाण । साठसहय सामानिकदेवकरी । चउवइ लोणपासाण पवणह भगमहिसेण सपरिवाराण तिस परिसाण ।
 चार लोकपालेकरी पच भग्ममहिपयेकरी परिवारेसहित तीन परपदायेकरी । सत्तणह अणीयाण सत्तणह अणियादिबरेण । सात अतीकेकरी ९ अनी
 काधिपतिकरी । चउवइ सट्ठेण आयरकडेवसाइक्कोण अणेसिचवङ्कण उत्तरित्ताण अमुरकुमाराण देवाणय देवीणय आडेवस पोरेवच्च जाउमाणे विह
 रइ । साठचौगुणाकृता दीयलाख वानोसहजार देवता आअरल्लक ओर दूजा घणा उत्तरदिगि असरकुमारदेवता देवीनो अधिपतिपणी पौरपणी
 यिचरे । कहिण भते नागकुमाराण देवाण पज्जतापज्जाण ठाणा प० । किहा हेभगवन् नागकुमारदेवना पर्यामा अपर्यामाना ठामकक्षा । कहिण भ
 ते नागकुमारादेवा परिवसति । किहा हेभगवन् नागकुमारदेवता वसेहे । गायमा इमीसेरयणपभाएपुटवीण असीसत्तरे जीयणसयसहरस वाहलाए ।
 हेमोतम एरत्तमभाप्रथिवीने एकलाख असीहजारयोजन जाडपणी । खरि एगजोवपसहरस उगाहिता । ऊपर एगजोवन सहय उगाहीने । इिहा

नते ! नागकुमारादेवा परिवसति ? गोयमा ! डमीसे रयणप्पन्नाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्से
वाहन्नाए उवरि एग जोयणसहस्स वज्जिज्जण मज्जे अठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थणं नागकुमाराण देवाण
पज्जन्तापज्जन्ताण चुलसीइन्नवणावाससयसहस्सा हवतीति मस्काय, तेण न्नवणा वाहि वहा अतो चउर

यता देवी वनेछे काला लोडिगक्खा तहेव जाव भुजमाणा विहरति । कालावणं रातोआख्या तिमहीज यावत् भोग भोगवता विचरैछे । एणसि तहेव
तायतिस्स लोणपालाभवति । एहने तिमहीज वायविसक देवता लोकपाल । एव सव्वत्थ भाणियव्व भवणवासीय । इणतरे सयं पाछलो परे कहिवा
भवणवासो ते । वमरे असुरकुमारदे असुरकुमारराया परिवसई । वमरचचा राजधानोये असुरकुमारनामै इन्द्र वसेछे । काले महानीलसरिसे
जाव पभासेमाणे । कालेवणं महानील वलुविणेय तेहनाप्रभा करता विचरैछे । नेण तय चवतीसाए भवणवाससहस्साण चउसठ्ठए सामाणियसाहस्यो
ण । तिहा चउतोसलाख भवनेकरो ६४००० सामानिक देवताकेरो । तायत्तीसाए ताउत्तीसगाण चउसु सोणपालाण । नायन्नियक देवेकरो ४ लोक
पालेकरो । पचपइ अणमहिषीण सपरिवाराण । पाच अणमहिषेकरो परिवारसहित । तिण परिमाण सत्तण अणियाण सत्तण अणिग्राहियइण चउस
चउसठ्ठोणं आयरखुदइसाहस्योण । तीन परिपदा करो ७ अनिकेधिपति करो बीसठ बीगुणाकरता दायलाख छपनइजार आकार
चक देवेकरो । अस्सेसिवक्कण टाहिणिस्साण देवाणय देवीणय आइवच्च पोरैवच्च जाव विहरति । अनैरा घणा टच्छिणवासो उवता देवता देवागता अविपतिप
तो पीराधिपणो यावत् विचरे । कहिणभते उत्तरिस्साण असुरकुमाराण पल्लन्ता पल्लन्ता ठाणा प० । किहा हेभगवन् उत्तरना असुरकुमारना पर्यासा
अपर्याप्ताना ठामकक्षा । कहिण भते उत्तरिस्सा असुरकुमारादेवा परिवसति । किहा हेभगवन् उत्तरना असुरकुमारदेवता वसेछे । गायमा जम्बूदीपे २
मटरस्य पल्लयप्प उत्तरेण । हेमोतम जम्बूदीपनाम द्वीप ते जम्बूदीपने, मेरुपर्वतयको उत्तरे । इमीसेरयणप्पभाए पुढवीए असोउत्तरजोयणसयसहस्स वाच
स्साए । ए रत्तनप्रभापुत्रिथीने एकलाख असोइवार योजन जाउपणे । उवरि एगजोयणसहस्स उभाहिता । ऊपर एकयोजनसहस्स उलाहीने । डिडाएम

सा जाय पन्तिरुवा तत्यण नागकुमाराण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पयत्ता । तिसुवि लोगस्स असुखेज्जड
 ज्ञागे तत्यण बह्वे नागकुमारादेवा परिवसति , महिद्धिया महज्जुद्धया सेस जहा उहियाण जाव विहरति
 धरणन्नूयाणदा एत्थ दुवे नागकुमारायाणी परिवसति महिद्धिया सेस जहा उहियाण जाव विहरति कहिण

जोयणसहरस वल्लिता । ठेठे एकयोजनसहय मूकोने । मरुक्के अट्टहत्तरजोयणसयसहरसे । विचे एकनाय अट्टहत्तरसहय । एत्थण उत्तरिभाण असुर
 कमाराण देवाण तौसभवणावाससयसहरस वुवतित्तिमत्ताय । तिहा उत्तरना असरकमारदेवताना बोमलाय भवन कट्ठाछे तीर्थकरे कट्ठा । तेण भन
 ण बाहिवहा अतोचसरसा सेसजहा दाहिणिप्पण जाव विहरति । ते भवन बाहिर बाटलाछे मध्यं चौखूबाछे जेप तिम टाचिणनोपरे यावत् विचरेछे ।
 इत्थ वलि वररोयणिदे वररोयणराया परिवसति । इहा वलेन्द्रनाम रोहणी राजा वसेछे । कासे महाणोलसरिसे जाव पभासेमाणा । कानेवर्ण महा
 नोलवशुनोपरे यावत् योमत्तारहेछे । सेण तत्थतीसाए भवणवाससयसहृच्छाण । ते तिहा तौसलाख भवनेकरो । सट्ठेण सामानियसाहस्योण तात्तती
 साए तायत्तौसगाण । साठसहय सामानिकदेवैकरो बायविगकदेवैकरो । चसवह लोगपात्ताण पचवह दग्गमहिद्योण सपरिवाराण तिस्र परिसाण ।
 चार लोकपालिकरो पच अग्गमहिद्येकरो परिवारेसहित तीन परपटोयेकरो । सत्तवह अणोयाण सत्तह पणियाहिबईण । सात अत्तोकेकरो ७ अनो
 काधिपतिकरो । चवपइ सट्ठाण आयरकुदेवसाहस्योण अणेसिचइण उत्तरिप्पण असुरकुमाराण देवाणय देवोणय त्राहेवच पोंरेइच्च जायमाने विह
 र । साठचीगुणाकरता हीयलाख चानोसहजार देवता आकरवक थोर दूजा घणा उत्तरटिय असुरकुमारदेवता देवीनो अधिपतिपथो पौरपथो
 विचरे । कहिण भते नागकुमाराण देवाण पत्तात्तापज्जत्ताण ठाणा प० । किहा हेभगवत् नागकुमारदेवता पर्यागा अपर्यामाना ठामकट्ठा । कहिण भ
 ते नागकुमारादेवा परिवसति । किहा हेभगवन् नागकुमारदेवता वसेछे । गोयमा इमीसेरणणभाएपट्ठोण अमीउत्तरे जोयणसयसहरस याइत्ताए ।
 हेमौतम परत्तप्रभाएथिवीने एकनाख असीहवारयोजन जाउण्णो । उवरि एगनायणसहरस उगाहिता । ऊपर एकयोजन सहय उगाहोने । दिट्ठा

नते ! नागकुमारादेवा परिवसति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पन्नाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्से
बाहन्नाए उवरि एग जोयणसहस्सं वज्जिज्जण मज्जे अउहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थणं नागकुमाराण देवाण
पज्जातापज्जाताण चुलसीइन्नवणावाससयसहस्सा हवतीति मस्काय, तेणं नवणा वाहि ब्रह्म अतो चउरं

वता देवो वसेछे काला लोहिक्खा तहेव जाव भुजमाणा विहरति । कालोवणं रातोप्राख्यां तिमहीज यावत् भोग भोगवत्ता विचरेछे । एएसि तहेव
तायतिस्स लोणपात्ताभवति । एहने तिमहीज वायधिसक देवता लोणपाल । एव सख्य भणियव्व भवणवासीण । इणतरे सर्वं पाछलो परे कहिवा
भवणवासी ते । चमरे असुरकुमारेदे असुरकुमाराराया परिवसई । चमरचवा राजधानोये असुरकुमारनामै इन्द्र वसेछे । कालं महानीलसरिसे
जाव पभासेमाणे । कालेवणं महानील वसुविणेष तेहनोप्रभा करता विचरेछ । सेण मय चवतीसाए भवणवाससहस्साण चउसहुण सामाणियसाइछी
ण । तिहा चउतीसलाख भवनेकरी ६४००० सामानिक दवतायेकरी । तायसीसाए ताउसीसगाण चउथ लोणपालाण । चाउविगक देवेकरी ४ लोण
पालेकरी । पचवइ अन्नमहिंसीण सपरिवाराण । पाच अन्नमहिंसेकरी परिवारसहित । तिण परिसाण सत्ता अणियाण सत्ता अणिउहिंवईण चउथ
चउसहोणं आयरस्सदसइस्सोण । तीन परिपदा करी ७ अनिकेधिपति करी बीसठ चौगुणाकरता टायलाव छप्पनहजार आत्तर
सक देवेकरी । अस्सेसिववइण दाहिणिल्लाण देवाणय टेवोणय आहिंवच्च पोरेवच्च जाव विहरति । अनेरा चणा टल्लिणवासो दवता देभागना अविपतिप
णी पौराधिपणी यावत् विवरै । कहिणभते उत्तरिल्लाण असुरकुमाराण पज्जसा पज्जसाण ठाणा प० । किहा हेभगवन् उत्तरना असुरकुमारना पर्याता
अपर्याताना ठामकट्ठा । कहिण भते उत्तरिल्ला असुरकुमारादेवा परिवसति । किहा हेभगवन् उत्तरना असुरकुमारदेवता वसेछे । गोयमा जवूहीये २
मटरस्स पव्वम्भ उत्तरेण । हेगौतम जवूहीपनाम होप ते जवूहीपने, मेरुपर्वतयको उत्तरे । इतीसेरयण्णभाए पुठोण असीउत्तरजोयणसयसहस्स वाइ
स्साए । ए रत्नप्रभापुयिवीने एकनाख असीइवार योजन जाडपणे । उवरि एगजोयणसहस्स उगाहिता । ऊपर एकजोजनसहस्स उगहोते । हिहाएग

यनानि त्रिशतशतसंख्यानि नागकुमाराणां चत्वारिंशत् वस्तुत्रिशत् सुवर्णकुमाराणां पट्चत्वारिंशत् द्वीपदिगुदधिचिद्युस्त्वनिताग्निकुमाराणां प्रत्येक पट्त्रिशद्वनशतसंख्याणि ॥ सम्प्रति सामानिकालसंज्ञकदेवसङ्घासयहार्थमाह-चउसदीसहोसपु इत्यादि ॥ दानिणात्यस्या ऽसुरकुमारैरद्रस्य

ससप्तसहरसा हवतीति मस्काय, तेणं नवणा वाहि वहा जात्र पक्रिहवा एत्यण दाहिणिह्वाण नागकुमाराणं पज्जत्तापज्जानाण ठाणा पणत्ता, तिसुवि लोगस्स अ्सखेज्जड्जागे एत्यण वहवे दाहिणिह्वाण नागकुमारा देवा परिवसति महहिंया जात्र चिहरति । धरणं एत्य नागकुमारिदे नागकुमाराया परिवसति महिहिंए जात्र पज्जातेमाणं सेण तत्य चोत्रालीसाए नवणावाससयसहरसाण ठरह सामाणियसाहरसीण तावत्तीसाए तावत्तीसगाण चउरह लोगपालाण ठरह अग्गमहिंसीण सपरिवाराण तिरह परिसाण सत्तरह अणियाण सत्तरह अणियाहिर्वईण चउवीसाए अणयरस्कदेवसाहरसीणं अन्नंसि च वत्तण दाहिणिह्वाणं नागकुमाराण

मारहेवताहे । चामानोस नवणात्राससंख्या इवतिस्सिम्मा ॥ चौबालोसनास भवन इम तौर्थेकर कष्टो । तेण भवणावाहि वहा जतो चउरसा जात्र पक्रिहवा । तभवत वाहिर व ठना मोहि चौरस यावत् पतिकप । एत्य दाहिणिह्वाण नागकुमाराण पज्जत्ता पज्जत्ताण ठाणा प० । इहा दक्षिणना गजमारना पर्गीत्ता अपर्गीत्ताना ठामकक्षा । तिसुविजागत्ता त्रसविज्जइभाग । त ते यालनाकने अमय्यातेमेभाग । एत्य वहवे दाहिणिह्वा नागन नारदेवा परिवसति । इहा वणा दक्षिणना नागकुमारदेवता वसेहे । महिहुंठया जात्र चिहरति । म ठोक्कहि यावत् विचरे । धरणे इत्य नागकुमारिदे नागकुमारराया णोपरिवसति । धरणनाम नागकुमारनामै इन्द नागकुमारराजा वसेहे । मंहुहुंठया जात्र पभांसमाणे । माठोक्कहि प्रभासहि त । सेण तत्य चउत्रालीसाए भवणावाससयाण क्खण्ड सामाणियसाहक्खोण । ते तिहा चौमालोगत्ताश्च भवननीसव्या कही कसइय सामानिके करी । तावत्तीसाए तावत्तासगाण चउरह लोगपालाण क्खण्ड अग्गमहिंसाण सपरिवाराण । तान्हजार वायनियकेकरी चारलानपलकरा त्रगमसिधोवेकरी

ज्ञेते ! दाहिणिह्वाणनागकुमाराण देवाण पज्झतापज्ज्ञाणं ठाणा पसुत्ता । कहिण ज्ञेते ! दाहिणिह्वाण
नागकुमारादेवा परिवसति ? गोयमा ! जबूदीवे २ मटरस्स पव्वयस्स दाहिणेण डमीने रयणप्पजाए पुढ
वीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सवाहत्ताए उवारि एग जोयणसहस्स उग्गाहिता हेठावेग जोयणसहस्स व
ज्जिता मज्जे अठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थण दाहिणिह्वाणं नागकुमाराण देवाण चोयालीसं भवणावा

एग जोयणसहस्स वज्जिता । नीचे एकगोजनसहय मूकोने । मज्जे अठहत्तरे जायणसयसहस्से । विचे १७८००० परिमाण । एत्थण नागकुमाराण दे
वाण पज्झता अपज्झताण ठाणा प० । इहा नागकुमार देवताना पर्यामा अपर्माभाना ठामकक्षा । चुनसंति भवणावासयसहस्स इवतिस्समत्ताय ।
८४ लाख भुवनसख्या इवे भगवते कक्षो । तेण भवणावाहिबहा अती चत्तरसा जाव पडिक्खा । ते भवन वाहिर बाटनाकारे माहि चौरस इमसं
यावत् प्रतिरूप । तत्थण नागकुमारा देवाण पज्झता २ ण ठाणा प० । तिहा नागकुमारदेवताना पर्याप्ता अपर्माभाना ठामकक्षा । तिसुविलोयस्स
असखिच्चइभागे । तीनलोकने असत्थातमेभाग पुवे । तत्थण बइवे नागकुमारा देवा परिवसति । तिहा वणा नागकुमार देवता वसेछे । मसुडुटिगा
मड्डनुयासेसज्झा षोडशिमण जाव विहरति । सोटोक्कडि सोटो बुतिकरी शेषथाकतो लिम ओवनो आलाशं यावत् विहरे । कहिणभते दाहिणि
ह्वाण नागकुमाराण देवाण पज्झता २ ण ठाणा प० । किहा हेभगवन् दाहिणिदिगिना नागकुमारदेवताना पर्याप्ता अपर्माभाना ठामकक्षा । कहिण
भते दाहिणिह्वा नागकुमारादेवा परिवसति । किहा हेभगवन् दाहिणिदिगिना नागकुमार वसेछे । गोयमा जबूदीवेतोवे मटरस्सपव्वयस्स दाहिणेण । हे
भौतम जबूदीप २ मेरुपर्वतयकौ दाहिणिदिगि । इमोत्तरयण्णभाएपुढौण असीउत्तरजोयणसयसहस्स वाहत्ताए । ए रत्नप्रभापृथिवीये एकलाख असीउ
जार योजन-चाटपणे । उवारि एगजोयणसहस्सं स्यादिता दिहा एगजोयणसहस्स वज्जिता । ऊपर एकद्वजार उगाहीने नीचे एकगोजनसहस्स मूको
ने । मूक्तप्रहत्तरजोयण समहरसे । विधासे एकलाख गठारसहय । एत्थण दाहिणिह्वाण नागकुमाराण देवाण । इहां दाहिणिदिगिना नागकु

यनानि त्रिशतगुणसंख्यानि नागकुमाराणां चत्वारिंशत् षतुस्त्रिंशत् सुवर्णकुमाराणां पट्चत्वारिंशत् द्वीपदिगुट्टाधिविश्रुतस्तनिताग्निकुमाराणां प्रत्येक पट्त्रिशद्वनशतसंख्यानि ॥ सम्प्रति सामानिकालमरुतदेवसङ्गस्य हायर्थाभाद-घटयतीसहोसुलु इत्यादि ॥ दानिनात्यस्या ऽमुरदुभारेद्रस्य

ससयसहस्सा हवतीति मस्काय, तेषां नवणा वाहि वेहा जात्र पङ्क्तिंवा एत्यण दाहिणिह्वाण नागकुमाराणां पज्जन्तापज्जन्ताण ठाणा पणत्ता, तिसुवि लोगस्स अस्सखेज्जडजाणे एत्यण बह्वे दाहिणिह्वाण नागकुमारा देवा परिवसति महहिंया जात्र विहरति । धरणे एत्य नागकुमारिदे नागकुमारया परिवसति महिहिंए जात्र पन्नासंमाणे सेण तल्य चौयालीसाए नवणावाससयसहरसाण ठरह सामाणियसाहरसीण तावत्तोसाए तावत्तीसगाण चउरह लोगपाठाण ठरह अग्गमहिंसीण सपरिवाराण तिरह परिसाण सत्तरह अणियाण सत्तरह अणियाहिंवरहण चउवीसाए अयाररुदेवसाहरसीण अन्तेसि च वज्जण दाहिणिह्वाण नागकुमाराण

मारुदेवताहै । सामानोस भवणावाससङ्ख्या हवतिस्तिमस्काय । चौयालोसनात् भवन इम तौघंकर कछो । तेण भवणावाहिउट्टा अतो चउरसा जात्र पङ्क्तिंवा । तमदन वाहिर व ठना मोहि चोरस यात्रत् पतिकम्प । एत्य दाहिणिह्वाण नागकुमाराण पज्जन्ता पज्जन्ता ठाणा प० । इहा दक्षिणा गजमारना पर्गीठा अर्पयाप्ताना ठामकछा । तिसुखिलाउस्य गसखिज्जडभाग । त ते नानलाकने असख्यातमेनाग । एत्यण बह्वे दाहिणिह्वा नागन नारदेवा परिवसति । इहा घणा दक्षिणा नागकुमारदेवता वसेहै । महिं उग जात्र विहरति । म ठोक्कहि यात्रत् विचरे । धरणे इत्य नागकुमार रिदे नागकुमारया णोपरिवसति । धरणेनामे नागकुमारनामे इन्त् नागकुमाररोजा वसेहै । महउट्टया जात्र पभासंमाणे । मोटोक्कहि प्रभासहि त । सेण तल्य चउयालीसाए भवणावाससयाण क्कउर सामाणियसाङ्ख्याण । ते तिहा चौयालोसलाय भवननीसख्या कही उस्सद्वय सामानिके करो । तावतोसाए तावतोसगाण चउरह लोगपाठाण क्कउर अग्गमहिंसाण सपरिवाराण । तान्हजार नायनियकेकरा चारलोक्कलेकरो यग्गमहिंयायेकरो

सामानिजादया पतु पाष्टमरुह्यानि श्रीक्षराहस्य पष्टिमरुह्यानि अमरवर्जानाम मुरकुमारदेवर्जाना सर्वेषा नपि दाक्षिणात्याना मीक्षराहाना च
षट् २ सप्तस्थानि प्रत्येक सामानिषाव एतेऽनन्तरोक्तसरयाकाटय सामानिका ज्ञातव्या आत्मरत्नका पुन सर्वत्रापि सामानिकवर्तुणा प्रतिप

देवाण्य देवीण्य अहेवच्च पोरिवच्च जात्र कुक्षुमाणे विहरति कहिणं ज्ञते ! उत्तरिक्षाण नागकुमाराण दे-
वाणं पञ्जानापञ्जाना ठाणा पण्णा, कहिण ज्ञते ! उत्तरिक्षा नागकुमारा देवा परिवसति ? गोयमा !
जवहीत्रे २ मदरस पण्यस्स उत्तरेण डमीसे रयणप्पनाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सवाह्लाए उ
वरिएग जोयणसहस्स उगाहिता हेठावंग जोयणसहस्स वज्जिहा मज्जे अठ्ठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थण
उत्तरिक्षाण नागकुमाराण देवाण चत्तालीस जवणावासयसहस्सा हवतीति मस्काय, तेण जवणा वाहि
वहा सेस जहा दाहिणक्ष्णाण जात्र विहरति, नूयाणदे इत्थ नागकुमारया परिवसइ मह

परिारनद्धित । तिण परिसाथ सत्तव्व अणियाण त्रणोगादिवइय चउवीसाण आयरक्खदेवसाहक्रीण । तीन परपटासहित सात मनोकैकरो सात अ
नौकाधिपति करो बीवोससहय आकरक्क देवेकरो । अणेसिचवहूण दाहिणिक्षाण नागकुमारा देवाणउ देवीणय अहेवच्च परिवच्च जावमाणे विहर
ति । अनैरा वणा दक्षिणना नागकुमारदेवता द्वागमा अधिपतिपणा पालता निचरेक्के । कहिणभते उत्तरिक्षाण नागकुमाराण देवाण पल्लतापल्लस
गाण ठाणा प० । किइा हेमगवन् उत्तरना नागकुमारदेवता पर्गद्धता अपर्गद्धताना ठामकद्धा । कहिणभते उत्तरिक्षा नागकुमारदेवा परिवसति ।
किइा हेमगवन् उत्तरना नागकुमारदेवता वसेक्के । गोयमा । जवहीत्रे २ मदरस उत्तरेण डमीसे रयणप्पनाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्स वा
ह्लाण । हेमोतम जवहीत्रे २ मरुपर्वतयकी ए रत्नप्रभा पुथिहीने एकनाख यसीहजारजोवन जाइपणे । उवरिएगजायणसहस्स उगाहिता । ऊपर
एकहजारजोवन उगाहीने । दिइापगजोयणसहस्स वज्जिता । हेठे एकहजारजोवन वहीने । मज्जे अठ्ठहत्तर जोयणसयसहस्से । माहि एकनाख अ

तस्या इदानीं दाक्षिणात्यानां मौत्तराणानां चासुरकुमारादीनां यथाक्रमं मित्रादीन् निर्दिशति यमरेचरणे इत्यादि दक्षिणात्यानां ममुरकुमाराणां धिपतिं द्यमरोनागकुमाराणां चरणं सुवचकुमाराणां वेष्पुदयं धियुक्तुमाराणां एरिफान्तं अभिदुमाराणाम् गिमिन् श्रीपुमाराणां च

हिंए जाव पन्नासेमाणे सेण तल्य चत्तालीसाए न्नवणावाममत्रसहस्त्राण झुण्हेवच्च जात्र विहरइ । ऋहिणं
 न्नेत । सुवणकुमाराराण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पणत्ता । कहिणं न्नेन ! सुवणकुमारोदेवा पस्विस्से
 ति ? गीयमा । इमीसे रयणप्पन्नाए पुढचीण जात्र एल्यण सुवणकुमाराराण देवाण आवत्तरिन्नवणावाममत्र
 सहस्सा हवतीति मरकाय, तेण न्नवणा याहि वहा जात्र पफिग्ग्या तल्यण सुवणकुमाराराण देवाण पज्जत्ता
 पज्जत्ताण ठाणा पणत्ता । तिसुत्ति लोगस्स झुसरेज्जन्नागे, तल्यण व्हव्वे सुवन्नकुमारा देवा पस्विस्सन्ति
 महिहिंया सेस जहा उहियाण जाव विहरति, वण्णदेव वण्णट्टालीय इत्थ दुव्वे सुवणकुमारिदा सुवन्नकुमार

ठांतरद्वार । एतत् सत्तरिंशत् नागकुमारदेशात् पञ्चाक्षोभ भवत्वात् । मरुता हवति । मरुता । इहा मरुतादिगता नागकुमारना पञ्चाक्षोभ
 त्व भवननोसव्या कङ्कौ वीतरगे कङ्का । तेष्वभवावादिहृदा सेम ब्रह्मा दक्षिणाय स्वाय विहरति । ते भवन वाहिर बाटना गोप मये दक्षिण
 दिग्गिनोपरे यावत् विधरे । भूयाण्डे दत्त नागकुमारिदे नागकुमारराया यो परिरमति । भूतानन्द नागकुमारमो राया गमेडे । मरुन्देय प्यार
 भासमाणे । मांटी रुहि यावत् प्रभासहिता । सेण तत्त वसनाभोमाए भवत्वाभमयमाह्मोण चक्रेवण त्राय विहरत । ते तदा पञ्चाक्षोभमाग भवन
 नोसव्या हुवे पथिपतिपथो विधरेके । कट्टिपभते मवणकुमारराय देशाण पण्णत्ता पण्णत्ता ठाया ए० । किङ्का हुमगन् मण्णकुमारदेशता पण्णत्ता यय
 यत्तिताना ठामकङ्का । कट्टिपभते मवणकुमारदेशता परिरमति । किङ्का हुमगन् मण्णकुमार वमेडे । गोयमा दभोमे रयवणभाए पण्णत्ताए ताव पत्त
 य मण्णकुमारराण देराय यावत्तारि भवत्वावास मयसद्वणा हवति । मरुताय । एगीतम ए रर । मण्णत्तायै यावत् ररा मण्णकुमारदेश वमेडे यय

ये उदधिकुमाराणां जलकान्तं दिक्कुमाराणाम्मितं वायुकुमाराणां वेलम्ब्य स्तनितकुमाराणां घोषः ॥ वतिनूग्रणदेहत्वादि ॥ चहरदिग्वर्तितं नामसुरकुमाराणामिन्द्रोद्यतिं नागकुमाराणां भूतानन्दं सुपर्णकुमाराणां वेलुदालिं विद्युत्कुमाराणां हरिं सह अग्निकुमाराणामग्निमाणव द्वीपकुमाराणां विद्विष्टं उदधिकुमाराणां जलप्रपन्नं दिक्कुमाराणाम्मितवाहनं वायुकुमाराणां प्रपन्नजनं स्तनितकुमाराणां महाघोषं सम्प्रतिवर्णं

रायाणो परिवसति महिष्या जात्र विहरति । कहिण जते ! दाहिणह्वाण सुवन्नकुमाराणं पज्जत्तापज्जत्ता
ण ठाणा पखत्ता । कहिण जते । दाहिणह्वा सुवन्नकुमारा देवा परिवसति ? गोयमा ! इमांसे जाव मज्जे
अठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थण दाहिणह्वाण सुवणकुमाराण अठत्तीस जवणावाससहरसा हवतीति
मस्काय, तेण जवणा वाहिं वहा जात्र पफ़ित्त्वा, तत्थण दाहिणह्वाण सुवणकुमाराण पज्जत्तापज्जत्ताण
ठाणा पखत्ता, तिसुवि लोणस्स अस्सखेज्जाइज्जागे, एत्थण बहवे सुवणकुमारा देवा परिवसति । वेणुदेवे
इत्थं सुवन्निदे सुवणकुमाराया परिवसति सेस जहा नागकुमाराण । कहिण जते ! उत्तरिह्वाणं सुवन्नकु

त्तरनाखं भवनकक्षां दक्षिणदिशि ३८ नाग उत्तरदिशि ३६ काखं तैर्यकरे कक्षो । तेष भग्नावाहिश्रुता जात्रपठिद्वा । ते भवन वाहरि यावत् प्रति
रूप । तत्थण सुवणकुमाराण देवाण पज्जत्ता २ ण ठाणा प० । तिहा सवर्णकुमारना ठामकक्षा । तिसुविनोगस्य प्रसंगिज्जरभागे । तीने वोल्लोकिन
प्रसख्यातमेभागे । तत्थण बहवे सवणकुमारा देवा परिवसति । तिहा षष्ठा सवर्णकुमारना देवता वसंछे । सेस जहा आदिश्याण जात्र विहरति । गेप
आवना आवावनीपरे विचरै । वेणुदेव वेणुदालिग इत्थदेवे सुवणकुमारना सवर्णकुमारना ए दीय सुवर्णकुमार
ना रात्रा जाणवा राजापये विचरै । कहिणभते दाहिणह्वाण सुवणकुमाराण पज्जत्ता २ ण ठाणा प० । किहा हेभगवन् दक्षिणा सवर्णकुमारना
पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकक्षा । कहिणभते दाहिणह्वा सुवणकुमारा देवा परिवसति । किहा हेभगवन् दक्षिणा सुवर्णकुमार वसंछे । गोयमा इमांसे

सुप्रार्यमाह-कालाग्रसुरकुमारादित्यादि गाथादय एवमुक्तुमारा सर्वेयि काला कल्पवर्णां रागकुमाराउदयिकुमारार्थेते उन्नयेपि पाण्डुरा धेत
वणा वर जात्य यत्कनक तस्य नियय कस्य पट्टकंरयातादृत् गौराप्रवति सुवर्णकुमारा दिकुमारा स्तनितकुमारा य तथा विद्याकुमारा अग्नि
कुमाराद्वीपकुमारा य भवत्युत्तमकनकवर्णा इतिभाव वायुकुमारा वयामा इयामत्वमेवस्पष्टयति प्रियवृयर्णा सप्रतिवत्तगतवर्णम

माराण देवाण पञ्जज्ञापञ्जज्ञाण ठाणा पणत्ता । कहिण नते ! उत्तरिह्वा सुवर्णकुमारा परिवसति ? गोय
मा । इमीसे रयणप्पन्नाए जात्र एत्थण उत्तरिह्वाण सुवर्णकुमाराण वत्तवया ज्ञाणिया तथा सेसाणवि चोढ
सख्ह इढाण ज्ञाणियह्वा नवर जवणनाणत्त इढाणनाणत्त वयणं नाणत्त परिहणनाणत्त च डमोहि गाहाहि
अनुगतव्व-चोवठिअसुराण चुलसीतीचेंवडोडनामाणं । वावत्तरिसुवर्णे वाळुमारानाणत्तणउत्ति ॥ १ ॥
दीवदिसाउदहीण विज्जुमारिरदयिणियमगीण । ठरहपिजुवत्तयाण वावत्तरिमोसयसहरसा ॥ २ ॥ चोत्ती
साचोयाला अण्ठहीसचहोइसयसहरसाइ । पणाचत्तालीसा दाहिणउत्तहीतिचवणाइ ॥ ३ ॥ तीसाचत्तालीसा

जाव मज्झे अट्टद्वन्द्वरे लोचयणस्यसहस्रे । हेगौतम ए यावत् मादिसे एक्कलाअ अठोत्तरद्वन्द्वार । एत्थण दाहिणिह्वाण सुवर्णकुमाराण अठोत्तस भवणावाम
सयसहस्रा हयतिमित्तमक्खाय । इहा दक्षिणना सुवर्णकुमारदेवताना इदं नाख भवन हुवे तीर्थकरेकणो । तेष भवणावाहिदहा जात्र पण्डित्वा । ते भवन
वाहिर वाटला यावत् प्रतिरूप । एत्थण दाहिणिह्वाण सुवर्णकुमाराण पञ्जज्ञा २ ण ठाणा प० । इहा दक्षिण सुवर्णकुमारना पयोमा अपयोमाना ठा
मकक्षा । तिसुविबोगस असखित्ताभगे । तीन वाल्लोकेने असस्यातमेभागे हुवे । एत्थण वहवे सुवर्णकुमारा देवा परिवसति । इहा घणा सुवर्णकुमा
र देवता वसेह्वै । वेणुदेवेय इत्य सुवर्णकुमारिदे सुवर्णकुमारारायाणो परिवसति । वेणु देवनामे सुवर्णकुमारनो राजा वसेह्वै । सेम जहा नागकुमारा
ण । याकतो जप नागकुमारनीपरे । क्वदिह भते उत्तरिह्वाण सुवर्णकुमाराण देवाण पञ्जज्ञा २ च ठाणा प० । किहा हेभगवन् उत्तरना सुवर्णकुमारदेव

तिपादनार्थमात्र-अमुरेसुप्तोतिरिक्ता इत्यादिगाथाद्वय ॥ अमुरेघ सुरकुमारेषु व्रजन्ति वज्राणि रक्तानि नागकुमारेषु उदधिकुमारेषु च शिलिघ्रपुष्प
प्रत्राणि नीलजगर्णे नीत्यर्थं सुवर्णकुमारा दिक्कुमारा स्तानितकुमाराश्च अद्यास्यगवसनधरा अद्यास्यमुखश्चास्य तत्र गतो य फेन सोद्यास्यगत
स्तद्वत् घञल यद्वह्ने तद्वरन्ती त्यद्यास्यगवसनधरा आहुत्येन श्वेतवज्रपरिधानञ्जालादित्यर्थं विद्युत्कुमारा द्वीपकुमारा अग्निकुमाराश्च नीलानुराग

चोत्तीसचेवसयसहस्साइ । टायालाठत्तीसा उत्तरर्नहोतित्रवणाइ ॥ ४ ॥ चउसठीसठीखलु ठच्चेसहस्साउ
असुरवज्जाणं । सामाणिथानेएए चउगुणाअायरकाउ ॥ ५ ॥ चमरेघरणेतहवे णुदेवहरिकतअग्गिसीहेय ।
पणेजलकंतेय अमियवेलेवेयथोसेय ॥ ६ ॥ दालिन्नूयाणदेवे णुटालीहरिस्सेहेअग्गिमाणवविसिठे । जलप्प
नेअमियवाहणे पन्नजणेयमहाघोसे ॥ ७ ॥ उत्तरिल्लिण जाव विहरति, कालाअसुरकुमारा नागाउददहीप
फुरादीवि । वरकणगणिहसगोरा होतिसुवणादिसाथणिया ॥ ८ ॥ उत्तत्तकणवन्ता विज्जुअग्गीयहोति
दीवाय । सामापियंगुवखा वाउकुमारामुणेयन्ना ॥ ९ ॥ असुरेसुहोतिरत्ता सिलिछपुप्फनायणाउददही । अा

पर्याप्त प्रपयिताना ठामकक्षा । कहिणमते उत्तरिन्ना सुवर्णकुमारादेवा परिवसति । किन्ना सुभगवन् उत्तरना सुवर्णकुमारदेवता वसेकै । गोयमा इमोसे रणण्यभाए जाव पत्थण उत्तरिन्ना सुवर्णकुमाराण वठतौस भवणावाससयसहक्का हवतित्तिमक्काय । हेगौतम ए रत्नप्रभाते यावत् इहा वत्तरना सुवर्णकुमारना ३४ लाख भवननौ सन्न्याकही तीर्थकरे कक्षौ । तेण भवणा जाव पत्थण वठवै उत्तरिन्ना सुवर्णकुमारादेया परिवसति । ते भवन यावत् इहा घणा उत्तरना सुवर्णकुमारना देवता वसेकै । महड्डाट्या जाव विहरति । महसिक यावत् विसरेकै । वेणुदानिय इत्य सुवर्णकुमारिदे सुवर्णकुमारराया यो परिवसति । वेणुदालो इहा सुवर्णकुमार सुवर्णकुमारनामैराजा वसेकै । महड्डाट्या सेस जहा नागकुमाराण एव जहा सुवर्णकुमाराण वत्तन्नया भणिया । महसिक ग्रैप जिम नागकुमार इम जिम सुवर्णकुमारनौ कहिणो कही । तहा सेसाणनि चउदसपद इहाण भाणियव्व । ति

स मेव पितृ चोदेऽन्तर्दो वक्तव्यता । तत्रैव भवणात्सं दृष्टेणागसौ वशीभाषितं परिहरणशीलं दमादं गाहादं अणीतम् । एतन्निविशेप भवन्तनी सत्या
 त्रुन्तमानाम जू वर्यप्रदानं जू वस्तपके गोयैः गी समभवा ते कहेरुं—वत्सादुत अमराग चुनसोतद्वचवहोदमागाण । वावत्तरासुवणि वायकुमाराराणक
 गवत् १ ॥ ६४ लाव भवन अमरकुमारना ८४ लाव भवन नागकुमारना ७२ लाव सुवर्णकुमारना १०८ लाख वायुकुमारना १११ टोवटिसाउदहोण
 विष्णुमारेदृशेण एवमपि जगन्निशाण छावसरिमोसयमहका २ ॥ १२ इदना एतले ६ युगलाका भवन ॥ २ ॥ चउतीसावठवत्ता १४ नौसचसयण
 पण पणवत्ताभीमा ४० इणवत्ताभीमा ३३ ॥ वमरेरु ४४ वेणुदेव हरिकन्त अर्न्निमिय पूणं इदं यतसहय लख जनकन्त अर्न्निम ५०
 वेदस्यक घाय ४० ४६०००० ॥ ३१ ॥ तोमावत्ताभीमा वउतीमचेवममहकाद छायालाछत्तीमा उत्तरयोहोतिभवणाद ॥ ४ ॥ वलेद ३० लाख भूनानेद
 हरिम वेणुभीमा ४० लाव अरिन मावव कालहा ३४ लाव जनप्रभ अर्न्निमत्तावन ४६ लाव प्रभञ्जन महाघोष ३६ लाख उत्तरअणिरा इन्दिरा भवन

अविधा ३६६०००० ॥ ४ ॥ वउतीमहकादं अमरकुमारना ८४ लाव भवन नागकुमारना ७२ लाव सुवर्णकुमारना १०८ लाख वायुकुमारना १११ टोवटिसाउदहोण
 र वमरेरु ४४ वेणुदेव हरिकन्त अर्न्निमिय पूणं इदं यतसहय लख जनकन्त अर्न्निम ५०
 माधेय पुननकजतप यामागनेलजगघासेय ६ ॥ वमरेरु धरणेदृ जिम वेणुदेव हरिकन्त अर्न्निमसीहा पूणं जलकन्त अर्न्निम यलस्यक तीपा १० इति द
 निजयणी । घ. लण भूगण्डिरे वेणुगालि हरयोहे अग्निमाणेववासिहे । वलेद ३० भूनानेद वेणुगाला उरियाद अग्निमाणेव वसिष्ट । जलपद तद अर्न्निमत्ता
 वणं पमर्णय महाघासे यागरिसाण लाव विहरति । जलप्रभ अर्न्निमत्तावन प्रभञ्जन महाघोष ३६ लाख उत्तरअणिरा इन्दिरा भवन
 रा नागो वटस्थि पाटराटावि । अमरकुमार काला नागकुमार ए दाय पाटुरा । पवरकणय निहसगाराहोति । प्रवर सर्वणवसे कणाटिण जहवो
 म । मथपादिम. घा. वदा । सुवर्णकुमार अर्न्निमकुमार खानेननुमार ३ । उत्तसअणयवणा विज्जुनगोवहतिदीवान । सामापियुवणा पाठकुमारामणि

सासयत्रतणधत्र होंतिसुवणादिसाथणिया ॥ ३ ॥ नीलाणुरागवसणा विज्जुग्गीयहोंनिदीचाय । सज्जाणु
 रागवसणा वाउकुमारामुण्यह्वा ॥ ४ ॥ कहिण नते ! वाणमतराण देवाण पज्जहापज्जहाण ठाणा
 पण्णा, कहिण नते ! वाणमतरा देवा परिवसति ? गोयमा ! इसीसे रयणप्पजाए पढवोए रयणमयरस
 ककरस जोयणसहस्सवाहस्स उवरि एग जोयणसय उग्गाहिसा हिठावि एग जोयणसय वज्जिहा मज्जे
 झुठसु जोयणसएसु एत्थण वाणमतराण देवाण तिरियमसखेज्जाहे मोमेज्जा नगरवाससयसहस्सा हवतीति
 मक्काय तेण मोमेज्जा नगरा वाहि वहा झुतो चउरंसा झुते पृक्खरकन्निघासठाणराठिया उकिन्ततरवि
 उलगन्नीरखायफलिहा पागारहालयकवाकतोरणपफिदुवारदंसभागा जतसयग्घिमसलमुसठिपरिचारिया
 झुउज्जा सया जया सया गुत्ता झुठयालकुठरइयझुठयालकयवणमाला खेमा सिवा किकरा मरदोवोरिक्क
 या लाउखीइयमहिया गोसीयसरसरत्तचदणदहरदिस्सपचगुलितला उवचियचदणकलसा चदणवणसुकयतो

यथा ॥ ॥ तप्यासांता जेइवा विबुल्लनार अगिक्कुमार होपकुमार स्वाकळे भिवव्वनोपरे वायुकुमारमो वणं जाणिवो । कहियभते वावक्कुमारा वाणम
 तराण पण्णा २ ण ठाणा प० । किहा वायुकमार हेमवन् वाणमत्तर पर्गीणा अयर्थोभाना ठामकह्या । कहियभते वायमतरा देवा परिवसति ।
 किहा हेमवन् वाणमत्तरदेवमेळे । गाउमा इसीसे रागणभाए पढवोए रागणमग्घ कइल जोयणसहस्स वाइल्लघा । हेमोतम ए रत्तनप्रभानो ऊपर
 सो रत्तनमयकाण्ड याजनसहस्सने जाइपणे । उवरि एगजोयणसय उग्गाहिसा । ऊपर एकयोजन ग्रत उगाहोमे । डिट्टाणजोयण सयवज्जिता । हेटे ण
 कसौगंजन यवकाणळे । मज्जे अट्टजोयणसण्णु । माहि विवै ८०० योजन । एत्थण वाणमतराण देवाण तिरियमसखिज्जा । इहा वाणमत्तर तिरिक्का न
 सप्यातगुणा । भोमिज्जानगरावासयसहस्साहयतिचित्तमक्काय । भूमि गृहनीपरे नगरसा साखागसे भरिहते कछो । तेण भोमिज्जानगरा वाहिवट्टा

वसना वायुममारा सध्यापरागयसना धानमतरसूत्रे तिसुविलोगसशसरोजज्जागे इति ॥ स्वस्थानोपपातसमुद्घातरूपेषु त्रिधिवि स्थानेषु लोक
स्या सहेयज्ञाने वक्तव्यानि तथा ज्ञयगणोमहाकाया महोरगा कि विविदिता ते इत्याह-जुजगपतय गन्धवगगा गन्धवसमुदाया कि विविदिता
स्ते इत्यादि-निपुणगन्धवगीतरतयो निपुणा परमकौशलोपेता यगन्धवजातीया देया स्तेषा यद्वीत तत्र रति येषा त तथा एते व्यन्तराणाम एषी

रणपद्मिदुवारदेसन्नागा आसतोसत्तविउलवहवघारियमल्लदामकलावा पचत्रन्मरसरससुरजिमुक्तापुष्पजोव
यारकलिया कालागुरुपवरक्कुदुरुक्कुतुरुक्कुधूवमचमवतगधधूसानिरामा सुगधवरगविया गधवहीनूया अचु
रणसघचिक्रणा दिव्रुतन्त्रियसहसपन्तदिया पन्नागमालाउलान्निरामा अचुक्का सरहा लहा
घठा मठा नीरया निम्मला निप्यका निक्काकरुच्छाया सप्यन्ना ससिरीया सउज्जीया पासादीया टरसणि

पतीवन्नरमा । ते नगर बाहिर बाटना माहि चौरसा । अडे पुक्करकर्णिगाण सठायमठिया । नोचे कमलनो कर्णिकाने चाकारे । उक्किणतर विहल्लग
भोरल्लाय फल्लिहा पागारहालय कवाउतोरणपडिदुवारदेसभागा । उक्कोणं विचे पिहलो गभोर किटकमयो प्राकार ऊपर कपाठ तीरण द्वार मोटा
तेडमा नाकादार । अतस मवधि मुमने मुमटिपरियरिया । रुडीदेयभाग मदनप्रहरणादिके परिवेष्टितके । अमोक्ष मया जगसवा गुत्ता अड्यालकट्ट
गराया अड्याल कयवणमाला खमासवा कि करा मरदंडावरकिया । साहमा देखवा समयेनहो मटा जोपके मटा गुत्त ४८ देगोभापये प्रससना
इवन ४८ भेदेकरो मूनमाला कन्याएकारी उपद्रवविना किहुर भूतउदेवता तेणे राख्याकै घर । सावलोऽयमडिया गोमोसरत्तचटणा दहरदिक्क पचा
गुनितना पोपविय चटणकलमा । ४८ भेदेकरो मूनमाला कन्याएकारी उपद्रवविना किहुरभूत उदेवता तेणे राख्याकै लोप्य के मणादिकनीपरे मडा
गोपी रचवदेने दर्दर दीधकै पच गुनोनाहाय सपाचित थाप्याकै चन्दनकनया । चटणकय तीरण पडिदुवारदेसभागा । चन्दनकलये रुडा गोभन
कोधोकै । आसतोसत्तविउलवघारिव मल्लदामकलावा । आसतो सप्तभूम अल्लपर वाध्या विपुलविस्तोर्ण दामना कला । पचयणा सरससुरहिमुक्क

मन्त्रेदा इमे चान्ये ऽप्यन्तरज्जेदा अष्टौ ॥ अणपनिपदत्यादि ॥ कथं भूता एते योऽन्तश्चोपि त्यतश्चाह-चलचलचपलेपि सत्कीलणदविप्पिया चञ्चला अ नवस्थितविज्ञा स्तथा चलचपलम तिगयेन चपल य क्रीडन यद्य चित्तद्रव्य परिहास स्तौ प्रियो यथा ते चलचपलचित्तक्रीडननूवप्रिया ततश्चञ्चल ज्ञाद्वेन विशेषणसमास तथा गहिरहसियगीयणचरणरतो ॥ गम्भीरपु हसतिगीतनतनेपु रति र्यथा ते तथा ॥ वणमालामलमजलकुलसञ्चद्विउ धियान्नरणचक्रनूचणधराइति ॥ वनमालामयानि यानि आमेलमुदकुण्डलानि आमलइति ॥ आपीकञ्जवस्स प्राकृतलदणवणत आपीड डोखरक

ज्जा अण्निरुत्ता पफ्फिरुत्ता एत्थण वाणमत्तराण देवाण पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा पसत्ता । तिसुवि लीगरस
अससेज्जहन्तागे तत्थण वहन्ने वाणमत्तरा देवा परिवसति तज्जा-पिसाया नूया जस्सा रक्कसा किन्नरा
किं पुरिसा नूयगत्रतिणीय महाक्काया गधवृगणा य निउणगधवृगीतरड्ढो अण्णवसिपणवन्नियइसिवा

पुराण पुजोवगारकेलियार । ७ पाच वर्ण सरस सुगन्ध मूक्का पूजनांक कलो ७ परिवद्धा । कालागुरु पञ्चकुट्टक तुलकडकन धूम घमघत गवसगा भिरामा सुगन्धधरगंधिया गधवृट्भूया । कालागर पञ्चप्रधान कुलरुख तुलक सहारसेकरी मघमघात्मान सम्य त्तिणेकरी गन्धनी बाट इइहे । अज्झार गणसव सकिण्णा टिब्बतु डय सहसपण्डया । अस्सरानासमूदनीये करीसदित । पडागलालाडनाभिरामा सच्च रयणामया अत्थासणा । सुदड्ढा टि साभलता मनोहरगन्द सर्व रत्नमय आच्छाहे । घट्टा मट्टा नीरया निक्खला निष्पक्का निककडक्काया । घट्टाछे मठारयाछे नीरज निर्मल निप्रक्कम्म नि ष्कण्टक प्रभासहित । सण्णहा सस्मिरीया सउज्जीया पासाइया दरसणिज्जा अभिरुत्ता पडिक्कवा । सद्यात दर्शनोक्के टखवायोग्य अभिरूप प्रतिकूप । एत्थण वाणमत्तराण देवाण पज्जत्ताण ठाणा प० । इथा वाणव्यन्तर देवताना पर्वासा अपर्याप्ताना ठामकच्चा । तिसुविलीगन्ध असस्मिज्जाइ भागे । तीने बोललोक्कने अमब्बातमेभागे हुवे । तत्थण वहन्ने वाणमत्तरादेवा परिवसति त० । तिहा घणा वाणयन्तर टवता वसेहे तेकहेहे-विसाया भूया जस्सा रक्कसा किन्नरा किन्नरा किपरसा सुयगवयो महाक्काया । पिगाच भूत यच्च राक्षस किन्नर किपरूप भुजपति महोरग महकन्त । गधव्य गणाय

तथा स्वेच्छद विभुर्विधानि यानि २ आभरणानि ते यत् चारुनृपण मथन तदुरतीति वनमालापीठमुकुटकुण्डरा स्वेच्छन्दविभुर्विधानाभरणधारु
पणधरा तथा स्वयत्ने स्वयत्नेनाविभि मुरञ्जिज्जुमे सुरचिता सुदु निवर्तिता तथा प्रलम्बते इति प्रलम्बा योजते इति शीघ्रमाना कान्ता
कामोया यिकसन्तो अमुकुविता सारपुष्पमयीचित्रा नानाप्रकारावधनमाला रचिता वक्षसि यैस्ते स्वर्तुं कसुरञ्जिज्जुमरचितप्रलम्बशोभमानकान्तविज
मपिप्रवतमानारचितवक्षस तथा काम स्वेच्छया गमो येषा ते कामगमा स्वेच्छाधारिण क्वचित्कामकामाङ्गतिपाठ तत्र कामेन स्वेच्छया कामो
मेयुनमेषा येषान्ते कामकामा ॥ अनियतकामा इत्यर्थ ॥ तथा काम स्वेच्छया रूप येषान्ते कामरूपदेहा स्तान् धरन्ती
त्वेव शीला कामरूपदेधारिण स्वेच्छाविकृतवतमानारूपदेहधारिण इत्यर्थ तथा नानाविधैर्धर्णै रागो रक्तता येषा तानि नानाविधधर्णारा
णि वराणि प्रधानानि चित्राणि नानाविधानि अङ्गुतानि वा चित्तगानि देशीवचनात् . देदीप्यमानानि नियमशानि परिधानानि येषा ते नाना
विषयण रागधरयस्त्रिहस्तकनिधसता तथा विविधैर्दर्शनेपथ्यैर्गृहीता येषा यै स्ते विविधदेशीनेपथ्यगृहीतवेषा तथा समुद्रयज्जन्मप्लवकैलि
कोलाहलाप्रियाङ्गिति कदप कामोद्दीपन चेष्टा च कलहो राटी केलि क्रीडा कोलाहलो योल कदपकलहकैलिकोलाहल प्रिया येषा ते कदपकल

इयन्नयवाडय महाकटिय कोहरूपयगदेवा चत्रलचत्रलचित्तकीलणटवप्पिया गहिरहसियपियगीयणि
चुरती वणमालामेलमउल्लङ्कलसच्छदविडडिडियाभरणचारुनृसणधरा सद्योयसुरञ्जिज्जुमसुरडयपलत्रसोहत

निउणगीतरइणा । गग्धवर्गण समुदाय निपुण गग्धवर्नेनावै गीत रतिना । अणवर्णाय पणवर्णिय ईसवाडय भूवाडय कटिय महाकटियाय कहछे पय
गट्टेया चवनचनचनचित्त कोलणटवप्पिया । अणपन्नो पणपन्नो कटिवाटो भूवाटो कन्दो महाकन्दो कोहडो पतक १७ एडवैनामै चवल विसस्यन
कै कोडारामेनावै । गहिरह सियपिग गीयनचणरह । गहिरगणोर पियगीत नृत्तावियै वचित्ते । वणमानामेलमउल कुडन सच्छद विडडिगा भरण
चारुभणधरा सद्योयसुरहिकसुम पलत्रसोहतकत विडसतिचित्त वणमालरइयथा । वनमालेकरी मसूक सांभळे पातानो छायाये विक्रियाछै आभरण

एकलिकोलापलप्रिया तत समुदितशब्देन सह विशेषणसमास ॥ हासवोली बहुलाव तिप्रज्ञती असिमुद्रशक्तिरुता हस्ते
 मेपातेहासवोलवहुला तथा ॥ असिमुद्रशक्तिरुताहस्ता ॥ अण्गमणिरणविहनिजुत्तचित्तचित्यगयाडति ॥ मणय शब्दज्ञानाया रत्नानि
 कर्कतनादीनि अनेकै मंशिरतै विविध नानाप्रकार नियुक्तानि चित्राणि नानाप्रकाराणि चिह्नानि गतानि स्थितानि येया ते तथा शेष सुगम
 नवर कालेयमहाकाले इत्यादि ॥ दक्षिणोत्तराणा पिशाचाना यथाक्रममिन्द्रो कालमहाकाली भूताना सुरुपपतिरूपी यक्षाणा पूर्णजहमाणिभद्री रा
 क्षसा ज्ञानमहाज्ञोमी किन्नराणा किन्नरकिंपुरुषो किंपुरुषाणा सत्पुरुषाणा उत्तिकायमहाकायी गन्धर्वाणा गीतरतिगीतयशसी
 ज्योतिष्कसूत्रे अट्टकविठगसठाणसठियाड अट्टे कपित्थस्या दंक्षपित्त्य तेन सस्थितानि अत्रा लेपपरिहारी चन्द्रप्रज्ञप्तिटीकाया चाजि
 ह्तिताविति ततो यथायौ सव्वफालियामया इति सर्वात्मना स्फटिकमयानि तथा अज्युद्रता आग्निमुस्येनसर्वतोयिनियता उदरुता प्रयत्नतया सर्वासु

कतवियसितचित्तवत्तमालरडयच्छा कामकामा कामरूवदेहधरा नाणाविहवन्नरागवरवच्छललतचित्तचित्त
 गणियवसणा विविहदेसिनेवत्यगहियवेसा समुडयरुदप्पकलहंलिकोलाहलप्यया हासा योलवज्जडा अ्सि
 भोगरसत्तिकुतहत्या अण्गमणिरणयणिविहनिजुत्तचित्तचित्तययासुरूवा महिड्डिया महज्जुतिया महायसा

चार मनोहररूप धराकै सुरभिक्षू प्रमत्त लहिकता ग्रीभता यमनीय विकसित नानाप्रकारनौ विभूषारचना कोषाकै । कामकमा कामरूवदेह
 धारी गाणानिहवणरागवत्यचिह्नग विचित्तरुणा नियमणा विविहदेसे नेवत्यगहियात्रासा । होवाविये कामातरथकै देहधारी अनेकविध विचित्ररु
 पना चित्ररूप अनेकदेयता पद्मसूत्रना गच्छाकै वेग जेणे । कंदण्कोनिकोलाहलप्यया हासवोलवहना । प्रमदित हर्ष पामौकै कन्दर्पचेष्टा क्रीडा को
 लाहल प्रियकै वासना योल वडलकै । असिमारसत्तिकुतहत्या । असिमुखकै हाथनेविये । अण्गमणिरणविविहनिजुत्तचित्तचित्तययया मरुवा ।
 अनेक मंशिरत विविध विचित्रसहित चिह्नकै सुरुपकै । महज्जुडिया महज्जुडया महायसा महायसा महायसा महायसा महायसा । म

महात्रता महाणुतागा मद्रासोस्त्रा हाराविराडयावच्छा कळगंतुक्रिययुया मगयकुंळमठगजयलक
गपीठधारी विचित्रहत्याक्षरणा विचित्रमालामउलीकृष्णाणगपवरवत्यपरिहया कक्षाणगपवरमह्वाणुलेवणध
रा नामुरयोदी पलवधनमालवरा दिव्येण वन्तेण दिव्येण गधेण दिव्येण फासेण दिव्य सठाणेण दिव्याए ड
ह्रीए दिव्याए जूईए दिव्याए पन्नाए दिव्याए च्छायाए दिव्याए अत्रीए दिव्येण एएण दिव्याए लेस्साए दसदि
साते उज्जोवंमाणा पन्नानमाणा तेण तत्य साण २ ओमेज्जाणगरावाससयसहस्सा अस्सखिज्जाण साण २
सामाणियमाहस्सीणं साण २ अग्गमहिंसीण साण २ सपरिसाण साण २ अणियाण साण २ अणियाहिं व

अतिउत्तम माटे नति महाउग मराउल मयाभाय महायुग्हा हारेकरा गोभित्ते होयो । कवउतुटिउयभिउभा ग । यकुडनमहुगउलकणपोठधारी ।
कडा वहिरणा तिणे यणोन भज्जा यग्न वाड्यापोनरग धिंयप कुडल गाल पोठनविपे । विचित्राड्याभरण विचित्रानालामउलि कक्षाणगपवरवत्यप
राड्या कक्षाणगपवरमह्वाणुलेवणधरा भासुरवीटिपलवधनमालवरा विचित्रहत्याभरणत्ते । विचित्रमाला मुकुटयै मङ्गलौक वस्त पहिराछे तथा मग
भास भेवणधाराछे जेअन देहिणमान म ला धारीछे । दिव्येण दिव्येण गधेण दिव्येण फासेण दिव्येण सठाणेण दिव्येण । देवसवधो दिव्य
माकरो विच्छ म्पगेकरो दिव्य मपगणकरा दिव्यगस्यनेकरो । दिव्याएड्डाए दिव्याएपदाए दिव्याए अत्रीए । अट्य कट्टीकरी दिव्य
वभाकरो दिव्य छायावेकरो दिव्य किरणेकरी । दिव्यण तेण दिव्याएलसाण वत्तिसाचा वत्तिसाणा पभासेमाणा । दिव्य तेजे नरो दिव्य लयावे
करो उगणिगा अर्थागकरतायको रडे । तेण तत्य माण २ भासिजनगरा वामसउसहग्गाण । ते तिहा याप यापणा भूने नगरगा लावु गमेकरो । सा
न २ गामानियताड्डापोण साण २ यगमसिंसीण साण २ पारसाण साण २ यणियाण साण २ यणियाहिं वर । यापयापणा सामाभिक सहयेकरी ।
यापयापणी यगमसिंसीणोको यापयापणी पण्णोको यापयापणी अनीकाधिपतिवेकरो । यापयापणी अनीकाधिपतिवेकरो । यापयापणी अनीकाधिपतिवेकरो ।

हुं साणं २ अयस्कदेवसाहस्रीणं अणुसिं च ब्रह्मं वाणमंतराणं देवाण्य देवीण्य अहिबच्चं पोरिवच्चं
 सामितं अठितं महतरगतं अणुाहसरसंणावच्चं कारमाणा पालमाणा महायाहयनहृगीयवाहुयतंतीतलताल
 तुफ्रियघणमुंगपफुप्यवाहुयवेणं दिवाहं भोगभोगाहं भुजमाणा विहरंति कहिणं जंत ! पिसायाणं देवाणं
 पज्जाहाणं ठाणा पणुत्ता । कहिणं जते ! पिसायादेवा परिवसंति ? गोयमा ! इमोसं रयणप्यन्नाए पुढवी
 ए रयणामयस्ककठस्स जोयणसहस्रसवाहस्रस्स उवारिणं जोयणसयं उग्गाहिता हिठावेगं जोयणसयं वज्जि
 ता मज्जे अणुसु जोयणसएसु एत्यणं पिसायाणं देवाणं तिरियमसंखज्जा भोमेज्जा नगरावाससयसहस्सा
 जवंतीति मस्कायं तणं भोमेज्जा नगरावाहिं वहा जहानुहिउन्नवणवखनु तहा नाणियव्वी जात्र पफिह

ववङ्गण वाणमताराणं देवाण्य देवीण्य आहं पोरिवच्चं सामितं महतरगतं । आणयो आत्तरत्तकदेवने सहस्रेकरी अनेरा घणां वाणव्यत्तर
 ना देवता देवी अधिपतिपणे पौरयपणो कामोपणो धारता वडाइपणे । आणाइसर मेणावच्चं कारमाणा पालमाणा । आन्ना इक्षरपणे धारता करा
 वता पालता । महायाहयं तहृगीयवाहुयं तंतीतलताख तुडिय घणमयं पणुवांयरवेणं । सोदावाजा मत्त गीत वाजिच तवी ताल झटित वाजिचवि
 गेय पण्डने गच्छेकरी । दिवाहं भोगभोगाहं भुजमाणा विहरंति । देवताना भोगभोगवता विचरेहं । कहिणभते पिसायाणं देवाणं पज्जाता २ ण ठा०
 पं० । विद्धां हेभगवन् पिमाचदेवता वसेहं पयांसां पय्यांतामा ठामकक्षा । कहिणभते पिमायादेवा परिवसंति । किद्धां हेभगवन् पिमाचदेवता व
 सेहं । गोयमा इमोसरयणभाणपण्डवीए रवणांमयख कंठख खोयणसहस्रवाहस्रख । इगीतमे ए रत्तमभा एणुवीये रत्तमयकांठं योजनमइस्स जाहा
 के । एगंजायणसयं वगाडित्ता । तेहमादि पकयोजन गतः यवगाहीने । दिवा एगंजायणसयं वज्जिता मज्जे अणुसु जोयणसंणम । इहे एकसौ योजन व
 तीने माहि पाठसौयोजन इहं । एत्यणं पिसायाणं देवाणं तिरियमसंखज्जा भोमेज्जानयरायाससवसस्सा जवंतीतिमखायं । पिमाचदेवतारा घर

वा, एत्यणं पिसायाणं देवाणं पज्जातापज्जाणं ठाणा पयत्ता, तिसुवि लोगस्स अुसंखेज्जहन्नागे तत्यणं
 वहवे पिसाया परिवसंति मह्हिया जहा उहिया जाव विहसंति, काला महाकाळा इत्य दुवे पिसाया
 इंदा पिसायरायाणो परिवसंति, मह्हिया महाज्जुइया जाव विहसंति । कहिणं जेत ! दाहिणिह्वाणं पि
 सायाणं देवाणं ठाणा पयत्ता । कहिणं जेत ! दाहिणह्वा पिसाया देवा परिवसंति ? गेयम्मा ! जंबूदी
 वे २ मंदरस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पत्ताए पुढवीए रयणामयस्स कंरुस्स जायणसहस्सवाहत्ता उवरि एगं
 जोयणसयं उग्गाहिता हिठावेगं जोयणसयं यज्जिहा भज्जे अुठसु जोयणसएसु एत्यणं दाहिणिह्वाणं पि

हे तिरछा असंख्याता मुररानीपरं नगर तेहना साखागमे तोयकरे कह्यो । तेणंभोमज्जानवरावाहिंइहा एवं जहाभांइयमवणवणुओ तहा भाणिय्यो
 जाव पडिहवा । तेभुण नगर केइवाछे वाहिर वाटलाकारे इम जिम सोघनोमव जिमकह्यो तिम कहावणो यावत् प्रतिरूप । एत्यणं पिसायाणं देवा
 णं पयत्ताणं ठा० प० । इहां पिगाच देवो देवता पर्याता अपर्याताना ठामकह्या । तिसुविमोवस्य असंखिज्जहन्नागे । तीने बोलेलोकोने असंख्यातमे
 भागे हवे । तत्यण वहेवे पिसायादेवा परिवसंति । तिहां वणं पिगाचदेवता वसेछे । महह्उटिया जहा भांइया जाव विहरंति । मोटीकह्दि जिम
 सोघनोभोलाओ यावत् विहरै । काले महाकालेय इत्यद्वे पिसायरायाणो परिवसंति । कालेवणो महाकालनामे इहां दोय पिगाचनामे राजा वसेछे ।
 महह्उटिया जाव विहरंति । महह्उटिया विहरै । कहिणंभंते दाहिणिह्वाणं पिसायाणं देवाणं पयत्ता २ णं ठा० पं० । तिहां हेभगवन् दाहिणना
 पिगाच पर्याता अपर्याताना ठामकह्या । कहिणंभंते दाहिणिह्वा पिसाया देवा परिवसंति । तिहां हेभगवन् दाहिणनापिगाच देवता वसेछे । गोय
 मा जंबूदीवे २ मंदरमा पच्चयस्स दाहिणेणं । जंबूदीपनामे होपमांइ मेरुपर्वत दाहिणपामे । इमोसैरयणपमाए पुढगोए रयणमयमकांडल्ल एयेयणमह
 मा वाहल्लस । ए रतनप्रभानामे पथिथोविपे रतनमय कांडलो योजनसइस जाल्लपणे मोंइ । उवरि एगंजोयणसयं उग्गाहिता । जपरिलो एलसोयं ज

सायाणं देवाणं तिरियमसंखिज्जा नीमेज्जा नगरावाससयसहस्सा हवंतीति मत्कार्यं, तेषां भवणा जहा
 उहिन्ने भवणवणुत्तं तहेव ज्ञाणियद्वो जाव पछिक्खा एत्थणं दाहिणत्ताणं पिसायाणं देवाणं पज्जत्तापज्जा
 त्ताणं ठाणा पणत्ताः । तिसुवि लोगस्स अस्संखेज्जइत्तागे तत्थणं बहवे दाहिणत्तापिसाया देवा परिवसंति
 महहिंया जहा उहिंया जाव विहरंति काले जत्थ पिसायइंदे पिसायराया परिवसंति महहिंए जाव पन्ना
 सेमाणे सेणं तत्थ तिरियमसंखेज्जाणं नीमेज्जा नगरावाससयसहस्साणं चउत्तं सामाणियसाहस्सीणं चउत्तं
 अग्गमहिंसीणं संपरिवाराणं तिरुहं परिसाणं सत्तत्तं अणियाहिंवईणं सोलसत्तं अणिय

नउगाहीने । दिट्ठाणगजोयणसय वज्जिज्जा मज्जे अट्ठमु जोयणसणमु । हेठे एकसौयोजन वर्ज्जने मध्ये आठसौयोजन विषे । एत्थणं दाहिणिज्जाणं पिसा
 याणं देवाणं तिरियमसंखिज्जाणं । इहां दक्षिणना पिगाचदेवताना तिरिक्कादिणे असंख्याता । भोमेज्जानयरावाससयसहस्सा हवतित्तिमव्वाय । भोम
 ता नगरना लाखगमे कट्ठा बीतरागे । तेषां भवणा जहा अहिंभवनवणुत्तं तहा भाणिं जाव पछिक्खा । ते भवन ज्जिम आघनो आलावो तिम कह
 वो यावत् प्रतिकप । एत्थणं दाहिणिज्जाणं पिसायाणं देवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं० । इहां दक्षिणदिगिना पिगाचदेवता पर्यास्ता अपर्यागताना ठाम
 कट्ठा । तिसंविनीगस्स असंखिज्जइत्तागे । तोन बोललोकेने असंख्यातमेमाणे । तत्थणं बहवे दाहिणिज्जा पिसायादेवा परिवसंति । इहां षण्णां दक्षिणना
 पिगाचदेवता वसैके । महडुट्टया जहा अहिंया जाव विहरति । महविं क ज्जिम आवनो आलावो तिम । कालेव इत्थ पिसाइदे पिसायरायाणो प
 रिवसंति । कालेनामे पिचाचनो रत्तं राजापणे वसैके । महडुट्टए जाव पमासेमाणे । महडिं क यावत् प्रभासठित । सेण तत्थ तिरियमसंखेज्जाणं भो
 मेज्जानगरावाससयसहस्साणं चउत्तं सामाणियसाहस्सीणं चउत्तं अग्गमहिंसीणं संपरिवाराणं । ते तिहां तिरिक्कालोक असंख्याता भोमनगर
 वोससवय लाखागमे इव चारहजार सामानिक देवतासहित चारहजार अग्गमहिंसीणं संपरिवारे । तेषां परिसाणं सत्तत्तं अणियाणं सत्तत्तं अणिय

रस्कदेवसाहस्सीणं झुत्तासिंच वल्लणं दाहिस्साणं वाणमंतराणं देवाणयदेवीणय झुहेवच्चं जाव विहरंति । उत्तरिस्साणं पुच्छा गो० । जहेव दादिणस्साणं वत्तव्या तहेव उत्तरिस्साणं पि नवरं मंदरस्स पण्यस्स उत्तरे णं महाकाले जल्य पिसायइदे पिसायराया परिवसंति जाव विहरंति एवं जहा पिसायाणं तहा झूयाणं पि जाव गंधव्याणं नवरं इंदेसु नाणत्तं जाणियच्चं इमेणं पि त्रिहिणा झूयाणं सुरूवपप्फिरूवा जस्काणं पुसज्जह माणिज्जह रस्कसाणं नीममहात्तीमा किन्तराणं किंपुरसा किंपुरसाणं सप्पुरिसमहापुरिसा महोर गाणं झुइकायमहाकाया गंधव्याण गीतरइगीतजसा जावगीयजसे विहरंति-कालेयमहाकाले सुरूवपप्फि

यादिचरणं । तीन परिपदा ७. अनौकेकरो ७ अनौकाधिपतेकरो । सोलसचहं आयरक्ख देवमाहरसौणं यणेसिंच वल्लणं दाहिस्साणं वाणमंतराणं देवा णय देवीणयं आहेवसं पोरिवसं जाव विहरंति । सोल्लहजार आलरचकेकरो और घणां दादिणदिग्गिना वाणमंतर देवता देवो अधिपति पोरपति या यत् विचरे । उत्तरिस्साणं पुच्छा । उत्तरदिग्गिनां प्रलं । गोयमा लहेव दाहिणस्साणं वत्तव्या तहेव उत्तरिस्साणं वि भाणि० । हेगीतेम जिम दज्जिणदि गिना कछो तिम उत्तरदिग्गिनो विशेष कहवो । नवरं मंदरस्स उत्तरेण महाकांसिच । एतलो मेरुने उत्तरपासे महाकांसिनामे इग्ग । इत्य पिसां दे पि सायरायाणां परिवसंति । ससत्तं च जाव विहरंति । पिगाचनोराजा तिहा वसेछे तिम शेष जाणवो । एव जहापिसायाण तहा भूयाणं पि भाणि० । इ म जिम पिगाचने तिम भूतनेग्गने । जाव गंधवाणं वि भा० । यावत् आठमो गंधर्वनिकायलगे कहिये । नवरं इंदेसु णाणत्तं भाणियस्स । एतलो विशेष इन्द्रनामासतो विशेष कहिवो । इमेणं विहिणाभूयाणं सुरूव पप्फिरूवा । एणे विघेकरो भूतने खरूप प्रतिकुप । जक्खाणं पणभंहा नाणभहाणं भीम सहा भीमा । यघनिकावे पणभंहा मानभद्र, २ । राघसनं भीम महाभीम २ । किस्साणं किंपुरसा । किन्नर किंपुरय ४ । किंपुरसाणं सप्पुरिस महापुरिसा । किंपुरिपने सपुत्र महापुत्रय, २ । महारगाणं अइकाय महाकाय । महारगने अतिक्काय महाकाय, २ । यधवाणं गीयर गीयजसा २ । गन्धर्वने गी

रूच्यपुष्पसन्नेह्य । अमरवद्दमागजद्वे श्रीमेयतहामहाश्रीमे ॥ १ ॥ किन्नरकिंपुरिसेखलु सप्पुसिसेखलुतहामहा
पुरिसे । अडकाएमहाकाए गीयरतिचेवगीयजसे ॥ २ ॥ बिहरति कहिणं जंते ! अणवन्ति याणं देवाणं ठा
णा पं० । कहिणं जंते ! अणवन्ति या देवा परिवसंति गो० ! इमीसे रयणप्पजाए पुढवीए रयणामयस्स
कंऊस्स जोयणसहस्सवाहस्स उवरि हिठायणं जोयणसयं वज्जिहा मज्जे अठसु जोयणसएसु अत्य
णं अणवन्ति याणं देवाणं तिरियमसंखिज्जा जवणा वाससयसहस्सा हवंतीति मक्कायं तेण जाव पफिरूवा
एत्थणं अणवन्ति या देवाणं ठाणा पं० । उववाएलो समुघाएलो सठाणेणलो तत्थणं अणवन्ति या देवा
परिवसंति महिहिया जहा पिसाया जाव बिहरंति सन्निहियसामाणा इच्छ दुवे अणवन्ति दा अणवन्ति

तरति गीतयग । जाव गीयजसा बिहरंति गाहा । यावत् गीतयग विचरे गाथा—कालेयमहाकाले मुरवपखिरूवमाणभदेय अमरवत्तिमाणभदे भीमेय
तहामहाभीमे ॥ १ ॥ काल महाकाल मुरूप प्रतिरूप पूर्णभद्र यमरपति माणभद्र भीम तिम महाभीम ८ : १ ॥ किन्नरकिंपुरिसेखलु सप्पुसिसेखलुतहा
महापुरिसे अइकायमहाकाए गीयरचंचवगीयजसे ॥ २ ॥ किन्नर किंपुरय निचो सत्त्वपुरुष तिम महापुरुष अति काय महाकाय गीतरति गीतयग १५ ॥ २ ॥
कहिणंभते अणपखिज्जाणं देवाणं पल्लता २ ण ठा० पं० । किह्वां हेमगवन् अनेरा व्यन्तरना देवताना ठामकक्षा । कहिणं भते अणवन्ति या देवा परिवस
ति । किह्वां हेमगवन् अनेरा व्यन्तर किह्वां वसे । गीयसा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए रयणामयसज्जठस्स जोयणसयस वाहज्जस्स । देगीतम ए रतन
प्रभापयिधोने रतनमयकांड योजनसहय जाडपण । उवरि जाव अट्टम जोयणसरस । ऊपरला अट्टमवाजम छांडोने तेमांदि १०० योजन यवताय ।
पटयणं पणिमाणं देवाणं तिरियमसंखिज्जाणरावाससयसहरसा ज्वंति त्ति मक्कायं तेण जाव पडिह्वा । ममांदि इहां अनेरा व्यन्तरदेवता तिरिहा
यसंख्याता भद्वरानो परे नगर नाखेगमा कक्षा तोधिकरे यावत् प्रतिरूप विचरे । एत्थणं अणवन्ति या देवाणं पल्लता २ ण ठाणा पं० ॥ इहां अनेरा व्य

य कुमाररायाणो परिवर्तन्ति महद्द्विया जहा कालमहाकाला एवं जहा कालमहाकालां दोरुहपि दाहिणि
 ज्ञाणं उत्तरिज्ञाणय ज्ञाणिया तहा संनिहियसामाणापि ज्ञाणियव्हा संगहणि गाहा-ञ्छणवन्निप्रपवन्नि
 य इंसिवाइयजयथाइएचेव । कदिममहाकदिम कुहंरुयपयंगदेवाय । इमे इदा-संनिहियासामाणा धाइविधाए
 यइसीयइसियाले इस्सरमेहस्सरिविय हवइसुवत्यविसालेय ॥१॥ हासेहासरइविय सेएयजवेतहामहासेए पयगेप
 यगपएविज नेयव्हाञ्छाणपुव्हीए ॥ २ ॥ कहिणं नंत ! जोइसियाणं देवाणं पज्जताणं २ ठाणा पन्नत्ता ? कहिणं

भारता पर्यास्ता यपुर्यास्ताना ठामकव्हा । तिसुविलोचरम असेखिअःभागे । तीन कालोक्कने असंख्यातमेभानंदुवे । तत्थणं वहव अणवणिया देवा प
 रिवर्तन्ति मइछुटिया जहा पिसाया जाव विहरंत । तिहो वणी अनेरा व्यत्तरीक देवता वसेछं महर्दिक जिम पिशाच तिम विचरेछे । सन्निहिय सा
 मानिय इत्य अणवण्हेदा अणवणियकुनाररायाणां परिवर्तन्ति । सन्निहित सामानिक एवेन्द्र अने राजा वसेछे । महछुटिया जहा काल महाकाला
 एवं जहा काल महाकाला । महर्दिक जिमकाल महाकालापरवेहो उत्तरदक्षिणकव्हा । एवं जहा दुयहपि दाहिणिज्ञाण सराणिय भणिअ
 र्वा । इम जिम सन्निहित सामानिक दक्षिणवर्धो उत्तरसवधो कव्हा । तहा सन्निहिय सामानियाणपि भाणियववं । तिम सन्निहित सामानिक भ
 णिया ते प्रमाणे सामानिक जाणवा । इमा संघयण गाहा । ए संघयण गाथाकहिंवे । अणवणियपणवसिय ईंसिवाइयभूववाइयाचेव । कदिममहाकदि
 य कंसउपवइयादेवा ॥ १ ॥ अणपत्तो पणपत्तो ऋषिवादी भूतवादी निये कटो महाकन्दो कोहणो पतकद ए देवताना इन्द्र कहैछे-इमेइदा । ससि
 हिंएसामाणिए धांइविधायितइयइसियाले इस्सरमहेसरिविय हवइसुवत्यविसालेय ॥२॥ सन्निहित सामानिक धाता विधाता तिम ऋषि ऋषिपाल इ
 मर महेमर हवे सुवत्य वियाल १० । हासेहासरइविय सेणभवतहामहासेण पयगेपअणवणिय नायव्हाआणुपुव्हीए ॥ १ ॥ हास्य हास्यरति स्वेत
 एवे तिम महास्त्र पतक पतकांपत ११ इन्द्रपुत्तमे । कहिणं भते जोइसियाणं देवाणं पज्जताणं ठाणा पं० । जिहं हेभगवन् ज्योतिपोदेवताना ठा

रूचपुण्यदेय । अमरवद्गमाणचद्दे नीमेयतहामहात्रीभि ॥ १ ॥ किन्नरकिंपुरिसेखलु सप्युरिसेखलुतहामहा
पुरिसे । अडकाएमहाकाए गीयरतिचेवगीयजसे ॥ २ ॥ विहरति कहिणं जंते ! अणवन्तियाणं देवाणं ठा
णा पं० । कहिणं जंते ! अणवन्तिया देवा परिवसंति गो० ! इमीसे रयणप्पन्नाए पुढवोए रयणामयरस
कंरुस जोयणसहस्रवाहस्रस उवरि हिठायणं जोयणसयं वज्जिता मज्जे अठसु जोयणसएसु अत्य
णं अणवन्तियाणं देवाणं तिरियमसंखज्जा जवणा वाससयसहस्रा हवंतीतिमस्कायं तेष जाव पफिरूत्रा
एयणं अणवन्तिया देवाणं ठाणा पं० । उववाएलो समुग्घाएलो सठाणेणलो तयणं अणवन्तिया देवा
परिवसंति माहिहिया जहा पिसाया जाव विहरंति सन्निहियसामाणा इच्छु दुवे अणवन्तिंदा अणवन्ति

तरति गीतयय । जाव गीयजसा विहरति गाहा । यावत् गीतयय विचरे गाथा—कालियमहाकाले सुखपडिरवमाणभदेय अमरवत्तियाणभदे भीमेय
तहामहाभीमे ॥ १ ॥ काल महाकाल मुरण प्रतिरूप पूर्णभद्र अमरपति माणभद्र भीम तिम महाभीम ८० १ ॥ किन्नरकिंपुरिसेखलु सप्युरिसेखलुनहा
महापुरिसे अरकायमहाकाए गीयरतिचेवगीयजसे ॥ २ ॥ किन्नर किंपुरप निच्छैसत्यपुरुष तिम महापुरुष अतिकाय महाकाय गीतरति गीतयय १५ ॥ २ ॥
कहिणंभते अणपणियाणं देवाणं पल्लता २ ण ठा० पं० । किन्ना हेमगयन् अनेरा व्यत्तरना देवताना ठामकक्षा । कहियं भते अणवन्तियादेवा परिवस
ति । किन्ना हेमगयन् अनेरा व्यत्तर किन्ना वसे । गोयमा इमीसे रयणप्पन्नाए पटवोए रयणामयस्रकडरम जोयणसयरम काहस्रसम । हेगीतम ए रतन
प्रभाययिवोने रतमेयकांड योजनसदय चाडपणे । उवरि जाव अठम जोयणसएस । ऊपरला अटुगतयोजिम क्खंडोने तेमांदि १०० योजन अवकाय ।
पटयणं यणियाणं देवाणं तिरियमसंखिजाणगरावासयंसहरमा हवंतिस्ति मस्कायं तेष जाव पडिहवा । ममांदि इहो अनेरा व्यत्तरदेवता तिरक्का
यसंख्याता भहरानोपरे नगर काखेगमा कक्षा तोयिकरे यावत् प्रतिरूप विचरे । एटयणं अणवन्तियाणं देवाणं पल्लता २ ण ठाणा पं० । इहो अनेरा व्य

वननिर्गतेषु लोके प्रतीतानि तदन्तरेषु विशिष्टशोभितानि विविधरत्नानि यथा तानि तथा पञ्जरात् तन्मौलितमिव यत्पृष्ठमिव पञ्जरोन्मीलि
तवत् तथाहि किल किमपि वस्तु पञ्जरात् यंशोदिमपप्रच्छादमविशोपात् अक्षिपृष्ठमत्यन्ताधिनष्टच्छायात् शोभते तथा तान्यपि विमाना
नीति प्रायः, तथा मणिकनकानां सम्यग्धनी स्तूपिका शिखरं येषां तानि मणिकनकस्तूपिकाकानि ततः पूर्वपदान्यां सह विशेषणसमासः, तथा वि
कसितानि यानि शतपत्राणि पौण्डरीकानि च द्वारादीं प्रतिकृतिस्त्वेन स्थितानि तिलका इति स्तूप्यादिषु पुंस्त्राणि रत्नमया द्या दृवंद्राद्वारादिषु
संस्थितानि विकसितशतपत्रपुण्डरीकतिलकरत्नाद्वेषद्रवित्राणि, तथा नानामणिमयीनि दानि रत्नकृतानि नानामणिमयदामालंकरणानि, तथा
यत्तर्कहिंस्र संस्थानि मष्टणानि तथा तपनीयं सुवर्णविशेष सन्मय्याः सुविराया वालुकायाः प्रसूतः प्रसरो येषु तानि तपनीयरुचिरवालुकाप्रसू

त्रिजयवैजयंतीपद्माच्छत्ताइच्छत्तकलिया तुंगा गगनतलमहिलंघमाणसिहरा जालंतररयणपञ्जस्मीलियद्ब्र
मणिकणगयूत्रियागा वियसियसयपत्तपौण्डरीया तिलगरयणरुचंदचिह्ना नानामणिमयदामालंकिया इत्यंती
बहिं च सरहा तत्रणिज्जरुहलवालुया पच्छुका सुहफासा ससिरीयरूत्रा पासाईया दरसणिज्जा इतिरूत्रा

तेष्वेकरी धवलीप्रभा विस्तरीकैः सवर्णे घनेक मणिकणकना रत्नना आयरंकारी भौते चिह्नं म संहते वावे मेरी इत्याथो विजय अभ्युदय तेष्वंती कर
तार विजयं वैजयंती पार्श्वकर्णिकां नामै पताकाकैः तिह्रां । अस्ताइच्छत्तकलिया तुंगा गगनतल मभित्तंघमाणसिहरा जालंतर रयणपञ्जस्मी
लियद्ब्र मणिकणगयूत्रियागा । अत्र ऊपर अक्षसहितकैः कंशा गगनतल लघुता एववा कंशां शिखरकैः सेहना तथा जालांतर पांशरा वांगनौजालो म
णिमय गवाज । वियसियसयवत्त पौण्डरीया तिलगरयणचंदलिया नाणामणिमयदामालंकिया । विकस्या शतपत्रमरीखो भौतकैः जिह्रां तिलकरत्न
यर्षवद्राकार एते एववा चिह्नमकैः जिह्रां घनेकमणिमय अलंकृतकैः चिह्नमकैः जिह्रां घनेक अलंकृतकैः मंहि । अंतीवाहिंस्र मण्ड । बाहिर मुकुमाल
कै । तत्रणिज्जरुहलवालुया पल्लो सुहफासा ससिरीया मरुवा पासाईया दरसणिज्जा अभिरूत्रा पडिह्वा । तपनीय योनानीपरे मनोहर प्रतर

दिष्ट प्रसूता याः प्रज्ञा दीप्ति स्तया सिद्धानि खलानि अस्पृष्टतोत्पन्नप्रज्ञासितानि, तथा विविधानां भणिकगकरत्नानां या नक्तयो विचित्रविशेषो
 पा स्तानि शिवाणि आश्चर्ययुतानि विविधभणिकनक्तप्रज्ञासितानि ॥ वाउद्वयविलयवेज्यतीपद्मागच्छतातिच्छतकलिया वातोदुता वायुकम्पिता वि
 जयोन्मुदय स्तत्संसूचिका वेलयत्यन्निधाना याः पताका अथवा विजयहेति वेज्यतीनां पार्श्वकिंका उच्यते तदप्रधाना वेज्यत्यः पताका स्ता एव
 विजयवेज्यत्यः पताकाः कुत्रातिच्छन्नाणि उपर्यपरि स्थितानि कुत्राणि तैः कलितानि वातोदुतविजयवेज्यतीपताकाट्वातिच्छतकलितानि तुङ्गानि
 उच्यन्ति तथा गगनतलमं वरतलं अनुलिखन् अजिलङ्घयन् विशरं येषां तानि गगनतलानुलिखिच्छिराणि तथा जालानि जालकानि तानि च न

मन्तं! जोडसिया परिवसन्ति? गो०! इमीसे रयणप्पन्नाए पुढवीए वज्जसमरमणिज्जाउं नूमिन्नागाउं सत्तणउ
 ए जोयणसए उहुं उप्पइत्ता दसुत्तरं जोयणसयं वाहल्ले तिरियमसंखिज्जे जोडसियसए एत्थणं जोडसियाणं
 देवाणं तिरियमसंखिज्जा जोडसियविमाणावाससयसहस्सा हवंतीतिमस्कायं तेषां विमाणा अयुक्कविठग
 संठाणसंठिया सव्वफालियामया अयुद्धगयमुसियपहसियाइव विविहमणिकणगरयणअत्तिचिन्ता वाउरुत

मकच्छा । अहिणं भन्ते जोरसिया देवा परिवसन्ति । किम हेभगवन् ज्योतिषोदेवता वमेहे । गोयसा इमोमेरयणप्पन्नाएपुढवीए वज्जसमरमणिज्जायां भूमि
 भागायां सत्तनवयजोयणसएउहउ उपपत्ता । इमीतम ए रतनप्रभापुविषीयको वणी रमणोक्क भूमिभागहे तेद्वक्को सातसे नेअयोजन अंघाहे । दसुत्त
 रजोयणसएणं वाहल्ले तिरियमसंखिज्जे जोडसियसए पं० । ते तिहुं १० योजनमाहि चिन्ता असंख्याता ज्योतिषीना दासाकच्छा । एत्थणं जोरसियाण
 देवाणं तिरियमसंखिज्जा जोडसियविमाणावाससयसहस्सा हवंतीतिमस्काय । इहो ज्योतिषोदेवना तिरिह्हा असंख्याताना ज्योतिषीनाविमान सायांगमे
 तोधिकरे कच्छा । तेषां विमाणा अयुक्कविठगसंठाणसंठियाणं सव्व फल्लिहमया । तेद्वमांविमांग चहुंकोठ संख्यान संस्थितहे सर्वकिटक्क रतनमयहे तथा । अ
 भगवयमुसियपहसियाइव विविहमणि कणगरयण भत्तिचिन्ता भायाहुयविजयवेज्यतीपद्मागा । आसीक्कणं विनिर्गतं प्रवर सर्वतो दिशिसंघोहे दीप्ति

मुकुटे येषां ते प्रत्येकं स्थानं माङ्गप्रकाटितचिह्नमुकुटाः किमुक्तं भवति चंद्रस्य स्वमुकुटे चंद्रमण्डले लाञ्छनं स्थानांभक्तिप्रकटितं सूर्यस्य सूर्यमण्डले ग्रहस्य ग्रहमण्डले नक्षत्रस्य नक्षत्राकारं तारकस्य तारकाकारमिति । वैमानिकसूत्रे चतुरशीतिविमानलक्षणानि सप्तनवतिविमानसदृशाणि त्रयोविंशतिविमानानीति ॥ वत्सीसश्रद्धावीसा वारसश्रद्धा वररीसयसहससाइत्यादि ॥ सख्यामीलनेन परिभाषनीयानि ॥ तेषां भिगमहिसेत्यादि ॥ सौधमंदेवा द्यूगरूपप्रकाटितचिह्नमुकुटाः इशानदेवामहिषरूपप्रकाटितचिह्नमुकुटाः, सनत्कुमारदेवा वराहरूपप्रकाटितचिह्नमुकुटाः, माहेन्द्रदेवाः सिंहरूपप्रकाटितमुकुटचिह्नाः, ब्रह्मदेवलोकः ज्वगलरूपप्रकाटितमुकुटचिह्नाः, लांतकदेवा ददुररूपप्रकाटितमुकुटचिह्नाः, शुक्रकल्पदेवा हयमुकुटचिह्नाः, सहस्रारकल्पदेवा गजपतिमुकुटचिह्नाः, आनतकल्पदेवा नृगमुकुटचिह्नाः, प्राणतकल्पदेवाः खड्गधनुष्यद्विजोप आटव्यः आरण्यकल्पदेवा धृपन्नमुकुटचिह्नाः, अष्ट्युतकल्पदेवा विह्वलमुकुटचिह्नाः ॥ वरकुंजलुज्जोयियाणयाइति ॥ वराभ्यां कुण्डलाभ्यामु द्योतितं आस्थरीकृत माननं येषां ते तथा शोपं सुगमं-सौधमं कल्पसूत्रं । अचिमातीनासिक्ताभे इति ॥ वज्रपाणी इति ॥ वज्रं पाणावस्य इति वज्रपाणिः असुरादिपुराणां दारणात् पुरंदरः ॥ सुय

यचिंधमउना महिहिया जावप्यनासेमाणा तेषां तस्य साणं २ विमाणावाससयसहसाणं साणं २ सामाणि
यसाहस्सीणं साणं २ व्यगमहिसीणं सपरिवाराणं साणं २ परिसाणं साणं २ व्युणियाणं साणं २ व्युणि

एतन्ने सूर्यमण्डल लक्षणं सर्वं ते कर्हिवा स्त्रीभाव चन्द्रनो चन्द्रमण्डलनो मुकुटचिह्नै मङ्गलिक यावत् प्रभासहित ते । तेषां तस्य साणं विमाणावाससयसहसाणं । तिस्रां आप आपणे विमाने लाङ्छागमैकरो । साणं २ सामाणियसाहस्योणं । आप आपण सामानिकसहयेकरो । साणं २ अगमहिसीणं सपरिवाराणं । आप आपणी अगमहिषोयैकरो सपरिवारे । साणं २ परिसाणं साणं २ व्युणियाणं साणं २ व्युणियाहिवर्धनं साणं २ आचरकदेवसाहस्योणं । आप आपणे परपदासहित आपआपणी अनौकैकरी आप आपणी अनौकाधिपते तिणैसहित आप आपणे आत्तरचकदेव सहयेकरो । आपणेसिच वद्वेणं जीवसियाणं दवाणंय देवोणय आह्वय जाव विहरंति । अनेरा वणां ज्योतिषांना देवताना देवोना अभिपतिपणां यावत् विवरैके । चंद्रमसुरो

दानि तथा सुखस्पर्शानि शुद्धस्पर्शानि वा ज्ञेयं प्राग्वत् यावत् ब्रह्मसहचरं ॥ ब्रह्मस्पर्शविद्रुमशुक्रशर्करादुधमर्केतुदुग्धांगारकाः कथंभूता इत्याह-तप्ततपनीयकनकवर्णा ईषद्वक्त्रवर्णाः तथा ये ग्रहा उक्तव्यतिरिक्ता ज्योतिष्के ज्योतिष्यकं चारं चरन्ति केतवो ये च गतिरतिता ये चाष्टा विंशतिविधा नक्षत्रा देवगणा स्ते सर्वेपि नानासंस्थानसंस्थिता येषु वक्ष्यामस्तप्ततपनीयकनकवर्णाः तारकाः पञ्चवर्णाः एते च सर्वेपि स्थितलंबया अवास्थितेजोशेषाका स्तथा ये चारिण्याररता स्ते अविश्राममण्डलगतिका स्तथा सर्वेपि प्रत्येकं नामांकेन स्य २ नामांकेन प्रकटितं चिह्नं

पङ्क्तिरूपा एत्यणं जोडसियाणं पञ्जत्ता २ णं ठाणा पं०, तिसुत्रिलीगस्स अस्सखेज्जिज्ञाणे तत्थणं बहवे जोडसिया देवा परिवसंति तं०-ब्रह्मसहचरासूरासुक्तासणिक्कराराज्जधूमकेतुदुग्धाङ्गारगा तत्ततवणि ज्ञाकणगवन्ना जेगहा जोडसंमि चारं चरन्ति केत्तयगतिरडया अठ्ठावीसडविहाय नस्सत्ता देवयगणा ना णासंठाणसंठियाउय पंचवन्ताउ तारयाउ उवियलेस्साचारिणी अविस्साममण्डलगइ पत्तयं णामंकपगमि

अत्यग्रतसुखं सग्राहं सञ्चोक्तं सुरुपदेवता देववायोऽथ अभिरूपं संमुखं प्रतिरूप । यत्थणं जोडसियाणं देवाणं पञ्जत्ताणं ठा० पं० । इहां ज्योतिषोना प यांता अपर्याप्ताना ठामकट्ठा । तिसंज्ञायस्य असंखिज्जिज्ञाणे । तौन योल्लोकेने असस्यतमेभागे इव । तत्थणवद्वे जोडसिया देवा परिवसंति तं० । तिहां चणज्योतिषोदेवता वसेहै तंकेहै । ब्रह्माह चदासूरा सुक्ता सणिक्कराराङ्गधूमकेतु वृहा अंगारका तत्ततवणिज्ज कणगवन्नाभा । इहस्यति चद्र मयं शुक्लं ग्रनेयर राइ धूमकेतु वृध मगल बले केहवाहै तत्त तपनीय कनकवर्णहै । जेयगहा जेयसमि चारचरन्ति कइचाइयगयरइया । जेगह ज्योतिषीचार चालेहै गतिकरी सुखमानेहै एहवा । अठ्ठावीसडविहाय नस्सत्त देवगणाओ नाणासंठाणसंठियाओ । २८ नस्सत्त आदिदेवताना आदिसमू द आकार अनेकसंस्थितहै । पंचवन्ताओ तारयाओ तेवसंमचारिणी । तारा पञ्चवर्णकरी अवास्थितहै तथा ते चाररतहै । अविश्रामामण्डल गस्पत्तयना मंकिंय पण्डियचिधमउडा मंइहउडा जाव पभासमाणा । ते विसामाविना मोडलानोयति फिर्ता प्रत्येकं २ छनामाङ्कित प्रकट मुकुट चिह्नहै जेइने

याहिबर्द्धनं साणं २ आयरस्कदेवसाहस्सीणं ज्योत्तिसिचयत्तुणं ज्योत्तिसियाणं देवाणय देवीणय ज्योहिबर्द्धनं जात्र
विहरंति चंदिमसूरियाय एत्थ दुवे ज्योत्तिसिंदा ज्योत्तिसियरायाणो परिवसंति माहिहिया जात्र पन्नासेमाणा ते
णं तत्थ साणं २ ज्योत्तिसियविमाणावासससहस्साणं चउत्तहं सामाणियसाहस्सीणं चउत्तहं ज्यग्गमाहिस्सीणं
सपरिवाराणं त्तिरहं परिसाणं सत्तहं ज्यणियाणं सत्तहं ज्यणियाहिबर्द्धनं सोलसहं ज्यायरस्कदेवसाहस्सी
णं ज्योत्तिसियाणं देवाणय देवीणय ज्योहिबर्द्धनं जात्र विहरंति । कहिणं जंतं ! वेमाणियाणं देवाणं पज्जत्ता २
णं ठाणा पं० १ कहिणं जंतं ! वेमाणियादेवा परिवसंति १ गं० ० ! इमीसे रयणप्यन्नाए पुढवीए वज्जसमरम

याय इत्यद्वे ज्योत्तिसिंदा ज्योत्तिसियायाणो परिवसंति । चन्द्रमा सूर्य एदेव इहां ज्योत्तियोदेवतारो राजपणी वसेहं । महच्छुट्टया जात्र पन्नासेमाणा ।
सहस्रिक यावत् प्रभासद्वितीयका । तेण तत्थसाणं ज्योत्तिसियविमाणावास सयसहस्साणं । ते त्तिहां आपणा ज्योत्तियोनाविमान साखागमेकरो । चउ
त्तहं सामाणियसाहस्सीणं चउत्तहं अन्नमहिस्सीणं सपरिवाराणं त्तिरहं परिसाणं सत्तहं ज्यणियाणं सत्तहं ज्यणियाहिबर्द्धनं सोलसहं ज्यायरस्क दे
वसाहस्सीणं ज्योत्तिसिचयत्तुणं ज्योत्तिसियाणं देवाणय देवीणय ज्योहिबर्द्धनं जात्र विहरंति । चार अन्नमहिस्सीवेकरो सपरिवारो नोत्तिपरिपदावेकरो ० चनो
वेकरो ० चनोत्तिपरिपदेकरो सोलैज्जार आत्तरचदेवेकरो अन्नराघणां ज्योत्तियोना देव देवीना अधिपतिपणे यावत् विचरे । कहिणं भते वेमाणियाणं
पज्जत्ता २ णं ठा० पं० । किहां हेमगवन् वेमातिक पर्वता तपर्याप्ताना ठामच्छा । कहिणं भते वेमाणियादेवा परिवसंति । किहां हेमगवन् विमान
वासो वसेहं । गोयमा इमीसे रयणप्यन्नाए पुढवीए वज्जसमरमणिल्लाभो भूमिभागाओ सत्तहं चंदम सूरस गच्छणस्सुत्ततारारुक्काणं । हेगीतम ण रत्त
प्रभावे णो समोरमणोक्क भूमिभागघी जंघो चन्द्र सूर्य गृहगण नत्त तारारूप घणां योजनना सेकहा । वज्जहिं ज्योत्तिसहस्सा वज्जहिं ज्योत्तिसयस
हस्सा वज्जहिं ज्योत्तियकोडीभो । घणां योजनना सेकहा घणां योजननो गतसहस्र साखे घणां योजननो कोडी । बहुगीभो ज्योत्तियकोडीकोडीभो सत्तहं

णिज्ज्ञाने त्रिमिन्नागानु उहं चंदिमसूरियगहनस्कृततारारूपाणं वज्रहं जौयणसयाइं वज्रहं जौयणसहस्सा
इं वज्रगानु जौयणकोफ्रीनु वज्रगानु जौयणकोफ्रीकोफ्रीनु उहं दूरं उप्पइत्ता एत्यणं सोहम्मीसाणसणकु
मारमाहिंदवंतलोगलंतगमहासुक्कसहस्सारअणयपाणयअणयअणयअणयअणयअणयअणयअणयअणयअणयअणय
याणं देवाणं चउरासीविमाणसयसहस्सा सत्ताणउईन्नवेसहस्सानु तेवीसं विमाणा हवंतीतिमस्कायं तेणं वि
माणा सव्वरयणामया अत्थ्या सरहा लछा घछा मछा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकरुच्छाया सप्पहा
ससिरीया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अन्निरुवा इत्यणं वेमाणियाणं देवाणं पज्जत्ताप
ज्जत्ताणं ठाणा पं० तिसुवि लोगस्स अस्संखेज्जइत्तागे तत्थणं वहवे वेमाणिया देवा परिवसंति तं०—साह

दूरं वप्पइत्ता । घणां याजननी कोहाकोडो जंथा उपाडो जाय । एत्यणं सोहम्मीसाणं सणकुमार माहेद्वंभलोय तातग महासुद्धस सहस्सार आणय
पाणय आरण अणय गेविल्ल अणुत्तरंम् । इहां सोधमं ईगान सनत्थीकार माहेद्व तत्तलोका लांतक महायुक्क सहस्सार आनत प्राणत आरण अणुत्तरं मे
वेयक ८ अणुत्तर ५ । एत्यणं वेमाणियाणं देवाणं चउरासीतिविमाणयावासयसहस्सा सत्ताणउद्यंयससक्तिवीस विमाणाहवंतीतिमस्काय । तिहां वेमा
निकदेवताना ८४ लाखविमान ऊपर सताणुहजार अन्नं वल्ले ते वीस एतलो विमाननीसत्था कहौछे वीतरागे कछो । तेणविमाणा सव्वरयणामया ।
तेविमान सर्व रत्तमयत्तै । अत्थ्या सपहा घट्टामग्ग नोरया निग्गंका निक्कंकरुच्छाया सप्पभा सक्खिरौया सउज्जोया पासादया दरसणिज्जा अभि
रुवा पहिरुवा । मत्त घठारा मटारा नोरजा निमंन निःपहु कचरानो प्राप्ति नथो प्रभासहित सुयो क उद्योतसांहुत मनप्रसन्नकारी कोयवायाय
अभिरूप प्रतिकप । एत्यणं वेमाणियाणं देवाणं पज्जत्ताणं २ ठा० पं० । इहां वेमानिकदेव पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठाम कछा । तिसुविलोयक अस्संखि
ज्जइत्तागे । तीन वीसलोकेने अस्सत्तातमेभागे । तत्थणं वहवे वेमाणिया देवाणं परिवसंति तं० । तिहां घणां वेमानिकदेवता वसेछे । सोहम्मीसाण स

मीसाणमणंकुमारमाहिंदवंजलीगलंतगमहासुक्कसहरसारच्यागायपाणयच्यारणञ्चुयगेवजागणुत्तरोववाइया
देवा तेंणं मिथमहिसवराहसीहलगलदुहुरहयगयवइनुयगस्वग्गउसन्नंकिविमिपागण्डियचिंयमउका पसठिल
वरसंउत्तिरीरुधारिणो वरकंठलुजोइयाणणा मउठदित्तिसिया रत्तात्ता पउमपहगोरा न्नांसया सुहवणगं
धेफासां उत्तमवैउत्तिणो पयरवत्थगंधमत्ताणलेवणधरा महिहिया महज्जुइया महायसा महाइला महणुजा
गा महासोस्का हारचिराइवचक्का कठगतुत्तियथंत्तियन्नुया चंगदकुंठलमठगंठंतलकस्सपीठधारी विचिंत

णं कुमार नहिद्वययोग लातग महासूक्त सहरसार आणय पाणय आरण अश्वया गंवलगाणुत्तरोववाऽया दवा । सौधर्मंगान सनत्नमारमाहेद्र प्रप्रा
 लोके लांतके महायुक्ते सहरार आनत प्राणत आरण अणुत येवेयके अमत्तरोपपातिक देवता समैहै । तेण मिग महिम वराह सीह छगना दादुर ह
 यगय भुयग खग उसभ कविहि पगहिय चिंयनरहा । तेहना विण कहैहै - खग महिय वराह सीह छग ददुर यत्र गज भुजग खड्डा सुपभ छोकडा
 ए १२ देउलो कना प्रधान चिन्ह । सठिल चरमउठ तीरोडधारणा वरकुंडल उखोत्राणणा । उनकना प्रधानमुकुट तीरोडमोड आभरण धर्या कुंडलेक
 री सद्योत जेहना । मउडदिसिरयारसाभा वठमण्डभग्नगोरासेयासुदवख गंध फामा । भुकटेकरी मस्तकरता पद्मनीपरे भौरदेह स्वत शुभवर्ण गंधस्व
 य । चतुसविडविणोपवरवत्तगंध मज्जालेकारेण । चतुसकडो विकर्षणा जेहनो प्रवरयस्त गंधमालाविलेपनना धरेणहार । मइहुडिया महायसा मडाण
 भागा महामुक्छा डारविरायवत्यां कछयतुडियथंभियभुया । मरुहिक महायशवन्त महाभागी मष्टासखी हारेकरी विराजसाने होवो कडां वहीरखा
 तिणेकरी यथै भुज । अगयकुंडलमगडपौठधारी विचिसहत्याभरण विचित्तनाला मंडल कषाणगमवर वत्थ परडिया । अंगदवांझाभरेणकुंडल तिणे
 करी कर्णपौठधारता विचिच आभरण धर्याहै विचिपमाला मुकुट कषाणमांकारक वत्थ पहिराहै । कषाणग पवरमसाणलेयया भासुरवोदोपलक्ष व
 णमालधरा । कषाणकारी विलेपनकोषाहै भासुरदेदोपमानवोदो प्रलंबमाला धारीहै । दिव्येणं गंधेणं दिव्येणं धणेणं दिव्येणं फासेणं दिव्येणं सवयणेणं

हत्यान्तरणा विचित्रमालामउलीकक्षाणपत्रवच्छपरिहिया कक्षाणगपत्रमक्षणलेवणा नासुरवोदीपलंजव
णमालधरा दिव्येण वन्तेण दिव्येण गंधेण दिव्येण फासेण दिव्येण संघयणेण दिव्येण संधाणेण दिव्याए इहीए
दिव्याए जुईए दिव्याए पन्नाए दिव्याए च्छायाए दिव्याए अच्चीए दिव्येण तेणं दिव्याए लेसाए वसदिसासु उ
ज्जोवमाणा पन्नासेमाणा तेणं तल्य साणं २ विमाणावाससयसहस्साणं साणं २ सामाणियसाहस्सीणं सा
णं २ तावत्तीसगाणं साणं २ लोगपालाणं साणं २ अंगमहिंसीणं सपरिवाराणं साणं २ परिसाणं साणं
२ अणियाणं साणं २ अणियाहिंवरूणं साणं २ आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च वल्लणं वेमाणियाणं

दिव्येणं मठाणेणं । दिव्यगंध दिव्यस्पर्शकरो दिव्यसंघयणेकरो दिव्यसंघातेकरो दिव्याएअण्ण दिव्याएअण्ण दिव्याएअ
ण्ण दिव्येणतेण दिव्याएलेखाए । दिव्यवृद्धिकरो दिव्यद्युतिकरो दिव्यपभायेकरो दिव्यकावयेकरो दिव्यांकरणेकरो दिव्यलेखकरो दिव्यलेखायेकरो ।
दसदिसायां ख्खोएमाणा पभांसेमाणा । दस दिव्येनदिव्ये उद्योतकरता प्रभाकांत विस्तारतायका । तेणं तल्यसाणं विमाण्यसाहस्सीणं साणं २ अन्नासिंइसीणं सपरिवारा
णं । आपआपणां विमानने लाखगमेकरो । साणं २ सामाणियसाहस्सीणं साणं २ तावत्तीसगाणं साणं २ लोगपालाणं साणं २ अंगमहिंसीणं सपरिवारा
णं । आपआपणां सामानिकसंघयेकरो आपआपणां आवयिंयकेकरो आपआपणां लोकपालेकरो आपआपणां अंगमहिंयायेकरो सपरिवारे । साणं २ परि
साणं साणं २ अणियाणं साणं २ अणियाहिंवरूणं साणं २ आयरक्खदेवसाहस्सीणं । आप आपणी परिवटायेकरो आप आपणी अन्नोलेकरो आप आप
णी अन्नोकासिपत्तेकरो आपआपणां आयरक्खकसंघयेकरो । अणोसिंचवहणं वेमाणियाणं देवाणं देवीण्य आह्वय पोरिदशं सामित्तं भट्टिसं मंदत्तरगतं ।
अनेपणां वैमानिकदेवता देवीना अधिपतिपणे पीराधिकपणी खामीयका वडांरधरतायका । आणांसरसेणावच कारेमाणा पालेमाणा । आणा दे
वरपणे पलावता करता पालता । मरुवाहयनइमीयवादेयतीतलतासुटिय पपमयंग पलुण्यवादेयरवेणं दिग्गवारं भोगभोगां भुंजनाणा विहरंति ।

देवाणं देवीण्य ञ्णहेवञ्चं पोरिवञ्चं सामित्तं जहित्तं महत्तरगतं अण्णाईसरसेणावञ्चं कारेमाणा पालेमाणा
महयाहनहगीयवाइयतंतीतलतालतुळियधणमुङ्गपळुप्पवाइयरेणं दिव्वाइं जोगजोगाइं जुंजमाणे त्रिह
रंति । कहिणं जेतं ! सोहमगदेवाणं पज्जतापज्जताणं ठाणा पं० कहिणं जेतं ! सोहमगदेवा परिवसंति ?
गो० ! जंबूद्वीपे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पनाए पुढवीए वज्जसमरमणिज्जाउं नूमिन्ना
गाउं उहुं चदिमसूरियगहगणनरुक्कताराणं वल्लणि जौयणसयाइं वल्लणि जौयणसहस्साइं वल्लणि जौयण
सयसहस्साइं वज्जगाउं जौयणकोफ्फाउं वज्जगाउं जौयणकोफ्फाउं उहुं दूरं उप्पइत्ता एत्थणं सोहममे ना
मं कप्पे पक्कत्ते पातीणपफ्फाणायते उदीणदाहिणविच्छिन्ने अरुचंदसंठाणसंठिए अञ्चिमालिन्नासरासिवन्ता

संठाणत्थ गीत वाजिच तंचो तल तात्त बुटत वणसुदङ्क पपट वाजिचने शब्देकरो दिव्य भोगवतायका विचरेछे । कहिणंभते सोहमगदेवाणं पज्जता २
णं ठाणा पं० । किदां हेभगवन् सौधमदेवताना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकक्षा । कहिणंभते सोहमगदेवा परिवसंति । किदां हेभगवन् सौधमदेवता व
सेछे । गोयमा जंबूद्वीपे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं । हेगीतम जंबूद्वीपनामा द्वीपेनेविसे मेरुपर्वत दक्षिणपारसे । इमीसे रयणप्पनाए पुढवीए वहुं स
मरमणिज्जाओ भूमिभागाओ । ए रत्नभापृथिवीयकौ घणे समारमणीक भूमिभागयकौ जंचा । चंदासूरियाओगहगणक्कत्तताराकवाणं । चन्द्र सू
गुहगण नचत्त तारा रूपथी । वल्लणि जौयणसयाइं जाव बहुगौओ जौयणकाडाकोढोओ उहुदूरं उप्पइत्ता । योजनतासय जांजगे यावत् घणंयोजननी
कोडाकोढो कंचा उपाहो जे । एत्थणसोहमनामकपं० । तिदां सौधमनामे कल्पकक्षा । पाईण पडोणाइं उदीणदाहिणविच्छिणे अरुचंठाण संठिया ।
पूर्व पथिमलोवां उत्तर दक्षिण पिहलेछे शब्दचंद्रसंस्थाने संस्थितेछे । अचौमालो भासिरासिवस्सामे । किरणनीयणो संहितके भासुरासने वर्णने तेजसरी
खोछे । असंखिज्जाओ जौयणकोढोओ असंखिज्जाओ जौयणकोडाकोढोओ । असंख्यातायोजननी कोढो असंख्यातायोजननी कोडा

ने अस्वेज्जानु जीयणकोलीन अस्वेज्जानु अयमविस्संनेण अस्वेज्जानु जीयण
 कोलीनो परिस्संनेण सहरयणामए अयमे जाव पपिस्सुवे तत्थणं सोहम्मगदेवाणं वत्तीसं विमाणावास
 सयसहस्सा हवन्तीतिमस्कायं तणं विमाणा सहरयणमया अय्या जाव पप्पिस्सुवा तेसिणं विमाणाणं व
 ज्जमज्जेसन्नाए पंचवक्कंसएया पं० तं—असोगवक्कंसए सतवन्तवक्कंसए चंपगवक्कंसए चूयवक्कंसए मज्जे तत्थ
 सोहम्मवक्कंसए तणं वक्कंसया सहरयणमया अय्या जाव पप्पिस्सुवा, एत्थणं सोहम्मगदेवाणं पज्जन्ता २ णं
 ठाणा पं०, तिसुवि लोगस्स अस्वेज्जानुजागे तत्थणं वहवे सोहम्मगदेवा परिवसन्ति महिहिंया जाव पंन्ना
 सेमाणा तणं तत्थ साणं २ विमाणावाससयसहस्साणं साणं २ अग्गमहिंसीणं साणं २ सामाणियसाहस्सी

कोली स्तवपणे पिप्पुलपणे । असंखिक्काओ जीयणकोलीनो परिस्संनेण पं० । असंख्यातायोजननो कोलीनो परिस्संनेण चोकर । सहरयणामए
 यत्थे जाव पप्पिस्सुवे । सर्वं रत्नमयकं निर्मलं जालं । तत्थणं सोहम्मगदेवाणं वत्तीसं विमाणावाससयसहस्साहवन्तीतिमस्कायं । तिहां सोधर्मना
 मदेवताना ३२ लाखविमान तीर्थकरे कछो । तेषंविमाणं सहरयणमया अय्या जाव पप्पिस्सुवा । ते विमाणा सर्वरत्नमयकं निर्मलं यावत्प्रतिरूप ।
 तेषं विमाणाणं बहुमज्जेसन्नाए पंचवक्कंसिया पं० । ते विमानने घणो मध्यदेशभागे मोटा पांच वतंयकविमान कहेछे—असोगवक्कंसए सयवक्क व० चंप
 गव० चूय व० मज्जे इत्य सोधम्मव० । अगोक्कवतंगक सत्तपणं व० चम्पक व० चूतवतंगक विचै इहां सोधमावतंगक ५ । तेषंवडिंसिया सहरयणामया
 अय्या जाव पप्पिस्सुवा । ते वतंगकविमान सर्वं रत्नमय निर्मलं यावत् तेहने तुल वीकोरूपनथी । एत्थणं सोहम्मग देवाणं पज्जन्ता २ ठाणा पं० । इहां
 सोधर्मदेवताना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकछा । तिसुविज्जाइभागे । तीन बालोकेने असंख्यातमेभागे । तत्थणं वहवे सोहम्मगदेवाण
 परिवसन्ति । तिहां घणां सोधर्मदेवता वसेछे । महहुंइया जाव पभासेमाणे । महर्पिक यावत् प्रभासहित । तेषं तत्थ साण २ विमाणावाससयसहस्सा

कृतु इति ॥ शतं कृतानां प्रतिमानाम् त्रिग्रहविज्ञेयाणां श्रमणीपासकपञ्चमप्रतिमाकूपाणां वा कार्तिकश्रेष्ठिनवापेक्षया यस्या सौ शतकृतुः ॥ सहस्रसकल इति ॥ सहस्रसकलं यस्या सौ सहस्राद्याः षट्सहस्रं हि किलमंत्रिणां पञ्चशतानि सन्ति तदीयानां चाक्ष्णा मिन्द्रयोजनव्याकृततया इन्द्रसंघित्वेन विद्यमानात् सहास्रसकलनिद्रस्य ॥ भयव इति ॥ मयामहमिषा स्तो यस्य यज्ञो सन्ति समयधाम् तथा पाको नाम बलवान् रिपुः स शिष्यते निराक्रियते येन सः पाकगासनः ॥ अरयंवरवत्यधरे ॥ अरजांसि रजो रहितानि स्वल्बतया श्रंभराणि वस्त्राणि धारयतीति अंवरवस्त्रधरः ॥ आलङ्घयमालमङ्ग इति ॥ माला य मुकुटं मालामुकुटं मालागित माविदं मालामुकुटं येन स आलङ्गितमालामुकुटं ॥ नवहेमचारुविषत्तचंचलकुण्डलविलिहिज्जमागंगं ॥ नवमिय अत्युत्कटचारुवर्णतया प्रत्यग्रमिय हेम यत्र ते नवहेमनी नवहेमस्यां चारुचित्राभ्यां चंचलाभ्यां कुण्डलाभ्यां विलिख्यमानां गङ्गा यस्य स तथा स

णं एवं जहेन उहियाणं तहेव एतेसिपि नाणियहं जाव आयरस्कदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बल्लणं सोह
ग्गकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाणं देवीणय आहेवञ्चं पोरेवञ्चं जाव विहरति । सक्को इत्य देविदे देव
राया परिवसइ वज्जपाणी पुरंदरे सयक्कउ सहस्सकं मघवं पाकसासणे दाहिणहुलोगाहिबइवह्नीसविमा
णवासयसहस्साहिबइ एरावणवाहणे सुरिंदे अरयंवरवत्यधरे आलङ्घयमालमङ्गं नवहेमचारुचित्रचंचल

यं सो २ सामापियसाहस्योणं एवं जहेय आहियाणं तहेव एतेसिपि भाणि० । ते इहां आपआपणं विमानना लाखगमे करो आपआपणं सामानि
कसइयकरी रम जिन ओधनेविपे कळो तिम सब इहां कहिवा । जाव आयरस्कदेवसाहस्योणं अणोसिचवइणं साहग्गकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाण
य देवीणय आहेवञ्चं पोरेवञ्चं जाव विहरति । वायव आलरसकगां सहय अनेराविणं सोधमं कल्पनावासो वेमानिक अनेक देवता देवोमा अधिपतिपणे
यावत् विवरै । सक इत्य देविदे देवरायाणो परिवसंति । मक्क तिहां देवतारा राजादेवेन्द्र वसेक्कं वज्जपाणी पुरंदरे सयक्कउसइअल्ले । वल्लेकरी पुरंदर अ
सुरेवअकरविदरै ते गतकतु कार्तिकसेठभे सोवार प्रतिमा यइ सहयवेवधणीं सइयाव । भवव पाकसासणे दाहणउट्ठोगाहिबइ वसीवविमाणा

वाससयमहस्त्रादिवर्ष । मन्वन्ती पाकशामन देवताना वस्यन्तीना दक्षिणां लोकाधिपति २२ लाखाविमाननाधनौ । ऐरावणवाहनमरेदे अरयंश्चरवत्य
धरे । ऐरावण वाहनत्वे जैहने मरेदे रजविना गगनपरे निर्मलवस्त्राधारी । आलङ्घ्यमालमण्डं नवहेमवाराविमलचंचल कुंडल विलहिल्लमाणगद्वे । वाय्या
छे कठमकुट नवा डमनाचान् विधिव कुण्डलेकरी विलसमान गल्लखलछे जे इन्द्रना । महियुटिए लाव पभसमाणे । मङ्गद्विश यावत् संपेडज्जालो कर
ता । तत्त्व बत्तीसा ७ विमाणवासासयसहरसाण चडरासीए सामानिय साहसोणं तायत्तीसाण चउगहं लोणपासाण अङ्गह प्रणमहिंसोणं
सपरिवाराण । तिहां २२ लाखाविमाननो स्वामो ८४ सहस्र सामानिकेकरी प्रायत्रियक पूजनीकदेवतावे करो ४ लाकपासे ८ अग्रमहिंपोयेकरी सपरि
रिमि एं ससयहं अणियाण सत्तए अणियादिवरण । तीन परपट्टाये ७ अनांककरो ७ अनांजाधिपतेकरो । चउगह चउरासोणं आयरकड
संज्ञा साद्वयकण्ठवासीणं वेमाणियाणं देवाण्य देवीण्य आदेवस ज्ञान विहरद । चारिणिगेने ८४ हजार अ. तराप्रोक्तकरी अने

नत्कुमारकल्पे-सपक्षं सपदिदिसंति ॥ समानाः पक्षाः पूर्वोपरदक्षिणोत्तररूपाः पार्श्वौ यस्मिन् दूरम् त्यतने तत्सपक्षं समानस्य धर्मादिषु चेति स
मानस्य सन्नावः ॥ सपदिदिसंति ॥ समानाः प्रतिदिशो विदिशो यत्र तत्सप्रतिदिक् सामानिकसंयहणिकाया-चतुरासीदित्यादि ॥ सौधमैद्रस्य चतुर
शीतिसामानिकसहस्राणि ज्ञानैन्द्रस्या शीतिः सनत्कुमारस्य द्वासप्ततिः माहेंद्रदेवराजस्य सप्ततिः ब्रह्मलोकैन्द्रस्य पष्ठिः लांतकैन्द्रस्य पंचाशत् महा
शुकैन्द्रस्य चत्वारिंशत् सहस्रारैन्द्रस्य त्रिंशत् आनतमाणेतैन्द्रस्य दशसामानिकसहस्राणि ॥ अवतंसकाशतिरेशोर्नोक्ताइति दुरवयोषा स्वतो विने

कुंजलविलिहज्जमाणगंठे महिहिण् जाव पञ्चासेमाणे सेणं तस्य वत्तीसाए विमाणवाससयसहस्साणं चउरा
सीए सामाणियसाहस्सीणं तावत्तीसाए तावत्तीसगणं चउरहं लोमपालाणं झुठरहं झुग्गमहिंसीणं सपरि
याराणं तिरहं परिसाणं सत्तरहं झुणियाणं सत्तरहं चउरहं चउरासीणं झुयारस्कदेवसाह
स्सीणं झुत्तंसिं च वल्लणं सोहम्मकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाणय देवीणय झुहिवच्चं पोरेवच्चं कुञ्जमाणे

वाससयसहस्रादिवर्गः । मघनी पाकयासन देवताना वस्यकौना दक्षिणां लोकाधिपति इह ताखविमाननोधणौ । ऐरावणवाहनं मेरेदे अरयं वरदत्य
धरे । ऐरावण वाहनं जैठने सरेद्र रजविना गगनपरे निमंजवस्त्रधारौ । आलंयमानमठं नवहेमचारुचित्तचंचल कुंडल विलिहज्जमाणगंठे । थाप्या
कै रुड मंजुट नवा हेमनाचान् विविच कुण्डलेकरो विलपमान गल्लस्यल्ले जे इन्दुना । महिडुटिण जाव पञ्चासेमाणे । महिडिक् यावत् सवेरज्जवालो कर
तो । तस्य वत्तीसाण विमाणवासमयसहस्साण चउरासीए सामाणिय माहस्सीणं तावत्तीसाए तावत्तीसगण चउरहं लोमपालाण झुठरहं झुग्गमहिंसीणं
सपरिवाराण । तिहा इर ताखविमाननो स्वाभो ८४ सवय सामानिकेकरो धायविगक पूज्जोकेदेवतावे करो ४ लाकपाले ८ अगमहिंपोवेकरो सप्परि
रे । तेष ८ रमाणं सत्तरहं अणियाण सत्तरहं अणियादिवर्गं । तौन परपदेवे ७ अनांकेकरो ७ अनांकाधिपतेकरो । चउरह चउरासीणं आयरत्त
सहस्र सोदमकप्पयासीणं वेमाणियाणं देवाणय देवीणय आहिवच्च जाव विहरद । चारिदिग्गेने ८४ इन्दार अत्तरत्तजेकरो अने

कतुइति ॥ शतं कृतनां प्रतिमानाम त्रिग्रहविशेषाणां श्रमणीपासकपञ्चमप्रतिमाकूपाणां वा कार्सिकेष्टिजवापेक्षया यस्या सीशतकृतुः ॥ सहस्रस्यस्ते
 इति ॥ सहस्रमक्ष्णां यस्या सी सहस्राक्षः इन्द्रस्य हि किलमंत्रिणां पञ्चशतानि सन्ति तदीयानां बाह्या मिन्द्रप्रयोजनव्यावृत्ततया इन्द्रसंयचित्वमिव
 तृणात् सहस्राक्षत्वनिद्रस्य ॥ मघवंइति ॥ मघामहाभेया स्ते यस्य यदो सन्ति समचवान् तथा पाको नाम बलवान् रिपुः स क्षियते निराक्रियते येन सः
 पाकशान्तः ॥ अरयंवरवत्यधरे ॥ अरजांसि रजोरहितानि स्वच्छतया श्रवराणि वच्छाणि धारयतीति श्रवयस्त्वधरः ॥ आलइयमालमउठेइति ॥ माला
 च मुकुटय मालामुकुट मालागित भाविदं मालामुकुटं येन स आलगितमालामुकुटं ॥ नवहेमचारुवित्तचंचलकुण्डलविलिहिज्जमाणगंठे ॥ नवभिज
 शसुकुटवारुवर्णतया प्रत्यग्रभिज हेम यत्र ते नवहेमनी नवहेमभ्यां चंचलाभ्यां कुण्डलाभ्यां विलिख्यमानां गंठो यस्य स तथा स

णं एवं जहेव उहियाणं तहेव एतेसिंपि ज्ञाणियच्चं जाव अयस्सदेवसाहस्सीणं अण्णत्तसिं च वल्लणं सीह
 अगकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाणं देवीणय अहेवच्चं पोरेवच्चं जाव विहरति । सक्को इत्य देविदे देव
 राया परिवसइ वज्जपाणी पुरंदरे सयक्कउ सहस्सस्सके मघवं पाकसासणे दाहिणहुलोगाहिबईवत्तीसविमा
 णवाससयसहस्साहिबई एरावणवाहणे सुरिंदे अरयंवरवत्यधरे अलइयमालमउठे नवहेमचारुवित्तचंचल

णं माणं २ सामान्यिसाहस्योय एवं जहेव आदियाणं तहेव एएसिंपि भाविं । ते इहां आपआपणां विमानता साखगमे करो आपआपणां सामानि
 कसहवकरी इम जिन आधनवपे कक्षी तिम सर्व इहां कहिवो । जाव आयरस्सदेवसाहस्सीणं अण्णत्तसिंपि वल्लणं सीहअगकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाण
 य देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं जाव विहरति । यावत् आत्तरसकणां सइय अनरावणां सीधमकल्पनावासी वेमानिक अनेक देवता देवीनो अधिपतिपणे
 यावत् विवरे । सक्को इत्य देविदे देवरायाणी परिवसंति । अक तिहां देवतारी राजादेवेन्द्र वसेक्कं वज्जपाणी पुरंदरे सयक्कसहस्सत्ते । वल्लेकरी पुरंदर अ
 सुरेअत्तरविदारै ते गतकतु कार्सिकसेठभने सोवार प्रतिमा यूर सहवनेवधणी सउयाव । मघवं पाकसासणे दाहणकुडलोगादिबइ वत्तीसविमाणा

नक्षुमारकल्पे-सपक्ले सपिडिदिसंति ॥ समानाः पक्षाः पूर्वापरदक्षिणोत्तररूपाः पाश्चां यस्मिन् दूरम् स्पतने तत्सपक्षं समानस्य घर्मादिषु चोत्तिसमानस्य सजावः ॥ सपक्रिदिसंति ॥ समानाः प्रतिदिशो विदिशो यत्र तत्सप्रतिदिक् सामानिकसंगहणिगाथा-चतरासीइत्यादि ॥ सौधर्मद्रस्य चतुरशीतिवामानिकसहस्त्राणि वंशानेद्रस्या शीतिः सनत्कुमारस्य द्वासप्ततिः माहेंद्रदेवराजस्य सप्ततिः ब्रह्मलोकेंद्रस्य पष्टिः लांतकेंद्रस्य पंचाज्ञात् महाशुकेंद्रस्य चत्वारिंशत् सहस्त्रारेंद्रस्य त्रिंशत् आनतप्राणैर्द्रस्य दशसामानिकसहस्त्राणि ॥ श्रवतंसकाश्यातिरेज्ञोनोकाङ्गति दुरवधोधा स्ततां विने

कुंकुलविलिहिल्लिमाणगंठे महिहिण्ण जात्र पन्नासेमाणे सेणं तत्थ वत्तीसाण्ण विमाणवाससयसहस्साणं चउरा
सीण्ण सामाणियसाहस्सीणं तावत्तीसाण्ण तावत्तीसगाणं चउरहं लग्गपाळाणं अउरहं अगमहिस्सीणं सपरि
वाराणं तिण्णं परिसाणं सत्तरहं अणियाणं सत्तरहं अणियाहिवड्ढणं चउरहं चउरासीणं अणियरक्खदेवसाह
स्सीणं अण्णिसं च वत्तणं सोहम्मकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाण्य देवाण्य अहेवच्चं पोरेवच्चं कुल्लमाणे

वाससयमहस्त्राद्विदः । मयकोपाकशामनदेवताना वस्यसौना दधिषादं सोक्षाधिपति ३२ लाखविमाननाधरो । ऐरावणवाचंमरेदे अरयंदरधत्य
धरे । ऐरावण वाहनत्वे जैशने मरेदे रजविना गगनपरे निमलवस्त्रधारौ । आलंयमानमचंड नवहेमषारुचिसंचल कुंडल विलिङ्गिज्जमाणगले । धाप्या
कै कडमकुंठ नवा हंमनाचाह विविच कुण्डलेकरी विलपमान गल्लखल्लै जे इन्द्रना । महियुटिण जाव पंभासमाणे । मद्धिश्च यावत् सर्वसज्जवालो कर
तो । तत्य वत्तीसाण विमाणावासमवसहरसाण चउरासीए सामाणिय माहरसौणं तागत्तीसाए तागत्तीसगाण चउरहं लोंगपासाण अट्टगह प्रगमहिंसोणं
सपरिवाराण । तिहां ३२ लाखविमाननो स्वामो ८४ सहय सामानिकेकरी धायचिंगक पूजनीकदेवताये करो ४ लाकपाले ८ अगमहिंसोयेकरी सपरि
दारे । तिण्डं परिमाणं सत्तण्डं अणियाण सत्तण्डं अणियाद्विदण । तौन परपदाये ० अनोक्ककरो ० अनांक्षाधिपतेकरो । चउरह चउरासोणं आयरत्त
देवसाहरसाण अणोसिंच वट्टण सोद्वक्कण्णयासीणं वेमाणियाणं देवाणय देवोणय आहवस जाव विहरद । चारट्ठिणिने ८४ इज्जार अत्तरघोक्ककरो अने.

जात्र विहरति । कहिणं जंते ! ईसाणगदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पं० ? कहिणं जंते ! ईसाणगदेवा परिव
 संति ? गो० ! जंबूदीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं इमीमे रयणप्पन्नाए पुढचीए वज्जसमरमणिज्जाउं नू
 मिन्नागाउं उहुं चंदिमसूरियगहगणनकत्तताराहूवाणं वत्तइं जोयणसयाइं वत्तइं जोयणसहस्साइं जात्र
 उप्पडत्ता एत्थणं ईसाणे नामं कप्पे पत्तत्ते, पाईणपळीगायए उदीणदाहिणविच्छिन्ने एवं जहा सोहम्मे जात्र
 पळिसुरूवे तत्थणं ईसाणगदंवाणं झुठात्रीसं विमाणावाससयसहस्सा हवंतीति मरुकायं तेणं विमाणा सत्तु
 रयणामया जात्र पळिहूवा, तंसिणं वज्जमज्जदेसन्नाए पंच वळंसगा पणत्ता, झुंक्कवळंसए फलिहवळंसए

१। पणं भीधमं कल्पनायासो वैसानिकदेवता देवी अधिपतिपणी यावत् विचरे । कहिणंभते ईसाणगदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठा० पं० । किहां हेमगवन्
 ईशान दयनीकना पर्वता चपर्याप्ताना ठामकक्षा । कहिणंभते ईसाणगदेवा परिवसंति । किहां हेमगवन् ईशानदेवता वसेहे । गायमा जयदीय २
 मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं । हेमोतम जंबूदीपनामादीप विषे मेरुपर्वत उत्तरपासे । इमौसरयणभाए पुढचीए वज्जसमरमणिज्जाओ भूमिभागानो । ए र
 जमभापय्योघी घर्णी संमोरमणौक भूमभागणको । उहुटं चंदिमसूरियगहगणनकत्तताराहूवा ण । कंचा चष्ट मयं गृहगण नत्तन्न ताराहूपथी । वज्जणि
 जोयणसयाइं जात्र उप्पडत्ता । घर्णी योजनना सौकडासु यावत् कोडाकोछो अवा जाय जे । एत्थणं ईसाणनामं कणे पं० । इहां ईशाननामा कल्पकक्षा ।
 पाईणपळिगायए उदीणदाहिणविच्छिणं एवं जहा सोइयो जात्र पळिहूवे । पूर्व पथिम लांयौकै उत्तरदक्षिणे विह्वलाकै इम जिम सोधर्मनोपर यावत्
 पतिरूप । तत्थणं ईसाणगदेवाणं अट्टावोसविमाणावाममयमहरमा हवंदित्तिमकळायं । तिहां इशान देवतारा २८ लाखविमाननो संख्याकही तोयेंकरे
 कक्षा । तेणं विमाणासत्तरयणामया जात्र पळिहूवा । ते विमानं सर्वं रत्नमय यावत् प्रतिरूप । तेषिणं वज्जमज्जदेसभाए पंचवळंसप पंतं० । तिहां घर्णी
 मध्य विचाले ५ भवतंगकविमानहे ते कसुहे—अकथडिमण फलिहव० रयणव० जायदूवव० । अकवतयक पूव दक्षिणे स्फुटिकावतंशज रत्नावतंशक याव

यजनानुग्रहायै धीवित्तयेन मूलत आरत्यो पदव्यये-सीधर्म पूर्वस्यां अशोकायतंसको दक्षिणतः सप्तपर्णायतंसकः पयिमायां चंपकायतंसकः उत्तरतः
यूतायतंसकः मध्ये सीधर्मायतंसकः एव पूर्वोदिकमेण ईशाने अङ्गायतंसकः स्फाटिकायतंसको रत्नायतंसकः मध्ये ईशानायतंसकः
सनरज्जुमारे अशोकः सप्तपर्णः चंपकः चूतः सनरज्जुमारायतंसकः माहेन्द्र अङ्गुष्ठाटिकरत्नायतंसकः माहेन्द्र अङ्गुष्ठाटिकरत्नायतंसकाः अशोकसप्तपर्णचंपकचूत

रयणचक्रं स ए जात्र सखवचक्रं स ए मज्जे इत्य ईसाणवचक्रं स ए, तेषां वचनं स या सञ्चरयणामया जात्र पङ्क्तिश्च
एत्यणं ईसाणाणं देवाणं पञ्चज्ञापञ्चज्ञाणं ठाणा पणत्ता । तिसुवि लोगस्स अस्संखेज्जइज्जाणि संसं जहा सो
हम्मगदेवाणं जात्र विहरंति, ईसाणं अत्य देविदे देवराया परिवसति सूतपाणी वसन्तवाहणे उत्तरहुलो
गाहिवई अष्टावीसविमाणावाससयसहस्साहिवई अरयंवरवत्यधरे संसं जहा सक्कस्स जात्र पञ्चासमाणे
तस्य अष्टावीसा ए विमाणावाससयसहस्साणं असीती ए सामाणियसाहस्सीणं तावतीसा ए तावतीसगाणं

मूर्त्तपवातगक । मज्जे इत्य ईसाणवचक्रं स ए जात्र सखवचक्रं स ए मज्जे इत्य ईसाणवचक्रं स ए जात्र पङ्क्तिश्च
एत्यणं ईसाणाणं देवाणं पञ्चज्ञापञ्चज्ञाणं ठाणा पणत्ता । तिसुवि लोगस्स अस्संखेज्जइज्जाणि संसं जहा सो
हम्मगदेवाणं जात्र विहरंति, ईसाणं अत्य देविदे देवराया परिवसति सूतपाणी वसन्तवाहणे उत्तरहुलो
गाहिवई अष्टावीसविमाणावाससयसहस्साहिवई अरयंवरवत्यधरे संसं जहा सक्कस्स जात्र पञ्चासमाणे
तस्य अष्टावीसा ए विमाणावाससयसहस्साणं असीती ए सामाणियसाहस्सीणं तावतीसा ए तावतीसगाणं

ब्रह्मलोकावतंसकाः लांतके अद्भुत्फटिकरज्जुतारूपलांतकावतंसकाः महाज्ञुक्ते अशोकसप्तपर्णचंपकचूतमहाशुक्रावतंसकाः सहस्रारे अद्भुत्फटिकरज्जु

चउरहं लीगपालाणं अउरहं अगमहिंसीणं सपरिवाराणं तिरहं परिसाणं सत्तरहं अणियाणं सत्तरहं अणि
याहिंवईणं चउरहं असीतीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च वत्तणं ईसाणकप्पवासीणं वेमाणियाणं
देवाण य देवीण य अहिंवच्चं पोरेवच्चं कुवमाणे जाव विहरइ, कहिणं भंतं ! सणकुमारदेवाणं पज्जत्ता
पज्जत्ताणं ठाणा पयत्ता । कहिणं भंतं ! सणकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! सोहम्मस्स कप्पस्स उ
प्पिं सपरिकं सपप्पिदिसिं वज्जइं जोयणाइं वत्तइं जोयणसयाइं वत्तइं जोयणसयसहस्साइं वज्जगानुं जोय
णकोप्पिनुं वज्जगानुं जोयणकोप्पिकोप्पिनुं उहुं दूरं उप्पइत्ता तत्थणं सणकुमारे नामं कप्पे पणत्ते । पाईण

प्रायेकरी सपरिवारेकरी । तिरहं परिसाणं सत्तरहं अणियाणं सत्तरहं असइंणं । तोन परिपदाकरी ७ अनौक्तेकरी ७ अनौक्ता
धिपत्तेकरी ४ दिशि । चउरासी आयरक्खदेवसाहस्सीणं । ८४ आमारचक्केने सहस्रेकरी । अणुसिचवइणं ईसाणकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाणय देवीण
य अहिंवच्चं कुवमाणे विहरति । अनेरा घणांइंशान कत्थवासी वेमानिक देवदेवीनो अधिपतिपणीं करतो यावत् विचरे । कहिणंभंते सणकुमाराणं दे
वाण पज्जत्ता रे णं ठाणा पं० । किंइं हेभगवन् सनत्कुमारदेवतारा पर्यात्ता अपर्यात्ताना ठामकत्था । कहिणंभंते सणकुमारदेवा परिवसंति । किंइं
हेभगवन् सनत्कुमारदेवता वसेक्के । गोयमा सोहम्मस्स कप्पस्स उप्पिंसपत्तिं सपप्पिदिसिं वत्तइं जायणसयाइं । हेगौतम सोधर्मकत्थने ऊपरसपत्तपणे
सघत्तादिशि वणायाजननासैकडा । वट्टहिं जायणसयसहस्साइं वट्टगीआ जायणकांडीआ वट्टगीआ जायणकांडाकांडांयो । घणां याजनना सइय व
णां याजनना सइयलाख घणीयाजननो कोडो घणी याजननो कांडाकोडो । छट्टट्टूरं उप्पइत्ता । जंषा उपाहीने जाय । पत्थणं सणकुमारिणामे कप्प
पं० । इहां सनत्कुमारनामे कत्थकत्था । पाईणपडोणायण उदोणदाहिणविज्ज्खे लइा सोहम्म जाय पडिखुवे । पर्व पायिम सांवा उत्तरदांसण पिहु

पद्मिण्याय उदीणदाहिणविच्छिन्ने जहा सोहम्मे कप्पे जाव पफ़िरुवे, तत्थणं सणकुमाराणं देवाणं वारस विमाणावाससयसहस्सा हवन्तीति मस्कायं, तणं विमाणा सधरयणामया जाव पफ़िरुवा तसिणं विमाणा णं वज्जमज्जदेसनागे पंच वरुंसगा पणत्ता, तंजहा-असोगवरुंसए संत्तयणवरुंसए चंपगवरुंसए चूयवरुंसए सए मज्जे जल्य सणकुमारवरुंसए तेणं वरुंसया सधरयणामया अच्चा जाव पफ़िरुवा तत्थणं सणकुमारदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पणत्ता । तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइत्तागे तत्थणं वहवे सणकुमारा देवा परिवसन्ति महिद्धिया जाव पन्नासेमाणा विहरन्ति नवरं अगमहिसीनु णत्थिय, सणकुमारे इत्थ्य देविंदे देवराया परिवसइ अरयंवरयत्थधरे सेसं जहा सक्तास्स सेणं तत्थ वारसरहं विमाणावाससयसहस्साणं वाव

लो जिम मोधर्म यावत् प्रतिरूप । एत्थणं सणकुमाराणं देवाणं वारसविमाणावाससयसहस्साहवन्तीतिमस्कायं । इहां सनत्कुमारना १२ लाख विमानकक्षा तीर्थक्षरे । तेणं विमाणा सधरयणामया जाव पडिरुवा । ते विमान सर्व रतनमय यावत् प्रतिरूपने । तेसिण विमाणाणं बहुमज्जदेसभाए पंचवडेसया पं० तं० । विमानने सणी मध्येदेगभाग विचाले पल्ल अवतगकाविमान कक्षा । असोगवरुंसए सयवणव० चंपकय व० चूय व० मज्जे इत्थे सणकुमार व० तेणं वरुंसगा सधरयणामया अच्चा जाव पडिरुवा । अयोक्कवतंगक पूवे णत्तपणं वतंगक दक्षिणे चपकवतंगक पश्चिमे चूतवतंगक उत्तरे विचै सनत्कुमारावतंगक ते वतंगक सर्व रतनमय यावत् प्रतिरूप । एत्थणं सणकुमाराणं देवाणं पज्जत्ताणं ठाणा पं० । इहां सनत्कुमारना पर्याप्ताअपर्याप्ता ना ठामकक्षा । तिसुविलोगस्स असंखिज्जइत्तागे । तीन वालोक्कने असेत्थातमेभाग हवे । तत्थणं वहवे सणकुमारादेवा परिवसन्ति । तिहां घणां सनत्कुमारदेवता वसेक्के । मइइट्टिया जाव पमासेमाणा विहरन्ति । महत्थि क यावत् प्रभासहित विचरेक्के । नवरं अगमहिसीओ नत्थिय सणकुमारे इत्थ्य देविंदे देवरावाणो परिवसति । एतलोविगेष अगमहिपौ नवो सनत्कुमारनामे देवेद्रे देवराजा वसेक्के । अरयंवरयत्थधरे सेसं जहा सकस्य । रजरहित गगन

जातरूपसद्वस्त्रारवतंसकाः प्राणते अशोकसमपणचंपकचूतप्राणावतंसकाः अच्युते अङ्गुस्फटिकरत्नजातरूपाच्युता अवतंसका इति ॥ श्रैवेयकसूत्रे-सम
न्दियाइति ॥ समा ऋद्धि र्येपांते समद्वेकाः एवं ॥ समुज्जुहया इत्याद्यपि ज्ञावनीयं ॥ अणिंदाइति ॥ नविद्यते इन्द्रो ऽधिपति र्येपांते अग्निन्द्राः ॥
अपेस्वा इति ॥ नविद्यते मेघः प्रेयस्वं येपांते अप्रेषाः ॥ अपुरोहिद्याइति ॥ नविद्यते पुरोहितः शान्तिकर्मकारी येपामशांतेरजाधात् ते अपुरोहिताः

हरीए सामाणियसाहस्सीणं सेसं जहा सकस्स अगमहि सोवज्जं नवरं चउरहं वावत्तरीणं आयरकदेवसाह
स्सीणं जाव त्रिहरइ । कहिणं जंते ! माहिदाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पखत्ता । कहिणं जंते !
माहिदगा देवा परिवसंति ? गोयमा ! ईसाणस्स कप्पस्स उप्पिं सपक्किं सपक्किदिंसि वज्जइं जोयणाइं जाव
वज्जगात्तं जोयणकोप्फाकोप्फीत्तं उहुं दूरं उप्पइत्ता तत्थणं माहिंदे नामं कप्पे पखत्ते, पाइणपप्पीणायए जाव
एवं जहेव सणकुमारं, नवरं अठ त्रिमाणावाससयसहस्सा वज्जसया जहा ईसाणं नवरं मज्जे तत्थ माहिं

वत्तवत्तधारी येपजिम शकनीपरे । सणत्थलवारसव्वविमाणावाससयसहस्साणं । तिहा १२ लाखविमानेकरी । वावत्तरीए सामानिकदेवसाहस्सीणं जहा स
करस अगमहि सीणं वज्जा । ७२ सामानिकसहस्रेकरी जिम शकनीपरे अगमहि पी विना । नवरं चउरहं वावत्तरीण आयरदद्वदेवसाहस्सीणं जाव वि
हरंति । एतलोविशेष ७२ चौगुणाकरता २२० आत्तरंणक सहस्रेकरी यायत्त विचरे । कहिणं भंते माहेददेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं० । किहां हे भगवन्
माहेददेव पर्यात्ता अपर्यात्ताना ठाम कक्षा । कहिणं भंते माहिंददेवा परिवसंति । किहां हे भगवन् माहेददेवता वरंहे । गोयमा ईसाणस्स कायरस
वरिपं सपक्किं सपक्किदिंसि वज्जहिं जावपाइ जाव वहुगोथा जोयणकोप्फाकोप्फीत्ता उहुं दूरं उप्पइत्ता । हे गौतम ईशानकत्थने जपर पत्तसदित सब
दिगियिषे चणा योजनना वावत्त चणा योजननी कोप्फाकोप्फो जंवेजाय । यत्थणं माहेदनामे काये यं० । तिवारे तिहां माहेदनामे देवलोके क्खो । पा
इं ण पडिणायए सदोण दाहिणविक्किणे । पूर्व दिसानांथो उत्तर दिक्खि पिइत्ता । एवं जइए सणकुमारं नवरं अठविमाणावाससयसहस्सा । इमं सर्वं

दवन्नंसए एवं सेसं जहा सणकुमारदेवाणं जाव विहरंति माहिंदे इत्य देविंदे देवराया परिवसइ अरयंवर वलयधरे एवं जहा सणकुमारे जाव विहरइ नवरं अउरहं विमाणावाससयसहस्साण सत्तरीए सामाणिय साहस्सीणं चउरहं सत्तरीणं आयरकदेवसाहस्सीणं जाव विहरइ । कहिणं जंते ! वन्नलोगदेवाणं पज्जा त्ता २ णं ठाणा पत्तत्ता । कहिणं जंते ! वन्नलोगा देवा परिवसंति ? गो० ! सणकुमारमाहिंदाणं कप्पा णं उप्पिं सपरिकं सपत्तिदिसिं बल्लइ जायणाइ जाव उप्पइत्ता एत्थणं वन्नलोए नामं कप्पे पाइणपत्तीणा यंत उदीणदाहिणविच्चिन्ने पत्तिपुत्तचंदसंठाणसंठिए अच्चिमालीनासरासिप्पत्ते अत्रसेसं जहा सणकुमा

किम् सनत्कुमार एतलोविगेषः । अहविभाषांभांसमयसहस्रः । वहेमिया जहा इसाणे नवर मज्जः । ८ लावविमान कक्षा वतंगज जिम ईगाने कक्षा । ७ तलोविगेष विचै । इत्य माहेद्वंडिसए एवं सेसं जहां सणकुमारदेवाण जाय विहरंति । इहा माहेद्वतंगक इम गेपजिम सनत्कुमारदेवता यावत् वि चरैल्ले । माहिदि इत्य देविदे देवरायाणां परिवसंति । माहेद्वनामे देवदे देवराजा वमैल्ले । अयवरवत्थपरे एवं जहा सणकुमारराजा विहरंति । राजर हित गंगनवत् वल्लधारो इम सर्व जिम सनत्कुमार यावत् विचरै । नवरं अद्वयहं विभाषायाससयसहस्राणं सत्तार सामानियसाहस्रीणं चसयहं मि सरीण आचरकदेवसाहस्रीणं जाय विहरंति । एतलोविगेष ८ लाख विमानेकरो ७० सट्टय सामानिके ७० चौगुणं करता २८० आतारजक सद्वयेक रो विचरै । कहिणमंते वंभलोयदेवाण पज्जत्ता २ णं ठाणा प० । किहां हेमगवन् वल्लोक्कनादेवता पर्याता अपर्याताना ठमकक्षा । कहिणमंते वंभलो या परिवसंति । किहां हेमगवन् वल्लदेवलोक्कयसै । गायसा सणकुमारमोहेटाण कणाणं ठापिं सपरिखुसपरिदिदिषि बहुदिजोपण लाव सपरत्ता । हौ तम सनत्कुमार माहेद्वकम्पथी । ऊपर सयच सर्वदिगे धर्मीगोजन कोठाकादीं ऊचा जाईजी । एत्थण वंभलोए नामं कएपे प० । तिहां वल्लोक्कनाम कत्थ पर्यायमे विगेष लांबो । उदौणटाहिणविच्छणे पटिपन्नचटमठाणसठिया । उसरद्विणे पंनलो पणंचट संस्थाने संस्थिक्के । आधिमानो भागिय

राणं नवरं चत्वारि विमाणावाससयसहस्सा वरुसगा जहा सोहम्सस्वरुसया नवरं मज्जे इत्य वंजलीयव
 रुंसए एत्यणं वंजलीगाणं देवाणं ठाणा पं० सेसं तहेव जाव विहरति। वंजे इत्य देविंदे देवराया परिवस
 इ अरयंवरवत्यधरे एवं जहा सणकुमारि जाव विहरति नवरं चउरहं विमाणावाससयसहस्साणं सठीए
 सामाणियसाहस्सीणं चउरहयसठीणं आयरसकदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च वरुणं जाव विहरइ। कहिणं
 नेते ! लंतगदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पयत्ता, कहिणं जेत ! लंतगदेवा परिवसंति ? गोयमा !
 वंजलीगस्स कप्पस्स उप्पिं सपरिकयं सपदिदिसिं वरुइ जोयणसयाइ जाव वज्जईनु जोयणकीकाकोलीनु

सिध्दमे पविंसं सणकुमाराखं भणिय तहा भा०। किरणेने समोदेकरो भाया याकतो जिम सनरकुमारि कट्ठा तिम कट्ठो। नवरं चत्वारि विमाणा
 वाससयसहसा वड्डेसया जहा सोहम्सस्वरुसया। एतलोविशेष ४ लाखविमान कट्ठा वतंगक जिम सोधमनोपरे। नवरं मज्जे इत्य वंजलीयवड्डेसए। ए
 वियंय विचै इहां वरुलोकावतंगक। एत्यं वंजलीयाणं देवाण ठाणा पं० सेसंतहेव जाव विहरति। इहां वरुलोकादेवतारा ठामकट्ठा जिय तिम यावत्
 विचरे। वंभात्य देविंदे देवरायाणो परिवसंति। वरुलानामे इहां देवेन्द्र देवराजा वसेकं। अरयवरवत्यधरे एवं जहा सणकुमारि जाव विहरति। रज्जवि
 न वरुधारी इम सब सनरकुमारनोपरे यावत् विचरे। नवरं वरुणं विमाणावाससयसहस्साणं सठीए सामाणियसाहस्सीणं। एतलोविशेष ४ लाख
 विमानेकरो ६० हजार सामानिकेकरो। वरुणं सठीण यायरसखदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च वरुणं जाव विहरति। साठ चौगुणं करता २४० हजार
 र यासरसकेकरो अनरा घणादेवता यावत् विचरे। कहिणंभति लंतगदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं०। किहां हेभगवन् ज्ञान्तकदेवता पर्याप्ता पर्या
 प्ताना ठामकट्ठा। कहिणंभते लंतगादेवापरिमति। किहां हेभगवन् लंतकदेवता वसेकं। गोयमा वंजलीयस्स कप्पस्स उप्पिंसपरिस्सं सपदिदिसिं व
 र्ज्जलीयण जाव वड्डोपा जोयणकीकाकोलीपो उरुट दूर उणइत्ता। हेमोतम वरुलोका कट्ठाणी ऊपर सपच सर्वोदिग्रि पणोयोजननोकोडाकोली कंचा

उहं दूरं उपप्लवता एत्यणं लंतए नामं कप्पे पणत्ते पाईणपणीणायते जहा वंनलोए नवरं पन्नासाविमाणा वाससहस्सा हवंतीतिमस्कायं, वरुंसगा जहा ईसाणवरुंसगा नवरं मज्जे अत्थ लंतगवरुंसए देवा तहेव जाव विहरंति, लंतए अत्थ देविंदे देवरायां परिवसइ जहा सणकुमारि नवरं पन्नासाए विमाणावाससहस्साणं पन्नासाए सामाणियसाहस्सीणं चउण्हं पन्नासाणं अण्यरक्खदेवसाहस्सीणं अण्णसिंच वल्लणं जाव विहरइ । कहिणं नंतै ! महासुक्काणं देवाणं पज्जापज्जाणं ठाणा पणत्ता । कहिणं नंतै ! महासुक्कादे वा परिवसंति ? गीयमा ! लंतस्स कप्पस्सउप्पिं सपक्किं सपक्किदिसं जाव उपप्लवता एत्यणं महासुक्के

जाय । एत्यणं लंतणनामं कप्पे पं० । इहां लालकनामा कल्लकळी । पाईणपणीणायए एवं जहा वंनलोए । पूर्वपथिमं लोको इमं जिमं ब्रह्मलोक । गवरं पणत्तं विमाणावाससहस्साहिवइ वल्लेसगा अहा ईसाणवरुंसगा । एतलोविशेष ५० सइस्स विमानकक्षा वतंगक जिमं इयाननीपरे । नवरं मज्जे इत्यलंतगवरुंसए देवा तहेव जाव विहरंति । एतलोविशेष इहां लंतकावतंगकदेव तिमहीक यावत् विचरे । लंतए इत्थ देविंदे देवरायाणो परि वसंति । लंतक देवेन्द्र देवराजा वसेछे । एवं जहा सणकुमारि नवरं पणत्ताए विमाणावास सहस्साणं पन्नासाए सामाणियसाहस्सीणं । इमं जिमं मनकुमार एतलोविशेष ५० लोख विमान ५० हजार सामानिकसहस्रैकरी । चउण्हं पणत्ताणं पायरक्ख देवसाहस्सीणं पण्णसिंच वल्लणं जाव वि हरंति । ५० हजारते चौगुणीं आत्तरत्त देवतायैकरी अनंता घणदिंय यावत् विचरे । कहिणं भंतै महासुक्का देवाणं पणत्ता २ णं ठाणा पं० । कि न्ही इभगवन महासुक्कदेवता पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकक्षा । कहिणं भंतै महासुक्का देवा परिवसंति । किहां इभगवन महासुक्कदेवता वसेछे । गोव ना लंतख कणख चापं सपक्किं सपडिदिसं जाव उपप्लवता । इगौतम लंतककल्लयो ऊपर पचमहित यावत् ऊंचाजाव । एत्यणं महासुक्केनामं कप्पे पं० । इहां महासुक्कनामं कल्लकळी । पाईणपणीणायए उदोणदाहिणविच्छिणं एवं जहा वंनलोए । पूर्व पथिमं लोको उत्तरदिशि पिडुत्ता इमं ते जि

नामं कप्ये प्रणत्ते । पाईणपळीणायते उदीणदाहिणविच्छिन्ने जहा वंजलीए नवरं चत्तालीसं विमाणावा
ससहस्सा हवतीति मस्कायं, वळंसगा जहा सोहम्भवळंसगा नवरं मज्जे तल्य महासुक्खवळंसए जाव विह
रइ महासुक्खे इत्य देविदे देवराया जहा सणकुमारे नवरं चत्तालीसाए विमाणावाससाहस्सीणं चत्ताली
साए सामाणियसाहस्सीणं चउण्हं चत्तालीसाणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं जाव विहरंति । कहिणं जंत !
सहस्सारदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं० । कहिणं जंत ! सहस्सारदेवा परिवसंति ? गो० । महासुक्खस्स
कप्पस्स उप्पिंसपस्सिंसपत्तिदिसिं जाव उप्पइत्ता एत्थणं सहस्सारं नामं कप्ये पं० । पाईणपळीणायते ज

म त्रयस्रोतः नवरं चत्तालीस विमाणावाससहस्सा हवतीति मस्कायं । एतलोविशय ४० हजारविमानकक्षा तोयत्तरे । वळंसगा जहा सोहम्भवळंस
गा नवरं मज्जे इत्य महासुक्खवळंसए जाव विहरति । वतयक जिम सोधमनीपरे एतलोविशय विचे इहा महाशुक्कनामावतणक यावत् विवरै । महा
सुक्खे वळंसए जाव विहरति । महाशुक्कनामै । महासुक्खे इत्य देविदे देवरायाणो परिवसंति । महाशुक्कनामै देवदे देवराजा वसंते । एवं जहा सणकुमा
रे नवरं चत्तालीसाए विमाणावाससहस्साणं चत्तालीसाए सामाणियसाहस्सीणं । इम जिम सनत्कमार एतलोविशय ४० हजार विमानसंख्याहुये ४०
हजार सामानिकसहस्रकरी । चउण्हं चत्तालीसाणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं जाव विहरति । एकलोख साठहजार देवता आत्तरज्जक हुवे यावत् विवरै ।
कहिणं मते सहस्सारदेवाण पज्जत्ता २ णं ठाणा पं० । किहां हेमगवन् सहस्सारदेवताना पर्याप्ता अय्यात्ताना ठामकक्षा । कहिणं मते सहस्सारदेवा
परिवसंति । किहां हेमगवन् सहस्सारदेवतो वमेक्ख । गोयमा महासुक्ख कण्वस संपत्तिदिसिं जाव उप्पइत्ता । इतोम महाशुक्क कल्पने
ऊपर पंचसहित यावत् कंचा जाइते । एत्थणं सहस्सारनामं कप्ये पं० । इहां सहस्सारनामं कल्पकक्षो । पाईणपळीणायए जहा वंजलीए । पूर्व पंचिम
सांवा जिम वंजलीक । कविमाणावाससहस्सा हवतीति मस्कायं देवातहेव वळंसगा जहा देसाणं नवरं मज्जे इत्य सहस्रवळंसए जाव विहरति ।

हा वंजलोए नवरं त्रविमाणवांससहसा हवतीति मस्कायं देवा तहेव वंजसगो जहा ईसाणस्स वंजसगा
नवरं मज्जे जत्थ सहस्सारवंजसए जाव विहरंति, सहस्सारि इत्थ देविदे देवराया परिवसइ जहा सणकु
मारे नवरं ठरहं विमाणवांससहस्साणं तीसाए सामाणियसाहस्सीणं चउरहय तीसाणं आयरकदेवसाह
स्सीणं जाव आहेवच्चं करेमाणे विहरंति । कहिणं भंते ! आणयपाणयदेवाणं पज्जाता २ ण ठाणा पं०
? कहिणं भंते ! आणयपाणयदेवा परिवसंति ? गो० ! सहस्सारस्स कप्पस्स उप्पि सपस्सि सपस्सिदि
सिं जाव उप्पइत्ता एत्थण आणयपाणयनामेणं दुवे कप्पा पन्नत्ता पाईणपणीणायते उदीणदाहिणविच्छि
न्ना अय्यदसंठाणसंठिया अच्चिमालीनासरासिप्पन्ना सेसं जहा सणकुमारं जाव पप्पिक्खा तत्थण आण

एतत्तोविशेष छ इज्जारविमानं केवलीकक्षा वतंयक क्षिमः ६ गाननोपरे एतत्तोविशेष विचे इहां सहय्यावतंयक यावत् विचरे । सहस्सारि इत्थदेविदे दे
वरायाणी परिवसंति । संख्यारनामे देवदेवराजा वसैहे । जहा सणकुमारं नवरं क्खहं विमाणवांससहस्साणं तीसाए सामाणियसाहस्सीणं । क्षिम
सतरकुमार एतत्तोविशेष इज्जार विमानं तीसाएसामाणियसाहस्सीयं वउरहं तीसाए आयरक्खदेवसाहस्सीणं जाव आहेवच्चं करेमाणे जाव वि
हरंति । ३० इज्जार सामानिकेकरो एकसीवोसइजार आत्तरचक्केकरी यावत् अविपतिपणे विचरे । कहिणंभंते आणयपाणयकपणं देवाणं पज्जाता
२ ण ठाणापं० । किहां भिभगवन् आनंत प्राणतदेवताना पर्याता अपय्यातिना ठानकक्षा । कहिणंभंते आणयपाणयानं देवाणं परिवसंति । किहा हे
भगवन् आनंत माणतदेवता वसैहे । गोवमा सहस्सारस्स कप्पस्स उप्पि सपस्सि सपस्सिदिसे जाव उप्पत्ता । हेमोतमं सङ्गारकल्लथो उपरि प्रतिदि
से जानेगे लंघा जान्ति । एत्थण आणयपाणयनामे दुवेकप्पा पं० । तिहां आनंत प्राणतनामे दीयकल्ल कक्षा । पारं पण्डोणायवां उदीणदाहिणवि
च्छिन्ना अय्यदसंठाणसंठिया । पूर्वपथिम लोको उत्तरदक्षिण पिहुलो अहंउद्रमाने संस्थाने संस्थिते । अच्चोमालो भासरासिष्ठमपभा संसंजइसाकण

यपाणयदेवाणं चत्वारि विमाणावाससया हवन्ती मखायं जाव पक्रिवा, वक्रंसगा जहा सोहम्मे नवरं म
ज्जे पाणयवक्रंसए तेणं वक्रंसगा सव्वरयणाभया अच्चा जाव पक्रिवा, एत्थणं अणयपाणयदेवाणं पज्ज
तापज्जत्ताणं ठाणा पत्तत्ता तिसुवि लोगस्स अस्संवेज्जइत्तागे तत्थणं बहवे अणयपाणयदेवा परिवसन्ति
महद्धिया जाव पत्तासेमाणा तेणं तत्थ साणं २ विमाणवाससयाणं जाव विहरन्ति पाणएत्थ देविदे देवरा
या परिसन्ति जहा सणकुमारि नवरं चउएहं विमाणावाससयाणं वीसाए सामाणियसाहस्सीणं असीतीए
अयारस्सदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं जाव विहरन्ति । कहिणं नन्ते ! अणयचुयाणं देवाणं पज्जत्ता

नरि जाव पक्रिवा । किरणने समूहे प्रभादिक गेप जिम सनत्तकुमारनोपरे जांपत्तिकप । तत्थणं आणयपाणयदेवाणं चत्वारि विमाणावाससया हव
तितिमखायं जाव पक्रिवा । तिहां आनत्त प्राणत्त देवताना चारविमाननानासैकहा तोधेकरे कक्षा यावत् प्रतिकप । वक्रंसगा जहा सोहम्मे नवरं मरम्मे
इत्थ पाणयवक्रंसए तेणं विमाणा सव्वरयणामया अक्खा जाव पक्रिवा । वतंमक जिमसोधमं ए विगेप विचै प्राणावतंयक ते विमान सव्व रत्तमयदे याव
त् प्रतिकप । पत्थणं आणयपाणयदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं० । इहां आनत्तप्राणत्तदेवताना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकक्षा । तिसुविशोयस्स असं
विज्जइभागे । तोन बोक्कोकने असंख्यात्तेभागे हुवे । तत्थणं बहवे आणयपाणयदेवा परिवसन्ति महद्धिया जाव पभासेमाणा । तिहां वणां आनत्त
प्राणत्तदेवता वसेक्के महद्धिक यावत् प्रभासदित । तेणं तत्थ साणं २ विमाणावाससयाणं जाव विहरन्ति । ते तिहां आप आपणे विमानना सैकहाये वि
चरे । पाणएनामं एत्थ देविदे देवराया परिवसन्ति खडासणुकं मारि । प्राणत्तनामै इहां इन्द्राजा वसेक्के जिम सनत्तकुमार । नवरं चउएहं विमाणा
वाससयाणं वीसाएसामाणिय साहस्सीणं असीत्त आयरत्थ देवसाहस्सीणं अणसिंवेवहूणं जाव विहरन्ति । एतलोविगेप चारसै विमानेकरी वीसइजा
र सामानिक देवतायेकरी ८० हजार आल्लरत्तकेकरी अनैरा वणां देवता यावत्त विचरे । कदिणंमन्ते आणयचुयाणं देवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं० ।

२ णं ठाणा पणत्ता । कहिणं जते ! झारणञ्जुया देवा परिवसेंति ? गौथेमा ! झारणयपाणयानं कप्प्याणं उप्पिं सपक्कं सपट्ठिदिसिं एत्थणं झारणाञ्जुयानाम दुव्वं कप्प्या पणत्ता । पाईणंपप्पिणायगा उदीणदाहिणविच्छित्त्वा झुट्ठचंदंठाणसंठिया झच्चिमालीनासरासिवन्नात्ता झसंखिज्जातुं जोयणकोप्फाकोप्फातुं झायामविस्कंनेणं झसंखेज्जातुं जोयणकोप्फाकोप्फातुं परिस्केवेणं सव्वरणामया झच्छा सग्हा ल्हा घठा म्हा नीरया निम्मला णिप्पंका निक्कंकरुच्छाया सप्पन्ना ससिरीया सउज्जीया पासाईया वरसणिज्जा झन्निरूत्ता पन्निरूत्ता एत्थणं झारणञ्जुयाणं देवाणं तित्ति विमाणावाससया हवंतीति मस्कायं, तेणं विमाणा सव्वरय

किहो हेभगवन् आरणवसुदेवा परियात्ता अपयोत्तामा पयोत्ता अपयोत्ता । कहिणं भते आरणवसुदेवा परिवसति । किहो हेभगवन् आरणवसुदेवा वता वसेत्ते । गौथेमा ! आरणयपाणयानं कप्प्याणं उप्पिं सपक्कं सपट्ठिदिसिं उप्पत्ता । हेगौतम आनतपाणत जपर सपपा चौक्करदिश्ये । एत्थणं आरणवसुपणमं दुव्वं कप्प्या । इहा आरणवसुत दायकत्थ कत्ता । पाईणपप्पिणायाः या उदीणदाहिणं विच्छित्त्वा चट्ठचंदंठाणसंठिया अहिमालो भासिरासि वत्ता । पूर्व पयिमे लोत्ता वत्तरदत्तिणे पिहत्ता चट्ठचंदेन सस्थितसंस्थान किरणनोमालाये सांभित देदीप्यमानवर्णं । यंसंखिज्जायां जोयण कोप्फाकोप्फातुं आयामविकुम्भेण । असंख्यातायां जन्तो कोप्फाकोप्फा लोत्ता पिहत्ता । असंखिज्जायां जोयणकोप्फाकोप्फा परिस्केवेणं पं० सव्वरणामया । असंख्यातायां जन्तो कोप्फाकोप्फा प्रमाण परिधिक्कं सयत्तमय । अत्थासग्हा ल्हा घट्टा म्हा नीरया निम्मला नि पका निक्कंकरुच्छाया । आच्छा हविकेरी धरात्ते मसत्थात्ते रजरजित निर्मल निक्कं कचरादिकेरहित । सपपभा सत्तिरिया सउज्जीया पामाईया वरसणिज्जा अभिरुत्ता पांडकुवा । प्रभासंडित सयोक सयांतसंडित प्रसन्नकारो दुखवायांय्य अभिरुप प्रतिकुप । एत्थण आरणवसुयाणं तेवाणे तित्तिविमाणावासासया हवत्तिसिमसुत्ता । इहा आरणवसुतनामं देवताना तीनसेविमान केवलीये कत्ता । तेणं विमाणा सव्वरणामया । तं विमानं सर्वरत्नमेव । अत्थासग्हा ल्हा घट्टा म्हा नीरया निम्मला

णामया अच्छा सरहा लठा घठा मठा नीरया निम्नला निष्पंका निक्कंकळ्ळाया सप्पन्ना ससिरीया सउ
जोया पासादीया दरसणिज्जा अन्निहवा तेसिणं त्रिमाणं वज्जमज्जदिसन्नाए पंच वळंसया पयत्ता, तं०—
अंकथळंसए फलिहवळंसए रयणवळंसए जाव रूत्रवळंसए मज्जे जल्य अच्चुयवळंसए, तणं वळंसया सव्वरय
णामया जाव पळिरूवा, एत्थणं अ्यारणञ्जुयाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पयत्ता। तिसुवि लोगरस्स
असंखेज्जइच्चागे तत्थणं वहवे अ्यारणञ्जुया देवा जाव विहरंति, अच्चुए तल्य देविंदे देवराया परिवसइ।
जहा पाणए जाव विहरति नवरं तिण्हं विमाणावाससयाणं दसरहं सामाणियसाहस्सीणं चत्तालीसाए

जाव पडिऊरा । निर्मलसुनिमल यावत् प्रतिरूप । ७८५ गं आरण्यशुभाण्य देशं तित्थियिमाणावाससया हवति तिमरद्वाराय । इहां आरण्यशुभं देव
गाता तीनसेविमान कयलौये कंछा । तिसुं कप्पाणं वड्ढेसभाण पवड्ढेसभाण पं० तं० । तिहां सूझापडले नीपना विमानने घणे मध्यविचले पववतंग
कविमान कहैछे । अंतवहमिए फलिह्व० रयगव० जायह्वव० मझे इत्य अशुभ० । अंतवतंगक स्फुटकव० रत्नव० जातिकपव० दिचै इहां अशुभतव
तयक । ते वड्ढया सव्वरयणामया जाव पडिऊवा । ते वतगक मई रत्नमय यावत् प्रतिरूप । ७८६ गं आरण्यशुभाणं देशं पज्जत्ता २ गं ठा० प० ।
इहां आरण्यशुभतदेवतारा पर्याप्ति अपर्याप्तिरा ठामकक्षा । तिमविश्लोयस अस्मिन्विज्जभांग । तीन वोल्लोकने पसंख्यातमेभागे ह्वे । तत्यणं वड्ढे
आरण्यशुभयादेवा परिवसति जाव विहरति । तिहां घणां आरण्यशुभतदेवता समेकं यावत् विचरे । अशुभ इत्य देविदेवरायाणो परिवसति ।
अशुभनामै इहां देवेदेवराजापणे वसैछे । जहा याणए जाव विहरति । जिम आमतमोपरे यावत् विचरे । नवरं तिवहविमाणावामसयाजं दसगहं
सामाण्यसहस्राणं सत्तालीसाए आयरसखदेवसाहस्राणं आदेवसं कुवमाणं जाव विहरति । एतलोवियोप तीनसैविमान कक्षा दगहजार नामानि
कंदवता ४० इलार आत्तरएक देवकरो पांधपतिपणे यावत् विचरे—वतौसह्वादीया वारसयडवडरसयसहस्राय पक्षावत्तालीसा कुवसहस्रासहस्रमा

आयस्वदेवसाहस्रीणं अहेवच्चं जात्र कुत्रेमाणे विहरति, वतीसञ्चुठावीसा वारसञ्चुठचउरीसयसहस्सा
पन्नाचत्तालीसा वच्चसहस्सासहस्सारे ॥ १ ॥ अणयपाणयकप्पे चत्तारिसंयारणचुएतिणि । सत्तविमाणस
साइ चउसुविएएसुकप्पेसु ॥ २ ॥ सामाणियसंगहणीगाहा-चउरासीइअसीति वावत्तरिसत्तरीयसठीए ।
पन्नाचत्तालीसा तीसावीसादसहस्सा ॥ ३ ॥ एएचव आयस्का चउगणा कहिणं भंते ! हिठिमगेविज्ज
गदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पयत्ता ? कहिणं भंते ! हेठिमगेविज्जगा देवा परिवसंति ? गोयमा ! अ
रणचुयाणं कप्पाणं उप्पिं जाव उहं दूरं उप्पइत्ता एत्थणं हेठिमगेविज्जगाणं देवाणं ततो गेवेज्जविमाणा

॥ १ ॥ सोधमे ३२ इयाने २८ संतरकुमारि १२ माहेद ८ वल्लेदे ४ गतसहय सांतके ५० सहय मुके ४० छजार सहयारे ६ ॥ १ ॥ भाणयपाणयकप्पे
वत्तारिसवारणाच एति ण सत्तविमाणसयाइ चउसुविएएसुकप्पेसु । आनत प्राणत कल्प ४०० आरण अर्युते पहिलोविके १११ दि० विके १०७ त्थं वि
के १०० पंचान्तरे ५ एवं सर्वं ३२३ इवे ॥ २ ॥ सामाणियाणगाहा । द्विमे सामानिकदेवता संघयनो गाययिंके - चलभोतिअमोइवावत्तरि सत्तारिखी
यपणवत्ताला तीसावीसादसहस्सा एएसिंआयस्ववत्तगुणिया ३० बीरामोसहयसोधमं इयाने ८० सहय सतरकुमारि ३२ सहय माहेदे ७० सहय व
ल्लेदे ६० सहय सांतके ५० सहय मुके ४० सहय सङ्गारे ३० सहय आनतमाणते २० सहय आरणअर्युते १० सहय रणारा ए आत्तरचकदेवता जा
णवा । कहिणंभते हिठिमगेविज्जगाणं देवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा प० । किंहा हेभगवन् हेठला गेवेयकना ययाणा अययांतिना ठामकक्षा । कहिणं
भते वेठिमगेविज्जगा देवा परिवसंति । किंहा हेभगवन् हेठला गेवेयकदेवता यसैके । गोयमा आरणअययाणं कणाणं उरिं जाय उहं उरिं पत्ता । हे
गीतम आरण अर्युत कल्पयो क्वाजाइजे ऊपरि यावत् । एत्थण हिठिमगेविज्जगाणं देवाणं ततो गेवेज्जविमाण पयत्ता प० । इहां हेठला गेवेयक
ता देवता यसैके विण गेवेयकना प्रतर कक्षा । पारिणपटोणायवाउदीणदाइणविच्छिन्ना पट्ठिणुचद सठाणसंठिया । पर्वपरिच्छमे ज्वां उसरदच्चिण

पत्यक्षा पन्तत्ता पाईणपईणायगा उद्दीणदाहिणविच्छिन्ना पफिपुत्तचंदसंठाणसंठिया अच्चिमालीनासरासि वन्तन्ना सेसं जहा वंनलीगे जाव पफिरूवा, तत्यणं हेठिमगेविज्जगाणं देवाणं एक्कारसुत्तरे विमाणावास सए हवंतीति मस्कायं तणं विमाणा सव्वरयणामया जाव पफिरूवा, एत्यणं हेठिमगेविज्जगाणं देवाणं पज्जत्ताणं २ ठाणा पसत्ता । तिसुवि लोगस्स अणसंखेज्जइजागे तत्यणं बहवे हेठिमगेविज्जगा देवा परि वसंति सव्वे सममहिद्दीया सव्वे समज्जुतीया सव्वे समजसा सव्वे समवला सव्वे समाणुजावा महासोस्का अणु

पिडुला पूर्णचंद्र संस्थाने संस्थिते । अस्मिन्माली भासिरासि वस्त्राभा सेमं जहा वंनलीगे जाव पफिरूवा । किरणनौत्रेणीकरी आभासहित जिम वृक्षालीक तिमं यावत् प्रतिरूप । तत्यणं हेठिमगेविज्जगाणं देवाण इक्कारसुत्तरविमाणावाससप हवति तिमस्कायं । तिहां हेठली गूँवेयकनादेवता एकसोऽग्यारह विमाननौसंस्थाकं हो तीयेकरे । तेषं विमाणा सव्वरयणामया जाव पफिरूवा । ते विमान रत्नमय यावत् प्रतिरूप । तत्यणं हेठिमगेविज्जगाणं देवाणं प ज्जत्ता २ णं ठाणा पं० । तिहां हेठला गूँवेयकदेवताना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकक्षा । तिसुविलोगस्य असंखिल्लभागे । तीन वोललीकने असंख्या तमेभागे हवे । तत्यणं वहवे हेठिमगेविज्जगा देवा परिवसंति । तिहां घणं हेठला गूँवेयकनादेवता वसेक्के । सव्वेसमहडुडिवा सव्वे समज्जया । सव्वेसम ज्जमा सव्वेसमज्जला सव्वेसमाणुभावा । सर्व महर्षिक समस्तदि समयुतिकरी सर्वसरोखे यगे वल्लेसरोखा सर्वसरोखेभावे । महासक्खा अणेदा अणंपेसा अपुरादिहया । महासखी इट्ट केहनेन हो कहने दासनयो पुराहितनयो । अहमेदानाम तद्वगणा पं० । सबला इट्टनीपरे रइक्के ते देवगण कक्षा । सम णाउसा । यहां समणा आयुपावत्ता । कहिणंभंते मज्झिमगेवज्जगेदेवाणया परिवसंति । किहां हेभगवन् मज्झिमगूँवेयकनादेवता वसेक्के । गायमा हिड्डु मगेविज्जगाणं जारिप सपक्खि सपादिदिस जाव सपात्ता । हेगीतम हेठला गूँवेयकथी जेपर जंवा फेर यावत् जाइये । एत्यणं मज्झिमगेविज्जगदेवाणं त थो पज्जत्ता २ णं ठाणा पं० । तिहां मज्झम गूँवेयकदेवताना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकक्षा । कहिणंभंते मज्झिमगेविज्जगादेवा परिवसंति । किहां

णिंदा अपेस्साञ्जपुरोहिता अहमिंदा नामं ते देवगणां पणुता । समणाउसो ! कहिणं ज्ञते ! मज्झिमगाणं
गेविज्जगदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पणुता । कहिणं ज्ञते ! मज्झिमगेविज्जगदेवा परिवसन्ति ? गोयमा !
हेठिमगेविज्जगाणं उप्पिं सपक्खिं सपक्खिदिं जाव उप्पडत्ता एत्थणं मज्झिमगेविज्जगदेवाणं ततो गेविज्ज
गविमाणपत्थन्ना पणुता पाईणपणीणायता जहा हेठिमगेविज्जगाणं नवरं सत्तुत्तरे विमाणावाससए हवं
तीति मस्काए, तेणं विमाणा जाव पक्खिन्ना एत्थणं मज्झिमगेविज्जगाणं देवाणं जाव तिसुवि लोगस्स झुसं
खेज्जइत्तागे तत्थणं वहवे मज्झिमगेविज्जगा देवा परिवसन्ति जाव अहमिंदा नामं देवगणा पणुता । सम
णाउसो ! कहिणं ज्ञते ! उवरिमगेविज्जगा देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पणुता । कहिणं ज्ञते ! उवरिम

इभगवन् मध्यम गूयेयकना देवता वसेहे । गोयमा हिठिमगेविज्जगाणं उप्पसपक्खिं सपक्खिदिं जाव उप्पडत्ता । इतोतम हेठला गूयेयकयको ऊपर
जंघा चौकंर यावत् जारहे । एत्थणं मज्झिमगेविज्जगदेवाणं ततो गेविज्जगदेवाणं पणुता २ णं ठाणा पणुता । कहिणं ज्ञते ! मज्झिमगेविज्जगदेवा
परिण पईणायता एव जहा हिठिमगेविज्जगाणं नवरं सत्तुत्तरे विमाणावाससए हवति तिसुवि लोगस्स झुसं
जिम हेठला गूयेयकनोपर एतत्ता विज्जगदेवाणं एकसोसात विमान तीर्थकरे देवकक्षां तेविमान दावत् प्रतिरूप । एत्थण मज्झिमगेविज्जगाणं जाव तिसुवि लोग
य अमखिलभागे । इहां मध्यम गूयेयकना देवता वसेहे यावत् तीन बोललाकने असंख्यातमेभागे धुव । तत्थणं वहवे मज्झिमगेविज्जगदेवा परिवसन्ति ।
तिहां वणं मध्यम गूयेयकना देवता वसेहे । जाव अहमिंदानामे तदेवगणा २ णं ठाणा पणुता । कहिणं ज्ञते ! मज्झिमगेविज्जगदेवा
वत्तो । कहिणं भते उवरिम गेविज्जगदेवाणं पणुता २ णं ठाणा पणुता । कहिणं ज्ञते ! मज्झिमगेविज्जगदेवा परिवसन्ति । गोयमा मज्झिमगेविज्जगाणं जाव उप्पडत्ता । इतोत
कहिणं भते उवरिमगेविज्जगदेवा परिवसन्ति । किहां इभगवन् ऊपरला गूयेयकना देवता वसेहे । गोयमा मज्झिमगेविज्जगाणं जाव उप्पडत्ता । इतोत

किंरूपा पुनस्ते इत्याह अत्र मिद्रानाम ते देवगणा प्रज्ञासा १ ऐश्वर्यमग्नं देवापुमान् । सिद्धसूत्रे यगाजीयकोक्ती इत्यादि ॥ परिरयपरिमाणं विष्णु
मवगदद्गुणोत्पादि ॥ करणवशां तस्य मानंतव्य सुगमत्वात् क्षेत्रसमासटोका या परिज्ञावनीया- तत्र पंचघत्वारिणह्यनप्रमाणविकनमनुयन्तेत्रपरि
रयस्य एतावत्प्रमाणस्य सविस्तरं प्रावितत्वात् तस्याश्च ईदृशप्रमाणाराया पृथिव्या बहुमध्यदेशजाने श्रष्टयोजनिकनायामविक्रान्त्याम उद्योजन

गेविज्जगा देवा परिवसति १ गोयमा ! मज्झिमगेविज्जगदेवाण उपि जाय उप्पइत्ता तस्यण उवरिमगेवेज्जा
गाण देवाण तनुं गेविज्जगविमाणपत्थना पस्सत्ता । पाईणपत्थीणानुं सेस जहा हेठिमगेविज्जगाण नवर
एणं विमाणवाससए जवतीति मक्काए, सेस तहेव ज्ञाणियहु जाव अहमिदा नामं ते देवगणा पस्सत्ता
समगाउसो ! एक्कारसुत्तरहे ठिमएसुसत्तुत्तरचमज्झिमए । सयमेगउवरिमए पचेवअणुत्तरविमाणा ॥ १ ॥
कहिण जते ! अणुत्तरोववाडयाण देवाण पज्जत्ता २ णं ठाणा पस्सत्ता १ कहिण जते ! अणुत्तरोववाड्यया

म मध्यमगुर्वेयकथो जवा यावत् जवा । एतस्य उवरिमगेविज्जगाण देवाण तथोगेविज्जविमाणपत्थना प० इहा अपरिणागुर्वेयकना देवताहे तीन विमा
नना प्रतरहे । पाईण पत्थीणा इया सेस जहा हिडिमगेविज्जगाण । पूर्वपश्चिम लावा श्रेय सर्वं जिम नौचन्नागुर्वेयकनोपरं । नवर एगेविमाणवासासए
हवतिस्मिन्नाय सेसत्तं च भाषि० जाव अहमिदानामे तदेवगणा प० । एतन्नाविशेष एकसौविमानहे तिथिकरे कश्चो श्रेय तिमडोज कहवो यावत् म
हमिद्र नामदेवता समूहकक्षा । सनथाउसोगाहा भोजमणा नायुपावतो गाथा । इक्कारसत्तरहिडिमसत्तत्तरचमज्झिमए । सयमेगउवरिमए पचेवअणुत्त
रविमाणा १ ॥ हेठन्नागुर्वेयकनेवैष एकसौऽग्यारहविमान मध्यमगुर्वेयक पाचविमान अणुत्तरविमाने । कहिणभते अणुत्तरोववाड्ययादेवा परिवस
ति । किंहा जेमगवन् अनुत्तरवासो देयता वसेहे । गोयमा इमौसे रवणपुपभाएपुटवोण बहुसुमरमणिज्जायो भूमिभागाओ । हेगौतम ए सटनप्रभा पृथि
वीथी घणो समोरमणौक भूममायधकौ । उट्टकुदिम सूरिय मज्झमणक्खत्तारात्थाण । तथा मयं पंद्र गुहगण नल्लज तारात्पथी । वहुत्तकोत्तणस

देवा परिवसति ? गीयमा ! इमीसे रयणप्यन्ताए पुठवीए वज्रसमरमणिज्जाने भूमिनागाने उहु चटिमसू
रियगहगणनस्कत्ततारारूवाण वत्तइ ज्ञोयणसयाह वत्तइ ज्ञोयणसहस्साइ वत्तइ ज्ञोयणसयसहस्साइ वज्ज
गाने ज्ञोयणकोफ्फाने वज्जगाने ज्ञोयणकोफ्फाकीफ्फाने उहु दूर उप्पइत्ता सोहम्मीसाणसणकुमारमाहिदवन्न
लीगलतगसुक्कसहस्सारय्याणयपाणयय्यारणञ्चुयकप्पा तिसियञ्चुठारसुत्तरे गेविज्जविमाणावाससए वित्ती
वड्ढा तेण पर दूर गता णीरया निम्मला वित्तिमिरा विसुद्धा पचदिसि पच अणुत्तरा महतिमहालया महा
त्रिमाणा पक्खत्ता, तजहा—विजये वेजयते जयते अपराजिए सव्वठसिद्धे । तेण विमाणा सव्वरयणामया
अप्प्या सरहा घठा मठा णीरया निम्मला निप्पका निक्कफ्फाया सप्पन्ना सिसिरीया सउज्जीया पासा

याइ वड्ढा जावणसयसहस्साइ वड्ढीया ज्ञोयणकोफ्फा वड्ढुगोपा जावणकोफ्फाकोफ्फा । घणा याजनना सक्कहा घणा याजनना सहय घणा या
जननीक डो घणायाजननी कोफ्फाकोफ्फा । सव्वट्ठा जाव उव्वत्ता । जवा जाःजे । सोहम्मीसाणसणकुमार माहद वमनीग लांतग सक्कसहस्साइ वज्ज
पाणय धारण अञ्चुय कप्पा । सीधर्म इमान सनत्तुमार माहद वत्त लांतक युक्क सहयार आनत प्राणत धारण अञ्चुय । तिसिय चट्टारसुत्तरे गेविज्जवि
माणावाससए वीइवत्ता । जपर तीनसे अट्टारह गेवैयकनाविमान मूकीने जवाजानेजे । तेण परदूर गया नौरयावि तिमिरा विसुद्धा । तिहायकी
दूरगया रज्जरहित अत्रारहित यत्त । पचदिसि पच अणुत्तरा मज्झिमहालया मज्झविमाणा प० त० । पाचेदिसि पच अणुत्तर वट्ठट्टा मोटोमोटो
विमान कट्ठा ते कट्ठे—विजये वजयते जयते अपराजिए सव्वठसिद्धे । विलग वैजयत जयत अपराजित सर्वार्थसिद्ध ५ । तेण विमाणा सव्वरयणाम
या । ते पाचविमान सर्व रत्तनमयके । अत्था सरहा लट्ठा घट्टा मट्टा नौरया निम्माना निरपकी निक्ककट्ठया । आट्ठा सूक्ख महनोपना इ । यघट्ठा म
मया रज्जविना निर्मल कचरेरहित । सपभा सक्खिरीया सउज्जीया पासादया दरसणिज्जा अभिरूपा पडिरूपा । प्रमासाइत सत्था क उद्यातसहित प्रस

प्रमाण क्षेत्र चाष्टी योजनानि बाहुल्येन बोधत्वेनो वैस्त्वेनेति भाव प्रज्ञप्ता तदनन्तरं सर्गसु दिक्षु विदितु च मात्रया स्तोत्रया २ प्रदेशप्रदान्या

दीया दरिसणिज्जा अन्निरुवा पठिरुवा एत्थण अणुत्तरोववाइयाणं देवाण पज्जातापज्जाताणं ठाणा प० ।
 तिसुवि लीगस्स असवेज्जइयागे तत्थणं बहवे अणुत्तरोववाइया देवा परिवसति सहे समसहट्ठिया सहे
 समबला सहे समाणनावा महासोस्का अणिदा अप्पेस्सा अप्परोहिवा अहमिडा ते देवगणा पणत्ता । स
 मणाउसो ! कहिण जते ! सिद्धाण ठाणा पणत्ता । कहिण जते ! सिद्धा परिवसति ? गोयमा ! मव्ठस्स
 महाविमाणस्स उवरिस्साले थूजियग्गाले दुवालजोयणे उहु अत्राहाए एत्थण इसीपझारा नाम पुढवी प०,
 पणयालीस जोयणसयसहस्साइ अणायामविरुक्केण एगजोयणकोमोत्तवायालीस च सयसहस्साइ तीसं सह

त्रकारो दुखवायोग्य अभिरूप प्रतिरूप । एत्थण अणुत्तरोववाइयाण देवाण पज्जाता २ ठा० प० । इहा अणुत्तरगासीदेवता पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठाम
 कक्षा । तिसुविकोयस्स अर्चद्विज्जाभागो । तीने बोक्कलोकने असव्यातमेभागे । तत्थण बहवे अणुत्तरोववाइया देवा परिवसति । तिहा वागा अणुत्तरवा
 सोदेवता वसहे । सर्गे समइडुडुय सत्वेसमवथला सत्वेसमवथला भावा मझामुत्ता । सर्व महडिक्क सर्व समवत्ता सर्व महानुभाव महासुखी । अणेदा
 अपेसा अपरोहिवा अहमेदानाम देवगणा प० । इन्दुनथी प्रेषानथी पुरोहितनथी सर्व अहमिदनामे देवकक्षा । समणाउसो ! भाअमण आयुगावन्तो ।
 कहिणभते ठाणा प० । किहा हेभगवन् सिद्धना स्थानक कक्षा । कहिणभते सिद्धा परिवसति । किहा हेभगवन् सिद्ध वसहे । गोयमा सवइस्सविमाण
 स्स उवरिस्सालो थूजियगाओ दुवालस जोयण उहडु अत्राहाए । हेगौतम सर्वाधिसिद्ध महाविमान कपरलो धूमिकायको १२ योजनप्रमाण ऊचो चावा
 भाये । इत्थण इसौपधारानाम पुटवी प० । तिहा मनुष्यनो अपेक्षये मविस्सरभाव माटे ईपप्राभापरधिवी कहो । पणयालीस जोयणसयसहस्साइ या
 यामविरुक्केण । ४५ लाइयालन लावपणे पिडुलपणे, हिते परिधि कहके - एग जोयणकोली वायालीसचयसहस्साइ । एककोली योजन ४२ लाखे

परिहीयमाना सर्वेषु चरमातेषु मक्षिकापत्रतो ऽप्य तितन्वी अगुनासख्येयनाग बाह्व्येन प्रक्षमा स्थापना ईसिद्धेति पदैकदेशे पदसमुदायोपचारात् ईषरमाग्नारा इति वा तत्कृतिवा तन्वीवा ओषपृथिव्यपेक्षया अतितनुत्वात् तनुतगूतिवाङ्गिति ॥ तनुभ्योपि अगतप्रसिद्धेभ्य स्तन्वी मल्लिका पत्रतोपि पयंतप्रदेशेति तनुत्वात् तनुतन्वी सिद्धिरिति वा सिद्धेयस्य प्रत्यासन्नत्वात् सिद्धालय इति वा इति सिद्धेयस्य प्रत्यासन्नतयोपचारात् सिद्धानामा लय सिद्धालय एव मुक्ति रिति वा मुक्तालय इति चेत्यपि परित्रावर्तीय तथालोकायेंयंतमानत्वात् लोकायमिति लोकाग्रस्य स्तूपि

रसाद् दोन्नि य अउणापन्ने जोयणसए किचिचिमंसाहिए परिकेव्रेण पणत्ता । इसीपन्नाराएण पुढवीए वज्जमज्जेसन्नाए अण्ठजोयणिए खेत्ते अण्ठजोयणाड वाह्वेण पन्नेत्ते , ततो अणतर चण माताए २ पए सपरिहाणी २ परिहायमाणी २ सहेसु चरिमंतसु मच्छियपत्तातो तणुयरी अगुलस्स ससेज्जड्जागे वाह्वेण पणत्ता , इसीपन्नाराएण पुढवीए दुवालसनामधंज्जा पणत्ता इसीपन्नाराइवा तणुत्तिवा तणु

योजन । दोषियर्वाणा पण जोयणसएहि किचिचिसंसाहिए परिकेव्रेण प० । दोहवारयोजननेवियेवगुणपचास योजन काईकविग्नेयाधिक परिधि क हिये । इसिपभाराण पुढवीए वज्जमज्जेसमाए अण्ठजोयणियेत्ते अण्ठजोयणाड वाह्वेण प० । इम चैवसमासनी टोकाद्यो सर्वे विस्तर जाणवो ई पत्ता मारा पृथिवीतो घर्णे मध्यदेशभागे ऽ योजनप्रमाणखेव ऽ योजन बाहुय कचापेणे एतलो कडिवो । तयाणतरचण मायाए सपरिहाणीए परिहाय माणी २ । तिवारपक्खो सघलीदिगि विदिग्गिमात्राये २ प्रदेशे परिहरिमान घटत २ थकी । मग्गेसु चरिमते समच्छियपत्ताउत्तणवरो अगुलया असवि ज्जभागे वाह्वेण प० । सघलानि केव्वे मालीनो पाखुडो पिण पातलो अगुलनी चम आतमेभागी मात्राये वाहुल्यपणे कडो । ईसिपुभाराण पुढवी ए दुवालनामधिल्ल प० त० । ईषप्रायभारा पृथिवीना १२ नामकल्ला तैककेके । इमिणभाराण ताणइवा सिद्धइवा मिहानएत्तिवा मत्तोइवा मुत्तालए त्तिवा लोयणेत्तिवा लोयगाथूमिएइवा लोयवपडिबज्जाणाइवा । एकदिगि पातली तेमाटि ईषत्ताभार मोटोपणेक्खे तेमाटि वैसो पातलोक्खे पातलोस पा

केव लोकाग्रस्तूपिका तथा लोकाग्रेण प्रत्युह्यते इति लोकाग्रप्रतिवादिनी सव्यागणन्यूजीवसत्सुहावहा इति ॥ प्राणा द्वित्रिचतुरिन्द्रिया इति श्रूता सार्वधो जीवा पञ्चेन्द्रिया ज्ञाया प्राणिन सत्वा उक्तञ्च प्राणाद्वित्रिचतु प्रोक्ता श्रूता य तरव स्मृता । जीवा पञ्चेन्द्रिया ज्ञेयाः शेषा सत्वा उ दीरिता ॥ १ ॥ सर्वेषा प्राणभूतजीवसत्त्वाना सुसावहा उपद्रवकारित्वाज्वाया त्सवप्राणश्रूतजीवसत्त्वसुरावहा सा च इपत्प्राग्भारा पृथिवी श्रूता श्वेतत्वमेवो पमया प्रकटयति सखदलविसलेत्यादि शङ्खदलस्य शङ्खदलचूर्णस्य विमलोनिर्मल स्वस्तिक शङ्खदलविमलस्वस्तिक स च शृणाल च द करज य तुवार च हिम च गोक्षीर च हार य तेषा मित्र वर्णो यस्या स्या तथा उत्तानकमु ज्ञानीकृत यत् ख्य तस्य य त्सस्यान येन सस्थिता उत्तानक्यतस्यानसस्थितत्वं च प्रागुपद्रवित्तस्यापनातोजायनीय ॥ सव्यजुणसुवक्त्रमयी सर्वात्मनाद्येतमुवर्णमयी इषीपद्माराणमित्यादि इंपरप्राग्ना

तण्यरीतिवा सिद्धिर्तिवा सिद्धालएतिवा मुद्गीडवा मुत्तालएडवा लोयगथूनियातिवा लोय पक्रिबुज्जणाइवा सव्यागणन्यूजीवसत्सुहावहा वडवा । इसीपद्माराण पुढवी सेता संखदलविमलसोच्छ्रिय मुखालदगरयतुसारगोखीरहारवन्ना उत्ताणयलतसठाणसठिया सव्यजुससुवक्त्रमई अक्का सरहा लरहा घठा मठा णीरया निम्मला निप्पका निक्ककरुक्काया सप्यन्ना ससिरीया सउज्जीया पासादीया दरसणिज्जा इए

तलो सिद्धान्तय सिद्धत्वात् मृत्तिकर्मणा मुक्तित्वात् मुक्तानयनोभावना ए ४ नाम गुणफलकै लोकेनेमग् लोकेनेयमिभानोपरे लोकाग ८ प्रतिवृत्त्वात् । सव्यागण भूय लोव सत्त सहाइवा । सर्व प्राण भूत लोव सत्त्वेने तिहाज्जाय तेहने सुखदाइ । इ चिप्पभाराण पठवो सेय सुखदल विमलसोत्थिय मुणान टगरय तसार गोखीरहारवक्का । १ १२ नोनान इपप्याम्मरप्य्यो कहोक्के स्वतनो घोपमा यड्डल जिपो निमल स्वस्तिक शृणाल कमलपत्र जलपरे जल नौरज स्वतगोत्र मोतीनाहार कज्जलो जेहवो दूधसम । उत्ताणयलतसठाणसठिया सव्यक्वण सुवक्त्रमई अ । सत्तान क्खेने सस्याने सस्थितके सर्व अ जूत खेन खणमय । अया सणहा लड वड्डा मडा नारया निम्माया निप्पका निक्ककरुक्काया । आक्का सुखपुद्गल मिथ्यत्र घटाराया मठाराया नौरज निमल

राया पृथिव्या ऊर्ध्वं सीयाए इति नि श्रेणिगत्या योजने लोकातो प्रयति तस्य च योजनस्य य दुपरितन गच्छूत चतुर्थं तस्य गव्यतस्य य सर्वो परितनो य द्वागो ऽवभितिवाक्यलकारे सिद्धान्तवत् सादिका कर्मक्षयानतर सिद्धत्वावात् एतेन अनादिवृद्धपुरुषप्रवादाप्रति पक्षे आवेदितो द्रष्टव्य अपयवसिता रागाद्यजावेन प्रतिपातासन्नवात् रागादयो हि सिद्धत्वा ह्यावयितु प्रवविष्यवो न च ते जगवता सति तेषा निर्मूलकापक पितृत्वात् न च निर्मूलकापकविता अपि नृप प्रादु भवति बीजानावादिति तथा नैकै जीतिजराभरणैजन्मजरासृजि यंश्च तामु योनिषु ससार ससरण तेन च य कलकलोभाध कदयमानता य च दिव्यसुरमनुप्राप्ताना मपि पुनर्भव ससारे गर्भवसति प्रपञ्च तो समस्तिकाता अत एव शा

निरुवा पङ्क्तिरुवा इसीपञ्जाराण सीताएजोयणमिलीगतीतस्सण जोयणस्स जेसे उवरिल्ले गाऊए तस्सण गाउयस्स जेसे उवरिल्ले लप्रागे एत्यण सिद्धा जगवतो साटिया अप्पज्जवसिया अप्पेगजातिजरामरणजो निससारकलकलीजावपुणप्पवगप्पवासवसही एवच समइक्कता सासयमणागयद्ध काल चिठ्ठति, तत्थविचयेते

नि पट्ट निर्वकटच्छाया । सयभा सक्किरिया सल्लोया पासाईया दरसक्किजा अभिरुवा पङ्क्तिरुवा मायाए । प्रभासहित सञ्चीक यो भायमान उद्योतसहित मनप्रसन्नकारी देवदायांगय अभिरुप प्रतिरुप ईषयाभारनो माया । जायणक्किजोयतो तस्सण जोयणस्स जेसे उवरिल्लगाउण तस्सण गाउयस्स जेसे उवरिल्ले लप्रागे । योजने सांकाते ते योजने जते जपरिलोभाज छहलो ते गाज्जो जे जपरिलोगाऊनो छद्वाभाग । एत्यण सि द्वाभयवतो साईया अप्पज्जवसिया । तिहा सिह भगवत्त सोधाकर्मचये अनादिपरये दोठा कक्षा अपयवसित रागादिजन अभाव पाऊो जपजवो । अप्पेगजादजरामरण जोपिससार कलकलीभाव पुण्णव गभवाससही । चनेक्काति जरामरण्यानि ससार तेहनो कलकली कदयभाव मूको दिव्यसख पाय्या पुनर्भवससारे गर्भनो वसति प्रपंचकरीने, वसे । एवच समयके तासासयमणागयद्धकाल चिठ्ठति । इम समय तिका ते तेणे दुखआकम्पनयो एतले गालत अनागतकालपयत रक्षाकै तिहाथो तेठामनो चयनयो । तत्थविचयेते अवेया अवैयानानिम्माना । तिहा सिद्धेच पट्टाकै भगवत्त ते वेदरहित

युतम नागत काल तिष्ठति ॥ तस्य विपत्तेश्च वेद्यादित्यादि ॥ तत्रापि च सिद्धमेव गता संत स्ते प्रगवतो ज्वेदा पुरुषवेद्यादिवेदरहिता अवेदना सा तासातावेदनात्रावात्, निर्ममममत्वरहिता असगा बाह्याभ्यन्तरसङ्गरहिता, कस्मादेवमतश्चाह-ससारविप्रमुक्ता हेतो प्रथमा यत ससारादि प्रमुक्ता स्तस्मादेवेदा अवेदना निर्ममा असगाश्च, पुन कथं भूता इत्याह-पयसनिवृत्तसंस्था ॥ प्रदंशे रात्माप्रदेशं नंतु बाह्यपुद्गलं शरीरपञ्चकस्या पि सर्वात्मना त्यक्तत्वात्, निवृत्त निष्यन्न संस्थान येवाते प्रदेशनिवृत्तसंस्थाना अत्र शिष्य पृच्छन्नाह-कहिपदिश्यासिद्धा इत्यादि ॥ कहि इत्यत्र सप्तमी तृतीयायाम् कृतत्वात् ॥ यथा तिसु तिसु अलकियापुढवी इत्यादि ॥ ततोयमर्थे -केन प्रतिहता केन सूचलिता सिद्धा मुक्ता स्तथा क्व कस्मिन्

अवेदा अवेयणा निम्नमा असगाय ससारविष्यमुक्ता पदे सनिवृत्तिसंस्थाणा । कहिपदिश्यासिद्धा कहिसि
क्षापड्डिध्या । कहिंवीदीचइत्ताण कत्यगतूणसिज्जइ ॥ १ ॥ अलोएपदिश्यासिद्धा लोयगोयपड्डिध्या ।
इहवीदीचइत्ताण तत्यगतूणसिज्जइ ॥ २ ॥ दीहवाहस्सवा जचरिमन्नवेहविज्जासंठाण । तत्तोतिज्जागहीणा
सिंठाणोगाहणांनिणिया ॥ ३ ॥ संठाणंतुइहं जवचयतस्सचरमसमयम्मि । असीयपदेसघण तसंठाणतहिं

वेदनारहित ममतारहित । असगाय ससारविष्यमुक्ता एससनिवृत्तिसंस्थाणा २ । बाह्याभ्यन्तर सगरहित ससारवीमुक्ता आत्मप्रदेये बाह्यपुद्गल ५ शरी
र संस्थान रहितकै । कहिपदिश्यासिद्धा कहिंवीदीचइत्ताण कहिंवीदीचइत्ताण कत्यगतूणसिज्जइ ॥ १ ॥ शिष्यपूकै किंणे प्रतिहृत केणे सकनितकै सिद्ध
किंवा सिद्धरत्ताकै किंवा बोधशरीर मूर्तीने किंवा जार्दने सोभे —अलोएपदिश्यासिद्धा लोयगोयपयड्डिगं इति बोदिषइत्ताण तत्यगतूणसिज्जइ ॥ २ ॥
अनोक्ककरो खयाकै धर्मास्तिकायादिकनो अभाव लोकागं रत्ताकै इहा मनूयनोके शरीरत्तोहीने तिहा जार्दने सोभे —दीहवाहस्सवा जचरिममवे
इविज्जसंठाण तत्तोतिभागहीणा सिंठाणोगाहणाभिणिया ॥ ३ ॥ दीव ५०० धनुष इत्थ एक्कहाय प्रमाणे जे केहलेमवे संस्थाने हुवे ते संस्थानयको विभाग
हीनपणे सिद्धी अवगाहना कहौ, दिवे सट देखाकै —जंठाणतुइहं अवचयतस्सचरमसमयम्मि असौयएणसघण तसंठाणतहितस्स ॥ ४ ॥ जे इहा म

स्थाने सिद्धा प्रतिष्ठिता अस्ति, तथा क्व कस्मिन् क्षेत्रे वोदि स्तु शरीरमित्यन्यतरं तां त्यक्त्वा क्व गत्या सिद्ध्यन्ति निष्ठितार्थो जयति, सि
 ऋतुइत्यत्रास्तुस्वारलोपो द्रष्टव्य, अथैकैकचनोपन्यासापि सूत्रज्ञेयत्वा न विरोधनाक् तथाचान्यत्राप्येव प्रयोग -वत्ययमलकार इत्युत्तमयणाश्रयः ।
 अष्टद्वयजननमिति न संवाहसिद्धिर्बुद्धं इति । एवं शिष्येण प्रश्न कृते मूर्तिराह-अलोपपरिहृत्यासिद्धा इत्यादि ॥ अत्रापि सप्तमी वृत्तौयार्थं, लोकेन
 कथलाकाशास्ति कायकूपण प्रतिष्ठता स्थलिता सिद्धा इह तत्र चर्मास्ति कायाद्यन्नावा तदानतयावृत्तिरेव प्रतिष्ठलनं नतु स्वधसति विचातो
 ऽप्रतिचत्वात्, समतिष्ठामाणि सधपंसति विचातो नान्यपामिति । तथा लोकस्य पञ्चास्ति कायात्मजस्य अग्र मूर्ध्नि प्रतिष्ठिता अपुनरागत्या
 व्ययस्थिता इह मनुष्यनोके वोदि तनु त्यक्त्वा तत्र लोकाग्र समयात्तरप्रदेशात्तरास्पृशनेन गत्या सिद्ध्यन्ति निष्ठितार्थो जयति, सम्प्रति तनगतानां
 यत्सुत्यानमानं तदनिधिदनु राह-दीर्घाहस्मवा इत्यादि ॥ दीर्घं वा पञ्चधनु शतप्रमाणं इत्यत्र वा इहस्मद्वयप्रमाणं, वा शब्दात् मध्यमत्रा विधिर्न य
 श्वरमन्त्रे यच्चिमन्त्रे जवेत् सस्यानं तत् सस्या तस्यैव चित्रागर्हीना वदनोदरादिरध्रपूरणेन वृत्तीयनं ज्ञानेन हीना सिद्धानामवगाहना अवगा
 हने अस्यामित्यवगाहना स्वावस्थीयं भविता तीर्थं करुणपदैरिति, अत्र गतं सस्यानं भ्रमशापेक्षया त्रिज्जागर्हीनं तत्र सस्यानमिति भावः, सतदव
 स्पष्टतरमुपदेशोपति-जसठाणतु इह इत्यादि ॥ यत्सस्यानं यावत्प्रमाणं सस्यानं इह मनुष्यजवे भासीत् तदत्र, भवति प्राणिनं कमवशवृत्तिर्नो ऽ
 भिमिति जव शरीरं त्यज्यत परित्यज्यत काथयोगं परिरिज्जितानस्यति भावः, धर्मसमये सूक्ष्मक्रियाप्रतिपातिष्यानवलनं वदनोदरादिरध्रपूर
 णाच्यमानेन हीनं प्रदशयनमासीत् ॥ तदव च प्रदशयनं मूलप्रमाणापेक्षया त्रिज्जागर्हीनप्रमाणं सस्यानं तत्र लोकाग्रे तस्य सि

तस्मिन् ॥ ४ ॥ तन्निशयान्तंतीसा धनुस्त्रिज्जागोयहोडनायहो । एमाखलुसिद्धाण उक्कोतोगाहणाज्जगिया ॥ ५ ॥

चत्तारिपरयणीनुं स्वणिंतिज्जागूणिथायवोधह्वा । एमाखलुसिद्धाणं मज्झिमोगाहणाज्जगिया ॥ ६ ॥ एमाय

नयनवे भस्य तद्वे तं भवे कर्मन्वे यरोरए णीने छेद्वनममं सूक्ष्मक्रियाध्यानं वदनोदररश्मिं पूर्य कश्चित् घनत्रासीत ह्ये तं प्रष्टव्यं घनमूलं प्रमाणपेक्षाये

दस्य ना न्यदिति । साप्रतमुरुष्टावगाहनादिभेदभित्ताम जिघत्सु राह-तिद्विसयातितीसाहत्यादि ॥ त्रीणिगतानि त्रयस्त्रिंशानि त्रयस्त्रिंशदधिकानि धनुस्त्रिभागश्च भवति योऽहुय्य एषाखलु सिद्धाना मुरुष्टावगाहना त्रिणिता तीर्थकरगणधरे सा च पञ्चधनु शततनुकानाम वसंया, ननु मरुदेवा नात्रिकुनकरपत्नी नात्रे थ पञ्चविणत्याधिकानि पचधनु शतानि शरीरप्रमाण यदेवच तस्य शरीरमान तदेव मरुदेवाया छापि, सचयण सठाण उच्च न चैव कुलगरेहिसममितवचनात्, मरुदेवाच लगवती सिद्धा तत स्तस्या दहमानस्य त्रिज्ञाने पातिते सिद्धावस्थाया सादुर्नि त्रीणि धनु शता न्नेवाऽगाहना प्राप्नोति कथ मुक्तप्रमाणा उत्कृष्टावगाहना घटते १ इति नैयदाय मरुदेवाया नात्रे किंचिदूनप्रमाणत्वात्, त्रियोऽधुतमसस्याना उत्तमस्यानेन्य पुरुषेन्य स्व २ कालापेक्षया किंचिदूनप्रमाणा जयन्ति ततो मरुदेवापि पचधनु शतप्रमाणेति न कश्चिदोप, अपिच हस्तिरसम्भ्या थिरुढा सकुचितागी सिद्धा तत शरीरसंकोचनज्जावा लायिकावगाहनासन्न इत्यविरोध, आहच प्राप्यकृत्-कहमरुदेवामाण नात्रीतोऽत्राकिंचि

होडर्यणी अठेवय्यगुलाइसाहियाईया । एसाखलुसिद्धाण जहन्तोगाहणात्रिणिया ॥ ७ ॥ नंगाहणाएसिद्धा

त्रिभाग हीनरुस्थानहवे, हिवे ५०० धनुपचपेक्षाये ३ ३३ धनुय ऊपर धनुपनो चीजाभाग सिद्धनो भवगाहना हवे-ति, त्रसयतेत्तीसा धनुस्त्रिभागोद्वा इताऽवो एसाखलुसिद्धाण चकासांगाहणाभणिया ॥ ६ ॥ ५०० धनुपनो कायाये सिद्धहवे तेहनो ए निसै सिद्धनो उत्कृष्टअगगाहना कहो । चसारिवरय पोसो रयणतिभागूणिआयसोऽधेवा एसाखलुसिद्धाण मज्झिमशीगाहणाभणिवा ॥ ७ ॥ हिवे ७ हाथनो भवगाहना हवे तेहनो सिद्ध यणि एतलो भवगा हना ४ हाथना चाजाभाग, ऊणीहुवे जहवी ७ हाथ देहहव ए निसै सिद्धनो मध्यमकडो भवगाहना --एगायहोऽरयणो अठेवय्यगुनाइ साहिईया एसाखलु सिद्धाणजह्णिगीगाहणाभणिया ॥ ८ ॥ हिवे साठेनोऽहाथनो देहीहुवे तेहनो भवगाहना कड्डे एक जपर हाथ आठअगुनो कड्डे साटा तोन ए जण हाथ देहीहुवे ए निसै सिद्धनो जवन्यवगाहना भगवन्तेकडो--उगाहणाऽसिद्धा भवत्तिभागहनुतिपरहोणा सठाणमणेकथा जरासर पाविण्णमुहाण ॥ ९ ॥ जेहनो भवगाहनये सिद्धा तेहनो भवगाहनाथको विभागवदनोदरादि पूर्णकड्डेये पूर्णकरो हीन हुवे सस्थान भनकेकरो खु खे

दूणासा तोकिरपचसपक्षिय अद्दवासकोघतोसिद्धा । उषत्तारियरयणीं इत्यादि ॥ चतस्रोत्तमो रविश्च त्रिजागोना च ॥ सा योषद्वायसाखलुसिद्धाना
मवगाहना प्रणिता मध्यमा आह-अपन्यपद स' तोच्छित्ताना मागमे सिद्धि रक्ता तत एषा जघन्या प्राप्नोति कथ मध्यमा तदयुक्त वस्तुतत्त्वाप
रिष्ठानात्, अपन्यपदेदि सप्तहस्ताना सिद्धि ।। तार्थेकरापक्षया सामान्यकवलना तु हीनप्रमाणानामपि जवति इदमपि चावगाहनामान चित्य
ते सामान्यसिद्धापेक्षया ततो न कश्चिदपि, एगायनेयइत्यादि ॥ एकारनि परिपूर्णा ऋषी चागुलान्याधिकानि एषा जवति सिद्धा नामवगाहना
जघन्या साच कूर्मापुत्रादीना द्विहस्तानामवसेया, यदिवा सप्तहस्तोच्छित्तानामपि यन्त्रपीलनादिना सर्वात्तित्तरीराणा मापच जायकत्-जैष्ठ्यापच
यणुसप मज्जायसप्तहस्तस । देहर्तित्तजगहीणा जह्ननियानाविहस्तस ॥ १ ॥ सप्तसिंघसुसिद्धी जह्नन्तोऽपमिहविहस्त्येसु साकिरतित्यपरेसु संस्वाणि
क्कमाणाश्च ॥ २ ॥ तेषुण्णोऽज्जाविहत्या कुम्मापुत्तादयोऽजह्नेण । अजसुयन्त्रियसत्त हत्यसिद्धस्सहीणसि ॥ ३ ॥ सामतमुक्कानुद्यादेनैव लक्षणं सिद्धानाम
निधिदिसुरा-उगाहणाइत्यादि ॥ सुगम, नवर-अन्यत्यभिर्माते ॥ इदं प्रकारमापन्नमित्य इत्य तिस्रतीति इत्यस्य न इदथेस्य छानित्यस्य वदना
दिशुपिरप्रतिपूर्णेन पूर्वोकारान्ययात्वप्रावतो अनियताकारमिति जाव, योपिच सिद्धादिगुणेषु, चिद्धेनदीहेनस्सहस्यदिना, दीपत्वादीना प्रति
पद्य सोपि पूर्वोकारापेक्षया सस्यानस्यानिरथस्यत्वा त्प्रतिपत्तयो नपुन सर्वथा सस्यानस्यान्नायत आहच जायकत्-सुचिरपक्षिपूरणात् पुद्गानार
लक्षवयत्यातो । सठाणमणित्यथ जंजणियश्रणिमयागार ॥ १ ॥ सत्तोषियपक्षिसेहो सिद्धाङ्गुणेषुदीह्याईण जमणित्यथपुद्गा गाराधिकस्याना
जावो ॥ नन्वेतिसिद्धा परस्पर देवाज्जेदेन व्यवस्थिता उमति नेति तद्ब्रूम कस्मादिति वेत् ॥ जत्यइत्यादि ॥ यत्रैव देशे च शब्दस्य व्यवकाराय

भवतिन्नागेणेहोइपरिहीणा । सठाणमणित्यथ जजरामरणविष्यमुक्ताण ॥ ८ ॥ जत्यपगोसिद्धो तत्यच्चुण

रादि प्रयेकगे जरामरण विप्रमृक्तपणेकरो सिद्धयाव-जत्यपगोसिद्धो तत्यच्चुणताभवक्खयविमुक्ता अणाणसमोगाटा पुष्तामव्येवल्लोगते ॥ १० ॥ जिद्धा
एक सिद्धे तिरा अनत्तासिद्ध भकजवयको मूक्ताया निहस्वेभावे करोरक्षाकै पिय किम भन्नोन्न समवगाटपणे अचित्तपरिणाम भणो धर्मात्तिकायनीप

त्यात्, एक सिद्धो निर्धूत स्तानन्ताप्रवक्ष्यविमुक्ता अत्र प्रवक्ष्यगृहणेन स्वेच्छया प्रवावतरणशक्तिमत्सिद्धयवच्छेदमाह-अन्योन्यसमवगाढा स्तथा विधाचिन्त्यपरिणामत्वा इमोस्ति कायादिदवत्, तथा स्पष्टा सन्ना सर्वेपि लोकाते फुसइत्यादिस्पृश्यनतान् सिद्धान् सर्वप्रदेशे रालसवधिनि यमश सिद्धु तथा तेषि सिद्धाः सवप्रदेशस्पृष्टयोऽस्ययगुणा वसन्ते ये देशप्रदेशे स्पृष्टा कथमिति चे दुष्यते, इहैकस्य सिद्धस्य यदवगाढनक्षेत्र तत्रैकस्मिन्नपि परिपूर्णं अवगाढा अन्येष्यनन्ता सिद्धा प्राप्यते अपरतु ये तस्य क्षेत्रस्य एकैक प्रदेशमाक्रम्यावगाढा स्तेपि प्रत्येकमनता एव द्वि त्रिचतु पञ्चादिप्रदेशयुक्त्या ये ऽवगाढा स्तेपि प्रत्येकमनता स्तथा तस्य मूलक्षेत्रस्य एकैक प्रदेश परित्यज्य ये ऽवगाढा स्तेपि प्रत्येकमनता एव च सति प्रदेशवृद्धिरानिष्या ये समवगाढा स्ते परिपूर्णैरक्षेत्रावगाढैर्योऽस्येयगुणा प्रवसन्ति अवगाढप्रदेशाना मसङ्ख्यातत्वात्, आहय-एगेखेत्तेणता पणसपरिवृद्धीहाणिन ततो। एतिससरेज्जगुणा अससपणोजमवगाढो॥ सम्प्रति सिद्धानेव लक्षणत प्रतिपादयति-असरीरा इत्यादि॥ अविद्यमानश

तानवस्त्रयविमुक्ता । ध्यन्नोन्मसमोगाढा पृठासखेत्रिणीयते ॥ ९ ॥ फुसइच्छणतेसिद्धे सखपणसेहिनियमसो सिद्धा । तेषि ध्यसखेज्जगुणा देसपदेसेहिजेपुठा ॥ १० ॥ ध्यसरीराजीवघणा उवउत्ताटसणेयनाणेय । सागा

रे फरस्वाच्छे लोगतान्तकर्म करीने फरसे अनन्तासिद्ध सर्वप्रदेश ते मिह सर्वप्रदेश सार्थोयको असख्यातगुणा ज प्रदश फरसा किम कहि य एक सिद्धनो जे प्रवगाढाचर्चै एक प्रतिपूर्ण अवगाढै अनन्तासिद्ध इवे बीजानेन एकैक प्रदेशअवगाढने प्रत्येके प्रनन्ता तथा —फुसअणतेसिरे सख पणसहितियमसिद्धो तेषि वसखेज्जगुणां देसपणसेहिजेपुठा ॥ ११ ॥ जिम विणचार प्रदगहदि जे अवगाढना ते प्रत्येके अनन्ता तथा मूलक्षेत्र एकैक प्रसिद्ध प्रदेश पत्तियागअवगाढ ते अनन्ता इमच्छे ३ । ४ प्रदश जीनने अनन्ताप्रदेश सहिदान जहे गाथा—कहमकदेवामाणतो नामौतोकिविदूणमाणासा किरप वामयविय अहवामकावतोसिद्धा ॥ १ ॥ सगदेवो ५२५ यरोरसिद्धो ३३९ एवेमयाट सकोचलात् प्रमाण औदारिकयरोर पाच रहितजीव घणा वट नादिरग्ध परणादिक उपवागसहित दर्यनकरी ज्ञाने सामान्यविषय दर्यनविशेष ज्ञान साकारीपयोग अनाकारीपयोगसहित सुखसिद्धीने हिने केवल

रीरा अशीरीरा श्रीदारिकादिपञ्चविधरीररहिता इत्यर्थे , जीवाश्च ते घनाश्च वदनोदरादिशुषिरपूरणात् जीवघना , उपयुक्तादर्शने केवलदर्शने
ज्ञाने च केवलज्ञाने यद्यपि सिद्धत्वप्रादुर्भावसमये केवलज्ञानमिति ज्ञान प्रधान तथापि सामान्यसिद्धलक्षणमेतदिति ज्ञापनार्थं मादौ सामान्यालम्ब्य
दर्शनमुक्त , तथाच सामान्यविषय दर्शन विशेषविषय ज्ञानमिति , तत साकारानाकार सामान्यविशेषोपयोग्योऽरूपमित्यर्थ , सूत्रे मकारो लाक्षण
को सऽत्र तदन्यथावृत्तित्वरूप मेतत् अन्तरीक्त तु शब्दो ब्रह्ममाणिरुपमसुखविशेषणार्थ , सिद्धाना निमित्तार्थाना मिति , सम्प्रति केवलज्ञा
नदर्शनयो रक्षोपविषयता सुपदर्शयति- केवललक्षणवृत्ता इत्यादि ॥ केवलज्ञानेनोपयुक्ता नत्यन्त करणेन तदज्ञायादिति , केवलज्ञानोपयुक्ता ज्ञात्य
वगच्छन्ति , सर्वज्ञावगुणज्ञावान् सर्वपदार्थगुणपयायान् प्रथमो ज्ञावशब्द , पदार्थवचनो द्वितीय पर्यायवचन , गुणपर्याययो रत्यय विशेष -सत्
यतिर्नो गुणा ऋमवत्तिन पयाया इति , तथा पश्यति सर्वत रलु सनुशब्दस्या वधारणात् । सर्वतग्व केवलदृष्टिनि रनतानि रनतै केवलद
र्शने रित्यर्थ , केवलदर्शनाना चानतता सिद्धानामनतत्वात् , इहादौ ज्ञानग्रहण प्रथमतया तदुपयोगस्था सिद्धान्तोति ज्ञापनार्थ , सम्प्रति निरु
पमसुखप्राप्त स्तै इति दर्शयति-नविश्रान्तिइत्यादि । नैवास्ति मनुष्याणा चमवर्त्त्योर्दोनामपि तत्सौख्य नैव सर्वदेवाना मनुत्तरपर्याप्तानामपि य

रमणागार लस्कणमेयतुसिद्धाण ॥ ११ ॥ केवललक्षणवृत्ता जाणतीसर्वज्ञावगुणज्ञावे । पासतिसर्वज्ञलु
केवलदिष्टीहिणताहि ॥ १२ ॥ नविश्रान्त्यिमाणसाण तसोस्कनल्यिसर्वदेवाण । जसिद्धाणसुख झुवावाहउ

ज्ञान दर्शननाविषेय देखाहे-असरीराजोवधवा उवउत्तादसंखेयनाथेऽ सागारमणागार लस्कणमेयतुसिद्धाण ॥ ११ ॥ केवलज्ञानेसिद्धित जाणवा सर्वगु
णतापर्याय सहस्रवर्त्ती गुणकर्मवर्त्ती पर्याय तेहन देखै सकलखलुगदस्य अवधारणार्थे केवलदीठो अनत केवलदर्शन अनन्तादर्शन सिद्धवर्त्ती इहा प्रथम
ज्ञानगृहण उपयाग पिणसोभे इम जाणवो बर्थे निरुपम सुखभाजनकै ते देखाहेके केवल दीवानाचर्थ कळोनथी मूळा मनुष्येने चक्रवर्त्तीटिककै-केव
लनाणवउत्ता जाणतीसर्वभावपासती सुखेणसर्वश्रोखलु केवलदिष्टीअणताहि ॥ १२ ॥ नविश्रान्त्यिमाणसाण तसुखनविउसर्वदेवाण जेसिद्धाणसुख झुवा

रिसिद्धाना सीत्यमज्यायाधामपगतानां न विविधा अत्राधा श्रव्यावाधा ता मपसाभीष्येन गताना प्राप्तानां यथा नास्ति तथा जग्योपदशंयति-सु
रगणसुहर्मित्यादि ॥ सुरगणसुख देवसपातसुख समस्त संपूर्ण श्रुतीतानागतवर्तमानकालोद्भवमित्यथ , पुन सर्वोद्गापिपिकृत सर्वकालसमयगुणित
तथा नतगुणमिति , तदेव प्रमाणा किलासकल्पनया एकैकाकाशप्रदेशे स्थाप्यते , इत्येव सकलाकाशप्रदेशापुरणेन यद्याप्यनत प्रवति तदनन्तरमप्य
नतैर्वर्गे वर्गितम् तथाप्यव प्रकर्षगतमपि मुक्तिमुख सिद्धिमुख न प्राप्नोति , अतदेष स्पष्टतर जग्यतरेण प्रतिपादयति-सिद्धस्सुहोरासी इत्यादि ॥
सुराना राशि सुखराशि सुखसङ्घात सिद्धस्य सुखराशि सिद्धसुखराशि सर्वोद्गापिपिकृत सवया साद्यपर्यवसितया अद्वया यत्सुख सिद्ध प्रति
समयमनुजयति तदेकत्र पिण्डीकृत मितिज्ञाव , सोनतवर्गजक्तो उनतैर्वर्गमूलै रपवर्तित अनतैर्वर्गमूलै स्तावदपवर्तितो यावत्सर्वोद्गालक्षणेन गु

वगयाण ॥१३॥ सुरगणसुहसम्मत सव्रक्षापिफियञ्चणतगुण । नविपावइमुत्तिसुह णंताहिविवग्नगवग्गूहि ॥१४॥
सिद्धस्सुहोरासी सव्रक्षापिफिएजइहविज्जा । सोणतवग्नग्नइउं सव्वागंसेणमाइज्जा ॥ १५ ॥ जहनामको

वाइइवगयाण ॥ १४ ॥ नद्यो सुख तेइवो देवताना इन्द्रादिकन जेइवो सखप्रसिद्धे नद्यो व्वाइवाधा जं सिद्धने उपसमो गतिके--सरगणसुहसम्मत स
व्रक्षापिफियञ्चणतगुण नविएवियमुत्तिसुह अणतेहिवग्नगवग्गूहि ॥ १५ ॥ देवतानासघात सपुसमस्त यतीता नागत वर्तमानकालो हुवे जेतलामुख सर्वा
वपिपिण्डित सर्वकालसमय गुणित अनन्तगुणेने प्रमाणके असल्लक्ष्यनये एके एकाकाशप्रदेशे यापिये इम सखल्लोकाकाशप्रदेशे शरीरे जे अणुयाय ते अन
न्ता गिणिये ते गिणतायकाने अवगाढ ते परिपूर्ण जेवावगाढंयको असख्यातगुणा हुवे अवगाढप्रदेशे असख्यातवर्ती उक्तं--० गेखेत्यता अपपसपरि
वट्टेइहाणिओ तत्तोहाणीओ तत्तोइवात असखिल्लगुणा असखपएसो जसवगाढो, हिवे सिद्धनीलक्षण कइके--सिद्धस्सुहोरासी सव्रक्षापिपिण्डोअइह
विज्जा सोणतवग्नग्नइवो सव्वागंसेनमाइज्जा ॥ १६ ॥ सिद्धना सुखनीराशि सर्वा व्वापिण्डित सर्वसादि अपर्ववसितपणे मोचनासुख समवड तथा हिवे स्य
एपणेभाण देखाइके, तेसिद्ध सम्मसमये अनुभव ते एकठाकीजेते गुणाकार अनन्तवर्गे भजिये तो सर्व बोकाणाग्रसमाने, हिवे एइयासुख अनात्ताके--ज

एकारेण गुणने यदधिक जात तस्य सर्वस्याप्युत्तरे सिद्धत्वा च समयत्राविमुखमात्रता प्राप्त इति ज्ञाय , सर्वाकाङ्क्षो न माति यतायन्मात्रेपि सर्वो
काङ्क्षो न माति सबस्तु दूरापास्तप्रसरं भवति ज्ञापनार्थं , इयमत्रावना-इह किल विशिष्टाह्लादरूप सुखं प
रिगृह्यते ततश्च यत आरभ्य क्षिप्तानां सुखशब्दप्रवृत्तिस्तस्मात्तादमधिकृत्य एकैकगुणवृद्धितारतम्येन तावदसावाह्लादो विशिष्यते यावदनन्तगुण
वृद्ध्या निर्दिशयनिष्ठा मृगगत सोय मत्पतापमार्तीतेकातौस्सुखविनिवृत्तिरूप स्थितिमतमकल्प्य चरमाह्लाद सदा सिद्धानां यस्या चारत
प्रथमा चाद्धमपातरालगतिर्नो ये गुणा स्तारतम्यना ह्लादविज्ञापरूपा स्ते सर्वाकाङ्क्षप्रदेशेभ्यो व्यतिर्भूयास स्तत किलोक्त-सद्वागासेनमाश्रज्जा
इति ॥ अन्यथा तत्सवाकाङ्क्षो न माति , तत्प्रथमकस्मिन् सिद्धे मायादिति पूजसूरिसप्रदाय ' साम्प्रत मस्य निरूपमता प्रतिपादयति-जहन्नामेत्या
दि ॥ यथा नाम कश्चिन्मन्त्रो नगरगुणान् ग्रहनिवासादोन् बहुविधान् अनेकप्रकारान् विधानन् अरण्यागतं सन् अन्यस्रब्धेभ्यो न ज्ञातीति परिक
रयितुं कस्मा न ज्ञातीतीत्यत आह-उपमाया तत्रासत्या निमित्तकारणहेतुषु सवासा विज्ञातीनां प्रायो दशनमिति न्यायात् ऐतौ समसौ' तत्र उ
पमाया अत्रायादिति द्रष्टव्य , उपमायाज्ञारार्थं , ज्ञावाय कथानकादवसयस्तच्चद-मगोमत्तरखगोमी मिच्छो रणे चिहति इतोय रगोराया आसेण

इमिच्छो नगरगुणवृद्धिजिज्ञाणतो । गत्रएडपरिकहेउ उवमाएतहिच्यसतीए ॥ १६ ॥ इयसिद्धाणसोखं च्य
णोत्रमनत्यतस्सनुवमम । किञ्चिन्निमंसणितां सारिक्कमिणसुणहोत्य ॥ १७ ॥ जहसह्मकामगुणिय पुरिसो
नोत्तणनीयणकोड । तरहलुहाविमुक्को च्छिक्खज्जहाच्यमियतिती ॥ १८ ॥ इयसह्मकालतिता च्छुउलनि

इत न नार्मिच्छो नगरगुणवृद्धिविविधानतो नत्रप पक्खिहया उवमाणतहिचसतीए ॥ १७ ॥ जिम नगरनोवासो म्लेच्छनगरना गुणवणा ते वनवासो
म्लेच्छ आगले अणलाणता आनकहेतो ते कडो नसको नगरना चूर्णं न कस्मिन् न पमा वनमा-इसो कडो देखाडि, अकतावती कृतोवसु वनमे का
इतिदत्ते प टटोते करो -- इयसिद्धाणसु अणोत्रमनत्यतस्सआवय सारिक्खमिणमनोदय ॥ १८ ॥ एहवा सिद्धनासुख उपमारहित

अत्यन्तान्निव्याय तवेकमवलगद्वय ॥ १ ॥ तत कर्मोदिसिद्धा व्यपोगायाए-वद्वायति ॥ अज्ञाननिद्राशुषेअत्यपरोपदेशेन जीनादिरूप तत्त्व
सुदृवतो यदुग मधनमवर्दाशास्वनावत्रोधरूपा इतिज्ञाव , गतेपिच ससारनिवाणानयपरित्यागेन स्थितवत , कैथिदिप्यते-ससारे न य निर्वाणे ,
स्थितो युयुजूनय अचिन्त्य सर्वलोकाना , चित्तारत्नापिकोमज्ञानि तिउचवात् , तत स्तान्निरासायमाह-पारगताइति ॥ पार पयत ससारस्य प्रयो
जनत्रातस्य वा गता पारगता , तथा प्रव्यत्वावितसकलप्रयोजनसमास्या निरवत्रेयकत्तव्यशक्तिविप्रमुक्ता इतिज्ञाव , इत्यजूनता अपि कैथिन् य
दृष्ट्यायादिनिरक्रमसिद्वत्यनापि गीयते , तथोक्त-नैकादिसङ्गकमतो चित्तप्रतिनिर्गोत । दरिद्राज्यासिससा तदुन्मुक्ति क्षीयिककि ॥ १ ॥ तत
स्तान्तयवोहायाए-परस्परगता इति ॥ परस्परया ज्ञानदशनधारिन्नृपया मिय्यादुष्टिसासादनसम्यग्भिय्यादृष्ट्यविदितिसम्यग्दृष्टिदेवतिप्र
मत्तनिश्चत्यनितृत्तिवाइरसम्यरायसुस्नसम्यरायोपशाक्तमाएलीणभोइसयोगिकजत्ययागिकवलिंगुगस्थाननेटनितया गता , यतच कैथि तत्त्वतो नुन्मु
क्तक्रमकृत्वा अच्युपगम्यन्त तीर्थनिकारदज्ञानादिहागच्छतीति यद्यनत पुन ससारवतरणान्मुबगमा दत स्तन्तापाकरणायमाए-उन्मुक्तक्रमकथचा
इदमायत्यना पुनन्नरूपतया मुक्त परित्यक्त कर्मकथमिव कमकथय ये स्ते उन्मुक्तकर्मकवचा , अत यव अत्ररा शरीराज्ञावतो जरसोऽनायात् ,
अमरा अशरीरत्वाइव प्राणत्यागसमायात् , उक्तव्य-वयसोहागीइजरा पाणशाश्रुयमरणमादिह । सइदन्मितदुजय तदनायेनकसंवेध ॥ १ ॥ ॥

निर्वाण पंडिता सिद्ध साम्यतो प्रतिपातनाग्रभाव प्रबाधो निगारप्रवाधा नहो जिह्वा गतले सुपुपास्या गतले लखैरहेकै, द्विवे त्रिगोपपणे वत्वाणैश्चै- सि
इतिउचयति पारगतिवदपरपरगतिय समककमकवया अत्ररात्रमरात्रमाय ॥ २१ ॥ सौधाक्रम गमकराने अश्रु ननिद्रा गूनी जाण्य छै ससारनोपार
पाम्याकै परपरये निथ्यात्व १ सास्वादन २ जा रीदोमो ययोगीगुण्टाणे परपरविचटने भोगाकै मव्याकै कर्मनाकवच वले इतपणेकरी वले मव्याकै
कर्मकवच गरीरभावे जरानोग्रभाव अमरु अगरीरोम टे वाज्जाअन्तरमगरहित-निच्छिक्कन-उदक्का जाइजरा मरणवधर्थासमुक्ता अइवावादुमन्व अ
पुइवरसासयसिद्धा ॥ २२ ॥ छै निच्छिक्कण सर्वदुखयको नाथकै जाति जरामरण कर्मनाबन्धनयो मक्काणा प्रबावाविना सुपुप्रति पाम्या एइवा सास

सगा बाह्याभ्यन्तरसद्गुरहितत्वात् ॥ निष्क्रियत्वादि ॥ निस्तीर्णं लङ्घित सर्वं दुरा ये स्ते निस्तीर्णसर्वदुःखा ' कुत इत्याह-जातिजराभरणवचनवि
मुक्ता ॥ जाति जन्म जरा वयोहरानिस्तत्तुणा मरण प्राणत्यागरूपं दान्यनानि तत्त्वित्यन्तरूपाणि कर्माणि त्रि विंशोपतो निशोपागमनेन मुक्ता जाति
जराभरणवचनविमुक्ता, हेताविय प्रथमा, यतो जराभरणवचनविमुक्ता स्ततो निस्तीर्णसर्वदुःखा कारणाच्चावात्, ततो व्यापार्य सौख्यं शाश्वत
सिद्धिं अनुब्रूयन्ति ॥ इति श्रीमत्सगिरिविरचिताया प्रज्ञापनाटीकाया द्वितीय पद समाप्त ॥ २ ॥ व्याख्यात द्वितीयपदं मधुना
तृतीय मारज्यते-तत्सचाय मजिसम्बन्ध, इह प्रथमे पदे पृथिवीकायिकादय प्रज्ञा, द्वितीये ते मय स्वस्थानादिना चिन्तिता अस्मिन्नु तया
दिग्गजादिना अल्पवृत्त्यादि निरूप्यते, तत्रेमादौ द्वारसंग्रहाद्याह्य-दिशिगडदिकामण्डल्यादि ॥ प्रथम दिग्द्वार १ तदनन्तर गतिद्वार २ तत
इन्द्रियद्वार ३ तत कायद्वार ४ ततो योगद्वार ५ तदनन्तर वेदद्वार ६ तत कर्मायद्वार ७ सम्यक्द्वार ८ तदनन्तर ज्ञानद्वार ९
ततो दर्शनद्वार ११ तत समयद्वार १२ तत उपयोगद्वार १४ ततो ज्ञापकद्वार १५ तत परित्त इति, परीता प्रत्येकशरीरिण
शुक्लपाक्षिका य तद्वार १६ तदनन्तर पर्याप्तिद्वार १७ तत सूक्ष्मद्वार १८ तदनन्तर सञ्जिद्वार १९ ततो ॥ अत्रचिद्विद्वार २० ततो स्तोति

मुक्ता । अन्नात्राहसुकं अणुहोतीसासयसिद्धा ॥ २१ ॥ त्रितिय पद सम्मत्त ॥ २ ॥
दिसिगइइदियकाए जोएवैएकसायलेसाय । सम्मत्तणाणदसण संजयउवउंलगञ्जाहारे ॥ १ ॥ आसणपरित्तप

ता सन्नुमति पात्या तेहवाससु अनुभवहे ॥ पणवणाणठाणपणितिसम्बन्ध २ ॥ इति श्रीप्रज्ञापनाख्याना पञ्चवणाउपागेदितोउपट समाप्तपद्यो देवता
मत्तुथ नारको तिरवत् इत्यातस्थानक विउरा ॥ २ ॥ दिसिगइइदियकाण लोणवेणजसावलेसाए सम्मत्तणाणदसण सजउउवउंलग
जाहारे ॥ १ ॥ दिसिगइइदियकाण कामद्वार इद्विगद्वार कामद्वार योग वेद कपाग लेखा सम्यक्क ज्ञान दर्शन मत्त उपयोग आद्वार १४-आमापरित्तपज्जत्त
नदंमममौभवत्याए चरिमंजोविउपित्तवेधे पुणसमइदइवेधे २० द्वार दिसाणवाएण । भायाद्वार प्रत्येकशरीर गृह्णपञ्च ध्याउ पर्याप्ता सूक्ष्म सन्तो नव

पत्तिकाम्यद्वार २१ तत धरमद्वार २२ तदनन्तर जीवद्वार २३ तत केवद्वार २४ तत पुद्गलद्वार २५ ततो बन्धद्वार २६ ततो महादशरुक् २७ इति
सर्वसङ्ख्या सप्तविंशतिद्वाराणि ॥ तत्र प्रथमद्वार मन्त्रिपितृसु राह-दिसाणुवाएण सञ्चत्योवा जीवा पञ्चत्येमेण नित्यादि ॥ इत् दिश प्रथमे ग्राचा
राग्ये अगे अनेकप्रकारा व्यावर्णिता स्तत्रेह क्षेत्रदिश प्रतिपत्तव्या स्तासा नित्यतत्वा दितरासाच प्रायो अनवस्थितत्वा दनुपयोगित्वाच्च, क्षेत्रदि
शाच प्रभव स्तियग्लोकमध्यगतप्रदेशका दुचकात्, यत उक्त-अष्टपयसोरुयगो तिरिपल्लोयस्समक्कियारम्मि । गुसपन्नवोदिसाण एसेवन्नवे ग्गु
दिसाणमिति ॥ १ ॥ दिशा मनुपातो दिगनुसरण तेन दिशो धिरुत्येति तात्पर्याथ, सर्वस्तोका जीवा पञ्चत्येन पञ्चिमाया दिशि कयामितिचेत्
-उच्यते-इदं ह्यल्पयुत्वं यादरानधिकृत्य द्रष्टव्यं नस्त्माणा सर्वलोकपन्नाना प्राय सर्वत्रापि समत्वात्, यादरेष्वपि मध्ये सर्ववहवो वनस्पति

जान्त सुजमसखीयन्नवत्यिसेचरिमे । जीवयखेत्तत्रधे पुगलमहदरुक्चेव ॥ २ ॥ दिसाणुवाएण सञ्चत्योवा
जीवा पञ्चच्छिमेण पुरच्छिमेण विसेसाहिया दाहिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया पञ्चच्छिमेण पुरच्छिमेण विसेसाहिया
त्योवा पुढविक्काडया दाहिणेण उत्तरेण विसेसाहिया पुरच्छिमेण विसेसाहिया दाहिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया उत्त
दिसाणुवाएण सञ्चत्योवा व्याउकाडया पञ्चच्छिमेण पुरच्छिमेण विसेसाहिया दाहिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया उत्त

सिद्धि अस्ति वरमद्वार जीवद्वार क्षेत्रद्वार वध पुद्गल महादशरुक् २७ यमनावासद्वार कक्षा दिशिआथो । सञ्चत्योवा जीवा पञ्चच्छिमेण पुरच्छिमेण वि
सेसाहिया दाहिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया । सर्वजीव घांढा पश्चिम क्षेत्रणी सुस्थित देवतानावास गौतमद्वीप पश्चिमने लवण तेसाटे पाणी
यांढां घांढराणो वनस्पतीनांश्रभाय तेसाटे पूर्व विशेषाधिक जमाटे गौतमद्वीप नदी टाचिण सर्वजीव विशेषाधिक क्षेत्रणी तेसाटे पाणीवर्णी तिहा ला
वयणा सन्दूर्य होपन्थो तेसाटे अधिक उत्तरे विशेषाधिक जीवम ट योजन कोडाकाडोप्रमाण मानस २ चसञ्च्यतामेवोप तेसाटे । दिसाणुवाएण
सञ्चत्योवा व्याउकाडया पञ्चच्छिमेण वि० दाहिणेण वि० उत्तरेण वि० । यथादिग्वाथो लखवता सर्वथकी पुण्यानाय घांढा दाचिण जिहा वन तिहा

मायिका एतन्मनुष्याताया तेषा प्राप्यमाणत्वात्, ततो यत्र ते बहव स्तत्र बभूवुर्जीवाणा यत्र त्वल्पे तत्राप्यल्प वारस्पतय स्य तत्र बभूवो यत्र प्र
ज्जना आप " इत्यजलतत्पवणमितिवचनत, स्तत्रावश्य पनकसेवालादीना ज्ञावात्, तेष पनकसेवालादयो वाटरनासकर्मदेये वर्तमाना अपि अ
त्यन्तमन्मावगादनत्या दतिप्रजुतपिण्डीज्ञावाच्च सर्वत्र सन्तोपि न बहुया ग्राह्या, तथाचोत्समनुयोगद्वारेषु-तेष वालगगुहसपणगजीधस्च सरी
रोगएणादितो असंख्येज्जमुणा इति, ततो यत्रापि नेते दृश्यन्ते तत्रापि ते सतीति प्रतिपत्तया ग्राह्य मूलटीकाकार-इह स्वयम्भो वनरूप

रेण विसेसाहिया, टिमाणवाएण सव्योवा तेउकाडया दाहिणत्तरेण पुरच्छिमेण विसेसाहिया पच्चच्छि
मेण विसेसाहिना दिसाणवाएण सव्योवा वाउकाडया पुरच्छिमेण पुरच्छिमेण विसेसाहि
या दाहिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया । टिमाणवाएण सव्योवा वणस्सडकाइया पच्चच्छिमेण
पुरच्छिमेण विसेसाहिया दाहिणेण विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया । टिमाणवाएण सव्योवा वेड्डि

वणाएवाकाय त्वैरहे तिहा थोडा भरतकावास घणा, तेमाटे पोंलाड घनोहे पृथ्वीकाय ग्राह्यान्वे उत्तरे विदेशाधिक घनभाव घणावती पूरे विदेशादि
क पृथ्वीकावहे चन्द्र सूर्य होपमाटे । पुरच्छिमेण वि० पच्चच्छिमेण वि० । चन्द्र सूर्योप पूर्वपश्चिमेहे पश्चिम विदेशाधिक पृथ्वीकावहे । इगौतम दापमा
टे पृथ्वीकायविशेष तथा पश्चिमे पृथ्वीकायविशेष धिक तथा किम पश्चिम अधोलोके सामादिसद्वययाजनादि अथवाहके खात पूरित न्यायेन तत्तुय
न विदेशाधिक । टिमाणवाएण सव्योवा ग्राह्यान्वे उत्तरेण वि० । टिमाणीमेने जीवता सर्वथोडा अकाश्यालोव पश्चिम
जेमाटे भीतमसोप पश्चिमे तेमाटे पाणो तिहाथोडा पूरे विदेशाधिक होपने प्रभावे दाहिणे विदेशाधिक जेभणी चन्द्रसूर्योप नथी उत्तरविशेषाधि
क्त जेमाटे मानमरीवरहे । टिमाणवाएण सव्योवा तेउकाडया दाहिण उत्तरेण पुरच्छिमेण सखिज्जगुणा पच्चच्छिमेण वि० । टिमाणवायो जीवता घो
डासर्व तेजस्काय दज्जिग भरत उत्तर भरतएरवत थोडा विस्मारवन्ती मनुष्योहे अग्रि पिण्डीहो तद्वयकी पूरे अग्रिसख्यातगुणा मयाविदेइमाटे प

तय इति कृत्वा यत्र ते सति तत्र बहुल्य जीवानां तेषां च बहुल्ये "अन्यप्राञ्जकाऽनुतर्न्यनियमाद्यवर्णसङ्काङ्ग्या इति, पञ्चगवेषालसृढा इत्यादयः पञ्चविधोति सुदृमाश्रयणगिच्छानचयराणादिति, उदकं च प्रभूतं समुद्रेषु द्वीपेष्विगुणविक्रमात्, तेष्वपि च समुद्रेषु प्रत्येकं प्राचीप्रतीचीदिशो यथाक्रमं चन्द्रसूर्य द्वीपा यायति च प्रदक्षो घन्डसूर्यद्वीपा श्रवणाढा सावत्युदकाज्जाय, उदकाज्जायाश्च घनस्पतिकारिकाज्जाय फेवल प्रतीच्या दिशि लग्नसमुद्राधि पमुस्थितनामदेयावासासूत्रां गौतमद्वीपो लग्नसमुद्रे अयिधिका यतते तत्र च उदकाज्जाया दुनस्पतिकारिकाज्जाया मज्जावात् स्वसत्ताका जीवा पञ्चिमा या दिशि तेज्यो विज्ञेयाधिका पूयस्या दिशि तत्रहि-गौतमद्वीपा न विद्यते ततः स्तानता विज्ञेयाधिका भवत्यतिरिच्यते तेज्योपि दक्षिणस्या

या पञ्चच्छिमेण पुरच्छिमेण त्रिसेसाहिया दाहिणेण त्रिसेसाहिया उत्तरेण त्रिसेसाहिया, दिसाणवाएणं सव्वत्थोवा तेइदिया पञ्चच्छिमेण पुरच्छिमेण त्रिसेसाहिया दाहिणेण त्रिसेसाहिया उत्तरेण त्रिसेसाहिया,

यिम विगेषाधिक अध्यायमादि घणामाट । टिसाणुवाण सवत्यावा पुरस्किमेण वि० । टियन्नाथो जोवता सर्वजोथाडो यथु
पूर्व जनणा घनभूमि घणाकै तमाटगलथाडा पयिमे विगेषाधिक जमणौ अवलोखव तासाट वाउघणा उत्तरे विगे० नरकावासनेठामे पासाउ घणौ
माटे दक्षिणे विगेषाधिक नरकावासा घणा तिशा वाउ घणौ । टिसाणुवाण सवत्यावा पुरस्किमेण वि० । टियनोमले सर्व
थाडा घनस्सतीकाय पायम जमणौ नैनमहाप जलथाडा तिणे माटे वनस्सतौ पिणथाडो पूर्व विगेषाधिक भौतमहाप नथो तेमाट पाणौद्यथाने वन पि
णघणौ । दाहिणेण वि० उत्तरण विमंसाहिण । दक्षिणनेविणे चद्रमयैक्षपनथा तेमाटे उत्तरेवि० मानसराउरनी अपेक्षये वनघणौ । टिसाणुवाण म
वालोवा वेद टिया पुरस्किनेण पुरस्किमेण विमंसाहिण । दाहिणेणावसेसाहिण उत्तरेण विसे० । टियनोमले सवथाडा बदाद्वय पायम जिहा पाणोथो
हा तेमाटे गलान्ति थोडा पूर्व विगेषाधिक पावीध भू तेमाट दक्षिणे विगेषाधिक चद्र मयै क्षोपनथा तेमाटे पाणोच्चणा वेगिन्दिय विणपणा उत्तर वि
गेषाधिक मानसराउरमाटे । टिसाणुवाण सवत्यावा तोदथा पुरस्किमेण वि० दाहिणपण वि० उत्तरेण वि० । टियनोमले सर्वथोउा तेद्वि

दिशि विद्योपाधिका । यत -तत्र चन्द्रमूहोपा न विद्यते तदभावा , तत्रोदक प्रभृत तरप्राप्त्याच वनस्पतिकार्यिका अपि प्रभूता इति विद्योपाधिका स्तस्योप्युदीच्या दिशि विज्ञापाधिका क्रिकारणमिति चेत् उच्यते-उदीच्या हि दिशि सङ्क्षेयोजनेषु द्वीपेषु मध्ये कस्मिंश्चित् द्वीपे आयास विप्रसन्न्या सङ्क्षेयोजनकोटाकोटीप्रमाय मानस नाम सर समस्ति ततो दनिणदिगुपेनया अस्या प्रभृतमदक मृत्कवाहुन्या च प्रभृता वनस्पतय , प्रभृता द्वीद्विया ज्ञावादय , प्रभृता स्तलभजगयादिकनेत्राश्रिता स्त्रीन्द्रिया पिपीलिमादय , प्रभृता पट्यादिषु चतुरिन्द्रिया ज्ञमरादय , प्रभृता पञ्चेन्द्रिया मत्स्यादय इति विज्ञापाधिका स्तदेव समान्यतो दिगनुपातन औधानामल्पबहुत्व मुक्त मिदानी विक्षेपेण तदाह-दिसागुवायसु सवस्योवा पुत्रविकाडया दाक्षिणेणमित्यादि ॥ दिगनुपातन दिगनुसारेण दिक्षोचिह्नयोसि प्राव , पृथिवीकार्यिका स्थित्यमाना सवस्तोका दक्षिणस्या दिशि कथमिति चेत् उच्यते-उह यत्र एन तत्र वज्रव पृथिवीकार्यिका यत्र सुपिर तत्र स्तोका दक्षिणस्या दिशि बहूनि प्रवनपतीना जव

एव चउरिदियात्रि, दिसाणुवाएण सङ्खत्थोवा णेरइया पुरिच्छिमपञ्चिच्छिमेण उत्तरेण दाहिणेणं च्छसंखेज्जा गुणा, दिसाणुवाएण सङ्खत्थोवा रयणप्पन्नापुढाविणरइया पुरिच्छिमपञ्चिच्छिमेण उत्तरेण दाहिणेण च्छसंखेज्जा गुणा, दिसाणुवाएण सङ्खत्थोवा सक्करप्पन्नापुढाविणेरइया पुरिच्छिमपञ्चिच्छिमउत्तरेण दाहिणेण च्छसंखेज्जा गुणा । दिसाणुवाएण सङ्खत्थोवा बालुयप्पन्नापुढाविपुुरिच्छिमपञ्चिच्छिमउत्तरेण दाहिणेणं च्छसंखेज्जा गुणा ।

उ मरिमे गौतमहोपमाटे पाणीश्रीडां घांछेपाणी निय ये कथायांडा पूव विगोपाधिक गौतमहोपनथा तेमाटे दक्षिणे विगोपाधिक चट्ट
होपनथौ उत्तरे विगे० मानसरोवरमाटे । डिमाणुवाण सवथोवा चौरिदिया पञ्च रूखमण पुरास्क्रमेण वि० टाक्षिणेण उत्तरेण वि० । दिग्रनौमले सर्व
थीयांडा चउरिदिय पयसिमे गौतमहोपछे तेवतौ पाणीयांडा तिहा कमलयांडा तिहा भमरो चोरिदियाटिक थोडा पूव विगोपाधिक गौतमहोपनथौ
तेमाटे दक्षिणे वि० चल् मूहीपनथौ तेमाटे उत्तरे वि० मानसरोवर भमरादि घणा । दिसाणुवाएण सवथोवा गेरिया पुरास्क्रम पञ्च रूखम उत्तरेण

नानि धरागो नरकावासा स्तत सुपिराजसूतसञ्जयात् सर्वस्तोका दक्षिणस्यादिदिशि विज्ञोपाधिका यत्र उ
त्तरस्यादिदिश दक्षिणदिगपेक्षया स्तोकाणि अथनानि स्तोकांनरकावासा स्ततो घनप्रान्तसञ्जया द्वहव पृथिवीकायिका इति विज्ञोपाधिका , ते
ग्र्यापि पूज्या दिशि विज्ञोपाधिका रविशशिहीयाना तत्र आधात् , तेज्योपि पश्चिमाया दिश विज्ञोपाधिका किंकारणमिति चत्-उच्यते-यावतो
रविशशिहीया पूर्वस्या दिशि सावन्त पश्चिमायामपि ततएव तावता साम्य पर त्वणसमुद्र गौतमनामादोप पश्चिमायामधिकोस्ति तेन विज्ञो

खिज्जगुणा । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा पक्कप्पन्नापुढविनेरडया पुरिच्छिमपञ्चच्छिमउत्तरेण दाहिणेण झुसरे
ज्जगुणा । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा धूमप्पन्नापुढविनेरडया पुरिच्छिमपञ्चच्छिमउत्तरेण दाहिणेण झुसखेज्ज
गुणा । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा तमप्पन्नापुढविनेरडया पुरिच्छिमपञ्चच्छिमउत्तरेण दाहिणेण झुसखेज्जगुणा

दाहिणेण अमखिज्जगुणा । दिग्नोमेने सर्वथोडा नारको पूर्वथोडा पश्चिमथोडा उत्तरथोडा स्वाभाटे पण्यावकीर्णं नरकावासादीं दक्षिणे असव्यातगणा
प्राधिका जंभणो दक्षिणदिग्ने पुण्यवकीर्णं नरकावासाकै तेभाटे कृष्णपक्षीजोव । दिसाणुवाएण सव्वत्थावा रयणपभा पृढवो येरइया परिच्छिमं पश्चि
मउत्तरेण दाहिणेण अमखिज्जगुणा । दिग्नोमेने सर्वथोडा उत्तरथोडा पश्चिमथोडा नारको पूर्वदिग्ने पण्यावकीर्णं नथो पश्चिमदिग्ने उत्तरदिग्ने असव्यात
विस्तारै नरकावास क्कै तिहा कृष्णपक्षी वणाकै ऊपजै । दिसाणुवाएण सव्वत्थावा सक्करणभापठवो येरइया पुरिच्छिमं पश्चिच्छिमं उत्तरेण दाहिणेण अ
मखिज्जगुणा । दिग्नोमेने सर्वथोडा उत्तरथोडा पश्चिमथोडा नारको पूर्वदिशि पण्यावकीर्णं नथो पश्चिमं सोटा नरकावासा उत्तरपक्षी दक्षिणे असव्यात
गुणा अमव्यातयाने विस्तारै कृष्णपक्षी वणा ऊपजै । दिसाणुवाएण सव्वत्थावा वलुण्णमपठवो येरइया परिच्छिमं पश्चिच्छिमं उत्तरेण दाहिणेण अ
मखिज्जगुणा । दिग्नोमेने सर्वथोडा उत्तरथोडा नारको पूर्वदिग्ने पुण्यावकीर्णं नथो पश्चिमउत्तरथो मोटा असव्यात विस्तारै दक्षिणे सव्यातगणा क
णपविच वणा ऊपजै तेभाटे । दिसाणुवाएण सव्वत्थावा पक्कप्पन्नापुढविनेरडया पुरिच्छिमउत्तरेण दाहिणेण असखिज्जगुणा । दिग्नोमेने सर्व

पायिका , अत्ररराद-ननु यथा पश्चिमाया दिशि गीतमद्वीपो अथिज समस्ति तथा तस्यां पश्चिमाया दिशि अधोलौकिकग्रामा अपि योजन
सहस्रावगाहा सन्ति तत रातपूरतन्वायेन तत्तुल्याएव पृथिवीकायिका प्राप्तुवन्ति न विशेषाधिकारः , नैतदेव-यतो धोलौकिकग्रामावगाहो
योजनसहस्र गीतमद्वीपस्य पुन पट्ससत्यधिक योजनसहस्र मुञ्चैत्य विक्रम सत्य द्वादशयोजनसहस्राणि यच्च नैरो रारज्य धोलौकिकग्रामेभ्यो
उभौर्द्दीनत्व हीनतरत्व तदपूवस्यासपि दिशि प्रभूतगतादिसम्भवात् समान ततो यद्यधोलौकिकग्रामच्छिद्रपु दुच्या गीतमद्वीप प्रक्षिप्यते तथा
पि समधिकएव प्राप्यते नतुत्य इति , तेन समधिकेन विशेषाधिकार पश्चिमाया दिशि पृथिवीकायिका , उक्त दिगनुपातेन पृथिवीकायिकाना म
त्यत्त्व मिदानी मय्यायिकाना मलपयदुल्यमान-दिशागुथाएण सव्योवा आउक्ताइया इत्यादि ॥ सवदोका अय्यायिका पश्चिमाया दिशि गी

दिसागुथाएण सव्योवा तमप्यनापुठविनेरडया पुरच्छिमपञ्चच्छिमउत्तरेण दाहिणेण असखेजगुणां , दि
साणुवाएण सव्योवा अहे सत्तमापुठविनेरडया पुरच्छिमपञ्चच्छिमउत्तरेण दाहिणेहिता अहे सत्तमापुठ
विनेरडुहिता वठीए तमाए पुठवीए नेरडया पुरच्छिमपञ्चच्छिमउत्तरेण असखेजगुणा , दाहिणेण अस

थाडा पडमभापुष्पा नारका पूर्वादिगे पयावकौणं नथो तेमाटे पश्चिमउत्तर नथो दक्षिण असख्यातगुणा कृष्णपक्षिक घणा ऊपलै । दिसाणव, एण सवव
त्याडा धूमप्यभपुठगीणेरडया पुरच्छिम पञ्चच्छिम उत्तरेण दाहिणेण असखिजगुणा । दिगन, नैवै सर्वथाडा धूमप्रभानारको पूव पयावकौणं नथो ते
नाटे पयिम उत्तर नथो दक्षिणे असख्यातगुणा कृष्णपक्षो घणानाटे । दिम गुवाएण सव्योवा तमप्यभपुठवीणेरडया पुरच्छिमउत्तरेण दाहिणेण अस
खिजगुणा । दिगनैमेनै सर्वथाडा तमप्रभानानारको पू पयावकौणे नथो तेमाटे पाचमउत्तर नथो दक्षिणे असख्यातगुणा । दिसाणवाएण सव
थावा अहेमत्तमपुठवीणेरडया पराच्छिम पञ्चच्छिम उत्तरेण दाहिणेण असखिजगुणा । दिगनो मैनै सर्वथाडा, इठ मातमोनारको पूव पयावकौणं
नारकावासा नथो तेमाट पयिम उत्तर दक्षिणे असख्यातगुणा विस्तरै कृष्णपक्षो घणानाटे, दिवै सात पुष्पायिको दिगिना अपवदुल्य कहेक्के-दादि

तमद्वीपर्याने तेषा मन्नावात्, तेज्योपि विशेषाधिका पूर्वस्यादिशि तेज्योपि विशेषाधिका दक्षिणस्यादिशि चन्द्रसंघीपानावात्, तेज्योप्युत्तर
स्या दिशि विशेषाधिका मानसर सद्भावात्, तथा दक्षिणस्या मुत्तरस्या च दिशि सर्वस्लोका तेजस्कायिका यतो मनुष्यक्षेत्रे गव वादरा स्तेज
स्कायिका नान्यत्र तत्रापि यत्र यद्वो मनुष्या तत्र ते बहवो वाहुल्येन पाकारसम्भवात्, यत्र त्वल्पे तत्रस्लोका स्तत्र दक्षिणस्या दिशि पचसु
न्नरतेषु उत्तरस्या दिशि पचस्वीरावतेषु द्वेयस्याल्पत्वात्, स्लोका मनुष्या स्तेपा स्तोत्रत्वेन तेजस्कायिका अपि स्लोका अल्पपाकारसम्भवा तत्र
सयस्लोका दक्षिणोत्तरयो दिशो तेजस्कायिका स्वस्थानेन प्राय समाना तेज्य पूर्वस्या दिशि सहेयगुणा चोत्रस्य सहेयगुणत्वात्, ततोपि प
श्चिमाया दिशि विशेषाधिका अथोलौकिकग्रामेषु मनुष्यग्राह्यत्वात् ॥ दिसाणुवाएण सवत्योवा वाउकाइया पुरिच्छिमेणमित्यादि ॥ इए यत्र शुपिर

सेजगुणा, दाहिणक्षेहिती तमापुढविनेरइएहिती पचमाधूमप्यन्नाए पुढवीए नेरइया पुरिच्छिमपञ्चच्छिम
उत्तरेण अस्सेजगुणा, दाहिणेण अस्सेजगुणा । दाहिणक्षेहिती धूमप्यन्नापुढविणरइएहिती चउत्थीए
पक्कप्यन्नाए पुढवीए नेरइया पुरिच्छिमपञ्चच्छिमउत्तरेण अस्सेजगुणा । दाहिणेण अस्सेजगुणा । दाहि
णक्षेहिती पक्कप्यन्नापुढविनेरइएहिती तइयाए वालुयप्यन्नाए पुढविनेरइया पुरिच्छिमपञ्चच्छिमउत्तरेण अ

णदितां अन्नेसत्तमाएपुढवी नेरइयाणदितां क्खोएतमाएपुढवी नेरइए पुरिच्छिम पञ्चच्छिम उत्तरेण अस्सेजगुणा । इहे सातनीपुखोनी दाहिणदिश
यो सातनीथी क्खोपुख नानारको पूं पयिम उत्तरेण अस्सेजगुणा स्यामाटं होन २ वर पापकर्मना करणहार होन नरकगति जपजे तेमाटे सात
नीपुखोथी क्खोनेरके अस्सेजगुणा ऊपले । दाहिणेण अस्सेजगुणा दाहिणक्षेहिती तमापुढवीनेरइया पचमाए अमप्यन्नाएपुढवी नेरइया पर
रिच्छिम पञ्चच्छिम उत्तरेण अस्सेजगुणा । दाहिणेण अस्सेजगुणा युक्त सर्व पाकनीपरे जाणवी दाहिणदिशनी तमापुखोनी पाचमी धूमपमा पुखी
ना नारको होनतर पापकर्मना करणहार तेमाटं पूर्वपयिम उत्तरनानारको अस्सेजगुणे अधिक हुवे । दाहिणेण अस्सेजगुणा । तेहयको दक्षि

तत्र दायु पंथ च घन तत्र वायव्यज्ञाव तत्र पूर्वस्या दिशि प्रभूत घनमित्यस्यावायव्य पश्चिमायादिशि विशेषाधिक्या अधोलौकिकग्रामेषु सम्भवात्
उत्तरस्या दिशि विशेषाधिक्या अवननरकावासाहुत्येन शुषिरयाहुत्यात्, ततोपि दक्षिणस्या दिशि विशेषाधिक्य उत्तरदिगपेक्षया दक्षिणस्या दिशि
अवनाना नरकावासाना चातिप्रभूतत्वात्, तथा यत्र प्रभूता आपस्तत्र प्रभूता पनकादयो अनन्तकायिका नवस्पतय प्रभूता शङ्खादयो द्वीन्द्रिया प्र
भूता पिपलीभूतसेवालाद्याश्रिता कुश्यादय स्त्रीन्द्रिया प्रभूता पट्याद्याभिता जमरादय यतुरिन्द्रिया इति, वनस्पत्यादिसूत्राणि चतुरिन्द्रियसूत्र

सखेज्जगुणा, दाहिणेण असखेज्जगुणा । दाहिणल्लेहितो बालुवप्पन्नापुढविणेरइएहिता वीयाए सक्करप्प
न्नाए पुढवीए णेरइया पुरिच्छिमपच्चिच्छिमउत्तरेण असखेज्जगुणा दाहिणेण असखेज्जगुणा दाहिणल्लेहितो
सक्करप्पन्नापुढविणेरइएहिता इमीसे रयणप्पन्नाए पुढवीए णेरइया पुरिच्छिमपच्चिच्छिमउत्तरेण असखेज्जगु
णा । दाहिणल्लेण असखेज्जगुणा, दिसाणुवाएण सत्थयोवा पचिदिगतिरिक्खजोणिया पच्चिच्छिमेणं पुरिच्छि

य असखेज्जगुणा कण्णपच्चो घणा तेसाटे । दाहिणल्लेहितो धूमवभाणपुढवीए णेरइहिता चउत्थोए पच्चवभाण पढवीए णेरइया पुरिच्छिमपच्चिच्छिम उत
रण असखिज्जगुणा । दक्षिणदिगिना धूमप्रभापृथ्वाना नारको दक्षिणदिगिणो चौथो पद्धप्रभानानारको पूर्व पयिम उत्तरना असखातगुणे अधिकहुवे ।
दाहिणेण असखिज्जगुणा दाहिणल्लेहितो पक्कवभाणपुढवीएहिता । तेइवो दक्षिणे असखातगुणा कण्णपच्चो घणा तेसाटे दक्षिणदिगिना पद्धप्रभा
ना नारकोथो । तइयाए बालुवप्पन्नापुढवीए णेरइया पुरिच्छिम पच्चिच्छिम उत्तरण असखिज्जगुणा । चौजो बालुवप्पन्नापृथ्वीना नारको पूर्व पयिम उत
रना असखातगुणा होनकर्मना करणद्वार तेसाटे । दाहिणेण असखिज्जगुणा । तेइयको असखातगुणा युक्त पाछवोपरे । दाहिणल्लेहितो बालुवप्प
भपढवी णेरइणहिता । दक्षिणदिगिना नारको बालुवप्पन्ना नारकोघको । इइयाए सक्करप्पन्नाए पुढवीए णेरइया पुरिच्छिम पच्चिच्छिम उत्तरेण अस
खिज्जगुणा । दूनी भक्करप्रभाना नारको पूर्व पयिम उत्तरना असखातगुणा हुवे थोडापापी तेसाटे दक्षिणे असखातगुणा हुवे थोडापापी तेसाटे ।

पर्यंतानि श्रद्धायायुक्तसूत्रज्ञावनीयानि, नीरयिकसूत्रे-सर्वस्वोका पूर्वोत्तरपश्चिमदिग्जग्राविनी नीरयिका पुष्पावकीर्णनरकावासाना चात्राल्पत्वात् यद्गूना प्राप सख्येययोजनविस्तृतत्वाच्च, तेभ्यो दक्षिणदिग्जग्रागविनाविनी सख्येयगुणा पुष्पावकीर्णनरकावासाना तत्र बाहुल्यात्, तयाच प्रायो सहे योजनविस्तृतत्वात्, कथमपात्तिकाणा तस्या दिशि प्राकुर्येणो त्यादाच्च, तथाहि-द्विविधा जन्मव शुक्रपात्तिका कथमपात्तिका, तया लक्षणमिद- किंत्वित्पुनपुनपरावतारं दुर्मात्रससारास्ते शुक्रपात्तिका अधिकतरससारज्जिन स्तु कथमपात्तिका, उक्तञ्च-जसिमवच्छोपुगल परियहोसेसजेयससा

मेण विसंसाहिया, दाहिणण विसंसाहिया, उत्तरेण विमंसाहिया, दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा मणुस्सा दाहि णउत्तरेण पुरिच्छिमेण सखेज्जगुणा । पञ्चिक्खिमेण विसंसाहिया । दिसाणुवासीण सव्वत्थोवा ज्ञत्रणवासी देवा पुरिच्छिमपञ्चिक्खिमेण उत्तरेण अ्सखेज्जगुणा । दाहिणेण अ्सखेज्जगुणा, दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा

दाहिणेण असखिज्जगुणा । दक्षिणे अससयातगणा आधक पाकुलोपरं । दाहिणविहितो सस्तरपभपुठवो खेरदण्हितो । दक्षिणदिगिना यर्करप्रभापुज्यो ना नारकोथो । इमोत्तरेयणपभार पुठवोए णरणा पुरिच्छिम पञ्चिक्खिम उत्तरेण असखिज्जगुणा । आ पडिक्खी रत्तप्रभापुज्याना नारको पूर्व पश्चिम उ तारना अससयातगणा हुवे । दाहिणेण असखिज्जगुणा । तद्वत्तको दक्षिणे अससयातगणा, अससयात कथपक्षी माटे । दिसाणुवाएण सव्वत्थाया पचेदिय तिरिखज्जोणिता पक्ष द्यमण पुरिच्छिमेण विसंसाहिया उत्तरेण वि० । दिग्गनोमने सर्ववोधोदा पचेदिय तिरिपगानिया पश्चिमे ते गौतमद्वोपळे लवणस मद्र तिहापाणो थोडा तेमाटे तिरिचयानिता मच्छाटिक थाडा जपले पूर्व विगोपाधिक गौतमद्वोप नथो उत्तरे विगोपाधिक मानसरावर दम मच्छादि घणा । दिसाणुवाएण सव्वत्थाया मणभा दाहिण उत्तरेण पुराच्छिमंण सखिज्जगुणा पञ्चिक्खिमेण वि० । दिग्गथको जाता सर्वथाडा मनुय दक्षिण उत्त र जेमथो उत्तरे ऐरयत टाचले भरतच्च थाडा पूर्व मनुयससयातगुणा अधिक जमो महाविदेह नाटच्चैव पश्चिमदिगि विगोपाधिक जमथो अधोलो कथामिक मनुय वणा । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा भवणवासोदेवा पुरिच्छिम पञ्चिक्खिमेण उत्तरेण असखिज्जगुणा दाहिणेण असखिज्जगुणा । दिग्गनी

वक्तव्यं युक्ते सर्वत्रापि समानत्वा तदेव प्रतिपृथिव्यापि दिग्विज्ञागेना ल्यथहुत्वा मुक्तमिदानीं सप्तपि पृथिवीरचिरुत्थ दिग्विज्ञागेना ल्यथहुत्वा
माह-दारिणोऽहो अहं सप्तमपुण्ड्रविनेरुड्यद्विती तर्हीय तमाए पुण्ड्रवीए नरइया इत्यादि ॥ सप्तमपृथिव्या पूर्वोत्तरपार्थिमदिग्विज्ञाविज्ञो नरपिक्के
ज्योये सप्तमपृथिव्यामेव दाक्षिणात्या स्ते ऽसहेयगुणा स्तेन्य पष्ठपृथिव्या तमप्रज्ञाविधानाया पूर्वोत्तरपार्थिमदिग्विज्ञाविज्ञो ऽसहेयगुणा कथमिति
येत्, वच्यते-इह सर्वोत्कृष्टपापकारिण सञ्चिपचेद्रियतियग्ननुष्या सप्तमनरकपृथिव्या मृत्यन्ते, किञ्चिद्दीनहीनतरपापकर्मकारिणश्च पत्न्यादिपु
पृथिवीपु सर्वोत्कृष्टपापकर्मकारिणश्च सर्वस्तोका बहवश्च यथोत्तर किञ्चिद्दीनतरादिपापकर्मकारिण स्ततो युक्तमसंयंयगुणत्वं, सप्तमपृथिवीदालि
यात्यनारकापेक्षया पष्ठपृथिव्या पूर्वोत्तरपार्थिमनारकाणा मंव मुत्तरोत्तरपृथिवीरप्यधिकृत्य ज्ञावपितव्य, तेन्योपि तस्यामव पष्ठपृथिव्या दक्षिणस्या

साहि्या, दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा देवा ईसाणेकप्पे पुरच्छिमपञ्चच्छिमेण उत्तरेण अस्सखेज्जगुणा दाहिणे
ण विसंसाहि्या, दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा देवा सणकुमारैकप्पे पुरच्छिमपञ्चच्छिमेण उत्तरेण अस्सखेज्जगु
णा, दाहिणेण विसंसाहि्या दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा देवा माहिदेकप्पे पुरच्छिमेणपञ्चच्छिमेण, उत्तरेण

पर घणा । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवादेवा सोऽस्सोकापे पुरच्छिम पञ्चच्छिमेण उत्तरेण अस्सखिज्जगुणा दाहिणेण विसंसाहि्या । दिशनीमेले सर्वथाडा
सौधर्मं कसपे पूर्वदिग्गे जेमणी पुण्यावकीणं नथो पयिमिपिण पष्ठजभाव उत्तरे अस्सव्यातगुणा अधिक दक्षिणदिशि वियेपाधिक जेमाटे कृणपच्चो । दि
माणुवाएण सव्वत्थोवा देवा दसाणिकप्पे पुरच्छिम पञ्चच्छिमेण उत्तरेण अस्सखिज्जगुणा । दिशनीमेले जावता सर्वथाडा दशानकसपे पूर्व पुण्यावकीणं नहुो
तेमाट पयिम उत्तरे अस्सव्यात विस्तारमिषेय । दाहिणेण विसंसाहि्या । दक्षिणे अस्सव्यातगुणा कृणपच्चो घणा ऊपजे । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा
दथा माहिदे कप्पे पुरच्छिम पञ्चच्छिमेण उत्तरेण अस्सखिज्जगुणा । दिगाआयी जावता सर्वथाडा देवता माहेद्व कप्पजा देवता सर्वपयिमे पुण्यावकीणं
नथो उत्तरे अस्सव्यातगुणा । दाहिणेण विसंसाहि्या । दक्षिणविणेषाधिक कृणपच्चो ऊपजे । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा बभलोए कप्पे देवा परच्छिम प

दिशि नारदा असत्येयगुणा युक्तिर प्रागेवोक्ता तेभ्योपि पञ्चमपृथिव्यो घूमप्रज्ञानिधानाया पूर्वोत्तरपश्चिमदिग्नाविनो सहेयगुणा तेभ्योपि तस्यामेव पञ्चमपृथिव्या दाक्षिणात्या असत्येयगुणा , एव सर्गस्वयि क्रमेश वाच्य , तिर्यक्पंचेन्द्रियसूत्र त्वक्कापसूत्रवत्-दिसाणुवाएण सव्वत्योवा मणुस्सा दाहिणउत्तरेणमित्यादि ॥ सर्वस्तीका मनुष्या दाहिणस्या मुतरस्यां च पञ्चाना उत्तरतक्षेत्राणा पञ्चाना मेरावतक्षेत्राणा मत्थल्यत्वात् , तेभ्य पूर्वस्या दिशि सहेयगुणा क्षेत्रस्य सत्येयगुणत्वात् , तेभ्योपि पश्चिमाया दिशि विजोपायिका स्वप्नावत स्वायोलोकिक्कयामेपु मनुयच्चाहुल्यत्वावा त् ॥ दिसाणुवाएण सव्वत्योवा जवणवासीत्यादि ॥ सर्वस्तीका जवनवाचिनो देवा पूर्वस्या पश्चिमायाच दिशि तत्र जवनानामत्यत्वात् , तेभ्यो उत्तरदिग्नाविनो ऽसत्येयगुणा स्वस्यानतया तत्र जवनाना बाहुल्यात् , तेभ्योपि दाक्षिणदिग्नाविनोऽसत्येयगुणा स्तत्र जवनाना मतीवबाहुल्यात् ,

असखेज्जगुणा , दाहिणेण विसेसाहिया । दिसाणुवाएण सव्वत्योवा वज्रलोए कप्पे देवा पुरच्छिमपञ्चच्छिमउत्तरेण त्तरेण दाहिणेण असखेज्जगुणा दिसाणुवाएण सव्वत्योवा वज्रलोए कप्पे देवा पुरच्छिमपञ्चच्छिमउत्तरेण दाहिणेण असखेज्जगुणा । दिसाणुवाएण उत्तरए कप्पे देवा पुरच्छिमपञ्चच्छिम उत्तरेण दाहिणेण असखेज्ज

सच्छिम उत्तरेण दाहिणेण असखिज्जगुणा । दिग्मनोमेले सर्वथाडा मज्झनोक्क कल्पनादेवता पूर्व पश्चिमे पृथ्वावकीणं नथी उत्तरे दाक्षिणे असत्तातगुणा । दिसाणुवाएण सव्वत्योवा उत्तरएकपे देवा पुरच्छिम पञ्चच्छिम उत्तरेण दाहिणेण असखिज्जगुणा । दिग्मनोमेले सर्वथाडा तातककल्पनादेवता पूर्व पश्चिमे उत्तरे दाक्षिणे असत्तातगुणा । दिसाणुवाएण सव्वत्योवा देवा महासक्केकपे पुरच्छिम पञ्चच्छिम उत्तरेण दाहिणेण असखिज्जगुणा । दिग्मनोमेले सर्वथाडा देवता महाजुक्क कल्पना पूर्व पश्चिमे उत्तरे दाक्षिणे असत्तातगुणा । दिसाणुवाएण सव्वत्योवा देवा पुरच्छिम पञ्चच्छिम उत्तरेण दाहिणेण असखिज्जगुणा । दिग्मनोमेले सर्वथाडा देवता महासक्केकल्पना पूर्व पश्चिमे उत्तरे दाक्षिणे असत्तात कृष्णपक्षो नाटे । तेण पर बहुसमोववणगा समणउत्तो । तिनारपक्के सरीखा स्यामाटे तिहा मनुष्य जपजे ते समावती सरीखा हुवे अहंयमणो आशु

तथा हि-निकाये २ चत्वारि २ प्रवनशतसंख्यापेतिरिच्यते, कृष्णपाक्षिका यद्वा स्त्रीत्यद्यन्ते, ततो प्रवनसंख्येयगुणा, व्यन्तरसूत्रे ज्ञावना यत्र शुपिर तत्र व्यन्तरा प्रवरन्ति, यत्र घन तत्र न, तत पूर्वस्या दिशि घनत्वात् स्त्रीका व्यन्तरा स्त्रीका व्यन्तरा स्त्रीका, अथो लौकिकग्रामेषु शुपिरसम्भवात्, तेज्योप्युत्तरस्या दिशि विशेषाधिका स्वस्थानतया नगरवासबाहुल्यात्, तेज्योपि दक्षिणस्या दिशि विशेषाधिका अतिप्रजूननगराबाहुल्यात्, तथा सर्वस्त्रीका ज्योतिष्का पूर्वस्या पश्चिमाया च दिशि चन्द्रादित्यद्वीपेपूथानजल्पेषु कतिपयानामेव तेया ज्ञायात्, तेज्योपि दक्षिणस्या दिशि विशेषापिका विमानबाहुल्यात्, कृष्णपाक्षिका दक्षिणदिग्भाविताश्च, तेज्योप्युत्तरस्या दिशि विशेषापिका यतो मानसे सरसि द्वायो ज्योतिष्का क्रीडास्थान मिति क्रीडनव्यापृता नित्यमासते, मानसरसि च ये मरस्यादयो जलचरा स्ते आस त्रविमानदशनत समुत्पन्नगतिस्मरणात् किञ्चिद्वत प्रतिपद्या नशनादिष कृत्वा कृतनिदाना स्तत्रोत्पद्यन्ते, ततो प्रवन्त्योत्तराद्वा दाक्षिणात्येज्यो

विशेषाधिका, तथा सौधर्म कल्पे सर्वस्त्रीका पूर्वस्या पश्चिमाया च दिशि वैमानिकादेवा यतो यान्यावलिकाप्रविष्टानि विमानानि तानि चत सद्यपि दिक्षु तुल्यानि यानि पुन पुष्पावकीर्णानि तानि प्रजूनानि असंख्येयोजनविस्तृतानि तानि च दक्षिणस्यामुत्तरस्या दिशि नान्यत्र तत म यंस्त्रीका पूर्वस्या पश्चिमाया च दिशि तस्य उत्तरस्या दिशि असंख्येयगुणा पुष्पावकीर्णविमानाना बाहुल्या दसंख्येयोजनविस्तृतत्वाच्च, तेज्योपि दक्षिणस्या दिशि विशेषाधिका, कृष्णपाक्षिका प्राचुर्येण तत्र गमनात्, एवमोशनसनत्कुमारमाहेन्द्रकल्पसन्नाथपि ज्ञावनीयानि, ब्रह्मलोककल्पे सर्वस्त्रीका पूर्वोत्तरपश्चिमदिग्जायिनो देवा यतो बह्व्य कृष्णपाक्षिका स्तिययोनयो दक्षिणस्या दिशि समुत्पद्यन्ते शुक्रपाक्षिका पुन पूर्वोत्तरपश्चि मासु शुक्रपाक्षिकाश्च स्त्रीका इति पूर्वोत्तरपश्चिमदिग्जाविन सर्वस्त्रीका तेज्यो दक्षिणस्या दिशि असंख्येयगुणा कृष्णपाक्षिका यद्वा तत्रोत्पादात्, यत्र सान्द्रशुक्रसहस्रारमूत्राण्यपि ज्ञावनीयानि, ज्ञानतादिषु पुन मनुष्या एवोत्पद्यन्ते तेन प्रतिकल्प प्रतिश्रेयैवेयक प्रत्यनुत्तरविमान चतस्रु दिक्षु

प्रायो वदुसमावेदितव्या स्तथाचाह ॥ तेषपर वदुसमोववद्वगा समगाउसो । इति दिसाणुवाएण सद्यत्योवा सिद्धा दाहिणउत्तरेणमित्यादि ॥ सयस्तीका सिद्धा दाहिणस्या मुत्तरस्या घ दिशि कथमितिचेत् ३ उच्यते-इह मनुष्याएव सिञ्चन्ति नान्ये मनुष्या अपि सिध्यतो यद्या काशाप्रदेशे यिह परमसमये श्रवगाढा स्तोत्रेवाकाशाप्रदेशेषु द्वैमपि गच्छन्ति, तेषेव धोपर्यवतिष्ठन्ति, न मनागपि वक्र गच्छन्ति, सिध्यन्तिच, यत्र दाहिणस्या दिशि पचतु नरतेयुत्तरस्या दिशि पच्येरावतेषु मनुष्या कृत्वा द्वेवस्यापत्वात्, सुखमसुखमादौ च सिद्धे छात्रावादिति तत्रैवसिद्धा संवस्तो का तस्य पूर्वस्या दिशि सख्येयगुणा पूर्वविदेहाना प्ररत्तरावतन्त्रेण सख्येयगुणतया तद्वतमनुष्याणामपि सख्येयगुणत्वात्, तेषा च सवकाल सिद्धिमात्रात्, तस्य पश्चिमाया दिशि विशेषाचिका अघोलीकिकयामेषु मनुष्यबाहुत्वात् गत दिग्द्वार मिदानो गतिद्वार-तन्त्रेदमादिसूत्र-स्य सिग्नं जतं । तैरद्वयानमित्यादि ॥ संवस्तीका मनुष्या पक्षवतिच्छेदनकच्छेदराशिप्रमाणत्वात् सच पक्षवतिच्छेदनकदायीराशि रगे दजयिष्यते, त

गुणा । दिसाणुवाएण सद्यत्योवा देवा महासुक्ती कप्ये पुरच्छिमपञ्चच्छिमउत्तरेण दाहिणेण अ्यसंखेज्जगुणा दिसाणुवाएण सद्यत्योवा देवा सहस्सरं कप्ये पुरच्छिमपञ्चच्छिमउत्तरेण दाहिणेण अ्यसंखेज्जगुणा, तण

सन् । दिसाणुवाएण सद्यत्योवा सिद्धा दाहिणउत्तरेण पुरच्छिमेण सखिज्जगुणा पञ्चच्छिमेण विसिंहादिया द्वार १ । दिगनीमेलै जीता सर्वघोडा सिद्ध द विष उत्तरे भरतैरवतन्ना थाडा तेषणो घोडासिद्ध पूर्व महाविदेह भणो सयगातगुणा पश्चिमे अर्धाग्रामे मनुष्यवणा तेषणो सिद्धा विगोपाधिक इति दिगिहार ॥ १ ॥ द्विगे गतिहारनो श्रमवहल कहै-एएसिण भते शेरदयाण तिरिखजोणियाण मणुस्साण देवाण सिहाणय पचगइसमाणे । एहने इमगवन् नारकीनो तिर्यचयोनियाने मनुष्यने देवताने सिद्धने पाचगति ते समासेकरी । सेण कयेर २ इतो अरपावा बहयावा तुक्कावा विसिंहादिया । ते किद्धा २ घोडाइवे घणाहुवे सरीखाहुवे किद्धा विगोपाधिक हुवे । गोवमा सवधयोवा मणुस्सा चेरदया असखिज्जगुणा देवा असखिज्जगुणा सिद्धा अ णतगुणा तिरिखजोणिया अणतगुणा । हेगौतम सर्वघोडा मनुष्यनुद्धेदकहे इन्द्रिय प्रमाणेने आगे विचार कहै-तेद्वयको नारको असयगातगुणा

स्यो नैरयिका असस्येयगुणा अदुलमात्रप्रदेशराजो मय्यन्धिनि प्रथमवर्गमूले द्वितीयवर्गमूलेन गुणितै यावान् प्रदेशराज्ञि श्रवति, तावत्प्रमा
णासु पनीरुतस्य लोफस्यैकप्रादेशिकीषु श्रिखिषु यावन्तो मत्र प्रदेशा स्तावत्प्रमाणत्वात्, तेष्वो देवा असस्येयगुणा व्यन्तराणा ल्योतिष्काणा च
प्रत्येक प्रतरासस्येयगुणाद्यतिश्रेणिगताकाज्ञाप्रदेशराज्ञिप्रमाणत्वात्, तस्य सिद्धा अन्तर्गुणा अत्रत्येभ्योप्यनन्तगुणत्वात्, तस्य स्तिर्यग्योनिका अ
नन्तगुणा यन्त्रपत्तिकारिकाणा सिद्धेभ्योप्यनन्तगुणत्वात्, तदेय नैरयिकस्तिर्यग्योनिकमनुष्यदेवसिद्धरूपाणा पञ्चानामस्येयदुत्तु मुक्त मिदानो नैर
यिकस्तिर्यग्योनिकस्तिर्यग्योनिकमनुष्यमानुषोदेवद्वीसिद्धलक्षणा मयाना मस्येयदुत्तुमज्जिधित्सुरिदमाह-एएसिण प्रते । नरइयाणमित्यादि ॥ स

पर वज्रसमीववन्नगा समणाउसो । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा सिद्धा दाहिणउत्तरेण पुरिच्छिमेण सखेज्जगु
णा, पच्चिच्छिमेण त्रिसेमाहिंया दार १ । एएसिण नत्ते । णेरइयाण तिरिस्खज्जोणियाण मणुस्साण देवाण
सिद्धाणय पचगइसमासेण कउरे कयरेहिंतो अण्णवा वज्जयावा तुल्लावा त्रिसेमाहिंया वा ? गोयमा !

अगुबमाण चेचप्रदय रागधव पहिले वर्गमूल गुणते वाज वर्गमूले गुणते प्रदेशराणि दुवे तेतलमान स्यू घनकोले धांतोका एहवो एकप्रदेशकोले जेतनो
ते नभप्रदग तेतलाप्रमाणवतो असस्यगतगुणा व्यन्तराज्ञातिपाणो प्रत्येकप्रतर सस्येयभावावसिं श्रेणिगत आकाश प्रदेशरायिच्छे ते प्रमाणेच्छे मिह अणतगु
णा समस्यो अनन्तगुणा तमाटे तिर्यचवानिया अनन्तगुणा । वनस्यतौकाय अनन्तकाय तम टे । एसिणभते षेरइयाण तिरिस्खज्जोणियाण मणुस्साण
मणुस्सोण देवाण देवीण सस्येय अठ्ठगइसमासेण कउरे २ इति अण्णवा ४ । एह उभगवन एह नारकोले तिर्यचने तिर्यचकोले मनुष्यने मनुष्यणान
देवने देवीने सिउते ए अण्णपट समासेकरो माहोमाहिं करो किह्वा २ थाहा अधिका । गायमा सबटोवाथा मण्ण्णोओ मणुस्सा असाखिज्जगणा षेरइ
या असाखिज्जगणा । हेगौतम सर्वथोघोदो मनुष्यणो सत्ताबोसगुणो सो अधिकोच्छे पिण इहा धाडो ते सयू रक्कममनुष्य माहिंभन्ना तेमाट स्यो
घो मनुष्य असस्यगतगुणा तमनुष्यो नारची असस्यगतगुणा । तिरिस्खज्जोणियोओ असखिज्जगुणा देवीओ सखिज्जगुणोओ सि

वंस्तोका मानुष्यो मनुष्यस्त्रिय सख्येयकोटाकोटीप्रमाणत्वात्, तास्यो मनुष्या असुरयेयगणा दृढ मनुष्या समूर्च्छनजा अपि गृह्यन्ते. वेदस्या विम
ज्जनात्, तच्च समूर्च्छनजा वाक्तादिषु नगरनिहमनान्तेषु जायमाना असुरयेया प्राप्यन्ते तेस्यो नैरयिका असुरयेयगणा मनुष्या अतुल्यपदे पि श्रे
यसहेयनागतप्रदेशरात्रिप्रमाणा लभ्यन्ते, नैरयिकाम्त्यदुलमात्रक्षेत्रप्रदेशरात्रिसकृद्वितीयवर्गमूलप्रमाणश्रेणिगताकाशप्रदेशरा
त्रिप्रमाणा स्ततो तजस्यसहेयगणा स्तेभ्य स्त्रिययोगिका त्रियो ऽसहेयगणा प्रतरासहेयभागवत्सहस्रयत्रेणिनञ प्रदशरात्रिप्रमाणत्वात्, तास्यो

सहस्रयोवा मणुस्सा णेरइया असखेज्जगुणा देवा असखेज्जगुणा सिद्धा अणतगुणा तिरिक्खजोणिग्या अण
तगुणा । एएसिण जंन ! णेरइयाण तिरिक्खजोणिग्याणं तिरिक्खजोणिगीण मणुस्माणं मणुस्सीण देवाण
सिद्धाणय अणतिसमासेण कयरे कयरेहिंतो अण्णावा बज्जयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा !
सहस्रयोवा मणुस्सीनु मणुस्सा असखेज्जगुणा । णेरइया असखेज्जगुणा तिरिक्खजोणिगीनु असखेज्जगुणा

वा षयतगया तिरिक्खजोणिग्या अणतगुणा हार २ । ते नारकीयो तिर्यच्च म्मो षसख्यातगणो प्रतर षसख्यातभाग वर्त्तसख्यान अंणि नमप्रदेश रात्रिप्र
माण ते तिर्यच्चणोयो देवता षसख्यातभाग वर्त्तगतप्रदेश रात्रिप्रमाण ते देवतायो देवायना सख्यातगणो ३२ गुण ३२ रूप इति वचनात देवोयो मि
वज्जीय षमन्तगुणा ते सिद्धयो तिर्यच्चोनिग्या अमन्तगुणा सूख्खादर निगाठ सेपात् इति गतिहार सपूर्णं हवे, हिवे इन्द्रियहार कहेत्ते—दूजपदे तो
जोहार ३ ४ षण्णिण भते सद टिगण । एह भगवन् सेन्द्रिय । एमिटिगण वेद टिगण तद टिगण चडरिटिगण पचेटिगण अणेटिगण कउर
२ इति अण्णावा ४ । एकोटिगण वेन्द्रियने तेन्द्रियने चौरिन्द्रियने पचेन्द्रियने चनेन्द्रियने मिहने कोहवा २ यो थोहा अण्णावा यणा । गोयमा सख्योया
पचेदिया । णेगौतम सर्व पचेद्विय सख्यातयोजन कोडाकोडो तेदयो । चडरिटिग्या विसेसाहिया तेद टियाविसेसाहिया वटियाविसेसाहिया । चौरिटि
यवियेवाधिक विक्कथ गवौप्रभत्त सख्यातयोजन कोडाकोडो प्रमाण तेद सख्यातयोजन कोडाकोडो प्रमाण तेद

पि देवा असुरयेयगुणा प्रतरासरयेयगुणवत्संययश्रेणिगतप्रदेशाश्विमानत्वात्, तेभ्योपि देव्यः सस्येयगुणा द्वान्विज्जुह्वुत्वात्, ताभ्योपि चि
हुः अन्नन्तगुणा स्तेभ्योपि तिर्यग्गोत्रिका अन्नन्तगुणा, अत्र युक्ति प्रागेवोक्ता, गत गतिद्वार मिदानो मिन्द्रियद्वार मयिरुत्पाह-एगुसिण ज्ञते ।
सहृदियाण्यमित्यादि ॥ सवस्तोका पञ्चेन्द्रिया सरयेया दक्षयोजनकाटाकोटीप्रमाणविक्रमसूचीप्रतिप्रतरासरयेयनागवत्स्यसरयेयश्रेणिगताकाशप्रदे

सु । देवा असुखेज्जगुणा । देवीनु सखेज्जगुणानु सिद्धा अणतगुणा तिरिस्कजोणिया अणतगुणा दार २ ।
एएसिण ज्ञते । सहृदियाण एगिदियाण वेइदियाण चउरिदियाण पचिदियाण अण्णेदियाणय
कयरे कयरेहिहो अप्पावा वज्जयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सन्नस्योवा पचिदिया चउरि
दियाविसेसाहियानेइदिया विसेसाहिया वेइदिया अण्णिदिया अणतगुणा । एगिदिया अण
सहृदिया वि० । एएसिण ज्ञते ! सहृदियाण एगिदियाण वेइदियाण चउरिदिया पचिदियाण
अपज्जत्तगाण कयरे कयरेहिहो अप्पावा वज्जयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सन्नस्योवा पचि

थी वेदिय विमोपाधिक सूचीप्रभूत अससमातयोजन कोडाकोडी प्रमाण । आणदिया अणतगुणा एगिदिया अणतगुणा सहृदिया विसेसाहिया । तेह
थो अनेदियासुह अन्नन्तगुणा एकेदिय अन्नन्तगुणा वनस्यतामाहि वाब्बतेषके तेहथो सोदिय विमोपाधिकने वेदियमाहिला । एएसिणभते सहृदियाण वेदि
याण तेह दियाण चउरिदियाण पचिदियाणय अपज्जत्तगाण कयरे २ हिहो अरपावा ४ । भगवन् एह वेदियने एकेदियने वे-न्द्रियने तेरिद्विगुने चौरि
द्वाने पचेद्विगुने अपयान्तामाहि किह्वा २ थकी थोहा थणा । गोयमा सन्नस्योवा पचिदिया अपज्जत्तगा चउरिदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया तेदि
या अपज्जत्तगा विसेसाहिया वेदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया एगिदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया सहृदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया । हेभीतम
मन्त्रीथोहा पचेद्विगु अपयान्ता एकप्रतरे जेतवा अणुन अससमातभागमात्र एण तेतलेप्रमाण तेहथो चउरिद्विगु अपयान्ता विमोपाधिक प्रभूतअणुन

शराशिप्रमाणत्वात्, तेन्य यतुरिन्द्रिया विशेषाधिका विक्रमसूच्या स्तेषा प्रभूतसख्येयोजनकोटाकोटीप्रमाणत्वात्, तेन्योपि त्रीन्द्रिया विशेषाधिका स्तेषा विक्रमसूच्या प्रभूततरसख्येयोजनकोटाकोटीप्रमाणत्वात्, तेन्योपि द्वीन्द्रिया विशेषाधिका स्तेषा विक्रमसूच्या प्रभूततरसख्येयोजनकोटाकोटीप्रमाणत्वात्, तेन्योऽनौन्द्रिया अनन्तगुणा सिद्धाना मन्तत्वात्, तेन्योपि एकैन्द्रिया अनन्तगुणा वनस्पतिकारिकाणा सिद्धेन्यो प्यनन्तगुणत्वात् तेन्योपि सेन्द्रिया विशेषाधिका द्वीन्द्रिया दीनानपि तत्र प्रक्षेपात्, तदेवमुक्त नेकमीचिकाना मत्पवहुत्व निदाना मतेषा मेवा पर्याप्ताना द्वितीयमत्पवहुत्वमान-एगसिण जते । सद्दियाणा पचेदिया अपर्याप्ता एकस्मिन्प्रतरे यावत्सुहुलासरये यज्ञानमात्राणि सशक्रानि तावत्प्रमाणत्वात्, तेषा तेन्य यतुरिन्द्रिया अपर्याप्ता विशेषाधिका प्रभूताहुलासख्येयज्ञागराकप्रमाणत्वात्, तेन्य स्त्रीन्द्रिया अपर्याप्ता विशेषाधिका प्रभूततरप्रतराहुलासरयेयज्ञागराकमानत्वात्, तेन्योपि द्वीन्द्रिया अपर्याप्ता विशेषाधिका प्रभूततरमाहुला

दिवा अपज्जत्तमा चउरिदिया विसेसाहिया, तेइदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, वेइडिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, एगिदिया अपज्जत्तगा अणतगुणा, सइदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया । एए सिण जते ! सद्दियाण एगिदियाण वेइदियाण चउरिदियाण पचेदियाण पज्जत्तगाण कयरे कयरेहितो अप्पावा वज्जावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वल्लोवा पज्जत्तगा चउरिदिया

पसरयातभाग खण्ड तेतने प्रमाण तेइमी तेद्वि अपर्याप्ता विगेपाविक प्रभूतप्रतर असखात भागमावसुदप्रमाण तेइमी वेद्वि अपर्याप्ता विगेपाविक प्रभूतप्रतर असखातभाग खण्डप्रमाण एकैद्वि अपर्याप्ता अनन्तगुणा सटा अनन्ता पारिमये तेइमी अपर्याप्ता विगेपाविक वेद्वि अपर्याप्तामा इ चालता । एएसिणमते सइदियाण । हेमवज्ज एह सेद्वियने । पारिमदियाण बेरदियाण तेइदियाण चउरिदियाण पचेदियाण पज्जत्तगाण कयरे २ हि तो अप्पावा ४ । एकैद्वियने वेइद्वियने तेइद्वियने चौरिद्वियने पचेद्वियने पर्याप्ताने किहा २ थको अल्लमहुत्व ४ । गोयमा सव्वल्लोवा चउरिदिया पज्जत्त

संख्येयतागणनप्रमाणत्वात्, तेन्य एकेन्द्रिया अपर्याप्ता अनन्तगुणा धनस्पतिकारिकायिकानामपर्याप्ताना मनन्ततया सदा प्राप्यमाणत्वात्, तेन्योपि सेन्द्रिया अपर्याप्ता द्विोपाधिका हीन्द्रियाद्यपर्याप्तानामपि तत्र प्रक्षेपात्, गत द्वितीयमल्पवहुत्व भवन्तेतेषामेव पर्याप्ताना मल्पवहुत्वमाह-ग एसिण जते । सइदियाणमित्यादि ॥ सर्वस्वोका यतुरिन्द्रिया पर्याप्ता यतोल्यायुप यतुरिन्द्रिया स्तत प्रवृत्तकालमवरयानाभावात्, पृच्छासमये

पचिदिया पञ्जत्तगा विसेसाहिया, तेइदिया पञ्जत्तगा विसेसाहिया, एगिदिया पञ्जत्तगा झणत्तगा, सइदिया पञ्जत्तगा सखेज्जगुणा । एएसिण जते । सइदियाण पञ्जत्ताप ज्ञत्तगाण कयरे कयरेहितो झप्पावा वज्जयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा । सखेल्योवा सइदिया झपज्जसा पञ्जत्तगा सइदिया सखेज्जगुणा । एएसिण जते ! एगिदियाण पञ्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरे हितो झप्पावा ? गोयमा ! सखेल्योवा एगिदिया पञ्जत्तगा झपज्जत्ता झस० । एएसिण जते !

या पचेदिय पञ्जत्तगा विसेसाहिया । हेगौतम सर्वथोडा चोरिदिया पर्याप्ता जेमणो थोडा आसखामाहि तेदथो पचेदिय पर्याप्ता जेमणो विसेसाधिक प्रभूत भूगुल असययात भागमात्र खण्डरमाण । वेद दिय पञ्जत्तगा विसेसाहिया तेद दिय पञ्जत्तगा विसेसाहिया एगिदिय पञ्जत्तगा विसेसाहिया झणत्तगा सद दियपञ्जत्तगा विसेसाहिया । वेद दिय पर्याप्ता विशेषाधिक प्रभनप्रतर भूगुल असययात भागमाचण्ड तेतेने प्रमाण तेदियपर्याप्ता विशेषाधिक एकेन्द्रियपर्याप्ता अनन्तगुणा वनस्पतिपर्याप्ता अनन्तामाटै तेदथो सेदिय पर्याप्ता विशेषाधिक वेददियपर्याप्तामाहि घालता । एएसिण भते सइदियाण पञ्जत्तगा झपज्जत्तगाण कयरे २ हितो अप्पावा ४ । हेभगवन् एइ सेदिवने पर्याप्ता अपर्याप्ताने किहा २ थको थोडा इत्यादि ४ ॥ गोयमा सखेल्यावा सद दिया अपज्जत्तगा सद दिया अपज्जत्तगा सखेज्जगुणा । हेगौतम सर्वथोडा सेदिय अपर्याप्ता इहा सेदियमादि एकेन्द्रिय घालै मूळ पर्याप्ता सेदिय सदरातगुणा दुवे । एएसिणभते एगिदियाण पञ्जत्त अपज्जत्तगाण कयरे २ हितो अप्पावा ४ । हेभगवन् एइ एकेन्द्रियने पर्याप्ता अपर्याप्ता

स्तोका अपि प्रतरे यावत्पुलसरेयनागमात्राणि सन्तानि तावत्प्रमाणा वेदितव्या स्तेन्य पञ्चेन्द्रियपर्याप्ता विशेषाधिका प्रज्जुताहुलसस्येयना गखरुभामत्वात्, तेन्योपि द्वीन्द्रिया पर्याप्ता विशेषाधिका प्रज्जुततरप्रतराहुलसस्येयनागखरुभामत्वात्, तेन्योपि त्रीन्द्रिया. पर्याप्ता विशेषाधिका स्वनावत एव तेषा प्रज्जुततमप्रतराहुलसस्येयनागखरुभामत्वात्, तन्य एकेन्द्रियाः पर्याप्ता अनन्तगुणा वनस्पतिकायिकाना पर्याप्ता ना मनन्तत्वात्, तेन्य सेन्द्रिया पर्याप्ता विशेषाधिका द्वीन्द्रियादीनामपि पर्याप्ताना तत्र प्रज्जुपात्, गत तृतीयमल्पवहुत्व-सम्प्रत्येतेपामेव सेन्द्रियाणा मत्येकपर्याप्ताऽपर्याप्तगताम्यल्पवहुत्वान्याह-एएसिण जते ! इत्यादि सवस्तोका सेन्द्रिया अपर्याप्तका इह सेन्द्रिया एव बहव स्तत्रापि

वेददियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहितो अप्पावा ४ ? गोयमा । सव्वत्थोवा वेददिया अपज्जत्ता वेददिया अपज्जत्ता अपसखेज्जगुणा । एएसिण जते ! तेददियाण पज्जत्तापज्जत्ताण कयरे कयरेहितो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तेददिया पज्जत्ताण वेददिया अपज्जत्ताण कयरे कयरेहितो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा चउरिदियापज्जत्ता गा चउरिदिया पज्जत्ताण अपसखेज्जगुणा । एएसिण जते ! पचेदियाण पज्जत्ता पज्जत्ताण कयरे कयरेहितो

माहि किहाधकौ थोडा घणा सरीखा विगेयाविक हुवे ४ । गोयमा सव्वत्थावा एगिदिय अपज्जत्ताण पज्जत्ताण सखज्जगुणा । हेगौतम सर्वथोडा एके द्रिय पर्याप्तानाठर सूक्काअपर्याप्ता घणाहुवे एकेन्द्रिय पर्याप्ता सख्यातगुणाहे । एएसिण भते पज्जत्ता २ ण कयरे २ हितो अप्पावा ४ । हेमगयन् एह वेदन्द्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ताने किहा २ वकौ थोडा घणा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा वेददिया पज्जत्ताण वेददिया अपज्जत्ताण अपसखिज्जगुणा । हे गौतम सर्वथोडा वेदन्द्रिय पर्याप्ता जेतसा प्रतरमा अगुल सख्यातप्रमाण तेदथो वेददिय अपर्याप्ता अपसख्यातगुणा असख्यात प्रतरभाग । एएसिण भ त तेददियाण पज्जत्ताण कयरे २ हितो अप्पावा ४ । हेमगयन् एह तेददिय पर्याप्ताने किहा २ थो थोडा घणा सरीखा विगेयाविक हुवे ।

त्वात्' तेन्य सौजस्ययुगा अस्येयलोकाकाशप्रमाणत्वात्, तेन्य पृथिवीकायिका विशेषाधिक्या प्रभूतासहेयतोकाकाशप्रदेशप्रमा
णत्वात्, तन्यो ऽध्यायिका विशयायिका प्रभूततरासहेयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणत्वात्, तेन्यो वायुकायिका विशयायिका प्रभूततमासहेयलोकाका
शप्रदेशप्रमाणत्वात्, तेन्यो ऽध्यायिका अनन्तगुणा, सिद्धाना मनन्तत्वात्, तन्यो वनस्पतिकायिका अनन्तगुणा अनन्तलोकाकाशप्रदेशराशिमानत्वात्,
तेन्य सकायिका विशेषाधिक्या पृथिवीकायिकादीनामपि तत्र प्रकृपात्, उक्तमीयिकानामरूपयुतत्व मिदानी मतेपामेश पर्याप्ताना द्वितीयमल्प
युत्यनाह-एगसिण जते । सकाइयाणमित्यादि ॥ सुगम, सम्प्रत्यतपामेव पर्याप्ताना वृत्तीयमरूपयुतत्वमाह-एगसिण जते । सकाइयाणमित्यादि ॥

याण कयरे कयरेहितो आप्याव ४ ? गोयमा ! सन्त्योवा तसकाइया तेउकाइया अप्सखेज्जगुगा, पुढवि
काइया विसेसाहिया, आपकाइया विसेसाहिया वाउकाइया विसेसाहिया अप्पतगुगा,
वणस्सइकाइया अप्पतगुगा, सकाइया विसेसाहियावा । एगसिण जते ! सकाइयाणं पुढविमाइयाण
आउकाइयाण तेउकाइयाण वाउकाइयाण वणस्सइकाइयाण तसकाइयाण अप्पज्जसगाण कयरे कय

हा २ यको थोहा इत्यादि ॥ ४ • गोयमा सन्त्योवा तसकाइया तेउकाइया अप्सखिज्जगुगा । इगीतम सर्वथोहा चमकाया भावना पाकसौपरे तेइयो
पसव्यातगुगा । पुढवोकाइया वि० वाउकाइया वि० वाउकाइया वि० वणस्सइकाइया ॥ ५ • वणस्सइकाइया वि० । तेइयो पृथिवीकायिक
विशेषाधिक प्रभूत प्रसख्यात लोकाकाश प्रमाण तेइयो वाउकाय वि० प्रभूत तमस० लोकाकाश तइयो अकाइया अप्पतगुगा सिद्धता भणो तथा वनस्प
तीकाय अनन्तगुणा अनन्तलोकाकाश प्रमाण तेइयो सकाइय विशेषाधिक प्रखीकावादिमादि घानताधूपणे । एगसिण भते सकाइयाण पुढवोका
याण वाउ० तेउ० वाउ० वणस्सइ० तसकाय० अप्पज्जसगाणय कयरे २ इति अप्पवावा ४ । उभयवन् एह सकाइयाने पृथ्वीकायने अप्पकाय तेउ वा
उ वनस्पती वसकायने अप्पर्याप्ताने किहा २ यको थोहा तथा विशेषाधिक ४ । गोयमा सन्त्योवा तसकाइया अप्पज्जसगा अप्पज्जसगा अ

गमात्राणि सगुणानि तावत्प्रमाणात्वा तेषां तेज्योऽपरांशं असंख्येयगुणं प्रतरगताहुलासंख्येयज्ञागसुखमानत्वा देव त्रिषतुरिन्द्रियाल्पत्वान्यापि वक्तव्यानि, गत पक्षस्य बाहुल्यत्वात्सक चतुर्थमल्पबहुत्व सम्प्रत्येतया सन्दिग्धादीनां समुचितानां पर्यांशप्राप्त्याप्यल्पबहुत्वमाह-एवमसि गत । इत्यादि ॥ इदं प्रागुक्तद्वितीयतीयाल्पबहुत्वज्ञावनानुसारिण स्वयं ज्ञावनीय, तत्त्वतो प्रावितत्वात्, गत मिन्द्रियद्वार भिदानीं जायद्वार मधि कृत्याह-एवमसि गत । सकाद्वयाण मित्यादि ॥ सर्वलोकां यस्मादयिका द्वीन्द्रियादीनामेव वसतायिकत्वात्, तेषां चोपकायापेक्षया अत्यल्प

चउरिन्द्रिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, वेइदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, एगिदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सइदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, एगिदिया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा, सइदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सइदिया विसेसाहिया द्वार ३ । एवमसि गते । सकाद्वयाण पुढविक्काडयाण अउकाडयाण तेउकाडयाण वाउकाडयाण वगरसइक्काडयाण तसक्काडयाण अउकाड

पर्यांशता भावना पाच्छलोपरं तेहथो पचेद्विग पर्यांशताविशेषाधिक जाण्णिवा तेहथा तेन्द्रियपर्यांशता विशेषाधिक तेहथो वेइदिया पर्यांशता विशेषाधिक । पचेदिगा अपज्जत्तगा असखज्जगुणा चउरिन्द्रिया अपज्जत्तगा वि० तेइदिया अपज्जत्तगा वि० वेइदिया अपज्जत्तगा वि० एगिदिगा अपज्जत्तगा वि० । सइदिया अपज्जत्तगा वि० । तेहथो पचेद्विग पर्यांशता असमसगतगुणा तेहथो चौरिन्द्रिय अपर्गापत्ता विशेषाधिक तेहथो तेन्द्रिय अपर्गापत्ता विशेषाधिक तेहथो वेइन्द्रिय अपर्गापत्ता विशेषाधिक तेहथो एकैन्द्रिय अनन्तगुणा तेहथो सइन्द्रिय अपर्गापत्ता विशेषाधिक । एगिदिगा पज्जत्तगा सखिज्जगुणा सइदियपज्जत्तगा वि० द्वार ३ ॥ तेहथो एकैन्द्रियपर्यांशता सख्यातगुणा तेहथो सेन्द्रिय पर्यांशता विशेषाधिक जाणया इति तृतीयद्वार तीजे पडे तीसरोद्वार सपूर्णद्वार ॥ एवमसि गते ते सकाद्वयाणं पढवीकारयाण वाउका० तेउका० वाउका० यणच्छदे का० तस्यका० अउकाद्वयाणं कथरे २ इति । अपपुषा ४ । हेमगयन् कावहारकच्छो एह सकायने पृथ्वीकायने अपेकायने तेउकायने वाउकायने वनसतीकायने वसकायने अकारने एकमादि कि

सुगम, साम्प्रतमेतेषामेव सकायिकादीनां प्रत्येक पर्यासाऽपर्याप्तगत मत्पथहुत्वमाह-एएसिण ज्ञते । सकाद्वयाण पञ्जत्ताऽपञ्जत्ताणमित्यादि ॥
सुगमम्, सम्प्रत्येतेषामेव सकायिकादीनां समुदितानां पर्यासाऽपर्याप्तानां मत्पथहुत्व पञ्चममाह-एएसिण ज्ञते । सकाद्वयाणमित्यादि ॥ सर्वस्ते

विसेसाहिया । एएसिण ज्ञते । सकाद्वयाण पञ्जत्ता पञ्जत्ता वज्जयावा तुप्पावा
विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सकाद्वया अपञ्जत्तगा सखेज्जगुणा । एएसिण
ज्ञते ! पुढविकाद्वयाण पञ्जत्ता पञ्जत्ता कयरे कयरेहितो अप्पावा वज्जयावा तुप्पावा विसेसाहियावा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा पुढविकाद्वया अपञ्जत्तगा, पुढविकाद्वया पञ्जत्तगा सखिज्जगुणा । एएसिण ज्ञते !
अउकाद्वयाण पञ्जत्ता पञ्जत्ताणं कयरे कयरेहितो अप्पावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा अउकाद्वया अप

नख्खीकाय पर्यासा अनन्तगुणा । सकाद्वया पञ्जत्तगा वि० । तेहथी सकाद्वया पर्याप्ता विमोपाधिक । एएसिण भते सकाद्वयाण पञ्जत्तापञ्जत्ताणय क
यरे २ हितो अप्पावा ४ । भगवन् एह सकाद्वयाण पर्याप्तानां अपर्याप्तानां किंवा २ थो थोडा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थावा सकाद्वया अपञ्जत्तगा सका
द्वया पञ्जत्तगा सखेज्जगुणा । हेगौतम सर्वथाहा सकाद्वया अपर्याप्ता तेहथी सकाद्वया पर्याप्ता सव्वत्तगुणा । एएसिण भते पढवीकाद्वयाण पञ्जत्ता
२ णय कयरे २ हितो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह पृथ्वीकायिकने पर्याप्ता अपर्याप्तानां कहा २ थो थोडा घणा विमोपाधिक हुवे । गोयमा सव्वत्थो वा
पुढवीकाद्वया अपञ्जत्तगा पुढवीकाद्वया पञ्जत्तगा सखिज्जगुणा । हेगौतम सर्वथाहा पृथ्वीकाय अपर्याप्ता पृथ्वीकाय पर्याप्ता सव्वत्तगुणा । एएसिण
भते आउकाद्वयाण पञ्जत्तापञ्जत्ताणय कयरे २ हितो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह अप्पावायने पर्याप्ता किंवाथी थोडा घणा सरोत्वा विमोपाधिक ।
गोयमा सव्वत्थावा आउकाद्वया अपञ्जत्तगा आउकाद्वया पञ्जत्तगा सखेज्जगुणा । हेगौतम सर्वथाहा अप्पावा अपर्याप्ता अप्पावा पर्याप्ता सव्वत्त
गुणा । एएसिण भते तेउकाद्वयाण पञ्जत्ता २ णय कयरे २ हितो अप्पावा । हेभगवन् एह तेउकायने पर्याप्ता अपर्याप्तानां किंवाथी थोडा घणा इ

रेहिती आप्पावा४ ? गोयमा ! सव्त्थोवा तसकाइया अपज्जत्तगा, तेउकाइया अपज्जत्तगा असखे ज्जग्गुणा, पुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, आप्पाकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अप्पत्तगुणा । सकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया एएसिणं नत्ते ! सकाइयाणं पुढविकाइयाण आप्पाकाइयाण तेउकाइयाण वाउकाइयाण वणस्सइकाइयाणं तसकाइयाणय पज्जत्तगाण कयरे कयरेहिती आप्पावा४ ? गोयमा ! सव्त्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा, तेउकाइया पज्जत्तगा असखेज्जग्गुणा, पुढविकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया । आप्पाकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, वणस्सइकाइया पज्जत्ता अप्पत्तगुणा, सकाइया पज्जत्ता

सखिज्जग्गुणा । हेगौतम सर्वयोधोडा असकाइया अपर्यापता तेहथी तेउकाय अपर्यापता असखातगुणा । पुढवोकाइया अपज्जत्तगा वि० आप्पाकाइया अपज्जत्तगा वि० वाउकाइया अपज्जत्तगा वि० वणस्सकाइया अपज्जत्तगा अप्पत्तगुणा । तेहथी प्रथिगोकाइया अपर्यापता विषेयाधिक तेहथी अप्पाकाइया अपर्यापता विषेयाधिक तेहथी वाउकाइया अपर्यापता वनस्सतोकाइया अपर्यापता वनस्सगुणा । सकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया वाउकाइया अपज्जत्तगा वि० । तेहथी सनाइया अपर्यापता विषेयाधिक तेहथी वाउकाय अपर्यापता विषेयाधिक । एएसिण भत्ते सकाइया ण पुढवोकाइयाण आउ० तेउ० वाउ वणस्स० तस्सका० पज्जत्तगाणय कउरे २ हितो अप्पावा ४ । हेभगवन् ए सनाउने प्रथोकाइयाणे अप्पाका० तेउ वा उ वनस्सतो वस० पर्यापताने किदा २ थो थोडा प्रथवा घणाहवे ४ । गोयमा सव्त्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा वि० तेउकाइया पज्जत्तगा वि० अय० । हेगौतम सर्वयोडा असकाय पर्यापता तेहथी तेउकाय पर्यापता वि० असखातगुणा । पुढवोकाइया पज्जत्तगा वि० आप्पाकाइया पज्जत्तगा वि० वाउ काइया अपज्जत्तगा वि० वणस्सइकाइया पज्जत्तगा अण० । प्रथोकाइया पर्यापता वि० अप्पाकाइया पर्यापता वि० वायुहाय पर्यापताविशेष तेहथी व

विशेषाधिका १० । ततो वनस्पतयो उपर्याप्ता अनन्तगुणा ११ । पर्याप्ता सख्येयगुणा १२ । तदेवं कायद्वारे सामान्येन पञ्चसूत्राणि प्रतिपादिता
नि । सम्यक्सिद्धत्वेन द्वारे सूक्ष्मदशसूत्राण्यह-एवसिण जते । सुहृन्मात्रमित्यादि ॥ सर्वस्वोक्ता सूक्ष्मैर्जडक्रियाया अत्रत्येय

ज्ञाणा सखेज्जगुणा । एवसिण जते ! तसकाइयाण पज्जत्ता पज्जत्ता कयरे कयरेहिती अण्णवा५ गोय
मा । सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा, तसकाइया अपज्जत्तगा असखेज्ज० । एवसिण जते ! सकाइयाण
पुढविक्काइयाण अण्णवाइयाण वाउकाइयाण वणस्सइकाइयाण तसकाइयाण पज्जत्ता २ ण
कयरे कयरेहिती अण्णवा५ १ गो० । सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा, तसकाइया अपज्जत्तगा असखे
ज्जगुणा, तण्णवाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा पुढविक्काइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, अण्णवाइया अ
पज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, तण्णवाइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा, पुढवि

असत्यातगुणा । एवसिण जते सकाइयाण पुढविक्काइयाण वाउ० तण्णवाइयाण वणस्सइ० तसकाइयाण व पज्जत्ता २ ण कयरे २ हिती अपण्णवा ४ ।
हेभगवन् एह सक्कायने अण्णवायने तण्णवायने वायुकायने वनस्पतीकाय अण्णवायने अप० किंवा २ यो योडा इत्यादि । गोयमा स
वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा तसकाइया अपज्जत्तगा अण्णवाइया पर्वीता वसकाइया अपर्वीता असत्यातगुणा ।
तण्णवाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा । तण्णवाइया अपज्जत्तगा अण्णवाइया अपज्जत्तगा अप० किंवा २ यो योडा इत्यादि । गोयमा स
वि० तण्णवा० अप० सखेज्जगुणा । तण्णवाइया अपज्जत्तगा अपर्वीता अण्णवाइया अपज्जत्तगा अप० किंवा २ यो योडा इत्यादि । गोयमा स
धिक तण्णवाइया तण्णवाय पर्याप्ता सत्यातगुणा । पुढविक्काइया पज्जत्तगा वि० वाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया वणस्स
इकाया अपज्जत्तगा अपण्णवा । पुढविक्काय पर्याप्ता विशेषाधिका वायुकाय पर्याप्ता विशेषाधिका वनस्पतीकाय पर्याप्ता

का स्वसर्गायिका १ । पर्याप्तका स्तेज्य स्वसर्गायिका एवा उपर्याप्तका असङ्ख्यगुणा द्वीन्द्रियादीनामपर्याप्ताना पर्याप्तद्वीन्द्रियादिभ्यो ऽसङ्ख्येयगु
णत्वात् २ । तत स्तेजरर्गायिका अपर्याप्ता असङ्ख्यगुणा असङ्ख्यलोकाकाशप्रदेशप्रमाणत्वात् ३ । तत पृथिव्यम्बुवायसो ऽपर्याप्ता क्रमेण विशो
पायिका ६ । तत स्तेजरर्गायिका पर्याप्तका स्वस्तेयगुणा सूक्ष्मेष्टपर्याप्तस्य पर्याप्ताना स्वस्तेयगुणत्वात् ७ । तत पृथिव्यम्बुवायव पर्याप्ता क्रमेण

ज्जत्तगा, आउकाइया पज्जत्तगा सखिज्जगुणा । एएसिण भते ! तेउकाइयाण पज्जत्ता पज्जत्ताण कयरे
कयरेहिती अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तेउकाइया अपज्जत्तगा, तेउकाइया पज्जत्तगा सखिज्जगुणा
एएसिण भते ! वाउकाइयाण पज्जत्ता पज्जत्ताण कयरे कयरेहिती अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वाउ
काइया अपज्जत्तगा, वाउकाइया पज्जत्तगा सखिज्जगुणा । एएसिण भते ! वणस्सड्काइयाण पज्जत्ता २ णं
कयरे कयरेहिती अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वणस्सड्काइया अपज्जत्तगा, वणस्सड्काइया पज्ज

त्तादि । गोयमा सव्वत्थोवा तेउकाइया अप० तेउका० पज्ज० सखिज्जगुणा । हेगौतम सर्वथोडा तेउकाइया अपर्याप्ता तेउकाइया पर्गपत्ता सव्वत्ता
गुणा । एएसिणभते वाउकाइयाण पज्जत्ता २ णं कयरे २ हिती अप्पावा ४ । हेभगवन् एह वाउकायने पर्याप्ता अपर्याप्ताने किहा २ थो थोडा
यथा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा तेउकाइया अप० वाउका० पज्ज० सखिज्जगुणा । हेगौतम सर्वथोडा तेउकाइया अप० वाउकाइया पर्याप्ता सखि
ज्जगुणा । एएसिण भते वणस्सड्काइयाण पज्जत्ता २ णं कयरे २ हिती अप्पावा ४ । हेभगवन् एह वणस्सत्तोकायने पर्या० अप० ने किहा २ थो थोडा वण
इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा वणस्सड्काइया अप० वणस्सड्काइया पज्ज० सखिज्जगुणा । हेगौतम सर्वथोडा वणस्सत्तोकायिक पर्या० वणस्सत्तोकायिक
अपर्या० सखातगुणा । एएसिण भते तसकाइयाण पज्जत्ता २ णं कयरे २ हिती अप्पावा ४ । हेभगवन् एह वसकाय पर्या० अप० किहा २ थो थोडा
यथा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा तसकाइया अपज्जत्तगा वसकाइया पर्या० वसकाय अप०

सवलोकापन्ना तेव प्रतिगोलकमसम्येया इति सूक्ष्मगणयुकाधिकेभ्यो ऽशङ्क्यगुणा, तेन्य सूक्ष्मवनस्पतिकारिका प्रनल्लगुणा-प्रतिनिगोदमनत्ताना ज्ञायात्, तेन्य सामानिका सूक्ष्मजीवा विशयाधिका सूक्ष्मपृथिवीकारिकादीनामपि तत्र प्रवेपात्, गतमीचिकाना भिद मत्पवहुत्य भिदानी मेतया मेया ऽपर्याप्तानामाह-गयसिण जते । सुक्ष्मअपज्जत्तगणमित्यादि सर्वप्राग्व द्वावनीय, सम्प्रत्येतेषामेव पर्याप्ताना तृतीयमल्पवहुत्वमाह-सपसिण जते । सुक्ष्मपज्जत्तगणमित्यादि ॥ इदमपि प्रागुक्तक्रमेणैव ज्ञावनीय, अयुना अमीपानेव सूक्ष्मादीना प्रत्येक पर्याप्तगतानि अल्पवहुत्वान्या

विसेसाहिया, सुक्ष्मवाउकाइया विसेसाहिया, सुक्ष्मनिगोदा अस्खेज्जगुणा, सुक्ष्मवणस्सडकाइया अणत्तगुणा, सुक्ष्मा विसेसाहिया । एएसिण जते ! सुक्ष्मअपज्जत्तगण सुक्ष्मपुढविकाइया अपज्जत्तगण सुक्ष्मअउकाइया अपज्जत्तगण सुक्ष्मतेउकाइया अपज्जत्तगण सुक्ष्मवाउकाइया अपज्जत्तगण सुज्ज मवणस्सडकाइया अपज्जत्तगण सुक्ष्मनिगोदा अपज्जत्तयाणय कयरे कयरेहिती अण्णावा ४ ? गीयमा ! सव्वत्थोवा सुक्ष्मतेउकाइया अपज्जत्तया, सुक्ष्मपुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुक्ष्मअउका

तगुणा सुक्ष्मा वि० । तेइथो सूक्ष्मवनस्पतीकाइया अनल्लगुणा मूणा सर्वं पृथिव्यादि वि० । एएसिण भते सुक्ष्म अपज्जत्तगण सुक्ष्मपुढवोकाइया अपज्जत्तगण सुक्ष्म अउकाइया अपज्जत्तगण सुक्ष्म तेउकाइया अप० सुक्ष्म वणस्सडकाइया अप० सुक्ष्मनिगोद अपज्जत्तगणय कय रे इ हिता अण्णावा ४ । हेमववन् एड मसूम् अपर्याप्ताने मू पृथ्वीकाय त्रप्प० मू अकाय अप० मू तेउकाय अप० मू वाउकाय त्रप्प० मू यनस्स तीकाय अप० मू निगोद अप० किहो २ थो थोडा मरीखा विजेपाधिक हुवे । गीयमा मवत्थोवा सुक्ष्म तेउकाइया अप० स० पुढवोकाइया अप० वि० स० अउका अप० वि० सु० वानका वि० सु० निगोवा अप० यम० सु० वणस्स अप० यणत म० अपज्जत्तगा वि० । हेगीतम संबोधोडा मसूम् तेउकाय अप० मू पृथ्वीकाय अप० वि० सु० अकाय अप० वि० सु० वाउकाय अप० वि० सु० निगोद अप० पसव्वामगुणा मू यनस्पतीकाय अप०

लोकाकाशाप्रदेशप्रमाणत्वात्, तेन्य सूक्ष्मपृथिवीकायिका विशेषपायिका प्रज्जुतासंयोजनोकाकाशाप्रदेशप्रमाणत्वात्, तेन्य सूक्ष्मायिका, प्रज्जु ततरासंयोजनोकाकाशप्रमाणत्वात् २। तेन्य सूक्ष्म वायुकायिका विशेषपायिका प्रज्जुतमासंयोजनोकाकाशाप्रदेशप्रमाणत्वात्, तेन्य सूक्ष्मनि गोदा शसंयोजनगुणा (ग्रथाग्र ३०००) सूक्ष्मग्रहण वादरध्यवच्छेदार्थ, द्वित्रिपात्रि-निगोदा सूक्ष्मा वादरा श, तत्र वादरा सुरणकदादिपु सूक्ष्मा

काइया पञ्जतगा विसेसाहिया, झुप्पकाइया पञ्जतगा विसेसाहिया, वाउकाइया पञ्जतगा विसेसाहिया,
 झुपञ्जतगा वणस्सइकाइया पञ्जतगा सखेज्जगुणा, सकाइया झुपञ्जतगा विमंसाहिया, सकाइया पञ्जत
 गा सखेज्जगुणा सकाइया विमंसाहिया, एएसिण नत्ते ! सुज्जमाण सुज्जनपुढावेकाइयाण सुज्जमञ्चाउकाइ
 याण सुज्जमत्तेउकाइयाण सुज्जमवाउकाइयाण सुज्जमवणरसइकाइयाण सुज्जमणिउगाणय कयरे कयरेहिता
 झुप्पावा? ? गोयमा ! सव्वस्योवा सुज्जमत्तेउकाइया, सुज्जमपुढावेकाइया विमंसाहिया सुज्जमञ्चाउकाइया

भारतजना । सकादया अपलत्तगा विससादिया वणपडकादया पल्लसगा सर्पयापुता विशेषाधिक वनरपनौकादया पर्याता सव्यातगुणा । सकादगा पल्लसगा विससादिया । सकादया पर्याता विशेषाधिक । पचसूवाणिसामायेन प्रतिपादितानि अधनामूखवाटारदिभेदेन पचदशमूखाराह । ए पाचसूव सामान्यणे काययागदारे कक्षा, हिये सूखवाटर भेदेकरो १५ मूत्र कहेके—एएसिणभते सहमाण मुहुमपुठवौकादया ण सहमबाडकादयाण मुहुम-तेठ मुहुमबाड-सहम वणख-सहुमनिगोवाणय कयरे २ हितो आपावा ४ । हेमगवन् ठहने सूखपुखौकायने मूत्रमपक्रा गने मूत्रतेउकायने मूत्रमयुकायने मूत्रवनरपतौकाय मूत्रनिगोदेने किडा २ यौधोडा घर्णा सरीखा विशेषाधिक हवे । गोयमा मवत्योवा सहम ते सकादया मुहुमपुठवौकादया विससादिया । हेमौतम सर्वथाडा मूत्र तेउकाय तेइथी सूख पुखौकाय विशेषाधिक । मुहुम भाउकादया रि० मुहुमबा वकादया वि० मुहुमनिगोया मसे० । मूत्र भाकाय विशेषाधिक मूत्रवायुकात्रिक वि० तेइथी मूत्रनिगोद-असख्यातगुणो । मुहुमयणखरकादया थण

इ-एरसिण भते । सुहुमाण पज्जत्तापज्जत्ताणमित्यादि ॥ इह वादरेपु पर्याप्तं उपर्याप्ता एकैकपर्याप्तनिश्रया अस्सहेयानामपर्याप्तानां मुत्वादा सयाचोक्त-प्राक् प्रथमे प्रज्ञापनाये पदे-पज्जत्तागनिरसाय अपज्जत्ताया वक्कमन्ति, जत्य एगो तत्य नियमा अस्सयेज्ज इति, मूत्तेपु पुन नोय कम पर्याप्ताया पर्याप्तापेत्तया चिरकालावस्थायिन इति सदेव ते दहवो सम्पन्ते, तत उक्त-सर्वलोका सूत्ता अपर्याप्ता स्तेन्य सूत्ता पर्याप्तका सहेयगुणा, एव पृथिवीकायिकादिषापि प्रत्येक प्रावनीय, गत चतुर्थमल्पवहुत्व भिदानो सर्वेषा समुदिताना पर्याप्तापर्याप्तगत पञ्च

मनिगोदा पज्जत्ताया अस्सखेज्जगुणा, सुज्जमवणस्सइकाइयापज्जत्तया अणत्तगुणा, सुज्जमापज्जत्ताया विसेसा हिया दार ३ । एरसिण भते ! सुज्जमाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहिती अण्पावा ४ ? सव्वल्योवा सुज्जमा अण्पज्जत्ताया सुज्जमा पज्जत्ताया सखेज्जगुणा । एरसिण भते ! सुज्जमपुढविकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे २ हिती अण्पावा ४ ? गोयमा । सव्वल्योवा सुज्जमपुढविकाइया अण्पज्जत्तया, सुज्जमपुढविआइया पज्जत्तया सखेज्जगुणा । एरसिण भते ! सुज्जमअण्पावा ४ गोयमा । सव्व

वा सहमपुढवीकाइया अप ० सुहुमपुढवीकाइया पज्जत्तया सखेज्जगुणा । हेगोतम सर्वथोऽऽ सूत्तमपुढवीकाय पर्याप्ता अत्ता तगुणा पर्याप्ता अपर्याप्ताने । एरसिण भत सहम आठकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे २ हिती अण्पावा ४ । हेभगवन् एह मूत्तमपुढवीकाइया पर्याप्ता किहा २ वी घोडा घणा गोयमा सव्वल्योवा सुहुमआठकाइया अपज्जत्तया सुहुम आठकाइयाए पज्जत्तया सखिज्जगुणा । हेगोतम सर्वथोऽऽ सूत्तम अस्सकावने पर्याप्ता अपर्याप्ताने तेद्वी सूत्तम अपकाइया पर्याप्ताने सख्यातं गुणा । एरसिण सुहुम तेठकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे २ हिती अपपावा ४ । हेभगवन् एह सूत्तम तेठकाय पर्याप्ताने किहा २ वी घोडा घणा । गोयमा सव्वल्योवा सुहुम तेठकाइया अपज्जत्तया सुहुमतेठकाइया पज्जत्तया सखिज्जगुणा । हेगोतम सर्वथोऽऽ सूत्तम तेठकाय अपर्याप्ताने सख्यातं गुणा । एरसिण भते सु

अपञ्जतया विसेसाहिया, सुजमवाउकाइया अपञ्जतया विसेसाहिया, सुजमनिगोदा अपञ्जतगा अ
 सखेजगुणा, सुजमवणस्सडकाइया अपञ्जतगा अणतणुणा, सुजमा अपञ्जतगा विसेसाहिया एएसिण
 जते ! सुजमपञ्जतगाणं सुजमपुढविकाइयपञ्जतगाणं सुजमअउकाइयपञ्जतगाणं सुजमतेउकाइयपञ्ज
 तगाणं सुजमवाउकाइयापञ्जतगाणं सुजमवणस्सडकाइयापञ्जतगाणं सुजमनिगोदपञ्जतगाणय कयरे कय
 रेहिती अण्णावा ४ ? गोयमा ! सख्योवा सुजमतेउकाइया पञ्जतगा, सुजमपुढविकाइयापञ्जतगा वि
 सेसाहिया, सुजमअउकाइया पञ्जतगा विसेसाहिया, सुजमवाउकाइया पञ्जतगा विसेसाहिया, सुज

अणततगुणा सू अप विषेयाधिक । एएसिण भते सुहुम पञ्जतगाणं सुहुमपुढवीकाइया पञ्जतगाणं सु भाउ पञ्जतगा सु तेउ पञ्ज सु वाउका
 पञ्ज स वणस्स पञ्ज सू निगोय पञ्जतगाणय कयरे २ हिती अण्णावा ४ । हेभगवन् एह सच्चुम पर्याप्ताने सू पुच्चोकायपर्याप्ताने सू अरकाय
 पर्याप्ताने सू तेउका पञ्ज सू वायुकाय पर्याप्ताने सू वनस्सतीकाय पर्याप्ताने सू निगोद पर्याप्ताने किहा २ यो घोडा इत्यादि । गोयमा सख्योवा सुहुम
 तेउकाइया पञ्जतगा सु पुढवीकाइया अप वि सू आउकाइया पञ्ज वि सू वाउका पञ्ज सू निगोय पञ्जतगा सखिजगुणा स वणस्स
 रका पञ्जतगा अणतगुणा सुहुम पञ्जतगा विसेसाहिया । हेगीतम सर्वगोडा सच्चुम तेउकाय पर्याप्ताने तेउधो सच्चुम पुच्चोकाय पर्याप्ताने वि सू अरका
 य पर्याप्ताने वि सू सच्चुम वायुकाय प विषेयाधिक सच्चुम निगोद प सख्यातगुणा सच्चुम वनस्सतीकाय प अणतगुणा सच्चुम सर्वपर्याप्ताने विषेयाधि
 क । एएसिण भते सहमाण पञ्जता २ णय कयरे २ हिती अण्णावा ४ । एहेने हेभगवन् सच्चुम पर्याप्ताने अप ने किहा २ यो घोडा इत्यादि । गोयमा स
 ख्योवा सुहुम अपञ्जतगा सुहुमपञ्जतगा सखिजगुणा । हेगीतम सर्वगोडा सच्चुम अपर्याप्ताने सच्चुमपर्याप्ताने सख्यातगुणा । एएसिण भते सुहुमपुढ
 वीकाइयाण पञ्जता २ णय कयरे २ हिती अण्णावा ४ । एहेने हेभगवन् सच्चुम अण्णावने पर्याप्ताने अप ने किहा २ यो घोडा सया । गोयमा सख्या

अपञ्जतया विसेसाहिया, सुजमवाउकाइया अपञ्जतया विसेसाहिया, सुजमनिगोदा अपञ्जतया अप
सखेजगुणा, सुजमवणस्सडकाइया अपञ्जतया अपणतणुणा, सुजमा अपञ्जतया विसेसाहिया एणसिण
अते ! सुजमपञ्जतगणं सुजमपुढविकाइयपञ्जतगणं सुजमअउकाइयपञ्जतगणं सुजमतेउकाइयपञ्ज
तगण सुजमवाउकाइयापञ्जतगणं सुजमवणस्सडकाइयापञ्जतगण सुजमनिगोटपञ्जतगणय कयरे कय
रेहिती अप्पावा ४ ? गोयमा ! सख्योवा सुजमतेउकाइया पञ्जतगा, सुजमपुढविकाइयापञ्जतगा वि
सेसाहिया, सुजमअउकाइया पञ्जतगा विसेसाहिया, सुजमवाउकाइया पञ्जतगा विसेसाहिया, सुज

अणततगुणा सू अप० विशेषाधिक । एणसिण भते सुहुम पञ्जतगण सुहुमपुढवीकाइया पञ्जतगण सु भाउ० पञ्जतगा सु० तेठ० पल सु० वाउवा०
पञ्ज० स० वणस० पञ्ज० सू० निर्गोय पञ्जतगणय कयरे रेहिती अप्पावा ४ । हेमगवन् एह सूचुम पर्याप्ताने सू० पृथ्वीकावपर्याप्ताने सू० चरकाय
पर्या० सू० तेठका० पर्या० सू० वायुकाय पर्या० सू० वनसतीकाय पर्या० सू० निर्गोट पर्याप्ताने किहा रे धो छोडा इत्यादि । गोयमा सख्योवा सुहुम
तेठकाइया पञ्जतगा सु० पुढवौकाइया अप० वि० सु० आउकाइया पल० वि० सू० वाउका० पञ्ज० सू० निर्गोय पञ्जतगा सखिजगुणा स० वणस
इका० पञ्जतगा अणतगुणा सुहुम पञ्जतगा विसेसाहिया । हेमोतम सर्वथोडा सूचुम तेठकाय पर्याप्ता तेठथो सूचुम पृथ्वीकाय पर्या० वि० सू० चरका
य पर्याप्ता वि० सूचुम वायुकाय प० विशेषाधिक सूचुम निर्गोट प० सख्यातगुणा सूचुम वनसतीकाय प० अन्तगुणा सूचुम सर्वपर्याप्ता विशेषाधि
क । एणसिण भते सुहुमाण पञ्जता रे थय कयरे रेहिती अप्पावा ४ । एहने हेमगवन् सूचुम पर्या० अप० ने किहा रे धो छोडा इत्यादि । गोयमा स
ख्योवा सुहुम अपञ्जतगा सुहुमपञ्जतगा सखिजगुणा । हेमोतम सर्वथोडा सूचुम अपर्याप्ता सूचुमपर्याप्ता सख्यातगुणा । एणसिण भते सुहुमपुढ
वौकाइयाण पञ्जता रे थय कयरे रेहिती अप्पावा ४ । एहने हेमगवन् सूचुम अप्पावने पर्या० अप० ने किहा रे धो छोडा चया । गोयमा सख्यो

इ-एरुसिण भते। सुनुमाण पज्जत्तापज्जहाणमित्यादि ॥ इह यादरेपु पर्याप्तियो उपयोसा अस्सहेयगुणा अस्सहेयानामपर्याप्ताना मुत्थादा तथाचोक्त-प्राक् प्रथमे प्रज्ञापनास्ये पदे-पज्जत्तगनिरसाए अपज्जत्तगा वक्कमन्ति, जत्थ एगो तत्थ नियमा असस्येज्ज इति, सूस्सेपु पुन नाय ऊम पर्याप्ताया पर्याप्तापेक्षया चिरकालावस्थायिन इति सदेव ते ग्रहयो सज्जन्ते, तत्त उक्त-सर्वज्जोक्ता सूत्ता अपर्याप्ता स्सेज्ज सूत्ता पर्याप्तका सहेयगुणा, एव पृथिवीकायिकादिष्वपि प्रत्येक जावनीय, गत वतुयमल्पवहुत्व मिदानी सर्वपा समुदिताना पर्याप्तापर्याप्तगत पब्ब

मनिगीदा पज्जत्तगा अस्सखेज्जगुणा, सुज्जमवणस्सइकाइयापज्जत्तया अणतगुणा, सुज्जमापज्जत्ता विसेसा हिंया दार ३। एरुसिण भते। सुज्जमाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरोहितो अप्पावा ४ ? सव्वत्थोवा सुज्जमा अपज्जत्तगा सुज्जमा पज्जत्तगा सखेज्जगुणा। एरुसिण भते ! सुज्जमपुढविकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे २ हितो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुज्जमपुढविकाइया अपज्जत्तया, सुज्जमपुढविकारुइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा। एरुसिण भते ! सुज्जमअ्याउकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे २ हितो अप्पावा ४ गोयमा । सह

वा सहमपुढवोकाइया अप० सहमपुढवोकाइया पज्जत्तगा सखेज्जगुणा। हेगौतम सर्वघोटा सूच्चमपुढवोकाय पर्याप्ता मत्था तगुणा पर्याप्ता अपर्याप्ताने। एरुसिण भत सहम वाउकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे २ हितो अप्पावा ४। हेभगवन् एह मणुनग्गान्नादने पर्याप्ता अपर्याप्ता किंहा २ धो घोडा घणा इत्यादि। गावमा सव्वत्थोवा सहमवाउकाइया अपज्जत्तगा सहम वाउकाइया सखिज्जगुणा। हेगौतम सर्वघोटा सूच्चम अपकायेने पर्याप्ता अपर्याप्ता तेइधो सूच्चम अपकाइया पर्याप्ता सव्वत्थोवा सखिज्जगुणा। एरुसिण सहम तेउकाइयाण पज्जत्ता २ ण कयरे २ हितो अप्पावा ४। हेभगवन् एह सहम तेउकाय पर्याप्ता अपर्याप्ताने किंहा २ धो घोडा घणा। गेउमा सव्वत्थोवा सहम तेउकाइया अपज्जत्तगा सहम तेउकाइया पज्जत्तगा सखिज्जगुणा। हेगौतम सर्वघोटा सूच्चम तेउकाय अपर्याप्ताने सहम तेउकाय अपर्याप्ताने सव्वत्थोवा सखिज्जगुणा। एरुसिण भते सु

येज्ज० । एएसिण भते ! सुहुमवणस्सइकाइयाणं पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहि तो अण्णवावा १ ? गोयमा !
 सव्वत्थोवा सुहुमवणस्सइकाइया अण्णत्तगा, सुज्जमवणस्सइकाइया पज्जत्तगा सखिज्जगुणा । एएसिणं
 भते ! सुहुमनिगोदाण पज्जत्ता २ ण कयरे कयरेहि तो अण्णवावा १ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुज्जमनिगोदा
 अण्णत्तगा, सुहुमनिगोदा पज्जत्तगा सखिज्जगुणा । एएसिण भते ! सुहुमाण सुहुमपुढविकाइयाणं सुहुम
 अण्णत्तगा सुहुमत्तेउकाइयाण सुज्जमवाउकाइयाण सुहुमवणस्सइकाइयाण सुहुमनिगोदाणय पज्जत्ता २
 ण कयरे कयरेहि तो अण्णवावा १ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमत्तेउकाइया अण्णत्तया, सुहुमपुढविकाइया
 अण्णत्तया विसेसाहिया, सुज्जमवाउकाइया अण्णत्तया विसेसाहिया, सुज्जमवाउकाइया अण्णत्तया
 विसेसाहिया, सुज्जमत्तेउकाइया पज्जत्तया सखिज्जगुणा, सुज्जमपुढविकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया, सुज्ज

मा सुहुमनिगाया पज्जत्तगा स० । हेगोतम सर्वथाहा सच्छमनिगाहिया अपर्यापता तदर्थो सच्छमनिगाट पर्यापता सख्यातगुणा । एएसिण भते सुहुमाण
 महुमपुढवोकाइयाण सुहुमवाउकाइयाण सुहुमत्तेउ० महुम वाउ० सुहुमवणस्सइकाइयाण सुहुम निगायाण पज्जत्ता २ णय कवरे ३ हितां त्रपपावा ४ ।
 हेमगणन् ७४ सन्नुमने सच्छमपुढवोकायने स० अपक्कायने स० तैवकायने स० वायुने स० वनस्सत्तोकायने स० निगाटने पर्यापता २ ने किङ्का २ यो
 थाडा इटाटि । गोयमा मज्झ्यावा सुहुम तैवकाइया अपज्जत्तगा सुहुम पुढवोकाइया अपज्जत्तगा वि० स० वाउकाइया प्रपज्जत्तगा वि० । हेगोतम
 सर्वथाडा स० तैवकाय अपर्यापता स० पुढवोकाय अप० वि । स० अपक्काय अपर्यापता विशेषाधिक । महुम वाउकाइया पज्जत्ता वि० स० तैवकाइया
 पज्जत्तगा सखिज्जगुणा स० पुढवोकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया सुहुम वाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया सुहुम वाउकाइया अपज्जत्तगा विसेस
 हिया सुहुमनिगाया अपज्जत्तगा असखिज्जगुणा । सच्छम पुढवोकाय पर्यापता विशेषाधिक सुच्छम अपक्काय पर्यापता विशेषाधिक सुच्छमनिगोद अप

यर्थापत्ता प्रसव्यातगुणा । मुहुर्मनिगीया पञ्जसगा सखिअगुणा । मुहुमवणसकादया प्रपञ्जतगा अणत्तगुणा । तेहयो सच्चमुनिगीट पर्यापत्ता सव्यातगुणा तेहयो मुहुमवनस्पतीकाय अर्थापत्ता भनत्तगुणा । मुहुम प्रपञ्जतगा विसिसादिया सहम वणसकादया पक्कत्तगा असखिअगुणा । तेहथा सच्चम प्रपार्गपत्ता विग्यापधिक तेहवो मच्चमु वनरपत्तीकादया पर्यापत्ता असव्यातगुणा । सहम पक्कत्तगा विसिसादिया सहमा विसिसादिया । मच्चमु पर्यापत्ता विग्यापधिक सर्व मच्चमु विग्यापधिक । पणमिण भते वायराण वायरपुठवीकादयाण वायरपाउकादया वायर तेउ वायर नाउ वायर वणसकादया वायर । भगवन् एह वादर पण्णोकायेने वादर यण्णकायेने वादर तेउकायेने वादर वाउत्तायेने वादर वनरपत्तीकायत्ते । पत्तियसरौरवायर वणसकादया वायर

सूत्रमप्यध्यादीनामपि पर्याप्ताना तत्र प्रक्षेपात् १४ । तस्य सूत्रमा विशेषाधिका अपर्याप्तानामपि तत्र प्रक्षेपात् १५ । तदेवमुक्तानि सूत्रमाश्रितानि पञ्चमूत्राणि साम्प्रतिवादराश्रितानि पञ्चोक्तक्रमणाश्रितमुराह-एवसिण प्रते । वायराण वायरपुढविकाइपाणमित्यादि । सर्वस्तोका वादराखसकायिका द्वीन्द्रियादीनामेव वाटरगमत्वात्, तेषाच शेषकायेभ्यो ऽल्पत्वात् १ । तेष्वो वादरतेजस्कायिका असख्येयगुणा २ । असख्येयलोका

द्वयाणय कयरेरु हितो अप्पावा वज्जयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गो० ! सख्योवा वाटरतसकाइया वाटरतेउकाइया असखेज्जगुणा, पत्तेयसरीर वाटरवणस्सइकाइया असखेज्जगुणा वायरनिगोया असखेज्जगुणा, वाटरपुढविकाइया असखिज्जगुणा, वादरञ्छाउकाइया असखेज्जगुणा वादरवाउकाइया असखेज्जगुणा वादरवणस्सइकाइया अणतगुणा वादरा विसेसाहिया, एएसिण भते । वाटरापज्जहगणं वादरपुढविकाइया अपज्जहगण वाटरञ्छाउकाइया अपज्जहगण वादरवाउ

रनिगोयाण वायर तसकाइयाणय कयरेरु हितो अप्पावा । प्रत्येकशरीर वाटर वनस्पतीकायने वादरनिगोदने वादर असकायने किङ्कायी घोडा वणा । गोयसा सख्योवा वायर तसकाइया वायर तेउकाइया असखिज्जगुणा । हेभौतम सर्वथाडा सकाया वादर वसकाइया तेइथी वादर तेउकाइया वनस्पतागणा । पत्तेयसरीर वायरवणस्सइकाइया असखिज्जगुणा । प्रत्येकशरीर वादरवनस्पतीकारया असकायतगुणा । वायरनिगोया असखिज्जगुणा वायर पढवोकाइया असकायवाउ ० असकाय । वाटरनिगोद असकायतगुणा वाटरपृथ्वीकाय असकायतगुणा । वायर वाउकाइया असकाय वणस्सइकाइया अणता वायरा विसेसाहिया । वाटर वायुकाय असकायतगुणा वाटर वनस्पतीकाय अनन्तगुणा तेइथी वाटर विशेषाधिक । एएसिण भते वायर अपज्जतगुणा वायरपढवोकाइया वायरवाउकाइया अपकाय तेउकाइया अपकाय वाउकाय अपकाय वणस्सइकाइया अपकाय । हेभयवन् एह वादर नपर्याप्तानि वादर पृथ्वीकाय अपर्याप्तानि वादर असकाय अपर्याप्तानि वादर तेउकाय अपर्याप्तानि

काशप्रदेवाप्रमाणत्वात्, तेभ्योपि प्रत्येकशरीरव्यादरवनस्पतिकारिका असह्येयगुणा ३ । स्थानस्यासह्येयगुणात्वात्, व्यादरतेजस्कामिकाहि मनुष्य
क्षेत्रेण नयन्ति, तथाचोक्तं द्वितीयं स्थानाख्ये पदे-कहिणं ज्ञते । व्यादरतेजकाइयाण पञ्जसगाण ठाणा पञ्जता १ गोयमा । सहाणेण अतो मनु
स्सखित्ते अन्धाइज्जसु दीवसमुद्देशु निद्यायाण पन्नरसकम्पनीसु व्याघाएण पचसु महाविदेहेसु एत्येण व्यादरतेजकाइयाण पञ्जसगाण ठाणा प
नत्ता, तत्थेव व्यादरतेजकाइयाणमपञ्जसगाण ठाणा पञ्जता इति ॥ व्यादरवनस्पतिकारिकासु त्रिघापि लोकेषु ज्वनादिषु, तथाचोक्त-तस्मिन्नेव
द्वितीये स्थानाख्ये पदे-कहिणं ज्ञते । व्यादरवनस्पतिस्सइकाइयाण पञ्जसगाण ठाणा पञ्जता १ गोयमा । सहाणेण सत्तसु घणादहोसु सत्तसु घणोदरि
वल्लएसु अहोलेस पायालेसु ज्वणेसु ज्वणपत्यहेसु उल्लोएकम्पंसु विमाणेसु विमाणावल्लियासु विमाणपत्यहेसु तिरियलोए अगळेसु तलाएसु न

काइया अप्पज्जत्तगाण व्यादरवनस्पसइया अप्पज्जत्तगाण पत्तेयसरीरवनस्पसइकाइया अप्पज्जत्तगाण व्यादरनि
गोदा अप्पज्जत्तगाण व्यादरतसकाइया अप्पज्जत्तगाणय कयरे कयरेहितो अप्प्यावा वज्जयावा तुल्लावा वि
सेसाहिया १ गोयमा । सव्वत्थोवा व्यादरतसकाइया अप्पज्जत्तगा, व्यादरतेजकाइया अप्पज्जत्तगा अप्पसखेज्ज
गुणा, पत्तेयसरीरव्यादरवनस्पसइकाइया अप्पज्जत्तगा अप्पसखेज्जगुणा, व्यादरनिगोदा अप्पज्जत्तगा अप्पसखेज्ज

व्यादर वायुकाय षप० व्यादर वनस्पतीकाय अप० । पत्तेयसरीर व्यादरवनस्पसइकाइया अप० व्यादर तसकाइया अप्पज्जत्तगाणय कय
रे २ द्विती अप्प्यावा ४ । प्रत्येकशरीर व्यादरवनस्पतीकाइया अपर्थापत्तानि व्यादरनिगोद अपर्था० व्यादर वसकाइया अप० किंवा २ थो थोडा वणा स
रीखा विशेष इवे । गोयमा सव्वत्थोवा व्यादर तसकाइया अप० व्यादर तेजकाइया अप्पज्जत्तगा अस । हेगौतम सर्वथोडा व्यादरवनस्पकाइया अपर्थापत्ता
तेअथी व्यादर तेजकाय अपर्थापत्ता असग्गातगुणा । पत्तेयसरीर व्यादरवनस्पसइकाइया अप्पज्जत्तगा असखिज्जगुणा व्यादरनिगोदा अप्पज्जत्तगा अस० ।
तेअथी प्रत्येकशरीरो व्यादर वनस्पतीकाइया अप० असग्गातगुणा व्यादरनिगोद अपर्थापत्ता असखिज्जगुणा । व्यादरपुट्ठोकाइया अप्पज्जत्तगा अस० ।

दीगु दहेसु वावीसु पुक्खरिणीसु दीहियासु गुजालियासु सरैसु सरपतियासु सर २ पतियासु विलपतियासु उक्करेसु निक्करेसु चिह्नरेसु पल्ले
सु विप्पिन्नेसु दीगेषु समुहेसु सव्वेसु चैव जलासगुसु जलठाणेसु एत्थण वायरवणस्सइकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा पन्नत्ता, तथा जत्थेव वायरवण
स्सइकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणा तत्थेव वायरवणस्सइकाइयाण अपज्जत्तगाण ठाणा पन्नत्ता इति ॥ तत केवस्याऽसस्येयगुत्वात् उपपद्यन्ते, वा
दरते नस्कायिकेभ्यो ऽसस्येयगुणा प्रत्येकक्षरीरेवादरवनस्पतिकारिका स्तेभ्यो वादरनिगोदा असस्येयगुणा स्तेषा मत्पन्तसूक्ष्मावगाहनत्वा ज्जलेपु
संव्यापिष्व प्राप्तात्, पनक सेवालादयोहि जले अवश्य प्राविन स्तेष्व वादरानन्तकारिका इति तेभ्योपि वादरप्रथिवीकारिका असस्येयगुणा अ

गुणा, वादरपुठवीकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा, वादरञ्चाउकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा,
वादरवाउकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा, वादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणत्तगुणा, वादरअप
ज्जत्तगा विसेसाहिया २ । एएसिण भते ! वादरपज्जत्तयाण वादरपुठविकाइया पज्जत्तयाण, वादरञ्चाउ
काइया पज्जत्तयाण वादरतेउकाइयापज्जत्तयाण वादरवाउकाइया पज्जत्तयाण वादरवणस्सइकाइया पज्ज
त्तयाण पत्तेयसरीरयादरवणस्सइकाइया पज्जत्तयाण वादरनिगोदपज्जत्तयाण वादरतसकाइयपज्जत्तयाणय

भाषर पृथोकाय अप० असदयातगुणा । वायर चाउकाइया पज्जत्तगा अस० वायर वाउकाइया अप० अस० । वादर अपज्जत्तगा अपर्या० अस० वादर
वायुकाइया अपर्या० अस० । वायर वणस्स० अप० अण० वायर अपज्जत्तगा विसेसाहिया । वादर वनस्पतीका० अपर्या० अनन्तगुणा वादर अपर्या०
विशेषाधिक । एएसिण भते वायरपज्जत्तगाण वायरपुठवीकाइया प० वायर आउका० प० वायर तेउका० प० वायर वाउका० प० वायर वणस्सइका
इय पज्जत्ता । हेमगवन पुठ वादर प० वादर पृथोकाय प० वादर अपज्जत्तगाण वादर वनस्पतीकाय प० ।
पत्तेयसरीर वायरवणस्सइकाइया प० वावर निर्गोय प० वायर तसका० पज्जत्तगाणय कयरेर हिता अपावा ४ । प्रत्येक वादरवनस्पतीकाय प० वाद

धासु पृथिवीषु त्रैविषु विमानप्रवनपर्वतादिषु ज्ञावात्, तेभ्यो ऽसंख्येयगुणावाद्राष्कायिका समुद्रेषु जलप्राप्त्यात्, तेभ्यो वादरवायुकायिका
 असंख्येयगुणा सुषिरे सबन्ध वायुसन्धवात्, तेभ्यो वादरवनस्पतिकायिका घनन्तगुणा, प्रतिवादननिगोद भनन्ताना ज्ञावाना ज्ञावात् ८, तेभ्य
 सामान्यतो वादरा जीवा विज्ञोपायिका वादरवसकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ८। गतमेकमौपिकाणा वादराणामल्पबहुत्व मिदानी तेषामेवा
 उपर्याप्ताना द्वितीयमाह-सुसिण ज्ञते। वायरापज्जतगण मित्यादि ॥ सर्वस्वोका वादरवसकायिका अपर्याप्तका युक्तिरत्र प्रागुक्तैव, तेभ्यो वाद
 रतेजसकायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणा असंख्येयलोकाश्चाप्रदेप्रमाणत्वा दित्येव प्रागुक्तक्रमेणैव मत्पबहुत्व ज्ञावनीय, गत द्वितीयमल्पबहुत्व

कयरे कयरेहितो अप्यात्रा वज्रयावा तुल्लावा विसंसाहियावा ? गोयमा ! सख्ख्योवा वादरतेउकाडया प
 ज्ञातया, वादरतरसकाडया पज्जतगा असखेज्जगुणा । पत्तेयसरीरवादरवणस्सइकाडया पज्जतगा अप्पसं
 खेज्जगुणा । वादरनिगीदा पज्जतगा सखेज्जगुणा । वादरपुढविकाडया पज्जतगा असखेज्जगुणा । वादर
 छालकाडया पज्जतया अप्पसरेज्जगुणा । वादरवाउकाडया पज्जतगा अप्पसखेज्जगुणा । वादरवणस्सइकाड
 या पज्जतगा असखेज्जगुणा । वादरापज्जतगा विसंसाहिया ३ । एएसिणं ज्ञते ! वादराणं पज्जता २ णं

रनिगीड प० वादर वसकाय प० जिहा २ था थोडा बहुत इयादि । गोयमा सख्ख्यावा वायर तेउकाय प० वायर य० स्सका० प० अस० । हेगीतम
 सबंधोडा वादर तेउका० अप० तेइथी वादर वसका० अप० अस० । पत्तेयसरीर वायरवणस्सकाय प० अस० वायरनिगोद प० अस० । प्रत्वेकगरीर
 वादरवनस्पतीकाय प० अस० वादरनिगीड - असखातगुणा । वायर पुढवोका प० अस० वायर आउका० प० अस० । वादर पृथ्वीकाय पर्याप्ता अस
 र्यातगुणा वादर अप्पकाय पर्याप्ता असखातगुणा । वायर वाउका० प० अस० वायरवणस्सका० प० अस० तगणा । वादर वायुका० प० अस०
 गुणा वादर वनस्पतीकाय पर्याप्ता अनन्तगुणा । वायर पज्जतगा विसंसाहिया । वादर पर्याप्ता विमेषाधिक । एसिण भते वायरान् पज्जता २

मिदानी मतेषामेव पर्याप्तानां तृतीयमल्पमहुत्वमाह-गगसिने ज्ञते । वादरपञ्जसत्तागमित्यादि ॥ सर्वस्योका वादरतेजस्कायिका पर्याप्ता आद्य
लिकासमपवगम्य कतिपयसमयव्युत्पन्ने शब्दलिकासमये गुणितस्य यावान् समयराशिं प्रवर्तते तावत्प्रमाणत्वं तेषां मुक्तच-आवालिपगोकुणाधालिएगु

कथरे कथरेहितो व्युप्यावा वज्रगावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सस्योवा वादरापञ्जसत्तागा । वा
दरा व्युपञ्जसत्तागा अस्येज्जगुणा । एएसिण ज्ञते ! वादरपुढविकाइयाण पञ्जत्ता २ ण कथरे कथरेहितो
व्युप्यावा ? गोयमा ! सस्योवा वादरपुढविकाइया पञ्जसत्तागा १ । वादरपुढविकाइया व्युपञ्जसत्तागा व्यु
ससेज्जगुणा । एएसिण ज्ञत । वादरव्याउकाइयाण पञ्जत्ता २ ण कथरे कथरेहितो व्युप्यावा ? गोयमा !
सस्योवा वादरव्याउकाइया पञ्जसत्तागा वादरव्याउकाइया व्युपञ्जसत्तागा । एएसिण ज्ञते !
वादरतेउकाइयाण पञ्जत्ता २ ण कथरे कथरेहितो व्युप्यावा वज्रगावा तुल्लावा विसेसाहिया ? गोयमा !

अथ कथर कथरेहिता अप्या ४ । हेमगवन् एह वादर पर्वापुता अपर्यापुता निहिता २ धी याउा इत्यादि । गोयमा सस्योवा वादरपञ्जसत्तागा वायर
त्रपञ्जसत्तागा अस्येज्जगुणा । हेमोतम सर्वथाडा वादरपर्यापुता तेहधो वादर अपर्यापुता अस्येज्जगुणा । एएसिण भतेवायरपुढवोकाइयाण पञ्जत्ता २
अथ कथरे २ हितो अप्यावा ४ । हेमगवन् एह वादरपुढवोकावने प० अप० किहा २ धी थोडा इत्यादि । गोयमा सस्योवा वायरपुढवोकाइया अप०
अस्येज्जगुणा । हेमोतम सर्वथाडा वादर पय्योकाय पर्यो० वादर पुप्याकाय अप० अस्येज्जगुणा । एएसिण भते वायरवाउमाइयाण पञ्जत्ता २ ण
कथरे २ धितो अप्यावा ४ । हेमगवन् एहने वादर अप्पुकावने पर्वा० अप० किहा धी थोडा ष पा इत्यादि । गोयमा सस्योवा वायर आउकाइया प०
अप० अस० । हेमोतम सर्वथाडा वादर अप्पुकाय प० वादर अप० अस्येज्जगुणा । एएसिण भते वायर तेउकाइयाण पञ्जत्ता २ ण कथरे २ हितो अ
प्यावा ४ । हेमगवन् एह वादर तेउकावने प० अप० ने किहा २ धा अप्प ष पा इत्यादि । गोयमा सस्योवा वायर तेउकाय प० वायर तेउकाय अ

वायराण पञ्जत्तापञ्जत्ताणमित्यादि ॥ इह वादरेकैकपर्याप्तनित्रया असङ्ख्यावादरा अपर्याप्ता उत्पद्यन्ते ॥ पञ्चसगनिस्साय अपञ्जत्तगा वक्कमन्ति ज्ञाय येनो तस्य नियमा असखेज्जा इतिवचनात्, तत्र सबन्न पर्याप्त्यो उपर्याप्ता असख्येयगुणा वक्तव्या, त्रसकार्यिकसूत्र प्रागुक्तयुक्त्या ज्ञावनीय, गत चतुर्थमल्पवहुत्व, साम्प्रत्वेतेषामेव समुद्दिताना पर्याप्तपर्याप्ताना पञ्चममल्पवहुत्वमाह—एएसिण जते । वायराण वायरपुटविकाइयाणनि

वादरतसकाइया पञ्जत्तगा । वादरतसकाइया अपञ्जत्तगा ४ । एएसिण जते ! वादराण वादरपुठविकाइयाण वादरञ्जाउकाइयाण वादरतेउकाइयाण वादरवाउकाइयाण वादरवणस्सडकाइयाण पत्तेयसरीरवादरवणस्सडकाइयाण वादरनिगोदाण वादरतसकाइयाण पञ्जात्ता २ ण कयरे कयरेहितो अण्णावा वज्जयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सहल्योवा वादरतेउकाइया पञ्जत्तया १ । वाट रतसकाइया पञ्जत्तया असखेज्जगुणा २ । वादरतसकाइया अपञ्जत्तया असखिज्जगुणा ३ । वादरपत्तेय

अपर्याप्ता असख्यातगुणा इवे इति बोधो भल्ल वटुल कच्छो, इवे समुदित अल्ल वटुल पाचमो कहै—एएसिण भते वायराण वायरपुटवोकाइयाण वायर अप० तंउ० वाउ० वणस्स० काइया । हेभयवन् एहेने वाटर पुज्जोकायने अक्कादने तेउकायने वाउकायने वनस्पतीकायने । पत्तेयसरीर वायर वणस्साकाइया वाटर निगोयाण वायर तसकाइयाण कयरे २ इति, आपावा ४ । मल्लेकशरीर वाटर वनस्पतीकायने वाटर निगोदियाने वादर वसकायनेपर्याप्ता अपर्याप्ताने किष्ठा २ थो थाळा धणा इत्यादि । गोयमा सब्बलोवा वायर तेउकाइया पञ्जत्तगाण वायर तसकाइया पञ्जत्तगा वसकायनेपर्याप्ता अपर्याप्ता सर्वथाहा वाटर तंउकाय पर्याप्ता एहेनो युत्ति सर्व पाक्कलोपरे कट्ठिवा वाटर त्रसकाय पर्याप्ता असख्यातगुणा । वायर तसकाइया अपञ्जत्तगा अम० । वादर वसकाय अपर्याप्ता असख्यातगुणा । पत्तेयसरीर वायर वणस्साकाइया पञ्जत्तगा अम० । तेइथकी वाटर मल्लेकवनस्पती प० त्रसख्यातगुणा इवे । वायर निगोवा वायर पुटवोकाइया वायर चाउकाइया वायर वाउ वायर तेउकाइया अप० अम० । तेइथकी वादरनिगोद वा०

त्वादि ॥ सर्वस्तीका वादरतेजरकीयिका पर्यासा १ । तेज्यो वादरसकायिका पर्यासा असख्येयगुणा २ । तेज्यो वादरत्रसकायिका अपर्यासा असख्येयगुणा ३ । तेज्यो वादरप्रत्येकयनस्पतिकायिका पर्यासा असख्येयगुणा ४ । तेज्यो वादरनिगोदा पर्यासा असख्येयगुणा ५ । तेज्यो वादरपृथिवीकायिका पर्यासा असख्येयगुणा ६ । तेज्यो वादराऽष्कायिका पर्यासा असख्येयगुणा ७ । तेज्यो वादरवायुकायिका पर्यासा असख्येयगुणा ८ । एतेषु पदेषु युक्ति प्रागुक्ता अनुसरणीया, तेज्यो वादरतेजसकायिका अपर्यासका असख्येयगुणा, यतो वादरवायुकायिका पर्यासा सरयेयेषु प्रतरेषु यावन्त छाकाशप्रदेशा स्तावत्प्रमाणा वादरतेजसकायिकायापर्यासा असख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणा स्ततो प्रवन्त्यसख्येयगुणा ९ । तत प्रत्येकवादरनस्पतिकायिका १० । वादरनिगोद ११ । वादरपृथिवीकायिक १२ । वादरवायुकायिका अपर्यासा यथोत्तर

वणस्सडकाइया पज्जत्तगा असखेज्जगुणा ४ । वादरनिगोदा पज्जत्तगा असखेज्जगुणा ५ । वादरपुढविकाइया पज्जत्तगा असखेज्जगुणा ६ । वादरआउकाइया पज्जत्तगा असखेज्जगुणा ७ । वादरवाउकाइया पज्जत्तगा असखिज्जगुणा ८ । वादरतेउकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा ९ । पत्तेयररीरवादरवणस्सडकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा १० । वादरनिगोदा अपज्जत्ता असखेज्जगुणा ११ । वादरपुढविकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा १२ । वादरआउकाइया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा १३ । वादरवाउकाइया

पृथ्वीकाय वादर अकाय वादर वायुकाय वादर तेजस्काय अपर्यासा असख्यातगुणा जेभणी वादर वायुकाय पर्यासा असख्यात प्रतर जेतना आकाश तेमाट असख्यातगुणा । तेतले प्रमाणे वादर तेउकाय अपर्यासा अस नोकाकाय प्रमाणे । पत्तेयररीर वादरवणस्सडकाइया अपज्जत्तगा अस । प्रत्येकगरीर वनस्सतीकाय अपर्यासा असख्यातगुणा । वायरनिगोदा वायर पुढवीकाइया वायर आउकाइया वायर वाउकाइया अपज्जत्तगा असखि जगुणा । तेदुथो वादरनिगोद वादर पृथ्वीकाइया वादर अकाय वादर वाउकाय अपर्यापत्ता असख्यातगुणा । वायर वणस्सडकाइया अपज्जत्तगा अ

ममसंश्लेषेण गुणा यस्तस्याः, यद्यपि सते प्रत्येकमसंश्लेषेण लोकाकाशप्रदेशप्रमाणा स्थाप्यसङ्का तस्या सङ्कातेनेदं ज्ञत्वा दित्य यथोत्तरमसंश्लेषेण गुणस्य न निरूप्यते १४ । तेज्यो धादरवन्स्पतिकारिका जीवा पर्याप्ता अनन्तगुणा, प्रतिबादरेकैकनिगोदमन्ताना जीवाना प्राधात् १५ । तेज्य सामान्य तो बादरा पर्याप्ता विशेषाधिका बादरतेजस्कारिकादीनामपि पर्याप्ताना तत्र प्रक्षेपात् १६ । तेज्यो बादरवन्स्पतिकारिका अपर्याप्ता असंश्लेषेण गुणा एकैकपर्याप्तबादरवन्स्पतिकारिकानिगोदनिश्रया असंश्लेषाना मपर्याप्तबादरवन्स्पतिकारिकानिगोदाना मुत्पादात् १७ । तेज्य सामान्यतो बा दराऽपर्याप्ता विशेषाधिका बादरतेजस्कारिकादीना मपर्याप्ताना तत्र प्रक्षेपात् १८ । तेज्य पर्याप्तपर्याप्तविशेषेण रूढिता सामान्यतो बादरा विशेषाधिका बादरपर्याप्ततेजस्कारिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् १९ । गतानि बादराश्रितान्यपि पञ्चसूत्राणि, सम्प्रति सूक्ष्मबादरसमुदायगता प ञ्चमूर्तिमन्निधिरसु प्रथमत औचिक सूक्ष्मबादरसूत्रमाह-एयसिण जते । इत्यादि ॥ इह प्रथम बादरगतमल्पबहुत्व बादरसूत्रा यत्प्रथम सूत्र तद्व द्भावनीय, यावद्बादरायुकारिकायपद ७ । तदनन्तर यत्सूक्ष्मगतमल्पबहुत्व तत् सूक्ष्मपञ्चसूत्रा यत्प्रथम सूत्र तद्वत् तावद्बादरसूक्ष्मनिगोदचित्ता

अप० असंख्येजगुणा १४ । वादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा अणतगुणा १५ । वादरपज्जत्तगा विसेसा
हिया १६ । वादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंख्येजगुणा १७ । वादरा अपज्जत्तगा विसेसाहिया १९ ।
वादरा विसेसाहिया २० । एएसिण नंत ! सुज्जमाणं सुज्जमपुढविकाइयाण सुज्जमअणउकाइयाणं सुज्जमतेउ

[illegible]

१२ । तदनन्तर वादरसनस्पतिकारिका अनन्तगुणा प्रतिवादननिगोदमन्ताणा जीगानां प्रायात् १३ । तेन्या वादरा विशोपाधिका वादरतेजस्का
यिकादीनामपि तत्र प्रकृपात् १४ । तेन्य सूम्भवनस्पतिकारिका अश्रयगुणा वादरनिगोदस्य सूम्भनिगोदाना मसरयपगुणत्वात् १५ । तेन्य
सामान्यत सून्मा विशोपाधिका , सूम्भतेजस्कारिकादीनामपि ता प्रकृपात् १६ । गत मकमल्यबहुत्व मिदानी मेतेपामेवा उपपांशाना द्वितीयमा
ह-स्यसिण जत । इत्यादि ॥ स्वस्त्वाका वादरवसकारिका अपयासा १ । ततो वादरतेजस्कारिका वादरप्रत्यक्षनस्पतिकारिका वादरनिगोद
वादरपृथिवीकारिकावादराष्कारिकायुक्त्या अपयासा क्रमेण यथोक्त मसरयगुणा अप्र प्राधाना वादरपञ्चसूया यत् द्वितीयमपर्याप्त

काडयाण सुज्जमवाउकाडयाण सुज्जमनिगोदाण वादराण वादरपुढविकाडयाण
वादरच्याउकाडयाण वादरतेउकाडयाण वादरवाउकाडयाण वादरवणरसडकाडयाण पत्तेयसरीरवादरवण
स्सडकाडयाण वादरनिगोदाण वादरतसकाडयाणय कयरे कयरेहितो छुप्पावा ४ ? गीयमा । सवुल्योवा
वादरतसकाडया १ । वादरतेउकाडया छुसखेज्जगुणा पत्तेयसरीरवादरवणस्सडकाडया छुसखेज्जगुणा ।
वादरनिगोदा छुससिज्जगुणा । वादरपुढविकाडया छुसखेज्जगुणा ५ । वादरच्याउकाडया छुसखेज्जगुणा

ने मूल नगोदेने वादरपृष्ठाकायने । वादर आठ तउ वाद वणस्सकाय । वादर अष्कायने वाठकायने तेउकायने वनस्सतोकायने । पत्तेयसरीर वादरव
णस्सकाय वायर निगोया ण वायर तसकाडयाणय कयरे २ हितो अपावा ४ । प्रत्येकवादर वनस्पतीकायने वादर निगोदेने वादर वसकायने किहा
किहाथो थाडा घणा इत्यादि । गोवना सञ्चत्वावा वायर तसकाडया वायर तेउकाय अरुखुजगुणा । हेगोतम सर्वथाडा वादर नमकाडया तेउथो वा
दर तेउकाय अमसगातगुणा । पत्तेयसरीर वायर वणस्सकाडया अमखेज्जगुणा । प्रत्येकगरीर वादर वनस्पतीकाय असरयातगुणा । वादरनिगोदा वा
यर पुढवोकाडया वायर आठकाडया असः । वादरनिगोद वादर पृष्ठाकाय वादर गकाय असरयातगुणा । वायर वाठकाय मुहुम तेउकाय नसः

कस्य तद्वत्कत्तया ७ । ततो वादरवायुकायिकेभ्यो ऽसङ्ख्यगुणा सूक्ष्मतेजस्कायिका अपर्याप्ता अतिप्रज्ञानासङ्ख्यलोकाकाशाप्रदेशप्रमाणत्वात् ॥
तेभ्य सूक्ष्मपृथिवीकायिका १ । सूक्ष्माष्वापकायिका २ सूक्ष्मवायुकायिका ३ सूक्ष्मनिगोदा ४ । पर्याप्ता यथोत्तर मसख्येयगुणा, अत्र जावना-सू-

वादरवाउकाडया असखेज्जगुणा । सुज्जमतेउकाडया असखेज्जगुणा । सुज्जमपुढविकाडया वित्सेसाहिया ।
सुज्जमच्छाउकाडया वित्सेसाहिया । सुज्जमवाउकाडया वित्सेसाहिया । सुज्जमनिगोदा असखेज्जगुणा ।
वादरवणस्सडकाडया अणत्तगुणा वादरा वित्सेसाहिया । सुज्जमवणस्सडकाडया असखेज्जगुणा १५ ।
सुज्जमावित्सेसाहिया १ । एएसिण भते ! सुज्जमच्छपज्जयाण सुज्जमपुढविकाडयाण अपज्जत्तयाण सुज्जम
च्छाउकाडया अपज्जत्तयाण सुज्जमतेउकाडयाण अपज्जत्तयाण सुज्जमवाउकाया अपज्जत्तयाण सुज्जमवण
स्सडकाडयाण अपज्जत्तयाण सुज्जमनिगोदा अपज्जत्तयाण वादरा अपज्जत्तयाण वादरपुढविकाडया अप
ज्जत्तयाण वादरच्छाउकाडया अपज्जत्तयाण वादरत्तुकाडया अपज्जत्तयाण वादरवाउकाडया अपज्जत्तया

सङ्गम पटवोकाया वि० सङ्गमपाउकाय वि० सुङ्गम वाउकाय वि० सुङ्गमनिगोदा वि० सूक्ष्मतेज्जकाय भस० सूक्ष्मपृथ्वीकाय वि
शेषाधिक सूक्ष्मपरकाडया विशेषाधिक सूक्ष्म वाउकाय विशेषाधिक सूक्ष्मनिगोदा भस० । वायर वणस्सरकाराश अणत्तगुणा वायरा वित्सेसाहिया । ते
पृथ्वी वादर वनरपतीकाय अणत्तगुणा वादरविशेषाधिक । सहम वणस्सरकाराश भस० सुङ्गमावित्सेसाहिया ॥ १ ॥ सङ्गमवनरपतीकाय असरयातगणा
सन्तविशेषाधिक । एसिण भते सुङ्गम अपज्जत्तयाण सुङ्गमपुढवोकाडय अपज्जत्तयाण सु० वाउका भ० स० तेउका अप० स० वाउका अप० सु० वणस्
रका अप० । हेमगवन् पङ्क मूक्षमयर्थात्ताने मूक्षपृथ्वीकायने अपर्याप्ताने सूक्ष्मयर्थात्ताने पर्या० सु० तेउकाय अप० सु० वायुकाय अप० सु० वनरपती
काय अपर्याप्ताने । सुङ्गम निर्गोय अप० वायर अप० वायरपुढवोकाय अप० वायर वाउकाय अपज्जत्ता वायर वणस्सरका

ह्यपन्यमूत्रा यद्वितीय सूत्र सद्वत् १२ । तेन्य सूत्रनिर्गोदाऽपयोमिज्यो वाटरवनस्पतिकायिका जीवा अपयोसा अनन्तगुणा प्रतिवाटरकेकनिगो
दमनत्ताना सद्भावात् १३ । तेन्य सामान्यतो वादरा अपयोमका विजोपायिका वाटरवसकायिका पर्यासादीनामपि तत्र प्रदपात् १४ । तेन्य मू
त्रमनस्पतिकायिका अपयोसा असह्यगुणा वाटरनिगोदपयोमन्य सूत्रनिर्गोदापयोमना सह्यगुणात् १५ । तेन्य सामान्यत सूत्रापर्यासा
विजोपायिका सूत्रमतेजस्कायिकापर्यासादीनामपि तत्र प्रदपात् १६ । गत द्वितीयमल्पवदुत्व मधुरतेयोमेव पर्यासाना दृतीयमल्पवदुत्वमाह-मय
सिण प्रते । सुदुमपज्जत्तयागमित्यादि ॥ सद्यस्तीका वाटरतेजस्कायिका पर्यासा १ । तेन्यो वाटरवसकायिका २ वाटरमत्येकवनस्पतिकायिका ३

ण वाटरवगस्सडकाडया अपज्जयाण पत्तेयसरीरवाटरवगस्सडकाडया अपज्जत्तयाण वाटरनिगीदा अप
ज्जत्तयाण वाटरतस्सकाडया अपज्जत्तयाणय कयरे कयरेहिती अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वाटरत
सकाडया अपज्जत्तया । वाटरतेडकाडया अपज्जत्तया अपसखेज्जगुणा , पत्तेयसरीरवाटरवगस्सडकाडया
अपज्जत्तया अपसखेज्जगुणा ३ । वाटरनिगीदा अपज्जत्तया अपसखेज्जगुणा । वाटरपुढविकाडया अपज्ज

य अपज्जत्ता । स० निर्गोद अप० वाटर अप० वाटर पुज्जोकाय अप० वाटर तेडकाय अप० वाटर वायुकाय अप० वाटर वनस्प
तीकाय अप० । पत्तेयसरीर वाटरवगस्सकाडया अप० वाटरनिगीदा अप० वाटर तस्सकाडया अप० कयरे २ हिता अपपावा ४ । प्रत्येकगरोर वाटर
वनस्पतीकाय अप० वाटरनिगीद अप० वाटर वनकाय अप० किडा २ धो थोडा वणा सरीखा विगेष दुव्वे । गाऽमा सव्वत्थोवा वाटरतस्सकाडया अप
पज्जत्तया तथो प० अपसखेज्जगुणा । हेमौतम सर्वथाडा वाटर वनकाडया अप० तेडथो पर्या० असखातगुणा । पत्तेयसरीर वाटरवगस्सकाडया अप०
पस० । तेडथो प्रत्येकगरोर वाटरवनस्सतीकाय अप० अस० । वाटरनिगीदा अप० अस० । वाटरनिगीदा अप० असखातगुणा । वाटर पढवोकाडया
अप० अस० । वाटरपुज्जोकाय अप० अस० । वाटर थाडकाडया अपज्जत्तया अप० अस० । वाटर थाकाव अप० अस० । वाटर तेडकाय अपज्जत्तया अस० ।

वाटरनिमीदा ४ वाटरपृथिवीकायिका ५ वाटरवायुकायिका ६ वाटरवायुकायिका ७ पर्याप्ता यथोत्तर सङ्ख्यगुणा अत्र ज्ञातना-वाटरपञ्चमन्या यत्
तृतीय पर्याप्तसूत्र तद्वत्कस्यथा ७, वाटरपर्याप्तवायुकायिकेन्य सूक्ष्मतत्त्वकायिकापर्याप्ता असङ्ख्यगुणा वाटरवायुकायिकाहि असङ्ख्यप्रतरप्रदेशरा
शिप्रमाणा सूक्ष्मतत्त्वकायिकास्तु पर्याप्ता असङ्ख्यलोकाकाशप्रदेशराशिप्रमाणा स्ततोऽसङ्ख्यगुणा ८ । तत सूक्ष्मपृथिवीकायिक ९ सूक्ष्माष्कायिका
१० सूक्ष्मवायुकायिका ११ पर्याप्ता क्रमेण यथोत्तर विशेषाधिक ११, तत सूक्ष्मवायुकायिकेन्य पर्याप्तस्य सूक्ष्मनिमीदा पर्याप्तका असत्येयगु

तगा असखेज्जगुणा । वाटरवायुकाडया अपज्जत्तगा असखे ० ६ । वाटरवाउकाडया अपज्जत्तगा अस
खेज्जगुणा, सुज्जमतंतउकाडया अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा । सुज्जमपुठविकाडया अपज्जत्तगा विसंसाहिया १
सुज्जमवाउकाडया अपज्जत्तगा विसंसाहिया १० । सुज्जमवाउकाडया अपज्जत्तगा विसंसाहिया, सुज्जम
निमीदा अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा, वाटरवणस्सइकाडया अपज्जत्तगा अणत्तगुणा, वाटरा अपज्जत्तगा
विसंसाहिया, सुज्जमवणस्सइकाडया अपज्जत्तगा असखिज्जगुणा, सुज्जमा अपज्जत्तगा विसंसाहिया २ ।

वाटर तंतउकाय अपर्याप्ता अस ० । वायर वाउकाय अप ० अस ० । सुहुम तंतउकाय अप ० अस ० सुहुम पुठवीकाडया अ
प ० विसंसाहिया । सद्धम तंतउकाय अप ० अस ० सद्धम पुठवीकाडया विशेषाधिक । सुहुम वाउकाडया अप ० विसं ० सुहुम वाउका ० अप ० विसं ० । सद्ध
म अपकाडया अप ० विशेषाधिक सूक्ष्म वाउकाडया अपर्याप्ता विशेषाधिक । सद्धम निर्गीय अप ० अस ० वायरवणस्सइकाडया अप ० अणत्तगुणा । सू
क्ष्मनिमीदा अप ० अस ० गुणा । वाटर वनस्पतीकाय अप ० अनत्तगुणा । वाटर अप ० विशेषाधिक । सुहुम वणस्सइकाडया अप ०
अस ० । सुहुम वनस्पतीकाय अपर्याप्ता असख्यातगुणा । सुहुमा अपजत्ता विसंसाहिया ॥ २ ॥ सद्धम अपर्याप्ता विशेषाधिक । एएसिण भते सुहुम
पज्जत्तगा सुहुमपुठवीकाडया पज्जत्तयाणं । वमगवन् एह सूक्ष्म पर्याप्ताने सद्धम पुठवीकाय पर्याप्तानि । सुहुम वाउकाय पज्जत्तयाण । सुहुम वाटरा

या स्तेपामिति प्रभूततया प्रतिगोलक प्राप्तात् १२ । तस्यैवाद्वादनस्पतिर्यायिका ज्ञात्वा पर्याप्तका अनन्तगुणा प्रतिवादेकैकनिगोदमनन्तना ना
वात् १३ । तस्य सामान्यतो वादराप्याप्तका विशेषाधिकारः, वादरेतेजस्कायिकादीनामपि पर्याप्ताना तत्र प्रक्षेपात् १४ तस्य सूत्रमवनस्पतिज्ञापि
का पर्याप्ता असंख्येयगुणा बादरनिगोदपर्याप्तस्य सूक्ष्मनिगोदपर्याप्ताना 'मसंख्येयगुणत्वात् १५ । तस्य सांमान्यत सूत्रा पर्याप्ता विशेषाधिका,
सूत्रमतेजस्कायिकादीनामपि पर्याप्ताना तत्र प्रक्षेपात् १६ । गत तृतीयमल्पयहुत्व निदानो मतेपामेव सूत्रमवादरादीना प्रत्येक पर्याप्तापर्याप्ताना

एवमिति नते ! सुक्रमपञ्चतयाण सुक्रमपुढविकाइयपञ्चतयाण सुक्रमअप्यकाइयपञ्चतयाण सुक्रमतेउका
इयपञ्चतयाण सुक्रमवाउकाइयपञ्चतयाण सुक्रमवणस्सइकाइयपञ्चतयाण सुक्रमनिगीयपञ्चतयाणं
वादरपञ्चतयाण वादरपुढविकाइयपञ्चतयाण वादरअउकाइयपञ्चतयाण वादरतेउकाइयपञ्चतयाण
वादरवाउकाइयपञ्चतयाण वादरवणस्सइकाइयपञ्चतयाण पत्तेयसरीरवादरवणस्सइकाइयपञ्चतयाण वा
दरनिगीदपञ्चतया वादरतसकाइयपञ्चतयाणय कयरे कयरेहितो अय्पावा १ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वा

य पर्याप्तान । सुक्रम तेउका० वाउका० वण० निगीगा पर्या० । सूत्रम तेउकाइय वायुकाय वनस्पतीकाय निगोदन पर्याप्ताने । वायर पुढवोका०
पञ्चता वायर आउका प० बादर तेउकाय वादर वाउकाय वायर वणस्सइकाइया पञ्चता । वादर पुढवोकाय पर्याप्ताने बादर अरकाय पर्या० बादर
तेउकाय पर्या० वायुकाय पर्या० वादर वनस्पतीकाय पर्याप्ताने । पत्तेयसरीर वायर वणस्सर वायर निगीया वायर तसकाय पञ्चता २ एय कय
रे २ हितो पय्पावा ४ । प्रत्येकयरीर व दर वनस्पतीकाय पर्याप्ताने वादरनिगीद प० वादर तसकाय प० जिहा २ थो घोडा घणा इत्यादि । गोयमा
सव्वत्थाम वायर तेउकाय प० वादर तसकाय पञ्चतया अस० । हितोतम सर्वघोडा वादर तेउकाय पर्याप्ता वादर वसकाय पर्याप्ता असखेजगुणा ।
पत्तेयसरीर वायरवणस्सइकाइया वायर निगीया वायर आउकाइया वायर वाउकाइय वणस्सइकाइया वायर वाउकाय

॥ ॥
 पृथग् २ अल्पवृत्त्वमाह-यशसिणं व्रते । सुदुर्माण वायराण पञ्जात्ताणामित्यादि ॥ सर्वत्रेय ज्ञावना-सर्वसोकावादरा पर्याप्ता-परमित
 द्वेवर्तित्यात्, तेन्यो यादरा अपर्याप्ता असह्यगुणा एकैकवादरपर्याप्तिनिश्रया असह्यगुणा वादरापर्याप्तानामुत्पादात्, तेन्य सूत्रा अपर्याप्ता
 असह्यगुणा, सर्वनीकोपहतया तथा द्वेवस्या सख्येयगुणत्वात्' तेन्य सूत्रमपर्याप्तका सख्येयगुणा चिरकालावस्थायितया तेषा सदैव सख्येय
 गुणतया वाप्यमानत्वात् ॥ गत चतुर्थमल्पवृत्त्वम् ॥ इदानीं मतेपामेव सूत्रमपृथिवीकायिकादीना वादरपृथिवीकायिकादीना च प्रत्येक पर्याप्ता

दरतेउकाइया पञ्जत्तगा । वादरतसकाइया पञ्जत्तया अस्खेज्जगुणा । पत्तेयसरिरत्रादरवणस्सइकाइया
 पञ्जत्तगा अस्खेज्जगुणा । वादरनिगोदा पञ्जत्तया अस्खेज्जगुणा, वादरपुढाविकाइया पञ्जत्तया अस्सं
 वादरचाउकाइया पञ्जत्तया अस्खेज्जगुणा, वादरवाउकाइया पञ्जत्तगा अस्खेज्जगुणा । सुज्जमतेउकाइ
 या पञ्जत्तया अस्खेज्जगुणा, सुज्जमपुढाविकाइया पञ्जत्तगा विसेसाहिया, सुज्जमचाउकाइया पञ्जत्तगा
 विसेसाहिया, सुज्जमवाउकाइया पञ्जत्तगा विसेसाहिया । सुज्जमनिगोदा पञ्जत्तया अस्खेज्जगुणा, वाद

॥ भ
 अपञ्जत्तगा असखेज्जगुणा । प्रत्येकरीर वादर वनस्पतीकाय वादरनिगोद वादरपृथ्वीकाय वादर अपुकाय वादर तेजस्काय वादर वायुकाय अपर्या
 प्ता असखातगुणा । सुहुमतेउकाय सुहुम पुढाविकाय सुहुम आउकाय सुहुम वाउकाय पञ्जत्तगा विसेसाहिया सुहुम निगोदा नपञ्जत्तगा अस
 खेज्जगुणा । सुहुम तेउकाय पृथ्वीकाय आकाय वायुकाय निगोटिया अपर्याप्ता असख्यातगुणा । वायर वणस्सइकाइया अपञ्जत्तगा अणत्तगुणा । वा
 दर वनस्पतीकाय अपर्याप्ता अनन्तगुणा । वायर अपञ्जत्तगा विसेसाहिया । वादर अपर्याप्ता विशेषाधिक । सुहुम वणस्सइकाय अपञ्जत्तगा असखे
 ज्जगुणा सुहुमा अपञ्जत्तगा विसेसाहिया । सुहुम वनस्पतीकाय अपर्याप्ता असखातगुणा सुहुम अपर्याप्ता विशेषाधिक । २ । पर्याप्त भते सुहुमप
 लत्तगाण सुहुम पुढाविकाय पञ्जत्तगाण । हेमगवन् एह सुहुम पृथ्वीकाय पर्याप्ताने । सुहुम आउकाय पञ्जत्तगाण । सुहुम अपुकाय पर्याप्ताने ।

रवणस्सइकाइया पज्जत्तया अणत्तगुणा, वाटरपज्जत्तया विसेसाहिया, सुज्जमवणस्सइकाइया पज्जत्तगा
असखिज्जगुणा । सुज्जमपज्जत्तया विसंसाहिया ३ । एएसिण भत्ते ! सुज्जमाणवादराणय पज्जत्ता २ ण
कयरे कयरेहितो अप्यावा ४ ? गोथमा ! सब्बल्योवा वाटरा पज्जत्तरा, वादगा अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा
सुज्जमा अपज्जत्तगा असखेज्जगुणा, सुज्जमा पज्जत्तगा सखेज्जगुणा । एएसिण भत्ते ! सुज्जमपुढविकाइया

सइम तेउकाय वाउकाय वणस्सइकाय निर्गोय पज्जत्ता । सूक्ष्म तेजस्साय वायकाय वनस्पतीकाय निर्गोद पर्याप्ताने । वायर पुढोकाइया आउ
काय तेउकाय वाउकाय वणस्सइकाय पज्जत्ता । वाटर पृथ्वीकाय अप्पुकायने तेजस्साय वायुकाय वनस्पतीकाय पर्याप्ताने । पत्तियसरोर वायरवणस्सइ
काय वायर निर्गोय वाटर तसकाइया पज्जत्तगाणय कयरे २ हिता अप्पुगा ४ । प्रत्यक्षमरोर वाटर वनस्पतीकाय वाटर निर्गोदने वाटर वसकाय
पर्याप्ताने किन्ना यो थाढा घणा इत्यादि । गायमा सख्यत्तावा वायर तेउकाइया प० अम० । वायर तमकाइया अ० अम० । सुगोतम सर्वथाडा वाटर
तेउकाय पर्याप्ताने वाटर वसकाय पर्याप्ताने असख्यत्तगणा । पत्तियसरोर वायरवणस्सइकाय वाटर निर्गोद वायर पुढोकाय अपज्जत्तगा अम० ।
प्रत्यक्षमरोर वाटर वनस्पतीकाय पर्याप्ताने असख्यत्तगणा वाटर निर्गोद वाटर पृथ्वीकाय वसकाय प० अम० । वाटर वाउकाय पज्जत्ता
असखिज्जगुणा वाटर अप्पुकाय वाटर आउकाय अपर्याप्ताने असख्यत्तगणा । सुक्ष्म तेउकाय प० अम० । सु० पुढोकाय पज्जत्तगा विसेसाहिया स०
आउकाय स० वाउकाय स० निर्गोय पज्जत्तगा असखिज्जगुणा । सूक्ष्म तेउकाय पर्याप्ता असख्यत्तगुणा स० पृथ्वीकाय प० अम० । विसेसाहिया स० अम०
२ पर्या० विगो० सू० वायुकाय प० विगो० सू० निर्गोद पर्या० असख्यत्तगुणा । वायरवणस्सइकाय पज्जत्तगा अम० । व डर वनस्पतीकाय पर्याप्ता
वनत्तगुणा । वायर पज्जत्तगा विसेसाहिया । वाटर पर्याप्ता विसेसाहिया । सुक्ष्म वणस्सइकाय पज्जत्तगा असखिज्जगुणा । सूक्ष्म वनस्पतीकाय पर्याप्ता
असख्यत्तगुणा । सुक्ष्मपज्जत्तगा विसेसाहिया । ३ । सूक्ष्म पर्याप्ता विसेसाहिक अस्य बहुत्व, इति बोधा अस्म्य बहुत्व । एएसिण भत्ते सुक्ष्माण वायरान

ण वाटरपुढविकाइयाणय पज्जता २ णं कयरे कयरेहि तो अप्पावा १ गोयमा ! सत्त्वलोवा वाटरपुढवि
काइया पज्जत्तया वाटरपुढविकाइया अपज्जत्तया असखेज्जगुणा, सुज्जमपुढविकाइया अपज्जत्तया अस
खेज्जगुणा, सुज्जमपुढविकाइया पज्जत्तया सखेज्जगुणा । एणसिण भते ! सुज्जमअणउकाइयाण वादरअणउ
काइयाण पज्जता २ ण कयरे कयरेहि तो अप्पावा १ गोयमा ! सत्त्वलोवा वादरअणउकाइया पज्जया
वादरअणउकाइया अपज्जत्तया असखेज्जगुणा, सुज्जमअणउकाइया अपज्जत्तया असखेज्जगुणा, सुज्जमअण

पज्जता २ णय कर २ हितो अप्पावा ४ । इभगवण णइ मूक्खवाटरने पर्याप्ता अपर्याप्तानि किइ २ यो योडा घया सरोखा विगेष इवे । गोयमा म
वत्थोवा वायर पज्जत्तया अपज्जत्तया असखिज्जगुणा । हेमोतम सर्वथोडा वाटर पर्याप्ता असख्यातगुणा । सहम अपज्जत्तया अ
सखिज्जगुणा । सहम अपर्याप्ता असख्यातगुणा । सहम पज्जत्तया सापुज्जगुणा । सत्त्वमपर्याप्ता असख्यातगुणा । एणसिण भते सहम पुढवोकारवाण वा
यरपुढोकारवाण पज्जता २ णय कयरे २ हितो अप्पावा ४ । हेम० वन् णइ म० पुज्जोकायने वाटर पुज्जोकाय पर्याप्ता अपर्याप्तानि किइ २ यो योडा
घया इत्थादि । गोयमा सत्त्वलोवा वायरपुढोकारवा पज्जत्तया वायर पुढोकारवा अपज्जत्तया असखिज्जगुणा । हेमोतम सर्वथोडा वाटर पुज्जोकाय
पर्याप्ता वाटर पुज्जोकाय अपर्याप्ता असख्यातगुणा । सहम पुढोकारवा अपज्जत्तया असखिज्जगुणा सहमपुढोकारवा पज्जत्तया सखिज्ज० ।
सहम पुज्जोकाय अपर्याप्ता असख्यातगुणा म० पुज्जोकाय पर्याप्ता सख्यातगुणा । एणसिण भते सहम अणउकाइयाण वायर अणउकाइयाण पज्जता २
णय कयरे २ हितो अप्पावा ४ । इभगवन् णइ अपक्कावने वाटर अपक्कावने वाटर अपज्जत्तया अम० । हेमोतम सर्वथोडा वाटर पर्याप्ता वाटर
अणउकाइया पज्जत्तया वायर अणउकाइया अपज्जत्तया अम० । हेमोतम सर्वथोडा वाटर पर्याप्ता वाटर अपर्याप्ता असख्यातगुणा । सहम अणउकाइ
या पज्जता असखिज्जगुणा सहमअणउकाय अपज्जत्तया असखिज्जगुणा । म० अपक्काय पर्याप्ता असख्यातगुणा म० अपक्काय अपर्याप्ता असख्यातगु

उकाइया पञ्जत्तगा सखेज्जगुणा । एएसिण जते । सुज्जमतेउकाइयाण वाटरतेउकाइयाणय पञ्जत्ता २ णं कयरे कयरेहितो अप्पावा ४ ? गोयमा । सव्वत्थोवा वाटरतेउकाइया पञ्जत्तया, वाटरतेउकाइया अप्प जत्तया असरेज्जगुणा, सुज्जमतेउकाइया असखेज्जगुणा, सुज्जमतेउकाइया पञ्जत्ता सखेज्ज गुणा । एएसिण जते । सुज्जमवाउकाइयाण वाटरवाउकाइयाणय पञ्जत्ता २ ण कयरे कयरेहितो अप्पा वा ४ ? गोयमा । सव्वत्थोवा वाटरवाउकाइया पञ्जत्तया वाटरवाउकाइया अप्पजत्तया असखेज्जगुणा । सुज्जमवाउकाइया अप्पजत्तया असखेज्जगुणा । सुज्जमवाउकाइया पञ्जत्तया असखेज्जगुणा । एएसिण जते । सुज्जमवणरसइकाइयाण वाटरवणरसइकाइयाणय पञ्जत्ता २ ण कयरे कयरेहितो अप्पावा ४ ? गोयमा ।

या । एएसिण भते सुहम तेउकाइयाण वायर वायरतेउकाइयाणय पञ्जत्ता २ णय कयरे २ हितो अप्पावा । ४ । इभगवन एह मू तेउकाइये काटर तेउकायने पर्यापत्ता अपर्यापत्तानि किङ्करी घोडा घणा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा वायर तउकाय पञ्जत्तगा वायर तेउकाय अप्पजत्तगा असखिज्ज गणा । इगौतम सर्वयोडा वाटर तेउकाय पर्यापत्ता वाटर तेउकाय अपर्यापत्ता असख्यातगणा । सुहम तेउकाय अप्पजत्तगा असखेज्जगुणा । मूक्का तेउ काय अपर्यापत्ता असख्यातगुणा । सुहम तेउकाय पञ्जत्तगा सखिज्जगुणा । मूक्का तेउकाय पर्यापत्ता असख्यातगणा । एएसिण भते सुहम वाउकाइयाण वाटर वाउकाइयाण पञ्जत्ता २ णय कयरे २ हितो अप्पावा ४ । इभगवत् एह मूक्कावायुकायने वाटर वायुकायने पर्यापत्ता अपर्यापत्तानि किङ्करी घोडा घणा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा वायर वाउकाइया पञ्जत्तगा वाटर वाउकाइया अप्पजत्तगा असखेज्जगुणा । इगौतम सर्वयोडा वाटर वायु काय पर्यापत्ता वाटर वायुकाय अपर्यापत्ता असख्यातगणा । सुहम वाउकाइया पञ्जत्तगा असखिज्जगुणा । म वायुकाय अपर्यापत्ता असख्यातगुणा मूक्का वायुकाय पर्यापत्ता असख्यातगणा । एएसिण भते सुहम वणसरकाइयाण वायर वणसरकाइयाण पञ्ज

पर्याप्ता वा समुदायेन पञ्चम मत्स्यबहुत्वमाह-एएसिण ऋते । सुहुमाण सुहुमपुढविकाइयाणमित्यादि ॥ सर्वस्तीका वादरतेजस्कायिका पर्याप्ता
आवलिक्कासमपवर्गकतिपयसमन्यूनै रावलिक्कासमयै गुणिते यावान् समयरादि स्तावत्प्रमाणत्वात् तथा, तेज्यो वादरत्रस्कायिका पर्याप्ता अस
र्येयगुणा प्रतरे यावत्सुहुनसस्ययजामात्राणि खणकानि तावत्प्रमाणत्वा तेषा, तेज्यो वादरत्रस्कायिका अपर्याप्ता असस्येयगुणा प्रतरे यावत्स्य

सहस्योवा वादरत्रणस्सइकाइया पज्जत्तया, वादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तया असखिज्जगुणा, सुज्जम
वणस्सइकाइया अपज्जत्तया असखिज्जगुणा । सुज्जमवणस्सइकाइया पज्जत्तया संखिज्जगुणा । एएसिण ऋते !
सुज्जमनिगोदाण वादरनिगोदाणय पज्जत्ता २ ण कयरे कयरोहिती अप्पावा ४ ? गोयमा ! सहस्योवा वाद
रनिगोदा पज्जत्तया, वादरनिगोदा अपज्जत्तया असखे ०, सुज्जमनिगोदा अपज्जत्तया असखिज्जगुणा,
सुज्जमनिगोदा पज्जत्तया संखेज्जगुणा ४ । एएसिण ऋते ! सुज्जमाण सुज्जमपुढविकाइयाण सुज्जमअ्याउका
इयाण सुज्जमतेउकाइयाण सुज्जमवाउकाइयाण सुज्जमवणस्सइकाइयाण सुज्जमनिगोदाणं वादराण वादर

त्ता २ णय कयरे २ हितो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह वनस्सतीकायने पर्याप्ता अपर्याप्तानि किह्वा २ धो थोडा घणा इत्यादि ।
गोयमा सहस्योवा वायर वणस्सइकाइया पज्जत्तया वायरवणस्सइकाइया अपज्जत्तया असखिज्जगुणा । हेगोतम सर्वथोडा वादर वनस्सतीकाय पर्याप्ता
वादर वनस्सतीकाय अपर्याप्ता असख्यातगुणा । नुहुम वणस्सइकाइया अपज्जत्तया असखिज्जगुणा । मज्झ वनस्सतीकाय अपर्याप्ता असख्यातगुणा । सु
हुम वणस्सइकाइया पज्जत्तया संखेज्जगुणा । मज्झ वनस्सतीकाय पर्याप्ता सख्यातगुणा । एएसिण भते सुहुमनिगोदाण वायरनिगोदाण पज्जत्ता २ णय
कयरे २ हितो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह सूत्तानिगोटने वादरनिगोटने पर्याप्ता अपर्याप्तानि किह्वा २ धो थोडा घणा इत्यादि । गोयमा सहस्योवा वा
परनिगोदा पज्जत्तामा वायरनिगोदा अपज्जत्तया असखिज्जगुणा । हेगोतम सर्वथोडा वादरनिगोट पर्याप्ता वादर निगोट अपर्याप्ता असख्यातगुणा ।

दुतासख्यपन्नागमात्राण खगलानि तावत्प्रमाणत्वात् तेषां ततः प्रत्येकबादरवणस्पतिकार्यिक ४ बादरनिगोद ५ बादरपृथिवीकार्यिका ६ बादरा
प्रायिक ७ बादरवायुकार्यिका ८ पर्याप्त यथोत्तर असख्यगुणा, यद्यप्येते प्रत्येक प्रतरे यावत्पदुलासख्येजागमात्राणि खगलानि यावत्प्रमाणा
स्तथा प्यदुलासख्येजागस्या सङ्ख्येजेदञ्चिन्नत्वा दित्य यथोत्तर सङ्ख्येयगुणत्व सन्निधीयमान न विरुध्यते ८। एतेभ्यो बादरतेजस्कार्यिका अर्थात्
असङ्ख्येयगुणा असङ्ख्येयलोकाश्चामदेवाप्रमाणत्वात् ८। ततः प्रत्येकशरीरबादरवणस्पतिकार्यिक १० बादरनिगोद ११ बादरपृथिवीकार्यिक १२ बाद

पृथिवीकाइयाण बादरव्याउकाइयाण बादरतेउकाइयाण बादरवणस्पसङ्काइयाण पत्ते
यसरीरबादरवणस्पसङ्काइयाण बादरनिगोदाण बादरतस्सकाइयाण पज्जत्ता २ ण कप्परे कप्परेहितां अण्णा
वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतेउकाइया पज्जत्तया १। बादरतस्सकाइया पज्जत्तया अण्णसखिज्जगुणा २
बादरतस्सकाइया अपज्जत्तया अण्णसखिज्जगुणा ३। पत्तेयसरीरबादरवणस्पसङ्काइया पज्जत्तया अण्णसखिज्ज
गुणा ४। बादरनिगोदा पज्जत्तया अण्णसखिज्जगुणा ५। बायरपृथिवीकाइया पज्जत्तया अण्णसखिज्जगुणा ६।
बादरव्याउकाइया पज्जत्तया अण्णसखिज्जगुणा ७। बादरवाउकाइया पज्जत्तया अण्णसखिज्जगुणा ८। बादरतेउ

सङ्ख्येयगुणा अपज्जत्तया अण्णसखिज्जगुणा सङ्ख्येयगुणा निगोदा पज्जत्तया अण्णसखिज्जगुणा सङ्ख्येयगुणा निगोद पर्याप्ता स
ख्यातगणा। एवमिह भन्ते सङ्ख्येयगुणा सुदुम पृथिवीकाइयाण सुदुम वायुकाय सु० तेउ सु० बाउ सु० वणस्पसङ्काय सु० निगोदाण वायराण बायरपृथिवीका
इयाण बायर वाउ सु० बाउ सु० वणस्पसङ्काय सु० निगोदाण वायराण बायरपृथिवीका
कायने सु० निगोदने, बादर पृथिवीकाइयाण बायर वायुने बादर वणस्पसङ्काय सु० निगोदाण वायराण बायरपृथिवीका
वायरतस्सकाइयाण पज्जत्तया अपज्जत्तया कप्परे २ हित्ता अप्पावा ४। प्रत्येकशरीर बादर वणस्पसङ्काय सु० निगोदने बादर वणस्पसङ्काय सु० निगोदा
अ

राष्कायिक १३ वादरवायुकायिका अपर्याप्ता यथोत्तर मसङ्ख्यगुणा १४ । ततो वादरवायुकायिकेभ्यो उपर्याप्तेभ्यः सूक्ष्मेतरकायिका अपर्याप्ता अ
सङ्ख्यगुणा १५ ततः सूक्ष्मपृथिवीकायिका १६ । सूक्ष्माष्कायिका १७ सूक्ष्मवायुकायिका अपर्याप्ता यथोत्तर विडोषाधिका १८ ततः सूक्ष्मपर्याप्ता स्ते
नरकायिका सङ्घातगुणा । सूक्ष्मेष्टपर्याप्तस्य पर्याप्तानां मोघत एव सङ्ख्यगुणात्वात् १८ । ततः सूक्ष्मपृथिवीकायिक २० मून्माष्कायिक २१ सूक्ष्मवायु

काडया अपपञ्जतया असखिज्जगुणा १ । पत्तेयसरीत्राटरवणस्सडकाइया अपपञ्जतया असखेज्ज ० १० ।
वादिनिगोढा अपपञ्जतया असखे ० ११ । वादरपुढविकाइया अपपञ्जतया असखे ० १२ । वाटरअण्डका
इया अपपञ्जतया असखे ० १३ । वाटरवाउकाइया अपपञ्जतया असखे ० १४ । सुज्जमतैउकाडया अपपञ्ज
तया असखेज्जगुणा १५ । सुज्जमपुढविकाइया अपपञ्जतया विसंसाहिया १६ । सुज्जमअण्डकाडया अप

पर्याप्तानि किड्या २ यो वाड्या वणा सरोखा विजोष दूवे । गोयमा सख्योवा वाटर तेसकाइया पञ्जतया वायरतसकाइया पर्याप्ता असखिज्जगणा वा
यरतसकाइया अप० असखेज्जगुणा । देगौतम सर्वथाडा वाटर तेसकाय पर्याप्तता वाटर असकाव पर्याप्तता असख्यातगणा वाटर वसकाइया अपर्याप
ता असख्यगतगुणा । पत्तेय सरीर वायरवणस्सड० पञ्जतगा असखेज्जगणा वावरनिगोउ पञ्जतगा असखेज्जगुणा । प्रलेकगरीर वाटरवनरतीकाय पर्या
प्ता असख्यगतगणा वाटर निगोद पर्याप्तता असख्यगतगुणा । वावर पुढवीकाइय पञ्जतगा असखेज्जगुणा वायर भाउकाइय पञ्जतगा अस० वायर
वाउकाय अप० अस० वायर तेसकाय अप० अस० । वाटर पृथिवीकाइया पर्याप्ता अस० वाटर अक्काव पर्या० अस० वाटर वायुकाय अप० अस० वा
टर तेसकाय अप० अस० । पत्तेयशरीर वायर वणस्सडकाइया अपपञ्जतगा अस० वावरनिगोय अपपञ्जतगा अस० वायरपुढवीकाइय अप० अस० वाय
र भाउकाय अप० अस० वायर वाउकाय अप० अस० । प्रलेकगरीर वादरवनअक्कोकाउ अपर्याप्ता अस० वाटर निगोडिया अपर्याप्ता अस० वाटर
पृथ्वीकाय पर्या० अस० वाटर अक्काय पर्या० अस० वाटर वायुकाय अप० अस० । सूक्ष्म तेसकाय अपपञ्जतगा अस० सु० पुढवीकाय अप० सु० भाउ०

कायिका पर्याप्त यथोत्तर विशेषाधिक २२, तेन्य सूत्रनिगोदा छपर्याप्त स्तेपा भतिग्राह्येन संवलीनेपु प्रागात् २३, तेन्य सूत्रनिगोदा पर्याप्तका सह्यगुणा मूत्रमप्यप्राप्त्य पयाप्ताना मोचत यव सदा सह्यगुणत्वात्, यत्तव वादरापर्याप्तैरस्त्रकायिकादय पर्याप्तमू ह्सनिगोदपययसाना योक्तुण पदार्थो यद्यप्यन्यत्रा विज्ञापेणा सह्येयनाकाकाक्षप्रदक्षामागतया सह्येयते, तथाप्यस्येयस्या सह्येयतेतिनित्या दित्य मस्यप्यगुणत्व विगयाधिकत्व सरयेयगुणत्व प्रतिपाद्यमानं न विशेषज्ञागिति २४। तेन्य पर्याप्तमूत्रनिगोदज्यो वादरवनस्पतिजायिका पर्याप्ता अतन्तगुणा, प्रतिवादरेकैरनिगोदमन्तानां नोवाना प्रावात् २५। तन्य सामान्यतो वादरा पर्याप्ता विशेषाधिकका, वादरपर्याप्तैरस्त्रकायिका

जज्ञतगा विसेसाहिया १७। सुजमवाउकाडया अपजज्ञतया विमैसाहिया १८। सुजमतेउकाडया पजज्ञतया ससि० १९। सुजमपुढाविकाडया पजज्ञतया विसेसाहिया २०। सुजमयाउमाडया पजज्ञतगा विसेसाहिया २१। सुजमवाउकाडया पजज्ञतया विसेसाहिया २२। सुजमनिगोदा अपजज्ञतया अससि० २३। सुजमनिगा डा पजज्ञतया ससि० २४। वाटरवणस्सडकाडया पजज्ञतया अणतगुणा २५। वाटरपजज्ञता विसेसाहिया २६। वाटरवणस्सडकाडया अपजज्ञतगा अससिज्जगुणा २७। वाटरअपजज्ञतया विसेसाहिया २८। वादरा

अप० विस० सू० वाटकाय अप० विस०। सूत्रम तउकाय अप० अस० म० पुथीकाय अप० विशेषाधिक सू० अस्त्रकाय अप० विशेषाधिक म० वायुका य अप० विशेषाधिक। म० तउकाय पजज्ञतगा अस० म० पठनीकाय पजज्ञतया विस० सू० अत्रकाय० वाउकाय निगाय पज्ज० विस०। म० तउका य अप० अस० म० पुथीकाय अपर्गपता विगि० सू० अस्त्रकाय अप० विगि० सू० तायुकाय अप० विगि० सू० निगाटोया अप० सगातगुणा। वायर वणस्सडकाडया पज्ज० अणतगुणा वाटर पजज्ञतगा विस०। वाटर वनस्पतीकाय पर्या० वनतगुणा वाटर पर्या० विशेषाधिक। वायर वणस्सडकाडय अप० अस० वायर अपजज्ञतगा विस० वायरा विसेसाहिया। वाटर वनस्पतीकाय अप० अस० वाटर अप० विशेषाधिक वाटर विगिमादि ३। सुजम

राष्कायिक १३ बादरवायुकायिका अपर्याप्ता यथोत्तर ससङ्ख्यगुणा १४ । ततो वादरवायुकायिकेभ्यो उपर्याप्त्यै सूक्ष्मतेजसरायिका अपर्याप्ता वा सङ्ख्यगुणा १५ तत सूक्ष्मपृथिवीकायिका १६ । सूक्ष्माप्यायिका १७ सूक्ष्मवायुकायिका अपर्याप्ता यथोत्तर विशेषाधिका १८ तत सूक्ष्मपर्याप्ता स्तोत्रकायिका सङ्ख्यातगुणा । सूक्ष्मपर्याप्त्यै सूक्ष्मपृथिवीकायिका २० सूक्ष्माप्यायिका २१ सूक्ष्मवायु

काड्या अपपञ्चतया असंखिजगुणा १ । पत्तेयसरीत्राटरवणस्सडकाड्या अपपञ्चतया असंखिजगुणा १० ।
 वादिनिगीडा अपपञ्चतया असंखे ११ । वाटरपुढविकाड्या अपपञ्चतया असंखे १२ । वाटरञ्जाउका
 ड्या अपपञ्चतया असंखे १३ । वाटरवाउकाड्या अपपञ्चतया असंखे १४ । सुज्जमतेउकाड्या अपपञ्च
 तया असंखिजगुणा १५ । सुज्जमपुढविकाड्या अपपञ्चतया त्रिसंसाहिया १६ । सुज्जमञ्जाउकाड्या अप

पर्याप्त्यै किञ्चा २ यो धोढा चणा सरोक्का विशेषे दृढे । गोथमा सञ्चयोथा वाटर तेरकाड्या पञ्चतया वाटरतमकाड्या पर्याप्ता असंखिजगुणा वा
 उरतमकाड्या अपपञ्चतया असंखिजगुणा । हेमौतम सर्वथाडा वाटर तेरकाय पर्याप्ता वाटर तमकाय पर्याप्ता असंखिजगुणा अपर्याप
 ता असंखिजगुणा । पत्तेय सरीर वाटरवणकाड्या पञ्चतया असंखिजगुणा वाटरनिगीडा पञ्चतया असंखिजगुणा । प्रत्येकगरीर वाटरवणनरीरकाय पर्या
 प्ता असंखिजगुणा वाटर निगीडा पर्याप्ता असंखिजगुणा । वाटर पुढवोकाड्या पञ्चतया असंखिजगुणा वाटर वाउकाड्या पञ्चतया असंखिजगुणा
 वाउकाय अपपञ्चतया असंखिजगुणा । वाटर त्रिवोकाड्या पर्याप्ता असंखिजगुणा वाटर वाउकाड्या अपपञ्चतया असंखिजगुणा
 वाटर तेरकाय अपपञ्चतया असंखिजगुणा । पत्तेयगरीर वाटर वणस्सडकाड्या अपपञ्चतया असंखिजगुणा वाटर वाउकाय अपपञ्चतया असंखिजगुणा
 वाउकाय अपपञ्चतया असंखिजगुणा । प्रत्येकगरीर वाटरवणनरीरकाय अपर्याप्ता असंखिजगुणा वाटर निगीडा अपर्याप्ता असंखिजगुणा
 पुढवोकाय पर्याप्ता असंखिजगुणा । सुज्जम तेरकाय अपपञ्चतया असंखिजगुणा सुज्जम तेरकाय अपपञ्चतया असंखिजगुणा सुज्जम तेरकाय अपपञ्चतया असंखिजगुणा

क्रियाया पर्याप्ता यद्योत्तर विज्ञेयाधिका २२, तेन्य सूत्रनिगोदा धोपर्याप्ता असह्यगुणा स्तेषा भक्तिप्राज्ञत्वेन संवलीक्रेषु प्रावात् २३, तेन्य सूत्रनिगोदा पर्याप्तका सह्यगुणा मूक्षमयपर्याप्तेन्य पर्याप्ताना मोचत एव सदा सह्यगुणत्वात्, एतच्च वादरापर्याप्तैतैश्चस्त्राधिक्येन पर्याप्तसूत्रनिगोदपयवसाना पौन्य पदार्था यद्यप्यन्यथा विज्ञेयाया सह्यलोकाकाशप्रदशप्रमाणतया सङ्गोयते, तथाप्यसंययस्या सह्येदं नित्यत्वा दित्य ममत्वेयपुण्य विगयाधिक्यत्वं सुरयेयगुणत्वं प्रतिपाद्यमानं न विरोचनगिति २४। तन्य पर्याप्तसूत्रनिगोदज्यो वादरवनस्पतिकारिका पर्याप्ता असन्तगुणा, प्रतिवादरैश्चैकनिगोदमनसाना जीवाना प्रावात् २५। तन्य सामान्यतो वादरा पर्याप्ता विज्ञेयाधिका, वादरपर्याप्तैतैश्चस्त्राधिक्येन

ज्ञातगा विसंसाहिया १७। सुजमवाउकाडया अपजतया विसंसाहिया १८। सुजमतेउकाडया पजतया ससि० १९। सुजमपुढविउकाडया पजतया विसंसाहिया २०। सुजमअउकाडया पजतगा विसंसाहिया २१। सुजमवाउकाडया पजतया विसंसाहिया २२। सुजमनिगोदा अपजतया अससं० २३। सुजमनिगां टा पजतया ससि० २४। वाटरवणस्सडकाइया पजतया अणतगुणा २५। वादरपजतया विसंसाहिया २६। वादरवणस्सडकाइया अपजतया अससिजगुणा २७। वादरअपजतया विसंसाहिया २८। वादरा

अप० विसं० सू० वाउकाय अप० विसं०। मूत्रं तेउकाय अप० असं० सू० पृथ्वीकाय अप० विसंसाहिक सू० वायुका य अप० विसंसाहिक। स० तेउकाय पजतगा असं० सू० पठवोकाय पजतगा विसं० सू० आनकाय वाउकाय निगाय पज० विसं०। सू० तेउका य अप० असं० सू० पृथ्वीकाय अप० विसं० सू० वायुकाय अप० विसं० सू० निगाटोया अप० ससगातगुणा। वायर वणस्सडकाइया पज० अणतगुणा वाटर पजतगा विसं०। वाटर वनस्पतीकाय पर्या० विसंसाहिक। वायर वणस्सडकाइय अप० असं० वायर अपजतगा विसं० वायरा विसंसाहिया। वाटर वनस्पतीकाय अप० असं० वाटर अप० विसंसाहिक। वाटर विसंसाहिक। सुहम

तिष्ठा स्तेजोलेइयाका स्तथासौधमंशानकल्पदेवाद्य ततः प्रामुख्यसंख्येयगुणा स्तदयुक्तं वस्तुतत्वापरिज्ञानात्, लेइयापदेति गन्धव्युत्क्रांतिकतियेग्यो निज्ञाना समुच्छिंमपचेद्रियतियेक्योनिकाना च कृमलेइयाद्यल्पबहुत्ये सूत्र वत्यति-सव्यतोवा गन्धव्युत्क्रांतियतिरिकाजोणिया सुकलसा तिरिकलजो गिणीते सखेज्जगुणाते पत्तलेसगमप्रवक्तियतिरिक्खजोणिया सखज्जगुणा, तिरिकलजोणिणीते सखज्जगुणाते तउलेसा गन्धव्युत्क्रांतियतिरिक्खजोणिया सखेज्जगुणा, तेउलेसाते तिरिकलजोणिणीते संखेज्जगुणाते इति ॥ महादक्रके च तियेग्योनिकस्त्रीज्यो व्यतरज्योतिष्का च्च सखेयगुणा वत्सते ततो यद्यपि जवनवासिन्यो व्य सखेयगुणा ज्योतिष्का तथापि पटलेइयाकेज्य स्तेजोलेइयाका सखेयगुणागव इदं मत्र तात्पर्योयं, यदि केवलान् देवानं व पटलेइयानं चिकृत्य देवाएव तेजोलेइयाका ज्यित्यन्ते ततो जवत्य सखेयगुणा यावता तियेकस्सन्मिथया पटलेइयाकेज्य स्तियेग्सन्मि आएय तेजोलेश्याका ज्यित्यन्ते तियेवच पटलेइया अपि आपोतलेइयाया सन्मयात् वनस्पतिकायिकाना च सिद्धेज्यो व्यनन्तगुणात्वात् तेज्यो तज्य आपोतलेइया अनन्तगुणा वनस्पतिकायिकाना मपि आपोतलेइयाया सन्मयात् वनस्पतिकायिकाना च सिद्धेज्यो व्यनन्तगुणात्वात् तेज्यो वि नीललेश्याविज्ञोपायिकाः प्रभूततराणा नीललेश्यासजवात् तेज्योपि कृमलेइयाका विज्ञोपायिकाः प्रभूताना कृमलेइयकत्वात्, सामान्यतः सले

लेसाण तेउलेसाण पम्हलेसाण सुक्कलेसाण कयरेकयरेहितो ज्यप्पावा? गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा सुक्कलेसा पम्हहेसा सखिज्जगुणा तेउलेसा सखिज्जगुणा काउलेसा ज्यणतगुणा नील

कापोतलेगीने तेजोलेशीने पद्मलेगीने शुक्ललेगीने प्रलेगीने किष्ठा २ थोथोडा घणा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवाजोवा सुकलसमा पद्मलेसमा सखिज्जगुणा । इगौतम सर्वगोडा जीव शुक्ललेसाना लतकथी कपरिना देवने थाय पद्मलेसाना धणी सख्यातगुणा इगानाटिक देव मणुष्येने हुवे तेनाटे । तेउलेसमा सखिज्जगुणा अलेसमा अणतगुणा काउलेसमा अणतगुणा नीललसमा विसेसादिया कियहलेसमाविसेसादिया सनममा विसेसादिया हार ८ । तेजोलेश्या ज्योतिपोने हुवे तेमाट सख्याता अलेगीविह तेधणी अनधा कापोतलेसाना धणी वनस्पती भणी नीललेश्या १ धणी विसेयाधिक घणा

त्रया विशेषाधिकारा नीललेखाकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात्, गते लेखाद्वार, मिदानी सम्यक्काद्वार माह-मरसिख जते । जीवाणुं सम्यक्दिठीण मित्या दि ॥ सर्वस्तीका सम्यग्मिथ्यादृष्टिपरिणामकालस्या तर्मुत्तप्रमाणतयाऽतिस्तोकत्वेन तथा पृच्छासमये स्ताकानामेव राज्यत्वात्, तेन्य सम्यग्दृष्टयोऽनन्तगुणा सिद्धाना मनन्तत्वात्, तेभ्योपि मिथ्यादृष्टयो नन्तगुणा वनस्पतिकार्याना सिद्धेभ्यो प्यनन्तगुणत्वात्, तेषाच मिथ्यादृष्टित्या दिति । गत सम्यक्काद्वार, मधुना ज्ञानद्वार माह-मरसिख जते । जीवाणु आन्निबोहियणाणीण मित्यादि ॥ सर्वस्तोकामन पय यनानि सपताना मेवा मर्यापथ्यादिश्रुतिप्राप्ताना मन पयवज्ज्ञानसन्नवात्, तेभ्योऽवस्येयगुणा अवधिचिन्तानि नैरयिकतियक्पवेद्वियमनुप्यदे धाना मय्य यधिज्ञानसन्नवात्, तंन्य आन्निबोधिक्कानिन श्रुतज्ञानिन य विज्ञपाधिका सच्चित्तियगपचेद्वियमनुप्याणा मेवा यधिज्ञानविकलाना

लेसा त्रिंसाहिया करहलेसा विसेसाहिया, दार ८ । एणसिण जते । जीवाण सम्यक्दिठीण मिच्छादिठीण समाभिच्छदिठीण च कयरे कयरेहितो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सद्धत्तोवा जीवा सम्यामिच्छदिठी, सम्य दिठी अणतगुणा मिच्छदिठीअणतगुणा, दार ९ । एणसिण जते ! जीवाण अ्यान्निबोहियणाणीण

नोयानेयाय कण्णलग्याना धणो विगयाधिक सातमानरक तथा मन्य तिर्यचने सर्वेत्त्यानाधणो विगयाधिक थाउ इति लग्गाद्वार, दिवे सम्यक्काद्वार क इहे —एणसिण भते जीवाण सम्यग्दिठोण मिच्छदिठोण सम्यामिच्छादिठोणय करे २ इतिो अप्पावा ४ । हेम गवन् एह जीवने सम्यक्कट्टिने मित्यादि सम्यक्कादिठिने किदा २ या अन्य चया इत्यादि । गायमा सवत्थावा जीवा सम्यामिच्छादिठो सम्यदिठो अणतगुणा मिच्छदिठो अणतगुणा दार । हेगौतम भवद्वाडाजीव सम्यग्मथ्यादृष्टि जेमथी मिथ्यगण्ठणानाकाल तमथी तेहथी सम्यक्कट्टि अनर्तासिद्ध भनता तेहथी मित्यादिठि अनर्ता वनस्प ती भनता इति सम्यक्का ८ दिवे ज्ञानद्वार कहेहे—एणसिणभते जीवाण आभिणिवोहियणाण सयनाणी आहियाणी मणजज्जयाणी केवलणाणीणय कयरे २ दिता अप्पावा ४ । हेमगवन् एह जीवाने मतिज्ञानोने अतज्ञानोने अवधिज्ञानोने मनपयवज्ज्ञानोने केवलज्ञानाने किदा २ थो थोडा

मपि केषांचि दान्निवियोपिकश्रुतज्ञानज्ञायात्, स्वस्थाने तु त्वेपि परस्पर तुल्या जल्यसुयनाण तल्यसुयनाण तल्यमदनाण नितिउच
नात्, तेज्य केवलवानिनो अरन्तगुणा सिद्धाना मनन्तत्वात्, उक्तहि-ज्ञानानि मल्पबहुत्व मिदानि तदप्रतिपक्षताना मज्ञानिना मल्पबहुत्व
माह-एएसिण ज्ञते । जीवाण मइअस्त्राणीण सि यादि ॥ सर्वस्तीका विज्झद्वानिन कतिपयानामेव नैरियकदेवतिर्यक्पचेद्रियमनुप्याणा विजाना
वात्, तेज्यो मल्पज्ञानिन युताज्ञानिनो जल्लगुणा, वनस्पतीनामपि मल्पज्ञान युताज्ञानज्ञायात्, स्वस्थाने तु परस्पर तुल्या जल्यमइअन्ताण त
ल्यसुयअस्त्राण जल्य सुयअस्त्राण तल्यमइअस्त्राण मितिवचनत्वात्-सप्रत्युनयेपा ज्ञानाज्ञानिना मल्पबहुत्व माह-उपविण ज्ञते । जीवाण मित्यादि ॥
सर्वस्तीका मन पर्यवज्ञानिन सुयताना मेवा सर्वोपया दृढिप्राप्ताना मन पर्यवज्ञानसदवात्, स्तेज्यो उसाय्यंगुणा अवधिज्ञानिन स्तेज्य आग्निनि

सुयणाणीण उहिणाणीण मणपज्जवनानीण केवलनाणीणय कयरे कयरिहितो ज्ञप्पावा ५ गोयमा ! सव्व
त्योवा मणपज्जवनानी उहिमाणी ज्ञस० ज्ञान्निवोहियनाणी सुयनाणी दोवि तुल्ला विसेसाहिया केव
लनाणी ज्ञण० । एएसिण ज्ञते ! जीवाण मइअस्त्राणीण सुयअस्त्राणीण विजगनाणीणय कयरे कयरिहितो

षण इत्यादि गोयमा सव्वत्थावा जीवा मणपज्जवनानी आहिणाणी असस्त्रेज्जगण । इगोतम सर्वथाहा मनपर्यवज्ञानोने किम चमांसहो लब्धिता
धणी ते इवे तेमाटे तेहथो अवधिचानो असकपात देवता नारकी मन्य तिवचने इवे तेमाटे आभिणिवोहियणाणो सुयणाणी दोवितुल्ला विसेसा
हिशा केवलनाणी अणतगणा । मतिज्ञानो वेमरीखा जीवाभिगमे कक्षाकै जल्यमइअण तल्यमइअण, मइअण अवविणगाणीथो विजिपाधिक
केवलज्ञानो ज्ञनमगणा सिद्धनाल्लेवा भणो, इवे ज्ञानना प्रतिपद्याना अयवद्वत्त्व इहेक्के-एएसिण भते जीवाण मइअणाणीण सउअणाणीण विभगणा
णीणय कयरे २ इति अणपुत्ता ४ । इभगवन् गइज्जीवने मतिज्ञानोने युतज्ञानोने विभगजानोने जिहा २ थो थोत्ता इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा विभग
णाणी मइअणाणी सुयपणाणी दावितुल्ला अणतगणा । इगोतम सर्वथाहा विभगजानो देव नारकी मन्य तिवचने तेमथो मतिचज्ञानो युतचज्ञानो दो

योधिकृतानि युतज्ञानिनश्च विशेषाधिका स्वस्थाने तु द्वावपि परस्परं तृया अत्रभावया प्रागेवोक्ता, तेष्वोस्येषगुणा विनंगज्ञानिनो यस्मात्सुरगतौ विरयगते च सम्यग्दृष्टिनो मिथ्यादृष्टयोऽसम्यग्दृष्टयोऽप्रधिज्ञानिनो मिथ्यादृष्टयो विजगद्ज्ञानिन इत्यसम्येषगुणा स्तेष्व केवलज्ञानिनोऽनन्तगुणा-सिद्धान्ता मनन्तत्वात्, तेष्वोऽस्यज्ञानि युताज्ञानिनश्चानन्तगुणा वनस्पतिकारिकाया सिद्ध्योऽप्यनन्त

अप्यात्राऽ गीयमा । सवृत्त्योवा जीवा विजगन्तानी मडच्यन्तानी दोवि तुल्ला अणतगुगा । एएसिणं नते ! जीवाण अण्निनिवांहियनानीण सुयनानीण उहिनानीणं मणपज्जवनानीण । केवलनानीण मत्तिच्यन्तानीण सुयच्यन्तानीण विजगन्तानीण कयरे कयरोहितो अप्यात्राऽ गीयमा । सवृत्त्योवा जीवा मणपज्जवनानी उहिनानी असखिजगुणा, अण्निणिवांहियनानी सुयनानीय दोवि तुल्ला विसेसाहिमा, विजगन्तानी असखेज्ज०, केवलनानी अणतगुगा मडच्यन्तानी सुयच्यन्तानीय दोवि तुल्ला अणतगु

उ नरोढा विभग्यो अनन्तगुणा केमणी मत्तिअज्ञानो युतअज्ञानो वनस्पताने यात्र तेमाट । एएसिण भते कोवाण आभिणिमाहियनानीण मण्णानी आहियानी मणपज्जवनानी केवलनानी । हेभगवन एहने मत्तिअज्ञानो युतअज्ञानो नवविज्ञानोने मनपयंअज्ञानोने केवलनानीने । मडच्यन्तानीण सयअसाणीय विभगगणीय कयरे २ हितो यथावा ४ । मत्तिअज्ञानोने युतअज्ञानोने विभगज्ञानोने विजगज्ञानोने केज्ज २ घोडा कणा सरोस्या विजेष होवे । गीयमा सब्बत्वा जीवा मणपज्जवनानी ओहियानी असखिजगणा आभिणिवांहियनानी मण्णानी टावित्तत्वा विसेसाहिमा । हेमौतम मवधाडा जीवमनपयंवनपणी लयना धणी साधने इवे । तेहो अवधिवानो असव्यातगुणा मत्तिअज्ञानो युतअज्ञानो वनरोया अवधिवनोयो विजेषयाधिक । विभगणी असखिजगणा केवलनानी अणतगुणा मडच्यन्तानी टावित्तुमा अणतगुगा दार १० । विभप्रज्ञानो असव्यातगुणा मिथ्यात्वोने इवे पिण सम्यक्कनो नयो तेमाटे कालज्ञानो अनन्तगुणा सिह मेनता मत्तिअज्ञानो युतअज्ञानो दोव सरोखा केवलनानीयो अनन्तगुणा वनस्पतीमाटे इति ज्ञानद्वार ।

[illegible]

नोसंयता नोअसंयतासंयता अनन्तगुणा प्रतिपेक्षयवृत्ता ति सिद्धा स्ते वा नन्ता इति तेज्यो ऽसंयता अनन्तगुणा वनस्पतीनां सिद्धेभ्यो प्यनन्तत्वात्, गत सयतद्वार, सप्रत्यु पयोगद्वार माए-एएसिण जते ! जीवाण सागारोपयोगा मित्यादि ॥ इहा नाकारोपयोग काल सर्वस्तीका सा कारोपयोगकाल स्तु सहेयगुणा ततो जीवा अप्य नाकारोपयोगोपयुक्ता सर्वस्तीका पृच्छासमये तेपा स्तीकानामेता थाप्यमानत्वात्, तज्य सा कारोपयोगोपयुक्ता सहेयगुणा साकारोपयोगकालस्य दीपतया तेपा पृच्छासमये बहूनाप्राप्यमाणत्वात्, गत मुपयोगद्वार, मिहानी माहार द्वार-एएसिण जते ! आहारगाण मित्यादि ॥ सर्वस्तीका जीवा अनाहारका विग्रहगत्यापन्नादीना मेवा नाष्टारत्वात्, उक्त च-विगणगृहमाय ता कंउलिणोसमुहयाअजोनीय सिद्धायअणाहारा संसाचारगरजीवा ॥ १ ॥ तेज्य आहारका असहेयगुणा ननु वनस्पतिकायिकाना सिद्धेभ्यो

जीवा सजया सजया अससखेज्जगुणा, नोसजता नोअसजता अनन्तगुणा, असज ता अनन्तगुणा, दार १२ । एएसिण जते ! जीवाण सागारोवउत्ताण अनन्तगुणा कयरे २ हितो अप्पावा १ ? गोयमा ! सव्वलीवा जीवा अनन्तगुणा सागारोवउत्ता सखिज्जगुणा, दार १३ । एए

तासयतने किहा २ थो थोडा घणा इत्यादि । गोयमा सव्वलीवाजीवा सजयासजय असखिज्जगुणा नोसजय नो असजय अनन्तगुणा नो सजयासजय अनन्तगुणा असजया अनन्तगुणा दार १२ । हे गौतम सर्वथोडा जीव सयतासयत कोडिसहस्र पुद्गल मणुनोण सत्ताणमिति वचनात् देगविरिति अस ल्यातगुणा तिर्येच पचेन्द्राग्ने घाय वय प्रतिपेक्षवर्त्ती सिद्ध अनन्तगुणा तेद्वी असयत अनन्तगुणा वनस्पतीकायमाटे तेद्वी असयत अभय अनन्तगुणा इति १२ । एएसिण जते जीवाण सव्वलीवा सागारोवउत्ता अनन्तगुणा कयरे २ हितो अप्पावा ४ । हेभगवन् एए जीवने साकारोपयोगीने यनाकारोपयोगीने किहा २ थो थोडा घणा इत्यादि । गोयमा सव्वलीवा अनन्तगुणा सागारोवउत्ता सखिज्जगुणा दार । हेगौतम सर्वथोडा जी व अनन्तगुणा पृच्छासमये थोडालाभे तेद्वी साकारोपयोगी सख्यातगुणा पृच्छासमय घणा लाभे । एएसिण जते जीवाण आहारगाण यथाहा

प्य नन्तत्वात्, तेपाथा एतदुक्त्यापि लभ्यमानत्वात्, कथमनंतगुणा न भवति तदुक्तं वस्तुतत्वापरिज्ञानात्, इह मूम्भनिर्गोदा सर्वसङ्ख्या प्य सङ्ख्या तत्रा प्यन्तर्मुक्तं समयराशितुल्या सूक्ष्मनिर्गोदा-स्य कालविग्रहे वर्तमाना लभ्यन्ते ततो नाह्वारका अप्यतिथयः सकराजीवराश्यसङ्ख्येना गतुल्या इति, तस्य आह्वारका असङ्ख्यगुणा स्तेय नानन्तगुणा, गत माहाद्वार, अन्नापकद्वार माह-एणसिण ऋते । जीवाण ज्ञासगाण मित्यादि स्यस्तोका नायका ज्ञापालब्धिसपन्ना द्वीन्द्रियादीना मेव ज्ञापकत्वाते, अन्नापका ज्ञापालब्धिहीना अनन्तगुणा वनस्पतिकार्यिकाना मनन्तत्वात्, गत ज्ञापकद्वार, सप्रति परीक्षद्वार माह-एणसिण ऋते । जीवाण मित्यादि ॥ इह परीक्षा द्विविधा, नवपरीक्षा कायपरीक्षा य तत्र नवपरीक्षा

सिण ऋते ! जीवाणं आहारगाण अणुआहारगाणय कयरे २ हितो अप्यावा १ ? गोयमा ! सवृत्त्योवा जीवा अणुआहारगा अणुआहारगा असिखिज्जगुणा, दार १४ । एणसिण ऋते ! जीवाण ज्ञासगाण अणुआसगाणय क यरे कयरे हितो अप्यावा वज्जयावा तुल्लावा विसेसाहियावा १ गोयमा ! सवृत्त्योवा जीवा ज्ञासगा अणु सगा अणंतगुणा, दार १५ । एणसिण ऋते ! जीवाण परिज्ञाण अपरिज्ञाण नोपरिज्ञा नोअपरिज्ञाणय

रगाणय कयरे २ हितो अप्यावा ४ । हेभगवन् एह जीवने आह्वारोने किंवा २ योडा घणा इत्यादि । गोयमा सवृत्त्योवा जीवा अणुआहारगा आह्वारगा असिखिज्जगुणा । हेगौतम सर्वयोडा जीव अनाह्वारो विग्रहगति आह्वारनहो तथा सिद्ध अनाह्वारो भाया—विग्रहः सादृशा केवलिनोममुदयाअयो गो २ सिद्धायअणाह्वारा सेसाअह्वारगाजीवा इति वचनात् तेहथो आह्वारोजीव असम्यातगुणा हुवे अनन्तगुणा नहो तेकिम सूक्ष्मनिर्गोद सर्वकाले वि ग्रहमति वर्त्तमानपाने तेमाटे अनाह्वारो वणा पिण सवृत्तजीवराशिय सख्यातभाग तुल्यै तेभथो आह्वारकजीव सख्यातगुणा लोभे पिण अनाह्वारोथी अन्तरगणा नलोभे ॥ आह्वारकद्वार १४ सो कथो । एणसिण भते भासगाण अभासगाणय कयरे २ हितो अप्यावा ४ । हेभगवन् जीवाने भायकाने वलो अभायकाने किंवा २ यो योडा घणा देहमनु तिथेव नारको इत्यादि । गोयमा सवृत्त्यावाजीवा भासगा अभासगा अणतगुणा दार १५ । हेगौतम सर्व

अनन्तगुणा साधारणजनस्यैकाना सिद्धेभ्योनन्तगुणाना सर्वकालमपर्याप्तत्वेन लज्यमानत्वात् । तेभ्य पर्याप्ता सहेयगुणा इह नर्ववत्तव्यो जीया मूत्सा सून्वाश्च सर्वकाल मपर्याप्तैभ्य पर्याप्ता सहेयगुणा इति । सहेयगुणा उक्ता गत पर्याप्तद्वार १७ । सप्रति सूत्सद्वार-स्यसिण भ्रते । जीवाण सुहुमाण मित्यादि ॥ सर्वस्वोका जीवा नोसूत्सा नाबादरा सिद्धादित्यर्थः, तेषा सूत्सजीवराज्ञो वांद्दरजीवराज्ञा नान्तत्रागकल्पत्वात्, तभ्यो बादरा अनन्तगुणा बादरनिगोदजीयाना सिद्धेभ्यो नन्तगुणात्वात्, तस्य सूत्सा अससगुणा बादरनिगोदेभ्य मूत्सनिगोदाना मसरयेयगुणा त्वात्, गत सूत्सद्वार १८ । इदानी सच्चिद्वार-स्यसिण भ्रते । जीवाण सजीण मित्यादि ॥ सर्वस्वोका सच्चिन समनस्कानामेव सचित्त्वात्, तैभ्यो नोसच्चिनो नोऽसच्चिनो अनन्तगुणा उन्नतगुणा एवेति, तैभ्यो ऽच्चिनो ऽनन्तगुणा वनस्पतीना सिद्धे

अणतगुणा पञ्जतगुणा ससज्जगुणा । एएसिण भ्रते । सुज्जमाण नादराण नोसुज्जमाण नोबादराणय कयरे २
हितां अण्वावा ४ ? गोयमा । सन्नत्योवा जीवा नोसुज्जमा नोबादरा, बादरा अणतगुणा सुज्जमा अणसखे
ज्जगुणा, दार १८ । एएसिण भ्रते ! जीवाण मन्तीण अण्वावा नोसन्तीण नोअण्वावाणय कयरे कयरे
हितां अण्वावा ४ ? गोयमा ! सन्नत्योवा सन्ती नोसन्ती नोअण्वावा अणतगुणा, अणसन्ती अणतगुणा ।

तगुणा पर्याप्ता इति पर्याप्ताहार सपूर्ण इगा, द्विवे सूत्साद्वार १८ मो कहेछे — एएसिण भ्रते सुहुमाण बादराण नो सहुमाय बादराणय कजर २ हितां
अण्वावा ४ । हेमगवन् एह सूत्सावदरने उभयप्रतिषेधवर्त्ती सिद्धने किहा २ यो बांडा वणा इत्यादि । गोयमा सन्नत्यावा नो सुहुमा नो बादरा वा
यरा अणतगुणा सुहुमा असन्विज्जगुणा दार । हेमगवन् सर्वथासाजौव उभय प्रतिवर्त्ती सिद्धना जेभणी मन्त्रवाटर जीवरायिने अनन्तमेभागे सिद्धे ते
इहो बादर अनन्तगुण निगोदिगा तेहयो मूत्सनिगोद अण्वावातगुणाकै इति २ पदे मूत्साद्वार १८ मो कहेछे, द्विवे सज्जोहार कहेछे — एएसिण भ्रते जो
वाय सजीण असजीण नो सजीणय नो असजीणय कयरे २ हितां अण्वावा ४ । हेमगवन् एह जीन सज्जोअसज्जोने नसज्जो नयसज्जो उभयवर्त्ती सिद्धने

प्रवसिद्विकदार २० । साप्रत मस्तिस्त्रिकाय माङ्ग-एणसिण प्रते । धर्मास्त्रिकायो ऽधर्मास्त्रिकाय आकाशास्त्रिकाय गते न यापि द्रव्यायंतया द्रव्यमवा याद्रव्याय स्तस्यन्नावो द्रव्यायंतया तया द्रव्यरूपतया इत्यर्थे, तुल्या समाना प्रत्येक मेकसङ्गाकत्वा दत्तएव सवेस्ती का, स्तेस्यो जीवास्त्रिकायो द्रव्यायतया नन्तगुण जीवाना प्रत्येक तद्द्रव्यत्वात्तया च जीवास्त्रिकाये ऽनन्तत्वात्, तस्मादापि पुद्गलास्त्रिकायो द्रव्या यतया नन्तगुण कथ मितिचेत् उच्यते-इए परमाणु द्विप्रदेशकादीनि पृथक् २ द्रव्याणि तानि च सामान्यत स्त्रिया तद्यथा-प्रयोगपरिणतानि मिश्रपरिणतानि विश्रसापरिणतानिप तत्र प्रयोगपरिणतान्यपि तावज्जीवस्यो ऽनन्तगुणानि एकैकस्य जीवस्या नतं प्रत्येक ज्ञानावरणीयादिकर्म सु पुद्गलस्त्रिकाये रावेष्टितत्वात् किपुन यथाणि तत प्रयोगपरिणतस्यो मिश्रपरिणतस्यो नन्तगुणानि तस्यो पि विश्रसापरिणतान्य नन्तगुणानि,

त्रिकाय जीवत्रिकाय पुगलत्रिकाय अष्टासमयाण दव्वठयाए कयरे कयरेरहिती अण्णावा ४ ? गोयमा !
धम्मत्रिकाए अधम्मत्रिकाए अगासत्रिकाए एए तिमिचि तुह्वा दव्वठयाए सव्वयोवा जीवत्रिकाए दव्व
ठयाए अणतगुणे, पुगलत्रिकाए दव्वठयाए अणतगुणे अष्टासमए दव्वठयाए अणतगुणे । एएसिण नते !
धम्मत्रिकाय अधम्मत्रिकाय अगासत्रिकाय जीवत्रिकाए पोगलत्रिकाए अष्टासमयाण पदेसठयाए

साधम्मत्रिकाए अधम्मत्रिकाए अगासत्रिकाए एएण तिणवितुहा दव्वठगाए । हेगौतम धर्मास्त्रिकाय अधर्मास्त्रिकाय आकाशास्त्रिकाय ० ३ द्रव्याधर्मा ये द्रव्यरूपण ३ ३ सरोखे बसव्वत्तपणामाटे । सव्वत्थावा जीवत्रिकाए दव्वठगाए अणतगुणा पुगलत्रिकाए दव्वठगाए अणतगुणे अष्टासमए दव्वठगाए अणतगुणे । सर्वथाडाजीव जीवास्त्रिकाय द्रव्यो अनन्तगुणा हवे जीवास्त्रिकाययो पुद्गलास्त्रिकाय द्रव्यायको अनन्तगुणा तेमाटे पुद्गलना ३ भेदकहा प्रयागपरिणत मिश्रपरिणत विग्रमापरिणत ३ तिहा जे प्रयोगपरिणत ते जीववो अनन्तगुणाहे जिमारे एकजौवेने अनन्त ज्ञानावरणा दिक् पुद्गल स्तन्म नावेष्टितहे ते प्रयागपरिणतधर्को क्रियप० अनन्तगुणा तेद्वो विग्रसा धारिणत अनन्तगुणा उल्लव-प्रश्नो सर्वथाडा पुद्गल प्रयो

एषद्वया ए अणतगुणे प्रागासत्यिका ए पपसद्वया ए अणतगुणे । प्रदेशकी लोकाकाशप्रदेश परिमान सर्वघोडा लोवास्तिकायप्रद्वयाद्य अनन्तगुणा लो
वना अनन्ता सारै एकैवा लोवनाप्रदेश लोकाकाशप्रदेश प्रकाशै पुद्गलास्तिकायप्रदेशाद्य अनन्तगुणा अनन्तकर्मना परमाणु वारावेष्टितै एकैना लो
वनाप्रदेश तेमाटे अनन्ता पुद्गलास्तिकाय हुवे अहासमय प्रदेशार्थ अनन्तगुणा हुवे आकाशास्तिकाय अनन्तकै, हिचे द्रव्याद्य प्रदेशार्थायो परस्पर
अन्य बहुलकहेछै—आकाशास्तिकाय प्रदेशयो अनन्तगुणा अनन्तकता अनन्तभावयो तेहयो अहासमय अनन्तगुणाप्रदेशयो अनन्ता अनन्तसमयमे भा
व तेहयो अहासमया अनन्तगुणा । एएसिण भते धम्मत्थिकायस दब्ध पपसद्वया ए कयरे २ हितो गम्पावा ४ । हेभगेवन् एह धर्मास्तिकायादिकने

माणना च द्विप्रदेशकादीना स्कन्धाना प्रत्येक द्रव्यक्षेत्रकालज्ञाविविशेषसंघटनोद्देशात् अतीता अपीति सिद्ध पुद्गला
स्तिकायाद नन्तगुणोद्देशसमयो द्रव्याण्यतयेति । उक्त-द्रव्याण्यतया परस्पर मल्ययुतत्वं मिदानी मत्तपास्येय प्रदेशायतया तदाह-एवमिति । च
स्मृतिकाय त्वादि ॥ चमस्तिकायो उधर्मास्तिकाय एतौ द्वावपि परस्पर प्रदेशार्थतया तुल्या वृजयोरपि लोकाकाशप्रदेशत्वात्, शयास्तिकाया
उद्देशसमयापक्षया च संस्तोको ततो जीगास्तिकाय प्रदेशार्थतया शनन्तगुण, जीवास्तिकायं जीवाना मनन्तत्वात्, एकैकस्य जीवस्य लोकाका
शप्रदेशपरिमाणप्रदेशत्वात्, तस्मादपि पुद्गलास्तिकाय प्रदेशायतया अनन्तगुण कथं मिति उच्यते-इहकमस्कन्धप्रदेशा अपि तावत्संज्ञाविवप्रदेशोऽन्यो
ऽनन्तगुण एकैकस्य जीवप्रदेशस्या नन्तानसै कमपरिमाणुजि रावेष्टितपरिवेष्टितत्वात्, किंपुन सकलपुद्गलास्तिकायप्रदेशा ततो भवति जी
यास्तिकाया स्पुद्गलास्तिकाय प्रदेशायतया अनन्तगुण, तस्मादप्य उद्देशसमयो प्रदेशायतया अनन्तगुण एकैकस्य पुद्गलास्तिकायप्रदेशस्य प्रागुक्तक्रमेण
तत्तद्द्रव्यक्षेत्रकालज्ञाविविशेष संघटनभावतो ऽनन्ताना मतीताद्देशसमयाना मनन्ताना मनागतसमयाना ज्ञावात्, तस्मा दाकाशास्तिकायप्रदेशायतया

संज्ञाए कयरे कयरेहितो व्युत्पन्नावाः ? गोयमा । सख्योने एगे व्युत्पन्नस्तिकाए दृष्टयाए सोचिव पदे
संज्ञाए व्युत्पन्नस्तिकायस्स दृष्टपदेसंज्ञाए कयरे कयरेहितो व्युत्पन्नावाः

द्रव्याण्यप्रदेशना भावो जीवता किंवा र थो थाहा घण इत्यादि । गोयमा सख्योनेवा धर्मास्तिकाए दृष्टयाए सोचिव पदेसंज्ञाए असंख्यगुणा । हेगो
तम सर्वथाहा धर्मास्तिकाय द्रव्यको एकमाटे ते धर्मास्तिकाय प्रदेशयको असंख्यातगुणा लोकाकाश । एवमिति भते व्युत्पन्नस्तिकायस्स दृष्टपदेसंज्ञाया
कयरे र हितो नरावावा ४ । हेमगवन पङ्क्तिने व्युत्पन्नस्तिकाय द्रव्यको प्रदेशयो किंवा र थो अन्य घणा इत्यादि । गोयमा सख्योनेवा एगे व्युत्पन्नस्तिकाए
दृष्टयाए सोचिवपदेसंज्ञाए असंख्यगुण । हेगोतम सर्वथाहा एक व्युत्पन्नस्तिकाय द्रव्यको एकमाटे व्युत्पन्नस्तिकाय प्रदेशयो असंख्यातगुणा लोकाका
श प्रदेशममाणत्वे । एवमिति भते भागास्तिकायस्स दृष्टपदेसंज्ञाए कयरे र हितो व्युत्पन्नावा । हेमगवन एह भागास्तिकायने द्रव्यको प्रदेशया कि

अनन्तगुण अलोकस्य सर्वतोऽप्यनन्तताभावात्, गत प्रदेशार्थतया व्यपवृत्तत्वं, मिदानी प्रत्येक द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया व्यपवृत्तत्वं गत-परिमितं भवेत् । इत्यादि ॥ सर्वस्तीकोपसंस्तिकायो द्रव्यायतया एकत्वात् प्रदेशार्थतया असंख्येयगुणो लोकाकाशप्रदेशपरिमाणप्रदेशात्मकत्वा देव मधुसूक्तिनायम् । त्रयमपि भावनीय, आकाशास्तिकायो सर्वस्तीक एकत्वात् प्रदेशार्थतया अनन्तगुणो उपरिमितत्वात्, जीवास्तिकायो द्रव्यायतया सर्वस्तीक प्रदेशार्थतया असंख्येयगुण प्रतिजीव लोकाकाशप्रदेशभावात्, तथा सर्वस्तीक पुद्गलास्तिकायो द्रव्यायतया द्रव्याणां सर्वत्रापि स्तीकत्वात्, सर्व पुद्गलास्तिकाय स्तद्द्रव्यापेक्षया प्रदेशार्थतया चित्तमानोऽसंख्येयगुण, ननु वद्वत्सलु जगत्पतप्रदेशका त्रयि स्कन्धा विद्यन्ते । ततोऽनन्तगुणा कस्मा लज्जयति तदयुक्त-वस्तुतत्वापरिज्ञानादि हि स्थान्या अनन्तप्रदेशका स्कन्धा परिमाणत्वादयस्त्विति उच्यते, स्यादवत्यति सूत्र-संख्येत्यो

॥ गौयमा ! संख्येत्येवै पुणे व्यागासत्तिकाए दृष्टयाए सोचित्र पदेसठयाए अणतगुणा, एतस्सण भते ! जीवल्लिकायस्स दृष्टपदेसठयाए कयरे कयरेहिती अण्णमा ॥ संख्येत्येवै जीवल्लिकाए दृष्टयाए सोचित्र पदेसठयाए अण्णतगुणा, एतस्सण भते ! पुणल्लिकायस्स दृष्टपदेसठयाए कयरे ॥

हा २ यो थोडा घणा इत्यादि । गौयमा संख्येत्येवै पुणे व्यागासत्तिकाए दृष्टयाए सोचित्र पदेसठयाए अणतगुणे । हे भौतम सर्वथोडा आकाशास्तिकाय द्रव्य एकमाटे आकाशास्तिकाय प्रदेशयो अनन्तगुणे अपरिमितमाटे । एसिण भते जीवल्लिकाय दृष्टयाए पदेसठयाए कयरे २ हितो प्रमाव । ४ । हे भगवन् पुणे जीवास्तिकाय द्रव्ययो प्रदेशयो किहा २ यो थोडाहवे । गौयमा संख्येत्येवै जीवल्लिकाए दृष्टयाए सोचित्र पदेसठयाए अण्णतगुणे । हे भौतम सर्वथोडा जीवास्तिकाय द्रव्ययो ते जीवास्तिकाय प्रदेशयो अनन्तगुणा प्रतिजीव ते लोकाकाश प्रदेशपमाण प्रदेशहवे । एसिण भते पुणल्लिकाय दृष्टयाए पदेसठयाए कयरे २ हितो अण्णमा ४ । हे भगवन् एह पदनास्तिकाय द्रव्ययो प्रदेशयो किहा २ यो थोडा घणा इत्यादि । गौयमा संख्येत्येवै पुणल्लिकाए दृष्टयाए सोचित्र पदेसठयाए अण्णतगुणे अपरिमितमाटे । हे भौतम सर्वथोडा पुद्गलास्तिकाय द्रव्ययो

एते त्रयोपि द्रव्यार्थतया तुल्या सर्वस्तोकाश्च प्रत्येकमेकसख्याकत्वात् ३ । तेभ्यो धर्मोस्तिकायो ऽधर्मोस्तिकाय एतौ द्वावपि प्रदेशार्थतया ऽस
स्यगुणौ स्वस्थानेतु परस्परं तुल्यौ ताभ्या जीवास्तिकायो द्रव्यार्थतया अनतगुण अनताना जीवद्रव्याणां ज्ञावात् ६, सर्व जीवास्तिकाय प्रदेशा
यतया असंख्यगुण प्रतिजीवमसंख्येयानां प्रदेशानां ज्ञावात् ७ । तस्मादपि प्रदेशार्थतया जीवास्तिकाया तुद्गलास्तिकायो द्रव्यार्थतया अनतगु
ण प्रतिजीवप्रदेश ज्ञानावरणीयादिकमपुद्गलस्कन्धानां मय्य नताना ज्ञावात् ८ । स एव पुद्गलास्तिकाय प्रदेशार्थतया असंख्यगुण अत्र ज्ञावना
प्राप्तिवत् ९ । तस्मादपि प्रदेशार्थतया पुद्गलास्तिकायात् अद्वासमयो द्रव्यार्थतया अनतगुण अत्रापि ज्ञावना प्राप्तिवत् १० । तस्मादप्या काशास्तिकाय
प्रदेशार्थतया अनतगुण सर्वोत्थपि दिशुर्विदिशु तस्यात्तर्ज्जवात्, अद्वासमयस्य च मनुष्यक्षेत्रमात्रज्ञावात् ११, गत मस्तिकाय, मिदानी चरमद्वार

स्तिकाय पौगलस्तिकाय अद्वासमयाण दद्वठयाए पदेसठयाए कवरे कवरोहितो झुप्पावा ४ ? गोयमा !
धम्मस्तिकाए झुधम्मस्तिकाए अगासस्तिकाए एणं तिन्निवि तुहा, दद्वठयाए सब्बतोवा धम्मस्तिकाए

स्तिकाय अद्वासमयाण दद्वठयाए पदेसठयाए कवरे २ हितो अपावा ४ । हे भगवन् एह अधर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकायने जोधास्ति
कायने पुद्गलास्तिकायने ग्रहासमगने द्रव्यप्रदेशयो किंहा २ यो घोडाहवे । गोयमा धम्मस्तिकाए अधर्मास्तिकाए आगासस्तिकाए एए तिन्निवितुहा दद्वठ
याए सत्त्वोवे पदेसठयाए धम्मस्तिकाए अधर्मास्तिकाए दद्वठयाए अनतगुणे संचेन पदेसठयाए पसखिजगुणे । हे गौतम धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिका
य आकाशास्तिकाय ७ २ ने द्रव्यधर्को सरोखाकै सर्वयोडाकै प्रत्येक २ असंख्याताकै द्रव्यधर्को सरोखा हुवे प्रदेशयो सर्वयोडाकै धर्मास्तिकाय अधर्मास्ति
काय ए दोंय सरोखास्थानकं द्रव्यधर्को असंख्यातगुणे प्रदेश अधिकाकै तेह जीवास्तिकायप्रदेशयो असंख्यातगुणा द्रव्यप्रदेशकै तेमाटे पुद्गलास्तिकाय द्रव्य
यो पनन्तगुणा ते पुद्गलास्तिकायप्रदेशयो असंख्यातगुणा । अद्वासमए दद्वठपपदेसठयाए अनतगुणे आगासस्तिकाए पदेसठयाए अनतगुणे द्वार ।
अद्वासमय द्रव्यप्रदेशयो अनन्तगुणा आकाशास्तिकाय प्रदेशधर्को अनन्तगुणा अन्तगुणा सर्वादायि विदिगने अन्तकै दत्ति २१ मो अस्तिद्वार ३ पदे परोद्वा

माह-एवमिति प्रते । जीवाण चरिमाण मित्यादि ॥ इह येषा चरिमाणे सत्रवी योग्यतयापि ते चरमा उच्यन्ते-तेषा चोद्भवा इतरे उचरमा अत्रव्या सिद्धा य उन्नयेयामपि चरमाचरमत्रवाजावात्, तत्र सवस्तोका अचरमा अत्रव्याना सिद्धाना च समुदितानाम प्यजघन्योत्कृष्टयुक्तानतक परिमाणत्वात्, तेभ्यो अनतगुणा यरमा अजघन्योत्कृष्टानतानतकपरिमाणत्वात्, गत चरमद्वार, मधुनाजीवद्वार माह-एवमिति प्रते । जीवाण पोगलाण मित्यादि ॥ सवस्तोका जीवा स्तेभ्य पुद्गला अनतगुणा २ तेभ्यो उद्भासमया अनतगुणा अत्रजावना प्रागेवकता इ तेभ्यो उद्भासमये स्य संवद्रव्याणिविशेषाधिकानि कथ मितिचेत् उच्यते-इह येषा अनतरमद्भासमया पुद्गलेभ्यो अनतगुणा उक्ता स्तेप्रत्येक द्रव्याणि ततो द्रव्यचि ताया तेषिपरिशुद्धते तेषु च मध्ये संवकीवद्रव्याणि संवपुद्गलद्रव्याणि घर्माघर्मोकाज्ञास्तिकायद्रव्याणि च प्रक्षिप्यते तानि च समुदितान्यप्य द्वासम याना मनतज्ञागकल्पानी ति तेषु प्रक्षिप्तेष्वपि ममागधिकत्व जात मित्यद्भासमयेभ्य संवद्रव्याणि विशेषाधिकानि ४ । तेभ्य संवंप्रदेक्षा अनतगुणा आ काशानतत्वात् ५ तेभ्य संवंपर्यया अनतगुणा एकैकस्मिन्नाकाशप्रदेशे अनत्ताना मगुरुलघुपर्यायाणा प्रावात् ६ गत जीवद्वार, मधुनाक्षेत्रद्वारमाह-

अधस्तम्यिकाएय एण दीणिवितुह्वा पदेसठयाए असखेज्जगुणा, जीवत्थिकाए दव्वठयाए अणंतगुणे सो चंच पदेसठयाए असखिज्जगुणे पोगलत्थिकाए दव्वठयाए अणतगुणे सोचंच पएसठयाए असखेज्जगुणे

इति चरमद्वार कहैछे-एवमिति भते जीवाण चरमाण अचरमाणय कयरे २ हितो यणावा ४ । हेमगवन् एह चरमभव लेंदने ते चरम ते मव्यकद्विये अचरम ते अभव्य ते सिद्धने कहिये किन्ना २ यो घोडा २ इवै । गोयमा सवत्योवा जीवा अचरमाचरमा अणतगुणा द्वार । हेमोतम सर्व घोडा सिद्धे भने लघ्वोत्कृष्ट युक्तानत परमाणहे चरमभव्य अनतगुणा लघ्वोत्कृष्ट युक्तानत प्रमाणवती इति चरम तीसरे पदे २२ मो द्वार परी हुवो । इति जीवद्वार कहैछे-एवमिति भते जीवाण पुगलाण । हे भगवन् एह जीवारा पुद्गलाने । अद्भासमयाणं सव्यदव्याण सव्यत्थपएसण । अद्भासमयके संवंपर्याय ने संवद्रव्यने सर्वंप्रदेशानि । सव्यपस्त्रयाणय कयरे २ हितो यणावा ४ । कंठा २ यो अल्प घणा इत्यादि । गोयमा सवत्यावा जीवा पुगला अणतगुणा ।

स्वेतागुणस्य सद्यो जीवा उच्छ्रित्यतिरिक्तोऽपि ॥ द्वेयस्यानपत्तौ नुसारदेवानुपात स्तेन विचिंत्यमाना जीवा सर्वस्तीका उद्धूलोक्ति
यिग्लोको इह उद्धूलोक्तस्य पदवस्तन माकाशप्रदेशप्रतर यच्च सर्वतियग्लोक्तस्य सर्वोपरितनमाकाशप्रदेशप्रतर संपद्वूलोक्तप्रतर स्तथा प्रवचने
प्रसिद्धे तने य मय भावना इहसामस्त्येन धतुर्दशरज्ज्वात्मकोलोक सच त्रिधा त्रिद्यते तद्यथा-उद्धूलोक्त तियग्लोकोऽधोलोकश्च सचका धृतेयां
विज्ञान स्तथा हि सचक्रस्या धस्ता नवयोजनज्ञातानि सचक्रस्योपरिष्ठा नवयोजनज्ञातानि तियग्लोक्तिस्तियग्लोक्तस्याधस्तादधोलोक उपरिष्ठा दृष्ट
लोको देशीनसमरज्जुप्रमाण ऊद्धूलोक समधिकसमरज्जुप्रमाणोऽधोलोको मध्यष्टादशयोजनशतोच्छ्रय म्तिरियग्लोक्त स्तत्र सचक्रसमा द्रुतलजागा
नवयोजनज्ञातानि गत्वा य उज्योतिध्रुक्तस्योपरितन तियग्लोक्तस्यचि मकप्रदेशीक माकाशप्रतर त तियग्लोक्तप्रतर तस्य चो परियदेकप्रदेशीकमा

अशासमए दृष्टपदेसथ्याए अणंतगुणे अगासथिकाए पदेसथ्याए अणंतगुणा दारं २१ । एएसिणं जते !
जीवाण चरिमाण अचरिमाणय कयरे कयरेहिंते अण्माया १ ? गायमा ! सद्यो जीवा अचरिमा च
रिमा अणतगुणा दारं २२ । एएसिणं जते ! जीवाण धोगलाण अशासमयाणं सद्यद्वानाण सद्यपरसाण

हेगोतम सर्व धोडा जीवहे तेद्वयो पद्मन अनतगुणा दहा भावना पाछली परे तेद्वयो अशासमय अनतगुणा सर्व पद्मनद्रव्य धर्माभिकागटिक वाले ते
द्वयको सर्व द्रव्य विगेषाधिक कहौ । अशासमया अणतगुणा सद्यद्व्या विसेसाहिया सद्यपसा अनतगुणा सद्यपसा अणतगुणा दार । तेद्वयको-सर्व
द्रव्यविगेषगुणा आकाश अनोकाटि अनतवती तेद्वयो सर्वपर्याय अनतगुणा एकैकभाकायप्रदेय अनतगुण लघपर्यायगणा विगेषके एतल जीवधार कळो
धति २३ मो दार तौले पदे समाप्त हुन । दिवे चंदवार कहै—खिस्ताणवाएण सद्यो जीवा उच्छ्रित्यतिरिक्तोऽपि अशासमया विमोदियावा तिरि
यनोए अपतिलोए अमखिज्जगणा उच्छ्रितोए असं अहोलीए विसेसाहियावालिस्ताणवाएण । आयौ नोता जे जीव मरण चैन ममदघातकतला ते
प्रतरनव मध्य रक्षाकेयनी कवायो नोवाउपजने दहा ननेया सर्वधोडाजीव जणोकि तियकलो जे आटारिसेयोजन तियकलो जे तेद्वयो जेतलोप्रदेगोन

इद्वयप्रतिपत्तिमय मूढलोकैः अधोलोके च सूक्ष्मनिगोदा उद्भूतं, येन तिर्यग्लोकावर्तिनः सूक्ष्मनिगोदा उद्भूतं तेऽर्थादधोलोके ऊर्ध्वलोके वा केषितस्मिन्नय वा तिर्यग्लोकसमुत्पद्यते, ततो नतोलोकावस्यस्यति इति, नाऽधिकृतसूत्रविषया तत्रोद्धृताकाधोलोकगताना सूक्ष्मनिगोदानामुद्भूतानाना मध्य कोचिरस्यस्थान मधऊर्ध्वलोके अधोलोके वा समुत्पद्यते, केचि तिर्यग्लोके तज्योऽसस्येयगुणा अधोलोकगता ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकागता अधोलोके समुत्पद्यते, ते च तथोत्पद्यमाना खोनऽपिलोकान् स्पृशतीत्यसस्येयगुणा, कथ पुन रेतदवसीयते य द्रुत स्यप्रमाणा यद्बोधीवा सदाविग्रहगत्यापन्ना लभ्यत इति च्छत्येयगुणा, तथाहि प्रागुक्तमिदमऽत्रैवसूत्रपर्याप्तद्वारे । सद्योवाजीवानोपज्जन्ता नोनपज्जन्ता अपज्जन्ता अनतगुणा पज्जन्ता सस्येयगुणा इति, ॥ ततएवनामाऽपर्याप्ता यद्वा यं नैतेत्य पर्याप्ता सस्येयगुणा एव नाऽसस्येयगुणा नाऽप्यऽनतगुणा तथाऽपर्याप्ता यद्वाऽतरगतीवर्तमानालभ्यते इति ४ । तस्य ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकावास्थिता असस्येयगुणा उपपातते तस्यातिबहुत्वात्, असस्येयाना च नागानामुद्भूतमायाय सन्नधात्, तेज्योऽधोलोके अधोलोकप्रतिनो विज्ञेयविज्ञा ऊर्ध्वलोकेऽत्रा दधोलोकेऽत्रस्य विज्ञेयविज्ञेयत्वात्, तद्वै सामान्य

नेरडया तेलुक्के अहोलोगतिरियलोगे असखेज्जा ० अहोलो ए असखेज्जागुणा । खेज्जागुणा एण सव्वस्योवा
तिरिरुज्जोणिया उहुलोयतिरियलो ए अहोलोगतिरियलो ए विसेसाहिया तिरियलो ए असखेज्जागुणा, ते

माहिजपणेनाहै प्रतरनेसगे असख्यातगुणामाटे अधोलोके असख्यातगुणा । विज्जाणवाएण सव्वस्योवा तिरिस्खज्जोणिया । चेच्च आत्थीतिद्वयोनिवा मय्योहाऊर्ध्वलोके तिर्यकनो किंसाभान्यजोवमने अस्मावेकंछाहै तिमज्जाणिवा । उहुलोय तिरियलो ए अहोलो ए । तिर्यकनोके विज्ञेयविज्ञेययोनि ए विज्ञेय तिरियलो ए अस तिलक्के अस ० । तेहयोतिर्यकनोके असख्यातगुणा तेहयोविज्ञोके असख्यातगुणा । उहुलो ए असखिज्जागुणा । ऊर्ध्वो ने असख्यातगुणाद्वै । अहोलो ए विसेसाहिया किंसाणवाएण सव्वस्योवोथो तिरिस्खज्जोणियो । अधोलोके विज्ञेयविज्ञेय सामान्यमय्योजाणिवा तिर्यचना मय्यद्वैत्वकइहै चेच्च आत्थीसंय्योहोतिर्यचयोनिनीस्तो । उहुलो ए तिरियलो ए असखिज्जागुणा । ऊर्ध्वलोकेऽत्रादधोलोकेऽत्रादधोलोके

तो जीवाना क्षेत्रानुपातेना उल्लङ्घ्यदुल्लभमुक्त, भिदानो यतुगतिदृक्कर्मण तदतिचिन्तितु प्रथमतो नैरयिकाणा माह-खेत्ताणुवागण सवृत्योवा नेरइया तेलोके इति ॥ क्षेत्रानुपातेन क्षेत्रानुसारेण नैरयिका सवस्तोको खैलोके लोकत्रयसर्पज्ञान कथलोकत्रयसर्पज्ञानो नैरयिका कथवा तेष्वस्तोका इति चेत्, उच्यते-इह ये मेरुशिखरे यजनदधिमुखपवतशिखरादिषु वा घापीषु वतमानामरस्यादयोनारकेपुत्पित्सव डालिकागत्वा प्रदेशान् विचिपन्ति तेकिल शैलोक्यमपि स्पृशन्ति नारकव्यपदेशचलभते तत्कालमेव नरकेपुत्पन्नैरकारयुक्तप्रतिसवेदनात्, तच्चेत्यन्नताकतिपयेह तिसर्वस्तोका, अन्ये तु व्याचक्षते नारकाद्ययथोक्तवापीषु तिर्यक्पञ्चेद्रियतयो त्वद्यमाना समुद्रघातवशातो विक्षिप्तनिजात्मप्रदेशदक्षा परिगृह्यते तैरिज्जित तदा नारका एव निर्विवाहं तदायुक्तप्रतिसवेदनात्, त्रैलोक्यसर्पज्ञानं यथोक्तवापी योवदात्मप्रदेशदंष्टस्य विक्षिप्तत्वादिति । तैस्यो उच्यते कति यंगनोऽसुखा प्रागुक्तप्रतरद्वयस्य सर्पज्ञानोऽसख्येयगुणा यतो बहवोऽसख्येयेषु द्वीपसमुद्रेषु पञ्चेद्रियतिर्यगेयोनिकानरकेषु त्वद्यमाना यथोक्तप्र

लुक्ते असखेजगुणा उहुलोए असखिज्ज० अहोलोए त्रिसंसाहिवा, खेत्ताणुवाएणं सवृत्योवा तिरिस्कजो णिणीउ उहुलोए उहुलोयतिरियलोए असखेज्ज०, तेलुक्ते असखेज्ज० अहोलोयतिरिलोए सखिज्जगुणानं अहोलोए सखेज्जगुणानं तिरियलोए सखिज्जगुणानं खेत्ताणुवाएणं सवृत्योवा मगुस्सा तेलुक्ते उहुलोयतिरिय

वधातीतिर्यवयानियानोस्सोदुवं खेत्ताणोसर्वधाकादियै तेदुधो ऊर्ध्वलोकतिर्यक्लोककथंमान असख्यातगुणा किमसहस्रारदेशलोकानादिकथो तिर्यवनो स्सोमाहिउपज्जेतेदुधोपिनाके यमसगतगुणो । तिल्लके असखिज्जगुणाया भवनपतिव्यतरथको ऊर्ध्वलोकतिर्यक्उपज्जे । अहोलोय तिरियलोए असखिज्जगुणाया अहोनाएसखिज्जगुणाया । तेदुधो अधालोकातिर्यक्लोक ससगतगुणा घणानारकोमरणसमुद्घात तिर्यवनोस्सोपगच्छे । तिरियलोए सखिज्जगुणायासखिज्जगुणाया तेमाटेतेदुधो अधालोकाससगतगुणोत्तेमाटे अधोगामशकोदुवं समुद्रमा नवसेवोजनमच्छोमा उपज्जे । सवृत्योवा मगुस्सा तिल्लके उहुलोयतिरियलोए सखिज्जगुणा । खेत्ताणोसर्वधाका मनुष्यावलोकपुरसे वेकिवसमुद्घातना कारणद्वारपुरसे तेदुधो ऊर्ध्वलोकतिर्यक्लोकानाके भव

ज्ञानपातेन तिर्यग्योनिकस्त्रियद्युत्पमाना सर्वस्वोक्ता ऊर्ध्वलोके इष्टमंदरादिवायीप्रच्युतिषुपिहि पंचेन्द्रियतिर्यग्योनिका स्त्रियो नवंति ताद्य क्षेत्रे
त्रस्याऽऽत्यत्वात् सर्वस्वोक्ता स्ताम्य ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोक ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोकसङ्गे प्रतरद्वये यत्तमाना असंख्येयगुणा फण मितिचेत् उच्यते-याव
त्यहस्त्रारदेयलोक स्तावदेवा अपि गन्धर्व्युक्तातिकतिर्यग्लोकपंचेन्द्रिययोनिषु त्यद्यते किपुन ओपकाया स्तोए यथासन्नमपुपरियसंतोऽपि तत्रो त्यद्यते,
ततो ये सहस्त्रारातादेवा अन्येऽपिच ओपकाया ऊर्ध्वलोका तिर्यग्लोकपंचेन्द्रियस्त्रीत्वेन तदायु प्रतिसंबेदसमाना उत्पद्यते, या स्त्रियंग्लोकवर्तिन्य स्ति
र्यग्लोकपंचेन्द्रियस्त्रिय ऊर्ध्वलोके देवत्वेन ओपकायत्वेनचो त्यद्यमाना मारणातिकसमुद्घातेनोत्पत्तिदेशे निजनिजात्मकप्रदेशद्वान् विचिपति ता य
योक्तप्रतरद्वय स्पृशति तिर्यग्योनिकस्त्रियद्य ता स्ततो ऽसंख्येयगुणा क्षेत्रस्या ऽसंख्येयगुणत्वात्, ताम्य स्त्रीलोकं संख्येयगुणा यस्माद् ऽधो

देवा उहलोए उहलोयतिरियलोए असखेज्जगुणा तेलुक्को असखेज्जगुणा अहोलीए तिरियलोए असखेज्जगुणा
अहोलीए सखिज्जगुणानु तिरियलोए सखिज्जगुणानु खेत्ताणवाएण सख्योवानु देवीनु उहलोय उहलोए
तिरियलोए असखेज्जगुणानु तेलुक्को सखेज्जगुणानु अहोलीयतिरियलोए असखेज्जगुणानु अहोलीए संखे

प्रदेशस्यै जहं स्त्रीकसुधानगणो कौडार्थैचेत्यवदनायै विद्याधरोजातिथकै प्रदेशस्यै अधोलोके सख्यातगुणा अधोग्राममपजती । तिरियलोएसखिज्जगुणा
ओ । तिर्यक्कुलोकसख्यातगुणो क्षेत्रप्रसद्यातगुणामाटे । विभाणुवाएण सख्योवादेवाहउहलोए । द्विवेदेवतानो अस्यवद्वलकइक्के क्षेत्रेधोसंपयोडादेवतो
जहं लोकं जे भवनपतिजिनेद्वते महोत्तरवर्मेरुपर्वतेजायतेमाटे । उहलनोवातिरिनोए असखिज्जगुणा । तेह्यो ऊर्ध्वोक्ततिर्यग्लोके असख्यातगुणा भवन
पतिव्यतरज्योतिषो सोधस्योर्दगतवैप्रतरस्यै । तिल्लोकेसखिज्जगुणा अहोलीयतिरियसखिज्जगुणा । तेह्योत्रैलोक्ये असख्यातगुणा भवनपतिव्यतरवैक्ति
समुद्घातत्रिलोकनैस्यै तेह्यो अधोलोकतिर्यक्कुलोक असख्यातगुणा भवनपतिव्यतरतिर्यक्कुलोक भावते तिर्यवयोनिसाहि, उपजेतेसख्यातगुणा । अहो
लोएसखिज्जगुणा तिरियलोएसखिज्जगुणा । अधोलोकेसख्यातगुणा भवनपतिनैपोतानाठामतेह्यो त्रिक्केलोकसख्यातगुणा व्यतरज्योतिषो सख्यातमाटे

लोला द्रव्यनपतिव्यतरनारका शेषकाया अपि चोदलोकेऽपि तिर्यक्पक्षेद्विपक्षीत्वेनो स्पद्यते ऊर्ध्वलोकाद्वाद्यो प्यऽधोलोकेच ते समवहता निज निजात्मप्रदेशद्वे स्त्रीनऽपि लोकान् स्पृशति प्रभूताद्यते तथा तिर्यग्योनिकल्प्यायु प्रतिसवेदनात्, तिर्यग्योनिकस्त्रियश्च तत सख्येयगुणा ३ । ताभ्यो ऽधोलोकतियग्लोके अधोलोकतियग्लोकसङ्घे प्रतरद्वये वत्तमाना सरययगुणा बहवोहि नारकादय समुद्र्यातमतरंणाऽपि तियग्लोके तिर्यक्पक्षेद्विपक्षीत्वेनो स्पद्यते, तियग्लोकवत्तिनश्च जीवा स्तिर्यग्योनिकस्त्रीत्वेना ऽधोलोकिकग्रामेभ्य ऽपि च तत्र तथो स्पद्यमाना यथोक्तप्रत रद्वय स्पृशति' तिर्यग्योनिकल्प्यायु प्रतिसवदना च तिर्यग्योनिकस्त्रियोऽपि तथा ऽधोलोकिकग्रामायोजनसहस्रावगाहापर्यन्ते ऽर्वाक् कश्चित्प्रदेश नवयोजनशतावगाहाअपि तत्र काश्चित्तिर्यग्योनिकस्त्रियो ऽवस्थानेनाऽपि यथोक्तप्रतरद्वयाऽध्यासिन्वो वसन्ते, ततो प्रवर्ति पूर्वोक्ताभ्य सरयेयगु णा ४ । ताभ्यो ऽधोलोक सरययगुणा यतोऽधोलोकिकग्रामा सर्वेऽपिच समुद्रा योजनसहस्रावगाहा स्ततो नवयोजनशतानामऽधस्तात् या वसन्ते मरस्त्रीप्रचृतिका तिर्यक्प्योनिकस्त्रिय स्ता स्वस्थानत्वात् प्रभूता इति सख्येयगुणा क्षेत्रस्य सख्येयगुणात्, ताभ्य स्तियग्लोक सख्येय गुणा, उक्त तिर्यग्योगतिमप्यधिकृत्या स्पद्यदुत्त्व मिदानी मनुष्यगतिविषयमाह-खेत्ताशुवासणमिदित्यादि ॥ क्षेत्रानुपातन मनुष्या दित्यमाना स्त्रीलोक्ये त्रिलोक्यस्पर्शिन सबस्तोका यतो य ऊर्ध्वलोकाद ऽधोलोकिकग्रामेभ्य समुत्पित्सवो मारणातिकसमुद्र्यातेन समवहता प्रवर्ति ते कश्चित्समुद्र्यात वशा द्विनिगते स्वात्मप्रदेशी स्त्रीनऽपिलोकान् स्पृशति येष्वेव क्रियसमुद्र्यात माहारकसमुद्र्यात वा गता तथाविधप्रयत्नविशेषा दृतर मूढाऽधोविशिस्तात्मप्रदेशा यत्र कवलसमुद्र्यातगता स्तेपि त्रीनपिलोकान् स्पृशति स्तोकाद्यति संवस्तोका स्तेभ्य ऊर्ध्वलोक्यतिर्यग्लोक ऊर्ध्वलोक तियग्लोभसञ्ज्ञेप्रतरद्वयस्पर्शिनो ऽसरययगुणा यत इहैवमानिकदेवा शेषकायाश्च यथासन्नधमूढलोका तियग्लोक मनुष्यत्वन समुत्पद्यमाना

जगुणान् तिरियलोए सखिजगुणान् खेत्ताणुवाएण सख्योवा नवणवासीदिवा उडुलोए उडुलोयतिरिउलोए

द्विवेदोकेहेके । छिताणुवाएण सख्योवात्रो दशोत्रो सडुत्ताए । चत्तपायोत्राता सर्वथाडादवागना ऊर्ध्वं कोनविपे एसर्वदवतानोपरेभावना । उडुत्ताण

यथोक्तप्रतरद्वयसंस्पर्शतो भवति विद्याधरागामऽपिच मन्त्रादिषु गमनं तेषां च श्रुतानि विद्याधरादिपुद्गले समूच्छिन्नमनुष्याणामुत्पाद इति । ते विद्या धरासु धिरादिपुद्गलसन्निधा अवगच्छति तथा समूच्छिन्नमनुष्या अपि यथोक्तप्रतरद्वयसंघात उपजायत नचा तिवन्व इत्यसंयं गणा, स्वस्थो ऽ धोलो भवति यं ग्लोके यथोलो कति यं ग्लोके सजे प्रतरद्वये सख्यं गणा यतो ऽ गोलो किक्रया मेपु स्वभावत गव वन्वो मनुष्या स्ततो ये तियं ग्लोका म् नुष्येन्ये शपकायेभ्योवा ऽ धोलो किक्रया मेपु गत्रव्युक्ता तिमनुष्यत्वेन समूच्छिन्नमनुष्यत्वेनवा समुत्पिस्वो यता ऽ धोलाकाद ऽ धोलो किक्रया म्पु मात् जपाहा मनुष्यस्य शपकायेभ्योवा तियं ग्लोके गत्रव्युक्ता तिमनुष्यत्वेनवा समूच्छिन्नमनुष्यत्वेनवा समुत्पत्तु कामा स्त यथोक्त किल प्रतरद्वय स्पदोनि बहुतराद्य ते, तथा स्वस्थानतोपि क्षपिदपोलो किक्रया मेपु यथोक्तप्रतरद्वयमपि जिन इति प्रागुक्तं भ्यो सख्यं गणा स्तेभ्य ऊर्ध्वतो केसरये यं गणा सोमनसादिषु क्रोडाद्यै वैत्यवदननिमित्तवा प्रजततराणा विद्याधराधराशुनीना जवात्, तथाच यथायोग सधिरादिपुद्गलायोगत समूच्छिन्नमनुष्यसंघात्, तस्यो ऽ गोलोके सख्यं गणा स्वस्थानत्वेन बहुत्वज्ञावा तंभ्य स्तियं ग्लोके सरयेयं गणा केत्रस्वसंयं गणा स्वस्थानत्वा च, सप्रति केत्रानुपातेन मानुषी विषय मल्यवदुत्व मार-संज्ञाशुवाकण मित्यादि ॥ संज्ञानुपातेन मानुष्यधित्यमाना सखस्तोका स्तोलो क्यस्यपि जिन्यं जं हुंलोका ऽ ऽ धोलोका समुत्पिस्वमूना मारणातिकसमुद्घातवगविनिगतदूरतरात्मप्रदेशाना मऽथवा वैक्रियसमुद्घातगताना केवतिसमुद्घातगताना वा वैरोक्त्वसंस्पर्शान् तासां वा तिलो कत्वमिति । सखस्तोका स्ताभ्य ऊर्ध्वतो कति यं ग्लोका ऊर्ध्वलो भवति यं ग्लोके मज्जं प्रतरद्वये सख्यं गणा वैमनि क्षदवाना शपकायाणा धो ऊर्ध्वलोका तियं ग्लोका मनुष्यत्वेनो त्वयमानाना तथा तियं ग्लोके गतमनुष्यत्वीणाम् ऊर्ध्वतो केसुत्पिस्वमूना मारणात

असखेजागुगान तेहुक्कं सखेजागुगां अहोलीयतिरियलोए असखेजागुगा, तिरियलोए असखेजागुगा

तिरिचलोण असंखिज्जगामो तिल्लोकंसंखिज्जगामो । ऊहल्लोकितियं कल्लोके अससगतगणो देवतानोपरितुल्लो जे नोकीमसगतगणो । अहोलोणतिरि
वज्जण संपिज्जगामो । अहोलोकेतियं कल्लोकेससगतगणो । अहोसोसखिज्जगामोसोसखिज्जगामोससगतगणोदेवतानोससगतगणोअनानो

कसमुद्धानवशाद्दूरतरमूढविशिष्टात्मप्रदेशानाम् उद्यादपि कालमकुर्वतीना यथोक्तप्रतरद्वयसम्पन्नजावान्, सामासो जयापामऽपि वधुतरत्वात्, तान्मा उधालोक्तियग्लोक्तं प्रागुक्तस्वरूपप्रतरद्वयरूप सत्ययुगा स्तियग्लोकात्मन्यस्तीत्य शेषेभ्यो वा उद्येतोक्तग्रामेषु यदिवा उद्योनोका दधोनोक्तग्रामरूपातज्ञायाद्व्यातियग्लोक्तमनुष्यस्त्रीत्वनो त्विष्टमना कासाचिद उद्येतोक्तग्रामेष्वउत्थानतोऽपि यथोक्तप्रतरद्वयसम्पन्नममायात्, तासाञ्च प्रागुक्तान्यो उतियदुत्थात्, तान्योऽप्युद्धलोकसरययगुणा क्रोडापं धैत्यवदनानिमित्तं वा सीमासद्विषु प्रजूनतराणां यिद्यावरीणां सन्न वत्, तान्योऽपि अथोलोक्तस्येयगुणा स्वस्थानत्वेन तत्रापि वधुतराणां प्राधात्, तान्य स्तिर्यगतोक्तं सम्ययगुणा वृत्रस्या सत्यंयगुणत्वात् स्वस्थानत्वात्, तत मनुष्यगतिमधिरुत्या ल्ययुत्त्व मिदानी देवगतिमधिरुत्या-खेत्ताणुवायण सध्वत्वावा सल्लास इत्यादि ॥ क्षेत्रानुपातंन चित्यमाना देवा सध्वत्वाका ऊद्धलोकं, ऊद्धलोकं धेमानिकानामेव तत्रनाधात्, संधावा उत्पत्त्यात् येपि जयतरपतिप्रजृप्तयो जिनेन्द्रात्ममहादौ मन्दरादिषु गच्छति तेऽपि स्वात्पा एवं ति सध्वत्वाका सत्य ऊद्धलोकतियग्लोक्तं सत्तरद्वये असत्ययगुणा स्त्राद्विज्योक्तिकाणा प्रत्यासन्न मि इति स्वस्थान तथा सजनपतिव्यतरज्योक्तिका मदरादौ यौचमादिकल्पगता स्वस्थानगमागमन तथा यसीधमादिषु देवत्वेनोत्तरसर्वो देवाषु प्र तिसवदयमाना स्वोत्पत्तिदशमनिगच्छति यथोक्त प्रतरद्वय स्पृष्टाति सत मन्त्येन यथोक्तप्रतरद्वयसंस्पर्शिन परिप्राग्यमाना अतिथय इतिपूर्वोक्तस्योऽसत्येयगुणा, सत्य यौलोक्यसम्पन्नान सम्येयगुणा ३ । सतो जवनपतियतरज्योक्तियेमानिका देवा स्तयाधियप्रयत्नविज्ञोपवज्ञतो वैक्रियसमुद्पातन समवदता सत स्त्रीनिपिलोक्ता स्पृष्टाति तेवै त्यसमवृत्ता प्रागुक्तप्रतरद्वयसंपन्नस्य सम्येयगुणा कंवलवेदसोपलभ्यन्त इति

अहोलोए असखेज्ज०, खेत्ताणुवाएणं सध्वत्थीवा मयणवांसिणीञ्च देवीञ्च उद्धलोए तिरिपलोए अन्नग्नि०,

नीपरिजिह्वो । ऋग्वैनिगवभवनपतिनो अयवद्वलकपेक्षे । तिरिपलागमविज्यगणात्रा तिर्यकनाकट्टेरागना अरुणउत्तम । त्रिभाणुवाएण मन्त्रावा भवणवासोदेवा सयथोजोता सर्वेशाकाडादेवभवनवासो ऊर्ध्वलोकं क्रोःपूरसर्गात् साधमदेवल खे तथा तीर्थकरने जकौमकपरितज्ञावे तेमटे धाउ तद्वधौ

सख्येयगुणा' स्तेभ्यो ऽधोलोकतियंग्लोके ऽधोलोकतियंग्लोकेसञ्जे प्रतरद्वये वर्तमाना सख्येयगुणा साट्टि प्रतरद्विक जवनपतिव्यंतरदेवाना प्रत्या सज्जतया स्वस्थान तथा बह्वोजवनपतय स्वजावस्था स्तियंग्लोकगमगमेन तयो द्वर्तमाना स्तयावैक्रियसमुद्रपातेनसमवहता स्तया तियंग्लोक वतिन स्तियंग्लोपचेद्रियमनुया वा जवनपतिव्वेनो त्वद्यमाना जवनपत्याऽऽयुरऽनुजवतो यथोक्तप्रतरद्वयसस्पतिनो ऽतिवहव इति सख्येयगुणा ' तेभ्यो ऽधोलोके सख्येयगुणा जवनपतीना स्वस्थानमिति कृत्वा तेभ्य स्तियंग्लोके सख्येयगुणा ज्योतिफयतराणा स्वस्थानत्वात्, अथुना देवो रचिकृत्याल्पबहुत्व माह-खेसाणुवाएण सव्वत्थोवादेवीनुं उज्जलोए इत्यादि ॥ सर्वदेवसूत्रमिवाऽविजोपेण भावनीय, तदेवमुक्त देवविषयमीचिक मत्पबहुत्व मिदानी भवनपत्यादिविशेषविषय प्रतिपिपादयिषु 'प्रथमतो जवनपतिविषयमाह-संसाणुवाएण सव्वत्थोवा देवा प्रवक्कासीनुंउज्जलो ए इत्यादि ॥ संत्रानुपातेन जवनयासिनो देवा धित्यमाना सर्वस्तोका ऊर्द्धलोके तथाहि-केपाचि रसीचर्मादिघपि कल्पेषु पूवसगतिकनिश्रया ग मन जवति केपाचि त्मन्दरे तीचंकरजन्ममाहमानिमित्त मजनदधिमुखेष्टाहिकानिमित्त मपरेया मन्दिरादिषु क्रीडांनिमित्तं गमन मतेषु सर्वेपि स्वत्पया इति, सर्वस्तोका ऊर्द्धलोके तेभ्य ऊर्द्धलोकतियंग्लोके रुज्जेप्रतरद्वये ऽसख्येयगुणा, कथमितिचेत् उच्यते-इहहि तियंग्लोकस्याधीक्रियसमु द्रपातेन समवहता ऊर्द्धलोकतियंग्लोक च स्पृशति यथा ते तियंग्लोकस्याय मारणान्तिकसमुद्रपातेन समवहता ऊर्द्धलोके सीचर्मादिषु देवलो कषु वादरपर्याप्तपृथिवीकायिकतया वादरपर्याप्तप्रत्येकवनस्पतिकायिकतया च ज्ञानेषु मणिविधानादिषु स्थानेषुत्य

तेलुक्के सखेज्जगुणानुं उहोलीएतिरियलीए अ्सखेज्ज०, तिरियलीए अ्सखिज्ज० अ्होलीए अ्सखिज्ज०

उहट्टनोएतिरियनाए अ्सखिज्जगणा ऊर्द्धलोकाविक्केनोक्क असखातगुणा मरणसमुद्रपात ऊर्द्धलोकेवाटर पृथ्याटिकपणे उपजता विलोककम्मं वैलोक्क प्रसङ्गातगुणा वैक्रियसमुद्रपातेकराने । तिलोकेसाखज्जगणा अ्होलीवतिरिनोए अ्सखिज्जगुणा । तेदथो अंजानाकचिक्केलोक असखातगणाप्रतरने सग्गे तियेक्कलाकगमनागमनभाव । तिरियनोए अ्सखिज्जगुणा अ्होलीए अ्सखिज्जगुणा । तेदथो चिक्केनोक्क असखातगुणा समोसरणकीटोथ समाग

सुकामा अथाऽपि स्वप्नावायु प्रतिवेदयमाना न पारत्राविक पृथ्वीकायिकाद्यायु हिविधानि मारणान्तिकमुत्पाते समवहता केचित्पारत्रा-
विकमायु प्रतिसवेदयते केचिन्नेति, तथा धोक्त प्रज्ञासी-कीदृशे ज्ञते मारणतिकमुत्पाद्येण समोदये सम्मोदयिता जेजविण् मदरस्म पवयस्स
पुरतिमण यायरपुढाविकाइताग उववज्जित्तम सेण ज्ञते किं तस्य गए उववज्जोला उयाहु पाठिनियतेत्ता उववज्जइ गो० अत्येगइय तत्यगय येउ
उववज्जइ, अत्येगइय तउ पाठिनियतिता दोषपि मारणान्तिकमुत्पाद्येण समोदयति सम्मोदयिता तउ पच्छा उववज्जइति, स्वप्नवायु प्रतिसवेद-
नाद्य ते जवनवासिन एव लभ्यते ते इत्यज्ज्ञता उत्पत्तिदेशे विच्छिन्नात्मप्रदेशदशका स्तथा ऊहलीकगमनागमनत स्तरप्रतरद्वयप्रत्यासक्तजीवास्थानद्य
योक्त प्रतरद्वय स्पशति, तत प्रागुक्तेभ्यो ऽसखेयगुणा स्तेभ्य स्त्रीलोकं त्रैलोक्यसपञ्चिन सखेयगुणा यतो ये ऊहलीके तियंगुपञ्चेन्द्रिया न
वनपतित्वेनोत्पन्नाना येच स्वस्थाने वैक्रियसमुत्पातेन मारणान्तिकप्रथमसमुत्पातेन वा तथाविधतीश्रमयविक्षेपेण समवहता स्ते त्रैलोक्यसपर-
ञ्चिन इति सखेयगुणा, परस्थानसमवहतेभ्य स्वस्थानसमवहताना सह्यगुणत्वात्, तेभ्यो ऽधोलोकातिग्लोकं अधोलोकातिग्लोकसहे प्रतरद्व-
ये ऽसहेयगुणा स्वस्थानप्रत्यासक्ततया तियल्लोके गमनागमनप्रावत स्वस्थानस्थितजीवादिमुत्पातगमनतश्च बहूना यथोक्तप्रतरद्वयसपरञ्चना

खेत्ताणवाएण सवत्थोवा वाणमतरादेवा उहलीए उहलीयतिरियलीए अ्सखिज्जागणा, तेलुक्की अ्सखिज्जा०
अहलीए तिरियलीए अ्सखेज्जागणा अहलीए सखेज्जागणा तिरियलीए सखिज्जा०, खेत्ताणवाएण सवत्थो

मचिरकावसायोमाटे चणा तंइशौ अधानांक असख्यातगुणा भवनपतिनोदेवीनां । खित्ताणवाएण सवत्थोवाओ भवनवासणोओ देवीओ उहट्ठोओ ।
चेवयाओ अस्सवइत्तकइक्के सर्वथाओदेवागना ऊहलीके भवनपतिदेवतानोपरसर्वकहिवा । उहट्ठसायतिरियनोण असखिज्जागणाओ ऊहलीकातिग्लोके
असख्यातगुणोइवे । तिल्लोके सखिज्जागणाओ अहलीयतिरिवलोए अस० अहलीए अस० तिरियलाए अस० । त्रिनाकसख्यातगणाइवे वैक्रियसमुत्पात
वेला अधालोविशालीक असख्यातगुणो त्रिक्केनाके असख्यातगुणो समोसरणे अधोलोके असख्यातगुणा स्वस्थान माटे त्रिक्केनाके अस० । खित्ताणवाएण

वात् तेभ्य तिर्यलोके ऽसृङ्गेयगुणां समवसरणादी वन्दननिमित्तं द्वीपेषु च रयशेषेषु क्रीडा निमित्तमागमसम्पन्ना दागताभाव विरकालमऽप्यऽ
वस्थानात्, तेभ्यो ऽधोलोके ऽसरयंगुणानुवनवाचिनामधोलोकस्य स्थानत्वात्, गव प्रवनवाचिदेवीगतस्तत्पचपुत्र्य भावनीय, साम्प्रतिव्यन्तर
गतमल्पबहुत्वमाह-स्वेतागुवायकमित्यादि ॥ द्वेवानुपातन चिन्त्यमाना व्यतरा सधेस्तोका ऊरुलोकं कतिपयानामेव पयःकृद्वनादी तेषां ज्ञावात्,

वानु वागमतरीनु देवीनु उहूलोए उहूलोयतिरियलोए असृखिज्जगुणानु तेलुक्को सखिज्जगुणानु अहोलोए
तिरियलोए असृखिज्ज० अहोलोए सखिज्ज० तिरियलोए सखिज्जगुणानु खेत्ताणुवाएण सवृत्थोवा जोड
सिया देवा उहूलोए उहूलोयतिरियलोए असृखिज्ज० तेलुक्को सखिज्जगुणा अहोलोए तिरियलोए असृखिज्ज
गुणा अहोलोए सखिज्जगुणा निरियलोए असृखिज्जगुणा खेत्ताणुवाएण सवृत्थोवा जोडसिगीनु देवीनु
उहूलोए उहूलोयतिरियलोए असृखिज्जगुणानु तेलुक्को सखिज्जगुणानु अहोलोयतिरियलोए सखिज्ज०, अहो

मकत्थाया वागमतरादेवा उहूलोए । द्विवेद्यतरनाकहेके सर्वधाद्याव्यतर ऊर्ध्वलोखने विषेसोधर्मे पूर्वसगतिने मिनवाभेतोर्थकरजग्मे । उहूलोएय
तिरियलोए अस० तिर्याके सखिज्जगुणा । तेहथो ऊर्ध्वलोखविच्छेदोक्त अस० मरणसमदुदात तथा वादरमा पृथोसाउपलै ते समरगाता धेनाको सख्यात
गुणा वेक्तिप्रमदुदाते । अधोलोयतिरियलोए अस० । अधोलोकातिरिक्तलोके ये प्रतरथेयमममगमनकरने । अहोलोए असृखिज्जगुणा तिरियलोए अस०
विज्ञाणनाएण । तेहथो अधोलोके असृखिज्जगुणा सख्यातमाटे तिरिक्केलोके अस० मत्तासरणादिके । द्विवेद्यतरौकनाकहेके खेचचाची । सवृत्थोवाचोवाण
मनरोमा देवीचा उहूलोए । सर्वथाहीनाणय्यतरौ ऊर्ध्वलोके पूर्वमाति अथ तार्थकरजग्मे । उहूलोयतिरियलोए अस० तिल्लोक सखिज्जगुणाभी । तेह
थो ऊर्ध्वलोकातिरिक्तलोका असृखिज्जगुणा धेनाको असृखिज्जगुणा वेक्तिप्रमदुदातकरता । अधोलोयतिरिक्तलोके असृखिज्जगुणाभी । अधोलोके निरिक्केलो
के प्रसृत्यातगुणौ गमनागमनवती । अहोलोए अस० तेहथो अधोलोके असृखिज्जगुणा । तिरिक्केलोके अस०

तेन्य ऊहूलोके तिर्यङ्गलोके प्रतरद्वयरूपे असुरयेयगुणा केषांचिस्वस्थानातर्वात्तिया अपरेया स्वस्याप्रत्यानन्वतया उन्नेया यद्गुणा मदरादिपु
गमनागमनज्ञाघतो यथाक्तप्रतरद्वयसस्पयात् तथा समुदायेन चित्तमानानामतिद्युत्वज्ञावात्, तेन्य एङ्गोक्ते सरयेयगुणा यतोलीकत्रयवर्तिनापि
व्यक्तारा स्तयाविषयप्रविशोपपन्नतो वौक्कयसमुद्घातेन समवहता सत स्त्रीनपि लाफानामप्रदं रपृज्ञाति तत्र प्रागुक्तस्यो तिवहव इति सत्येय
गुणा, स्तेन्यो धोलोकेतिर्यङ्गलोके प्रतरद्वयरूपे असुरयेयगुणा स्तद्धि बहूना व्यतराणा स्वस्थानाना तत क्तसस्पपज्ञानो यद्वय इत्यसुरयेयगुणा, अ
धोलोके सरयेयगुणा अधोलोकेकिकग्रामेपु तेषा स्वस्थानज्ञावा द्गुणा मधोलोके क्रीकाथगमनज्ञावात्, तेन्य स्तिर्यङ्गलोके असुरयेयगुणा स्तिर्यङ्गलो
कस्य तेषा स्वस्थानत्वात्, यव व्यतरदेवीविषयमप्यत्युत्व वक्तव्य साप्रति ज्योतिषविषय मरुवदुत्व माह-सप्तशतुगमण सप्तयोवा जोडसिया
इत्यादि ॥ सत्रानुपातेन ज्योतिषा धित्यमाना सवस्तोका ऊहूलोके केषांचिदेन मदरे तीर्यङ्गजन्ममष्टोत्सवनिमित्त मजनदधिमुख्य सुनिद्रकानि

मित्त मपरया केषांचि न्मदरादिपु क्रीकानिमित्त गमनसुनयात्, तन्य ऊहूलोकेतिर्यङ्गलोके प्रतरद्वयरूपे असुरयेयगुणा स्तद्धि प्रतरद्वय केचिदस्य
स्थाने स्थिता अपि स्पृज्ञाति प्रत्यासन्नत्वा दपर वैक्कियसमुद्घातसमवहता अस्म्य ऊहूलोके गमनागमनज्ञावत एततो अधिरुतप्रतरद्वयस्पज्ञेन पूर्वा
क्तन्यो असुरयेयगुणा, स्तन्य खोलोका त्रोलोक्सस्पज्ञेन सरयेयगुणा, यद्धि ज्योतिषा स्तयाविषयप्रविशोपपन्नतो वौक्कियसमुद्घातेन समवहता स्त्रीनऽपि
लोकान् स्यप्रदं स्पृज्ञाति ते स्वज्ञाघतो ऽप्य ऽतिवहव इति । पूर्वोक्तन्य सरयेयगुणा स्तेन्यो अधोलोकाप्रतरद्वये वर्तमाना असुरयेयगुणा, यतो
यद्गुवो ऽधोलोकेकिकग्रामेषु समवसरणादिनिमित्त अधोलोके क्रीकानिमित्त गमनागमनज्ञावतो यद्वयऽप्य अधोलोका ज्योतिषेषु समुत्पद्यमाना यद्वो
क्त प्रतरद्वय स्पृज्ञाति, ततो घटन्ते पूर्वोक्तन्यो असुरयेयगुणा, स्तन्य सरयेयगुणा अधोलोके यद्गुनामधोलोके क्रीकानिमित्त मधोलोकेकिकग्रामेषु स
मवसरणादिपु चिरकालमवस्थानात्, तेन्यो असुरयेयगुणा स्तिर्यङ्गलोके तिर्यङ्गोक्तस्य तेषा स्वस्थानत्वात्, एव त्यानिक्षदेवीमन्त्रमपि ज्ञावनीय ।

साप्रति वैमानिकदेवविषयमल्पदृष्ट्य माह-खेताणवाण सव्योवा वेमाणि या देवा उरुलोयतिरियलो इत्यादि ॥ देवानुपातेन क्षेत्रानुसारं चित्तमाना वैमानिकादेवा सर्वस्तीका ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतियग्लोकसङ्गे प्रतरद्वये यतोय अधोनाके तियग्लोके वा वर्त्तमाना जीवा वैमानिकेषु त्प द्यन्ते येच तियग्लोके वैमानिका गमनागमम कुर्वति, येच विवक्षितप्रतरद्वयाध्यासिन क्रोधास्थान सञ्चिता येच तियग्लोकेस्थिता यव वैक्रियसमु द्याप्तमारणान्तिकसमुद्रघातवा कुर्वाणा स्थाविधप्रयत्नविशेषा दृढं मात्प्रदेशट्ट निसृजति त त्रिविधित प्रतरद्वय स्पृजति, तेचा उपे इति । सर्वस्तीका स्तेन्य खोलोके सखेयगुणा, कथ मिति चे दुष्यते-इह ये उधोलोकिग्रामेषु समवसरणादिनिमित्त मऽधोलोकेवा क्रीडानिमित्तग ता सतो वैक्रियसमुद्रात मारणान्तिकसमुद्रातवा कुर्वाणा स्थाविधप्रयत्नविशेषात् दूरतर मुहूर्ध्विग्रामात्मप्रदेशदका यच वैमानिकजवा दीलिकाग त्या च्यवमाना अधोलोकिग्रामेषु समुत्पद्यते तैकिल त्रीनाप लोकान् स्पृजति, यतवद्य पूर्वोक्तंभ्य इति सखेयगुणा, स्तेन्येपि अधोलोकिर्तिर्य ग्लोके प्रतरद्वयसङ्गे सखेयगुणा, अधोलोकिग्रामेषु समवसरणादी गमनागमनप्रावतो विवक्षितप्रतरद्वयाध्यासिन समवसरणादीवा उरस्थानतो

लोए सखि० तिरियलोए सुसखे० खेताणवाएण सव्योवा वंमाणिया देवा २००० उहुलोयतिरियलोए
तेतुक्के सखेज्ज० अहोलोयतिरियलोय सखिज्ज० अहोलोए सखेज्जगुणा तिरियलाय सखेज्ज० उहुलोए

सखातगणो समोसरणक्रीडाये ज्योतिषो कहेहै क्षेत्राग्यो । मव्योवाजायसियादेवा उरुट्टोए । संधोवाहज्यातियो ऊर्ध्वलोके मरुनैवये जन्मोत्तवैरामति काजे । उरुट्टोयतिरिलोण सखिज्जगणा । तेहयो ऊर्ध्वलोकिर्तिर्यकुलोके वे प्रतरस्ये अम० वैक्रियसमुद्रवातवेना । तिलोके सखिज्जगुणा । वैलोको स ख्यातगुणा वैक्रियसमुद्रघातवेना । अधोलोयतिरियलोए सखिज्जगुणा । अधोलोके तिरुल्लोके असख्यातगणा गमनागमनभणोतिर्यचमा उपजता । अधोलोण सखिज्जगणा तिरियलोए सखिज्जगुणा । अधोलोके सख्यातगणा समोसरणादिक्रीडाये तियग्लोके सख्यातगुणा सख्यानवतो । खित्ताणवाएण सख्योवीमो जायसिषीमो देवीमो उरुट्टोए । सत्रायाज्योतिषोणी कहेहै संधोवाहज्यातियोणी ऊर्ध्वलोके ज्योतिषोनीपरेमाना । ऊरुट्टोयतिरिय

बहूना यथोक्तप्रतरद्वयसरपञ्चोन्नावात् । तेभ्यो धोलोके सख्येयगुणा ; अघोलौकिकगामेपु बहूना समग्रसखादाव ऽवस्थानान्नावात्, तेन्य स्त्रिये रलोके सख्येयगुणा बहुपुसमवसरणेपु बहुपुच क्रीडास्थानेपु बहूना मवस्थानान्नावात्, तेन्य ऊर्ध्वलोके ऽसरयेयगुणा ऊर्ध्वलोकस्य स्वस्थानत्वात्, त

असखिज्जगुणा ० खेत्ताणुवाएण सख्योवानु वेमाणिणीनु देवीनु उहलोयतिरियलोए तेलुक्की सखेज्जगुणानु अ
होलोयतिरियलोए सखिज्ज ० अहोलोयसखेज्ज ० तिरियलोए सखेज्ज ० उहलोए असखि ० खेत्ताणुवाएण
सख्योवा एगिदिवा जीवा उहलोए तिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए त्रिसंसाहिवा, तिरियलोए असं

ना ० असखिज्जगुणाओ । ऊर्ध्वलोके तिरियकुलोके सख्यातगुणा । तिल्ल के सखि ० विनोके सख्यातगुणा । अहोलोयतिरियनोए असं अघोलोक्तियंकुलोक्क
पसयथातगुणो । अहोलो ० सखि ० अघोलोके सख्यातगुणो । द्विवे वेमानिकना कइहे । पित्ताणुवाएण सख्यावा विमाणोयादेवा उहलोनोयतिरियलो
० । सर्वथाडोवेमानिकदेवता ऊर्ध्वलोक्तियंकुलोके किमतिरियकुलोके वसंतोव वेमानिकमा उपजे तथा वैक्षिय समुदात स्वप्रदेशेकरो वेप्रतरस्म्ये
तिनोके सखिज्जगुणा । तेलोव थोडाके तेलोकोसयातगणा समोसरणथे । अहोलोयतिरियनो ० सखिज्जगुणा । अघोलोके वेप्रतरस्म्ये समोम
रणथे । अहोलो ० तिरियलोए स ० । अघोलोके सख्यातगणा समोसरणथे तिरिखेनोके सख्यातगुणा रमवाभणो । उहलोनो ० असं खित्ताणुवाएण ।
ऊर्ध्वलोक्क असख्यातगुणा स्वस्थानमाटे द्विवे देवीनो कइहे । सख्यावोषो वेमाणोओ देवीओ उहलोनोयतिरियलोए तिल्लोके स ० । सर्वथाडोवेमानिक
नोटो ऊर्ध्वलोके तिरिखेनोके वैक्षियसमुदातकरता मनथाटिदेवीमा उपजे ते थोडोविनोकेने ख्येमखातगणो समोसरणथे । अहोलोयतिरियनो ०
सखि ० । अघोलोके सख्यातगुणो समोसरणभणो तिरिखेनोके सख्यातगुणा । अहोलो ० स ० तिरियनो ० स ० । अघोलोके समोसरणभणो तिरिखेनोके स
ख्यातरमवाभणो । उहलोनोए असखिज्जगुणाओ । ऊर्ध्वलोके असख्यातगणो स्वस्थानभणो । खित्ताणुवाएण सख्यावा एगेद्रिज्जोवा उहलोनो ० तिरिलो ० ।
एकेद्रियनो कइहे सर्वथाडा खेवाथी नांता एकेद्रियजीव ऊर्ध्वलोक्क तिरिखेनाक मरणातसमुदातकरता प्रतरवेस्म्ये तेलोवथाडा । अहोलोयतिरियनो ० ।

त्रय सदैवबहुतरनावात्, एव व्रमानिकर्तृवीविषयसूत्र मपि जायतीयं, साप्रत्ये केन्द्रियादिगत मल्यबहुत्व मार-खेत्तागुवाएण सवत्थोवा एनिदि
या इत्यादि ॥ जेन्नापुपातेनचित्तमाना एकेंद्रियाजोवा सर्वस्वोका ऊर्द्धलोकतियंस्वोके ऊर्द्धलोकतियंस्वोकेसन्ने प्रतरद्वये यतो ये तत्रस्याएव केचन
येचो ईलोका तियंस्वोके तियलोकाद्वा ऊर्द्धलोके समुत्पिस्सउ कतमारणातिकसमुद्वाता स्ते किल विवक्षित प्रतरद्वय स्पृशति स्पृशपाद्य ते इति
सर्वस्वोका, स्तेभ्यो ऽप्योस्वोके तियंस्वोके विजोपाधिका यतो ये अधोलोका तियंस्वोके तियंस्वोकाद्वा ऽर्धोलोके ईलिकागत्या समुत्पद्यमाना विव
क्षित प्रतरद्वय स्पृशति तत्रस्याद्य ऊर्द्धलोकाद्या धोलोकोविशोपाधिक स्ततो यद्यो धोतोका तियंस्वोके समुत्पद्यमाना यवाप्यते इति विशेषाचि
का, सन्न्य स्तियंस्वोके असरयेयगुणा वक्तप्रतरद्विकेचो तियंस्वोकोत्रस्याऽवस्येयगुणत्वात्, तेन्य स्तोलोके सस्येयगुणा वद्वोहि ऊर्द्धलोका द

खेजगुणा, तेलुक्के अस्स०, उहुलोए अस्सखेजगुणा, अहोलोए विसंसाहिया । खेत्तागुणाएण सवत्थोवा
एगिया जीवा अपज्जत्तगा, उहुलोयतिरियलोए अहोलोए तिरियलोए विसंसाहिया, तिरियलोए अस्स
खेजगुणा, तेलुक्के अस्सखेजगुणा, उहुलोए अस्सखिजगुणा, अहोलोए विसंसाहिया । खेत्तागुणाएण

अधोलोके तिरिखेन्लोके । विसंसाहिया तिरियलोए अस्स० । विमोपाधिक उपजत्ता वेप्रतरनैरप्ये तेमाटे तिरिखेन्लोके असस्याततगुणा चोवमाटे । तिरिखेन्लो
अस्सखिजगुणा उहुलोए अस्स० । तेहेधो धिन्लोके अससगातगुणा जे ऊचायो नोचा ऊर्द्धलोकाद्वा विमोपाधिका विमोपाधिका विमोपाधिका तिरियलोए
जे विमोपाधिक उपजावता वणा चोचो । सवत्थोवा एगिदोपपद्यत्तगा उहुलोयतिरियलोए । सर्वस्वोका जीव एकेन्द्रिय अपर्याप्ता ऊर्द्धलोके तिरियलोए ।
जे सर्वपर्याप्तानी परे । अधोलोयतिरियलोए वि० तिरियलोए अस्स० । अधोलोके तिरिखेन्लोके विमोपाधिक विमोपाधिका उहुलोयतिरियलोए ।
अस्स० । धिन्लोके अस्स० ऊर्द्धलोके । अधोलोए विसंसाहिया । अधोलोके तिरियलोए विसंसाहिया तिरियलोए । अधोलोके तिरिखेन्लोके

धोनीके श्रयोलीकाद्वा ऊर्हलोकं समुत्पद्यते तेषां च मध्ये बहवो मारणातिकसमुद्घातवशा द्विचिन्मलप्रदेशदशा स्त्रीनिषीत्तकान् स्पृशति ततो जवत्यऽसंख्येयगुणा, स्तेन्य ऊर्हरीके असंख्येयगुणा उपपातक्षेत्रस्या ऽतिथुत्वा तेभ्यो ऽधोलोकं विशेषाधिक्या ऊर्हलोकक्षेत्रा दधोलोकक्षेत्रस्य वि शेषाधिकत्वात् एवम ऽपर्याप्तविषय पर्याप्तविषय च सूत्र जावयितव्य मऽयुना द्वीद्रिपविषय मल्पयदुत्थ माए-खेत्ताणुवागण सद्योयोवा चेद्दि या इत्यादि ॥ क्षेत्रानुपातेन क्षेत्रानुसारेण चित्यमाना द्वीद्रिया सर्वस्वोका ऊर्हलोकं ऊर्हलोकस्यैकदेशे तेषां समवात्, तस्य ऊर्हलोकतियंगलाक्षे प्रत

सख्योवा एगिया जीवा पञ्चासगा, उहूलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, उहूलोए असखेजगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएण सख्योवा चेद्दि या उहूलोए उहूलोयतिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्के असं०, अहोलोए तिरियलोए असखेजगुणा, अहोलोए संसंजगुणा, तिरियलोए संसंजगुणा । खेत्ताणुवाएण सख्योवा चेद्दि या अ पञ्चासगा उहूलोए । उहूलोयतिरियलोए सखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, अहोलोयतिरियलोए अस

विषयाधिक तिरिखेसोके असद्यतातगणा । तिनोके असं० उहूनाए असं० तिनोके असद्यतातगणा ऊर्हलोकं असद्यतातगुणा । पद्दानीए विसंसाहिया अधोलोके विषयाधिक । विषयाणुवाएण सख्योवावेदिया उहूलोयतिरिण्णाण असखिजगुणा तिनोके असत्तिजगणा । खेत्ताणुवाजाता सख्योवावेदिय ऊर्हलोकं मेरुनीचूलिकावाविमाडिदुवे तेभ्यो तिर्यक्लोकं किमज्जंयो अधतपल अधवो ऊर्हं उपजे तेभ्यो समुद्घातवसे मरणातकरता तौ नलाकसर्ग । अधोलोयतिरियलोए असखिजगुणा । अधोलोकं तिर्यक्लोकं असद्यतातगुणा स्वस्थानभयो । अधोलोण सखि० तिरियवाए सत्तिजगुणा । अधोलोकं सदयातगुणा उपजे तिरिखेसोके सदयातगुणा उपजजनाठाम । विषयाणुवाएण सख्योवावेदिया अपजजगा उहूलोण । चेचनामने सर्वोडा वेदिय अपर्वासा ऊर्हलोकं भावनात्रोचनीपरे । उहूलोयतिरियलाए असं० । ऊर्हलोकं तिर्यक्लोकं असद्यतातगुणा । तिनोके असं० तिनोकाकस्यगं अस

रद्वयरूपे असंख्येयगुणा, यतो ये ऊर्ध्वलोका तिर्यग्लोकाद्वा ऊर्ध्वलोके द्वीन्द्रियत्वेन समुत्पत्तुकामा स्तादयुरनुजवत इलिकागता समुत्प
द्यन्ते येच द्वीन्द्रियागव तिर्यग्लोका दूर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकाद्वा तिर्यग्लोके द्वीन्द्रियत्वेना अन्यत्वेनवा समुत्पत्तुकामा कृतप्रथममारणातिकसमुद्रयाता अ
तएव द्वीन्द्रियायुप्रतिसवेदयमाना समुद्रयातवशा च दूरतरविचित्रनिजात्मप्रदेशदक्षा येच प्रतरदयाध्यासितक्षेत्रसमासीना स्ते यथोक्तप्रतरदय
स्पर्शिनो वप्व चेति पूर्वोक्तेभ्यो असंख्येयगुणा, स्तंभ्य खेलोको असंख्येयगुणा यतो द्वीन्द्रियाणा प्राचुर्येणो त्वत्तिस्थानान्य उधोलोके तस्माच्चा ऽति
प्रभूतानि तिर्यग्लोके तत्र य द्वीन्द्रिया अधोलोका दूर्ध्वलोके द्वीन्द्रियत्वेना अन्यत्वेन वा समुत्पत्तुकामा कृतप्रथममारणातिकसमुद्रयाता समुद्रयात
वशाच्चो त्वत्तिदंश यावद्विचित्रात्मप्रदेशदक्षा स्ते द्वीन्द्रियायु प्रतिसवेदयमाना येचो उर्ध्वलोका उदधोलोके द्वीन्द्रियाशेषकाया याव द्वीन्द्रियत्वेन समु

खेजगुणा, अहोलीए सखे०, तिरियलोए सखे० खेत्ताणवाएणं सख्योवा वेइदिया पज्जसया उहली उ
हलीयतिरियलोए अ्सखेजगुणा, तेलुक्को अ्सखेजगुणा, अहोलीयतिरियलोए अ्सखेजगुणा, अहोली
ए सखेजगुणा, तिरियलोए सखेजगुणा । खेत्ताणवाएण सख्योवा तेइदिया उहलीए उहलीयतिरियलो

ययातगुणा । अहोलीयतिरियलोए अस० अधोलीके तिर्यक्लोके असख्यातगुणा । अहोलीए सखि० अधोलीके सख्यातगुणा । तिरिवनोए सखि० तिर
क्लोके सख्यातगुणा । खित्ताणवाएण सख्योवा वेइदियपत्तत्तया उहलीए । चेत्रनोमेलैजोता सर्वशोछा वेदियपर्गीसा ऊर्ध्वलोके भावनाप्राचनोपरै ।
उहलीतिरियलोए अस० तिल्लोके अस० ऊर्ध्वलोके तिर्यक्लोके असख्यातगुणा तिल्लोके असख्यातगुणा । अहोलीए तिरिवनोए अस० अधोलीके तिरिक्लो
के असख्यातगुणा । अहोलीए सखि० तिरियलोए सखि० । अधोलीके सख्यातगुणा तिरिक्लोके सख्यातगुणा हिंवे तेदियकहेइ । खित्ताणवाएण सख्य
वातेइ दिया उहलीए उहलीए तिरियलोए अस० तिल्लोके अस० । चेत्रनोमेलै सर्वशोछावेदिय कर्धलोके वेदियनोपरि तेदियनोपरि भावनाकोजे ऊर्ध्वलो
के तिरिक्लोके असख्यातगुणा तिल्लोके असख्यातगुणा । अहोलीयतिरिवनोए अस० अधोलीके तिर्यक्लोके असख्यातगुणा । अहोलीए स० तिरियलोए

त्यमाना द्वीद्रियायु रनुनवति त्रैलोक्यस्पर्शिन स्तत्र पूर्वाक्षेभ्यो असंख्यगुणा तेष्वो ऽधोलोकतियग्लोके ऽसंख्येयगुणा यतो ये द्वीद्रिया ण धोलोका तियग्लोके येच द्वीद्रिया स्तियग्लोका दधोलोके द्वीद्रियत्वेन त्रैपकायत्वेनो त्पिदस्य कृतप्रथममारणातिरुसमुदाता द्वीद्रियायु रनुनय त समुदातवशेनो त्पत्तिदशयाव द्विर्दिष्टात्मप्रदशदशा स्ते यथोक्त प्रतरद्वय स्पृशति । प्रभूताश्चाति, पूर्वाक्षेभ्यो ऽसंख्येयगुणा स्तत्रो ऽधोलो के संख्येयगुणा स्तत्रो त्पत्तिस्थानाना मतिप्रचुराणा प्रावात्, तेष्वोपि तियग्लोके संख्येयगुणा अतिप्रचुरतराणा योनिस्थानाना तत्र ज्ञावात्,

ए अस० । तेलुक्के असखेज्जगुणा, अधोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएण स वृत्योवा तेइदिवा अपज्जत्तगा उहुलोए उहुलोयतिरियलोए अससिज्जगुणा, तेलुक्के असखेज्जगुणा, ए होलोयतिरियलोए असखेज्जगुणा, अधोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएण सव त्थोवा तेइदिवा पज्जत्तगा उहुलोए उहुलोएतिरियलोए अससिज्जगुणा, तेलुक्के अससिज्जगुणा, अधोलो ए तिरियलोए अससिज्जगुणा, अधोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएण सव

साख० । अधालाके तिरिक्केनोके संख्य तगुणा । खित्ताणुवाएण संख्यावातेइदिगा अपज्जत्तगा । धेवनोमेस्यथाडातेइत्य अपर्याप्ता । उहुदलोए उहुद लायतिरियलाए अस० । जंहाके भावनोवेइदनीपरे जंहालाके तियक्काके असख्यातगुणा । तिलोके असखिज्जगुणा । धिनोके असख्यातगुणा अधालाए तिरियलोए अस० । अधालोके तिरिक्केनोके असख्यातगुणा । अधालोके साख० । अधालोके संख्यातगुणा । तिरियलोए सखि० । तिरिक्केनोके सं ख्यातगुणा । खित्ताणुवाएण संख्यावा तेइदिगपज्जत्तगा उहुदलोए । धेवनोमेले सर्वथाडा तेइत्यपर्याप्ता जंहालोके । उहुदलोए तिरियलाए अस० । ऊड नोके तिरिक्केनोके असख्यातगुणा । तिलोके अस० । धिनोके असख्यातगुणा । अधालोयतिरियलोए अस० । अधालोके तिरिक्केनोके असख्यातगुणा । अधो लोए सखि० । तिरियलोए सखि० । अधालाके संख्याता तिरिक्केनोके संख्यातगुणा । धेइत्यनोपरि धोरिदिय कहैक्के । खित्ताणुवाएण संख्यावा चतेइदिगा

यद्ये दमौचिक द्वीन्द्रियसूत्र तथा पर्याप्तोपार्णसहोद्विषसूत्राणि ज्ञावनीयानि, साप्रत
मौचिकपंचेन्द्रियविषय मत्पयवहुत्वमाह-संज्ञाशुवाएण सधुत्थोवा पचिदिया तेलोछे इत्यादि ॥ क्षेत्रानुपातेन चित्तमाना पचेन्द्रिया सर्वस्तोका
त्रैलोक्ये त्रैलोक्यसर्पाज्ञानो यतो ये अधोलोका द्रुद्धलोके ऊर्ध्वलोकाश्च अधोलोके शेषकाया पंचेन्द्रियायुरनुव्रत इति कागत्या समुत्पद्यते, यच्च प
ंचेन्द्रिया ऊर्ध्वलोकाद अधोलोके अधोकायत्वेन पंचेन्द्रियत्वेनचो त्पत्सव कृतमारणतिकसमुद्गता समुद्गतातवशा चोत्पत्ति

त्योवा चउरिदिया जीवा उहुलोए उहुलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा । तेलुक्के असंखेज्जगुणा, अहोली
यतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलीए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा । खेत्ताणुत्राएण सव्वत्योवा
चउरिदियाजीवा अपज्जत्तगा उहुलोए, उहुलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, अप
होलीयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलीए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा । खेत्ताणुत्राएणं सव्व
त्योवा चउरिदिया जीवा पज्जत्तगा उहुलोए उहुलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा

लोका उल्टनीए। चैवनीमैले सर्वथोहा चोरिद्रिय जीव ऊई लोक हमसंभावना वेद्रियनोपर करवौ। उल्टनीयतिरियनोए असं तिस्रोके असं अद्वा
 नोयतिरिउनोए असं। तिरिछैसांक असख्यातगुणा अधोनोके तिरिछैसांक असख्यातगुणा। अद्वालोए सखि। तिरियलोएसं। अधोनोके सदयातगु
 णा तिरिछैनांके सदयातगुणा। खित्ताणवाएण सख्योया चउरिद्रिय अपक्कासगा उल्टनीए। चैवनीमैले सर्वथोहा चतुरिद्रिय जीव अपर्यासा ऊईलोके
 वेद्रियनोपरे ऊईलोके। उल्टनीयतिरिउलोए असं तिस्रोके असं। ऊईलोक तिरिछैसांक असं चित्तोके असख्यातगुणा। अद्वालोयातिरियलोए असं
 अधोलोक तिरिछैसांक असख्यातगुणा। अद्वालोण सं तिरियनोए सखि। अधोनोके सदयागणा तिरिछैसांक सदयातगुणा। खित्ताणुवाएण सख्यो
 या चउरेद्रियपक्कासगा उल्टनीए। चैवनीमैले सर्वथोहा चतुरिद्रिय जीव पर्यासा ऊईसांके। उल्टनीए तिरियनोण सं तिस्रोके असं। ऊईलोक ति

देशायत् विविधात्मदेशदहा पचेद्रियायु रद्याप्यनुभवति ते त्रैलोक्यसर्पज्ञेन स्तोत्रा रपेक्षति । सर्वस्वोका स्तेन्य ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके प्रतरद्
यरूपे सख्येयगुणा प्रचूततराणा मुपपातन समुद्घातेन वा यथोक्तप्रतरद्वयसप्तशत्रवात्, तज्यो ऽधोलोकतिर्यग्लोके सख्येयगुणा अतिप्रचूत
तराणा मुपपातसमुद्घाताभ्या मऽधोलोकतिर्यग्लोकसङ्घप्रतरद्वयसप्तशत्रवात्, तेन्य ऊर्ध्वलोक सख्येयगुणा वैमानिकाना मऽवस्थानज्ञावात्, ते
ज्यो ऽधोलोके सख्येयगुणा वैमानिकदेवेन्य सरयेयगुणाना नैरयिकाणा तत्र ज्ञावात्, तेन्य स्त्रियग्लोके ऽसख्येयगुणा समूर्च्छिमजलचरखचरा
दीना व्यतरज्योतिष्काणा समूर्च्छिममनुष्याणाच तत्र ज्ञावात्, एव पचेद्रियाऽपर्याप्तसूत्रमपि ज्ञायनीय, पचेद्रियपर्याप्तसूत्र मिद-रक्षाणुयाएण
सहस्योवा पचिदिद्या पज्जता वल्लोए इत्यादि ॥ क्षेत्रानुपातेन चित्तमाना पचेद्रिया पर्याप्ता सर्वस्वोका ऊर्ध्वलोक प्राथेवैमानिकानामेव त
त्र ज्ञावात्, तेन्य ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके प्रतरद्वयरूपे ऽसख्येयगुणा विवक्षितप्रतरद्वयप्रत्यासनज्योतिष्काणा तदध्यासितक्षेत्राश्रितव्यतरतिर्यग्लोके पचेद्रि

अधोलोयतिरियलोए असखेज्जगुणा, अहोलोए सखेज्जगुणा, तिरियलोए सखे० । खेत्ताणुवाएणं सहस्यो
वा पचिदिद्या तेलुक्के उह्लोयतिरियलोए असखेज्जगुणा, अहोलोए तिरियलोए सखेज्जगुणा, उह्लोए
सखेज्जगुणा, अहोलोए सखेज्जगुणा, तिरियलोए असखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएण सहस्योवा पचिदिद्या

रक्षेणके असख्यातगुणा । धर्माके असख्यातगुणा । अर्धाक्षोवतिरियनाए अस० । अधोनाके तिरक्षेणोके असख्यातगुणा । अर्धोलोए स० तिरियलोए स० ।
अधोनाके तिरक्षेणोके सख्यातगुणा । विक्ताणुवाएण सहस्योवा पचेदिद्या तिरिक्षोके उह्लोए तिरियलोए स० । अधोनायतिरियलोए स० । अधोनाके सर्व
यादा पचेद्रिय तौनसोक्तना अर्गणहार ऊर्ध्वना अधचधना ऊर्ध्वसैकागति उपजे तेयाडा ऊर्ध्वलोक तिरक्षेणोके सख्यातगुणा । उह्लोए स० अर्धो
नाके अस० तिरियनाए असखिज्जगुणा । उपपातसमुद्घातवसे वेप्रतरपुरसे अधोनाके तिरिक्षोके सख्यात० अतिप्रभूतर उपपातसमुद्घात न वसे वे
प्रतरसर्ग ऊर्ध्वनाके असख्यातविमानमा उपजता तेद्वी अधोनाके असख्यातानारको माहि उपजे घणा मनुय तिरक्षेणोके उपजे ।

यद्येदमौचिकहोद्विपसूत्रतथापर्याप्तोद्विपसूत्रौचिकत्रीद्विपपर्याप्तोपार्थोपसूत्राणि ज्ञावनीयानि, साप्रत
मौचिकपंचेद्विपविषयमत्पबहुत्वमाह-सत्ताशुवागमसद्युत्थोवापचिदियातेलोछेइत्यादि॥क्षेत्रानुपातेनचिद्यमानापंचेद्वियासर्वस्तोका
त्रैलोक्येत्रैलोक्यसर्पाशनोयतोयेऽधोलोकाद्वृद्धलोकैर्कर्तृलोकाद्वाऽधोलोकैर्जोपकायापंचेद्वियायुरनुवतइतिकागत्यासमुत्पद्यते, येषप
पंचेद्वियाकर्तृलोकादऽधोतीर्क्षेअधोलोकाद्वृद्धलोकजोपकायत्वेनपंचेद्वियत्वेनचोत्पिस्सवकृतमारुणातिकसमुद्गतासमुद्घातवशाञ्चोत्पत्ति

त्योवा चउरिदिवा जीवा उहुलोए उहुलोयतिरियलोए असखेज्जगुणा । तेलुक्के असखेज्जगुणा, अहोली
यतिरियलोए असखेज्जगुणा, अहोलोए सखेज्जगुणा, तिरियलोए सखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएणं सवत्थोवा
चउरिदिवाजीवा अप्पज्जग्गा उहुलोए, उहुलोयतिरियलोए असखेज्जगुणा, तेलुक्के असखेज्जगुणा, अप्प
होलीयतिरियलोए असखेज्जगुणा, अहोलीए सखेज्जगुणा, तिरियलोए सखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएणं सवत्थ
त्योवा चउरिदिवा जीवा पज्जग्गा उहुलोए उहुलोयतिरियलोए असखेज्जगुणा, तेलुक्के असखेज्जगुणा

कोवा छटुनोए। संघनोमैले सर्वधोडा चोरिद्रिय जीव ऊर्जलोक इममवभावना वेद्रियनोपार करधो। छटुनोयतिरियनोए अस० तिल्लोके अस० अहो
 नायतिरियनोए अस०। तिरिछैलोक असख्यातगुणा अधोनोंके तिरिछैनोंके असस्यातगुणा। अहोलोण सखि० तिरियनोए स०। अधोनोंके सस्यातगु
 णा तिरिछैनोंके सस्यातगुणा। खिसाणवाएण सख्योधा चउरिद्रिय अपज्जसगा छटुनोए। संघनोमैले मवंधाडा चतुरिद्रिय जीव अपर्यासा ऊर्जलोक
 वेद्रियनोपरे ऊर्जलोक। छटुनोयतिरियनोए अस० तिल्लोके अस०। ऊर्जलोक तिरिछैलोक अस० विलोक असस्यातगुणा। अहोलोयतिरियलोए अस०
 अधोलोक तिरिछैलोक असस्यातगुणा। अहोलोण स० तिरियनोए सखि०। अधोनोंके सस्यागुणा तिरिछैलोक सस्यातगुणा। खिसाणवाएण सख्या
 या चउरिद्रियपज्जसगा छटुनोए। संघनोमैले सर्वधोडा चतुरिद्रिय जीव पर्यासा ऊर्जलोक। छटुनोए तिरियलोण अस० तिल्लोके अस०। ऊर्जलोक ति

विसेसाहिया, तिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्की असखिजगुणा, उहुलोए असखेजगुणा, अहोलोए
 विसेसाहिया, खेत्ताणुवाएण सवत्योवा पुढविकाइया अपज्जत्तया उहुलोयतिरियलोए अहोलोयतिरिय
 लोए विसेसाहिया, तिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्की असखेजगुणा, उहुलोए असखिजगुणा, अहो
 लोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएण सवत्योवा पुढविकाइया पज्जत्तया उहुलोए तिरियलोए तिरियलीयअ
 होलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्की असखेजगुणा, उहुलोए असखेजगुणा, अहो
 लोए विसेसाहिया, खेत्ताणुवाएण सवत्योवा अउकाइया उहुलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए वि

धोनोंक तिरछेनोंके ससयातगुणा वषाअत्तर खस्थान पणा माटे । स० तिरियलोए सखेजगुणा खिस्ताणुवाएण सवत्योवा पुढवीकाइया उहुलोयति
 रियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया । तदथो तिर्यक्नोंके ससयातगुणा पचेदियखस्थान तिर्यचमन्यमाहि नावे । द्विवे एके द्रुगो अप्यमदुल्ल
 कहैछे चैननीमेले सर्वथाहा पृथिवीकाइक ऊर्दलोक तिर्यनाके भावना सवपाकली परिलाणवी । अधोनोंके तिरछेनोंके विशेषाधिक । तिरियलोए अस०
 तिस्रोके अस० उहुलोए अस० अहोलोए विसेसाहिया । तिर्यक्नोंके अससयातगुणा त्रिनाके अससयातगुणा ऊर्दनाक अससयातगुणा अधोनोंकेविशेषा
 धिक । खिस्ताणुवाएण सवत्योवा पुढवीकाइया अपज्जत्तया उहुलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया । चैननीमेले सर्वथाहा पृथिवीका
 या अपर्याप्ता ऊर्दलोक तिरछेनाके भावनापाकली परे । ऊर्दलोक अधोनोंके विशेषाधिक । तिरियलोए अस० तिस्रोके अस० उहुलोए अससि० ।
 तिरछेनोंके अससयातगुणा त्रिनोंके अससयातगुणा ऊर्दनोंके अससयातगुणा । अधोनोंके विसेसाहिया । अधोनोंके विशेषाधिक । खिस्ताणुवाएण सवत्यो
 वा पुढवीकाइवपज्जत्तया उहुलोयतिरियलोए । चैननीमेले सर्वथाहा पृथिवीकाइयापर्याप्ता ऊर्दलोक तिर्यक्नोंके भावनापाकलीपरै । अहोलोयतिरि
 यलोए विसेसाहिया । अधोनोंके विशेषाधिक तिरछेनोंके । तिरियलोए अस० तिस्रोके अस० उहुलोए विसेसाहिया । तिरछेनोंके

याणा वैमानिकव्यतरज्योतिषविद्याधरचारणमुनितिर्यग्पंचद्वियाणा मूढलोके तिर्यग्लोके च गमनागमने कुर्वता मऽचिकृतप्रतरद्वयस्पर्शात्, तेन्य
स्त्रीलोके त्रीलोकसस्पशिन सख्येयगुणा कथ मितिचत् यतो ये प्रवनपतित्यतरज्योतिषवैमानिका विद्याधरा वा ऽधोलोकस्था कृतवैक्रियसमुद्
घाता स्तथाविधप्रयत्नविशेषा दूद्धूलोकाविशिष्टात्मप्रदेशदृष्टा स्ते त्रीनऽपि लोकान् स्पृशती ति सख्येयगुणा, स्तेन्यो ऽधोलोकतियग्लोके प्रतरद्वय
कूपे सख्येयगुणा दष्टबोद्धिव्यतरा स्वस्थानप्रत्यासन्नतया प्रवनपतय तिर्यग्लोके जटुलोकेवा व्यतरज्योतिषवैमानिका देवा अधोलौकिकग्रामपु स
मधसरणादा वऽधोलोके क्रीडादिनिमित्त च गमनागमनकरणत स्तथा समुद्रेषु केचिन्नियगपंचेद्विया स्वस्थानप्रत्यासन्नतया अपरे तदध्यासितद्वेष्टा
श्रिततया यथोक्त प्रतरद्वय स्पृशति तत सख्येयगुणा तेन्यो ऽधोलोके सख्येयगुणा नैरयिकाणा प्रवनपतीनाच तत्रा ऽवस्थानात्, तेन्य स्त्रियग्

अपज्जतया, तेलोक्के उट्टुलोयतिरियलोए अस्सखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए सखेज्जगुणा, उट्टुलोए
सखेज्जगुणा, अहोलोए सखेज्जगुणा तिरियलोए सखिज्जगुणा खेत्ताणुवाएण सव्वस्योवा पच्चिंदिया पज्जत्ता
उट्टुलोए उट्टुलोयतिरियलोए अस०, तेलुक्के अस०, अहोलोयतिरियलोए सखेज्ज० अहोलोए सखेज्ज०
तिरियलोए अस्सखेज्ज०, खेत्ताणुवाएणं सव्वस्योवा पुढविकाइया उट्टुलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए

खित्ताणयाएण सव्वत्थावा पचेदिअ अपज्जत्तगा तिक्कोकं । खेवनीमेनै सर्वघोडा पचेदिअ अपर्वात्ता तिरक्कोन्निके भावना आंघनौ परि कहवो । उट्टु
लोयतिरियलोए अस० । ऊहर्निके तिरक्कोकं असदगातगुणा । अहोलोयतिरियनाए सखिज्जगुणा उट्टुलाए सखिज्जगुणा अहोलोए ५० तिरिअलोए
असखिज्जगुणा । अधोलोके तिरक्कोकं सदगातगुणा ऊहर्निके अधोलोके सख्यातगुणा तिरक्कोकं असख्यातगुणा । खित्ताणुवाएण सव्वस्योवा पचेदि
अपज्जत्तगा उट्टुलो उट्टुलोयतिरियलोए अस० । खेवनीमेनै सर्वघोडा पचेदिअ पर्याप्ता ऊहर्निके वैमानिकने भावे तेज्ज्यो ऊहर्निके तिर्यक्कोके अ
सदगातगुणा वेप्रतरपरसे ज्योतिषो विद्याधरचारण यमणने गमनागमने । तिक्कोकं सखिज्जगुणा । निक्कोके सख्यातगुणा । अहोलोयतिरियलोए । अ

विसेसाहिया, तिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्की असखेजगुणा, उहुलोए असखेजगुणा, अहोलोए
 विसेसाहिया, खेत्ताणुवाएण सवत्योवा पुढविकाइया अपजत्तया उहुलोयतिरियलोए अहोलोयतिरिय
 लोए विसेसाहिया, तिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्की असखेजगुणा, उहुलोए असखेजगुणा, अहो
 लोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएण सवत्योवा पुढविकाइया पजत्तया उहुलोए तिरियलोए तिरियलोयअ
 होलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्की असखेजगुणा, उहुलोए असखेजगुणा, अहो
 लोए विसेसाहिया, खेत्ताणुवाएण सवत्योवा अउकाइया उहुलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए वि

धानीक तिरछेनोके ससयातगुणा घणाध्यतर स्वस्थान पणा माटे । स० तिरियलोए सखेजगुणा खिसाणुवाएण सवत्योवा पुढवोकाइया उहुलोयति
 रियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया । तेइथो तिर्यकुनोके ससयातगुणा पचेटियस्स्थान तियचमनुयमाहि नावे । द्विषे एके टुगनो अप्पवहुत्व
 कइक्के चेवनीमेले सर्वयोडा पृथिवोकाइक ऊर्दकोक तिर्यनोको भावना सर्वपाकनो परिलाणवो । अधोलोको तिरछेनोके विगोपाधिक । तिरियलोए अस०
 तिसोके अस० उहुलोए अस० अहोलोए विसेसाहिया । तिर्यकुनोके अससयातगुणा धिनाके अससयातगुणा ऊर्दनाक अससयातगुणा अधोलोकोविगोप
 धिक । खिसाणुवाएण सवत्योवा पुढवोकाइया अपजत्तया उहुलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया । चेवनीमेले सर्वयोडा पुरयोका
 या अपर्यागता ऊर्दनाक तिरछेनोके भावनापाकनो परे । ऊर्दनाक अधोलोके विगोपाधिक । तिरियलोए अस० तिसोके अस० उहुलोए असखि० ।
 तिरछेनोके अससयातगुणा धिनोके अससयातगुणा ऊर्दनाके अससयातगुणा । अधोलोए विसेसाहिया । अधोलोके विगोपाधिक । खिसाणुवाएण सवत्यो
 वा पुढवोकाइयापजत्तया उहुलोयतिरियलोए । चेवनीमेले सर्वयोडा पृथिवोकाइयापर्यागता ऊर्दनाके तिर्यकुनोके भावनापाकनो परे । अधोलोयतिर
 यलोए विसेसाहिया । अधोलोके विगोपाधिक तिरछेनोके । तिरियलोए अस० तिसोके अस० उहुलोए विसेसाहिया । तिरछेनोके । तिरछेनोके

सेसाहिवा तिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्की असखेजगुणा, उडुलीए असखेजगुणा, अहोलीए विसे साहिया। खेत्ताणुवाएण सवत्योवा आउकाइया अपजत्तया उडुलीयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए विसे ससाहिया तिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्की असखेजगुणा, उडुलीए असखेजगुणा, अहोलीए विसे साहिया। खेत्ताणुवाएण सवत्योवा आउकाइया पजत्तया उडुलीएतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए विसे ससाहिया, तिरियलोए असखेजगुणा, तेलुक्की असखेजगुणा, उडुलीए असखेजगुणा, अहोलीए विसे साहिया। खेत्ताणुवाएण सवत्योवा तेलुकाइया उडुलीयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए विसेसाहिया,

असख्यातगुणा विनोके असख्यातगुणा जइलोके असख्यातगुणा अधोलोके विशेषाधिक। विस्ताणुवाएण सवत्योवा आउकाइया उडुलीयतिरियलोए। सेवनोमेलै सर्वथोडा आउकाइया अपर्यासा जइलोके तिरिछेलोके। अहोलोकी तिरियलोए अस०। अधोलोके तिरिछेलोके विशेषाधिक तिरिछेलोके असख्यातगुणा। तिल्लोके अस० उडुलीए अस०। विनोके असख्यातगुणा जइलोके असख्यातगुणा। अहोलीए विसेसाहिया विस्ताणुवाएण। अधोलोके विशेषाधिक सेवनोमेलै सर्वथोडा। आउकाइया अपजत्तया उडुलीयतिरियलोए। अपकाइया अपर्यासा जइलोके तिरिछेलोके सर्वथोके द्वियनोपरे भावना। अहोलीए तिरियलोए विसेसाहिया। अधोलोके तिरिछेलोके विशेषाधिक। तिरियलोए अस० जगुणा तिल्लोके अस०। तिरिछेलोके असख्यातगुणा विनोके असख्यातगुणा। उडुलीए अस० अहोलीए विसेसाहिया। जइलोके असख्यातगुणा अधोलोके विशेषाधिक। विस्ताणुवाएण सवत्योवा आउकाइया अपजत्तया। सेवनोमेलै सर्वथोडा अपकाइयापर्यासा। उडुलीयतिरियलोए विसेसाहिया। जइलोके तिरिछेलोके। अहोलोकी तिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए अस०। अधोलोके तिरिछेलोके विशेषाधिक असख्यातगुणा। तिल्लोके अस० उडुलीए अस० अहोलोकी विसेसाहिया। विनोके असख्यातगुणा जइलोके असख्यातगुणा अधोलोके विशेषाधिक। विस्ताणुवाएण सवत्योवा तेलुकाइया उडुलीयतिरियलोए। जैन

तिरियलोए असखेज्जगुणा, तेलुक्के असखेज्ज०, उहुलोए असखिज्ज०, अहोलोए विमसाहिया । खेत्ताणु
वाएण सव्वत्थोवा तेउकाइया अपज्जत्तया उहुलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विमसाहिया, तिरि
यलोए असखेज्जगुणा, तेलुक्के असखिज्जगुणा, उहुलोए असखेज्जगुणा, अहोलोए विमसाहिया । खेत्ता
णुवाएण सव्वत्थोवा तेउकाइया पज्जत्तया उहुलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विमसाहिया, तिरि
यलोए असखेज्जगुणा, तेलुक्के असखेज्जगुणा, उहुलोए असखेज्जगुणा, अहोलोए विमसाहिया । खेत्ता
णुवाएण सव्वत्थोवा वाउकाइया उहुलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विमसाहिया । तिरियलोए अ

नोमेनै सर्वथोडा तेउकाइया ऊर्हलाक तिर्यक्कुनोके भावनापाकनोपरै । अहोनायतिरियनोण विमोपाहिया तिरियनोए अ० । अधोनीके तिरिक्केनोके वि
मोपाधिक तिरिक्केनोके अससयातगुणा । तिलाके अस० उहुनाए अ० चइ लाए विमसाहिया । विनोके अससयातगुणा ऊर्हनाके अससयातगुणा अधो
नोके विशेषाधिक । खित्ताणवाएण सव्वत्थावा तेउकाइयअपज्जत्तया । चवन्नोमलै सर्वथोडा तेउकाइया अपर्मात्ता । उहुटनायतिरियलाए अहोलोयतिरि
यलाए विमसाहिया । ऊर्हलाकतिर्यक्कुनोके अधोनीके तिरिक्केनोके विशेषाधिक । तिरियनोए अ० तिलाके अ० उहुटनाए अ० अहोलाए विमसाहिया ।
तिरिक्केनोके अससयातगुणा विनोके अससयातगुणा ऊर्हनीके अससयातगुणा अधोनीके विशेषाधिक । खित्ताणुवाएण सव्वत्थावा तेउकाइयपज्जत्तया
चवन्नोमलै सर्वथाडा तेउकाइयापर्याप्ता । उहुटनायतिरियनोए अहोलोयतिरियनोए विमसाहिया । ऊर्हनाके तिर्यक्कुनोके अधोनीके तिर्यक्कुनोके विशेष
पाधिक । तिरियनोए अ० तिलाके अ० उहुटनाए अ० । तिर्यक्कुनोके अससयातगुणा ऊर्हलोके अससयातगुणा । अहोलाए वि० खित्ताणुवाएण सव्वत्था
वा । अधोलाके विशेषाधिक चवन्नोमलै सर्वथोडा । वायुकाइया उहुटनायतिरियनोण । वायुकाइया ऊर्हनाके तिर्यक्कुनोके । अहोलोयतिरियलोए विमे०
अधोनीके तिरिक्केनोके विशेषाधिक । तिरियनोए अ० तिलाके अ० उहुटनाए अ० अहोलाए विमसाहिया । तिरिक्केनोके अससयातगुणा विनोके अससया

श्रीके ऽमर्येमगुणा स्तियंकपुषेद्रियमपुण्यत्तरज्योतिष्काणा मवस्थानात्, तदेव मुक्तं पञ्चेद्रियाणा मल्पयदुस्य मिदानो मेकेन्द्रियजेदाना पुण्यिकी कायिहादीना पचाना मीचिक्रययोऽपार्योऽमज्जेदेन प्रत्येक त्रीणित्रीस्य ऽल्पवदुस्यान्या ऽह-रोत्ताशुवाएण सव्वथोवा पुढाविकाइया चण्डलोयतिरिय

उह्लोए अस्संजगुणा, अह्लोए विसेसाहिया । खेत्ताणवाएण सञ्ज्योवा वणरसइकाइया अपज्जत्तया उह्लोयतिरियलोए अह्लोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए अस्सिज्जगुणा, तेलुक्के अस्सिज्जगुणा, उह्लोए अस्संज्जगुणा, अह्लोए विसेसाहिया । खेत्ताणवाएण सञ्ज्योवा वणरसइकाइया पज्जत्तया उह्लोयतिरियलोए अह्लोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए अस्संज्जगुणा, तेलुक्के अस्संज्जगुणा, उह्लोए अस्सिज्जगुणा, अह्लोए विसेसाहिया । खेत्ताणवाएण सञ्ज्योवा तरसकाइया तेलुक्के

ति का रया अ पर्याप्त। ऊई लाक तिरछै लोक। अहाँ लाय तिरयनोए विस साहिया। तिरयनोए अ० तिलोक अ०। अधालोके तिरछै लोक विग्रयाधिक ति
रछै लोक भयगतगुण। छटलोए अ० अहाँ लोक विस साहिया। ऊई लोक असखातगुण अधालोके विग्रयाधिक। खिस्तानुवाएण सख्त्योवा
अणस्तका रयापज्जता। चैत्रनोमैले सर्वथाहा वनसतिकारयापर्याप्त। चट्टनोयतिरयलोए अहाँ लोयतिरयलोए विस साहिया। ऊई लोक तिरछै लोक
के अधालोके तिरछै लोक विग्रयाधिक। तिरयनोए अ० तिलोक अ०। तिरछै लोक असखातगुण विलोक असखातगुण ऊई लोक अ
भयगतगुण। अहाँ लोक विस साहिया खिस्तानुवाएण सख्त्योवा तसकारया। अधालोके विग्रयाधिक चैत्रनोमैले सर्वथाहा वसकारया। तिलोक छट्ट
नोयतिरयलोए अस० अहाँ लोक तिरयनोए सखि०। विलोक परसे ते इहाँ पचेदियनोपरे भावना ऊई लोक तिरयनोके असखातगुण अधालोके तिर
छै लोक सखातगुण। छट्टलोए सखि० अहाँ लोक सखि० तिरयनोए अस०। ऊई लोक सखिअगुण अधालोके सखिअगुण। तिरछै लोक असखात
गुण। खिस्तानुवाएण सख्त्योवा तसकारया अपज्जता। चैत्रनोमैले सर्वथाहा वसकारया अपर्याप्त। तिलोक छट्टलोयतिरयलोय अस० अहाँ लोक

सखेजगुणा, तेलुक्के असखिजगुणा उहुलोए असखेजगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणवाएण
सह्योवा वाउकाइया अपजत्तया उहुलोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए विसेसाहिया । तिरियलोए
असखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, उहुलोए असखिजगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणवाएण
सह्योवा वाउकाइया पजत्तया उहुलोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए विसेसाहिया । तिरियलोए
असखेजगुणा, तेलुक्के असखेजगुणा, उहुलोए असखेजगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणवाएण
सह्योवा वणरसइकाइया उहुलोयतिरियलोए अहोलीयतिरियलोए विसेसाहिया । तेलुक्के असखेजगुणा

तगुणा ऊँलोके पसरयातगुण अंलोके विगोपाधिक । पित्ताणुगुण सख्योवा वायुकाइय अपजत्तया उहुलोयतिरियलोए विसेसाहिया । खेवनी
मेमैमवथोडा वायुकाइया अपर्याप्ता ऊँलोके तिर्यक्लोके । अहोलीयतिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए अस० । अधोलीके तिर्यक्लोके विगोपाधिक
तिर्यक्लोके पसरयातगुणा । तिर्यक् अस० उहुलोए अस० अहोली विसेसाहिया । त्रिनाके असयातगुणा ऊँलोके पसरयातगुणा अधोलीके विगो
पाधिक । विज्ञाणवाएण सख्योवा वाउकाइयपजत्तया उहुलोयतिरियलोए । खेवनीमेले सर्वथोडा वनसतिकारया ऊँलोके तिर्यक्लोके । अहोली
य तिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए अस० । अधोलीके तिर्यक्लोके विगोपाधिक तिर्यक्लोके पसरयातगुणा । त्रिनाके अस० उहुलोए अस० ।
त्रिनाके असयातगुणा ऊँलोके पसरयातगुणा । अहोली विसेसाहिया । अधोलीके विगोपाधिक । विज्ञाणवाएण सख्योवा । खेवनीमेले सर्वथोडा
वणरसइकाइया उहुलोयतिरियलोए । वनसतिकारया अपर्याप्ता ऊँलोके तिर्यक्लोके । अहोलीयतिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए अस० ।
अधोलीके तिर्यक्लोके विगोपाधिक तिर्यक्लोके पसरयातगुणा । तिर्यक् अस० उहुलोए अस० । अधोली विसेसाहिया । त्रिनाके पसरयातगुणा ऊँ
लोके पसरयातगुणा अधोलीके विगोपाधिक । विज्ञाणवाएण सख्योवा वणरसइकाइय अपजत्तया उहुलोयतिरियलोए । खेवनीमेले सर्वथोडा वनस

[illegible]

तिरिग्लोए सखिजगुणा । चिन्तोके कहलाके तिर्यकुलोके असखातगुणा अधोलोके तिर्यकुलोके सखिजगुणा । छट्टलोए सखिजगुणा अधोलोए सखिजगुणा । छट्टलोके सखातगुणा अधोलोके सखातगुणा तिरछेलोके असखातगुणा । छिस्ताण्णएण सख्योया तसकारंयपलत्तगा । छेवनीमेलै सर्वथोछा । चनकाद्यापर्यासा । तिलोके छट्टलोयतिरियोय अस० । चिन्तोके कहलाके तिर्यकुलोके असखातगुणा । अधोलोयतिरियोए सखि० छट्टलोए स० । अधोलोके तिर्यकुलोके सखातगुणा कहलाके सखातगुणा । अधोलोए स० तिरियोए स० तिरियोके सखिजगुणा तिरछेलोके असखातगुणा इति तौजे ३ पदे २४ । चौकोसमो द्वार जाणियो ॥ एणसिण भते लोवाण । हिबे वधंवार कहै—हेभगवन् एहलौबने । आऊकअस्रवधगाण अवधगा ण पलत्तगाण अपलत्तगाण । पावुकर्मनाबुक्कनै आठकर्मना अववकनैपर्यासा अपर्यासावै । सुताण जागराण समीहगाण असमीहयाण । सुतानै जा

समवृत्तासमवृत्तानां सातायेदकाऽघातवेदकानां द्वितीयपुस्तकोद्दिश्योपयुक्तानां साकारोपयुक्तानां समुदायेनाऽल्पबहुत्य वक्तव्यं, तत्र प्रत्येक ताद्यद्वूतो येन समुदाये सुखेन तदऽवगम्यते तत्र सर्वस्तोका आर्ययो वधका अयधका सख्येयगुणा, यतोऽनुज्ञयमाननवायुरपि त्रिनागाऽवशेषपरान्नविकमायुर्कोवा वध्नति त्रिनागत्रिनागाद्यऽवशेषे वा ततो द्वौ त्रिनागा वऽवधकाल एक त्रिनागो वधकाल इति । वधकालोऽवधका सख्येयगुणा, स्तथा सदस्तोका अपर्याप्तका पर्याप्तका सख्येयगुणा, एतच्च मत्तजोवानऽधिकृत्य वेदितव्यं, मूत्तमेपु हि याह्यो पक्षेज्योऽवधका सख्येयगुणा, यथा सदस्तोका अपर्याप्तका पर्याप्तका सख्येयगुणा, एतच्च मत्तजोवानऽधिकृत्य वेदितव्यं, मूत्तमेपु हि याह्यो व्याघातो न प्रवति ततः स्तदऽन्नाया द्दहूना निष्पत्ति स्तोकांनामेय चाऽनिष्पत्ति स्तथा सर्वस्तोका सुप्ता जागरा सख्येयगुणा, एतदऽपि सू-

सुज्ञान जागराण समीहयाण असमोहयाण सातावेदगाण इदियउवउत्ताण णोइदिदियउव
उत्ताण सागारीवउत्ताण झणागारीवउत्ताणय कयरे कयरेहिती अप्पावा वज्जयावा तुल्लावा विसंसाहिया
वा ? गोयमा । सहल्योवा जीवा आउस्स कम्मस्स वधगा अपज्जात्तया सरिज्जगुणा, सुत्ता सखिज्जग
णा, समीहया सखिज्जगुणा, सातावेदगा सखिज्जगुणा, इदियउवउत्ता सखिज्जगुणा, झणागारीवउत्ता

गताने समाधाने असमीहाने । सायवियगाण असायवियगाण । सातावेटकने असातावेटकने । इन्द्रिओवउत्ताण । इन्द्रिओपयुक्तने नोइ द्रियापयुक्तने । सागारीवउत्ताण अणागारोवउत्ताण । साकारोपयुक्तने अनाकारोपयुक्तने । कयरे २ हिता अणावालाव विसेसाहियावा गो० सब्त्तीवा जीवा आठकम्पवधगा अपलसगा सखिजगुणा । एहमा किहा २ घो थोडा अथवा घण । सरीया विंगोपाधिक हुवे । हेगो तम संयोडा जीव आयुकर्मनावध विभागविशये परभवनी आयु वधघेनो थोडा तेहथी अवधक असद्यातगुणाकें वेत्रण भावना अवधकाल विभाग वधकानमाटे अवधक असद्यातगुणा संवथाडा अपर्याप्ताए सूक्ष्मीवायोजाणवा सर्वथोडा सताने जागता सद्यातगुणाण पिणसूक्ष्मकोद्रिगेने जेम।टे अपर्याप्ता सता कहिये । असमांहयासखिजगुणा सायवेयगा स० इन्द्रिओवउत्ता स० अणागारोवउत्ता स० सागारोवउत्ता स० नाइ दिओवउत्ता वि० ।

स्नाने केन्द्रियान् अधिकृत्य वेदितव्य, यस्माद् उपर्योसा मुसा एव लभ्यते जागराश्रयि, तत्क मूलटीकाया-जम्हा अपञ्जता सुता लभति, केह अपञ्ज
तगा जेयि सखिज्जा समया अतीता ते यथोवा इयरं विथोवगा चैव सेसा जागरा पञ्जतगा ते सखिज्जागुणा इति, जागरा पथोसा को न सख्ये
यगुणा इति, तथा समग्रता संवत्सोका यतइह समग्रता भारणातिकसमुद्घातन परिग्रह्यते भारणातिक य समुद्घातो मरणकाले न शेषकाल
तत्राऽपि न सर्वथा मिति सखिज्जा, स्तोत्रोऽसमग्रता सख्येयगुणा जीवनकालस्या अतिवृत्त्यात्, तथा संवत्सोका सातवेदका मल इह य
हव साधारणशरीरा अरूपे प्रत्येकशरीरिण साधारणशरीरा य महवोऽसातवेदका स्थत्या सातवेदिन प्रत्येकशरीरिण स्तुत्रयास, सातवेद
का, स्तोका असातवेदिन, स्तत स्तोका सातवेदका, स्तोत्रोऽसातवेदका-सख्येयगुणा स्तथा संवत्सोका इयोपयुक्ता इन्द्रियोपयोगो हि प्रत्यु
त्यन्तकालविषय स्तत तदुपयोगकालस्य स्तोक्त्यात्, पृच्छासमये स्तोका अथाप्यते यदातु तमेवार्थ इन्द्रियेण दृष्टा विधारयत्योऽप्यसङ्ख्या अपि त
दा नेन्द्रियोपयुक्त स व्यपदिश्यते ततो नेन्द्रियोपयोगस्या अतीताऽन्नागतकालविषयतया बहुकारत्वा त्सरयेयगुणा नोद्विद्रियोपयुक्ता स्तथा संव
त्सोका अन्नाकारोपयुक्ता अन्नाकारोपयोगकालस्य स्तोक्त्यात्, साकारोपयुक्ता सख्येयगुणा, अन्नाकारोपयोगकाला त्साकारोपयोगस्य सख्येयगु

सखेज्जागुणा, सागारोवउत्ता सखिज्जागुणा, नोद्विद्रियउवउत्ता विसेसाहिया, असातावेदगा विसेसाहिया,
असमोहिया विसेसाहिया, जागरा विसेसाहिया, पञ्जतगा विसेसाहिया, अउत्स कम्मस्स अन्नधगा

ने पर्याप्ता जागता कहिये । तेमाटे असखातगुणा संबंधीडा समोहित मरणसमुद्घात आयोले पविसे मरणातसमुद्घात मरणकाले इये । तेमाटे अ
समोहना सखातगुणा के जीववानाकाल घणा माटे संबंधीडा सातावेदनीय प्रत्येकशरीरो साधारण शरीरो असातावेदकने असखातगुणा सर्वथो
डा इन्द्रियोपयुक्त असखातगुणा इन्द्रियोपयुक्त प्रत्युत्पन्नकाले ते उपयोगकाल घोडाके पच्छीसमये घोडा पामिये नोद्विद्रियोपयुक्तकालायो अनोतानाग
नो विषय घणा माटे असखातगुणा संबंधीडा अन्नाकारोपयोगकाल योगमाटे । आसायवेयगा वि० असमोहया वि० जागरविसे० पञ्जसगा वि०

शस्त्रात्, इदानीं समुदायगत सूत्रोक्त मध्यस्थतुल्य प्राच्यते, सर्वस्वोका जीवा आयु कर्मणो बंधका आयुर्धनकालस्य प्रतिनियतत्वात्, तेभ्यो ऽ पर्याप्ता सूर्ययगुणा, यस्मा दपर्याप्ता अनुन्नयमानजवविभागाद्यऽवकाशपाप पारज्जाधिक मायु वर्धनति ततो द्वौ त्रिजागाव वधकाल एको वध काल इति वधकालाद ऽत्र वधकाल सूर्ययगुणं तेन सूर्ययगुणागवा ऽपयाप्ता आयुर्धनकस्य, तेभ्यो ऽपर्याप्तस्य सुप्ता सूर्ययगुणायस्माद ऽप यांतेषु च पर्याप्तपु ण सुप्ता लज्यते, पर्याप्ताद्या पर्याप्तस्य सूर्ययगुणा इत्य ऽपयाप्तस्य सुप्ता सूर्ययगुणा स्तस्य समयहता सूर्ययगुणा यान्ता

त्रिंसेसाहिया, दार २५। खेत्ताणद्याण सद्यस्यावा पोगगला तेलुक्की उहुलोयतिरियलीए अणतगुणा अहो लीयतिरियलीए विंसेसाहिया, तिरियलीए असखिजगुणा उहुलोए असखिजगुणा अहोलीए विंसेसाहिया दिसाणद्याण सद्यस्यावा पोगगला उहुदिसाए अहोदिसाए विंसेसाहिया उत्तरपुरच्छिमेण दाहिणपच्छि मेणय दोवि तुल्ला असखेजगुणा। दाहिणपुरच्छिमेण उत्तरपच्छिमेणय दोवि तुल्ला विंसेसाहिया पुरच्छि

यावकअक्षयवधगा हार। तेइथो साकारोपयोग अस्सयातगणा चनाकारापयोग थो साकारोपयोगना कात्र वणो छे पर्याप्ता विगेषाधिक आउ कर्म ना वधथो अवधक विगेषाधिक एतल वधहार २५। मां तोजे पदे अत्यवद्वलनाहिरा इवो ऽ खिसाणद्याण सद्यस्यावा पगल तिलाके उहुलोयति रियलीए अणतगुणा। दिवै पुहलहार कहैछे—अवने प्रमाणेकरो दब्बथो जे महास्तस्य ते पैनाक्यापो थोडा पदलछे कहलक तिरछेलाके अणतगुणा। कहलोकना अयप्रदेगछे प्रतरनेफरसे तेमाटे अणतगुणा छे। अहोलायातारगलाए विंसेसाहिया तिरियलीए असखिजगुणा उहुलोए असखिजगुणा। तेइथो अर्धालाक तिउंक्लाके प्रागुक्त भाकार बेपतरने फरसे विगेषाधिकमाटे तेइथो तियक्लाके असख्यातगुणा अत्रअसख्यातगुणा माटे कहलौके अ सख्यातगुणा तियक्लाकेया कहलौक असख्यातगुणा माटे। अहानाए विंसेसाहिया दिसाणद्याण सख्योवा पगल उहुदिसाए अहोदिसाए विंसेसा हिया उत्तरपुरत्तिमण। अबोलोके विगेषाधिक अविचाराइक अविचाराइक हिबेदिमि चारप्रदेग घणो ७ राजप्रमा

[illegible]

मेण अस्संज्जगुणा पच्चच्छिमेण विमंसाहिया दाहिणं विसेसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया खेत्ताणवाएण
सव्वत्थोवाइ दव्वाइ तंलुक्के उट्ठलोयतिरियलोए अणतगुणाइ अट्ठोलीयतिरियलोए विसेसाहियाइ उट्ठलोए

ण अधोलोको समधिक ७ सातराज काइक विशेषाधिक भूवे इशानकूने विद्युत्प्रभामयवाननव कूट तेइथी उपरिखनपहन । दाहिणपञ्चालिमेणव
 दौवितुला अर्धखल्लगुणा दाहिणपुरलिमेण उत्तरपश्चिमवयदावितुला विससाहिया परच्छिमण अर्धखल्लगुणा पञ्चच्छिमण विससाहिया दाहिणेण
 विससाहिया उत्तरेण विससाहिया । दक्षिण पश्चिमे विसरिपीने असख्यातगुणै अधिकाकै तेइथी दक्षिणपूर्व उत्तरपश्चिमे प्रत्येकै २ निगपाधिक स्वस्थान
 के परम्परेसरिया इहा सीमनसुगधमाटननानव कूट तिहा मूझपट्टगलप्रभूत सपञ्जताकै तेइथी पूर्व असख्यातगुणा चवना असख्यातपणा माटे तेइथी
 पश्चिमे विशेषाधिक अधानोकयामने मण्डेभावे घणा पट्टगलना थानककै दक्षिणे विशेषाधिक भवननैसुखनेभावे पट्टगलविशेषाधिककै उत्तरपट्टगल विज
 पाधिक मानसरावरकै तैमाटे कछो पट्टगलना अश्वहस्वद्वयायी कह्यै । पिसाखुवाएण सबखोवा इ द्वाइ तिलोके उरुदलायतिरियोनाए अणतगु

न्य इन्द्रियसाक्षीपयुक्तेषु विश्रुतिकल्पेषुऽपनीतेषु द्विपञ्चाशत्कल्पेषु अनाकारोपयुक्तेषु तेषु मध्ये प्रचिमेषु द्वेक्षते षतुर्विंशत्यधिके ज्ञवत तत साकारापयुक्तस्यो नोइन्द्रियोपयुक्ता विशेषाधिका स्तस्योऽसातवेदका विशेषाधिका इन्द्रियोपयुक्तानामऽप्यऽसातवेदकत्वात् १० तस्योऽसमव हता विशेषाधिका सातवेदकानामऽप्यऽसमवहत्तत्त्वज्ञायात्, तस्यो जागरा विशेषाधिका समवहतानामऽपि केपाचि ज्ञागरत्वात् १२ । तस्य पर्याप्ता विशेषाधिका सुप्तानामऽपि केपाचि त्वयोप्तत्वात्, सुप्ताहि पर्याप्ताऽपर्याप्ता अपि ज्ञवन्ति जागरास्तु पर्याप्ता यवेतिनियम १३ । तस्योऽपि पर्याप्तस्य आयु कर्मोऽन्यथा विशेषाधिका अपर्याप्तानामऽप्यायु कर्माव्यक्तज्ञायात् १४ । इदमेवाऽल्पबहुत्व विनियोजनानुग्रहाय स्थापनारा शिजि रूपद्वयते-इह द्वे पक्षी उपययोप्रावेन न्यस्यते तत्रोपरितन्वा पक्षी आयु कर्मव्यक्तता अपर्याप्ता सुप्ता समवहता सातवेदका इन्द्रियोपयुक्ता अनाकारोपयुक्ता क्रमेण स्थाप्यत तस्या अप्रस्तव्या पक्षी तथामेव पदानामवस्थात् यथासस्यय मायुरयन्धका पर्याप्ता जागरा असमवहता अ सातवेदका नोइन्द्रियोपयुक्ता साक्षीपयुक्ता स्थापनाधेय माद्यार्मात तत्परिमाण स्याप्यते तत शेषपदानि किल जपन्तेन सस्ये यगुणानीति द्विगुणो द्विगुणाक स्तेषु स्थाप्यते तद्यथा-ह्रीं चत्वार अष्टौ योऽपि सर्वाऽपि जीवराशि रनन्तानन्तस्वरूपोऽप्यऽवदकल्पनया पदपञ्चाशदधिकशतद्वयपरिमाण परिकल्प्यते ततोऽस्मा द्राक्षीरयुर्व्यन्धकादिगता सङ्ख्या शोधयित्वा यत् शेष मऽतिष्ठति तदापुर

असरेज्ज० अहोलीए अणतगुणाइ तिरियलीए सखिज्जगुणाइ दिसाणुवाएण सस्योवाइ द्वाइ अहेदि साए उहदिसाए अणतगुणाइ उत्तरपुरच्छिमेण दाहिणपच्छिमेण दोवि तुलाइ असखेज्जगुणाइ दाहिण

॥ अहोलीयतिरियलीए विसेमादिद्याइ उहदोण अमखिज्जगुणाइ अहानाए अणतगुणाइ तिरियली० सखिज्जगुणाइ । चेवायो सयथोडा द्रव्यधर्मो भिक्कायादिदिगे नोके फरस्याकै धर्मास्तिकायपदगल महस्का समदुधातलीवेने पणित तीनलीक फरसे तेहद्व्ययाडाके अनतालीवेने पुटगलने द्रव्येक रो जोदद्वयने फरसेकरोने अनतगुणा इवे तेहयो जइलीकातयकुलीके अणगुत ख० पप्रतरवेने फरसे वेअनतगुणा इवे । तेहयो अधोलीकतिवकुलीके वि

पर्यायेषु उपर्यातेषु च मारणात्तिकसमुद्घातेन समवहताना सदा लभ्यमानत्वात्, तेभ्य सातावेदका. सद्देयगुणा आयुर्मेवकापर्याप्तकमुपैधपि सा तयेदकाना लभ्यमानत्वात्, तेभ्य इन्द्रियोपयुक्ता सद्देयगुणा असातवेदकानामपि इन्द्रियोपयोगस्य लभ्यमानत्वात्, तेभ्यो ऽनाकारोपयोगोपयुक्ता इन्द्रियोपयोगेषु नो इन्द्रियोपयोगेषु वा ऽनाकारोपयोगस्य लभ्यमात्वात्, तेभ्य. साकारोपयुक्ता सद्देयगुणा इन्द्रियोपयोगेषु नो इन्द्रियोपयोगेषु साकारोपयोगकालस्य बहुत्वात् तेभ्यो नो इन्द्रियोपयुक्ता विशेषोपयुक्ता नो इन्द्रियोऽनाकारोपयुक्ताना मपि तत्र प्रदेयात्, साकारानाका रोपयुक्तानामपि तत्र प्रदायात्, अत्र विनयजनानुद्धार्यम् ऽसद्भावस्यापनया निदशन मुच्यते-इह सामान्यत किल साकारोपयुक्ता दिनवत्यधिक शत १६२ तैव कित द्विधा इन्द्रियसाकारोपयुक्ता नो इन्द्रियसाकारोपयुक्ता तत्रेन्द्रियसाकारोपयुक्ता किलाऽतीवस्तोका इति विज्ञातिचल्या कल्पन्ते, शेष द्विसप्तत्युत्तर ज्ञात १७२ । नो इन्द्रियसाकारोपयुक्ता नो इन्द्रियाऽनाकारोपयुक्ताद्य द्विषष्वाशदकस्या स्तत सामान्यत साकारोपयुक्ते

मेण शुभखंजगुणा पञ्चच्छिमेण विमंसाहिया उत्तरेण विसेसाहिया खेत्ताणवाएणं
सद्यथोवाइ दग्गाइ तंलुक्के उहुलोयतिरियलोए अणतगुणाइ अहोलीयतिरियलोए विसेसाहियाइ उहुलोए

॥ अधोलोका समधिक् ७ सातराज काईत्त विंशपाधिक छुवे रेगानकू विद्युत्प्रभावावाजाननव कूट तेइथी उपारखनपद्मल । दाहिणपञ्चाल्यमेणय
दोबितुत्ता अर्धखिजगुणा दाहिणपुराल्यमेण उत्तरपञ्चाल्यमेणयदोवितुत्ता विससाहिया परच्छिमण अर्धखिजगुणा पञ्चच्छिमण विससाहिया दाहिणेण
विससाहिया उत्तरेण विससाहिया । दक्षिण पाथमे विसरिधाने असख्यातगुणे अधिकाकै तेइथी दक्षिणपूर्व उत्तरपाथमे प्रत्येक २ विंशपाधिक स्वस्थान
के परस्परेरिया इहा भीमनसगधमाटमनानव कूट तिहा सूक्ष्मपटुगलप्रभूत उपजताकै तेइथी पूर्व असख्यातगुणा चवना असख्यातपणा साटे तेइथी
पाथमे विंशपाधिक अधोलोकायामने संप्रभावे वणा पटुगलना यानककै दक्षिणे विंशपाधिक भवननैसखनेभावे पटुगलविंशपाधिकके उत्तरपटुगल विंश
पाधिक मानसरोवरकै तैमाटे कछो पटुगलनो अग्रवद्वलद्वयाथो कह्यै । पिसाणवाण सखत्तावा इद्व्याइ तिसोके छट्टेलोयतिरियनाए अणवगु

गोपाधिकत्वात् । तत्र पुद्गला विशेषाधिका स्तेन्य उत्तरपूर्वस्या दक्षिणपश्चिमायाच प्रत्येकमऽसुर्यगुणा स्वस्थानेन परस्पर तुल्या सत स्ते द्वेय
पि दिक्षौ रुचकाद्विनिगतं मुक्तावलिस्थितं तिर्यग्लोकातमऽधोलोकातमर्हलोकात पर्यवसिते तेन क्षेत्रस्या ऽसुर्यगुणत्वा तत्र पुद्गला असुर्येय
गुणाः क्षेत्रतु स्वस्थाने सममिति पुद्गला अपि स्वस्थाने तस्या संन्योऽपि दक्षिणपूर्वस्या उत्तरपश्चिमायाच प्रत्येक विशेषाधिका स्वस्थानेन परस्पर

पुरच्छिमेण उत्तरपश्चिमेणय दोत्रि तुलाइ विसेसाहियाइ पुरच्छिमेण असुर्यजगुणाइ पञ्चच्छिमेण वि
सेसाहियाइ दाहिणेण विसेसाहियाइ उत्तरेण विसेसाहियाइ । एएसिण जते ! परमाणुपोगलाण सखेज्जप

गोपादिक निगारेक ७ राज अधिकाभाषी तेदथी ऊर्ध्वलोके असख्यातगुणा चैत्र असख्यातगुणा माटे अधोलोके अनतगुणा अधोलोकाग्रामे चैत्रभावद्वय
काशना अनतापर्याय माटे तिर्यक्लोके कालसङ्गविशेषाधिक असख्यातगुणा इवै । दिसाणुवाएण सख्योवा इद्व्याइ अहोदिसा इद्व्याइ अ
नतगुणाइ उत्तरपश्चिमेण दक्षिणपश्चिमेण दोवितत्ताइ असखिज्जगुणाइ । द्विवेदिगि आयो सामान्यपणे द्रव्यनो अस्यवदुल्लेखे—दिगिने अनु
मारे सर्वयोद्धाद्वय अधोदिगि पाक्षलोपरे वयाणवो तेदथी ऊर्ध्वलोके अनतगुणा किम इहा ऊर्ध्वलोके मरुनो पावसेज्जन स्माटिकमयकाइ तिहा चट्टा
दित्य मभायेकरी ऊर्ध्वदिसे अनतगुणाइ तेदथी इगानकूणे तथा नैऋतिकूणे ऽ वदिगि सरीयाइ चैत्रयो असख्यातगुणा माटे । दाहिणपुरच्छिमेण उत्त
रपश्चिमेणय दोवितत्ताइ विसेसाहियाइ । असख्यातगुणा अग्निनकूणे वायवकूणे वसरिपाइ अनेविशयाधिककै विद्यत्प्रममान्नवत कूटाद्योधमकाता
दि उत्तरपश्चिमेण वयाणवो तेमाटे विगोपाधिककै । पुरच्छिमेण असखिज्जगुणाइ पञ्चच्छिमेण विसेसाहियाइ दाहिणेण विसेसाहियाइ उत्तरेण वि० ।
तेदथी पूर्वनोदिगिद्वय असख्यातगुणा चत्रयसख्यातगुणा माटे तेदथी पश्चिमे विगोपाधिक अधोलोकाग्रामादि सुखीभाववयाण पुद्गलद्वय रहित तेदथी
पश्चिमे विगोपाधिक घणै मरुनेभावै । तेदथी उत्तरदिगि विगोपाधिक मानसरोवरमे विषे लोवद्रव्यनो तेजस्कांमं पुद्गलस्कधनीय द्रव्यवयाइ तेमाटे
विगोपाधिक कहिये । एएसिण मते परमाणुपुणनाथ सखिज्जपएसियाण असखिज्जपएसियाण अणतपएसियाण खयाण दञ्जयाए पएसठयाए दञ्जप

यस्य स्वयं प्रज्ञा तन्मतिपरमाण्यादिद्रव्यजननता ततो ज्ञेयस्य ऽधीलोकं ऽर्जतगुणानि तेन स्थित्यर्थलोकं सहेयगुणानि अधोलौकिकग्रामप्रमाणानां स
 गतानां मनुष्यलोकं कालद्रव्याधारभूते सहेयानां मवाप्यमानत्वात्, साम्प्रतिदिगनुपातेन सामान्यतो द्रव्याणां मत्पवहुत्वमाह-दिसाण्वाणं सव
 त्योवाह दद्याद् अहं दिसाण इत्यादि ॥ दिगनुपातन दिगनुसारण चिन्त्यमानानि सामान्यतो द्रव्याणि स्वस्तोकानि अधोदिशि प्राग्व्यावर्णित
 म्ब्रूपाया तेन्य ऊहृदिदयऽनन्तगुणानि कारणमिति चेत्, स्यात्-इह ऊर्ध्वलोकं मेरो पञ्चयोजनशतक स्फटिकमर्थ काष्ठ तत्र चन्द्रादित्यप्रज्ञानु
 प्रवृत्ताम् द्रव्याणां क्षणादिकालप्रतिज्ञागोस्ति कालस्य च प्रागुक्तनीत्या प्रतिपरमावर्णादिद्रव्यमानस्य सत्यो ऽनन्तगुणानि सभ्य उत्तरपर्वस्यामीशान्या
 दक्षिणपश्चिमाया नैर्जतकोणे इत्यर्थः असहेयानि तत्रस्यासख्यगुणत्वात्, स्वस्थाने तु हयान्यपि परस्परं तुल्यानि समानस्तत्रत्वात्, तेन्य दक्षि
 णपूर्वस्यामान्येप्यामुत्तरपश्चिमाया सायव्यकाणे इति ज्ञाव, विशेषपश्चिकानि विद्युत्प्रज्ञमाल्यवत्तद्वृत्तानां धूमिकावर्षायादिश्लक्ष्णपुद्गलद्रव्याणां
 यदूना सप्तधा तस्य पूर्वस्या दिशि असख्यगुणानिलोत्तस्यां सख्यगुणत्वात्, तेन्य पश्चिमाया विशेषपश्चिकानि अधोलौकिकग्रामेषु शुपिरजा
 यतो यदूना पुद्गलद्रव्याणामवस्थानात्, ततो दक्षिणस्यां दिशि विशेषपश्चिकानि यदूनावनशुपिरजावात्, तत उत्तरस्यां विशेषपश्चिकानि तत्र मा
 नससरसि जीवद्रव्याणां तदाश्रितानां तेषामननपुद्गलस्त्वमाह-एवमिह जने । परमाणुपुद्गलाणां सरेज्जपणसियाण मित्यादि ॥ पाठसिद्धि ॥ नवर मन्त्रात्वयदुल्य
 तवनाया सर्वत्र तया स्वान्नात्म्य कारण वाच्य साम्प्रत्यतेपामेव कत्रप्राधान्येमात्पवहुत्वमाह-एवमिह जने । एगपयसो गढाणमित्यादि ॥ इह क्षत्रा

कत्ररेरि हितो व्युप्यावा? गो० । सवृत्यावा अणतपदेसिया खया दवृठयाए परमाणुपोगला दवृठयाए व्यु

परमाणु पुद्गलजननतगुणार्हे । सखिलजपणसिया खया दवृठयाए अस० पणसट्टाए सवृत्यावा अणत
 परासयाखया । सवृत्यातप्रदगखनं द्रव्ययो सवृत्यातगुणार्हे स्वभावै असवृत्यातगुणार्हे सर्वदोडा अनतप्रदेशाखध । परमाणुप

र तुल्याः कथं विशेषाधिका इति चेत् उच्यते-इष्ट सीमनसगन्धमादनेषु सप्त २ फूटानि विद्युत्प्रज्जमाल्यवती नव २ तेषुष कूटेषु धूमिका अवश्या
यादिमून्मपुद्गला प्रज्जता सम्भवन्ति ततो विशेषाधिका स्वस्थाने तु क्षेत्रस्य पर्वतादेश समानत्वा तुल्या स्तेन्य पूवस्मा दिशि असस्येयगुणा ज्ञे
त्रस्याऽऽस्येयगुणत्वात्, तेन्य पश्चिमाया विशेषाधिका अधोलोकीक्रियांमेषु शुषिर्ज्जावती बहूना पुद्गलानामऽवस्थानज्जावात्, तेन्यो दक्षिणस्या
विशेषाधिका बहुव्रवनशुषिर्ज्जावात्, तेन्य उत्तरस्या विशेषाधिका यत उत्तरस्यामाऽयामधिकज्जात्र्या सस्येययोजनकोटीकोटीप्रमाणं मानस
सर स्तत्र ये जलचरा पनकसेवालादयश्च सत्वा स्ते अतिवह्य इति तेषा ये तैजसकार्मणपुद्गला स्ते अधिका प्राप्यते इति पूर्वोक्तेभ्यो विशेषाधि
का तदेव पुद्गलविषयमल्पधुत्वमुक्त मिदानी सामान्यतो द्रव्यविषय क्षेत्रानुपातेन आह-येत्ताणुवाएण सवत्योवाड दद्याद् तेलोके इत्यादि ॥ हे
ज्जानुपातेन विष्यमानानि द्रव्याणि सर्वसोक्तानि त्रैलोक्यसप्रधानि यतो घर्मास्तिकायाऽधर्मास्तिकायाकाशास्तिकायद्रव्याणि पुद्गलास्तिकायस्य
महास्कन्धाजीवास्तिकायस्य मारणान्तिकसमुद्घातेना तीव्रसमयहता जीवा त्रैलोक्यव्यापिन स्तेचाल्ये इति सर्वसोक्तानि, तेन्य जडलोकतियंलोके
प्राणुक्तस्वरूपप्रतरद्रव्यात्मके अनन्तगुणानि अनती पुद्गलद्रव्यं रनती जीवद्रव्यं स्तस्य सस्पञ्जनात्, तेन्यो ऽधोलोकीतिर्यंग्लोके विशेषाधिकानि जड
लोकतियंलोकादधोलोकीतिर्यंग्लोकस्य मनाग् विशेषाधिकत्वात्, तेन्य जडलोकं असङ्ख्यगुणानि क्षेत्रस्याऽऽसस्येयगुणत्वात्, तेन्यो ऽधोलोके च
नन्तगुणानि 'कथमिति चेत् उच्यते इहाधोलोकीयामेषु कालोस्ति तस्यच कालस्य तत्पत्तरमाणुसस्येयाऽऽसस्येयाऽनन्तमादेशिजडव्यक्षेत्रकालज्जावययो

देसियाणं अस्खिज्जापदेसियाणं अणतपदेसियाणय खंधाणं दव्वठयाए पएसठयाए पएसठयाए पदेसठयाए

एसठयाए । हिंवे परमाणुपुद्गल सख्यातप्रदेश अनन्तप्रदेशान्नी अभ्यर्बद्वलकक्षेत्रे-हेभगवन् एहने परमाणुपुद्गलनट्यने संख्यातप्रदेशी असस्यातप्रदेशीने
अनन्तप्रदेशीने खंधने द्रव्यधो प्रदेशीयो द्रव्यने अर्थे प्रदेशेने द्रव्याधि प्रदेशायए माहि । कयरे २ हिती अणवा ४ भोगमा सवत्यावा अणतपणिसिया खंधा
दव्वठयाए परमाणुपुद्गलादव्वठयाए अणतगुणा । केहा २ थो थोडा थथा ४ हेहीतम सर्वथोडा अनन्तप्रदेशो मिसो नोपनाखध तेथोडा सभावैणै द्रव्यथो

यस्य स्वयं यज्ञा रमति परमाश्रयादिद्रव्यऽमनन्तता ततो अथ गत्यऽधोलोके उत्तमगुणानि तेभ्य स्तियं लोके सहेयगुणानि अधोलोकीकग्रामप्रमाणानां श्रुताना मनुष्यलोके कालद्रव्याधारचूते सहेयाना मवाप्यमानत्वात्, साम्प्रतिदिगनुपातेन सामान्यतो द्रव्याणा मल्पबहुत्वमाह-दिसाणवापण सव त्पोवाह दद्याह अहे दिसाप इत्यादि ॥ दिगनुपातेन दिगनुसारण चिन्त्यमानानि सामान्यतो द्रव्याणि सवस्तोकानि अघोदिशि प्राग्व्यावर्णित स्वरूपाया तेभ्य ऊर्ध्वदिदपऽनन्तगुणानि किकारणमिति चेत्, उच्यते-इह ऊर्ध्वलोके मेरो पञ्चयोजनशतक स्मृतिं कर्मय काष्ठ तत्र चन्द्रादित्यप्रमानु प्रयक्षाद् द्रव्याणा क्षणादिकालप्रतिज्ञागोस्ति कालस्यच प्रागुक्तनीत्या प्रतिपरमाणवादिद्रव्यमानगत्या सन्न्यो अनन्तगुणानि तभ्य उत्तरपूर्वस्वामीणां च दक्षिणपश्चिमाया तैर्ज्ञातकोणे इत्यथा, असहेयानि क्षत्रस्यासख्येयगुणत्वात्, स्वस्थाने तु हयान्यपि परस्पर तुल्येनि समानक्षत्रत्वात्, तेभ्य दक्षि णपूर्वस्यामान्येभ्यामुत्तरपश्चिमाया वायव्यकाण इति ज्ञाव, विज्ञापयिचकानि विद्युत्प्रक्षमात्यवन्तकटाश्रितानां धूमिकावश्यायादिस्पर्शदण्डपुद्गलद्रव्याणा यदूना सम्भवा तन्न्य पूर्वस्या दिशि असख्येयगुणानि क्षेत्रस्या सख्येयगुणत्वात्, तेभ्य पश्चिमाया विज्ञापयिचकानि अधोलोकीकग्रामेषु शुपिरक्षा यतो यदूना पुद्गलद्रव्याणामवस्थानात्, ततो दक्षिणस्या दिशि विज्ञापयिचकानि बहुनवनशुपिरक्षावात्, तत उत्तरस्या विज्ञोपायिचकानि तत्र मा नससरश्च जीवद्रव्याणा नवस्थानात्, ततो दक्षिणस्या दिशि विज्ञोपायिचकानि बहुनवनशुपिरक्षावात्, तत उत्तरस्या विज्ञोपायिचकानि तत्र मा नानामनन्तप्रदक्षाना परस्परमल्पबहुत्वमाह-एगसिण जते । परमाणुपुद्गलाना सरययमदक्षाना असख्येयप्रदे क्षानामनन्तप्रदक्षाना परस्परमल्पबहुत्वमाह-एगसिण जते । परमाणुपुग्गलाण सख्येयसिंसाण मित्यादि ॥ पाठसिद्ध ॥ नवर मजाल्पयदुत्त्व तवनाया सर्वत्र तथा स्वानाव्य कारण वाच्य साम्प्रत्यतेषामेव क्षत्राधान्येमाल्पबहुत्वमाह-एगसिण जते । एगपसोरागाढाणमित्यादि ॥ इह क्षत्रा

कत्ररेर हितो अप्यावा? गो० ! सख्योवा अणंतपटंसिया खधा दक्ष्णयाए परमाणुपोगला दक्ष्णयाए अण

परमाणु पुद्गलमननगुणाहे । सखिल्लपणंसिया खधादक्ष्णयाए सखिल्लगुणा असखिल्लपणंसिया खधा दक्ष्णयाए अस० पणसक्ष्णयाए सख्योवा अणत पणंसियाखधा । सख्यातप्रदमखन द्रव्यथो सख्यातगुणाहे स्वभावै त्रसख्यातप्रदयो खव द्रव्यथो असख्यातगुणाहे सर्वथांडा अनतप्रदेगोखध । परमाणप

गकप्रदेशाऽगानपरिणामपरिणामानां परमागदीनां भवकाशप्रदानपरिणामेन परिणतो नवर्तते इति । तेन सख्येयप्रदेशावगाढा पुद्गला द्रव्या यतया सख्येयगुणाः, कथमिति चेत् ? उच्यते-इहापि क्षेत्रस्याप्राधान्यात् क्षणिकाद्यनन्ताणुरसकत्वा द्विप्रदेशावगाढा यकद्रव्यत्वेन विभक्तन्ते तानि

गाढाण सखेज्जपदेसोगाढाण असखिज्जपदेसोगाढाणय पोगलाण दव्वठयाए पदेसठयाए दव्वठपदेसठयाए कयरे २ हितो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा एगपदेसोवगाढा पुगला दव्वठयाए सखेज्जपएसोत्रगा ढा पुगला दव्वठयाए सखिज्जगुणा असखिज्जपदेसोगाढा पोगला दव्वठयाए असखिज्जगुणा पदेसठयाए सव्वत्थोवा एगपदेसोगाढा पोगला पदेसठयाए सखिज्जपदेसोगाढा पोगला दव्वठयाए सखेज्जपदेसोगाढा पोगला पदेसठयाए असखेज्जगुणा दव्वठपदेसठयाए सव्वत्थोवा एगपदेसोगाढा पोगला सखेज्जपदेसोगाढा पोगला पदेसठयाए सखेज्जगुणा तेच पएसठयाए सखेज्जगुणा

द्रव्ययो प्रदग्यो द्रव्याय प्रदेयार्थे किं हार यो याहा घण इत्यादि हेतौ तम । सवत्थावा पुगला एगपएसोगाढा दव्वठयाए सखिज्जपएसोगाढा पुगला एगपएसोगाढा दव्वठयाए सखिज्जगुणा । सर्वथाहा पुद्गलप्रदेशावगाढा द्रव्याय सख्यातप्रदेशावगाढा पद्गलप्रदयो सख्यातगणा । असखिज्जपएसोगाढा पुगला दव्वठया ए असखिज्जगुणा । असख्यातप्रदेशावगाढा पद्गल द्रव्याय असख्यातगुणा । एगसव्वथाए सवत्थावा एगपएसोगाढा पुगला पएसठयाए प्रदेशावगाढा पद्गलप्रदग्यो । सखिज्जपएसोगाढा पद्गल पएसठयाए सखिज्जगुणा । सख्यातप्रदेशावगाढा पद्गलप्रदग्यो सख्यातगुणा । असखिज्जपएसोगाढा पुगला पएसठयाए असखिज्जगुणा । असख्यातप्रदेशावगाढा पद्गलप्रदग्यो असख्यातगुणा । दव्वठपएसठयाए सवत्थावा एगपएसोगाढा पुगला दव्वठपएसठयाए । द्रव्यायप्रदेशार्थायां सर्वथाहा एकप्रदेशावगाढा पद्गलद्रव्याय चपदग्याय । सखिज्जपएसोगाढा पुगला दव्वठयाए सखिज्जगुणा । सख्यातप्रदेशावगाढा पुद्गल द्रव्याय सख्यातगुणा । तस्य पएसठयाए स० । तिमहाज प्रदग्यो सख्यातगुणा । असखिज्जपएसोगाढा पुगला दव्वठयाए ।

च तथाप्राप्तानि पुद्गलद्रव्याणि पूर्वोक्तस्य सस्येयगुणानि तथाहि-सर्वलोकप्रदेशा स्वत्वतो उच्येया अपि असत्कल्पनया दश परिकल्प्यन्ते ते च प्रत्येकचित्ताया दशैवेति दश एकप्रदेशावगाढानि पुद्गलद्रव्याणि लब्धानि तेष्वेव दशसु प्रदेशान्यग्रहान्यान्यमोक्षणद्वारेण बहवो द्विकसयोगा लभ्यन्ते इति अवश्येकप्रदेशावगाढस्यो द्विप्रदेशावगाढानि पुद्गलद्रव्याणि सस्येयगुणानि एव तेभ्योपि त्रिप्रदेशावगाढानि स्वमुत्तरोत्तर याव दुरुष्ट सस्येयप्रदेशावगाढानि, सत स्थितमेतत् एकप्रदेशावगाढस्य सस्येयप्रदेशावगाढपुद्गला द्रव्यार्थतया सस्येयगुणा इति, यद्य तेभ्यो उच्येयप्रदेशावगाढा पुद्गला द्रव्यायतया सस्येयगुणा असङ्गातस्य असङ्गातमेदमित्यस्यात्, प्रदेशायतासूत्रं द्रव्यार्थपर्यायाथेतासूत्रञ्च सुगमत्वात् स्वयं ज्ञातव्यं

असखिज्जपसोगाढा पोगगला दव्वठयाए अस्खेज्जगुणा तेचंच पएसठयाए अस्खिज्जगुणा । एएसिण जत्ते ! एगसमयठितीयाणं सखिज्जसमयठितीयाण अस्खिज्जसमयठितीयाणय पोगगलाण दव्वठयाए पदे सठयाए दव्वठपदेसठयाए कयरे २ हितो अप्पावा ४ ? गायमा ! सव्वत्थोवा एगसमयठिईया पोगगला दव्वठयाए सखेज्जसमयठितीया पोगगला दव्वठयाए सखेज्जगुणा अस्खिज्जसमयठिईया पोगगला दव्वठयाए सखेज्जसमयठिईया पोगगला पदेसठयाए सव्वत्थोवा एगसमयठिईया पोगगला पदेसठयाए सखेज्जसमयठिईया पोगगला

असदयातप्रदेशावगाढ पुद्गला द्रव्यार्थे । असखिज्जगुणा तस्य पएसठयाण अस० । असदयातगुणा तिमहीजपदेयार्थे असदयातगुणा णत्तिण भत्ते एगसमयठिईयाण सखिज्जसमयठिईयाण । हेमगवेन् एह एकसमयनो प्रतिमानो सद्यातसमयनो प्रतिमानो । असखिज्जसमयठिईयाणय पोगगलाण दव्वठयाण असखिज्जसमयनो प्रतिमापुद्गला द्रव्यार्थे । पएसठयाण प० दव्वठप० सठयाण । प्रदेयार्थो ज्ञेयार्थप्रदेयार्थे । कयरे २ हितो अप्पावा ४ गो० । किंवा २ यो यत्पवणा इत्यादि हेतुतम । सव्वत्थोवा एगसमयठिईया पोगगला दव्वठयाण । सर्वयोहा एकसमयनो प्रतिमापुद्गलस्य तेद्वयो । सखिज्जसमयठिईया पोगगला दव्वठयाए सखि० । सद्यातसमयनो प्रतिमापुद्गलस्य तेद्वयो सद्यातगुणा । असखिज्जसमयठिईया पोगगला दव्वठयाए अस० । असद्यातसमयनो प्र

परस्रुथाए संखिजगुणां अस्खिजसमयठिईया पोगला पदेस्रुथाए अस्खिजगुणा दव्रुथयपदेस्रुथाए सव्रुथोवा एगसमयठिईया पुगला दव्रुथपरस्रुथाए सखेजसमयठिईया पोगला दव्रुथयाए सखेजगुणा तेचेव पदेस्रुथाए सखेजगुणा अस्खिजसमयठिईया पोगला दव्रुथयाए अस्खिजगुणा तेचेव पदेस्रुथयाए अस्खिजगुणा । एएसिण भते । एगगुणकालगण सखिजगुणकालगणं अस्खेजगुणकालगण अणतगुणकालगणय पोगलाण दव्रुथयाए पदेस्रुथाए दव्रुथपदेस्रुथाए कयरं कयरं हिता अष्पावा ४ ? गोयमा ! जहा परमाणुपोगला तहा नाणियव्वा, एव सखेजगुणकालयाणवि, एव सेसाणवि वसरस

तिमापुहलखे तेइथी द्रव्य अस्रुथातगुणा । परस्रुथाए सव्रुथोवा एगसमयठिईया । पदेगाथे सव्रुथोवा एकसमयस्थितानि । पुगला परस्रुथाए सखिजसमयठिईया । पुहलप्रदेगाथे स्रुथातगुणा । पगला परस्रुथाए सखि० । पदलप्रदेगाथे स्रुथातगुणा । असखिजसमयठिईया पुगला परस्रुथाए अस० दव्रुथपरस्रुथाए । अस्रुथातसमयनो स्थितिपुहलप्रदेगाथे स्रुथातगुणा द्रव्यप्रदेगाथे । सव्रुथोवा एगसमयठिईया पुगला दव्रुथपरस्रुथाए सव्रुथोवा एकसमयनो स्थितिमान पदलद्रव्यप्रदेयने । सखिजसमयठिईया पुगला दव्रुथाए सखि० । स्रुथातसमयनो प्रतिमा पुहलद्रव्याथे स्रुथातगुणी । तेचेव परस्रुथाए सखि० । तिमडोलप्रदेगाथे स्रुथातगुणा । असखिजसमयठिईया पुगला दव्रुथाए अस० । अस्रुथातसमयस्थितिना पदलद्रव्यथी अस्रुथातगुणा । तेचेव परस्रुथाए अस० एसिण भते । तिमडोलप्रदेगे अस्रुथातगुणा हेमयवन् । एगगुणकालगण सखिजगुणकालगण एइएकगुणकालादिकालने स्रुथातगुणाकोले । असखिजगुणकालगण । अस्रुथातगुणा कालने । अणतगुणकालगणय पगलाय दव्रुथयाए परस्रुथयाए । अनतगुणाकालने पदलने द्रव्यथी प्रदेगाथी । दव्रुथपरस्रुथाए कयरं हिता अष्पावा ४ गो० । द्रव्यथी प्रदेगाथे किडार अन्य घणा इत्यादि हेगो० । सव्रुथोवा जहा परमाणुपगला तहा भा० । सव्रुथोवा निमपरमाणुपदल तिम सर्वकहिवा एवं सखिजगुणकालयाणवि एव सेसावि वय, गधरुसा भाषि

नीयम्, कातत्रावसूत्रायपि सुगमत्वा तस्यैवावयितव्यानि नवर॥ जहा योगला तद्वा ज्ञापियद्वा इति॥ यथा प्राक् सामान्यत पुद्गला उक्तास्तथा
एकगुणकालकादयोपि वक्तव्याः, तेष्वेव-सर्वतोवा अणतपर्यसिया सधा एगगुणकालगा परमाणुपोगला दध्ठयाए एगगुणकालगा अणतगुणा
सखेज्जपएसिया सधा एगगुणकालगा सखेज्जगुणा असखेज्जगुणा पयसठयाए सध्ठयोवा अणतपर्यसिया
राधा एगपरमाणुपोगला एगगुणकालगा अणतगुणा इत्यादि॥ एव सख्येयगुणकालकाना मनत्तगुणकालकानामपि वाच्य मेध शोषवर्णगन्धरसा अपि
वक्तव्या, ककशसुदुगुणलघव रपशो यथा एकप्रदेशाद्यवगाढा ज्ञापिता स्या वक्तव्या तेष्वेव-सर्वतोवा एगपरसोगाढा एगगुणकल्पकफावा दध्ठ
ठयाए सखेज्जपएसोगाढा एगगुणकल्पकफासा दध्ठयाए सखेज्जगुणा इति, एव सख्येयगुणकल्पकशरपशो असख्येयगुणकल्पकशरपशो वाच्या, एव
सुदुगुणलघव अवज्ञोया इत्यादि शोसादय रपशो यथा यर्णादय उक्ता स्या वक्तव्या सात्र पाठोप्युक्तानुसारेण सुगमत्वात् स्वय ज्ञावनीयो, गत
पुद्गलद्वार ॥ २६ ॥ इदानी महादुरुक्त विवशु गुरुमापृच्छति-अहजते । त्यादि ॥ अथ प्रदत्त । सर्वजीवाल्यबहुत्ववक्तव्यतात्मक

गंधा ज्ञापियद्वा, फासाण कस्करुमउयगरुयलज्जयाण जहा एगपदेसोगाढाणं ज्ञापिय तद्वा ज्ञापियद्वां अत्र
सेसा फासा जहा वसा ज्ञापिया तद्वा ज्ञापियद्वा दार २६ । अह जते ! सर्वजीवप्पज्ज महादंरुयं वत्तइ
स्सामि सर्वतोवा गप्पवक्कतियमणुस्सा मणुस्सीअं सखेज्जगुणाअं वादरतंउकाइयापज्जत्तया अस्सखिज्जगुणा

यद्वा । इम सएगा० कालपिण इम दोळा वणं गंधरए सर्वं कहिवा । फासाण कस्करुमउयगरुयल जहाण । फरसथो कर्कमउरुसुत्तधु । जहाणगपरसोगा
ढाण भणिय तद्वाभा० । एहनै णकजिम प्रदेशाविगाद कछो तिमकहिथो । अवसेसा फासा तज्जहा वसा भणिया तद्वा भा० दार। याकताफरस जिम
ह्या तिम कहिवा पुद्गलद्वार इति २६ दार समोसं द्वे । द्विवे महादउककहेकै जीवो अण्यबहुत्व । अह भते सख्खोवपयवहुमहादउय। वत्तइस्सामि
इमगंवन् एह सर्वजीवो अठा भागे । सवत्तोवागधवक्कतियमणुस्सा । सर्वधाइया जीवगंभजमनुय । मणुस्सोभां सखिज्जगुणांभां व्यापरतेउकाइउपपज्जसया

महादशदशक यत्तायिद्यामि रसयिष्यामीति तात्पर्याच्च, अनेन मतं भाषयति-तीर्थकरानुधाभावापेक्ष यत्र जगज्जान् गणपर मृदुरवता प्रतिप्रज
सते ननुन श्रुताभ्यामसुरस्वरमिति, यद्वैतल्लोपयति कुञ्जलिपि कमेति विनयेन गुह्यमनापुष्ट्या न प्रयतिस्तथ किन्तु तदनुधापुरस्वर मन्वया यिने
यत्तायोनात् विनयेत्यदि लक्षणमिदं-गुरोर्विषयितात्मायां गुह्यनामानुयत्तं। मुक्तयप्यष्टतानित्य सविनेप प्रकीर्तित ॥ १ ॥ गुरोऽपि य प्रज्वनी

अणुहरोववाहुया देवा अस्येज्जगुणा उवरिमगेवेज्जगुणा मज्जिमगेवेज्जगुणा देवा सखेज्ज
गुणा हेठिमगेवेज्जगुणा देवा सखेज्जगुणा अणुएकप्ये देवा सखेज्जगुणा अरणे कप्ये देवा सरोज्जगुणा पा
णए कप्ये देवा सखेज्जगुणा अणएकप्ये देवा ससिज्जगुणा अहे सप्तमाए पृढवीए णेरहुया अस्येज्जगुणा
ठठीए तमाए पृढवीए नेरहुया अस्येज्जगुणा सहरसरि कप्ये देवा अस्येज्जगुणा महासुक्के कप्ये देवा अस्येज्जगुणा
ज्जगुणा पचमाए धूमप्यन्नाए पृढवीए णेरहुया अस्येज्जगुणा लतए कप्ये देवा अस्येज्जगुणा, चउत्थीए पकप्ये

अस्येज्जगुणा अणुसराववाहया नम, खज्जगुणा । तेह्वी मनुष्यो सख्यातगुणो २० यो तेह्वी वादतेवजाउपयोगा चसख्यातगुणा नसख्यात यन्,
सरोपयातद्वता असख्यातगुणा । उवरिमगवेज्जगुणादेवा सखिज्जगुणा । तेह्वी उपरिनामकयेवकद्वता सख्यातगुणा । माउफमगदिग्गगाटया स
खिज्जगुणा विट्ठिमगवेज्जगुणादेवा सखिज्जगुणा । मध्यमगेवेयकदिक्कनादेवता सख्यातगुणा तह्वी ठठनापि कतादेवता सख्यातगुणा । पचउकप्येदेवा
सखिज्जगुणा । तेह्वी अच्युतद्व सख्यातगुणा । आरणेकप्येदेवा सखिज्जगुणा माणएकप्येदेवा सखिज्जगुणा । पानतनादेव सख्यातगुणा । पहेमसमा
पठवीएनेरहुया सखिज्जगुणा । तेह्वी पाचि मातनीनरकानारको सख्यातगुणा छडा ११ रकानानारको अ
सख्यातगुणा । सहरसरिकप्येदेवा असखिज्जगुणा । तह्वी सहरसरकप्यनाउनेता चमस्यातगुणा । मडासक्केकप्येदेवा असखिज्जगुणा । तेह्वी मरागु
नाह्य असख्यातगुणा । पचमाए धूमप्यन्नाए पृढवीएनेरहुया असखिज्जगुणा । पाउम, नरकानानारको चवस्यातगुणा । मणउकप्येदेवा असखिज्जगुणा

नीयम्, कातन्नावसूत्रायपि सुगमत्वा त्वयस्मावपितव्यानि नवर॥ जहा पीगला तथा नाणियद्या इति ॥ यथा प्राक् सामान्यत पुद्गला उक्तास्तथा
 एगुणानाललादयोपि वक्तव्याः, तेचैव-सह्योवा परमाणुपोगला दद्वठयाए एगुणकालगा अणतगुणा
 सरेज्जपएसिया सथा एगुणकालगा सखेज्जगुणा असखेज्जपएसिया सथा एगुणकालगा पयसठयाए सव्योवा अणतपएसिया
 सथा मगपरमाणुपोगला एगुणकालगा अणतगुणा इत्यादि ॥ एवं सखेयगुणकालकाना मनत्तगुणकालकानामपि वाच्य मेव शेषवर्णेगन्तरसा अपि
 वक्तव्या, फक्तशसुदुगुरुतपव स्पशो यथा एकमदेशाद्यावगाढा जणिता सथा वक्तव्या तेचैव-सह्योवा एगपएसोगाढा एगुणकल्पकफावा दद्व
 ठयाए सखेज्जपएसोगाढा एगुणकल्पकफासा दद्वठयाए सरेज्जगुणा इति, एष सखेयगुणकल्पकफासा असखेयगुणकल्पकफासा वाच्य, एव
 मुदुगुरुतपव अवज्ञोपा सत्थार शीतादय स्पशो यथा वर्णादय उक्ता सथा वक्तव्या सत्त पाठोप्युक्तानुसारेण सुगमत्वात् स्वय ब्रावनीयो, गत
 पुद्गतद्वार ॥ २६ ॥ इदानी महादक्रक विवशु नुरुमापच्छति-अहजते । त्यादि ॥ अथ प्रदत्त । सर्वजीवाल्यबहुत्वं सर्वजीवाल्यबहुत्ववक्तव्यतात्मक

गथा नाणियद्या, फासाण कस्करुमउयगरुलज्जयाण जहा एगपदेशोगाढाणं नाणिय तथा नाणियद्यं अत्र
 सेसा फासा जहा वया नाणिया तथा नाणियद्या दार २६ । अह जते ! सहजीवप्यज्ज महादक्रयं वत्तइ
 स्सामि सह्योवा गप्पवक्तितियमणस्सा मणस्सीनु सखेज्जगुणात्ता वादरतेउकाइयापज्जत्तया अस्सखिज्जगुणा

यथा । इम सयगा० कालपिण इम बोक्का वर्णे गधरस सर्वं कहिवा । फासाण कस्करुमउयगरुलज्जयाण । जहा एगपएसोभा
 टाणे भणिय तहाभा० । एहने एकजिम प्रदेशावगाढ कळी तिमकहिवा । यवसेसा फासा तलहा वया भाणिया तथा भा० दार । याकता फरस जिम क
 द्या तिम कहिवा पुद्गतद्वार इति ३ पटे २६ दार समत्त दूवे । दिवे मेहादउकहे के जीवना अल्पवहुल । अह भते सखजीवप्यवदुमहादउय वत्तइस्सामि
 देमगवन् एह सर्वजीवनो अठा भागे । सख्योवागअवक्तितियमणुक्का । सर्वथाढा जीवगभजमनुय । मणुक्कोभा सखिज्जगुणाभा व्यायरेतेउकाइयपज्जत्तया

हेतो श्रेयसख्येयप्रागस्या सख्येयगुणत्वात् १४, तेज्यो महाशुक्ले कल्पे देवा असख्येयगुणा विमानवाप्तुत्वात्, तथाहि-पट्सहस्राणि विमानानां सहस्रारकल्पे चत्वारिंशत् सहस्राणि महाशुक्ले अन्यद्वाधाविमानवासिनो देवा बहुबहुतरा स्तोकस्तोकतरा द्योपरितनोपरितनविमानवासिन तत सहस्रारदेवेभ्यो महाशुक्लकल्पे देवा असख्येयगुणा १५। तेज्योपि पञ्चमधूमप्राप्तिधाननरकपृथिव्या नैरयिका असख्येयगुणा वृहत्तमश्रेयसख्ययन्नागवर्त्तनप्रदेशराज्ञिप्रमाणात् १६। तेज्योपि तान्तके कल्पे देवा असख्येयगुणा अतिवृहत्तरश्रेयसख्ययन्नागवर्त्तनप्रदेशराज्ञिप्रमाणात् १७। तेज्योपि चतुष्या पङ्कप्रजाया पृथिव्या नैरयिका असख्येयगुणा युक्तिप्रागुक्तैव ज्ञावनीया १८। तेज्योपि ब्रह्मलोकं कल्पे देवा असख्येयगुणा युक्तिप्रागुक्तैव १९। तेज्योपि तृतीयस्या वालुकाप्रजाया पृथिव्या नैरयिका सख्येयगुणा २०। तेज्योपि मार्हेन्द्रकल्पे देवा असख्येयगुणा २१। तेज्योपि सनत्कुमारकल्पे देवा असख्येयगुणा युक्तिरसवत्रापि प्रागुक्तैव २२। तेज्यो द्वितीयस्या शर्कराप्रजाया पृथिव्या नैरयिका असख्येयगुणा एतैव सप्तमपृथिवीनारकादयो द्वितीयपृथिवीनरकपर्यन्ता प्रत्येक स्वस्थाने चिन्त्यमाना स

ज्ञाए पुढवीए नेरइया असखेज्जगुणा वनलोए कप्पे देवा असखेज्जगुणा तच्चाए वालुयप्पजाए पुढवीए जे रइया असखेज्जगुणा माहिदे देवा असखिज्जगुणा सणकुमारे कप्पे देवा असखेज्जगुणा दोच्चाए सक्करप्प ज्ञाए पुढवीए णरइया अस० समुच्चिममणस्सा असखेज्ज० ईसाणं कप्पे देवा अस० ईसाणं कप्पे देवीजे

चउत्थीए पक्कयभाए पुढवीएनेरइया असखिज्जगुणा। तातकटवत्ता असखगतागुणा तेहजो वीयोनारकनानारको असखगतागुणा। व्यभक्तोएकपेटेया असखिज्जगुणा। वल्ललोकनादेव असखगतागुणा। तथोए वालुयप्पभाए पुढवीएनेरइया असखिज्जगुणा। तोजोनरकनारको असखगतागुणा। माहेट्टेकप देवा अस० मणकमारैकपेटेया असखिज्जगुणा। माहेट्टेकपनादेव असखगतागुणा सनत्कुमारदेव असखगतागुणा। दासाए सक्करप्पभाए पुढवीएनेरइ या अस० समुच्चिममणस्सा अस०। वीजोनरकनानारको असखगतागुणा। तेहजो समुच्चिममण्य असखगतागुणा। ईसाणैकपेटेया असखिज्जगुणा

य स गवर्तुषो-धर्मज्ञो धर्मकर्ता च सदा धर्मप्रवर्तक ॥ सत्वेभ्यो धर्मज्ञान्मार्थं देशको गृहस्तुष्यते ॥ १ ॥ इति, महादशक वक्तव्यिण्यामीत्युक्तं तत प्र
तिज्ञातमेव निर्वाहयति-सद्यो वा गदमवकृति यमगृह्येत्यादि ॥ सर्वस्वोका गर्जयुक्तान्तिका मन्यया सख्येयकोटीकोटीप्रमाणत्वात् १, तेभ्यो मानु
ष्यो मनुजस्त्रिय सङ्ख्येयगुणा समविज्ञातिगुणत्वात्, उक्तञ्च-सप्तावीसगुणापुण मणुयास्तदहिंयाचेवेति ॥ २ ॥ ताभ्यो वादरतैजस्कापिका पर्याप्ता
असङ्ख्येयगुणा कतिपयवर्गन्यूनाधिकाधनसमयप्रमाणत्वात् ३, तेभ्यो अनुत्तरोपपातिनो देवा असङ्ख्येयगुणा, हेतुपल्योपमासङ्ख्येयज्ञागवर्तिनञ्च प्रदे
शाराशिप्रमाणत्वात् ४, तेभ्य उपरितनग्रेव्येयकत्रिकदेवा सङ्ख्येयगुणा. दृष्टत्तरेत्रपल्योपमासङ्ख्येयज्ञागवर्तिनञ्च प्रदशराशिप्रमाणत्वा देतदपि कथम
वसेय मितिचे द्रुच्यते-विमानद्यादुल्यात्, तथाह्यनुत्तरदेवाना पञ्चविमानानि विमानज्ञत तूपरितनग्रेव्येयकत्रिकप्रतिविमानवा ऽसङ्ख्येया देवा यथा
२ वाधोवर्तीनि विमानानि तथा २ देवा अपि प्राचुर्येण तज्यन्ते, ततोऽवसीयते अनुत्तरोपपातिदेवेभ्यो दृष्टत्तरेत्रपल्योपमासङ्ख्येयज्ञागवर्त्योकाज्ञा

प्रदेशराशिप्रमाणा उपरितनग्रेव्येयकत्रिकदेवा एव सुहृत्त्रापि ज्ञावना कार्या यावदानतकल्प ५, तेभ्योपुपरितनग्रेव्येयकत्रिकदेवेभ्यो मध्यमग्रेव्येयक
त्रिकदेवा सङ्ख्येयगुणा ६, तेभ्यो व्यघस्तनग्रेव्येयकत्रिकदेवा सख्येयगुणा ७, तेभ्यो व्यच्युतकल्पदेवा सङ्ख्येयगुणा ८, तेभ्यो प्यारणकल्पदेवा सख्ये
यगुणा यद्यप्यारणाच्युतकल्पो समश्रेणीको समविमानसत्याकीच तथापि कप्रपाक्षिका स्तथास्वाज्ञाव्यात् प्राचुर्येण दक्षिणस्या दिशि समुत्पद्यन्ते
नोत्तरस्या बहवश्च कप्रपाक्षिका स्तोका शुरुपाक्षिकां स्ततो द्युतकल्पदेवापेक्षया आरणकल्पे देवा सख्येयगुणा ९, तेभ्योपि प्राणतकल्पे देवा
सख्येयगुणा १०, तेभ्योप्यानतकल्पे देवा सख्येयगुणा ज्ञावना आरणकल्पश्च त्रकतंवा ११, तेभ्यो ऽथ सप्तमनरकपृथिव्या नैरयिका असख्येयगुणा
श्रेण्यसख्येयज्ञागतेनञ्च प्रदशराशिप्रमाणत्वात् १२, तेभ्य पृथिव्या नैरयिका असख्येयगुणा यतश्च प्रागेव दिगनुपातेन नैरयिकाल्पबहुत्वचि
त्ताया नादित १३, तभ्योपि सहस्रारकल्पदेवा असख्येयगुणा यष्टथिबीनैरयिकपरिमाणहेतुश्रेण्यसख्येयज्ञागापेक्षया सहस्रारकल्पदेवपरिमाण

वैपि पनीकृतलोकश्रेण्यसख्येयज्ञागवर्तिनश्च प्रदेशराशिप्रमाणा द्रष्टव्या केवल श्रेण्यसख्येयज्ञागोऽसख्येयभेदज्ञिनस्तत इत्यनवरयेयुगुतया अल्प बहुत्वमन्त्रिधीयमान न विरुध्यति २३ । तैम्यो द्वितीयतरकपृथिवीनारकेभ्यः समृच्छिममनुया असख्येयगुणा स्तोहि अद्भुतमात्रज्ञेयप्रदेशराशौ सख्येय न्थिनि तृतीयवर्गमूलेन गुणिते प्रथमवर्गमूले यावान् प्रदेशराशि स्तावत्प्रमाणानि स्रक्तानि यावन्त्यकस्यामेव प्रादेशिक्याश्रणी जयन्ति तावत्प्रमाणा २४ । तेभ्य ईशाने कल्पे देवा असख्येयगुणा यतोद्भुतमात्रज्ञप्रदेशराशौ सख्येयानि द्वितीये वर्गमूले तुनीयेन वर्गमूलन गुणिते यावान् प्रदेशराशि जयति तावत्प्रमाणा स्तु पनीकृतस्य लोकस्यैकप्रादेशिकीषु श्रणिषु यावन्तो नत्र प्रदेशा स्तावत्प्रमाणा इशानकल्पगतो देवदेवीसमुदाय स्तद्ग

सखे०, सोहम्मे कल्पेदेवा सखेज० सोहम्मे कल्पे देवीनु सखेजगुणानु नवगवासीदेवा अ्सखेजगुणा न वगवासिणीनु देवीनु सखिजगुणानु । इमीसे रयणप्यन्नाए पृढवीए णंरडया अ्ससिजगुणा सहचरपचि दियतिरिक्कजोणिया पुरिसा अ्सखेजगुणा खहचरपचिदियतिरिक्कजोणिणीनु सखिजगुणानु थलयरपचि दियतिरिक्कजोणिया पुरिसा अ्सखेजगुणा थलयरपचिदियतिरिक्कजोणिणीनु सखिजगुणानु जलयरप

ग्वाणेकपदेवीसो सखिजगुणीया । तेहथो इयाननादव असख्यातगुणा तेहथो इयाननोदेवी अ्सख्यातगुणे । ता, सदेवा सखिजगुणा सोहम्मे कल्पे देवीया सखिजगुणीया । तेहथो सोधर्मनादव सख्यातगुणा । तेहथो सोधर्मदेवा सख्यातगुणो । भवणवामीदेवा भवणवामीदेवा सखि० । तेहथो भवनपतिदेवता असख्यातगुणा तेहथो भवनपतिनोदेवी सख्यातगुणी । सोमेरवणपभाए पृढवीणनेरया भवण खहचरपचिदियतिरिक्कजोणीया पुरिसा सखि० । तेहथो रत्नप्रमानारका असख्यातगुणा तेहथो खचरपचिदियतिरिक्कजोणीया सख्यातगुणा । सुहचर चादयतिरिक्कजोणीया सो स० थलयरपचिदियतिरिक्कजोणिया पुरिसा स० । तेहथो थलयरपचिदियतिरिक्कजोणीया सख्यातगुणा । जलयरपचिदियतिरिक्कजोणीया पुरिसा स० । तेहथो ज

प्रज्ञाया पृथिव्या नैरियिज्ञा असस्येयगुणा अहुलमात्रकेनप्रदेशराशौ सम्यग्निनि प्रथमवर्गभूते द्वितीयेन वर्गभूतेन गुणिते यावान् प्रदेशराशि स्ता
वत्प्रमाणापु अणिपु यावन्त आकाशप्रदेशा स्तावत्प्रमाणात् ३१ । तस्योपि सचरपचेद्वियतिर्यगोनिजा पुरुषा असहेयगुणा मतरा ऽसहेयता
गवत्सहेयभोगिनञ्च प्रदेशराशिप्रमाणात् ३२ । तेज्योपि सचरपञ्चन्द्रिया स्तिर्यगोनिजा रिय सस्येयगुणा स्थिगुणत्वात्, तिगुणातिरूढय
द्विया तिरियाणइत्यियामुण्येयद्या इतिवचनात् ३३ । तान्य स्थलचरपचेद्विया स्तिर्यगोनिजा पुरुषा सस्येयगुणा दृढतरप्रतरासस्येयजागवत्स्य
स्येयश्रेणिगताकाशप्रदेशराशिप्रमाणात् ३४ । तेस्य स्थलचरपञ्चन्द्रियतिर्यगोनिजा रिय सस्येयगुणा स्थिगुणत्वात् ३५ । तस्यो जलचरपञ्च
न्द्रियतिर्यगोनिजा पुरुषा सस्येयगुणा दृढतमप्रतरासस्येयजागवत्स्यसरेयश्रेणिगताकाशप्रदेशराशिप्रमाणात् ३६ । तस्यो जलचरपञ्चन्द्रियति
र्यगोनिकास्त्रिय सस्येयगुणा रियगुणत्वात् ३७ । तान्यो व्यक्तरा देवा पुवेदोदयिन सस्येयगुणा यत -सरयेयोजनकोटाकोटीप्रमाणाणि शूची

रूपाणि सगणानि यावत्स्येकस्मिन् प्रतरे भवति तावत् सामान्येन व्यक्तरा केवलमिह पुरुषाविवक्षिता इति सकलसमुदायापेक्षया किंचिदूनद्वा
त्रिशतमनागकल्पा वेदितव्या ततो घटते जलचरयुवतिष्य सस्येयगुणा ३८ । तेज्यो ध्यन्तय सस्येयगुणा द्वानिश्चदुशत्वात् ३९ । तान्यो ज्योतिष्क
देया सस्येयगुणा स्तेहि सामान्यत पट्पञ्चाशत् अधिकशतद्वयाहुलप्रमाणानि शूचीरूपाणि सगणानि यावत्स्येकस्मिन् प्रतरे भवति तावत्प्रमाणा
परमिह पुरुषा विवक्षिता इति ते सकलसमुदायापेक्षया किंचिदूनद्वात्रिशतमनागकल्पा प्रतिपत्तव्या स्तत उपपद्यन्ते, व्यन्तरीज्य सस्येयगुणा
४० । तेज्यो ज्योतिष्कदेश्य सस्येयगुणा द्वानिश्चदुशत्वात् ४१ । तान्य सचरपञ्चन्द्रियतिर्यगोनिजानपुका सस्येयगुणा जोयित अशस्येयगुणा इ
तिपाठ म न समीचीनो यत इत ऊद य पयासचतुरिन्द्रिया वक्ष्यते तेषां ज्योतिष्कदेवापेक्षया सस्येयगुणा गवोपपद्यन्त तयाहि -पट्पञ्चाशदधि
कशतद्वयाहुलप्रमाणानि शूचीरूपाणि सगणानि यावत्स्येकस्मिन्प्रतरे भवति तावत्प्रमाणा ज्योतिष्का एकध-ऊप्पनदीसयाहुल सस्येयसहिज्ञादय

नचात्र पाठज्जमो यतोऽन्यत्राप्युक्तं-इंसाणेष्वप्येव यहीसगुणाउर्होतिदेवीते । संखेज्जासोह्मे तनुश्रसद्याप्रवणवार्सा ॥ १ ॥ २७ । इति, तेज्योपि त
सिखेव सीधमंजले देव्य सख्येयगुणा हात्रिशदुणत्वात् । सध्याविद्यतो सगुणाउर्होतिदेवीतेइतिवचनात् २८ । ताज्योप्यसरययगुणा प्रवनवासि
न कयामितिचेत् २९ अहुलमात्रक्रेत्रप्रदेशराज्ञा सख्यन्विनि प्रथमे वर्गमूले तृतीयेन वर्गमूले गुणिते यावान् प्रदेशराशि भवति तावत्प्रमाणाद्यु घ
नीकृतस्य लोकास्य एकप्रदेशिकीपु श्रोणपु याधतो नत्र प्रदेशा स्थावरप्रमाणो प्रवनपतिदेवद्वीसमुदाय तद्गतकिञ्चिदनुद्वात्रिशद्भागकल्पा इ प्रवनप
तयो देवा स्ततो घटते सीधमंदेवीत्य स्ते ऽसख्येयगुणा २९ । तेज्यो प्रवनवासिनोदेव्य सख्येयगुणा हात्रिशत्गुणत्वात् ३० । ताज्यो प्यस्या रत्न

विसेसाहिया वेइदिया पज्जत्ता विसे० । पचिदिया अपज्जत्तया असखिज्जगुणा चउरिदिया अपज्जत्तया
विसेसाहिया तेइदिया अपज्जत्तया विसेसाहिया वेइदिया अपज्जत्तया विसेसाहिया पत्तेयसरीरवादर
णस्संडकाइया पज्जत्तया असखेज्जगुणा वादरनिगोदा पज्जत्तया अपज्जत्तया वादरपुढाविकाइया अप
ज्जत्तया असखेज्जगुणा वादरअण्डकाइया पज्जत्तया असखिज्जगुणा वादरवाउकाइया पज्जत्तया असखि

उरेदियपज्जत्तया वि० । पचेद्विय अपर्वात्ता असख्यातगुणा चौरिद्विय अपर्वात्ता विशेषाधिक । तं ददिय अपज्जत्तया वि० वेददिय अपज्जत्तया विसेसा०
तेद्विय अपर्वात्ता विशेषाधिक वेद्विय अपर्वात्ता विशेषाधिक । पत्तेयसरीरवावरण्डकाइयापज्जत्तया अस० । प्रत्येकशरीरवादर वनस्पतिकारक पर्या
प्ता असख्यातगुणा । वायरनिगोयपज्जत्ता अस० वायरपुढवीकाइयपज्जत्तया अस० । वादरनिगोदीवापर्याप्ता असख्यातगुणा वादरपुढीकारकपर्या
प्ता असख्यातगुणा । वायरवाउकाइयपज्जत्तया अस० वायरवाउकाइयपज्जत्तया अस० । वादर अण्डकाइयापर्याप्ता असख्यातगुणा वादरवाउकाइ
यापर्याप्ता असख्यातगुणा । वायरतेउकाइय अपज्जत्तया अस० । वादरतेउकाइया अपर्वात्ता असख्यातगुणा । पत्तेयसरीरवायरवणस्सरकाइय अप
ज्जत्तया अस० । प्रत्येकशरीरवादर वनस्पतिकारक वायरपुढवीकाइय अपज्जत्तया अस० । वायरनिगोय अपज्जत्तया अस० वायरपुढवीकाइय अपज्जत्तया अस० । वादर

निगात् पर्याता अस० वादरप्रायवोकाइका पर्याता अस० । वादर आसकाइया अपज्जतगा अ० । वादर आकाइया पर्याता असयातगुणा ।
 वादरवाचकाइय अपज्जतगा अ० । वादरवाचकाइक पर्याता असयातगुणा । सुहुमतेउकाइया अपज्जतगा अस० । सुहुमतेउकाइक पर्याता
 यमव्यातगुणा । सुहुमपटवाकाइया अपज्जतगा वि० सुहुम वाचकाइ अपज्जतगा वि० । सुहुमवाचकाइय अपज्जतगा वि० । सुहुमपटवोकाइक पर्याता
 विगोपारिक सुहुमपटवाकाइक विगोपाधिक सुहुमवाचकाइक पर्याता विगोपाधिक । सुहुमपटवोकाइय अपज्जतगा स० सुहुमपटवोकाइयपज्जतगा वि० स०

पपर । लोभमिषिहीरड्डति अङ्गुलसङ्ख्येयज्ञागमात्राणि शूचीरूपाणि खगलानि यावत्येकस्मिन्प्रतरे नवति तावत्प्रमाणा शतुरिन्द्रिया उक्तव-प
 कृतापज्जता इति चतुश्चमन्त्रिणोऽवदहरति । अङ्गुलसङ्ख्येयज्ञागमात्राणि शूचीरूपाणि खगलानि यावत्येकस्मिन्प्रतरे नवति तावत्प्रमाणा शतुरिन्द्रिया उक्तव-प
 ह्येयगुण ततो ज्योतिष्कदेवापेक्षया परित्राव्यमाना पर्याप्तचतुरिन्द्रियान्यपि सङ्ख्येयगुणा एवघटते किंपुन पर्याप्तचतुरिन्द्रियापेक्षया सङ्ख्येयज्ञागमा
 त्रयचरपञ्चेन्द्रियनपुसका इति ४२ । तेज्योपि जलचरपञ्चेन्द्रियनपुसका सङ्ख्येयगुणा ४३ । तेज्योपि जलचरपञ्चेन्द्रियनपुसका सङ्ख्येयगुणा ४४ । ते
 ज्योपि पर्याप्तचतुरिन्द्रिया सङ्ख्येयगुणा ४५ । तेभ्योपि पर्याप्ता सञ्जज्ञेदन्तिना पञ्चेन्द्रिया विज्ञोपाधिका ४६ । तेज्योपि पर्याप्ता द्वीन्द्रिया
 विज्ञोपाधिका ४७ । तेज्योपि पर्याप्तेद्वीन्द्रिया विज्ञोपाधिका ४८ । यद्यपि पर्याप्तचतुरिन्द्रियादीना पर्याप्तत्रिन्द्रियपर्यन्ताना प्रत्येकमङ्गुलासंख्येयज्ञा
 गमात्राणि शूचीरूपाणि खगलानि यावत्येकस्मिन् प्रतरे नवति तावत्प्रमाणत्वमविज्ञोपेक्षान्यत्र वक्ष्यते तथाप्यङ्गुलासंख्येयज्ञागस्य सङ्ख्येयज्ञेदन्तिनात्वा

दित्यविज्ञोपाधिकत्वमुच्यमान न विरुद्ध उक्तचेत्य मल्पयदुत्वं मन्यत्रापि ततो नपुसक रानपरसरेज्जा थलयरजलयरनपुसका चतुरिन्द्रिय तउपशवि
 तपज्जज्ञकिचक्षिया इति ४८ । तेज्योपि पर्याप्तत्रिन्द्रियेभ्यो अपर्याप्ता पञ्चेन्द्रिया असङ्ख्येयगुणा ४९ । अङ्गुलासंख्येयज्ञागमात्राणि खगलानि शूचीरू
 पाणि यावत्येकस्मिन् प्रतरे नवति तावत्प्रमाणत्वात् ४९ । तेज्य शतुरिन्द्रिया अपर्याप्ताविज्ञोपाधिका ५० । तेज्योपि द्वीन्द्रिया अपर्याप्ता विज्ञो
 पाधिका ५१ । तेज्यो द्वीन्द्रिया अपर्याप्ता विज्ञोपाधिका यद्यपि चापर्याप्ता शतुरिन्द्रियादयो अपर्याप्तेद्वीन्द्रियपर्यन्ता प्रत्येकमङ्गुलास्य सङ्ख्येयज्ञाग
 मात्राणि खगलानि शूचीरूपाणि यावत्येकस्मिन् प्रतरे नवति तावत्प्रमाणा अन्यत्राविज्ञोपेक्षोक्ता स्थाप्यङ्गुलासंख्येयज्ञागस्य विचित्रत्वा दित्य वि
 ज्ञापाधिकत्व मुच्यमान न विरोधमास्कदति ५२ । तेज्योपि द्वीन्द्रियापराप्तेभ्य प्रत्येकवादरवनस्पतिकारिका पर्याप्ता असंख्येयगुणा यद्यपि चा
 पर्याप्तद्वीन्द्रियादिवत् पर्याप्तवादरवनस्पतिकारिका अप्यङ्गुलासंख्येयज्ञागमात्राणि शूचीरूपाणि खगलानि यावत्येकस्मिन् प्रतरे नवति तावत्प्रम

जोपाधिका ७१ । तेज्योपि सूक्ष्मनिगोदा अपर्याप्तका असुर्येयगुणा ७२ । तेज्योपि पर्याप्ता सूक्ष्मनिगोदा 'सुर्येयगुणा यद्यपिच पर्याप्ततेज
 स्कायिकादय पर्याप्तसूक्ष्मनिगोदपर्यन्ता अविज्ञोपेणाऽन्यत्राऽसुर्येयलोकाकाशाप्रदेशराशिप्रमाणा उक्ता स्याताऽपि लोकाऽसुर्येयत्वस्याऽसुर्येय
 प्रेदन्निद्रत्वादित्यमल्पबहुत्वमग्निधीयमानमुपपन्न इष्टव्य ७३ । तेज्योऽजर्वासृष्टिका अनन्तगुणा जगन्मयुक्तानन्तप्रमाणास्त्यात् ७४ । तस्य प्रतिपति
 ससम्यग्दृष्टयोऽनन्तगुणा ७५ । तेज्य सिद्धा अनन्तगुणा ७६ । तेज्योपि यादववनस्पतिकायिका पर्याप्ता अनन्तगुणा ७७ । तेज्योपि सामान्यतो
 यादवपर्याप्ता विज्ञोपाधिका यादवपराप्राप्तपृथिवीकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ७८ । तेज्यो वादरापर्याप्तवनस्पतिकायिका असुर्येयगुणा ए
 कैक्यादरनिगोदपर्याप्तनिश्रयासुर्येयगुणाना यादरापर्याप्तनिगोदाना सम्भवात् ७९ । तेज्य सामान्यतो वादरापर्याप्ता विज्ञोपाधिका वादरा
 पर्याप्तपृथिवीकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ८० । तेज्य सामान्यतो वादरा विज्ञोपाधिका पर्याप्ताऽपर्याप्ताना तत्र प्रक्षेपात् ८१ ।
 तेज्य सूक्ष्मवनस्पतिकायिका अपर्याप्ता असुर्येयगुणा ८२ । तेज्य सामान्यत सूक्ष्मा अपर्याप्ता विज्ञोपाधिका सूक्ष्माऽपर्याप्त पृथिवी
 कायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ८३ । तेज्य सूक्ष्मवनस्पतिकायिका पर्याप्तका सुर्येयगुणा पर्याप्तसूक्ष्माऽमऽपर्याप्तसूक्ष्मेज्य स्वप्ता

विसेसाहिया वादरा सुजमयणस्सइकाइया अ्पज्जत्तया सुजमा अ्पज्जत्तया
विसेसाहिया सुजमवणस्सइकाइया पज्जत्तया सखेज्ज० सुजमपज्जत्तया विसेसाहिया सुजमा विसेसाहि

वि० वायव्यसूक्त्यादय अपञ्जत्तगा अस० । वाटरपर्याप्ता विशेषाधिक वाटरवनस्पतिकारक अपर्याप्ता असत्यातगुणा । जीवादायरा अपञ्जत्तगा वि० वायरविसेसाहिया । सहृमवणस्त्रिका य अपञ्जत्तगा अस० सहृमअपञ्जत्तगा वि० । मूर्धनवनस्पतिकारक अपर्याप्ता असद्यातगुणा सूक्ष्म अप र्याप्ता विशेषाधिक । सहृमवणस्त्रिकारक य अपञ्जत्तगा स० सहृमपञ्जत्तगा वि० । मूर्धनवनस्पतिकारक पर्याप्ता सदस्यातगुणा सूक्ष्मपर्याप्ता विशेषाधिक । सहृमावि० भवसिंहिया विसेसाहिया निगायचौथा विससाहिया । मूर्धाविशयाधिक तेहथी भवसिंहिया विशेषाधिक तेहथी निगादलोव विशेषाधिक ।

गुणा असह्येलोकाकाशप्रदेशराक्षीप्रमाणत्वात् ५८ । तेन्य प्रत्येकवारीरवादरवनस्पतिकायिका अपर्याप्ता असह्येयगुणा ५९ । तेन्योपि वादर-
निर्गोदा अपर्याप्तका असह्येयगुणा ६० । तेन्यो वादरपृथिवीकायिका अपर्याप्ताका असह्येयगुणा ६१ । तेन्यो वादराप्तायिका अपर्याप्ता अस-
ह्येयगुणा ६२ । तेन्यो वादरवायुकायिका अपर्याप्ता असह्येयगुणा ६३ । तेन्य सूक्ष्मतेजस्कायिका अपर्याप्ता असह्येयगुणा ६४ । तेन्य सूक्ष्म-
पृथिवीकायिका अपर्याप्ता विशेषाधिकका ६५ । तेन्य सूक्ष्माप्तायिका अपर्याप्ता विशेषाधिकका अपर्याप्ता विज्ञो-
पाधिकका ६६ । तेन्य सूक्ष्मतेजस्कायिका अपर्याप्ता विशेषाधिकका ६६ । तेन्य सूक्ष्मवायुकायिका अपर्याप्ता विज्ञो-
पाधिकका ६७ । तेन्य सूक्ष्मतेजस्कायिका पर्याप्तका असह्येयगुणा अपर्याप्तकमूलेन्य पर्याप्तसूक्ष्माणा स्वभावतएव प्राचुर्येण ज्ञावात् तथाचाह-
अस्याय प्रज्ञापनाया सुहृन्निर्गार - जीवाणमऽपज्जता बहुतरगावायराणविज्ञेया सुदुर्माण्यपज्जता उहेण्यकंयलीविति ॥ ६८ ॥ तेन्योपि सूक्ष्म-
पृथिवीकायिका पर्याप्ता विशेषाधिकका ६९ । तेन्योपि सूक्ष्माप्तायिका पर्याप्ता विज्ञेयवायुकायिका पर्याप्ता वि-

मपुढविकाइया पज्जत्तगा विसंसाहिया सुज्जमअण्डकाइया पज्जत्तगा विसंसाहिया सुज्जमवाउकाइया पज्ज-
त्तगा विसंसाहिया सुज्जमणिगोदा अपज्जत्ता असखे० सुज्जमणिगोदा पज्जत्तया सखिज्जगुणा अज्जवसिद्धि-
या अणत्तगुणा पण्डितिय सम्मदिठी अणत्तगुणा सिद्धा अणत्तगुणा वादर वणसरसइकाइया पज्जत्तगा अ-
णत्तगुणा वादरपज्जत्ता विसंसाहिया वादरवणसरसइकाइया अपज्जत्तया असखिज्जगुणा वादरअपज्जत्तया

इमवाउकाइय पज्जत्तगा वि० । सज्जतेउकाइकपर्याप्ता सख्यातगुणा सत्तापृथवोकाइकपर्याप्ता विशेषाधिक सूक्ष्मप्रकाइकपर्याप्ता विशेषाधिक ।
सुंमवाउकाइयपज्जत्तगा वि० सुंमनिगोय अपज्जत्तगा अ० । सन्धवायकाइकपर्याप्ता विशेषाधिक सूक्ष्मनिगोद अपर्याप्ता असख्यातगुणा । सुंम-
निगोयपज्जत्तगा स० अमवसिद्धिया अणत्तगुणा पण्डितियममत्तगा अथ० सिद्धाअण० । सुंमनिगोदपर्याप्ता सख्यातगुणा तेद्वो अमवसिद्धिक अज्जत्तगुणा
प्रतिपत्तितसम्यग्गटि अज्जत्तगुणा सिद्ध अज्जत्तगुणा । वायरवणसरसइकाइयपज्जत्तगा अण० । वादरवणसरसइकाइकपर्याप्ता अज्जत्तगुणा । वायरपज्जत्तगा

जोपाधिका ७१ । तेभ्योपि सूक्ष्मनिगोदा अपर्याप्तका असुर्येयगुणा ७२ । तेभ्योपि पर्याप्ता सूक्ष्मनिगोदा यद्यापच पर्याप्ततल
 स्कायिकादय पर्याप्तसूक्ष्मनिगोदपर्यन्ता अविशेषणाऽसुर्येयलोकाकाशप्रदेशराशिप्रमाणा उक्ता स्थाऽपि लोकाऽसुर्येयत्वस्याऽसुर्येय
 श्रेदन्नित्वादित्यमत्पवहुत्वमत्रिबीथमानमपत्नं द्रष्टव्य ७३ । तेभ्योऽजवसिष्टिका अनन्तगुणा जघन्ययुक्तानन्तप्रमाणात्वात् ७४ । तेभ्य प्रतिपति
 तस्यगद्गृह्योऽनन्तगुणा ७५ । तेभ्य सिद्धा अनन्तगुणा ७६ । तेभ्योपि वादरजनस्पतिकारिका पर्याप्ता अनन्तगुणा ७७ । तेभ्योपि सामान्यतो
 यादरपर्याप्ता विशेषाधिका वादरपर्याप्तपृथिवीकारिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ७८ । तेभ्यो वादरापर्याप्तयनस्पतिकारिका असुर्येयगुणा न
 कैकवादरनिगोदपर्याप्तनिश्रयासुर्येयगुणाना वादरापर्याप्तनिगोदाना समवात् ७९ । तेभ्य सामान्यतो वादरापर्याप्ता विशेषाधिका वादरा
 पर्याप्तपृथिवीकारिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ८० । तेभ्य सामान्यतो वादरा विशेषाधिका पर्याप्ताऽपर्याप्ताना तत्र प्रक्षेपात् ८१ ।
 तेभ्य सूक्ष्मजनस्पतिकारिका अपर्याप्ता असुर्येयगुणा ८२ । तेभ्य सामान्यत सूक्ष्मा अपर्याप्ता विशेषाधिका सूक्ष्माऽपर्याप्त पृथिवी
 कारिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ८३ । तेभ्य मूलजनस्पतिकारिका पर्याप्तका सूर्येयगुणा सूर्यापर्याप्तसूक्ष्मेभ्य स्वज्ञा

विसेसाहिया वादरा विसेसाहिया सुजमवणस्सइकाइया अपजत्तया सुजमा अपजत्तया
विसेसाहिया सुजमवणस्सइकाइया पजत्तया सखेज्जं सुजमपजत्तया विसेसाहिया सुजमा विसेसाहि

वि० वायव्यखण्डकादय अपलत्तगा अस० । वाटरपर्याप्ता विशेषाधिक वाटरवनस्पतिकारक अपर्याप्ता असत्यातगुणा । जीनावायरा अपलत्तगा वि० वायराविसेसाहया । सुहुमवणखण्डकाऽय अपलत्तगा अस० सुहुमअपलत्तगा वि० । मूलवनस्पतिकारक उपर्याप्ता असद्यातगुणा सद्धम अपर्याप्ता विशेषाधिक । सुहुमवणखण्डकादयपलत्तगा स० सहमपलत्तगा वि० । मूलवनस्पतिकारकपर्याप्ता सदयानगुणा मूलपर्याप्ता विशेषाधिक । सुहुमावि० भवसिद्धिया विसेसाहया विससाहया । मूलायनचौरा निगायचौरा विशेषाधिक तेहयो भवसिद्धिया विशेषाधिक तेहयो निर्गोदोजीव विशेषाधिक ।

गुणा असह्येयलोकाकाशप्रदेशरश्मिप्रमाणत्वात् ५८ । तेन्य मयेकक्षरीरवाद्दरवनस्पतिकायिका अपर्याप्ता असह्येयगुणा ५९ । तेन्योपि वादर
निर्गोदा अपर्याप्तका असह्येयगुणा ६० । तेन्यो वादरपृथिवीकायिका अपर्याप्तका असह्येयगुणा ६१ । तेन्यो वादराप्तायिका अपर्याप्ता अस
ह्येयगुणा ६२ । तेन्यो वादरवायुकायिका अपर्याप्ता असह्येयगुणा ६३ । तेन्य सूक्ष्मतेजस्कायिका अपर्याप्ता असह्येयगुणा ६४ । तेन्य सूक्ष्म
पृथिवीकायिका अपर्याप्ता विज्ञेयायिका ६५ । तेन्य सूक्ष्मायिका अपर्याप्ता विज्ञेयायिका ६६ । तेन्य सूक्ष्मवायुकायिका अपर्याप्ता विज्ञे
यायिका ६७ । तेन्य सूक्ष्मतेजस्कायिका अपर्याप्तका असह्येयगुणा ६८ । तेन्य सूक्ष्मवायुकायिका अपर्याप्ता तथाचाह-
अस्यास्व प्रज्ञापनाया सहृद्विहार - जीवाणामपपञ्जता बहुतरगावायराणविक्रया सुदुर्माययज्जन्ता उरेण्यकैवरीविति ॥ ६८ ॥ तेन्योपि सूक्ष्म
पृथिवीकायिका पर्याप्ता विज्ञेयायिका ६९ । तेन्योपि सूक्ष्मायिका पर्याप्ता विज्ञेयायिका ७० । तेन्योपि सूक्ष्मवायुकायिका पर्याप्ता वि

मपुढविकाइया पज्जत्तगा विनेसाहिंया सुज्जमच्छाउकाइया पज्जत्तगा विसंसाहिंया सुज्जमवाउकाइया पज्ज
त्तगा विसंसाहिंया सुज्जमणिगोदा अपज्जत्ता असखे० सुज्जमणिगोदा पज्जत्तया संखिज्जगुणा अज्जवसिद्धि
या अणत्तगुणा पक्खिवात्तिय सम्मदिठी अणत्तगुणा सिद्धा अणत्तगुणा वादर वणरसइकाइया पज्जत्तगा अ
णत्तगुणा वादरपज्जत्ता विसंसाहिंया वादरवणरसइकाइया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा वादरअपज्जत्तया

इमथाउकाइय पज्जत्तगा वि० । सूक्ष्मतेजस्काइकपर्याप्ता सख्यातगुणा सूक्ष्मपृथिवीकाइकपर्याप्ता विज्ञेयायिका निज्ञेयायिका ।
सुद्धमवाउकाइयपज्जत्तगा वि० सुद्धमणिगोद अपज्जत्तगा अ० । सूक्ष्मवायुकाइकपर्याप्ता विज्ञेयायिका निज्ञेयायिका । सुद्धम
णिगोदपज्जत्तगा स० प्रभवसिद्धिया अणत्तगुणा पडिवाडिअममसत्ता अण० सिद्धाअण० । सूक्ष्मणिगोदपर्याप्ता सख्यातगुणा तेहद्वी प्रभवसिद्धिक अज्जत्तगुणा
प्रतिपत्तितसम्यग्दृष्टि अज्जत्तगुणा सिद्ध अज्जत्तगुणा । वादरवणरसइकाइयपज्जत्तगा अण० । वादरवणरसइकाइयपज्जत्तगा अण० । वादरवणरसइकाइयपज्जत्तगा अण० । वादरवणरसइकाइयपज्जत्तगा अण० ।

त्रोपाधिका ७१ । तेभ्योपि सूत्रमनिगोदा असुरयेयगुणा ७२ । तेभ्योपि पर्याप्ता सूत्रमनिगोदा यद्यपिच पर्याप्ततेन स्कायिकादय पर्याप्तसूत्रमनिगोदपर्यन्ता अविशेषेणाऽन्यथाऽसुरयेयलोकाकाशप्रदेशाणिप्रमाणा उक्ता स्तथाऽपि लोकाऽसुरयेयत्वस्याऽसुरयेय प्रेदञ्जितत्वादित्यमल्पबहुत्वमन्निधीयमानमुपपन्नं द्रष्टव्य ७३ । तेभ्यो ऽनवशिष्टिका अनन्तगुणा जगन्मयुक्तानन्तकप्रमाणाश्चात् ७४ । तेभ्योपि प्रतिपत्ति तसम्यग्द्रष्टव्योऽनन्तगुणा ७५ । तेभ्य सिद्धा अनन्तगुणा ७६ । तेभ्योपि यादववनस्पतिकायिका पर्याप्ता अनन्तगुणा ७७ । तेभ्योपि सामान्यतो यादरपर्याप्ता विशेषाधिका वादरपर्याप्तपृथिवीकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ७८ । तेभ्यो यादरपर्याप्तनस्पतिकायिका असुरयेयगुणा म कैक्यादरनिगोदपर्याप्तनिश्रयासुरयेयगुणाना यादरपर्याप्तनिगोदाना समवात् ७९ । तेभ्य सामान्यतो यादरपर्याप्ता विशेषाधिका यादरा पर्याप्तपृथिवीकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ८० । तेभ्य सामान्यतो यादरा विशेषाधिका पर्याप्ताऽपर्याप्ताना तत्र प्रक्षेपात् ८१ । तेभ्य सूत्रमवनस्पतिकायिका अपर्याप्ता असुरयेयगुणा ८२ । तेभ्य सामान्यत सूत्रा अपर्याप्ता विशेषाधिका सूत्राऽपर्याप्त पृथिवी कायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ८३ । तेभ्य सूत्रमवनस्पतिकायिका पर्याप्तका सुरयेयगुणा पर्याप्तसूत्राणामऽपर्याप्तसूत्रेभ्य स्वप्ता

विसेसाहिया वादरा विसेसाहिया सुजमवणस्सइकाइया अपज्जत्तया सुजमा अपज्जत्तया
विसेसाहिया सुजमवणस्सइकाइया पज्जत्तया ससेज्ज० सुजमपज्जत्तया विसेसाहिया सुजमा विसेसाहि

वि० वायववणस्सइकाइय अपज्जत्तया अस० । वादरपर्याप्ता विशेषाधिक वादरवनस्पतिकारक अपर्याप्ता मसव्यातगुणा । लोथावायरा मपज्जत्तया वि० वायराविसेसाहिया । सुहुमवणस्सइका.य अपज्जत्तया अस० । सुहुमवणस्सइकाइय अपर्याप्ता अनन्तगुणा सूत्रा अपर्याप्ता विशेषाधिक । सुहुमवणस्सइकाइयपज्जत्तया स० । सुहुमवणस्सइकाइयपज्जत्तया वि० । सूत्रमवणस्सइकाइयपज्जत्तया सूत्रपर्याप्ता विगेयाधिक । सुहुमावि० भवसिविया विसेसाहिया निगायजीवा विसेसाहिया । सूत्रविगेयाधिक तेहयो भवसिहिया विगेयाधिक तेहयो निगोदोव विगेयाधिक ।

वत सदैव सारथेयगुणतया प्राप्यमागत्वात्, तथाकेवलवेदसोनुपलब्धे ८४। तेज्योपि सामान्यत सूक्ष्मा पर्यापता विशेषाधिका पर्यापतसूक्ष्मपृथिवीकायिकादीनामऽपि तत्र प्रक्षेपात् ८५। तेज्य पर्यापताऽपर्यापतविशेषणरहिता सूक्ष्मा विशेषाधिका अपर्यापतसूक्ष्मपृथिव्यपतजोवायुवनस्पतिकायिकानामऽपि तत्र प्रक्षेपात् ८६। तेज्योऽपि प्रवसिद्धिका ज्ञेये सिद्धि र्यया ते प्रवसिद्धिका ज्ञेयाविशेषाधिका ज्ञेययुक्तानन्तकमात्राऽमव्यपरिहारेण सर्वजीधानां ज्ञेयत्वात् ८७। तेज्य सामान्यतो निगोदजीवा विशेषाधिका इह प्रक्षेपात् आदरसूक्ष्मनिगोदजीवराशावेव प्राप्यन्ते नाऽन्यत्राऽन्येया सर्वपाऽमपि मिलिता नामसरयल्लोकाकाशप्रदेशराजिप्रमागत्वात्, अत्रव्याद्य युक्तानन्तकसत्यामात्रपरिमाणस्ततो प्रव्यापत्तया ते किंचिन्मात्रा ज्ञेयाश्च प्रागऽज्यपरिहारेण चिन्तिता इदानीतु आदरसूक्ष्मनिगोदचित्ताया तेषां प्रक्षेप्यन्ते इति विशेषाधिका ८८। तेज्य सामान्यतो वनस्पतिजीवा विशेषाधिका प्रत्यक्षशरीरिणामपि वनस्पतिजीवाना तत्र प्रक्षेपात् ८९। तेज्य सामान्यत एकेन्द्रिया विशेषाधिका आदरसूक्ष्मपृथिवीकायिकादीनामपि तक्षेपात् ९०। तेज्य सामान्यत स्तिर्यग्योनिका विशेषाधिका पर्यापतापर्यापतद्वित्रिच

या ज्ञवसिद्धिया विसेसाहिया निगोदा जीवा विसेसाहिया वणरसइजीवा विसेसाहिया एगिदिया विसेसाहिया तिरिक्कजीणिगया विसेसाहिया मिच्छुदिठी विसेसाहिया अविरया विसेसाहिया ठउमत्या विसेसाहिया सजोगी विसेसाहिया ससारत्या विसेसाहिया सव्वजीवा विसेसाहिया ॥ पणवणाए नगवइए

वणरसइजीवा विसेसाहिया एगिदिया विसेसाहिया । वनस्पतिजीव विशेषाधिक एकेन्द्रिय विज्ञेयाधिक । तिरिक्कजीणिगया विसेसाहिया मिच्छुदिठी विसेसाहिया । तेहथी तिरिक्कजीनिगया विज्ञेयाधिक तेहथी मिच्छुदिठी विज्ञेयाधिक । अविरया विसेसाहिया सकसाहिया विसेसाहिया छउमत्या विसेसाहिया सजोगी विसेसाहिया ससारत्या विसेसाहिया । तेहथी अविरया विसेसाहिया सकसाहिया विज्ञेयाधिक । छउमत्या विज्ञेयाधिक सजोगी विज्ञेयाधिक । ससारत्या विज्ञेयाधिक । सव्वजीवा विसेसाहिया ८८ पणवणाए नगवइए विसेसाहिया । तेहथी सर्वजीव विज्ञेयाधिक । तेहथी सर्वजीव विज्ञेयाधिक सिद्धिजोताए ८८

तुरिन्द्रियतिर्यकपञ्चेन्द्रियाणामपि तत्र प्रक्षेपात् ८१ । तेन्य श्रुतगतिज्ञाविनो मिथ्यादृष्टयो विज्ञोपाधिका इह कतिपयाविरतसम्पदृष्ट्यादिसञ्ज्ञा
व्यतिरिक्तेण ज्ञेया सर्वेपि तिर्यञ्चो मिथ्यादृष्टिचिन्ताया चासख्येयनारकादय स्मा प्रक्षिप्यन्ते तत स्तियगन्धीधराद्वयेत्येव चतुर्गतिज्ञा मिथ्यादृष्टय
चिन्त्यमाना विज्ञोपाधिका ८२ । तेन्योप्यविरता विज्ञोपाधिका अविरतिसम्पदृष्टीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ८३ । तेन्य सकृपायिणो विज्ञोपाधिका दे
शविरतादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ८४ । तेन्य खल्वस्या विज्ञोपाधिका उपशान्तमोहादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ८५ । तेन्य सयोगिनी विज्ञोपाधिका,
सयोगिकेर्वाल्लिनामपि तत्र प्रक्षेपात् ८६ । तन्य ससारस्या विज्ञोपाधिका अयोगिकवर्तिनामपि तत्र प्रक्षेपात् ८७ । तेन्य सर्वजीवा विज्ञोपाधि
का सिद्धानामपि तत्र प्रक्षेपात् ८८ ॥ इति श्री मलयगिरिविरचिताया प्रज्ञापनाटीकाया बहुवक्तव्यास्य तृतीय पद समाप्तम् ॥ ३ ॥

ध्याग्यात तृतीयपद मिदानी वस्तुयमा रज्यते-तस्य घायमजिस्यन्त्य इहानन्तरपदेदिगनुपातादिनाऽल्पबहुत्वसङ्गा निदुरिरता अस्मिन्नु तया
अल्पबहुत्वसङ्गा निदुरिरताना जीवाना सत्वाना जन्मत प्रवृत्त्यामरणात् यन्नारकादिपयायरूपेण व्यवच्छिन्न मवस्थान त चिन्त्यते, अनन स
स्वर्धेनायातस्यास्येदमादिम मुन्न-नेरइयाण प्रते । केवइय काल तिइयल्लता इति ॥ नैरयिकाया मदस ! कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता तत्र स्यी

वज्रवस्तुव्यपद समस्त ॥ ३ ॥

॥ ॥

नेरइयाण प्रते । केवइय काल तिई पणत्ता ? गोयमा ! जहणेण दसवाससहस्साड उक्कोत्तेण तंत्तीस साग

नैरयिकाया मदस ! कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गोतम ! जघनेन दशार्पसस्त्राण्युत्कपंतस्त्रयस्त्रिंशरसागरोपमाणि' प्रपयात्तनेर

हारनो मडाडडक अन्यवदत्तना पट तीजा समामग्गवा इणतो जे पदे अन्यवदुल्ल कौयनो कज्जा २७ हार प्रज्ञापना भगवतो मा इ ॥ ३ ॥

नेरइयाण भते केवतिय कालाण्ड प० । द्विवे चउथेपदे पवसि उदकएजघन्याभ्यति यागुतो कहेहे—नारकीनो हभभवन कतना कालनोस्वि त नही । गो०
जघनेण दसवाससहस्साड उ० तिसोससागरावमाइ । इगोतम जघन्य थाडो दयडनारवपनो स्थितिरत्तप्रभानो अपचावे उदकटो ततासस.गगापम

यते ऽग्रस्थीयते मनया ऽयु कर्मानुवृत्त्येति स्थिति स्थितिरगु कर्मानुवृत्ति जीवन्मितिपर्योया , यद्यप्यत्र जीवेन मिथ्यात्वादिनिरुपात्ताना कर्मपु

रोवमाह अपज्जत्तणेरइयाण भते ! केवइय काल ठिइं पखत्ता ? गोथमा ! जहणेग भुतोमुज्जत्त उक्को
सेणवि भुतोमुज्जत्त पज्जत्तगणेरइयाण भते ! केवइय काल ठिइं पखत्ता ? गोथमा ! जहणेग दसवामस
हरसाइ भुतोमुज्जत्तगाइ उक्कोसेण तेहीस सागरोवमाइ भुतोमुज्जत्तगाइ रयणप्पमापुढविणेरइयाण भते !

विकाणा नदत्त ! कियन्त काल स्थिति प्रज्ञाता , गीतम ! जघनेनान्तमुहूत्तंमुहूत्तंमुहूत्तं, पर्याप्तकर्त्तरियिजाणा कियन्त काल
स्थिति प्रज्ञाता ? गीतम ! जघन्यतो दज्जपसइस्साणि अन्तमुहूत्तानि उत्तरुपत्त रयणिवत्तसागरोपमाणि अन्तमुहूत्तानि, रत्तप्रज्ञापयि
वीनेरपिकाणा नदत्त ! कियन्त काल स्थिति प्रज्ञाता ? गीतम ! जघन्यतो दज्जपसइस्साण्युत्तरुपत्त सागरोपमम्, अपर्याप्तरत्तप्रज्ञापु

नो ! स्थिति तमतमा पुणिवीनो अपेक्षाये । अपज्जसग नेरइयाण भते केवतिय कात्ताठिइ प० । अपर्याप्तानारकोनो केतवाकासनोस्थितिकही । गो० जइ
णेण यनामइत्त च्छोसेणवि भुतोमुहूत्त । हेगीतम जघन्येपिण अन्तमुहूत्तं उत्तरुपत्तं । पज्जसगनेरइयाण भते केवतिय कात्ताठिइ प० । पर्याप्ता
नारकोनो केतवाकासनोस्थितिकही । गो० जइणेण दसवामसइस्सा । हेगीतम जघन्येदज्जकारवयं । अतोमइत्त पाइ च्छोसेण तेहीससागरोव
माइ अतोमइत्तगाइ । अन्तमुहूत्तंजणो उत्तरुपत्तंजणो रयणप्पमाण पुढवोप नेरइयाण भते क० । रत्तप्रभा पुणिवीना नारकोनो
हेभगवन् केतवाकानोस्थिति । गो०मा जइणेण दसवामसइस्सा । च्छोसेण सागरोवम । हेगीतम जघन्येदज्जकारवयं उत्तरुपत्तं एकसागरोपम । अपज्ज
त्तयणप्पमापुढवोनेरइयाण भते के० । अपर्याप्ता रत्तप्रमाना नारकोनो केतकोस्थिति हेभगवन् । गो०मा जइवेणवि अतोमइत्त च्छोसेणवि अतोमइत्त ।
हेगी०म जघन्येपिण अन्तमुहूत्तं उत्तरुपत्तं । पज्जत्तयणप्पमापुढवोनेरइयाण भते के० । पर्याप्ता रत्तप्रमाना नारकोनो केतकोस्थिति हेभगन् ।
गो०मा जइणेण दसवामसइस्सा । हेगीतम जघन्येदज्जकारवयं । अतोमइत्तगाइ च्छोसेण सागरोवम अतोमइत्त सक्कएप्पमापुढवोनेरइयाण भते

केवडय काल ठिई पणता ? गोयमा ! जहणेण टसवामसहस्साइ उक्कोमेण सागरोवमं अउपज्जन्नयणप्य
 तापुढविणेरडयाण केवडय काल ठिई पणता ? गोयमा ! जहणेगवि अतोमुज्जत्त उक्कोमेणवि अतोमु
 ज्जत्त पज्जन्नयरणप्यप्पन्नापुढविणेरडयाण नत्ते ! केवडय काल ठिई पणता ? गोयमा ! जहणेग टसवा
 ससहस्साइ अतोमुज्जत्तूणाइ उक्कोसेण सागरोवमं अतोमुज्जत्तूण ! सक्करप्पन्नापुढविणेरडयाण नत्ते ! केव
 डय ठाण ठिई पणता ? गोयमा ! जहणेण एण सागरोवमं उक्कोसेण तिरिणि सागरोवमाइ अपज्जत्त
 सक्करप्पन्नापुढविणेरडयाण नत्ते ! केवडय काल ठिई पणता ? गोयमा ! जहणेण अतोमुज्जत्त उक्कोसेण
 वि अतोमुज्जत्त पज्जत्तसक्करप्पन्नापुढविणेरडयाण नत्ते ! केवडय काल ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेण साग

विधीनैरियिकाणा नदन्त । कियन्त काल स्थिति प्रपुत्ता ? गोतम ! जघन्येनाप्यन्तमंरुत्तमुत्कर्षणाप्यन्तमुत्तं, पर्याप्तकरत्तप्रभापुयिधी
 नैरियिकाणा नदन्त । कियन्त काल स्थिति प्रपुत्ता ? गोतम ! जघन्येन दशवपसहस्साण्यत्तमंरुत्तानि वरकपत्त. सागरोवममन्तमंरुत्तानि
 म् । शक्कराप्रभापुयिधीनैरियिकाणा नदन्त । कियन्त काल स्थिति प्रपुत्ता ? गोतम ! जघन्येनैक सागरोवममुत्कर्षत्तं ग्रीणि सागरोवमा
 णि, अपवात्तसक्कराप्रभापुयिधीनैरियिकाणा नदन्त । कियन्त काल स्थिति प्रपुत्ता ? गोतम ! जघन्येनान्तमंरुत्तमुत्कर्षणाप्यन्तमुत्तं
 न० । यामुत्कर्षत्तकौ वरकटो सागरोवमं अमंरुत्तजन शक्करप्रभाना नारकोनोस्थिति केनसाकान्त हेभगवन ! आत्मा जहडय पणनागरोवमं
 उक्कोसेण विनाममंगराजम । गोतम जहडय एकसागरोवमं वरकटौ नममागरोवमनो स्थिति । अपज्जत्तसक्करपुढवोनेरडयाण भते के० । अपज्जत्ता
 गंकरप्रभाना नारकोनो क्तलोस्थिति हेभगवन ! गोयमा जहणेण गतामहत्त उ० यममुत्त । गोतम जघन्येयतमहत्तं वरकटौ यतमहत्तं । पज्जत्त
 सक्करपुढवोनेरडयाण भते के० । पर्याप्तगंकरप्रभापुयिधीनो नारकोनोस्थिति हेभगवर तेतलोस्थितिकेही । गायमा जहणेण सागरोवमं यतोमुत्तं,

રોચમ અંતોમુજ્જસેણ ઉક્કોસેણ તિણિ સાગરોચમાહં અંતોમુજ્જસેણાહં
 વાલુયપ્પન્નાપદ્ધવિનેરહયાણં તંતે !
 કેવહય કાલ ઠિહં પણત્તા ? ગોચમા ! જહન્તેણ તિણિ સાગરોચમાહં અપ
 ઉક્કોસેણ સત્ત માગરોચમાહં અપ
 જ્ઞસયવાલુયપ્પન્નાપદ્ધવિનેરહયાણ તંતે ! કેવહય કાલં ઠિહં પણત્તા ? ગોચમા ! જહરેણ અંતોમુજ્જસે
 ઉક્કોસેણવિ અંતોમુજ્જસેણાહં પજ્ઞસયવાલુયપ્પન્નાપદ્ધવિનેરહયાણ તંતે ! કેવહય કાલ ઠિહં પણત્તા ? ગોચ

म् । पर्याप्तशक्रप्रजापृथिवीनैर्यिकाणा जदन्त । कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता २ गीतम् । जयत्येनात्तमूर्त्तुन सागरोपम नुत्तपतोन्त
मृदुत्तानि त्रीणि सागरोपमाणि । बालुकाप्रजापृथिवीनैर्यिकाणा नदन्त । कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता २ गीतम् । जयत्येन त्रीणि सा
गरोपमाणि उदकपैत सप्तसागरोपमाणि । अपर्याप्तशक्रप्रजापृथिवीनैर्यिकाणा जदन्त । कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता २ गीतम् ।
जयत्येनात्तमूर्त्तुमुत्तपतोप्यत्तमूर्त्तम् । पर्याप्तशक्रप्रजापृथिवीनैर्यिकाणा जदन्त । कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता २ गीतम् । जय

सूत्र ३० । तिससागरीवसाऽ अतीमुहत्तूगाद् । इभगवन् जघग्न पञ्चसागरीपम अतमं हत्तूगाद् । वाजपयमपुष्ट
वीनेरदयाण भते क० । बालकप्रधाना नारकौनो कतलौ स्थिति जभगवन् । गोयमा लङ्गणेण ति त्रसागरीवसाद् उ० सतसागरीपसाद् । इंगीतम ल
घगे तीनसागरीपम उटकट्टे सातसागरीपम । अप्पत्तव, लप्यभपुष्ट गेनेरदयाण भते क० । अपर्याप्ता बालकप्रधाना नारकौनो कतलौ स्थिति जेभगवन्
गोयमा जङ्गण्य प्रतीमुहत्तूवर्क्को अतमं हत्तू । इगीतम लघग्न अतमं हत्तू उटकट्ट अतमं हत्तू । पञ्चतमग्नपुष्ट गेनेरदयाण भते जे० । पर्यादया
लकप्रधाना नारकौनो कतलौ स्थिति जेभगवन् । गोयमा लङ्गण्य तिसागरीवसाद् अतीमहत्तूगाद् । इगीतम जघग्नोत्तसागरीपम गतमहत्तूगाद् ।
उ० सतसागरीवसाऽ अतीमुहत्तूगाद् । उटकट्टे सातसागरीपमनौ अतमं हत्तू तंजौ । पञ्चप्रधाना नारकौनो कतलौ स्थिति
कहौ प्र० । उत्तर इगीतम लघग्न सात सागरीपम उटकट्ट दश सागरीपमनौ स्थित कहौ । अप्पत्तपकपपत्ति । अपर्याप्ता बालकप्रधाना नारकौनो

द्रुलानां क्षानाथरणीयादिरूपतया परिणताना यदवस्थान सा स्थिति रितिप्रसिद्ध तथापि नारकादिव्यपदेशैस्तुरायु कर्मानुव्रति स्तथाहि-यद्यपि नरकगतपञ्चेन्द्रियचात्यादिनामकर्मोदयाश्रयो नारकत्वपर्याय स्तथापि नारकायु प्रथमसमयसर्वदनकालमव तत्त्वित्यन्तनारकदेशममाप्नोति नारक इव व्यपदेश लभन्ते , तथाच मौनीन्द्र प्रवचन-नेरइगण मते । नेरइगसु उववज्जइ अनेरइग नेरइगसु उववज्जइ ३ गो० । नेरइग नेरइगसु उववज्जइ नो अनेरइग नेरइगसु उववज्जइ इत्यादि, तत सेवायु कर्मानुव्रति रिह यथोक्तव्युत्पत्त्या स्थिति रजिधीयते इति , अत्र निर्वचनमाह-गो यमेत्यादि ॥ एतच्च पर्यासापर्यासविज्ञागात्रावेन सामान्यत उक्त यदा तु पर्यासापर्यासज्ञानेन चित्ता तदेद सूत्र-अपल्लतनेरइयाण ज्ञते । इत्यादि ॥ इहापयासा द्विविधा लभ्या करणेषु तत्र नेरयिका देवा सङ्ख्यवर्णायुप स्तियमनुष्या करणैरेवाऽपर्यासा न लवध्यालवध्पऽपर्यासकाना तेषु मध्ये उल्पादासम्भवात् तत एते उपपातकालमव करणै कियन्त कात मपयासा इष्टव्या , सेपास्तु तियमनुष्या तदव्या अपयासा उपपातकाले च , इ त्तत्त्व-नारगदेवातिरिक्तसु यगहमज्ञानेअसमयासाज । गय्अपज्जती इवजाय्चेवधोचव्वा ॥ १ ॥ सेसायतिरियमनुष्या लवध्पपोववायकालेय । दुइउ विपन्नयद्या पज्जसिरेयणिणवयण ॥ २ ॥ अपर्यासका य जघन्यत उरकपंतोधान्तमुंहुत मत उक्त-गोयमा । जएक्केण उक्कोमेणावि अतोमुत्त , ॥ अपयासाटापगमे च जेपकाल पर्यासाटा तत उक्त पयाप्तमू-गोयमा । जएक्कण दसयाससहस्साइ अतोमहुतकणाइ उक्कोसेण तंतीस सागरोव माइ गतामुत्तकणाइ ॥ एतच्च पथिव्यऽविज्ञानेन चिन्तित सस्मति पृथिवीविज्ञानेन चित्तयति-रयणपपजापुढविनेरइयाण ज्ञते । इत्यादि सुग

मा ! जहन्नेण तिन्नि सागरोवमाइ अतोमुत्तूणाड उक्कोसेण सत्तसागरोवमाइ अतोमुत्तूणाइ पक्कप्प

येन गीणि सागरोपमाणि अन्तमुंहुत्तीनानि उरकपंत सत्तसागरोपमाणि अन्तमुंहुत्तीनानि । पड्डमजापृथिवीनेरियिकाणा जदत्त । कियन्त

वेमगवन् केतला कालनी स्थिति कही प्र० । उत्तर हेगौतम जघग्न अन्तमुंहुत्तं नो उरकट पिण अन्तमुंहुत्तं नो कही । पज्जतय पक्कपमत्ति । पर्याप्ता पक्कपभापृथिवीना नारकौनी हे मगवन् केतला कालनी स्थिति कही प्र० । उत्तर हे गौतम जघग्न अन्तमुंहुत्तं गून सात सागरोपम उरकट अन्तमुंहु

॥ मूल ॥

॥ अ० ॥

॥ भाषा ॥

। टीका ॥

त्रापुढविनेरडयाणं नते ! केवडयं काल ठिई पखत्ता ? गोयमा ! जहखेणं सत्तसागरोवमाडं उक्कोसेणं दससागरोवमाइ । अपज्जत्तयपकप्पन्नापुढविनेरडयाण नते ! केवडय काल ठिई पखत्ता ? गोयमा ! जहखेणं अत्तोमुज्जत्त उक्कोसेणवि अत्तोमुज्जत्त । पज्जत्तयपकप्पन्नापुढविनेरडयाण नते ! केवडय काल ठिई पखत्ता ? गोयमा ! जहन्तेण सत्तसागरोवमाइ अत्तोमुज्जन्नाइ उक्कोसेण दससागरोवमाड अत्तोमुज्जन्नाइ धूमप्पन्नापुढविनेरडयाण नते ! केवडय काल ठिई पखत्ता ? गोयमा ! जहखेण दससागरोवमाइ

काल स्थिति प्रश्नता ? गीतम । जघन्येन सत्तसागरोपमाणि उत्कर्षतो दशसागरोपमाणि, अयर्थात्तपङ्कप्रज्ञापृथिवीनैरयिकाणा नदत्त । कियन्त काल स्थिति प्रश्नता ? गीतम । जघन्यतो प्यत्तमुहत्तमुत्कर्षतोप्यत्तमुहत्तम्, पर्याप्तकपङ्कप्रज्ञापृथिवीनैरयिकाणा नदत्त । कियन्त काल स्थिति प्रश्नता ? गीतम । जघन्येन सत्तसागरोपमाणि अत्तमुहत्तानि उत्कर्षतो दशसागरोपमाणि अत्तमुहत्तानि । धूमप्रज्ञापृथिवीनैरयिकाणा नदत्त । कियन्त काल स्थिति प्रश्नता ? गीतम । जघन्येन दश सागरोपमाण्युत्कर्षत सत्तदश सागरोपमाणि । अयर्थात्तधूमप्रज्ञापृथिवीनैरयिकाणा जगवन् । कियन्त काल स्थिति प्रश्नता ? गीतम । जघन्येनाप्यत्तमुहत्त मुत्कर्षतोप्यत्तमुहत्तम् ।

सं गून दय सागरोपम नो कही । धूमप्रभाप्रथिवी ना नारकोनो हे भगवन् केतला कालनो स्थिति कही प्र० । उत्तर हे गीतम जघन्य दश सागरोपम नो उत्कट सतरह सागरापम नो कही । अपज्जत्तय धूमसि । अयर्थात्त धूमप्रभा प्रथिवीना नारकोनो हे भगवन् केतला कालनो स्थिति कही प्र० । उत्तर हे गीतम जघन्य पिण अत्तमुहत्तं नो उत्कट । पज्जत्तधूमसि । पर्यात्त धूमप्रभा प्रथिवीना नारकोनो हे भगवन् केतला कालनो स्थिति कही प्र० । उत्तर हे गीतम जघन्य अत्तमुहत्तं न्यून दश सागरोपम उत्कट । अत्तमुहत्तं जम सतरे सागरापम कही । तमप्पमसि । तमप्रभा प्रथिवीना नारकोनो हे भगवन् केतला काधनो स्थिति कही प्र० । उत्तर हे गीतम जघन्य सतरह सागरोपम

उक्तीसेण सतरसागरीवमाह । अपज्जत्तयधूमप्पन्नापुढविणेरडयाणं जते । केवडय काल ठिई पयत्ता ? गो यमा । जहत्तेणवि अतोमुज्जत्त उक्तीसेणवि अतोमुज्जत्त । पज्जत्तयधूमप्पन्नापुढविणेरडयाण जते ! केवडय काल ठिई पयत्ता ? गोयमा । जहत्तेण दससागरीवमाह अतोमुज्जत्तूणाइ उक्तीसेण सतरसागरीवमाह अतोमुज्जत्तूणाइ, तमप्पन्नापुढविनेरडयाण जते । केवडय काल ठिई पयत्ता ? गोयमा । जहत्तेण सतरसागरीवमाह उक्तीसेण वात्रीसमागरीवमाह । अपज्जत्तयतमप्पन्नापुढविनेरडयाण केवडय काल ठिई प० १ गोयमा । जहत्तेणवि अतोमुज्जत्त उक्तीसंणवि । अतोमुज्जत्त पज्जत्तयतमप्पन्नापुढविनेरडयाण जते ! केव

पर्याप्तवृत्तप्रज्ञापरिधीनैरयिकाणा नदत्त । कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गीतम् । जयन्तेन दय सागरीवमाख्यन्तं नूतानानि उत्कृष्टत सप्तदशसागरीवमाख्यन्तमु नूतानानि, तमप्रज्ञापरिधीनैरयिकाणा नदत्त । कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गीतम् । जयन्तेन सप्तदशसागरीवमाख्यन्तमु नूतानानि । अपर्याप्ततमप्रज्ञापरिधीनैरयिकाणा कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गीतम् । जयन्तेन सप्तदश नूतं नूतवर्षणाप्यन्तमु नूतम् । पर्याप्ततमप्रज्ञापरिधीनैरयिकाणा नदत्त । कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गीतम् । जयन्तेन सप्तदश

उत्कृष्ट वाचोस सागरापम नो कही । अपल्लत्ततमस्ति । अपर्याप्त तमप्रभा परिधीना नारकोनो ह भगवन् केतना कालनो स्थिति कही प्र० । उत्तर ह गीतम् जयन्त पिय अन्तर्मुदयं नो उत्कृष्ट पिय अन्तर्मुदयं नो कही । पर्याप्त तमप्रभा परिधीना नारकोनो ह भगवन् केतना कालना स्थिति कही प्र० । उत्तर ह गीतम् जयन्त सागरापमनो उत्कृष्ट अन्तर्मुदयं नूत वाचोस म सागरापम नो कही नदत्ततमस्ति । अपर्याप्ततमो परिधीनो ना नारकोनो ह भगवन् केतना कालनो स्थिति कही प्र० । उत्तर ह गीतम् जयन्त वाचोस सागरापम नो उत्कृष्ट ततोस सागरापम ना नदत्तो । अपल्लत्तय अहसत्तमस्ति । अपर्याप्त नाच सातमा परिधीना नारकोनो केतना कालनो स्थिति प्रज्ञप्ता प्र० । उत्तर

उक्क्षोसेणं पणपन्नपल्लिन्नमाइ अंतोमुज्जत्तुणाइ । अत्रणवासीणं भते ! देवाणं केवइयं कालं छिई प० ? गोयमा ! जहन्तेण दसवाससहस्साइ उक्क्षोसेणं सातिरेग सागरोवन्न । अण्णत्तयन्नवासीणं भते ! देवाणं केवइयं कालं छिई प० ? गोयमा ! जहन्तेण दसवाससहस्साइ अतोमुज्जत्तुणा इ उक्क्षोसेण सातिरेग सागरोवन्न अतोमुज्जत्तुणा । अत्रणवासिणीण भते ! देवीण केवइय कालं छिई प०

यन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गीतम् । जघन्यनात्तमूर्त्तोनानि दशवपसहस्राणि उत्कथं पञ्चपञ्चाशत्पल्योपमान्यन्तमूर्त्तोनानि ॥ जघन
वासिदेवाना जदन्त । कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गीतम् । जघन्येन दशग्रयसहस्राणि उत्कथं सातिरेक सागरोपमम् । अ
पर्याप्तजघनवासिदेवाना जदन्त । कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गीतम् । जघन्येनाप्यन्तमूर्त्तमुत्कथं तो व्यन्तमूर्त्तम् । पर्याप्तजघन
वासिदेवाना जदन्त । कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गीतम् । जघन्येन दशग्रयसहस्राण्यन्तमूर्त्तोनानि उत्कथं सातिरेक सागरोपमम्
न्तमूर्त्तम् । जघनवासिनीना देवीना जदन्त । कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गीतम् । जघन्येन दशवपसहस्राण्युत्कथं तो ऽद्वैपञ्चमानि

है । नवणवासीण भवेत्ति । भवनवासा देवतानी हे भगवन् केतना कालनी स्थिति कहौ प्र० उत्तर गौतम जयन्थ यो दग्गइज्जार वपेनो उत्कट्ठ थो सातिरेज सागरापम कहौ । अप्पलत्तयमवणवासीणत्ति । अप्पगोपन भवनवासी देवतानो केवला कालनी स्थिति कहौ प्र० उत्तर गौतम जयन्थ यो पिण घत्तेमुत्तं उत्कट्ठ यो पिण अन्नमुत्तं । पप्पलत्तनवणवासीणत्ति । पर्याप्त भवनवासी देवतानो हे भगवन् केतना कालनी स्थिति कहौ प्र० उत्तर गौतम जयन्थ यो दग्गइज्जार वपेनो अन्नमुत्तं यून उत्कट्ठ थो अन्नमुत्तं नून सातिरेक सागरापम । भवणवासिणीणत्ति । भवनवासि देवतानो हे भगवन् केतना कालनी स्थिति कहौ प्र० उत्तर गौतम जयन्थ यो दग्गइज्जार वपेनो उत्कट्ठ थो साटि चार पत्तोपम नो कहौ । अप्पलत्तिया

? गोयमा ! जहणेण दसवाससहस्साइ उक्कोसेण अरुपचमाड ! पलिन्वमाइं अपज्जितियाणं जते !
 नवणवासिणीण देवीण केवडय कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेणवि अतोमुज्जत्तं उक्कोसेणवि अतोमु
 ज्जत्त ! पज्जितियाण जते ! नवणवासिणीण देवीणं केवडय काल ठिई पणत्ता ? गोयमा ! जहणेण दसवा
 समहस्साड अतोमुज्जत्तूणाइ उक्कोसेण अरुपचमाइ पलिन्वमाइ अतोमुज्जत्तूणाइ ! असुरकुमाराण जते !
 देवाण केवडय काल ठिई पणत्ता ? गोयमा ! जहणेण दसवाससहस्साइं उक्कोसेण साइरेग सागरोवम
 अपज्जत्तयअसुरकुमाराण जते ! देवाण केवडय काल ठिई पणत्ता ? गोयमा ! जहणेणवि अतोमुज्जत्तं

(साहचर्य) पत्तोपमानि । अपयात्तनवनवासिदेवीना जदत्त । कियत्त कात् स्थिति प्रज्जत्ता ? गीतम ! जघन्याप्यन्तमुहूत्तं सुत्तकपेयाप्य
 त्तमुहूत्तम् । पर्याप्तनवनवासिदेवीना जदत्त । कियन्त काल स्थिति प्रज्जत्ता ? गीतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राप्यन्तमुहूत्तानि चरकपतो
 दपञ्चमानि पत्तोपमान्यन्तमुहूत्तानि ॥ असुरकुमाराणा जदत्त । कियन्त काल स्थिति प्रज्जत्ता ? गीतम ! जघन्यतो दशवर्षसहस्राप्युत्क
 पत्त सातिरेक सागरोपमम् । अपर्याप्तासुरकुमारदेवाना जदत्त । कियन्त काल स्थिति प्रज्जत्ता ? गीतम ! जघन्येनाप्यन्तमुहूत्तं सुत्तकपतो

य भवणमिणीयति । अपर्याप्त भवनवासि देवीनो हे भगवन् केतला कालनो स्थिति कही प्र० उत्तर हे गीतम जघन्य यो पिण अगतमुहूत्तं चत्तकृ
 णो पिण अगतमुहूत्तं कही । पज्जत्तयाण भवणवासिणीयति । पर्याप्त भवनवासो देवीनो हे भगवन् केतला कालनो स्थिति कही प्र० उत्तर हे गीतम
 जघन्य यो अगतमुहूत्तं न्यू दग्ग जलार वप चत्तकृष्ट धो अगतमुहूत्तं न्यून सट्ठे चार पर्यापम नो कही । असुरकुमाराण भर्तेत्त । असुरकुमारदेवतानो
 हे भगवन् केतला कालनो स्थिति कही प्र० उत्तर हे गीतम जघन्य दग्ग चार वर्षनो चत्तकृष्ट धो सातिरेक सागरोपम नो कही । अपज्जत्त असुरकुमारा
 यति । अपर्याप्त असुरकुमारदेवतानो हे भगवन् केतला कालनो स्थिति कही प्र० उत्तर गीतम जघन्य यो पिण अगतमुहूत्तं चत्तकृष्ट पिण अगतमुहूत्तं

उक्तीसेणवि अतोमुज्जतं । पज्जत्तियअसुरकुमारणं जेतं ! केवडयं कालं ठिई पसत्ता ? गोयमा ! जहन्तेणं
दसवाससहस्साइ अतोमुज्जत्तणाड उक्तीसेणं सातिरेग सागरोचमं अतोमुज्जत्तण । असुरकुमारीणं जेतं !
देवीण केवडय काल ठिई पसत्ता ? गोयमा ! जहन्तेण दसवाससहस्साड उक्तीसेणं अरुपचमाइं पलिउ
वमाइ । अपज्जत्तियणं असुरकुमारीणं जेतं ! देवीण केवडय काल ठिई पसत्ता ? गोयमा ! जहन्तेणवि
अतोमुज्जत्त उक्तीसेणवि अतोमुज्जत्त । पज्जत्तियणं असुरकुमारीणं जेतं ! केवडय काल ठिई पसत्ता ? गो

प्यत्तमुं हूत्तंम् । पर्याप्तकासुरकुमाराणा देवाना जदत्त । कियत्त काल स्थिति प्रज्जत्ता ? गीतम । जघन्येनान्तमुं हूत्तानि दशवपसहस्सा
युत्तकर्पत्त सातिरेक सागरोपममत्तमुं हूत्तानम् ॥ असुरकुमार देवीना जदत्त । कियत्त काल स्थिति प्रज्जत्ता ? गीतम । जघन्येन दशवप
सहस्सायुत्तकर्पत्तौं पल्लवानि पल्लोपमानि । अपर्याप्तकासुरकुमारदेवीना जदत्त । कियत्त काल स्थिति प्रज्जत्ता ? गीतम । जघन्येनान्प्यत्त
मेधुत्तमुत्तकर्पण्यत्तमुं हूत्तंम् । पर्याप्ता सुरकुमारदेवीना जदत्त । कियत्त काल स्थिति प्रज्जत्ता ? गीतम । जघन्येन दशवपसहस्सायत्तमुं

नो कहौ । पज्जत्त असुरकुमाराणत्ति । पर्याप्त असुरकुमार देवतानो हे भगवन् केतलो काननो स्थिति कहौ प्र० उत्तर हे गीतम जघन्य यो अन्तमुं हूत्तं
त्तं ग्यून दश हजार वपनो उत्तकट यो अन्तमुं हूत्तं ग्यून कुक्क ग्रथिक सागरोपम कहौ । असुरकुमार देवो नो हे भगवन्
केतलो काननो स्थिति कहौ प्र० उत्तर हे गीतम जघन्य दश हजार वपनो उत्तकट साटे चार पन्थोपमनो कहौ । अपज्जत्तियाण असुरकुमारीण
त्ति । अपर्याप्त असुरकुमारदेवीनो हे भगवन् केतलो आयु कह्यो प्र० उ० हे गीतम जघन्य यो पिण अन्तमुं हूत्तं नो उत्तकट यो पिण अन्तमुं हूत्तं नो ।
पज्जत्तियाण असुरकुमारीणत्ति । पर्याप्ता असुरकुमारनो देवीनो केतलो आयु कह्यो प्र० उ० हे गीतम जघन्य यो अन्तमुं हूत्तं ग्यून दश हजार वपनो
उत्तकट यो अन्तमुं हूत्तं ग्यून साटे चार पन्थोपमनो कह्यो । नागकुमार देवतानो हे भगवन् केतलो आयु कह्यो प्र० उ० हे गीतम ।

उक्षोसेणवि व्यतोमुज्जतं । पज्जत्तय्यसुरकुमारारणं भते ! केवडयं कालं ठिई पसत्ता ? गोयमा ! जहन्तेणं
दसत्तासहस्साइं व्यतोमुज्जत्तणाइ उक्षोसेण सातिरेग सागरीवम व्यतोमुज्जत्तण । असुरकुमारीणं भते !
देवीण केवडय काल ठिई पसत्ता ? गोयमा ! जहस्सेण दसत्तासहस्साइ उक्षोसेणं व्यरुपंचमाइं पलित्तं
वमाइं । व्यपज्जत्तियाणं असुरकुमारीणं भते ! देवीणं केवडय काल ठिई पसत्ता ? गोयमा ! जहस्सेणवि
व्यतोमुज्जत्त उक्षोसेणवि व्यतोमुज्जत । पज्जत्तियाणं असुरकुमारीणं भते ! केवडय काल ठिई पसत्ता ? गो

प्यत्तमुत्तम् । पर्याप्तकासुरकुमाराणा देवाना भदन्त । कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गीतम । जघन्येनात्तमुत्तमानि दशवपसहस्त्रा
एतद्वत्तं सातिरेक सागरीपममत्तमुत्तमानम् ॥ असुरकुमार देवीना भदन्त । कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गीतम । जघन्येन दशवप
सहस्त्राण्युदम्यतोद्वपम्बमानि पल्योपमानि । अपर्याप्तकासुरकुमारदेवीना भदन्त । कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गीतम । जघन्येनाप्यत्त
मेधुत्तमुदम्येणाप्यत्तमुत्तम् । पर्याप्ता सुरकुमारदेवीना भदन्त । कियन्त काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? गीतम । जघन्येन दशवपसहस्त्राण्यत्तमु

नो कहौ । पज्जत्त असुरकुमारारणति । पर्याप्त असुरकुमार देवतानो हे भगवन् केतलो कालनो स्थिति कहौ प्र० उत्तर हे गीतम जघन्य यो अन्तर्मुह
त्तं ग्नू दग्ग हजार वर्षेनो उत्कट्ठो व्यो अन्तर्मुहत्तं न्यून कुक्खं यदिक्क सागरीपम कहौ । असुरकुमारीण भते देवीणति । असुरकुमार देवीनो हे भगवन्
कोत्ता कालनो स्थिति कहौ प्र० उत्तर हे गीतम जघन्य दग्ग हजार वर्षेनो उत्कट्ठ साट्ठ चार पल्योपमनो कहौ । अपज्जत्तयाण असुरकुमारीण
ति । अपर्याप्त असुरकुमारदेवीनो हे भगवन् केतलो आयु कच्छो प्र० उ० हे गीतम जघन्य यो पिण अन्तर्मुहत्तं नो उत्कट्ठ यो पिण अन्तर्मुहत्तं नो ।
पल्यत्तियाण असुरकुमारारणति । पर्याप्ता असुरकुमारनो देवीनो केतलो आयु कच्छो प्र० उ० हे गीतम जघन्य यो अन्तर्मुहत्तं न्यून दग्ग हजार वर्षेनो
उत्कट्ठ नो अन्तर्मुहत्तं न्यून साट्ठ चार पल्योपमनो कहौ । नागकुमारारण देवतानो हे भगवन् केतलो आयु कच्छो प्र० उ० हे गीतम

उक्तीसेगवि अंतोमुजतं । पज्जत्तयअसुरकुमारानं भते । केवडयं कालं ठिई पयत्ता ? गोयमा ! जहन्तेणं
दसवाससहसाइ अंतोमुजत्तगाड उक्तीसेणं सातिरेग सागरीवम अंतोमुजत्तणं । असुरकुमारीण भते !
देवीण केवडय काल ठिई पयत्ता ? गोयमा ! जहसेण दसवाससहसाड उक्तीसेणं अरुपचमाडं पलिलं
वमाइ । अपज्जत्तियाणं असुरकुमारीणं भते ! देवीण केवडय काल ठिई पयत्ता ? गोयमा ! जहसेणवि
अंतोमुजत्त उक्तीसेगवि अंतोमुजत्त । पज्जत्तियाणं असुरकुमारीणं भते । केवडय काल ठिई पयत्ता ? गो

प्यत्तमुहत्तम् । पर्याप्तकासुरकुमाराणा देवाना प्रदत्त । कियत्त काल स्थिति प्रच्युता ? गीतम् । जघन्येनात्तमुहत्तीनानि दशवपसहस्रा
एतदुत्कर्षत सातिरेक सागरोपममन्तमुहत्तीनम् ॥ असुरकुमार देवीना प्रदत्त । क्रियत्त काल स्थिति प्रच्युता ? गीतम् । जघन्येन दशवपं
सहस्राण्युत्कर्षतोद्वपस्वमानि पत्न्योपमानि । अपर्याप्तकासुरकुमारदेवीना प्रदत्त । कियत्त काल स्थिति प्रच्युता ? गीतम् । जघन्येनाप्यत्त
मुहत्तमुत्कर्षेणाप्यत्तमुहत्तम् । पर्याप्ता सुरकुमारदेवीना प्रदत्त । कियत्त काल स्थिति प्रच्युता ? गीतम् । जघन्येन दशवपसहस्राण्यत्तमु

नी कहो । पज्जत्त असुरकुमाराराणति । पर्याप्त असुरकुमार देवतानी हे भगवन् केतना कान्धनो स्थिति कहो प्र० उत्तर हे गीतम् जघन्य धो अन्तमुह
त्तं ग्यून दग हजार वर्षनो उत्कृष्ट धी अन्तमुहत्तं न्यून कुक्क यदिक सागरोपम कहो । असुरकुमारीण भते देशेणति । असुरकुमार देवीनो हे भगवन्
केतना कान्धनो स्थिति कहो प्र० उत्तर हे गीतम् जघन्य दग हजार वर्षनो उत्कृष्ट साटे चार पत्न्योपमनो कहो । अपज्जत्तयाण असुरकुमारीण
ति । अपर्याप्त असुरकुमारदेवीनो हे भगवन् केतनो आयु कक्षां प्र० उ० हे गीतम् जघन्य धो पिण अन्तमुहत्तं ना ।
पज्जत्तियाण असुरकुमारोणति । पर्याप्ता असुरकुमारनो देवीनो केतनो आयु कक्षां प्र० उ० हे गीतम् जघन्य धो अन्तमुहत्तं न्यून दग हजार वर्षनो
उत्कृष्ट धी अन्तमुहत्तं न्यून साट चार पत्न्योपमनो कहो । नागकुमाराण देवतानी हे भगवन् केतनो आयु कक्षां प्र० उ० हे गी०

सेण ढी पलिनुवमाइं देसूणाइं अतोमुज्जत्तूणाइ । सुवणकुमारीण देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहणेण दनवा
ससहस्साइ उक्कोसेण देसूण पलिनुवन । अपज्जत्तियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्त्वेणवि उक्कोसेणवि अप
तोमुज्जत्त । पज्जत्तियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहणेण दसवाससहस्साइ अतोमुज्जत्तूणाइ उक्कोसेण देसूग
पलिनुवम अतोमुज्जत्तूण, एव एएण अज्जिलाव्रेण उहिअपज्जत्तपज्जत्तसूत्तत्तय देवाण देवीणय गेयइ जाव
थणियकुमाराण जहा नागकुमाराण । पुढविक्काइयाण नत्ते । केवइय काल छिइं प० ? गो० ! जहन्त्वेण अतो
मुज्जत्तं उक्कोसेण बावीस वाससहस्साइ । अपज्जत्तपुढविक्काइयाणं नत्ते ! केवइय काल छिइं प० ? गो० !

पणकुमारदेवीना पृच्छा ' गीतम । जघन्यन दग्गवपसरस्साएरुअपतो देशोन पत्थोपमम् । अपर्याप्तकुसुपणकुमारदेवीना पृच्छा , गीतम् ।
जघन्येनाप्युत्तरपतोप्यन्तर्मुहूत्तम् । पयाप्तकुसुपणकुमारदेवीना पृच्छा ' गीतम् । जघन्येन दग्गवपसरस्साएरुअत्तानि उत्तरपतो देशोन
पत्थोपममन्तर्मुहूत्तानम् । एवमतेनाज्जिलापेनोपिपाप्योत्तपर्याप्तसूत्रय देवाना देवीनाञ्च ज्ञातव्य यावत्तन्नित्तुमारणा यथा नागकुमा
राणाम् ॥ पुदिवीकरिपिकाना नदन्त । कियत्काल स्थिति मच्च० गीतम् । जघन्येनात्तर्मुहूत्तमुत्तरपतो द्वविशतिवर्षसहस्राणि । अपर्याप्त

णकुमारीण पृच्छा । सर्वणकुमारीनां प्रश्न कौधा उत्तर हे गीतम् जघन्य दग्गवपसरस्साएरुअपतो देशोन पत्थोपमम् । अपर्याप्तमव
णकुमारदेवीनां प्रश्न कौधा उत्तर हे गीतम् जघन्य दग्गवपसरस्साएरुअत्तानि उत्तरपतो देशोन पत्थोपमम् । अपर्याप्तमव
देवीनां प्रश्न कौधा उत्तर हे गीतम् जघन्य दग्गवपसरस्साएरुअत्तानि उत्तरपतो देशोन पत्थोपमम् । अपर्याप्तमव
अपर्याप्त २ पर्याप्त ३ सूत्र तीन देवता देवीना ज्ञात्वा यावत्तन्नित्तुमारणा यथा नागकुमाराणां यथा नागकुमाराणां
हे भगवन् कतला प्रायु कथा हे गीतम् जघन्य अन्तर्मुहूत्तं नो उत्तरकट वावीसद्वजार वर्षनो । अपज्जत्तयपुढविक्काइयाणयि । अपर्याप्त द्वाविधौकायनो

दसबाससहस्साइ उक्कोसेण देगूण पलिउवम । अपज्जत्तियाणं नागकुमारीणं जेतं ! देवीण केवडइय काल
 ठिई प० ? गोयमा । जहखण अपतोमुज्जत उक्कोसेणवि अपतोमुज्जत । पज्जत्तियाण नागकुमारीण जेतो !
 देवीण केवडइयं काल ठिई प० ? गोयमा । जहन्वेण दसबाससहस्साइ अपतोमुज्जत्तणाइ उक्कोसेणं देसूग
 पलिउवम अपतोमुज्जत्तण । सुवसाकुमाराण जेतं ! देवाण केवडइय काल ठिई पयत्ता ? गोयमा ! जहखण
 दसबाससहस्साइ उक्कोसेण दो पलिउवमाइ देसूगाइ । अपज्जत्तयाण पुक्खा ? गोयमा ! जहन्वेणवि
 उक्कोसेणवि अपतोमुज्जत । पज्जत्तयाणपुक्खा ? गोयमा ! जहखण दरावाससहस्साइ अपतोमुज्जत्तणाइ उक्को

काल स्थिति प्रश्नात् १ गौतम । अपन्यतोप्यन्तर्मुहूर्तमुत्कप्यतोप्यन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तकनागकुमारीणा अदन्त । देवीना क्रियन्त काल स्थिति प्रश्न २ गौतम । अघन्येन दशवपंसहस्राण्यन्तर्मुहूर्तानि उत्कपतो देशो न पत्योपमन्तर्मुहूर्तानम् ॥ सुपणकुमाराणा जगवन् । देवाना क्रियन्त काल स्थिति प्रश्न ३ गौतम । अघन्येन दशवपंसहस्राण्युत्कपतो द्व पत्योपमे देशो न । अपयोत्तकाना पृच्छा । गौतम । अघन्येनाप्युत्कपतोप्यन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तकाना पृच्छा । गौतम । अघन्येन दशवपंसहस्राण्यन्तर्मुहूर्तानानि उत्कपतो देशो न द्व पत्योपमेन्तर्मुहूर्ताने । सु

नाराणात् । अपर्णासि नागकुमारदेवीनां हभगवन् कतना आयु कथा प्र० ३० हे गौ० जघग्य पिण अन्तर्मुहसं । पल्लितियाण
नागकमारीण । पर्णसि नागकमारो देवीनां हे भगवन् कतलो आयु कथा प्र० ३० हे गौ० जघग्य अन्तर्मुहसं ग्यून दग्गहकार वपना उत्कट अन्तर्मुहसं
ग्यून देयान पल्यापम । मन्त्रकमाराणात् । सुवर्ण कुमार देयानो कोनो स्थिति कही प्र० उत्तर हे गौतम जघग्य थो दग्गहकार वप उत्कट थो दे
यान देय पल्यापम । अपल्लितियाण पुच्छा, अपर्णासि मन्त्रकमारो प्र० कौंधो उत्तर हे गौतम जघग्य थो पिण उत्कट थो पिण अन्तर्मुहसं । पल्लित
याण पुच्छा । पर्णापना प्र० कौंधो उत्तर हे गौतम जघग्य थो अन्तर्मुहसं ग्यून दग्गहकार वप उत्कट थो अन्तर्मुहसं ग्यून देयान देय पल्यापम । सुव

पञ्चतयवादरपुढविकाइयाण पुच्छा ? गोयमा । जहणेणं अतोमुज्जतं उक्कोसेणं वावीसं वाससहस्साइ अतोमुज्जत्तूगाइ । आउकाइयाण भते । केवइय काल ठिई प० ? गोयमा । जहन्तेण अतोमुज्जत उक्कोसेण सत्तवाससहस्साइ । अपञ्चतयआउकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहणेणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जत्त । पञ्चतयआउकाइयाण पुच्छा ? गोयमा । जहणेण अतोमुज्जत उक्कोसेण सत्तवाससहस्साइ अतोमुज्जत्तकणिआइ । आउकाइयाण उहिहियाण अपञ्चतयाणं पञ्चतयाण जहा सुज्जमपुढविकाइयाण तथा मा

मैरूत्तमुत्कपतो द्वाविशतिवर्षसस्त्राणि । अपर्याप्तकवादरपृथिवीकायिकाना पुच्छा , गीतम । जघन्येनाप्यन्तमैरूत्तमुत्कपतोप्यन्तमैरूत्तम् । पर्याप्तकवादरपृथिवीकायिकाना पुच्छा , गीतम । जघन्येनास्तमैरूत्तमुत्कपतो द्वाविशतिवर्षसस्त्राण्यन्तमैरूत्तानि ॥ यत्कायिकाना प्रदन्त । कियन्त काल स्थिति प्रश्न० ? गीतम । जघन्येनास्तमैरूत्तमुत्कपन्त सप्तवर्षसहस्त्राणि । अपर्याप्तकायिकाना पुच्छा , गीतम । जघन्येनाप्युरकपन्तोप्यन्तमैरूत्तम् । पर्याप्तकायिकाना पुच्छा , गीतम । जघन्येनास्तमैरूत्तमुत्कपन्त सप्तवर्षसहस्त्राण्यन्तमैरूत्तानि । यत्का

गीतम जघन्य यो अन्तमैरूत्तं नो उत्कटं यो वावोसहजारवर्षं नो । अपनत्तयवादरपुढविकायियाणति । अपर्याप्त वादर पृथिवीकायिक नो प्रश्न को धी उत्तर हे गीतम जघन्य यो पिण उत्कटं यो पिण अन्तमैरूत्तं ना । पञ्चतयवादरपुढविति । पर्याप्त वादरपृथिवीकायिक नो प्र० कीधो उत्तर हे गीतम जघन्य यो अन्तमैरूत्तं नो उत्कटं यो अन्तमैरूत्तं न्यून वावीसहजार वर्षं नो । आउकाइयाण भते ति । अत्कायिक नो हे भगवन् केतलो आयु कथी प्र० उत्तर हे गीतम जघन्य यो अन्तमैरूत्तं नो उत्कटं यो सातहजारवर्षं नो । अपञ्चतयआउकाइयाणति । अपर्याप्तात्कायिक नो प्र० कीधो उत्तर हे गीतम जघन्य यो पिण उत्कर्षं यो पिण अन्तमैरूत्तं नो कथ्यो । पञ्चतय आउकाइयाणति । पर्याप्त अत्कायिक नो प्र० कीधो उत्तर हे गीतम जघन्य यो अन्तमैरूत्तं उत्कर्षं यो सातहजारवर्षं अन्तमैरूत्तं न्यून । आउकाइयाण आहिहियाणति । अत्कायिक औषिक १ अपर्याप्त २ पर्याप्तने जिम स

जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जतं । पज्जत्तयपुढविक्काइयाणं जते ! केवडयं कालं ठिडं प० ? गोयमा !
 जहन्नेणं अतोमुज्जतं उक्कोसेण वावीसं वाससहस्साइ अतोमुज्जत्तूणाड । सुज्जमपुढविक्काइयाण पुच्छा ?
 गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जत अपज्जत्तयसुज्जमपुढविक्काइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जह
 न्नेणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जत । पज्जत्तयसुज्जमपुढविक्काइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसे
 णवि अतोमुज्जत । वादरपुढविक्काइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अतोमुज्जतं उक्कोसेण वावीसं वा
 ससहस्साइ । अपज्जत्तयवादरपुढविक्काइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जतं ।

कपुयिधीकायिकाना नदत्त । कियत्काल स्थिति प्रश्न० गोतम । जपयतोप्युत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तकपुयिधीकायिकाना नदत्त ।
 कियत् काल स्थिति प्रश्न० गोतम । जपयनान्तर्मुहूर्तं मुत्कपतो द्वायिज्ञतिवर्षसस्त्रायन्तर्मुहूर्तानि । सूक्ष्मपुयिधीकायिकाना पुच्छा,
 गोतम । जपयतोप्यन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्तम् । अपर्याप्तकसूक्ष्मपुयिधीकायिकाना पुच्छा, गोतम । जपयनान्तरपुत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्तम् ।
 पर्याप्तकसूक्ष्मपुयिधीकायिकाना पुच्छा, गोतम । जपयतोप्युत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्तम् । वादरपुयिधीकायिकाना पुच्छा, गोतम । जपयनान्त

हे भगवन् कंतलो आयु कछो प्रश्न उत्तर हे गोतम जिघत्सु यो पिण अन्तर्मुहूर्तं उत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्तं नो कछो । पज्जत्तपुढविक्काइयाणति । पर्या
 प्त पुयिधीकाय नो हे भगवन् कंतलो आयु कछो प्रश्न उत्तर हे गोतम जघग्य यो अन्तर्मुहूर्तं उत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्तं नून दग्गहारउयं नो कछो । म
 मपुढविक्काइयाणति । सूक्ष्मपुयिधीकाय ना प्रश्न कौधा उत्तर हे गोतम जघग्य यो पिण उत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्तं नो । अपज्जत्तयसुज्जमप० । अपर्या
 प्त सूक्ष्मपुयिधीकायिक नो प्र० कौधा उत्तर हे गोतम जघग्य यो पिण उत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्तं नो । पज्जत्तयसुज्जमप० । पयितसूक्ष्मपुयिधीकायिक
 ना प्र० कौधा उत्तर हे गोतम जघग्य यो पिण उत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्तं नो । वादरपुढविक्काइयाणति । वादरपुयिधीकायनोप्र० कौधा उत्तर हे

उक्तीसेणं तिरिण राइदियाइं अतोमुजत्तूणाइं । सुज्जमत्तेउकाइयाणं पुच्छा ? गो० । जहन्नेणवि उक्तीसेणवि
 अतोमुजत्त । अपज्जत्तापज्जत्ताण सुज्जमाण पुच्छा ? गो० । जहन्नेणवि उक्तीसेणवि अतोमुजत्त । वायरते
 उकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अतोमुजत्त उक्तीसेण तिरिण राइदियाइ । अपज्जत्तयाण पुच्छा,
 ? गोयमा ! जहणेणवि उक्तीसेणवि अतोमुजत्त । पज्जत्तयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहणेणं अतोमुजत्त
 उक्तीसेण तिरिण राइदियाइ अतोमुजत्तूणाइ । वाउकाइयाण जत्ते ! केवइय कालं ठिई प० ? गोयमा !
 जहन्नेण अतोमुजत्त उक्तीसेण तिरिण वासमहस्साइ । अपज्जत्तवाउकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहणे

नाप्युत्कपतोपत्तमुत्तम् । अपयाप्तपयाप्तसूक्ष्मतेजस्कायिकाना पुच्छा, गीतम् । जचन्नेनाप्युत्कपतोपत्तमुत्तम् । वादरत्तजस्कायिकाना
 पुच्छा, गीतम् । जचन्नेनासंभूतमुत्कपत्तस्त्रीणि रात्रिदिवानि । अपयोत्तकवादरत्तेजस्कायिकाना पुच्छा, गीतम् । जचन्नेनोत्तरपताप्यन्त
 मुत्तम्, पयोत्तकवादरत्तजस्कायिकाना पुच्छा, गीतम् । जचन्नेनासंभूतमुत्कपत्तस्त्रीणि रात्रिदिवानि अन्तर्मुत्तानि । वायुकायिकाना

य यो तीन रात्रिदिन । सद्भुतेउका-याणति । भूयतेजस्कायिक ना प्र० कौधा उत्तर हे गीतम् जघग्ग यो पिण उत्कप यो पिण अन्तर्मुत्तानो कट्ठा ।
 अपज्जत्तापज्जत्ताण सुइमाण । अपयीस पयीस सूख तेजस्कायिक ना प्र० कौधा उत्तर हे गीतम् जघग्ग यो पिण उत्कप यो पिण अन्तर्मुत्त ना । वाद
 रत्तेउका-याणति । वादरत्तेजस्काय ना प्र० कौधा उत्तर हे गीतम् जघग्ग अन्तर्मुत्त उत्कट तीन अहोरात्र । अपज्जत्तयाणति । अपयीस वादरत्तेन
 स्थाय ना प्र० कौधा उत्तर हे गीतम् जघग्ग यो पिण उत्कप यो पिण अन्तर्मुत्त । पयत्ताणति । पयीस वादर तेजस्काय ना प्र० कौधा उत्तर हे गो
 तम् जघग्ग यो अन्तर्मुत्त उत्कट धी तीन रात्रिदिन अन्तर्मुत्त जन । वाउकाइयाणति । वायुकायिक ना प्र० कौधा उत्तर हे गो
 गोम जघग्ग यो अन्तर्मुत्त उत्कट धा तीन हजारन्प ना । अपज्जत्तयाउकाइयाणति । अपयीस वायुकायिक ना प्र० कौधा उत्तर हे गीतम् जघ

णिग्रहं । वादरच्या उकाडयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेण अतोमुज्जतं उक्कोसेणं सत्तवाससहरमाइं अपज्जा
तयवादरच्या उकाडयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जतं । पज्जत्तयाण पुच्छा ?
गोयमा ! जहन्तेणं अतोमुज्जतं उक्कोसेण सत्तवाससहरसाइं अतोमुज्जत्तणाइं । ते उकाडयाणं जते ! केवइय
काल ठिईं पयात्ता ? गोयमा ! जहन्तेण अतोमुज्जत उक्कोसेण तिरिण राइंदिवाइं । अपज्जत्तयाणं पुच्छा
? गोयमा ! जहन्तेणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जत । पज्जत्तयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेण अतोमुज्जतं

यिकानामौघिकानामपर्याप्तकाना पर्याप्तकाना यथा सूक्ष्मपृथिवीकायिकाना "त्रणित", तथा प्रणितव्यम् । वादराप्यायिकाना पुच्छा, गौत
म । जघन्येनान्तर्मुद्रुत्तमुद्रकपत सधधर्पसहस्त्राणि । अपर्याप्तवादराप्यायिकाना पुच्छा, गौतम । जघन्येनाप्युत्कर्षतोप्यन्तर्मुद्रुत्तं । पर्याप्तका
ना पुच्छा, गौतम । जघन्येनान्तर्मुद्रुत्तमुद्रकपत सधधर्पसहस्त्राण्यन्तर्मुद्रुत्तानि । ते जस्कायिकाना प्रदन्त । त्रियन्त काल स्थिति प्रश्नः ?
गौतम । जघन्येनास्तर्मुद्रुत्तमुद्रकपतस्त्रोणि रात्रिदिवानि । अपर्याप्तकाना पुच्छा, गौतम । जघन्येनाप्यन्तर्मुद्रुत्तमुद्रकपतोप्यन्तर्मुद्रुत्तम् । पर्या
प्तकाना पुच्छा, गौतम । जघन्येनान्तर्मुद्रुत्तमुद्रकपतस्त्रीणि रात्रिदिवानि अन्तर्मुद्रुत्तानि । सूक्ष्मतेजस्कायिकाना पुच्छा, गौतम । जघन्ये

स्म पृथिव्या कायिकान कक्षा तिम कहवो । वादरभायुक्ताः प्राणति । वादर अय्कायिकनो प्र० कौधो हे गौतम जघग धो अन्तर्मुद्रुत्त उत्कट धो मात
इजारवर्प नी कक्षा । अपलत्तवादर भाउकाद्राणति । अपर्याप्तवादर अय्कायिक नो प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य धो पिण उत्कर्ष धो पिण अन्तर्मुद्रु
त्तं । पलत्तयाणति । पर्याप्तक नो प्र० कौधो उत्तर हे गौतम जघन्य धो अन्तर्मुद्रुत्त उत्कर्ष धो सातइजारवर्प अन्तर्मुद्रुत्तं जन कक्षो । ते उकाद्राणति ।
तेजस्काग नो प्र० कौधो उत्तर हे गौतम जघच धो अन्तर्मुद्रुत्त उत्कर्ष धो तीन अङ्गाराण । अपलत्तयाणति । अपर्याप्त तेजस्कायिक नो प्र० कौधो उ०
हे गौतम जघग धो पिण उत्कर्ष धो पिण अन्तर्मुद्रुत्तं । पलत्तयाणति । पर्याप्त तेजस्कायिक नो प्र० कौधो उ० हे गौतम जघन्य अन्तर्मुद्रुत्तं नो उत्तर

णवि अतोमुज्जत । पज्जत्तवाटरवाउकाडयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहणेण अतोमुज्जतं उक्खोसेण तिसि
वाससहस्साइ अतोमुज्जत्तूणाइ । वणस्सडकाडयाण जतं केवइय काल ठिडं पणत्ता ? गोयमा ! जहसेण
अतोमुज्जत उक्खोमेण दसवाससहस्साइ । अपज्जत्तयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहणेणवि उक्खोमेणवि
अतोमुज्जत । पज्जत्तयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेण अतोमुज्जत उक्खोसेण दसवाससहस्साइ अतोमुज्ज
त्तूणाइ । सुजमवणस्सडयाकाइण उहिंयाण अपज्जत्तापज्जत्ताणय अतोमुज्जत । वादरवणस्सडकाडयाण

काना पृच्छा' गीतम । जघन्येनाप्युत्कपेत्तोप्यन्तमुद्भूतम् । पर्याप्तयादरवायुकायिकाना पृच्छा, गीतम । जघन्येनान्तमुद्भूतमुत्कपतस्त्रीणि व
पसहस्राण्यन्तमुद्भूतानि ॥ वनस्पतिकारिकायिकाना अदन्त । किमन्त कारु स्थिति प्रश्नः ? गीतम । जघन्येनान्तमुद्भूतमुत्कपेत्तो दशवपेसह
स्राणि । अपर्याप्तकाना पृच्छा, गीतम । जघन्येनाप्युत्कपेत्तोप्यन्तमुद्भूतम् । पर्याप्तकवनस्पतिकारिकायिकाना पृच्छा, गीतम । जघन्येनान्तमुद्भूतमु
त्कपेत्तो दशवपसहस्राण्यन्तमुद्भूतानि । सूक्ष्मवनस्पतिकारिकायिकानामपर्याप्तपयाप्तकाना ज्वान्तमुद्भूतम् ॥ वादरवनस्पतिकारिकायिकाना
पृच्छा, गीतम । जघन्येनान्तमुद्भूतमुत्कपेत्तो दशवपसहस्राणि । अपर्याप्तवादरवनस्पतिकारिकायिकाना पृच्छा, गीतम । जघन्येनोत्कपेत्तयान्त

हजारवर्षं भग्नमुद्भूतं जन । वनस्पतिकारिकायिकाना क नो इ भगवत् केतवा काचनो स्थिति कश्चो । हे गीतम जघन्य यो भग्नमुद्भूतं
उत्कपेत्त दश हजार वर्षेनो । अपलातियाण पुच्छा । अपर्याप्त वनस्पतिकारिकायिकाना क नो प्रयु कोधो उत्तर हे गीतम जघन्य यो पि उत्कपेत्त यो पि भग्नमुद्भूतं
पज्जत्तयाणिति । पर्याप्त वनस्पतिकारिकायिकाना प्र० कोधा उत्तर हे गीतम जघन्य यो भग्नमुद्भूतं उत्कपेत्त यो दश हजार वर्षे भग्नमुद्भूतं जन । सुदृढवपसह
कादयाणिति । सूक्ष्मवनस्पतिकारिकायिकाना कोधिवक् अपर्याप्त पर्याप्त नो भग्नमुद्भूतं ना प्रायु कश्चो । वादरवनस्पतिकारिकायिकाना प्र०
कोधा उत्तर हे गीतम जघन्य भग्नमुद्भूत उत्कपेत्त दश हजार वर्षे नो कश्चो । अपलातवादर वनस्पतिकारिकायिकाना प्र०

उक्तीसेण एगूणवणराइदिथाड । अपज्जत्तेइदिथाण पुच्छा ? गोयमा ! जहणेणवि उक्तीसेणवि अतोमु
 जत्त । पज्जत्तेइदिथाण पुच्छा ? गोयमा ! अतोमुजत्त जहणेण उक्तीसेण एगूणवणराइदिथाड अतोमु
 जत्तूगाइ । चउरिदिथाण जत्त । केवइय काल ठिह पयात्ता ? गोयमा ! जहणेण अतोमुजत्त उक्तीसेण
 वग्गसा । अप्पज्जत्तयचउरिदिथाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेणवि उक्तीसेणवि अतोमुजत्त । पज्जत्तयचउ
 रिदिथाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेण अतोमुजत्त उक्तीसेण वग्गसा अतोमुजत्तूणा । पंचिदियतिरिरु
 जोणियाण जत्त ! केवइय काल ठिह प० ? गोयमा ! जहन्तेण अतोमुजत्त उक्तीसेण तिथि पल्लवमाह ।

पुच्छा, गीतम । जपन्तेनोत्कपंत धान्तमुहूतम् । पर्याप्तोन्द्रियाणा पुच्छा, गीतम । जपन्तेनात्तमुहूतमुत्कपंत मकोनपन्वाश्ट्राग्निदिवानि
 अत्तमुहूतानि । चतुरिन्द्रियाणा पुच्छा, गीतम । जपन्तेनात्तमुहूतमुत्कपंत परमासा । अपर्याप्तकचतुरिन्द्रियाणा पुच्छा, गीतम । जप
 न्तेनाप्युत्कपतोप्यत्तमुहूतम् । पर्याप्तकचतुरिन्द्रियाणा पुच्छा, गीतम । जपन्तेनात्तमुहूतमुत्कपंत परमासा अत्तमुहूताना ॥ पञ्चेन्द्रिय

वास शरीरात् । अपज्जत्तेइदिथाणति । अपर्याप्त तोरिद्रिय ना प्र० उत्तर हे गीतम जघय यो पिण अत्तमुहूतं । पज्जत्तेइदिथाण
 ति । पर्याप्त तोरिद्रिय ना प्र० कौधा उत्तर हे गीतम जघय यो अत्तमुहूतं उत्कपं यो उगुणवास शरीरात् अत्तमुहूतं जन । चउरिदिथाणति । चो
 रिद्रियनो हे भगवन् केतना कालनो स्थिति कहो प्र० उत्तर हे गीतम जघय यो अत्तमुहूतं उत्कट यो क माननो कहो । अपज्जत्तयचउरिद्रियाण
 ति । अपर्याप्त चतुरिद्रियनो केतना कालनो स्थिति कहो प्र० उत्तर हे गीतम जघय यो पिण अत्तमुहूतं यो । पज्जत्तयचउरिद्रिया
 णति । पर्याप्त चौरिद्रियनो केतना कालनो स्थिति कहो प्र० उत्तर हे गीतम जघय यो अत्तमुहूतं उत्कट यो अत्तमुहूतं न्यू क मास । पंचिदियति
 रिक्खजोपियाणति । पंचेद्रियतिवच यानिकनो हे भगवन् केतना कालनो स्थिति कहो प्र० उत्तर हे गीतम जघय यो अत्तमुहूतं उत्कट यो तीन पण्यो

अपज्जत्तपचिदियतिरिस्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहसेणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जत्तं, पज्जत्तप
चिदियतिरिस्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहसेणं अतोमुज्जत्त उक्कोसेण तिसि पलित्थमाइ अतो
मुज्जत्तणाइ । सम्मूच्छिमपचिदियतिरिस्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेणं अतोमुज्जत्त उक्कोसेण
पुव्वकोढी । अपज्जत्तयसम्मूच्छिमपचिदियतिरिस्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहसेणवि उक्कोसेणवि
अतोमुज्जत्त । पज्जत्तयसम्मूच्छिमपचिदियतिरिस्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेण अतोमुज्जत्तं उ

तियंग्योनिकाना नदत्त । कियत्त काल स्थिति. प्रचरता ? गीतम । जघन्येनान्तमुहुत्तंमुत्कपत्तच्छीणि पत्थोपमानि । अपयोत्तकपप्वेन्द्रियत्त
यंग्योनिकाना पुच्छा, गीतम । जघन्येणाप्युत्कपत्तोप्यन्तमुहुत्तंम् । पर्यात्तपप्वेन्द्रियतियंग्योनिकाना पुच्छा, गीतम । जघन्येनान्तमुहुत्तंमुत्कपत्त
पत्तशीणि पत्थोपमान्यन्तमुहुत्तानि । सम्मूच्छिमपप्वेन्द्रियतियंग्योनिकाना पुच्छा, गीतम । जघन्येनान्तमुहुत्तंमुत्कपत्त पव्वकोटि । अप
योत्तकसम्मूच्छिमपप्वेन्द्रियतियंग्योनिकाना पुच्छा, गीतम । जघन्यत्त उत्कपत्तद्यान्तमुहुत्तंम् । पर्यात्तसम्मूच्छिमपप्वेन्द्रियतियंग्योनिकाना पु
च्छा, गीतम । जघन्येनान्तमुहुत्तंमुत्कपत्त पर्याकोटिरन्तमुहुत्ताना । गमब्बुत्तकान्तिकपप्वेन्द्रियतियंग्योनिकाना पुच्छा, गीतम । जघन्येनान्त

पम । अपज्जत्तपचिदियत्ति । अपयोत्त पवेदिय तियंय योनिक नो प्रय उत्तर हे गीतम जघन्य यो पिण उत्तरयं यो पिण अन्तमुहुत्तं । पज्जत्तपचिदिय
त्ति । पर्यात्त पवेदिय तियंय योनिक नो प्र० उत्तर हे गीतम जघन्य यो अन्तमुहुत्तं उत्कट्ट यो तीन पन्थोपम अन्तमुहुत्तं न्यून । सम्मूच्छिमपचिदियत्ति
रिस्कजोणियाणत्ति । सम्मूच्छिम पवेदिय तियंय योनिक नो प्र० कोधो उत्तर हे गीतम जघन्य यो अन्तमुहुत्तं उत्कपं यो पूर्वकोटो । अपज्जत्तयसम्मूच्छि
मत्ति । अपयोत्त सम्मूच्छिम पवेदिय तियंय यो प्र० उत्तर हे गीतम जघन्य यो पिण उत्तरयं यो पिण अन्तमुहुत्तं । पज्जत्तयसम्मूच्छिमत्ति । पर्यात्त सम्
मूच्छिम पवेदिय तियंय योनिक नो प्र० उत्तर हे गीतम जघन्य यो अन्तमुहुत्तं उत्कपं यो अन्तमुहुत्तं न्यून पूर्वकोटो । गम्भयुत्तकान्तिक

क्लोसेण पुव्वकोणी अतोमुज्झूणा । गप्पवक्कतियपचिदियतिरिस्कजोणियाणं पुच्छा ? गो० । जहणेण अतोमु
 ज्झत उक्कोसेण तिसि पल्लिवमाइ । अपज्झतगप्पवक्कतियपचिदियतिरिस्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा !
 जहणेणवि अतोमुज्झत उक्कोसेणवि अतोमुज्झत । पज्झतगप्पवक्कतियपचिदियतिरिस्कजोणियाण पुच्छा ?
 गोयमा ! जहसेणं अतोमुज्झत उक्कोसेण तिसि पल्लिवमाइ । जलयरपचिदियतिरिस्क
 जोणियाण केवइय काल ठिई पणत्ता ? गोयमा ! जहसेणं अतोमुज्झत उक्कोसेण पुव्वकोणी । अपज्झत
 जलयरपचिदियतिरिस्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहणेणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्झत । पज्झतयज

[illegible]

लयरपचिदियतिरिस्कजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अतोमुज्जतं उक्कोसेणं पुव्वकोप्पी अतोमुज्ज
त्तणा । सम्मूच्छिमजलयरपचिदियतिरिस्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अतोमुज्जत उक्कोसेणं
पुव्वकोप्पी । अपज्जत्तयसम्मूच्छिमजलयरपचिदियतिरिस्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेगवि उक्को
सेणवि अतोमुज्जत । पज्जत्तसम्मूच्छिमजलयरपचिदियतिरिस्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण
अतोमुज्जत उक्कोसेण पुव्वकोप्पी अतोमुज्जत्तणा । गप्पवक्कतियजलयरपचिदियतिरिस्कजोणियाण पुच्छा ,
गोयमा ! जहन्नेण अतोमुज्जत उक्कोसेण पुव्वकोप्पी । अपज्जत्तयगप्पवक्कतियजलयरपचिदियतिरिस्कजो

ना । सम्मूच्छिमजलयरपच्छन्दियतियग्योनिकाना पुच्छा , गीतम । जघन्येनात्तमुद्दत्तमुत्कर्षेण पूयकोटि । अपयांसमस्मूच्छिमजलयरपच्छेन्द्रि
यतियग्योनिकाना पुच्छा , गीतम । जघन्यत्त उत्कर्षेत्त द्यात्तमुत्तम् । पयांससम्मूच्छिमजलयरपच्छेन्द्रियतियग्योनिकाना पुच्छा , गीतम ।
जघन्यनात्तमुद्दत्तमुत्कर्षेण पूव्वकोटिरत्तमुत्तम् । गर्ज्ज्वरक्रान्तिकजलयरपच्छेन्द्रियतियग्योनिकाना पुच्छा , गीतम । जघन्येनात्तमुद्दत्तमु
त्कर्षेण पूव्वकोटि । अपयांसमस्मूच्छिमजलयरपच्छेन्द्रियतियग्योनिकाना पुच्छा , गीतम । जघन्यत्त उत्कर्षेत्त द्यात्तमुत्तम् । पयांसगज्जत्त

प्र० उत्तर हे गीतम जघन्य यो अत्तमुद्दत्त उत्तरय या अत्तमुद्दत्तं नूनं पूव्वकोटि । सम्मूच्छिमजलयरपचिदियतिरिस्कजोणि । सम्मूच्छिमजलयर पचे द्रय
नियवयोनिक नो प्रय उ० हे गीतम जघन्य यो अत्तमुद्दत्तं उत्कर्षे यो पूव्वकोटि । अपज्जत्तयसम्मूच्छिमजलयरपचिदियति । अपयांसमस्मूच्छिमजलयर
पचेन्द्रिय तियवयोनिक नो प्रय उ० हे गीतम जघन्य यो पिण उत्कर्षे यो पिण अत्तमुद्दत्तं । पज्जत्तसम्मूच्छिमजलयरपचिदियति । पयांसमस्मूच्छिम
जलयर पचेन्द्रिय तियवयोनिक नो प्र० उ० हे गीतम जघन्य यो पिण अत्तमुद्दत्तं उत्कर्षे यो पूव्वकोटि अत्तमुद्दत्तं ज्ञान । गप्पवक्कतियजलयरति । गर्भय
रक्रान्तिक जलयर पचेन्द्रिय तियवयोनिक नो प्र० उ० हे गीतम जघन्य यो अत्तमुद्दत्तं उत्कर्षे यो पूव्वकोटि । अपज्जत्तयगप्पवक्कतियति । अपयांसमस्मूच्छिमजलयर

णिषाण पुच्छा ? गोयमा ! जहणेणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जतं । पज्जतगप्पवक्कंति यजलरपरपच्चिदियतिरि
स्कजोणिषाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अतोमुज्जत उक्कोसेण पुव्वकोढी अतोमुज्जतणा । चउप्पय
थलयरपच्चिदियतिरिस्कजोणिषाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अतोमुज्जत उक्कोसेण तिणिपलिनवमाइ
अपज्जतयचउप्पयथलयरपच्चिदियतिरिस्कजोणिषाण पुच्छा ? गोयमा ! जहणेणवि उक्कोसेणवि अतोमु
ज्जत । पज्जतयचउप्पयथलयरपच्चिदियतिरिस्कजोणिषाण पुच्छा ? गोयमा ! जहणेण अतोमुज्जत उक्को
सेण तिणि पलिनवमाइ अतोमुज्जतूणाइ । सम्भूच्छिमचउप्पयथलयरपच्चिदियतिरिस्कजोणिषाणं पुच्छा ,

रत्तात्तिकजलवरपच्चान्द्रियतिर्यगोनिषाणा पुच्छा , गीतम । जघन्येनात्तमुहुत्तमुत्तपतोत्तमुहुत्तना पूयंकोटि । चतुप्पटस्यलवरपच्चान्द्रिय
तिर्यगोनिषाणा पुच्छा , गीतम । जघन्येनात्तमुहुत्तमुत्तपत र्हीणि पत्थापमानि । अपर्याप्तस्यलवरपच्चान्द्रियतिर्यगोनिषाणा पुच्छा , गीत
म । जघन्यत उत्तकपतद्यात्तमुहुत्तम् । पर्याप्तचतुप्पटस्यलवरपच्चान्द्रियतिर्यगोनिषाणा पुच्छा , गीतम । जघन्येनात्तमुहुत्तमुत्तपत र्हीणि प
त्योपमान्यत्तमुहुत्तानि । सम्भूच्छिमचतुप्पटस्यलवरपच्चान्द्रियतिर्यगोनिषाणा पुच्छा , गीतम । जघन्येनात्तमुहुत्तमुत्तपत चतुरङ्गीतिवदं

रत्तात्तिक जलवर पचेद्विय तिर्यचगानिक ना प्र० उत्तर हे गीतम जघन्य धा अन्तमुहुत्तं उत्तकपं धी पिण अत्तमुहुत्तं । पज्जतगप्पवक्कंति यजलरपाचदि
यति । पर्याप्त गर्भव्यत्तागितक जलवर पचेद्विय तिर्यच गानिक ना प्र० उत्तर हे गीतम जघन्य धो अन्तमुहुत्तं उत्तकपं धी अन्तमुहुत्तं जन पदंकोढी ।
वडप्पय धलवरपच्चिट्ठतिरिक्खति । चतुप्पटस्यलवर पच्चान्द्रिय तिर्यगानिक ना प्र० उत्तर हे गीतम जघन्य धो अत्तमुहुत्तं उत्तकपं धी तोन पन्योपमा
प्रपज्जतयचउप्पयथलयरपच्चिदियति । अपर्याप्त चतुप्पटस्यलवर पच्चान्द्रिय तिर्यगानिक ना प्र० उत्तर हे गीतम जघन्य धो पिण उत्तकपं धी पिण अत्त
मुहुत्तं । पज्जतयचउप्पयथलयरपच्चिदियात्त । पर्याप्त चतुप्पटस्यलवर पच्चान्द्रिय तिर्यच यानिक ना प्र० उत्तर हे गीतम जघन्य धो अत्तमुहुत्तं उत्तकपं धी

तीन पद्यापम अन्तर्मुहूर्तं कृतम् । सम्प्रच्छिन्नमवस्थायनवरपचिद्विद्यति । सम्प्रच्छिन्नमवस्थायनवर पचिद्विद्य तियेवयोनिक नो म० उत्तर हे भोतम
जघन्य यो यन्तर्मुहूर्तं वत्कर्म यो चौरासो सहस्रं ये नो । अप्यस्तसम्प्रच्छिन्नमवस्थायनवरपचिद्विद्यतिरिक्त्विति । अप्यस्त सम्प्रच्छिन्नमवस्थायनवर
पचिद्विद्य तियेवयोनिक नो म० उत्तर हे भोतम जघन्य यो पिण वत्कर्म यो पिण अन्तर्मुहूर्तं नो । पञ्चस्तसम्प्रच्छिन्नमवस्थायनवरपचिद्विद्यतिरिक्त्विति
पियाण प्रच्छा । पयास्त सम्प्रच्छिन्नमवस्थायनवर पचिद्विद्य तियेवयोनिक नो प्रत्यु स० हे भोतम जघन्य यो अन्तर्मुहूर्तं वत्कर्म यो चौरासो जलारवध
अन्तर्मुहूर्तं कृतम् । गभयत्क्रान्तियवस्थायनवरपचिद्विद्यति । गभयत्क्रान्तियवस्थायनवर पचिद्विद्य तियेवयोनिक नो प्रत्यु उत्तर हे भोतम जघन्य यो
अन्तर्मुहूर्तं वत्कर्म यो तीन पद्यापम । अप्यस्तसम्प्रच्छिन्नमवस्थायनवर पचिद्विद्य तियेवयोनिक नो प्रत्यु । उत्तर

पुच्छा ? 'गोयमा ! जहन्तेणवि उक्कोसेणवि' अतोमुज्जतं पज्जत्तगग्लवक्कातियचउप्पयथलयरपचिदियतिरि
 रक्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहणेण अतोमुज्जत उक्कोसेणं तिखि पलिउवमाइ अतोमुज्जत्तणाइ ।
 उरपरिसप्पथलयरपचिदियतिरिक्कजोणियाण पुच्छा ? 'गोयमा ! जहन्तेण अतोमुज्जत उक्कोसेणं पुद्द
 कोली अपज्जत्तयउरपरिसप्पथलयरपचिदियतिरिक्कजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहणेणवि उक्कोसे
 णवि अतोमुज्जत । पज्जत्तगउरपरिसप्पथलयरपचिदियतिरिक्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेण
 अतोमुज्जत उक्कोसेण पुद्दकोली अतोमुज्जत्तणा । समूच्छिमसामसपुच्छा कायव्हा, गोयमा ! जहन्तेण

न्त्रियतियग्योनिकाना पुच्छा, गीतम ! जघम्येनान्तमुद्दत्तमुत्तमत्तमुत्तुत्तानि । उर परिसपंस्थलचरपञ्चन्द्रियतियग्योनि
 काना पुच्छा, गीतम ! जघम्येनान्तमुद्दत्तमुत्तमत्तमुत्तुत्तानि । अपयोस्तकोर परिसपस्थलचरपञ्चन्द्रियतियग्योनिकाना पुच्छा, गीतम !
 जघम्येनान्तमुद्दत्तमुत्तमत्तमुत्तुत्तानि । अपयोस्तकोर परिसपस्थलचरपञ्चन्द्रियतियग्योनिकाना पुच्छा, गीतम ! जघम्येनान्तमुद्दत्तमुत्त
 मत्तमुद्दत्ताना पुद्दकोटि । समूच्छिमसामान्यपुच्छा, गीतम ! जघम्येनान्तमुद्दत्तमुत्तमत्तमुत्तुत्तानि । अपयोस्तकसम्पुच्छिमो

हे गीतम जघग्ग थो पिण उरकपं थो पिण अन्तमुद्दत्तं । पज्जत्तगग्लवक्कातियचउप्पयथलयरति । पर्याप्तं गमंयुत्तक्रान्तिक चोपट थलचर पचिदिय तिर्यग्य
 निदं नो प्रयं उत्तर हे गीतम जघन्य थो अन्तमुद्दत्तं उत्तरकपं थो तीन पक्कोपम अन्तमुद्दत्तं न्यून । उरपरिसपस्थलचरति । उरपरिसपं थलचर पचेद्विग
 तिर्यच यानिकनो म० गीतम जघन्य थो अन्तमुद्दत्तं उत्तरकपं थो पुद्दकोटि । पपज्जत्तयउरपरिसपस्थलचरति । अपयोस्त उरपरिसपं थलचर पचेद्विग तिर्यच
 यानिक नो प्रय उत्तर हे गीतम जघग्ग थो अन्तमुद्दत्तं उत्तरकपं थो पिण अन्तमुद्दत्तं । पज्जत्तगउरपरिसपस्थलचरति । पर्याप्त उत्तरपरिसपं थलचर पचेद्विग
 तिर्यच यानिक नो म० उत्तर हे गीतम जघन्य थो अन्तमुद्दत्तं उत्तरकपं थो पुद्दकोटि । अन्तमुद्दत्तं गून । समूच्छिमसामयति । समूच्छिमनो सामान्य पुच्छा ।

अतोमुजतं उक्कोसेण तेवखावाससहसाइं । अपज्जात्तगसम्मूच्छिमउरपरिसप्पथलयरपंचिदियतिरिक्कजोणि
याणं पुच्छा ? गोयमा ! जहसेणवि उक्कोसेणवि अतोमुजत । पज्जात्तगसम्मूच्छिमउरपरिसप्पथलयरपचि
दियतिरिक्कजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहसेण अतोमुजत उक्कोसेण तेवखं वाससहसाइ अतोमु
जत्तूगाइं । गप्पवक्कतियउरपरिसप्पथलयरपचिदियतिरिक्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहसेणं अतो
मुजत उक्कोसेणं पुव्वकोही । अपज्जात्तगगप्पवक्कतियउरपरिसप्पथलयरपचिदियतिरिक्कजोणियाणं पुच्छा ?
गोयमा ! जहसेणवि उक्कोसेणवि अतोमुजत । पज्जात्तगगप्पवक्कतियउरपरिसप्पथलयरपचिदियतिरिक्क

र परिसपंस्थलवरपब्बेन्द्रियतियगोणिकाना पुच्छा, गीतम ! जपयेनोत्तकपंतथात्तमुहुत्तंम् । पर्याप्तकसम्मूच्छिमोर परिसपंस्थलवरपब्बे
न्द्रियतियगोणिकाना पुच्छा, गीतम ! जपयेनान्तमुहुत्तंमुत्तकपंतस्त्रिपब्बागपंसहसाअत्तमुहुत्तानि । गज्जयुत्तान्तिकोर परिसपंस्थल
वरपब्बेन्द्रियतियगोणिकाना पुच्छा, गीतम ! जपयेनान्तमुहुत्तमुत्तकपंत पुव्वकोटि । अपर्याप्तकगमंयुत्तान्तिकोर परिसपंस्थलवरपब्बे
न्द्रियतियगोणिकाना पुच्छा, गीतम ! जपयेनान्तमुहुत्तमुत्तकपंतोप्यत्तमुहुत्तंम् । पर्याप्तकगमंयुत्तान्तिकोर परिसपंस्थलवरपब्बेन्द्रियति

करवो ८० हे गीतम जघय यो अत्तमुहुत्तं उत्तकपं यो अपनहजारवर्धनी । अपज्जात्तसग्गच्छिमउरपरिसपंत्ति । अपर्याप्तसम्मूच्छिम उरपरिसपं थलवर
पचेदिय तियं च योनिक नो प्र० ८० उत्तर हेगीतम जघय यो उत्तकपं यो पिण अत्तमुहुत्तं । पत्तत्तगसमूच्छिमउरपरिसपंत्ति । पर्याप्तसम्मूच्छिमउरपरिसपं
थलवर पचेदिय तियं गोनिक नो प्र० ८० हे गीतम जघय यो अत्तमुहुत्तं उत्तकपं यो अपनहजार वपं अत्तमुहुत्तं न्यून । गमवक्कतियउरपरिसपंत्ति ।
गमंयुत्तान्तिक्क उरपरिसपं थलवर पचेदिय तियं च योनिक नो प्र० ८० हे गीतम जघय यो अत्तमुहुत्तं उत्तकपं यो पुव्वकोटि । अपज्जात्तसग्गच्छिमउरपरिसपं
उरपरिसपंत्ति । अपर्याप्त गमंज उरपरिसपं थलवर पचेदिय तियं च योनिक नो प्र० ८० हे गीतम जघय यो पिण उत्तकपं यो पिण अत्तमुहुत्तं । पत्त

यतिरिस्कजोणिषाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहस्ये गवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जत । पज्जत्तगसम्मूच्छिमन्नयपरि
सप्यथलयरपचिदियतिरिस्कजोणिषाण पुच्छा ? गोयमा ! जहस्येणं अतोमुज्जत उक्कोसेण वायालीस वा
ससहस्साइ अतोमुज्जन्नाइ । गप्पवक्कतियन्नयपरिसप्यथलयरपचिदियतिरिस्कजोणिषाण पुच्छा ? गो
यमा ! जहस्येण अतोमुज्जतं उक्कोसेणं पुव्वकोली । अपज्जत्तगप्पवक्कतियन्नयपरिसप्यथलयरपचिदियति
रिस्कजोणिषाण पुच्छा ? गोयमा ! जहस्येणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जत । पज्जत्तगप्पवक्कतियन्नयपरिस
प्यथलयरपचिदियतिरिस्कजोणिषाण पुच्छा ? गोयमा ! जहस्येण अतोमुज्जत उक्कोसेण पुव्वकोली अतोमु

च्छिमन्नयपरिसप्यथलयरपचिदियतिरिस्कजोणिषाण पुच्छा, गोतम । जघन्येनाप्पुत्तकपतोप्पत्तमुहूत्तम् । पर्याप्तसम्मूच्छिमन्नयपरिसप्यथलयर
पचिदियतिरिस्कजोणिषाण पुच्छा, गोतम । जघन्येनात्तमुहूत्तमुत्तकपतो द्विचत्वारिंशद्वयसहस्राण्यत्तमुहूत्तानि । गन्नव्युत्क्रान्तिकन्नयपरिस
प्यथलयरपचिदियतिरिस्कजोणिषाण पुच्छा, गोतम । जघन्येनात्तमुहूत्तमुत्तकपतं पूर्वकोटि । अपर्याप्तगजंद्युत्क्रान्तिकन्नयपरिसप्यथलयरप
चिदियतिरिस्कजोणिषाण पुच्छा, गोतम । जघन्यत्त उत्तकपतस्यात्तमुहूत्तम् । पर्याप्तगजंद्युत्क्रान्तिकन्नयपरिसप्यथलयरपचिदियतिरिस्कजोणिषा

परिमप थल्लवर पचेद्विग तिं च योनिक नो प्र० ८० । हे गोतम जघन्य यो पिण उत्तकपं यो पिण अत्तमुहूत्तं । पल्लत्तगसम्मूच्छिमन्नयपरिमपत्ति । पर्या
प्तसम्मूच्छिमन्नयपरिमप थल्लवर पचेद्विग तिं च योनिकनो प्र० ८० । हे गोतम जघन्य यो अत्तमुहूत्तं उत्तकपं यो वेतालोस इत्थार वपं अत्तमुहूत्तं जन
गम्यत्तियमपरिमपत्ति । गर्भव्युत्क्रान्तिक भुजपरिमप थल्लवर पचेद्विग तिं च योनिक नो प्र० ८० । हे गोतम जघन्य यो अत्तमुहूत्तं उत्तकपं यो पं
कोटो । अपर्याप्तक गर्भव्युत्क्रान्तिक भुजपरिमप थल्लवर पचेद्विग तिं च योनिक नो प्र० ८० । हे गोतम जघन्य यो पिण उत्तकपं यो पिण अत्तमुहूत्तं । पल्ल
त्तगम्यत्तियमपरिमपत्ति । पर्याप्त गर्भव्युत्क्रान्तिक भुजपरिमप थल्लवर पचेद्विग तिं च योनिक नो प्र० ८० । उत्तर हे गोतम जघन्य यो अत्तमुहूत्तं उत्तकपं

जितूणा । खहरपचिदियतिरिक्कजोणियाणं जते । केवइय कालं छिईं पणत्ता ? गोयमा ! जहणेण अतोमुज्जत्त उक्कोसेण पलिउंयमस्स असखेज्जजागो । अपज्जात्तयखहरपचिदियतिरिक्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जत्त । पज्जात्तयखहरपचिदियतिरिक्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अतोमुज्जत्त उक्कोसेण पलिउंयमस्स असखिज्जजागे अतोमुज्जत्तूणे । सम्मूच्छिमखहरपचिदियतिरिक्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण अतोमुज्जत्त उक्कोसेण वावत्तरिवाससहस्साणि । अपज्जात्तयसम्मूच्छिमखहरपचिदियतिरिक्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अतो

ना पूच्छा । गीतम ! जपन्येनात्तमुद्दुत्तमुत्कपत्त पूव्कोटिरत्तमुद्दुत्ताना । खहरपचन्द्रियतियग्योनिकाना जदत्त । कियत्त कालं स्थिति प्रज्ञा ? गीतम ! जपन्येनात्तमुद्दुत्तमुत्कपत्त पत्थोपमस्यासङ्खेयोजाग । अपयांपमस्यासङ्खेयोजाग । गीतम ! जपन्येनात्तमुद्दुत्तमुत्कपत्त पत्थोपमस्यासङ्खेयो जागो ऽन्तमुद्दुत्तान । सम्मूच्छिमखहरपचन्द्रियतियग्योनिकाना पूच्छा, गीतम ! जपन्येनान्तमुद्दुत्तमुत्कपत्तो द्विसप्ततिवयंसङ्खराणि । अपयांपतसम्मूच्छिमखहरपचन्द्रियतियग्योनिकाना पूच्छा, गीतम ! जपन्येनात्तमुद्दुत्तमुत्कपत्तो द्विसप्ततिवयंसङ्खरापत्तमुद्दुत्तानि । गजंठ्यट्ठान्तिक्क

यो पूव्काणो अन्तमुद्दुत्तं जन । खहरपचिदयात्त । खहर पचन्द्रिय तिवंख योनिक ना प्र० उ० हे गीतम जसद्व यो अत्तमुद्दुत्तं उत्कर्षं को पत्थोपम नो असत्थातमो भाग । अपत्थत्तखहररति । अययांति खहर पचेन्द्रिय तिवंख योनिक नो प्र० उत्तर हे गीतम जसद्व यो पिष उत्कर्षं यो पिण अत्तमुद्दुत्तं । पज्जात्तयखहरपचिदियतिरिक्कजोणियाणवि । ययांस खहर पचेन्द्रिय तिवंख योनिक नो प्र० उत्तर हे गीतम जसद्व यो अत्तमुद्दुत्तं उत्कर्षं यो पत्थापम नो असत्थातमो भाग अन्तमुद्दुत्तं ग्यन् । सम्मूच्छिम खहर पचिदियतिरिक्कजोणियाण पुच्छा । सम्मूच्छिम खहर पचन्द्रिय तिवंख योनिक नो

मुञ्जत । पञ्जत्तयसम्मच्छिमखहयरपचिदियतिरिक्कजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेणं अतोमुञ्जतं उक्कोसेण वावत्तरिवाससहस्साइ अतोमुञ्जत्तूणाइ । गप्पत्रक्कतियखहयरपचिदियतिरिक्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जह्मेण अतोमुञ्जत उक्कोसेणं पलिउवमस्स अउसखेज्जइजागे । अपज्जत्तयगप्पवक्कतियखहयरपचिदियतिरिक्कजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! जह्मेणवि उक्कोसेणवि अतोमुञ्जत । पज्जत्तयगप्पत्रक्कतियखहयरपचिदियतिरिक्कजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेणं अतोमुञ्जत उक्कोसेण पलिउवमस्स अउसखेज्जइजागो अतोमुञ्जत्तूणो । मणुस्साण जते ! केवडय कालं ठिई पणत्ता ? गोयमा ! जहन्तेणं

सुखरपब्बेन्द्रियतियग्योनिकाना पुच्छा ? गीतम । जअयेनात्तमुहुत्तमुत्तकपतो पत्थोपमस्याऽऽख्यंवे ज्ञाने । अपर्याप्तगमंयुत्तक्रान्तिकसुखरपब्बेन्द्रियतियग्योनिकाना पुच्छा ? गीतम । जअन्यनायुत्तकपंतद्यात्तमुहुत्तंम् । पर्याप्तगमंयुत्तक्रान्तिकसुखरपब्बेन्द्रियतियग्योनिकाना पुच्छा ? गीतम । जअयेनात्तमुहुत्तमुत्तकपंत पत्थोपमस्याऽऽख्यंयत्तमे ज्ञाने ऽत्तमुहुत्तं । मनुष्याणा अदत्त । अियत्त काल स्थिति मत्तप्ता ? गीतम । जअयेनात्तमुहुत्तमुत्तकपंतस्त्रीणि पत्थोपमानि । अपर्याप्तकमनुष्याणा पुच्छा ? गीतम । जअयेनायुत्तकपंतद्यात्तमुहुत्तंम् । पर्याप्तकमनुष्याणा पुच्छा ? गीतम । जअयेनात्तमुहुत्तमुत्तकपंत स्त्रीणि पत्थोपमानि अत्तमुहुत्तंनानि । सम्मच्छिममनुष्याणा पुच्छा ? गीतम । जअयेना

प्रश्न ८० हे गीतम जअन्य यो अगतमुहुत्तं उत्तकपं यो अदत्त इज्जार वर्य । अयत्तसम्मच्छिमखहयरपचिदियति । अपर्याप्त समच्छिमं सुखर पचेन्द्रिय तियं च योनिक नो प्र० उत्तर हे गीतम जअगं यो पिण उत्तकपं यो पिण अत्तमुहुत्तं । पज्जत्तयसम्मच्छिमखहयरपचिदियति । पर्याप्त समच्छिमं सुखर पचेन्द्रिय तियं च योनिक नो प्र० ८० हे गीतम जअन्य यो अत्तमुहुत्तं उत्तकपं यो अदत्त इज्जार वर्य अगतमुहुत्तं ग्यून । अथक्कतिअउदयरपचिदियति गमंयुत्तक्रान्तिक सुखर पचेन्द्रिय तियं च योनिक नो प्र० ८० हे गीतम जअन्य यो अगतमुहुत्तं उत्तकपं यो पत्थोपम नो असख्याता मा भाग । अपज्जत्तयग

अतोमुज्जत उक्तीसेणं तिणि पलिनुवमाइ । अपज्जतगमणस्साणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेणवि उक्ती
 सेणवि अतोमुज्जत । पज्जतयमणस्साण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेण अतोमुज्जत उक्तीसेण तिणि पलिनु
 वमाइ अतोमुज्जत्तूगाइ । सम्मुच्छिममणस्साण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेणवि उक्तीसेणवि अतोमुज्जत
 गप्पवक्कतियमणस्साण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेण अतोमुज्जत उक्तीसेण तिणि पलिनुवमाइ । अपज्जत
 गप्पवक्कतियमणस्साण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेणवि उक्तीसेणवि अतोमुज्जत । पज्जतगप्पवक्कतियमण
 स्साण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेण अतोमुज्जत उक्तीसेण तिणि पलिनुवमाइ अतोमुज्जत्तूगाइ । बाणमत्तराण

पुत्तकपत्तयात्तमंहुत्तंम् । गजंयुत्क्रान्तिकमनुयाणा पुच्छा, गीतम । जघन्येनाऽत्तमंहुत्तंमुत्तकपत्तयाणि पत्तोपमानि । अपयोरत्तगजद्वयुत्क्रान्ति
 कमनुयाणा पुच्छा, गीतम । जघन्येनाप्युत्तकपत्तयात्तमंहुत्तंम् । पर्याप्तगजंयुत्क्रान्तिकमनुयाणा पुच्छा, गीतम । जघन्येनात्तमंहुत्तमुत्तकपत्त
 यीणि पत्तोपमानि अतमंहुत्तानि । वानध्यन्तराणा देवाना जदन्त । कियन्त कारा स्थिति प्रज्ञप्ता, गीतम । अपन्येन दस वपसस्सा
 भवकतिउखइयरत्ति । अपर्याप्त गंभ्युत्क्रान्तिक खर पचेद्विग तिर्येव योनिक नो प्र० उत्तर हे गीतम जघन्य यो पिण उत्तमंहुत्तं ।
 पज्जतगभयकतियखइयरत्ति । पर्याप्त गंभ्युत्क्रान्तिक खर पचेद्विग तिर्येव योनिक नो प्र० उत्तर हे गीतम जघन्य यो अतमंहुत्तं उत्तकपं योपय्यापम
 नो असंख्यातनो भाग अत्तमंहुत्तं न्यून । मनुष्याण भते ति । मनुष्य नो हे भगवन् केतका काज नो स्थिति कक्षी प्र० उत्तर हे गीतम जघन्य यो अत्त
 मंहुत्तं उत्तकपं यो तीन पत्तोपम । अपज्जतगमणस्साण पुच्छा । अपर्याप्त मनुष्य नो प्र० उत्तर हे गीतम जघन्य यो पिण उत्तमंहुत्तं । पज्ज
 तयमणस्साण ति । पर्याप्त मनुष्य नो प्र० कोक्षी उत्तर हे गीतम जघन्य यो अतमंहुत्तं उत्तकपं यो तीन पत्तोपम अत्तमंहुत्तं न्यून । समंस्सिममणस्सा
 ण पुच्छति । समंस्सिम मनुष्य नो प्र० उत्तर हे गीतम जघन्य यो अत्तमंहुत्तं उत्तकपं यो पिण तेहिज । गभयकतियमणस्साण पुच्छा । गभज मनुष्य

जते ! देवाण केचद्वयं कालं ठिई पणत्ता ? गोयमा ! जहन्तेण दसवाससहस्साइ उक्कोसेणं पलिनेवमं ।
 अपज्जत्तवाणमतरदेवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जह्खेणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जत्तं । पज्जत्तयवाणमतर
 देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेण दसवाससहस्साइ अतोमुज्जत्तुणाइ उक्कोसेण पलिनेवम अतोमुज्ज
 त्तुणं । वाणमत्तरीणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जह्खेण दसवाससहस्साइ उक्कोसेण अरुपलिनेवम । अ
 पज्जत्तियाणं जते ! वाणमत्तरीणं देवीण पुच्छा ? गोयमा ! जह्खेणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जत्त । पज्ज

पि उत्तकपंत पत्थोपमम् । अपर्याप्तकवानव्यन्तर देवाना पृच्छा, गीतम् । अपर्याप्तकपंतोप्यतमुद्रुतम् । पर्याप्तकवानव्यन्तराणा देवा
 ना पृच्छा, गीतम् । अपर्याप्तक दस वर्षसहस्राणि अन्तमुद्रुतानि उत्तकपंतोन्तमुद्रुतानि पत्थोपमम् । वानव्यन्तरीणा देवाना पृच्छा, गीत
 म । अपर्याप्तक दस वर्षसहस्राणि उत्तकपंतो अरुपत्थोपमम् । अपर्याप्तदेवीना प्रदन्त । पृच्छा, गीतम् । अपर्याप्तानाप्युत्तकपंतद्यान्तमुद्रुतम् ।
 पर्याप्तकवानव्यन्तरीणा प्रदन्त । पृच्छा, गीतम् । अपर्याप्तक दस वर्षसहस्राणि अन्तमुद्रुतानि उत्तकपंतोप्यत्थोपमम् अन्तमुद्रुतानिम् ।
 ज्योतिष्काणा प्रदन्त । देवाना कियन्त कास स्थिति प्रवृत्ता, गीतम् । अपर्याप्त पत्थोपमाएजागो उत्तकपंत पत्थोपम पर्यसहस्राभ्यापिकम् ।

नो प्रश्न उत्तर हेगीतम् जघन्य थो अन्तमुद्रुत उत्तकपं थो तीन पत्थोपम । अपज्जत्तन गभज्जत्तियसखाय ति । अपर्याप्त गभज मन्थ नो प्रश्न कीर्धो
 उत्तर हेगीतम् जघन्य थो पिण उत्तकपं थो पिण अन्तमुद्रुतं नो । पज्जत्तगभज्जत्तियसखायति । पर्याप्त गभज मन्थ ना प्र० उत्तर हेगीतम् जघन्य
 थो अन्तमुद्रुत उत्तकपं थो तीन पत्थोपम अन्तमुद्रुतं न्यून । वाणमत्तराण भते देवाणात । वानव्यन्तर देवनो हे भगवन् केतवा कास नो स्थिति क
 हो प्र० उत्तर हेगीतम् जघन्य थो दग्गहजार वर्ष उत्तकपं थो पत्थोपम । अपज्जत्तयवाणमत्तराणति । अपर्याप्त वानव्यन्तर देवता ना प्र० उत्तर हेगीतम्
 जघन्य थो पिण उत्तकपं थो पिण अन्तमुद्रुतं । पज्जत्तयवाणमत्तराण देवायं ति । पर्याप्त वानव्यन्तर देवता ना प्र० उत्तर हेगीतम् जघन्य थो अन्तमुद्रुतं

त्रियाण नते । वाणमतरीण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्साइं अंतोमुज्जत्तणाइ । उक्कोसेण अउपलिनुवम अंतोमुज्जत्तणं । जोडसियाण नते ! दंवाण कंवडय काल ठिई पयत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण पलिनुवमठन्नागो उक्कोसेण पलिनुवम वाससयसहस्समप्पहिय । अपज्जात्तयजोडसियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण पलिनुवमठन्नागो उक्कोसेण पलिनुवम वाससयसहस्समप्पहिय अंतोमुज्जत्तण । जोडसियाण

अपयाप्तज्योतिफाणा पुच्छा, गीतम । जपन्येनाप्युत्तरकथयान्तमुद्गृतम् । पर्याप्तकल्यातिफाणा पुच्छा, गीतम । जपन्यत पत्योपमाष्टजाग उत्तरकथान्तमुद्गृत्तान्मुत्तरकथत पत्योपम वधगतसहस्राज्याधिकमन्तमुद्गृत्तानम् । ज्योतिरुदेवीना पुच्छा, गीतम । जपन्यत पत्योपमाष्टजाग उत्तरकथ

गून दग्गजजार वरुणा उत्तरकथयान्तमुद्गृतम् । वाणमतरीण देवीना नो प्र० उ० गीतम जघग्य धी दग्गजजारवर्ष उत्तरकथं धी अथ पत्यापम । अपल्लसियाण भत वाणमतरीण देवीना नो इ भगवन कंतलो आयु कट्ठा हे गीतम जघग्य धी पिण उत्तरकथं धी पिण अन्तमुद्गृतं । पज्जात्तयाण भते वाणमतरीण देवीना नो प्र० उ० इ गीतम जघग्य धी दग्गजजारवर्ष अन्तमुद्गृतं कन उत्तरकथं धी अहं पत्योपम अन्तमुद्गृतं ग्यून । जोडसियाण भते देवाणति । जोतिष्का देवता नो हे भगवन् कंतला काज्जनी स्थिति कही प्र० उ० हे गीतम जघग्य धी पत्योपम नो आठमा भाग उत्तरकथं धी पत्योपम एकलाख वरुण अधिक । अपल्लसयजोडसियाण पुच्छा । अपयाप्त जोतिष्क ना प्र० उ० हे गीतम जघग्य धी पिण उत्तरकथं धी पिण अन्तमुद्गृतं । पल्लसयजोडसियाणति । पर्याप्त जोतिष्को ना प्र० उत्तर हे गीतम जघग्य धी पत्योपम नो आठमी भाग अन्तमुद्गृतं ग्यून उत्तरकथं धी पत्योपम लाख वरुण अधिक अन्तमुद्गृतं ग्यून । जोडसियाण भते देवीना नो प्र० उ० हे गीतम जघग्य धी पत्योपम ना आठमा भाग उत्तरकथं धी अहं पत्योपम पचास हजारवर्ष अधिक । अपल्लसियाण जोडसियाणति । अ

जते ! देवीग पुच्छा ? गोयमा ! जहखेण पलिनुवमठनागो उक्कोसेण अरुपलितुवन पणासवाससहस्स
 मझ्हिय । अपज्जत्तियाण जोइसिणीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्ते गवि उक्कोमेणवि अतोमुज्जत । पज्ज
 त्तियाण जोइसिणीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहखेण पलिनुवमठनागो अतोमुज्जत्तूणो उक्कोसेण अरुपलि
 तुवम पणासवाससहस्सेहि अझ्हिए अतोमुज्जत्तूण । चदविमाणेण जते ! देवाण पुच्छा ? गोयमा !
 जहखेण चउन्नागपलिनुवम उक्कोसेण पलिनुवम आससयसहस्समझ्हिय । चदविमाणेणं जते ! अपज्जत्तयाण
 देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्ते गवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जत । चदविमाणेण जते ! पज्जत्तयाण देवाण

तोइह पत्थोपम पब्बाशहर्पसहस्साज्यधिकम् । अपर्याप्तकल्योतिफदेवीना पृच्छा, गीतम । जघन्यत उत्तर्कयंतद्यात्तमुहुत्तम् । पर्याप्तल्योतिकदे
 वीना पृच्छा, गीतम । जघन्यत पत्थोपमाएमप्रागोत्तमुहुत्तान उत्तर्कयंतोहुपत्थोपम पब्बाशहर्पसहस्सरधिकमत्तमुहुत्तानम् । चन्द्रविमाने जद
 त्त देवाना पृच्छा, गीतम । जघन्यत वत्तजां पत्थोपममुत्तर्कयंत पत्थोपम वयंतस्साज्यधिकम् । चन्द्रविमान जदत्त । अपर्याप्तरुदेवाना
 पृच्छा, गीतम । जघन्येनाप्पुत्तर्कयंतोपत्तमुहुत्तम् । चन्द्रविमाने जदत्त । पर्याप्तकाना देवाना पृच्छा, गीतम । जघन्येन पत्थोपमवत्तुजागम

पर्याप्त जातिक देवी ना प्र० छ० हे गीतम लवग्यो हो उत्तर्क्यो हो पिण अत्तमुहुत्त । पत्तत्तिवाण जोरसथोणति । पर्याप्त जातिक देवी ना प्र० छ० हे
 गीतम लवग्यो हो पत्त्यापम ना चाठेमा भाग अत्तमुहुत्त त्वन उत्तर्क्यो हो अत्तमुहुत्त ऊन पचाम हज्जारवयं अधिक्क अदं पत्थोपम । चदविमाणेण भते
 देव मति । चन्द्रविमाने भदत्त देवतानो कतत्ता काजानो स्थिति कहे प्रत्य उत्तर हे गीतम लवग्यो हो चतुर्भाग पर्यापम उत्तर्क्यो हो पत्त्यापम साख
 वयं मविक । चदविमाणेण भते अपत्तत्तयाण देवाणति । चन्द्रविमान मा हे भगवन् अपर्याप्त देवतानो पृच्छा हे गीतम लवग्यो हो पिण उत्तर्क्यो हो पिण
 अत्तमुहुत्त । चदविमाणेण भते पत्तत्तयाणति । चन्द्रविमाने मा देवतानो हे भगवन् कतत्ता आशु प्रत्य उत्तर हे गीतम लवग्यो हो चतुर्भाग पत्त्यापम

म ॥ शेषमपि सुगम मापटपरिसमाप्ते भंडर चदविमाणेन जते । देवाणामित्यादि ॥ चन्द्रविमाने चन्द्र उत्पद्यते शेषाश्च तत्परिवारज्जुता स्तत्र तत्परिवारज्जुताना जपन्यतश्चतुन्नागपत्न्योपमप्रमाणा उत्कपत कपाधिदिन्द्रसामानिकादीना वपलस्याज्याधिक पर्योपम चन्द्रदेधस्य तु यथोक्तमुरक

पुच्छा ? गीयमा । जहणेण चउन्नागपलिउवम अतोमुज्जत्तूण उक्कोसंण पलिउवम वाससयसहससमप्पहिंयं अतोमुज्जत्तूण । चटविमाणेण देवीण पुच्छा, गीयमा । जहन्तेण चउन्नागपलिउवम उक्कोसंण अरुपलिउवम पयासाए वाससहस्सेहि अप्पहिंय । चदविमाणेण अपज्जात्तियाण देवीण पुच्छा ? गीयमा । जहणेण वि उक्कोसंणवि अतोमुज्जत्त । चदविमाणेण पज्जात्तियाण देवीण पुच्छा ? गीयमा ! जहन्तेण चउन्नागपलिउवम अतोमुज्जत्तूण उक्कोसंण अरुपलिउवम पयासाए वाससहस्सेहि अप्पहिंय अतोमुज्जत्तूण । सूरवि

ल्लमुत्तूत्तानमुत्कपत पत्न्योपम वपलस्याज्याधिकमल्लमुत्तूत्तानम् । चन्द्रविमाने देवीना पुच्छा । गीतम् । जयन्तेन पत्न्योपमचतुन्नागमुत्तूत्तानोद्धे पर्योपम पञ्चाशद्वर्षसहस्रैरधिकम् । चन्द्रविमान अपर्याप्तकदेवीना पुच्छा, गीतम् । जयन्तेनोत्तकयतद्याल्लमुत्तूत्तानम् । चन्द्रविमाने पर्याप्तकदेवीना पुच्छा, गीतम् । जयन्तेन पत्न्योपमचतुन्नागमल्लमुत्तूत्तानमुत्कपतीह पर्योपम पञ्चाशद्वर्षसहस्रैरधिकमल्लमुत्तूत्तानम् । सूरविमाने जद पल्लमुत्तूत्तानं जन उत्तकपं यो पग्गापम लालुवपं अधिक अल्लमुत्तूत्तानं जन । चटविमाणे देवीणिति । चटविमान मा देवीनां प्रत्य उत्तर हे । तस जघग्ग यो परेगापम ना बीगां भाग उत्तकट यो पचास हल्लार वय अधिक अहुं पन्नापम । चटविमाणे अपज्जात्तियाण द्योणिति । चन्द्रमा ना विमानन विप पपचासक देवीना स्थितिनां प्रत्य उ० हे गीतम जघग्ग यो पिण अल्लमुत्तूत्तानं । चटविमाणे पज्जात्तियाण देवीणिति । चन्द्रमाना विमान ते विपे पर्याप्तक देवीना स्थितिनां प्रत्य उत्तर हे गीतम् जघग्ग यो परेगापम ना बीगा भाग अल्लमुत्तूत्तानं नून उत्तकपं यो अल्लमुत्तूत्तानं नून पचास हल्लारवपं अधिक अहुं परेगापम । सूरविमाणेय भेद यावति । ययना विमाने विपे हे भगवन् देवतानो केतवा कालो स्थिति कही प्रत्य उत्तर हे गी

माणेण ज्ञते ! देवाण केवडय काल ठिडं पणत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं चउज्जागपलिनुवमं उक्कोसेणं पलि
 नेवम वाससहस्समप्लहिहय । सूरविमाणे अपज्जत्ते देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्ने गवि उक्कोसेणवि अतो
 मुज्जत्त । सूरविमाणेणं पज्जत्ते देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण चउज्जागपलिनुवम अतो मुज्जत्तुण उक्को
 सेण पलिनुवम वाससहस्समप्लहिहय अतो मुज्जत्तुण । सूरविमाणदेवीण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेण चउ
 ज्जागपलिनुवम उक्कोसेण अरु पलिनुवम पचहि वाससरुहिं अप्लहिहयं । सूरविमाणे अपज्जत्तियाण देवीणं
 पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अतो मुज्जत्त । सूरविमाणे पज्जत्तियाणं देवीण पुच्छा ? गो

ल ! देवाना कियल काल स्थिति मज्झा ? गीतम ! जघन्येन पत्तोपमचतुज्जांगमुत्कर्षत पत्तोपम वर्यसहस्राभ्यधिकम् । सूर्यविमान उप
 र्यासदेवाना पुच्छा ? गीतम ! जघन्येनोत्कर्षतद्यान्तर्मुहत्तम् । सूरविमाने पर्यासदेवाना पुच्छा, गीतम ! जघन्येन चतुज्जांगपर्योपममन्तर्मुह
 त्तान्मु उत्कर्षत पत्तोपम वर्यसहस्राभ्यधिकमन्तर्मुहत्तान् । सूर्यविमाने देवीना पुच्छा, गीतम ! जघन्येन पत्तोपमचतुज्जांगमुत्कर्षतोह
 पत्तोपम पञ्चान्नैर्वपशैरधिकम् । सूर्यविमाने उपयासदेवीना पुच्छा, गीतम ! जघन्येनोत्कर्षतद्यान्तर्मुहत्तम् । सूर्यविमाने पर्यासकदेवीना पृ

तम जघन्य यो चौत्रे भागे पत्तोपमने उत्क्रष्ट पदगापम हजारवर्षं आधक । सूरविमाणे अपञ्चलदेवाणति । सूर्या विमानने विपे सपर्यास देवनी प्रज्य
 ४० हे गीतम जघन्य यो पिण उत्क्रष्ट यो पिण अन्तर्मुहत्त । सूरविमाणे पञ्चलदेवाणति । सूर्यविमानने विपे पर्यास देवनी प्रज्य च० हे गीतम जघन्य
 यो अन्तर्मुहत्तं न्यून पदत्रोपमनो चौत्रो भाग उत्क्रष्ट यो अन्तर्मुहत्तं न्यून हजारवर्षं अधिक पत्तोपम । सूरविमाणे देवोणति । सूर्या विमानने विपे दे
 वीना प्र० ४० हे गीतम जघन्य यो पदत्रोपमना चौत्रो भाग उत्क्रष्ट पाच वर्षं अधिक अत्र पत्तोपम । सूरविमाणे अपञ्चलदेवाण देवोणति । सूर्या
 विमानने विपे अपर्यास देवीना प्र० ४० हे गी० जघन्य यो पिण उत्क्रष्ट यो पिण अन्तर्मुहत्त । सूरविमाणे पञ्चलदेवाण देवोणति । सूर्या विमानने विपे

यमा ! जहन्तेण चउत्तागपलिउवम अंतोमुज्जत्तुणं उक्कोसेणं अरुपलिउवमं पंचहिं वाससरुहि अस्सहिंयं
अतोमुज्जत्तुण । गहविमाणे देवाण पुच्छा ? गो० ! जहसेण चउत्तागपलिउवम उक्कोसेण पलिउवमं । गहवि
माणं अपज्जत्तदेवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जत्त । गहविमाणे पज्जत्तदेवा
ण पुच्छा ? गोयमा ! जहसेणं चउत्तागपलिउवम अतोमुज्जत्तुण उक्कोसेणं पलिउवम अतोमुज्जत्तुण ।
गहविमाणे देवीण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेण चउत्तागपलिउवम उक्कोसेण अरुपलिउवम । गहविमाणे
अपज्जत्तियाण देवीण पुच्छा ? गोयमा ! जहसेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुज्जत्त । पज्जत्तियाण गहविमाणे

पुच्छा , गीतम । जघन्येन चतुर्जागपल्योपमसत्तुमुहुत्तोनमुत्कर्षतोद्वेपल्योपम पल्लजिर्वपत्तैरधिकसत्तुमुहुत्तोनम् । ग्रहविमाने देवाना पुच्छा,
गीतम । जघन्येन चतुर्जागपल्योपमसत्तुमुत्कर्षत पल्योपमम् । ग्रहविमानेऽप्यांसदेवाना पुच्छा, गीतम । जघन्येनोत्कर्षतद्यात्तुमुहुत्तम् । ग्रहवि
माने पर्यांसदेवाना पुच्छा, गीतम । जघन्येनात्तुमुहुत्तोन पल्योपमचतुर्जागमुत्कर्षत पल्योपमसत्तुमुहुत्तोनम् । ग्रहविमाने देवीना पुच्छा,
गीतम । जघन्येन चतुर्जागपल्योपमसत्तुमुत्कर्षतोद्वेपल्योपमम् । ग्रहविमानेऽप्यांसदेवीना पुच्छा, गीतम । जघन्येनोत्कर्षतद्यात्तुमुहुत्तम् । ग्रह

पर्यांस देवीनी प्यिति नो प्र० छ० हे गीतम् जघन्य यो अतर्मुहुत्तं गन्तुं पल्योपम नो योयो भाग उत्कर्ष यो पाव वर्य अधिक पल्योपम अतर्मुहुत्तं ग
न । गहविमाणे देवाण पुच्छा । ग्रहना विमानने विषे देवता नो प्र० छ० हे गो० जघन्य यो पल्योपमना योयो भाग उत्कर्ष यो पल्योपम गहविमाण
अपल्लत्तदेवाण ति । ग्रहना विमान मा अपर्यांस देवता नो प्र० छ० हे गीतम् जघन्य यो पिण अतर्मुहुत्तं । गहविमाणे पज्जत्तदेवाण
पुच्छा । ग्रहना विमानने विषे पर्यांस देवता नो प्र० छ० हे गीतम् जघन्य अतर्मुहुत्तं न्यून पल्योपम नो योयो भाग उत्कर्ष यो पल्योपम अतर्मुहुत्तं ज्ञान
गहविमाणे देवीण पुच्छा । ग्रहना विमानने विषे देवीना प्र० छ० हे गीतम् जघन्य या पल्योपम चतुर्भाग उत्कर्ष अतर् पल्योपम । गहविमाणे अपल

देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहस्येण चउन्नागपलिनुवमं अतोमुज्जत्तुणं उक्कोसेणं अरुपलिनुवम अतोमुज्जत्तु
ण । नरकत्तविमाणे देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहस्येणं चउन्नागपलिनुवमं उक्कोसेणं अरुपलिनुवम । न
रकत्तविमाणे अपज्जत्तयाण देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहस्येणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जत्त । नरकत्तवि
माणे पज्जत्तयाण देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहस्येण चउन्नागपलिनुवम अतोमुज्जत्तण उक्कोसेण अरुप
लिनुवम अतोमुज्जत्तुण । नरकत्तविमाणदेवीण पुच्छा ? गोयमा ! जहस्येणं चउन्नागपलिनुवम उक्कोसेणं

विमाने पर्याप्तकदेवीना पुच्छा ॥ गीतम । जघन्येनाल्लभुंहुत्तान पत्त्योपमवतुर्जागमुरकपंतोदुं पत्त्योपममल्लभुंहुत्तानम् । नरकविमाने देवाना पु
च्छा, गीतम । जघन्येन वतुर्जागपत्त्योपममुरकपंतोदुं पत्त्योपमम् । नरकविमाने उपर्याप्तदेवाना पुच्छा, गीतम । जघन्येनोत्कपंतद्वाल्लभुंहुत्त
म् । नरकविमाने पर्याप्तकदेवाना पुच्छा, गीतम । जघन्येन वतुर्जागपत्त्योपममल्लभुंहुत्तानमुरकपंतोदुं पत्त्योपममल्लभुंहुत्तानम् । नरकविमाने
देवीना पुच्छा, गीतम । जघन्यतश्चतुर्जाग पत्त्योपममुरकपतस्सातिरेक वतुर्जागपत्त्योपमम् । नरकविमाने उपर्याप्तकदेवीना पुच्छा, गीतम ।

तियाण देवीण पुच्छा । यहविमानने विप अपर्याप्त देवीना प्र० ४० हे गीतम जघन्य था पिण वरकपं थो पिण अत्तमुहुत्त । पज्जत्तियाणति । पर्याप्त
यहविमाननो देवीना प्र० ४० हे गीतम जघन्य थो अत्तमुहुत्त न्वन पत्त्योपम वतुर्भाग वरकप थो अत्तमुहुत्त थ्यन चउं पत्त्योपम । नरकत्तविमाणे देवाण
पुच्छा । नरक विमानमा देवता ना प्र० ४० हे गीतम जघन्य थो वतुर्भाग पत्त्योपम वरकप थो अत्त पत्त्योपम । नरकत्तविमाणे अपज्जत्तयाण देवाणति
नरकत्त विमानने विपे अपर्याप्त देवता ना प्र० ४० हे गी० नरक थो पिण अत्तमुहुत्त । नरकत्तविमाणे पज्जत्तियाणति । नरकत्त विमान
ने विपे पर्याप्त देवता ना प्र० ४० हे गी० जघन्य थो अत्तमुहुत्त कन पत्त्योपम वतुर्भाग वरकप थो अत्तमुहुत्त कन चउं पत्त्योपम । नरकत्तविमाणे देवी
ण पुच्छा । नरकत्त विमानने विप देवीना प्र० ४० हे गीतम जघन्य थो वतुर्भाग पत्त्योपम वरकप थो सातिरेक वतुर्भाग पत्त्योपम । नरकत्त विमान ने

सातिरेग चउन्नागपलिउवम । नरुत्तयिमाणे अपञ्जाहियाणं देवीणं पुच्छा ? गो० ! जहणेणवि उक्कोसेगवि
 अतोमुज्जत । नरुत्तयिमाणे पञ्जाहियाण देवीण पुच्छा ? गो० ! जहणेण चउन्नागपलिउवम अतोमुज्जतूणं
 उक्कोसेग सातिरेग चउन्नागपलिउवम अतोमुज्जतूण । ताराविमाणे देवाण पुच्छा ? गो० ! जहणेण अठ
 न्नागपलिउवम उक्कोसेग चउन्नागपलिउवम । ताराविमाणे अपञ्जतदेवाण पुच्छा ? गो० ! जहणेणवि उक्को
 सेगवि अतोमुज्जत । ताराविमाणे पञ्जतदेवाण पुच्छा, गो० ! जहणेण अठन्नागपलिउवम अतोमुज्जतूण उ

अपन्येनाप्युरुपतीप्यल्लमुंहुत्तम् । नञ्जविमाने पयासकदेवीना पृच्छा, गीतम् । अल्लमुंहुत्तं चतुर्जागपत्योपममुत्कप्यतोऽल्लमुंहुत्तं न साति
 रेक चतुर्जागपत्योपमम् । ताराविमाग देवाना पृच्छा, गीतम् । अपन्येनाप्युन्नाग पर्यायनमुरकपतयत्तुन्नाग पर्यायमानेऽपरां
 सदेवाना पृच्छा, गीतम् । अपन्यतद्योतकप्यतद्याल्लमुंहुत्तम् । ताराविमान पयासदेवाना पृच्छा, गीतम् । अपन्यनान्ताल्लमुंहुत्तं नमप्युन्नागपत्यो
 पममुत्कप्यतोऽल्लमुंहुत्तं चतुर्जागपत्योपमम् । ताराविमाने देवीना पृच्छा, गीतम् । अपन्येनाप्युन्नागपत्योपममुत्कप्यतोऽल्लमुंहुत्तं नमप्युन्नागपत्यो

विप अपर्याप्त देवीना प्रश्न उत्तर हे गीतम् जवन्थ यो पिग उत्कर्षं यो पिग अत्तमुंहुत्तं । नक्खत्तविम नि पल्लत्तविमाने विप पर्याप्त
 देवीना प्रश्न उत्तर हे गीतम् जवन्थ यो चतुर्भागे पत्त्यापम अत्तमुंहुत्तं न्यून उत्कर्षं यो सातिरेक चतुर्भागे पत्त्यापम अत्तमुंहुत्तं यून । ताराविम नि
 देवाण ति । ताराविमानने विपे देवतानो प्र० छ० हे गीतम् जवन्थ यो अठभाग परगोपम उत्कर्षं यो चतुर्भागे पन्नीपम । ताराविमाणे अपन्यत्ते
 वाचति । ताराविमान ने विपे अपर्याप्त देवतानो प्र० उत्तर हे गीतम् जवन्थ यो पिग उत्कर्षं यो पिग अत्तमुंहुत्तं । ताराविमाणे पञ्जतदेवाणति ।
 ताराविमानने विपे पर्याप्त देवतानो प्र० छ० हे गीतम् जवन्थ यो अठ भाग परगोपम अत्तमुंहुत्तं यून चतुर्भागे पन्नीपम अत्तमुंहुत्तं यून
 ताराविमाणे देवीणति । ताराविमानने विपे देवीना प्रश्न छ० हे गीतम् जवन्थ यो अठ भाग पर्यापम उत्कर्षं यो सातिरेक अठ भाग पन्नीपम ।

मुञ्जत । सोहस्मे कप्ये पञ्जतदेवाण पुच्छा, गोयमा ! जहन्तेणं पलिनुवम अतोमुञ्जतूण उक्कोसेणं दो
सागरोवमाइ अतोमुञ्जतूणाइ । सोहस्मे कप्ये देवीण पुच्छा, गोयमा ! जहन्तेणं पलिनुवम उक्कोसेण प
त्तास पलिनुवमाइ । सोहस्मे कप्ये अपञ्जत्तियाण देवीण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्ते गवि उक्कोसेगति अतो
मुञ्जत (ग्रन्थाग्र २५००) सोहस्मे कप्ये पञ्जत्तियाण देवीण पुच्छा, गोयमा ! जहन्तेण पलिनुवमं
अतोमुञ्जतूण उक्कोसेण पत्तास पलिनुवमाइ अतोमुञ्जतूणाइ । सोहस्मे कप्ये परिगहिंयाणं देवीण पु

द्वे सागरोपमेऽन्तमुद्भूतं । सौधमे कल्पे देवी ॥ पुच्छा, गौतम । जघन्येन पत्योपममुत्कपत पञ्चाशत्पत्योपमानि । सौधमे कल्पेऽपयोर
कद्वीना पुच्छा, गौतम । जघन्येनाप्युत्कपततोप्यन्तमुद्भूतम् । सौधमे कल्पे पर्याप्तकद्वीना पुच्छा, गौतम । जघन्येनाप्युत्कपततोप्यन्तमुद्भूतम् । सौधमे कल्पे
पत पञ्चपञ्चाशत्पत्योपमान्यन्तमुद्भूतानि । सौधमे कल्पे परिग्रहीताना देवीना पुच्छा, गौतम । जघन्येनाप्युत्कपततोप्यन्तमुद्भूतम् । सौधमे कल्पे
पमानि । सौधमे कल्पे परिग्रहीतानामप्याप्तकद्वीना पुच्छा, गौतम । जघन्येनाप्युत्कपततोप्यन्तमुद्भूतम् । सौधमे कल्पे परिग्रहीत

सौधमे कप्ये पञ्चसद्वेवाण पुच्छा । सौधमे कल्पे पर्याप्त देवनां प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य यो पर्याप्तम अन्तमुद्भूतं न्यून उत्कपं यो दोऽ सागरोपम
अन्तमुद्भूतं न्यून । सौधमे कप्ये देवीवति । सौधमे कल्पे विष देवीना प्र० ७० हे गौतम जघन्य यो पर्याप्तम उत्कपं यो पचासे पर्याप्तम । सौधमे
कप्ये अपञ्जत्तियदेवीवति । सौधमे कल्पे विषे अपर्याप्तक देवीनां प्र० ७० हे गौतम जघन्य यो पिण उत्कपं यो पिण अन्तमुद्भूतं । सौधमे कप्ये पञ्चत्ति
वार देवीवति । सौधमे कल्पे विषे पर्याप्तक देवी प्र० ७० हे गौतम जघन्य यो अन्तमुद्भूतं न्यून पर्याप्तम उत्कपं यो अन्तमुद्भूतं । सौधमे कप्ये पचास पर्याप्तम
सौधमे कप्ये परिगहिंयाण देवीवति । सौधमे कल्पे विषे परिग्रहीत देवनां प्र० ७० हे गौतम जघन्य यो पर्याप्तम उत्कपं यो सात पर्याप्तम । सौ
धमे कप्ये परिगहिंयाण अपञ्जत्तिय । सौधमे कल्पे विषे परिग्रहीत अपर्याप्तक देवीनां प्र० ७० हे गौतम जघन्य यो पिण उत्कपं यो पिण अन्तमुद्भूतं

च्छा, गीयमा । जहन्तेण पलिनुवमं उक्कोसेण सत्त पलिनुवमाइ । सोहम्मे कप्पे परिग्गहियाण अपज्झाति
याण पुच्छा, गीयमा ! जहन्तेणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जत्त । सोहम्मे कप्पे परिग्गहियाण पज्झासियाणं
देवीण पुच्छा, गीयमा ! जहन्तेण पलिनुवम अतोमुज्जत्तूण उक्कोसेण सत्त पलिनुवमाइ अतोमुज्जत्तूणाड
सोहम्मे कप्पे अपपरिग्गहियाण देवीण पुच्छा, गीयमा ! जहन्तेण पलिनुवम उक्कोसेण पन्नासपलिनुव
माइ । सोहम्मे कप्पे अपपरिग्गहियाण अपज्झात्तियाण देवीण पुच्छा, गो० ! जहन्तेणवि उक्कोसेणवि अतो
मुज्जत्त । सोहम्मे कप्पे अपपरिग्गहियाण पज्झात्तियाण देवीण पुच्छा, गीयमा । जहन्तेण पलिनुवम अतो

पपासकदेवीना पुच्छा, गीतम । जपन्तेण पत्थोपममत्तमुट्ठेत्तनमुत्तकपत्तं तप्तपत्थोपमान्यत्तमुट्ठेत्तानि । सौधमं कल्पेऽपरिग्रहीताना देवी
ना पुच्छा, गीतम । जपन्तेण पत्थोपममुत्तकपत्तं पत्थायत्तपत्थोपमानि । सौधमं कल्पेऽपरिग्रहीतानामपर्याप्तकाना देवीना पुच्छा, गीतम ।
जपन्तेनाप्युत्तकपत्तोत्पत्तमुट्ठेत्तम् । सौधमं कल्पेऽपरिग्रहीताना पर्याप्तकाना देवीना पुच्छा, गीतम । जपन्तेण पत्थोपममत्तमुट्ठेत्तनमुत्तकपत्तं

सोहम्मे कप्पे परिग्गहियाण पज्झात्तियाण देवीणिति । सौधमं कल्पने विधि परिग्रहीत पर्याप्तक देवीनो प्र० व० हे गीतम जवन्त्य यो अतर्मुट्ठत्तं ज्ञा
पन्नापम उत्तकपत्तं यो अतर्मुट्ठत्तं ज्ञानं सात पर्यापम । सोहम्मे कप्पे अपपरिग्गहियाण देवीणिति । सौधमं कल्पने विधि अपरिग्रहीत देवीनो प्र० उत्तर हे
गीतम जवन्त्य यो पन्नापम उत्तकपत्तं यो पत्थास पर्यापन । सोहम्मे कप्पे अपपरिग्गहियाण अपज्झात्तियाण देवीणिति । सौधमं कल्पने विधि अपरिग्रहीत
पर्याप्ता देवीना प्र० उत्तर हे गीतम जवन्त्य यो पिण उत्तकपत्तं यो पिण अतर्मुट्ठत्तं । सोहम्मे कप्पे अपपरिग्गहियाण पज्झात्तियाण देवीणिति ।
सौधमं कल्पने विधि अपरिग्रहीत पर्याप्तक देवीना प्र० उत्तर हे गीतम जवन्त्य यो पत्थास पर्यापम अतर्मुट्ठत्तं यो पत्थास पर्यापम अतर्मुट्ठत्तं
ज्ञानं ज्ञान । इसाणे कप्पे दद्याण पुच्छा । इयान कल्पने विधि दद्यानो प्र० उत्तर हे गीतम जवन्त्य यो सातिरेक पत्थोपम उत्तकपत्तं यो सातिरेक दद्या

मुञ्जत्तेनाइ । ईसाणे कप्ये देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहखेणं साइरेणं पलिनुवम उक्कोसेण साइरेगाइं ठो सागरोवमाइ । ईसाणे कप्ये अपज्जत्तयाण देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहखेणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जत्तं ईसाणे कप्ये पज्जत्तयाणं देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहखेणं सातिरेग पलिनुवम उक्कोसेण ठो सागरोवमाइ अतोमुज्जत्तणाइ । ईसाणे कप्ये देवीण पुच्छा ? गोयमा ! जहखे पलिनुवम उक्कोसेण पणपसपलिनुवमाइ । ईसाणं कप्ये देवीण अपज्जत्तियाणं पुच्छा, गोयमा ! जहखे णवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जत्तं । ईसाणे कप्ये पज्जत्तियाण देवीण पुच्छा, गोयमा ! जहन्तेणं साइरेगं

पञ्चाशत्परयोपमान्यत्तमुद्भूतानि । ईशाने कल्पे देवाना पुच्छा, गीतम ! जपन्येन सातिरेक पत्योपममुद्रकपंत सातिरेके द्वे सागरोपमे । ईशाने कल्पेऽपर्याप्तकदाना पुच्छा, गीतम ! जपन्येनाप्युद्रकपंतोप्यत्तमुद्भूतम् । ईशाने कल्पे देवाना पर्याप्तकाना पुच्छा, गीतम ! जपन्ये न सातिरेकं पत्योपममत्तमुद्भूतम् । उद्रकपंत सातिरेके द्वे सागरोपमेत्तमुद्भूतम् । ईशाने कल्पे देवीना पुच्छा, गीतम ! जपन्यत साति रेकं पत्योपममुद्रकपंत पञ्चपञ्चाशत्परयोपमानि । ईशाने कल्पेऽपर्याप्तकदेवीना पुच्छा, गीतम ! जपन्येनाप्युद्रकपंतोप्यत्तमुद्भूतम् । ईशाने

सागरोपम । ईशाने कल्पे अपज्जत्तियाण देवाणति । ईशान कल्पने विपे अपर्याप्तक देवानी प्र० उ० हे गीतम जपन्य यो पिण उद्रकपं यो पिण अत्तमु द्भूतं । ईशाने कल्पे पज्जत्तयाण देवाणति । ईशान कल्पने विपे पर्याप्तक देवतानो प्र० उ० हे गीतम जपन्य यो सातिरेक परबोपम अत्तमुद्भूतं जन उद्रकपं यो सातिरेक टोय सागरोपम अत्तमुद्भूतं जन । ईशाने कल्पे देवीणति । ईशान कल्पने विपे देवीनो प्रश्न उत्तर हे गीतम जपन्य यो सातिरेक परबोपम उद्रकपं यो पचावन परयोपम । ईशाने कल्पे अपज्जत्तियादेवीणति । ईशाने कल्पने विपे अपर्याप्तक देवीनो प्रश्न उ० हे गीतम जपन्य यो पिण उद्रकपं यो पिण अत्तमुद्भूतं । ईसाणे कल्पे पज्जत्तियादेवीणति । ईशान कल्पने विपे पर्याप्तक देवीनो प्रश्न उत्तर हे गीतम जपन्य यो सातिरेक

पलिनुवम अतोमुज्जत्तूणं उक्कोसेणं पणपणपलिनुवमाइं अतोमुज्जत्तूणाइं । ईसाणे कप्पे परिग्गहिंयाण देवीण पुच्छा ? गोयमा । जहन्नेण साइरंग पलिनुवम उक्कोसेण नव पलिनुवमाइं । ईसाणं कप्पे परिग्गहिंयाण अपज्जात्तिंयाण देवीण पुच्छा ? गोयमा । जहन्ने गवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जत्त । ईसाणं कप्पे परिग्गहिंयाण पज्जात्तिंयाण देवीण पुच्छा ? गोयमा । जहन्नेण साइरंग पलिनुवम अतोमुज्जत्तूण उक्कोसेण नव पलिनुवमाइं अतोमुज्जत्तूणाइं । ईसाणं कप्पे अपरिग्गहिंयाण देवीण पुच्छा ? गोयमा । जह

कल्प पयासकदेवीना पुच्छा, गीतम । जघन्येन सातिरेक पश्योपममन्तमुद्रुत्तोनसुद्रुत्तं पञ्चपञ्चाशत्पश्योपमान्यन्तमुद्रुत्तोनानि । इशाने कल्पे परिग्रहीताना देवीना पुच्छा, गी० । जघन्येन सातिरेक पश्योपममन्तमुद्रुत्तं नव पश्योपमानि । इशाने कल्पे परिग्रहीतानामपयोपम देवीना पुच्छा, गीतम । जघन्येनाप्युद्रुत्तं पश्योपममन्तमुद्रुत्तम् । इशाने कल्पे परिग्रहीताना पयासकदेवीना पुच्छा, गीतम । जघन्येन सातिरेक पश्योपममन्तमुद्रुत्तोनसुद्रुत्तं नव पश्योपमान्यन्तमुद्रुत्तोनानि । इशाने कल्पे परिग्रहीताना देवीना पुच्छा, गीतम । जघन्येन सातिरेक

पञ्चापम अन्तमुद्रुत्तं जन । इत्थं यो पचावन पञ्चापम अन्तमुद्रुत्तं जन । साणे कल्पे पारगहिंयाण देवीणति । इशान कल्पे विष परिग्रहीत देवीना प्र० उत्तर हे गीतम जघन्य यो सातिरेक पश्योपम इत्थं यो नव पश्योपम । इसाणे कल्पे परिग्रहिंयाण अपज्जात्तिवदेवीणति । इशानकल्पे विष परिग्रहीत अपर्याप्तिक देवीना प्र० उत्तर यो विष इत्थं यो विष परिग्रहिंयाण पञ्चापम देवीणति । इशान कल्पे विष परिग्रहीत पर्याप्तिक देवीना प्र० उत्तर यो सातिरेक पञ्चापम अन्तमुद्रुत्तं नव पश्योपम । इसाणे कल्पे अपरिग्रहिंयाण देवीण पुच्छा । इशान कल्पे विष अपरिग्रहीत देवीना प्र० उत्तर हे गीतम जघन्य यो सातिरेक पश्योपम इत्थं यो पचावन पश्योपम । इसाणे कल्पे अपरिग्रहिंयाण अपर्याप्तिक देवीना प्र० उत्तर

? गीयमा ! जहखेणवि उक्खोसेणवि अतोमुज्जत्तं । वज्रलोए पज्जत्ताणं पुच्छा , गीयमा ! जहन्तेणं सत्त
 सागरोवमाइ अतोमुज्जत्तणाइ । उक्खोसेण दससागरोवमाइ अतोमुज्जत्तणाइं । लंतए पुच्छा ? गो० । जह
 न्तेण दससागरोवमाइ उक्खोसेण चउदससागरोवमाइ । लंतए अपज्जत्ताण पुच्छा ? गीयमा ! जहखेणवि
 उक्खोसेणवि अतोमुज्जत्त । लंतए पज्जत्ताण पुच्छा , गीयमा ! जहन्तेण दससागरोवमाइ अतोमुज्जत्तणाइ
 उक्खोसेण चउदससागरोवमाइ अतोमुज्जत्तणाइं । महासुक्खी देवाण पुच्छा , गीयमा ! जहखेण चउदससा
 गरोवमाइ उक्खोसेण सत्तरसागरोवमाइ । महासुक्खी अपज्जत्ताणं पुच्छा , गीयमा ! जहन्तेणवि उक्खोसे

द्यात्तमुत्तंम् । वृहल्लोक कस्सेपर्याप्तकाना पृच्छा , गीतम । जघन्येन सप्तसागरोपमाख्यत्तमुत्तंम् । दशसागरोपमाख्यत्तमुत्तंम्
 नानि । लात्तके पृच्छा , गी० । जघन्येन दशसागरोपमाख्यत्तमुत्तंम् । लात्तकऽपर्याप्तकाना पृच्छा , गीतम । जघन्येनोत्तकपत
 द्यात्तमुत्तंम् । लात्तके पर्याप्तकाना पृच्छा , गीतम । जघन्येन दशसागरोपमाख्यत्तमुत्तंम् । दशसागरोपमाख्यत्तमुत्तंम् । मद्वा
 शुते देवाना पृच्छा , गीतम । जघन्येन चतुदश सागरोपमाख्यत्तमुत्तंम् । महाशुते ऽपर्याप्तकदेवाना पृच्छा , गीतम । जघ
 न्येनीरुत्तपतद्यात्तमुत्तंम् । महाशुते पर्याप्तकाना पृच्छा , गीतम । जघन्येन चतुदशसागरोपमाख्यत्तमुत्तंम् । दशसागरोपमाख्य

रापम अत्तमुत्तंम् यो जन । नतए पृच्छा । लतकनो प्र० उत्तर हे गीतम जघन्य यो दस सागरोपम उदकं यो चट्टे सागरोपम । लतए अप
 तापति । लतक देवकीकने विषे चपर्याप्त देवतानो प्र० उत्तर हे गीतम जघन्य यो विष उदकं यो विष अत्तमुत्तंम् । लतए पत्रतापति ।
 सतकने विषे पर्याप्त देवतानो प्र० उत्तर हे गीतम जघन्य यो दस सागरोपम अत्तमुत्तंम् यो जन उदकं यो अत्तमुत्तंम् यो जन चट्टे सागरोपम ।
 महाशुते देवापति । महाशुत देवकीकने विषे देवतानो प्र० उत्तर हे गीतम जघन्य यो चट्टे सागरोपम उदकं यो सत्तर सागरोपम । महाशुते

णवि अतोमुज्जत्तं । महासुक्ते पज्जत्ताण पुच्छा, गोयमा ! जहन्तेण चीटस्ससागरोवमाइ अतोमुज्जत्तूणाइ उक्कोसेण सत्तरसागरोवमाइ अतोमुज्जत्तूणाइ । सहस्सारे देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेण सत्तरसागरोवमाइ उक्कोसेण अठारससागरोवमाइ । सहस्सारे अपज्जत्ताण पुच्छा, गोयमा ! जहणेणवि उक्कोसे णवि अतोमुज्जत्तं । सहस्सारे पज्जत्ताण पुच्छा ? गोयमा ! जहणेण सत्तरसागरोवमाइ अतोमुज्जत्तूणाइ उक्कोसेण अठारस सागरोवमाइ अतोमुज्जत्तूणाइ । आणए देवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहसेण अठारस

त्तमुद्धर्तानि । सहस्सारे देवाना पृच्छा, गीतम । जघन्येन सप्तदश सागरोपमाण्युत्कर्षतोष्टादशसागरोपमाणि । सहस्सारेऽपय्याप्तकाना पृच्छा, गीतम । जघन्येनोत्कर्षतद्यान्तमुद्धत्तम् । सहस्सारे पयाप्तकाना पृच्छा, गीतम । जघन्येन सप्तदश सागरोपमाण्युत्कर्षतोष्टादश सागरोपमाण्युत्कर्षतद्यान्तमुद्धर्तानि । आनते कल्पे देवाना पृच्छा, गीतम । जघन्येनाष्टादशसागरोपमाण्युत्कर्षत एकोनविंशति सागरोपमाणि । आनते कल्पेऽपय्याप्तकाना दयाना पृच्छा, गीतम । जघन्येनोत्कर्षतद्यान्तमुद्धत्तम् । आनते कल्पे पयाप्तकदेवाना पृच्छा, गीतम । जघन्येनाष्टा

अपज्जत्ताणति । महासुक्ते देवकोकने विषे अपय्याप्त देवतानो प्र० एत्तर हे गीतम जघन्य यो पिण उत्कर्षं यो पिण अन्तमुद्धत्तं । महासुक्ते पज्जत्ताणति । महासुक्तेन विषे पयाप्त देवताना प्र० ए० हे गीतम जघन्य यो चट्ठे सागरोपम । अन्तमुद्धत्तं करि जन उत्कर्षं यो सत्तर यागरोपम अन्तमुद्धत्तं करि जन । सहस्सारे देवाकने विषे देवतानो प्र० एत्तर हे गीतम जघन्य यो सत्तर सागरोपम उत्तरह यो अठारे सागरोपम । सहस्सारे अपज्जत्ताणति । सहस्सारकल्पेने विषे अपय्याप्त देवतानो प्र० ए० हे गीतम जघन्य यो पिण उत्कर्षं यो पिण अन्तमुद्धत्तं । महासुक्ते पज्जत्ताण देशणति । सहस्सारे कल्पेने विषे पयाप्त देवताना प्र० एत्तर हे गीतम जघन्य यो सत्तर सागरोपम अन्तमुद्धत्तं जन उत्कर्षं यो अठारे सागरोपम अन्तमुद्धत्तं जन । आणए कल्पेति । आनतकल्पे देवताना प्र० ए० हे गीतम जघन्य यो अठारे सागरोपम उत्तरह यो अठारे सागरोपम ।

मेण तेवीसं सागरोवमाड अतोमुज्जत्तूणाइं । हिठिममज्जिम गेविज्जदेवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहस्येणं तेवीस सागरोवमाड उक्कोसेण चोवीस सागरोवमाड । हिठिममज्जिम अपज्जत्तयदेवाण पुच्छा, गो० ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जत्तं । हिठिममज्जिम पज्जत्तदेवाण पुच्छा ? गोयमा ! जहस्येणं तेवीस सागरोवमाड अतोमुज्जत्तूणाड उक्कोसेण चोवीस सागरोवमाड अतोमुज्जत्तूणाड । हिठिमउवरिमगेविज्जदेवाण पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेण चउवीस सागरोवमाड उक्कोसेण पणवीससागरोवमाड । हिठिमउवरिम गेविज्जदेवाण अपज्जत्ताणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्तेणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जत्त । हिठिमउवरिमगेवि

तु विवणत्ति सागरोपमाण्युत्तरं पञ्चविंशत्ति सागरोपमाणि । अथस्तनो परितन गेवियकदेवानामपर्याप्ताना पृच्छा, गीतम । जघन्येनोत्तरं कपंत । हे इमहेहिम गेवियक देवतानो प्रत्यु० हे० गी० जघन्य थो पिण तेवीस सागरोपम उक्कयं थो पिण चोवीससागरापम । हेहिमहेहिम अपल्लनदेवाणति । हेहिमहेहिम गेवियकने विपे अपर्याप्त देवतानो प्रत्यु० हे० गीतम जघन्य थो पिण उक्कयं थो पिण अत्तमुद्धत्तं । हेहिमहेहिम गेवियकदेवाण पुच्छेति । हेहिममध्यम गेवियक देवतानो प्रत्यु० हे० गीतम जघन्य थो पिण तेवीस सागरोपम उक्कयं थो पिण चोवीस सागरोपम । हेहिममज्जिम अपज्जत्तदेवाण ति । हेठे मध्यम अपर्याप्त देवतानो प्रत्यु० हे० गीतम जघन्य थो पिण उक्कयं थो पिण अत्तमुद्धत्तं । हेहिममज्जिम पल्लनदेवाणति । हेठिम मध्यम पर्याप्त देवतानो प्र० हे० गीतम जघन्य थो तेवीस सागरोपम अत्तमुद्धत्तं जन उक्कयं थो चोवीस सागरोपम अत्तमुद्धत्तं जन । हेहिम उवरिमगेविज्जदेवाणति । हेठिम उपरिम गेवियक देवतानो प्र० हे० गीतम जघन्य थो चउवीस सागरोपम उक्कयं थो पचविंशत्ति सागरोपम । हेठिम उवरिमगे विज्जदेवाण अपज्जत्ताणति । हेठिम उवरिमगेविक देवता अपर्याप्तानो प्र० हे० गीतम जघन्य थो पिण उक्कयं थो पिण अत्तमुद्धत्तं । हेहिम उवरिमगेविज्जदेवाण पज्जत्ताणं पुच्छति । हे इमउपरिम गेवियकना पर्याप्त देवतानो प्र० उत्तर हे गीतम जघन्य थो चोवीस सागरोपम अत्तमुद्धत्तं जन

ज्जदेवाण पज्जज्ञाण पुच्छा, गोयमा । जहन्तेण चउवीस सागरोवमाइं अतोमुज्जत्तूणाइं उक्कोसेणं पणवीसं
सागरोवमाइ अतोमुज्जत्तूणाइ । मज्झिमहेठिमगेविज्जदेवाण पुच्छा, गोयमा ! जहणेण पचवीस सागरो
वमाइ उक्कोसेण वहीस सागरोवमाइ । मज्झिमहेठिमगेविज्जदेवाण अपज्जज्ञाण पुच्छा ? गोयमा ! जह
णेणवि उक्कोसेणवि अतोमुज्जत्त । मज्झिमहेठिमगेविज्जदेवाणं पज्जज्ञाण पुच्छा, गोयमा ! जहणेण
पणवीस सागरोवमाइ अतोमुज्जत्तूणाइ उक्कोसेण वहीस सागरोवमाइ अतोमुज्जत्तूणाइ । मज्झिम २ गोवि

द्यान्तमुद्दत्तम् । अपस्तनो परितनग्रेवयकदेवाना पर्याप्ताना पुच्छा, गौ० । अपन्येन चतुर्विंशतिसागरोपमाख्यन्तमुद्दत्तानि उत्कर्षेण पञ्च
विंशति सागरोपमाख्यन्तमुद्दत्तानि । मध्यमाचस्तनग्रेवयकदेवाना पुच्छा, गौतम । अपन्येन पञ्चविंशतिसागरोपमाख्यत्कपत पट्ठिंशति
सागरोपमाणि । मध्यमाऽपस्तन त्रेवयकदेवानामपयाप्ताना पुच्छा, गौतम । अपन्येमाप्युत्कर्षतद्यान्तमुद्दत्तम् । मध्यमाचस्तनग्रेवयकपर्याप्त
देवाना पुच्छा, गौतम । अपन्येन पञ्चविंशतिसागरोपमाख्यन्तमुद्दत्तानि उत्कर्षेण पट्ठिंशतिसागरोपमाख्यन्तमुद्दत्तानि । मध्यममध्यम
ग्रेवयकदेवाना पुच्छा, गौतम । अपन्येन पट्ठिंशतिसागरोपमाणि उत्कर्षेण सप्तविंशतिसागरोपमाणि । मध्यममध्यमग्रेवयके अपर्याप्ताना दे

वत्कर्षं वो पचोस सागरोपम यन्तमुद्दत्तं जन । मज्झिमहट्ठिमगेविज्जदेवाणति । मध्यम हट्ठिमग्रेवयक देवतानो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थो प
चोस सागरोपम उत्कर्षं थो छवीस सागरोप । मज्झिम हेठिमगेविज्जग अपस्तनदेवाणति । मध्यम हेठिम ग्रेवयकना अपर्याप्त देवतानो प्र० उत्तर हे
गौतम जघन्य थो पिण उत्कर्षं थो पिण यन्तमुद्दत्तं । मज्झिमहट्ठिमगेविज्जदेवाण पस्तनति । मध्यम हेठिम ग्रेवयकना पर्याप्त देवतानो प्र० उत्तर
हे गौतम जघन्य थो पचोस सागरोपम यन्तमुद्दत्तं जन उत्तर थो छवीस सागरोपम यन्तमुद्दत्तं जन । मज्झिम २ गोविज्जदेवाणति । मध्यम २
ग्रेवयक देवताना प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थो छवीस सागरोपम उत्कर्षं थो छवीस सागरोपम । मज्झिम २ गोविज्ज अपस्तनदेवाणति । मध्यम २

पुच्छा, गीयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुज्जतं । उवरिममज्जिमगेविज्जगदेवाणं पज्जत्ताणं पुच्छा ? गीयमा ! जहन्नेण एगणतीसं सागरोवमाइ अंतोमुज्जत्तूणाइ । उवरिम २ गेयिज्जगदेवाणं पुच्छा, गीयमा ! जहन्नेण तीस सागरोवमाइ उक्कोसेण एक्कतीस सागरोवमाइ । उवरिम २ गेविज्जदेवाण अणपज्जत्ताण पुच्छा ? गीयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुज्जतं । उवरिम २ गेविज्जदेवाण पज्जत्ताण पुच्छा, गीयमा जहन्नेण तीस सागरोवमाइ अंतोमुज्जत्तूणाइ

गीतम । जपन्नेनीकोनत्रिसदसागरोपमाण्यत्तुं स्त्रिसदसागरोपमाणि । उपरितन मध्यमगैवेयकदेवानामपर्याप्ताना पृच्छा, गीतम । जपन्नेनाप्युत्कर्षतश्चात्तुं । उपरितनमध्यमगैवेयकदेवाना पर्याप्ताना पृच्छा, गीतम । जपन्नेनेकोनत्रिशदसागरोपमाण्यत्तुं नान्युत्कर्षतस्त्रिशदसागरोपमाण्यत्तुं मुहूर्त्तानि । उपरिमोपरिमगैवेयकदेवाना पृच्छा, गीतम । जपन्नेन त्रिशदसागरोपमाण्यत्तुं नान्युत्कर्षत एकत्रिशदसागरोपमाणि । उपरिमोपरिमगैवेयका पर्याप्तकदेवाना पृच्छा, गीतम । जपन्नेनाप्युत्कर्षतोप्यत्तुं मुहूर्त्तम् । उपरिमोपरिमगैवेयकदेवाना पर्याप्ताना पृच्छा, गीतम । जपन्नेन त्रिशदसागरोपमाण्यत्तुं मुहूर्त्तानि उत्कर्षत एकत्रिशदसागरोपमाण्यत्तुं मुहूर्त्तानि । विजयवैजयन्तजयन्तापराजि

हन् । उपरिममज्जिमगेविज्जगदेवाण पज्जत्ताण्यति । उपरिममध्य गैवेयकना पर्याप्त देवता नी प्र० छ० हे गीतम जवन्त को एगुणनीस सागरोपम अंतमुहूर्त्तं जन वटकपं थो वीस सागरोपम अंतमुहूर्त्तं जन । उवरिम २ गेविज्जगदेवाण्यति । उपरिम २ गैवेयकना देवता नी प्र० छ० हे गीतम जवन्त वी थोस सागरोपम वटकपं थो एकनीस सागरोपम । उवरिम २ गेविज्जगदेवाण अपज्जत्ताण्यति । उपरिम २ गैवेयकना अपर्याप्त देवता नी प्र० छ० हे गीतम जपन्ने थो पिण वटकपं थो पिण अंतमुहूर्त्तं । उवरिम २ पज्जत्तदेवाण्यति । उपरिमोपरिम गैवेयकना पर्याप्त देवता नी प्र० छ० हे गीतम जपन्ने थो वीस सागरोपम अंतमुहूर्त्तं जन वटकपं थो एकनीस सागरोपम अंतमुहूर्त्तं जन । विजयवैजयन्तजयन्तापराजितिसु देवाण्यति । विजयवैजयन्त

उक्तीसेणं एकृतीसं सागरोवमाइ अतीमुज्जुणाइ । विजयवेजयंतजयंतअपराजिएसुणं जते देवाण केवड
य काल ठिडं पणत्ता ? गोयमा । जहणेण एकृतीस सागरोवमाइ उक्तीसेण तत्तीस सागरोवमाइ । वि
जयवेजयंतजयंतअपराजितदेवाण अपज्जसाण पुच्छा, गोयमा । जहन्तेणवि उक्तीसेणवि अतीमुज्जुत ।
विजयवेजयंतजयंतअपराजितदेवाण पज्जसाणं पुच्छा, गोयमा । जहणेण एकृतीस सागरोवमाइ अतीमु
ज्जुणाइ उक्तीसेण तत्तीस सागरोवमाइ अतीमुज्जुणाइ । सब्ठसिद्धगदेवाण जते । केवडइय काल ठिड
पणत्ता ? गोयमा ! अजहन्तमकुक्तीनेण तत्तीस सागरोवमाइ ठिड पणत्ता । सब्ठसिद्धगदेवाण अपज्जसाण

तेषु जदत्त । देवाना कियत्त काल स्थित प्रज्ञा ? गीतम । अचयेनैकत्रिशात्सागरोपमायुत्तवत्तत्रयस्त्रिशात्सागरोपमाणि । विजयवेजय
त्तपण्णापराजितदेवानामपमासानी पुच्छा, गीतम । अचयेनाप्युत्तपण्णमुत्तमुत्तम् । विजयवेजयत्तपण्णापराजितेषु पर्याप्तदेवाना प
च्छा, गीतम । अचयेनैकत्रिशात्सागरोपमायुत्तमुत्तमानि उत्तर्कपतस्त्रयस्त्रिशात्सागरोपमायुत्तमुत्तमानि । सवायसिद्धकदेवाना म
त्त । कियत्त काल स्थिति प्रज्ञा ? गीतम । अचयन्यानुत्तर्कपण त्रयस्त्रिशात्सागरोपमाणि स्थिति प्रज्ञा । सर्वार्थसिद्धकदेवानामपर्याप्तमा

अत्राप्यपराजित विमान ना उच्यते । प्र० उ० हे गीतम जवग्य धो एकनीस सागरापम उत्कर्षं धौ तत्तीस सागरपम । विजयवेजयंतजयंत अप
राजितदेवाण अपण्णापराजित । विजय वेजयंत जगत्त अपराजितना अपर्णीत देवतानो प्र० उ० हे गी० जघग्य धौ पिण उत्कर्षं धौ पिण अत्तमुत्त ।
विजयजगत्त अत्राप्यपराजितदेवाण पज्जसाणनि । विजय वेजयंत जगत्त अपराजित विमानना पर्याप्त देवताना प्र० उत्तर हे गीतम जघग्य धो
पक्कधीस सागरोपम परत्तमुत्तमानं जत उत्कर्षं धौ तत्तीस सागरोपम अत्तमुत्तमानं जत । मच्छुमिद्धगदेवाणं भते केवडइति । सर्वार्थसिद्ध विमानना देवताना

१. यव स्यादिविमानेषुपि ज्ञायनीय । इति श्री भलपगिरिविरचिताया प्रज्ञापनाटीकाया चतुर्थे स्थितारूपे पदं समाप्त ॥ ४ ॥

तद्वय व्याख्यात चतुर्थपदसिद्धान्तो पञ्चममारज्यत तस्य चायमार्ज्यसम्बन्धः, इदानीन्तनपदे नारदातिपर्यायकूपे न सत्त्वानामास्थितिनत्ता इत्युक्तौ दृष्टिनामोपशमिज्जनायकतायाश्रयपर्यायावधारण प्रतिपाद्यते, तत्रचदनादिम सूत्र-कडविज्ञानं ज्ञते । पञ्चमं पदं ता इति ॥ अथ कर्माणिमा येन गीतमस्त्वामिना ज्ञावानव पद ? उच्यते-उक्तमादौ प्रथमपदे प्रज्ञापना द्विविधा प्राप्ता स्तद्यथा-जीवप्रज्ञापना अजीवप्रज्ञापनाचेति, तत्र जी

पुच्छा, गोयमा ! जहसेणवि उक्तासेणवि अतो गुज्जत । सख्ठसिद्धदेवाणं पज्जत्ताणं केवइय काल ठिड पणत्ता ? गोयमा ! अजहन्नमणक्कासेण तेतोस सागरोवमाइ अतोपुज्जत्तणाड ठिडं पणत्ता । पणत्ताणाए जगवत्तीणं चउल्य ठिडपदं सम्मत्त ॥ ४ ॥ कडविहाण जत्त ! पज्जत्ता पणत्ता ? गोयमा !

ना पुच्छा, गीतम । जघनेनाप्युत्कपतोप्यत्तमुदत्तम् । सर्वार्थविदुर्देवानां प्रदत्त । पर्याप्तानां पुच्छा, गीतम । अजपत्यनुरूपेण न यत्खण्डसागरोपपाख्यत्तमुदत्तानि स्थिति प्रज्ञप्ता ॥ इति श्रीप्रज्ञापनामूत्रसरस्वतानुवादे रामचन्द्रगिरिविनेयेन नानकचन्द्रेण प्रिचित चतुर्थे स्थितिपदं सम्पूर्णम् ॥ ४ ॥ कतिगिया जदत्त । परंवा प्रज्ञप्ता ? गीतम । द्विविधा. प्रज्ञप्तास्तद्यथा-जीवप

यमेव विमानाया अपर्याप्त देवतानो हे भगवन् केतला काखनो स्थिति कहौ प्र० उ० हे गीतम जघन्य घो पिण उरुपरं घो पिण अन्तर्मुदत्तं नी कहौ सख्ठु सख्ठगदे । पण पज्जत्ताणति । सर्वार्थसिद्ध विमानना पर्याप्त देवतानो केतला काननो स्थिति कहौ प्र० उत्तर हे गीतम अजघयय घो अजघटकरं घो तेतोस सागरोपमं अन्तर्मुदत्तं ग्वन नी कहौ ॥ एतले प्रज्ञापना नी चोथो स्थिति पट पूर्ण घयो ॥ ४ ॥ चतुर्थं पदने विधे नारकाटि पर्गी गत्तं घो जीव तो स्थिति कहौ इहा पचम पदने विधि ती औटाविक छावोपगमिक छायाक भाव चाटो पर्याय नी अत्रधारण करेहे—कति विहाण भतेति । केतले भटे हे भगवन् पर्याय कक्षा प्रथ उत्तर हेगीतम जगधारना कक्षा ते करेहे—जीव पर्याय सने अजीव पर्याय । जीवपक्षापाण भतेसि । जी

